वैकाचा-ो-वेक्पर्यक्षितालय पुरुषक्षी-यासीकाला निर्माणानी-महाशास-विक्षित्रया वकाविकाक्ष्यया न्याव्यया सम्बद्धने विन्दी-कालीर-माधारनुसावसदित्य-

। श्री-जम्ब्रीपवस्थित्वस्य ॥ (विशेषे सारः)

नियोक्त-

संस्कृत-माञ्चलक् जैनागम निष्णात जिल्ह्यार नार्थिः पश्चितम्भिनम्भीकन्द्रैयासास्त्रको सहस्रकाः

--- यक्तासक १--पाळनगुर्विकालि---विश्वनी समृद्य बीटनाई अस्यसम्बद्धाः समृद्य---इन्यस्याः स्टब्स

सन भाग गाँउ स्थाउ केलवाकी हार्योगीत प्रदूर्ध क्षेत्रिक्षी व्यानिकाल सहस्र कालवाई स्थापका स्थापकार्यक्ष

ग्रमम-आयुन्ति : सीत् सीत्रम् विश्वास्ति क्रियंत्रस्य सन्दि १९०० ५७०३ १९७७

朝帝朝期一年0 是中一日日

जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलालजी-महाराज-विरचितया प्रकाशिकाख्यया व्याख्यया समलङ्कृतं हिन्दी-गुर्जर-भाषाऽनुवाद्सहितम्

॥ श्री-जम्बूद्वीपप्रज्ञित्तसूत्रम् ॥

(द्वितीयो भागः)

नियोजकः

संस्कृत-प्राकृतज्ञ-जैनागमनिष्णात-प्रियव्याख्यानि पण्डितमुनि-श्रीकन्हैयालालजी-महाराजः

प्रकाशक:

पालनपुरिनवासि-श्रेष्ठिश्रीलक्ष्मीचंदभाई जसकरणभाई
प्रदत्त-द्रव्यसाहाय्येन
अ० भा० श्वे० स्था० जैनशास्त्रोद्धारसिमितिप्रमुखःश्रेष्ठिश्रीशान्तिलाल मङ्गलदासभाई-महोदयः
मु० अहमदाबाद-१.

प्रथम-आवृत्तिः प्रति १२०० वीर-संवत् २५०३

विक्रम-संवत् २०३४ ईसवोसन् १९७**७**

मूल्यम्-रू० ३५-००

મળવાનું દૈકાણું શ્રી અ. ભા. શ્વે. સ્થાનકવાસી જૈનશાસ્ત્રાહાર સમિતિ, દે. છીપાપાળ, અમદાવાદ-૧, Published by:
Shri Akhil Bharat S. S.
Jain Shastroddhara Samiti,
Ghhipapole,
AHMEDABAD-1.

卐

ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां, जानन्ति ते किमपि तान् प्रति नैप यत्नः। उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा, कालोह्ययं निरवधिविंपुला च पृथ्वी ॥ १॥

4

हरिगीतच्छन्दः

करते अवज्ञा जो हमारी यत्न ना उनके लिये। जो जानते हैं तत्त्व कुछ फिर यत्न ना उनके लिये॥ जनमेगा मुझसा व्यक्ति कोई तत्त्व इससे पायगा। है काल निरवधि विपुलपृथ्वी ध्यान में यह लायगा॥१॥



મૃલ્યઃ ३. ૩૫-૦૦

પ્રથમ આવૃત્તિ પ્રત ૧૨૦૦ વીર સંવત્ ૨૫૦૩ વિક્રમ સંવત્ ૨૦૩૪ ઇસવીસન્ ૧૯૭૭

: મુદ્રક: મણિલાલ છગનલાલ શાહ નવપ્રભાત પ્રિન્ટીંગ પ્રેસ, ઘીકાંટા રાેડ, અમદાવાદ.

जंब्द्रीय प्रज्ञसिसूत्र भा. दूसरे की विषयानुक्रमणिका

| अ नु क्रमाङ्क | विषय | पृष्ठाङ्क |
|----------------------|---|-----------------|
| | चीला वक्षस्कार | |
| 8 | श्चुल्लहिमवन्वर्षधरपर्वत का वर्णत | १−७ |
| ? | शुद्रहिमदान के शिखर के ऊपर वर्तमान पद्महृद का निरूपण | c-80 |
| ą | श्चद्रहिमवान् की भूनि में वर्तमान भवनादिका वर्णन | १८-३६ |
| 8 | गङ्गा सिन्धू महानदी का निरूपण | २६-५३ |
| ધ્ય | गङ्गादिष्रदानदी का निर्भेमादि का निरूपण | ५ ४–५९ |
| Ę | रोहितंसा महानदी के प्रपातादिका निरूपण | ६०-६३ |
| છ | श्चद्रहिमवत्पर्वत के ऊपर वर्षनामक्ट का निरूपण | ६३-८१ |
| ¢ | श्चद्रहिमान् वर्षवरपर्वत से विभक्त हैमबक्षेत्र का वर्णन | ८१-८५ |
| ९ | क्षेत्रविमानक पर्दत का निरूपण | ८६-९३ |
| १० | हैमवत वर्ष के नामादि का निरूपण | ९३-९५ |
| ११ | उत्तर दिशा के सीमाशारी वर्षघर पर्दत का निरूपण | ९५-१०० |
| १२ | महापञ्चहद्वपर्वत का निरूपण | १०१–११७ |
| १३ | हिमबत्वर्षपरपर्वत के ऊपर स्थित कृट का निरूपण | ११७-१२० |
| १४ | हरिवर्ष क्षेत्र का निरूपन | १२१-१२९ |
| १५ | निपत्रनाम के वर्षधरपर्वत का निरूपण | १३०-१३७ |
| १६ | तिभिच्छहद के दक्षिण में वहनेवाछी नदी का वर्णन | १३८-१५४ |
| १७ | महाविदेह वर्ष का निरूपण | १५४–१६५ |
| १८ | गंवमद्दन वक्षस्कार पर्वत का निरूपण | १६५-१७६ |
| १ ९ | उत्तर कुरु का निरूपण | १७६-१९३ |
| २• | यमका राजधानीयां का वर्णन | १९४- २४६ |
| २१ | नीलदन्सिद् हद का वर्णन | २४७-२५३ |
| २ २ | सुदर्शन मम्बू का वर्णन | २५४-२८९ |

| २३ | उत्तर कुरु नामादि का निरूपण | २८९-३०० |
|------------|---|-----------------|
| २ ४ | इरिस्सह क्रूट का निरूपण | ३००-३०९ |
| २५ | विभाग के क्रमसे कच्छादिविजय का निरूपण | ₹•९-३80 |
| २६ | चित्रक्ट वक्षस्कार का निरूपण | ३४०–३४७ |
| २७ | द्सरा सुकच्छविजय का निरूपण | ३७८-३७८ |
| २८ | दूसरा विदेह विभाग का निरूपण | 305-36€ |
| २९ | सौमनस गजदन्त पर्वत का निरूपण | ₹८८-३९८ |
| ३० | चित्रविचित्रादिक्टों का निरूपण | ३९८- 8०० |
| ३१ | क्टशाल्मलीपीठ का निरूपण | 808-808 |
| ३२ | चौथा विद्युत्प्रभ नामके वक्षस्कार का निरूपण | 808-866 |
| ३३ | महाविदेह वर्ष के दक्षिण पश्चिम में तीक्षरे विभाग के | |
| | अन्तर्विति विजयादि का निरूपण | ४१३-४२३ |
| ३४ | मेरुपर्वत का वर्णन | ४२३–४५० |
| ३५ | नन्दनवन का वर्णन | ४५०-४६६ |
| ₹ ६ | सीमनसयन का वर्णन | ४६६-४७० |
| ३७ | पण्डकवन का वर्णन | ४७१-४९३ |
| इ८ | पण्डवन में स्थित अभिषेक्ष शिलाका वर्णन | ४७१-४९३ |
| ३९ | मन्दरपर्वत के कांड (विभाग) संख्या का कथन | ४९३-४९९ |
| ४० | समय प्रसिद्ध मंदरपर्व के सोलंड नामका कथन | ४९९-५०६ |
| ४१ | नीलवन्नाम के वर्षधर पर्वत का निरूपण | ५०७–५१७ |
| ४२ | रम्यक नामके वर्ष-क्षेत्र का निरूपण | ५१७–५४२ |
| | पांचवां वक्षस्कार | |
| ४३ | जिन जन्माभिषेक का वर्णन | ५४२–५६८ |
| 88 | ऊर्घ्वकोक निवासिनी सहचरिका दिवाकुमारीका | |
| | अवसर प्राप्त कर्तव्य का निरूपण | ५६८–५७९ |

| ४५ | पूर्वदिशा के रुचकपर्वतस्थित देवियों का अवसर | |
|------------|--|------------------|
| | प्राप्त कर्तव्य का निरूपण | ५७९–६०३ |
| ४६ | अवसर प्राप्त इन्द्रकृत्य का निरूपण | ६०४–६३१ |
| ४७ | शक्र की आज्ञानुसार पालक देव के द्वारा की | |
| | गई विकुर्वणादि का निरूपण | ६३२–६४२ |
| ४८ | यानादि का निष्पत्ति के पश्चात् शक्र के कर्तव्य का निरूपण | ६४२–६६३ |
| ४९ | ईशानेन्द्र का अवसर प्राप्तकार्य का निरूपण | ६६४–६७३ |
| ५ ० | भवनवासी चमरेन्द्रादि का वर्णन | ६७३–६८५ |
| ५१ | अच्युतेन्द्र द्वारा की गई अभिषेक समग्री संग्रह का वर्णन | ६८५–६९५ |
| ५२ | अच्युतेन्द्रकृत तीर्थेकराभिषेक का निरूपण | ६९५–७२० |
| ५३ | अभिषेक कथनपूर्वक आशीर्वचन का कथन | ७२१-७२६ |
| 48 | शक्र कृतकृत्य होकर भगवान के जन्मनगरप्रति- | |
| | प्रयाण का कथन | ७२ ६ -८४८ |
| | छट्टा बक्षस्कार | |
| ષ્ષ | जम्बूद्वीप के चरम प्रदश का निरूपण | ७४ ९ –७५४ |
| ५६ | दश द्वारों से प्रतिपाद्य विषय का कथन | ७६५-७९३ |

समाप्त.

4

પાલણપુર નિવાસી

શ્રી લક્ષ્મીયંદભાઇ જસકરણભાઈ જવેરીનું જીવનયરિત્ર

પાલણપુરમાં જન્મેલા અને આજવન સુધી પાલણપુરમાં રહેલા ક્સંતસાધુએ અને મહાસતીજની સેવાએમાં સમય આપી રહેલા હતા સ્થાનકવાસી જૈન ધર્મના ચુસ્ત પાલક અને સાધમી ભાઈ-અહેનાની સેવા કરતા હતા. તેએ અમદાવાદના અણીતા વકીલ અને પૂજ્ય મહાત્મા ગાંધીજીના સાથીદાર કાળીદાસલાઈ જસકરણસાઈ જવેરીના નાનાભાઈ થતા હતા, પાલણપુરમાં સ્થાનકવાસી સમાજના સ્થંભ હતા.

આ પુસ્તક ઘણી જ ધર્મ ભાવનાવાળું છે અને તેથી જ અમારા પિતાજી લક્ષ્મીચંદલાઈ જસકરણભાઈ જવેરી ત્યા અમારા લાઈ કીરતીલાલ હક્ષ્મીચંદલાઈ જવેરીની યાદી જળવાઇ રહે તેવી ભાવનાથી અમા આ પુસ્તક છપાવવા માટે દાન આપી અમારી જાતને અમા ભાગ્યશાળી સમજીએ છીએ.

લી.

લલ્મીચંદલાઈ જસકરણભાઈ જવેરીની સુપુત્રી છેન મંજીલાબેન અને બહેના



श्री वीतरागाय नमः

श्रीजैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्य श्री धासीछाल महाराज विरचितया प्रकाशिकारस्यया स्यास्यया समलङ्कृतम्

॥ श्री-जम्बूद्वीपसूत्रम् ॥

(द्वितीयो भागः)

अथ चतुर्थवक्षस्कारः---

मुन्म-कहि णं भंते ! जंबूदीवे दीवे चुन्छिहमवए णामं वासहर-पव्वए पण्णत्ते ?, गोधमा! हेमदयस्स वासस्स दाहिणेणं भरहवासस्स उत्तरेणं पुरित्थम लवणसमुद्दस्स पचित्थिमेणं पचित्थमलवणसमुद्दस्स पुरिश्यमेणं, एत्थ णं जंबुदीवे दीवे चुल्छिहिमयंते णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते, पाईणवडीणायए उदीणदाहिणवित्थिष्णे दुहा स्वणसमुदं पुट्टे पुरस्थिमिन्छाए कोडीए पुरस्थिभिन्छं छवणसमुद्दं पुट्टे, पञ्चस्थिमिन्छाए कोडीए पचेरिथिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्टे एगं जोयणसयं उद्धं उच्चत्तेणं पणवीसं जोवणाइं उद्वेहेणं एगं जोयणसहस्सं बावण्णं च जोयणाइं दुवालस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स विवर्खभेणंति । तस्स वाहा पुरिश्यमपचित्थिमेनं पंच जोयणसहस्साइं तििण य पण्णासे जोयण-सए पण्णरस य एगूणवीसइभाए जोवणस्य अद्धभागं च आयामेणं, तस्स जीवा उत्तरेणं, पाईणपडिणायया जाव पचरिथमिल्लाए कोडीए पचित्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्टा, चउठवीसं जोयणसहस्साइं णव य बत्तीसे जोयणसए अद्धभागं च किंचि विसेसूणा आयामेणं पण्णता, तीसे थणुपुट्टे दाहिणेणं पणवीसं जोयणसहस्साइं दोण्णिय तीसे जोयणस**ए** चतारि य एगूणबीसइभाए जोयणस्स पश्चिखेवेणं पण्णते रुयगसंठाण-संठिए सब्वकणगामए अच्छे स॰हे तहेव जात पडिरूवे उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं संपरिविखने दुण्ह वि पमाणं

वण्णगोति । चुल्छिहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स उविरं बहुसमरमणिको भूमिभागे पण्णत्ते से जहा णामए आिंहणपुक्खरेइ वा जाव बहवे वाण्मंतरा देवा य देवीओ य आसयंति जाव विहरंति । सू० १॥

छाया-क्व खल भदन्त ! जम्बूढीपे ढीपे क्षुद्रहिमवान नाम वर्षधरपर्वतः प्रज्ञमः ?,
गौतम ! हैमवतस्य वर्षस्य दक्षिणे भरतस्य वर्षस्य उत्तरे पौरस्त्यलवणसमुद्रस्य पाश्चात्ये
पाश्चात्यलवणसमुद्रस्य पौरस्त्ये अत्र खल जम्बूढीपे ढीपे क्षुद्रहिमवान नाम वर्षधरपर्वतः
प्रज्ञमः, प्राचीन प्रतीचीनाऽऽयतः उदीचीन दक्षिण विस्तीर्णः द्विधा लवणसमुद्रं स्पृष्टः पौरस्त्यया कोटचा पौरस्त्यं लवणसमुद्रं स्पृष्टः पाश्चात्यया कोटचा पाश्चात्यं लवणसमुद्रं स्पृष्टः,
एकं योजनशतम् अर्ध्वमुचत्वेन पश्चविंशतिः योजनानि उद्वेष्ठेन एकं योजनसहस्रं द्विपश्चाशत्
च योजनानि द्वादश्च च एकोनविंशतिभागान योजनस्य विष्कभगेणेति, तस्य बाहे पौरस्त्यपाश्चात्येन पश्च योजन सहस्रःणि त्रीणि च पश्चाशत् योजनशतानि पश्चदश्च च एकोनविंशतिभागान् योजनस्य अर्द्वभागं च आयामेन, तस्य जीवा उत्तरे प्राचीनप्रतीचीनाऽऽयता यावत्
पाश्चात्यया कोटचा पाश्चात्यं लवणसमुद्रं स्पृष्टा चतुर्विंशतिः योजनसहस्राणि नव च द्वात्रिशानि योजनशतानि अर्द्वभागं च किश्चिद्विशेषोना आयामेन प्रज्ञप्ता, तस्याः धनुष्पृष्ठं दक्षिणे
पश्चविंशतिः योजनसहस्राणि योजनस्य परिक्षेषेण प्रज्ञतम् स्वक्षसंस्थानसंस्थितः सर्वकनकमयः अच्छः श्रुक्षणः तथैव यावत् प्रतिस्थः उभयोः पार्श्वयोः द्वाभ्यां पश्चवरवेदिकाभ्यां
द्वाभ्यां च वनपण्डाभ्यां संपरिक्षिप्तः, द्वयोरिष प्रमाणं वर्णक इति । श्चद्रहिमवतो वर्षधरपर्वतस्योपरि बहुसमरमणीयो भूमिमागः प्रज्ञसः, स यथानामकः आलङ्गपुष्कर इति वा यावद्
बहुवो व्यन्तरा देवश्च वेवश्य आसते यावद् विहरनित ॥ स्व० १ ॥

'किह णं मंते ! जंबुद्दीवे दीवे' इत्यादि ।

टीका-हे भदन्त ! जम्ब्द्रीपे द्वीपे-जम्ब्द्वीपनामके द्वीपे 'चुल्लहिमवए णामं' क्षुद्र-हिमवान्-श्रुद्रहिमवन्नामकः 'वासहरपव्वए' वर्षधरपर्वतः वर्षे पार्श्वद्रयस्थिते ये द्वे क्षेत्रे, तयोः धारकः क्षेत्रद्वयसीमाकारी स चासी पर्वतः क्य-कस्मिन् प्रदेशे 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तः, तत्र भगवा-

चौथा वक्षस्कार प्रारंभ-

'कहिणं भंते ! जंबुदीवे दीवे क्षुल्लहिमवए' इत्यादि ।

टीका-इस सूत्र द्वारा गौतमस्वामी ने प्रश्च से ऐसा पूछा है-'कहि णं भंते! जंबुदीवे दीवे क्षुरुलहिमवंते णामं वासहरपव्वए?' हे भदन्त! जम्बूदीप नामके

ચોથા વક્ષસ્કાર પ્રારંભ-

'किह णं भंते! जंबुदीवे दीवे क्षुल्लिहिमवए' इत्यादि

टींशर्थ-आ्सूत्र वंडे गौतमस्वाभीके प्रभुने का प्रभाषे प्रश्न क्यें छे है-'कहि णं मंते! जंबुद्दीवे दीवे क्षुल्लिहिमवंते णामं वासहरपटवए?' दे भट्टंत कम्भूदीप नामक नाह-'गोयमा!' हे गौतम! 'हेमवयस्स वासस्स दाहिणेणं' हैमवतस्य वर्षस्य क्षेत्रस्य दक्षिणे दक्षिणस्यां दिशि 'मरहस्स' भरतस्य तन्नामकस्य 'वासस्स उत्तरेणं' वर्षस्य उत्तरे उत्तरस्यां दिशि 'पुरिश्यमलवणसमुद्दस्य' पौरस्त्यलवणसमुद्रस्य पूर्वलवणसमुद्रस्य 'पच्चित्थमेणं पच्चित्थमेलं प्राचित्थमेणं पौरस्त्ये -पूर्वस्यां दिशि 'पत्थ णं' अत्र इह खल्ल 'जंबुद्दीवे दीवे चुल्लहिमवंते णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते' जम्बूद्धीपे द्वीपे क्षुद्रहिमवान नाम वर्षथरपर्वतः प्रज्ञप्तः, स च कीदृष्तः! इत्यपेक्षायामाह-'पाईण पडीणायए' प्राचीनप्रतीचीनाऽऽयतः प्राचीनप्रतीचीनयोः पूर्व-पश्चिमयोः आयतः दीर्घः पुनः 'उदीणदाहिणवित्थिन्ने' उदीचोन दक्षिणविस्तीणः-उदीचीन-दक्षिणयोः उत्तर दक्षिणयोः विस्तीर्णः विस्तारयुक्तः 'दुहा' द्विधाः द्वाभ्यामन्तुपदं वक्ष्य-माणाभ्यां कोटिभ्यां 'लव्यणसमुदं पुट्टे.' लव्यणसमुदं स्पृष्टः आश्लिष्टः स्पृष्ट इत्यत्र कर्तरि क्त प्रत्ययः, एतदेव स्पष्टीकरोति 'पुरिश्यिमिल्लाए' पौरस्त्यया पूर्वस्या 'कोडीए' कोट्या-अग्रभागेन 'पुनित्थिमिल्लं' पौरस्त्यं पूर्व 'लव्यणसमुदं पुट्टे' लव्यणसमुदं स्पृटः 'पच्चित्थिमिल्लं' पौरस्त्यं पूर्व 'लव्यणसमुदं पुट्टे' लव्यणसमुदं स्पृटः 'पच्चित्थिमिल्लं' पाश्चात्यया पश्चिमया 'कोडीए' कोटचा 'पच्चिमिल्लं' पाश्चात्यं-पश्चिमं 'लव्यणसमुदं पुट्टे' पाश्चात्यं-पश्चिमं 'लव्यणसमुदं पुट्टे' पाश्चात्या पश्चिमया 'कोडीए' कोटचा 'पच्चिमिल्लं' पाश्चात्यं-पश्चिमं 'लव्यणसमुदं पुट्टे'

द्वीप में क्षुद्रहिमवान् नामका वर्षधर पर्वत कहां पर कहा गया है ? इसे वर्षधर इसिलये कहा गया है कि यह अपने पास में रहे हुए दो क्षेत्रों की सीमा को करता है इसके उत्तर में असु कहते है-(गोयमा! हेमवयस्स वासस्स दाहिणे णं भरहस्स वासस्स उत्तरेणं पुरित्थम लवणसमुद्दस्स पच्चित्थमेणं पच्चित्थम-लवणसमुद्दस्स पुरित्थमेणं एत्थणं जंबुदीवे दीवे चुल्लिहमवंते णामं वासहरपव्षए पण्णत्ते) हे गौतम ! इस जम्बूद्वीप में स्थित क्षुद्रहिमवान् पर्वत भरत क्षेत्र की उत्तर दिशा में और हैमवत् क्षेत्र की दिक्षणादिशा में, तथा पूर्विश्वर्ती लवण समुद्र की पश्चिमदिशा में एवं पश्चिमदिग्वर्ती लवणसमुद्र की पूर्व दिशा में कहा गया है। (पाईणपडीणायए, उदीणदाहिणवित्थिण्णे दृहा लवणसमुद्दं पुढे पुरित्थिम्ललं कोडीए पच्च-

द्वीपमां क्षुद्र द्विमवान नामं वर्षधर पर्वत डयां आवेल छे? ओ पर्वतने वर्षधर ओटला माटे डिंदेवामां आवेल छे हे ओ पेतानी पासेना थे क्षेत्रानी सीमानुं निर्धारण हरे छे. ओना क्ष्वाभमां प्रक्ष डेंट-'गोयमा! हेमवयस्स वास्सस दाहिणेणं मरहस्स वाससस उत्तरेणं पुरित्थमलवणसमुद्दस्स पच्चित्यमेणं पच्चित्यमलवणसमुद्दस्स पुरित्थमेणं एत्थणं जंबुद्दीवे दीवे चुल्लिहिमवंते णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते' दे औतम! आ क्रम्भृद्वीपमां स्थित क्षुद्र दिश्वना पर्वत करतक्षेत्रनी इत्तर दिशामां अने दैभवत क्षेत्रनी दिख्लु दिशामां तथा पूर्व दिश्वणी क्ष्वण्य समुद्रनी पश्चिम दिशामां तेमक पश्चिम दिश्वणी क्षवणसमुद्दं पुर्व दिशामां स्थान कोडीए पच्चित्रमिल्लं लवणसमुद्दं पुर्व पुरिश्वमिल्लाए कोडीए पच्चित्रिमिल्लं लवणसमुद्दं पुर्वे पच्चित्रिमिल्लाए कोडीए पच्चित्रिमिल्लं लवणसमुद्दं पुर्वे पच्चित्रिमेला क्षेत्रेने पच्चित्रिमिल्लाए कोडीए पच्चित्रिमिल्लं लवणसमुद्दं पुर्वे पच्चित्रिमेला काडीए पच्चित्रिमिल्लं लवणसमुद्दे पुर्वे पच्चित्रमेला काडीण पच्चित्रिमेला स्वाप्ति स्वाप्

ळवणसमुद्रं स्पृष्टः, 'एगं जोयण सयं उद्धं उचतेणं' एकं यो जनशतम् उर्ध्वम् उचत्वेन उत्त्र्येणं, 'पणवीसं' पंचर्विश्वतिः पञ्चविंशतिसंख्यकानि 'जोयणाइं' योजनानि 'उव्वेहेणं' उद्वेधेन-भूमिप्रवेदोन उचत्व चतुर्थभागस्यैत भूमिप्रविष्टत्वात्, 'एगं जोयणसहस्तं' एकं योजन सहस्रं च पुनः 'वावण्णं च' द्विपञ्चशात् द्विपञ्चश्चार्यत्संख्यानि 'जोयणाई' योजनानि 'दुवालसय' द्वादश च 'एगूणवीसइभाए जोयणस्स विवर्धभेणंति' एकोनविंशति भागान् योजनस्य विष्क-म्भेण विस्तारेण इति एतत् उचत्वोद्वेधविष्कम्भग्रमः।णम् । अत्रोपपत्तिस्तु द्विः।णित जस्युद्वीप-विस्तारस्य नवत्यधिकशतेन भागे हते भवति (१०५६ धुद्रहिमवतो भरताद् द्विग्रुण-त्वात्, अत्र करणविधिर्भरतः वर्षविष्क्रम्भवद् बोध्या, अथ शुद्रहिमवतो वाहे आह-'तस्स' तस्य पूर्वोक्तस्य श्रुद्रहिमवतः 'वाहा'वाहे- वाह् ते इव सुजवत्प्रदेशी, बाहा शब्दोऽत्र औपचारिकः, ते तिथमिल्लं लवणसमुदं पुढें) यह पर्वत पूर्व से पश्चिम तक लम्बा है और उत्तर से दक्षिण तक विस्तीर्ण है यह अपनी दोनों कोटियों से लवणसमुद्र को छू रहा है पूर्व कोटि से पूर्व लवण समुद्र को और पश्चिम कोटि से पश्चिम लवण समुद्र को छू रहा है (एमं जोयणसयं उद्धं उच्चलेंं) इसकी जंबाई १ सी योजन की है (पणवीसं जोशणाई उन्वेहेणं) २५ योजक का इसका उद्रेध है अर्थात् यह जमीन के भीतर २५ योजन तक गया है (एगं जोयणसहस्सं बावण्णं च जोयणाई दुवालस य एग्णवीसइ भाए जोयणस्स विक्खंभेणंति) इसका विस्तार ९०५२३३ योजन प्रमाण है भरतक्षेत्रका प्रमाण ५२६६ योजन का है इससे दूना इस हिमवान पर्वत का प्रमाण है ५२६ को दूना करने पर १०५२ के योजन का प्रमाण आजाता है इसे हम यों भी कह सकते हैं कि जम्बूदीप के च्यास को दूना करके उसमें १९० का भाग देने पर इतना ही इसका प्रमाण निकल आता है (तस्स बाहा पुरिधमण्डविधमेगं पंच जोयणसहस्साइं तिण्णि

એ પર્વત પૂર્વથી પશ્ચિમ સુધી લાંગા છે અન ઉત્તરથી દક્ષિણ સુધી વિસ્તીર્ણ છે. એ પોતાના બન્ને છેડાઓથી લવણસમુદ્રને સ્પર્શી રહ્યો છે. પૂર્વ કારિયો પૂર્વ લવણસમુદ્રને એ સ્પર્શી રહ્યો છે. પશ્ચિમ કાર્ટિયો પશ્ચિમ લવણસમુદ્રને એ સ્પર્શી રહેલ છે, 'હૃમં जोयणस्यं उदं उच्चतेष' એની ઊંચાઇ ૧ તે ચોજન જેટલી છે. 'વળવીનં जोચणાદું उદ્વેદ્વેં છે' રેપ ચોજન આનો ઉદ્ધેય છે. એટલે કે એ પૂર્વત જમીનની અંદર ૨૫ ચોજન સુધી પહોંચેલો છે. 'હૃમં जोयणसहस्सં वावणं च जोयणादું दुवालस य હૃદ્યૂળવીસફમાણ जोयणस्य विक्लंभेणंति' આનો વિસ્તાર ૧૦૫૨ મુટ્ટે ચોજન પ્રમાણ છે. ભરતક્ષેત્રનું પ્રમાણ પરદ દુંદ્ ચોજન જેટલું છે. એના કરતાં ખમણું આ હિમવાન પર્વતનું પ્રમાણ છે. પરદુંદું ને એથી ગુણાકાર કરીએ તો ૧૦૫૨ મુટ્ટે ચોજન પ્રમાણ થાય છે. આ અંગે આપણે આમ પણ કહી શકીએ છીએ કે જંબૂદીપના ત્યાસને દિગુણિત કરીને તેમાં ૧૯૦ ના ભાગા- કાર કરીએ તો એટલું જ આનું પ્રમાણ આવી જાય છે. 'તાસ बाहा પુરસ્થિમવસ્થિત્યને છો કે કરીએ તો એટલું જ આનું પ્રમાણ આવી જાય છે. 'તાસ बाहा પુરસ્થિમવસ્થિત્યને છો કાર કરીએ તો એટલું જ આનું પ્રમાણ આવી જાય છે. 'તાસ વાદા પુરસ્થિમવસ્થિત્યને અને કાર કરીએ તો એટલું જ આનું પ્રમાણ આવી જાય છે. 'તાસ વાદા પુરસ્થિમવસ્થિત્યને અને કાર કરીએ તો એટલું જ આનું પ્રમાણ આવી જાય છે. 'તાસ વાદા પુરસ્થિમવસ્થિત્યને અને કાર કરીએ તો એટલું જ આનું પ્રમાણ આવી જાય છે. 'તાસ વાદા પુરસ્થિમવસ્થિત્યને હ્યાને કરીએ તો એટલું જ આનું પ્રમાણ આવી જાય છે.

च प्रत्येकं 'पुरित्यमपच्चित्थमेणं' पौरस्त्यपश्चिमे-पूर्वपश्चिमयोः 'पंच' पश्च-पश्चसंख्यानि 'जोयणसद्दसः दं' योजनसहस्राणि 'तिण्णि य' त्रीणि च 'पण्णासे जोयणसद्' योजनसन्नानि पश्चारादिति पश्चारादिशिकानि 'पण्णरस य' पश्चदश च 'एगूणवीसहभाए जोयणस्स' योजनस्य एकोनविंशितिमागान 'अद्धभागं च' अर्द्धभागम्-एकस्य योजनैकोनविंशितिमसागस्याद्धे च 'आयामेणं' आयामेन—दैर्ध्येण प्रज्ञप्ते, स्थापना यथा-५३५० के वे । अस्य व्याख्यानं चतुर्दशस्त्रगत चैतादचाधिकारे द्रष्टव्यम् । एतत्स्त्रत्रस्य तत्स्वत्रायत्वात् । अथास्य जीवासाह- 'तस्स जीवा' इत्यादि, 'तस्स' तस्य-श्रुद्धिमवतः 'जीवां जीवा-धनुष्की सेव जीवा धनु- वर्षावत्प्रदेशः 'उत्तरेणं' उत्तरे-उत्तरस्यां दिशि गता 'पाईण पहिणायया' प्राचीन प्रतीचीना- ऽऽयता पूर्वपश्चियदीर्घा, पुनः सा कीदशी ? इत्यपेक्षायामाह-'जाव' यावत्–यावत्पदेन 'पुर- तिथमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुदं पुद्वा' इति प्राह्मः ।

एतच्छाया-'पौरस्त्यया कोटचा पौरस्त्यं छवणसमुद्रं स्पृष्टा' एतद्विवरणं स्पष्टम् , 'परुचतिथमिन्छाए कोडीए' पाश्चात्यया कोटचा 'पचित्थिमिछं छवणसमुद्रं पुष्ठा' पाश्चात्यं छवणसमुद्रं
स्पृष्टा, 'चउन्दीसं' चतुर्विशति:-चतुर्विशति सर्च्यानि 'जोयणसहस्साइं' याजनसहस्राणि च
पुनः 'णव य' नव-नवसंख्यानि 'वत्तीसे जोयणसष्' योजनशतानि द्वात्रिशदित द्वात्रिशद्धिकानि 'अद्भागं' अर्द्धभागम् एकस्य योजनैकोनविंशति भागस्याद्धं च 'किचिविसेस्णा' किञ्चि-

य पण्णासे जोयणसए पण्णरसय एग्णवीसहमाए जोयणस्स अद्भागं च आयामेणं) इसकी पूर्व पश्चिम की दोनों सुजाएं लम्बाई में ५३५० योजन को हैं, तथा १ योजन के १९ भागों में १५ई भाग प्रमाण है इसका व्याख्यान वैताव्याधिकार के सूत्र से जान छेना चाहिये (तस्स जीवा उत्तरेजं पाईण पड़ी-णायया जाव पच्चित्यिमिल्लाए कोडीए पच्चित्यांमलं लवणसमुदं पुद्धा चउव्वासं जोयणसहस्साइं णवय वत्तीक्षे जोयणसए अद्भागं च किचित्यसहणा आयामेणं पण्णता) इस क्षुद्र हिमवत्पर्वत की उत्तरिहशागत जोवा-धनुष की ज्या के जैसा प्रदेश-पूर्व से पश्चिम तक लम्बी है यावत् वह अपनी प्रविद्गात कोटी से पूर्व लवण समुद्र को पश्चिमदिग्गतकोटि से पश्चिमलवणसमुद्र को छू रहा है

पंच जोयणसहस्साइं तिण्णिय पण्णासे जोयणसए पण्णरस य एगूणबीसइमाए जोयणस्स अद्धमागं च आयामेणं' से पर्वतनी पूर्वपिक्षमनी अन्ने भुक्षस्य। लंगाधमां पउप० येश्वन केट्री छे तेमक सेड येश्वनना १६ कार्गामां १५६ कार्ग प्रमाण्ड छे. से अंगेनुं व्याण्यान वेताद्याधिशस्त स्त्रमांथी कार्जी केट्री केट्री से 'तस्स जीवा उत्तरेशं पाईण पडीणायया जाव पच्चित्रिस्लाए केडिए पच्चित्रिमिल्छं छत्रणसमुदं पृट्टा चउन्विसं जोयणसहस्साइं णवय बत्तीसे जोयणसए अद्धमागं च किचित्रिसेसूणा आयामेशं पण्णता' सा क्षद्र दिमवान पर्वतनी इत्तर दिशायत छवा-धनुषनी प्रत्यं यो केना प्रदेश पूर्वथी पश्चिम सुधी लांका छे, यावत ते पेशतानी पूर्व दिल्यत उत्तिथी पूर्व क्षत्रण

द्विशेषोना किश्चिद्ना, 'आयामेणं-पण्णत्ता' आयामेन प्रज्ञप्ता किश्चिद्नत्वं चास्या आनेतुं वर्गमू छ कृते शेषोपरितनराश्यपेक्षया बोध्यम् अधास्याः परिक्षेषमाह-'तीसे धणुपुट्टे' इत्यादि, 'तीसे' तस्याः क्षुद्रहिमवज्जीवायाः 'धणुपुट्टे' धनुष्पृष्ठम्-धनुष्पृष्ठभागाकारप्रदेशः 'दाहिणेणं' दक्षिणे दक्षिणस्यां दिश्चि 'पणवीसं' पश्चिशिताः 'जोयणसहस्साई' योजनसहस्नाणि 'दोण्णिय' द्वे च 'तीसे जोयणसए' योजनशते त्रिंशदिति त्रिंशदिधके 'चत्तारी य' चतुरश्च 'एगूणवीसइभाए' एकोनिविशितामान् 'जोयणस्स' योजनस्य २५२३ ई. 'परिवर्षवेषेणं' परिक्षेपेण परिधिना वर्त् जतदा 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तम् ।

अर्थतं खुद्रहिमवन्तं वक्ष्यमाणविशेषणै विणयति 'रुयगसंठाणसंठिए' इत्यादि, 'रुयग्-संठागसं ठिए' रुचकसंस्थानसंस्थितः रुचकमिद्दसुवणीभरणविशेषः तस्य यत्संस्थानम् आका-रस्तेन संस्थितः वलयाकार इत्यर्थः, पुनः 'सव्यकणगामए' सर्वकनकमयः सर्वात्मना कनक-मयः स्वर्णमयः 'अच्छे सण्हे' अच्छः श्लक्ष्णः 'तहेव' तथैव पूर्ववदेव 'जाव पडिरूवे' यावत् प्रतिरूप:-प्रतिरूप इति पदपर्यन्तानामत्र संग्रही बोध्यः, तथा च 'लुण्टः चृण्टः नीरजाः निर्भलः निष्पङ्कः निष्कङ्कटच्छायः सप्रभः समरीचिकः सोद्द्योतः प्रासादीयः दर्शनीयः यह जीवा २४९३२ योजन और एक योजन के अर्थभाग से कुछ कम लम्बो है (तीसे घणुष्पहे दाहिणेणं पणबीसं जोयणसहस्साइं दोण्णिय तीसे जोयण सए चत्तारिय एग्णवीसइभाए जोघणस्स परिक्खेवेणं पण्णत्ते) इस क्षुद्रहिमवत् पर्वत की जीवा का धनुष्छ दक्षिण पार्श्व में २५२३० रू योजन का परिधिकी अपेक्षा से कहा गया है (क्अगसंठाणसंठिए सन्वक्तणगामए अच्छे सण्णे, तहेव जाव पिंडरू वे) इस खुद्र हिस्यत पर्वत का संस्थान रूचक सुवर्ग के आभरणिवदेशिष -का ैसा संस्थान होता है वैसा ही है-यह पर्वत स्वभावतः अच्छ-स्वच्छ और इलक्ष्ण है यावत् प्रतिरूप है यहां यावत्पद से-''लब्टः, घृष्टः, मृष्टः, नीरजाः, निर्मेटः, निष्पङ्कः, निष्कंकटच्छायः, सप्रभः, समरीचिकः सोद्योतः, प्रासादीयः, दर्दानीयः, अस्क्रियः' इन-पदों का संग्रह हुआ है इन पदों સમુદ્રને સ્પર્શા રહ્યો છે. આ જીવા ૨૪૯૩૨ યાજન અને એક યાજન અર્ધ ભાગ કરતા કંઇક અલ્પ લાંબી છે. 'तीसे धणुष्पुद्दे दाहिणेणं पणवीसं जोयणसहस्साइं दोण्णिय तीसे जोयणसद चत्तारिय एगूणवीसइभाए जोयणस्स परित्रखेवेणं पण्णत्ते से क्षुद्र हिमवत् પર્વતની જાત્રાના ધનુપૃષ્ઠ દક્ષિણ બાલુએ ૨૫૨૩૦ 💯 યાજન જેટલા કહેવામાં આવેલ છે ते परिधिनी अपेक्षाओं क डहेब छे. 'हअगसंठाण संठिए सन्वकणगामए अच्छे सण्णे, तहेव जाब पहिरूवे' એ ક્ષુદ્ર હિમવત્ પર્વનું સંસ્થાન રુચક સુવર્ણના આભરણ વિશેષનું જેવું સંસ્થાન હાય છે, તેવું જ છે. એ પર્વત સ્વભાવત: અચ્છ-સ્વચ્છ અને શ્લદ્ધ છે. યાવત્ પ્રતિરૂપ છે. અહીં યાવત્ પદથી 'रुष्टः, घृष्टः, मृष्टः नीरजाः, निर्मेलः, निष्पंकः निंब्कंटकच्छायः, सप्रमः समरीचिकः, सोद्योतः, प्रसादीय, दुर्शनीयः, अभिकृषः' એ पहे।

अभिरूपः इत्येषां सङ्ग्रहः फलितः। एतद्व्याख्याऽत्रैव चतुर्थस्त्रे जगती वर्णने प्रोक्ता, साऽत्र लिङ्गव्यत्ययेन वाच्या स पुनः 'उभओ' उभयोः द्वयोः 'पासिं' पार्श्वयोः 'दोहिं' द्वाभ्यां 'पउमवरवेइयाहिं' पद्मवरवेदिकाभ्यां च पुनः 'दोहि य वणसंडेहिं' द्वाभ्यां चनपण्डाभ्यां 'संपरिविखत्ते' संपरिक्षिप्तः संपरिवेष्टितोऽस्ति, तद्वेष्टनभूतयोः 'दुण्ह वि पमाणं' द्वयोरिष प्रमाणं 'वण्णगोत्ति' वर्णकश्चेतद्वयं चतुर्थयंचम स्त्रव्याख्यातो वोध्यम् इति। अस्य 'चुल्लिक्षमः वंतस्स वासहरपव्ययस्स' सुद्रहिंमवतो वर्षधरपर्वतस्य 'उविरिं' उपरि-अध्वे शिखरे 'बहुसमरम-णिक्जे' बहुसमरमणीयः-अत्यन्तरमणीयः 'भूमिभागे पण्णत्ते' भूमिभागः प्रज्ञप्तः तद्वर्णनायाह-'से जहा नामए' इत्यारभ्य 'जाव विहरंति' इत्यन्तं सर्वं विवरणं पष्ठस्त्रतो बोध्यम् ।।स्० १।।

की व्याख्या यही ४ थे सूत्र में जगती के वर्णन के प्रसङ्ग में कही जा चुकी है अतः लिङ्गव्यत्यय करके उसे यहां व्याख्या के रूप में प्रहण कर लेना—चाहिये (उभओ पासि दोहिं पउमवरवेहआहें दोहिं य वणसंडेहिं संपरिक्तिले दुण्ह वि पमाणं वण्णगोत्ति) यह क्षुद्रहिमवत् पर्वत दोनों ओर दो पद्मवर वेदिकाओं से और दो वनषण्डों से घिरा हुआ है इन वनषण्डों का वर्णन एवं प्रमाण चतुर्थ पंचम सूत्र की व्याख्या से जानलेना चाहिये (क्षुत्लिहमवंतस्स वासहर पव्वयस्स उविं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते से जहा णामए आलिङ्ग-पुक्खरेह वा ज़ाव बहवे वाणमंतरा देवाय देवीओ य आसयंति जाव विहरंति) इस क्षुद्रहिमवत् वर्षथर पर्वत के जपर का भूमि भाग बहुसमरमणीय है और वह ऐसा बहुसमरमणीय है कि जैसा आलिङ्ग पुक्कर—छदङ्ग का मुख होता है यावत् यहां अनेक वान व्यन्तरदेव और देवियां उठती वैठती रहती है। इस विवरण को जानने के लिये छट्टा सूत्र का विवरण देखना चाहिये ॥सू०१॥

संगृहीत थया छे. अ पहें। व्याण्या अक ४ था सूत्रमां कगतीना वर्णुन प्रसंगमां हेहेवामां आवेल छे. सेथी लिंग व्यत्यय हरीने अते व्याण्या इपमां अहल हरी लेवी किछी. 'उमओ पासि होहिं पउमवरवेहआहिं होहिं य वणसंहेहिं संपरिक्लित टुण्ह वि पमाणं वण्णगोत्ति' से क्षुद्रह हिमवत् पर्वत अन्ने तरह छे पद्मवर वेहिहासीथी अने हि वनभां हैथी आवृत्त छे. से वनभां होनुं वर्णुन अने प्रमाल यतुर्थ अने पंत्रम सूत्रनी व्याण्यामांथी काली हेवुं किछीं भें 'झुल्ल हिमवंतस्स वासहरपट्यस्स उवरिं बहुसमरमणिक्ते मूमिमाने पण्णते से जहाणामए आलिङ्गपुक्खरेहवा जाव बहवे वाणमंतरा देवाय देवीओय आसंपति जाव विहरंति' से क्षुद्र हिमवत् वर्षाधर पर्वतना एपरने। भूमि लाग अहसम रमाणीक असंपति जाव विहरंति' से क्षुद्र हिमवत् वर्षाधर पर्वतना एपरने। भूमि लाग अहसम रमाणीय छे अने ते सेवी अहसमरमालीय छे है केवुं आलिंग पुष्डर—मुहंगनुं मुण होय छे. यावत् अहीं अनेह वानव्यंतर हेवे। अने हेवीको। हि छे-छेसे छे. से अंगेनुं विवरण् पष्ड सूत्रमां आपवामां आवेल छे. ॥ सू.— १ ॥

अथ क्षुद्रहिमवच्छिखरस्थित भूमिभागवर्त्ति पद्महदं वर्णयितुमाह-'तस्स णं' इत्यादि ।

प्लम्-तस्स णं बहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्य णं इके महं पउनहहे णामं दहे पण्णते, पाईणपडिणायए उदीण दाहिणविश्यिणणे इकं जोयणसहस्सं आयामेणं, पंच जोयणसयाइं विक्लंभे गं, दस जोयणाइं उब्वेहेणं अच्छे सण्हे रययामयकूले जाव पासाईए जाव पडिरूवेसि से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सब्वओ सनंता संपरिक्षित्ते वेइया वणसंडवण्णओ भाणि-यव्योत्ति । तस्त णं पउमद्दस्स चउदिसि चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता, वण्णावासो भाणियव्वोत्ति । तेसि णं तिसोत्राणपडिरूवगाणं पुरओ पत्तेयं २ तोरणा पण्णता, तेणं तोरणा णाणामणिमया, तस्तणं पउमदहस्स बहुन्डझदेसभाए एत्थ महं एगे पउसे पण्णते, जोयणं आयामिविवर्वभेणं अद्धन्नोयणं बाहल्लेणं दस जोयगाइं उट्येहेणं दो कोसे उसिए जरुंताओं साइरेगाई दस जोबणाई सब्बग्गेणं पण्णते। से णं एगाए जगईए सब्बओ समंता संपरिक्खिते जंबुदीवजगइप्पमाणाः गवक्खकडण् वि तह चेव पत्राणेणंति । तस्स णं पउतस्स अयमेणारूवे वण्णावासे पण्णते, तं जहा-बइरामया मूळा, रिट्टामए कंदे, वेरुलिया-मए णाले, बेरुलियामया वाहिरपत्ता, जंबूणयामया अव्भितरपत्ता, तव-जिज्ञघया केसरा, णाणामणिमया पोक्खरद्विभाया, कणगामईकिणगा, सा णं अद्भजोयणं आयामविक्वंभेणं कोसं वाहल्लेणं, सब्बक्रणगामई अच्छा। तीसे णं किणयाए उप्पि बहुसमरमणिज्जे सृप्तिभागे पण्णते, से जहा णाभए आिंहेंगपुक्खरेड़ वा ॥ सू॰ २॥

छाया-तस्य खलु बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागे अत्र खलु एको महान् पश्चह्दो नाम हूदः प्रज्ञप्तः, प्राचीनप्रतीचीनायतः उदीचीनदक्षिणविस्तीर्णः एकं योजनसहस्रमाणामेन पश्च योजनशतानि विष्कम्भेण दश्च योजनानि उद्वेधेन, अच्छः श्रुक्षणः रजतमयङ्क्षकः यावत् प्रासादीयः यावत् प्रतिरूप इति । स खलु एकया पश्चवरवेदिकया एकेन

च वनपण्डेन सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्तः । वेदिका वनपण्डवर्णको भणितन्य इति । तस्य खलु पद्महदस्य चतुर्दिशि चत्वारि त्रिसोपानप्रतिरूपकाणि प्रश्नप्तानि वर्णावासो भणितन्यः इति । तेषां खलु त्रिसोपानप्रतिरूपकाणां पुरतः प्रत्येकं २ तोरणाः प्रञ्नप्ताः । ते खलु तोरणाः नानामणिमयाः तस्य खलु पद्महृदस्य बहुमध्यदेशभागः अत्र महद् एकं पद्मं प्रज्ञप्तम् , योजनमायामविष्कमभेण, अर्द्धयोजनं बाह्य्येन, दश्च योजनानि उद्धयेन, द्रौ कोशानु च्छितम् , जलान्तात् सातिरेकाणि दश्च योजनानि सर्वाग्रेण प्रज्ञप्तानि । तत् खलु एकया जयत्या सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्तं, 'सा च जगती' जम्बृहीपजगतीप्रमाणा, गवाशकटकोऽपि तथैव प्रमाणेनेति । तस्य खलु पद्मस्य अयमेतद्रपो वर्णावासः प्रज्ञप्तः, तद्यथा—वज्ञनयानि मूलानि, रिष्टमयः कन्दः, वैहुर्यमयं नालं वैहुर्यमयानि वाह्यपत्राणि, जाम्बृनदमयानि आभ्यन्तरपत्राणि तपतीयमयानि केसराणि, नानामणिमयाः पुष्करास्थिनागाः, कनकमयीकर्णिका । सा खलु अर्द्ध योजनम् आयामविष्कम्भेण, कोशं बाह्ययेन, सर्वकनक्रमयी अच्छा, तस्याः खलु कर्णिकायाः उपरि वहुरमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः, स्र यथानामकः आलिङ्गपुष्कर इति ।।स् ० २।।

टीका-'तस्स जं' इत्यादि । 'तस्स जं वहुसमरमणिक्तस्स' तस्य क्षुद्रहिमकतः खलु वहुसमरमणीयस्य 'भूमिभागस्स वहुमज्झदेसमाए' भूमिभागस्य वहुमध्यदेशभागे अत्यन्त-मध्यभागे 'एत्य जं' अत्र इह खलु 'एके महं पडमदहे जामं दहे पण्णत्ते' एको महान् बृहन् पद्महृदः तन्नामकः हृदः प्रज्ञप्तः, स च कीह्यः ? इत्यपेक्षायामाह-'पाईणपिडणायए' प्राचीनप्रतीचीनायतः-पूर्वपश्चिमयोदीर्घः 'उदीणदाहिणवित्थिणे' उदीचीन दक्षिणवीस्तीर्णः

पद्म हृद्का वर्णन

'तस्स णं बहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्य बहुमज्झदेसभाए एत्थणं इक्के'-इत्यादि ।

टीकार्थ-(तस्स णं वहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए) उस श्लुरुल हिमवंत पर्वत के पहुसमरभणीय भूमि भाग के ठीक बीच में (एत्थ णं एगे महं पडमदहे णामं दहे पण्णत्ते) एक विशाल पद्मद्रह नामका द्रह कहा गया है (पाईण पडिणायए उदीण दाहिण वित्थिण्णे एगं जोवणसहस्सं आयामेणं, पंच जोयण-सयाई विक्खंभेणं, दस जोवणाइं उन्वेहेणं अच्छे-सण्हे रययामयकूले जाव

પદ્મકુદનું વર્ણુન

'तस्स णं बहुसमरमणिडजस्स भूमिभागस्स बहुमञ्झदेसभाए एत्थ णं इक्के' इत्यादि टीक्षार्थ-'तस्सणं बहुसमरमणिडजस्स भूमिभागस्स बहुमञ्झदेसभाए' ते क्षुद्रक्ष िक्षियंत पर्वतना अहुअभरभष्ट्रीय लूभिआग्रनी टीक्ष वच्चे 'एत्थ णं एगे महं पडमदहे णामं दहे पण्णत्ते' स्थिक विशाल पद्मद्रक्ष नाभक्ष द्रक्ष छे. 'पाईण पईणायए उदीण दाहिणवित्थिण्णे एगं जोयण सहस्सं आयामेणं, पंचजोयणस्याइं विक्खंभेणं, दम जोयणाइं, उठवेहेणं अच्छे सण्हे रययामय उत्तरदक्षिणयोविंस्तारवान् 'इकं जोयणसहस्सं आयामेणं' एकं योजनसहस्रमायामेन एक सहस्रयोजनपर्यन्तमायत इति भावः, 'पंचजोयणसयाइं विक्खंभेणं' पश्च योजनशतानि विष्क-म्भेण पश्चशतयोजनपर्यन्तं विस्तारवान्, 'दस जोयणाइं उच्चेहेणं' दश योजनानि उद्वेधेन—भूगतत्वेन । पुनः स 'अच्छे' अच्छः—आकाशस्फटिकवदति निर्मलः, 'सण्हे' श्रक्षणः—चिकणः 'रययामयक् हे' रजतमयक्रलः—रजतमयं क्लं तटं यस्य स तथा—रजतमयतटः, 'जाव' यावत्-यावस्पदेन—'समतीरे वहरामयवालाणे तविष्णजतले सुवण्णसुवभरयणामयवालुए वेस्लियमणिफालियपडलपच्चोयहे सहोयारे सहन्तारे णाणामणि तित्थसवद्धे चाउकोणे अणुप्रवस्तायवप्यांभीरसीयलजले संजन्तपत्तिसस्रणाले बहुउप्पलक्कस्रयस्भगसोगंधियपुंड-रीय सयवत्तपुरुलकेमरोविचए छप्पयपरिश्वजनमाणक्रमले अच्छे विमलस्रिललुण्णे परिहत्थ-भमंतमच्छकच्छमं अणेग सउणमिहणपरिश्वरिए' इति संग्राह्म ।

एतच्छाया—"समतीरः वन्नमयपापाणः तपनीयतलः सुर्श्णशुभ्ररजतमयबालुकः वैड्य-मणिस्फिटिकपटलपच्चोयदः सुखावतारः सुखोत्तारः नानामणितीयसुबद्धः चतुष्कोणः आसु-पूर्व्यसुनातवप्रगम्भीरवीतलजलः लंबन्नप्रविसम्णालः बहुत्पलकुमुदस्भग सीगन्धिकपुण्ड-पासाईए जाव पिडक्विन्। यह दृह पूर्व से पिछिम तक लम्बा है तथा उत्तर से दक्षिण तक विस्तीर्ण है एक हजार योजन की इसकी लंबाई है तथा पांच सौ योजन का यह चौडा हैं इसकी गहराई १० योजन की है यह आकाश और स्फिटिकके जैसा अच्छ-निर्मल है, रुक्ण-चिकना है इसका तट रजतमय है यहां यावत्यद से-'समतीरे, वह्रामयपासाणे, तचिण्डजतले, सुवण्ण सुन्भरयणा-

मयबालुए, वेबलियमणि फालिय पडलपच्चोयडे सहोयारे सहत्तारे, णाणा-मणितित्थसुबद्धे, चाउक्कोणे, अणुपुच्वसुजायवप्यगंभीरसीयलजले, संच्छ-ण्णपत्तिमसमुणाले बहु उप्पलकुमुयसुभग सोगंधिय पुंडरीय सयवत्तपुरुल-केसरोवचिए, छप्पय परिसुज्जमाणकमले, अच्छविमलसलिलपुण्णे, परिहत्थ-भमंतमच्छकच्छभं, अणेग सउणमिहुणपरिअरिए'' इस पाठ का संग्रह हुआ

कूले जाव पासाइए जाव पडिरूवित' के द्रह (धरे।) पूर्विश पश्चिम सुधी लांलुं छे उत्तरथी हिल्ला सुधी विस्तीर्ण छे. के 'सहस्र थे। जन जेटली के द्रहनी लंका छे. के आहार कि सहित के वे। क्षण्य कि मिर्नि के 'सहस्र थे। जन जेटली के द्रहनी लंका छे. का जे। तट रजतमथ छे. काहीं यावत पश्ची 'समतीरे वहरामयपासाणे, तवणिज्जतले सुवण्य सुक्रमरययामयवालुए, वेहलियमणिकालिय पडलपच्चोयडे सुहोयारे, सुहुत्तारे, णाणामणितित्यसुबद्धे चाउनकोणे, अणुपुट्यसुजायप्यपंभीरसीयलजले, संच्लण्यपत्तिससुणाले, बहु उत्तल कुमुय सुभय सोगंधिय पुंडरीय सयवत्त फुल्लकेसरोविचिए, छप्ययपरिमुज्जमाणकमले, अच्ल विमलसिललपुण्णे परिहत्यभमंत मच्लकच्छमं अणेग सडण मिद्यणपरिअरित' आ पाह अंश्रदीत थये। छे. आ पाहनी व्याण्या आ प्रभाणे छे-निभता

रीक शतपत्र फुल्लकेसरोपवितः पट्पद्परिश्रुज्यमानकमलः अच्छविमलस्लिलपूर्णः परिहस्तस्रमन्मत्स्यकच्छपानेकशकुनिम्युनपरिचरितः'' इति । एतद्वचारूया—''समतीरः समानि
निम्नोन्नतत्वरिद्वानि तीराणि तटानि यस्य स तथा वज्ञनयपापाणः—वज्ञमणिमयप्रस्तरः,
तपनीयत्लः तपनीयम् उत्तमजातीय सुवर्णे तन्मयं तलं यस्य स तथा, सुवर्णशुस्ररजतमयवालुकः—युम्नं—शुवलं यत् सुवर्णे तच्च रजतं चेत्युभयमयी वालुका यस्य स तथा, वेड्येमणिस्फटिकपटल—वेड्यमणीनां स्फिटिकःनां च यत् पटलं समूरः तन्मयः पच्चोयडः—तटसमीप वर्ष्युन्नतप्रदेशो यस्य तथा, 'पच्चोयड' इति देशीयः शब्दः पूर्वोक्तार्थकः । सुलावतारः सुलः सुलदः
अवतारः जलप्रवेशो यस्य स तथा, सुल्लोत्तारः—सुलद्गिभमनः, नानामणितिर्थसुबद्धः—
नानामणिसुबद्धतीर्थः अत्र प्राक्रतत्वातसुबद्धशब्दस्य परप्रयोगः नानामणिभिः चन्द्रकान्तादि
नानाविभमणिभिः सुबद्धं सुष्टुतयोपनिवद्धं तीर्थं 'घाट' इति प्रसिद्धं स्थलं यस्य स तथा ।
चतुष्कोणः चतुरसः आनुप्वर्यसुजातवप्रगम्भीरशीतलज्ञलः आनुप्र्येण क्रमेण सुजातं सुनिव्यन्नं वप्रां पाली यस्य स तथा गम्भीरं शीतलं च जलं यस्य स तथा, उभयोः कर्मधारयः
संख्रपत्रविसम्लालः संख्नानि व्याप्तानि पत्रविसल्लालानि यत्र स तथा वहुत्वलक्तसुद्ध-

है इस पाठ की ज्याख्या इस-प्रकार से है-निम्नता और उन्नत्व से रहित होने के कारण इसके तीर-नद-समान हैं वज्रमणिमय इसके पाषाण है उत्तम-जातीय सुवर्णमय इसका तल माग है। ग्रुम्र-स्वर्णमय और रजतमय इसकी बालुका है इसके तटके समीपका जो उन्नतमदेश है वह बेहूर्थमणियों के और स्फिटिकों के समूह-से निष्यन्त हुआ जैसा है 'पच्चोयड' यह देशीय शब्द है इसके जो घाट हैं वे अधिक मणियों के बारा बनाये हुए हैं। प्राकृत होने से यहां सुबद्ध बाब्द का पर प्रयोग हुआ है यह चौकोण है इसकी पाली कमशः वह कमशः निष्यन्त है-इसका जल गंभीर और शीतल है इसमें जो पन्न, बिस और मृणाल है वे सब छन्न है अर्थात् यह पन्न, बिस और मृणालों से ज्यास है यह विकसित और केशरोपचित अनेक चन्द्रविकाशीकुव-लयों से, कुमुद्रों से-कैरबों से, सुभगों से-सुन्दरकमलों से, सौगंधिकों से

અને હત્તત્વથી રહિત હોવા બદલ એના કિનારાઓ-તટો-સમાન છે. વજ મણિમય એના પાષાણે છે. હત્તમ જાતીય સુવર્ણ નિર્મિત એના તલ લાગ છે. શુલ્ર સુવર્ણમય અને રજતમય એની વાલુકા છે. એના તટની પાસેના જે ઉન્નત પ્રદેશ છે તે વૈડ્યમિણુઓના અને સ્ફટિકાન સમૂહાથી નિષ્પન્ન હોય એવા છે. 'વच્चोयड' આ દેશીય શબ્દ છે. એમાં પ્રવિષ્ટ થવું સુખદ છે. અને એમાંથી ખહાર નીકળવું પણ સુખદ છે એના જે ઘાટા છે તે અધિક મણુઓ દ્વારા નિર્મિત છે. પ્રાકૃત હોવાથી અહીં 'સુવદ્ધ' શબ્દના પ્રયોગ થાય છે. એ ચોખૂણીયા છે. એની પાલી કમશા નિષ્પન્ન થયેલી છે. એમાંનું પાણી ગંભીર અને શીતળ છે. એમાં જે પત્રા વિસ મૃણાલ છે તે સર્વ છન્ન છે. એટલે કે એ હદ પત્ર, વિસ અને મૃણાલેથી વ્યાપ્ત છે. એ વિકસિત અને કેશરાપચિત અનેક ચંદ્ર વિકાશી કુવલયાથી

भगसौगित्यिक पुण्डरीकशतपत्र फुल्लकेसरोपि चितः फुल्लानि विकसितानि केसरोपिचतानि केसरयुक्तानि बहूनि उत्पलकुमुदसुभग सौगित्यिक पुण्डरीकशतपत्राणि तत्रोत्पलानि कुवलयानि चन्द्रविकाशीनि कमलानि कुमुदानि कैरवणि, सुभगानि सुन्दराणि कमलानि सौगित्यिकानि कल्द्राराणि सुगन्धीनि कमलानि, पुण्डरीकाणि शुक्लकमलानि, शतपत्राणि श्वतसंस्यपत्र— सुकानि कमलानि चैतानि यत्र स तथा, अत्र विशेषणदाचकयोः फुल्लकेसरोपचितपद्योः पर प्रयोगः प्राकृतत्वाद्वोध्यः, पट्पद्पिसुज्यमानकमलः—श्रमरिलह्यमानकमलः, अच्लितिमलसलिल्याने प्रविक्तसल्लिल्यानि चीति सिल्यानि यानि सिल्लानि वानि सिल्लानि वेः पूर्णः भृतः परिहस्त अमत्—मत्स्यकच्ल्यानेक शक्तनिभृत्वपदिचरितः एरिहस्तं निष्ठुणं यथा स्थाचथा अमन्तः इतस्ततः पर्यटन्तः मत्स्याः कच्ल्याश्च तथा अनेकेषां शक्तानां पक्षिणां यःनि मिश्रनानि स्वी पुंसयुगलानि च, तैः परिचरितः सेवितः" इति । 'पासाईए जाव पिक्ष्किते प्रासादीयो यावत् प्रतिरूपः प्रासादीयो दर्शनीयोऽभिरूपः प्रतिरूपः इत्येषां व्याख्या पूर्वगता । 'से णं प्राप् पउमवरवेइयाए' स पद्महदः सल्ड एकया पद्मवरपेदिकया 'एगेण य वणशंडेणं' एकेन च वनपण्डेन 'सन्वत्रो' सर्वतः सर्वासु दिशु 'समता' समन्तात् सर्वविदिशु 'संपरिक्षस्ते' संपरिक्षितः—परिवेष्टितः, अत्र 'वेइयावणसंडवण्या भाणियव्योत्ति' वेदिका वनपण्डवर्णको भिणत्वयः, तत्र वेदिका वर्णनं चतुर्थस्त्रतः वनपण्डवर्णनं च पञ्चमस्त्रतो बोध्यम् ।

-सुगंधितकमलां से, पुण्डरीकों से-शुभ्र कमलों से, शत पत्रों से शतसंख्यक पत्रवाले कमलों से युक्त है यहां-प्राकृत होने से विशेषण वाचक फुल्ल और केशरोपचितपदों का पर प्रयोग हुआ है इसके जो कमल हैं वे सब भ्रमरों द्वारा परिभुज्य हैं अतिस्वच्छ जल से यह परिवृर्ध है अच्छी तरह से यह इत्स्ततः परिभ्रमण करते हुए भ्रमरों, से, कच्छपों से तथा अनेक पक्षियों के जोडों से सेवित हे 'प्रासादीय यावत् प्रतिरूप' आदि शब्दों की व्याख्या पूर्व में की जा चुकी है यहां यावत् शब्द से 'द्रीनीयः अभिरूपः' इन पदों का ग्रहण किया गया है यह पद्महद सब तरफ से एक पद्मवर्दिका से और एकवनषण्ड से परिक्षित्त है-परिवेष्टित है वेदिका वर्णन चतुर्थ सुभ्र से वनखण्डवर्णन

કુમુદ્દાથી, કરવાથી—સુભગાથી—સું દર કમળાથી, સૌગાંધિકાથી—સુગંધિત કમળાથી, પુંડરીકાથી શુભ કમળાથી, શતપત્રાથી—શત સંખ્યક પત્રવાળા કમળાથી યુક્ત છે, અહીં પ્રાકૃત હાવા અદલ વિશેષણ વાચક 'फुल्ल' અને 'केશरोपचित' પદના પ્રયોગ થયેલા છે. એની અંદર જે કમળા છે તે બધાં ભ્રમરા દારા પરિભુજય છે. અતિ સ્વચ્છ જળથી એ હૃદ પરિપૂર્ણ છે. એ સારી રીતે ઇતિસ્તતા પરિભ્રમણ કરતા ભ્રમરાથી, કચ્છપાથી તેમજ અનેક પક્ષી-એના જોડાઓથી સેવિત છે. 'પ્રાસાધીય યાવત્ પ્રતિહ્તવ' વગેરે શખ્દાની આખ્યા પહેલાં કરવામાં આવી છે. અહીં યાવત્ પદથી 'દર્શતીયા અમિત્રવ' એ પદા શહ્યુ થયા છે. એ પદ્માનું એક પદ્મીર એક પદ્માર એક પદ્મીર એક પદ્મીર એક પદ્મીર એક પદ્મીર એક પદ્માર એક પદ્માર એક પદ્માર એક પદ્મીર એક પદ્મીર એક પદ્માર એક પદ્માર એક પદ્માર એક પદ્મીર એક પદ્માર એક પદ્માર

'तस्स णं पउमद्दस्स चउदिसिं चत्तारि तिसोवाणपिड्रिवाग' तस्य खळ पद्महदस्य चर्रिदिश चत्वारि त्रिसोपानप्रतिरूपकाणि त्रयाणां सोपानामम् आरोहावरोहसाधनानां समाहारः त्रिसोपानं सोपानपङ्क्त्रयं तद्बहुत्वे त्रिसोपानानि एकैकस्यां दिशि तिस्रस्तिस्रः सोपानपङ्क्यः तान्येव प्रतिरूपकाणि सुन्दराकारसम्पन्नानि अत्र विशेषणपरप्रयोगः प्राकृतत्वात् तानि त्रिसोपानप्रतिरूपकाणि 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्तानि, तेषां 'वण्णावासो' वणीवासः वर्णन पद्धतः 'भाणियव्योत्ति' भणितव्यः नक्तव्य इति, स यथा - 'वइरामया निग्मा रिहामया पइहाणा, वेकल्यामया संभा, सुवण्णरूपमया फलगा, वइरामया संघी, लोहितवस्त्रमईओ सूईओ, नाणामणिमया अवलंबणा, अवलंबणवाहाओ'' एतच्लाया- 'वल्लमयाः नेषाः रिष्ट-मयानि प्रतिष्ठानानि, वेद्ध्यमयाः स्तम्भाः सुवर्णरूपमयानि फलकानि वल्लमयाः सन्धयः, लोहिताक्षमय्यः स्चयः, नानामणिमयानि अवलम्बनानि अवलम्बनवाहाः'' इति ।

एतद्व्याख्या-तेषां त्रिसोपानप्रतिरूपकाणां नेमाः द्वारभूमिभागाद्ध्व निष्कामन्तः प्रदेशाः वज्ञमयाः वज्ञरत्नमयाः प्रतिष्ठानानि-मूलपादाः रिष्टमयानि रिष्टरत्नमयानि, स्त-पञ्चम सूत्र से जान लेना चाहिये (तस्सणं पउमद्दहस्स चडिसिं चत्तारि तिसो-वाणपिहरूवा पण्णत्ता) उस पद्महूद् की चारों दिशाओं में सुन्दर र त्रिसोपान-सोपानत्रय-है अर्थात् एक दिशा में तीन र सुन्दर र सीडियां है (वण्णावासो-भाणियव्वोत्ति-तेसिणं तिसोवाणपिहरूवगाणं पुरओ पत्तेषं र तोरणा पण्णत्ता, तेणं तोरणां णाणामिणियया, तस्सणं पउमदह्स्स चहुमज्झदेसभाए एत्य महं एगे पउमे पण्णत्ते) इन त्रिसोपान प्रतिरूपकों का वर्णावास-वर्णनपद्धित-यहां कह लेना चाहिये जो कि इस प्रकार से है 'वहरामया निम्मा, रिडामया पह्हाणा, वेरुलियाभया खंभा, सुवण्णरूप्यमया फलगा, वहरामया संघी, लोहितवस्व-मईओ सईओ, नाणामिणमया अवलंवणा अवलंवणवाहाओ' इन पदों को व्याख्या इस प्रकार से है-इन त्रिसोपान प्रतिरूपकों के जो नेम-द्वारा भूमिभाग-

वेहिंडा वर्णुन अतुर्थ सूत्रमांथी जाणी बेवुं जोंडिंगे. 'तस्स णं पउमद्दस्स चडिद्सें चतारि तिसोवाणपिक्तवा पण्णता' ते पश्चहृदनी विभिन्न सुंदर-सुंदर त्रिसे।पानत्रथे। छे. ओटि हे हरेड हिशामां त्रणु-त्रणु सुंदर से।पान पंडितकें। छे. 'वण्णावासो माणियव्वोत्ति-तेसिणं तिसोवाणपिक्तवराणं पुरओ पत्तेंयं र तोरणा पण्णत्ता, तेणं तोरणा णाणामणिक्या, तस्स णं पडमद्दस्स बहुमज्झदेसमाए एत्थ महं एते पडमे पण्णत्ते' के त्रिसे।पान प्रतिइपडे।नी वर्णुन पडित अंगे अत्रे स्पष्टता आवश्यक छे. ते का प्रमाणे छे—'वहरोमया निम्मा, रिट्टामया पद्दाणा, वेरिलियामया खंमा, सुवण्णकृत्पमया फलगा, वइरामया संधी, लोहितक्तव मईओ, सूईओ, नाणा मणिमया अवलंबणा अवलंब्वण बाहाओं' के पहेंगी व्याप्या का प्रमाणे छे. के त्रिसे।पान प्रतिइपडे।ना के नेभा-द्वारक्ष्मि लागथी उपरनी तरह इत्थित प्रहेशे। छे ते पक्षमय छे. केसनुं प्रतिइपडे।न-सूक्षाह-रिष्ट रत्नभय छे. स्तं ल वैदूर्य रत्नभय छे. इतक

म्माः -वैङ्घंमयाः -वैङ्घंरत्नमयाः, फलकानि 'पाट' इति भाषा प्रसिद्धानि सुवर्णरूप्यमयानि, सन्धयः फलकाणां सन्धानानि वज्रमयाः वज्ररत्नमयाः, स्वयः -फलकद्वय सम्वन्धकारकाः पादुकास्थानीयाः लोहिताक्षमय्यः लोहितर्तनमय्यः अवलम्बनानि नानामणिमयानि अनेक-विधमणिमयानि, एवम् अवलम्बनवाहाः अवलम्बनिभत्तयोऽपि 'तेसिणं' तेषां खल्ज 'तिसो-वाणपि हिक्याणं' विसोपानप्रतिरूपकाणां 'पुरओ' पुरतः - अग्रे 'पत्तेयं र' प्रत्येकम् र एकै-कस्य जिसोपानप्रतिरूपकस्याग्रे 'तोरणा पण्णत्ता' तोरणाः प्रज्ञप्ताः, 'तेणं तोरणा' ते खल्ज तोरणाः कीद्याः ? इत्याह-'णाणामणिमया' नानामणिमयाः अनेकविधमणिमयाः, इत्यादि तोरणवर्णनमत्रैव सप्तमस्त्रे जम्बुद्दीपस्य विजयद्वारवर्णनव्याख्यायां द्रष्टव्यम्।

'तस्स णं पउमद्दस्स वहुमज्झदेसभाए' तस्य खलु पद्महूदस्य वहुमध्यदेशभागे अत्यन्तमध्यमागे 'एत्थ' अत्र अस्मिन् प्रदेशे 'महं' महत्—बृहत् 'एगे पउमे' एकं पद्मं-कमलं पण्यत्ते' प्रज्ञप्तम्, तस्य यन्महत्त्वमुक्तं तत् स्पष्टी करोति 'जोयणं' योजनं—योजमपरिमितम् 'आयामविक्तंभेणं' आयामविष्कंभेणं दर्ध्यविस्ताराभ्याम् 'अद्ध जोयणं' अद्ध्योजनं योजन से ऊपर की ओर उठे हुए प्रदेश हैं वे वज्रमय है, इन के प्रतिष्ठान—मूल पाद—रिष्ट रत्नमय हैं स्तम्भ वैद्वर्थरत्नमय हैं फलक—पिटये—इनके सुवर्णमय और रूप्यमय हैं अर्थात् गंगाजमूनी हैं संघी इनको वज्रमय है स्वचियां इमकी लोहि-ताक्षरत्मसय है इनके अवलम्यन और अवलम्यनयाहा—अवलम्बनित्तियां अनेक प्रकार के मणियों की बनी हुई हैं। (तेसि णं तिसोवाण प०) प्रत्येक सोपानत्रयके (पुरओ पत्तेयं २ तोरणा पण्णत्ता) आगे तोरण कहे गये हैं

(तेणं तोरणा णाणामणिमया तस्सणं पडमइहस्स बहुमड अदेसभाए एत्थ महं एगे पडमे पण्णत्ते) ये तोरण अनेकमणियां के बने हुए हैं इस पद्म द्रह के ठीक बोच में एक विशाल पद्म कहा गया है (जोयणं आयामविक्खं-भेणं अद्ध जोयणं बाहल्लेणं, दस जोयणाइं डब्वेहेंणं दोकोसे असिए जलं-

[ै]हन तोरणों का वर्णन यहीं पर सप्तम सूत्र में जंबूद्वीप के विजय द्वार के वर्णन में किया गया है।

स्यार्द्ध 'बाहरुछेणं' बाहरुयेन पिण्डेन 'दस जोयणाई उच्वेहेणं' दश योजनानि उद्वेधेन जला-वगाहेन जलान्तर्गतत्वेनेत्यर्थः 'दो कोसे उसिए' द्वी क्रोशी उच्हिन्तम् उच्चत्वम् कुत उच्छिन तम् ? इत्याह-'जलंताओं' जलान्तात्-जलोपरिभागात् , एवं 'साइरेगाई' सातिरेकाणि साथिकानि 'दस जोयणाई' दश योजनानि 'सब्बरगेणं' सर्वाप्रेण सर्वप्रमाणेन 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तानि जलावगाढोपस्तिनभाग सत्ककोशद्वयरूपकमलमानमीलने एतावता एव सम्भवात् । 'से णं' तत् पद्मं खलु 'एगाए जगईए' एकया जगत्या प्रकारकल्पया 'सन्त्रओ' सर्वतः सर्वदिश्च 'समता' समन्तात् सर्वविदिश्च 'संपरिविखत्ते' संपरिक्षिप्तं परिवेष्टितम् सा च पद्मपरिवेष्टन भूता जगती किम्प्रमाणा ? इत्याह-'जंबुद्दीवजगइप्पमाणा' जम्बृद्धीपजगती प्रमाणा जम्बृद्धी-पस्य या वेष्टनभूता जगती तत्त्रमाणा तत्परिमिता बोध्या, तथाहि - अध्वमुच्चत्वेनाष्ट योज-नानि मुले विष्करभेण द्वादश योजनानि, मध्ये विष्करभेणाष्टयोजनानि, उपरि विष्करभेण ताओ, साइरेगाई दस जोयणाई सन्वरगेणं पण्णत्ते) इस पद्म की लम्बाई और चोडाई एक योजन की मोटाइ इसकी आधे योजन की एवं उद्देध इसका दश योजन का कहा गया है यह जलान्त से दो कोश ऊपर उठा हुआ है इस तरह इसका कुल विस्तार १० योजन से कुछ अधिक कहा गया है (क्षेणं एगाए जगतीए सव्वओ समंता संपरिक्षित्र जबुदीव जगइप्पमाणा गवक्खकडए वि तह-चेव पमाणेति तस्स णं पडमस्स अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णाके, तं जहा-वहरामया मूला, रिट्टामए कंदे, वेरुलियामए णाले, वेरुलियामया बाहिर पत्ता, जम्बूणयामया अविभतरपत्ता, तवणिज्जमया केसरा, णाणामणिमया पोक्ख-रहिभाया, कणगामई कण्णिगा) वह कमल प्राकार रूप एक जगती से सब ओर से घिरा हुआ है यह पर्मपरिवेष्टन रूप जगती जम्बू द्वीप जगती के धरावर है-जैसे इसकी उंचाई आठघोजन की है मूल में इसका विष्कम्भ १२ घोजनका है मध्यमें इसका विष्कम्भ आठ योजन का है तथा उपर में इसका विष्कम्भ

सन्त्रमणं पण्णत्तं से पद्मनी लंजाई अने पहाणाई सेह ये। जन केटली अने जाउ। अउधा ये। जन केटली अने ओनी इदेघ हश ये। जन केटली इदेश मां आवेल हे. ओ क लान्त्रधी अ आई इपर इरेल हों हों अ आप अभाई आने। इप विस्तार १० ये। जन इरतां हां इंड अधिह इदेशमां आवेल हैं. भी ण एगाए जगतीए सन्त्रओं समंता संपरिक्खित जंबुदीय जगइपमणा गवक्खक हए वि तह चेव पमाणेंति तस्स ण पडमस्स अयमेवारू वे वण्णावासे पण्णत्ते तं जहां वहरामया मूला, रिद्रामए कंदे, वेरलियामए णाले वेरलिया मया, बाहिरपत्ता जम्बूण्या मया आर्टिमतरपत्ता तवणिड जमया केसरा णाणामणिमया पोक्खरिशाया, कण्णामई कण्णिगां ते इभण प्राहार इप ओह क्यातीथी याभेर आहत्त हो. ओ पद्मपरिवेष्टन इप क्यातीथी याभेर आहत्त हो. ओ पद्मपरिवेष्टन व्यावा केला क्याती कंपाती क्यातीनी अराधर हो. केमडे कोनी अथाई आहे याह ये। जन्म केटली हो, मूलमां केने। विष्टांक आदेश ये। केमडे केमी अथाई आहे याह विष्टांक केटली हो, मूलमां केने। विष्टांक केमडे केमी अथाई तेना विष्टांक

चत्रारि योजनानि अतो मूळे विस्तीर्णा मध्ये संक्षिप्ता, उपिर तनुकेति गोपुच्छ संस्थान-संग्थितेति । एतच्च प्रमाणं जळादुपरिष्टाद्बोध्यम् , दशयोजनक्षपजळावगाहनप्रमाणस्यात्रा विविवितत्वात् , 'गवक्खकडए वि' गवाक्षकटको अपि जाळसमूहोऽपि 'तहचेव पमाणेति' तथैव प्रमाणेन उच्चत्वेनार्द्धयोजनम् विष्कम्भेण पश्चधनुःशतानीत्यर्थः ।

अथ पद्मवर्णकमाह-'तस्स णं पउमस्स अयमेयारूवे' तस्य ख्छ पद्मस्य अयमेतद्रूषः वक्ष्यमाणरूपः 'वण्णावासे' वर्णावासः वर्णनपद्धतिः 'पण्णते' प्रज्ञप्तः, 'तं जहा वज्जमया' तद्यथा-वज्रमयानि वज्ररत्नमयानि 'मूला' मुलानि कन्दादधस्तिर्यङ्निः स्तलाटाज्टावयवरू-पाणि 'रिद्वामए' रिष्टमयः-रिष्टरत्नमयः 'कंदे' कन्दः मूलनालमध्यवर्ती ग्रन्थिः, 'वेरुलि-यामए' वेड्रयमय-वेड्यरत्नमयं 'णास्टे' नालं-कन्दोपरि मध्यवत्र्यवयवः, 'बेरुल्यिमया' वेड्टयमयानि 'बाहिरपत्ता' वाह्यपत्राणि अत्राऽयं विशेषोऽन्यत्र वाह्यानि चरवारि पत्राणि वैदूर्यमयानि अवशिष्टानि तु रक्तसुवर्णमयानीति 'जंबूणयामया' जाम्बूनदमयानि ईषद्रक्त-चारयोजन का है इसका कारण यह मूल में विस्तृत, मध्य में संक्षिप्त और जपर में पतली हो गइ है अतएव इसका आकार गोपुच्छ के जैसा हो गया है यह जो जगती का प्रमाण कहा है वह जल से ऊपर उठी हुइ जगती का प्रमाण कहा है क्यों कि यह जल के भीतर १० योजन तक गइ है सो वह प्रमाण यहां विव-क्षित नहीं हुआ है इस जगती मे जो गवाक्षकटक-जालक समूह है वह भी जंबाई में आधे योजन का है और विष्कम्भ में ५०० धनुषका है, इस पद्म का वर्णावास-वर्णन पद्धति-इस प्रकार से हैं-जैसे-इसके मूल-कन्द से नीचे, तिरहे निकले हुए जटा जूटरूप अवयवविशेष-रिष्ट रत्नमय हैं कन्द-मूल-नाल को मध्यवर्ती गांठ-इसका वैड्र्यरत्नमय है नाल-कन्द के ऊपर मध्यवर्ती अवः यव-वैडूर्वरत्नमय है बाह्य पत्र भी इसके वैडूर्वरत्नमय ही हैं यहां इतनी विशे

આહ યોજન જેટલા છે. તેમજ જિપરમાં આના વિષ્કંભ ચાર યોજન જેટલા છે. એથી મૃળમાં એ વિસ્તૃત મધ્યમાં સંક્ષિમ અને ઉપર પાતળી થઈ ગઇ છે. આના આકાર ગાપુચ્છ જેવા થઈ ગયા છે. આને અત્રે જગતીનું પ્રમાણ કહેવામાં આવેલ છે. કેમકે એ પાણીની અંદર ૧૦ યાજન જેટલી પહોંચેલી છે, તેથી તે પ્રમાણ અત્રે વિવક્ષિત નથી. એ જગતીમાં જે ગવાલ કટક નલક સમૃદ્ધ છે—તે પણ ઊંચાઈમાં અડધા યોજન જેટલા છે. અને વિષ્કંભમાં ૫૦૦ ધનુષ જેટલા છે. એ પદ્મની વર્ણન પહિત આ પ્રમાણે છે એના મૃળા કન્દથી નીચે ત્રાંસા ખહિ: નિસત જટાજૂટ રૂપ અવયવ વિશેષ—રિષ્ટ રતનમય યે. એનું કન્દ—નૃળ નાવની મધ્યવતી ગાંઠ વૈડૂર્ય—રતનમય છે. નાલ—કન્દની ઉપર આવેલ મધ્યવતી અવયવ—વૈડ્યેરતનમય છે. એના ખાદ્યપત્રા પણ વૈડ્યેરતનમય છે. અહીં આટલી વાત વિશેષ સમજવી કે બહારના પત્રામાંથી આર પત્રા વેડ્યેરતનમય છે અને શેષ પત્રા

सुवर्णमयानि 'अब्नितरपत्ता' अभ्यन्तरपत्राणि व्यक्तितु पीतस्वर्णमयान्युक्तानि तथा 'तवणिक्षमया' तपनीयमयानि रक्तवर्णस्वर्णमयानि 'केसरा' केसराणि 'णाणामणिमया' नानामणिमयाः अनेकविश्वमणिमयाः 'पोखरद्विभागा' पुष्करास्थिभागाः कमलबीजविभागाः, 'कणगामई' कनकमथी—स्वर्णमयी 'कण्णिका' कर्णिका—वीजलीकः, अथ कर्णिकामानाद्याह—'सा
गं' सा खल्छ कर्णिका 'अद्भ्रजोयणं' अर्द्ध योजनम् योजन्तस्याद्धम् 'आयामविक्खंभेणं दैर्ध्यविस्ताराभ्याम् 'कोसं' क्रोशं-क्रोशपर्यन्तम् 'वाद्यल्लेणं' वाद्ययेन पिण्डेन, 'सन्वकणगःमई'
सर्वकनकमयी सर्वात्मना कनकमयी स्वर्णमयी, 'अच्छः' अच्छा आकाशस्करिकविद्यमिला
अत्र 'सण्हा' इत्यादि पदानामिष संङ्ग्रहो बोध्यः, तथाहि 'लष्टा घृष्टा नीरजाः निर्मला
कत्र 'सण्हा' इत्यादि पदानामिष संङ्ग्रहो बोध्यः, तथाहि 'लष्टा घृष्टा नीरजाः निर्मला
प्रितिरूपेति फल्तिस् । एशं व्याख्या चतुर्शस्चवाजातिवर्णने विल्लोकनीया। 'लीसेणं' तस्याः
खल्ड 'कण्णियाए' कर्णिकायाः 'उर्ण्य' उत्ररि—कर्ध्य 'बहुसमग्रमणिज्जे' बहुसमरमणीयः
अत्यन्तसमतलरमणीयः, 'भूमिभागे पण्णत्ते' भूमिभागः ज्ञच्यः, स कीद्यः ? इत्यपेक्षाया-

षता-है कि वाहिर के पन्नों में से चार पन्न वैड्र्यरत्ममय हैं और वाकी के पन्न रक्त सुवर्णमय हैं तथा-भीतर के जो पन्न हैं वे जाम्ब्रुमद्मय-ईषद्रक्त सुवर्णमय हैं कहीं र ऐसा भी कहा गया है कि वे पीतस्वर्णमय हैं इसके केशर रक्त सुवर्ण मय हैं इसके कमलवीजविभाग अनेक विधमणिमय हैं कर्णिका इसकी स्वर्णमयी हैं (सा णं अदं जोपणं आयाभविक्कंभेणं कोसं वाहरुलेणं सन्वकणगामई अच्छा) यह आयाम और विष्क्रम्भ की अपेक्षा अर्धयोजन की है एवं बाहरूय-मोटाई-की अपेक्षा एक कोश की है यह सर्वात्मना स्वर्णमयी है तथा आकाश और स्फटिकमणि के जैसी निर्मल है। यहां 'सण्हा' इत्यादि पदों का भी संग्रह हुआ है-जैसे 'लष्टा, पृष्टा, मृष्टा, नीरजा, निर्मला, निष्कृं, निष्कंकटच्छाया, स मभा, समरीचिका, सोयोता, प्रासादीया, दर्शनीया, अभिकृपा, प्रतिकृप' इन

रक्त सुवर्णुभय छे. तेमक अंहर के पत्रे। छे. ते कम्णुनहमय-धवहरक्त सुवर्णुभय छे. हेटलाइ स्थाने आवुं पण् इथन छे है की पीत स्वर्णुभय छे. कीनां हैशरा रक्त सुवर्णुभय छे. कीनां हैशरा रक्त सुवर्णुभय छे. कीनां इभण जीक विलाणे। अनेऽविधमिण्यियेश्यी निर्मित छे. आनी हिण्डिंश सुवर्णुभय छे. 'सा णं अद्धन्नोयणं आयामित्रक्तंभेणं कोसं बाहल्लेणं सन्वकणगामई अच्छीं' की आयाम अने विष्ठं लनी अपेक्षाके अउधा थे।कन केटली छे. अने आहुत्य काउधिनी अपेक्षा कोई जाव केटली छे. को सर्वित्मना सुवर्णुभयी छे तेमक आहाश अने अने स्इटिइमिण् केवी की निर्मुण छे. अहीं 'सण्हा' वर्णेर पहाने। पण् संश्रद्ध थयेल छे. केभई-'लब्दा, पृष्टा, मृष्टा, नीरजा, निर्मला, निष्पंका, निष्कंकटच्छाया, सप्रभा, समरीचिका, सोद्योता, प्रासादीया दर्शनीया, अमिल्या, प्रतिक्ता' की पहानी व्याप्या थे।था सूत्रजत क्रातीना वर्णुनमां कीई देवी कीईकी. 'तीउणं किण्णयाण उपिंप बहुसमरमणिक्ने मूमिमागे

माह-'से जहा णामए आर्लिगपुबल्वरेइ वा॰' स यथा नामक आलिङ्गपुष्कर इति वा इत्यादि भूमिभागवर्णनं न्याख्यासहितं षष्ठ सूत्रतो बोध्यम् ॥स्व० २॥

म्लम्-तस्स णं बहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स बहुमङझदेसभाए एत्थ णं महं एगे भवणे पःणत्ते, कोसं आयामेणं, अद्धकोसं विवर्षं-भेणं, देसूणगं कोसं उद्धं उच्चत्तेणं, अणेगखंभसयसव्णिवट्टे पासाईए दरिसणिज्जे । तस्स णं भवणस्स तिदिसिं तओ दारा पण्णता । तेणं दारा पंचधणुसयाई उद्घं उद्यरेणं अङ्काइजाई धणुसयाई विक्लंभेणं, तावइयं चेव पवेसेणं। सेआ वरकणगेथूमिआ जाव वणमालाओ णेय-व्वाओ । तस्स णं भवणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे सृतिकागे एण्णत्ते, से जहा णामए आलिंगपुक्खरेइ वा॰। तस्त णं बहुसङ्झदेसभाए एत्थ णं महई एगा मणिपेडिया पण्यता। सा णं मणिपेडिया पंच थणुसयाइं आयामविक्खंभेगं अहाइजाइं धणुसयाइं वाहल्छेणं, सद्त्रमणि-मई अच्छा० । तीसेणं मणिपेहियाए उध्यि एत्थ णं सहं एगे सयणिज्जे पण्णते । सयणिज वण्णओ भागियद्यो । से जं पउमे अण्णेणं अट्ट-सएणं पडमाणं तदद्धुचनव्यमाणिमनाणं सब्बओ समंता संपरि-क्लिते। ते णं पउमा अद्धजोयणं आयामविक्लंभेणं, कोसं वाहल्लेणं, दसजोयणाइं उठवेहेणं, कोसं ऊसिया, जलंता श्रो साइरेगाइं दस जोय-णाइं उच्चत्तेणं। तेसि णं पडमाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णते, तं पदों की व्याख्या-चतुर्थ सूत्र गत जगती के वर्णन में देखलेना चाहिये, (तीसेणं कण्णियाए उपि बहुसमरमणिज्जे भूजिभागे पण्णाते) इस कर्णिका के ऊपर का भूमि भाग ऐसा वहुसमरमणीय कहा गया है (से जाहा णामए आर्लिंग पुक्खर इति वा) जैसा की बहुसभरमणीय आलिङ्ग पुष्कर-छदंग का मुख-होता है इत्यादि रूप से इस भूमि भाग का वर्णन व्यक्यासहित छठ वें सूच-से जान छेना चाहिये॥२॥

पण्णत्ते' के हिर्णि हानी उपरने। भूमिलाग केवे। अहुसभरमणीय हहेवामां आवेस छे 'से जहां णामए आलिंगपुकर इति वा' है केवे। अहुसभरमणीय आसिंग पुष्हर-मृहंग-मुणने। है।य छे. धंत्याहि ३५मां के भूमिलागतुं वर्जुन व्यापया सहित षष्ठ सूत्रमांथी जाणी हैवं केि के। ॥ सू. २॥

जहा—बहरामया मूला जाब कणगामई कविणया। सा णं कविणया कोसं आयामेणं अह्कोसं वाह्रुलेणं, सन्दकणगामई अच्छ इति । तीसे णं किणयाए उदिंप बहुससरमिणि जा नणीहिं उबसोभिए। तस्स णं पउमस्स अवरुत्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरिथमेणं एत्थ णं सिरीए देवीए चउव्हं सामाणियसाहरूसीणं चत्तारि पउमसाहरूसीओ पण्णताओ। तस्स णं पउमस्स पुरिव्यमेणं एत्थ णं सिरीए देवीए चउण्हं महत्तरि-याणं चत्तारि पडमा परणता । तस्स णं पडमस्स दाहिणपुरिथमेणं सिरीए देवीए अधिभतरियाए परिसाए अड७हं देवसाहस्सीणं अट्ट पउ-मसाहस्सीओ पण्णताओ । दाहिणेणं मज्झिमपरिसाए दसणहं देव-साहस्सीणं दस पउमसाहस्सीओ पण्णताओ। दाहिणपच्चित्थिमेणं बाहिरियाए परिसाए बारसण्हं देवसाहस्सीणं बारस पउमसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। पच्चित्थमेणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं सत्त पउमा पण्ण-त्ताओ । पच्चित्थिमेणं सत्तवहं अणियाहिवईणं सत्त पडमा पण्णता । तस्स णं पउमस्से चउदिसिं सद्यओ समंता इत्थ णं सिरीए देवीए सोलसण्हं आयरबखदेवसाहस्सीणं सोलस पउससाहस्सीओ पण्णताओ। से णं तीहिं पडन विक्रिके वेहिं सद्यक्षे समेता संपिविखते, तं जहा-अविभ-तरएणं, मज्जिमएणं, बाहिरएणं । अविंभतरए पउमपरिक्खेवे बत्तीसं पउमसयसाहरहीओ पण्णताओ । मिज्झिमए पउमपरिक्खेवे चत्तालीसं पउमसयसाहस्सीओ पञ्जनाओ । वाहिरए पउसपरिक्खेवे अडयालीसं पउमसयसाइस्सीओ पण्णसाओ । एवासेव सपुटवावरेणं तिहिं पउम-परिक्खेवेहिं एगा पडमकोडी धीसं च एउमसयसाहस्सीओ भवंतीति अवलायं। से केणडूणं भंते ! एवं वुच्चइ-पउम दहे दहे ?, गोयमा ! पउमदहेणं तत्थ २ देसे तहिं २ बहवे उप्पछाइं जाव सयसहस्सपताइं पउमद्दरपभाइं पउमद्दहवण्णाभाइं सिरी य इत्थ देवी महिहिया जाव पिलओवमट्रिइया परिवसइ, से एएणट्रेणं जाव अदुत्तरं च णं गोयमा ! पउमदहस्स सासए णामधेज्जे पण्णते, ण कयाइ णासि न०॥सू०३॥

छाया-तस्य खळ बहुसमरमणीयस्य भूभिधागस्य बहुमध्यदेशभागे, अत्र खळ महदेकं भवनं प्रज्ञप्तम् , क्रोश्रमायामेन अर्द्धकोशं विष्कम्भेण देशोनकं क्रोशमूर्ध्वमुच्यत्वेन अनेकस्त-म्भशतसंनिविष्टं प्रासादीयं दर्शनीयम् । तस्य खळ भवनस्य त्रिदिशि त्रीणि द्वाराणि प्रज्ञ-प्रानि, तानि खळ द्वाराणि पश्चधनुःशतानि अर्ध्वयुच्चस्वेन, सार्धतृतीयानि धनुःशतानि विष्कमभेण, ताव देव च प्रवेशेनाश्चेतानि वरकन कस्तुपिकानि यावत् दनमालाः ज्ञातन्याः। तस्य खलु भवनस्य अन्तः बहुसमरणीओ भूमिभागः प्रज्ञप्तः स यथा नामकः आलिङ्गपुष्कर इति वा । तस्य खळु वहुमध्यदेशभागे, अन खळु महती एका मणिपीठिका प्रज्ञप्ता । सा खळ मणिपीठिका पञ्चधनुः शतानि आयामविष्कम्भेण, सार्द्धवृतीयानि धनुःशतानि बाहल्येन, सर्वमणिमयी अच्छा०। तस्याः खळु मणिपीठिकायाः उपरि अत्र खळु महदेकं श्वयनीयं प्रज्ञ-प्तम् । शयनीयवर्णको भिणतव्यः । तत् खळ पद्मम् अन्येन अष्टशतेन पद्मानां तदद्धींच-त्वप्रमाणमात्राणां सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्तम् । तानि खळ अर्द्धयोजनमायामविष्कम्भेण, कोशं बाहरुयेन, दश योजनानि उद्वेश्वेन क्रोश्धं च्छितानि जलान्तात् सातिरेकाणि दश योज-नानि सर्वाग्रेण तेषां खळ पद्मानामयमेतदूषो वर्णावासः प्रज्ञप्तः, तद्यथा-वच्चमयानि मूलानि यावत् कनकमयी कर्णिका । सा खल कर्णिका कोशमायासेन, अद्भैकोशं वाहल्येन, सर्वकनक-मयी अच्छा इति । तस्याः खळ कर्णिकाया उपरि बहुसमरमणीयो यावद् मणिभिरुपशोभितः। तस्य खळ पद्मस्य अवरोत्तरे उत्तरे उत्तरपौरस्तये अत्र खळ श्रिया देव्याः चतस्रणां सामा-निकसाहस्रीणां चतस्रः पद्मसाहस्च्यः प्रज्ञप्ताः। तस्य खळ पद्मस्य पौरस्त्ये अत्र खळ श्रिया देव्याः चतस्रणां महत्तरिकाणां चत्वारि पद्मानि प्रज्ञप्तानि, तस्य खळ पद्मस्य दक्षिणपौर-स्त्ये श्रिया देव्याः आभ्यन्तरिकायाः परिषदः अष्टानां देवसाहस्रीणाम् अष्ट पद्मसाहस्त्र्यः प्रज्ञप्ताः । दक्षिणे मध्यमपरिषदौ दञ्चानां देवसाहस्रीणां दश्च पद्धसाहस्त्र्यः प्रज्ञप्तः । दक्षिण-पश्चिमे बाह्यायाः परिषदो द्वादशानां देवलाहस्रोणां द्वादश पद्मसा इस्त्रयः प्रद्यप्ताः, पश्चिमे सप्ता-नामनीकाधिपतीनां सप्त पद्मानि, प्रश्नप्तानि । तस्य खळ पद्मस्य चतुर्दिशि सर्वतः समन्तात् अत्र खळ श्रिया देव्याःषोडशानामात्मरसकदेवसाहस्रीणां पोडशे पद्मसाहस्त्र्यः प्रज्ञप्ताः तत् खळ त्रिभिः पद्मपरिक्षेपैः सर्वतः समन्तात् संपरिक्षितम् , तद्यथा-आभ्यन्तरकेण१, मध्यमेन२, बाह्यकेन ३ आभ्यन्तरके पद्मपरिक्षेपे द्वात्रिंशत् पद्मशतसाहरूयः प्रह्माः, मध्यमके पद्म-परिक्षेपे चत्वारिशत् पद्मश्तसाहरूयः प्रज्ञसाः, बाह्यके पद्मपरिक्षपे अष्टचत्वारिशत् पद्म-शतसाहरूयः प्रज्ञप्ताः । एवमेव सपूर्वापरेण त्रिभिः पद्मपरिक्षेपैः एका पद्मकोटीविंशतिश्र पद्मशतसाहरूयो भवन्तीति आरूयातम् ।

अथ केनार्थेन भदन्त! एवग्रुच्यते पद्महूदो पद्महृदः, गौतमः पद्महृदः खळ तत्र रेदेशे तत्र र बहुनि उत्पळानि यावत् शतसहस्रपत्राणि पद्महृद्वर्णाभानि श्रीश्रात्र देवी महर्दिका यावत् पत्योपमस्थितिका परिवसति तद् एतेनार्थेन यावत अदुत्तरम् (अथ) च खळ गौतम! पद्महृदस्य शाश्चतं नामधेयं प्रज्ञप्तम्। न कदाचित् नासीद् म०॥ स०३॥

टीका-'तस्स णं' इत्यादि। 'तस्स णं बहुसमरमणिक्तभूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए' तस्य खल बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागे 'एत्थ णं' अत्र-अस्मिन् प्रदेशे खल 'महं एगे भवणे पण्णत्ते' महदेकं भवनं प्रश्नसम्, अस्य भवनस्य मानाद्याह-'कोसं आया-मेणं' क्रोशमायामेन 'अद्धकोसं विक्खंभेणं' अर्द्धकोशं विष्क्रम्भेण, 'देस्एणगं' देशोनकं किश्चिन्य्नं 'कोसं' क्रोशम् 'अदं उच्चतेणं' उर्ध्वमुच्चत्वेन 'अणेगखंभसयसण्णिविष्टे' अनेक स्तम्भश्वतंनिविष्टम्-अनेकानि बहुनि स्तम्भश्वतानि संनिविष्टानि-संत्रगानि यत्र तत्त्रया अनेकश्वत स्तम्भयुक्तमित्यर्थः 'पासाईए दिसणिज्जे॰' प्रासादीयं दर्शनीयम् अभिरूपं व्याख्या प्राग्वत्। 'तस्स णं भवणस्स तिदिसि' तस्य खल भवनस्य त्रिदिशि तिम्रष्ठ दिश्व 'तओ दारा पण्णत्ता' त्रीणि द्वाराणि प्रज्ञप्तानि तत् द्वारत्रयमानाद्याह-'तेणं दारा पंच धणु सयाई' तानि खल द्वाराणि पत्रधनुः शतानि 'उद्धं उच्चंत्रेणं' अर्ध्वमुच्चत्वेन 'अङ्काइक्ताई धणुसयाई विक्खंभेणं' अर्धतृतीयानि धनुःशतानि विष्कम्भेणं 'तावइयं चेव पवेसेणं' तावदेव तत्प्रमाणमेव प्रवेशेन प्रवेशमार्गावच्छेदेन प्रज्ञप्तानि विष्कम्भेणं 'तावइयं चेव पवेसेणं' तावदेव तत्प्रमाणमेव प्रवेशेन प्रवेशमार्गावच्छेदेन प्रज्ञप्तानि । तानि 'सेआ' श्वेतानि श्वेतवर्णानि बाहल्येनाङ्करत्नम् यत्वात् 'वरकणगथूभिया' वरकनकस्तृपिकानि जत्म स्वर्णमयल्ल विवस्य प्रक्तानि 'जाव वण-

'तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए'-इत्यादि ।
टीकार्थ-(तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए) इस
बहुसमरमणीय भूमिभाग के बीच में (एत्यणं एगे महं भवणे पण्णले) एक
बिशाल भवेंन कहा गया है (कोसं आयामेणं, अद्धक्तोसं विक्खेभेणं, देसुण्णगं कोसं उद्धं उच्यत्तेणं) यह भवन आयाम (लंबाई की अपेक्षा) एक कोशका
विष्कम्भ (चोडाई) की अपेक्षा आधे कोशका और-जंबाई की अपेक्षा कुछ कम
एक कोशका है (अणेगखंभसय सिन्नाबेंद्रे, पासाईए दरिसणिज्जे) यह भवन
सैकडों खंभों के उद्ध खडा हुआ है तथा यह प्रासादीय एवं द्रीनीय है (तस्स णं
भवणस्स तिदिसि तओ दारा पण्णत्ता) इस भवनकी तीन दिशाओं में तीन द्वार
कहे गये हैं। (तेणं दारा पश्चध्यस्याइं उद्धं, उच्चत्तेणं अद्धाइज्जाइं धणुस-

'तस्स णं बहुसमरमणिक्जस्स भूमिमागस्स बहुमक्झदेसभाए'–इटादि

टीडार्थ — 'तस्स णं वहुसमरमणिडक्स भूमिभागस्स बहुमब्झदेसभाए' को अहुसभरभधुीय भूमिलागनी कोडहभ वन्ने 'एत्यणं एगे महं भवणे पण्णत्त' कोड सुविशाण लवन आवेल छे. 'कोसं आयामेणं अद्धकोसं विक्खंभेणं, देसूणगं कोतं बद्धं उच्चत्तेणं' को लवन आयाभ (लं आई) नी अपेक्षाको कोड कोटलुं, विष्डं ल (बाउाई) नी अपेक्षाको अहा गांड केटलुं अने श्रांचानी अपेक्षाको डांड डांड डांड विक्लं को अपेक्षाको अहा गांड केटलुं अने श्रांचानी अपेक्षाको डांड डांड डांड को लेटलुं के 'अणेग खंमसय सन्निवहं, पोसाईए दिसणिडजे' को लवन से इंडा क्तांका डांच अर शिलु हो. तेमक को प्रसादीय अने दशंनीय छें 'तस्स णं भवणस्स तिदिसिं तओ दारा पण्णत्ता' को लवननी त्रस्तु दिशाकाभां त्रस्तु दारा अद्वाद्द जांड घणुसयाई विक्लंभेणं

मालाओ णेयव्याओ' यावत् वनमालाः ज्ञातव्याः । अत्र यावस्पदेन इतो अग्रे 'ईहामिने' इत्यारभ्य वनमालावर्णनपर्यन्तः सकलोऽपि पाठः तद्र्थश्वात्रैव पूर्वमष्टमस्त्रत्रस्य जम्बूद्वीप विजयद्वारवर्णनव्याख्यायां तथा राजप्रश्लीयस्त्रत्रे सूर्याभदेवविमानद्वारवर्णने चतुष्पश्चाशत्तम-स्त्रत्वादारभ्य एकोनपष्टितमस्त्रगतवनमालावर्णनपर्यन्तं च विलोकनीयः ।

'तस्य णं भवणस्य अंतो बहुसमर्मणिङ्जे भूमिभागे पण्णत्ते' तस्य ख्छ भवनस्य अन्तः मध्ये बहुसभरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः स कोदश इत्याह-'से जमाणामए आर्टिगपुक्खरेइ दा॰' रा यथानामक आलिङ्गपुष्कर इति वा इत्यादि भूमिभागवर्णनं सविवरणं पष्ठस्त्राद्वी-ध्यम् । 'तस्स णं' तस्य खळ भूमिभागस्य 'बहुमज्झदेसभाए' वहुमध्यदेशभागे 'एत्थ णं' याई विञ्खंभेणं, तावतिअं चेव पवेसेणं. सेया वरकणगथुभिया जाव वणमालाओ णेयन्वाओ) ये द्वार पांच सौ धनुष के ऊंचे हैं अटाई सौ धनुष के चौडे हैं तथा इनमें प्रवेश करने का मार्ग भी इतका ही चौडा है ये द्वार प्रायः अङ्करश्नों के बने हुए हैं तथा इनके उत्पर जो स्तूतिकाए है-लघुदिग्लर हैं-वे उत्तव स्वर्ण की बनी हुई हैं इनके चारों ओर वनमालाए हैं यहां-यावत्वद से 'ईहामिग' आदि रूप जो वनमालावर्णन करते तकका पाट है वह गृहीत हुआ है वह पाठ और उसकी व्याख्या इसी जम्बूद्वीप के विजय द्वार के वर्णन में कही गई है-देखना चाहिये तथा राज प्रदनीय सूर्याम देवके विमान के वर्णन के प्रसङ्ग में कथित ४५ वें सूत्र से लेकर ५९ वें सूत्र तक में देखना चाहिये (तस्सणं भवणस्स अंतो बहुसमरमणिउजे भूमिभागे पण्णके) उस भवन के भीतर का जो भूमि-आग है वह बहुसमरमणीय कहा गया है (से जहाणामए आलिंग पुक्तरेहवा) उस भूमि भाग का वर्णन इत्यादि रूप से छठे सूत्र से जान छेना चाहिये (तस्स

ताविति चेय पवेसेणं, सेया वरकणगथूमिया जाव वणमालाओं णेयव्याओं भे द्वार ५०० धनुष केटला आंया छे अने २५० धनुष केटला पहेला छे. तेमक केमनी अंदर प्रविष्ट धवाने। मार्ग पण्ड आटले! क पहेलों छे. के द्वारा प्रायः अंहरते।थी निर्मित छे. केमनी ७५२ के स्तूपिकाकों छे-लधु-शिभरों छे ते उत्तम स्वर्ण निर्मित छे. केमनी छेमेर वनमाणाकों छे. अहीं 'यावत' पहथी 'ईहामिंग' दगेरे ३५ के वनमाणाना वर्णुन सुधीना पाठ छे, ते अहीं गृहीत थये। छे. आ पाठ, अने पाठनी व्याण्या आ 'कम्जूदीप प्रक्रित' मां पहेला अष्टम सूत्रनी व्याण्यामां, विकय द्वारा वर्णुन वणते हरवामां आवेल छे. किन्नासुको त्यांथी लाणुवा यत्न हरे. तेमक 'राकप्रश्लीय सूत्र' मां सूर्याल-देवना विमान वर्णुन प्रसंगमां हथित ४५ मां सूत्रथी मांडीने पटमां सूत्र सुधी के पाठनी व्याण्या अंगे केर्णु लेखें केर्णुके. 'तस्स णं मत्रणस्स अंतो बहुसमरमणिड्ले मूमिम्मां पण्णत्ते' ते लवननी आंदरने। के लूमिलाग छे, ते अहुसम रमणीय हहेवाय छे. 'से जहां णामण आलिंगपुक्लरेह वा' ते लूमिलागतुं वर्णुन हियाहि ३५मां छठा सूत्रमांथी

अत्र-अस्मिन् प्रदेशे खर्छ 'महर्दे' महती विशाला 'एगा' एका 'मणिपेढिया' मणिपीठिका-मणिमयीपीठिका 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्ता । तस्या मानाद्याह—'सा णं मणिपेढिया पंचधणुसयाई आयामविवखंभेणं' सा च मणिपीठिका पञ्चधनुःशतानि आयाम विष्कम्भेण दृष्ट्वे विस्तारा— भ्याम् 'अङ्गाडज्ञाइं धणुसयाई बाहल्लेणं' अर्द्धतृतीयानि धनुःशतानि बाहल्येन पिण्डेन, 'सञ्जमणिमयी' सर्वमणिमयी—सर्वोत्मना मणिमयी 'अच्छा०' अच्छा० अत्र श्लक्ष्णादियदानां ग्रहणम् तत्संग्रहः तदर्थश्रात्रैव चतुर्यस्त्रे जगतीवणंने विलोकनीयः ।

(तीसे णं मिणपेढियाए उप्पि एत्थ णं एगे महं संयोगिजजे पण्णासे) उस मिणपीठिका के जपर एक विद्याल दायनीय कहा है (संयोगिजजवण्णओ भाणि-अन्वो) यहां दातनीय का वर्णन करनेवाला पाठ कह छेना चाहिये जो इस प्रकार से है-(तस्स णं देवसंयणिजस्स अयमेयारुवे वण्णावासे पण्णसे-तं जहा-

समल हेवुं केर्ड के. 'तस्स णं बहुमज्झदेसभाए एत्य णं महई एगा मणिपेढिया दण्यता' ते सवननी अंदर अहुसमरमधीय भूभिक्षाणनी केर्रहम वश्चे केर्र युविशाण मिष्णिमयी पीर्डिश रहेवाय छे. 'सा णं मणिपीठिया पंचधणुसयाई आयामिवक्यंभेण, अद्धाइज्जाई, धणुसयाई बाहल्लेणं सव्वमणिमई अच्छा' आ मिष्णिपीठिश आयाम अने विष्ठं सनी अपेक्षा पांचसी धनुष केटली छे. के सर्वात्मना मिष्णिमयी धनुष केटली छे. तेमक कार्राधनी अपेक्षा २५० धनुष केटली छे. के सर्वात्मना मिष्णिमयी छे. अने आक्षा तेमक स्कृटिंड केवी. निर्मण छे. अहीं 'श्वहण्यादि' पहीनुं अहण्य रुखं केरंके. के पहीनी व्याण्या यतुर्ध सूत्रमां 'क्रातीना वर्णुनमां रुखामां आवेल छे.

'तीसे णं मणिपेढियाय डिप्पं एत्थ णं एगे महं सयिणान्जे पण्णत्ते' ते मिश्रिपिडिशनी ६ ५२ क्यें सुविशाण शयनीय है. 'सयिणान्ज वण्णलो माणिअन्वो' अही शयनीय संभंधी पाठनुं पर्शन अपेक्षित छे. ते आ प्रमाणे छे-तस्स णं देवसयणिन्जस्स अयमेयाह्नवे वण्णावासे

[ै]यहां श्रक्षणादि पदों का ग्रहण कर छेना उनकी व्याख्या चतुर्थ सूत्र में जगती के वर्णन में देख छेनी चाहिये।

मणियया पिडिपाया सोविण्णिया पाया णाणामिणमयाई पायसीसगाई जंबूणयमयाई गत्ताई वइरामया संधी णाणामिणमए विच्चे रययामई तूली छोहियवखमया विब्बोयणा तविण्जाम-ईओ गंडोवहाणियाओ से णं सयणिज्जे साहिंगणविष्टिए उभओ विब्बोयणे उभयो उण्णए मज्ज्ञेण य गंभीरे गंगा पुलिनवाछ्या उदालसालिसए ओयविय खोमदुगुल्ल पट्टपिडच्छायणे आइणगरूयबूर णवणीयत्लतुलकासे सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुडे सुरम्मे पासाईए दिस-णिज्जे अभिरूवे पडिरूवे इति ।

एतच्छाया-"तस्य खलु देवशयनीयस्य अयमेतद्रूपो वर्णावासः प्रज्ञप्तः, तद्यथा-नाना-मिणमयाः प्रतिपादाः सौवर्णिकाः पादाः नानामिणमयानि पादशीर्षकाणि जाम्बूनदमयानि गात्राणि वज्रमयाः सन्धयः नानामिणमयं व्यृतं रजतमयी त्ली लोहिताक्षमयानि-उपधान-कानि तपनीयमय्यो गण्डोपधानिकाः तत् खलु शयनोयं सालिङ्गनवर्त्तिकं उभयतो विब्बोयणं उभयत उन्नतं मध्ये नतगमभीरं गङ्गापुलिनवालुकावदालसद्दकं ओयविय (विशिष्ट) क्षौमदु-क्ल पट्टप्रतिच्छादनम् आजिनकच्तव्र नवनीत त्ल तुल्यस्पशं सुविरचितरज्ञाणं रक्तांशुक संवृतं सुरम्यं प्रासादीयं दर्शनीयम् अभिरूपं प्रतिकृतम् " इति ।

एतद्रचार्व्या-तस्य अनन्तरोक्तस्य खलु देवशयनीयस्य श्रव्याया पर्यन्तस्य अयमेतद्वृषः-वक्ष्यमाणस्त्ररूपः वर्णीवासः वर्णनपद्धतिः प्रज्ञप्तः, तद्यथा-नानामणिमया अनेकैविधमणिमयाः प्रतिपादाः-मूलपादानां प्रतिविशिष्टोपष्टम्मकरणाय पादाः, सौवर्णिकाः-स्वर्णमयाः पादाः

णाणामणिमया पिडणिया सोवण्णिया पाया, णाणामणिमयाई पायसीसगाई, जंबुणयमयाई गत्ताई वहरामया संधी णाणामणिमए विच्चे रययामई तृली, लोहियक्लमया विच्चोयणा, तवणिडजमईओ गंडोवहाणियाओ, से णं हायणि ज्जे सालिंगणविष्टिए उभओ विच्चोयणे उभओ उण्णए, मज्झे णयगंभीरे, गंगापुलिणवालुया उदालसालिसए ओयवियलोमदुगुललपट्टपिडच्छायणे आईणम् ह्यबूरणवणीयतृलतुललकासे सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंबुडे सुरम्मे पासाईए दिस्मिणिज्जे अभिक्षे पिडक्वे) इन पदों की व्याख्या इस प्रकार से है-उस देवदायनीय का यह इस प्रकार से वर्णावास-वर्णन-पद्धति-है-अनेक मिणयों से बने हुए इसके प्रतिपाद थे मूलपाये जिनके भीतर रखे जाते हैं ऐसे कटोरा

पण्णत्ते-तं जहा णाणामणिमया पिडपाया सोवण्णिया पाया, णाणामणिमयाई पायसी-सगाई, जंबुणयमयाई गत्ताई वहरामया संधी णाणामणिमए विच्चे रययामई तूली लोहिय-क्खमया विव्वोयणा तवणिष्णमईओं गंडोवहाणियाओ, से णं सयणिष्णे सालिंगणविष्टिए डमओ विंबोयणे उमओ उपण्प, मण्डो णय गंभीरे, गंगापुलिणवालुया उहालसालिसए ओयविय खोमदुगुल्लपट्टपिडच्छायणे आईणगरूयवूरणवणीयतूलतुल्लकासे सुविरइय रयत्ताणे रत्तंसुयसंबुडे सुरम्मे पासाईए दिस्सिणिष्णे अभिक्षवे पिडक्षे था पिढानी त्याप्या आ प्रमाणे छे-ते देवशयनीयने। वर्णावास-वर्णन पद्धति-आ प्रमाणे छे-स्नेना प्रतिपादी स्ननेक मूलपादाः, नानामणिमयानि अनेकविधमणिमयानि पादशीर्पकाणि पादानाम्धपरितनावयव-विशेषाः जाम्बूनदमयानि—स्दर्ण विशेषमयानि नाशाणि 'ईष' इति भाषाप्रसिद्धानि वज्रमयाः यज्ञरत्मयाः सन्धयः सन्धानानि नामणिमयं विच्चं—व्यूतं विशिष्टं वानम् रजतमयी रूप्यमयी तूली, लोहिताक्षमयानि लोहिताक्षरत्मयानि उपधानकानि उच्छीर्यकाणि, तपनी-यमस्यः -स्वर्णविशेषमस्यः गण्डोपधानिकाः गण्डस्थलोषधानिकाः गल्लकसूरकाणीत्यर्थः।

तत् खुळ शयनीयं सालिङ्गनवर्तिकय्-आलिङ्गनवर्षा शरीरप्रमाणोपधानेन सह यत्तः त्तथा. तस्य शयनीयस्य उभयत उभयपार्धे 'विक्रोयणे' कि देशी शब्द उपधानार्थकः तेन शिरोन्त पादान्तावभिव्याप्य स्थिते उपधाने उपधानद्वयमिति । पुनःतच्छयनीयम् उभयतः उन्नतम् उन्चं मध्ये नदगम्भीरं नत्यु अवनतं नस्रवात् गम्भीतं च महत्वात् , गङ्गापुलिन-बालुकाऽबदालसदशं मङ्गातटबालुकाया अबदालः पादावित्यासेऽधो ममनं तत्सदशं यत्ततथा के आकार जैसे जो छोटे २ गोल पाये होते हैं वे यहां प्रतिपाद शब्द से लिये गये हैं इनसे मूलपादों की रक्षा होती रहती है मूलपाद इसके सुवर्ण के बने हुए थे इसके सिरहाने के जाग और पैरों को पसार कर रखने के भाग अर्थात् इसके सीरा और पारी अनेक मणियों से बने हुए हैं इसके गात्र-शीर्ष जाम्बनद स्वर्णविद्येष के धने हुए हैं इलकी संधियां बजरत्न की बनी हुई हैं इस पर जो वान बुना गया हैं वह नाना मणियों से बना हुआ है इस पर जो तूली-गदा विछा हुआ है दह रजतमय है इस पर जो उपधानक-तिकया रखे हैं वे लोहि-ताक्षरत्न से बनाये हुए हैं तथा गाल के नीचे जो छोटा तकिया रखा जाता है वह स्वर्णविद्योज से बनाया गया है यह दायनीय पुरुष प्रमाण उपधान से युक्त है तथा शिरहाने की ओर एवं पैरों की ओर इसके ऊपर दो तकिये और रखे हुए हैं बड़ी होने से बह शय्या मध्य भाग में-बीच में निम्न एवं गंभीर हैं अति

મિલ્લુઓથી નિર્મિત હતા. મુખ્ય પાયા જેની અંદર મૂકવામાં આવે છે એવા વાડ- કાના આકાર જેવા જે નાના નાના ગાળ પાયાઓ હાય છે. તે પ્રતિપાદ કહેવાય છે. એનાથી મૂળ પાદેદની રક્ષા થતી રહે છે એના મૂળપાદેદ સુવર્ણ નિર્મિત હાય છે. એના મસ્તકની બાજીના ભાગા અને પગ તરફના ભાગા એટલે કે એની સિરા અને પારી અનેક મિલ્લુએથી નિર્મિત છે. એના ગાત્રા—ઇલ જમ્બૂનદ-સ્વર્ણ વિશેષના અનેલા છે. એની સંધિઓ વજ રતની અનેલી છે. એની ઉપર જે જાળ' કરવામાં આવેલ છે તે અનેક પ્રકારના મિલ્લુએથી બનાવવામાં આવેલ છે. એની ઉપર જે તૂલી—ગાદલા પાથરેલા છે તે રજતમય છે. એની ઉપર જે ઉપધાનક (એાર્શક) મૂકવામાં આવેલ છે તે લેહિતાલ રતનથી અનેલાં છે. તેમજ ગાલની નીચે જે નાનું એારીકું મૂકવામાં આવેલ છે તે સ્વર્ણ વિશેષથી નિર્મિત છે. એ શપ્તીય પુરુષ પ્રમાણ ઉપધાનથી યુજત છે. તેમજ મસ્તક તરફ અને પગ તરફ બે એારીકા વધારાના મૂકેલાં છે. વિશાળ હાવાથી એ શપ્યા મધ્ય ભાગમાં નિમ્ન

'ओयविय' त्ति देशी शब्दो विशिष्टार्थकः तेन विशिष्टं-परिकर्मितं क्षुमं क्षुमा अतसी तिकिर्मितं यद् दुक्लं वस्त्रं तदेव पट्टः एकः शाटकः स प्रतिच्छादनम् आच्छादनं यस्य तत्तथा आजिनकरूतवूरनवनीततूलतुलयस्पर्शम् आजिनकं सुकोमलं चर्मवसं रूतं परिकर्मितकापीसः बूरः कोमलवनस्पतिविशेषः, तृलम् अर्कादित्लं, तत्तुल्यः स्पर्शो यस्य तत्तथा सुविर्वितं सुष्ठुतया स्थापितं रणक्षाणं रजोपनयनवस्त्रम् आच्छाद्गविशेषो यत्र तत्त्रथा, रक्तांशुकसंवृत्तं रक्तांश्केन 'मच्छरदानी' ति सापा प्रसिद्धेन मशकग्रहाभिधानेन वस्तविशेषेण संवृतम् आवृः तम्-(आच्छादितम्) अतएव सुरम्यं सुष्ठु-रमणीयं 'प्रासादीयं' इत्यादि पदचतुष्टयं प्राप्तत् । मदु होने से यह शय्या गंगा के रेतीले मैदान जैसी नरम है तथा पैर रखते ही यह नीचे धस जाती है 'ओथविय' यह देशीय शब्द हैं और इस का अर्थ विशिष्ट संस्कार से-कसीदा आदि से सहित ऐसा है इस प्रकार कसीदा जिस पर काढा गया है ऐसे रेक्समी वस्त्र से तथा कपास के या अलसी के बने हुए वस्त्र से यह आच्छादिन है चर्ममय वन्त्र विशेषक्ष आजिनक के समान, रुत रुई के समान कोमल वनस्पतिविद्योषरूप वृर के समान, नवनीत-मक्खन-के समान, तथा अर्क तृल के समान इसका कोमल स्पर्श हैं आजिनक स्वभावतः कोमल होता है नवतीत-मक्खन भी इसी प्रकार कोयल होता है तथा-अर्क तूल भी ऐसा ही कोमल होता है इसी कारण उस शब्दा के स्पर्श को प्रकट करने के लिये वह यहां इन सब के स्पर्ध से उपित किया गया है अपरिभोगा-वस्था में-उपयोग नहीं करने की अवस्था में-इसके ऊपर धूलि निवारणार्थ आच्छादन विशेष पडा रहता है तथा मच्छरदानीरूप रक्तांशुक से यह युक्त रहता है अतएव यह सुरम्य है और प्रासादीय आदि पूर्वोक्त ४ विशेषणोंवाली

અને ગંભીર છે. અતિ મૃદું હોવા બદલ એ શબ્યા ગંગાના વાલુકામય તટની જેમ નર્મ છે, સુકેમળ છે. તથા એ પગ મૃક્તાની સાથે જ નીએ ઘસી જાય છે. 'કોચવિય' એ દેશીય શબ્દ છે. આના અર્થ વિશિષ્ટ સંસ્કારથી કસબ વગેરેથી યુક્ત એવા થાય છે. આ પ્રમાણે જેની ઉપર કસબનું કામ કરવામાં આવેલ છે એવા રેશમી વસાથી તેમજ કપાસ અથવા અળસીથી નિર્મિત વસાથી એ આવ્છાદિત છે. અર્મમય વસ્ત્ર વિશેષ રૂપ આજિનકની જેમ, રત, કપાસ ની જેમ કામળ વનસ્પતિ વિશેષ રૂપ 'ખૂર'ની જેમ, નવનીત માપ્પણની જેમ તેમજ અર્કતૃલની જેમ આના સ્પર્શ કામળ છે. અજિનક સ્વસાવતા કામળ હાય છે. નવનીત—માપ્પણ પણ આ પ્રમાણે જ કામળ હાય છે. તેમજ અર્કતૃલ પણ કામળ હાય છે. નવનીત—માપ્પણ પણ આ પ્રમાણે જ કામળ હાય છે. તેમજ અર્કતૃલ પણ કામળ હાય છે. એથી જ આ શબ્યાના સ્પર્શને પ્રકટ કરવા માટે એ સર્વ કામળ પદાર્થી અત્રે ઉપમાનના રુપરાં મૃકવામાં આવ્યા છે અપરિસોગાવસ્થામાં—અનુષ્યોગની સ્થિતમાં—એની ઉપર ધૃળ પડે નહે એ માટે એક આવ્છાદન વિશેષ પડિ રહે છે. તેમજ મચ્છરદાની રૂપ રકતાં શુકથી એ યુક્ત રહે છે. એથી એ સુરમ્ય છે—અને પ્રાસાદીય વગેરે પૂર્વીક્રત ૪ વિશેષણો-

अय पग्नस्य प्रथमपरिक्षेपमाइ-'से णं' इत्यादि । 'से णं' तत् पूर्वोवतं खल्ल 'पर्जमे' पद्मम् 'अण्णेण' अन्येन अपरेण 'तद्द्धुच्चचप्पमाणिमत्ताणं' तद्धोच्चत्वप्रमाणमात्राणां तस्य-मूलपद्मप्रमाणस्य अर्द्धम् अर्द्धस्य उच्चत्वे उच्छ्ये प्रमाणे च-आयामविस्तार बाइल्य-रूपे मात्रा प्रमाणं येपां तानि तथा तेपास् । 'अष्टस्य णं पर्प्याणं' पद्मानामण्टशतेन 'सन्व ओ' सर्वतः सर्वदिश्च 'समताय सर्वधिदिश्च च 'संपरिक्षित्वते' संपरिक्षिप्तं परिवेष्टितं तद्भित्वं च पद्मानामायामविष्कम्भवाइल्यजलोपित्रागोच्चत्वविषयक्षेत्र विश्वेयम् तदेव स्पष्टपति स्वकारः 'तेणं' इत्यादि, 'तेणं पर्या' तानि खल्ल पद्मानि 'अद्धनोयणं आयामः विक्लंभेणं' अर्द्धयोजनमायामविष्कम्भेण, एकं 'कोरं बाइल्लेणं' क्रोशं वाइल्लेन पिण्डरूपेण 'दस जोयणाइं उन्वेहेणं' दश्च योजनानि उद्धेनेन जलावनाहेन जलावनाहत्वेन मूलपद्मसाद-क्यात् 'कोसं उसिया' क्रोश्चरेकस्पतिरेकस्विति 'तलंताओ' जलान्तात्-जलोपित्मागात्, 'साइरेगाइं' सातिरेकाणि क्रोशैकरूपतिरेकस्विति 'दस जोयणाइं' दश्च योजनानि सपाद दश्च योजनानित्यर्थः 'सन्वयंभेणं' सर्वायेण सर्वप्रमाणेन । एतत्प्रमाणं भूमिभागादारभ्य विश्वेयम् । योजनानित्यर्थः 'सन्वयंभेणं' सर्वायेण सर्वप्रमाणेन । एतत्प्रमाणं भूमिभागादारभ्य विश्वेयम् ।

तेषां वर्णकमाह—'तेसि णं पउमाणं' इत्यादि । 'तेसि णं पउमाणं अयमेयास्वे' तेषां खलु पदमानामयमेतदूराः—वश्यमाण स्वस्तः 'वण्णावासे' वर्णावासः—वर्णनपद्धतिः 'वण्णते' प्रज्ञप्तः, 'तं जहा' तथ्या, तथाहि—'वइहामया मूला' इत्यादि, 'जाव' अत्र यावच्छव्देन मूलप् है (से णं पउमें अण्णेणं अद्वल्लप्रं पउमाणं तदद्युक्त्यस्त्रप्पाणमित्ताणं सच्बओ समंता संपरिविश्वरेते) यह पूर्योक्त कमल दूसरे और १०८ कमलों से कि जिनका प्रमाण इस प्रधानकमल से आधा था चारों ओर से विरा हुआ है (ते णं पउमा अद्वजीयणं आयापध्यक्तंभेणं, कोसं चाहरू छेणं, दस्योयणाई उच्वेहेणं, कोसं किस्या जलंताओ साहरेशाई इस जोयणाई उच्चतेणं, तेसि णं पउमाणं अय-मेयास्वे वण्णावासे पण्णते। ये सब प्रत्येक क्रयल आयाम और विष्कम्भ की अपेक्षा दो कोश के है मोटाइ की अपेक्षा से ये एक कोश के हैं उद्वेध—गहराइ की अपेक्षा से ये १० योजन के हैं और जलाई की अपेक्षा से ये एक कोश के सम्बन्ध और जल से ये कुछ अधिक १० योजन के चै उठे हुए हैं इन कमलों के सम्बन्ध

वाणी छे 'से णं पडमे अण्णें अहुसएगं एउमाणं तद्द्धुच्चत्तपशाणिसताणं सन्वओ समंता संपरिक्खिते' स्मे पूर्धित अमण जील सन्य १०८ अमणेखी के क्षेमतुं प्रमाणु स्मे प्रधान अभण करतां अद्धुं अतुं यामेरथी अन्यत्त अतुं. 'तेणं पडमा अद्ध जोयणं आयाम विक्खं भेणं, कोसं बाहल्केणं, दसजोयणाई, उन्वेहेणं कोसं कसिया, जलंताओ साइरेगाई, दस जोयणाई उन्वत्तेणं तेसि णं पडमाणं, अयमेवास्त्वे वण्णात्रासे पण्णत्ते' स्मेभांथी ६२६ ६२६ ४मण स्मायाम अने विष्कं जनी अपेक्षाओं से गाड़ केटकां छे. जादार्जनी अपेक्षाओं से स्मेक स्मेक गाड़ केटकां छे. जादार्जनी अपेक्षाओं से स्मेक स्मेक गाड़ केटकां छे. जादार्जनी अपेक्षाओं से अमणे। क्षेष्ठ गाड़ केटकां छे अने पाणीयी से अमणे। कंष्ठ स्मित्र भिक्षाओं से अमणे। कंष्ठ स्मेक भिक्षाओं से अमणे। कंष्ठ स्मेल केटकां छे अमले पाणीयी से अमणे। कंष्ठ स्मेक भिक्षाओं से अमणे। कंष्ठ से अमणे। संजंधी वर्षों सामाणे छे 'तं जहां'

द्मवर्णनपाठः संग्राहाः । अर्धोऽपि तत्रैय विलोकनीयः । 'कणगामई' कनकमयी सुवर्णमयी किण्णियां किणियां अर्द्धकोश्चम् क्रोशार्द्धपरिमिता 'वाहल्लेणं' वाहल्येन-स्थौल्येन । की दशी सा 'इत्याह-'सञ्चकणगामपी' सर्वक्रनकमयी-सर्वात्मना कनकमयी 'अच्छा०' अच्छा० इति अच्छा श्लक्ष्णा इत्यादि पाठोऽ-र्थश्च पूर्ववदेव । तस्या उपरि भूमिभागाद्याह-'तीसे णं किणियाण उप्ति' तस्याः स्रस्छ किणिकायां उपरि इत्यादि 'जाव मणीहिं उनसोभिष्' इत्यन्तं भूमिभागवर्णनं पण्टस्त्रा द्वोध्यम् ।

अध द्वितीयपद्मपिक्षेषमाह-'तस्स णं' इत्यादि । 'तस्स णं पडमस्स अवस्तरेणं' तस्य मूलपद्मस्य खल अपरोत्तरेवायव्यकोणे 'उत्तरेणं' उत्तरे-उत्तरस्यां दिशि 'उत्तरपुरिधमेणं' उत्तरपौरस्तये ईशानकोणे सर्वसङ्कलनया दिखपु दिशु 'एत्थणं सिरीए देवीए चउण्हं सामाणि-यसाहस्सीणं चत्तारि' अत्र खल श्रिया देव्याः चतस्यां सामानिकसाहस्रीणां चतस्यः 'पडम-साहस्सीओ' पद्मसाहस्वयः चत्वारि पद्मसहस्राणि 'पण्यताओ' प्रज्ञसाः। 'तस्स णं पडमस्स'

में इनका वर्णन ऐसा किया गया है—(नं जहा) जैसे—(वइरामया मूला, जाव कणगामई कण्णिया) मूल इनके सब के यज्ञमय है, यावत् कणिका इनकी सब की सुवर्णमयी है (सा णं कण्णिया कोसं आयामेणं अद्धकोसं याहरूलेणं सव्वक्षणगामई अच्छा (तीसे णं कण्णियाए उप्पं बहुसमरमणिज्जे जाव मणीहिं उबसोभिए) वह कर्णिका आयाम की अपेक्षा एक कोश की है मोटाई की अपेक्षा आधे कोश की है यह सर्वात्मना कनकमयी है, और आकाश एवं स्कटिकमणिके जैसा निर्मल है इस कर्णिका के उपर बहुसमरमणीय भूमिनाग है यावत् यह मणियों से सुशोभित है इत्यादि रूप से यहां भूमिभाग का वर्णन छटे सुत्र से जान छेना चाहिये (तस्स णं पडमस्स अवक्सरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरिध्योग एत्थणं सिरीए देवीए चडणहं सामाणियशाहरमीणं चत्तारि पडमसाहरसीओ पण्णत्ताओ) उस मूलपद्म की अपर उत्तर दिशा रूप वायन्य दिशा में उत्तर दिशा में एवं

के भड़े—'वहरामया मूला, जाव कणगामई किण्णिया' से अधां डमणाना भूण वळमव छे. यावत् से डमणानी डिएडिश के डमड सुवर्ण भयी छे. 'सा णं किण्णिया कोसं आयामेणं अद्ध कोसं बाहल्लेणं सत्व कणगामई अन्छा तीसेणं किण्णियाए अपि बहुसमरमणिक जाव मणीहिं उवसोमिए' ते डिएडिश स्थामनी अपेक्षासे सेड गाउ केटली छे. ळाडांटनी अपेक्षासे क्षेड गाउ केटली छे. ळाडांटनी अपेक्षासे केड गाउ केटली छे. यावत् से मिल्डिशायी सुशासित छे. डिलाहि इपथी अहीं स्मिकान वर्षान छंडा सूत्रमांथी काणी हेवुं केडले. 'तस्स णं पडमस्स अवहत्तरेणं उत्तरपुरत्यमेणं एत्य णं सिरीए देवीए चडण्डं समाणियसाहस्सीणं चत्तारि पडमसाहस्सीओ पण्णताओं ते भूण (सुण्य) पद्मनी उपर इत्तर दिशाइप वायव्य दिशामां, उत्तर दिशामां अने उत्तर पूर्व दिशा इप ध्शान

तस्य पद्मस्य खलु 'पुरित्थमेणं' पौरम्त्ये पूर्वस्यां दिशि 'एत्थणं सिरीए देवीए' अत्र खलु श्रिया देव्याः 'चल्डं महत्तरियाणं' चतस्यां महत्तरिकाणाम्—अतिशयेन महत्यो महत्तरास्ता एव महत्तरिकास्तासाम्—'चत्तारि पल्मा पण्णत्ता' चत्वारि पल्मानि प्रज्ञप्तानि, अत्र पूर्ववणित-विजयदेव सिंहासनपरिवारानुसारेण पार्पदादिपद्मस्त्राणि भणितव्यानि तद्विवरणं सुगमम् यावत् पश्चिमायां सप्तानिकाधिपतीनां सप्त पद्मानि । तथापि न्यस्यन्ते 'तस्य णं' इत्यादि, 'तस्स णं' तस्य मुख्यस्य खलु 'पउमस्स' पद्मस्य 'दाहिण पुरित्थमेणं' दिक्षणवीरस्त्ये अग्निकोणमाने 'सिरीए देवीए' श्रियाः देव्याः 'अव्वित्तरियाए' आभ्यन्तित्वायाः अन्तर्वर्तिन्याः 'परिसाए' परिषदः सभायाः सम्बन्धिनीनां 'अट्टण्हं देवसास्सीणं' अध्वानां देवसाहस्रोणाम्—अष्टसहस्राणि पद्मानि 'पण्णत्ताओ' प्रज्ञप्ताः । 'दाहिणेणं' दक्षिणे—दक्षिणदिग्माने 'मिज्झम-परिसाए' मध्यमपरिषदः सम्बन्धिनीनां 'दसण्डं देवसाहस्तीणं' दशानां देवसाहस्तीणां 'दस पउमसाहस्सीओ' दश पद्मसाहस्व्या—पद्मसहस्राणि 'पण्णत्ताओ' प्रज्ञप्ताः, 'दाहिण्यच्चित्थमं मेणं' दक्षिणपश्चिमे—नैर्श्वर्यकोणे 'बाहिरियाए बाह्यायाः बहि भेवायाः 'परिसाए' परिसाए' परिषदः

उत्तर पूर्विदिशा रूप ईशान विदिशा में श्री देवी के चार हजार सामानिक देवों के चार हजारपद्म हैं (तस्स णं पडमस्स पुरिक्षिमेणं एत्थ णं सिरीए देवीए चडण्डं महत्तरिआणं चत्तारि पडमा पण्णत्ता) उस मूलपद्म की पूर्विद्शा में श्रीदेवी की चार महत्तरिकाओं के चार पृश्म हैं यहां पर पिहले विणित हुए विजय देव के सिंहर्सिन के परिवार के अनुसार पार्षदादि के पद्मसूत्रों का वर्णन है जो इस प्रकार से हैं—(तस्स णं पडमस्स दाहिणपुरिक्षमेणं सिरीए देवीए अडिंभ-तिशाए परिसाए अडण्डं देवसाहस्सीणं अड पडमसाहस्सीओ पण्णत्ताओ) उस पद्म के दक्षिण पौरस्त्यिदिशा रूप आग्नेयकोण में श्री देवी के आभ्यन्तर परिषदा के आठ हजार देवों के आठ हजार पद्म है। (दाहिणेगं मिडिझमपिरसाए दसण्डं देवसाहस्सीणं दस पाउम साहस्सीओ पण्णत्ताओ) दक्षिण दिग्भाग में मध्यमपिरेषदा के दश हजार देवों के दश हजार पद्म है। (दाहिणेगं पिडिझमपिरसाए

विहिशामां श्री हैं जीना बार सहस्र सामानिक है वेना बार हुआर देशों छे. 'तस्स णं पडमस्स पुरित्थमेणं पत्य णं सिरीए देवीए चडण्हं महत्तरिआणं चत्तारि पडमा पण्णत्ता' ते भूण (भुण्य) पद्मनी पूर्व हिशीमां श्री है वीनी बार महत्तरिआणं चतारि पडमा पण्णत्ता' ते भूण वर्षुन करायेल विकयहेरना सिंहासनना परिवार मुक्ष्ण पार्ष हिना पद्मसूत्रीतुं वर्षुन छे, के ब्या अमाणे छे. 'तस्स णं पडमस्स दाहिणपुरित्यमेणं सिरीए देवीए आर्टिमतिर्आए परिसाए अहुण्हं देवसाहरसीणं अहु पडमसाहरसीओ पण्णत्ताओं ते पद्मनी हिन्निणु पौरस्त्य हिशा ३प ब्यान्तेय के छुमां श्री हेवीना आर्थंतर परिवहाना आर्थ हुकार हेवाना आर्थ हुकार पद्मी छे 'दाहिणेणं मित्रिमपरिसाए दसण्हं देवसाहरसीणं दस पडमसाहरसीओ पण्णत्ताओं' हिन्निणु हिन्नामां भव्यम परिवहाना हशसहस्ति हेवाना हश हुकार पद्मी छे. 'दाहिणं

सम्बन्धिनीनां 'बारसण्हं देवसाहरूसीणं' द्वादशानां देवसाहस्रीणां 'वारस पउमसाहस्सीओ' द्वादश पद्मसाहरूच्यः 'पण्णचाओ' प्रज्ञप्ताः, 'पच्चित्थमेणं' पश्चिमे पश्चिमायां दिश्चि 'सत्तण्हं अणियाहिबईणं' सप्तानाम् अनीकाधिपतीनां 'सत्त पउमा पण्णचा' सप्त पद्मानि प्रज्ञप्तानि ।

अथ तृतीयपद्मपिक्षेपमाह-'तस्स णं पउमस्स' इत्यादि, 'तस्स णं पउमस्स चउदिसिं'
तस्य मुख्यस्य खळ पद्मस्य चतुर्दिश्च चतम्यां दिशां समाहारश्चतुर्दिक् तिस्मस्तथा-दिक्चतुष्टये 'सब्बओ समंता' सर्वतः समन्तात् 'इत्थ णं' अत्र खळ 'सिरीए' श्रियाः छक्ष्म्याः 'देवीए' देव्याः 'सोळसण्हं आयरवस्य देवसाहस्सीणं' षोडशानाम् आत्मरक्षकदेव साहस्रीणाम् आत्मिः सक्तित्यात्मरक्षाः आत्मरक्षकास्ते च ते देवास्तेषां साहस्रीणां सहस्राणां 'सोळस पउमहाहस्सीओ' पोडश पद्मसाहस्त्रयः कमळसहस्राणि 'पण्णत्ताओ' प्रश्चप्ताः, तथाहि-पूर्व पश्चिमदक्षिणोत्तर दिक्ष चत्वारिर पद्मसहस्राणीत्येषां सङ्कलनया षोडश पद्मसहस्राणि सम्पच्यन्त इति बोध्यम् ।

अथोक्त व्यतिरिक्ता अन्येऽपि त्रयः परिक्षेपाः सन्तीत्याह-तत् खलु त्रिभिरित्यादि, 'से णं' तत् पद्मं खलु 'तीहिं' त्रिभाः उक्त व्यतिरिक्तैः 'पउमपरिक्षेवेहिं' पद्मपरिक्षेपैः मेणं बाहिरियाए परिसाए बारसण्हं देवसाहस्सीणं बारस पउमसाहस्सीओ पण्णक्ताओ) दक्षिणपश्चिन दिग्माग में-नैर्क् त्यकोण में बाह्य परिषदा के १२ हजार देवों के १२ हजार पद्म है। (पच्चित्थिमेणं सक्तण्हं अणीयाहिवईणं सक्त पउमा पण्णक्ता) पश्चिमदिका में सात अनिकाधिपतियों के सात पद्म है।

तृतीय पद्म परिक्षेप कथन-

(तस्स णं पडमहस चडिंसिं सब्बओ समंता इत्थ णं सिरीए देवीए सोल-सण्हं आयरक्खदेषसाहस्सीणं सोलस पडमसाहस्सीओ पण्णलाओ) उस मूल पद्म की चारों दिशाओं में श्री देवी के सोलह हजार आत्मरक्षक देवों के १६ हजार पद्म हैं। ये आत्मरक्षक देव प्रत्येक दिशा में ४-४ हजार की संख्या में रहते हैं (से णं तीहिं पडम परिक्खेवेहिं सब्बओ समंता संगरिक्खिले) यह मूल

पच्चित्थमेण बाहिरियाए परिसार बारसण्हं देवसाहरसीणं बारस पडम साहरसीओ पण्णताओं हिस्खु पश्चिम हिञ्लागमां नैंऋ त्य डे:खुमां आहा परिषद्दाना १२ ढुळार हेवे:ना १२ ढुळार पद्मी छे 'पच्चित्थमेणं सत्तण्हं अणीयाहिबईणं सत्त पडमा पण्णत्तां पश्चिम हिशामां सात स्मतीक्ष्टिपतिस्माना सात पद्मो छे.

तृतीय पद्म पश्चिम अथन

'तरस णं पडमस्स चडिंदिसं सब्बओ समंता इत्थणं सिराए देवीर सोलसण्हं आय-रक्खदेवसाहस्सीणं सोलस पडमसाहस्सीओ पण्णसाओ' ते भूण (भुणः) पदानी चेभिर श्री देवीना सेण ढुलर अत्मरक्षत्र देवे।ना १६ ढुलर पदाे छे. के आत्मरक्षत्र देवे। ६२६ दिशामां ४-४ ढुलर केटबी संज्यामां रहे छे. 'से णं तीहिं पडमपरिक्लेवेहिं सब्बओ समंता पद्मरूपपरिवेष्टनैः 'सञ्चओ' सर्वतः सर्वदिश्च 'संमता' समातात् सर्वविदिश्च 'संपरिकिख्ने' संपरिक्षिप्तं परिवेष्टितम् 'तं जहा' तद्यथा—'अब्भितरएणं मिन्झमएणं बाहिरएणं' आभ्यन्तर-केण र मध्यमकेन र बाह्यकेन ३। 'अब्भितरए पउमपरिक्खेवे बत्तीसं पउमसयसाहस्सीओ पण्णताओ' तत्राभ्यन्तरकं पद्मपरिक्षेपे द्वात्रिंशत् पद्मशतसाहस्त्र्यः कमललक्षाणि प्रज्ञप्ताः, 'मिन्झमए' मध्यमके मध्यमे 'एउमपरिक्खेवे' पद्मशतशाहस्त्रीओ पण्णताओं' चत्वारिंशत् पद्मशतसाहस्त्र्यः प्रज्ञप्ताः' 'बाहिरए' बाह्यके बाह्य 'पउमपरिक्खेवे' पद्मपरिक्षेपे 'अख्यालीसं' चाष्ट चत्वारिंशत् 'पउमसयसाहस्सीओ' पद्मश्रतसाहस्त्रयः— कमललक्षाणि'पण्णताओं' प्रज्ञप्ताः, इदं च पद्मपरिक्षेपत्रयमाभियोगिकदेव सम्बन्धिकोध्यम् । अत्र भिन्न पद्मपरिक्षेपत्रयख्यापनं तेषां भिन्न भिन्न कार्यकारित्वात् ।

अथ परिक्षेपत्रिकस्य पद्मसर्वाग्रमाह-'एवमेव' इत्यादि । 'एवामेव' एवमेव उक्तरीत्या 'सपुव्वावरेणं' सपूर्वीपरेण-पूर्वेण सहितः, अवरः सपूर्वीपरस्तेन पौर्वापयमाश्रित्य रिथतैरित्यर्थः, 'तिर्हिं' त्रिभिः 'पउमपरिक्खेवेहिं' पद्मपरिक्षेपैः कृत्वा 'एगा पउमकोडी' एका पद्मकोटी

पद्म इन कथित पद्म परिक्षेपों से चारों ओर से घिरा हुआ है। (तं जहां) जो इस प्रकार से हैं—(अब्भितरकेणं, मिज्झमएणं, बाहिरएणं) एक आभ्यन्तरिक पद्म परिक्षेप, दूसरा मध्यमक पद्म परिक्षेप और तीसरा बाह्य पद्मपरिक्षेप इनमें जो (अब्भितरए पउमपरिक्षेवे बत्तीसं पउम स्यसाहस्सीओ पण्णत्ताओ) आभ्यन्तरिक पद्मपरिक्षेप हैं उस में ३२ लाख पद्म है (मिज्झमए पउमपरिक्षेप हैं उस में ३२ लाख पद्म है (मिज्झमए पउमपरिक्षेप हैं उस में ३० लाख पद्म है (वाहिरए पउमपरिक्षेप कें अडयालीसं पउमसयसाहस्सीओ पण्णत्ताओं) मध्यमक जो पद्मपरिक्षेप हैं उस में ४० लाख पद्म है (बाहिरए पउमपरिक्षेप हैं उस में ४८ लाख पद्म है। पह पद्म परिक्षेपत्रय आभियोगिक देव संबन्धी है यहां जो इसे भिन्नरूप से कहा गया है। (एवामेव

संपरिक्तिते के भूग पद्म के डियत पद्म परिश्लेपे। सिवाय भीकां पण त्रण पद्म परिश्लेपे। शे मिर घेरायेल छे. 'तं जहां' के आ प्रमाणे छे. 'अटिंभतरकेणं, मज्झिमएणं वाहिरएणं' प्रथम आल्यंतरिक पद्म परिश्लेप भीकां नाध्यिमक पद्म परिश्लेप अने तृतीय आह्य पद्म परिश्लेप के सर्वमां के 'अटिंभतरए पडमपरिक्लेवे बत्तीसं पडमसयसाहस्सीओ पण्णताओं' अल्पंतरिक पद्म परिश्लेप छे तेमां उर लाभ पद्मों छे. 'मिडिझमए पडमपरिक्लेवे चत्तालीसं पडमसय साहस्सीओ पण्णताओं' मध्यनुं के पद्म परिश्लेप छे तेमां शालीस लाभ पद्मों छे. 'बाहिरए पडमपरिक्लेवे अडयालीसं पडम सयसाहस्सीओ प०' तेमक के आह्य पद्म परिश्लेप छे. तेमां ४८ लाभ पद्मों छे. के पद्म परिश्लेप त्रय आलिये।जिक हेव संभाधी छे. काही के आने लिन्न इपमा केंद्रवामां आवेल छे तेनुं कारण आप प्रमाणे छे के तेका लिन्न-लिन्न कार्यकारी होवाथी तेम क्रहेल छे. 'एवामेव सपुच्चावरेणं तिहिं पडमपरिक्लेवेहिं एगा पडम

'वीसं च' विंशतिश्र 'पउमसयसाहस्सीओ' पद्मशतसाहस्त्र्यः-विंशतिलक्षाधिकैककोटिसं-रूयकानि पद्मानि 'भवंतीति' भवन्ति इति 'अवखायं' आरूयातं-तीर्थकरगणधरैःकथितम्। अत्रदं वोध्यम्-

आम्यन्तरपद्मपरिक्षेपपद्मसंख्या द्वात्रिंशस्त्रक्षाणि मध्यमपद्मपरिक्षेपपद्मसंख्या चत्यारिंशस्त्रक्षाणि, बाह्यपद्मपरिक्षेपपद्मसंख्या च अध्यचत्वारिंशस्त्रक्षाणि इति सर्वसंकल-नया त्रिविधपद्मपरिक्षेपपद्मसंख्या विंशतिलक्षाधिका एका कोटिः (१,२०,०००००) भवति। सपरिवारायाः श्री देव्याः निवासपद्मसंख्या चैदम्-एकं पद्मं (१) श्री देव्याः

स पुट्यावरेणं तिहिं पडमपिरक्खेवेहिं एगा पडमकोडी वीसं च पडमसयसाह-स्सीओ भवंतीति अक्खायं) इस प्रकार इन पद्मपिरक्षेपत्रयों की संख्या का प्रमाण इस प्रकार से है-श्री देवी का निवास भूत पद्म एक है तथा श्री देवी के निवास भूत पद्म की चारों दिशाओं में जो पद्म हैं वे १०८ हैं चार हजार सामानिक देवों के निवासभूत पद्म ४ हजार है चार महत्तरिकाओं के निवास भूत पद्म ४ हैं आभ्यन्तर परिषदावर्ती ८ हजार देवों के निवासभूत पद्म ८ हजार हैं मध्यपरिपदावर्ती १० हजार देवों के निवासभूत पद्म १० हजार है मध्यपरिषदावर्ती १२ हजार देवों के निवासभूत पद्म १२ हजार है सात अनीका-धिपतियों के निवासभूत पद्म ७ हैं । १६ हजार आत्मरक्षक देवों के निवासभूत पद्म १६ हजार हैं इस तरह सपरिवार श्रीदेवी के निवासभूत सर्व पद्मों की संख्याका जोड ५०१२० होता है । आभ्यन्तरमध्यम, एवं वाद्य पद्म परिक्षेपपद्म संख्या १ करोड २० लाख में इस संख्या को जोड देने पर एक करोड २० लाख ५० हजार एकसौ बीस (१२०५०१२०) समस्तपद्म होते हैं। अब गौतमस्वामी

कोडी वीसं च पडमसयसाहस्सीओ मवंतीति अक्छायं' એ પ્રમાણે એ પદ્મપરિક્ષેપ ત્રચેાની સંખ્યાનું પ્રમાણ એક કરોડ ૨૦ લાખ હાય છે. સપરિવાર શ્રી દેવીના નિવાસભૂત પદ્મોની સંખ્યાનું પ્રમાણ આ પ્રમાણે છે. શ્રી દેવીના નિવાસસ્થાન રૂપ પદ્મ એક છે. તેમજ શ્રી દેવીના નિવાસભૂત પદ્મની ચામેર ચારે દિશાઓમાં જે પદ્મો છે તે ૧૦૮ છે. ચાર સહજ્ઞ સામાનિક દેવાના નિવાસસ્થન રૂપ પદ્મો ચાર સહસ્ત્ર છે ચાર મહત્તરિકાઓના નિવાસ ભૂત પદ્મો ૪ છે. આભ્યંતર પરિષદાવતી ૮ હજાર દેવાના નિવાસ ભૂત પદ્મો ૮ સહસ્ત્ર છે. મધ્ય પરિષદાવતી ૧૦ સહસ્ત્ર દેવાના નિવાસસ્થાન રૂપ પદ્મો ૧૨ હજાર છે. સાત અનીકાધિપતિઓના નિવાસ સ્થાન ભૂત પદ્મો ૭ છે, ૧૬ હજાર આત્મરક્ષક દેવાના નિવાસ ભૂત પદ્મો ૧૬ હજાર છે. આ પ્રમાણે સપરિવાર શ્રી દેવીના નિવાસભૂત સર્વ પદ્મોની સંખ્યાના સરવાળા પ૦૧૨૦ થાય છે. આભ્યંતર મધ્યમ તેમજ આદ્યપદ્મ પરિક્ષેપ પદ્મ સંખ્યા એક કરાડ ૨૦ લાખમાં એ સંખ્યાને જોડીએ તેમ એક કરાડ વીસ લાખ પ૦ હજાર એકસોવીસ.

श्री देवी निवासभूतपद्मचतुर्दिग्वति पद्मानि अष्टोत्तरशतम् (१०८), चतुस्सहस्रसामानिक देवानां पद्मानि चत्वारि सहस्राणि (४०००), चतस्रणां महत्तरिकाणां चत्वारि (४०), आभ्यन्तरपरिषद्वर्त्तिनाम् अष्टसहस्रदेवानाम् अष्टसहस्राणि ८०००), मध्यमपरिषद्वर्त्तिनां द्यसहस्रदेवानां द्यसहस्रदेवानां द्यसहस्रदेवानां द्यसहस्राणि (१००००), बाह्यपरिपद्वर्त्तिनां द्वादशसहस्रदेवानां द्वादशस्रकाणि (१२०००), सप्तानाम् अनीकाधिपतीनां सप्त (७) पोडशसहस्रात्मरस्रकदेवानां च पोडशसहस्राणि (१६०००), इति सपरिवार श्री देवीनिवासभूतानां सर्वपद्मानां संकलनया पश्चाशत् सहस्राणि एकं शतं विश्वतिश्च (५०१२०) सर्वाणि निशासपद्मानि भवन्ति । आभ्यन्तरमध्यमबाह्यबद्मपरिक्षेपपप्तसंख्यायां विश्वतिलक्षाधिकेषक्षेटचात्मिकायां (१,२०,०००००) सपरिवारायाः श्रीदेव्या निवासपद्ममंख्याया विश्वत्युत्तरैकश्वताधिकपञ्चाशत्सहस्रान्तिकायाः (५०१२०) संग्रेलनेन सर्वाणि पद्मानि एका कोटि विश्वतिर्वकाणि पञ्चाशत्सहस्रान्तिकायाः (५०१२०) संग्रेलनेन सर्वाणि पद्मानि एका कोटि विश्वतिर्वकाणि पञ्चाशत्सहस्रान्तिकायाः (५०१२०) संग्रेलनेन सर्वाणि पद्मानि एका कोटि विश्वतिर्वकाणि पञ्चाशत्सहस्रान्तिकायाः विश्वतिश्व (१,२०,५०,१२०) भवन्तीति ।

अथ पद्महूदनामनिक्वतं पृच्छन्नाह—'से केणहेणं भंते!' इत्यादि, 'से केणहेणं भंते!' अथ हे भदन्त! केन अथेन कारणेन 'एवं बुच्चइ' एवधुच्यते 'पउमहहे दहे?' पद्म-हदः पद्महूद इति भगनामाह—'गोयमा!' हे गौतम! 'पउमहहेणां' पद्महूदे खल्छ 'तत्थ-तत्थ' तत्र तत्र 'देसे तिर्धिर' तिर्मिम्डिम्पिन् देशे 'बढ्वे उप्पलाई' बहूनि उत्प-लानि कमलानि 'जाव' यावत् 'सयसहस्मपत्ताई' शतसहस्मपत्राणि—लक्षपत्राणि यावत् पस् से ऐसा प्रति हैं-(से केणहेणं भंते! एवं बुच्चह—पउमहहे रे) हें भदन्त! आप इसे पद्महूद इस नाम से क्यों—िकस कारण से-कहते हैं शहसके उत्तर में प्रसु कहते हैं—(गोयमा! पउमहहेणं तत्थ र देसे तिर्धिर बहवे उप्पलाई जाव स्मयसहस्सपत्ताई पउमहह्ण्यभाई पउमहह्वण्णाभाई सिरीअ इत्थ देवी मिह्न द्विया जाव पिलओवमहिईया परिवसह, से एएणहेणं जाव अहुत्तरंच णं गोयमा! पउमहहस्स सासए णानधेडजे पण्णते ज क्याइ णासि न.) हे गौतम!पद्महद् में जगह र अनेक कमल हैं यावन् चातसहस्थपत्तींवाले पद्म हैं यहां यावत्पद से कुमुद, सुभग, सौगन्धिक, पुण्डरीक, महापुण्डरीक, शतपत्र और सहस्रपत्र'

(१२०५०१२०) समस्त ५ शो थाय छे. ढेवे गौतमस्वामी प्रभुने आ प्रमाणे पृष्ठे छे के भी केणहेणं मंते! एवं वुच्चइ-पडमइंहे २' ढे भइन्त! तमे आने पद्म हुइ आ नामथी शा कारण्यी केढें। छे। ? ओना जवाणमां प्रभु केढे छे-'गोयमा! पडमइहंणं तस्य २ देसे ति बहे बहवे उपलाई जाव सय सहस्सपताई पडमइहंप्पमाई पडमइहंपणामाई सिरीअ इस्थ देवी महिद्धिया जाव पिल्लिओ महिईया परिवसइ, से एएणहेणं जाव अदुत्तरं च णं गोयमा! पडमइहंस्स सासए णामघेडजे पण्यत्ते ण कयाइ णासि न' ढे गौतम! पद्महुइमां ठेक-ठेकाणे अनेक कमणे। छे यावत् शत सद्धस पांहडावाणा पद्मो छे. अढीया यावत् पह्मी कुमुह, सुन्नग, सौगंधिक, पुंडरीक, मढापुंडरीक, शतपत्र अने सढस्थपत्र ओ सर्व कमणानुं अढण थ्युं छे. ओ सर्व पुंडरीक, मढापुंडरीक, शतपत्र अने सढस्थपत्र ओ सर्व कमणानुं अढण थ्युं छे. ओ सर्व

उत्पल्लानि सन्ति ! यावस्पदेन-कुग्रदसुभगसौगन्धिक पुण्डरीक महापुण्डरीक शतपत्रसहस्रपत्राः णीति संग्राह्यम् । तानि उत्पल्लानि कीद्दशानि ? इत्यपेक्षायामाह - 'पउमद्दहप्यभादं' पद्मह्द्रमाणि पद्महदाऽऽकाराणि आयत चतुरस्राकाराणीत्यर्थः । एतेन तत्र पद्भहदे वानस्पतानि पद्महृदाऽऽकाराणि पद्मानि बहूनि सन्ति, तानि चाशाध्वतानि पृथिक प्रमाणानि पार्थियानि तु शाध्वता तेति स्वितम् , तथा 'पउमद्द वणामादं' पद्महद् वणीभानि पद्महद् वर्णस्योगऽऽभा प्रतिभासो येणां तानि तथा-पद्महृद वर्णप्रतिभासानि तत्रश्च पद्मानां विशेषणद्वयेन तानि पद्मानि तदाकारर्याच्छर्णत्याच्च पद्महद्दानीति प्रसिद्धानि, तत-स्तत्पमहृदाख्यपद्मयोगादयं चलाश्योऽपि पद्महृदः, उभयेपःसपि नामनामनादि काल-प्रवृत्तत्वन नेतरेतराअयदोषः।

अथ पार्थिवपद्मतोऽप्यस्य नाम अवृत्ति जीताऽस्तीति ज्ञापिततुं प्रकारान्तरेण नाम-कारणमाह 'सिरीय इत्थदेवी' श्रीश्रात्र देवीत्यःदि अञ अस्मिन् पद्महूदे श्रीः स्थ्मीः देवी

इन सब कमलों का ग्रहण हुआ है ये खब उत्पल पद्महर् के जैसे आगत चतु-रस्र आकारवाले हैं-इससे उस पद्ध हर में वनस्पतिकार्यिक कमल भी जो कि पद्महद के आकारवाले हैं बहुत परन्तु ये अद्माश्वत हैं तथा पूर्वोक्त प्रमाण बाले जो कमल-पद्म-हैं वे द्याश्वत हैं और वे पृथिवीकार्यिक हैं ऐसा स्वित किया गया है ये पद्म पद्महद के वर्ण के जैसे प्रतिभासवाले पद्मों को पद्महद के आकार वाले और पद्महृद के वर्ण के जैसे प्रतिभासवाले पद्मों को पद्महद कह दिया गया है-अतः इनके स्वाव से इस जलावाय को भी पद्म हृद ऐसा कहा गया है॰ इन दोनों के पद्म ऐसे जो नाम हैं वे अनादि काल से चले आ रहे हैं-इस कारण इतरेत्रकाश्वय दोष भी इन दोनों में नही है, पार्थिव पद्म से भी इस जलाशय की पद्म हद इस नामकी प्रवृत्ति हुई है इस वात

ઉત્પક્ષા પદ્માહું જેવા આયત ચતુરસ અકારવાળા છે. એથી તે પદ્માહું માં વનસ્પતિકાચિક કમળા પણ—કે જે પદ્માહું દના આકારવાળા છે—અનેક છે. પરંતુ એ સવે પદ્મો અશાશ્વત છે. તેમજ પૂર્વોકત પ્રમાણવાળા જે કમળા—પદ્મો—છે તેઓ શાશ્વત છે અને પૃથ્વીકાચિક છે. આ પ્રમાણે સચિત કરવામાં આવેલ છે. એ પદ્મો પદ્માહું દના વર્ણ જેવા પ્રતિભાસિત હાય છે. આ પ્રમાણે પદ્માહું દના આકારવાળા અને પદ્માહું દના વર્ણ જેવા પ્રતિભાસવાળા પદ્મોને પદ્માહું કહેવામાં આવેલ છે એટલા માટે એમના સદ્દભાવથી એ જલ શયને પણ પદ્માહું કહેવામાં આવેલ છે. એ બન્નેનું 'પદ્મ' એવું જે નામ રાખવામાં આવેલ છે તે અનાદિ કહેવામાં આવેલ છે. એ બન્નેનું 'પદ્મ' એવું જે નામ રાખવામાં આવેલ છે તે આનાદિ કહેવામાં આવેલ છે. એ બન્નેનું 'પદ્મ' એવું જે નામ રાખવામાં આવેલ છે તે અનાદિ કહેવામાં આવેલ છે. એ બન્નેનું 'પદ્મ' એવું જે નામ રાખવામાં આવેલ છે એ વાતને પાર્થિવ પદ્મને લીધે પણ આ જલાશયની પદ્માહું એ નામની પ્રદૃત્તિ થઇ છે એ વાતને સમજાવવા માટે સત્રકાર પ્રકાશન તરથી નામકરણનું કથન કરે છે તેઓ શ્રી કહે છે કે એ પદ્માહું દમાં શ્રી કેવી રહે છે અને તે કમળમાં નિવાન કરે છે. એથી શ્રી નિવાસ ચાગ્ય

पद्मिनवासिनी परिवसित, तदश्च श्रीनिवासयोग्यपद्माश्रयत्वात् पद्मोपछिद्वतो हद इति पद्महद आख्यायले, मध्यमपदछोपिकर्मधारय तत्युरुपसमासात् । सा च श्रीः कीहशीः ? इत्याइ—'मिहिड्डिया' महर्द्धिका 'नाव' यावत् 'पछिश्रोवपिहिड्या' परयोपमस्थितिका महर्द्धिका इत्यारभ्य पर्योपमस्थितिकेति पर्यन्तानि विशेषणवाचकपदानि यावत्पदेन सङ्ग्रहाद्धाणि, तथाहि—महर्द्धिका, महाद्युतिका, महत्यला, महायशाः, महास्रीख्या, महानुभावा, पर्योपम स्थितिका, एवहव्याख्याऽष्टमस्त्रम्य विजयहारदेवध्यानाधिकारतो बोध्या, केवसं स्नीत्व प्रस्तवक्रतो भेदसात्र पुरुष्वेनात्र त स्नीत्वेन निर्देश इति सर्वभन्यत्समानम् ।

अथ तम पद्महृदे शाधदत्वं व्यवस्थापिद्द्वमात-'से एएणहेणं' इत्यादि-'से एएणहेणं' सः पद्महृदः एतेन अनन्तरोवितेन अर्थेन कारणेन 'जाव' यावत्—यावत्पदेन ''एवमुच्यते—पद्महृदः पद्महृदः'' इति संब्राह्मभ्, 'अदुत्तरं च णं' अदुत्तरम् अथ च खलु 'गोयमा !' हे गीतम ! पदमहृदः पद्महृदः सासए' पद्पहृद्दस्य शाधतं श्रधत् तर्वदा भवः शाधतं 'णामघेज्जे' को समझाने के लिये अय गूज्रकार प्रकारानार से नामकरणका कथन करते हैं—वे कहते हैं कि इस पद्भ हृद में अदिवी रहती है और वह कसल में निवास करती है इसलिये अिनवासयोग्य पद्म का आश्रय होने से इस जलाश्य का नाम पद्महृद ऐसा कहा गया है जाक्यार्थिय की तरह यहां मध्यम पदलोपी तत्युक्त समान हुआ है यह श्रदिवी महिद्धिक है यावत् इसकी आयु एक पत्योपमकी है यहां यावत्पद से' भहाद्यति । सहावला, महायकाः, महासौख्या, महानुभावा' इन पदों का संग्रह हुआ—है इन पदों की व्याख्या अध्यम सूत्रस्थ जो विजय हार के देव का वर्णनाधिकार है उससे जानलेनी चाहिये वहां जो ये पद प्रथुक्त हुए है उन्हें लिङ्ग वात्यय से यहां श्रीदेवी के कारण निर्दिष्ट करलेना चाहिये इस प्रकार से पद्महृद गाम होने का जारण का उन्लेखकरके अब सूज्रकार यह प्रकट करते हैं कि इस प्रकार जो इस हृद का नाम है वह

પદ્મનું મ્યાશ્રયભૂત હેલાથી એ જલાશયનું નામ પદ્મહુદ છે. શકાર્થિવની જેમ અહીં માધ્યમપદ લાપી તત્પુરુષ સખાસ થયેલ છે. એ શ્રી દેવી મહાદિ છે અવત્ એની ઉમર એક પર્યાપમ જેટલી છે. અહીં યાવત્ પાથી—'મहत्तुतिकाः, महाबलाः, महायशाः, महासाँखाः, महानुमाबाः' એ પદા સહણ લયા છે. એ વદાની વ્યાપ્યા અન્દ્રમ સ્ત્રસ્થ જે વિજય દારના દેવાના વર્ણન લિકાર છે ત્યાંથી બાણી લેવું જોઇએ, ત્યાં જે એ પદા પ્રયુક્ત થયા છે તેમને લિંગ વ્યત્સથી અહીં શ્રી દેવીના કારણે નિર્દિન્દ કરી લેવા જોઇએ. આ પ્રમાણે પદ્માહુદના નામ સંપાંથી કારણે સ્પષ્ટ કરીને સ્ત્રકાર હવે એ પ્રક્રદ કરે છે કે આવું જે આ પ્રમાણે નામ છે તે અનાદિ નિયન છે. તેમકે એવું જ નામ એનું ભૂત-કાળમાં પણ હતું એવું જ નામ એનું વર્તામાન કાળમાં છે અને એવું જ એનુ નામ બનિવ્યત કાળમાં પણ હતું એવું જ નામ એનું વર્તામાન કાળમાં છે એને એવું જ એનુ નામ બનિવ્યત કાળમાં પણ કર્તા એવાં જ આને ભૂતકાળ એવા ન તેને કે જેમાં એ નામ આસ્તિત્વ

नामधेयं नाम 'पण्णते' प्रज्ञप्तम् शाश्चतत्वाद् स पद्महदः 'ण कयाइ णासि न.' न कदाचित् नाऽऽसीत्, न कदाचिद् न भवति, न कदाचिद् न भविष्यति, अभूच्च भवति च भविष्यति च एतद्विष्णं चतुर्थस्त्रस्थ पद्वरवेदिका शाश्चतत्वाधिकाराद्बोध्यम् ॥ स्० ३ ॥

अथ गङ्गासिन्धु महानदी स्वरूपमाह-'तरस ण' इत्यादि ।

पृष्प-तस्त णं पउमहहस्स पुरित्यिमिल्लेणं तोरणेणं गंगा महाणई
पवृद्धा समाणी पुरत्थिमिमुही पंच जोयणसयाइं पटवएणं गंतागंगावहणकूडे आवत्ता समाणी पंच तेवीसे जोयणसए तिष्णि य एगूणवीसइभाए जोयणस्स दाहिणाभिमुही पटवएणं गंता महया महया घडमुहपवत्तएणं मुत्ताविल्हारसंठिएणं साइरेग जोयणसइएणं पवाएणं पवडइ।
गंगा महाणई जओ पवडइ, इत्थ णं महं एगा जिब्सिया पण्णता।
सा णं जिब्सिया अद्धजोयणं आयामेणं छ सकोसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं अद्धकोसं बाहल्लेणं मगरमुह विउट्टसंठाणसंठिया सव्ववइरामई
अच्छा सण्हा०। गंगा महाणई जत्थ पवडइ, एत्थ णं महं-एगे गंगप्यवायकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते, सिंहुं जोयणाइं आयामविक्खंभेणं णउयं
जोयणसयं किंचि विसेसाहियं परिक्खेवेणं, दस जोयणाइं उट्वेहेणं
अच्छे सण्हे रययामयकूले समतीरे वइरामयणसाणे वइरतले सुवण्ण-

अनादि निधन है क्यांकि ऐसा ही नाम इसका भूत काल में था, ऐसा ही नाम इसका वर्तमान काल में हैं और ऐसा ही इसका नास भविष्यत्कालमेही रहेगा इसका भूत काल ऐसा नहीं हुआ है कि जिसमें यह नाम नहीं था वर्तमान काल भी इसका ऐसा नहीं है कि जिसमें यह नाम नहीं चल रहा है और भविष्यत् काल भी इसका ऐसा नहीं होगा कि जितमें इसका यह नाम नहीं होगा अतः इसका ऐसा नाम था, अब भी यह है और भविष्यत् में भी यही रहेगा इस प्रकार से विकाल में भी इसका अस्तित्वख्यापन करने से यह नाम इसका अनिमित्तक है ऐसा प्रकट किया गया है ।।स्०३।।

ન હતું. આના વર્તમાનકાળ પણ એવા નથી કે જેમાં એ નામનું અસ્તિત્વ ન હાય, અને આના ભવિષ્યત કાળ પણ આવા થશે નહિ કે જેમાં આનુ એ નામ અસ્તિત્વ ન ધરાવતું હોય. તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે આનું આ પ્રમાણેનું નામ હતું આપ્રમાણે નામ અત્યારે પણ છે અને ભવિષ્યત્ કાળમાં પણ એવું જ નામ રહેશે. આ પ્રમાણે ત્રિકાલમાં એનું અસ્તિત્વખ્યાપન કરવાથી એ નામ એનું અનિમિત્તક છે આમ પ્રકટ કરનામાં આવેલ છે. 11 3 11

सुब्भरययामयत्राळुयाए वेरुळियमणिफाळियपडळपञ्चोयडे सुहोत्तारे णाणामणितित्थसुबद्धे वट्टे अणुपुट्वसुजाय वप्पगंभीरे सीयलजले संछण्णपत्तभिसमुणाले बहुउप्पलकुमुयणलिणसुभगसोगंधिय पोंडरीय महापोंडरीय सयपत्त सहस्सपत्तसयसहस्सपत्तपफुल्लकेसरोवचिए छप्पयमहुयरपरिभुज्जमाणकमले अच्छविमलपत्थसल्लिले पुष्णे पडिहत्थ भनंतमच्छकच्छभ अणेगसउणगणिहुणवियरिय सद्दुन्नइयमहुरसर-णाइए पासाइए ४। से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेगं सब्बओं समंता संपरिविखत्ते वेइयावणसंडगाणं पउमाणं बण्णओ भाणि-यव्वो । तस्स णै गंगप्पवायकुंडस्स तिदिसिं तओ तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता, तं जहा-पुरिथमेणं १ दाहिणेणं २ पचित्थमेणं ३, तेसि णं तिसो-वाणपडिरूवगाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पपणत्ते, तं जहा-वइरामया णेम्मा, रिट्टामया पइट्टाणा, वेरुलियामया खंभा, सुवण्णरूपमया फलया, लोहियक्समईओ सूर्डओ वइरामया संधी, णाणा मणिमया आलंबणा आलंबणबाहाओत्ति । तेसि णं तिसोवाणपडि ह्वगाणं पुरओ पत्तेयं पत्तेयं तोरणा पण्णत्ता। ते णं तोरणा णाणामणिमया णाणामणिमएसु खंभेसु उविश्विट्टसंनिविट्टा विविद्दमुत्तंतरोवइया विविद्दताराङ्योविया ईहामिय उसहतुरगणरमगरविहगवाळगकिण्णरहस्सरभचमरॐजरवणळय पउमलयभत्तिचित्ता संभुग्गयवइरवेइया परिगयाभिरावा विजाहरजम-ळजुषगजंतजुत्ताविव अचीसहस्समालणिया रूवगसहस्सकलिया मिस-माणा भिविभसमाणा चक्खुङ्घोयणलेसा सुहफासा सस्सिरीयरूवा घंटा विलचित्रय महुरमणहरसरा पासाईया ४। तेसि णं तोरणाणं उविरं बहवे अट्टूट मंगलगा पण्णता, तं जहा-सोत्थिए१, सिरिवच्छे२, जाव पडिरूवा तेसि णं तोरणाणं बहवे किण्णचासरब्झया जाव सुकिछ-चामरज्ञया अच्छा सण्हा० रूपपट्टा वइरामयदंडा जलयामलगंधिया सुरम्मा पासाईया ४। तेसि णं तोरणाणं उप्ति बहुबे छत्ताइच्छता पडाः

गाइपडागा घंटाजुयला चामरजुयला उप्पलहत्थगा जाव सयसहस्सपत्त हत्थगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पिडरूवा ४। तस्स णं गंगाप्पवाय-कुंडस्स बहुअडझदेसभाए एत्थणं महं एगे गंगादीवे णामं दीवे पण्णते, अटु जोयणाई आयामिवक्सभेणं साइरेगाई पण्णवीसं जोयणाई परि-बखेवेणं दो कोसे उत्सिए जलंताओ सच्ववइरामए अच्छे सण्हे०। से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरि-रिक्खित्ते, वण्णओ भाणियव्वो। गंगादीवस्स णं दीवस्स उप्पि बहु-समरमणिउजे भूमिभागे पण्णते। तस्सणं बहुमडझदेसभाए एत्थ णं भहं गंगाए देवीए एगे भवणे पण्णते, कोसं आयामेणं अद्यकोसं विक्खंभेणं देसूणगं च कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं अणेगखंभसयसिणिविट्ठे जाव बहुमङझदेसभाए मणिपेडियाए स्यणिउजे। से केण्ट्रेणं जाव सासए णामधेउजे पण्णते।।सू० ४॥

छ।या-तस्य खल पदाहदस्य पौरस्त्येन तोरणेन मन्ना महानदी प्रव्युटा सवी पूर्वाभित्नखी पश्चयोजनशतानि पर्वतेन गत्वा गङ्गावर्त्तक्टे आवृत्ता सती पश्चत्रयोविंशतिं योजनशतानि चींश्र एकोविशिक्षितामान योजनस्य दक्षिणामियुखी पर्वतेन गत्वा महाघटग्रुखप्रवृत्तकेन मुकावलीहारसंस्थितेन लातिरेकयोजनशतंकन प्रपातेन प्रपत्ति गहामहानदी यतः प्रपत्ति अत्र खल महती एका जिह्दिका प्रज्ञप्ता। सा खलु जिह्दिका अर्द्धयोजनमायामेन पर् सको-शानि योजनानि विष्क्रमभेण अर्द्धकोशं वाहरुयेन मक्रतुखविकृतसंस्थानसंस्थिता सर्ववज्रमयी अच्छा श्रुक्ष्मा । गङ्गा महानदी यत्र प्रपत्ति अत्र सुख महदेकं गङ्गाप्रपातकुण्डं नाम कुण्डं प्रज्ञप्तम् , पर्छि यो नवानि आयासविष्कम्भेण, नवतं .योजनशतं किञ्चिद्विशेषाधिकं परिक्षेपेण, दश योजनानि उद्वेशेन अच्छं श्रक्षणम् रजतमयबालुकाकम् वैद्वर्थमणिक्किटिकपटलप्रत्यवत्टं सुखावतारं सुखोतारं नानामणितोथेसुवदं पृत्तम् आनुप्रविस्नातवप्राम्मीर्शातलवलं संलन्न पत्र विसम्णालं बहत्पलकुमुद्दनलिनसुभगसौगन्धिकपुण्डरीकमहापुण्डरीक शतुपत्र सहस्र पत्र शतसहस्रपत्र प्रफुरल केसरोवचितं पदपद मधुकरपरिसुज्यमानकमलम् अच्छवियलपथ्यस-लिलं पूर्ण परिहस्तभ्रमन्मत्स्यकच्छपानेकशकुनगणमिथुनपविचरितशब्दोक्षतिकमधुरस्वरनादितं प्रासादीयम् ४ । तत् खछ एकया पद्मवरवेदिकया एकेन च वनपण्डेन सर्वतः समन्तात् संप-रिक्षिप्त , वेदिकावनपण्डयोः पद्मानां च वर्णको भणितव्यः । तस्य खळ गङ्गाप्रपातकुण्डस्य त्रिदिशि त्रिसोपानप्रतिरूपकाणि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-पौरस्त्ये दक्षिणे पाश्चात्ये तेषां खल्ल

त्रिसोपानप्रतिरूपकाणाम् अयमेतद्रूपो वर्णावासः प्रज्ञप्तः, तद्यथा-वज्रमयाः नेमाः, रिष्टमः यानि प्रतिष्ठानानि, वैदूर्यमयाः स्तम्भाः, सुवर्णहप्यमयानि फळकानि, लोहिताक्षमय्यः स्चयः, बज्जमयाः सन्धयः, नानामणिमयानि आसम्बनानि आसम्बनबाहा इति । तेषां खस्त त्रिसोपानप्रतिरूपकाणां पुरतः प्रत्येकं र तोरणाः प्रज्ञप्ताः । ते खळ तोरणा नानामणिमयाः नानामणिमयेषु स्तम्भेषु उपनिविष्ठसंनिविष्ठाः विविधमुक्तान्तरोपचिताः विविधतारा-रूपोपचिताः ईहामृगवृपभतुरगनर्मकर्विहगव्यालकिकारुरुश्यचमरकुःःस्वनलतापद्मलता भक्तिचित्राः स्तम्भोद्रतवज्रवेदिका परिगताभिरामाः विद्याधरयमलयुगलयन्त्रयुक्ता इव अर्चिः सहस्रमाछनिकाः रूपकसहस्रकछिताः भासमानाः वाभास्यमानाः चक्षुर्लोकनश्छेषाः सुखस्पर्भाः सश्रीकरूपाः चण्टावित्रचित्रदेशपुरमनोहरस्वराः प्रासादीयाः ४ । तेषां खछ तोरणानामुपरि बहून्यछाष्ट्रमङ्गलकानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा -स्वस्तिकं १ श्रीदत्सः २ यावन्प्रति रू-पाणिष्ठ । तेपां खळ होरणानाम्रपरि बहवः ऋष्णचामरध्वजाः यावत् शुक्छचामरध्वजाः अच्छाः श्रुक्ष्णाः रूप्यपद्वाः वज्रमयद्ण्डाः जलजामलगन्धिकाः सुरम्याः प्रासादीयाः घण्टाः युगळानि चःमरयुगळानि उत्पळइस्तकाः-पबाइस्तकाः यावत् शतसदस्रपत्रद्वस्तकाः सर्वे स्न-मयाः अच्छाः यात्रत् प्रतिरूपाः । तस्य खल्ज गङ्गाप्रपातकुण्डस्य बहुमध्यदेशसाने अत्र खल्ज यहानेको गङ्गाद्वीपो नाम द्वीपः प्रज्ञसः, अष्टयोजनानि आयामविष्कम्भेण साविरेकाणि पञ्चविंशति योजनानि परिक्षेपेण, हो क्रोशायुन्छितो जलन्तात् , पर्ववज्ञमयः अन्छः अलक्ष्णः। स ख्छ एकया पद्मवरवेदिकया एकेन वनकण्डेन सर्वतः समन्तात् संवितिक्षक्षः वर्णको भिजतन्यः। यहा द्वीपस्य खळ द्वीपस्योपरि बहुसमरमणीयो सूमिन्नागः प्रज्ञशः। तस्य खळ बहुमध्यदेशसागे अत्र खुळु एकं महद् गङ्गाया देव्या एकं भवनं प्रज्ञसम् , क्रोशमायामेन अर्द्ध-कोशं विष्कम्भेण येशोनकं च कोशमूर्ध्वमुच्चत्वेन अनेक स्तम्भशतसिक्षविष्टं यावद् बहुमध्य-देशमागे मणियोठिकायां शयनीयस्। अथ केनार्थेन यावत् शाधतं नामधेय प्रहारम् ॥ १६० ४ ॥ टीका-'तस्स णं' इत्यादि । 'तस्स णं' तस्य अनन्तरोक्तस्य खळ 'पउभद्ददस्स' पद्म-

टीका-'तस्स णं' इत्यादि । 'तस्स णं' तस्य अनन्तरोक्तस्य खळ 'पउमददस्स' पद्म-हदस्य 'पुरित्थिमिल्छेणं' पौरस्त्येन पूर्विदिग्भवेन 'तोरणेणं' तोरणेन 'गंगः' गङ्गा-गङ्गानाम्नी 'महानई' महानदी-स्वपरिवारभूतचतुर्दशसहस्र नदी सम्पन्नत्वेन स्वतन्त्रतया समुद्रगामित्वेन

गंगा सिन्धु महानदियों के स्वरूप का कथन

'तस्स् णं पउमदहस्स पुरत्थिमिल्छेणं तोरणेणं'

टीकार्थ—(तस्स णं पडमइहस्स पुरित्थिमिरुछेणं तोरणेणं) उस पदाहूद् के पूर्व दिग्दर्ती तोरण से (गंगा महाणई पवृहा समाणी पुरत्थाभिष्ठही पंचडोयणसयाइं

ગંગા-સિન્ધુ મહાનદીઓના સ્વરૂપનું કથન-

^{&#}x27;तस्स णं पडमइहस्स पुरात्थिम्मिल्छेणं तोरणेणं इत्यादि'

टीकार्थ-'तस्स णं पडमइहस्स पुरत्थिम्मिन्छेणं तोरणेणं' ते पक्षहृहनः पूर्वं हिन्वताः ते।रखुथी 'गंगा महाणई पबूढा समाणी पुरत्थाभिमुही पद्मजोयणसयाइं पटबएणं गंता गंगाः

च प्रकृष्टा नदी, एवमग्रे सिन्ध्वादिष्विप प्रकृष्टत्वं बोध्यम्, 'पवृद्धा' प्रच्युद्धा निःसता 'समाणी' सती 'पुरत्था निष्ठुद्धी' पौरस्त्या निष्ठुद्धी पूर्व निष्ठु प्रवित्त प्रवि

पटवएणं गंता गंगावत्तणकुढे आवत्ता समाणी) गंगा नामकी - महानदी अपनी परिवार भूत १४ हजार निदयों रूपी सम्पत्ति से युक्त होने के कारण तथा स्वतन्त्र रूप से समुद्रगामिनी होने के कारण प्रकृष्टनदी - निकली हैं सिन्धु आदि-नादियों में भी इसी प्रकार से प्रकृष्टना जाननी चाहिये यह गंगा महानदी पूर्वाभिसुखी होकर पांचसो योजन तक उसी पर्वन के ऊपर बहती हुई गङ्गावर्त नामके कृट तक न पहुंच कर प्रत्युत उसके पास से लौटकर (पंच तेवीसे जोयणसए तिष्णि एगूणवीसइभाए जोयणस्म दाहिणाभिमुहीपव्वए णं गंता) ५२३ योजन तक दक्षिणिदशा की तरफ उसी पर्वत से मुडजाती है (महमा घडमुहपवत्तएणं मुत्ताविलहारसंिठए णं साइरेगं जोयणसइएणं प्वाएणं पव इड और बडे जोर शोरके साथ घटके मुख से निकले हुए शब्दायमान जल प्रवाह के तुल्य तथा मुक्ताविलिनिर्मित हार के जैसे संस्थान वाले ऐसे एक सौ

वत्तणकृष्डं आवत्ता समाणी' गंगा भढ़ा नहीं पाताना ज परिवार भूत १४ ढुलर नहीं थे। ३पी संपत्तिथी युद्धत है। वा जहस तेमज स्वतंत्र ३पथी समुद्रशमिनी है। वा जहस प्रकृष्ट नहीं छे. सिन्धु आहि नहीं थे। मां पण्च आ प्रमाण्चे ज प्रकृष्टता लाण्यी क्रिध्ये. ये गंगा महानहीं पूर्वा सिमुण थर्धने पांचसे। ये।जन सुधी तेज पर्वत हपर प्रवाहित थती गंगावर्ता नामक्ष्ट्रेट सुधी निह्य पहें। ये।जन सुधी पाशी क्रिश्मे पंच तेवीसे जोयणस्य तिण्णिएग्णवीसङ्भाए जोयणस्य दाहिणाभिमुही पटवएणं गंता' परव्व है थे।जन सुधी हिश्च हिशा तरक्ष ते पर्वत पासेथी पाशी क्रेड छे.भहया घडमुह्यवत्तएणं मृताविह्यारसंठिए णं साहाइरेग जायणसङ्ग्णं पवाएणं पवडइ' अने भूषज प्रश्चं वेगथी अने प्रश्चं स्वर साथ धडानां मुणभांथी निस्त शण्डमान जस प्रवाह तह्य तेमज मुक्ताविह निर्मित हार जेवा संस्थान

हारस्तत्संस्थितेन तदा हारेण-प्रपाने धावरयेन बुद्बुदानां तदाकारतया च तत्साहक्यं बीध्यम् 'साइरेग जोयणसइएवं' सातिरेक योजनशतिकेन सातिरेका किञ्चिद्धिका योजनशतिका योजनशत्येव यौ ननशनिका शतयोजनानि मानत्वेन यस्य तथाभूतेन, यद्वा सातिरेका योज-नशती प्रमाणयस्य तथाभूतेन 'पवाएगं' प्रपालेन निर्भरेण तद्द्वारा 'पवडर्' प्रयति प्रपात-कुण्डं प्राप्नोति, 'गगा महाणई जओ' सङ्गामहानदी यतः यस्मात् स्थानात् 'पयडइ' प्रपत्तति, 'इत्थ णं' अत्र गङ्गाप्रपातस्थाने खळु 'महं' महती बृहती 'एगा जिन्भिया' एका जिद्धिका जिह्नासाप्रणाली 'दण्णचा' प्रज्ञप्ता । 'सा णं जिन्निया' सा च जिह्निका 'अद्ध जोयणं आयामेणं' अर्थयोजनमायामेन, 'छ सक्षोसाई जोयणाई' सक्रोशानि क्रोशसहितानि षट्ट-योजनानि 'विक्खंभेण' विष्क्रम्भेण विस्तारेण, 'अद्धकांसं वाहरुलेणं' अर्द्धकोशं वाहरुपेन पिण्डेन 'मगरपुरविउद्धसंठाण संठिया' मकरपुल विवृतसंस्थानसंस्थिता विवृतमकरपुखाकारा अत्र विष्टुतस्य आर्पत्वात् परप्रयोगः, 'सन्बवद्रामई' सर्बेबल्लमयी सर्वातमना बजरतनमयी 'अच्छा सण्हा॰' अच्छा श्लक्ष्मा इत्यादि प्राण्यत् 'शंना महाणई जत्थ पवडह' यत्र गङ्गामहा-नदी प्रपत्ति 'एत्थ णं' अत्र गङ्गाप्रपातस्थाने खर्छ 'सद्दं एगे' एकं मःत् बृहत् 'गंगप्पवाय-योजन से भी कुछ अधिक प्रमाणोपेन प्रवाह से प्रधात कुण्ड में गिरती है (गंगा-महाणई जओ पचडड़ इस्थमं एमा यहं जिहिनदा पण्णला) गंगामहानदी जिस स्थान से प्रपत कुण्ड में गिरती है वहां पर एक विशाल-जिहिका जैसी आकृति-बासी प्रणाली है (सा णं जिन्धिया अद्ध जीयणं आयाभेणं छ सकोसाई जीयणाई विक्खंभेणं अंह्रकोसं बाइल्छेषं सगर हुह विड्ड खंठाणसंठिया सब्बव्हरामई अच्छा सण्हा) यह जिहा के जैसी प्रवाली आयाम की अपेक्षा आधे योजन की है और विष्करभविस्तार की अपेक्षा यह १ को व सहित ६ योजन की है। तथा इसका बाइल्य-मोटाई-आधे को शका है इसका आकार भगर के खुछे हुए सुख के जैसा है यह सर्वात्मजा रत्नवयी है अव्छा-आकादा और स्फटिक के जैसी विलकुल निर्मल है और चिकनी है आई होने के कारण यहां विष्टत शब्द का વાળા એકસા યાજન કરતા પણ કંઇક અધિક પ્રમાણાપેત પ્રવાહથી પ્રપાત કુંડમાં પડે છે 'गंगा महाणई जश्री पवडद, इत्थणं एगा महं जिन्निया पण्णत्ता' गंगा भडानही के स्थान ઉપરથી પ્રયાત કુંડમાં પડે છે. ત્યાં એક વિશાળ જિલ્લા જેવી આકૃતિ ધરાવતી પ્રણાલી छै. 'सा णं जिब्भिया अद्ध जोयणं आयामेणं छ सकोसाई जोयणाई विक्खंभेणं अद्धकोसं बाहल्लेणं मगर पुह्विउद्र संठाण संठिया सन्त्र बहरामई अन्छा सण्हा' थे। विह्ना केपी પ્રણાલી આયામની અપેક્ષાએ અર્ધા યેજન જેટલી છે અને હિકંભની (વિસ્તાર)ની અપે-ક્ષાએ એક ગઉ સહિત է યાજન જેટલી છે. તેમજ એની માટાઇ (બાહલ્ય) અર્ધા ગઉ જેટલી છે. એ સર્વાત્મના રતનમથી છે. અચ્છા-ગાકાશ અને સ્ફરિક જેવી એ તદૃદન નિર્મળ અને સ્નિગ્ધ છે. આર્પ હોવા અદલ અહીં વિવૃત્ત શબ્દના પર પ્રયોગ થયેલ છે.

कुंडे' गङ्गाप्रपातकुण्डं 'णामं' नाम गङ्गाप्रपातकुण्डनामकं 'कुंडे' कुण्डं-यथार्थनामकं 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तम् तस्य मानाद्याह -'सिंहं जोयणाई' इत्यादि, 'सिंहं जोयणाई' पिंछं योजनानि आयामिविक्खंभेणं' आयामिविष्कस्भेण दैर्ध्यविस्ताराभ्याम् 'णउयं' नवतं-नवत्यधिक 'जोयण-स्यं' योजनवतं 'किंविविसेसाहियं' किश्चिहिशेषाधिकं 'पिरिक्खेवेणं' पिरिक्षेषेण पिरिधिना 'दसजोयणाई उन्वेहें।' दश्योजनानि उद्वेशेन भूगतत्वेन 'अच्छे' अच्छं स्फिटिकवदुज्ज्वस्म् 'सण्हे' श्लक्षं-चिक्कणम् पुनः कीहशमित्याहि 'स्ययामयक्ले' इत्यादि, 'स्ययामयक्ले' रजतमयक्लं-रजतमयत्यम्, 'समतीरे' समतीरे समानत्यकम्, 'वइरामयपासाणे' वज्रमयपापाणं वज्ररत्नमयपापाणयुक्तम्, 'वइरतले' वज्रतलं वज्ररत्नमयत्तलयुक्तम् 'सुवण्ण सुन्भरयपापाणं वज्ररत्नमयपापाणयुक्तम्, 'वइरतले' वज्रतलं वज्ररत्नमयत्वलयुक्तम् 'सुवण्ण सुन्भरयपामयवालुयाए' सुवर्णशुभरजतमयवालुकाकं शुभं-शुक्लं यत् सुवर्ण रजतंवेत्युभयमयीवालुका यत्र तत्तथा भूतम् 'वेक्लियमणिकालियालुकप्चयेष्टे' वैद्धर्यमणिस्फिटिकपटलप्रत्यव-तत्त्रया भूतम् 'वेक्लियमणिकालियाल्लयस्व तन्त्रयानि प्रत्यवत्यानि तटसमीपव-तिच उन्नतप्रदेशो यस्य तत्तथा 'सुहोयारे' सुखावतारं सुखकरजलप्रवेशयुक्तं 'सुहोत्तारे' सुखोत्तारं सुखकरजलिकिपनव्यनिक्यस्व दे' नानामणितीर्थसुवदं-अनेकिविधम-

पर प्रयोग हुआ है (गंगा महानई जत्य पवडई, एत्थ णं एगे सहं मंग्रप्पवायहंडे णामं कुडे पण्णत्ते) गंगा महानदी जहां पर गिरती है वहां पर एकि दिशाल गंगा प्रपात कुण्ड नामका कुण्ड है (सिंडें जोषणाई आयामिवक्लं भेणं नउमं जोषण सयं किंचि विसेसाहियं परिक्खें वेणं दस जोषणाई उन्वेहेणं अच्छे सण्हें) आयाम और विष्कम्भ की अपेक्षा यह ६० योजन का है कुछ विशेषाधिक १९० योजन का इसका परिक्षेप है १० योजन की इसकी गहराई है यह आकाश और स्फिटकमणि के जैसा निर्धल है तथा चिकना है (रययामयक्ले) इसका तट रजतमय है। (समतीरे) और वह सम है नीचा ऊंचा नहीं है (वइरामय-पासाणे) वज्रमय इसके पाषाण-पत्थर हैं (वहरत छे, सुवण्ण सुन्भरययामयवालु-याए, वेक्लियमणि फालिय पडलपच्चोयडे, सुहोआरे, सुहोत्तारे, णाणामणि-

'गंगा महानई जत्थ पत्रडइ, एत्थणं एगे महं गंगाण्यशयकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते' गंगा महानहीं क्यां पडे छे त्यां थेड विशाण गंगा प्रपात हुंड नामह हुंड छे. 'सिंह कोयणाई आयाम विक्लंभेणं नउअं जोयणसयं किंचित्रिसोसाहियं परिक्लेबेणं दस जोयणाई उटवेहेणं अच्छे सण्हें' आयाम अने विष्डं लनी अपेक्षाओं थे ६० शेलन केंटलं प्रमाण् धरावे छे. हं छंड विशेषाधि १६० थेलन प्रमाण् आने। परिक्षेप छे. १० थेलन केंटली आनी अंडां छे. थे आहाश अने २६टिड मिण्वत् निर्मण छे. तेमक स्निष्ध छे 'रययामय कूले' येने। हिनारा मकतमय छे. 'समतीरे' अने ते सम छे नीया अंचा नथी. 'वइरामयपासाणे' वक्षमय येन। पाषाणे।—पण्धरा—छे. 'वइरतले सुवण्णसुटमरयग्रामयबालुयाए, वेहलियमणिकालिय पडल्डपच्चोयडे, सहोआरे; सहोत्तारे, णाणामणितित्यसुबद्ध वहे अणुपुट्वसुजाय वप्प गंभीरसीअलजले संद्रण्णपत्तिसमुणाले' येने। तक्षाण वळ्यस्य छे. येमा के वालुका

णिभिः सुबद्धं तीर्थम् अवतरणोत्तरणमार्गो यस्य तत्तथा अत्र प्राकृतत्वा तीर्थशब्दस्य पूर्वप्रयोगः सुबद्धशब्दस्य च पर्प्रयोगः, 'बट्टे' वृत्तं वर्त्तृत्वम्, 'आणुपुव्यसुजायवण्पगंभीरसीयलज्ले' आनुपूर्व्यसुजातवप्रगम्भीरशीतलज्जलम् आनुपूर्व्यण क्रमेण सुनातं सुनिष्पनं वप्रं पाली यस्य, तच्च गम्भीरम् अगाधं श्रीतलं जलं यत्र तत्तथा, उभयो क्रमेपारयः। 'संख्णापत्तिससुणाले' संख्याति व्यासानि पत्रविसमृणालानि पद्यानां पत्रवन्दनालानि यत्र तत्तथा, 'बहुउपलक्षप्रयणिलणतुभगसोगंधियप्तेंडरीयमहाप्तेंडरीय सयपत्त सहस्सपत्त सयसहस्सपत्तपपुरुव्हकेसरोदिष्यणं वहूत्पलक्षपुद्रनिलनसुप्रगसौगन्धिकपुण्डरीकमहापुण्डरीक-शतपत्रसहस्यपत्रप्रपुरुव्हकेसरोपशोभितं तत्र बहूनि प्रचुराणि प्रपुर्व्हानि विकसितानि यानि उत्पलानि चन्द्रविकाशीनि कमलानि, पद्मानि सूर्यविकाशीनि कमलानि, क्रमुदानि कैरवाणि, तान्यपि चन्द्रविकाशीनि श्रेवरक्तादि वर्णानि भवन्ति तथा नलिनानि

तित्थ खबद्धे वहे आणुपु वसुजायवप्प गंभीरसीअलजले संछण्णपत्तभिसमुणाले इसका तलभाग वज्रमय है इसमें जो वाजुका समूह है वह सुवर्ण की और शुभ्र रजत की मिलावटवाली है इसके तटके आसन्नवर्ती जो उन्नत प्रदेश है वे वैद्ध्ये और स्पिटिक के पटल से निर्मित हैं इसमें प्रवेश करने का और वाहर निकलने का जो मार्ग है वह सुखकर है घाट इसके अनेक मिणपों द्वारा सुबद्ध हैं यह वर्तुल गोल है इसमें जो जल भरा हुआ है वह कमशाः आगे २ अगाध होता गया है और शीतल होता गया है यह कमलों के कन्दो एवं पत्तों नालों से व्याप्त हो रहा है। (बहु उप्पलकुमुदणिलण सुभगसोगंधिय पोंडरीय महापोंडरीय सयपत्त सहस्मपत्तस्यसहस्मपत्तपप्तु हुकेसरोवचिए) यह प्रमुल्लित उत्पलों की, कुमु दों की, निलनों की, सुभगों की, सौगंन्धिकों की, पुण्डरीकों की, महापुण्डरीकों की, शत्त्ववाले कमलों की, हजार पत्रवाले कमलों की, एवं लाखपत्तों वाले कमलों की, किञ्चलक से उपशोभित है चन्द्रविकाशी कमलों का नाम उत्पल है

સમૃહા છે તે સુવર્ણની અને શુભ્ર રજતની વાલુક ઓથી યુક્ત છે, એના તટના આસ- નવલી જે ઉન્નલ પ્રદેશ છે તે વૈડ્ર્ય અને સ્ક્ટિકના પટલથી નિર્મિત છે. એમાં પ્રવેશ કરવા માટે અને બહાર નીકળવા માટે જે માર્ગ છે તે સુખકર છે. એના ઘાટા અનેક મૃશિઓ દારા સુખદ્ધ છે, એ વર્તુલ—ગેલાકારમાં છે. એમાં જે પાણી છે તે અનુક્રમે આગળ—આગળ અગાધ થતું ગયું છે અને શીલળ થતું ગયું છે એ કમળાના કંદો તેમજ પાદડાઓ અને નાલાથી વ્યાપ્ત થઇ રહ્યો છે 'बहુકલ્વલ જમુદ્દળસ્થિ સમયસોમાંથય પોંહરીય મૃદ્દાવો સ્થવત્ત સદ્દરસવત્ત સચસદ્દાત્તવત્તવભુલ કેસરોયવિષ્' એ પ્રકુલ્લિલ ઉત્પક્ષાની, કુમુદ્દાની, નિલનાની, સુલગાની, સૌગંધિકાની, પુંડરીકાની, મહાપુંડરીકાની, શતપત્રવાળા કમળાની, કિંજલ્કાથી ઉપશાભિત છે ચન્દ્રવિકાશી કમળાનું નામ ઉત્પલ છે

सुभगानि कमछविशेषाः सौवन्यि हानि दाहाराणि श्वेतवर्णानि सुरान्धीय कमछानि, सुण्डरी-काणि-श्वेतकमलानि, तान्येव महान्ति-भटापुण्डरीकाणि, शतपत्राणि-पत्रशत्विशिष्टानि कमलानि, सहस्रपत्राणि-पत्रसहस्रयुक्तानि कमलानि, शतसहस्रपताणि-लक्षपत्रयुक्तानि कमः लानि तेषां केसरै: किंजल्कै: उपशोभितम् । यहा-वहनि-प्रनुराणि प्रफुरलानि विकस्वराणि केसरोपशोभितानि च उत्पन्नादीनि यत्र तत्त्रथा । अत्र प्रथमविग्रहे प्रफुल्ट्यव्यस्य, द्वितीयः विग्रहे प्रफुल्टकेसरोपशोभितपदस्य च पर्प्रयोग आर्पत्वात् 'छप्ययमहुयरपरिशुक्षमाणकमछे' षट्पदमधुकर परिश्वज्दमानकम्लं पट्टदा ये सपुकराः अग्रताः तैः परिश्वज्दमानानि कमलानि उपलक्षणतया कुहुदादीनि च यत्र तत्त्रथा 'अच्छिविमलपत्थसिकेले' अच्छिविमलपथ्यसिलिलम् तत्र-अच्छविमलम् अत्यन्तविसलं पथ्यं हितं सब्लिलं जलं यत्र तत्तवा 'पुण्णे' पूर्ण जलै र्भृतम् 'पिडहत्थ भर्मतमच्छकच्छम अणेग सउगमणनिहुणियरिय सद्दाह्यमद्वरसरणाइए' प्रति-इस्त भ्रमन्मत्स्यकच्छपानेक शकुनगणिभुन प्रविवस्तिशव्दोक्ततिमधुरस्वरनादितम् तत्र प्रति-इस्ताः अतिप्रभूताः अत्यधिकाः भ्रमन्तः इतस्ततश्रवन्तश्र ये मःस्याः कच्छवाश्र, तथा अनेक शकुनगणमिथुनानि अनेकजातीय पिक्षगणानां स्त्रीपुंसयुगलानि तैः प्रविचरिताः कृता ये ह्य विकाशी कमलों का नाम पर्म है कैरवों का नाम कुमुद है ये भी चन्द्र-विकाशी ही होते हैं-पर इनमें खेत, रक्त आदि वर्ग की अपेक्षा भेर होता है निलन और सुभग ये भी कमलिबदोष हैं खेतवर्णवाले सुगंधित कमलों का

सूर्य विकाशी कमलों का नाम पर्म ह करवों का नाम कुमुद है ये भी चन्द्र-विकाशी ही होते हैं—पर इनमें खेत, रक्त आदि वर्ग की अपेक्षा भेर होता हैं निलन और सुभग ये भी कमलिदशेष हैं खेतवर्णवाले सुगंधित कमलों का नाम सौगंधिक कमल कहा गया है केवलवर्ण में जो खेत होते हैं वे एण्डरीक हैं इनकी अपेक्षा जो बड़े होते हैं वे महा एण्डरीक है (ज्ञा्यमहुधरपिस्जा-माण कमले) इसके कमलों पर भूमर कैठकर उनकी किंजलक का पान किया करते हैं (अच्छविमलपसत्यसिलले) इसका जल आकाश और स्कटिक के जैसा भत्यन्त निर्मल है तथा पथ्य हितकारक है (पुण्णे, पिडहरूपभमंतमच्छकच्छभ भ्रणेग सडणगणिमहुणपविश्वरिय सदुन्नइयतहुरसरणाइए पासाईए) यह सदा जल से परिपूर्ण रहता है इसमें इघर उधर अनेक मच्छ कच्छप किरते

सूर्य विश्रशी इमणानुं नाम पद्म छे. हरवानुं नाम इमुह छे. यो पण यन्द्र विश्रशी कर हाय छे, परंतु योमां श्वेत रहत याहि वर्णुनी अपेक्षायों केह हाय छे. निल्लेन अने सुलग यो पण इमण विशेष छे. श्वेन वर्णुनाणा सुगंधित इमणाने सौगंधिइ इमण इहे वामां यावे छे. हेवण वर्णुमां केश्वेत हाय छे ते पुंडरीइ छे. योमना इरतां के माटा हाय छे ते महापुंडरीइ छे. 'छप्पयमहुयरपरिमुक्तमाणकमले' योना इमणा अपर अमरे। पेसीने तेमना डिंक्डइनुं पान इरता रहे छे. 'छप्पयमहुयरपरिमुक्तमाणकमले' योना इमणा अपर क्यारा पेसीने तेमना डिंक्डइनुं पान इरता रहे छे. 'छप्पय-विमलपस्थमलिले' योनुं क्ण याडाश याने स्हिटइनी केम अत्यंत निर्मण छे. तेमक पथ्यक्षर छे. 'पुण्णे, पिन हत्य भमंत मच्छ कच्छम अणेग सडणगणमिहुण पित्रअरिय सडुन्तइय महुरसरणाइय पासाईए' यो सर्वंदा क्णायी परिपूष्ट्रों रहे छे. योमां आम-तेम अनेइ मण्छ इथ्छपे।

शब्दास्तेषामुक्तिर्यत्र तादशो मधुरस्वरो माधुर्य्यगुणविशिष्टस्वरयुवतो यो नादः स्तं, स जातोऽस्मिश्चिति तथा, तथा 'पासाइए४' प्रासादीयं दर्शनीयम् अभिरुपं प्रतिरूपं च एत-द्वधारूया प्राग्वत् ।

'से णं' तत् गङ्गाप्रपातकुण्डम् खल 'एगाए पउमवरवेइयाए' एकया पद्मवरवेदिकया 'एगेण य वणसंडेणं' एकेन च वनएण्डेन 'सब्बओ समंग संपरिकिहत्ते' सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्तं परिवेष्टितम् , अत्र 'वेइया वणसंडगाणां पउमाणं वणाओ' वेदिका वनपण्टयोः पद्मानां च वर्णको वर्णनमञ्जेव जगतीस्त्रव्याख्यातो 'भाणियव्यो' मणितव्यः, 'तन्स णं गंगप्पवायकुंडस्स' तस्य खल गङ्गाप्रपातकुण्डस्य 'तिदिसिं तभो' त्रिविश्चि शीणि 'तिसोवाणपिड्क्वगा' त्रिसोपानप्रतिकृपकाणि सोपानत्रयवक्षकिकृपाणि 'पण्यता' प्रद्यक्षानि 'तं जहा' तद्यथा 'पुरत्थिमेणं' पौरस्त्ये पूर्वे पूर्वस्यां दिशि 'दाहिणेणं' दक्षिण दक्षिणस्यां दिशि 'पच्चित्थमेणं' पश्चिमे पश्चिमायां दिशि 'तेसि णं' तेषां खल्ल 'तिसोवाणपिडक्वगाणं' त्रिसोपानप्रतिकृपकाणम् 'अयमेयाक्वे' अयमेतद्वयः अनुपदं वक्ष्यमाणस्यक्षपो 'बण्णा-

रहते हैं अनेक जातिके पक्षियों का जोड़ा यहां पर बैठकर नामा प्रकार के मधुर स्वरों से शब्द करता रहता है यह कुण्ड प्रासादीय है, दर्शनीय है, अभिक्ष्य है और प्रतिरूप है इन परों की व्याख्या पूर्व में की जा चुकी है (से णं एमाए पड़मबरवेइयाए एगेणय वणसंडेणं सव्वओं समंता संपरिक्षित्रे) यह कुण्ड एक पद्मबरवेदिका से और एक वनषण्ड से चारों ओर से घरा हुआ है यहां (वेइया वणसंडमाणं पड़माणं वण्यभों भाणियव्वों) येदिका का वनषंडका और पद्मों का वर्णक जगती सूत्र की व्याख्या से कहलेगा चाहिये-(तस्समं नंगप्य वायकुंडस्स तिदिसि तओं तिसोयाणपिडस्वगा प.) उस गंगा प्रयत्न कुण्ड की तीन दिशाओं में तीन त्रिसोपान प्रतिरूपक हैं (ते जहां) जो इस प्रकार से हैं-(पुरिक्थमेगं, दाहिणेगं पच्चित्रेमेगं) एक त्रिसोपानपित्रिस्पक पूर्वदिशा में है एक त्रिसोपान प्रतिरूपक दक्षिण दिशा में है अगेर एक त्रिसोपान प्रतिरूपक पश्चिम

इरता रहे छे. अने इ कातिओ। पश्चीओ ना जोडा अहीं भिसीने अने प्रहारना सधुर स्वराधी शण्डे। हरता रहे छे, ओ इंड प्रशाहीय छे, दर्शनीय छे, अलिइप छे अने प्रति-इप छे. ओ पहेानी व्याण्या पहेला इरवामां आवी छे. 'से ण एगाए पडमवरवेइचाए एगेण्य वणसंडेणं सहत्रओ समंता संपरिक्लितं' ओ इंड ओ इ द्धार वेहिशाथी अने ओ इ वन-भांडयी योगेर आधृत छे. अहीं 'वेइयावणसंडगाणं पडमाणं वण्णओ माणियहवों' वेहिशाना, वनभांडना अने पत्तीना वर्णून विषे 'अगती सूत्रनी' व्याण्यामांथी काष्ट्री लेडिशाना, 'तस्स णं गंगप्यवायकुंडस्स तिदिसिं तओ तिसीनाणपिष्टक्त्रमा पव्' ते अंगा प्रपात इंडनी त्रध्य हिशाओमां त्रध्य त्रिसोपान प्रति इपहें। छे 'तं जहां' ते आ प्रमाधे छे. 'पुरिक्षिमेणं वाहिणेणं पच्चिन स्थिनेणं अक्षेत्रसोपान प्रति इपहें। धुर्व हिशामां छे ओ त्रिसोपान प्रति इपहें हिशामां छे,

वासे' वर्णावासः वर्णनप्रकारः 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तः, 'तं जहा' तद्यथा 'वइरामयाणेमा' इत्यादि। तत्र 'वइरामया' वज्रमयाः वज्ररत्नमयाः नेमाः भूमिभागादृध्वे निष्क्रामन्तः प्रदेशाः 'रिष्टामया' रिष्टमयानि—रिष्टरत्नमयानि 'पइष्टाणा' प्रतिष्ठानानि त्रिसोपानमूलप्रदेशाः 'वेरुलियामया' वैर्ड्यमणामयाः 'खंभा' स्तम्भाः, 'सुवण्णरूपमया' सुवर्णरूप्यम्यानि 'फलया' फलकानि त्रिसोपानाङ्कभूतानि 'लोहियवस्त्रमईओ' लोहिताक्षमय्यः—लोहिताक्षरत्नमय्यः 'सईओ' स्वयः फलकद्वयस्त्रयोजककीलकानि 'वइरामया' वज्रमयाः वज्ररत्नसरिताः 'संघी' सन्धयः फलकद्वयस्तरालभागाः 'णाणामणिमया' नानामणिमयानि अनेकविध्यमणिमयानि 'आलंबणा' आलम्बनानि आरोहतामवरोहतां च स्खलनिवारणार्थमा अयभूताः केचिद्वयवाः, च पुनः 'आलंबणयाहाओत्ति' अवलम्बनवाहाः—उभयपार्श्वयोरवलम्बनाश्रयो भूता भित्तयः, इति ।

दिशा में हैं (तेसिणं तिसोवाणपिंडस्वगाणं अयमेयास्वे वण्णावासे पण्णत्ते) इन निस्तोपान प्रतिरूपकों का वर्णन इस प्रकार से कहा गया है-(तं जहा) जैसे-(वइरा मया नेमा, रिद्वामया पहडाणा, वेक्लियामया खंभा, खुवण्णरूप्पमया फलया लोहियक्खमईओ सहओ, वहरामया संघी, णाणामणिमया आलंबणा, आलंक्ण बाहाओं) इनके भूभाग से ऊपर की ओर निकले हुए-प्रदेशस्य-नेम वज्ञरतन के बने हुए हैं प्रतिष्ठान-त्रिसोपान के मूलप्रदेश रिष्ठ रतन के बने हुए हैं स्तम्भ इनके वैड्डर्घ रतन के बने हुए हैं फलक परिये-इनके खुवर्ण रूप्य के बने हुए हैं फलक ह्य की संयोजक कीलक के स्थानापन्नरूप खूचियां लोहिताक्ष रतन की बनी हुई हैं फलकों की जो संधिया हैं वे वज्र की बनी हुइ हैं तथा इनके ऊपर चढने वालों को या उतरने वालों को सहारे रूप जो आलम्बन हैं वे अनेकमणियों के बने हुए हैं। इसी तरह इन आलम्बनों के जो आलम्बनवाह हैं भित्तियां हैं वे भी अनेक मणियों के बने हुए हैं। (तेसिणं तिसोवाणपिंड-

એક त्रिसे। पान प्रतिइपक्त पाश्चिम हिशामां छे 'तेसि णं तिसोवाणपडिस्वगाणं अयमेवास्त्वे वण्णावासे पण्णत्ते' से त्रिसे। पान प्रतिइपक्षे। वर्षुन स्वा प्रमाखे क्षेवामां स्वाचित छे. तं जहां के मेक्षे 'वइरामया नेमा, रिट्टामया पइट्टाणा वेरुलियामया खंभा, सुवण्णरूपमया फल्या, लोहियक्समई ओ सूइओ, वइरामया संघी, णाणामिणमया आलंवणा आलंवणवाहाओं' सेना सुक्षाणथी ७पर नीक्ष्णेक्षा प्रदेश ३प नेम वळ्यत्न निर्मित छे. प्रतिष्ठान-त्रिसे। पाना मूल प्रदेश हिन्द रत्न-निर्मित छे. सेना स्तंको वैद्र्य रत्नथी निर्मित छे. इलके। पादिया सेना सुक्षाण्य सेने दुपाना भनेता छे. इलके ह्रयना संयोक्ष की किना स्थाना पन्न ३प सूची से हिता ख्र रत्ननी अनेती छे. इलके हानी के संधिया छे, ते वळ निर्मित छे. तेमक सेमनी ७पर यहनारायोने स्थावा उत्तरनारायोने स्थव अन्ति के संधिया छे, ते वळ निर्मित छे ते स्वनेक भिन्नी छेपर यहनारायोने स्थवा उत्तरनारायोने स्थव अन्ति के साथिया के साथिया के साथिया हित्र सेना छेते स्वनेक भिन्नी हिपर यहनारायोने स्थवा उत्तरनारायोने स्थव अनेति के साथिया के स

'तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं' तेषां खछ त्रिसोपानप्रतिरूपकाणां 'पुरओ पत्तेयंर' पुरतः प्रत्येकं पुरतः 'तोरणा पण्णत्ता' तोरणाः प्रज्ञप्ताः 'ते णं तोरणा' ते खळ तोरणाः 'णाणामणिमया' नानामणिमयाः अनेकविधमणिमयाः 'णाणामणिमएसु खंभेसु' नानामणि-मयेषु स्तम्भेषु 'उवणिविद्वसंनिविद्वा' उपनिविष्टसिन्निविष्टाः उपनिविष्टाः समीपस्थिताः सिम्नविष्टाः निश्चळतया संलग्नाश्च 'विविद्वमुत्तंतरोवइया' विविधमुक्तान्तरोपचिताः विविध-मक्ताभिः अनेकप्रकारमुक्ताफलैः अन्तरा मध्ये मध्ये उपचिताः वृद्धिमुपगताः तथा 'विविद्द-तारारूबोवचिया' विविधतारारूपोपचिताः विविधानि यानि तारारूपाणि ताराऽऽकारास्तैरु-पशोभिताः, ईहामियउसह तुरगणरमगर विद्वगवालग किन्नररुरुसरभचमरकुंजरवणलय प्रजम-लयभत्तिचित्ता' ईहा मृगवृषभतुरगनरमकरविद्यगव्यालककिन्नररुरुशरभचमरकुञ्जरवनलता पद्मलता भक्तिचित्राः तत्र-ईहामृगाः-वृकाः, वृषभाः-बलीवर्द्धाः, तुरगाः, अक्षाः, नराः-मनुष्याः, मकराः-ग्राहाः, विहगाः-पक्षिणः, व्यालकाः-सर्पाः, किन्नराः-व्यन्तरदेवाः, रुरवः-मृगाः, शरभाः अष्टापदाः, चमराः-चमरगावः, कुञ्जराः-हस्तिनः, वनलताः पद्म-रूवगाणं पुरओ पत्तेयं २ तोरणा पण्णत्ता) इन त्रिसोपान प्रतिरूपकों में से प्रत्येक त्रिसोपानप्रतिरूपक के आगे आगे तोरण कहे गये हैं। (तेणं तोरणा णाणामणि-मया, णाणामणिमएसु संभेसु उपनिविद्व संनिविद्वाविविहमुत्तंतरोवहआ, विविहतारास्वोविचया, इहामिअ उसहतुरगणरमगरविहगवालगिकण्णरस्स सरभचमरकुं जरवणलयपडमलयभत्तिचित्ता) ये तोरण अनेकविधमणियों से बने हुए हैं तथा अनेक मणिमय खंभों के ऊपर ये संनिविष्ट हैं जिसोपानप्रति-रूपकों से ये दूर नहीं हैं किन्तु उनके समीप में ही हैं अनेक प्रकार के मुकाओं से ये बीच २ में खचित हैं इनके अनेक प्रकार के ताराओं के आकार बने हुए हैं । ये ईहामृगों-वृकों-की वृषभों की तुरगों की, मनुष्यों की, मकरों की, पक्षियों की, व्यालक सर्पों की, किन्नरों की, रूर मृगविद्योषों की, दारभ-अष्टापदकी,

छताः कमलखताः कमलनास्ररूपाः एतासां या भक्तयः रचनाविशेषाः ताभिश्चित्राः अद्युताः तथा 'खंभुगायवहरवेहया परिगयाभिरामा' स्तम्भोद्गतवञ्जवेदिका परिगताभिरामाः तत्र स्तम्धोद्गता-श्तमभोपरितनी या बज्जवेदिका बज्जरत्नमयी वेदिका, तया परिगताः युक्ताः सन्तः अभिरामाः रमणीयाः, तथा 'विज्ञाहर नमलजुयलजंतजुत्ताविव' विद्याधस्यमल युगल-यन्त्रयुका इव विद्यापराणां यद् यमलयुगलं युग्मजातद्वयं समानाऽऽकारं तदेव यन्तं सञ्चारिप्र-रुपपुत्तिकताद्वयलक्षणं तेन युकाः सहिता इव 'अच्चीसहस्समालणिया' अर्चिः सहस्रमालः निकाः अर्चिषां किरणानां सहस्रं तेन मालन्ते शोभन्ते इति अर्चिसहस्रमालनाः, त एव अर्चि-सहस्रम लिनकाः, 'रूपगसहस्यकलिया' रूपकसहस्रकलिताः चित्रसहस्रयुकाः 'भिसमाणा' भाससानाः शोधमानाः, भिव्यिसमाणाः वाभास्यमानाः अतिशयेन शोभमानाः 'चक्खुल्छोय-णलेसा' चक्षुलेकिनश्लेषाः तत्र-चक्षुषः-नेत्रस्य लोक्तनं दर्शनं चक्षुलेकिनं तस्मिन्नद्भुतदर्श-नीयत्वात् श्लिष्यन्तीव लग्ना भवन्तीव ये ते तथा, नेत्रकर्तृकदर्शने ते तोरणा नेत्रयोर्लग्ना भवन्त इव सन्तीति भावः, 'सुहफासा' सुखस्पर्शाः सुखकरस्पर्शशालिनः, यद्वा शुभस्पर्शाः श्रमः स्पर्शे येषां ते तथा कोमलस्पर्शसम्पन्नाः, 'सिस्सरीयरूबा' सश्रीकरूपाः-श्रिया सहि-चमर चमरी गायों की, कुछरों को वनलताओं की एवं पर्मलताओं की रचना विदोष से अद्भुत-आअवीत्पादक हैं तथा-(खंसुग्गयवहरवेह्या परिगयाभि-रामा) इनके मत्येक खंभों में वज्रमयवेदिकाएं उत्कीर्ण की गई है अतः उनके द्वारा ये वडे सुहावने प्रतीत होते हैं (विजाहर जमलजुयलजंतजुत्ताविव अच्चिसहस्स-मालणीया रूबगइस्त्रक्षिया, भिसमाणा, भिन्भिसमाणा, चऋबुल्लोयणछेसा) विद्याधरों के चित्रित यमल-समश्रेणिक-युगल से वे ऐसे ज्ञात होते हैं कि मानों ये सञ्चरिष्णु पुडल के प्रतिभादय से ही युक्त हैं हजारों किरणों द्वारा ये प्रका-कित होते रहते हैं हजारों रूपकों से-चिजों से ये शोभित हैं। स्वयं भी ये चम-कीले हैं और विविष्ट-अतिशयित को भा से ये और भी अधिक चमकीले बन गये हैं। देखने परतो ये ऐसे मालूम पडते है कि मानों आखों में ही समाये

भोनी रचना विशेषधी अह्मुत आश्चर्योत्पाहड छे तेमक 'संमुगायवहरवेह्या परिगयामिरामा' भेमना हरेडे हरेड स्तं भमां वक्षमय वेहिड भे। इत्डीर्क् डरवामां आवेली छे. भेथी भेमना वडे भे अन्यंत रमण्डीय लागे छे. 'विज्जाहर जमलजुयलजंत जुत्ताविव अन्विसहरस मालणीया ह्व-गमहरसक्रलिया, भिसमाणा, भिष्मिसमाणा चक्खुल्लोदणलेसा' विद्याद्येता चित्रित यमले। समश्चिष्ट युग्लेखी ते भेवी रीते लागता हता है काधे भेभा संचरिष्णु पुरुषनी प्रतिमद्भयथी क युडत न हाय हक्षरा डिरेण्डा वडे भेभा प्रकाशित थता रहे छे. पेते हुकारा इपडाधी-चित्रीथी भे अपशेलित रहे छे. पण्ड भे प्रकाशमान छे भने विशिष्ट-भतिशयित शासायी भे धणा वधारे प्रकाशमान अनी गया छे, जेवा परथी ते। भे भेवा लागे छे हे काण्डे भ भे। मां क सामानिष्ट थता नड़िय. 'सहकासा, सिसरीयह्वा, घंटावलिचिलयमहुरमण

तानि सश्रीकाणि तानि रूपाणि येषां ते तथा-शोभायुकाऽऽकारसम्पन्नाः 'घंटाविकचित्रयमहुरमणहरसरा' घण्टाविज्ञिलितमधुरमनोहरस्वराः—घण्टानामाविलः समूहो घण्टाऽऽविलस्तस्या यहायुस्पर्शेन चित्तं चलनं कम्पनं तेन मधुरः कर्णमधुरः, अत एव मनोहरः स्वरः नादो
येपां ते तथा—पवनस्पर्शवयाद् चण्टा समूह तम्पनेन श्रवणरमणीय मनः प्रसादकनादसम्पन्नाः,
'पासाईकाश' प्राणादीयाः दर्शनीयः अभिरूषाः प्रतिरूषाः, एषां च्याख्या प्राण्यत् । 'तेसि
णं तोरणाणं उवि वहवे अहहु मंगलगाः पण्णानां तेषां खल तोरणानामुपरि बहुनि अष्टाष्टमङ्गलकानि प्रव्यक्षानि, 'तंवहा' तद्यशा 'शोन्थिए सिन्चिन्छे जाव' स्वस्तिक श्रीवत्सः यावत्यावत्पदेन—''नन्दिकावर्तः, वर्द्धमानकं, भद्रासनं, कलशः, मरस्यः, दर्पणः'' इति संग्राह्मम्,
इत्यष्टमङ्गलकशमानि । तानि च प्राणादीपानि दर्शनीयानि अभिरूषाणि 'पिडिरूवा' प्रतिरूपणि । 'तेसि णं तोरणाणं' तेषां तोरणानामुपि 'तहवे' वहवः 'किण्हचामरञ्ज्ञया' कृष्णचामरध्यजाः कृष्णश्रीयुक्तचामरासङ्कृत्वध्वजाः, यावद्—यावत्पदेन—'नीस्रचामरध्यजाः,
स्रोहितचामरध्यजाः, हारिद्रचःमरध्यजाः' एषां पदानां सङ्ग्रहो बोध्यः, तथा 'स्रुकिल्स्चामरज्ज्ञया' शुक्तवचामरध्यजाः, 'अच्छा' अच्छाःआकाश स्कृत्ववद्वतिस्वच्छाः पुनः 'सण्हा॰'

जा रहे हैं (सुइफासा, सिस्सरीयहुआ, घंटाविल चिलयमहुरमणहरसरा) इनका स्पर्श सुखकारक है ये सशीक रूपवाले हैं इन पर जो घंटाविलिक्सिस है वह जब पबन के स्मर्श से हिलती है तब उससे जो अधुर मनोहर स्वर निकलता है उससे ये ऐसे ज्ञात होते हैं कि मानों ऐसे स्वर से ये ही वोल रहे हैं। (तेसि तोरणाणं उबिर बहुबे अद्वद्धमंगलगा प.) इन तोरणों के आगे अनेक आठ आठ मंगलक द्रव्य है (तं जहा) जैसे-सोत्थिय, सिरिवच्छे जाव पिंड्स्वा) स्व-स्तिक, श्रीवत्स, नित्कावर्न, बर्द्धमाणक भद्रासन कलशा, मत्स्य, और दर्पण ये सब मंगलक द्रव्य प्रासादीय हैं दर्शनीय है अभिरूप है और प्रतिरूप है। (तेसि णं तोरणाणं उबिर बहुवे किण्ह चामरज्ञ्चया जाव सुक्किल्ल चामरज्ञ्चया अच्छा सण्हा तेसिणं तोरणाणं छत्ताइच्छला पडागाइपडागा, घंटा ज्यस्त, चामर

हरसरा' એभने। स्पर्श सुअकारक छे. से सश्रीक इपवाणा छे. सेभनी ७पर के घंटावित निक्षिप्त छे ते जयारे पवनना स्पर्शधी ढांबे छे त्यारे तेमांथी के भधर-मनाढर रखकार नीक्षणे छे. तेनाधी से सेवा बागे छे हैं जार्च सेवा स्वरधीक के। बाता न हाय. 'तेसि तोरणाणं उविर बहवे अहुद्र मंगलगा पठ' से ते। हो। नी आगण घड़ा आठ आठ भांक भंगवाक द्रव्ये। छे. तं जहा' केम के 'सोलिय' सिरिवच्छे जाव पिह्न्वा' स्वस्तिक, श्री वत्स, न'न्हिशवर्त, वर्द्धमानक, अदासन, क्षश, मत्स्य अने दर्पछ्, से सर्व मंगवक द्रव्ये। प्रासादीय छे, दर्शनीय छे, अलिइप छे अने प्रतिइप छे 'तेसिणं तोरणाणं उविर बहवे किण्ह चामरज्ञ्या जाव सुक्किल्छचामरज्ञ्या अच्छा सण्हा ते। सेणं तोरणाणं छत्ताइ-च्छत्ता पढ़ागाइपढ़ागा, घंटाजुयला, चामरज्ञ्यला, उपलहत्थगा जाव स्वसहस्सपत्तहत्थगा-

श्लक्षणाः चिकण पुद्गल स्कःधनिव्यक्षाः, 'रुष्यपद्याः रुप्यपद्याः रजतमयपद्यालिनः 'वइरामयदंडा' वज्रमयद्ण्डाः वज्ररत्नमयदण्डयुक्ताः 'जल्यामलगंधिया' जलजामलगन्धिकाः
कमलसुगन्धसद्यसम्पक्षाः, 'सुरम्मा' सुरम्याः अतिमनोहारिणः 'पासाईयाध'
प्रासादीयाः दर्शनीयाः, अभिक्षाः प्रतिक्ष्याः । 'तेसिं णं तोरणाणं उप्पि' तेषां खल्छ
तोरणानासुपरि 'वहः' वहुनि 'छत्ताइल्लता' व्य्वातिच्छत्राणि छत्रात् लोकप्रसिद्धादेकस्माच्छत्रादतिशायीनि उपयंधोभागेनानेकानि छत्राणि च्छत्रातिच्छत्राणि, 'पडागाः डागा'
पताकाऽतिपताकाः-पताकोपरिपताकाः, 'वंटानुयला' घण्टायुगलानि अनेक घण्टायुगलानि 'वामरज्यला' चामरयुगलानि अनेकचामरयुगलानि, 'उष्पलहत्थगा' उत्पलइस्तकाः-कमलसमूहाः पद्महस्तका-पद्मसम्हाः 'जाव' यावत् यावत्पदेन ''कुमुदनलिन
सुभगसौगन्धिक पुण्डरीकमहापुण्डरीक शतपद्यसहस्रव्यहस्तकानां सङ्ग्रदो बोध्यः, तत्र कुमु-

ज्यला, उप्लिहत्थगा जाय सयसहस्माप्तहत्थगा सव्यरयणामया अच्छा जाव-पिड्स्वा) उन तोरणों के अनेक कृष्णवर्ण की ध्वजाएं जो कि चामरों से अलङ्कृत हैं, फहरा रही हैं यावत् नीलवर्णयुक्त चामरों से अलङ्कृत ध्वजाएं फहरा रही हैं, लोहितवर्ण युक्त चामरों से अलङ्कृत ध्वजाएं फहरा रही है, हारिद्रवर्ण युक्त चमरों से अलङ्कृत ध्वजाएं फहरा रही हैं, और शुरुक्तवर्णयुक्त चामरों से अल् इकृत ध्वजाएं फहरा रही है, ये सब ध्वजाएं अच्छ हैं-आकाश और स्फिटक के जैसी-अति स्वच्छ हैं चिक्कणपुद्धलों के स्कन्ध से निर्मित हैं, रजतमयपद से शोभित हैं वज्रमयदण्डों वाली हैं कमल के जैसी गन्धवाली हैं अति मनोहर हैं प्रासादीय हैं दर्शनीय हैं अभिरूप हैं और प्रतिरूप हैं इन तोरणों के उपर तरके जपर अनेक छत्र हैं अनेक पताकातिपताकाएं हैं और अनेक घंटा युगल हैं अनेक चामर युगल हैं उत्पल हस्तक-कमल समृह है, पद्महस्तक-पद्मसमूह है, यहां यावत्पद से-'कुमुदनलिन सुभग सौगंधिक पुण्डरीक महापुण्डरीक शतपत्र

सन्वरयणामया अच्छा जाव पिह्न्वा' ते तेरिको ઉપર અનેક કૃષ્ણું કઈ કેવજાઓ કે જેઓ ચામરાથી અલંકૃત છે—ફરકી રહી છે. યાવત નીલવર્ણ યુક્ત ચામરાથી અલંકૃત ધ્વજાઓ ફરકી રહી છે, લોહિતાસ વર્ણયુક્ત ચામરાથી અલંકૃત ધ્વજાઓ ફરકી રહી છે. હોરિક્વર્ણ ચામરાથી અલંકૃત ધ્વજાઓ ફરકી રહી છે. હોરિક્વર્ણ ચામરાથી અલંકૃત ધ્વજાઓ ફરકી રહી છે અને શુકલવર્ણ યુક્ત ચામરાથી અલંકૃત ધ્વજાઓ ફરકી રહી છે. એ સવે ધ્વજાઓ અચ્છ છે—આકાશ અને સ્ક્ટિકની જેમ અતિ સ્વચ્છ છે. ચિકકણ પુદ્દગલાના સ્કંધથી નિર્મિત છે, રજતમય પટ્ટોથી શાંભિત છે. વજમય દંઉાવળી છે. કમળા જેવી ગંધવાળી છે, અતિ મનાહર છે. પ્રાસાદીય છે દર્શનીય છે. અભિરૂપ છે અને પ્રતિરૂપ છે. એ તારે હોની ઉપરના સ્તરા ઉપર અનેક છત્રો છે. અનેક પતાકિતપતાકાઓ છે, અને અનેક ઘંટા યુગલા છે. અનેક ચામર યુગલા છે, ઉત્પલ હસ્તક કમળ સમૃહા છે. પદ્મહસ્તક પદ્મસમૃહા છે. અહીં યાવત્પદથી 'કૃમુદ્દ મિજન સુમા સૌંપંધિક પુંદરીક મદાયું હરી કરાત્વ સ્તરક એ પહેના સંચઢ

दानि कैरवाणि, निल्नानि कपलिवेशेषाः, स्वयानि कनलिवेशेषाः, सौगन्धिकानि स्नान्धी-न्येव सौगन्धिकानि कमलानि अन्न विनयादित्वात् स्वार्थे उक् । यहा-सुगन्धः शोभनो गन्धः, स प्रयोजनमेषामिति सौगन्धिकानि, अन्न ''प्रयोजनम्'' ५ ।१। १०९। (पा० स०) इति उक्त तानि कमलिवेशेषाः, पुण्डरीकाणि श्वेदकमलानि, तान्येव महत्त्वविशिष्टानि महापुण्डरी-काणि-विशालश्वेतकमलानि, शतपत्राणि-सतपत्रमुक्तकमलानि, एवं सहस्रपत्राणि सहस्रपत्र-पुक्तकमलानि च तेषां इस्त हाः समूहाः तथा 'सयप्तहस्तपत्तहत्थगा' शतसहस्रपत्रहस्तकाः लक्षपत्रकमलसमूहाः, ते च 'सन्वरपणामया' सर्वरत्नमयाः सर्वात्मना रत्नमयाः, 'अच्छा जाव पिक्तवा' अच्छाः यावत् प्रतिक्षाः अनाच्छादि प्रतिक्षपान्तपदसङ्ग्रहो बोध्यः तथाहि-'अच्छाः श्लक्षणाः पृष्टाः मृष्टाः नीरजसः निष्पङ्काः निष्कङ्कटच्छायाः सप्रभाः समरीचिकाः सोद्घोताः प्रासादीयाः दर्शनीयाः अभिरुषाः प्रतिक्ष्याः' इत्येषां पदानां संकलनं पर्यविततं व्याख्या चतुर्थस्त्रतो वोध्या ।

'तस्स णं गंगण्यत्रायकुंडस्स बहुमज्झदेसभाष्) तस्य खलु गङ्गाप्रयातकुण्डस्य बहुमध्यदेशमामे 'एत्य णं' अत्र अञ्चान्तरे खलु 'महं एमे' महानेको 'गंगा दीवे णामं दीवे' गङ्गाद्वीपो नाम द्वीपः 'पण्णत्ते' प्रज्ञासः, तस्य मानाचाह—'अट्ठनोयणाई' इत्यादि स गङ्गाद्वीपः 'अट्ठजोयणाई आयामित्रक्षंभेणं' अष्टयोजनानि आयासित्रक्षमेण दैट्येविस्ताराभ्याम्, 'साइरेगाई' सातिरेकाणि किञ्चिद्विकानि 'पणितं गोयणाई' पञ्चित्रिक्तां योजनानि 'पिरक्खेवेणं' परिक्षेपेण परिधिनाह दो कोसे' द्वौ कोशो 'जलंताओ' जलन्तात् जलर्यन्तात् 'उसिए' उच्छितः सहस्यत्र हस्तक' इस पाठ का संग्रह हुआ है इनका बाच्यार्थ पीछे लिखा जा चुका है ये सब भी सर्वोद्धमना रत्नमय हैं अच्छ हैं यावत् प्रतिस्व हैं (तस्सणं गंगण्य वायकुंडस्स बहुमज्झदेसभाए एत्य णं एगे महं गंगादिवे णामं दीवे पण्णत्ते) उस गंगापति कुण्ड के ठीक नीचे में एक बहुत विद्याल गंगा दीप नामक द्वीप कहा गया है (अट्ठ जोयणाई आयामित्रिक्लंभेणं खाइरेगाई पणवीसं जोयणाई परिक्खेवेणं दो कोसे उसिए जलंताओ सञ्चवइरामए अच्छे सण्हे) आयाम और विष्कम्भ की अपेक्षा यह द्वीप आठ योजन का कहा गया है इसका परिक्षेप कुछ अधिक २५ योजन का है जल के अपर यह दो कोका उंचा उठा थिये। छे. श्रे सर्वने। वाय्यार्थ श्रेष्ठ अप्र थां परेक्ष। परेक्ष। स्व दो कोका उंचा उठा थिये। छे. श्रे सर्वने। वाय्यार्थ श्रेष्ठ थां परेक्ष। परेक्ष। स्व दो कोका उंचा उठा थिये। छे. श्रे सर्वने। वाय्यार्थ श्रेष्ठ थां परेक्ष। परेक्ष। स्व दे कोका छे सर्वने। वाय्यार्थ श्रेष्ठ थां परेक्ष। परेक्ष। स्व दिव सर्वने। वाय्यार्थ श्रेष्ठ थां परेक्ष। परेक्ष। स्व स्व स्व सर्वने। वाय्यार्थ श्रेष्ठ थां परेक्ष। परेक्ष। यह दी कोका अपेक्ष। यह दी सर्वने। वाय्यार्थ श्रेष्ठ थां परेक्ष। परेक्ष स्व स्व स्व सर्वाच्यार्थ श्रेष्ठ थां परेक्ष। यह दी कोका अपेक्ष। यह दी कोका अपेक्ष। परेक्ष। परेक्ष। परेक्ष। स्व स्व स्व स्व स्व सरेक्ष। स्व स्व सरेक्ष। स्व सरेक्ष। स्व स्व सरेक्ष। स्व स्व सरेक्ष। स्व स्व सरेक्ष। स्व सरेक्ष। स्व स्व सरेक्ष। स्व सरेक्ष। स्व सरेक्ष। स्व सरेक्ष। स्व सरेक्ष। स्व सरेक्ष। स

थये। छे. ये सर्वाना वान्यार्थ योज अंथमां पहेला स्पन्ट हरवामां आवेल छे. ये सर्वा पण सर्वातमा रत्नमय छे, अन्छ छे, यावत प्रतिइप छे. 'तस्तणं गंगप्यवायकुं इस्स बहुमङ्झदेसमाए एगे महं गंगादीवे णामं दीवे पण्णते' ते अंगा प्रपात हुंउनी ठीक मध्य-लागमां योक सुविशाण अंआक्षीप नामक दीप क्रहेवामां आवे छे. 'अह जोयणाई आयाम-विक्खंमेणं साइरेगाई पणवीसं जोयणाई पिक्खेवेणं दो कोसे क्रसिओ जलंताओ सञ्ववइरामए अन्छे सण्हे' आयाम अने विष्कं लनी अपेक्षाये यो दीप आठ ये।जन प्रमाण क्रहेवामां आवेश छे. यो दीपना परिक्षेप-कंष्ठं वधारे २५ ये।जन जेटंसा छे. पाणीनी ७पर यो

उच्चः 'सब्बबद्रामए' सर्वेवज्ररत्नमयः सर्वोत्मना रत्नमय्यः 'अच्छे सण्हे०' अच्छः श्लक्ष्ण इत्यादि प्राम्बत्, 'से णं' स गङ्गाद्वीपो नामद्वीपः खल्ज 'एगाए पउमवरवेइयाए' एकया पद्म-वरवेदिकया 'एगेण य वणसंडेणं' एकेन वनपण्डेन च 'सन्वजो' सर्वतः सर्वदिक्षु 'समंता' समन्तात् सर्वे विदिश्च 'संपरिविखत्ते' संपरिक्षिप्तः परिवेष्टितोऽस्ति । एतयोः पद्मवरबेदिका वनपण्डयोः 'वण्णओ' वर्णकः वर्षनकारकः पदसमूहो 'भाणियव्यो' भणितव्यः वश्दव्यः, स च क्रमेण चतुर्थपश्चमाभ्यां स्त्राभ्यां वोध्यः । 'गंगादीवस्स णं दीवस्स उप्पि बहुसमरम-णिडजे भूमिभागे पण्णते' गङ्गाद्वीपस्य खळ द्वीप्स्य उपरि बहुसम्रमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः, 'तस्स णं' तस्य भूमियागस्य खळ 'बहुमज्झदेसभाष्' बुहमध्यदेशमागे अत्यन्तमध्य-देशभागे 'प्तथ णं' अत्र अत्रान्तरे खल 'गंगाए देवीए एगे' गङ्गाया देव्या एकं 'महं' महत् बुहद् 'मवणे पण्णत्ते' भवनं प्रज्ञप्तम् । तस्य मानाद्याह्-'कोसं' इत्यादि 'कोसं' क्रोशं-क्रोशः ममाणम् 'आयामेणं' आयामेन दैध्येण 'अद्धकोसं' अद्धक्रोशं-क्रोशार्द्धम् 'विवर्धभेगं' विष्क-म्भेण विस्तारेण, 'देस्रणगं' देशोनं किश्चिन्यूनं 'कासं' क्रोशम् 'उड्ढूं' उध्वम् 'उच्चतेणं' हुआ है सर्वात्मना यह वजरतन का बना हुआ है यह अच्छ और श्लक्ष्ण है (से णं एगाए पडमवरवेइयाए एगेण घ वण संडेणं सब्वओ समंता संपरिक्खित) यह गंगा बीप नामका बीप एक पद्मवरवेदिका से और एक वनुवण्ड से चारों ओर से घरा हुआ हे (वण्णओ भाणियव्वो) यहां पद्मवरवेदिका और वनवण्ड का वर्णन चतुर्थ पंचम सूत्रों से जान छेना चाहिये (गंगा दीवस्स णं दीवस्स उप्पि बहुसमरमणिउजे भूमिभागे पण्णत्ते) गंगा द्वीप नामके द्वीप के उत्पर का भूमिभाग बहुसमरमणीय कहा गया है (तस्स णं बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं गंगाए देवीए एगे भवणे पण्णते कोसं आयामें अद्वकोसं विक्खंभेंगं देसूणगं च कोसं उद्धं उच्चत्तेणं अणेगलंभसयसिणाविद्वे जाव बहुमज्झदेसभाए मिणपेढियाए संयोगिज्जे) उस बहुसमरमणीय भूमिभाग के ठीक बोच में एक बहुत विद्याल गंगा देवी का भवन कहा गया है यह आयाम की अपेक्षा एक

उच्चत्वेन तद्भवनं वर्णयितुमाइ-'अणेगे' त्यादि-आयामादि विभागादिकं शयनीयं वर्णकपर्य-न्तं सुत्रं सन्याख्यमनन्तरसूत्रोक्त श्रीदेवी भवनानुसारेण बोध्यम् ।

अथ गङ्गाद्वीपस्यान्त्रर्थनामहेतुं पृच्छति - 'से केणहेणं' इत्यादि । 'से केणहेणं जाव' अथ केन अर्थेन कारणेन यावत् यावत्पदेन - "भंते ! एवं बुच्च गंगादीवे गंगादीवे ? गोयमा ! गंगाय इत्थ देशी मदिष्ट्विया महज्ज्ञह्या महन्वला महाजसा महासोवखा महाणुभागा पिल-ओवमिहेह्या परिवसह से एएणहेणं एवं बुच्च गंगादीवे" इति संग्राह्मम् ।

एतच्छाया-"भदन्त ! एवमुच्यते गङ्गाद्वीपो गङ्गाद्वीपः । गौतम गङ्गा चात्र देवी मह-द्धिका महाद्युतिका महाबलमहायशाः महासौख्या महानुभाषा परुषोपमस्पितिका परिवसति तद् तेनार्थेन एवमुच्यते गङ्गाद्वीपो गङ्गाद्वीपः । 'अदुत्तरं च णं' इत्यादि, 'सासए नामधेज्जे पण्णते' इत्यन्तं सर्व पद्महूदवद् विज्ञेयम् । व्याख्या स्पष्टा ॥ स्र० ४ ॥

कोश का है विष्कंभ की अपेक्षा आधे कोश का है तथा ऊंचाई की अपेक्षा यह कुछ कम आधे कोश का है अनेक शत स्तंभों ऊपर यह खड़। हुआ है यावत् इसके ठीक बीच में एक मिणपीठिका है और उस मिणपीठिका के ऊपर एक शयनीय है इत्यादि रूप से सब वर्णन यहां पर आदेवों के भवन का जैसा वणक किया गया है वैसा ही जानना चाहिये (स केणडेणं जाव सासए णामधेउजे पण्णते) हे भदन्त! इस द्वीप का नाम गंगा द्वीप ऐसा किस कारण से हुआ है इसके उत्तर् में प्रभु कहते हैं—(गोयमा! गंगा य इत्य देवों माहिंद्रिया मह-उद्या मह-वला महाजसा महासोक्ला महाणुनावा पिलओवनिंद्रिया परिव-सइ, से एएणडेणं एवं युवचइ गंगादीवे गंगादावे) यह इस प्रकार का उत्तरस्व सूत्रपाठ यहां यावत्पदसे गृहीत हुआ है तथा यह पाठ (अदुत्तरे च णं सासए णामधेउजे पण्णते) इस सूत्रपाठ तक गृहीत हुआ है इस पाठ गत पदों की व्याच्या पद्महूद प्रकरण में कथित पदों की व्याख्या के अनुसार ही है।।सू० ४॥

केटलुं छे अने विष्डं लनी अपेक्षाओं अर्धा गांड केटलुं छे. तेमक श्रां आंधानी अपेक्षाओं लवन हं छेंड अल्प अर्धा गांड केटलुं छे. अने ह शत स्तं लेगि उपर ओ लवन स्थित छे. यावत् ओनी टींड मध्य लागमां ओंड मिल्रिपीटिंडा छे, अने ते मिल्रिपीटिंडानी उपर ओंड शयनीय छे वगेरे अर्धुं वर्जुन श्री देवीना लवन विषे के प्रमाणे वर्जुन क समक्षुं. इरवामां आवेश छे. ते प्रमाणे 'से केण्ठुणं जाब सासए णामवेडजे वण्णत्ते' छे लहंत ओ द्वीपनुं नाम गंगद्वीप शा ठारण् कारण्डी प्रसिद्ध थयुं. ओना कवाममां प्रलु इहे छे. 'गोयमा! गंगा य इत्थ देवां महिद्दिया महज्जुद्धा महज्जुला महाजसा महासोक्ला महाणुभावा पिल्रिजोवमट्टिंड्या पित्वसद्द, से एएण्ठुणं एवं बुच्च गंगादीवे गंगादीवे' ओ आ प्रमाणेनी उत्तर ३५ सूत्र गठ अर्धी यावत् पद्धी अर्धीत थयेशे छे. तेमक ओ पांड 'अदुत्तरं च णं सासए णामधेडजे पण्णते' अस्त्र सुधी संग्रुदीन थयेशे छे. तेमक ओ पांड 'अदुत्तरं च णं सासए णामधेडजे पण्णते' अस्त्र सुधी संग्रुदीन थयेशे छे. तेमक ओ पांड 'अदुत्तरं च णं सासए णामधेडजे पण्णते' अस्त्र सुधी संग्रुदीन थयेशे छे. ॥ सू ॥ ४॥ अत पहीनी व्याण्या पद्माद्दे प्रवस्था कित्रस्थी व्याण्या सुक्ष छे. ॥ सू ॥ ४॥ श्री पांड पहीनी व्याण्या पद्माद्दे प्रवस्था कित्रस्थीन व्याण्या सुक्ष छे. ॥ सू ॥ ४॥

अस्या सम्प्रति येन तोरणेन निर्ममो, यस्य च क्षेत्रस्य स्पर्शना यावांश्च नदीपरिवारो, यत्र च संक्रमस्तथा प्राह-'तस्स णं' इत्यादि ।

मूलम्-तस्स णं गंगप्पवायकुंडस्स द।हिणिल्लेणं तोरणेणं गंगामहा-णई पवृढा समाणी उत्तरद्धभरहवासं एज्जमाणी २ सत्तिहं सिळळा-सहस्सेहिं आपूरेमाणी २ अहे खंडप्पवायग्रहाए वेयद्वपटवयं दालइत्ता दार्णिद्धभरहवासं एजमाणी २ दाहिणद्धभरहवासस्स बहुमज्झदेस-भागं गंता पुरत्थाभिमुही आवत्ता समाणी चोइसहिं सलिलासहस्सेहिं समग्गा अहे जगई दालइत्ता पुरित्थमेणं छवणसमुदं समप्पेइ। गंगा णं महाणई पवहे छ सकोसाइं जोयणाइं विवखंभेणं, अद्धकोसं उच्वेहेणं, तयणंतरं च णं मायाए २ परिवद्धमाणी २ मुहे बासट्टिं जोयणाइं अद्ध-जोयणं च विक्खंभेणं सकोसं जोयणं उटवेहेणं पासि दोहिं पउमवर-वेइयाहि दोहिं चणसंडेहिं संपरिक्षित्रता, वेइयावणसंडवण्णओ-भाणि-यद्यो । एवं सिंधुए वि णेयद्यं जाव तस्स णं पउमद्दहस्स पच्चित्थ-मिल्छेणं तोरणेणं सिंधु आवत्तणकूडे दाहिणाभिमुही सिंधुप्पवायकुडं, सिंधुदीको अट्टो सो चेव जाब अहे तिमिसगृहाए वेयद्वपव्वयं दालइता पचरिथम।भिमुही आवत्ता समाणा चोइससिळळा अहे जगइं पचरिथ-मेणं लवणसमुद्दं जाव समप्पेइ, सेसं तं चेव ति ॥सू० ५॥

छाया-तस्य खळ गङ्गाप्रपातकण्डस्य दाक्षिणात्येन तोरणेण गङ्गा महानदीप्रव्यूहा सती उतरार्द्धभरतवर्षम्, एक्जमाना र सप्तिमः सिळ्छासहस्नैः आर्य्यमाणा र अधःखण्डप्रपातगु-हाया नैताह्यपद्वतं दारियत्वा दिक्षणार्द्धभरतवर्षमे जमाना र दक्षिणार्द्धभरतवर्षस्य बहुमध्य-देशभागं गत्वा पूर्वाभिमुखी आवृत्ता सती चतुर्दशिमः सिळ्छासहस्नैः समग्रा अधो जगतीं दारियत्वा पौरस्त्ये छवणसमुद्रं समर्पयति । गङ्गा खळु महानदी प्रवहे पट्सकोशानि योजनानि विष्कम्भेण अर्द्धकोशमुद्धेवेन, तदनन्तरं च खळु मात्रया र परिवर्धमाना र मुखे द्विष्टि योजनानि अर्द्धयोजनं च विष्कम्भेण सक्रोशं योजनमुद्धेवेन उभयोः पार्श्वयोः द्वाभ्यां पद्म-वरवेदिकाभ्यां द्वाभ्यां वनपण्डाभ्यां संपरिक्षिप्ता, वेदिका वनपण्डदर्णको भणितव्यः एवं सिन्ध्वा अपि नेतव्यं यावत् तस्य खळु पद्महद्दस्य पश्चिमेन तोरणेन सिन्ध्वावर्तक्टे दिक्ष-णाभिमुखी सिन्धुप्रपातकण्डं सिन्धुद्वीपः, अर्थः स एव यावद् अवस्तिमस्रगृहाया वैतादय-

पर्वतं दारियत्वा पश्चिमाभिम्रखी आवृत्ता सती चतुर्दशसिलला अधो जगतीं पश्चिमे लवण-समुद्रं यावत् समर्पयति रोषं तदेवेति ॥ स्र० ५ ॥

टीका-'तस्स णं' इत्यादि । 'तस्स णं गंगप्पवायकुंडस्स दाहिणिल्छेणं' तस्य ख्छु गङ्गाप्रपातकुण्डस्य दक्षिणिद्गमवेन 'तोरणेणं' तोरणेन 'गंगामहाणई' गङ्गामहानदी 'पवूढा' प्रव्यूढा निःसता 'समाणी' सती 'उत्तरद्भमरहवासं' उत्तरार्द्भगतवर्षम् 'एज्जमाणी२' एज्जमाणी२' एज्जमाणी२' सति 'सत्तिहें' सप्तिमः 'सिल्लासहस्सेहिं' सिल्लासहस्सेः नदीसहस्तः 'आपूर्णेमाणी२' आपूर्यमाणा२ भ्रियमाणा२ 'अहे खंडप्पवायग्रहाए' अधःख्व्डप्रपातग्रहायाः 'वेयन्द्रप्य्यं' वैतादचपर्वतं 'दाल्रह्मा' दारियत्वा भिला 'दाहिणद्भभरहवासं' दक्षिणार्द्भभरतवर्षस्य 'व्ह्रमज्भदेसभागं' एजमाना२ गच्छन्ती२ 'दाहिणद्भभरहवासस्स' दक्षिणार्द्भभरतवर्षस्य 'वहुमज्भदेसभागं' वहुमध्यदेशभागम् अत्यन्तमध्यदेशभागं 'गंता' गत्वा 'पुरत्थाभिम्रही' पौरस्त्याभिम्रखी पूर्वाभिम्रखी 'आवत्ता' आवृत्ता परावृत्ता 'समाणी' सती 'चोहसहिं' चतुर्द्रशिमः 'सल्लासहस्सेहिं' सल्लिलासहस्सेहिं सल्लिलासहस्रेहिं सल्लिलासहस्र चतुर्द्शमहस्रपरिमिताभिनदीभिः 'समग्गा' समग्रा

'तस्स णं गंगप्पवायकुंडस्स दाहिणिल्छेणं तोरणेणं'

टीकार्थ-इस सूत्र द्वारा सूत्रकारने गंगानदी किस तोरण से निकली है, किस क्षेत्र की इसने स्पर्शना की है, कितना इसका नदी परिवार है, और यह कहां जाकर मिली है यह सब प्रकट किया है-(तस्स णं गंगप्यवायकुंडस्स दाहि- णिल्छेणं तोरणेणं पवृहा) उस गंगाप्रपातकुंडके दक्षिणदिग्भागवर्ती तोरण से गंगा नाम की महानदी निकली है (उतरद्धभरतवासं एज्जमाणी २ सक्तिं सिललासहस्सेसिं आउरेमाणी २ अहे खंडप्पवायगुहाए वेयद्धपव्वयं दालहक्ता दाहिणद्धभरहवासस्स बहुमज्झदेसभागं गंता पुरत्थाभिमुही आवत्तासमाणी चोइसिंहं सिललासहस्सेहिं समग्गा अहे जगई दालहक्ता पुरित्थमेणं लवणसमुई समप्पेइ) यह गंगा महानदी उत्तराई

'तरस णं गंगपवायकुंडस्स दाहिणिल्लेणं तोरणेणं' इत्यादि

ટીકાર્થ—આ સૂત્રવહે સૂત્રકારે ગંગાનદી કયા તાેરણુમાંથી નીકળી છે? કયા ઢ્રેત્રના એણે સ્પર્શ કર્યો છે? એ નદીના નદીપરિવાર કૈટલા છે? અને એ કયાં જઇને મળી છે? એ બધું વર્ણવવામાં આવેલ છે.

'तस्स णं गंगपत्रायकुंडस्स दाहिणिल्छेणं तोरणेणं पवूढा' ते गंगा प्रपात बुंउना दक्षिणु दिग्लान्वती' ते रिष्णुंथी गंगा नामे महानदी नीक्षणी छे. 'उत्तरद्वभरहवासं एउजमाणी र सत्तिं सिल्लासहस्सेहिं आउरेमाणी र अहे खंडपपत्रायगुहाए वेयद्वपन्वयं दालपत्ता दाहिन्णद्वभरहवासं एउजमाणी र दाहिणद्वभरहवासस्स बहुमज्झदेसभागं गंता पुरत्थाभिमुही आवत्ता समाणी चोइसिहं सिल्लासहरसेहिं समगा अहे जगई दालइत्ता पुरत्थिमेणं लवणसमुदं समण्येद्दं से गंगा भक्षानदी उत्तराद्धे सरत तरह प्रवादित थती तेमक सात दल्लर

सम्पूर्णा 'अहे' अधः अधोभागे 'जगई' जगतीं 'दालइत्ता' दारियत्वा-भिन्वा 'पुरित्थमेणं' पौरस्त्ये पूर्वे पूर्वस्यां दिश्चि 'लवणसम्रुदं' लवणसम्रुद्धं 'समप्पेइ' सम्रुपसर्पति समुद्रे मिलतीत्यर्थः।

अधास्या एव गङ्गामहानद्याः प्रवह-मुख्यो विष्कम्भोद्वेधौ द्र्शयितुमाह-'गंगा णं' इत्यादि। 'गंगा णं' गङ्गा-गङ्गानाम्नी खलु-'महाण्हें' महानदी याऽस्ति सा 'पवहें' प्रवहें, यस्यात् स्थानात् नदी प्रवोहं प्रवर्तते स प्रवहः पद्महूदात्तोरणान्धिगमस्तिस्मन् तत् स्थानाव-चल्छेदेन 'छ सकोसाई जोयणाई' सकोशानि एक क्रोश्नसिहतानि सपादानीत्यर्थः पद्योजनानि 'विक्रत्वभेणं' विष्कम्भेण-विस्तारेण, 'अद्धकोसं' अद्धकोशं क्रोशस्याद्धम् 'उव्वेहेणं' उद्वेधेन गाम्भीयेण 'तयणतरं च णं' तदनन्तरं पद्महूदतोरणविस्तारादनन्तरम् एतेन यावत्क्षेत्रं स विस्तारो अनुवृत्तस्तावत्क्षेत्रादनन्तरं-गङ्गाप्रपातकुण्डनिर्गमादनन्दरमित्यर्थः सा गङ्गा-'मायाए' मात्रया २-क्रमेण २ प्रतियोजनं प्रतिपार्थं धनुःपश्चकबृद्धचा उभयपार्थयोः संमील्य धनुर्दशः कबृद्धयेत्यर्थः 'परिवद्धमाणी २' परिवर्द्धमाना २ वृद्धं गच्छन्ती प्रवहमानात्समुद्रप्रवेशमानस्य

भरतकी और जाती हुई तथा सात हजार निद्यों से अपने आपको भरती २ खंडपपात गुहा के नीचे से होकर दक्षिणाई भरत की तरफ गई है वहां जो बीच में बैलाढ्य पर्वत पड़ा है उसके बीच में होकर ये बहती है इस तस्ह दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र के ठीक बीच में बहती हुई यह गंगानदी पूर्वाभिमुख होती हुई तथा १४ हजार निद्यों के परिवार से परिपूर्ण होती हुई पूर्व दिग समुद्र में जाकर मिलगई है पूर्विद्य सनुद्र में पूर्विद्यर्क्ती लवणसमुद्र में-मिलने के लिये जाते समय इसने वहां की जो जम्बूहीप की जगती है उसको विदारित करदिया है (गंगा ण महाणदी पबहे छसकोसाई जोयणाई विक्लंभेण, अद्धकोसं उच्चेर्ण तयणंतरं च ण मायाए २ परिचद्धमाणी २ मुहे वासिंह जोयणाई अद्धजोद्दणं च विक्लंभेणं स कोसं जोयणं उच्चेहेणं उभओपासिंदोहिं पउमवरवेइआहें दोहिं वणसंहेहिं संपरिक्लिक्ता वेइया वणसंहवणाओं भाणियन्वो) यह गंगा नाम की

नहीं भेना पाणीथी प्रप्रित थती णंड प्रपात श्रुतना नी थेना कागमांथी पसार थर्ध ने हिल्लार्ड करत तरह प्रवाद्धित थर्छ छे. त्यां के मध्यकागमां वैताद्ध्य पर्वत अले। छे, तेनी मध्यमांथी प्रवाद्धित थर्छने क्या प्रमाले हिल्लार्ड करत क्षेत्रना है ह मध्यमा प्रवाद्धित थती के गंगानही पूर्विभम्भ थर्ड ने तेमक १४ ढ कर नहीं थेना परिवारथी परिपूर्व थती पूर्व हिल्समुद्रमां कर्छने मणी गर्छ छे. पूर्व हिल्समुद्रमां पूर्व हिल्लित ल्लासमुद्रमां भणवा करी वक्ते क्या नहीं त्यांनी के कं लूदीपनी कगरी छे तेने विहीर्व हरी ही थी छे. 'गंगा ण महाणदी पवहे छ सको माई जोयणाई विक्लंभेणं, अद्धकोसं उटवेहेणं तय-णंतरं च णं मायाए र परिवद्धमाणी र महे वासिट्ट जोयणाई अद्धजोयणं च विक्लंभेणं सकोसं जोयणं उटदेहेण सभओपासि दोहिं पउमवरवेइअहिं होहिं वणसंडेहिं संपरिक्लिता वेइयावणसंडवणको माणियटवो' के गंगा नामक महानहीं के स्थान उपरथी नीक्षणीन विद्वावण

दशगणत्वात् 'मुदे' मुखे समुद्रप्रवेशे 'वासिंह जीयणाइं' हापिंछ योजनानि 'अद्ध जीयणं च' अद्धे योजनम् योजनस्यार्द्धे च 'विक्खंभेणं' विष्कभ्भेण विस्तारेण 'सकोसं' सक्रीशं सपादं 'नोयणं उव्वेहेणं' योजनम् उद्देशेन गाम्भीर्येण, सार्द्धदाषष्टियोजनपरिमितसमुद्रप्रवेश-व्यासस्य पश्चाशक्तमभागे एतावन एव समुपलभ्यमानत्वात् 'उभओ' उभयोः द्वयोः 'पासिं' पार्श्वयोः तटयोः 'दोहिं पउम्बरवेइयाहिं' द्वाभ्यां पद्मवरतेदिकाभ्यां 'दोहिं वनसंडेहिं' द्वाभ्यां वनपण्डाभ्यां 'संपरिविद्यत्ता' संपरिक्षित्ता परिवेदिताऽस्ति, अत्र 'वेइया वणसंडदण्याओ' वेदिकानस्वण्डवर्णकः पद्मवरवेदिका वरुखण्डदर्णनकरपदसम्हो 'भाणियच्यो' भणितव्यः वक्त-व्यः, स च क्रमेण चतुर्थपश्चमाभ्यां सूत्राभ्यां वोध्यः।

अथ गङ्गाया आगामादीनि सिन्धुनद्यां प्रद्शियतुमाह-'एवं सिंधूए वि' इत्यादि-'एवं' एवं गङ्गामहानद्याहन 'सिंधूए ि' सिन्ध्याः किन्धु नामन्या महानद्या अपि सक्तं 'णेयन्वं' नेतन्यं ज्ञानविषयतां प्रापणीयं ज्ञानन्यिमायर्थः, 'जाव' यावत् एतन्यदं 'तोरणेन' इत्यनन्तरं महानदी जिस स्थान से निकल कर बहुती प्रारम्भहोती है वह प्रवह-पद्महद के तोरण से इसके निर्माण का स्थान-एक कोद्य अधिक ६ योजन का विष्क्रम्भ की अपेक्षा से हैं। अर्थान् ल योजनका उसका दिस्तार है और इसका उद्वेध-गहराई आधे कोदाका है उसके वाद-गंगाप्रपात कुण्ड से निकलने के बाद वह महानदी गंग्रा कम २ से प्रतिपार्श्व में ५-५-धनुष की बृद्धि करती हुई-अर्थात् दोनों पार्श्व में १० धनुष की बृद्धि करती हुई जहां वह समुद्र में प्रवेदा करती है वह स्थान विष्क्रम्भ की अपेक्षा ६२॥ योजन प्रणण हो जाती है और १। योजन का वहां का उद्धेधं हो जाता है यह गंगा अपने दोनों तटों पर दो पद्मवरवेदि काओं से और दो बन्धण्डों से एरिक्षिप्त है यहां वेदिका और वनषण्डों का वर्णन चतुर्थ एवं पंचम खूत्रों से-जान लेना चाहिष्ये (एवं सिंधूए वि णेयन्वं) गंगामहानदी के आयाम आदिकों की तरह सिन्धु महानदी के आयामादि को भी जानना चाहिये (जाव तस्म णं पउमहहस्स पच्चित्यिमस्लेणं तोरणेणं, सिंधु भी जानना चाहिये (जाव तस्म णं पउमहहस्स पच्चित्यिमस्लेणं तोरणेणं, सिंधु

લાગે છે તે પ્રવહ-પદ્મહું તા તારાથુથી એનું નિર્ગામન સ્થાન-પ્રેક ગાઉ અધિક દ ચાજન પ્રમાણ વિષ્ઠ સની અપેક્ષાએ છે અર્થાત્ દ ટું ચાજન જેટલા આના વિસ્તાર છે, અને આની ઊંડાઈ-(ઉદ્દેધ) અર્ધા ગાઉ જેટલી છે. ત્યાર ખાદ ગંગા પ્રપાત કુંડમાંથી નીકળીને પછી તે મહા નદી ગંગા અનુક્રમે પ્રતિપાર્શ્વમાં પ-પ ધનુષ જેટલી વૃદ્ધિ કરતી એટલે કે અન્તે પાશ્વીમાં ૧૦ ધનુષ જેટલી વૃદ્ધિ કરતી અર્પા તે સમુદ્રમાં પ્રવેશે છે, તે સ્થાન વિષ્કં ભની અપેક્ષાએ દરા ચાજન પ્રમાણ થઈ જાય છે અને ૧ ચાજન જેટલા તે સ્થાનના ઉદ્દેધ થઇ જાય છે. એ ગંગા પાતાના ખન્તે કિનારાઓ ઉપર એ પદ્મવર વેદિકાઓથી અને એ વનખંદાથી પરિક્ષિપ્ત છે. વેદિકા અને વનખંદાનું વર્ણન ચતુર્થ તેમજ પંચમ સ્ત્રોમાંથી જાણી લેવું જોઇએ. 'एવં સિંપ્રૂપ વિ ળેયસ્વં' ગંગા મહાનદીના આયામ વગેરની

बोध्यम् , 'तस्स णं पउमददस्स पचित्थिमिन्छेणं तोरणेणं' तस्य खळु पद्महूदस्य पाश्चात्येन तोरणेन यावत् यावत्यदेन 'सिन्धूमहानदी प्रव्युहा सती पश्चिमाभिमुखी पश्चयोजनशतानि पर्वतेन गत्वा' इत्यदि राष्ट्रग्रहो वोध्यः, 'तिषु आवचणक्रुडे' सिन्ध्यावर्तक्टे आवृत्ता सती पञ्च-योजनशतानि त्रयोविशत्यधिकानि त्रीक्षित्रोनविंशतिभागान 'दाहिणाभिम्रही' दक्षिणाभिम्रखी पर्वतेन गत्वा महता बटमुखप्रवृत्तकेन मृताबिहारसंस्थितेन सातिरेकयोजनशतिकेन प्रपार तेन प्रपतति, अत्र खलु महती एका निविका प्रहाप्ता, सा खलु जिह्िका अर्द्धयोजनमायामेन षष्ट्रसक्रोशानि योजनानि विष्कम्भेण अर्द्धयोजनं बाहल्येन, मकरमुखविवृतसंस्थानसंस्थिता सर्ववज्रमयी अच्छा श्रक्षणा, सिन्धु महानदी अत्र खलु महदेकं 'सिंधुप्पवायक्तंडं' सिन्धुप्रया-तकुण्डं नाम कुण्डं प्रज्ञप्तम्, एतत्कुण्डमस्मिन्नेव स्तो प्रापुक्त गङ्गाप्रपातकुण्डयदेव वर्णनीयम्। तस्य खळु सिन्धुप्रपातकुण्डस्य बहुमध्यदेवभागः, अत्र खळु प्रहानेकः 'सिंधु दीवा' सिन्धु-आवत्तगक्रहे, दाहिणाभि उही सिंधुप्पवायकुडं सिधुदीबो अद्वी सोचेव जाव अहे तिमिरसग्रहाए वेअद्वय्ययं दालङ्का पच्यत्यिपाणिषुठी आवता समाणा चोदससलिला अहे जगई पच्यत्यियेणं लबणवगुदं जाव समप्येड्) यावत् यह सिन्धु महानदी उस पद्बद्रह के पश्चिनदिग्वती नोरण से यावन् पद के कथनानु सार निकली है और पेश्विमदिशा की और वही है वहां से जहां से कि यह निकली है पांच सौ योजन तक उस पर्वत पर बहुकर फिर यह सिन्ध्वावर्त क्रूट में, लौट कर ५२३ के योजन तहा उसी पर्धत पर दक्षिण दिशा की ओर जाकर बड़े जोर २ से घट के मुख से निकले हुए जल प्रवाह की तरह अपने जल प्रवाह से गिरती है यह सिन्धु जहानदी जिल्ल स्थान में सिन्ध्वावर्तकूट में गिरती है वहां एक बहुत बढ़ी 'जिहिता है।

(१) इन सबका वर्णन पीछे शंगानदी के एकरण में किया जा चुका है। सिन्धु महानदी जहां शिरती है वहां एक उसी नामका प्रदात कुण्ड है इसका

केम सिन्धु महानहीना कायामाहिक्षेः विषे पण् कण्य देवुं केष्ठि. 'जाव तस्स णं पडम इहस्स पच्चित्र्यिमिल्लेमं तोरणेणं सिंधु आवत्त कृते, हाहिणामिमुई। सिंधुपवावकुंडं सिंधु हीवो अहो सो चेव जाव अहे तिमिसगुहाण वेअव्धानकार्यं दालहत्ता पच्चित्रमामिमुही आवत्ता समाणा चोहससिल्ला अहे जमई पच्चित्रमेणं लवणसमुई जाव समप्पेह' यावतू के सिंधु महा, नहीं ते पह्महृहना पश्चिम हिन्दती तेम्हणेशी थावत् परना ४४न मुक्क नीठिणे छे. अने पश्चिम हिशा तरक्ष प्रवाहित वाय छे. क्यांशी हो नहीं नीठिणे छे त्यांथी पांचसे। येशक सुधी ते पर्वत उपर प्रवाहित वाय छे. क्यांशी हो नहीं नीठिणे हित्यांथी क्रिक्त सुधी ते पर्वत उपर प्रवाहित अधि के सिन्धावर्त इंटमां पाछी क्रीने परव कृष्ट योकन सुधी ते पर्वत उपर क्र हिल्ला हिशा तरक्ष क्रीने प्रवंड वेगथी धडाना मुक्ष मांथी निठणता क्षा प्रवाह केम पेताना क्षाप्रवाह साथै पडे छे. के सिंधु महानहीं के स्थानमांथी सिन्ध्वावर्त इंटमां पडे छे ते क्षेष्ठ सुविशाण क्रिहा छे. (के सर्वनुं वर्णुन पहेता भंगा महानहीना प्रकरण्या करवामां क्षावेद्धं छे, सिंधु महानहीं क्यां पडे छे त्यां

द्वीपो नान द्वीपः प्रज्ञक्षः, अयं द्वीपो गङ्गाद्वोययद्वर्णनीयः, 'इहा सोलेव' अर्थः स एव-सिन्धु-महानदीस्त्रस्थार्थः स एव गङ्गा महानदीस्त्रार्थं एव बोध्यः न त्वन्यः 'जाव' यावत-यावत्प-देन-'तस्य खल्छ तिन्धुप्रपातकुण्डस्य दाक्षिणात्वेन तोरणेन सिन्धुमहानदी प्रव्युद्धा सती उत्तरार्ध्वरतवर्षम् इयती २ सिल्लान्यहत्तेः आपूर्यमाणा २'' इति संग्राह्मम्, 'अहे' अधः—अधोमाने 'तिमिसगुहाए' तिमन्नगुहायाः तिन्त्रशामक ग्रहायाः सक्तावात् 'वेयद्धपव्ययं' वैता द्वयद्वतं 'दाल्ल्इना' दार्यित्वः निन्तः 'पच्चित्यमामिग्रही' पाश्चात्यामिग्रुखी पश्चिमामिग्रुखी 'आवत्ता' आवृत्ता-पराहृत्ता 'समाणा' सती 'दोद्दमसिल्ला' चतुर्दशसिल्लेति चतुर्दश्चामः सिल्लासहत्वः सत्या सम्पूर्णा 'अहे जगहं' अवं। उपतीं दारियत्वा 'पच्चित्थमेणं' पश्चिमेन-पश्चिमायां दिश्चि हिथतं 'त्वणसमुद्धं 'जाव' वावत् 'समप्पेः' समर्थयति 'सेसं' शेषम् -उक्तातिरिवतं प्रवह सत्यमानाद्विकं 'तं चेव' तदेव गङ्गा महाजदी प्रसङ्गोक्तमेव वोध्यम् ॥स्वप्राः स्लम्-तस्त एं पञ्चाद्वाद्धस्त उक्तिः लेलेणं तोर्णेणं रोहियंसा महाणई

पवृद्धा सक्षाणी दोष्णि छाउत्तरे जोयमस्य छच एगुणवीसइभाए जोय-भी वर्णन गंगाप्रपात कुण्ड के जैसा ही है उसके बीच में सिन्धु महानदी सूत्र का अर्थ गंगामहानदी सूत्र के अर्थ जैसा ही है। यहां यावत्पद से 'तस्य खलु सिन्धु प्रपात कुण्डरूप दाक्षिणात्येन तोरणेन सिन्धुमहानदी अन्यूहा सती उत्तराईम् भरतवर्षम् इयती २ सिल्छासहन्नैः आपूर्यमाणा २' इस पाठ का संग्रह हुआ है यह सिन्धु महानदी खंडप्रपात ग्रहा के गोचे से हो कर तथा वैतादय पर्वत को विदारित कर पश्चिमदिशाकी और लौटती हुई २४ हजार निद्यों रूप परिवार से युक्त हुई है इस प्रकार यह सिन्धु नदी पश्चिमदिशा के लवण समुद्र में जाकर मिल्जई है इस कथा के अतिरिक्त और सब कथन गंगानदी के प्रकरण के जैसा हो है ऐसा जानना चाहिये। सू॰ भा

(तस्मणं पडमइहस्स उत्तरिल्छेणं तोरणेणं)

क्षेत्र तेल नामधारी प्रभात हुं उ छे. के प्रभात हुं उनुं वर्णन पण् गंगा प्रभातवत् समलवुं. तेना मध्य लागमां सिंधु डीप छे के दीपनुं वर्णन अंगा डीपना वर्णननी लेम ल छे. तेमल सिन्धु महानदी सूत्रनी कर्ष गंगा महानदी सूत्रना कर्ष लेवा ल थाय छे कहीं यावत् पहथी 'तह्य खलु सिन्धुत्रपातकुण्डस्य दाक्षिणात्येन तोरणेन सिन्धु महानदी प्रव्यूढा सती उत्तराईम् मरतवर्ष इयती र सलिलासहसैः आपूर्यमाणा र' के पाठना संश्वद्धथ्ये। छे. के सिंधु महानदी णंउ प्रपात गुझाना निक्त लागमांथी प्रवाहित थए तेमल वैताद्य पर्वतने विहीर्ण् इरती पश्चिम दिशा तर्द पाठी इरती १४ हलार नहींका इप पाताना परिवारथी युक्त थए छे. का प्रमाणे के सिंधुनही पश्चिम दिशाना सवण् समुद्रमां लधने भणे छे. के कथन सिवाय शेष णधुं कथन गंगा नहीना प्रकृष्ण लेवुं ल छे. ॥ सू. प ॥

णस्स उत्तराविमुही पव्यप्नं गंता सहया घडमुहपर्यत्तएगं मुत्ताविल-हारसंठिएणं साइरेगजोयणसङ्घणं पवाएणं पवडइ । रोहियंसा णामं महाणई जओ पवडइ, एत्थ णं महं एगा जिब्भिया पण्णता, सा णं जिब्भिया जोयणं आयामेणं अद्धतेरसजोधणाः विवर्षभेणं, कोसं बाह-ल्लेणं नगरमुहविउद्वसंठाणसंठिया सब्बवइरामई अच्छा महाणई जिहें पवडइ एत्थ णं गहं एगे रोहियंसा पवायकुंडे णामकुंडे पण्णत्ते, सवीसं जोयणसयं आयामिबक्खंभेणं, तिण्णि असीए जोयण-सए किंचिविसेसूणे परिक्सेवेणं, दसजोयणाई उन्वेहेणं अच्छे कुंड-वण्णओ जाव तोरणा, तस्स णं रोहियंसा पवायकुंडस्स बहुमज्झदेस-भाए एत्थ जं महं एगे रोहियंसा णामं दीवे पण्यते, सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, साइरेगाइं पण्णासं जोयणाइं परिक्खेवेणं, दो कोसे ऊसिए जलंताओ, सव्वरयणामए अच्छे सण्हे॰ सेसं तं चेव् जाव भवणं अट्टो य भाणियव्वोत्ति । तस्स णं रोहियंसाप्यवायकुंडस्स उत्तरिल्लेणं तोरणेगं रोहियंसा महाणई प्यूढा समाणी हेमवयं वासं एजमाणी २ चउदसहिं सिलिलासहरसेहिं आपूरेमाणी २ सदावइ वट्टवेयहुपन्वयं अद्धजोयणेणं असंपत्ता सधाणी पचत्थाभिसुही आवत्ता समाणी हेमवयं वासं दुहा विभयमाणी २ अट्टाबीसाए सिळळासहस्तेहिं समग्गा अहे जगइं दालइत्ता पचित्थिमेणं लक्षणसमुदं समध्येइ, रोहिवंसा णं पक्रहे अद्धतेरसजीयणाई विक्लंभेणं कोसं उठवेहेगं, तयणंतरं च णं मायाएर परिवद्धमाणी २ मुहमूळे पणवीसं जोयणसयं विवर्धभेशं अहुँ।इज्जाइं जोयणाइं उठवेहेलं उभओ पासि दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहिं य वण-संडेहिं संपरिक्खता ॥सू० ६॥

छाया-तस्य खळ पद्महूद्स्य औत्तराहेण तोरणेन रोहितांसा महानदी प्रन्यूढा सती

इस छठे सूत्र का अर्थ इसकी छाया से ही जाना जा सकता है ऐसा है।।सू.६॥

દીકાર્ય-મા છટ્ટા સૂત્રના મર્થ એ સૂત્રની છાયા દ્વારા જ જાણી શકાય છે. ાાસ્ લા

द्वे पट्सप्तते योजनशते पट्चैकोनविंशतिभागान् योजनस्य उत्तराभिमुखी पर्वतेन गत्वा महा-घटमुखप्रवृत्तिकेन मुक्ताविहारसंस्थितेन सातिरेकयोजनशतिकेन प्रपातेन प्रपतित । रोहि-तांसा नाम महानदी यतः प्रपत्तति अत्र खल्ल महती एका जिह् विका प्रज्ञप्ता । सा खल्ल जिह्विका योजनमायामेन अर्द्धत्रयोदशयोजनानि विष्कम्भेण क्रोशं बाइस्रोन मकरमुख्विवृत-संस्थानसंस्थिता सर्ववज्रमयी अच्छाः रोहितांसा महानदी यत्र प्रपत्ति अत्र खलु महदेकं रोहितांसा प्रपातकुण्डं नाम कुण्डं प्रज्ञप्तम् , तद् विंशं योजनशतमायामः विष्यस्मेण, त्रीणि अशीतानि योजनशतानि किञ्चिद्विशेषोनानि परिक्षेषेण, दश योजनानि उद्वेधेन अच्छम्०, कुण्डवर्णको यावत् तोरणाः । तस्य खल रोहितांसा प्रपातकुण्डस्य बहुमध्यदेशमागे अत्र खु एको रोहितांसा नाम द्वीपः प्रज्ञप्तः, षोडशयोजनानि आयामविष्कम्भेण सातिरेकाणि पञ्चाशतं योजनानि परिक्षेपेण, द्वौक्रोशावुच्छित्रतो जलान्तात् , सर्वरत्नमयः अच्छः श्लक्ष्णः० शेषं तदेव यावद् भवनम् अर्थश्च भणितव्य इति, तस्य खळ रोहितांबाप्रपातकुण्डस्य जीत्तरा-हेण तोरणेन रोहितांसा महानदी प्रव्युटा सती हैमवतं वर्षमियती २ चतुर्दशिमः सिछलासः हसैः आपूर्यमाणा २ शब्दापातिष्टत्तवैतादचपर्वतमर्द्धयोजनेन।सम्प्राप्ता सती पश्चिमाभिम्नः ख्यावृत्ता सती हैमवतं वर्षे हिषा विसनमाना २ अष्टार्विशस्या सलिलासहस्रैः सराग्रा अघो जगतीं दारियत्वा पश्चिमे लक्षासगुद्रं समर्पयति । रोहितांसः खल प्रवहे अर्द्धवयोदवयोजनानि विष्कमभेण क्रोशसुद्धेथेन, तदनन्तरं च खल माह्रया २ परिवर्द्धमाना १ सुखमूले पश्चविंश योजनञ्जतं विष्कम्भेण अर्धतृतीयानि योजनानि उद्वेचेन उभयोः पार्श्वयोः द्वाभ्यां पः मवर-वेदिकाभ्यां द्वाभ्यां च बनपण्डाभ्यां संपरिक्षिप्ता ॥ सू० ६ ॥

टीका-'तस्स णं' इत्यादि । 'तस्स णं पउमद्दरस' तस्य खळ पर्महदस्य 'उत्तरिरुछेणं तोरणेणं' औत्तराहेण-उत्तरिद्मिनेन तोरणेन-बहिद्दारेण 'रोहियंसा महाणई प्रजुहा समाणी' रोहितांसा-कन्नाम्नी महानदी प्रव्युहानिः सता सती 'दोण्णि छावदरे जीयणस्य छच्च एग्ण्यीसहभाए जोयणस्स' षट् सप्तते-षट् सप्तत्यिक हे योजनशते पद्चैकोनविंशतिभागान् योजनस्य एतावतीं स्वम् 'उत्तराभिस्हि पञ्चएणं गंता' उत्तराभिस्छी हैमवत् क्षेताभिस्छी सा नदी पर्वतेन गत्वा 'महया चडसुहपवत्तिएणं सुत्ताविंहारसंठिएणं साइरेगजोयणसङ्घणं प्रवाण्णं पत्रहर्दे महाघटसुखेभ्यः प्रवृत्तिः निस्सरणं यस्य-प्रवातस्य तेन-महाघटसुख प्रवृत्तिकेन तथा-स्ताविंहारसंस्थितेन, तथा-सातिरेकं-किश्चिद्धिकं योजनशतं यत्र तेन सातिरेकयोजनशतिकेन-किश्चिद्धिकंकत्रत्यातेन प्रवति । 'रोहियंसा णामं महाणई जभो पवडइ' रोहितांसा नाम्नी महानदी यतः-यस्मात् स्थानात् प्रवति, 'एत्थ णं महं एगा जिव्यिया पण्णता' अत्र खळ प्रयत्तनस्थाने महती अतिदीर्धा एका जिहिका-तदाकारं विशेषवस्तु, प्रज्ञप्ता-कथिता, 'सा णं जिव्यिया जोयणं आयामेणं अद्ध तेरस जोयणाइं विक्खंभेणं, कोसं वाद्यक्षेणं' सा खळ जिहिका योजनमेकम् आयामेन-दैधेंण, अद्धेत्रयोद्दश योजनानि विष्करमेण-विस्तारेण, कोशं बादः योजनमेकम् आयामेन-दैधेंण, अद्धेत्रयोद्दश योजनानि विष्करमेण-विस्तारेण, कोशं बादः-

रयेन-स्थोरयेन गङ्गा-जिहिकातः अस्या द्विगुणत्यात्, 'मगरमुह विउद्वसंटाणसंठिया सन्व वइरामई' मकरमुखविवृतसंस्थान-संस्थिता-मकर मुखमिव विवृतं-विदीर्ण यत्स्थानम्-आका रविशेषस्तेन-संस्थिता, सर्ववज्रमयी 'अच्छा रोहियंसा महाणई जहिं पवडइ' अच्छा-स्वच्छ। रोहितांसा महानदी यत्र प्रपत्ति, अथ क्रण्डस्वरूपमाह-'एरथणं महं एगे-रोहियंसा पवाय-कुंडे णाम कुंडे पण्णत्ते' अत्र खलु स्थाने महदेकं रोहितांसा प्रपातकुण्डं नाम कुण्डं प्रज्ञप्तम् , 'सवीसं जोयणसयं आयामविक्खंभेण' तत् कुण्डं विंशम्-विंशत्यधिकं योजनशतम् आयाम दिष्कम् भाभ्यां दैष्ट्येविस्ताराभ्याम् गङ्गात्रपातकुण्डतोऽस्य द्विगुणत्वात् 'तिण्णि असीए जोयः णसए किंचि विसेद्धणे परिक्खेवेणं' त्रीणि योजनशतानि अशीतानि अशीत्यधिकानि किश्चि ब्रिशेषोतानि परिक्षेपेण-परिधिना-परिवेष्टनेन 'दसजोयणाई उन्वेहेणं' दशयोजनानि उद्वेर भ्रेन-गंभीरेण 'अच्छकुंड--वण्ण भी जाव तोरणा' अच्छम्; कुण्डवर्णकः-कुण्डस्य वर्णनं यावत्तोः रणानि तोरणपर्यन्तं वक्तव्यम् । अथात्र द्वीपमाह-'तस्स णं रोहियंसा पदायकुं डस्स बहुमज्झः देसनाए एत्थ णं महं एगे रोहियंसा णामं दीवे पण्णत्ते' तस्य खळ रोडितांसा प्रपातकुण्डस्य बहुमध्यदेशभागे, अत्र खळु-स्थाने महान एको रोहिउांसो नाम द्वीपः प्रज्ञप्तः-कथितः, 'सोलसजोयणाई आयामविवर्खभेणं' स च द्वीपः पोडशयोजनानि आयामविष्कम्भाभ्यां-दैर्धिविस्ताराभ्याम् , 'साइरेगाई पण्णासं जोयणाई पश्चिखेवेणं' सीतिरेकाणि पश्चाशतं योजनानि परिक्षेपेण-परिधिना, दो कोसे ऊसिए जलंताओ' द्वौ क्रोशौ उच्छितो जला न्तात्-जलपर्यन्तात् क्रोशद्वयमूर्ध्यं गतः स द्वीपः 'सन्वर्यणामए अच्छे सण्हे० सेसं तं चेव जाव भवलं अहो य भाणियन्वो त्ति' सर्वरत्नमयः अच्छः श्रह्णः - शेपं तदेव यावद भवनम् अर्थेश्च भणितव्य इति, सम्प्रति अस्या नद्याः रेन दोरणेन निर्मनो यस्य च क्षेत्रस्य स्पर्शना यावांश्व नदी परिवारी यत्र च संक्रमस्तवाऽऽइ-'तस्सांगं' इत्यादि । 'तस्स णं रोहिः यंसाप्पदायकु डस्स उत्तरिरुछेणं तोरणेणं' तस्य खळ रोहितांशः प्रपादकुण्डस्य औत्तराहेण-उत्रदिग्भवेन तोरणेन-बहिद्वरिण, 'रोहियंसा महाणईपवृद्धा समाणी' रोहितांसा महानदी प्रव्यवा-निर्मता सती 'हेमवर्य वासं एज्जमाणी २' हैमवतं वर्षम् इर्यती२ गच्छन्ती २ 'चउ-इतिह सिल्लासहरसेहि आपूरेमाणी २' चतुर्दशभिः सिल्लासहस्रैः-नदीसहस्रेरःपूर्यमाणा२ सद्दावइब्रह्येयडूवन्वयं अद्ध जोयणेणं असंपत्ता समाणी शन्दापाति नामानं वृत्तवैताढचपर्वः तम् अर्द्ध याँजनेनासम्प्राप्ता सती 'पच्चत्थाभिमुही आवत्ता समाणी हेमवयं वासं दुहा विभयमाणी २' पश्चिमाभिम्रखी आवृत्ता-परावृत्ता सती हैनवर्त वर्षे द्विया विभनमाना २ 'अड्ठावीसाए सलिलासहरसेहिं समग्गा' अष्टाविंगत्या सलिकासहस्नैः नदीसहस्नैः समग्रा परिपूर्णी सती 'अहे जगई दालइत्ता पच्चित्थमेणं लबणसमुद्द समप्पेइ' जगतीम् अघो दार्यि-स्या भित्वा पश्चिमे छवणसम्रदं समर्पयति-प्रविशतीत्यर्थः, अस्या एव मूखविस्वाराधाड-'रोहिः थेना जं पबहे अद्धतेरस जोयणाइं विक्खंभेजं कोसं उब्वेहेजं' राहितांसा नाम्नी नदी खलु प्रवहे-प्रवहति यस्मादिति प्रवहस्तस्मिन्-मुले अर्द्धत्रयोदशः योजनानि-सार्द्धद्रादशयोजनानि विष्कम्भेण-विस्तारेण प्राच्यक्षेत्रनदीतो द्विगुणविस्तारकत्वात्, क्रोशमुद्वेत्रेन-उच्चत्वेन प्रव हच्यास पञ्चाश्वत्तमभागरूपत्वात्, 'तयणंतरं च णं मायाए २ परिवद्धमाणी २' तद्दनन्तरश्च खल्ज मात्रया २ क्रमेण २ प्रतियोजनं समुदितयोग्ध्ययोः पार्श्वयो धनुर्विश्वत्या गृद्धच्या प्रति-पार्श्व धनुर्दशकगृद्धयेत्यर्थः परिवर्द्धमाना २ 'मुहमूले पणवीसं जोयणसयं विक्खसेण' मुखमूले समुद्रप्रवेशे पञ्चविश्वतं पञ्चविंशत्यधिकं योजनशतं विष्कमभेण, प्रवहत्यासादशगुणत्वात्, 'अङ्काइज्जाइं जोयणाइं उव्वेहेणं' अर्द्धतृतीयानि योजनानि-सार्द्धद्वे योजने उद्वेशेन मुखव्यास-पञ्चाशत्तमभागरूपत्वात्, 'उभओ पासि दोहिं प्रमवरवेह्याहिं दोहि यवणसंदेहिं संपिरिविश्वत्ता' उभयोः पार्श्वयोः द्वाभ्यां पद्मवरवेदिकाभ्यां द्वाभ्याश्च यनषण्डाभ्यां संपरिक्षिप्ता वेष्टिता ॥ स्व. ६॥

अथ श्वद्रहिमवत्पर्वतोपरिवर्तिकृटस्वरूपं दर्शियतुमाह 'चुल्लहिमवंते णं भंते !' इत्यादि ।
मूलम्—चुल्लिहिमवंते णं भंते ! वासहरपटवए कड़ कूडा पण्णता?
गोयमा ! इक्कारस कूडा पण्णता, तं जहा-सिद्धाययणकूडे १ चुल्लिहिमवंतकूडे२ भरहकूडे३ इलदेवीकूडे४ गंगादेवीकूडे५ सिरीकूडे६ रोहियंसे
कूडे७ सिंधुदेवीकूडे८ सुरदेवीकूडे९ हेमवयकूडे१० वेसमणकूडे११।

कहि पं भंते! चुल्लिहमवंते वासहरपव्यए सिद्धाययणकूडे णामं कूडे पण्णते? गोयमा! पुरित्थमलवणसमुहस्स पचित्थमेणं चुल्लिहम-वंतकूडस्स पुरित्थमेणं एत्थ णं सिद्धाययणकूडे णामं कूडे पण्णते, पंच जोयणसयाइं उद्धं उच्चतेणं मूले पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं मज्झे तिण्णि य पण्णत्तरे जोयणसए विक्खंभेणं उप्पं अद्धाइज्जे कोयणसए विक्खंभेणं, मूले एगं जोयणसहस्सं पंच च एगासीए जोयणसह किंचि विसेसाहिए पिक्खंबेणं, मज्झे एगं जोयणसहस्सं छल्सीयं जोयणसर् किंचि विसेस्एणे पिक्खंबेणं, उप्पं सत्त इक्काणउए जोयणसए किंचि विसेस्एणे पिक्खंबेणं, मूले विच्छिण्णे मज्झे संखिते, उप्पं तणुए, गोपुच्छसंठाणसंठिए सव्वत्यणामए अच्छे, से णं एगाए पउमवरवेइ-याए एगेण य वणसंडेणं सव्वत्यो समंता संपित्विखते, सिद्धाययणस्स कूडस्स ण उप्पं बहुसमरमणिड्जे भूमिभागे पण्णते, जाव तस्स णं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णते, जाव तस्स णं वहुसमरमणिज्ञे भूमिभागे पण्णते, जाव तस्स णं सहुस्स प्रामेश्वायणस्स भूमिभागस्स बहुमङ्गदेसभाए एत्थ्यं महं एगे सिद्धाः

ययणे पण्णत्ते,पण्णासं जोयणाइं आयामेणं, पणवीसं जोयणाइं विव्यंभेणं, छत्तीसं जोयणाइं उद्यं उच्चतेणं जाव जिणपिडमा वण्णाओ भाणियद्यो ।

कहि णं भंते! चुल्लहिमवंते वासहरपटवए चुल्लहिमवयकूडे णामं कूडे पण्णते ? गोयमा ! भरहकूडस्स पुरित्थमेणं सिद्धाययणकूडस्स पचरिथमें गं, एरथ णं चुल्लहिमवए वासहरपव्दए चुल्लहिमवएक्डे णामं कूडे पण्णत्ते, एवं जो चेव सिद्धाययणकूडस्स उच्चत्तविवखंभपश्विखेवो जाव बहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महं एगे पासायवडेंसए पण्णते वासद्विं जोयणाइं अद्धजोयणं च उच्चत्तेणं इक्षतीसं जोयणाइं कोसं च विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसियपहसिय विव विविहमणिर-यण भिविचित्रे वाउदद्ध्यविजयवेजयंती पहागाच्छत्ताइ च्छत्तकलिए तुंगे गगणतलमभिलंघमाणसिद्धरे जालंतरस्यणपंजरुम्भीलियव्यु मणिरयण-थूमियाए वियसियसयवत्तपुंडरीयतिलयरयणद्धचंदचित्ते णाणामणिमय-दामालंकिए अंतो वर्डि च सण्हे वइरतवणिजरुइलवालुगापत्थडे सुहफासे सस्सिरीयकवे पासाइए जाव पडिक्रवे, तस्स णं पासायवडेंसगस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, जाव सीहासणं सपरिवारं, रो केण-ट्वेणं भंते । एवं बुच्चइ चुल्छिहमवंत कूडे २ ? गोधमा ! चुल्छिहिमवए णामं देवे भहिड्डिए जाव परिवसइ, कहि णं भंते ! चुल्टहिमवयगिरिक्छमा रस्स देवस्स चुल्लहिमवया णामं रायहाणी पण्णता?, गोयमा ! चुह्न-हिमत्रयकूडस्स दिवलणेणं तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे वीईवइत्ता अ॰णं जंबुदीवं दीवं दिक्लणेणं बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता इत्थ णं चुल्ल हिमवयस्स गिरिकुप्तारस्स देवस्स चुल्लहिमवया णामं रायहाणी पण्णत्ता, बारस जोयणसहस्साइं आयामनिक्खंभेणं, एवं निजय रायहाणीसरिसा भाणियव्या, एवं जाव अवसेसाण वि कूडाणं वसद्वया णेयव्या आया-मविक्खं भपरिक्खेवपासाय देवयाओ सीहासणपरिवारो अट्टो य देवाण य देवीणं य रायहाणीओ णेयव्वाओ, चउसु देवा चुह्रहिमवंते १ भरहर

हेमवय३ वेसमणकुडेसु३ सेसेसु देवयाओ, से केणट्रेणं भंते! एवं वुच्चइ चुल्लिहिमनयवासहरपव्वए १२, गोयमा! महाहिमवयवासहरपव्वयं पणिहाय आयामुच्चचुक्वेहिववलंभयरिक्खेवं पडुच्च ईसिं खुडुतराए चेव हस्सतराए चेव णीयतराए चेव, चुल्लिहिमवंते य इत्थ देवे महिड्डिए जाव पलिओवमट्टिइए परिवसइ, से एएणट्रेणं गोयमा! एवं वुच्चइ— चुल्लिहिमवद वासहरपव्वए २ अदुत्तरं च णं गोयमा! चुल्लिहिमवयस्स सासए णामधेच्जे पण्णाने, जं ण कयाइ णासी।सू० ७॥

छाया-सुद्रहिमवति खल भदन्त ! वर्षधरपर्वते कितिक्टानि श्रज्ञप्तानि ? गौतम ! एका-दशक्टानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-सिद्धायवनक्टम् ? शुद्रदिमवन्क्टम् २ भरतक्टम् ३ इलादेवी-क्टम् ४ गङ्गादेवीक्टम् ५ श्रीक्टम् ६ रोहितांशाक्टम् ७ सिन्धुदेवीक्टम् सुरादेवीक्टम्९ हैमवतक्टम् १० वैश्रवणक्रटम् ११ ।

वय खल भदन्त । धुद्रविषयति वर्षधरपर्वते सिद्धायतनक्त्टं नामक्त्टं प्रज्ञप्तम् ? गौतम ! पौरस्त्यलयणसमुद्रस्य पश्चिमेन अद्विश्वारक्र्यस्य पौरस्त्यलयणसमुद्रस्य पश्चिमेन अद्विश्वारक्र्यस्य पौरस्त्येन अय खल सिद्धायतनक्र्टं नाम क्र्टं प्रज्ञप्तम् , पश्च योजनक्षतानि अर्ध्वमुच्यत्वेन मूले पश्च योजनक्षतानि विष्क्रम्मेण अपिर अर्धतृतीयानि योजनक्षतानि विष्क्रम्मेण, मृले एकं योजनसहस्रं पश्च च प्रकाशीतानि योजनक्षतानि किश्चिद्विशेषाधिकानि परिक्षेपेण मध्ये एकं योजनसहस्रम् एकं च पडकीतं योजनक्षतं किश्चिद्विशेषोनं परिक्षेवेण उपिर समप्रक्तिनवानि योजनक्षतानि किश्चिद्विशेषोन्। नि पिरक्षेपेण, मृले विस्तीर्ण, मध्ये संक्षिप्तम् , उपिर तज्जक्ष् , गोषुच्छसंस्थानसंस्थितं सर्वात्नमयम् अच्छम् , तत् खल्च एक्या पद्मवरवेदिक्या एकेन च दनपण्डेन सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्तम् , सिद्धायतनस्य क्र्टस्य खल्च उपिर बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः, यावत् तस्य खल्च बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागः अत्र खल्च महदेकं सिद्धायतनं प्रज्ञप्तं, पञ्चाक्षतं योजनानि विष्क्रम्भेण पदित्रभतं योजनानि अर्ध्वयुच्चत्वेन यावत् जिनप्रतिमा वर्णको भिणत्वयः।

नव खल भदन्त । श्चद्रहिमवति वर्षथरपर्वते श्चद्रहिमवत्क्रटं नामक्र्टं प्रज्ञप्तम् ? गौतम ! भरतक्रटस्य पौरस्त्येन सिद्धायतनक्रटस्य पश्चिमेन, अत्र खल श्चद्रहिमवति वर्षथरपर्वते श्चद्रः हिमवत्क्रटं नाम क्र्टं प्रज्ञप्तम् , एवं य एव सिद्धायतनक्रटस्य उच्चत्वविष्कम्भ पिक्षेपो यावत् बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागः, अत्र खल्ल महान एकः प्रासादावतंसकः प्रज्ञप्तः, द्वापष्टि योजनानि अर्द्ध योजनं च उच्चत्वेन, एकत्रिंशतं योजनानि क्रोशं च विष्क-म्भेण अभ्युद्गतोच्छ्रत प्रहसित इव विविधमणिरतन्मित्तिचित्रः वातोद्धुतविजयवैजयन्तीय-ताकाच्छत्रातिच्छत्रक्छितः तुङ्गः गगनत्रस्रभिलङ्गचिछ्यदः जालान्तरस्त्नपञ्चरोन्मीलित

इव मणिरत्नस्तूपिकाकः विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकरत्नार्द्धचन्द्रचित्रः नानामणिमयदामा-**रुङ्कुतः अन्तर्वहिश्र** श्रक्षणवज्रतपनीयरुचिरवाह्यका प्रस्तृतः सुख्रस्पर्शः सश्रीकरूपः प्रासा-दीयः यावत् प्रतिरूपः, तस्य खल्ल प्रासादावतंसकस्य अन्तः बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः यावत् सिंहासनं सपरिवारम् , अथ केनार्थेन भद्रन्त ! एवमुच्यते - श्रुद्रहिमवत्कूटं २ ? गौतम ! श्रुद्रहिमवान् नामदेवः महर्द्धिक यावत् परिवसति, क्व खळ भदन्त ! श्रुद्रहिमवद्धिः रिकुमारस्य देवस्य शुद्रहिमवती नाम राजधानी प्रज्ञक्षा ?, गौतम ! शुद्रहिमवस्कूटस्य दक्षिणेन तिर्थेगसंख्येयान् द्वीपसमुद्रान् व्यतित्रज्य अन्यं जम्बुद्वीपं द्वीपं दक्षिणेन द्वाद्श योजनसहस्राणि अवगाह्य अत्र खलु शुद्रहिमवतो गिरिकुमारस्य देवस्य शुद्रहिमवती नाम राजधानी प्रज्ञप्ता, द्वादशयोजनसहस्राणि आयामविष्कर्मण एवं विजयराजधानी सदशी भणितच्या, एवमवशेयाणामपि क्रुटानां वक्तव्यता नेतव्या, आयामविष्क्रम्भ-परिक्षेप प्रासादः देवताः सिहासनपरिवारः अर्थश्च देवानां च राजधान्यो नेतन्याः, चतुर्धु देवाः श्चद्रहिमवद १ भरत २ हैमवत ३ वैश्रवणकूटेषु४ शेषेषु देवताः, अथ केनार्थेन भदन्त ! एवगुच्यते क्षुद्रहिम बान् वर्षधरपर्वतः ?२, गौतम ! महाहिमबद्धपेधरपर्वतं प्रणिधाय आयामोच्यत्बोद्धेधविष्कम्भः परिक्षेपं प्रतीत्य ईषत्क्षुद्रतरक एव हुस्वतरक एव नी बतरक एव क्षुद्रहिमवांश्रात्र देवो महर्द्धिको यावत् परयोपमस्थितिकः परिवसति, स एतेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते क्षुद्रहिमवान् वर्षधरः पर्वतः २ अदुत्तरम् अथ च खळु गीतम ! श्रुद्रहिगवतः शाश्चतं नामधेयं प्रज्ञहम् यद् न कदा चिद् नाऽऽसीत्० ॥ स्०७ ॥

टीका-'चुल्लहिमवंते णं' इत्यादि । 'चुःलहिमवंते णं भंते ! वासहरपन्त्रए कइ कूडा पण्णत्ता' श्रुद्रहिमवति खद्ध भदन्त । वर्षवरपर्वते कतिकूटानि प्रज्ञतानि इति गौतमस्य प्रश्नः

'चुल्लिहिमवंते णं भंते ! बाझहरपञ्चए कइ क्रूडा पण्णसा'॥०

टीकार्थ-इस सूत्र द्वारा सुत्रकार हिमवंत पर्वत पर किलने कूट हैं? इस बात को प्रकट कर रहे हैं-(चुल्लहिमवंते णं भंते! वासहरपव्वए कह कूडा प.) इसमें गौतमस्वामी ने प्रसु से ऐसा पूछा है-हे भदन्त! श्लुद्रहिमवन् वर्षवर पर्वत पर कितने कूट कहे गये हैं ? उत्तर में प्रसुने कहा है-(गोयमा! इक्कारस कूडा प.) हे गौतम! ११ कूट कहे गये हैं (तं जहा सिद्धाययणकूडे १, श्लुल्लहिमवंतकूडे

^{&#}x27;चुल्लिहिमवंते णं भंते ! वासहरपव्वए कइकूडा पण्णत्ता-इत्यादि'

टींडार्थ - क्रो सूत्र द्वारा सूत्रकार दिमवंत पर्वंत ७५२ डेउबा इटा आवेदा छे, क्रो वातने २५०८ डरे छे-'चुल्छिहमंत्रतेणं मंते! वासहरपट्यए कह कृडा प.' એમાં ગૌતમ स्वाभीके प्रभुने केवी रीते प्रश्न कथे छे-डे हे बादंत क्षुद्र दिमवत् वर्षधर पर्वत ७५२ डेटबा इटा डिखामां आवेदा छे? इत्तरमां प्रभु डहे छे-'गोयमा! इक्कारसकूडा प.' हे गौतमा ११ इटा डदेवामां आवेदा छे. 'तं जहा सिद्धाययणकुडे १, ह्यल्छिहमवंत

भगवानाह-'गोयमा !' हे गौतम ! 'इकारसकूडा ८ण्णता' एकादशकुटानि प्रज्ञप्तानि 'तं जहा' तद्यथा-'सिद्धाययणकूडे १' सिद्धायतनक्टम् १ चुन्छहिमवंतकूडे २'क्षुद्रहिमवत्कूटम्--इदं च श्रुद्रहिमवद्गिरिकुमारदेवस्यास्निन्नेय स्त्रेऽग्रे यक्ष्यमाणस्य कूटम् २, 'भरहकूढे ३' भरत-क्टम्-भरताख्य देवस्य क्टम् ३, 'इलादेवीक्डे ४' इलादेवीषट्पश्चाशद्दिकुमारी देवी वर्ग-मध्यवर्तिनी विशिष्टादेवी तस्याः कृटम् ४, 'गंगादेवीक्डे ५' गङ्गादेवीक्टं-गङ्गादेव्याः अनन्तरम्त्रत्रोक्तायाः क्टम् ५, 'सिरिक्डे ६' श्रीक्टम्-श्रीदेव्याः क्टम् ६, 'रोहियंसक्डे ७' रोहितांसाक्तरम्-रोहितांसादेव्याः कूरम् ७ 'सिंधुदेवीक्टहे ८' तिन्धुदेवीक्टम्-सिन्धुदेव्याः २, भरहकूडे ३, इलादेचीकूडे ४, गंगादेवीकूडे ५, सिरिकूडे ६, रोहि-अंसकूडे, ७, सिन्धुदेवीकूडे ८, सुरदेवीकूडे ९, हेमवयकूडे १०, वेसमण-कूडे ११, उनके नाम इस प्रकार से हैं-१ सिद्धायतनकूट, क्षुद्रहिमवंतकूट २, भरतकूट ३, इलादेवीकूट ४, गंगादेवीकूट ५, श्रीकूट ६, रोहितांशाकूट ७, सिन्धु देवी कूट ८ सूरदेवी कूट ९, हेमवतकूट १०, और वैश्रवणकूट ११, आगे जिसके सम्बन्ध में इसी सूत्र में कहा जाने वाला है-ऐसे क्षुद्रहिमवद्गिरि कुमारदेव का जो क्ट है वह क्षुद्रहिमवद्गिरि क्ट है भरत नाम के देव का जो क्ट है वह भरतकूट है छप्पन दिनकुमारिकाओं के मध्य में इलादेबी एक विशिष्ट देवी है इस देवी का जो कूट है वह इलादेवी कूट है अनन्तर सूत्रोक्त गंगादेवी का जो कृट है वह गंगादेवी कूट है श्रीदेवी का जो कुट है वह श्रीदेवी कुट है रोहितांशादेशी का जो कुट है वह रोहितांशा कूट है सिन्धुदेवी का जो कूट है वह तिन्धु देवी कूट है सुरादेवी का जो क्ट है वह सुरादेवी क्रूट है इलादेवी भी तरह सुरादेवी भी-एक विकाष्टदेवी है हैम-वतवर्ष के अधिपति देवका जो क्रूट है वह हैमवतक्रूट है वैश्रवण-कुबेर-का जो

कृडे २. भरहकृडे ३, इलादेवी कृडे ४, गंगादेवी कृडे ५, सिरी कृडे ६, रोहिअंस कृडे ७, सिन्धु देवी कृडे ४, सुरदेवी कृडे १, हेमत्रय कृडे १०, वेसमण कृडे ११' तेमना नामा आ प्रभाणे छे-१ सिद्धायतन ६८, २ क्षुद्रिध्धियत ६८, ३ करत ६८, ४ धितादेवी ६८ ५ गंगा-हेवी६८, ६ श्री ६८, ७ रोडिनांशा ६८, ८ सिन्धुहेवी ६८, ६ सरहेवी ६८-१० हैमवंत ६८, अने ११ वेश्रभण ६८ आगण केना विषे आ सूत्रमां क कहेवामां आवशे ओवा क्षुद्र हिमवह गिरिकुमार हेवने। के ६८ छे ते क्षुद्रह्मिवह गिरिकुमार हेवने। के ६८ छे ते क्षुद्रह्मिवह गिरिकुमार हेवने। के ६८ छे ते क्षुद्रह्मिवह गिरिकुमार धेसाहेवी केक विशिष्ट हेवी छे. को हेतीने। के ६८ छे ते कांगा हेवी ६८ छे. श्री हेवीने। के ६८ छे ते श्री हेवीने। के ६८ छे ते श्री हेवी हेट छे. सिन्धु हेवीने। के ६८ छे ते गंगा हेवी ६८ छे. श्री हेवीने। के ६८ छे ते श्री हेवीने। के ६८ छे ते श्री हेवीने। के ६८ छे ते स्रीहिताशा ६८ छे. सिन्धु हेवीने। के ६८ छे ते स्रीहिताशा ६८ छे. धेवा हेवीनी के ६८ छे ते स्रीहिताशा ६८ छे. धेवा हेवीनी के ६८ छे ते स्रीहिताशा ६८ छे. धेवा हेवीनी के ६८ छे ते स्रीहिताशा ६८ छे. धेवा हेवीनी के ६८ छे ते स्रीहिताशा ६८ छे. धेवा हेवीनी के ६८ छे ते स्रीहिताशा ६८ छे. धेवा हेवीनी के ६८ छे ते स्रीहिताशा ६८ छे. धेवा हेवीनी के ६८ छे ते स्रीहिताशा ६८ छे. धेवा हेवीनी के ६८ छे ते स्रिक्ष हेवा हेवी ६८ छे. स्राहेवीने। के ६८ छे ते स्राहेवी ६८ छे. धेवा हेवीनी के ६८ छे ते स्राहेवीने। के ६८ छे ते स्राहेवीनी। के

कूटम् ८, 'सुरदेवीकूडे ९' सुरादेवीकूटम्-सुरादेव्यपि इलादेवीवत् तस्याः कूटम् ९ 'हेमब-यकूडे १०' हैमवतकूटम्-हैमवतवर्षाधिपतिदेवकूटम् १०, 'वेसमणकूडे ११' वैश्रवणकूटं-वैश्र-वणः कुवेरो लोकपालिक्शिपः तस्य कूटम् ११,

अथ तेपामेव क्टानां स्थानादि स्वरूपं प्रश्नोत्तराभ्यां प्रदर्शयितमाह-'किह णं भंते !' इत्यादि, 'किह णं भंते ! चुल्लिहमवंते वासहरपव्वण सिद्धाययणक्रुहे णामं क्हे पण्णते ?' हे भदन्त ! कुत्र खल श्रुद्रहिमवती वर्षथरपर्वते सिद्धायतनक्र्टं नाम क्रूटं प्रज्ञप्तम् ? इति गीत-मस्य प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा!' हे गीतम! 'पुरित्थमलवणसमुद्रस्य पव्वत्थमेणं चुल्लिहिमवंतक्र्डस्स पुरित्थमेणं एत्थ णं सिद्धाययणक्रुहे णामं क्रूहे पण्णत्ते' पौरस्त्यलवणसमुद्रस्य पश्चिमेन श्रुद्रहिमवत्क्र्टस्य पौरस्त्येन अत्र खल्ल सिद्धायतनक्र्टं नामक्र्टं प्रज्ञप्तम्, तत्र-सिद्धायतनक्र्टस्य प्रथमतया मानाधाह-'पंचनोयणसयाइं' इत्यादि 'पंच जोयणसयाइं उद्धं उच्चत्तेण' नवरम्-पश्च योजनज्ञतानि पश्चक्षतयोजनानि कर्ध्वम् उच्चत्वेन, मूले (मूलदेशावच्छे-देन) सिद्धायतनक्र्टं यावदस्ति तायदाइ-मूले पश्चत्यादि-'मूले पंच जोयणसयाइं विक्खं-

कूट है वह वैश्रवणकूट है (किह णं मंते! चुल्लिहमबंते वासहरपन्वए सिद्धायपक्डे णामं कूछे प.) भदन्त! श्रुद्रहिमवत् वर्षघर पर्वत पर सिद्धायतन नामका
कूट कहां पर कहा गया है १ इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं (गोयमा! पुरित्थमलवणवमुद्दस्स पच्चित्थिमेणं चुल्लिहमवंत कूडस्स पुरित्थमेणं एत्थ णं सिद्धायपणक्डे णामंकूडे पण्णत्ते) हे गौतम! पूर्वदिग्वर्त्ती लवण समुद्र की पश्चिमदिशा
में एवं श्रुद्रहिमवत् कूट की पूर्वदिशा में सिद्धायतन कूट नामका कूट कहा गया
है (पंच जोयणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं मूले पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं मज्झे
तिण्णिय पण्णत्तरे जोयणसए विक्खंभेणं उर्दि अद्धाइज्जे जोयणसए विक्खंभेणं, मूले एगं जोयणसहस्सं पंचय एग(सीए जोयणसए किंचिविसेस्णं
परिक्खेवेणं मज्झे एगं जोयणसहस्सं एगंच छलसीयं जोयणस्य किंचिविसेस्णं

सुराहेवी पान क्रिक विशिष्ट हेती छे. हैमवत वर्षना अधिपति हेवने। के क्रूट छे ते हैम-वत क्रूट छे. वेश्रवण् -क्रुंपरने। के क्रूट छे ते वेश्रवण् क्रूट छे. 'किह णं मंते! चुल्छिहिमवंते वासहरपव्यए सिद्धाययणक्रेड णामं क्रूडे पण्णते' हे लहंत! क्षुद्रहिमवत् वर्षधर पर्वत ६ पर सिद्धायतन नामे के क्रूट छे ते क्यां आवेदे। छे? क्रीना क्ष्वालमां प्रभु क्रुडे छे—'गोयमा! पुरत्थिमळवणसमुद्रस्त पच्वत्थिमेणं चुल्छिहमवंतक्रूडस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं सिद्धाययण क्रूडे णामं क्रूडे पण्णते' हे जीतम! पूर्व हिश्वती सव्य समुद्रनी पश्चिम हिशामां तेमक क्षुद्र हिभवत क्रूटनी पूर्विहिशामां सिद्धायतन क्रूट न भक्ष क्रूट आवेदाछे— पंचजीयणसयाई खद्धं उच्चत्तेणं मूछे पंचजीयणसयाई विक्खंभेणं मज्झे, तिण्णिय पण्णत्तरे जीयणसए विक्खंभेणं, मूछे एगं जीयणसहस्सं पंचय एगासीए क्रीयणसए

भेणं' मूळे-मूळदेशावच्छेदेन पश्च-पश्चसंख्यानि योजनशतानि योजनानां शतानि विष्यम्भेण विस्तारेण प्रह्मपिति पूर्वेणान्वयः, 'मण्झे तिण्णि य पण्णत्तरे जोयणसप् विश्वंभेणं' एवम-प्रेडिप मध्ये-मध्यदेशावच्छेदेन त्रीणि-त्रिसंख्यानि च पश्चसप्ततानि पश्चसप्तत्यधिकानि योजनशतानि विष्कम्भेण, 'उप्पित्रद्धाइष्के जोयणसप् विक्खंभेणं' उपरि-उपरितनदेशावच्छेदेन अर्धतृतीयानि योजनशतानि विष्कम्भेण, इत्येवं मूळ मध्यान्तेषु तस्य विस्तारप्रमाणमुक्त्वा पित्क्षेपप्रमाणमाह-'मूळे एकम्' इत्यादि, 'मूळे एगं जोयण सहस्सं पंच एगासीए जोयणसप् किंचि विसेसाहिए परिवखेवेणं' मूळे एकं योजनसहस्रं पश्च एकाशीतानि-एकाशीत्य-धिकानि योजनशतानि किश्चिद्विशेषाधिकानि किश्चिद्वधिकानि च परिक्षेपेण, 'मण्झे एगं जोयणसहस्सं एगं च छळसीयं जोयणसयं किंचिविसेद्धणे परिवखेवेणं' मध्ये-एकं योजनसहस्रम् एकं च पडशीत्यधिकं योजनशतं किश्चिद्वशेषां विक्षित्रन्थंने परिक्षेपेण, 'उपि सहस्म एकं च पडशीत्यधिकं योजनशतं किश्चिद्वशेषां उपरि सप्त-सप्तसंख्यानि एकनव-

परिक्लेवेणं उपि सत्तइक्षाणउए जोयणसए किंचिविसेस्णे परिक्लेवेणं मूळे विच्छिण्णे, मड्झे संखित्ते उपि तणुए गोपुच्छसंठाणसंठिए सब्बरयणामए अच्छे) यह सिद्धायतन ूट ५०० योजन ऊंचा है मूल में ५०० योजन का मध्य में ३७५ योजन का इसका विस्तार है, जपर में २५० योजन का विस्तार है, इस प्रकार से इसका मूल, मध्य और अन्त का प्रमाण कहा गया है अब इसके परिक्षेप का प्रमाण इस प्रकार से है-मूल में इसका परिक्षेप १५८१ योजन से कुछ अधिक है मध्य में इसका परिक्षेप ११८६ योजन से कुछ कम है उपर में इसका परिक्षेप ७९१ योजन से कुछ कम है ११८६ योजन से कुछ कम है ऐसा जो कहा गया है उसका ताल्य ऐसा है कि ११ सो योजन तो पूरे समझना चाहिये तथा-८६ योजनों में से ८५ योजन पूरे समझना चाहिये वाकी जो एक

किंचित्रिसेसाहिए परिक्खेवेण मन्द्रे एगं जोयणसहस्सं एगं च छन्नसीयं जोयणसयं किंचि विसेस्णे परिक्खेवेण उपि सत्त एक्कःणडर जोयणसए किंचि विसेस्णे परिक्खेवेण मूळे विच्छिणो मन्द्रे संखिते छिपं तणुए गोपुच्छ संठाणसंठिए सव्वर्यणमए अच्छे' से सिद्धायतन कूट ५०० थे। अन केटदेश शिंचा छे. भूदामा ५०० थे। अन केटदेश अने मध्यमां ३७५ थे। अन केटदेश कोना विस्तार छे. ७५२मां २५० थे। अन केटदेश विस्तार छे. आ प्रमाखे आ कूटनुं मूद्ध, मध्य अने आंत संअंधी प्रमाख केदिवामां आवेद छे. द्वे आना परिक्षेप नुं प्रमाख आ प्रमाखे छे. मूणमां आने। अरिक्षेप १५८९ थे। अन करतां कंछि वधार छे. मध्यमां आने। परिक्षेप १९८९ थे। अन करतां कंछि कम छे. ७५२मां आने। परिक्षेप ७५९ थे। अन करतां कंछि अस्प छे. १९८९ थे। अन करतां कंछि अस्प छे आम के क्रदेवामां आवेद छे तेनुं तारपर्य आ प्रमाखे छे. १९८९ थे। अन करतां कंछि अस्प छे लाम के क्रदेवामां आवेद छे तेनुं तारपर्य आ प्रमाखे छे. के १९ से। थे। अन ते। पूरा समक्या लिए को

तानि-एकनवरयिकानि योजनशतानि किश्चिद्विशेषोनानि किश्चिद्वानि परिक्षेषेण, अयं-भावः-एकं सहस्रं पूर्ण शतं च पूर्ण पश्चाशीति योजनानि च पूर्णानि शेषं च क्रोशत्रयं धनुषा-मट्यशतानि त्रयोविंशत्यधिकानि इति किश्चित्वद्यशीतितमं विवक्षितमिति, तथा उपिर सप्त योजनशतानि एक नवत्यधिकानि किश्चित्न्य्यनानि परिक्षेषेण अयं भावः-सप्त शतानि नवति यौंजनानि पूर्णानि, शेषं क्रोशद्वषं धनुषां सप्तशतानि पश्चिविंशत्यधिकानीति किश्चिद्विः शेषोनम् एकनवित्तमं योजनं विविक्षितम् , परिक्षेषेणेति सवत्र बोध्यम्, 'मूळे विच्छिण्णे मज्ञे संखिते—उप्पि तणुष गोषुच्छ संठाणसंठिए' मूळे विस्तीण विस्तारयुक्तम् , मध्ये संक्षिप्तं मूळ सत्कविस्तारापेक्षया अल्पविस्तारयुक्तम् उपिर शिखरे तनुकम् दूस्वम् मूळमध्यापेक्षयाऽ ल्यतरविस्तरयुक्तम् , तथा गोषुच्छसंस्थानसंस्थितम् अध्वींकृत गोषुच्छाकार संस्थितम् 'स्व्वर्यणामप् अच्छे' सर्वरत्नमयम् अच्छे प्राग्वद् ।

योजन बचा है उसमें से ३ कोश ८२३ धनुष हो छेना चाहिये इस तरह यहां ११८६ योजन पूरे क कह कर इस प्रकार से कुछ कन कहे गये हैं ऐसा जानना चाहिये तथा ७९१ योजन को जो कुछ कम कहा गया है उसका भाव ऐसा है कि ७९० योजन तो पूरे छेछेना चाहिये बाकी १ योजन में से २ कोश और ७२५ धनुष छेना चाहिये इस तरह करके ७९१ योजन कुछ कम कहें गये हैं ऐसा जानना चाहिये इस तरह यह सिद्धायतन कूट मूल में विस्तीर्ण मध्य में संक्षिप्त और ऊपर में तनुक पतला हो गया है इसिलये इसका आकार उर्ध्विकृत गोपुच्छ के आकार जैसा बन जाता है यह सिद्धायतन कूट सर्थात्मना रत्नमय है और अच्छ आकाश एवं स्फटिकमिण के जैसा निर्मल है (से णं एगाए पडमबरवेइयाए एगेण यवण इंडेंग सन्वओ समंता संपरिकिस्ति सिद्धाययण स्तकूडस्स णं उप्णि बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते) यह सिद्धायतनकूट

तिमल ८६ शेलने । मांधी ८५ शेलने। पूरा समलवा लोई के. शेव ले कें हे शेलन वर्षे छे, तेमांधी उ गाउँ ८२३ धनुष ल देवा लेर्ड के. का प्रमाणे कहीं ११८६ शेलने। पूरा न हिने का प्रमाणे हं हे हम हहेवामां आवेद छे. तेमल ७६९ थेलनांधी ह है अहप हहेवामां आवेद छे, तेने। लाव आ प्रमाणे छे हे ७६० थेलने। ते। पूरा देवा लेर्ड के. आहे के थेलनमांधी र गाउँ अने ७२५ धनुष देवा लेर्ड के. आ प्रमाणे ७६९ थेलनशी हं हेड अहप हहेवामां आवेद छे. आम लखुवं लेर्ड के. आम आ सिदाव्यतन हूट मूद्यमां विस्तीर्ण, मध्यमां संक्षिप अने ६५२मां तनुह केटदे हे पातणा थर्ड गये। छे. कोटदा माटे आने। आहार ६६विड हत ग्रीपुर्विन शाहार केवे। थर्ड लाय छे के सिदायतन हुट सर्वात्मन। रत्नमय छे. अने अव्ध-अल्ड सहाश अने २६८६ मिद्वत् निर्मण छे. 'से जं एगाण पडमवरवेद्याइ एगेण वणसंहेणं सह्यओ समंता संपरिक्तिते सिद्वाय यणस्स कूडस्स जं डोप बहुसमरमणिउने भूमिमाने पण्णते' के सिदायतन हुट के प्रविन प्रमार

अथात्र पश्चवरवेदिका वनखण्डाधाह-'से णं' इत्यादि, 'से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्षित्वे' तत् खळ सिद्धायतनटक्टम् खळ एकया पदमवरवेदिकया एकेन वनवण्डेन सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्तं-वेष्टितम्, अत्र यदस्ति तत्स्वयितुमुपक्रमते-'सिद्धाययणस्स क्र्डस्से' त्यादि, 'सिद्धाययणस्स क्र्डस्स णं उप्प बहु-समरमणिज्जे भूमिभागे पण्णते, जाव तस्स णं वहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमञ्झदेस-भाए एत्थ णं महं एगे सिद्धाययणे पण्णते, पण्णासं जोयणाइं आयामेणं, पणवीसं जोयणाइं विक्खंभेणं, छत्तीसं जोयणाइं उद्धं उच्चतेणं जाव जिणपिडमा वण्णओ भाणियव्वो' सिद्धा-यतनस्य क्टस्य खळ उपिर वहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः, यावत् तस्य खळ बहुसमर-मणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागः, अत्र खळ महदेकं सिद्धायतनं प्रज्ञप्तम् , पश्चाशतं योजनानि विष्कमभेण, पट्तिंशतं योजनानि ऊर्ध्वमुच्चत्वेन यावत् जिनप्रतिमा वर्णको भिण-

एक पद्मवरवेदिका से एवं एक वनषण्ड से चारों ओर से घिरा हुआ है इस सिद्धायतन कूट का उपर का भाग बहुसमरमणीय कहा गया है (जाब तस्सणं बहुसमरमणिज्ञस्स भूमिभागस्स बहुमज्झ देसभाए-एत्थणं एगे महं सिद्धाय-यणे पण्णत्ते) यावत् इस सिद्धायतन के बहुसमरमणीय भूमिभाग के ठीक बीच एक महान सिद्धायतन कहा गया है (पण्णासं जोयणाइं आयामेणं पणवीसं जोयणाइं विक्वंभेणं छत्तीसं जोयणाइं उद्ध उद्ध्वतेणं जाब जिणपडिमा बण्णओं भाणियव्यो) यह सिद्धायतन आयाम की अपेक्षा ५० योजना का, विक्कम्भ की अपेक्षा २५ योजन का और उंचाई की अपेक्षा ३६ योजन का कहा गया है 'जाव णं बहुसमरमणिज्जस्स' में पठित इस यावत् शब्द से-वैता-दियगिरिगत सिद्धायतनकूट के वर्णन जैसा इसका भी वर्णन है ऐसा प्रकट किया गया है तथा 'उच्चत्तेणं जाव' यहां जो यावत् शब्द प्रयुक्त हुआ है

विहिश्यी तेमक क्रिक वनणं उथी वामिर आवृत क्रे क्रो सिद्धायतन क्रूटना ६ परने। भाग अहुसमरमणीय क्रिवामां आवेल क्रे. 'जाव तस्सणं बहुसमरमणिक्जस्स भूमिमागस्स बहु मक्झदेसमाए एत्यणं एगे महं सिद्धाययणे पण्णत्ते' यावत् क्रे सिद्धायतनना अहुसम रमणीय भूमिलागना ठीक मध्यमां क्रिक विशाण सिध्धायतन क्रे. 'पण्णासं जोयणाइं आयामेणं पणवीसं जोयणाइं विक्खंमेणं छत्तीसं जोयणाइं उद्धं उच्चतेणं जाव जिणपिडमा वण्णको माणियव्यो' क्रे सिद्धायतन क्रूट आयामनी अपेक्षाके प० येकन क्रेटेंसे विष्कं लनी अपेक्षाके २५ येकन क्रेटेंस विष्कं लनी क्रिक्शके २५ येकन क्रेटेंस, क्रमे अव्यानी अपेक्षाके ३६ येकन क्रेटेंस विष्कं लनी क्रे. 'जाव णं बहुसमरमणिक्जस्स' मां पिठत क्रे यावत् शण्डश्री वैतादय गिरिगत सिद्धायतन क्रूटना वर्णुन क्रेवुं क्रेनुं पण्च वर्णुन क्रे. क्षाम प्रकट करवामां क्रावेल क्रे. तेमक जाव णं बहुसमरमणिक्जस्स' मां पिठत क्रे यावत् शण्डश्री वैतादयगिरिगत सिद्धायतन जाव णं बहुसमरमणिक्जस्स' मां पिठत क्रे यावत् शण्डश्री वैतादयगिरिगत सिद्धायतन

तन्यः । नवरं प्रथम यावत्पदेन-वैताद्यगिरिगतसिद्धायतनकूरस्येवास्यापि वर्णको बोध्यः, उच्यत्वेन यावत्-इत्यत्रत्येन द्वितीयेन यावत्पदेन-तद्गतसिद्धायतनादि वर्णको बोध्यः ।

अथास्मिन्नेव वर्षधरपर्वते श्चद्रहिमवद्गिरिक्टवक्तन्यतामाह्—'किह णं' इत्याहि, 'किह णं भंते ! चुन्छिहमवंते कासहरपन्वए चुन्छिहमवंतक् हे णाम कूडे पण्णत्ते' हे भदन्त ! श्चद्रहिम विवर्षधरपर्वते श्चद्रहिमवत्कूटं नाम कूटं क्व खळ प्रज्ञप्तम् ? तस्योत्तरमाह—'गोयमे' त्यादि 'गोपमा !' हे गातम ! 'भरतक् इस्स पुरिथमेणं सिद्धाययणक् इस्स प्रच्वित्थमेणं, एत्य णं चुन्छिमवंते वासहरपन्वए चुन्छिमवंतक् हे णामं कूडे पण्णते' भरतक् टस्य पौरस्त्येन सिद्धायतक् टस्य पश्चिमेन, अत्र खळ श्चद्रहिमवित वर्षधरपर्वते श्चद्रहिमवत्क् टं नाम कूटं प्रज्ञप्तम् , 'एवं जो चेव सिद्धायपणक् इस्स उच्चत्तिवक् संभपित खेवो' एवम् उक्त प्रकारेण य एव सिद्धायतक् टस्य उच्चत्विक्षमभपित्र खेवो' एवम् उक्त प्रकारेण य एव सिद्धायतक् टस्य उच्चत्विक्षमभपित्र श्वेपः—उच्चत्व-विष्कमभ युक्त परिक्षेप इत्यर्थः, अत्र मध्यमपदलोपी समासो बोध्यः, स एवास्यापि बोध्यः, इदं च वचन सुपल्क प्रम्, तेन पद्मवरवेदिका चनवण्डादिवर्णनं बहुसमरमणीयभूमिभागवर्णनं च बोध्यम् कि

उससे वहां के सिद्धायतन आदिका वर्णक पाठ यहां कहलेना चाहिए ऐसा कहा गया है। (किहणं अंते! क्षुल्लिहमवंते वासहरपव्वए क्षुल्लिहमवंतकुंडे णामंकूंडे पण्णाचे) इस सूत्र द्वारा गौतमस्वामी ने प्रभु से ऐसा पूछा है कि क्षुद्रहिम वत्पर्वतपर क्षुद्रहिमवत् कूट नामका कूट कहां पर कहा गया है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं (गोयमा! भरहक् इस्स पुरिधमेणं सिद्धाययण स्सक् इस्स पच्चित्रभेणं एत्थणं क्षुल्लिहमवंते वासहरपव्वए क्षुल्लिहमवंतक्त क्षेडे णामं कूडे पण्णाचे। हे गौतम! भरत कूट के पूर्व में एवं सिद्धायतनकूट के पश्चिम में क्षुद्रहिमवंत पर्वत् पर क्षुद्रहिमवत् कृट नामका कूट कहा गया है, (एवं जो चेव सिद्धाययणकृ इस्स उच्चत्तविक् खंभ परिक्खेवो जाव बहुसमरमणि जस्स जो चेव सिद्धाययणकृ इस्स उच्चत्तविक् खंभ परिक्खेवो जाव बहुसमरमणि जस्स

कूटना वर्षु न केवुं केनुं पण् वर्षु न छे. आम प्रक्षट करवामां आवेत छे. तेमक 'उच्चन्तेणं जाव' अहीं के यावत् शास्त प्रथुक्त धयेत छे, तेनाथी त्यांना सिद्धायतन वर्गरेना वर्षु है पाठ अहीं समल देवा लिहि की. 'किहि णं मंते! छुल्लहिमवंते वासहरपटवप छुल्लिहमवंतक् छे णामं कूडे पण्णां' के सूत्र वडे जीतमे प्रभुने आ प्रभाणे प्रश्न क्यें छे हैं है प्रभु! छुद्र हिमवत् पर्वंत हपर छुद्र हिमवत् कूट नामक कृट क्या स्थणे आवेत छे हैं के मन कवालमां प्रभु केहें छे. 'तोरमा! मरहकूडस्स पुरिक्षमेणं सिद्धाययणस्स कूडस्स पच्चित्यमेणं एत्थणं छुल्लिहमवंते वासहरपटवए छुल्लिहमवंतक् णामं कूडे पण्णाते' है जीतम! भरत कूटना पूर्वमां अने सिद्धायतन कूटना पश्चिममां छुद्र हिमवत् पर्वंत हपर छुद्र हिमवत् कृट नामक कूट आवेत छे 'एवं जो चेव सिद्धाययणकूडस्स उच्चत्तिवक्षंमपरिविक्षेणे जाव बहुसमरमणिक्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महं एगे पासाय वहें।

पर्यन्तं बोध्यम् इत्याह-'जाव' इत्यादि, यावत्-यावत्यदेन-''तस्य खल्ल श्रुद्रहिमवत्क्र्टस्य खल्ल उपिर बहुसभरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः, तस्य खल्ल' इति संग्राह्यम् 'तस्सणं बहुसमर-मणिक्तस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे पासायविक्षंसए पण्णत्ते बासिष्ठं जोयणाई अद्धनोयणं च उच्चतेणं इक्षतीसं जोयणाई कोसं च विक्लंभेणं' तस्य खल्ल बहुस-मरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागः अत्र खल्ल महानेकः प्रासादावतंसकः प्रासादेषु शृद्दिशेषेषु अवतंसक इव शिरोभूषण विशेष इव उत्तमप्रासाद इत्यर्थः प्रज्ञप्तः, तस्य मानाद्याह स खल्ल प्रासादावतंसकः द्वाषष्टि योजनानि अर्द्धयोजनं च उच्चत्वेन, एकत्रिंशतं योजनानि क्रोशं च विक्कमभेण, अस्याऽऽयामस्तु समचतुरस्रत्वाद्य सूत्रकृता विचिन्तितः, तत्र

मूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महं एगे पासायवाडे सए पण्णत्ते) इस तरह सिद्धायतन कूट की जितनी जंचाई जही गई है जितना विष्कम्भ कहा गया है और जितना परिक्षेप यहा गया है जितनी ही उंचाई उतना ही विष्कम्भ और उतना हो परिक्षेप इस कूटका भी जानना चाहिये यह बचन उपलक्षणरूप है इससे पश्चरवेदिका और बनखण्ड आदि का वर्णन और बहुसमरमणीय भूमि भाग का वर्णन भी करलेना चाहिये हस तरह यह वर्णन वहां तक करना चाहिये कि जहां तक इस क्षुद्र हिमवान पर्वत के बहुसमरमणीय भूमि भाग का जो वीच का भाग है ऐसा पाठ कहा गया है इस बीच के भाग में विशाल प्रासादावतंसक कहा गया है (वासिट्टं जोयणाई अद्ध जोयणं च उच्चले णं इक्तिसं जोयणाई कोसं च विक्तंभेणं अन्सुग्गय भूसियपहिसए विच विविक्तंभ कोरण भत्तिचित्ते) यह प्रासादावतंसक ऊंचाई में ६२॥ योजन है विष्कम्भ २१ योजन और एक कोश का है इसका आयाम सूत्रकारने यहां इसके समचतुरस्र होने से प्रकट नहीं किया है कारण कि बैताइयगिरिगत प्रासाद के अधि-

सए पण्णते' आ प्रभाखे सिद्धायतन हूटनी केटली अंशिं हेडिवामां आवेली छे, के प्रभाखुमां विष्डंल हेडिवामां आवेल छे अने के प्रभाखुमां पिरिश्चेप हंडिवामां आवेल छे, तेटली क अंशिंग, तेटली क विष्डंल अने पिरिश्चेप ओ हूटने। एखा काष्ट्रवे। ओ वयन उपलक्षखु इप छे ओनाथी पद्मावर वेरिहा अने वनणांड वर्णरेनुं वर्षान अने अहुसमरमाधीय सूमिलागनुं वर्षान पखा समल लेखें कोई ओ. आ प्रभाखे ओ वर्षान त्यां सुधी लेखें कोई ओ है क्यां सुधी ओ क्षुद्र डिमवान पर्वतने। के अहुसमरमाधीय सूमिलागनी वश्चेने। साग छे, अवे। पाह अने समक्वे। ओ मध्यसागमां विशाल प्रासादावतं सह हेडिवामां आवेल छे वासिट्टें जोयणाई अद्ध जोयणं च उच्चत्तेणं इक्कतीसजोयणाई कोसं च विक्खंमेणं अब्सुमाय मूसिय पहिसए विव बिग्रहमणिरयणमित्तिचित्ते' ओ प्रासादावंत सह अंशार्थमां ६२॥ थे। कन भूमिय पहिसए विव बिग्रहमणिरयणमित्तिचित्ते' ओ प्रासादावंत सह अंशार्थमां ६२॥ थे। कन

कारणं वैतादचिगिरिगतप्रासादाधिकारे निरूपितिमिति जिज्ञासुभिस्ततो ज्ञेयम् , स प्रासादाव-तंसकः कीद्दाः ? इत्यपेक्षायामाद्य-'अब्सुरुगयभूसिय पद्यसिय विव विविद्याप्तर्यणभत्तिचित्ते' अभ्युद्गतोच्छ्रत प्रद्यसितः—अभ्युद्गतः आभिमुख्येन सर्वतो विविर्गतः उच्छ्रितः—उच्चः—गगनचुम्बी अतिधवल प्रभासमूहेन प्रद्यसित इव, पद्या—'अब्सुरुगय भूसिय पद्यसिय विवर'' इत्यस्य ''अभ्युद्गतोत्स्त प्रभा स्ति इव'' इति च्छाया, तत्पक्षे तु अभ्युद्गता—अभि—अभि—प्रामि-प्रक्षिय गता—सर्वतो विनिर्गता उत्यता—उत्—प्रावस्येन सता सर्वदिश्च प्रसता यद्या आकाशे प्रवल्यम सर्विर्यक् प्रयता च या प्रभा द्युतिः, तथा सित इव बद्ध इव विष्ठतीति प्रतीयते, अन्यथा कथङ्कारं सोऽत्युच्च निराधारः स्थातुं शक्तुयादिति भावः प्रभा रञ्जु बद्धस्तु स्थातुं शक्तोतीति पर्यवसितम् , मूले प्राकृतत्वान्मकारागमः, तथा विविध्मणिरत्नभक्तिचित्रः—विविधानि नानाप्रकाराणि यानि मणिरत्नानि मणयो रत्नानि च तेषां मक्तिभिः विच्छिन्तिभिः चित्रः अद्भुतः नानावणों वा, 'वाउद्धुय विजयवेजयंति पद्यागळ्ताइच्छत्तकलिए' तथा वातोद्धुत विजयवेजयन्त्यः—वात्रक्षित्यः—वात्रक्षित्यः—वात्रक्षित्रः—वात्रक्षित्रः—वात्रक्षित्रः—वात्रक्षित्रः—वात्रक्षित्रः—वात्रक्ष्यः तथा वातोद्धुतः—वायुकम्पताः याः विजयवेजयन्त्यः—विजयसङ्ग्विकाः वैजयन्त्यः—पत्रकाः, पताकाः सामान्यपताकाश्च तथा छत्रातिख्ञाणि उपर्युपश्चित्रः—विज्ञाणि च तः कल्रितः—युक्तः, तथा 'तुंगे' तुङ्गः—उचः,

कार में यह कहा जालुका है अतः वहां से इसे जानलेना चाहिये यह प्रासादा-वतंसकअभ्युद्गतोच्छित है और इसता जैसा प्रतीत होता है अर्थात् गगन-तल लुम्बित है और अपनी प्रभा से चमकता अथवा यह ऐसा प्रतीत होता है कि मानो यह समस्त दिशाओं में फैली हुई अपनी प्रभा से जकडा सा है नहीं तो फिर इतना ऊंचा होने पर वह कैसे निराधार रह सकता ९ मूल में प्राकृत होने से मकार का आगम हुआ है तथा यह प्रासादावतंसक अनेक प्रकार के मिणयों एवं रत्नों द्वारा की गई रचना से अद्भुत या बानावणों से युक्त सा प्रतीत होता है (वाउद्धुय विजय वेज्यंतोपडागच्छत्ता इच्छत्त कलिए तु मे गगणतलमणुलि-

कारे आ प्रासाहादतं सक्षना आयाम विषे स्पष्टता करी नथी. केम के वंतादय जिरिजत प्रासाहना अधिकारमां के कहिवामां आवेश के. कथी त्यांथी क आ विषे काज़ी क्षेत्रं क्रिक्के. के प्रासाहावतं सक अक्ष्यहं अति क्षि को क्षेत्रं के अने दास्य करते। हिाय तेम क्षाणे के अर्थात् के प्रासाहावतं सक अगन तक्षयुं कित के अने पातानी प्रकाशी यमकी रहा। के अर्था के प्रासाहावतं सक केवे। प्रतिकासित यह रहा। के के काले के समस्त किशाकामां प्रसरे पीतानी प्रकाशी कालद थयेथे। प्रतिकासित यह रहा। के के काले के समस्त किशाकामां प्रसरे पीतानी प्रकाश केवी रीते रही शक्त शिक्षा महीतर के आरक्षा कहिवा कहिवा कर महाराजम थयेश के. तेमक के प्रासाहावतं सक अनेकिय मिलुका तेमक रतना द्वारा विरथित रथनाथी अहसत अथवा नानाविध वर्लीथी युक्त हाय केम काले के 'वाउद्ध्य विजयवेजयंती पद्मान्छक्त इच्छक्तक हिए तुंगे गगणतल मणुलिहं तिसिहरे जाउंतररथण पंजन

'गगनतलमिं वंघमाणिस हरे' अत एव रामनतलम् आकाशतलम् अभिलङ्घ्यच्छित्रः —अति काम्यद्रम्रभागः, 'लालंतररयणपं नहममी लियव्य' जालान्तररत्नपञ्चरोन्मी लित इव-जालानि जालकानि प्रासादिभित्ति हिथतानि, तेपामन्तरेषु मध्येषु शोभार्थ जिटतानि रत्नानि यस्मिन् स तथोक्तः रत्नजिटतगवाल्लमध्यभागयुक्त इत्यर्थः, तथा पञ्चरोन्मी लितश्च पञ्चरात् वंशादि निर्मिताच्छादनिवशेषात् उन्मीलितः —तत्कालिनः सारितः इव यथा शोभमानः, अयं भावः-पथा वंशादि निर्मितात् पञ्चराद् निःसारितं रत्नादिकमिवन्द्रकान्तिलाद्रस्यन्तं शोभते, एवं सोऽपि प्रासादावतंसकः शोभत् इति, यहा-जालान्तरगतैरन्न पञ्चरैः रत्नसम्भदायैः उन्मीलित इव उन्मिपितनेत्र इवेत्यर्थः, तथा—'मणिरयण धूनियाए' मणिरत्न स्तूपिकाकः—मणिरन्नानां स्तूपिकाः लघुशिखराणि यस्य स तथोकः—मणिरत्नमयलघुशिखरयुक्त इत्यर्थः, तथा—'वियस्ति सयवत्तपुंडरीयितलयरपणद्वंदिचते' विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकरत्नार्द्वनद्व चित्रः

हत सिहरे जालंतररयणपंजहम्बोलिएववमणिरयणधूमिआए, वियसिय सय-वत्तपुंडरीयतिलयरयणद्धचंद्द्विले, णाणामणिमयदामालंकिए अंतो बहिं च सण्ह वहरतवणिज्जहरूल वालुगापत्थडे) इसके ऊपर वायु से विजय वैजयन्तियां फहरा रही है पताकाओं से और अजातिस्त्रज्ञों से यह कलित है बहुत अंचा है इसकी शिखरे आकाशतल को भी स्पर्शकर रही हैं इसके मध्यभाग में जो गवाक्ष हैं वे रत्न जिद्धत है तथा यह प्रासादावनंसक ऐसा सुन्दर नया बनासा प्रतीत होता है कि मानो यह अभी ही वंशादिनिर्मित छादनविशेष से बाहर निकाला गया है वंशादिनिर्मित छादनविशेष से जो रत्नादिक वस्तु बाहर निकाली जाती है वह विलक्षल साफ सुथरी एवं अधिकष्ट कान्तिवाली प्रतीत होती है अतः इसकी सुन्दरता देखकर यह ऐसी कल्पना की गई है इसकी जो स्तृपिकाएं-लघुशिखरे है वे माणियों एवं रत्नों से बनी हुई है तथा विकसित शतपत्रों के पुण्डरीकों के एवं भित्यादिकों में लिखित रत्नमयतिलकों के तथा द्वार आदि में

हम्मीलिएव्य मणिरमणथूमिआए, वियसिय सथवत्त पुंडरीय ति उय रयणद्ध चंद्विते, णाणामणिमयदामारुंकिए अंतो बहिं च सण्ह वहर तयणिज्जहड्ळवाळुगापत्थढें' ओ प्रासाहावत संक ७५२ वायुथी आंहोलित थती विकय वैक्यन्तीओ हरकी रहे छे. पता- काओथी अने छत्रातिछत्रोधी ओ इलित छे. ओ अती अंशो छे. ओना शिभरे आकाश्मी शने छत्रातिछत्रोधी ओ इलित छे. ओ अती अंशो छे. ओना शिभरे आकाश्मी रहा छे. ओना भायलाशमां के अवाह्मा छे ते रत्न कटित छे तेमक ओ प्रासाहावत संक ओवा सुंहर नवीन अनेला केवा लागे छे है काछ्ये ओ अत्यारे क वंशाहि निर्मित छहन विशेषधी अहर कादवामां आवेल न हाथ. वंशाहि निर्मित छहन विशेषधी के रत्नाहिक वस्तुओ कहार कादवामां आवेल न हाथ. वंशाहि निर्मित छहन विशेषधी के रत्नाहिक वस्तुओ कहार कादवामां आवेल छे ते तहहन स्वय्छ अने अविनष्ट कांतिवाणी प्रतीत थाय छे. ओथी ओनी सुंहरता कोईने ओवी क्रथनाओ। करवामां आवेल छे. ओनी के स्तूिमओ (लघुशिभरे।) छे ते मिथुओ। अने रत्नाधी निर्मित छे. तेमक विकसित

विकसितानि-फुल्लानि यानि शतपत्राणि शतपत्रविशिष्टानि कमलानि पुण्डरीकाणि श्वेतक मलानि च तथा तिलकरत्नानि भित्त्यादिषु रत्नम्यतिलकानि अर्थचन्द्राः—अर्थचन्द्राकृतयश्च द्वारादौ लिखिता तैश्चित्रः— अद्युतः नानावणीं वा, तथा 'णाणामणिमयदामालंकिय अंतो बहिं च' नानामणिमयदामालङ्कृतः—अनेक प्रकार क मणिमय मालाशोभितः, अन्तः—अभ्यन्तरे बहिः प्रासादाद्विर्धामे च 'सण्हत्रइरतवणि ज्ञरुल्यालुगा पत्यहे' श्लक्षण—चत्रतपनीय रुचिर वालुका प्रस्तृतः—श्लक्षणाः—चिक्कणाः वज्ञतपनीयानां वज्ञरुल्य स्वर्णमय्यः अत एव रुचिराः शोभनाश्च याः वालुकाः सिकताः ताभिः प्रस्तृतः आच्छादितः, यद्वा श्लक्षण इति पृथक् लुप्तविभक्तिकं पदं श्लक्षणः चिक्कणः प्रासादावतंसकः तथा वज्ञतपनीयानां या रुचिरा बालुकाः कणिकास्तासां प्रस्तृटः—प्रतरो यस्य (प्राङ्गणेषु) स तथा 'सुह्कासे' सुखस्पर्शः सुखजनक स्पर्शयुक्तः 'सिस्सरीयरूवे' सश्रीकरूपः—शोभासम्पन्नाकारः, 'पासाईए' प्रासादीयः, 'जाव पिडेरूवे' यावत्—यावत्पदेन दर्शनीयः अभिरूपः तथा प्रतिरूपः' एषां व्याख्या प्राग्वत् ।

'तस्स णं पासायवेडंसगस्स अंतो वहुसमरमणिड जे भूमिभागे पणाते, जाव सीहासणं सपितारं' तस्य खल्ज प्रासादावतंसकस्य अन्तः मध्ये बहुसमरमणीयः अत्यन्तसमतलः अत एव रमणीयः सुन्दरः भूमिभागः प्रज्ञसः, यावत् सिंहासनं सपितारम्-अत्र सपितार सिंहा- उस्कीणि हुए अर्द्ध चन्द्राकार के जैसे चित्रों से यह वडा ही अनोखा दिखाई देता है इस पर अनेक मणियों से बनो हुई मालाएं पड़ी हुई है उनसे यह बहुत ही सुहाबना प्रतीत होता है चिकनी वज्र एवं तपनीय सुवर्ण की कचिर बालुकाओं से यह भीतर में और बाहर में आच्छादित है (सुहाकासे, सिस्सिरीअहवे, पासाईए, जाव पड़िखवे) यह सुखकारी स्पर्शावाला है शोभा संपन्न आकार वाला है और प्रासादीय है यावत् प्रतिह्वक है यहां यावत्यद से 'दर्शनीयः अभिरूपः' इन पदों का प्रहण हुआ है (तस्सणं पासायवेडे सगस्स अंतो बहुसमरमणि कहा भूमिभागेपः) उस प्रासादावतंसकका भीतरी भाग बहुसमरमणीय कहा गया है (जाव सीहासणं सपितवारं) वहां पर सपितवारं सिंहासन का वर्णन

शतपत्रीमा-पुंडरिंडीना तथा लित्याहिंडीमां विभित रत्नमय तिबहैंना अने द्वार वजेरेमां हिर्डीर्ष्ट्र थयेवा अर्ध अंद्राधार केवा चित्रीथी के भूकक अह्मत वाजे छे. केनी उपर अनेड मिण्किथी निर्मित माणाका वटंडी रही छे. तेमनाथी के अतीव सुंहर प्रतीत थाय छे. वळनी सुच्छिष्ठ वाबुडाकोथी अने तपनीय सुवर्णुनी दुविर वाबुडाकोथी के अंहर अने अहार आव्छाहित छे. 'सुहफासे, सिरस्सरीअक्ट्रवे, पासाईए, जाव पहिक्ट्रवे' के सुभ डारी स्पर्शवाणा छे. शाला सम्पन्न आंडारवाणा छे अने प्रासाहीय छे. यावत् प्रति इपड छे. अही यावत् पहंथी 'दर्शनीय अभिक्षा' के पहेलुं अहण् थयुं छे. 'तस्स णं पासायवर्डेस्यस्स अंतो बहुसमरमणिष्जे भूमिभागे पण्णते' के प्रासाहवांतसङ्गे। शितरी काम कहुसभरमणीय डेहेवामां आवेद छे. 'जाव सिहासणं सपरिवारं' त्यां सपरिवारं त्यां सपरिवारं

सन वर्णनं वोष्यम्, तच्च राजप्रश्लीय सूत्रस्यैकविंशतितम द्वाविंशतितमस्वतः संग्राह्यम्, तद-र्थश्च तत एव वोष्यः।

अथास्यान्वर्थं नाम व्याख्यातुमिच्छुराह-'से केणडेणं भंते! एवं वुच्चइ चुन्छ हिमवंत-क्हे २' अथ केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते क्षुद्रहिमवत्क्र्टम् २ अस्योत्तरमाह-'गोयमा!' हे गौतम। 'चुन्छिहिमवते-णामं देवे मिहद्धीए जाव परिवसइ' क्षुद्रहिमवान् नामेत्यादि-हे गौतम! अस्मिन् क्षुद्रहिमवत्क्र्टे क्षुद्रहिमवान् नाम देवः परिवसतीत्युत्तरेण सम्बन्धः स की-हशः इत्याह-महद्धिकः यावत्-यावत्पदेन-'महाद्युतिकः महावछः महायशः महासौख्यः महा-नुभावः पन्योपमस्थितिकः' इत्येषां सङ्ग्रहो बोध्यः, एषां व्याख्याऽष्टमस्वस्थ विजयदेवा-धिकाराद् बोध्या, परिवसति निवसति । तेन हेतुना एवमुच्यते क्षुद्रहिमवत्क्टं क्टम् इति ।

अथास्य राजधानी वक्तव्यतामाइ-गौतमः पृच्छिति 'किहि णं भंते !' इत्यादि, 'केहि णं भंते ! जुटलहिमवंतिगिरिकुमारस्स देवस्स जुटलहिमवंता णामं रायहाणी पण्णत्ता ? कुत्र खुळ

करछेना चाहिये यह वर्णन राज प्रदनीय सूत्रके २१ वें और २२ वें सूत्र से जानछेना चाहिये तथा वहीं से उन सूत्रों के पदों की व्याख्या भी समझ छेनी चाहिये (से केणट्टे णं भंते ! एवं वुन्चह चुन्लिहिमवंतक्र्डे २) हे भदन्त ! आपने ऐसा 'वुल्लिहिमवन्त' चुल्लिहिमवंतक्र्ड नाम किस कारण से कहा है ९ (गोयमा ! ख़ुल्लिहिमवंते णामं देवे महिद्धिए जाव परिवस्तः) हे गौतन ! इस कूट पर क्षुद्रहिमवन्त नामका देवकुमार रहता है यह महिद्धिक आदि विशेषणों वाला है । यहां यावत्यद से 'महाद्युतिकः, महावलः महायशाः महासौख्यः, महानुभावः, पल्योपमस्थितिकः' इन पदों का संबह हुआ है इन पदों की ज्याख्या अष्ठम सूत्रस्थ विजयदेवाधिकार से ज्ञात कर छेनी चाहिये इस कारण उसे मैंने क्षुल्लिहमवन्त कूट इन नाम से कहा है !

(कहिणं भंते ! पंच चुल्लहिमवंतगिरिकुमारस्स देवस्स चुल्लहिमवंता णामं

सिंद्धासननुं वर्णन हरी लेवं कीर्धि. की वर्णन 'राजप्रश्लीय सूत्र'ना र१मां अने रर मां सूत्रमांथी कथी लेवं कीर्धि. तेमक त्यांथी क की सूत्रेना पहानी त्याच्या पृष् समल लेवी कीर्धि. 'से केणद्ठेणं मंते! एवं वृच्चइ क्षुल्लिहमवन्त कूडे र' है लहंत! आपश्रीक्षे 'चुल्लिहमवन्त' क्षुन्लिहमवन्तं हुर नाम शा कारख्यी कहें हुं है! 'गोयमा! क्षुल्लिहमवंते णामं देवे महिइहीए जाव परिवसइ' है जीतम! के कूट उपर क्षुद्र हिमन्वत नामक हेवहुमार रहे है. की महिद्धिक वंगेरे विशेषिण वाणा है. कहीं यावत् पहथी 'महानुतिकः, महाबलः, महायशाः, महासौच्यः, महानुमावः, पल्योपमस्थितिकः' के पढ़ी अहु थया है, के पहेनी व्याण्या अष्टम सूत्रस्थ विकयदेवाधिक्षरमांथी लाखी हों की कीर्धि आ का कारख्यी में क्षुन्लिहमवन्त कूट की नामथी संभिधित करें है.

'किंद् णं भंते ! चुल्छिहिमवंत गिरिकुमारस्स देवस्स चुल्छिहिमवंता णामं रायहाणी पण्णत्ते' 🗟

भदन्त ! क्षुद्रहिमवत्गिरिकुमारस्य देवस्य क्षुद्रहिमवता नाम राज्यानी प्रज्ञप्ता ?' भगदान-स्योत्तरमाह-'गोयमा !' इत्यादि, हे गौतम ! 'चुल्लहिमवंतकूडस्स दक्खिणेणं तिरियमसं-खेडजे दीवसमुद्दे वीईवइत्ता अण्णं जंबुदीवं दीवं दिक्खणेणं बारस जोयणसहस्साइं ओगा-हित्ता एत्थ णं चुल्लहिमवंतस्स गिरिक्कमारस्स देवस्स चुल्लहिमवंता णामं रायहाणी पण्णत्ता' श्चद्रहिमवत्कृटस्य दक्षिणेन दक्षिणस्यां दिशि तिर्यगसंख्येयान् तिर्यवप्रदेशे असंख्यातान् द्वीपसमुद्रान व्यतिव्रज्य-व्यतिक्रम्य उल्लङ्क्य अन्य जम्बुद्वीपं द्वीपं दक्षिणेन दक्षिणस्यां दिशि द्वादश योजनसङ्खाणि अवगाह्य प्रविश्य अत्र अत्रान्तरे खळ श्रुद्रहिमवतः एतन्नामकस्य गिरिकुमारस्य पर्वतपुत्रस्य देवस्य क्षुद्रहिमवती नाम राजधानी प्रज्ञप्ता, 'वारसजीयण सहस्साइं आयामविक्लंभेणं' सा च द्वादश योजन सहस्राणि आयामविष्कम्भेण दैर्ध्यविस्ताराम्याम् प्रज्ञप्तेति पूर्वेण सम्बन्धः, 'एवं विजयरायहाणी सरिसा भाषियव्या' एवम् अनेन प्रकारेण इयं राजधानी वर्णनं चाष्टमसूत्राद्वोध्यम् । 'एवं अवसेसाणविक्टाणं वत्तव्यया णेयव्या' एवं रायहाणी प.) हे भदन्त ! शुद्रहिमवन्तगिरिकुमार देव की शुद्रहिमवती नामकी राजधानी कहां पर है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-(गोयमा ! चुल्लहिमवंत क् उस्स दहिणेणं तिरिधमसंखेज्जे दीवसमुद्दे वीइवइत्ता अण्णंजबुद्दीवंदीवं दिक्ख-णेणं बारस जोयणसहस्साई ओगाहित्ता एत्थणं चुल्लहिमवंतस्स गिरिकुमारस्स देवस्स चुल्लहिमवंता णामं रायहाणी प.) हे गौतम ! क्षुद्रहिमवन्तकूट की दक्षिण दिशा में तिर्धगलोक संबंधी असंख्यात द्वीप सद्घद्वों को पार कर अन्य जंबूद्वीप नामके द्वीप में दक्षिण दिशा की ओर १२ हजार योजन आगे जाकर के आगत इसी स्थान में चुल्लहिमबंत गिरिकुमारदेवकी क्षुद्रहिमवतीनामकी राजधानी है। (बारस जोयणसहस्साई आधामविक्खंभणं, एवं विजय रायहाणी सरिसा भाणियव्वा) यह आयाम और विष्कंम्भ की अपेक्षा १२ हजार योजन की है॰ बाकी का और सब कथन इसके सम्बन्ध में अष्टमसूत्र में वर्णित विजयराज-

लह'त! क्षद्रिक्षियन्त जिरिष्ठमार हेवनी दिभवती नामह राजधानी इया स्थणे आवेली छे? क्षेना ज्वाभमां प्रक्ष इंदे छे-'गोयमा! चुल्लहिमवंतक्र्डस्स दिखणेणं तिरियमसंखेड दीवसमुद्दे वीइवइत्ता अण्णं जंण्ड्रीवं दीवं दिखणेणं बारस जोयणसहस्साइं ओगाहिता एत्थणं चुल्लिह्मवंतस्स गिरिकुमारम्स देवस्स चुल्लिह्मवंताणामं रायहाणी पण्णत्ता' हे जीतम! क्षुद्रद्विभवन्त इटनी हक्षिण् हिशामां तियं य लेख संजंधी असं अ्यात दीप समुद्रोने पर हिशामां तियं य लेख संजंधी असं अ्यात दीप समुद्रोने पर हिशान आवे ते ज स्थानमां क्षुड्रहिभवंत जिरिष्ठमार हेवनी क्षुद्र हिभवती नामह राजधानी छे. 'बारस जोयणसहस्ताइं आयामविक्यंभेणं एवं विजय रायहाणी हरिसा भाणियज्वा' से आयाम अने विष्डं लनी अपेक्षा १२ हजर येकिन जेटली छे. शेष सर्वं क्ष्यन सेना सं अंधान सेना स्थान स्थान विष्डं लनी अपेक्षा १२ हजर येकिन जेटली छे. शेष सर्वं क्ष्यन सेना सं अंधान सेना स्थान स्थान विष्डं लनी अपेक्षा १२ हजर येकिन जेटली छे. 'एवं अवन

सुद्रहिमवत्कृ टवत् शेषाणाम् तदितिरिक्तानां भरतक् टादीनां घूटानां वक्त व्यता वर्णनपद्धितः नेतव्या ज्ञानिवयतां प्रापणीया ज्ञेयेत्यर्थः, आयामविक् खं भपरिक खेव पासायदेवयाओ सीहा-सणपरिवारो अहो य देवाण य देवीण य रायहाणीओ णेयव्याओ' तथा आयाम विष्कम्भ परिक्षेपप्रासाद देवताः सिंहासनपरिवारः अर्थश्च देवानां देवीनां च राजधान्यो नेतव्या इति पूर्वेण सम्बन्धः, 'चउस्र देवा चुल्लहिमवंत १ भरहर हेमवय ३ वेसमणकृ हेस्र सेसेस् देव-याओ' तत्र चतुर्षु कूटेषु देवाः परिवसन्ति, केषु चतुर्षु १ इत्याह-क्षुद्रहिमवान १ भरत २ हैमवत ३ वेश्वयणकृ टेषु ४ शेषेषु उक्तातिरिक तेषु देवताः देव्यः परिवसन्ति, अथास्य सुद्र-हिमवन्ते हेतुमाह-'से केणहेणं मंते ! एवं युच्चइ चुल्लहिमवंते वासहरप्वयण् अथ केनार्थेन भदन्त ! एवस्च वते-क्षुद्रहिमवान वर्षधरपर्वतः २१ भगवानस्योत्तरमाह-'गोयमा!' हे

घानी के जैसा ही ज्ञात कर छेना चाहिये (एवं अवसेसाण वि कूडाण वत्तव्वयाण्यव्वा) इसी प्रकार से हिमबतकूट के वर्णन की पद्धित के अनुसार ही भरतकूट आदि क्टों की वक्तव्यता समझछेनी चाहिये इस तरह आयाम विष्क्रम्भ परिक्षेप, प्रासाद, देवता, सिंहासन परिवार अर्थ एवं देव देवियों की राजधानियां यह सब विषय हिमवत्कूट की वर्णन पद्धित के जैसा ही है ऐसा जानछेना चाहिये यही बात (आयामविक्खंम्भ परिक्खेव पासाय देवयाओ सीहासणपरिवारों अहोय देवाणय देवीण य रायहाणीओ णेयव्वाओ) इस सूत्र पाठ द्वारा प्रकट की गई है (चउसु देवा श्रुल्लाहिमवंत २ भरह ३ हैमवत् ४ वेसमणकूडेसु सेसेसु देवयाओ) श्रुद्धहमवन्त कूट पर, भरतकूट पर हेमवत कूट पर, और वैश्रवण कूट पर, इन भरतकूटो पर देव रहते हैं तथा वांकी के कूटों पर देवियां रहती हैं। (से केणदेठे णं मंते! एवं युच्चइ श्रुल्लिहमवंते वासहरपव्वए) हे भदन्त! आपने इसका नाम श्रुद्धहमवन्तवर्षधर पर्वत ऐसा किस कारण से

सेसाण विक्डाणं वत्तव्वया णेयव्वा' आ प्रभाषे हिमवंत इटना वर्ष्ट्रान्नी पद्धति मुक्थ क भरत इट वगेरे इटीनो वक्ष्तव्यता सम्ल होवी किंध्ये आ प्रभाषे आयाम, विष्ठं भ परिक्षेप, प्रासाह, हेवता, सिंहासन परिवार, अर्थ तेमक हेव-हेबीओनी राजधानीओ। ये अधु क छे. येवुं समल होवुं किंध्ये. येक वात 'आयाम विक्खंभपरिक्लेव पासाय देवयाओ सीहासणपरिवारो अहोय देवाणय देवीणय रायहाणीओ णेयव्वाओ' ये सूत्रपाठ वडे प्रकट करवामां आवेकी छे.

'चडमु देवा चुल्लिहिमवंत २ भरह ३ हेमवय ४ वेसमण कूडेमु सेसेमु देवयाओ' क्षुद्रिक्षियनत डिभवंत ६८ ७५२ अरत ६८ ७५२ छेभवंत ६८ डिभवंत६ ६८ ७५२ देश्रवण् ६८ के बार ६८। ७५२ हेवी २६ छे. तेमक शेष ६८। ७५२ हेवीको। २६ छे. 'से केणटूठेणं भंते! एवं बुच्चइ क्षुल्लिहिमवंते वासहरपव्चए' डि—अर्धत आपश्रीको क्षेतुं नाम क्षुद्र डिभवन्त वर्षधर पर्वत कोवुंशा कारणुशी कह्युं छे?

गौतम ! 'महाहिमवंत वासहरपञ्चयं पणिहाय आय! ग्रुच्चचुन्वेहिविक्खंभपित्विवेवं पहुच्च' महाहिमवह्वविधरपर्वतं प्रणिधाय आश्रित्य आयामोच्चत्वोद्धधिविष्कम्भ पिरिक्षेपं प्रतीत्य अपेश्य 'ईसिं खुइडतराए चेव हस्मतराए चेव णीयतराए चेव चुन्छिहिमवंते य इत्थ देवे महिद्धीए जाव पिछिओवमिट्टिइए पिरवसइ' ईपत्कुद्रतरक एव किञ्चिन्छिपुतर एव यथासंभवं योजनापेक्षया विधेयत्वेनाऽऽयामाद्यपेक्षया, हस्वतरक एव—अति हस्य एव उद्धेधापेक्षया नीचतरक एव अति-नीच एव उच्चत्वापेक्षया, तथा क्षुद्रहिमवांश्च देवः अत्र अस्मिन् क्षुद्र-हिमवति वर्षधरपर्वते पित्वसित इति परेणान्वयः, स कीद्दशः ? इत्याह—'महिद्धिको यावद् पन्योपमस्थितिकः, यावत्पदेन—''महाद्युतिकः, महाबलः, महायशाः, महासौरूयः, महातु-भावः, इश्येषां पदानां संग्रहो बोध्यः, एषां व्याख्याऽष्टमस्त्र्वाद् बोध्या परिवसित निवः

कहा है ? (गोयमा! महाहिमवंतवासहरपव्वयं पणिहाय आयामुच्च नुव्वेह विक्खं भपित्व खेवं पड़च्च ईसिं खुड़ तराए चेव हस्सतराए चेव णीअतराए चेव चुल्ल हिमवंते इत्थ देवे महिड्डिए जाव पिल ओवमिट्टिइए पित्व प्रद से एएण ट्रेगं गोयमा! एवं बुच्च इ चुल्ल हिमवंते वासहरपव्यए) हे गौतम! महाहिमवन्त वर्ष घर पर्वत की अपेक्षा लेकर के—उसके आयाम, उच्चत्व उद्धेध विष्कृंग्म, पिरिश्लेपको आश्रित करके—क्षुद्र हिमवत् पर्वत का आयाम आदिका विस्तार थोडा है लघुनर है महाहिमवान के उद्धेध हस्वतरक अति इस्व है। महाहिमवान के उच्चत्व की अपेक्षा उसका उच्चत्व अतिनीचा है। तथा क्षुद्र हिमवान नामका देव इस क्षुद्र हिमवान वर्षधर पर्वत पर रहता है यह खुद्र हिमवान नामका देव महद्धिक है और यावत एक पल्योपमकी स्थितिवाला है यहां यावत्पद से 'महाद्युतिकः, महावलः, महायद्याः, महासौष्यः, महानुभावः' इन पदींका ग्रहण हुआ है इन पदीं की व्याख्या अष्टम सूत्र से ज्ञातव्य है इस कारण हे गौतम!

'गोयमा! महाहिमवंतवासहरपव्वयं पणिहाय आयामुन्चतुव्वेह विक्खंभपरिक्खेवं पहुच्च ईसिं खुडुतराए चेव हस्सतराए चेवणीअतराए चेव चुल्छंहमवंत इत्थ देवे महिड्हिए जाव पिछिओवमिट्टिइए पिडिवसइ से एएद्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ चुल्छ हिमवंते वासहर पव्वपं हे गौतम! महाहिमवन्त वर्षधर पर्वतनी अपेक्षाओ तेना आयाम, इन्यत्व, इदेध विष्ठं ल, परिक्षेपाने आश्रित हरीने क्षुद्र हिमवत पर्वतना आयाम वर्णे विस्तार अल्प छे. सहादि भवन्ता इन्यत्वनी अपेक्षाओ आने। इदेध हरवतर अलिह्र हे महाहि भवन्ता इन्यत्वनी अपेक्षाओ आने। इदेध हरवतर अलिह्र हे असे छे. तथा क्षुद्र हिभवान नाम हेव को क्षुद्र हिभवान वर्षधर पर्वत इपर हे छे. को क्षुद्रहिभवान नाम हेव महाहि छे अने यावत् के पर्वापम केट्यी स्थित धरावे छे. अहा अक्षु थया छे. को पहीनी व्याप्या अष्टम सुत्रमांथी लाही देवी

सित 'से एएणहेणं गोयमा! एवं वृड्चइ-चुल्लिहिमवंते वासहरपञ्चए २' सः श्रुद्रहिमवान् एतेन अनन्तरोवतेन अर्थेन कारणेन गौतम! एव-मुञ्यते-श्रुद्रहिमवान् वर्षथरपर्वतः इति । अथास्य शाश्चतत्वे हेतुमाह-'अदुत्तरं च णं गोयमा! चुल्लिहिमवंतस्स सासए णाम- धेज्जे पण्णते, जं ण कयाइ णासी' अथ च खल्ल गौतम! श्रुद्रहिमवतः शाश्चतं नामधेयं प्रज्ञातं यत यस्मात्कारणात स न कशाचिद् नासीत् अपि तु आसीदेवेत्यादि चतुर्थस्त्रोक्त पश्चरवेदिकावद् बोध्यम् ॥ स्व० ७॥

अथाऽनेन क्षुद्रिमवता वर्षधरपर्वतेन विभक्तस्य हैमबतक्षेत्रस्य वक्तव्यमाह-'कहि णं भंते' इत्यादि ।

प्रम्-कहि णं भंते ! जंबुहीवे दीवे हेमवए णामं वासे पण्णसे ? गोयमा ! महाहिमवंतस्स वासहरपट्ययस्स दिक्खणेणं चुल्लिहिमवंतस्स वासहरपट्ययस्स उत्तरेणं पुरिश्यमलवणसमुद्दस्स पच्चित्थमेणं पचित्थम-लवणसमुद्दस्स पुरिश्यमेणं एत्थ णं जंबुहीवे दीवे हेमवए णामं वासे पण्णसे, पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे पिल्यंकसंठाण-संठिए दहा लवणसमुद्दं पुट्टे, पुरिश्यमिल्लाए कोडीए पुरिश्यमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्टे, पच्चित्थिमिल्लाए कोडीए पच्चित्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्टे, दोण्णि जोयणसहस्साइं एगं च पंचुत्तरं जोयणसयं पंच य एगूणवीसइ-भाए जोयणस्स विवखंभेणं, तस्त वाहा पुरिश्यमपच्चित्थिमेणं छज्ञोयण-

इस वर्ष घरपर्वत का नाम श्चद्रहिमवान वर्षघर-पर्वत-ऐसा मैंने और अन्य तीर्थंकरों ने कहा है (अदुत्तरं च णं गोयमा ! श्चल्लिहमवंतस्स सासए णाम-घेउजे प.) अथवा श्चद्रहिमवान पर्वत का 'श्चद्रहिमवान' ऐसा जो नाम कहा गया है उसका कारण कुछभी नहीं है क्यों कि वह तो शाश्वत है (जंण कयाइ णासि) ऐसा इसका यह नाम पहिछे कभी नहीं था ऐसा नहीं है, भूतकाल में भी इसका यही नाम था इत्यादि सब कथन चतुर्थ स्त्रोक्त पद्मवरवेदिका की तरह से ही जानना चाहिये। सू० ७।।

निधं भे आ કારણથી હ ગૌતમ! એ વર્ષધર પર્વતનું નામ ક્ષુદ્ર હિમવાન્ વર્ષધર એવું મેં અને અન્ય તીર્થ કરા એ કહ્યું છે. 'अदुत्तरं च णं गोयमा! चुल्लिहिमवंतस्स सासए णामघेडने पः' અથવા ક્ષુદ્ર હિમવન્ પર્વતનું 'ક્ષુદ્ર હિમવાન્' એવું નામ જે કહેવામાં આવેલું છે તેનું કંઈ જ કારણ નથી. કેમકે તે તા શાશ્વત છે. 'जं ण कयाइ' એવું આનું આ નામ પહેલાં ન હાતું. એવું નથી, ભૂતકાળમાં પણ એનું એજ નામ હતું વગેરે અધું કથન ચતુર્થ સૂત્રાક્ત પદ્મવરવેદિકાની જેમ જ બાણી ક્ષેતું નેઈ એ. સૂ. ા છ ા

सहस्साइं सत्त य पणवण्णे जोयणसए तिण्णि य एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं, तस्स जीवा उत्तरेगं पाईणपडीणायया दुहओ ळवणसमुद्दं पुट्टा, पुरित्थिमिछ।ए कोडीए पुरित्थिमिन्छं छवणसमुद्दं पुट्टा पचित्थिमिन्छाए जाव पुट्टा सत्तरीसं जोयणसहस्साइं छच चउवत्तरे जोयणसए सोछस य एगूणवीसइभाए जोयणस्त किंचि विसेस्णे आयामेणं, तस्स धणुं दाहिणेणं अट्टतीसं जोयणसहस्साइं सत्तं य चत्ताछे जोयणसए दस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं, हेमवयस्स णं भंते ! वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे एण्णते ? गोयमा ! बहुसम-रमिणज्जे भूमिभागे पण्णते, एवं तद्दय समाणुभावो णेयबोत्ति ॥सू०८॥

छाया—कव खद्ध भदन्त ! जम्बूद्धीपे द्वीपे हैमवतं नाम वर्ष प्रज्ञप्तम् ?, गौतम ! महाहिमकतो वर्षधरपर्वतस्य दक्षिणेन श्रुद्रहिमयतो वर्षधरपर्वतस्य उत्तरेण पौरस्त्यलवणसमुद्रस्य
पश्चिमेन पश्चिमलवणसमुद्रस्य पौरस्त्येन अत्र खल्क जम्बूद्धीपे द्वीपे हैमवतं नाम वर्षे
प्रज्ञसम् , प्रावीनप्रतीचीनायतम् उदीचीनदक्षिणविस्तीणं पर्यञ्कसंस्थानसंस्थितं द्विधा
लवणसमुद्रं स्पृष्टम् , पौरस्त्यया कोट्या पौरस्त्यं लवणसमुद्रम् स्पृष्टम् , पाथात्यया कोट्या पाथात्यं लवणसमुद्रं स्पृष्टम् द्वे योजनसहस्रे, एकं च पश्चोत्तरं योजनकतं
पश्च च एकोनविंशतिभागान् योजनस्य विष्कम्मेण, तस्य बाहा पौरस्त्यपश्चिमेन
षद् योजनसहस्राणि सप्त च पश्चपञ्चाशं योजनकतं त्रींश्च एकोनविंशतिभागान् योजनस्य आयामेन, तस्य जीवा उत्तरेण प्राचीनप्रतीचीनायता द्विधातो लवणसमुद्रं स्पृष्टा, पौरस्त्यया कोट्या पौरस्त्यं लवणसमुद्रं स्पृष्टा पाश्चात्यया यावत् स्पृष्टा सप्ततिंशतं योजनसहस्नाणि षद् च चतुः सप्तानि योजनशतानि पोडशं च एकोनविंशति भागान् योजनस्य किश्चिद्विशेषोनान् आयामेन, तस्य धनुः दक्षिणेन अष्ट्यात्रशतं योजनसहस्राणि सप्त च चत्वारिंशानि
योजनशतानि दश्च एकोनविंशतिभागान् योजनस्य परिक्षेपेण, हैमवतस्य खल्च भदन्त !
वर्षस्य कीद्यक्त आकारभावश्रत्यवतारः प्रज्ञप्तः ?, गौतम ! बहुसमरमणीयो भूमिभागः
प्रज्ञप्तः, एवं तृतीयसमानुमावो नेतन्य इति ॥ स्व ८ ॥

टीका-'किह णं भंते !' इत्यादि । 'किह णं भंते ! जंबूद्वीवे दीवे हेमवए णामं वासे पण्णाचे, क्वत्र-किस्मिन स्थाने खळु भदन्त ! जम्बूदीपे द्वीपे हैमवर्त नाम वर्षे प्रज्ञप्तिमिति

'कहिणं भंते ! जंबुदीवे दीवे हेंमवए णामं वासे पण्णत्ते' ॥सू०८॥ टीकार्थ-इस सूत्र द्वारा गौतमस्वामी ने प्रभु से ऐसा पूछा है-(कहिणं भंते !

^{&#}x27;कहि णं भंते ! जंबुदीवे दीवे हेमवए णामं वासे पण्णत्ते, इत्यादि' टीक्षथं—आ सूत्र वडे गीतभस्वामीओप्रसुने स्थेवे। प्रश्न क्ष्येि छे है-'कहि णं भंते ! जंबुदीवे

गौतमस्य प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा ! हे गौतम ! 'महाहिमवंतस्स वासहरप्व्ययस्स दिखेन णेणं चुल्छहिमवंतस्स वासहरपव्ययस्स उत्तरेणं प्ररत्थिमछवणसम्रहस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थि-मलवणसमुद्दस्स पुरित्थमेणं एत्थ णं जंबुदीचे दीवे हेमबए णामं वासे पण्णत्ते' महाहिमवतो वर्षधरपर्वतस्य दक्षिणेन-दक्षिणस्यां दिशि क्षुद्रहिमवतो वर्षधरपर्वतस्य उत्तरस्यां दिशि, पौर-स्त्यलवणसमुद्रस्य पश्चिमायास् , पश्चिमलवणसमुद्रस्य पूर्वस्याम् , अत्र खल् जम्बुद्वीपे द्वीपे हैमवतं नाम वर्षे प्रज्ञप्तम् -कथितम्, 'पाईणपडीणायए' इदश्च प्राचीन - प्रतीचीनायतम्-दीर्घम्, 'उदीण दाहिण विच्छि॰ णें उदीचीन दक्षिणविस्तीर्णम्, 'पलियंकसंठाणसंठिएं परयङ्कर्संस्थानसंस्थितम्-पर्यङ्काकारसंस्थितम् आयतचतुरस्रत्वात् , 'दुहा' इत्यादि, 'दुहा-क्रवणसमुद्दं पुढे पुरिविमिल्लाए कोडीए पुरिविभिल्लं लवणसमुद्दं पुढे, पच्चित्यिमिल्लाए कोडीए पच्चित्थिमिल्लं छवणसमुदं पुट्टे' द्विया छवणसमुद्रं स्पृष्टम् , पौरस्त्यया कोटया पौरस्त्यं जंबुदीवे दीवे हेमवए णामं वासे पण्णत्ते) हे भदन्त! क्षुद्रहिमवान् वर्षधर पर्वत से विभक्त हैमवत क्षेत्र इस जम्बूबीपनामके द्वीप में कहां पर कहा गया है-१ इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-(गोधमा! महाहिमवंतस्स वासहरपव्ययस्स दिक्खणेणं चुल्लिहमवंतस्स वासहरपःवयस्स उत्तरेणं पुरिथमलवणसमुद्दस्स पच्चित्थमेणं पच्चित्थमलवणसमुद्दस्स पुरित्थमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे हेमवए-णामं वासे प्रण्णत्ते) हे गौतध ! महाहिमवान् वर्षधर पर्वत की दक्षिणदिशा में क्षुद्रहिमवान् पर्वत की उत्तरिदशा में, पूर्वदिग्वर्ती लवणसमुद्र की पश्चिमः दिशा में एवं पश्चिमदिग्वर्ती लवणसमुद्र की पूर्वदिशा में जम्बूद्वीप नामके द्वीप में हैमवतक्षेत्र कहा गया है (पाईणपडीणायए) यह हैमवत क्षेत्र पूर्व से पश्चिम तक लम्बा है (उदीणदाहिण विच्छिण्णे) तथा उत्तर से दक्षिण तक चौडा है (पिलअंकसंठाणसंठिए दुहा लवणसभुदं पुडा पुरिथमिल्लाए कोडीए पुरिश्थ मिल्लं छवणसमुदं पुढे पच्चित्थिमिल्लाए कोडीए पच्चित्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुढा)

दीवे हेमवए णामं वासे पण्णत्ते' हे लहंत! क्षुद्र हिमवान् वर्षधर पर्वथी विलक्ष्त हैम-वात क्षेत्र आ क' जूदीप नामक द्वीपमां क्या रूपणे आवेल छे? ओना कवात्रमां प्रकु के छे. 'गोयमा! महाहिमवंतस्स वासहरपट्ययस्स दिक्लणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपट्ययस्स उत्तरेणं पुरिश्यमल्यणसमुद्दस्स पच्चित्रिमेणं पच्चित्र्यमल्यणसमुद्दस्स पुरिश्यमेणं पच्चित्र्यमल्यणसमुद्दस्स पुरिश्यमेणं एत्य णं जंबुद्दीवे दीवे हेमवए णामं वासे पण्णत्ते' हे जीतम! महा हिमवान् वर्षधर पर्वनी दिल्ला हिशामां क्षुद्र हिमवान् पर्वतनी उत्तर दिशामां पूर्वदिव्वती लवा समुद्रनी पूर्व दिशामां क्षुद्र हिमवान् पर्वतनी उत्तर दिशामां पूर्वदिव्वती लवा समुद्रनी पूर्व दिशामां कम्लूद्रीप नामक द्वीपमां हैमवत होत्र आवेल छे. 'पाईण पडीणायए' ओ हैमवत क्षेत्र पूर्वथी पश्चिम सुधी लांणु छे. 'उदीणदाहिणविच्छिण्णे' तेमक उत्तरथी दिल्ला सुधी पहेलुं छे. 'बिल्लंकसंठाणसंठिए दुहा ल्याणसमुदं पुट्टा पुरिश्विमिल्लाए कोडीए प्रचिमिल्लं लवणसमुदं पुट्टी पुरिश्विमिल्लाए

कवणसमुद्रं स्पृष्टम्, पाश्चात्यया कोटया पाश्चात्यं लवणसमुद्रं स्पृष्टम् 'दोण्णि जोयणसह-स्साइं एगं च पंचुत्तरं जोयणसयं पंच य एगूणवीसइभाए जोयणस्स विक्खंभेणं' द्वे योजनस्य सइस्ने, एकं च पश्चोत्तरं योजनशतं पश्चेत्रेकोनविंशतिभागान् योजनस्य विष्कम्भेण, श्रुद्र-हिमवत्पर्वतिविष्कम्भादस्य विष्कम्भो द्विगुणः, अथास्य बाहाद्याह्-'तस्स वाह्रे'त्यादि—'तस्स बाह्रा पुरिश्यमपच्चित्थेमेणं छज्जोयणसहस्साइं सत्त य पणवण्णे जोयणसए तिण्णि य एगू-णवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं' तस्य हैमवतवर्षस्य बाह्रा पौरस्त्यपश्चिमेन वड् योजनसह-स्नाणि सप्त च पश्च पञ्चाशं योजनशतं त्रींश्च एकोनविंशतिभागान् योजनस्य आयामेन-देष्येण, अथास्य जीवानाह—'तस्स जीवे' त्यादि, 'तस्स जीवा उत्तरेणं पाईण पडीणायया दुह्ओ छवणसमुद्रं पुट्टा' तस्य जीवा उत्तरेण प्राचीनप्रतीचीनायता द्विथातो छवणसमुद्रं स्पृष्टाः 'पुरिश्यिमिल्लाए कोडी एप्तिथिमिल्लं लवणसमुद्रं पुट्टा पच्चित्थिमिल्लाए जाव पुट्टा'

इसका आकार जैसा पर्यङ्क का आकार होता है वैसा है क्यों कि यह आयत खतुरस है खुद्रहिमवत पर्वत के विष्करम से इसका विष्करम दिग्रण कहा गया है वह दोनों और से लवण समुद्र को छू रहा है पूर्व की कोटि से पूर्व लवण समुद्र को छू रहा है पूर्व की कोटि से पूर्व लवण समुद्र को ओर पश्चिम कोटी से पश्चिम दिग्वर्ती लवणसमुद्र को छू रहा है (दोणिण जोयणसहस्साई एगंच पंचुत्तरं जोयणसमं पंचय एग्णवीसहभागे जोयणस्स विक्लंभेणं) इसका विस्तार २९०५ पे योजन का है (तस्स वाहा पुरित्थम पच्चित्थमेणं छज्जोयणसहस्साई सत्त य पणवण्णे जोयणसए तिण्णि य एग्णा बीसइभागे जोयणस्स आयामेणं) इसकी वाहा पूर्वपश्चिम में लम्बाई की अपेक्षा ६७५५ रे योजन की है (तस्स जीवा उत्तरेणं पाईणपढीणायया दुहुओ लवणसमुद्रं पुद्रा, पुरित्थमिल्लाए कोडीए पुरित्थिमिल्लं लवणसमुद्रं पुद्रा पच्चित्थिमिल्लाए जाव पुद्रा) इसकी जीवा उत्तर दिशा में पूर्व से पश्चिम तक आयत लम्बी है यह दोनों तरफ से लवणसमुद्र को छूती है पूर्व की

पुट्टा' आ हैमवत होत्रने। आहार पर्यं हने। केवी आहार हाय छ तेवी छे. हेम है के आयत यतुरक्ष छे. शुद्र हिमवत् पर्वतना विष्डं लथी याने। विष्डं ल द्विशुणु हहिवामां आवेस छे. ओ अन्ने तरहंथी सवणुसमुद्रने स्पर्शी रह्यो छे. पूर्व है।टिथी पूर्व सवणु समुद्रने अने पश्चिमहै।टिथी पश्चिमहिन्वती सवणुसमुद्रने स्पर्शी रह्यो छे. 'दोणिण जोयण सहस्साइं एगं च पंचुत्तरं जोयणस्यं पंचय एग्णवीसइमागे जोयणस्य विक्लंभेणं' आने। विस्तार २९०५ हे थे।अन केटेसे। छे. 'तस्स वाहा पुरिधमपच्चिथमेणं छन्जोयणसहस्साइं सत्त य पणवण्णे जोयणसए तिष्णिय एग्णावीसइमागे जोयणस्य आयामेणं' अनी वाहा-पूर्व पाश्चिममां संअधिमां अधिमां अधिमां अधिमां अधिमां संअधिमां अधिमां संअधिमां अधिमां हां पार्टिशमां द्वां पुरिधमां को एवं पार्टिशमां द्वां पुरिधमां सुर्व पुर्हा पुरिधमां को पश्चिमहलं लवणसमुदं पुट्टा पुरिधमित्लाए को ही युरिधमित्लं लवणसमुदं पुट्टा पुरिधमित्लाए को प्रियम सुधी समुदं पुट्टा, पच्चिमित्लाए जाव पुट्टा' अनी छिवा हत्तर दिशामां पूर्वथी पश्चिम सुधी स्मायत सांभी छे. ओ अनने तरहंथी सव्या समुद्रने स्पर्शी रही छे. पूर्वनी होटीथी पूर्व

पौरस्त्यया कोटया पौरस्त्यं छवणसमुद्रं स्पृष्टा पाश्चात्यया यावत् स्पृष्टा, 'सत्ततीसं जोयण सहस्साइं छच्च चउवत्तरे जोयणसप सोलस य एगूणवीसइमाए जोयणस्स किंचि विसेद्वणे आयामेणं' सप्तिविश्वतं योजनसहस्नाणि षट् च चतुः सप्ततानि योजनशतानि षोडश चैकोनविंशितभागान् योजनस्य किश्चिद्विशेषोनान् आयामेन, 'तस्स धणुं दाहिणेणं अहतीसं जोयणसहस्साइं सत्त य चत्ताले जोयणसए दस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं तस्य हैमवतवर्षस्य धनुः—धनुष्पृष्टम् , दक्षिणेन—दक्षिणिदिग्भागे अष्टित्रंशतं योजनसहस्नाणि सप्त च चत्वारिंशानि चत्वारिंशदधिकानि योजनशतानि दश च एकोनविंशितभागान् योजनस्य परिक्षेपेण परिधिना, 'हेमवयस्स णं' इत्यादि, हेमवयस्स णं भंते! वासस्स केरिसए आयारभावपढोयारे पण्णत्ते' स्पष्टम् नवरम् आकारभावप्रत्यवतारः तत्राकारः—स्वरूपम् भावः—तदन्तर्गतः पदार्थः तद्युक्तः प्रत्यवतारः प्रकटी भावस्तथा, स कीदशकः—किदशः प्रज्ञप्तः?, 'गोयमा! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते' हे गीतम! बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः, 'एवं तइयसमाणुभावो णेयव्वो त्ति' एवम् उक्तप्रकारेण तृतीयसमानुभावःवृतीयसमा—स्वप्यदुष्पगाऽरकस्तस्याऽनुभावः—स्वभाव' स्वरूपमिति यावत् नेतव्यः—इगनविष्यतां प्रापणीयो ज्ञातव्य इत्यर्थः ॥ स्व० ८ ॥

कोटी से पूर्वदिग्वर्ती लवणसमुद्र को छूती है और पश्चिमदिग्वर्ती कोटि से पश्चिमदिग्वर्ती लवणसमुद्र को छूती है (सत्ततीसं जोयणसहस्साई छच्च चड़ वत्तरे जोयणसए सोलस य एग्णवीसहभाए जोयणस्म किंचिवसेस्रणे आयामेणे यह आयाम की अपेक्षा कुछकम ३७६७४ है योजन की है (तस्स घर्जु दाहिणेणं अहतीसं जोयणसहस्साई सत्तय चत्ताले जोयणसए दस य एग्णवीसह भाए जोयणस्म परिक्लेवेगं) इसका घनुः एष्ठ परिक्षेप की अपेक्षा ३८७४० है योजन का है (हेमवयस्मणं मंते! वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते) अब गौतमस्वामी ने प्रभु से ऐसा पूछा है हे भदन्त! हैमवत् क्षेत्रका आकार भाव प्रत्यवतार स्वरूप कैसा कहा गया है १ उत्तर में प्रभु कहते हैं— (गोयमा! बहुसमरमणिड्जे भूमिभागे पण्णते एवं तइअसमाणुभावो णेयव्वोत्ति)

हिन्दर्शी स्वण् समुद्रने स्पर्शी रही छे अने पश्चिम हिन्दर्शी है। शिश्चम हिन्द्रिशी पश्चिम हिन्द्रिशी समुद्रने स्पर्शी रही छे. 'सत्त तीसं जोयणसहस्साई छच्च चडवत्तरे जोयणसए सोलस एगूणयवीसइमाए जोयणस्स किंचि विसेस्णे आयामेणं' से आयामनी अपेक्षाओ के कि के अहरिक में अहरिल के हैं। शिक्ष के लिए विसेस्णे आयामेणं अहर्तीसं जोयणसहस्साई सत्त य चत्ति जोयणसए दस य एगूणवीसइमाए जोयणस्स परिक्लेवेणं' आतुं धनुःभुष्ठ परिक्षिपी अपेक्षाओ उ८७४० है है थे। अन केटबे। छे. 'हेणवयस्स णं मंते! वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते' देवे शीतमे प्रश्चने आ प्रभाग्ने प्रश्च केर्य है हे सहन्त! है भवत् केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते' देवे शीतमे प्रश्चने आ प्रभाग्ने प्रश्च केर्य है हे सहन्त! है भवत् केरिसए क्षेत्रने। आक्षारसाव-प्रत्यवतार-स्ववृप हेवां छे ? उत्तरमां प्रश्च केर्ड छे-'गोयमा! बहुसरम-

अथात्र क्षेत्रविभाजकपर्वतस्वरूपं प्रदर्शयितुमाइ-'कहि णं भंते' इत्यादि ।

प्लम्-कहि णं भंते ! हेमवए वासे सहावई णामं वहवेयद्धपव्वए पण्णते ?, गोयमा ! रोहियाए महाणईए पच्चित्थमेणं रोहियंसाए महा-णईए पुरित्थमेणं हेमत्रयवासस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं सदावई णामं वहवेयद्धपद्वए पण्णते, एगं जोयणसहस्सं उद्धं उच्चत्तेणं अद्घाइ-जाइं जोयणसयाइं उव्वेहेणं सव्वत्थ समे पल्लंगसंठाणसंठिए एगं जोयणसहस्सं आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसहस्साई एगं च बावटूं जोयणसयं किंचि विसेसाहियं परिक्खेवेगं पण्णत्ते, सद्वरयणामए अच्छे, से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेगं सब्बओ समंता संप-रिक्षित्ते, वेइयावणसंडवण्णओ भाणियव्वो, सद्दावइस्स णं बहवेयद्ध-पटवयस्स उवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, तस्स णं बहुसम-रमणिजस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एमे पासाय-वडेंसए पण्णते, बावट्टिं जोयणाइं अद्धजोयणं च उद्धं उच्चतेणं इक्कतीसं जोयणाइं कोसं च आयामविक्खंभेणं जाव सीहासणं सपरिवारं, से केण-ट्रेणं भंते ! एवं बुच्चइ सदावई वहवेयद्ध १८वए १२ गोयमा ! सदावइ वदृवेयद्भपटवए णं खुद्दा खुद्दियासु वाबीसु जाव विलपंतियासु बहवे उपलाइं पउमाइं सदावइपभाइं सदावइवण्णाभाइं सदावई य इस्थदेवे महिड्डिए जाव महाणुभावे पिलेओवमट्टिइए परिवसइत्ति, से णं तत्थ चउवहूँ सामाणिय साहस्सीणं जाव रायहाणी मंद्रस्स पव्वयस्स दाहि-णेणं अण्णंमि जंबुद्दीवे दीवे ॥सू० ९॥

छाया-का खलु भदन्त ! हैमवते वर्षे शब्दापाती नाम वृत्तवैतादयपर्वतः प्रज्ञप्तः, गौतम ! रोहिताया महानद्याः पश्चिमेन रोहितांशाया महानद्याः पौरस्त्येन हेमवतपर्षस्य बहु-हे गौतम ! यहां का भूमिभाग बहुसमरमणीय कहा गया है यहां पर सदा तृतीय काल सुषमदुष्यमारक की रचना रहती है।।स्०८।।

णिको भूमिभागे पण्णते एवं तइअ समाणुभावो णेयव्योत्ति' है गौतम ! अहींने। लूभिलाग अहु सभरभद्यि इहिवामां आवेस छे. अहीं सर्वदा तृतीयहाण सुषम हुष्यभारहनी रयना रहे छे. ॥ सू. ॥ ८॥ मध्यदेशमागः, अत्र खलु शब्दापाती नाम वृत्त वैताद्यपर्वतः प्रज्ञप्तः, एकं योजनसहस्रम् ज्रध्वं सुच्चत्वेन अर्धवृतीयानि योजनशतानि उद्वेधेन सर्वत्र समः पर्वे सुंस्थानसंस्थितः, एकं योजनसहस्रम् आयामविष्कम्भेण त्रीणि योजनसहस्राणि एकं च द्वाषण्टं योजनशतं किश्चिद्विशेषाधिकं परिक्षेपेण प्रज्ञप्तः, सर्व रत्नमध्यः अच्छः, स खलु एकया पद्मवश्वेदिक्या एकेन च वनषण्डेन सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्तः, वेदिका वनषण्डवर्णको भणितव्यः, शब्दापातिनः खलु वृत्त-वैताद्यपर्वतस्य उपित् बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः, तस्य खलु बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागे अत्र खलु महानेकः प्रासादावतंसकः प्रज्ञप्तः, द्वापष्टिं योजनानि अर्द्धयोजनं च अर्ध्वं मुच्चत्वेन एकिश्वतं योजनानि क्रोशं च आयामविष्कम्भेण यावत् सिंदासनं सपरिवारम् , अथ केनार्थेन भदन्तः एवसुच्यते शब्दापाती वृत्तवेताद्यपर्वतः ? २, गौतमः! शब्दापातिवृत्तवेताद्यपर्वते खलु क्षुद्राऽक्षद्रिकासु वापीसु यावत् बिल्यक्तिकासु वृह्गि उत्पलानि पद्मानि शब्दापाति प्रमाणि शब्दापाति वर्णामि शब्दापाति वर्णामिनि, शब्दापाति चात्र देवो महर्दिको यावत् महानुभावः पर्योपमस्थितिक परिवसतीति, स खलु तत्र चत्रसणां सामानिकसादस्रीणां यावद् राजधानी मन्दरस्य पर्वत-स्य दक्षिणेन अन्यस्मिन जम्बृद्वीपे द्वीपे ॥ स्व० २ ॥

टीका-'किह णं भंते' इत्यादि । 'किह णं भंते ! हेमवए वासे सदावई णामं वहवेयद्ध पच्यए पण्णत्ते' हे भदन्त ! हैमवते तन्नामके वर्षे शब्दापाती नाम वृत्तेवेताढचपर्वतः वव किस्मिन्यदेशे प्रज्ञप्तः हैं, भगवानाह-'गोयमा !' गौतम ! 'रोहियाए' रोहितायाः रोहितानाम्न्याः 'महाणईए' महानद्याः 'पच्चित्थिमेणं' पश्चिमेन पश्चिमदिग्मागे 'रोहियंसाए' रोहितांशायाः रोहितांशा नामन्या 'महाणईए पुरिथमेणं हेमवयवासस्स बहुमज्झदेसभाए' महानद्याः पौर-

'कहिणं भंते ! हेमवएवासे सद्दावइणामं वट्टवेअद्धपव्यए' ॥सू० ९।

टीकार्थ-गौतमस्वामी ने प्रभु से इस सूत्र द्वारा ऐसा पूछा है-(किह णं भंते! हेमवए वासे सदावई णामं वहवेयद्धपव्वए पण्णत्ते) हे भदन्त ! हैमवतक्षेत्र में जो शब्दापाती नामका वृत्तवैतादच पर्वत कहा गया है वह कहां पर है १ इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं (गोयमा! रोहियाए महार्णइए पच्चित्थिमेणं रोहिअंसाए महाणईए पुरित्थिमेणं हेमवयवासस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं सदावई णामं

'कहि णं भंते हेमवएवासे सदावइणामं वट्टवेअद्धपटवए । इत्यादि,

टीडार्थ-गौतभरवाभीके प्रखुने का स्त्रवर्ड केवा प्रश्न डर्थी छे है-'कहि ण मंते! हेमवए-वासे सहावर्ड णामं वट्टवेयद्धपटवए पण्णत्ते' है लहन्त! हैभवत् होत्रभां के 'शण्डापाती' नामक वृत्तवैतादय पर्वत कहेवामां आवेस छे, ते क्या क्थणे आवेस छे? केना कवाणमां प्रखु कहे छे-'गोयमा! रोहियाए महाणइए पच्चिक्षमेणं रोहिअंसाए महाणईए पुरिक्षमेणं हेम-वयवासस्स बहुमव्ह्रदेसभाए एथ णं सहावहं णामं बट्टवेयद्धपटवए पण्णत्ते' हे गौतभ! रोहिता महानदीनी पश्चिम दिशामां अने रोहितांशा महानदीनी पूर्व दिशामां आ इत्येन पूर्वदिरभागे हैमवतवर्षस्य बहुमध्यदेशभागः अस्ति 'एत्थ णं' अत्र अस्मिन बहुमध्य-देशभागे 'सहावई णामं' शब्दापाती नाम 'बहुवेयद्धपन्वए पण्णत्ते' वृत्त वैतादचपर्वतः प्रश्नप्तः, अस्य वृत्तत्व विशेषणेन भरतादिक्षेत्रवर्ति वैताढचपर्वतवत्पूर्वीपरायतत्वं व्यावर्त्यते अन्यथा तद्वतपूर्वपश्चिमायतत्वमस्यापि प्रतीयेतेति वृत्तवैताढ्य इत्युपादीयते वृत्तः वर्तुलाकारः सचासी बताढचपवत इत्यर्थः, अत एवतत्कृतः क्षेत्रविभागः पूर्वतः पश्चिमतश्च सम्भवति, यथा पूर्वहैम-बतमपग्हैमवतं चेतिः ननु पञ्चकलाधिकैकविंशतिशतयोजनप्रमाणविस्तारवतो हैमवतस्य मध्यवर्ती योजनसहस्रोपान एष पर्वतः कयं क्षेत्रस्य द्विधा विभाजको भवति ? अत्रोच्यते-श्रस्तुतक्षेत्रविस्तारो हि पूर्वपश्चिमपार्श्वयोः रोहितारोहितांशाभ्यां महानदीभ्यां रुद्धो मध्य-तक्ष्यने नेति नदीरुद्धक्षेत्रं विद्वायातिरिक्तक्षेत्रमसौ द्विधा करोतीत्यन्वर्थाऽत्र वैतादय शब्दप्रष्ट्रः त्तिरिति, एवं शेषेष्वपि वृत्तवैत्ताढचेषु स्वस्वक्षेत्र नदीनामभिलापेन भाव्यम् , अथास्य माना-द्याह-'एगं जोयणसहस्तं' मित्यादि सगमम् नवरम् सर्वत्र अधोमध्योध्वदेशेषु समःसहस्रसहस्र विस्तारकत्वात्समानः, अत एव पर्यञ्कसंस्थानसंस्थितः पर्यञ्कः छाटदेशप्रसिद्धो वंशदछेन विरचितो धान्याधारकोष्ठकः तस्य यत् संस्थानम् अवयवसंनिवेशस्तेन संस्थितः, तथा-प्रयङ्का-कारसंस्थित इत्यर्थः, द्वापष्ठ द्वापष्टयधिकं योजनशतं किश्चिद्विशेषाधिकं किश्चिद्विशेषेण गण-नाकरणवजादागतेन स्त्रातकतेन राशिना अधिकम् अतिरिक्तं परिक्षेपेण पश्चिमा प्रज्ञप्तम् , सर्वरत्नमय:-सर्वात्मना रत्नमयः, अच्छः, उपलक्षणतया श्लक्षण इत्यादीनां सङ्ग्रहो बोध्यः,

वह्टवेयद्धप्रवए पण्णत्ते) हे गौतम! रोहिता महानदी की पश्चिमदिशा में और रोहितांशा महानदी की पूर्वदिशा में यह शब्दापाती नामका वृत वैताद्धप्रवृत कहा गया है और यह हैमवत क्षेत्र के ठीक मध्यभाग में है (एगं जोयणसहस्सं उद्धं उच्चतेण अद्धाइजाइं जोयणसयाई उव्वेहेण सव्वत्थ समे, पल्लंगसं-संठाणसंठिए एगं जोयणसहस्सं आयामविक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसहस्साइं एगं च बावहं जोयणसयं किंचिविसेसाहियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते) इसकी उंचाई एक हजार योजन की है अदाई सौ योजन का इसका-उद्धेध है यह सर्वत्र समान है पलंग का जसा आयत चतुरस्र आकार होता है वैसा ही इसका आकार है इसका आयाम और विष्कंग्भ १ हजार योजन का है तथा इसका परिक्षेप कुछ अधिक ३१५२ योजन का है (सव्वरयणामए अच्छे) यह सर्वात्मना

'शाल्हापाती' नामड वृत्त वैतादय पर्वंत आवेद छे, को पर्वंत हैमवत क्षेत्रना हीड मध्य सागमां छे. 'एगं जोयणसहस्सं उद्धं चच्चतेणं अद्धाइन्जाइं जोयणसयाइं चट्वेहेणं सट्यत्थ समे, पल्लंगसंठाणसंठिए एगं जोयणसहस्सं किंचि विसेसाहियं परिक्षेवेणं पण्णत्ते' कीनी शिंधाई क्षेष्ठ हुलार येलन केटली छे. २५० येलन केटली आने। उद्धेध छे. को सवत्र समान छे. पक्षंगना केम आयत यतुरक्ष आडार हाथ छे, तेवा क आडार आ पर्वतना पशु छे. आने। आयाम अने विष्डंक १ हुलार येलन केटली छे. तेमक आने। परिक्षेप डंधेड वधार ३१५२ येलन केटली छे. 'सन्वर्यणामए अच्छे' को सर्वा-

सः शब्दापाती वृत्तवैतादचपर्वदः खल एकया पद्मवरवेदिकया एकेन च वनपण्डेन सर्वदिश्च समन्तात् सर्वविदिश्च संपरिक्षिप्तः परिवेष्टितः, अत्र वेदिकावनषण्डवर्णकः-पद्मवरवेदिका वनषण्डयोर्वर्णकः वर्णनपरः, पदसमृहः भणितव्यः वक्तच्यः, स च चनुर्थ पश्चमस्त्रतो बोध्यः।

'शब्दापातिनः खलु' इत्यादि-सगमम्, अथास्य अन्वर्धनामार्थे निरूपयन्नाइ-'अथ केनार्थेन भदन्त' इत्यादि-पूर्वोक्त ऋषमक्रटप्रकरणवद् व्याख्येयम्, केवलमृषमक्रदेति नाम-कृतोऽत्रभेदोऽवसेयः यतस्तत्र ऋषमक्रटप्रमेरित्यादि शब्दैः कथितः, अत्र तु शब्दापाति रत्नमय है और आकाश तथा स्फटिक मणिके जैसा निर्मल है। (से णं एगाए पडमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सञ्बओं समंता संपरिकिखने) यह एक पद्मवरवेदिका और एक वनषण्ड से चारों ओर से घरा हुआ है (वेइया वणसंड-वण्णओं भाणियव्वो) यहां पर वेदिका एवं वनषण्ड का वर्णन करलेना चाहिये।

(सद्दावहस्स णं वह्टवेयद्धपव्चयस्स उविशं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे-पण्णत्ते) शब्दापाती वृतवैताद्वयपर्वत के जपर का भूमिभाग बहुसमरमणीय कहा गया है (तस्सणं बहुसमरमणिज्ञस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महं एगे पासायवर्डेसए पण्णत्ते) उस बहुसमरमणीय भूमिभाग में ठीक बीच में एक विशाल प्रासादावतंसक है। (बाविहें जोयणाई अद्धजोयणं च उद्धं उच्चत्तेणं इक्कतीसं जोयुणाई कोसं च आयामिक्क्यंभेणं जाव सीहासणं सपरिवारं) यह ६२॥ योजनका उंचा है तथा ३१। योजनका इसका आयाम और विष्कम्भ है यावत् इसमें सपरिवार सिंहासन है (से केणहेणं भंते! एवं वुच्चइ सद्दावई वहवेयद्धपव्चए) हे भदन्त! आपने 'शब्दापाती वृत्वैतादय पर्वत' इसे ऐसे

त्मना रत्नमथ छे. अने आक्षाश तेमक स्कृटिक मिध्वित निर्मण छे. 'से णं एगाए पडम-वरवेड्याए एगेण य वणस डेणं सद्व ओ समंता संपरिक्छितं' आ ओठ पह्मवरवेडिका अने वनभां उथी योमेर आइत्त छे. 'वेइ्या बणसंडवण्णओ माणियद्वो' अहीं वेडिका अने वनभां उत्तुं वर्धन सम्ल क्षेत्रुं लेडि ओ.

'सद्दावहस्स णं बहुवेयद्वपटवयस्स उविश् बहुसमरमणिउने भूमिभागे पण्णत्ते' शण्डापाती वृत्तवैतादय पर्वतना ७परने। लूमिलाग ग्रहुसभरमध्यि अहेवामां आवेल छे. 'तस्स णं बहुसमरमणिउनस्स भूमिभागस्स बहुमउन्नदेसभाए एत्थ णं महं एगे पासायवर्डेसए पण्णत्ते' ते अहुसभरमध्य लूमिलागना ठीड भध्यलागमां ओड विशाण प्रासादावतं सङ्घ छे. 'बाबिहुं नोयणाइं अद्धनोयणं च उद्धं उच्चत्तेणं इक्कतीसं नोयणाइं कोसं च आयाम-विक्लंभेणं नाव सीहासणं सपरिवारं' ओ ६२॥ ये। श्रन लेटले। ७ थे। छे. ३९। ये। श्रन लेटले। आने। आयाभ अने विष्डंस छे. यावत् ओमां सपरिवार सिंहासन छे. 'से केणद्रेणं मंते! एवं वुच्चइ सहावई बहुवेयद्वपट्यए' हे 'सहन्त' आपश्रीओ 'शण्डापाती वृत्तवैतादय पर्वत कोतं नाम था डारख्यी हह्यं छे. ? कोना लवासमां प्रसु डहे छे.

प्रभैरित्यादि शब्दैरिति, अत्र यावत्यदेन दी विकास, सुञ्जालिकास सरःपङ्क्तिकास, इत्येषं पदानां सङ्ग्रहो बोघ्यः, एषां व्याख्या राजप्रश्नीयस्त्रस्य चतुष्टितमस्त्रश्न्यास्मत्कृतस्रवोधिनी टीकातो बोध्या, शब्दापाती चात्रदेवः परिवसतीत्युक्तरेणान्वयः, स च कीद्यः ! इत्यपेक्षायामाह—महर्द्धिकः यावत् यावत्यदेन—'महाद्यतिकः, महावलः, महायशाः, महासी-ख्याः' इत्येषां पदानां सङ्ग्रहो बोध्यः, तथा—''महानुभावः पल्योषसस्थितिकः'' एषां व्याख्याऽष्टमस्त्राद् बोध्या, अथ शब्दापातिदेवमेव विश्विनिष्टि ''स खल्ल' इत्यादि—सः शब्दापातिदेवः खल्ल तत्र—शब्दापातिष्ठक्तवैतादचप्रविते चतल्लां सामानिकसाहस्रीणां चतुः सहस्रसामानिकानां यावत् यावत्पदेन—''चतल्लणामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिल्लां परिषदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाविश्वातीनां योजशानामात्मरक्षकदेवसाहस्रीणां शब्दापातिनश्च

नामसे क्यों कहा है ? इसके उत्तरमें प्रभु कहते हैं-(गोयना ! सहावइवह वे अद्ध पव्वएणं खुदा खुदिअ:ख बावोस्ठ जाव विल्रपंतिआसु बहवे उप्पलाइं पडमाइं सदावइप्पभाइं सदावइवण्णाइं सदावित वण्णाभाइं सदावइअ एत्थ देवे मिहद्धीए जाव महाणुभावे पिलेओवमिटिइए पित्वसइत्ति) हे गौतम ! दाब्दापाती वृतवैतादय पर्वत पर छोटी वडी वापिकाओं से यावत् विल्पंक्तियों में अनेक उत्पल पद्मकी जिनकी प्रभा दाब्दापाती के जैसी है वर्ण जिनका दाब्दापाकी के जैसा हैं जो दाब्दापाती के वर्ण के जैसी आआ दाले है, तथा यहां दाब्दापाती नामका महर्द्धिक यावत् अहानुआवद्याली देव कि जिसकी एक पत्योपम की स्थिति है रहता है इस कारण इस पर्वतका नाम 'दाब्दापाती' ऐसा कहा गया है।

'से णं तत्थ चउण्हं समाणिधसाहस्त्रीणं जाव रायहाणी मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं अण्णंमि जंबुदीवे दीवे.' यह देव वहां पर अपने चार हजार सामा-निकदेवों का यावत् चार सपरिवार अग्रमहिषियोंका, तीन परिषदाओंका, सात अनीकोंका, सात अनिकाधिपतियोंका १६ हजार आत्मरक्षक देवोंका एवं

'गोयमा! सद्दावद्द वहुवेअद्धपव्यएणं खुद्दाखुद्दिआसु वाशीसु जाव विल्पंतिआसु बहुवे खपलाइं पडमाइं सद्दावद्दपभाइं सद्दावद्दवण्णाइं सद्दावित वण्णाभाइं सद्दावर्द्दआ इत्थ देवे महिद्धीए जाव महाणुमावे पलिओवमिठिइए परिवसइत्ति' हे गौतम! शण्डापाती वृत्त वैताह्य पर्वत हथर नानी—मेटी वाि हास्योधी यावत् विक्षपंद्रित्योमां अने हत्यक्ष—पह्मानी हे केमनी प्रला शण्डापाती केवी हे, केमनी वर्षु शण्डापाती केवी हे. के शण्डापातीना वर्षु केवी प्रलावाणा हे तेमक सहीं शण्डापाती नामह महिद्धि यावत् महानुकावशाली हेव हे केनी ओह पद्योपम केटली स्थिति हे हहे हे स्था स्थान नाम 'शण्डापाती' आ प्रभाहे हहेवामां आवेल हे. 'से णं तत्य चडण्हं सामाणिय साह्रसीणं जाव रायहाणी मंद्रस्स पट्ययस्स दाहिणेण अण्णंमि जंबुद्दीवे दीवे' से हेव त्यां भिताना आर हेलर सामानिह हेवे। यावत् आह सपरिवार स्थामिकीकी, त्रह्य परिवार

वृत्तवैताहचपर्वतस्य च शब्दापातिन्याश्च राजधान्या अन्येषां च वहूनां शब्दापातिनी राजधानी वास्त्रत्यानां देवानां देवीनां च आधिपत्यं पौरपत्यं स्वामित्वं भर्तृत्वं महत्तरकत्वम् आह्रेश्चर सेनागत्यं कारयन् पालयन् महताऽहतनाटचगीतवादित्र तन्त्रीतल्लालत्रृटितधनमृदङ्गपदु-प्रवादितरवेण दिव्यान् भोगभोगान् सुञ्जानो विहरति, क्य खल्ल भदन्त ! शब्दापातिवृत्तवैता- दचिगिरकुमारस्य देवस्य शब्दापातिनी नाम" इत्येषां सङ्ग्रहः राजधानी प्रज्ञप्ता ?, गौतम ! देवियोंका आधिपत्य पौरपत्य स्वामित्व, भर्तृत्व, महत्तरकत्व, तथा आह्रेश्वर

देवियोंका आधिपत्य पौरपत्य स्वामित्व, भर्तृत्व, महत्तरकत्व, तथा आज्ञेश्वर सेनापत्य करता हुजा उसकी-पालना करता हुआ अनेक प्रकारके नाट्य गीत आदिके प्रसङ्गों पर बजाये गये भिन्न २ प्रकारके वादिजोंकी तुमुलध्विन के साथ दिव्यभोगों को भोगता रहता है और आनन्द के साथ अपने समयको व्यतीत करता रहता है। यावत मन्दर पर्वतकी दक्षिणदिशामें अन्य जम्बुद्धीप में इस शब्दापाती वृत्त वैतादय कुमार की शब्दापातिनी नामको राजधानी है। यहां जो 'शब्दापाती वृत्तवैतादय' ऐसा कहा गया है सो यह पर्वत भरतादि क्षेत्रवर्ती वैतादय पर्वत को जैता पूर्व से पश्चिम तक आधत नहीं है किन्तु गोलाकार है इसी वातको प्रकट करने के लिये 'बृत्त' ऐसा विशेषणपरक पद प्रयुक्त किया है इसी वातको प्रकट करने के लिये 'बृत्त' ऐसा विशेषणपरक पद प्रयुक्त किया है इसी कारण से पूर्व हैमवत और उत्तर हैमवत ऐसे दो विभाग इस क्षेत्र के हो गये हैं। यहां- शंका ऐसी होसकती है कि हैमवत् क्षेत्रका विस्तार २१०५ के योजन का कहा गया है और यह शब्दापाती वृत्तवैतादय पर्वत उसके मध्यमें रहा हुआ है तथा इसका विस्तार एक शजर योजन का है तो फिर यह हैमवत् क्षेत्रना दिधा विभाजक कैसे होता है ? उत्तर प्रस्तुत क्षेत्रका विस्तार पूर्व और

ષદાઓ ઉપર, સાત અનીકા ઉપર. સાત અનીકાધિપતિએ ઉપર, ૧૬ હજાર આત્મ- રક્ષક દેવા અને દેવીઓ ઉપર આધિપત્ય, પૌરપત્ય, સ્વામિત્વ, ભર્તૃત્વ, મહત્તરકત્વ તેમજ આરૂં મર સેનાપત્ય ધરાવતા તેની પાલના કરાવતા, અનેક પ્રકારના નાટ્યગીત વગેરે પ્રસંગા ઉપર વગાડવામાં આવેલા ભિન્ન-ભિન્ન પ્રકારના વાદિત્રાના તુમુલ સ્વરના શ્રવણ સાથે દિત્ય ભાગા ભાગવતા રહે છે. અને આ પ્રમાણે આનંદ પૂર્વક પોતાના સમય પસાર કરે છે. યાવત મન્દર પર્વતની દક્ષિણ દિશામાં અન્ય જં ખૂદીપમાં એ શખ્દાપાતિ વૃત્તવૈતાહય કુમારની શખ્દાપાતિની નામક રાજધાની છે. અહીં જે 'શખ્દાપાતી વૃત્તવૈતાહય કુમારની શખ્દાપાતિની નામક રાજધાની છે. અહીં જે 'શખ્દાપાતી વૃત્તવૈતાહય એવું કહેવામાં આવ્યું છે તો આ પર્વત ભરતાદિ ક્ષેત્રવર્તી વૈતાહય પર્વતની જેમ પૂર્વથી પશ્ચિમ સુધી આયત નથી પણ ગાળાકાર રૂપમાં છે. એજ વાતને પ્રકટ કરવા માટે 'વૃત્ત' એવું વિશેષણ પરક પદ પ્રયુક્ત કરવામાં આવેલ છે. એથી જ પૂર્વ હેમવત્ અને અપર હૈમવત્ એવા એ વિભાગો આ ક્ષેત્રના થઈ ગયા છે. અહીં આ જાતની શંકા ઉત્પન્ન થાય છે કે હૈમવત્ ફેત્રના વિસ્તાર ૨૧૦૫ વૃધ્ યોજન જેટલા કહેવામાં આવેલ છે અને આ શખ્દાપાતી વૃત્ત વૈતાહય પર્વત તેના મધ્યમાં આવેલ છે. તેમજ આને

पश्चिमकी ओर का तो रोहिता और रोहितांद्वा इन दो नदियों के बारा रूद हुआ है और वीचका जो विस्तार है वह इस पर्वत के द्वारा रुद्ध हुआ है इसलिये मदी रुद्ध क्षेत्र को छोडकर अतिरिक्त क्षेत्र को वह विधा विभक्त करता है ऐसा जानना चाहिये इसी तरहसे जितने भी वृत्तवैतादय पर्वत है उन सबके सम्बन्ध में भी जानलेना चाहिये लाट देशमें प्रसिद्ध धान्यरखनेका जो कोष्ठकनुमा-कोठी के जैसा-पात्र होता है उसका नाम पत्यंक है अच्छपदके द्वारा उपलक्षण रूप होने के कारण श्लक्ष्ण आदि पदोंका ग्रहण हुआ है पद्मवर वेदिका और वनष्डका वर्णन चतुर्थ पंचम सूत्रों से जानलेना चाहिचे इस पर्वत के नामका कथन जैसा ऋषभकूट के प्रकरणमें 'ऋषभकूट नाम होने में कहा गया है वैसा ही बह कथन 'ऋषभ कूट' इस शब्दापाती वृत्तवैतादय ऐसा जोडकर करछेना चाहिये वहां के कमलों की प्रभा ऋषभक्त्र के जैसी है तब कि यहां के कम-लादिकों की प्रभा शब्दापाती वृत्तवैताहय के जैसी है 'जाव-विलपंतिसु' में जो यह याचत् शब्द आयाहै उसीसे 'दीर्घिकासु' गुज्जालिकासु सरःपङ्क्तिकासु' 'सरः सरःपङ्क्तिकासु' इन पर्दों का अहण हुआ है इन पर्दों की व्याख्या राज-प्रश्नीय सूत्रके ६४ वे सूत्र की व्याख्या में दी गई है अतः वही से इसे जान-क्षेना चाहिये (महिद्धिए जाव महाणुभावें में जो यावत्यद आया है उससे

વિસ્તાર એક હજાર યોજન જેડલાે છે તાે પછી આ હૈમવત ક્ષેત્રનું હિધા વિભાજન કેવી રીતે સંભવી શકે તેમ છે?

ઉત્તર-પ્રસ્તુત ક્ષેત્રના વિસ્તાર પૂર્વ અને પશ્ચિમની તરફના તો રે હિના રાહિતાં શા એ ખ નદીઓ વડે રુદ્ધ થયેલા છે. અને મધ્યના જે વિસ્તાર છે તે આ પર્વત વડે રુદ્ધ થઈ ગયા છે. એથી નદી રુદ્ધ ક્ષેત્રને છે.ડીને અતિરફત ક્ષેત્રને એ દિધા વિભક્ત કરે છે. એવું બાલુવું બેઇએ. આ પ્રમાણે જેટલા વૈતાહય પર્વતા છે, તે સર્વના સંખંધમાં પણ બાલું બેઇએ. લાટ દેશમાં પ્રસિદ્ધ ધાન્ય ભરવા માટે જે કાબ્ઠકતુમાં—કાંકી જેવું પાત્ર હાય છે. તેનું નામ પલ્યંક છે. અચ્છ પદ વડે ઉપલક્ષણ રૂપ હાવા બદલ શક્ષ્ણ વગેરે પહેા શહ્યુ થયા છે. પદ્મવર વેદિકા અને વનખંડનું વર્ણન ચતુર્થ—પંચમ સ્ત્રામાંથી બાલી લેવું બેઇએ. એ પર્વતા નામનું કથન જેવું ઋષભ ફૂટ નામ કરણ સંખંધમાં કહેવામાં આવ્યું છે તેવું જ કથન 'ઋપભકૂટ' એ શબ્દને સ્થાને 'શબ્દાપાતી વૈતાહય' એવું બોડીને સમજ લેવું બોઈએ. ત્યાંના કમળાની પ્રભા ઋપલફૂટ જેની છે. જ્યારે અહીંના કમળાની પ્રભા શબ્દાપાતી વૃત્તવૈતાહય જેવી છે. 'जाब विलवंतियासુ' માં જે યાવત્ શબ્દ આવેલ છે. તેનાથી 'દીર્પિક્ષાપુ, શુક્તાિઉકાસુ, સરઃપંતિકાસુ સરઃ સરઃપંક્તિકાસુ' એ પદા શહ્યુ થયા છે. એ પદાની વ્યાખ્યા રાજપ્રશ્નીય સ્ત્રના દર્ષ સરાપંત્રિત્રાસુ' એ પદા શહ્યુ થયા છે. એ પદાની વ્યાખ્યા રાજપ્રશ્નીય સ્ત્રના દર્ષ મા સ્ત્રની વ્યાખ્યામાં કરવામાં આવેલી છે. માટે ત્યાંથી જ બાલી લેવું બેઇ એ. 'માદ્દ-મા સ્ત્રના શ્રે મા સ્ત્રની વ્યાખ્યામાં કરવામાં આવેલી છે. માટે ત્યાંથી જ બાલી લેવું બેઇ એ. 'માદ્દ-મા સ્ત્રના કર્યામાં સ્ત્રના કર્યાનો વ્યાખ્યામાં કરવામાં આવેલી છે. માટે ત્યાંથી જ બાલી લેવું બેઇ એ. 'માદ્દ

मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणेन तिर्यगतंष्ठयेयान द्वीपसमुद्रान् व्यतित्रज्य अन्यस्मिन् जम्बूद्वीचे द्वीपे दक्षिणेन द्वादश योजनसहस्राणि अवगाद्य, अत्र खल्ल शब्दापातिवृत्तवैतादचिगिरिकुमार-स्य शब्दापातिनी नाम राजधानी प्रज्ञप्ता, तस्या आयामादि मानादिकं विजयाराजधानीवत् अष्टमस्त्रतो बोध्यम् ॥ स्र॰ ९ ॥

अथ हैमवतवर्षस्य नामार्थे पृच्छति-'से केणहेणं' इत्यादि ।

मृलम्—से केणट्टेणं भंते! एवं बुचइ हेमवए वासे २१, गोयमा! चुछिहमवंतमहाहिमवंतेहिं वासहरपठवएहिं दुहओ समवयूढे णिच्चं हेमं दलइ, णिच्चं हेमं दलइत्ता णिच्चं हेमं पगासइ हेमवए य इत्थ देवे महिद्धिए जाव पिलओवमट्टिइए परिवसइ, से तेणट्टेणं गोयमा! एवं बुचइ हेमवए वासे हेमवए वासे ॥सू०१०॥

'महाद्युतिकः, महाबलः, महायशाः, महासौख्यः' इन पदोंका ग्रहण हुआ है इन पदों की व्याख्या अष्टम सूत्र में की गई है 'जाव रायहाणी' में जो यावत्पद आया है उसुसे चतरुणां अग्रमहिषीणां, तिस्रणां परिषदां, सप्तानामनीका नाम सप्तानामनीकाधिपतीनाम, षोडशानाम आत्मरक्षक देवसाहस्त्रीणां' इत्यादि पाठसे लेकर शब्दापातिनी नाम 'यहां तकका पाठ गृहीत हुआ है। शब्दापातिनीनाम की राजधानी मन्दर पर्वतकी दक्षिण दिशामें तिर्थग्लोकवर्ती असंख्यात हीप समुद्रोंको पारकरके अन्य जम्बूहीप नामके हीपमें दक्षिण दिशाकी और १२ हजार योजन आगे जाने पर आती है इस राजधानी के आयाम आदिका मानादिक 'विजयराजधानीके जैसा ही है यह बात अष्टम सूत्र से जाननी चाहिये॥ ९॥

द्धिए जाव महाणुभावे' मां के यावत् पढ आवेल छे. तेनाथी 'महाणुतिकः, महाबस्तः महायशाः, महासौख्यः आ पढ़े। अढ्णु थया छे. आ पढ़ेानी व्याच्या आडमां सूत्रमां हरेल छे 'जात रायशाणीं' मां के यावत् पढ आवेल छे तेनाथी 'चतस्त्रणां अप्रमहिषीणां, तिस्णां परिषदां, सन्तानामनी हानाम् सन्तनामनी हाविपकी नाम् षोडशानाम् आत्रक्षक देवसाह् सीणां' छत्याहि पाडथी मांडीने 'शब्दापातिनी नाम' अढीं सुधीने। पाड संगृहीत थये। छे. शण्डापातिनी नामह राजधानी मन्दर पर्वतनी दक्षिण् दिशामां तिर्यव्लेष्ठिवतीं असंच्यात दीय समुद्रोने यार हरीने अन्य कम्णूदीय नामह दीयमां दक्षिण् दिशा तरक् १२ ढलार येकिन आजणा ज्या पछी आवे छे. से शक्यानीने। आयाम वगेरे मानादिह 'विकथ शक्यानी' केथुंक छे. से वात अष्टम सूत्रमांथी काण्यी लेवी कोछंगे. ॥ सू. ६ ॥

छाया-केनार्थेन भदन्त! एवग्रुच्यते-हैमनतं वर्ष वर्षम् ?, गौतम ! श्रुद्रहिमनन्महाहिम-बद्भचां वर्षधरपर्वताभ्यां द्विधातः समवगादम् नित्यं हेम ददाति निर्त्यं हेम दस्वा नित्यं हेम प्रकाशयति, हैमनतोऽत्र देवो महद्धिको यावत् पत्योपमस्थितिकः परिवसति, तत् केनार्थेन गौतम! एवग्रुच्यते हैमनतं वर्षे हैमनतं वर्षम् ॥ स्र० १०॥

टीका-'से केणहेणं भंते' इत्यादि-अथ तदनन्तरम् केन अथेन कारणेन एवमुच्यते हैमवतं वर्ष वर्षमिति है, भगवानाह-हे गौतम! श्चुद्रहिमवन्महाहिमवद्भचां वर्षधरपर्वताभ्यां द्विधातः द्वयो देक्षिणोत्तरपार्श्वयोः समवगादं संश्चिष्टम् ततो हिमवतादिदं हैमवतं श्चद्रहिमवन्महाहिमवतोरन्तराल्लिथतं क्षेत्रम् ततश्च द्वाभ्यां ताभ्यां यथाक्रमं द्वयो देक्षिणोत्तरपार्श्वयोः कृतसीमाकमिति तदुभयसम्बन्धि तद्वर्षं निष्पद्यते, यद्वा-हैमवतं वर्षं नित्यं सततम् कालत्रये-ऽपि हेम सुवर्णं ददाति निवासिभ्य आसनार्थं समर्पयति तत्र युग्मि मनुष्याणासुपवेशनाद्यपः

'से केणहेणं भंते ! एवं बुच्चइ हेमवए वासे २'-इत्यादि

टीकार्थ-'से केणडेणं मंते! एवं बुच्चइ हेमवए वासे र' हे भदन्त! आपने यह हैमवत क्षेत्र है ऐसा नाम इसका किसकारण से कहा है उत्तर में प्रभु कहते हैं 'गोयमा! चुरुलिहमवंत महाहिमवंतेहिं वासहरपृञ्चएहिं दुहओं समवगृढे णिच्चं हेमं दलइ णिच्चं हेमं दलइत्ता णिच्चं हेमं पमासइ' हे गौतम! यह क्षेत्र क्षुद्रहिमवत्पर्वत और महाहिमवत् पर्वत उन दोनों वर्धधर पर्वतों के बीचमें है इसिलिये महाहिमवत्पर्वत की दक्षिणिदशामें और क्षुद्रहिमवत्पर्वत की उत्तर दिशा में होने के कारण उनका सम्बन्धी है ऐसे विचार से हैमवत इस प्रकार के सार्थक नामवाला कहा है तथा वहां के जो युगल मनुष्य हैं वे बैठने आदि के निमित्त हेममय शिलापट्टकों का उपयोग करते हैं इस कारण यह क्षेत्र ही उन्हें इन्हें देता है इस अभिप्राय से 'णिच्चं हेमं दह है' ऐसा यहां उप-

'से केणट्टेणं भंते ! एवं बुचचइ हेमवए वासे-२ इत्यादि

टीकार्थ-'से केणहेणं भंते! एवं वुच्चइ हेमवए वासे-२' है लहंत! आपश्रीओ 'आ है भवत क्षेत्र छे. छेवुं नाम शा कारख्यी कहुं छे-'गोदमा! चुल्छिहमवंतमहाहिमवंतिहिं वासहरपच्चएिं दुहओ समवगृढे णिच्चं हेमं दछइ णिच्च हेमं दछइता णिच्चं हेमं पगासइ, है गौतम! आ क्षेत्र क्षुद्रिभवत् पर्वत अने महाहिभवत् पर्वत ओ अन्ने वर्षधर पर्वताना मध्यकागमां छे. ओथी महाहिभवत् पर्वतनी हिल्ल हिशामां अने क्षुद्रिभवत् पर्वतनी हत्तर हिशामां होवा अदल आ क्षेत्र तेमना वर्ड सीमा निर्धारित हेावाथी तेनी साथ संअध धरावे छे. ओवा विचारथी हैमवत् आ प्रकारना सार्थं क नामवाणा कहेवामां आवेल छे. तेमक त्यांना के युगल मलुक्ये। छे तेओ असवा वगेरे माटे हेममय शिला पहरें।ने। हपये। करे छे, ओथी 'आ क्षेत्र क तेमने ओ आपे छे' ओ अलिप्रायधी 'णिच्चं बेमं दछइ' खेवुं अहीं हप्यारथी कहेवामां आवेल छे तेमक युगल मनुक्ये।ने

मोगे हेममयी शिला उपस्थापयतीति उपचारेण ददातीत्युक्तम्, तथा-नित्यं हेम दस्वा नित्यं कालत्रयेऽपि हेम प्रकाशयति प्रकटयति ततो हेमनित्य योगिप्रशस्तं वाऽस्त्यस्येति हेम- वत हेमबदेव हैमवतम् प्रज्ञादित्वात स्वार्थेऽण् प्रत्ययोऽण् बोध्यः, अत्र-अस्मिन् हैमबते वर्षे हैमवतो नाम देवःपरिवसति, स कीद्दशः ? इत्यादि, महर्द्धिको यावत् पल्योपमस्थितिकः, अत्र यावत्पदेन संग्राह्यानां पदानां सङ्ग्रहोऽर्थश्चाष्टमस्त्राद् बोध्यः, तेन हैमवतदेव युक्तत्वाद् वर्षमिदं हैमवतिमिति व्यवह्रियते, यद्वा-स्वामित्वेन हैमवतोऽस्यास्तीति हैमवतिमिति अर्थ आदित्वादच्य्रत्ययान्तं बोध्यम् इति तत् हैमवतं तेन अनन्तरोवतेन अर्थेन कारणेन हे गौतम! एवसुच्यते हैंनवतं वर्षे हैमवतं वर्षमिति ॥ स्० १०॥

अथास्यैवोत्तरतः सीमाकारिणं वर्षधरभूधरं प्रदर्शयितुमाह-'कहिणं अंते' इत्यादि।

मूलम्-कि णं अंते ! जंबुद्दीवे दीवे महाहिमवंते णाअं वासहर
पव्वए पण्णते ?, गोयमा ! हरिवासस्स दाहिणेणं हेमवयस्स वासस्स
उत्तरेणं पुरिधम लवणसमुद्दस्स पच्चित्थमेणं पच्चित्थमलवणसमुद्दस्स
पुरिधमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाहिमवंते णामं वासहरपव्वए
पण्णते, पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छण्णे पलियंकसंठाणसंठिए
दुहा लवणसमुद्दं पुट्टे पुरिधमिछाए कोडीए जाव पुट्टे पच्चित्थिमिल्लाए

चार से कहिंदेंग है तथा युगल मनुष्यों को सुवर्ण देकर के वह उसी सुवर्ण का प्रकाश करता है सुवर्ण शिला पहकादि रूपमें प्रदर्शन करता है-अर्थात् प्रवास्त सुवर्ण-इसके पास है-ऐसा ही मानो अपना प्रवास्त वैभव यह इस रूप से प्रकट करता है परिस्थितियों से भी इसका नाम हैमवत् ऐसा कहा गया है तथा 'हेमवए अ इत्थ देवे महिद्धीए पलिओवमहिइए परिवसइ से तेणहेणं गोयमा! एवं बुच्चइ हेमवए वासे-हेमवएवासे' हैमवत् नाम का देव इसमें रहता है यह हैमवत् देव महिद्धिक देव है और पल्योपम की इसकी स्थिति है इस कारण से भी हे गौतम! इसका नाम हैमवत् ऐसा कह दिया गया है ॥ १०॥

सुवर्ण आधीन ते तेल सुवर्णना प्रकाश करे छे, सुवर्ण शिक्षापट्टकाहि इपमां प्रदर्शन करे छे अर्थात् प्रशस्त सुवर्ण अनी पासे छे, के अलिप्रायथी लाले के के पाताना प्रशस्त वैलव के इपमां प्रकट न करते। होय. आम परिस्थितिकोने अनुक्क्षाने पान अनुं नाम 'हैमवए अ इत्य देवे महिद्वीए पिल्जोवमिट्टइए परिवसइ से तेणहेणं गोयमा! एवं वृच्चइ हेमवए वासे हेमवए वासे' हैमवत नामक हैव केमां रहे छे-के हैमवत हैव महिद्वीए केटेबी केनी स्थिति छे. आ कारख्यी पान है जौतम! केनं नाम 'हैमवत' केवं केटिबी केनी स्थिति छे. आ कारख्यी पान है जौतम! केनं नाम 'हैमवत' केवं केटिबामां आवेब छे, ॥ स्था १०॥

कोडीए पचरिथमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्टें दो जोयणसयाई उद्धं उच्चत्तणं पण्णासं जोयणाइं उठ्वेहेणं चत्तारि जोयणसहस्साइं दोण्णि य दसुत्तरे जोयणसए दस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स विवर्खंभेणं, तस्स बाहा पुरितथमपञ्चितथमेणं णव जोयणसहस्साइं दोणिण य छावत्तरे जोयणसए णव य एगूणवीसईभाए जोयणस्स अद्धभागं च आयामेणं, तस्स जीवा उत्तरेणं पाईणपडीणायया दुहा छवणसमुद्दं पुट्टा पुरिथमिल्लाए कोडीए पुरिथमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्टा पचित्थिमिल्लाएँ जाव पुट्टा तेनण्णं जोयण-सहस्साइं णव य एगतीसे जोयणसए छच एगूणवीसइभाए जोयणस्स किंचि विसेसाहिए आयामेणं, तस्स धणुं दाहिणेणं सत्तावण्णं जोयण-सहस्ताई दोष्णि य तेणउए जोयणसए दस य एगूणवींसइभाए जोय-णस्स परिक्खेवेणं, रुयगसंठाणसंठिए सब्वरयणामए अच्छे उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहिं य वणसंडेहिं संपरिविखत्ते । महाहिभवंत-स्स णं वासहरपटवयस्स उप्पि बहुसमरमणिज्जे सूमिभागे पण्णत्ते, जाव णाणाविह पंचवपणेहिं मणीहि य तणेहि य उवसोहिए जाव आस-यंति सयंति य ।।सू० ११॥

छाया-क्य खलु भदन्त ! जम्बूढोपे द्वीपे महाहिमवान नाम वर्षधरपर्वतः प्रज्ञप्तः ?,
गौतम ! हरिवर्षस्य दक्षिणेन हैमवतस्य वर्षस्य उत्तरेण पौरस्त्यलवणसमुद्रस्य पश्चिमेन,
पश्चिमल्लवणसमुद्रस्य पौरस्त्येन, अत्र खलु जम्बूढीपे द्वीपे महाहिमवान नाम वर्षधरपर्वतः
प्रज्ञप्तः, प्राचीन प्रतीचीनाऽऽयतः उदीचीन दक्षिणविस्तीर्णः पल्यङ्कसंस्थानसंस्थितः द्विधालवणसमुद्रं स्पृष्टः पौरस्त्यया कोट्या यावत् स्पृष्टः पाश्चात्यया कोट्या पाश्चात्वं लवणसमुद्रं
स्पृष्टः द्वे योजनशते अर्ध्वमुच्चत्वेन पश्चाशतं योजनानि उद्वेचेन, चत्वारि योजनसहस्राणि
द्वे च दशोत्तरे योजनशते दश च एकोनविंशतिभागान् योजनस्य विष्कम्भेण, तस्य बाहा
पौरस्त्यपश्चिमेन नव योजनसहस्राणि द्वे च द्वा सप्तते योजनशते नव च एकोनविंशतिभागान्
योजनस्य अर्द्धभागं च आयामेन, तस्य जीवा उत्तरेण प्राचीनप्रतीचीनाऽऽयता द्विधा
लवणसमुद्रं स्पृष्टा पौरस्त्यया कोट्या पौरस्त्यं लवणसमुद्रं स्पृष्टा पाश्चात्यया यावत् स्पृष्टा
चिपञ्चाश्चतं योजनसहस्राणि नव च एकजिंशानि योजनशतानि षट् च एकोनविंशतिभागान्
योजनस्य किश्चिद्विशेपाधिकान् अध्यामेन, तस्य धनुःदक्षिणेन सप्तपञ्चाशतं योजनसहस्राणि

द्वे च त्रिनवते योजनशते दश च एकोनविश्वितभागान् योजनस्य परिक्षेपेण, रुचकसंस्थान संस्थितः सर्वरत्नमयः अच्छः उभयोः पार्श्वयोः द्वाभ्यां पद्मवरवेदिकाभ्यां द्वाभ्यां च वनष-ण्डाभ्यां संपरिक्षिप्तः, महाहिमवतः खल्ल वर्षधरपर्वतस्य उपरि बहुसमरमणीयो मूमिभागः प्रज्ञप्तः, यावत् नानाविधपश्चवर्णैः मणिभिश्व तृणैश्च उपशोभितः यावद् आसते शेरते च ॥११॥

टीका—'किह णं मंते' इत्यदि! 'किह णं मंते! जंबुद्दीवे दीवे महाहिमवंते णामं वासहरपव्यष् पण्णते' कुत्र खल भदन्त! जम्बुद्वीपे द्वीपे महाहिमवान नाम वर्षथरपर्वतः प्रज्ञप्तः! 'गोयमा!' हे गौतम! 'हरिवासस्स दाहिणेणं हेमवयस्स वासस्स उत्तरेणं पुरित्थमलवण सबुद्दस पच्चित्थमेणं पच्चित्थमलवणसमुद्दस्स पुरित्थमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाहिमवंते णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते' हरिवर्षस्य दक्षिणेन हैमवतस्य वर्षस्य उत्तरेण पौरस्त्यलवणसमुद्रस्य पश्चिमेन, पश्चिमलवणसमुद्रस्य पौरस्त्येन, अत्र खल जम्बुद्वीपे द्वीपे महाहिमवान्
नाम वर्षधरपर्वतः प्रज्ञप्तः। 'पाईणपडीणायए उदीण दाहिणविच्लिणे पलियंकसंठाण

'कहि णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे महाहिमवंतं णामं'-इत्यादि

टीकार्थ-इस सूत्र द्वारा गौतम ने प्रमु से ऐसा पूछा है-'कहि णं भंते! जंबुदीवे दीवे महाहिमवंते णामं वासहरपव्वए' हे भदन्त! इस जम्बू-द्वीप नाम के द्वीप में महाहिमवन् नामका वर्षधर पर्वत कहां पर कहा गया है? इसके उत्तर में प्रमुश्री कहते है-'गोयमा! हरिवासस्स दाहिणेणं हेमवयस्स वासस्स उत्तरेणं पुरिथम लवणसमुद्दस्स पच्चित्थमेणं पच्चित्थम लवणसमुद्दस्स पुरिथमेणं जम्बुदीवे दीवे महाहिमवंतं णामं वासहरपव्वप पण्णत्ते' हे गोतम! हरिवर्ष की दक्षिण दिशा में और हैमवत् क्षेत्र की उत्तर दिशा में तथा पूर्व दिग्वर्ती लवणसमुद्रकी पश्चिम दिशा में और पश्चिम दिशा में और पश्चिम दिशा में तथा पूर्व दिग्वर्ती लवणसमुद्रकी पश्चिम दिशा में और पश्चिम दिशा में और पश्चिम दिशा में स्वाप्त के मीतर महाहिमवन्त नामका महान सुंदर वर्षधर पर्वत कहा गया है 'पाईण पडी-

^{&#}x27;कहि जं भैते ! जंबुदीवे दीवे महाहिवंत णामं-इत्यादि-

टीआई—आ सूत्रवर्ड गीतमे प्रभुने केवी रीते प्रश्न हथे छे हैं 'कहि णं मंते! जंबुहीवे दीवे महाहिमवंते णामं वासाहरपव्वए' है लहन्त! के जम्मूहीय नामह दीपमां
महाहिमवंते णामं वासाहरपव्वए' है लहन्त! के जम्मूहीय नामह दीपमां
महाहिमवंते णामं वासाहरपव्यएं आवेद छे ? केना जवाममां प्रभु हहें छे
'गीयमा! हरिवासस्स दाहिणेंण हेमवयस्स वासस्स उत्तरेंण पुरिव्यमल्जणसमुहस्स पच्चित्यः
मेणं पच्चित्यस्य पुरिव्यमेणं एत्थणं जम्बुहीवे दीवे महाहिमवंतं णामं वासहरपव्यए पण्णत्ते' है गीतम! हरिवर्षनी हिक्षणु हिशामां अने हैमवत् क्षेत्रनी उत्तर हिशामां
तेमज पूर्व हिश्वती क्षवण्च समुद्रनी पश्चिम हिशामां अने पश्चिम हिश्वती क्षवणु समुद्रनी पृद्रीम हिशामां अने पश्चिम हिश्वती क्षवणु समुद्रनी पृद्रीम महाहिणवित्यन्ते'
छे. 'पाईणपढीणायए' के पर्वत पूर्वथी पश्चिम सुधी क्षांका छे. 'उदीण दाहिणवित्थन्ने'

संठिए दुहा स्वणसमुदं पुढे पुरिथिमिन्साए कोडीए जाब पुढे पच्चित्थिमिन्साए कोडीए पच्चित्थिमिल्लं लवणसमुदं पुढें' पाचीनप्रतीचीनाऽऽयतः, उदीचीन दक्षिणविस्तीर्णः पल्यङ्क संस्थानसंस्थितो द्विषा स्वणसम्रद्धं स्पृष्टः, पौरस्त्यया कोटचा यावत् स्पृष्टः पाश्चात्यया कोटचा पाश्चात्यं लवणसमुद्रं स्पृष्टः, 'दो जोयण समाइं उद्धं उच्चतेणं पण्णासं जोयणाई उव्वेहेणं चत्तारि जीयणसहस्साई दोण्णि य दसुत्तरे जोयणसए दस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स विक्खंभेणं' नवरं द्वे योजनशते अर्ध्वग्रच्चत्वेन पूर्वोक्त शुद्रहिमवद्वर्षपराद् द्विगुणो-चवत्वात् , पश्चाशद् योजनानि उद्वेधेन भूगतत्वेन, मेरुवर्जसमयक्षेत्रगिरिणां स्वोच्चत्वचतु-थींशेनोद्वेषत्वात्, चत्वारि योजनसहस्राणि द्वेच दशोत्तरे दशाविके योजनशते दश च योजनैकोनविश्वतिभागान विष्करभेण-विस्तारेण, हैमवतक्षेत्राद् द्विगुणश्वात् , प्रथास्य बाहादि-स्त्रमाह-'तस्स बाहे' त्यादि, 'तस्त बाहा पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं णव जोयणसहस्साइं दोष्णि णायए' यह पर्वत पूर्व से पश्चिम तक लम्बा है 'उदीण दाहिणवित्थिने' उत्तर से दक्षिण तक विस्तृत है। (पिलयंकसंठाणसंडिए) परयङ्क जैसा आकार होता है ठीक इस का भी वैसा ही आकार है 'दुहा लवणसमुदं पुट्टे पुरित्थिमिल्लाए कोडीए जाव पुढ्ढे पच्चित्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिरुलं लवणसमुदं पुढे दो कोयणसयाई उद्धं उरूक्तेण पण्णासं जोयणाई उन्वेहेणं चत्तारि जोयणसहस्खाई दोण्णिय दश्चत्तरे जोयणसए दस य एग्णवीसह आए जोयगस्स विङ्खंभेणं' यह अपनी पूर्व और पश्चिम दिग्वर्ती दोनों कोटियों से कमशः पूर्व दिग्वर्ती लवण समुद्र को और पश्चिम दिग्वर्ती लवण को स्पर्श कर रहां है इस की अंचाई दो सौ घोजन की

तेमल (क्तरथी हिल्ला सुर्धी विस्तृत के. 'विल्लंकसंठाणसंठिए' पर्य हेने। केवे। आहार हिथ के, हीह आने। आहार पण तेवे। क के. 'वृहा लवणसमुदं पुट्टे पुरिधमिल्लाए कोडीए जाव पुट्टे प्रचिमिल्लाए कोडीए पिट्चियमिल्लं लवणसमुदं पुट्टे दो ओयणस्यादं उद्धं उच्चतेणं पण्णासं जोयणादं उव्वेहेणं चतारि जोयणसहस्सादं दोण्णिय दसुत्तरे जोयणसए दस्य एगूणवीसहभाए जोयणस्स विक्लंभेणं' के पातानी पूर्व अने पश्चिम हिञ्बती अन्ते हारीकाशी हमशा पूर्व हिञ्बती अवश्च समुद्रने स्पर्शी रहारे के. केनी अवश्च असे येशकन केटली के. तेमल केनी अंडाई (इदेध) प० येशकन केटली के. हमहे समय क्षत्रगत पर्वतानी अंडाई मिरुने केडीने पे.तानी अंथाईना व्युधिश (यतुर्ध अ.) प्रमाण है।य के. आने। विष्ठं अ ४२१० हैं थेशकन केटले। के. हमहे हैमवत क्षेत्रनी अपेक्षाके द्विशृक्षित के.

है तथा इसका उद्घेष गहराई ५० घोजनकी है क्योंकि समय क्षेत्र गत पर्वतों फा उद्घेष मेरु को छोडकर अपनी उंचाइ के चतुर्था दा 'चौथा भाग' प्रमाण होता है इसका विष्कंभ्भ ४२१० के योजन का है। क्योंकि हैमवत क्षेत्रकी अपेक्षा यह दूना है 'तस्स वाहा पुरस्थिमपच्चित्थिमेणं णव जोघणसहस्साई दोण्णि य य छावत्तरे जोयणसए णव य एग्णवीसइमाए जोयणस्स अद्ध भागं च आयामेणं' तस्य बाहा पौरस्त्यपिश्चिमेन-पूर्वपिश्चमिदिश नवयोजनसहस्राणि, नवरं हे च हासप्तते हिससत्यिधिक योजनशते नव चैकोनविंशतिभागान योजनस्य, अर्द्धभागं चायामेन, तस्स जीवा उत्तरेणं पाईणपडीणायया दुहा लवणसमुदं पुट्ठा पुरित्थिमिल्लाए कोडीए पुरित्थिमिल्लं लवणसमुदं पुट्ठा पच्चित्थिमिल्लाए जाव पुट्ठा तेवण्णं जोयणसहस्साइं नव य एगतीसे जोयणसए छच्च एग्-णवीसइभाए जोयणस्स किंचि विसेसाहिए आयामेणं' तस्य जीवा उत्तरस्यां दिशि प्राचीन प्रतीचीनायता-पूर्वपिश्चमयो दीर्घा हिथालवणसमुदं स्पृष्टा, पौरस्त्यया कोटचा पश्चिमं लवणसमुदं स्पृष्टा त्रिपश्चाशतं योजनसहस्राणि नवचैकत्रिंशानि एकिश्वरयधिकानि योजनशतानि, पट्चैकोनविंशतिभागान् योजनस्य किश्चिद् विशेषाधिकान् अध्यामेन, 'तस्स धणुं दाहिणेणं सत्तावणां जोयणसह स्साइं दोण्णि य तेणउए जोयणसए दस य एग्णवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं' तस्य धनुःदक्षिणेन समुपञ्चाशतं योजनसहस्राणि हे च त्रिनवते त्रिनवत्यिके योजनशते दश च एकोनविंशतिभागान् योजनस्य परिक्षेपेण, 'स्थगसंठाणसंठिए सन्वरयधिके योजनशते दश च एकोनविंशतिभागान् योजनस्य परिक्षेपेण, 'स्थगसंठाणसंठिए सन्वर्यधाने योजनशते दश च एकोनविंशतिभागान् योजनस्य परिक्षेपेण, 'स्थगसंठाणसंठि सन्वरयणामए अच्छे उभ्रओ

छावसरे जोवणसए णव य एग्णदोसइभाए जोवणस्स अद्ध भागं च आया-मेणं' इस की वाहा आयाम की अपेक्षा पूर्व पश्चिम में ९२७२ के योजन की एवं आधे योजन की है (तस्स जीवा उसरेणं पाईणपडीणायया दुहा लवणसमुदं पुद्धा पुरित्थिमिल्लाए, कोडीए पुरित्थिमिल्लं लवणसमुदं पुद्धा पच्चित्थिमिल्लाए जाव पुद्धा तेवण्णं जोवणसहस्साई नव य एगतीसे जोअणसए छच्च एग्ण-वीसइभाए जोवणस्स किंचि विसेखाहिए) पूर्व दिशा में वह जीवा पूर्व दिग्वर्ती लवण समुद्र से स्पृष्ट है और पश्चिम दिग्वर्ती वह जीवा पश्चिम दिग्वर्ती लवण समुद्र से स्पृष्ट है और पश्चिम दिग्वर्ती वह जीवा पश्चिम दिग्वर्ती लवण समुद्र से स्पृष्ट है यह जीवा आयाम की अपेक्षा कुछ अधिक ५३९३१ के योजन की है 'तस्स धणुं दाहिणेणं सत्तावण्णं जोवणसहस्साइं दोण्णि य तेणस्य जोवण सए दसय एग्णवीसह भाए जोवणस्स परिवस्त्रेवेणं स्वगासंटाणसंटिए

'तस्स वाहा पुरित्थमपच्चित्यमेणं णव जोयणसहस्साइं दोण्णिय छावत्तरे जोयणसए णव य एगूणवीसइमाए जोयणस्स अद्धमागं च आयामेणं' એनी वाहा आयामनी अपेक्षाओ पूर्व पाश्चिममां ६२७२ वृष्ट थे। अने तेमक अर्घा थे। अने केटली छे. 'तस्स जीवा उत्तरेणं पाईण पडीणायया दुहा छन्णसमुदं पुट्टा पुरित्यमिस्छाए, कोडीए पुरित्यमिस्छं छवणसमुदं पुट्टा पच्चित्रिस्छाए, कोडीए पुरित्यमिस्छं छवणसमुदं पुट्टा पच्चित्रिस्छाए जाव पुट्टा तेवण्णं जोयणसहस्साइं नव य एगतीसे जोयणसए छच्च एगूणबीनसइमाए जोयणस्स विचा विसेसाहिए आयामेणं' એनी छवा कत्तरभां पूर्वथी पश्चिम सुधी लांभी छे. पूर्व दिशामां ते छवा पूर्व दिश्वती अवधा समुद्रने स्पर्शा रही छे. तथा पश्चिम दिश्वती ते छवा पश्चिम दिश्वती अवधा समुद्रने स्पर्शा रही छे. के छवा भश्चिम दिश्वती ते छवा पश्चिम दिश्वती अवधा समुद्रने स्पर्शा रही छे. के छवा भायामनी अपेक्षाओ ४ छेड वधारे पडला १ वृष्टि थे। अने केटली छे. 'तस्स धणुं दाहिणेणं

पासि दोहि पउमवरवेइयाहि दोहि य वणसंडेहि संपरिक्खिते' रुचकसंस्थानसंस्थितः सर्व-रत्नमवोऽच्छः, उभयोः पार्श्वयोः द्वाभ्यां पद्मवरवेदिकाभ्यां द्वाभ्यां च वनवण्डाभ्यां संपरि-क्षिप्तः—'महाहिमवंदस्य णं वासहरपव्ययस्स उप्पि बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते' महाहिम वतः खळ वर्षधरपर्वतस्योपिर बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञसः, भूमिभागवर्णनं पष्ठस्त्रतो बोध्यम्, 'जाव णाणाविह पंचवण्णेहिं मणीहि य तणेहि य उत्रसोभिए जाव आसयंति सयंति य' यावत् नानाविधपश्चवणैः मणिभिश्च तृणैश्चोपशोभितो यावदासते शेरते च, तथा यावद् आसत इत्यत्रत्य यावत्पदेन सङ्ग्राह्याणां पदानां स सङ्ग्रहोऽर्थः पष्ठस्त्रत्रादेव ह्रेयः ।।स. ११॥

सन्वरयणामण अच्छे उभओ पासि दोंहिं पडमवरवेइयाहिं दोहिय वणसंडेहि संपरिक्खिते' इसका धनुः एष्ठ दक्षिण दिशा में परिक्षेप की अपेक्षा ५७२९३ विज्ञान प्रमाण है रुचक का जैसा संस्थान आकार होता है वैसा ही इसका आकार है यह सर्वात्मना रत्नमय है आकाश और रफटिक के जैसा यह निर्मल है इसको दोनों ओर दो दो पदाचरवेदिकाएं है और दो दो वनषण्ड है 'महाहिमवंतस्स णं वासहरपव्वयस्स उप्पि बहुसमरमणिष्ठे भूमिभागे पण्णत्ते' महाहिमवान वर्षधर पर्वत के उपर का जो भूमिभाग है वह बहुसमरमणीय है 'जाव णाणाविह पंचवण्णेहिं मणीहिं य तणेहिं य उवसोभिए जाव आसयंति सयंति य' यावत् यह अनेक प्रकार के पंचवण्याले मणियों से और तणों से उपशोक्ति है यावत् यहां अनेक देव और देवियां उठती बैठती रहती है और शयन करती रहती हैं। यहां पदावर वेदिका और वनषंड का वर्णन पंचम सूत्र से जान छेना चाहिये भूमिभाग का वर्णन छठे सूत्र से और पावत्पद संगृहीत पदों का ग्रहण छठे सूत्र से जाननाचाहिये॥ सू० ११॥

सत्तावण्णं जीयणसहस्साई दोण्णिय तेणउए जीयणसए दसय एगूणवीसइभाए जीयणस्स परिक्वेवेणं रुयगसंठाणसंठिए सव्वरयणामए अच्छे उभओ पासि दोहिं पउमवरवेइयाहिं य
दोहिय वणसंडेहि संपरिक्खिते' એन धतुः पृष्ठ दक्षिणु दिशामां पिरक्षेपनी अपेक्षाओ
पण्ठर-उ हुँ योजन प्रमाण् छे. उथ्यक्ष्मी केनुं संस्थान-आक्षर हाथ छे तेवाक आक्षार
क्रिमा छे. के सर्वातमना रत्नभय छे. आक्षाश अने स्कृटिक्ष्वत् के निर्माण छे. केनी जन्मे
तर्द्र पद्मवर वेदिक्षाओ छे अने जण्णे वनणंडा छे. 'महाहिमवंतस्स णं वासहरपव्ययस्स उपि
बहुसमरमणिच्चे मूमिमागे पण्णते' महाहिभवान वर्षधर पर्वतना हपरने। के लूभिलाण
छे ते अहुसभरमण्डीय छे. 'जाव णाणाविहपंचवण्णेहिं मणिहिं य तणेहिं य उवसोभिए
जाव आसयंति सर्यति य' यावत् के अनेक प्रकारना पांच वर्षावाणा मिण्डिकेश्वी अने
तृष्टेशी हपशालित छे. यावत् अहीं अनेक हेव अने हेवीकेश हडती लेप्रती रहे छे अने
शयन करती रहे छे. पद्मवर वेदिक्षा अने वनए।'उनुं वर्षान पंचम सूत्रभांथी कर्षां केनुं
क्रिकेश. लूभिलावनुं वर्षान छट्टा सूत्र क्षारा अने यावत् पद संग्रहीत पहेतुं अहण् छक्षा
सूत्रभांथी कर्षां हेवुं लेर्ड के. ॥ ११॥

अथात्र हदस्वरूपं दर्शयितुमाह-'महाहिमवंतस्स' इत्यादि ।

म्लम्-महाहिमवंतस्स णं बहुमङझदेसभाए एत्थ णं एगे महापउ-मद्दहे णामं दहे पण्णत्ते, दो जोयणसहस्साइं आयामेणं एगं जोयण-सहस्तं विक्खंभेणं दस जोयणाइं उच्वेहेणं अच्छे रयणामयकूले एवं आयामविक्खंभविहूणा जा चेव पउमदहस्स वत्तव्वया सा चेव णेयव्वा, पउमप्पमाणं दो जोयणाइं अट्टो जाव महापउमहहवण्णाभाइं हिरी य इत्थ देवी जाव पिलओवमिट्टिइया परिवसइ, से एएणट्रेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ, अदुत्तरं च णं गोयमा! महापउमइहस्स सासए णामधिज्जे पण्णते जं ण कयाइ णासी ३, तस्स णं महापउमद्दहस्स द्क्लिणि छेणं तोरणेणं रोहिया महाणई पवूढा समाणी सोलस पंचुत्तरे जोयणसए पंच य एगूणवीसइभाए जोयणस्स दाहिणाभिमुही पटवएणं गंता महया घडमुहपवित्तिएणं मुत्ताविलहारसंठिएणं साइरेग दो जोयणसइएणं पवाएणं प्रवडइ, रोहियाणं महाणई जओ पवडइ एत्थ णं महं एगा जिब्भिया पण्णता, सा णं जिब्भिया जोयणं आयामेणं अद्धतेरसजोयः णाइं विक्खंभेणं कोसं बाहल्लेणं मगरमुहविउद्वसंठाणसंठिया सद्ववइः रामई अच्छा, रोहिया णं महाणई जिहें पवडड़ एत्थ णं महं एगे रोहिय-प्यवायकुंडे णामं कुंडे पण्णते, सवीसं जोयणसयं आयामविवखंभेणं पण्णत्तं तिणिण असीए जोयणसए किंचि विसेसूणं परिक्खेवेणं दस जोयणाइं उब्वेहेणं अच्छे सण्हे सो चेव वण्णओ, वइरतले वट्टे सम-तीरे जाव तोरणा, तस्स णं रोहियप्पवायकुंडस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे रोहियदीवे णामं दीवे पण्णत्ते, सोलस जोयणाइं आयाम-विवलंभेणं साइरेगाइं पण्णासं जोयणाई परिश्ववेवेणं दो कोसे ऊसिए जलंताओ सब्बवइरामए अच्छे, से णं एगाए प्रमव्यवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सब्वओ समंता संपरिक्खित, रोहियदीवस्स णं दीवस्स उदिंप बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णते, तस्स णं बहुसमरमणिकस्स भूमि- भागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे भवणे पण्णत्ते, कोसं आयामें थे सं तं चेव पन्नाणं च अट्टो य भाणियव्वो । तस्त णं रोहिः यप्पवायकुंडस्स दक्खिणिल्छेणं तोरणेणं रोहिया महाणई पवुढा समाणी हेमवयं वासं एउजेमाणी एउजेमाणी सद्दावइं वहबेयद्धपदवयं अद्धजोय-णेणं असंवता पुरस्थाभिमुही आवत्ता समाणी हेमवयं वासं दुहा विभय-माणी विभयमाणी अट्टावीसाए सिळलासहस्सेहिं समग्गा अहे जगईं दालइत्ता पुरित्थमेणं लक्णसमुदं समप्पेइ, रोहिया णं जहा रोहिअंसा तहा पवाहे य मुहे य भाणियव्वा इति जाव संपरिक्खिता। तस्स णं महापउमदहस्स उत्तरिव्लेणं तोरणेणं हरिकंता महाणई व्वृहा समाणी वंचुतरे जोयणसए पंच एगूगवीसइभाए जोयगस्स उत्तराभिमुही पव्व-एगं गंता महया घडमुहपवतिएणं मुत्ताविहारसंठिएणं साइरेग दुजोयणसंष्णं पवाएंगं पवडइ, हरिकंता महाणई जओ पवडइ एत्थ णं महं एगा जिब्भिया पण्णत्ता, दो जोयणाइं आयामेणं पणवीसं जोय-णाइं विक्लंभेणं अद्धं जोयणं बाहल्लेणं मगरमुहविउद्ग्लंठाणसंठिया सद्यरयणामई अच्छा, हरिकंता णं महाणई जहिं पवडइ एस्थ णं महं एगे हरिकंतप्यवायकुंडे णामं कुंडे पण्णते, दोिण य चत्राले जोगणसए आयामविक्लंभेणं सत्त य उण्डे जोयणसए परिक्लेवेणं अच्छे एवं कुंड वत्तद्वया सद्वा णेयद्वा जाव तोरणा, तरुस णं हरिकंतप्पवायकुंडस्स बहुमज्झदेसभाए एरथ णं महं एगे हरिकंतदीवे णामं दीवे पण्णते, बत्तीसं जोयणाइं आयामविक्खंभेणं एगुत्तरं जोयणसयं परिक्लेवेणं दो कोसे ऊसिए जरंताओ सन्वरयणामए अच्छे, से णं एगाए पउमबर-वेइयाए एगेण य वणसंडेणं जाव संपरिकिखत्ते, वण्णओ भाणियव्योत्ति, पमाणं च सयणिउतं च अट्ठो य भाणियदत्रो, तस्स णं हरिकंतप्पवायकुंड़-स्त उत्तरिल्लेणं तोरणेणं जाव पवूढा समाणी हरिवस्तं वासं एउजेमाणी एउजेमाणी वियडावई वट्टवेय इं जोयणेणं असंपत्ता पचत्थाभिमुही आवत्ता

समागी हरिवास दुहा विभयमाणी विभयमाणी छप्पणणाए सिलला-सहरसेहिं समग्गा अहे जगई दलइत्ता पचित्थमेणं लवणसमुद्दं समप्पेइ, हरिकंताणं महाणई पवहे पणवीसं जोयणाई विवलंभेणं अद्धजोयणं उट्वेहेणं तयणंतरं च णं मायाए मायाए परिवद्धमाणी २ मुहमूले अद्धा इजाई जोयणसयाई विवलंभेणं पंच जोयणाई उट्वेहेणं, उभओ पासं दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहिं य वणसंडेहिं संपरिक्लिता ॥सु० १२॥

छाया-महाहिमवतः खळु बहुमध्यदेशभागः अत्र खळु एको महापद्महूदो नाम हूदः प्रज्ञप्तः, हे योजनसहस्रे आयामेन, एकं योजनसहस्रं विष्कम्भेण, दस योजनानि उद्वेधेन अच्छः र नतमयक्लः, एवमायामविष्कम्भविधूना (विहीना) यैव एद्महृदस्य वक्तव्यता सैव नेतव्या, पद्मप्रमाणं द्वे योजने, अथौँ यावत् महापद्महूदवर्णाभानि, हूरिश्चात्र देवी यावत् पत्योपमस्थितिका परिवसति, स एतेनार्थेन गौतम! एवग्रुच्यते, अथ च खल्ल गौतम! महापद्मइदस्य शाश्वतं नामघेयं प्रज्ञप्तम् यन्न कदाचिन्नासीत् ३, तस्य खळु महापद्महृद्स्य दाक्षिणात्येन तोरणेन रोहिता महानदी प्रव्यृहा सती षोडश पञ्चोत्तराणि योजनशतानि पञ्च च एकोनविंशतिभागान् योजनस्य दक्षिणाभिमुखी पर्वतेन गत्वा महता घटमुखप्रवृत्तकेन मुक्ताविहारसंस्थितेन सातिरेक द्वि योजनशतिकेन प्रपातेन प्रपत्ति, रोहिता खल महानदी यतः प्रपतित अत्र खिल महती एका जिहिका प्रज्ञप्ता, सा खिल जिहिका योजनमायामेन अर्द्धत्रयोदशयोजनानि विष्कम्भेण क्रोशं वाहरूयेन मकरम्रखविवृतसंस्थानसंस्थिता सर्वरत्नमयी अच्छा, रोहिता खलु महानदी यत्र प्रपतित अत्र खलु महदेकं रोहिताप्रपातकुण्डं नामकुण्डं प्रज्ञप्तम्, सर्विशति योजनशतम् आयामविष्कम्भेण प्रज्ञप्तः त्रीणि अशीतानि योजनशतानि किञ्चिद्विशेषोनानि परिक्षेपेण दश योजनानि उद्वेधेन अच्छं श्रह्णं स एव वर्णकः, बज्जतलं वृत्तं समतीरं यावत् तोरणाः, तस्य खळु रोहिता प्रयातकुण्डस्य वहुमध्यदेशभागः, अत्र खळु महान् एको रोहिता द्वीपो नाम द्वीपः प्रज्ञप्तः, षोडश योजनानि आयामविष्कम्भेण सातिरे-काणि पश्चाशतं योजनानि परिक्षेषेण हो कोशी उच्छितो जलान्तात् सर्ववज्रमयः अच्छः, स खल एकया पश्चनरवेदिकया एकेन च वनषण्डेन सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्तः, रोहिता द्वीप-स्य खल्ज द्वीपस्य उपरि बहुसमरमणीयो भूमि भागः प्रज्ञप्तः, तस्य खल्ज बहुसमरमणीयस्य भूमिमागस्य बहुमध्यदेशभागः, अत्र खलु महदेकं भवनं प्रज्ञप्तम् , क्रोशमायामेन शेषं तदेव प्रमाणं च अर्थश्र भणितव्यः । तस्य खलु रोहिताप्रपातकुण्डस्य दाक्षिणात्येन तोरणेन रोहिता महानदी प्रव्युटा सती हैमवर्त वर्षम् एजमाना २ शब्दापातिनं वृत्तवैताद चपर्वतम् अर्द्धयोजनेन अप्तम्प्राप्ता पौरस्त्याभिमुखी आवृत्ता सती हैमवतं वर्षे द्विधा विभजमाना२ अष्टाविंशत्या सिललासइसैः समग्रा अधो जगतीं दलियत्वा पौरस्त्येन लवणसमुद्रं समुपैति, रोहिता खल यथा रोहितांशा तथा प्रवाहे च मुखे च भाणितव्येति यावत् संपरिक्षिप्ता । तस्य खलु महा-पद्महृद्स्य श्रीत्तराहेण तोरणेन इंरिकान्ता महानदी प्रच्युढा सती पोडश पञ्चोत्तराणि योजनशतानि पश्च च एकोनविंशतिमागान् योजनस्य उत्तराभिष्ठखी पर्वतेन गत्वा महाघट-मुख प्रवृत्तकेन मुकाविहारसंस्थितेन सातिरेक द्वियोजनशतिकेन प्रपातेन प्रपतित, हरि-कान्ता महानदी यतः प्रपतित अत्र खलु महती एका जिब्भिका प्रज्ञप्ता, द्वे योजने आयामेन पश्चविंशति योजनानि विष्कम्भेण अर्द्धे योजनं बाहरूयेन मकरमुखविवृतसंस्थानसंस्थिता सर्वरत्नमयी अच्छा, हरिकान्ता खल्ल महानदी यत्र प्रपतित अत्र खल्ल महदेकं हरिकान्ता प्रपातकुण्डं नाम कुण्डं प्रज्ञप्तम्, हे च चत्वारिंशे योजनशते आयामविष्कम्भेण सप्त एकोनषः ष्टानि योजनशतानि परिक्षेपेण अच्छम् एवं कुण्डवकव्यता सर्वी नेतव्या यावत् तोरणाः, तस्य खछ दरिकान्ता प्रपातकुण्डस्य बहुमध्यदेशभागः अत्र खछ महानेको दरिकान्ता द्वीपो नाम द्वीपः प्रज्ञप्तः द्वात्रिंश्तं योजनानि आयामविष्कम्भेण एकोत्तरं योजनवतं परिक्षेपेण द्वौ कोशावुच्छितो जलान्तात्, सर्वरत्नमयः अच्छः, सं खिल एकया पदमक्रवेदिकया एकेन च बनपण्डेन यावत संपरिक्षिप्तः, वर्णको भणितव्य इति, प्रमाणं च शयनीयं च अर्थश्र भणितव्यः, तस्य खलु हरिकान्ताप्रपातकुण्डस्य औत्तराहेण तोरणेन यावतु प्रव्यदा सती हरि वर्षे वर्षम् एजमाना२ विकटापातिनं वृत्तवैताढ्यं योजनेनं असम्प्राप्ता पश्चिमाभिमुखी आवृत्तां सती हरि-वर्षे द्विधा विभजमाना२ पर पञ्चाशता सलिलासहसैः समग्रा अधो जगतीं दलयित्वा पश्चि-मेन रुवणसमुद्रं समुपैति, इरिकान्ता खलु महानदी प्रवहे पञ्चविंशति योजनानि विष्कम्भेण अर्द्धयोजनपुदेधेन तदन तरं च खलु मात्रयार परिवर्द्धमानार मुखमूले अर्द्धतृतीयानि योज-नशतानि विष्कम्भेण पश्च योजनानि उद्वेधेन, उभयोः पार्श्वयोः द्वाभ्यां पद्मवस्वेदिकाभ्यां द्वाभ्यां च वनपण्डाभ्यां संपरिक्षिप्ता ॥ स्व० १२ ॥

टीका-'महाहिमवंतस्स णं' इत्यादि, 'महाहिमवंतस्स णं बहुमज्झदेसभाए एत्य णं एगे महापउमद्दहे णामं दहे पण्णत्ते' महाहिमवतः खळ बहुमध्यदेशभागः, अत्र खळ एको महा-पद्महृदो नामा हृदः प्रज्ञप्तः, 'दो जोयणसहस्साइं आयामेणं एगं जोयणसहस्सं विवसंभेणं

अब सूत्रकार हूद द्रह का स्वरूप दिखलाते हैं 'महाहिमवंतस्स णं बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं' इत्यादि

टीकार्थ-'महाहिमवंतस्स बहुमज्झदेसभाए' महाहिमवंत पर्वत के ठीक बीच में 'एगे' एक 'महापडमदहे पण्णत्ते' महा पद्मद्रह कहा गया है 'दो जोयण-

હવે સૂત્રકार હુદ-દ્રહતું स्વરૂપ સ્પષ્ટ કरे છે

^{&#}x27;महाहिमव तस्स णं बहुमज्झदेसभाए इत्यादि

^{&#}x27;महाहिमवंतरसणं बहुनज्झ देसभाए' भड़ाडिभवन्त ५वर्ताना ठीक मध्य कागमां 'एगे' स्पेक 'महापजमदद्दे पण्णत्ते' भड़ा ५६६६ स्थापेक छे. 'दो जोयणसद्दरसाद्दं आयामेणं एगं

स नोयणाई उठवेहेणं अच्छे रययामयक् छे एवं आयामविक्खंभविहूणा जा चेव पउमदहस्स वन्यया सा चेव णेयव्या' दे योजनसहस्ने आयामेन, एकं योजनसहस्नं विक्कम्भेन, देश योजनसिन उद्वेथेन अच्छः रजतमयक्छः, एवमायामविष्कम्भविधूता—विहीना येव पद्महूदस्य वक्तव्यता सेव नेतव्या। 'पउमप्पमाणं दो जोयणाई, अहो जाव महापउमदहवण्णाभाई हिरी य इत्थ देवी जाव पिछश्रोवमहिइया परित्सइ' पद्मप्रमाणं द्वे योजने, अर्थों यायद् महापबाहद वर्णाभानि हीश्वात्र देवी यावत् पर्योपमिध्यतिका परिवसति 'से एएणहेणं गोयमा एवं वृच्छ' स एतेनार्थेन गीतम! एवछुच्यते, 'अदुत्तरं च णं गोयमा! महःपउमदहस्स सासए सहस्साई आयामेणं एगं जोयणसहस्सं विक्लंभेणं दस जोयणाई उव्वेहेणं अच्छे रचयासय कूटे एवं आयाम विक्लंभ विह्नणा जा चेव पउमदहस्स वत्तव्यया सा चेव णेयव्या' इसका आयाम दो हजार योजन का है और एक इजार योजन का इसका विक्लंभ है उद्येथ 'गहराई' इसका दस योजन का है यह आकाश और स्फटिक के जैसा निर्मल है रजतमय इसका क्ल है इस तरह आयाम और विद्कंभ को छोडकर वाकी की सब वक्तव्यता यहां पद्मदह की वक्तव्यता जैसी

ही है ऐसा जानना चाहिये 'पडमप्पमाण दो जोयणाइं अहो जाव महापडमदह वण्णाभाइं हिरी य इत्थ देवी जाव पिलओवमिहिइया परिवसइ, से एएणट्टे-

णं गोयमा! एवं खुटचइ' इसके बीचमे जो कमल है वह दो योजन का है महा-पद्महूद्र के वर्ण जैसे अनेक पद्म आदि यहां पर है इस कारण हे गौतम! मैने इसका नाम महापद्म हद्र ऐसा कहा है इस सम्बन्ध में जो प्रश्न गौतमने किया है वह सब पीछे के प्रकरण में लिखा जा खुका है, अतः वहां से जानलेनाचाहिये —यह वान यहां आगत यावत् शब्द बतलाता है वहां पर ही नामकी देवी रहती जोयणसहरसं विक्संभेणं दस जोयणाई उव्वेहेणं अच्छे रययामयकूले एवं आयामविक्संभ विह्णा जा वेव प्रअदहरस वत्तव्यया सा चेत्र णेयव्या' आने। आयाभ थे હलार ये।अन श्रेरक्षा छे, अने એક હलार ये।अन श्रेरक्षा अने। विष्ठं स छे. श्रेरा १ इस रकतम्य छे.

श्रा प्राप्त पट्सा छ. जा निविध असि असि स्टिटिंग्स सिम्प्र हैं। असि असि विद्यालया असि पद्मद्र नी विद्यालया के ती के छे, ओवं समक्षवं लेशि ओ. 'पडमप्पमाणं दो जोंगणाई अही जाव महापडमह्वण्णामाई हिरीय इत्थ देवी जाव पिलओवमिट्टिंग परिवस्ह, से एएण्ट्रेणं गोयमा! एवं वुच्चइ' ओनी मध्य भागमां के अभण छे ते के येकिन केटेबुं छे. महापह्महृद्दना वर्धु केवा अने उपहुमा वगेरे अहीं छे. ओथी हे गौतम! में ओनुं नाम महापह्म हृद्द ओवुं उहां छे. आ संअधमां के प्रश्न गौतम इर्था छे ते विषे गत प्रक्ष्ममां यर्था

णामधिक्जे पन्नते जं ण कयाइ णासी' अथ च खल्छ गौतम! महापद्महदस्य शाश्वतं नामधेयं प्रक्रमम् , यन्न कदाचिन्नासीत् ३, इदं च प्रायः पद्महृदस्त्रत्रानुसारेण व्याख्यातव्यम् , अथा-स्य दक्षिणद्वाराभिः सतां महानदीं निर्दिशभाद-'तस्स णं महापउमद्दहस्स' तस्य खळ महा-पद्महदस्य-तस्य पूर्वोक्तस्य खल्छ महापद्महदस्य 'दिवखणिल्लेणं तोरणेणं' दाक्षिणात्येन दक्षिणदिग्मवेन तोरणेन 'रोहिया महाणई पव्दा समाणी' रोविता रोहितानाम्नी महानदी प्रन्युढा निःस्ता सती 'सोलस पंचतरे जोयणसए पंच य एगूणशीसहभाए जोयणस्स' षोडश पश्चोत्तराणि पश्चाधिकानि योजनशतानि पश्च च एकोनर्विशतिभागान योजनस्य 'दाहिणाभिमुही पन्वए णं गंता' दक्षिणाभिमुखी पर्वतेन सह गत्वा 'महया घडमुहपवित्तिः एणं मुत्तावलिहारसंठिएणं साइरेग दो जोयणसङ्एणं प्वाएणं प्वड हं महाघटमुख्य श्रृत्तकेन महाघटः बृहद्धटस्तस्य यन्मुखं तस्मात् प्रवृत्तिः-निर्ममो यस्य स जलसमूहः स इव महाघट-है यावत् इसकी एक पल्घोपमकी स्थिति है 'अदुत्तरं च णं गोयमा! महा पजम-दहस्स सासए णामधिज्जे पण्णते जं ण कथाइ णासी३' अथवा-हे गौतम ! महा पद्महद्र ऐसा जो इस हद्र का नाम है वह शाश्वत ही है क्योंकि ऐसा यह नाम इसका पूर्व काल में नहीं था, अब भी ऐसा इसका नाम नहीं हैं अविषय काल में भी ऐसा इसका नाम नहीं रहेगा-सो ऐसी बात नहीं है पूर्व में भी यही नाम था, वर्तमान में भी यही नाम है और भविष्य काल में भी यही नाम रहेगा अतः इस प्रकार के नाम होने में कोई निमिक्त भी नहीं है (तस्सर्ण महापडमदहस्स द्किख-णिल्छेणं तोरणेणं रोहिआ महाणई पवृदा समाणी सोलस पंचुत्तरे जोयणसए पंच य एग्णवोसह भाए जोयणस्स दाहिणाभिमुही पव्वएणं गंता महया घटमुह पवि-सिएण मुत्ताविल हारसंठिएणं साइरेग दो जोयणसङ्ग्णं पवाएणं पवडङ्) इस महापद्महृद की दक्षिणदिग्वर्ती तोरण से रोहितानामकी महानदी निकली है और महाहिमवंत पर्वत के उपर वह १६०५ में घोजन तक दक्षिणामिमुखी होकर वहती

मुखपवृत्तिकस्तेन तथा महाघटमुखान्तिःसरज्जलसमूहगच्छब्दायमानवेगवता प्रपातेनेत्यग्रिमेण सम्बन्धः, मुक्ताविहारसंस्थितेन सातिरेक द्वि योजनशतिकेन साधिक योजनशतद्वयप्रमाणेन प्रपातेन निर्शरेण प्रपतित, अथास्याः प्रपततस्थानं प्रदर्शयितुमाह-'रोहिया णं' इत्यादि, 'रोहियाणं महाणई जओ पवडइ एत्थ णं महं एगा जिब्भिया पण्पत्ता' रोहिता खळु महानदी यतः यस्मात् स्थानात् प्रपतति, अत्र तत्प्रपतनस्थाने खल्ल एका महती बृहती जिह्निका तदाकारवस्तुविशेषः प्रणालिका प्रज्ञप्ता, अथ तस्या जिह्निकाया मानाद्याह-'सा णं जिन्भिया' इत्यादि, सा खल्ज जिह्निका-सा अनन्तरोक्ता खल्ज जिह्निका 'जोयणं आयामेणं अद्धतेरस जोयणाई विक्खंभेणं' योजनमायामेन अर्द्धत्रयोदश योजनानि-द्वादश योजनानि पूर्णानि त्रयोदशस्य योजनस्यार्द्धम् विष्कमभेण विस्तारेण, 'कोसं बाहल्लेणं मगरग्रहविउद्दसंठाण-संठिया सव्ववइरामई अच्छा' क्रोशम् एकं क्रोशम् बाहल्येन पिण्डेन, मकरम्रखविष्टतसंस्थान-संस्थिता विवृत (व्यात्त) मकरमुखवित्स्थता, मुले विवृतस्य पूर्वप्रयोगाईत्वेऽपि परप्रयोगः प्राकृतलात् , सर्ववचरत्नमयी-सर्वात्यना वचरत्नमयी अच्छेति उपलक्षणतया श्रक्षणेत्यादि बोधकम् तत्सइग्रहः सार्थश्रतुर्यस्त्राद् बोध्यः। अथासौ रोहिता महानदी यत्र प्रपतित हुई अपने घटमुख प्रवृत्तिक एवं मुक्ताविल्हार तुल्य ऐसे प्रवाह से पर्वत के नीचे रहे हुए रोहित नामके प्रपात कुण्ड में गिरती है पर्वत के ऊपर से नीचे तक गिरनेवाली वह प्रवाह प्रमाण में कुछ अधिक दो सौ योजन का है (रोहिआणं-महाणदी जऔं पवडइ एत्थणं महं एगा जिन्मिया पण्णासा) रोहिता नदी जिस स्थान से उस प्रपात कुण्ड में गिरती है वह एक विशाल जिहिका है (सा गं जिब्भिया जोयणं आयाभेणं अद्धतेरस जोयणाई विक्खंभेणं कोसं बाहल्छेणं मगरमुखविउद्वसंठाणसंठिया सन्ववद्रामई अच्छा) यह जिहिका आयाम में -लम्बाई में-एक योजनकी है तथा एक कोशकी इसकी मोटाई है आकार इसका खुछे हुए मगर के मुह जैसा है यह सर्वात्मना वज्र रत्नमयी है तथा आकादा एवं स्फटिक के जैसी यह निर्मल है (रोहिआण महामई जिहें पवडह एत्थ णं

शिभुणी थर्डनेविड छे. के पाताना घटमुण प्रवृत्तिक तेमक मुक्ताविदिहार तुल्य प्रवाहिशी पर्वतनी नीके कावेदा रेहित नामक प्रपात हेडमां पडे छे. पर्वत ઉपरथी नीके सुधी पडनार ते प्रवाह प्रमाणुमां कंछि वधार असे। बेहकन केटदी। छे. 'रोहिआ णं महाणदी जओ पवडइ एत्थणं महं एगा जिब्सिया पण्णता' रेहिता नहीं के स्थान उपरथी ते प्रपात कुंडमां पडे छे. ते स्थान कोई विशाण किहिंधा इपमां छे. 'सा णं जिब्सिया जोयणं आयानिणं अद्धतेरसजोदणाइं विक्खंभेणं कोसं बाइल्लेणं मगरमुखविडहुसंठाणसंठिया सव्ववइरामई अच्छा' के किहिंधा आयाम-दांआई-नां-केंक बेहकन केटदी छे तेमक केंक्र गाड़ केटदी कोनी मेहिहा आयाम-दांआई- अहिंदी केनी मेहिहा की सर्वित्मना वक्ररत्नसंथी छे तेमक आकार अदिश भिन्न केंदि केनी महाणई जहिं

तण्कुण्डमाइ-'रोहिया णं महाणई जिंदं प्वडइ एत्थ णं महं एगे रोहियप्पवायकुंडे णामं कुंडे पण्णते' रोहिता खलु महानदी यत्र प्रपति अत्र खलु महदेकं रोहिता-प्रपातकुण्डं नाम कुण्डं प्रज्ञप्तम् , तस्य मानाद्याह-'सवीसं' इत्यादि, 'सवीसं-जोयणसयं आयामविवसंभेणं पण्णतं, तिण्णि असीए जोयणसए किंचि विसेस्णे परिवस्वेवेणं, दस जोयणाई उव्वेहेणं, अच्छे सण्हे सो चेव वण्णत्रो' सविंगति-विंगतिसहितं योजनशतम् आयामविष्कम्भेण-दैर्ध्यविस्ताराभ्यां प्रज्ञप्तम् , त्रीणि अशीतानि अशीत्यधिकानि योजनशतानि किश्चिद्विशेषोनानि किश्चिद्धिकन्यूनानि परिक्षेपेण परिधिना दश्च योजनानि उद्धेषेन भूगतत्वेन अच्छः श्रक्षणः स एव वर्णकः पूर्वोक्त एव वर्णनपरपदसमृहो बोध्यः स च २१ पृष्ठोक्त गङ्गाप्रपातकुण्डाधिकाराद् बोध्यः, तदेवाह-'वइस्तले वहे समतीरे जाव तोरणा' वज्रतलं-वज्रस्तमयतलयक्षक्तम् युत्तं वर्त्वलम् समतीरं समानतटकम् यावत् यावत्पदेन-'रजतमयकूलं वज्रमयपाषाणं सुवर्ण शुभ रजतमयवालुकाकम् वैहर्थमणि स्फटिक पटलाच्छादितं सुखावतारं सुखोत्तारं नानामणितीर्थ-

महं एगे रोहियण्यवायऊंडे णामं इंडे पण्णत्ते) यह रोहिता नामकी महानदी जहां पर गिरती है वहां पर एक विशाल प्रपातऊण्ड है इसका नाम रोहित-प्रपातऊण्ड है (सवीसं जोयणसयं आयामिवक्षंभेणं पण्णत्तं तिण्णि असीए जोयणसए किंचिविसेस्णे परिक्खेवेणं दस जोयणाइं उठवेहेणं अच्छे सण्हे सो चेव वण्णओ) यह रोहितप्रपात ऊण्ड आयाम और विष्कम्भ की अपेक्षा १२० योजन का है इसका परिक्षेप ऊछ कम ३८० योजन का है इसकी गहराई १० योजन की है अच्छ श्रक्षण आदि पदों की ज्याख्या गंगाप्रपातऊण्डके वर्णन से जान छेना चाहिये (वहरतले, वट्टे, समतीरे, जाव तोरणा, तस्सणं रोहिअप्यवायऊण्डस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महं एगे रोहियदीवे णामं दीवे पण्णत्ते) इसका तल भाग वज्ररत्न का बना हुआ है यह गोल है, तीर भाग सम है-नीचा ऊंचा नहीं है यहां यावत् पद से 'रजतमयक्तं, वज्रमयपाषाणं, सुवर्णं

पवडइ एत्थणं महं एगे रोहियपवायछंडे णामं कुंडे पण्णते' से रेडिता नामक महानहीं क्यां पढे छे त्यां सेक विशाण प्रपात कुंड छे. सेनुं नाम रेडित प्रपात कुंड छे. 'सवीसं जोयणसपं आयामित्रक्षंभेणं पण्णतं तिण्णि असीए जोयणसप किंचिविसेस्णे परिव्रत्वेषेणं वस जोयणाई उटवेहेणं अच्छे सण्हें सो चेव वण्णओं' सा रेडित प्रपातकुंड आयाम सने विष्कं लनी अपेक्षासे १२० थेलिन केटते। छे. आनी परिक्षेप कंधि कम ३८० थेलिन केटते। छे. सेनी अंडिक भेनी अंडिक १०० थेलिन केटती छे. सम्ध्रा के वहरते हैं, पढ़िनी व्याप्या विषे अंगा प्रपात कुंडना वर्ष्ट्रांनांथी काश्री देवुं किंधिसे. 'वहरते हैं, वह, समतीरे जाव तौरणा सस्सणं रोहिअप्पवायक्कण्डस्स बहुम्बह्मदेसभाए एत्थ णं महं एगे रोहियदीवे णामं दीवे पण्णत्ते' सेनी तक्षाण वलरतन निर्मित छे. से गेल छे. सेनी तीर काश्रस छे. अंबी-निर्मित छे. से गेल छे. सेनी तीर काश्रस छे. अंबी-निर्मित छे. से गेल छे. सेनी

सुबद्धम् आनुपूर्वेसुजातवप्रगम्भीरं शीतलज्ञलं संस्छन्नपत्रविसमृणालं बहूत्पलकुसुद्दनलि-नस्रभग सौगन्धिक पुण्डरीक महापुण्डरीक शतपत्रसहस्रपत्रप्रफुल्लकेसरोपचितं षद्पदपरिः भुज्यमानकमलम् अच्छविमलपथ्यसलिलं पूर्णे परिहस्तभ्रमन्मत्स्यक्रच्छपानेकशकुनगण-मिथुनविचरितशब्दोश्वतिकमधुरस्वरनादितं प्रासादीयं ४, इत्यादि २१ पृष्ठोक्तानुसारेण बोध्यस् , व्याख्या च तत्स्चतो बोध्या, एवं तोरणपर्यन्तं वर्णनीयम् , इत्याह-तोर्णाः इति, अधुनाऽस्य द्वीपवक्तव्यतामाह-'तस्स णं रोहियप्पवायकुंडस्स' तस्य खळु रोहिता प्रपातकुण्डस्य 'बहुमज्झदेसभाए एत्य णं महं एगे रोदियदीवे णामं दीवे पण्णत्ते' बहुमध्य-देशभागः, अत्र खलु महान् एको रोहिता द्वीपो नाम द्वीपः प्रज्ञप्तः । तस्यायामाद्याह-'सोलस जोयणाई-आयामविक्खंभेणं पोडश योजनानि आयामविष्क्रम्भेण, नवरं मङ्गाद्वीपतो द्विगु-णायामविष्कम्भत्वात् षोडशयोजनप्रमाणोऽयं रोहितो द्वीप इत्यर्थः, 'साइरेगाई पण्णासं जोय-शुभरजतमय बालुकाकम् वैडूर्यमणिस्फटिकपटलाच्छादितं, सुखावतारं सुखो-त्तारं, नानामणितीर्थसुबद्धम् आनुपूर्व्यसुजातवप्रगंभीरद्यीतलजलं, संच्छन्न-पत्रविसम्णालं, बहुत्पल कुमुदनलिनसुभगसौगंधिकपुण्डरीकमहापुण्डरीक द्यात-पत्रसहस्रपत्रप्रफुल्लकेसरोपचितं, षट्टं पद्परिभुज्यमानकमलम्, अच्छविमलः पूर्ण, परिहस्त भ्रमन्मत्स्यकच्छपानेकदाकुनगणमिथुनविचरित पथ्यसलिलं. चान्दोन्नतिकमधुरस्वरनादितं, प्रासादीयं ४' इत्यादिरूप से यह पाठ गृहीत हुआ है। ईन पदों को व्याख्या चतुर्थ सूत्र की व्याख्या करते समय की जाचुकी है। इस तरह का यह सब वर्णन तोरणों के वर्णन तक यहां पर करलेना चाहिये (तस्स णं रोहिअप्यवायकुंडस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे रोहियदीवे णामं दीवे पण्णत्ते) उस रोहितप्रपातऋण्ड के ठीक मध्यभाग में एक विशास रोहितद्वीपनामका द्वीप कहा गया है (सोलसजोयणाई आयामविक्खंभेणं साइ रेगाइं पण्णासं जोयणाइं परित्रखेवेणं दो कोसे ऊसिए जलंताओ सब्ववइरामए

सुवणं शुश्ररज्ञतमयवालु काकम् वेंड्यंमणिस्कटिकपटलां छि। सुखावतारं सुखोत्तारं, नानमणितीर्थसुबद्धं आनुपूर्धसुज्ञातवप्रंभीरशीतलज्ञलं, संच्छन्न पत्र विसमृणालं, बहूत्पल- कुमुद्द निलत सुभग सौगंधि ह पुण्डरीक, महापुण्डरीक शतपत्र, सहस्रपत्र प्रकुल्लकेसरोपितां घट्रपद्रपरिमुज्यमानकमलम्, अच्छिवमलवध्यसिललं, पूणं, परिहरतभ्रमन्मत्स्यकच्छपानेक शकुन-गणिमिश्चनिवचिरतशब्दोन्नतिकमधुरस्वरनादितं प्रासादीयं ४' पणेरे ३५मां स्थे पाठ संगृद्धीत थये। छे. स्थे पहेनी व्याप्या यतुर्ध स्त्रभां अत्वास छे. स्था प्रभाषे थ्या पद्धी छे. स्था पहेनी व्याप्या यतुर्ध स्त्रभां अत्वास णं रोहिअपवाय- कुंडरस बहुमज्झदेसभाष एत्यणं महं एगे गोहियदीवे णामं दीवे पण्णत्ते' ते शिक्षत प्रपात कुंडरस बहुमज्झदेसभाष एत्यणं महं एगे गोहियदीवे णामं दीवे पण्णत्ते' ते शिक्षत प्रपात कुंडरस अहमज्झदेसभाष एत्यणं सहं एगे गोहियदीवे णामं दीवे पण्णत्ते' ते शिक्षत प्रपात कुंडरस अहमज्झदेसभाष एत्यणं सहं एगे गोहियदीवे णामं दीवे पण्णत्ते' ते शिक्षत प्रपात कुंडना ठीक भव्यामिवक्खंभेणं साहरेगाइं पण्णासं जोवणाइं परिक्खेवेणं दो कोसे असिए जलंक

णाइं परिक्खेवेणं दो कोसे ऊसिए जलंताओ सब्बबइरामए अच्छे' सातिरेकाणि पञ्चाशतं योजनानि परिक्षेपेण, द्वौ कोशौ उच्छितो जलान्तात् सर्ववज्रमयोऽच्छः, 'से णं एगाए पउ मवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सन्त्रओ समंता संपरिक्खिते' स खळ एकया पद्मवरवेदि-कया एकेन च वनवण्डेन सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्तः, 'रोहियदीवस्स णं दीवस्स उप्पि बहुसमरमणि जो भूमिभागे पण्णत्ते' रोहिता द्वीपस्य खलु द्वीपस्य उपरि बहुसमरमणीयो भूमिमागः प्रज्ञसः, 'तस्स णं बहुसमरमणि जन्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एमे भत्रणे पण्णत्ते' तस्य खलु वहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभामे अत्र खलु महदेकं भवनं प्रज्ञप्तम् , 'कोसं आयामेणं सेसं तं चेव पमाणं च अहो य भाणियव्यो' शेवं तदेव पूर्वीक्तमेव प्रमाणं तच अर्धक्रोशम् विष्कम्भेण, देशोनक्रोशमुच्चत्वेने ति च शब्दात् रोहिता देवी शयनादि वर्णकोऽपि भणितन्यः, च पुनः अर्थः-रोहिता द्वीपनामकारणम्, अच्छे) यह द्वीप आयाम और विष्क्रम्भ को अपेक्षा से १६ योजन का है कुछ अधिक ५० योजन का इसका परिक्षेप है यह जल से दो कोस ऊपर उठा हुआ है यह सर्वोत्मना वज्रमय है आकारा और स्फटिक के जैसा यह निर्मल हैं (से णं एगाए पडमवरवेइधाए एगेण घ वणसंडेणं सब्वओ समंता संपरि क्खिले) यह एक पद्मवरवेदिका से और एक वनषण्ड से चारों ओर से अच्छी तरह घिरा हुआ है (रोहियदोवस्स णं दीवस्स उप्पि बहुसमरमणिउजे भूमिभागे पण्णात्ते) इस रोहित झीप के ऊपर का जो भूमिभाग है वह बहुसमरमणीय कहा गया है (तस्सणं बहुसमरमणिजजस्स भूमिभागस्स बहुमजझदेसभाए एत्थणं महं एगे भवणे पण्णत्ते, कोसं आयामेणं संसं तं चेव पमाणं च अहो य भाणियव्यो) इस बहुसमरमणीय भूमिभाग के ठीक वीच में एक विशाल भवन कहा गया है यह आयाम की अपेक्षा एक कोश का है विष्कम्भ की अपेक्षा आधे कोशका है कुछ कम एककोश की इसकी ऊंचाई है इत्यादि रूप से यहां और भी सब

ताओ सब्बवहरामए अच्छे' એ द्वीप आयाम अने विष्ठं अनी अपेक्षाओ १६ येकिन केटिंश छे. के प्रधिष्ठ प० येकिन केटिंश आने। पिरक्षेप छे. ओ पाधीथी के गांड उपर इंदें छे. ओ सर्वात्मना वळ्रमय छे. आकाश अने स्ट्रिड केटिंश ओ निर्माण छे. 'से णं एगाए पडवरवेड्याए एगेण य वणसंडेणं सब्बओ समंता संपरिक्खिते' ओ ओठ पद्मतर वेहिकाशी अने छेठ वनणं उथी येकिर आरी रीते परिवृत छे. 'रोहियदीवरस णं दीवरस उण्चि बहु समरमणिड्ने भूमिमागे पण्णते' आ रेदित दीपनी उपरने। के भूमिभाग छे ते अदुसमरमणिड्ने भूमिमाग आवेद छे. 'तरस णं बहुसमरमणिड्नेस मूमिभागस्स बहुमड्हेर्समाए एत्थणं महं एगे भवणे पण्णत्तं, कोसं आयामेणं सेसं तं चेव पमाणं च अट्टो य माणिद्यो' ते अदु समरमाधीय धूमिसायना इंदिन आयामेणं सेसं तं चेव पमाणं च अट्टो य माणिद्यो' ते अदु समरमाधीय भूमिसायना ठीठ मध्यकायमां ओठ विशाण अवन आवेद छे. ओ आयामनी अपेक्षाओ ओ अवन अधी गांड

भणितव्यः वक्तव्यः । अथास्या रोहिताया छवणसमुद्रगमनप्रकारमाह-'तस्स णं' इत्यादि, 'तस्स णं रोहियप्पवायकुंडस्स दिवखणिच्छेणं तोरणेणं' तस्य खलु रोहिता प्रपातकुण्डस्य दाक्षिणात्येन तोरणेन-बहिद्धरिण 'रोहिया महाणई पत्रुहा समाणी' रोहिता महानदी प्रव्युढा-निः सता 'हेमवयं वासं एजजेमाणी २' हेमवतं वर्षे प्रति एजमाना २-आगच्छ-न्ती २ 'सदावइवट्टवेयद्धपटवयं' शब्दापातिनं शब्दापातिनामानं वृत्तवैताढचपर्वतम् 'अद्ध जोयणेणं' अर्धयोजनेन-क्रोशद्वयेन 'अर्तपत्ता' असम्प्राप्ता असंस्पृष्टा दूरस्थितेत्यर्थः, 'पुर-त्थाभिमुही' पूर्वाभिमुखी 'आवत्ता समाणी हेमवयं वासं दुहा विभयमाणी विभयमाणी' आवृत्ता-परावृत्ता सती हैमवतं तन्त्रामकं वर्षे द्विधा विभजमानार द्विभागं कुर्वाणार 'अहावी-साए सलिलासहस्सेहिं सभगा' अष्टाविंशत्या-अष्टाविंशति संख्यकैः सलिलासहस्नैः-महा-नदी सहस्रैः समग्रा सम्पूर्णा भरतनद्यपेक्षया द्विगुणनदीपरिवृतत्वात् , 'अहे जगई' अधः-अधोभागे जगतीं जम्ब्द्वीपभूमिं 'दालइत्ता पुरित्थमेणं' दारियत्वा भित्वा पौरस्त्येन पूर्व-भागेन 'लवणसमुदं समप्पेइ' लवणसमुद्रं समुपैति प्रविशति, 'रोहियाणं' इयं रोहिता खलु वर्णन जैसा तीसरे सूत्र में किया गया है वैसा ही यहां पर करलेना चाहिये (तस्स णं रोहियप्पवायकुण्डस्स दाकिखणिल्छेणं तोरणेणं रोहिया महाणई पबुढा समाणी हेमवयवासं एउजेमाणी २ सदावई चद्दवेअद्धपव्वयं अद्धजोयणेणं असं-क्ता पुरत्याभिमुही आवत्ता समाणी हेमवयं वासं दुहा विभगमाणी २ अहा-बीसाए सिल्लासहस्सेहिं समग्गा अहे जगई दालइसा पुरित्थियेणं लवणसमुद्दं समप्पेड्) उस रोहित प्रापातकुण्डकी दक्षिणदिशा के तोरण से रोहिता नामकी महानदी निकली है वह हैमचत क्षेत्रकी ओर आती २ शब्दापाती वृत्तवैतादय र्वत से दो कोश दूर रहकर फिर वहां से वह पूर्वदिशा की ओर लौटती है और हैमचत क्षेत्र को दो विभागों में विभक्त करती हुई २८ हजार परिवार भूत निदयों से युक्त होकर जम्बूद्धीप की जगती को भेदती हुई पूर्व लवण समुद्र में मिलतो है (रोहिआणं जहा रोहिअंसा) रोहितांशा महानदी के वर्णन के

केटलुं छे. इंधि इस छोड आए केटली छोनी अंशाई छे वगेरे इपमां अली शेष छों वर्णन श्रीका सूत्र मुक्का कर समक्ष सेवुं कोई छो. 'तरस णं रोहियपवायकुण्डस्स द्खिण्डिलं तोरणेणं रोहिया महाणई पवृद्धा समाणी हेमवयवासं एउजेमाणीर सदावइं बट्टवेअद्ध-पव्चयं अद्धजोयणेणं असंपत्ता पुरत्थामिमुही आवत्ता समाणी हेमवयं वासं दुहा विभयमाणी र अट्ठावीसाए सिल्लासहस्सेहिं समगा अहे जगई दालइत्ता पुरत्थिमेणं लवणसमुदं समन्त्रेष्ट्रं राहित प्रयात इंउनी हिल्ला हिंशाना तेरिलाशी रेहित नामड महा नहीं नीडणे छे. ते नहीं हैमवत क्षेत्र तरह प्रवाहित थती शण्टापाती पृत्त वताल्य पर्वतथी छे आउ हर रहीने एछी त्यांथी ते पूर्व हिशा तरह पाछी इरे छे. अने ते हैमवत क्षेत्रने छे विलाणामां विकारत इरती २८ हजार परिवार सूत नहीं छो। येहिआणं जहा रोहिआंसां

महानदी 'जहा रोहियंसा' यथा-येन प्रकारेण आयामादिना रोहितांशा महानदी वर्णिता 'तहा पवाहे य महे य भाणियव्या' तथा तेन प्रकारेण प्रवाहे निर्गमे च पुनः मुखे समुद्रप्रवेशे च भणितव्या वर्णनीया, इति एतद्वर्णनं किम्पर्यन्तम् ? इत्याह—'जाव संपरिक्षित्रता' यावत् संपरिक्षिप्तेति—तथाहि—रोहिता खळ प्रवहे अर्द्धत्रयोदश योजनानि विष्कमभेण, क्रोशमुद्धेत्रेन तदनन्तरं च खळ मात्रया २ परिवर्धमाना २ मृक्षमूळे पश्चिंशं योजनशतं, विष्कमभेण अर्धन्तियानि योजनानि उद्देशेन उभयोः पार्श्वयोः द्वाभ्यां पद्मवरवेदिकाभ्यां हाभ्यां च वनष-ण्डाभ्यां संपरिक्षिप्तेति वर्णनं रोहितांशा महानद्यधिकाराद्वोध्यम्,

अथ हरिकान्ता नदीवक्तव्यतामाह-'तस्स शं महायउमदहस्स' इत्यादि तस्य खलु महा-पद्महूदस्य 'उत्तरेणं तोरणेणं' औत्तरेण तोरणेन बहिद्दरिण 'हरिकंता महाणई पत्नुहा समाणी कैसा ही इस नदी के आयाम आदि का दर्णन है इसलिये-(पवाहेअ ुले अ मा-णियव्वा) प्रवाह-निर्गम-में और मुख समुद्र प्रवेदा में-कैसा कथन-'जाव संप-रिक्खिता' इस पाठ तक रोहितांद्या के प्रकरण में किया गया है वह सब कथन यहां पर भी जानलेना चाहिये-कैसे-'रोहिता प्रवह में-द्रह निर्गम में-विष्कम्भ की अपेक्षा १२॥ योजन हैं और उद्धेध की अपेक्षा १ कोदाकी है इसके बाद थोडी २ बढती हुइ वह मुखमूलमे १२५ योजन के विष्कम्भवाली हो गइ है और २। योजन प्रमाण उद्धेधवाली हो गई है। तथा यह दोनों पार्श्व भाग में दो पद्मवरवेदिकाओं से एवं दो वनषण्डों से घिरी हुई है ऐसा यह वर्णन रोहि-तांद्रा महानदी के अधिकार से जानलेना चाहिये।

हरिकान्तानदीवक्तव्यता

(तस्स णं महापउमदहस्स उत्तरिल्छेणं तोरणेणं हरिकंता महाणई पवृहा समाणी सोलस पंचुत्तरे जोयणसए पंचय एग्णवीसइभाए जोयणस्स उत्तराभि-

રાહિતાંશા મહાનદીના વર્ણન જેવું જ એ મહા નદીના આયામ વગેરેનું વર્ણન છે. એથી 'પવાદેશમુલે અ માળિયદવા' પ્રાપ્ક-નિર્ગમમાં અને મુખ સમુદ્ર પ્રવેશમાં જેવું કથન—'जाब संपरिक्खिता' આ પાઠ સુધી રાહિતાંશાના પ્રકરણમાં કહેવામાં આવેલ છે, તે ખધું કથન અહીં પણ જાણી લેવું જોઇએ. જેમકે રાહિતા પ્રવહમાં—દ્રહ નિર્ગમમાં—વિષ્કંભની અપેક્ષાએ તે ૧૨ રે ચાજન છે અને ઉદ્દેશની અપેક્ષાએ ૧ ગાઉ પ્રમાણ છે. ત્યાર આદ સ્વલ્પ પ્રમાણમાં અભિવર્દ્ધિત થતી તે મુખ મૂળમાં ૧૨૫ ચાજન જેટલા વિષ્કંભવાળી થઈ ગઈ છે. અને રા ચાજન પ્રમાણ ઉદ્દેશવાળી થઈ ગઈ છે. તેમજ એ ખન્ને પાર્થ્ધ ભાગમાં એ પદ્મવર વેદિકાઓથી તેમજ એ વનખંડાથી આવત છે. એવું આ વર્ણન રાહિતાંશ મહાનદીના અધિકારમાંથી જાણી લેવું જોઇએ.

હેરિકાન્તા નદી વક્તવ્યતા

'तस्सणं महापउमदहरस उत्तरिल्छेणं तोरणेणं हरिकंता महाणई पवृदा समाणी सोलस

सोलस पंचुत्तरे जोयणसए पंच य एग्णवीसहमाए जोयणस्स उत्तरामिष्ठही पट्यएणं गंता महया घडसुहद्व्वतिएणं मुत्तावलिहारसंठिएणं साइरेग दुजोयणसइएणं पवाएणं पवडइ' हरिकान्ता महावदी प्रव्यूहा सती पोडशपश्चोत्तराणि योजनशतानि पश्च च एकोनविंशतिभागान् योजनस्य उत्तराविम्रखीपर्वतेन गत्वा महाघटमुखप्रवृत्तकेन मुक्तावलिहारसंस्थितेन सातिरेक हि योजनशतिके प्रयातेन—प्रवाहेण प्रयतित, 'हरिकंता महाणई—जओ पवडइ एत्थ णं महं एगा जिब्भिया पश्चा, दो जोयणाई आयामेणं पणवीसं जोयणाई विक्खंभेणं अदं जोयणं बाह्ब्लेणं मगर-मुहविउद्वंसठाणसंठिया सव्वरयणामई अच्डा हरिकान्ता महानदी यतः प्रयतित, अद्य खख्य महती एका जिहिका—तदाकार वस्तुविशेषः प्रज्ञात, दे योजने आयामेन पञ्चविश्वति योजनानि विष्कम्भेण, अदी योजनं बाह्ल्येन, मकरमुखविवृतसंस्थानसंख्यिता सर्वरत्नमयी

मुही पन्वएणं गंता मह्या घटमुह्रपविस्तएणं मुसाविल्हारसंिठएणं साहरेग दु जोयणसहएणं पवाएण पवडह) उस महापद्मद्रह के उत्तरिहर्ग्वर्ती तोरण झारसे हरिकान्ता नामकी महानदी निकली है यह नदी १६०५ दे योजन पर्वत के ऊपर से उत्तर की ओर जाकर वडे जोर शोरके साथ अपने घट के मुख से विनिर्गत जल प्रवाह के तुल्य प्रवाह से कि जिसका आकार मुक्ताविल के हारके जैसा है और जो कुछ अधिक दो सौ योजन प्रमाणपरिधित है हरिकान्तप्रपातकुण्ड में गिरती हैं (हरिकंता महाणई जओ पवडह-एत्थ णं एगा महं जिन्तिका पण्यात्ता) यह हरिकान्ता महानदी जहां से हरिकान्तप्रपातकुण्डमें गिरती है वहां एक बहुत वडी जिहिका-नाली है-(दो जोयणाई आयामेणं पणवीसं जोयणाई विक्खं-भेणं अदं जोयणं बाहल्छेणं मगरमुह्रविउद्दसंठाणसंठिया, सन्वरयणामई अच्छा) यह जिहिका आयामकी अपेक्षा दो योजन की है और विष्करम की अपेक्षा २५ योजन की है इसका बाहल्य २ कोशका है। खुछे हुए मगर मुखका

पंजुत्तरे जोयणसए पंचय एगूणत्रोतइमाए जोयणस्स उत्तराभिमुही पट्वएणं गंता मह्या घट मुह्पवित्तएणं मुत्ताविष्टिहारसंठिएणं साइरेग दु जोअणसइएण पवाएणं पवड्रं ते महा पद्मह्पवित्तएणं मुत्ताविष्टिहारसंठिएणं साइरेग दु जोअणसइएण पवाएणं पवड्रं ते महा पद्मह्प उत्तरिहेन्वती तेरिष् ह रथी हिर्माता नामक महानही नीक्षणे छे. की नही १६०५ पूष्ट थे। अग पर्वत उपरथी उत्तरनी तरह अधने भूष्य अ वेग साथे पाताना घटमुण्यी विनिर्भत अस प्रवाह तुव्य अ प्रवाह्यी है लेना आक्षर मुक्तावितना हार जेवा हाथ छे अने के क्षेष्ठ अधिक असे। ये। अन प्रमाण्य पिनित छे.—हिर्मानत प्रपात क्षंट्रमां पडे छे. 'हिरकंता महाणई जओ पवड्ड एत्यणं एगा महं जिन्मिआ पण्णत्ता' आ हिरिमानता महा नही न्यांथी हिरिमानता प्रपात क्षंट्रमां पडे छे. त्यांथी कोक विशाण किहिनानाविका छे. 'दो जोयणाई आयामेणं पणत्रीसं जोयणाई विक्खंभेणं अद्धं जोयणं बाह्ल्छेणं मगरमुहिन उत्तर्माताणसंठिया, सन्तरयणामई अन्छा' के किहिन आयामनी अपेक्षाके छे थे। अन केटली छे अने विघानी अपेक्षाके २५ थे। अन केटली छे. कीनी आहेल्य छे 'शाङ्क

अच्छा, 'इरिकंता णं महाणई जहिं पत्रड्ः' हरिकान्ता खलु महानदी यत्र प्रवत्ति, 'एत्थ णं महं एने हरिकंतप्यवायकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते' अत्र खलु महदेकं हरिकान्ता प्रपातकुण्डं नाम कुण्डं प्रज्ञप्तम् , 'दोण्णि य चत्ताले जोयणसष् आयामविवखंभेणं सत्त य उणहे जोयणसष् परिक खेवेण' चत्वारिशे चत्वारिशदधिके द्वे च योजनशते आयामविष्करभेण-दैर्धविस्तारा-भ्याम्, एकोनषष्टानि-एकोनषष्टचिधकानि सप्तयोजनवतानि परिक्षेषेण, 'अच्छे एवं कुंड-वत्तव्यया सव्या नेयव्या जाव तोरणा' अच्छम् एवं कुण्डव कव्यता सर्वा नेतव्या यावत् तोरणाः, 'तस्त णं हरिकंतप्पवायक् उस्त बहुमज्झ रेसभाए एत्थ णं महं एमे इस्किंतदीवे णामं दीवे पन्नते' तस्य खळ हरिकान्ता प्रपातकुण्डस्य बहुमध्यदेशभागः, अह खळ महान एको हरि-कान्ता द्वीपो नाम द्वीपः प्रज्ञप्तः 'बत्तीसं जोयणाई आयामविक्खंभेण एगुत्तरं जोयणसयं आकारा और स्फटिक के जैसी निर्मल है। (हरिकंताणं महाणई जहिं पवडह एत्थ णं महं एगे हरिकंतप्पवायकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते) हरिकान्त नामकी यह महा-नदी जहां पर गिरती है वहां पर एक विशाल हरिकान्त प्रपातकुण्डनामका क्रण्ड है (दोण्णिय चत्ताले जोयणसए आयामविक्संभेणं स्सत्तअउण्डे जोयणसए परिक्खेवेणं अच्छे एवं कुंडवंत्तव्वया सव्वा णेया जाव तोरणा) यह कुण्ड आयाम और विष्कम्भ की अपेक्षा दो सो चालीस योजन का है तथा इसका परिक्षेप ७५९ योजनका है। यह कुण्ड आकाश और स्फटिक के जैसा बिलकुल निर्मल है। यहां पर कुण्ड के सम्बन्ध की पूरीवक्तव्यता तोरण के कथन तक की कहलेनी चाहिये (तस्सणं हरिकंतप्पवायकुंडस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे हरिकंतदीवे णामं दीवे प.) उस हरिकान्त प्रपातकुण्ड के ठीक बीच में एक विद्याल हरिकान्त बीप नामक बीप कहा गया है। (बत्तीसं जोयणाई

केटिंश छे. भुल्ला मुभवाणा भगरना केंद्री आक्षार आना छे. ये सर्वात्मना रत्नमधी छे तेमक आक्षा अने स्कृटिक्वत् येनी निर्माणकांति छे. 'हरिकंताणं महाणई जहिं पवडइ एत्थणं महं एगे हरिकंतप्यवायकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते' द्धिरिक्षन्त नामक ये मद्धानही क्यां पढे छे त्यां य्येक विशाण द्धिरिक्षन्त प्रपात कुंडे नामक कुंडे छे 'दोण्णिय चत्ताले जोयणसए आयोमविक्षंत्रेणं सत्तअउणहे जोयणसए परिक्षेवेणं अच्छे एवं कुंडवत्तव्वया सव्वाणया जाव तोरणा' ये कुंड आयाम अने विष्कृतिनी अपेक्षाये असा यालीस येकिन केटिंश तेमक आनी परिक्षेप ७५६ येकिन केटिंश छे. ये कुंड आक्षाश अने स्कृटिक्ष्यत् येकहम निर्माण छे अदी कुंड संभाषी पूरी वक्ष्तव्यता तेष्टिंशना क्ष्यन सुधीनी अध्याहत करी हिमी किंछ ये. 'तस्स णं हरिकंतप्यायकुंडस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महं एगे हरिकंत्रप्यायकुंडस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महं एगे हरिकंत्रप्यायकुंडस्य इति क्षिण नामक द्वीप आवेक्ष छे. 'वत्तीसं जोयणाइं आयामविक्षंभेणं एगुत्तरं जोयणसयं

परिक्षेवेणं दो कोसे ऊसिए जलंताओ सन्तरयणामए अच्छे' द्वात्रिश्तं योजनानि आयामविष्कमभेण, एकोत्तरं योजनशतं परिक्षेपेण, द्वौ कोशौ उच्छितो जलान्तात्, सर्वरत्नमयोऽच्छः,
'से णं एगाए पउमतरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं जाव संपरिक्खित वण्णओ भाणियव्वो ति'
स खल्छ एकया पद्मवरवेदिकया एकेन च वनपण्डेन यावत् सम्परिक्षिप्तः वर्णको भणितव्य
इति, 'पमाणं च सयणिज्जं च अद्वोय भाणियव्वो' प्रमाणश्च शयनीयश्च अर्थश्च भणितव्यः।
'तस्स णं इरिकंतप्पवायक्चंडस्स उत्तरित्छेणं तोरणेणं जाव पवृद्धा समाणी इरिक्सं वासं
एज्जमाणी २ वियडावई वृद्धवेयद्धं जोयणेणं असंपत्ता पच्चत्थाभिष्ठुद्दी आवत्ता समाणी इरिवासं दुद्धाविभयमाणी २ छप्पण्णाए सिल्हासहस्से हिं समगा अहे जगई दुरुद्दत्ता पच्चआयामविक्षंत्रभेणं एगुत्तरं जोयणसयं परिक्खेवेणं दो कोसे ऊसिये जलंताओ
सव्वरयणामए, अच्छे) यह द्वीप आयाम और विष्कम्भ की अपेक्षा ३२ योजन
का है १०१ योजन का इसका परिक्षेप है तथा यह जल के ऊपर से दो कोद्यातक
ऊंचा छठा है सर्वात्मना यह रत्नमय है और आकाद्या एवं स्फटिक के जैसा
निर्मल है (सेणं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं जाव संपरिक्षित्रक्ते)
यह एक पद्मवर वेदिकासे और एक वनषण्डसे चारों ओर से चिरा हुआ है

यह एक पद्मवर वादकास आर एक वनषण्डस चारा और से घिरा हुआ है (बण्णओ भाणिअव्वोत्ति) यहां पर पद्मवर वेदिका और वनषण्डका वर्णन करलेना चाहिये (पमाणं च सयणिक्जं च अट्टोय भाणियव्वो) तथा हरिकान्त होपका प्रमाण, शयनीय एवं इस प्रकार के इसके नाम होने के कारण रूप अर्थ का भी वर्णन करलेना चाहिये (तस्स णं हरिकंतप्पवायकुण्डस्स उत्तरिल्लेणं तोर-णेणं जाव पवृदा समाणी हरिवस्सं वासं एक्जमाणी २ विअडावई वट्टवेयदं जोयणेणं असंपत्ता पच्चत्थाभिमुही आवत्तासमाणी हरिवासं दुहा विभयमाणी २ छप्पण्णाए सलिलासहस्सेहं समग्गा अहे जगई दलइता पच्चित्थमेणं लवणसमुद्दं समप्पेह) उस हरिकान्त प्रपातकुण्ड के उत्तरदिग्वर्ती तोरण द्वार से यावत

परिश्खेवेणं दो कोसे उसिए जलंताओ सन्वरयणामए अच्छे' के द्वीप आयाम अने विष्ठं- कानी अपेक्षाको उर येथिन केटले छे. १०१ येथिन केटले आने। परिक्षेप छे तेमक के पाणीनी उपरथी असे। गाउ अंथे। छे. के सर्वात्मना रतन्मय छे अने आठाश तेमक स्ट्रिंट के वी केनी निर्माण डान्ति छे. 'से णं एगाए पडमवरवेड्याए एगेण य वणसंडेणं जाव संपरिक्खित' के केठ पड़ावर वेडिडाथी अने केठ वनआंठथी केमेर आवेष्टित छे. 'वण्णओ माणिअव्योत्ति' अर्दी। पड़ावर वेडिडाथी अने वनआंठनुं वर्णुन समक लेवुं कोई के. 'पमाणं च सयणिक्रं च अट्टीय माणियव्यों' तेमक दिहानत द्वीपनुं प्रमण्डायनीय तेमक आ प्रमाणे के केने नाम डरणु विषे पण्ड अद्धी स्पष्टता डरी लेवी केठके. 'तस्स णं हरिकंतपवायकुण्डस्स उत्तरिल्लेणं तोरणेणं जाव पयूडा सप्राणी हरिवरसं वासं एव्जमाणी र विभडावई वट्टवेयद्धं जोयणेणं असंपत्ता पच्चत्थाभिम्ही आवत्ता समाणी हरिवासं दुहा विभय-

त्थिमेणं लवणसमुदं समप्पेइ' तस्य खल हिरकान्ता प्रपातकुण्डस्य औत्तराहेण तोरणेन यावत् प्रव्युटा सित हिरवर्षम् वर्षम् एजमाना २ विकटापातिनं वृत्तवैताद्धं योजनेन असंप्राप्ता पश्चिमाभिमुखी आवृत्ता सित हिरवर्ष द्विधा विभजमाना २ वट् पश्चावता सिल्छासहसः समग्रा अधो जगतीं दलयित्वा पश्चिमेन लवणसमुदं समुपैति, अधुना हिरकान्ता महानद्याः प्रवहादिमानं प्रदर्शयितुमाह—'हिरकंता णं महाणई' इत्यादि हिरकान्ता खल महानदी 'पवहे पणवीसं जोयणाइं विवखंभेणं' प्रवहे हूदनिर्गमे पश्चविंवतिं योजनानि विष्कम्भेण, 'अद्ध जोयणं उन्वेहेणं' अद्ध्योजनमुद्धेधेन भूगतत्वेन, 'तयणतरं च णं मायाए २ परिवद्धमाणी २ महमूले अद्धाइज्जइं जोयणसयाइं विवखंभेणं पंचजोयणाइं उन्वेहेणं, उभओ पासि दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहिं य वणसंडेहिं संपरिविखत्ता' तदनन्तरं च मात्रया २ क्रमेण २ प्रति योजनं समुदिवयोहभयोः पार्श्वयोः चत्वारिंबद्धमुर्थद्धा प्रतिपार्श्व धनुर्विवति वृद्धचेत्यर्थः,

निकलती हुई यह महानदी हरिवर्ष क्षेत्र में बहती बहती, विकटापाती वृत्तवैताहथयर्वत को १ योजन दूर पर छोडकर वहां से पश्चिम की ओर मुडती, हरिवर्ष
क्षेत्र को दो विभागों में विभक्त करके ५६ हजार निदयों के परिवार के साथ,
जम्बूढ़ीप की जगती को नीचे से ध्वस्त करके पश्चिमदिग्वर्तीलवणसमुद्र
में जा भिली है। (हरिकंता णं महाणई पवहे पणवीसं जोयणाई विक्लंभेगं,
आद्धजोयणं उच्वेहेणं तयणंतरं च णं मायाए २ परिवद्धमाणी २ मुहमूले अद्धाहजाई जोयणस्याइं विक्कंभेणं पंच जोयणाइं उच्वेहेणं उभओ पासि दोहिं पडम
वरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं संपरिक्षिता। हरिकान्ता महानदी प्रवह में-द्रह
निर्गम में-विष्कम्भ की अपेक्षा २५ योजन की उद्रेध (गहराई) की अपेक्षा अर्ध
योजन की-दो कोदा की है इसके बाद वह कमशः प्रति पार्श्व में२०-२० धनुष
की वृद्धि से बहती २ समुद्र प्रवेदास्थान में २५० सो योजन प्रमाण विष्कम्भ-

मणी २ छत्पण्णाए सिल्छिसहरसेहिं समंगा अहे जगई दलइत्ता पच्चित्थिमेणं छवणसमुदं समत्पेइ' ते दिश्वन्त प्रपात कुंउना उत्तर हिञ्बती तीरण्य द्वारथी थावत नीक्षणती के भद्वानही द्विरवर्ष क्षेत्रमां प्रवाद्धित थती विकटापाती वृत्त वैतादय पर्वतने क्षेत्र थे। अन्य क्षेत्रमां द्विष्ठित थती विकटापाती वृत्त वैतादय पर्वतने क्षेत्र थे। अन्य छे। विकाशिमां विकाश के नित्र पर्वति व्यायी परिवार साथ जंजूदीपनी जगतीने हीवादने नीयेथी व्वस्त करीने परिवार हिञ्बती द्विष्ठा परिवार साथ जंजूदीपनी जगतीने हीवादने नीयेथी व्वस्त करीने परिवार विक्लंभेणं अद्धजोयणं उत्वेहेणं तयणंतरं च णं मायाए २ परिवद्धमाणी २ मुहमूले अद्धाइन्जाइं जोयणसयाइं विक्लंभेणं पंचजोयणाइं उद्येहेणं उभजो पासि दोहिं प्यमययेइ धाहिं वोहिय वणसंडेहिं संपरिक्रियत्ता' दिश्वनता भद्धा नहीं प्राद्ध दद्धनिर्णभमां विष्ठं लनी अपेक्षाओ २ प्रयोगन जेटली अंदिश (अदेध)नी अपेक्षाओ अर्था थे। अन केटली ओटले के थे। अर्थ छे। तथा का ते क्षेत्रशः प्रतिपार्श्वमा २०, २०, धनुष केटली अलिविर्धित थती

परिवर्द्धमाना २ मृखमूळे समुद्रप्रवेशे अर्द्धनृतीयानि योजनशतानि विष्कम्भेण विस्तारेण पश्चयोजनानि उद्वेशेन भूगतत्वेन, उभयोः पार्श्वयोः द्वाभ्यां पद्मवरवेदिकाभ्यां द्वाभ्यां च वनवण्डाभ्यां संपरिक्षिप्ता-परिवेष्टिता ॥स्व०१२॥

अथ हिम्बद्धर्थभरपर्वतवर्तिक्टवक्तव्यमाह-'महाहिमवंते णं' इत्यादि ।

युल्य-महाहिमवंते णं मंते! वासहरपव्वए कड्कूडा पण्णता ? गोयमा! अट्ठ कूडा पण्णता, तं जहा-सिद्धाययणकूडे? महाहिमवंत-कूडे२ हेमवयकूडे२ रोहियकूडे२ हिरिकूडे५ हिरिक्रेडे५ हिरिक्रेडे६ हिरिव्रेडे० वेरिलियकूडे८, एवं चुल्लिहिमवंतकूडाणं जा चेव वत्तवया सा चेव णेयव्वा। से केणट्टेणं मंते! एवं वुच्चइ महाहिमवंते वासहरपव्वए२?, गोयमा! महाहिमवंतेणं वासहरपव्वए चुल्लिहिमवंतं वासहरपव्वयं पणिहाय आयामुच्च-चुव्वेहिवक्षंभपरिक्खेवेणं महंततराए चेव दीहतराए चेव, महाहिमवंते य इत्थ देवे महिन्दीए जाव पल्लिओवमट्टिइए परिवसइ ॥सू०१३॥

छाया-महाहिमवति खलु भदन्त ! वर्षधरपर्वते कतिक्र्टानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! अष्ट-क्टानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-सिद्धायतनक्र्टं १ महाहिमवन्क्र्टं २ हैमवन्क्र्टं ३ रोहिताक्र्टं ४ हूनिक्टं ५ हिनिक्क्रंटं ६ हरिवर्षक्र्टं ७ वैद्ध्येक्र्टम् ८, एवं क्षुद्रहितवन्क्र्टानां यव वक्तव्यता सैव नेतव्या, अथ केनार्थेन भदन्त ! एवधुच्यते-महाहिमवान् वर्षधरपर्वतः २ ? गौतम ! महाहिमवान् खलु वर्षधरपर्वतः श्रुद्रहिमवन्तवर्षधरपर्वतं प्रणिधाय आयामोच्चत्वोद्धेषः विष्क्रमभपरिक्षेपेण महत्तरक एव दीर्घतरक एव महाहिमवांश्वात्र देवो महर्द्धिको यावत् पर्वोपमस्थितिकः परिवसति ॥ ॥ १ ३।।

टीका-'महाहिमवंते णं' इत्यादि 'महाहिमवंते णं भंते ! बासहरपव्यए कई कूडा पन्नचा ? गोयमा ! अट्टकूडा पन्नचा, तं जहा-सिद्धाययणकूडे १ महाहिमवंतकूडे २ हेमवयकूडे ३ रोहियकूडे ४ हिरिकूडे ५ हरिकंतकूडे ६ हरिवासकूडे ७ वेरुलियकूडे ८' अष्टकूटानि सिद्धायतनकूटम्-सिद्धानामायतनं गृहं तद्भृंप कूटम् १, महाहिमवत्कूटं-महाहिमवान् नाम

वाली और ५ योजन प्रमाण उद्वेघवाली हो जाती है। इसके दोनों पार्श्व भागां में दो पद्मवर वेदिकाएं और दो वन६ण्ड हैं। उनसे यह संक्षिप्त है ॥सू० १२॥

સમુદ્ર પ્રવેશ સ્થાનમાં ૨૫૦ અહીંસા યાજન હતાલુ વિષ્કંભવાળી અને પ યોજન પ્રમાણ ઉદ્દેષવાળી થઇ જાય છે. એના અન્તે પાર્ધ ભાગામાં એ પદ્મવર વેદિકાઓ અને એ વનખઉા છે. તેમનાથી એ સંપરિક્ષિપ્ત છે. ા સૂ ૧૨ ા

अधिष्ठातृ विशेषस्तस्य क्टम् निवासभूतं गिरिकृङ्गम् २, हैमवतक्टं-हैमवतोऽपि अधिष्ठाता-तस्य क्रटम् ३, रोहिताक्टं-रोहितामहानदी देवीक्टम् ४, हीक्टं-ही:-देवीविशेषः, तस्या क्रटम् ५, हरिकान्ताक्टं-हरिकान्तानदी-देवीक्रटम् ६. हरिवर्षक्टं-हरिवर्षः-हरिवर्षपतिस्तस्य क्रटम् ७, वैड्रयक्टं-वैड्रयं तदाख्यरत्नविशेषस्तस्य क्र्टं-वैड्र्यरत्नमयक्र्टम्, यद्वा-वैड्रयेः अधि-ष्ठातृ विशेषस्तस्य क्टम् ८, इत्यष्टक्टानामर्थः। 'एवं चुल्लहिमवंतक्र्डाणं जावेव वत्तव्वया

'महाहिमवंते णं भंते । वासहरपव्वए कइ कूडा पण्णात्ता '

टीकाथ-इस सूत्र द्वारा गौतमने प्रभु से ऐसा पूछा है-(महाहिमवंते णं भंते! वासहरण्वए कह कूडा पण्णत्ता) हे भदन्त! महाहिमवान् पर्वत पर कितने कूट कहे गये हैं-उत्तर में प्रभु कहते हैं-(गोयमा! अट्टकूडा पण्णत्ता) हे गौतम! महाहिमवान् पर्वत पर आठ कूट कहें गये हैं। (तं जहा) उनके नाम इस प्रकार से हैं (सिद्धाययणक्रेड), महाहिमवंतक्रेड, हेमवयक्रेड, रोहियक्रेड, हिरिक्रेड हरिकंतक्रेड, हरिवासक्रेड, वेरलियक्रेड) सिद्धायतनक्र्ट, महाहिमवत्क्र्ट, हैमवत्क्र्ट, रोहितक्र्ट, हीक्र्ट, हरिकान्तक्र्ट, हरिवर्षक्र्ट, एवं वैह्रर्यक्र्ट।

सिद्धों का आयतन एह रूप जो कूट है वह सिद्धायतन कूट है महा हिमवान नाम के अधिष्ठायक देव का जो कूट है वह महाहिमवत्कूद है। रोहि तामहानदी देवी का जो कूट है वह रोहितकूट है। ही देवी विशेष का जो कूट है बह हीकूट है। हरिकान्त नदी देवी का जो कूट है वह हरिकान्तकूट है। हरिवर्ष-पतिके कूट का नाम हरिवर्षकूट है। वैडूर्यरहनमय अथवा वैडूर्यनामक अधि-ष्ठायक देवविशेष का जो कूट है वह वैडूर्यकूट है।

'महाहिमवंते णं भंते! वासहरपव्वए कइ कूडा-पण्णता, इत्यादि'

टीडार्थ-आ सूत्र वडे गौतमे प्रकुने सेवा प्रश्न डर्था छे-'महाहिमवंते णं मंते! वासहरवव्वए कर कूडा पण्णता' है अहंत! महाहिमवान पर्वत उपर हैटला हूटा आवेला
छे. उत्तरमां प्रकु डहें छे-'गोयमा! अह कूडा पण्णत्ता' है गौतम! महाहिमवान पर्वत
हपर आहे हूटा छे. 'तं जहा' तेमना नामा आ प्रमाणे छे-'सिद्धाययणकूडे, महाहिमवांत कूडे, हेमवय कूडे, रोहिय कूडे, हिरिकूडे, हरिकंतकूडे, हरिवासकूडे, वेरस्थिकूडे' सिद्धायतन हूट, महाहिमवांत कूडे, हेमवय कूडे, रोहिय कूडे, हिरिकूडे, हरिकंतकूडे, हरिवासकूडे, वेरस्थिकूडे' सिद्धायतन हूट, महाहिमवां कूडे, हिरिकूडे, हरिकंतकूडे, हरिवासकूडे, वेरस्थिकूडे' सिद्धायतन हूट, महाहिमवां कूडे, रोहिय कूडे, हिरिकूडे, हरिकंतकूडे, हरिवासकूडे, वेरस्थिकूडे' सिद्धायतन हूट, महाहिमवां कूडे, रोहिय कूडे, हिरिकूडे, हरिकंतकूडे, हरिवासकूडें, वेरस्थिक्डें सिद्धायतन हूट, स्वर्ध हूट, (१)

(૧) સિદ્ધોનું આયતન-ગૃહ રૂપ જે કૂટ છે, તે સિદ્ધાયતન કૂટ છે. મહાહિમવાન્ નામક અધિષ્ઠાયક દેવ સંબંધી જે કૂટ છે તે મહાહિમવત્ કૂટ છે. રાહિતા મહાનદીના જે ફૂટ છે તે રાહિત ફૂટ છે. હી દેવી વિશેષના જે ફૂટ છે—તે હી ફૂટ છે હરિકાન્તા નદી દેવીના જે ફૂટ છે તે હરિકાન્ત ફૂટ છે. હરિકાન્ત ફૂટ છે.

सा चेव णेयव्या' एवं प्रदर्शितरीत्या क्षुद्रहिमयत्क्रहानां येव वक्तव्यता तद्धिकारेऽस्ति सैव वक्तव्यता एपामिष महाहिमवत्क्रहानां नेतव्या—वक्तव्या क्षेयेत्यर्थः, तथाहि क्रहानामुच्चस्वादि सिद्धायतनप्रासादानां मानादि तद्धिष्ठातृदेवानां च महर्द्धिकत्वादि यत्र राजधान्यो येन रूपेणैतत्सर्वमुपवर्णितं तत्सर्वमत्रापि वर्णनीयं पर्यवसितम् केवलं नामभेद्रतदेवानां तद्राजधानीनां चात्र वोध्यः। अधुना महाहिमवतो नामार्थे प्रदर्शियतुमाह— 'से केणहेणं भंते! एवं बुच्चइ महाहिमवंते वासहरपव्यए?' अथ केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते—महाहिमवान् वर्षधरपर्वतः २?, 'गोयमा! महाहिमवंते णं वासहरपव्यए चुल्लहिमवंतं वासहरपव्ययं पणिहाय आयामुचतुव्वहिनवंतं ख्रु वर्षधरपर्वतः क्षुद्रहिमवन्तं वर्षधर-तराण् चेव दीह-तराण् चेव' नवरम्—हे गौतम! महाहिमवान् ख्रु वर्षधरपर्वतः क्षुद्रहिमवन्तं वर्षधर-

इस क्षुद्रहिमवत् पर्वत संबंधी क्टों के विषय में जो वक्तव्यता पीछे कही जा चुकी है वही वक्तव्यता इन क्टों के भी संबंध में समझनी चाहिए यही बात (एवं क्षुल्लिहमवंतक्डाणं जा चेव वक्तव्या सच्चेव णेयव्वा) इस सूत्रपाठ द्वारा सूत्रकार ने कही है। इस तरह के कथन से क्टों की उच्चता आदि का सिद्धायतन प्रासादों के प्रमाण आदिका देवों में महद्धिकत्व आदिका तथा जहां पर जिन देवों की राजधानियां जिस रूप से वही गई है वह सब कथन यहां पर भी कर लेना चाहिए केवल देवों के नामों में और उनकी राजधानियों के नामों में भेद है (से केणहेणं भंते! एवं चुच्चइ महाहिमवंते वालहरपव्वए २९) हे भदन्त! आपने इस वर्षधर पर्वत का नाम ''महाहिमवान ऐसा किस कारण से कहा है। इसके उत्तर में प्रसुश्री कहते है (गोयमा! महाहिमवंते जं वालहरपव्वए चुल्लिहमवंतं वालहरपव्वयं पणिहाय आयामुच्चत्व विक्खंभ-परिक्खेवेणं महंततराए चेव दोहतराए चेव, महाहिमवंते य इत्थदेवे महिद्धिए-जाव पिल्ओचमिड्डए परिवसइ) हे गौतम! इस वर्षधर पर्वत का जो महाहि-

क्षे क्षुद्र द्विमवत् पर्वत संगंधी इंटोना विषे के वक्ष्तव्यता पद्धेद्वा स्पष्ट करवामां क्षावेद्यों के, तेक वक्ष्तव्यता को इंटोना संगंधमां पण काणी देवी की धंके. केक वात 'एवं चुल्लिहमवं तकूडाणं जा चेव वस्तव्यया सच्चेव णेयव्या' की सूत्रपाठ वडे सूत्रकार कहीं के. का प्रकारना कथनथी इंटोनी उच्चता वगेरे संगंधी, सिद्धायतन प्रासाद्वेता प्रमाण वगेरे विषे, देवेगां मद्धिक कित वगेरेना संगंधमां तेमक कथां के देवेगी राकधानीका के उपमां कंडेवामां कावेद्य के ते संगंधमां क्ष्मां क्ष्मां तेमक कथां के देवेगी राकधानीका के देवेगा नामामां क्ष्मे तेमनी राकधानीना नामामां तक्ष्यत के. 'से केणहेणं मंते! एवं चुच्चइ महाहिमवंते वासहरपव्यए २१' दे अदन्त! आप श्री को को वर्षधर पर्यतन नाम 'महाहिमवान' कोवुं था कारण्यों क्षुं के ? कोना कवालमां प्रसु केडे के-'गोयमा! महाहिमवंतें वासहरपव्यए चुल्लिहमवंतं वासहरपव्ययं पणिहाय आयामुच्चत्त विक्संभपरिक्सेवेणं महंतत्राए चेव दीहत्राए चेय, महाहमवंते य इत्थ देवे महिद्धिए जाव पल्लिकोवमद्रिइए-

पर्वतं प्रणिधाय प्रतीत्य अपेक्ष्येत्यर्थः आयामोचन्त्रोद्वेयविष्कम्भपिरक्षेपेण अत्रायामादीनां समाहारद्वन्द्वस्तेनैकवद्भावः तत्र क्षुद्रहिनवदुच्चन्दापेक्षया प्रस्तुतो गिहिः गहत्तरक एव अति-महानेव आयामापेक्षया दीर्घतरक एव अतिदीर्घ एव, एवस्रद्वेधाद्यपेक्षयाऽपि क्षुद्रहिनवतोऽयं गिहि महोद्वेधयुक्तः महाविष्कम्भयुक्तः महापिरक्षेत्युक्तो भावनीयः । इत्येवं महाहिमवतो नाम्नो हेतुस्रुक्तवा हेत्वन्तरंभाह—'महाहिमवंतेय इत्थ देवे महिद्धीए जाव पिश्योवमिद्दिए परिवसइ' महाहिमवांश्रात्र देवः परिवसवीत्यित्रभेगान्वयः स कीद्यः ? इत्याद-महर्दिको यावत् पत्योपमस्थितिकः-महर्दिक इत्यारभ्य पत्थोपमस्थितिक इत्यन्तपद्रसङ्ग्रहः साथौं-ऽष्टमस्त्रस्थ विजयदेवाधिकाराद् वोध्यः ।। ह्व १३॥

अथ इरिवर्षनामकवर्षवक्तव्यमाइ-'कहिणं भंते' इत्यादि ।

मूलम्-कहि णं भंते ! जंबुदीवे दीवे हरिवासे णामं वाते पण्णसे ? गोयमा ! णिसहस्स वासहरपव्वयस्स दिवखणेणं महाहिमवंतवासहर-

मवान् ऐसा नाम कहा गया है उसका कारण " क्षुद्रहिमवान् वर्षघर पर्वतकी अपेक्षा इसका आयाम इसका उच्चत्व, इसका विष्करम और इसका परिक्षेप यह सब अत्यधिक है, दीर्घतर है, 'अर्थात् क्षुद्रहिमवान् पर्वतकी उच्चता की अपेक्षा यह गिरि महत्तरक है अतिमहान् है और आयामकी अपेक्षा दीर्घतरक है इसी तरह उब्वेध आदि की अपेक्षा यह गिरि क्षुद्रहिमवान् के उब्वेधादिकी अपेक्षा महाउब्रेधवाला है महाविष्कं भवाला है और महापरिक्षेपवाला है। अथवा हे गौतम! इस वर्षधर का जो ऐसा नाम हुआ है उसना कारण यह भी है कि इसमे महाहिमवान् नामका एक देव रहता है यह देव महर्द्धिक आदि विद्रोषणों वाला है यावत् इसकी एक पल्योपम की आयु है। यहां यावत्यद से संग्राह्य पाठ को अष्टमस्त्रस्थ विजय देवाधिकार से जान लेना चाहिए॥१३॥

परिवसइ' & ગૌતમ! એ વર્ષ ધર પર્વતનું જે મહાહિમવાન્ એવું નામ કહેવામાં આવેલ છે તેનું કારણ 'ક્ષુદ્રાહેમવાન્ વર્ષ ધર પર્ગતની અપેક્ષાએ એના આયામ એની ઊંચાઇ એના વિષ્કંભ અને એના પરિક્ષેપ એ બધું મહાન્ છે, અધિક છે, દીર્ધતર છે.' એટલે કે ક્ષુદ્રહિમવાન્ પવર્તની હ્ર-ચતાની અપેક્ષાએ એ ગિરિ મહત્તરક છે. અતિ મહાન્ છે અને આયામની અપેક્ષાએ દીર્ધતરક છે. આ પ્રમાણે ઉદ્દેધની અપેક્ષાએ એ ગિરિ ક્ષુદ્ર-હિમવાન્ના ઉદ્દેધાદિની અપેક્ષાએ મહા ઉદ્દેધવાળા છે મહાવિષ્કંભવાળા છે અને મહા પરિક્ષેપવાળા છે. અથવા હે ગૌતમ! એ વર્ષ ધરનું જે એવું નાપ પ્રસિદ્ધ થયું છે તેનું કારણ આ પણ છે કે એમાં મહાહિમવાન્ નામે એક દેવ રહે છે. આ દેવ મહદિક વગેર વિશેષણા વાળા છે યાવત્ એનું એક પલ્યાપમ જેટલું આયુ છે. અહીં ચાવત્ પદથી સંગ્રાદ્યા પાઠને અષ્ટમ સ્તુસ્થ વિજય દેવાયિકારથી લાણી લેવા તોઇએ. ા સ્. ૧૩ ા

पव्ययस्त उत्तरेणं पुरित्थलवणसमुद्दस्स पञ्चत्थिमेणं पञ्चत्थिमलवण-समुद्दस पुरित्थमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे हरिवासे णामं वासे पण्णत्ते, एवं जाव पचरिथमिछाए कोडीए पचरिथमिछं छवणसमुद्दं पुट्टे, अट्ट जोयणसहस्माइं चतारि य एगवीसे जोयणसए एगं च एगूणवीसइ भागं जोयणस्स विक्लंभेणं, तस्स बाहा पुरस्थिमञ्बस्थिमेणं तेरस जोयणसहस्साइं तिण्णि य एगसट्टे जोयणसए छच एगूणवीसइभाए जोयणस्स अद्धभागं च आयामेणंति, तस्स जीवा उत्तरेणं पाईणपडी-णयया दुहा लवणसमुद्दं पुट्टा पुरिथिमिछाए कोडीए पुरिधिमिछं जाव **छवणसमुदं पुडा तेत्रत्तरिं जोयणसहस्साइं णत य एग्रत्तरे** जोयसए सत्तरस य एगुणवीसइभाए जोयणस्स अद्धभागं च आयामेणं, तस्स-धणुं दाहिणेणं चउरासीइं जोयणसहस्साइं सोलस जोयणाइं चत्तारि एयूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्लेवेणं! हरिवासस्स णं भंते! वासस्स-केरिसए अत्मध्नभावपडोद्यारे पण्णत्तेश, गोद्यमा! बहुसमरसणिकेमृमि-भागे पण्णते जाव मणीहिं तणेहि य उवसोभिए एवं मणीणं तणाण य वण्णो गंधो फास्रो सद्दो भाणियड्वो, हरिवासे णं तत्थर देसे तहिंर वहवे खुड्डाखुड्डियाओ एवं जो सुसमाए अणुभाओ सो चेव अपरिसेसो वत्तवोत्ति ! कहि णं भंते ! हरिवासे वासे वियडावई णामं बट्टवेयद्ध-पव्यए पण्णत्ते ? गोयमा ! हरीए महाणईए पच्चित्थमेणं हरिक्रंताए महा-णईए पुरिथमेणं हरिवासस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं वियडावई णामं षष्टवेयद्धपव्यए पण्णत्ते, एवं जो चेय सदावइस्स विक्खंभुचनुव्वेह परि-क्खेवसंठाणवण्णावासो य सो चेव वियडावइस्स वि भाणियव्वो, णवरं अरुणो देवो पउमाइं जाव वियडावइवण्णाभाइं अरुणे य इत्थ देवे महि-द्धीए एवं जाव दाहिणेणं रायहाणी णेयव्वा, से केणट्टेणं भंते ! एवं वुचइ-हरिवासे हरिवासे ?, गोयमा! हरिवासे णं मणुआ अरुणा अरुणो भासा सेया 🤨 संखदलसिणकासा हरिवासे य इत्थ देवे महिद्धीए जाव

पिलओवमिडिइए परिवसइ, से तेणट्टेणं गोयमा! एवं वुच्चइ ॥सू० १४॥

छाया-क्व खळु भदन्त ! जम्बूद्वीपे द्वीपे इरिवर्षे नाम वर्षे प्रज्ञप्तम् ?, गौतम ! निषधस्य वर्षधरपर्वतस्य दक्षिणेन महाहिमबद्वर्षधरपर्वतस्य उत्तरेण पौरस्त्यख्वणसमुद्रस्य पश्चिमेन पश्चिमलवणसंपुदस्य पौरस्तरेन अत्र खलु जम्बुद्वीपे द्वीपे हरिवर्षे नाम वर्षे प्रज्ञप्तम् एवं यावत् पाश्चात्यया कोटचा पाश्चात्यं लागसप्तदं स्प्रष्टम् अष्ट योजनसहस्राणि चलारि च एक-विंशानि योजनशतानि एकं च एकोनविंशतिभागं योजनस्य विष्कम्भेण, तस्य बाहा पौर-स्त्यपश्चिमेन त्रयोदशयोजनसहस्राणि त्रीणि च एकष्ष्टानि योजनशतानि पटे च एकोनर्वि-शतिभागान् योजनस्य अर्द्धमागं च आयामेनेति, तस्य जीवा उत्तरेण प्राचीनप्रती-चीनाऽऽयता द्विधा लवणसपुदं स्पृष्टा पौर्स्त्यया कोटचा पौर्स्त्यं यावत् लवणसपुदं त्रिसप्ततानि योजनसहस्राणि नव च एकोत्तराणि योजनशतानि सप्तदश च एकोनविंशति-भागान् योजनस्य अर्द्धभागं च आयामेन, तस्य धतुः दक्षिणेन चतुरशीतानि योजनसदस्ताणि षोडश योजनानि चतुर एकोनविंशतिभागान योजनस्य परिक्षेपैण। हरिवर्षस्य खळु मदन्त ! वर्षस्य कीदशकः आकारभावप्रत्यवदारः प्रज्ञप्तः ?, गौतम ! बहुसमरमणीयो भूमि-भागः अज्ञप्तः यावद् मणिभिस्तुणैश्रोपश्चोभितः, एवं मणीनां तृणानां च वध्रौं गन्धः स्पर्शः शब्दो भणितब्यः, इरिवर्षे खळ तत्र २ देशे तत्र २ बहुवः श्वद्राश्वद्रिका एवं च य एव सुषमाया अनुभावः स एव अपरिशेषो वक्तव्य इति । क्व खु भदन्त ! हरिवर्षे वर्षे विकटापाती नाम वृत्तवैतादचपर्वतः प्रज्ञप्तः ?, गौतम ! हरिता महानद्याः पश्चिमेन हरिकान्ताया महानद्याः पौरस्त्येन हरिवर्षस्य वर्षस्य बहुमध्यदेशमागः, अत्र खुळ विकटापाती नाम पूर्विताहचपर्वतः प्रज्ञप्तः, एवं य एव शब्दापातिनो विष्कम्भोच्चत्वोद्वेषपरिक्षेपसंस्थानवर्णावासश्च स एव विकटापातिनोऽपि भणितव्यः, नवस्म् अरुणो देवः पद्मानि यावत विकटापाति वर्णामानि अरुणोऽत्र देवो महर्द्धिक एवं यावत दक्षिणेन राजधानी नेतव्या, अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते हरिवर्षं वर्षम् ?, गीतम ! हरिवर्षे खळ वर्षे मनुजा अरुणा अरुणावभासाः श्वेताश्र शङ्क-दलसम्निकाशाः, इरिवर्पश्चात्र देवो महर्द्धिको यावत् पत्योपमस्थितिकः परिवसति ॥सू० १४॥

टीका-'कहि णं मंते ! जंबुहीवे दीवे हरिवासे णामं वासे पश्चते' क्व खल भदन्त ! जम्बूढीपे द्वीपे हरिवर्ष नाम वर्षे प्रज्ञप्तम् ?, 'गोयमा ! णिसहस्स वासहरपव्वयस्स दिवखणेणं

हरिवर्षनामक क्षेत्रकी वक्तव्यता

कि एं भंते ! जम्बुद्दीवे दीवे हरिवासे णामं वासे पण्णते' टीकार्थ-गौतमस्वामीने प्रभु से इस सूत्र द्वारा ऐसा पूछा है-(किह णं भंते !

&रिवर्ष नामक क्षेत्रनी वक्तव्यता

'कहि णं भंते ! जम्बुद्दीवे दीवे हरिवासे णामं वासे पण्णत्ते' इत्यादि टीकार्थ-गीतमे प्रभुने व्या सूत्र विके स्थेवे। प्रश्न क्वेरि छे के 'कहि णं भंते जम्बुदीवे महाहिमवंतवासदरपच्चयस्स उत्तरेणं पुरित्थमलवणसमुद्दस्य पच्चित्थिमेणं पच्चित्थमलवणसमुद्रस्य पुरित्थमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे हिर्त्वासे णामं वासे पण्णत्ते' गौतम ! निषथस्य वर्षधरपवंतस्य दक्षिणेन महाहिमवर्द्धधरपवंतस्य उत्तरेण पौरस्त्यलवणसमुद्रस्य पश्चिमेन पश्चिमलवणसमुद्रस्य पौरस्त्येन अत्र खल जम्बृद्धीये द्वीपे हिर्त्वर्षनाम वर्ष प्रज्ञप्तम् 'एवं जाव पच्चित्थिमिलाए कोडीए पच्चित्थिमिललं लवणसमुदं पुहे' एवं यावत् पाश्चात्यया कोटचा पाश्चात्थिमिलाए कोडीए पच्चित्थिमिललं लवणसमुदं पुहे' एवं यावत् पाश्चात्यया कोटचा पाश्चात्थिमिलाणं कोडीए पच्चित्थिमिललं लवणसमुदं चचारि य एग्वीसे जोयणसए एगं च एग्याव्यीसङ्भागं जोयणस्य विक्लंभेणं' हिर्वर्षवर्षस्य मानमाह—अन्दी योजनसहस्राणि चत्वारिच-एकविशानि एकविश्वत्यधिकानि एकं च एकोनविश्वतिभागान्—एकोनविश्वतितमभागान् अत्र प्राकृतत्वात्तमन्त्रोपः, योजनस्य विक्लम्भेण विस्तारेण, महाहिमवतो द्विग्रणविष्कम्भकत्वादिति । अथास्य वाहा जीवा धनुष्युल्ठान्याह—'तस्स बाहा' इत्यादि—'तस्स बाहा पुरित्थम जम्बृद्धीवे दीवे हरिवासे णान्नं वासे पण्णत्ते) हे भदन्त ! इस जम्बृद्धीप नामके

जम्बूहीचे दीवे हारवासे णार्त्र वासे पण्णत्ते) हे भद्नत ! इस जम्बूदीप नामके द्वीप में हरिवर्ष नामका क्षेत्र कहा पर कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—(गोयमा ! णिसहस्त वासहरपव्वयस्स दिवलणेणं महाहिमवंतवासहरपव्वयस्स उत्तरेणं पुरित्थमलवणसमुद्दस्स पच्चित्थमेणं, पच्चित्थमलवणसमुद्दस्स पुरित्थमेणं एत्थ णं जंबुदीवे दीवे हरिवासे णामं वासे पण्णत्ते) हे गौतम ! निषध वर्षधर पर्वत की दक्षिणदिशामें एवं महाहिमवान् पर्वत की उत्तर दिशा में तथा पूर्व दिग्वर्ती लवणसमुद्र की पिथमदिशा में एवं पिश्चमदिग्वर्ती लवणसमुद्र की पूर्व दिश्वर्ती लवणसमुद्र की पिथमदिशा में एवं पिश्चमदिग्वर्ती लवणसमुद्र की पूर्व दिशा में जम्बूद्वीप नामके द्वीप के भीतर हरिवर्ष नामका क्षेत्र कहा गया है (एवं जाव पञ्चित्थिमिल्लाए कोडीए पच्चित्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुद्दे, अद्व जोयण सहस्साइं चत्तारि य एगवीसे जोयणक्षए एगंच एग्जवीसइ भागं जोयणस्स विक्लंभेणं) इस तरह यावत यह क्षेत्र पिश्चमदिग्वर्ती कोटी के द्वारा पश्चिमदिग्वर्ती लवण समुद्र को छूता है इसका विष्कम्भ ८४२१ ने योजन का

दीवे हरिवासे णामं वासे पण्णते' हे लहन्त! ओ જं अदीय नामं द्वीपमां हरिवर्ष नामं क्षेत्र अया स्थणे आवेल छे? ओना जवाणमां प्रसु उहें छे-'गोयमा! णिसहस्स वासहरपव्ययस्य दिव्यणेणं महाहिमवंतवासहरपव्ययस्य चत्तरेणं पुरिधमळवणसमुद्दस्य पच्चित्रमेणं, पच्चित्र्यज्वणसमुद्दस्य पुरिथमेणं एत्थणं जंबुद्दीवे दीवे हरिवासे णामं वासे पण्णत्ते' हे गौतम! निषधवर्षधर पर्वतनी दक्षिणु दिशामां तेमं महाहिमवान् पर्वतनी छत्तर दिशामां तेमं पूर्व हिण्वर्ती लवणु समुद्रनी पश्चिम दिशामां तथा पश्चिमदिण्वती लवणुसमुद्रनी पूर्व दिशामां कं अद्वीप नामं दीपनी आंदर हरिवर्ष नामं केत्र आवेल छे. 'एवं जाव पच्चित्रिनिल्हाए कोडीए पच्चित्रिमिल्हं छवणसमुद्दं पुट्टे, अटुजोयण सहस्साइं चत्ता य एगवीसे जोयणसए एगं च एगूणवीसद्दमागं जोयणस्य विक्लंभेणं' आ प्रमाणे यावत् आ क्षेत्र पश्चिम हिण्वर्ती हैं। शिथी पश्चिमदिशा सं अधी लवणुसमुद्रने स्पर्शे छे. आने। विष्कं ल

पच्चत्थिमेणं तेरस जीयणसहस्साइं तिष्णि य एगसहे जीयणसए' तस्य हरिवर्षवर्षस्य बाहा पौरस्त्यपश्चिमेन पूर्वपश्चिमयोः त्रयोदश योजनसहस्राणि त्रीणि च एकपष्टानि एकपष्टयधि-कानि योजनशतानि 'छच्च एगूणवीसइभाए जोयणस्स' षट्च एकोनविंशतिभागान् योजः नस्य 'अद्धभागं च आयामेणंति' अर्द्धभागं च आयामेन-दैध्येण, इति । 'तस्स जीवा उत्तरेणं पाईण पडीणायया दुहा लवणसम्रुदं पुटा पुरिव्यमिल्लाए कोडीए' तस्य जीवा उत्तरेण उत्तर-दिग्भागे प्राचीनप्रतीचीनायता पूर्वपश्चिमदिशोदींघी, द्विधा छवणसमुद्रं स्पृष्टा पौरस्त्यया-पूर्वदिग्भवया कोटचा~कोणेन 'पुरत्थिमिन्छं जाव' पौरस्त्यं यावत् छवणसमुद्रं स्पृष्टा, याव-त्पदेन पाश्चात्यया कोटचा पश्चिममिति सङ्ग्राह्यम् छवणसमुद्रं स्पृष्टा, 'तेवत्तरिं–जोयण-सहस्साई णव य एगुत्तरे जोयणसए' त्रिसप्ततानि त्रिसप्तत्यधिकानि योजनसहस्राणि नव च एकोत्तरःणि एकाधिकानि योजनशतानि 'सत्तरस य एगुणवीसइमाए जोयणस्स अद्भागं च आयामेणं' सप्तदश च एकोनविंशतिभागान् योजनस्य अर्द्धभागं च आयामेन, 'तस्स धणुं है (तस्स वाहा पुरित्थमपच्चित्थमेणं तेरसजोयणसहस्साइं तिण्णि य एगसहे जोयणसए छच्च एगूणवीसहभाए जोयणस्स अद्धभागं च आयामेणं ति) इसकी बाहा पूर्व पश्चिम में आयामकी अपेक्षा १३३६१ योजन की है और एक योजन के १९ भागों में ६ भाग प्रमाण और अर्धभाग प्रमाण है। (तस्सन्जीवा उत्तरेणं पाडीणपडीणायया दुहा लवणसमुदं पुंडा पुरित्थिमिल्लाए कोडोए पुरित्थिमिल्लं जाव लवणसमुद्दं पुद्वा तेवत्तरिं जोयणसहस्साइं णव य एगुत्तरे जोयणसए सत्तरसय एग्णवीसइ भाए जोयणस्स अद्धभागं च आयामेणं) उसकी जीवा उत्तर दिशामें पूर्व से पश्चिमतक लम्बी है यह पूर्व दिशा संबंधी कोटी से पूर्व-दिक्रसंबंधी लवणसमुद्र का स्पर्श करती है और पश्चिमदिशा संबंधी कोटि से पश्चिमदिग्वर्ती लवण समुद्र को स्पर्श करती है यह जीवा आयाम की अपेक्षा ७३९०१५६ योजन और अर्द्ध भाग प्रमाण है (तस्स घणुं दाहिणेणं चडरासीइं

८४२१ चे थे। अन केटेंसे। छे. 'तस्स वाहा पुरित्थमपच्चित्थमेणं तेरस जोयणसहस्साइं तिण्णिय एगसहे जोयणसए छच्च एगूणवीसइभाए जोयणस्स अद्धभागं च आयामेणं ति' छेनी वाहा पूर्व पश्चिममां आयामनी अपेक्षाके १३३६१ थे। अन केटेंसी छे. अने छेड थे। अनना १६ लाजे। मां ६ लाज प्रभाष्ट्र अने अर्ध लाज प्रभाष्ट्र छे. 'तस्स जीवा उत्तरेणं पाडीण पंडीणाया हुद्दा छवणसमुद्दं पुट्ठा पुरित्थिमिल्छाए कोडीए पुरित्थिमिल्छं जाव छवणसमुद्दं पुट्ठा तेवत्तरिं जोयणसाहस्साइं णवय एगुत्तरे जोयणसए सत्तरस्य एगूणवीसइभाए जोयणस्स अद्धभागं च आधामेण' छेनी छवा उत्तरिक्षामां पूर्वथी पश्चिम सुधी लांजी छे. छे पूर्व हिशा संभाधी डे।टिथी पृविधि सुविधी सुविधी पृविधी पृविधी सुविधी सुविधी सुविधी सुविधी पश्चिम शिवी सुविधी सुविधी पश्चिम हिइवती स्वष्यु समुद्रने स्पर्श छे छने पश्चिमिशा संभाधी डे।टिथी पश्चिम हिइवती स्वष्यु समुद्रने स्पर्श छे छे छवा आयामनी अपेक्षाओ ७३६०१ तृष्ट थे। अने अर्द्धाण प्रभाष्ट्र छे. 'तस्स धणुं दाहिणें चडरासीइं

दाहिणेणं चडरासीई जोयणसहस्साई सोलस जे.यणाई चत्तारि एगूणवीसह भाए जोयणस्स परिक्खेवेणं' तस्य धनुः दक्षिणेन चतुरशीतानि चतुरशीत्यधिकानि योजनसहस्राणि पोडश-योजनानि चतुर एकोनविंशति भागान् योजनस्य परिक्षेपेणा अथ हरिवर्षस्य स्वरूपं पिपृच्छि-पुराह-'हरिवासस्स णं भंते' इत्यादि, हे भदन्त ! हरिवर्षस्य खळु वर्षस्य 'केरिसए आगार-भावपढोयारे' कीद्यकः-कीद्यः आकारमायप्रत्यवतारः तत्राऽऽकारः-स्वरूपं, भावाः-पृथि-वीवर्षयरप्रसृतयस्तदन्तर्भताः पदार्थाः तद्युकाः प्रत्यवतारः-प्रकटीभावः 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तः ? इति प्रश्ने अगवानुत्तरमाह-'गोयमा ! वहुसमरमणिज्जे' हे गौतम ! वहुसमरमणीयः बहुसमः अत्यन्तसमो अंत एव रमणीय:-सुन्दरः 'भूमिभागे पण्णत्ते' भूमिभागः प्रज्ञप्तः, स च की दशः इत्याह-'जाव मणीहिं तणेहिं य उवसोभिए' यावत् मणिभिः अत्र यावत्पदेन नानाविध पञ्च-वर्णेरिति संग्रह्मम्-एताद्यैः मणिभिः वैद्वर्यस्फटिकादिभिरूपशोभित इत्यग्रिमेण सम्बन्धः, जोयणसहस्साई सोलस जोयणाई चत्तारि एग्एणवीसइभाए जोयणस्स परि-क्खेबेगं) इसका धनुःग्रह्य परिक्षेप की अपेक्षा दक्षिण दिशा में ८४०१६ रू घोजन का है (इरिवासस्स णं भंते! वासस्स केरिसए आयार भावपडोगारे पण्णत्ते) अब गौतमस्वामी ने प्रभु से ऐसा पूछा है–हे भदन्त ! हरिवर्ष क्षेत्रका आकार भाव प्रत्यवतार-स्वरूप-कैसा कहा गया है इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-(गोयमा! बहुसमरमणिङ्जे भूमिभागे पण्णले, जाव मणीहिं तणेहिय उवसोभिए एवं मणीणं तंजाण य वण्णो गंधो फासो सदो भाणियव्वो) हे गौतम !हरिवर्ष क्षेत्रका मूक्षिभाग बहुसमरमणीय कहा गया है यावत् वह मणियों से और तृणों से उपशोभित हैं इसी प्रकार से मणियों के एवं तृणों के वर्ण, गंध, स्पर्श और शब्द का यहां पर वर्णन करस्रेना चाहिये यहां पर 'जाव मणीहिं' के साथ आगत यावत्पद से 'नानाविध पंचवर्णैः' इस विशेषणरूप पद का ग्रहण हुआ है वर्ण गंधादि कों का वर्णन राजप्रदनीय सूत्र के १५ वें सूत्र से छेकर १९ वें सूत्र तक

जोयणसहस्ताइं सोलस जोयणाइं चतारि एगूणबीसइभाए जोयणस्स परिक्लेवेणं' स्थिति। धनुपृष्ठं परिक्षेपनी स्थिक्षास्थ हिशामां ८४०१६ के विकास के हिसए आयारमावपडोयारे पण्णत्ते' ढेवे शैतमे प्रभुने स्था कातना प्रक्ष हिशे हैं है लहंत! ढिशिवर्ष क्षेत्रनेत साहत लाव प्रत्यवतार से है है स्वत्र्य हैं हैं हेंदेवामां स्थावेत है. स्थान कवालमां प्रभु हेंदे हैं-'गोयमा! बहुसमरमणिक्ते मूमि मागे पण्णत्ते, जाव मणीहं तणेहिय उवसोकित एवं मणीणं तणाणय वण्णो गंघो कासो सहो भाणियड्डो' है शैतम ! ढिश्वर्ष क्षेत्रनेत ल्यानमा लड्डसमरमाधिय हेंदेवामां स्थावेत है. यावत् तो मिल्डिशिय स्थावत् क्षेत्रनेत ल्यानमा लड्डसमरमाधीय हेंदेवामां स्थावेत है. यावत् तो मिल्डिशिय स्थावत् एहंथी उपरेतित हे. स्थाप्त प्रभाषे क मिल्डिशिय स्थावत् त्रिक्ष हिम्बर्ण वर्षान हरी होतुं के स्थावत् प्रदर्श स्थावत् प्रदर्श वर्षान हरी होतुं के स्थावत् प्रदर्श स्थावत् प्रदर्श वर्षान हरी होतुं के विशेष इप पहनुं श्रहण् श्रिशं माणिहिं' नी साथ स्थावेत यावत् प्रदर्श कि का प्रमाणिहं' से विशेष इप पहनुं श्रहण् श्रिशं

पुनः तृणैश्रोपशोभितः, 'प्वं मणीणं तणाण य वण्णो गंधो फासो सदौ भाणियवदी' एवम् अनेन प्रकारेण मणीनां तृणानां च वर्णः -कृष्णादिः गन्यः स्वर्धः शब्दश्र भणितव्यः वक्तव्यः एतद्वर्णनं राजश्रीयस्त्रस्य पञ्चदशस्त्रादारभ्यैकोनविंशतितमस्त्रपर्यन्तस्त्रेषु स्थितमिति जिज्ञासुभिस्ततो प्राह्मम्। अथात्र विद्यमानजलाशयस्यरूपं प्रदर्शयितुमाह-'हरिवासे णं' इत्यादि, इत्विषे खल 'तत्थ २ देसे तहिं २ वहवे खुड़ा खुड़ियाओ' तत्र तत्र हत्विधिविर्ति त्तर्सिम्स्तिम् देशे तत्र तत्र तदवान्तर प्रदेशे बहवः - अनेका श्रुद्राश्चद्रिकाः वाविकाः पुष्करि-ण्यः दीर्घिकाः गुञ्जालिकाः सरः पङ्क्तिकाः सरः सरःपङ्क्तिकाः विलपङ्क्तिकाः, आसां वर्णनं विशेषजिज्ञास्रभिः राजप्रश्लीयस्त्रस्य चतुष्षष्टितनस्त्रत्रस्य मत्कृता सुवोधिनी टीका विलो-कनीया । अत्र काल निर्णयार्थमाइ-'एवं जो स्रुसमाए' इत्यादि, एवम् उक्तप्रकारेण वर्ण्यमाने तिस्मिन् क्षेत्रे यः सुषमायाः सुषमारूयावसर्षिणी द्वितीयारकस्य 'अणुभावो सो चेव अपरि-सेसो वत्तव्वोत्ति' अनुभावः प्रभावः, स एव अपरिशेषः निःशेषः वक्तव्यः इति, अवास्य क्षेत्रस्य विभाजकपर्वतमाइ-'कहि णं मंते !' इत्यादि, 'कहि णं मंते ! हरिवासे वासे विय-की व्याख्या में किया गया है अतः वहां से इस कथन को समझछेना चाहिये (हरिवासे णं तत्थ २ देसे, तिहं २ वहवे खुड़ा खुड़डियाओ, एवं जो सुसमाए अणुभावो सो चेव अपरिसेसो वसव्वोसि) हरिवर्ष क्षेत्र में जगह जगह अनेक छोटी बडी वापिकाएं हैं पुष्करिणियां हैं दीर्घिकाएं हैं, गुज़ालिकाएं हैं, सर है सरपङ्क्तियां है इत्यादिरूप से जैसा इनका वर्णन राजप्रदनीयसूच के ६४ वें सूत्र में किया गया है वैसा ही वर्णन यहां पर भी जानलेना चाहिये इस क्षेत्र में अवसर्पिणि का जो बितीय आरक सुषमानामका है उसका ही प्रभाव रहता है अतः उसका ही यहां पर सम्पूर्ण रूप से वर्णन करछेना चाहिये (कहि णं अंते ! हरिवासे वियडावईणामं बहवेयडूगव्वए पण्ण्ने) हे भदन्त ! हरिवर्षक्षेत्र में विकटापित नामका वृत्तवैताढ्य पर्वत कहां पर कहा गया है ? इसके उत्तर में

છે. વર્લું –ગંધાદિનું વર્લુન 'રાજપ્રશ્નીય સૂત્ર' ના ૧૫માં સૂત્રથી ૧૯માં સૂત્ર સુધીની ત્યાખ્યામાં કરવામાં આવેલ છે. એથી આ કથન વિશે ત્યાંથી જ જાણી લેવું જોઈએ. 'हरिवासेण तत्थ २ देसे, तिहं २ वहवे खुड्डाखुड्डियाओ, एवं जो सुसमाए अणुमावो सो चेव अपिरसेसो वत्तव्योत्ति' હરિવર્ષ क्षेत्रमાં સ્થાન –સ્થાન ઉપર ઘણી નાની –મેટી વાપિકાઓ છે, પુષ્કરિણીઓ છે, દીર્ઘિકાઓ છે, શું જાલિકાઓ છે, સરા છે અને સરપંક્તિએ છે ઇત્યાદિ રૂપમાં એમનું જે પ્રમાણે વર્લુન 'રાજપ્રશ્નીય' સૂત્રના ૧૪માં કરવામાં આવેલ છે તેવું જ વર્લુન અહીં પણ જાણી લેવું જોઇએ. એ ક્ષેત્રમાં જે અવસપિંણી નામક દિતીય અરક સુષમા નામક છે, તેના જ પ્રભાવ રહે છે. એથી અત્રે તેનું જ સંપૂર્લુ રૂપમા વર્લુન સમજ લેવું જોઈએ. 'कहि णं મંતે! हरिवासे वासे वियहावई णामं वट्टदेयहड़ पव्वए पण्णत्ते' હે લહેત! હરિવર્ષ ક્ષેત્રમાં વિકટાપતિ નામક એક છત્તવૈતાહય પર્વત ક્યાં

डावई णामं बट्टवेयद्धपञ्चए पण्णत्ते' क्व ख्लु भदन्त ! हरिवर्षे वर्षे विकटापाती नाम धृत्तवैता-ढचपर्वतः प्रज्ञप्तः, 'गोयमा ! हरीष महाणईष पच्चित्थमेणं हरिकंताष महाणईष पुरित्यमेणं हरिवासस्स २ बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं वियङावई णामं बहुवेयद्धपञ्चए पणाते' उत्तर-ह्मंत्र-हे गौतम ! हरितः हरित्सिल्लाया महानद्याः पश्चिमेन पश्चिमायां दिशि हरिकान्ताया महानद्याः पौरस्त्येन दरिवर्षस्य वर्षस्य बहुमध्यदेशसागोऽस्ति, अत्र अत्रान्तरे खळ विकटा-पाती विकटापातिनामा वृत्तवैदाढचपर्दतः प्रज्ञप्तः, अञ् निगमयल्लाघवार्थमतिदेशस्त्रमाह 'एवं जो चेव सहावहस्स विवसंग्रुच्चचुव्वेहपरिक्खेवसंठाणवण्णवासो य सो चेव वियखावहस्स वि आणियव्यो' एवम् उक्तप्रकारेण विकटापाति वृत्तवैत्ताद्यपर्वतवर्णने क्रियमाणे य एव शब्दःपातिनः -शब्दापातित्रत्तवैतादचपर्वतस्य विष्कम्भोच्चत्वोद्वेधपरिक्षेपसंस्थानवर्णावःसः विष्क्रमादीनां वर्णनपद्धतिः, चकारात् तत्रत्य प्रासादतत्स्वामि राजधान्यादि सङ्ग्रहो बोध्यः, स एव विकट।पातिनोऽपि भणितव्यः । 'णवरं अरुणो देवो पउमाई जाव बियडावइ वण्णा-भाई अरुणे य इत्थ देवे महिद्धीए एवं जाब दाहिलेणं रायहाणी णेयव्वा' नवरं केवल विक-प्रभु कहते हैं (गोयमा ! हरीए सहाणईए पच्चत्थिमेण हरिकंताए महाणईए पुरिक्षमेणं हरिवासस्स २ बहुमज्झदेसभाए एत्थणं वियडावई णामं वहवेयडू पच्चए पण्णत्ते) हे गौतम ! हरितनाइकी महानदी की पश्चिमदिशामें और हरि-कान्त्रमहानदी की पूर्वदिशा में इस हरिवर्ध क्षेत्र का वहुमध्यभाग है सो वहीं पर विकटापाती वृतवैतादय पर्वत कहा गया है (एवं जो चेव सदावहस्स विक्खं-मुच्यतुद्देहपरिक्षेव संठाणवण्णावासो सो खेव वियडावइस्स वि भाणियद्वो)

आवेल छे ? ओना जवाणमां प्रक्षु ठक्के छे. 'गोयमा ! हरीए महाणईए पच्चित्यमेणं हरिकंताए महाणईए पुरिथमेणं हरिवासस्स २ बहुमज्झदेसभाए एथणं वियहावई णामं वहुवेयहृद्धवृद्धण् पण्णत्ते' के जीतम ! करित नामक महानहीनी पश्चिम दिशामां अने करिकान्त महानहीनी पूर्व' दिशामां ओ करिवर्ष क्षेत्रना अहु मध्य काणमां छे. तो त्यां क
विकटापाती वृत्तवैताद्ध्य पर्वत आवेल छे. एवं जो चेव सदाबहस्स विक्लंभुच्चचुट्वेह
परिक्लेवसंठाण बण्णावासो सो चेव वियहाबहस्स वि माणियट्वो' ओ विकटापाती वृत्त
वैताद्ध्य पर्वतना विष्कंक हिन्यता, हिदेध, परिक्षेप अने संस्थान वगेरेनुं वर्षुन तेमक
स्थाना प्रासाही तेना स्वामीनी राक्धानी वगेरेनुं क्थन शण्डापाती वृत्तवैताद्य पर्वतना

इस विकटापाती वृतवैताढ्यपर्वत का विष्कम्भ ऊंचाई उद्वेध परिक्षेप और संस्थान आदिका वर्णन तथा वहां के प्रासाद उसके स्वामि की राजधानी आदि का कथन शब्दापानी वृत्तवैताउथ पर्वत के ही विष्कम्भ आदि के वर्णन जैसा है 'णवरं अरुणो देवो पउमाइं जाव दाहिणेणं रायहाणी णेयव्वा) परन्तु इस विक-टापाती वृत्तवैताढ्य पर्वत के ऊपर अरुण नामका देव रहता है यही इसके वर्णन

क विष्ठं स आहिना वर्धन केवुं छे. 'जवरं अरुणो देवो पडमाइं जाव दाहिणेणं रायहाणी

टापातिवृत्तवैतादचपर्वतोपरि अरुणः अरुणनामकः देवः प्रतिवसति इति विवेषः तत्र खल सुद खुद्रासु वाषीषु पुष्करिणीषु दीर्विकासु सुझालिकासु सरःपङ्क्तिकासु सरः सरः-पङ्क्ति-काम् विलयक्तिषु बहूनि उत्पष्टानि कनलानि यावत् यादत्पदेव-''क्रुड्स्सम् सौमन्धि-कपुण्डरीक शतपत्रसहस्रपत्राणि फुल्लानि केसरोपचितानि विकटापातिभानी" इत्येषां सङ्ग्र-होवोध्यः, एषां व्याख्या १० पृष्टे गता, विकटापातिवर्णाभानि विकटापातिनी यो वर्णस्त-स्य अःभा कान्तिरिवाऽऽमा येषां तानि तथा, पूर्वं देत्रभेदप्रदर्शनायारुणस्य देवस्योपादानम् अधुना तस्य वर्णनाय तद्धिष्ठात्देव उच्यते-अरुणश्चात्र देवः अत्र शस्मिन् विकटापातिवृत्त-वैताढचपर्वते अरुणः-तन्नामा देवः तद्धिष्ठातृदेवः परिवसतीत्यग्रियेण सम्बन्धः, स कीद्यः इत्याह महद्भिकः, एतदुपलक्षणम् तेन 'महाद्यतिकः, महावलः, महायक्षाः महासीख्यः, महा-नुभावः परयोपमस्थितिकः'' इत्येषां सङ्ग्रहः, एषां व्याख्याऽष्ट्रमस्त्रादृशोध्यः, एवम् अनेन व्रकारेण यावदक्षिणेन राजधानी मेरो देक्षिणस्यां दिशि राजधानी पर्यन्तवर्णनपद्धतिः में और उसके वर्णन में अन्तर है 'वहां पर छोटी बडी वापिकाएं, पुष्करिणियां दीर्घिका, गुंजालिका, आदि जलाशय हैं उनमें अनेक उत्पल, कमल, कुमुद, सुभग, सोगंधिक पुण्डरीक, शतपत्र, सहस्त्रपत्र आदि सदा प्रकुल्लित रहते हैं और इन सबकी प्रभा विकटापाती के वर्ण जैसी ही है यही सब कथन यहां यावत्पद से गृहीत हुआ है यहां जो 'ण गरं अरुणोदेवो' ऐसा पहिले कहकर के भी जो पुनः 'अरुणे य इत्थदेवे' ऐता पाठ कहा है वह इसके वर्णन के निमित्त कहा है पहिले का पाठ अन्दापाती वृत्तवैतादय के और विकटापाती वृत्तवैतादय के वर्णन में अन्तर प्रदर्शित करने के लिए कहा गया है-यह अरुण नामक देव महद्धिकदेव हैं उपलक्षणसे यह महाधुनिक, महाविष्ठ, महायशस्वी, महासुख-संपन्न और एक पल्घोपम की स्थितिवाला हैं इसकी राजधानी मेरुकी दक्षिण

णेयहवा' પરંતુ એ વિકટાપાતી વૃત્તવૈતાહય પવર્તની ઉપર ચરુણ નામે દેવ રહે છે. એજ એના વર્ણનમાં તેનાં કરતાં વૈશિષ્ટ્ય છે. ત્યાં નાની—મેાટી વાપિકાઓ, પુષ્કરિણીઓ દીધિકાઓ, ગું જલિકાઓ વગેરેના રૂપમાં જલાશયા છે. તે સર્વમાં અનેક ઉત્પલા, કમળા, કુમુદે, સુલગા, સાગંધિકા, પુંડરીકા, રાતપત્રા, સહસ્તપત્રા વગેરે સર્વદા પ્રકુલ્લિત રહે છે. અને એ સર્વની પ્રલા વિકટાપાતીના વર્ણ જેવી જ છે. એ અધું કથન યાવત્ પદથી ગૃહીત થયેલ છે. અહીં જે 'ળવાં અજ્ઞળા દેવો' એવું પહેલા કલન કરીને પણ જે પુન: 'અજ્ઞળે ય इत्य દેવે ' એવા પાઠ કહેવામાં આવેલ છે, તે એના વર્ણનના નિસ્તિ કહેન્ વામાં આવેલ છે. પહેલાના પાક શખદાપાતી વૃત્તવૈતાહયના વર્ણનમાં અન્તર પ્રદર્શિત કરવા માટે કહેવામાં આવેલ છે. એ અગુલુ નામક દેવ મહા- હિંક દેવ છે. ઉપલક્ષણથી એ મહાદ્યતિક, મહાચલિલ્ડ, મહાચારવી, મહાયુખસંપનન અને એક પલ્યાપમ જેટલી સ્થિતવાળા છે, એની રાજધાની મેરુની દક્ષિણ દિશામાં છે.

नेत्व्या ज्ञानिषयता प्रापणीया ज्ञेयेत्यर्थः. अय हिर्विष्नामार्थे पिपृच्छिषुराह—'से केणहेणं भंते!' इत्यादि। 'से केणहेणं भंते! एवं वुच्चइ हिरवासे ?' अय केनार्येन भदन्त! एवन् प्रच्यते – हिरविष्म, भगवानाह—'गोयमा!' हे गौतम! 'हिरवासे णं वासे मणुया अरुणा अरुणोभासा सेया णं संखदछसण्णिकासा हिरवासे य इत्थ देवे मिहद्भीए जाव पिछओवमिहिईए पिरवसह, से तेणहेणं गोयमा! पवं वुच्चइ'' उत्तरस्त्रेत्रे हिरवेषे खलु वेषे मनुनाः – मनुष्याः अरुणाः – रक्तवर्णाः, अरुणं च किमिप चीनिपिष्टादिकं वस्तु समीपवर्तिनि पदार्थेऽ भास्वरत्याऽरुणप्रकाशं न तथेत्याह—अरुणावभासाः रक्तावभासनकारिणः केचिच्च श्वेताः शुवलवर्णाः खल्ज ते कीद्य श्वेतवर्णाः ? इत्याह—श्वदल्ल – सिक्ताशाः शङ्कखल्ड सदशा इति तद्योगात्रक्षेत्रमिदं हिरवर्षप्रच्यते, अत्र हरिशब्दं स्प्यच्दोभयपरः तथा यत् स्प्यवदरुणाः चन्द्रवच्छ्वेतास्तत्र मनुष्याः सन्तीति पर्यवसितम्, एवं तद्वत् अरुणावभासाः श्वेतावभासाः, हर्य इव हरयो मनुष्याः, हरिशब्दस्य हरिसदशे लक्षणयाऽभेदः, ततश्च हरिसदश मनुष्यगुक्तत्वात्क्षेत्रं हरय इति व्यवहृत्यते, हरयश्च तद्वपं चेति हरिवर्षम् यदा च ताद्यमनुष्ययोगाद् हरिशब्दः क्षेत्राथें वर्तते तदा क्षेत्राणां बहुत्व स्वभावाद् बहुवचनान्तः प्रयुज्यते 'यथा हरयो विदेश्वाश्च पञ्चालदि तुल्या इति, यदा हरिवर्ष नामाऽत्र देव आधिपत्यं परिपालयित तेन तद्योगात्रिष हरिवर्ष नाम वर्षप्रच्यते ॥ स्व० १४ ॥

दिशामें है (से केणहेणं भंते ! एवं बुच्चइ हरिवासे हरिवासे) हे भदन्त ! आप ऐसा किस करिण से कहते हैं कि यह क्षेत्र हरिवर्ष है ? अर्थात् इस क्षेत्र का ऐसा नाम होने का क्या कारण है ? उत्तर में प्रभु कहते है-(गोयमा ! हरिवासे णं वासे मणुशा अरुणा, अरुणो भासा, सेया णं संखदलसिणकासा हरिवासे इत्थ देवे महिद्धिए जाव पिलओवमिडइए परिवसह) हे गौतम ! हरिवर्षक्षेत्र में कितनेक मनुष्य अरुणवर्ण वाले हैं और अरुण जैसा ही उनका प्रतिभास होता है, तथा-कितनेक मनुष्य शङ्खके खण्ड के जैसे श्वेतवर्ण वाले हैं इस कारण इनके योग से इस क्षेत्र का नाम 'हरिवर्ष' ऐसा कहा गया है, यहां हरिश्चद सूर्य एवं चंद्र इन दोनों को सूचित करने वाला है, अतः कितनेक

'से केणट्रेणं भंते! एवं वुच्चइ हरिवासे हरिवासे' के लहंत! आप स्मे प्रमाणे शा कारण्यी किहा है। के आ क्षेत्र केरिवर्ण छे? स्मेटले के आ क्षेत्र नाम केरिवर्ण शा कारण्यी राजन्यमां आवेल छे? जवाजमां प्रभु के छे-'गोयमा! हरिवासेंगं वासे मणुया, अरुणा अरुणोग सा, सेयांगं संखद्छसण्णिकासा हरिवासेय इत्थ देवे महिद्धिए जाव पिछओवमिटिहण् परिवसइ' के जीतम! करिवर्ण क्षेत्रमां केटलाक माण्येसे स्मरुख वर्ण्याणा छे सने सरुष्ण जेवुं ज तेमनुं प्रतिकासन हाथ छे, तेमज केटलाक माण्येसे शंजना जंड जेवा श्वेत वर्ण्याणा छे स्मेना थे। अथी केमना थे। अथी का क्षेत्रनुं नाम 'हरिवर्ष' आवुं के केवा स्थेत वर्ण्याणा छे स्मेना थे। अथी केरलाक स्थेत वर्ण्याणा छे स्थेत केरे छे. स्थेथी केरलाक

अथानन्तरोवतं क्षेत्रं निषधनामक वर्षधरपर्वता इक्षिणस्यां दिश्युक्तं तत्र निषधः क्वास्तीति पृच्छति—'कहि णं भंते ! 'जंबुद्दीवे' इत्यादि ।

म्लम्-कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे णिसहे णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते ?, गोयमा ! महाविदेहस्स वासस्स दिव्वणेणं हरिवासस्स उत्त-रेणं पुरित्थमळवणसमुद्दस्स पच्चित्थमेणं पच्चित्थमळवणसमुद्दस्स पुरित्थ-मेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे णिसहे णामं वासहरपटवए पण्णाचे, पाईण-पडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे दुहा लवणसमुदं पुट्टे पुरिथिमिछाए जाव पुट्टे पचरिथमिल्लाए जाव पुट्टे, चत्तारि जोयणसयाइं उद्धं उच्चतेणं चत्तारि गाउयसयाइं उन्वेहेणं सोलस जोयणसहस्साइं अट्ट य बायाले जोयणसए दोणिण य एगूणवीसइभाए जोयणस्स विवखंभेणं, तस्स बाहा पुरस्थिमपचित्थिमेणं वीसं जोयणसहस्साइं एगं च पण्णटूं जोयण-सवं दुविण य एगूणवीसईभाए जोयणस्त अद्धभागं च आयामेणं, तस्स जीवा उत्तरेणं जाव चउणवइं जोयणसहस्साइं एगं च छप्पणं जोयण-सयं दुण्णि य एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं ति, तस्स घणुं दाहि-णे गं एगं जोयणसयसहस्सं चउवीसं च जोयणसहस्साई ति०िण य छायाले जोयणसए णव य एगूणवीसइभाए जोयणस्त परिक्खेवेणं, रुवगसंठाण-संठिए सब्वतवणिजमए अच्छे, उभओ पासि दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहिं य वगसंडेहिं जाव संपरिविखत्ते, णिसहस्स णं वासहरपठवयस्स उिंप बहुसभरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, जाव आसयंति सयंति, तस्स णं बहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एतथ णं महं एगे तिगिंछि इहे णामं दहें पण्णते, पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे चत्तारि जोयणसहस्साइं आयामेणं दो जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं दस जोयणाइं उव्वेहेणं अच्छे सण्हे रययामयकूले, तस्स णं तिगिच्छिद्दह-

सूर्य के जैसे अरुण और कितनेक चन्द्र के जैसे श्वेत यहां मनुष्य है ऐसा भाव इस कथन का पुष्ट होता हैं। (से तेणहेणं गोयमा! एवं बुच्चइ) अर्थ स्पष्ट है।।१४॥

મતુષ્યા અહીં સૂર્ય જેવા અરુણ અને કેટલાક ચન્દ્ર જેવા શ્વેત મતુષ્યા અહીં વસે છે આ જાતના ભાવ આ કથનથી યુષ્ટ થાય છે. 'से तेणदेणं गोयमा! एवं वुच्चइ' અર્થ સ્પષ્ટ છે ॥ સૂ. ૧૪ ॥

सस चउिहिस चत्तारि तिसोवाणपिडिरूवगा पण्णत्ता, एवं जाव आया-मिवक्लंभिविहूणा जा चेव महापउमदहस्स वत्तव्वया सा चेव तिगिछि हहस्स वि वत्तव्वया तं चेव पउमदहप्पमाणं अट्ठो जाव तिगिछि वण्णाइं धिई य इत्थदेवी महिड्डिया जाव पिलओवमिट्टिईया परिवसइ, से तेण-ट्रेणं गोयमा! एवं बुच्चइ तिगिछिद्दहे तिगिछिद्दहे ॥सू०१५॥

छाया--वव खळ भदन्त ! जम्बूद्वीपे द्वीपे निपधो नाम वर्षधरवर्वतः प्रज्ञप्तः, गौतम ! महाविदेहस्य वर्षस्य दक्षिणेन हरिवर्षस्य उत्तरेण पौरस्त्यलवणसमुद्रस्य पश्चिमेन पश्चिम-छवणसग्रदस्य पौरस्त्येन अत्र खल्ज जम्बुद्धीपे द्वीपे निषधो नाम वर्षधरपर्वतः प्रज्ञप्तः, प्राचीनप्रतीचीनाऽऽयतः उदीचीनदक्षिणविस्तीर्णः द्विधा लवणसमुद्रं स्पृष्टः पौरस्त्यया यावत् सपृष्टः पाश्चात्यया यावत् सपृष्टः चत्वारि योजनशतानि अर्ध्वप्रचत्वेन चत्वारि गन्युत्रज्ञतानि उद्वेधेन षोडश योजनसहस्राणि अष्ट च द्वाचत्वारिंशानि योजनशतानि द्वीच एकोनविंशतिभागौ योजनस्य विष्क्रमभेण, तस्य बाहा पौरस्व्यपश्चिमेन विंशति योजनसहस्राणि एकं च पश्चपष्टं योजनशतं द्वी च एकोनविंशतिभागी योजनस्यअर्द्धमागं च आयामेन, तस्य जीवा उत्तरेण यावत् चतुर्नवति योजनसहस्राणि एकं च षट्ट पञ्चाशं योजन-शतं द्वौ च एकोनविंशितिमागौ योजनस्य आयामेनेति, तस्य धनुः दक्षिणेन एकं योजनशत-सहस्रं चतुर्विशति च योजनसहस्राणि त्रीणि च षट्चत्वारिंशानि योजनशतानि नव च एको-नविंशति भागान योजनस्य परिक्षेपेणेति रुचकसंस्थानसंस्थितः सर्वतपनीयमयः अच्छः उभयोः पश्चियोः द्वाभ्यां पद्मत्ररवेदिकाभ्यां द्वाभ्यां च वनपण्डाभ्यां यावत् संपरिक्षिप्तः, निषधस्य खळ वर्षधरपर्वतस्य उपरि बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः, यावद् आसते शेरते तस्य खळ बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागः अत्र खळ महानेकः तिगिछि (पुष्परजो) हदो नाम हूदः प्रज्ञप्तः, प्राचीनप्रतीचीनायतः उदीचीन दक्षिण विस्तीर्णः चत्वारि योजनसहस्राणि आयामेन दे योजनसहस्रे विष्कम्भेण दश योजनानि उद्वेधेन अच्छः श्लक्ष्णः रजतमयक्लः तस्य खलु तिर्गिछि (पुष्प रजो) हृदस्य चतुर्दिशि चत्वारि त्रिसोपानप्रतिरूपकानि प्रज्ञप्तानि, एवं यावत् आयामविष्कम्भविधूता (विहीना) या एव महा-पबहेंदस्य वक्तन्यता सा एव तिर्गिछि (पुष्परजो) हदस्यापि वक्तन्या तदेव पबहृद प्रमाणम् अर्थी यावत् तिर्गिछि (पुष्परजो) वर्णानि, घृतिश्रात्र देवि महर्द्धिका यावत् परुयोपमस्थि तिका परिवसति, अथ तेनार्थेन गौतम ! एवम्रुच्यते-तिर्गिछि (पुष्परजो) हृदः २ ॥५० १५॥

टीका-'किह णं मंते ! जंबुदीवे २' इत्यादि, 'किह णं मंते ! जंबुदीवे २ णिसहे णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते' कुत्र खळ भदन्त ! जम्बूद्वीपे द्वीपे निषधो नाम वर्षधरपर्वतः प्रज्ञप्तः ? भगवानाह-'गोयमा' हे गौतम ! 'महाविदेहस्स वासस्स दिक्खणेणं हरिवासस्स उत्तरेणं पुरित्थमलवणसमुद्दस्स पच्चित्थमेणं पच्चित्थमलवणसमुद्दस्स पुरित्थमेणं एत्थणं जंबुदीवे दीवे णिसहे णामं वासहरपव्यए पण्णत्ते' महाविदेहस्य वर्षस्य दक्षिणेन हरिवर्षस्य उत्तरेण पौरस्त्यलवणसमुद्रस्य पश्चिमेन पश्चिमलवणसमुद्रस्य पौरस्त्येन, अत्र खल्ल जम्बूद्वीचे द्वीचे निषधो नाम वर्षधरपर्वतः प्रज्ञप्तः, 'पाईणपडीणायए उदीण दाहिण विच्लिण्णे दुहा लवणसमुद्रं पुट्टे' प्राचीनप्रतीचीनायतः उदीचीनदक्षिणविस्तीर्णः द्विधा लवणसमुद्रं स्पृष्टः, पुरित्थिमिल्लाए जाव पुट्टे' नवरं पौरस्त्यया यावत् यावत्वदेन 'कोटचा पौरस्त्यलवणसमुद्रम्' इति सङ्ग्राह्मम् स्पृष्टः स्पृष्टवान् पाश्चात्यया यावत् यावत्यदेन 'कहिणं अंते ! जंबुद्दीवे २ णिसहे णामं वासहरपव्वए ' इत्यादि

टीकार्थ-गौतमने प्रभु से पूछा है-(कहिणं भंते! जंबुद्दीवे दीवे णिसहे णामं वासहरपव्वए पण्णात्ते) हे भदन्त! इस जम्बुद्धीप मामके द्वीप में निषध नाम का वर्षधर पर्वत कहां पर कहा गया है? उत्तर में प्रभु कहते हैं-(गोयमा! महाविदेहस्स वासस्स दिख्णणणं हरिवासस्स उत्तरेणं पुरित्थमलवणसमुद्दस्स पच्चित्थमंणं, पच्चित्थमलवणसमुद्दस्स पुरित्थमंणं एत्थणं जंबुद्दीवे दीवे णिसहे णामं वासहरपञ्चए पण्णात्ते) हे गौतम! महाविदेह की दक्षिण दिशा में और हरिवर्ष क्षेत्र की उत्तर दिशा में पूर्वदिग्वर्ती लवणसमुद्र की पश्चिमदिशा-में एवं पश्चिम दिग्वर्ती लवण समुद्र की पूर्व दिशा में जम्बूद्धीप के भीतर निषध नामका वर्षधर पर्वत कहा गया है। (पाईणपडीणायए) यह पर्वत पूर्व से पश्चिम तक लंबर पर्वत कहा गया है। (पाईणपडीणायए) यह पर्वत पूर्व से पश्चिम तक लंबर है (उद्दीणदाहिणविच्छिण्णे) तथा उत्तर से दक्षिण तक विस्तृत है (दुहालवणसमुद्द पुटे) यह अपनी दोनों कोटियों से लवणसमुद्र कों छ रहा हैं-(पुरित्थ मिछाए जाव पुटे पुर्वदिग्वर्ती कोटि से पूर्वदिग्वर्ती लवणसमुद्र को और पश्चिमदिश्वर्ती कोटि से पूर्वदिग्वर्ती लवणसमुद्र को और पश्चिमदिश्वर्ती कोटि से पश्चिदिग्वर्ती लवणसमुद्र को छोर पश्चिमदिश्वर्ती कोटि से प्रविद्रावर्ती लवणसमुद्र को छोर पश्चिमदिश्वर्ती कोटि से पश्चिद्रावर्ती लवणसमुद्र को छोर पश्चिमदिश्वर्ती कोटि से पश्चिद्रावर्ती लवणसमुद्र को छोर पश्चिमदिश्वर्ती कोटि से पश्चिद्रावर्ती लवणसमुद्र को छोर पश्चिमदिश्वर्ती कोटि से पश्चिमदिश्वर्ती कोटि से पश्चिमदिश्वर्ती कोटि से प्रविद्रावर्ती

कहि णं भेते ! जंबुदीवे २ णिसहे णामं वासहस्पब्वए' इत्यादि

टीकार्थ-गीतमे प्रभुने प्रश्न क्यीं-'कहि णं मंते! जंबुदीये दीये णिसहे णामं वासहरपव्यए पण्णत्त' है लहंत! आ क'णूढीपमां निषध नामक वर्षधर पर्वत क्या स्थणे आवेल छे। कवालमां प्रभु केहे छे-'गोयमा! महाविदेहस्स वासस्स दिक्लिणेणं हरिवासास उत्तरेणं पुरित्थम स्वणसमुद्दस्स पच्चित्थमेणं पच्चित्थमल्यणसमुद्दस्स पुरित्थमेणं एत्थ णं जंबुदिवे दीवे णिसहे णामं वासहरपव्यए पण्णत्ते' हे गीतम! महाविदेहनी हिस्खि हिशामां अने हिवर्ष क्षेत्रनी इत्तर हिशामां पूर्व हिग्वतीं लव्यु समुद्रनी पश्चिम हिशामां तेमक पश्चिम हिग्वतीं लव्यु समुद्रनी पूर्व हिशामां क'णूढीपनी आंदर निषध नामक वर्षधर पर्वत आवेल छे. 'पाईणवडीणायए' के पर्वत पूर्वथी पश्चिम सुधी लांका छे. 'उदीण दाहिणविद्यिणो' तेमक उत्तरथी हिल्यु समुद्रने स्पर्शी रहेल छे. 'दुहा लवणसमुद्दं पुट्टे' को पातानी अन्ने कैटिकाथी लव्यु समुद्रने स्पर्शी रहेल छे. 'पुरिथमिल्लाए जाव पुट्टे पच्चित्थिमिल्लाए जाव पुट्टे' पूर्व हिन्वतीं केटिथी पूर्व हिन्दतीं लव्युसमुद्रने अने

-'कोटचा पश्चिमलवणसमुद्रम्' इति सङ्ग्राह्मम् स्पृष्टः, तस्य मानमाह-'चत्तारि जोयणसयाई उद्धं उच्चतेणं चत्तारि गाउयसयाई उच्वेहेणं सोलस जोयणसहस्साई' चत्वारि योजनशतानि उर्ध्वप्रचरवेन, चत्वारि गन्युतशतानि उद्वेधेन भूमिप्रवेशेन, पोडशयोजनसहस्राणि 'अहय-बायाले जोयणसप्' अष्ट च द्वाचरवारिंशानि द्विचत्वारिंशद्धिकानि योजनशतानि 'दोण्णि य एगूणवीसइमाए' द्वौ च एकोनविंशति मागी 'जोयणस्स विवसंभेणं' योजनस्य विष्कम्भेण, महाहिमवतो द्विगुणविष्कम्भमानत्वात्, तस्य याहामानमाह-'तस्स बाहा' इत्यादि 'तस्स वाहा पुरित्थमपच्चित्थमेणं वीसं जोयणसहस्साइं' तस्य निषधस्य वर्षधरपर्वतस्य बाहा पौर-स्त्यपश्चिमेन पूर्वपश्चिमयोः विंशतियोजनसहस्राणि 'एगं च पणाई जोयणसयं' एकं च पश्चपष्टं पञ्चपष्टचिषकं योजनशतं 'दुष्णि य एग्ण वीसइभाए जोयणस्स अद्भागं च आयामेणं' द्वौ च एकोनविंशतिभागौ योजनस्य अर्द्धभागं च आयामेन। तस्य जीवास्वरूपमानमाह-'तस्स जीवा उत्तरेणं जाव चउणवरं जीयणसहस्साइं एगं च छप्पणं जीयणसयं' तस्य जीवा उत्तरेण उत्तरदिग्मागे यावत् यावस्पदेन-'प्राचीनप्रतीचीनायता द्विधातो लद्दणसमुद्रंस्पृष्टा पौरस्त्यया भी द्या पौरस्त्यं लवणसमुद्रं स्पृष्टा पाश्चात्यया कोटचा पाश्चात्यलवणसमुद्रं स्पृष्टा' इति सङ्ग्रा-ह्यम्, चतुर्नेत्रति योजनसहस्राणि एकं च षट् पच्चाशं पट् पञ्चाशद्धिकं योजनशतं 'दुण्णिय एग्गवीमहभाए जोयणस्य आयामेणंति' हो च एकोनविंशति भागी योजनस्य आयामेन है (चत्तारि जोयणस्याइं उद्धं उच्चत्तेणं चत्तारि गाउयस्याइं उच्चेहेणं सोलस जोयणसहर्सेंसाइं अहय बायाले जोयणसए दोण्णिय एग्णवीसहभाए जोयणस्स विक्खंभेणं) इसकी अंचाइ ४०० योजन की है इसका उद्देध ४०० कोश का है तथा विष्करम इसका १६८४२ ; योजन का है (तस्स वाहा पुरत्थिमपच्चित्ः) मेगं वीसं जोयणसहस्साइं एगं च पण्णष्टं जोयणसयं दुष्णिय एग्ण्वीसइ-भाग जोयणस्स अद्धभागं च आयामेगं) तथा इसकी बाहा-पार्श्वसुजा-पूर्वपश्चिम में आयाम की अपेक्षा २०१६५ दे योजन एवं अर्धभाग प्रमाण है। (तस्स जीवा उत्तरेणं जाव चउणवहं जोयणसहस्साइं एमंच छप्पण्णं जोयणसयं दुण्णि य एगूणवीसहभाए जोयणस्स आयामेणंति) तथा इसकी उत्तर जीवा का आयाम

पश्चिम हिन्वती है। दिशी पश्चिम हिन्वती सवस्थिम् से स्पर्श रहेस छे. 'चत्तारि जोयण स्याइं उद्धं उच्चतेणं चतारि गा उयसयाइं उद्धे हेणं सोलस जोयणसहस्साइं अहु य बायाले जोयणस्य होण्णिय एगूणवीसइमाए जोयणस्य विक्खंमेणं' स्नेनी अध्याधं ४०० थे। ४००

दैध्येंण इति, तस्य धनुष्पृष्ठमाह-'तस्स धणुं' इत्यादि, तस्य धनुः 'दाहिणेणं एगं जोय-णसयसहस्तं चडवीसं च जोयणसहस्साइं तिण्णिय छायाले जोयणसप् णवय प्गुणवीसहभाष् भोयणस्स परिक्खेवेणंति' दक्षिणेन एकं योजनशतसदृसं चतुर्विशतिं च योजनसदृसाणि त्रीणि च षट् चलारिंशानि योजनशतानि नव च एकोनविंशतिभागान् योजनस्य परि-क्षेपेणेति, एवं बाह्यादि त्रयमुक्त्वा निष्धं विशिनष्टि-'स्यगसंठाणसंठिए' रुचकसंस्थान-संस्थित:-रुवकं भूषणविशेष: तस्य संस्थानेनाऽऽकारेण संस्थितः वर्तुलाकार इत्यर्थः, 'सब्ब-तविण्डनम् अच्छे' सर्वतपनीयमयः-सर्वात्मना विशिष्ट स्वर्णमयः, अच्छः इत्युपलक्षणं श्चर्णादीनां तत्सङ्ग्रहः सार्थः प्राग्वत्, तिज्ञिज्ञासोत्किण्ठितचित्रैश्रतुर्थस्त्र टीका विलोक-नीया। 'उभओ पासि दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहिय वणसंडेहिं जाव संपरिक्खिते' उभयोः द्वयोर्दक्षिणोत्तरयोः पार्श्वयोः द्वाभ्यां पद्मवरवेदिकाभ्यां द्वाभ्यां च वनकडाभ्यां यावत याव-त्पदेन-'सर्वतः समन्तात्' इति सङ्ग्राह्मम् संपरिक्षिप्तः परिवेष्टितः' अथ निषधवर्षधरपर्वतो-परिवर्ति भूमिभागे देवानामासनशयनादिकमाह-'णिसहस्स णं' इत्यादि, निपधस्य खछ की अपेक्षा प्रमाण ९४१५६ वे योजन का है। (तस्स घणु दाहिणेणं एगं जोघण-सयसहस्सं चडवीसं जोयणसहस्साइं तिण्णिय छायाले जोयणसए णवयएग्ण-बीसङ्गाए जोघणस्स परिवर्धेवेणंति) इसके धनुः १९८० का प्रमाण परिक्षेप की अपेक्षा दक्षिणदिशा में १२४३६४ ᡩ योजन का है अर्थात् एक योजन के १९ भागों में से ९ भाग अधिक है। (इयगसंठाणसंठिए सन्वतवणिज्ञमए अच्छे उमेश्री पासि दोहि पउमवरवेइआहि दोहि य वणसंडेहि जाव संपरिक्खिते) इस्का संस्थान रुचक के संस्थान जैसा है यह सर्वात्मना तप्तसुवर्णमय है आकाश और स्फटिक के समान यह बिलकुल निर्मल है इसके दोनों दक्षिण उत्तर के पार्श्वभागों में दो पद्मवर वेदिकाएं और दो वनषण्ड है-उनसे यह चारों ओर से अच्छी तरह से घिरा हुआ है यहां यावत्पद से "सर्वतः समन्तात्" इन पढों का ग्रहण हुआ है। (णिसहस्स णं वासहरपव्ययस्स उप्लि बहसमरमणिज्जे

केटलुं छे. 'तस्स धणु दाहिणेणं एगं जोयणसयसहस्सं चडवीसं जोयणसहस्साइं तिण्णिय छायाहे जोयणसए णवय एग्णवीसइमाए जोयणस्स परिक्खेवेणं ति' योना धनुपृष्टनं प्रमाण परिक्छियानं परिक्खेवेणं ति' योना धनुपृष्टनं प्रमाण परिक्छिपनी यापिस्यायो हिस्रामां १२४३६४ वृष्ट येथिन केटलुं छे योटले हैं योधि येथिनना १८ लागे। मांथी ८ लाग याधिह छे. 'ह्यगसंठाणसंठिए सन्वतवणिष्जमए अच्छे उमओ पासि दोहिं पडमवरवेइआहिं दोहि य वणसंडेहिं जाव संपरिक्छिते' योनुं संस्थान रुव्धना संस्थान केलुं छे यो सर्वात्मना ताससुवर्ष्धभय छे. याधाश याने स्विटिक्ली केम यो तद्दन निर्मण छे. योना अन्ते हिस्रा इत्तरना पार्श्वलागामां छे पद्मवर वेहिका छे याने छे. तेनाथी यो योभेरथी संपूर्ण ३५मां परिवृत छे. याधा यावत् पद्धी 'सर्वतः समन्तात्' यो पहे। अहण् इत्था छे. 'णिसहस्स णं वासहरपञ्चयस्स

पर्वतस्य उपरि बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः, यावद् आसते शेरते, अत्र यावत् याव-त्पदेन-भूमिभागवर्णन परमाछिङ्ग पुष्करादिपदनिकुरम्यं सङ्ग्राह्मम् तत्सर्वे जिज्ञास्रभिः राज-प्रक्रीय-सूत्रस्य पञ्चदशसूत्रं विलोकनीयम् व्याख्या चास्य तत्स्त्रस्य मत्कृतसुबोधिनी टीकातो बोध्या, अथ पुष्परजोहूद वक्तव्यमाह-'तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमञ्झदेसभाए' तस्य ख्ळ बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागः अत्यन्त-मध्यदेशभागोऽस्ति 'एत्थ णं महं एमे तिशिछिद्दहे ण मं दहे पण्णत्ते' अत्र अत्रान्तरे महानेकः पुष्परजो हृदो नाम हृदः प्रज्ञप्तः, मुळे तिपिछि हृद इति कथितम् तत्र पुष्प रजशब्दस्य स्थाने तिर्गिछ्यादेशो बोध्यः, यद्वा देशीयोऽयं शब्दः, तत्पक्षे अपि स एवार्थः, तस्य माना-द्याह-'वाईणपडीणायए उदीण दाहिणविच्छिण्णे चत्तारि जीयणसदस्साइं आयामेणं' प्राचीनप्रतीचीनाऽऽयतः उदीचीनदक्षिणविस्तीर्णः चलारि योजनसहस्रा ण आयामेन 'दो भूमिभागे पण्णत्ते, जाब आसयंति, सयंति) निषध वर्षधर पर्वत का ऊपरी भूमिभाग बहुसमरमणीय कहा गया है यावन् उसपर आकर देव और देवियां उठकी बैठती रहती है और आराम करती रहती है यहां यावत्पद ग्राह्म पाठको देखने को इच्छा वालों को राजप्रदनीय सूत्र के १५ वेंसूत्र की टीका अवलोकन करनी चाहिए (तस्त णं बहुसमरमणिज्ञस भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे तिंगिंछदहे णामं दहे पण्णत्ते) इस वर्षधर पर्वतके बहुसमरमणीय भूमि॰

'वासहरपव्ययस्स उप्पि बहुसमरमणिक्जे भूमि भागे पण्णत्ते जाव आसयंति सयंति' वर्षधर-

उपि बहुसमरमणिको भूमिमाने पण्णसे, जाव आसयंति, सयंति' निषध वर्षंधर पर्यंतिने हिपि भूमिलाग अहुसमरमणीय छे. यावत् तेनी हिपर देव व्य देवीको आवीने हिद्रती केसती रहे छे, व्यने आराम ४२ छे. अहीं 'यावत्' पह आवेस छे. को पहथी के पाठ आहा थया छे ते 'राकप्रश्लीय सूत्र' ना १५ सूत्रनी व्याण्यामां निर्िपत थरेस छे, ते। किशासुकी। त्यांथी लाख्वा यत्न ४२.

भागके ठीक बीच में एक विशाल तिगिच्छिद्रह-पुष्परज-नामका द्रह कहा गया है (पाईणपडीणाधए उदीणदाहिणविच्छिण्णे चत्तारि जोयणसहस्साई आयामेणं दो जोयणसहस्साई विक्खंभेणं दस जोयणाई उब्वेहेणं अच्छे सण्णे रययामय-कूले) यह द्रह पूर्वसे पश्चिम तक लम्बा है और उत्तर दक्षिण दिशा में विस्तृत हैं

'तस्स णं बहुसमरमणिक्जस्स भूमिभागस्स बहुमक्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे तिगिछ इदे णामं दहे पण्णत्ते' स्ने वर्षधर पव तना अहुसमरमाध्य स्मिक्षाणना ठीक मध्यमां स्नेष्ठ विशाल तिलि विश्व द्रह्म-पुष्परण-नामक द्रह्म आवेस छे. 'पाईणपडीणायए उदीण दाहिण-विच्छिण्णे चत्तारि जोयणसहस्साइं आयामेणं दस जोयणाइं उठवेहेणं दो जोयणसहस्साइं विक्लंभेणं दस जोयणाइं उठवेहेणं अच्छे सण्हे स्ययामय कूछे' स्ने द्रह्म पृष्टिम सुधी क्षांत्रा छे अने उत्तर हिक्षणु हिशामां विस्तृत छे. स्नेना आयाम स्नार हुकर योजन केटेडी। जोयणसहस्साइं विवर्खमेणं दसजोयणाइं उन्वेहेणं अच्छे सण्हे रययामयक् छे' हे योजनसहस्रे विष्कम्भेण दशयोजनानि उद्देशेन अच्छः श्रुक्षणः रजतमयक् छः, अथास्य सोपानादि वर्णना-याह—'तस्स णं' इत्यादि 'तस्स णं तिनिच्छिद्दस्स चडिहिसं चत्तारि तिसोवाणपिडिक्वगा पण्णता' तस्य पुष्परजोहृदस्य चतुर्दिशि दिक्चतुष्ट्ये चत्वारि त्रिसोपानप्रतिरूपकाणि सुन्द्रशणि त्रिसोपानानि प्रव्वप्तानि 'एवं जान' एवम् अनेन प्रकारेण हदे वर्ण्यमाने यावत् परिपूर्णा 'आयामविवर्खं मावहणा' आयामविष्कम्भविधूता (विहीना) 'जा चेव महापउसद्दर्स वत्त-च्या सा चेव तिनिच्छद्दस्स वि' येव महापणहदस्य वक्तच्यता सेव पुष्परजो हृदस्यापि 'वत्तच्या' वक्त स्वता, एतदेव स्पष्टीकर्तुमाह—'तं चेव पउमद्दर्पमाणं' तदेव पद्महद्रप्रमाण भित्यादि—तदेव महापद्महृद्गतमेव प्रमाणं धतिदेवी कमलानां प्रमाणम्, तिजत्युत्रस्कशताधिक पश्चात्रत्सहस्राधिकर्विशतिलक्षोत्तरेककोटिक्ष्पम् १२०५०१२०, अन्यधाऽत्र

इसका आयाम चार हजार योजन का हैं और विष्कस्भ दो हजार योजन का है उद्देध इसका दस योजन का है यह आकाश और स्फटिक के जैसा निर्मल है चिकना है इसका कुछ रजतमय है मूल में " तिगिच्छि" ऐसा निपात होता है अथवा 'तिगिछि' यह देशी शब्द है (तस्स णं तिगिछिद्दस्स चउदिसि चलारि तिसोवाणपडिरूवमा पण्णला) उस तिगिछि द्रह की चारों दिशाओं में त्रिसोपान प्रतिरूपक कहे गये हैं (एवं जाव आयामविक्खंभ विद्याण जा चेव महापउमद्दस्स चल्तव्या सा चेव तिगिच्छिद्दस्स वि चल्तव्या, तं चेव पउमद्द्यमाणं अहो जाव तिगिछि वण्णाह) इस सूत्र पाठ में यावत् शब्द सम्पूर्णता का वाचक है अंतः आयाम और विष्कस्भ को छोड़कर जो महापद्महृद की वक्तव्यता कही गई है वही तिगिछिह्द की भी वक्तव्यता जाननी चाहिये इस तरह जैसा प्रमाण महापद्महृद्यत कमलोंका कहा गया है—अर्थात महापद्महृद्यत कमलों का प्रमाण संख्या १ करोड़ २० लाख ५० हजार एक सौ २० कहा गया है सो यही प्रमाण

छे अने विष्डं ले थे हुलर येकिन केटले। छे. अने। एदेध दश येकिन केटले। छे. अने आंडाश अने रइटिड केवी निर्माण छे अने अ यीडिंगे। छे. अना तटे। रकतमय छे. भूक्षमां 'तिगिलिह्द' अवे। पाठ छे. ते। पुष्परकना स्थानमां 'तिगिलिह्द' अवे। निपात थाय छे. अथवा 'तिगिह्छि' ओ देशी शक्त छे. 'तस्स णं तिगिहिह्दस्म चडिद्द्सि चत्तारि तिसोबाणपिह्दस्या पन्तता' ते तिशि छि द्रह्मी याभेर त्रिसोपान प्रति ३पडे। छे. 'एवं जाव आयामविक्खंभितिहूणा जा चेव महा पडम्द्दस्स बत्तव्वया सा चेव तिगिलिछ इहस्स वि वत्तव्यया, तं चेव पडमद्द्दपमाणं अद्रो जाव तिगिछि वण्णाह' ओ स्त्रपाठमां यावत् शक्त संपूर्णता वायड छे. ओथी आयाम अने विष्डं लने आद डरीने के महा पद्मह्दमी वफ्तव्यता स्पष्ट डरवामां आवेली छे, तेक तिशि छिह्दमी पण्ण वक्तव्यता छे. आ प्रभाणे के रीते भहापद्मह्दरात इमणानुं प्रमाण् डहेवामां आवेल छे, ओटले डे महा

कमलानामायामविष्कम्भरूपप्रमाणस्य महापद्महदगतपद्मेभ्यो द्विगुणत्वेन विरोधापत्तेः,
हृदस्य प्रधाणग्रद्वेधरूपं वोध्यम् आयामविष्कम्मयोः पृथगुक्तलादिति, 'अहो जाव तिशिक्तिवणाई' अर्थः नामार्थस्तस्य वक्तव्यः, स चैवम् अथ केनार्थेन भदन्त ! एवग्रुच्यते इत्यादि
प्राग्वत् यावत् यावत्पदेन तत्र बहुनि उत्पलकुग्रुद् सुभमसौगन्धिक पुण्डरीक शतपत्र सहस्रपत्राणि फुञ्लानि केसरोपचितानि' इति सङ्ग्राह्मम् । पुष्परजोवणीनि, तेन पुष्परजः प्रधानस्वादयं पुष्परजोहद्दत्येवग्रुच्यते, 'धिई य इत्य देवी पल्लिओवमहिईया परिवसइ' छृदिश्वात्र
देवी अधिष्ठातृदेवी परिवसति सा कीदशी ? इत्याद-महिद्धिता यावत् पल्योपमस्थितिका
'महिद्धिता' इत्यारभ्य पर्वोपमस्थितिकेति पर्यन्तानां शब्दानामत्र सङ्ग्रहो बोध्यः, सच
सार्थोऽष्टमस्त्राद्वोध्यः शेषं प्राग्वत्, 'से तेणहेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ तिर्गिछिद्दहे २'
अथ तेनार्थेन गौतम ! एवग्रुच्यते पुष्परजोहुदः २ इति ।।स्०१५॥

घृति देवी के कमलों का यहां पर भी जानना चाहिये यहां इस प्रमाण शब्द से इनका आयाम विष्कम्भ रूप प्रमाण नहीं समझना चाहिये—क्योंकि वह तो महापद्महृद्गत कमलों के प्रमाण से ब्रिगुणा कहा गया है तथा हद का जो यहां प्रमाण कहा गया है वह उबेध का प्रभाण कहा गया है ऐसा जानना चाहिये आयाम और विष्कम्भ का जो प्रमाण कहा गया है वह तो प्थक् रूप से सूत्रकारने स्वयं ही उपर में कह दिया है अर्थ शब्द से '' हे भदन्त! इस जलाश्यको आपने किस कारण से तिगिच्छिद्रह ऐसा कहा है यहां गौतम का प्रश्न लिया गया है। इसपर ऐसा प्रमुकी ओर से उत्तर दिया गया है कि हे गौतम! यहां पर तिगिछिद्रह के वर्ण जैसे उत्पल आदि होते हैं तथा (चिई अ इत्थदेवी महिड्डिया जाव पलिओवमिडिईआ परिवसह, से तेणहेणं गोथमा! एवं बुच्चइ तिगिछिद्रहे २) यहां पर महिद्धिक यावत् एक पल्योपमकी स्थित वाली घृती

પદ્મહુદાત કમળાની પ્રમાણ સંખ્યા ૧ કરાડ, ૨૦ લાખ, ૫૦ હજાર ૧ સા ૨૦ જેટલી કહેવામાં આવેલી છે તો ધૃતિ દેશના કમળાનું પ્રમાણ અત્રે આટલું જાણી લેવું. જોઇએ. અહીં એ પ્રમાણ શબ્દથી એમનું આયામ વિષ્કંભ રૂપ પ્રમાણ સમજવું નહિ જોઇએ. કેમકે તે તો મહા પદ્માહુદાત કમળાના પ્રમાણથી ખમણ કહેવામાં આવેલ છે. તેમજ હૃદનું જે અત્રે પ્રમાણ કપષ્ટનામાં આવેલ છે તે તેના ઉદ્દેધનું પ્રમાણ કહેવામાં આવેલ છે તે તે પૃથક રૂપમાં સૂત્રકારે પોતે જ ઉપર સ્પષ્ટ કરી દીધું છે. અર્થ શખ્દથી 'હે લદંત! એ જલાશયને આપશ્રીએ શા કારણથી 'તિગિછિ દ્રહ એ નામથી સંગાધિત કરેલ છે?' એવા અત્રે. ગૌતમના પ્રશ્ન શહ્ણ કરવામાં આવેલ છે. પ્રભુ તરકથી એ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં આ પ્રમાણે કહેવામાં આવેલ છે કે હે ગૌતમ! અહીં તિગિછિ દ્રહના વર્ણ જેવા ઉત્પસા વગેરે હોય છે. તેમજ 'ધાईલ ફર્ય ફેવી મદિદ્વિયા जાવ પછિ કોલમદિદ્વે આ પરિવસફ. સે તેળદ્રેળં

आधारमाद् या नदी दक्षिणेन प्रवहति तामाह-'तस्स णं तिनिछिद्दहस्त' इत्यादि, म्बम्-तस्स णं तिगिछिदहस्स दिक्खणिव्लेणं तोरणेगं हरिमहाणई पवृदा समाणी सत्त जोयणसहस्साई चत्तारिय एकवीसे जोयणसए एगं च एगूगवीसइभाए जोयणस्स दाहिणाभिमुही पठवएणं गंता घडमुहपवित्तिएणं जाव साइरेग चउ जोयणसइएणं पवाएणं एवं जा चेव हरिकंताए वत्तव्वया सा चेव हरीए वि णेयव्वा, जिब्भि-याए कुंडस्स दीवस्स भवणस्स तं चेव पमाणं अट्टो वि भाणियव्वो जाव अहे जगइं दलइता छप्पणाए सलिलासहस्सेहिं समग्गा पुर-स्थिमं लवणसमुद्दं समप्पेइ, तं चेव पत्रहे य मुहमूले य पमाणं उब्वेहो य जो हरिकंताए जाव वणसंडसंपरिक्षित्ता, तस्स णं तिर्गिछिद्दहस्स उत्तरिव्लेणं तोरणेणं सीओया महाणई पवूढा समाणी सत्त जोयणसह-स्ताइं चतारि य एगवीसे जोयणसए एगं च एगूणवीसइभागं जोयण-स्स उत्तराभिमुही पव्वएणं गंता महया घडमुहपवित्तिएणं जाव साइरेग चउजोयणसइएणं पवाएणं पवडइ, सीओयाणं महाणई जओ पवडइ एत्थ णं महं एगा जिब्भिया पण्णता, चत्तारि जोयणाई आयामेणं पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं जोयणं बाहल्लेणं मगरमुहविउद्ग संठाणसंठिया सन्ब-वइरामई अच्छा, सीओया णं महाणई जिहं पवडई एत्थ णं महं एगे नामकी देवी रहती है इस कारण हे गौतम इसका नाम तिर्गिछिद्रह ऐसा कहा है "अड़ो जाव " यहां जो यावत्पद आया है उससे " तत्र बहूनि उत्परू~ कुमुद सुभग, सौगंन्धिक, पुण्डरीक, दातपत्र सहस्त्रपत्राणि फुल्लानि केसरोप-चितानि " यह पाठ गृहीत हुआ है महद्भिका के साथ आगत यावत् पद ग्राह्म

पदों का संग्रह अष्टम सुन्न से जान छेना चाहिये ॥१५॥

गोयमा ! एवं वुच्चई तिगिंछिद्दहे २' अहीं महदिं धावत् ओह पट्यापम केटबी स्थिति
वाणी धृति नाम हेवी रहे छे. ओ हारखुथी हे जौतम! ओतुं नाम तिजिछि द्रह ओवुं
राणवामां आव्युं छे. 'अहो जाव' अहीं के यावत् पद आवेल छे, तेनाथी 'तत्र बहूनि
उत्पल-इसुद, सुमग, सौगंधिक, पुण्डरीक, शतपत्र, सहस्रपत्राणि, फुल्छानि केसरोपचितानि'
ओ पाठ संब्रहीत थयेल छे. महदिं हनी साथ आवेल 'यावत' पद आहा पढ़ीनुं संब्रह
अष्टमसूत्रमां हरवामां आवेल छे. किशासु देहि। त्याथी काळ्वा यतन हरे, ॥ स्म. १५॥

तीओयप्पवायकुंडे णामं कुंडे पण्णते, चत्तारि असीए जोयणसए आया· मविक्खंभेणं पण्णरसअट्टारे जोयणसए किंचि विसेसूणे परिक्खेवेणं अच्छे, एवं कुंडवत्तव्यया णेयव्या जाव तोरणा । तस्स णं सीओयप्प वायकुंड्रस बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे सीओयदीवे णामं दीवे पण्णत्ते, चउसट्टिं जोयणाइं आयामविक्खंभेणं दोष्णि वि उत्तरे जोयण-सए परिक्खेवेणं दो कोसे ऊसिए जलंताओ सब्ववइरामए अच्छ, सेसं तमेव वेइया वणसंडभूमिभाग भवणसयणिज अट्रो भाणियव्वो, तस्स णं सीओयप्पवायकुंडस्स उत्तरिब्लेणं तोरणेणं सीओया महाणई पवृढा समाणी देवकुरुं एउजेमाणा एउजेमाणा चित्तविचित्तकूडे पटवए निसद-देवकुरु सूरसुलसविज्जुप्पभद्हे य दुहा विभयमाणी २ चउरासीए सलि-लासहरसेहिं आपूरेमाणी२ भइसालवणं एउजेमाणी२ मंदरं पटवयं दोहिं जोयणेहिं असंपत्ता पद्मस्थिमाभिमुही आवत्ता समाणी अहे विज्जुष्पभं-वबलारपटवयं दारइत्ता मंदरस्स पटवयस्स पच्चित्थमेणं अवरविदेहं वासं दुहा विभयमाणी२ एगमेगाओ चक्कवट्टिविजयाओ अट्टावीसाए२ सिळळा-सहस्सेहिं आपूरेमाणी २ पंचहिं सिळळासयसहस्सेहिं दुतीसाए य सिळिलासहस्से हिं समग्गा अहे जयंतस्स दारस्स जगइं दालइत्ता पच-रिथमेणं लवणसमुद्दं समुप्पेइ, सीओया णं महाणई पवहे पण्णासं जोय-णाइं विक्खंभेणं जोयणं उब्वेहेणं, तयणंतरं चणं मायाए परिवद्धमाणीर मुहमूळे पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं दस जोयणाइं उब्वेहेणं उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं संपरिक्खिता। णिसढेणं भंते ! वासहरपटवए णं कइकूडा पण्णत्ता ?, गोयमा ! णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा-सिद्धाययणकूडे १ णिसढकूडे २ हरिवासकूडे ३ पुब्वविदेहकूडे४ हरिकूडे ५ धिईकूडे ६ सीओयाकूडे ७ अवरविदेहकूडे ८ रुयगकूडे९, जो चेव चुछिहिमवंतकूडाणं उच्चत्तविक्लंभपरिक्खेवो पुट्य-विणओ रायहाणी य सच्चेव इहं पि णेयव्वा, से केणट्रेणं भंते! एवं बुच्चइ णिसहे वासहरपञ्चए२?, गोयमा! णिसहे णं वासहरवञ्चए कूडा णिसह संठाणसंठिया उसभसंठाणसंठिया, णिसहे य इत्थ देवे महि-द्धीए जाव पिलओवमट्टिइए परिवसइ, से तेणटुेणं गोयमा! एवं बुच्चइ णिसहे वासहरपञ्चए२॥सू०१६॥

छाया-तस्य खळु तिंगिच्छिह्दस्य दाक्षिणात्येन तोरणेन हरिन्महानदी प्रव्युदासती सप्त योजनसहस्राणि चत्वारि च एकविंशानि योजनशतानि एकं च एकोनविंशतिभागं योजनस्य दक्षिणाभिग्रुखीपर्वतेन गत्वा महाघटग्रुखप्रवृत्तिकेन यावत् सातिरेक चतुर्यौजनशतिकेन प्रपातेन प्रयत्ति, एवं येव हरिकान्ताया वक्तव्यता सैव हरितः अपि नेतव्या, जिह्निकायाः कुण्डस्य द्वीपस्य भवनस्य तदेव प्रमाणम् अर्थोऽपि भणितव्यः यावद् अश्रो जगतीं दारियला पट् पश्चाशता सलिळासहस्नैः समग्रा पौरस्त्यं छवणसमुद्रं समाप्नोति, तदेव प्रवहे च मुखमूछे च प्रमाणम् उद्वेधश्च यो हरिकान्तायाः यावद् वनभण्ड संवरिक्षिप्ता, तस्य खेळ तिगिच्छिहदस्य औत्तराहेण तोरणेन शीता महानदी प्रव्युटा सती सप्तयोजनसहस्राणि चत्वारि च एक-विंशानि योजनशतानि एकं च एकोनविंशति भागं योजनस्य उत्तराभिमुखी-पर्दत्रोन गत्वा महाघटमुखप्रवृत्तिकेन यावत् सातिरेक चतुर्यीजनशतिकेन प्रपातेन प्रपतित, शीतोदा खछ महानदी यतः प्रपतित अत्र खलु महत्येका जिह्विका प्रज्ञप्ता, चत्वारि योजनानि आयामेन पञ्चाश्चतं योजनानि विष्कम्भेण योजनं बाइल्येन मकरमुखिबबृतसंस्थानसंस्थिता सर्वेवज्रमधी अच्छा, श्रीतोदा खळु महानदी यत्र प्रपत्ति अत्र खळु महदेकं शीतोदा प्रपातकुण्डं नाम कुण्डं प्रज्ञप्तम् चत्वारि अज्ञीतानि योजनज्ञतानि आयामविष्कम्भेण पश्चदश अष्टादशानि योजनशतानि किञ्जिद्विशेषोनानि परिक्षेपेण अच्छम् एवं कुण्डवक्तव्यता नेतव्या यावत् तोरणाः। तस्य खळ शीतोदा प्रयातकुण्डस्य बहुमध्यदेशभागः, अत्र खळ महानेकः शीतोदा द्वीपो नाम द्वीपः प्रज्ञप्तः, चतुष्पष्टि योजनानि आयामविष्कम्भेण द्वे द्वज्युत्तरे योजनशते परिक्षेपेण द्वौ क्रोशावुच्छितो जलान्तात सर्ववज्रमयः अच्छः, शेषं तदेव वेदिका वनपण्ड भूमिमाग भवनः श्यनीयार्थी भणितव्यः, तस्य खळ शीतोदा प्रपातकुण्डस्य औत्तराहेण तोरणेन शीतोदा महानदी प्रव्युदा सती देवकुरु मेजमाना २ चित्रविचित्रकृटौ पर्वतौ निष्धदेवकुरुख्रसुलसवि-द्युत्प्रमहदांश्र द्विधा विभजमाना २ चतुरशीत्या सिळळासहस्रैः आपूर्यमाणा २ भद्रशास्त्रन-मेजमाना २ मन्दरं पर्वतं द्वाभ्यां योजनाभ्यामसम्प्राप्ता पश्चिमाभिग्नुखी आवृत्ता सती अधो-विद्युत् प्रमं वक्षस्कारपर्वतं दारियत्वा मन्दरस्य पर्वतस्य पश्चिमेन अपरिवदेहं वर्षे द्विधा विमज-माना २ पश्चिमः सलिलाशतसदस्तैः द्वात्रिशता च सलिलासद्देः समग्रा अधो जयन्तस्य द्वारस्य जगतीं दारियत्वा पश्चिमेन लवणसमुद्रं समाप्नोति, श्वीतोदा खल्ड महानदी प्रवहे पश्चा-शतं योजनानि विष्कमभेण योजनसुद्वेधेन, तदनन्तरं च खळ मात्रया मात्रया परिवर्द्धमाना २ मुखमूळे पश्च योजनशतानि विष्कम्भेण दश्च योजनानि उद्देधेन उभयोः पार्श्वयोः दःभ्यां पद्मवरवेदिकाभ्यां द्वाभ्यां च वनषण्डाभ्यां संपि क्षिप्ता, निषधे खळ भदन्त ! वर्षधरपर्वते खळ कित्क्र्टानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! नवक्र्टानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा सिद्धायतनक्रटं १ निष्धक्र्यं २ इरिवर्षक्र्टं ३ पूर्विविदेहक्र्टं ४ हरिक्टं ५ धृतिक्र्टं ६ शीतोदाक्र्टं ७ अपरविदेह क्र्ट्रम् ८ रुवकक्र्यम् ९ य एव क्षुद्रहिमवत्क्र्टानाञ्चचत्वविष्क्रम्भपरिक्षेपः पूर्वविणितः राज्ञधानी च सा एव इहापि नेतव्या, अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते निष्धो वर्षधरपर्वतः २ ?, गौतम ! निष्धे खळ वर्षधरपर्वते बहूनि क्र्टानि निष्धसंस्थानसंस्थितानि ऋपअसंस्थानसंस्थितानि, निष्धश्राक्षेत्रो महर्द्धिको यावत् पर्योपमस्थितिकः परिवसति, स तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते निष्धो वर्षधरपर्वतः २ ॥ स० १६ ॥

टीका-'तस्स णं तिगिछिद्दहस्स' इत्यादि, 'तस्स णं तिगिछिद्दहस्स दिनखणिरछेणं तोरणेणं इरिमहाणई पवृदा समाणी सत्त जोयणसहस्साई चत्तारि य एगवीसे जोयणसए एगं च एग्णवीसइमागं जोयणस्स दाहिणाभिग्रही पव्वएणं गंता यहया घटग्रहपवित्तिएणं जाव साइरेग चउत्रोयणसइएणं पवाएणं पवडइ' तस्य अनन्तरोक्तस्य खळ तिथिष्ठिष्टदस्य दाक्षिणात्येन दक्षिणदिग्मवेन तोरणेन विद्विद्देश हिर्म्महानदी हिर्म्हामनी महानदी प्रव्यूदा निगेता सती सप्तयोजनसहस्राणि चत्वारि च एमविंशानि-एकविंशत्यधिकानि योजयशतानि योजनस्यक्षमेकोनविंशतिभागं च दक्षिणाभिग्रखी पर्वतेन गत्वा महायटमुखप्रवृत्तिकेन यावन्सातिरेक चन्नुयाँजनशिवकेन प्रपातेन प्रयत्ति, इति प्राय्वत्, तत्र यावत्यदेन मुक्ताविरहार-संहिथतेनेति ग्राह्मप्, पर्वतगन्तव्यप्रदेशोपपित्तस्तु-पोडश सहस्राष्टशत द्वाचत्वारिंशयोजन

'तस्य णं तिगिछिदहस्स दिक्खणिल्छेणं तोरणेणं'-इत्यादि

टीकार्थ-(तस्स णं तिगिछिदहस्स) उस तिगिछिद्रहके (दिविखणित्छेणं) दक्षिणदिग्वर्ती (तोरणेणं) तोरण द्वार से (हरिमहाणई पवृद्धा समाणीं) हरित्र नाम की
महानदी निकली है और निकलकर वह (सत्तजोयणसहस्सा; चलारिय एकवीसे
जोयणसण एगंच एम्णवीसहभागं जोयणस्म दाहिणामुही पव्वएणं गंता मह्या
घडमुहपवित्तिण णं जाव साहरेग चड जोयण सहण्णं पवाहेणं पवडह)
७४२१ १ पोजन तक उसी पर्वत पर दक्षिणदिशाकी और वही है और घट के
मुख से बडेशेंग के साथ निकले हुए मुक्ताविलहार के जैसे निर्मल अपने प्रवाह

'तस्स णं तिगिंछिदहस्स दिक्खणिल्छेणं तोरणेणं' इत्यादि

टीडार्थ-'तस्स णं तिमि छिद्दस्स' ते तिभिछिद्रद्वना 'दिव्खणित्लेणं' दक्षिणु दिञ्वती' 'तोरणेणं' तोरणु द्वारथी 'हिमिहाणई पवृद्धा समाणी' द्वित नामनी भद्धानदी नीडणे छे अने नीडणीने ते 'सत्त जोयणसहस्साई चतारिय एकवीसे जोयणसए एगं च एगूणवीसहमागं जोयणस्स दाहिणामुही पडवएणं गंता महया घडमुद्द पवित्तिएणं जाव साहरेग चड जोयण सहएणं पवाहेणं पवडद् '७४२१ हेट थालन सुधी ते क पर्यत ७५२ दक्षिणु दिशा तरह अवादित था छे. अने घटना भणभांथी अतीव वेग साथ नीडणता सुद्रताविद्धारना केवा निर्भण

प्रमाणाम्त्रिषप्रविस्ताराद् द्विसहस्रयोजनप्रमाणे द्रद्विस्तारेऽपहते शेषेऽद्धींकृते भवतीति। निगमयन्नतिदेशसूत्रमाह-'एवं' इत्यादि, 'एवं जा चेव हरिकंताए वत्तव्वया सा चेव हरीए वि णेयव्या' एवम् अनन्तरोक्त प्रकारेण यैव वक्तव्यता हरिकान्ताया महानद्याः प्रागुक्ता सैव वक्त-व्यता इरितोऽपि प्रकृताया इरिश्नामन्या महानद्या अपि नेत्व्या ज्ञानविषयतां प्रापणीया ज्ञेये-त्यर्थ:, 'जिब्भियाए कुंडस्स दीवस्स भवणस्स तं चेव पमाणं अद्वोऽवि भाणियन्त्रो' अस्या-महानद्याः जिह्निकायाः प्रणाल्याः कुण्डस्य द्वीपस्य हरिद्वीपस्य भवनस्य च प्रमाणं तदेव हरिकान्ता प्रकरणोक्तमेव बोध्यम् , अथौँऽपि हरिद्वीप नामनो हेतुरपि भणितव्यः हरिकान्ता-नुसारेण वक्तव्यः अपि शब्दाव्छयनीयं प्राह्मम् तथाहि-हरिन्महानदी यतः प्रपतित अत्र खु महत्येका जिह्निका प्रज्ञप्ता, सा च द्वे योजने आयामेन, पश्चविंशतिं योजनानि विष्क-म्भेण अर्द्ध योजनं वाहरुयेन, मकरमुखविवृतसंस्थानसंस्थिता सर्वरत्नमयी अच्छा, इरित् खर्छ से कि जिसका प्रमाण कुछ अधिक चार हजार योजन का है तिगिछिप्रपात कुण्ड में गिरती है (एवं जा चेव हरिकंताए वत्तव्वया सा चेव हरीए वि णेयव्वा) इस तरह जो हरिकान्ता महानदी का वक्तव्यता है वही वक्तव्यता इस हरित नामकी महानदी की भी जाननी चहिये यह महानदी पर्वत के ऊपर ७४२१ 🚉 योजन तक वही जो कही गई है सो यह प्रमाण इस प्रकार से निकाला गया है कि-निषध वर्षधर पर्वत का व्यास १६८४२ योजन का कहा जा चुका है उसमें से २००० घोजन का हुद का प्रमाण घटा देने पर १४८४२ घोजन वचते हैं सो इन्हें आधा करने पर पूर्वीक प्रमाण निकल आता है इस हरित नाम की महा-नदी की जिह्नविका का, कुण्ड का, हरिद्वीप का, और भवन का प्रमाण हरि-कान्ता के प्रकरण में जैसा इनका प्रमाण कहा गया है वैसा ही है तथा हरिद्वीप ऐसे नाम होने का कारण भी हरिकान्ता के प्रकरण के अनुसार जान छेना चाहिये इस पूर्वीक कथन के सम्बन्ध में स्पष्टी करण ऐसा है-यह हरित महा-

એવા પાતાના પ્રવાહથી કે જેનું પ્રમાણ કંઈક વધારે ચાર હજાર યાજન જેટલું છે-તિગિછિ પ્રપાત કુંડમાં પહે છે. 'एवं जा चेव हरिकंताए वत्तव्या सा चेव हरीए वि गेयव्या' આ પ્રમાણે જે હરિકાન્તા મહાનદીની વક્તવ્યતા છે તે જ વક્તવ્યતા એહરિત ન મક મહાનદીની પણ જાણવી જોઈ એ. એ મહાનદી પર્વતની ઉપર ૭૪૨૧ ને દ યોજન સુધી પ્રવાહિત થતી કહેવામાં આવેલ છે. આ પ્રમાણ આ રીતે કાઢવામાં આવેલ છે, કે નિષધ વર્ષધર પર્વતના ગાસ ૧૬૮૪૨ મે જન જેટલા કહેવામાં આવેલ છે. તેમાંથી ૨૦૦૦ યાજન હૃદનું પ્રમાણ આદ કરીએ તા ૧૪૮૪૨ યાજન શેષ રહે છે. તો આ સંખ્યાને અધી કરવામાં આવે તો પૂર્વાકત પ્રમાણ નીકળી આવે છે. એ હરિત નામક મહાનદીની જિલ્ફિકાનું, કુંડનુ, હરિદ્વીપનું અને લવનનું પ્રમાણ હરિકાન્તાના પ્રકરણમાં જે રીતે એ સર્વનું પ્રમાણ કહેવામાં આવેલ છે, તેવું જ છે. તેમજ હરિદ્વીપ એવું નામ છે તેનું કારણ પણ હરિકાન્તાના પ્રકરણ મુજબ જ જાણી લેવું જોઈએ. એ પૂર્વીકત કથનના સંખંધમાં આ પ્રમાણે સ્પષ્ટતા કરી શકાય કે-એ

महानदी यत्र प्रवर्तत अत्र खलु महदेकं हरित्प्रवासकुण्डं नाम कुण्डं प्रज्ञप्तम् , तच्च द्वे च चत्वारिशे योजनशते आयामविष्कम्भेण सप्त एकोनषड्टानि योजनशतानि परिक्षेपेण अच्छम् एवं कुण्डस्य वक्तव्यता सर्वा ने त्व्या यावत खळ हरित्प्रपातकुण्डस्य बहुमध्यदेशभागः, अत्र खलु महानेको इरिद्वीपो नःम द्वीपः प्रज्ञप्तः द्वात्रिशतं योजनानि आयामविष्कम्भेण एको-त्तरं योजनशतं परिक्षेपेण द्वी क्रोशावुच्छितो जलान्तातः सर्वरत्नमयः अच्छ , स खल्ल एकया पद्मवरवेदिकया एकेन च वनवण्डेन सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्तः अत्र पद्मवरवेदिका वन-नदी जिस स्थान से कुण्ड में गिरती है वहां एक महती जिह्विका प्रणाली है इसका आयाम दो घोजन का हैं विस्तार २५ घोजन का है बाहल्य इसका आधे योजन का है तथा मगर के खुले हुए ग्रुख का जैसा आकार होता है वैसा ही इसका आकार हैं यह सर्वात्मना रत्नमयी है तथा अच्छ आकाश और स्फटिक के जैसी सर्वथा निर्मल है। हरित महानदी जहां पर पर्वत के ऊपर से गिरती है वहां पर एक हरित्प्रप≀त कुण्ड हैं इस कुण्ड का आयाम और विष्कस्भ २४० योजन का है तथा ७५९ योजन का इसका परिक्षेप है यह अच्छ आकाश एवं स्फटिक के जैसा निर्मल है और सर्वात्मना रत्नमय है! इस तरह की जो कुण्ड की व्यक्तव्यता कही जा चुकी है वह सब तोरण तक उसी प्रकार से यहां पर भी कह छेनी चाहिये इस हरिप्रपात कुण्ड के बिलकुल मध्य भाग में एक हरिद्वीप नाम का द्वीप है। इसका आयाम और विष्कम्भ ३२ योजन का है और १०१ योजन का इसका परिक्षेप है यह पानी के ऊपर से दो कोजा ऊंचे उठा है यह द्वीप भी सर्वातमना रत्नमय है और अच्छ हैं। यह द्वीप चारों ओर

હિરિત મહાનદી જે સ્થાન પરથી કુંડમાં પડે છે, ત્યાં એક વિશાળ જિહ્દિકા પ્રણાલી છે. એના આયામ બે યોજન જેટલા છે. અને વિસ્તાર ૨૫ યાજન જેટલા છે. એનું બાહલ્ય અર્ધા યાજન જેટલું છે. તેમજ મગરના ખુલા મુખના જેવા આકાર હાય છે તેવા જ આના આકાર છે. એ સર્વાત્મના રત્નમથી છે. તેમજ અચ્છ, આકાશ અને સ્ફર્ટિક જેવી સર્વાથા નિર્મળ છે. હરિત મહાનદી જયાં પર્વત ઉપરથી નીચે પડે છે તાં એક હરિત્પ્રપાત કુંડ આવેલ છે. એ કુંડના આયામ અને વિષ્કંભ ૨૪૦ યાજન જેટલા છે તેમજ ૭૫૯ યાજન જેટલા એના પરિશ્વપછે. એ અચ્છ આકાશ અને સ્ફર્ટિકવત્ નિર્મળ છે અને સર્વાત્મના રત્નમય છે. આ પ્રમાણે જે કુંડની વક્તવ્યતા કહેવામાં આવેલી છે તે ભધી તારણ સુધીની તે પ્રમાણે જ અહીં જાણી લેવું જોઇએ. એ હરિત્પ્રપાત કુંડના એક્ક્લમ મધ્ય ભાગમાં એક હરિદ્રીપ નામક દ્રીપ છે. એ દીપના આયામ અને વિષ્કંભ ૩૨ યોજન જેટલા છે અને ૧૦૧ યોજન જેટલા એના પરિશ્વપ છે, એ પાણીની ઉપરથી એ ગાઉ ઊંચે ઉઠે છે. એ દ્રીપ પણ સુર્વાત્મના રત્નમય છે અને અચ્છ છે. એ દ્રીપ ચામેરથી એક પદ્મવદ્મવેદિકાથી અને એક

से एक पद्मवर वेदिका से और एकवनषण्ड से घिरा हुआ है। यहां पर पद्मवरवे-

कडियो वीर्णको भिणितव्यः साच पञ्चमपष्ठसूत्रतो बोध्यः, तस्य खळ हरितप्रपातकुण्डस्य औत्त-राहेण तोरणेन यावत् प्रव्युदा सति हरिवर्षे वर्षमे नमाना २ विकटापातिन वृत्तवैताद्वयं योजनेन अप्रम्याप्ता पश्चिमाभिग्नुखी आहत्ता सति हरिवर्ष द्विषा विभजमाना २, इति, एउदेव स्व-यितुमाह-'जात्र अहे जगई दालइत्ता' इत्यादि, यावत् अश्रो जगर्ती दारयित्वा अथः-अधीर भागे जगतीं पृथ्वीं दारियत्वा भित्वा 'छप्पण्णाच सिंछ्छासहस्सेहिं समग्या पुरित्थमं छवण-समुदं सम॰पेइ' पृट् पञ्चाशता सिळिलासहस्रैः महानदीसहस्रैः समग्रा परिपूर्णी पौरस्त्यं पूर्वदिरभवं लक्षणसमुद्धं समाप्नोति, 'तं चेव पबहे य मुहमूळे य पमाणं उन्वेही य जो हरि-कंताए जाव वलसंडसंपरिक्खिता' तदेव हरिकान्ता प्रकरणोक्तमेव प्रवहे च भुखमू छे च प्रमा-णमुद्रेषश्च यो हरिकान्सायाः यावत् वनपण्डसंपरिक्षिप्ता तथाहि-हरिता खळ महानदी प्रवहे पञ्चित्रिति योजनानि विष्यम्भेण अर्द्धयोजनशुद्धेधेन तदनन्तरं च खळ मात्रथा २ परिवर्द्धः माणा २ मुख्यमूळे अर्द्धत्तीयानि योजनशतानि विष्कम्भेण पश्च योजनानि उद्वेशेन, उभयोः पार्श्वयोः द्वाभ्यो पद्मवरवेदिकाभ्यां द्वाभ्यां च यनपण्डाभ्यां संपरिक्षिप्ता, इति, 'तस्स अ दिका और वनवण्ड का वर्णन कर छेना चाहिये यह वर्णन पंचम और छडे सूत्र से जान छेना चाहिये। उस हरितप्रपात कुण्ड के उत्तर दिग्वर्ती तौरण द्वार से यावतू निकलनी हुई यह हरित महानदी हरिवर्ष क्षेत्रकी ओर आर्ती २ विकटा पाती बृक्तवैताढ्य पर्वत की एक योजन दूरी पर छोड देती है और फिर वहां से पश्चिमकी ओर मुङ्कर हरिवर्ष क्षेत्र के मध्यभाग में बहती है इससे इस क्षेत्र के दो हिस्से हो जाते हैं-फिर वहां से जम्बूद्वीप की जगती विदीर्णकर ५६ हजार निद्यों के परिवार से युक्त हुई यहमहानदी पूर्वदिग्वर्ती लबण समुद्र में आकर मिल जाती है यह हरित महानदी पवह में विष्कम्भकी अपेक्षा २५ योजन प्रमाण है और उद्येथ इसका आधे योजन का है इसके बाद बढते बढते मुखमूल में यह २५० घोजन की विष्कम्भकी अपेक्षा हो गई है और उद्देध इसका ५ यो जन का हो गया है दोनों पार्श्व भागां में यह दो पर्मवर वेदिकाओं

વનષંડથી આવત છે. અહીં પદ્મવરવેદિકા અને વનષંડનું વર્ણન સમજ લેવું જોઇએ એ વર્ણન પાંચમા અને છટ્ટા સૂત્રમાંથી હાણી લેવું જોઇએ. એ હન્તિપાત કુંડના ઉત્તર દિગ્વર્તી તેરણ દ્વારથી યાવત નીકળતી એ હસ્તિ મહાનદી હરિવર્ષ ક્ષેત્રની તરફ પ્રવહિત થની વિકટાપાતી વૃત્ત વૈતાહય પર્વતને એક યાજન સુધી દ્વર છાંડી કે છે, અને પછી ત્યાંથી તે પશ્ચિમ તરફ થઈ ને હરિવર્ષ ક્ષેત્રના મધ્ય ભાગમાં પ્રવાહિત થાય છે. એથી આ ક્ષેત્રના એ ભાગ થઇ જાય છે. પછી ત્યાંથી જંબૂદીપમાં પ્રવાહિત થતી અને પદ હજાર નદીઓના પરિવાર સાથે સંપૃક્ત થઇને એ મહાનદી પૂર્વ દિગ્વર્તી લવણ સમુદ્રમાં આવીને મળે છે. એ હરિત મહાનદી પ્રવાહમાં વિષ્કંભની અપેક્ષાએ ૨૫ યોજન પ્રમાણ છે અને આના ઉદ્દેધ અર્ધા યોજન જેટલી વિષ્કંભની અપેક્ષાએ એ ૫ યોજન જેટલી વિસ્તૃત થઇ ગઈ

तिगिछिद्दहस्य उत्तरिस्छेणं तोरणेणं सीओया महाणई पत्रुदा समाणी' तस्य पूर्वीकस्य खर्ख तिशिच्छिहृदस्य औत्तराहेण उत्तरदिग्मवेन, तोरणेन बहिर्द्वारेण शीतोदा महानदी प्रव्युदा निः हुता सती 'सत्त जोयणसहस्साई चत्तारि य एगवीसे जोयणसए एगं च एगुणवीसइ भागं जोयणस्म' सप्त योजनसहस्राणि चत्यारि च एकतिंशानि एकविंशत्यधिकानि योजन-शतानि एकं च एकोनविंशतिभागं योजनस्य 'उत्तराभिम्रही पव्वएणं गंता महया घडम्रहपविः त्तिएणं जाव साहरेग चउनोयणसहएणं पवाएणं पवडह' उत्तराभिमुखी उत्तरदिगिममुखी पर्वतेन गत्रा महाधटमुखप्रवृत्तिकेन बृहद् घटमुखा च्छब्दायमानज्ञीच बत्प्रवृत्तिशालिना अस्य प्रपातेनेत्यग्रिमेण सम्बन्धः पुनः कीटशेन ? इत्याह-यावत् यावत्पदेन मुकाविहारं-संस्थितेन-एतद्वचारुया-इरिकान्ता प्रकरणवत् सातिरेकयोजनश्चतिकेन साधिकयोजनशतप्रमा-से और दो वनषंडों से परिक्षिप्त हैं (तस्सणं तिगिछिदहस्स उत्तरिल्छेणं तोरणेणं सीओआ महाणई पवृदा समाणी सत्त जोयणसहस्साई चत्तारिय एगवीसे जोयणसए एंगच एगूणवीसईभागं जोयणस्य उत्तराभिमुही पव्वएणं गंता महया घटमुह पवित्तिएणं जाव साइरेग चउ जोयणसइएणं पवाएणं पवडइ) उस तिगिछिहद के उत्तर दिग्वर्ती तोरण से सीतोदा नामकी महानदी निकली है यह महानदी पर्वत के उपर ७४२१ र योजन तक उत्तर दिशा की ओर बहकर फिर यह घट के मुख से निकले हुए जलभवाह के तुल्य वेगशाली अपने विशाल प्रवाह से प्रपातकुण्ड में गिरती है। इसका प्रवाह प्रमाण कुछ अधिक सी योजन का कहा गया है यह सीतोदा महानदी जहां से प्रपात कुण्ड में गिरती है वहां पर एक विशाल जिह्नविका है इसका प्रमाण आयाम की अवेक्षा ४ योजन का हैं और विष्कम्भ ५० योजन का है तथा १ योजन का इसका बाहल्य हैं इसका आकार मगर के खुड़े हुए मुख जैता है तथा यह सर्वात्मा वज्रमयी છે. બન્ને પાર્રવ લાગામાં એ એ પદ્મવરવેદિકાએાથી અને એ વનષંડાથી પરિક્ષિપ્ત છે. 'तस्स णं तिगि'छिद्दहस्स उत्तरिल्लेणं तोरणेणं सीओआमहाणई पवृदा समाणी सत्त जोयण सहस्साइं चत्तारिय एगविसे जोयणसए एगं च एगूणवीसइभागं जोयणस्स उत्तराभिमुदी पटबएणं गंता महया घटमुहपवित्तिएणं जाव साइरेग चड जोयणसइएणं पवाएणं पवडदः' તે તિગિછિ હુદના ઉત્તર દિગ્વતી તારે હોાથી સૌતાદા નામે મહાનદી નીકળે છે. એ મહા નદી પર્વતની ઉપર ૭૪૨૧ કૃષ્ટ ચાજન સુધી ઉત્તર દિશા તરફ પ્રવાહિત થઇને પછી એ ઘટના મુખમાંથી નીકળતા જલપ્રવાહની જેમ વેગશાલી પાતાના વિશાલ પ્રવાહથી પ્રપાત કુંડમાં પડે છે. એનું પ્રવાહ પ્રમાણ કંઇક વધારે ૧૦૦ યાજન જેટલું કહેવામાં આવેલ છે. એ સીતાેદા મહાનદી જ્યાંથી પ્રપાત કુંડમાં પડે છે ત્યાં એક વિશાળ જિહ્નિકા છે. એનું આચામની અપેક્ષાએ પ્રમાણ ૪ યાેજન જેટલું અને વિષ્કં સનૌ અપેક્ષાએ પ૦ યાેજન જેટલું છે. તેમજ એક ચાજન જેટલા પ્રમાણનું આનું બાહુલ્ય છે. એના આકાર મગરના ખુલા મુખના જેવા છે तेमक की सर्वात्मना वल्लभयी छे, अने सर्वधा निर्मण छे. 'सीओ

णेन प्रपातेन प्रपतित । 'सीओयाणं महाणई जओ पवडह एत्थ णं महं एगा जिब्भिया पण्णत्ता' शीतोदा खल महानदी यतः प्रयतित अत्र खल महत्येका जिहविका-प्रणाली प्रज्ञप्ता, तस्या मानाद्याह-'चत्तारि' इत्यादि । 'चत्तारि जोयणाई आयामेणं पण्णासं जोयणाई विक्खंभेणं जोयणं बाहरूछेणं मगरम्रहविउद्वसंठाणसंठिया सन्ववहरामई अच्छ।' चत्वारि योजनानि आया-मेन पञ्चाशतं योजनानि विष्कम्भेण योजनं बाहरुयेन मकरमुखविवृतसंस्थानसंस्थिता सर्ववज्र-मयी अच्छा प्रागुवत्, अय कुण्डस्वरूपमाइ-'सीओया णं' इत्यादि, 'सीओया णं महाणई जिह प्रवह एत्थ में महं एगे सीओयप्पवायक है णामं कुंडे पण्णते, चत्तारि असीए जीय-णसए आयामनिवसंभेणं पण्णरस अहारे जोयणसए किंचिनिसेस्रणे परिवर्षेवेणं अच्छे एवं कुंडवत्तव्वया णेयव्या जाव तोरणां शीतोदा खल्ज महानदी यत्र प्रपतित अत्र खल्ज महदेकं शीतोदा मपातकुण्डं नाम कुण्डं प्रज्ञप्तम् , चत्वारि अशीतानि-अशीत्यधिकानि योजनशतानि आयामविष्कमभेण, पञ्चदश अष्टादशानि अष्टादशाधिकानि योजनशतानि किश्चिदविशेषो-नानि परिक्षेपेण, अच्छम् एवं कुण्डवक्तव्या नेतव्या यावत् तोरणाः । अत्र कुण्डस्य योजन-प्रमाणं हरित्कुण्डतो द्विगुणं बोध्यम् । अथ शीतोदा द्वीवस्वरूपमाह-'तस्स णं सीओयप्ववाय-कुंडस्स बहुमज्झदेसभाष्, पत्थ[ं]णं महं एमे सीओयदीवे णामं दीवे पण्णते' तस्य खलु शीतादाप्रपातकुण्डस्य बहुमध्यदेशभागः, अत्र अत्रान्तरे खलु महानेकः शीतीदा द्वीपो नाम द्वीपः प्रज्ञप्तः, तस्य मानाद्याह-'चउत्तर्हि जोयणाई' चतुष्पिट योजनानि 'आयामविवसंभेणं है और विलक्कल निर्मल है (सीओआणं महाणई जहिं पवडई एत्थ णं महं एगे सीओयप्यवायकुण्डे णामं कुण्डे पण्णत्ते) सीतोदा महानदी जहां पर गिरती है वहां पर एक सोतोदाप्रपातकुण्ड कहा गया है (चत्तारि असीए जोयणसए आयामविक्खंभेणं पण्णरस अद्वारे जोयणसए किंचि विसेसणे परिवखेवेणं अन्छे, एवं कुण्डवस्तव्वया णेयव्वा) ४८० योजन का इसका आयाम और विष्कम्भ है तथा कुछ कम १५१८ योजन का इसका परिक्षेप है यह बिलकुल स्वच्छ है इस प्रकार से यहाँ कुण्डके सम्बन्धकी वक्तव्यता कह छेनी चाहिये (तस्सणं सीओअप्पवायकुण्डस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे सीओ अदीवे णामं दीवे पण्णांते) इस सीतोदा प्रपातकुण्ड के ठीक बीच भाग में एक

आणं महाणाई जिहं पवडइ एत्थ णं महं एगे सीओयणवाय कुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते' सतीहा महा नही लयां पडे छे त्यां ओठ सीतोहा प्रपात नामक कुंड आवेश छे. 'चत्तारि असीए जोयणसए आयामविक्खंभेणं पण्णरस अट्टारे जोयणसए कि चिविसेस्णे परिक्खेवेणं अच्छे कुण्डवत्तव्यया णेयव्या' ४८० थे। जन प्रभाण ओने। आयाम ओने विष्कं ल छे तेमल कंछे कम १५१८ थे। जन केटेशे। ओने। परिक्षेप छे. ओ सर्वधा स्वय्ध छे. आ प्रभाणे अहीं कुंडे संअधि विक्तव्यता सम्छ सेवी केडिओ. 'तस्स णं सीओअप्यवायकुंडस्स बहुमब्झ देसमाए एत्थ णं महं एगे सीओअदीवे णामं दीवे पण्णत्ते' ओ सीतोहा प्रपात कुंडना ठीक मध्य

दोण्णि वि उत्तरे जोयणसए परिवस्तेवेणं दो कोसे ऊसिए जलंताओ सन्ववइरामए अच्छे सेसं तमेव' आयामविष्कम्भेण द्वे द्वचुत्तरे योजनशते परिक्षेपेण द्वौ क्रोशों उच्छितो जलान्तात् सर्ववज्ञमयोऽच्छः, नवरम् शेषम् उत्तातिरिक्तं तदेव गङ्गाद्वीपत्रकरणोक्तमेव दच्व शिष्यस्मरं णार्थे शेषं नामतो निर्दिशति—'वेइया वणसंख' इत्यादि, 'वेइया वणसंखभूमिभागभवणसयं णिज्ञ अहो भाणियव्यो' तत्र वेदिका पद्मत्रस्वेदिका वनषण्डः भूमिभागः भवनं शयनीयं च मूछे प्राकृतत्वाद्विभक्तिलोपः तथा अर्थः नामहेतुः भणितव्यः—वक्तव्यः स च गङ्गाद्वीपवत्। अथास्याः समुद्रप्रवेशप्रकारमाह—'तस्स णं सीओयण्यवायकुं इस्स' इत्यादि, 'तस्स णं सीओ-यण्यवायकुं इस्स उत्तरिच्छेणं तोरणेणं' तस्य खळ शीतोदाप्रपातकुण्डस्य औतराहेण उत्तर-दिग्भवेन तोरणेन वहिद्वरिण 'सीओया महाणई पवृदा समाणी' शीतोदामहानदी प्रव्यूदानिःसता सती 'देवकुरुं एज्जेमाणा' देवकुरून् मूछे प्राकृतत्वादेकवचनम् , एजमाना २ गच्छन्ती २ 'चित्तविचित्तकुर्छे पव्यए निसढ देवकुरुद्धर—सुलस—विज्जुष्पभदहे अदुहा विभयमाणी सीतोद द्वीप नाम का द्वीप है (चउसद्धि जोयणाइं आयामविवस्तंभेणं दोणिण वि

सीतीद बीप नाम का बीप है (चउसिंड जोयणाई आयामविवसंभेणं दोणिण वि उत्तरे जोयणसए परिक्खेवेणं दो कोसे उत्तिए जलं ताओ सन्ववहरामए अच्छे) इसका आयाम और विष्कम्भ ६४ योजन का है तथा २०२ योजन का इसका परिक्षेप है यह जल के उपर से दो कोश उंचा उठा हुआ है यह बीप सर्वात्मना रत्नमय है और विलक्कल साफ-स्वच्छ है। (सेयं तमेव वेइया वणसंडे-भूमिभाग भवण सर्याण्डेजहडों भाणियव्यों) गङ्गाबीपप्रकरण में जैसा पदावरवेदिका, वनखंड, भूमिभाग, भवण शयनीय और उसके इसप्रकार के नाम होने का हेतु कहा गया है वैसाही वह सब प्रकरणानुसार यहां पर भी कह छेना चाहिये (तस्सणं सीओअपण्यवायकुण्डस्स उत्तरिल्छेणं तोरणेणं सीओआ महणई पवृदा समाणी देवकुरुं एडजमाणा २ चित्तविचित्त कूडे पृथ्वए निस्हदेवकुरु सूरसुलस विज्जुष्पभदहे य दुहा विभयमाणी २ चडरासीए सिल्छासहस्सेहिं

लागमां केंक्र सीताह द्वीप नामक द्वीप छे. चडसाट्ट जोयणाई आयामविक्संभेणं दोणिण वि उत्तरे जोयणसए परिक्लेवेणं दो कोसे ऊसिए जलंताओ सव्ववइरामए अच्छे' क्षेना आयाम अने विष्ठं ल ६४ येथिन केंट्रेस छे. तेमक २०२ येथिन केंट्रेस क्षेना परिक्षेप छे. क्षे पाणी उपर के गाड सुधी उपर उठेस छे. को द्वीप सर्वात्मना २त्नमय छे अने सर्वधा निर्मास छे. 'सेयं तमेव वेइयावणसंडे भूमिमाग भवणसयणिक इहुो भाणियव्यो' गंगा द्वीप प्रभरखुमां केवी पदावरवेहिक, वनभंड, लूभिलाग, लवन, शयनीय अने त्यां तेमना नाम विषे के कारखे। स्पष्ट करवामां आवेक्षां छे तेवुं क सर्व कथन अद्धी पख् प्रभरखानुसार लाखी क्षेत्रं निर्मा सीओअपवायक इस्त उत्तरिल्लेणं तोरणेणं सीओआ महाणई पवृहा समाणी देवकुरुं एक जमाणा २ चित्त विचित्त कृडे पव्वए निसद देवकुरु सूर सुल्म विज्जुपमदहे य दुहा विभयमाणी २ चडरासीए सल्लिसहस्सेहिं आप्र-

रे' चित्रविचित्रक्टौ पूर्वापरतटवर्तिनौ पर्वतौ निषध १ देवकुरु २ सूर ३ सुलस ४ विद्युत्प्र-म् इदान च द्विधा विभजमाना तन्मध्ये वहन्ती २ विभागक्रमश्रायम्-चित्रविचित्रक्टपर्वतयो र्मध्ये वहनेन चित्रकूटं पर्वतं पूर्वतः कृत्वा विचित्रक्टं च पश्चिमतः कृत्वा देवकुरुषु वहन्तीति-भावः, हदांश्र पश्चापि समश्रेणि वर्तिन एकैकशो द्विधा विभजमाना वहन्ती अत्रान्तरे देवः कुरु वर्तिभिः 'चउरासीए सिळलासहस्सेहिं आप्रेमाणी २' चतुरशीत्या सिळला सहस्नैः महा-मदीसहस्नैः आपूर्यमाणा २ भ्रियमाणा २ 'भदसास्रवणं एज्जेमाणी २' भदसास्रवनं मेरुप्रथ-मवनम् एजनाना २ गच्छन्ती २। 'मंदरं पव्वयं दोहिं जोयणेहिं असंपत्ता पच्चत्थिमाभिग्रही आवत्ता समाणी' मन्दरं पर्वतं द्वाभ्यां योजनाभ्याम् असम्श्राप्ता असंस्पृशन्ती शीतोदा मेर्बी-रष्टी क्रोशा अन्तरास्रमित्यर्थः, ततः पश्चिमाभिमुखी आवृत्ता परावृत्ता सती 'अहे विज्जुप्पभं आपूरेमाणी २ भइसालवणं एउजेमाणी २) उस सीतोदा प्रपातकुण्ड के उत्तर दिग्वर्ती तोरण द्वार से सीतोदा महानदी निकली है और निकलकर वह देव-कुरुक्षेत्र में जाती २ पूर्व और अपर तटवर्शी चित्रविचित्र कूटों को-पर्वतां के। निषध देवकुरु सूर सूलस एवं विद्युत्प्रभ इन समश्रेणिवर्ती पांच हदों को विभक्त करती है उनके यीचमें होकर वहती है विभागकम इस प्रकार से है चित्रविचित्र पर्वतों के बीचमें वहनेसे चित्रकुटपर्वतको पूर्वमें करके और विचित्र-कूट पर्वतको पश्चिममें करके यह नदी देव कुरुमें वहती है समश्रेणिवर्ती पांचो हूदों को एक एक करके प्रत्येक हूदको विभक्त करती है और उनमें बहती है इसी के दरम्यान वह देवकुरुवता ८४ हजार नदियों से युक्त हो जाती है अर जाती है एवं मेर का जो प्रथमवन भद्रसाल वन है वहां जाती है जाते २ यह (मंदरपच्चयं दोहिं जोयणेहिं असंपत्ता) मेरु को तो २ योजन दूर परही छोडती जाती है इस तरह शीतोदा और मेरुका अन्तराल आठकोशका हो जाता है रेमाणी २ भइसालगणं एउजेमाणी २' ते सीताहा प्रपात हुउना उत्तरहिन्वती तीरध् દ્વારથી સીતાદા મહા નદી નીકળે છે, અને નીકળીને તે દેવ કુરુક્ષેત્રમાં પ્રવાહિત થતી થતી પૂર્વ અને અપર તટવર્તી ચિત્ર-વિચિત્ર કૂટોને-પર્વતાને-નિષધ, દેવકુરૂ સૂર સુલસ તેમજ વિદ્યુત્પણ એ સમશ્રેહિવર્લા પાંચ હુંદાને વિભક્ત કરતી તેમની મધ્યમાં થઇને પ્રવા-હિત થાય છે. તે સંબંધમાં વિભાગક્રમ આ પ્રમાણે છે-ચિત્ર-વિચિત્ર પર્વતાની વચ્ચે પ્રવાહિત થાય છે તેથી ચિત્રકૃટ પર્વતને પૂર્વમાં રાખીને અને વિચિત્ર ફૂટ પર્વતને પશ્ચિ-મમાં રાખીને આ નદી દેવકુરુમાં પ્રવાહિત થાય છે. સમશ્રેણિવર્તી પાંચે પાંચ હુદોને क्षेष्ठ क्षेष्ठ हरीने दरेह हुद्दने आ विलक्ष्त हरे छे अने तेमनी आंदरथी प्रवादित याय छे. એ સમયમાં જ એ દેવકુરુવર્લી ૮૪ હજાર નદીઓથી યુક્ત થઇ જાય છે અને પ્રપૃરિત થઇ જાય છે. અને પછી મેરુનું જે પ્રથમ વન ભદ્રશાલ વન છેત્યાં જાય છે. જતાં જતાં की 'मंदरपष्ट्वयं दोहिं जोयणेहिं असंपत्ता' मेरुने ते। की २ थे। ४न इर ४ भूडी है छै. का પ્રમાણે શીતાકા અને મેરુ વચ્ચેના અન્તરાલ આઠ ગાઉના થઈ જાય છે. 'पच्चित्थमाभिमुही' પછી

वक्खारपञ्चर्य दारइत्ता मंदरस्स पञ्चयस्स पञ्चित्थमेणं अवरविदेहं वासं अधः अधोभागे विद्युत्प्रभं तम्नामकं वक्षस्कारपर्वतं नैर्व्हतकोणवर्तिकुरुगोपकपर्वतं दारयित्वा मिन्वा मन्दरस्य पर्वतस्य पश्चिमेन अपरविदेहवर्ष -पश्चिमविदेहवर्ष 'दुहा विभयमाणी २ एगमेगाओ चकव-ष्टिविजयाओ अहावीसाए २ सलिलासहस्सेहि' द्विधा विभजमाना २ एकैकस्मात् चक्रवर्ति-विजयात् अष्टाविंशत्या २ सिळळासहस्नैः महानदीसहस्नैः आपूरेमाणी २ आपूर्वमाणा२ संभ्रिः यमाणा २ तथाहि-अस्याः शीतोदा नद्या दक्षिणतटवर्तिषु अष्टासु विजयेषु गङ्गा सिन्धु इमे द्वे द्वे महानद्यौ चतुर्दश २ सहस्रनदीपरिवारयुते उत्तरतटवर्तिषु अष्टासु विजयेषु रक्ता-रक्तवत्यौ हे हे महानद्यौ चतर्दश २ सहस्रमदीपरिवारयुते स्तः इति प्रतिविजयमण्टाविश्वति नदीसहस्राणि। अथास्याः सकलनदीपरिवारं विशेषेण द्वारपरिगणयन्नाद-'पंचर्हि सलिलासय-सहस्सेहिं' पश्चभिः सलिलागतसहस्तैः महानदीलक्षेण 'दुतीसाए य सलिलासहस्सेहिं समग्गा' (पच्चित्थमाभिमुही) फिर यह पश्चिमकी ओर मुड़कर (अहे विज्जुप्पभं वक्खार पब्बयं दारइसा मंदरस्स पब्बयस्स पच्चत्थिमेणं अवरविदेहं वासं दुहा विभय-माणी २ एगमेगाओ चक्कबिटिवजयाओ अहावीसाए सलिलासहस्सेहिं आपू रेमाणी २ पंचहिं सिलिलासयसहस्सेहिं दुतीसाए य सिलिलासहस्सेहिं समग्गा अहे जर्यंतस्स दारस्स जगई दाउइसा पंचित्थिमेणं लवणसमुदं समप्पेह) अधो-भागवर्ती विद्युत्प्रभ नाम के बक्षस्कार प्रवितको नैन्छत दिग्वता कुरु गोपक पर्वत को-विभक्ते करती हुई मन्दर पर्वतकी पश्चिम दिशा में वर्तमान अपर विदेह-क्षेत्र में पश्चिमविदेह क्षेत्रमें वहती है वहां पर इसमें एक एक चकवर्ती विजय से आ आकर २८-२८ हजार निद्यां और दूसरी मिलजाती है चकवर्ति विजय १६ हैं इन सोलह चक्रवर्तिविजयों की २८-२८ हजार नदियों के हिसाब से ४४८००० नदियोंकी संख्या हो जाती है तथा इस संख्या में देवकुरुगत ८४००० नदियोंकी संख्या जोड़ देने पर यह सब नदियों की-परिवार नदियोंकी-संख्य से पश्चिम तरक अर्ध ने 'अहे विज्जुष्यमं वक्खारपव्ययं दारइत्ता मंदरस्स पव्ययस्य पच्चित्थमेणं अत्रविदेहं यासं दुहा विभयमाणी २ एगमेगाओ चक्कवद्दिविजयाओ अद्वावीसाए सिळळासह-स्सेहिं आपरेमाणी २ पंचहिं सिळ्ळासयसहरसेहिं दुतीसाए य सिळ्डासहरसेहिं समगा अहे जयं तस्स दारस्स जगई दाल्इता पच्चित्थमेणं लगणसमुदं समप्पेइ' अधे। कागवती विध्रप्रक्षनाभक વક્ષરકાર પર્વત નૈઝાલ્ય દિગ્વતી, કુરુગાયક પર્વતને વિભક્ત કરતી મંદર પર્વતની પશ્ચિમ દિશામાં વિદ્યમાન અપર વિદેહ ક્ષેત્રમાં અને પશ્ચિમ વિદેહ ક્ષેત્રમાં વહે છે. ત્યાં એમાં એક એક ચકવર્તો વિજયથી આવી આવીને ૨૮-૨૮ હજાર ખીજી નદીઓ મળે છે. ચક્રવર્તિ વિજ્યા ૧૬ છે. એ ૧૬ ચક્રવર્તિ વિજયાની ૨૮-૨૮ રહસ નદીઓના હિસામથી ૪×૮૦૦૦ જેટલી નદીઓની સંખ્યા થઈ જાય છે. તેમજ એ સંખ્યામાં દેવકુરુગત ૮૪૦૦૦ નદીઓની સંખ્યા ને કીએ તો એ સર્વ નહીઓના પરિવાર÷સર્વ નહીઓની સંખ્યા–પરૂર૦૦૦ થઇ જાય છે.

द्वातिंशता च सिल्लासहस्नः समग्रा परिपूर्णी तथाहि-तटद्वयवर्तिषु षोडशसु विजयेषु अध्टा-विश्वति२ नेदीसहस्नाणीत्यष्टाविंशतिसहस्नाणि पोडशिभर्गण्यन्ते, तथागुणने चतुर्लक्षाणि अष्टा-चत्वारिंशत्सहस्नाणि जातानि, अत्र राशौ कुरुग ८४ सहस्ननदीप्रक्षेषे यथोवतं मानं जातिमिति, 'अहे जयंतस्स दारस्स जगई दालइत्ता पच्चित्थिमेणं लवणसमुद्दं समुप्पेइ' अधः अधोभामे जयन्तस्य द्वारस्य पश्चिमदिग्वतिं जम्बूद्वीप द्वारस्य जगतीं पृथ्वीं दारियत्वा भित्त्वा पश्चिमेन पश्चिमभागेन लवणसमुद्दं समाप्नोति । अथास्याः शीतोदाया मानाद्याह-'सीओया णं महाणई' शीतोदा खल्च महानदो 'पवहे पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं जोयणं उव्वेहेणं' प्रवहे हदािश्व-

५३२०० आ जाती है इसी वात को सूत्रकारने (एगमेगाओ चक्कविध्विज्ञ याओं" आदि सूत्रपाठबारा समझाया है ये चक्रवितिबिजय ज्ञीतोदा महानदी के दक्षिण तटपर आठ हैं और उत्तरिवर्गी तट पर आठ हैं दक्षिण दिग्वर्ती तट पर जो आठ चक्रवर्ती विजय हैं उनमें गङ्गा और सिन्धु ये दो निद्यां अपनी अपनी २१४ हजार निद्यों के परिवार बाली हैं और उत्तर दिग्वर्ती तट पर जो चक्रवर्ती विजय है उनमे रक्ता और रक्तवती ये दो महानदियां हैं इनकी भी परिवारभूत निद्यां १४ – १४ हजार हैं। इस तरह हुर एक विजय में २८ – २८ हजार निद्यों का समूह है अतः १६ विजयों में वह परिवार कितना होगा? तो इसे निकालने के लिए गणित पद्धित के अनुसार २८ हजार के साथ १६ का गुणा करने पर यह परिवार पूर्वोक्त रूपसे आ जाता है और फिर उसमें देवकुरुगत निद्यों की संख्या जोड देने पर यह परिवार ५ लाख ३२ हजार हो जाता है। फिर यह नदीं वहां से मुडकर जम्बूद्धीप के पश्चिमदिग्वर्ती जयन्त द्वार की जगती को फोडकर पश्चिमभाग से लवणसमुद्व-

ओल वातने सूत्रधारे 'एगमेगाओ चक्कबिहिविजयाओ' वगेरे सूत्रपाठ वडे स्पष्ट हरी छे. ओ यड़वरी विलयो शीतेहा महानहीना हिल्ल तट ઉपर आठ छे अने उत्तर हिंग्वरी तट उपर आठ छे, हिल्ली हिंग्वरी तट उपर आठ छे, हिल्ली हिंग्वरी तट पर ले आठ यड़वरी विलयो छे, तेमां गंगा अने सिंधु ओ महीओ पातपातानी १४ डलार नहीं ओना परिवारथी युद्धत छे अने उत्तरहिंग्वरी तट तरह ले आठ यड़-वर्ती विलयो छे, तेओमां रक्ष्ता अने रक्ष्तवरी ओ छे महानहीं छे. ओ नहीं ओनी परिवार भूत अन्य नहीं ओ पणु १४-१४ हलार छे.

આ પ્રમાણે દરેક દરેક વિજયમાં ૨૮--૧૮ હતાર નહીંઓના સમૂહ છે. હવે ૨૬ વિજયોમાં આ પરિવાર કેટલા હશે ? એ જાણવા માટે ગણિત પહિત મુજમ ૨૮ હજારની સાથે ૧૬ના ગુણાકાર કરીએ તા આ પરિવાર પૂર્વેક્તિ રૂપમાં આવી જાય છે. અને પછી તેમાં દેવકુરુગત નહીંઓની સંખ્યા જોડીએ તા એ પરિવાર પ લાખ, ૩૨ હજાર થઈ જાય છે. પછી આ નદી ત્યાંથી વળીને જંખૂઢીપના પશ્ચિમ દિગ્વતી જયન્ત દ્વારની જગ

र्गमे पश्चाश्चतं योजनानि विष्कम्भेणं विस्तारेण हरिश्वदी प्रवहादस्याः प्रवहस्य द्विगुणस्वात् , योजनमुद्वेषेन उण्डत्वेन, 'तयणंतरं च णं मायाए २ परिवद्धमाणी २' तदनन्तरं च मात्रया २ क्रमेण २ प्रतियोजनं समुद्तियो ईयोः पार्श्वयो रशीति धनुर्वृद्धया प्रतिपार्श्व चत्वारिंश-द्धनुर्देदचेत्यर्थः पश्विद्धमाना २ 'मुहमूले पंच जोयणसयाई विवर्खभेणं दस जोयणाई उन्वे-हेणं उभओ पासिं दोहिं' मुखमू छे सागरप्रवेशे पश्च योजनशतानि विषक्रमेण प्रवहविष्क-म्भापेक्षया मृखमूलविष्कम्भस्य द्विगुणत्वात्, दश योजनानि उद्वेधेन भूप्रवेशेन आद्यप्रवहो-द्वेघापेक्षयाऽस्य दशगुणत्वात् उभयोः पार्थयोः भागयोः द्वाभ्यां 'पउमवरवे इयाहि दोहि य वणसंडेहिं संपरिक्खिता' पद्मवरवेदिकाभ्यां द्वाभ्यां च वनक्ष्डाभ्यां संपरिक्षिप्ता । अध निषधवर्षधरपर्वते क्टवक्तव्यमाह-'णिसढे णं भंते' निषधे खळ भदन्त ! 'वासहरपव्वए णं में प्रवेश करती है (सीओयाणं महाणदी पबहे पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं जोयणं उच्वेहेणं, तयणंतरंच णं मायाए परिवद्धमाणी२ मुहमूले पंचजोयणस्याई विक्खंभेणं दस जोयणाइं उच्वेहेणं उभओ पासि दोहिं पउमवरवेहयाहिं दोहिय वणसंडेहिं संपरिक्खिता) यह सीतोदा महानदी हुद से निगीम के स्थान में हरित नदी के पवह की अपेक्षा उसके द्विगुणित होने से ५० योजन के विस्तार वाली है, उद्वेध इसका एक योजन का है इसके बाद वह क्रमशः बढती हुई प्रतियोजनपर दोनों पार्श्वभागमें ८० घंतुषकी वृद्धिवालो होती २ अर्थात् एक पार्श्वमें ४० घनुष की वृद्धि से वर्धित होती २ मुखमूलमें-सागर में प्रवेश करने के स्थानमें-यह पांचसौ योजन तकके मुखमूल विष्कम्भवाली हो जाती है क्यों कि प्रवह विष्करभ की अपेक्षा मुखमूल का विष्करभ दुगुणा हो जाता है यह दोनों पार्श्वभाग में दो पद्मवर वेदिकाओं से और दो वनषंडो से परिक्षिप्त है (णिसहे णंभते ! वासहरपव्वए णं कइ कुडा पण्णत्ता) हे भदन्त ! निषध नाम

तीने लेहीने पश्चिम लाग तरह्यी लवख समुद्रमां प्रवेश हरे छे. 'सीओया णं महाणदी पवहे पण्णासं नोयणाइं विक्खंमेणं जोयणं उन्वेहेणं, तयणंतरं च णं मायाए परिवद्धमाणी र मुहमूले पंच जोयणसयाइं विक्खंमेणं दसजोयणाइं उन्वेहेणं उमशोपासं दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं संपरिक्खिता' आ सीताहा महानही हृह्यी निर्णमन स्थानमां हरित नहीना प्रवाहनी अपेक्षाओं ते दिशुखित छे तथी पथास थे। जन जेटला विस्तारवाणी छे. क्षेत्र थे। जन जेटला क्रेने। इदेध छे. त्यार आह को इमश अलिविधित धती प्रतियोजन अने पार्श्वलागमां ८० धनुष जेटली वृद्धि पामती क्षेटले हे क्षेत्र पार्श्वमां ४० धनुष जेटली विधित धती सुणमूलमां—सागरमां प्रविष्ट थाय ते स्थानमां को पांचसा से। जन सुधीना सुणमूल विष्ठं लवाणी थर्ध जाय छे हेमडे प्रवह विष्ठं लनी अपेक्षा सुणमूणने। विष्ठं ल दिशुखित थर्धी जाय छे. को अन्ते पार्श्वलाग छे पदावरवेहिंशकोशी अने छे वन्षां देशी संपरिक्षिप्त छे. 'णिसहेणं मंते! वासहरपन्त्रएणं कइ कूडा पण्णत्ता' हे लह त!

कइक्रडा पण्णत्ता ? गोयमा ! णवक्रडा पण्णता' दर्पधरपर्वते कति क्टानि प्रज्ञप्तानि ? भगवा-नाह-हे गौतम! नव क्टानि प्रज्ञप्तानि, 'तं जहा-सिद्धाययणकृष्टे ?, णिसदकृष्टे २ हरिवास-कूडे ३ पुट्यविदेहकूडे ४ हरिकूडे ५ धिईकूडे ६ सी योगाकूडे ७ अवरविदेहकूडे ८ रूपग-क्हे ९ जो चेत्र चुल्लहिमवंतक्छ।णं उच्चत्तविवसंभविवसेवो पुट्यविष्णओ स्यहाणी य सच्चेव इहंपि णेयव्या' नवरम् सिद्धायतनक्ष्टम् १ निषधक्रुटम्-निषधवर्षवरपर्वताधिववासं-क्टम् २, हरिवर्षक्टम्-हरिवर्षक्षेत्राधिपक्टम् ३ पूर्वविदेहक्टं-पूर्वविदेहाधिपक्टम् ४, हरि-क्टं-हरि सिललानदी देवीक्टम् ५, धृतिक्टम्-धृतिः तिमिञ्छिहदाचिष्ठात्रीदेवी तस्याः क्टम् ६, शीतोदाक्टं-शीतोदानदी देवीक्टम् ७, अपरविदेहक्टम्-अपरविदेहाधिपक्टम् ८, रुचक्क्र्टं-रुचकः चक्रवालपर्वतिविशेपस्तत्पतिक्र्टम् ९, अत्र वक्तव्येऽतिदेशस्त्रमाह-'जो के वर्षधर पर्वत पर कितने कूट कहे गये हैं? उत्तर में प्रभु कहते हैं-(गोयमा ! णव कुडा पण्णत्ता) हे गौतम ! नौ कूट कहे गये हैं-(तं जहा) उनके नाम इस प्रकार से है (सिद्धाययणकूडे, णिसदकूडे, हरिवासकूडे, पुट्यविदेहकूडे, हरिकूडे, धिई-क्रुडे, सोओआक्र्डे, अवरविदेहक्डे, रुअगक्रुडे,) सिद्धायतनक्रूट निषधकूट, हरि वर्षक्ट, पूर्वविदेहकूट, हरिकूट, धृतिकूट, सीतोदाकूट, अपरविदेहकूट, और रूच-ककूट इनमें। जो सिद्धों का गृह रूपकूट है वह सिद्धायतनकूट है निषध वर्षधर पर्वत के अधिपतिका जो कूट है वह निषध कूट है। हरिवर्षक्षेत्र के अधिपति का जो कूट है वह हरिवर्षकूट है। पूर्व विदेह के अधिपति का जो कूट है वह पूर्व विदेहकूर है हरिसलिला नदी की देवी का जो कूर है वह हरिकूर है तिगिछिहुद की अधिष्ठात्री देवी का जो कूट है वह धृतिकूट है शीतोदा नदी की देवी का जो कूट है वह ज्ञीतोदाकूट हैं। अपरविदेहाधिपति का जो कूट है, वह अपर विदेहकूट है। चक्रवालपर्वत विद्योषके अधिपति का जो कूट है वह रुचक कूट है।

निषध नामक वर्षधर पर्वत ७५२ केटला कृटा छ १ जवाणमां प्रलु कहे छे-'गोयमा! णव कृडा पण्णत्ता' है गीतम! नव कृटा कहेवाय छे. 'तं जहा' ते कृटाना नामा आ प्रमाले छे 'सिद्धाययणकूडे, णिसहकूडे, हिरवासकूडे, पुन्वविदेहकूडे, हिरकूडे, धिईकूडे, सीआ आ क्डे, अवरविदेहक्डे, रूअगकूडें' सिद्धायतन कृट, निषध कृट, हिरवर्ष कृट, पूर्व विदेह कृट, हिर कृटें वित कृट, सीताहा कृट, अपर विदेह कृट अने रुथक कृट छेमां के सिद्धोंना गृह ३५ कृटे छे, ते सिद्धायतन कृट छे. निषध वर्षधर पर्वतना अधिपतिना के कृट छे ते हिरार्ष कृट छे. पूर्वविदेहना अधिपतिना के कृट छे ते पूर्वविदेह कृट छे. हिरार्थ कृट छे ते पूर्वविदेह कृट छे. हिरार्थ कृट छे ते सिताहा कृट छे अपर विदेहाधिपतिना के कृट छे ते अपरविदेह कृट छे. थक्ष कृट छे ते सिताहा कृट छे ले अपरविदेह कृट छे. थक्ष कृट छे ते सिताहा कृट छे ले अपरविदेह कृट छे. थक्ष कृट छे ते सिताहा कृट छे ले अपरविदेह कृट छे. थक्ष कृट छे ते सिताहा कृट छे ले अपरविदेह कृट छे. थक्ष कृट छे ते सिताहा कृट छे ले क्ष कृट छे ते स्वाहिता अधिपतिना के कृट छे ते स्वाहिता विद्या विद

मैव चुल्लहिमवंतकुडाणं उच्चत्त विवसंभपरिक्खेवं।' 'य एवे' त्यादि-य एवं क्षद्रहिमवत्कु-हानाम् उच्चत्व विष्कमभूपरिक्षेपः-उच्चत्वविष्कमभाभ्यां सहितः परिक्षेपस्तथा पूर्ववर्णितः-पूर्व वर्णितः-उक्तः स एवैषामपि बोध्यः, तथा 'रायहाणी अ सच्चेव णेयव्वा' राजधानी सा प्र पूर्वीक्तैव इहापि अस्मिन् निषधकूटप्रकरणेऽपि नेतच्या ग्राह्या, यथा-क्षुद्रहिमवत्पर्वतकूटस्य विक्षेणेन तिर्यगसंख्येयान् द्वीपसमुद्रान् व्यतिव्रज्यान्यस्मिख्नम्बुद्वीपे क्षुद्रहिमवती नाम्नी रामधानी तथेहापि निषधनाम राजधानी बोध्येति, अथास्य नामार्थे प्रश्लोत्तराभ्यां निर्दि-श्रति 'से केणहेणं भंते ! एवं बुच्चइ णिसहे वासहरपव्वए२ ?' अथ केनार्थेन भदन्त ! एव-मुच्यते निवधो वर्षधरवर्वतः २ उत्तरस्त्रे भगवानाइ-'गोयमा!' हे गौतम! 'णिसहे णं बासहरयन्वए बहवे कुडा णिसहसंठाणसंठिया उसमसंठाणसंठिया' निषधे खळ वर्षधरपर्वते **ब**हुनि क्टानि तानि की दशानि ? इत्याह्-निष्धसंस्थानसंस्थितानि तत्र नितरां सहते स्कन्धे पृष्ठे वा न्यस्तं भारमिति निषधः-वृषभः पृषोदरत्वादयं साधः, तत्संस्थानसंस्थितानि तदा-काराणि एतदेव भन्दान्तरेणाइ-वृषभसंस्थितानि, 'णिसहे य इत्थ देवे महिद्धिए जाव (जो चेव क्षुलिहमबंतकूहाणं उच्चत्त विक्लंभ परिक्लेबो) पुब्बविणिओ रायहाणी य सच्चेव इहंवि णेयव्वा) पहिले जो शुद्रहिमवत् पर्वत के नौ कृटों की उच्चता विष्करम और परिक्षेपका प्रमाण कहा गया है वही प्रमाण उच्चता का, विष्कम्भ का और परिक्षेप का इन क्रुटों का है तथा यहां पर भी पूर्वोक्त ही राजधानी है अर्थात् जैसी क्षुद्रहिमवत् पर्वत से तिर्थग् असंख्यात द्वीप समुद्रों को पारकरके अन्य जम्बूद्वीपमें क्षुद्रहिमवती नामकी राजधानी है। उसी प्रकार से यहां पर भी निषध नाम की राजधानी है। (सेंकेणडे णं भंते ! एवं बुच्चइ णिसहे वासहरपव्वए) हे भदन्त ! आपने इस वर्षधर पर्वत का नाम "निषध" ऐसा किस कारण से कहा है? इसके उत्तरमें प्रभु कहते हैं-(गोयमा णिसहेणं वासहरपव्वए वहवे कूडांणिसह संठाणसंठिया उसभसंठाण संठिया णिसहे इत्थदेवे महिद्धिए जाव पालिओव-

विष्णओ रायहाणीय सच्चेव इइं वि षेयव्वा' पहेंदा के क्षद्रिक्षियत् पर्यतना नव इंटोनी छिन्यता, विष्ठं ल अने परिक्षेपनुं प्रमाणु ठहेंवामां आवेद छे तेक प्रमाणु आ इंटोनी छिन्यता, विष्ठं ल अने परिक्षेपनुं समक्युं तेमक अहीं पणु पूर्वेद्धित राकधानी छे એटदे है के प्रमाणे क्षद्रिक्षियत पर्यतमांथी तिर्यं ग्र असं ज्यात ही प समुद्रोने पार हरीने अन्य क्षूर् द्वीपमां क्षद्र हिमवत नामह राकधानी छे. ते प्रमाणेक अदीं पणु निषध नामनी राकधानी छे.

'से केणहेणं मंते! एवं वुच्चइ णिसहे वासहरपव्वए' & लहन्त! आपश्रीओ वर्षधर पर्वतनुं 'निषध' ओवुं नाम शा अरुध्यी कह्युं छे ? ओना अवालमां प्रसु के छे—'गोयमा! णिसहेणं वासहरपव्वए वहवे कूडा णिसहसंठाणसंठिया उसभसंठाणसंठिया, णिसहेय इत्थ देवे महिद्धिए जाव पतिओवमिद्रिइए परिवसइ से तेणहेणं गोयमा! एवं वुच्चइ णिसहे छिवासहरपव्वए २' & गौतम! ओ निषध वर्षधर प्रवर्तनी ६ पर अने क कूटे।

पिल्ञोवमहिइए परिवसइ, से तेणहेणं गोयमा ! एवं वुच्छ िणसहे वासहरपव्यएर' अत्र निषधः तदाख्यो देवः परिवसतीत्यग्रिमेण सम्बन्धः, स कीट्शइत्याह-महर्धिको यावत् पच्योपमस्थितिकः प्रान्वत्, स तेन कारणेन निषधाकारक्टयोगाश्चिषधदेवयोगाद्वा गौतम ! एवमुच्यते-निषधो वर्षधरपर्वतः वर्षधरपर्वतः इति ।। स्० १६॥

अथ निषधस्त्रोकतस्य महाविदेदवर्षस्य स्वरूपमाह-'कहि णं अंते ! जंबुद्दीवे' इत्यादि । म्लम्-कहि णां भंते ! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे णामं वासे पण्णते ? गोयमा ! णीलवंतस्स वासहरपद्वयस्स द्विखणेणं णिसहस्स वासहर-पट इयस्स उत्तरेशं पुरित्थमलवणसमुद्दस्स एचरिथमेणं पचरिथम लवण-समुद्दस्स पुरित्थमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे णामं वासे पञ्णते, पाईणपडीणायए उदीलदाहिणविच्छिण्णे पिलयंकसंठाण-संठिए दुहा लवणसमुद्दं पुरे पुरित्थम जाव पुट्टे पचस्थिमिल्लाए कोडीए पच्चित्थिमिल्छं जाव पुट्टे तेत्तीसं जोयणसहस्साइं छच्च चुरुसीए जोयण-सए चत्तारि य एगूणवीसइभाए जोयणस्स विक्खंभेणंतिन तस्स बाहा पुरिथमपचित्थिमेणं तेत्तीसं जोयणसहस्साइं सत्त य सत्तसहे जोयणसप सत्त य एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणंति, तस्स जीवा बहुमज्झ-देसभाए पाईणपडीणायया दुहा ळवणसमुद्दं पुट्टा पुरिव्यमिल्लाए कोडीए पुरिथमिरुळं जाव पुट्टा एवं पच्चित्थिमिरुळाए जाव पुट्टा, एगं जोयण सयसहस्सं आयामेणंति, तस्स धगुं उभओ पासि उत्तरदाहिणेणं एगं जोयणसयसहरूसं अट्टावण्णं जोयणसहरूसाइं एगं च तेरसुत्तरं जोयण-सयं सोलस य एगूगवीसइ भागे जोयणस्स किंचि विसेसाहिए परि-

महिष परिवसइ से तेणहेणं गोयमा। एवं बुच्चइ णिसहे वासहरपव्वए २) है गौतम! इस निषध वर्षधर पर्वत के जपर अनेक क्ट निषध के संस्थान जैसे वृषभ के आकार जैसे हैं तथा इस धर्षधर पर्वत पर निषय नामका महिद्धिक यावत एक पत्योपमकी आयु वाटा देव रहता है इस कारण मैने इस वर्षधर का नाम निषध ऐसा कहा है ॥१६॥

નિષધના સંસ્થાન જેવા-વૃષભ આકારના જેવા છે તેમજ એ વર્ષધર પર્વત ઉપર નિષધ નામક મહર્દ્ધિક યાવત્ એક પલ્યાપમ જેટલા આયુષ્યવાળા દેવ રહે છે. એ કારણે મેં એ વર્ષધર પર્વતનું નામ 'નિષધ' કહ્યું છે ॥ સૂ. ૧૬ ॥

क्लेवेगंति, महाविदेहेणं वासे चउठिवहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते, तं जहा-पुठवविदेहे अवरविदेहेर देवकुरा३ उत्तरकूरा४, महाविदेहस्स णं भंते! वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते, गोयमा! बहुसमरम-णिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, जाव कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव। महाविदेहे णं भंते! वासे मणुयाणं केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते, तेसि णं मणुयाणं छिविबहे संघयणे छिविबहे संठाणे पंचधणु-सयाइं उद्धं उच्चत्तेणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुट्यकोडीआउयं पालेंति पालेता अप्पेगइया णिरयगामी जाव अप्पेगइया सिङ्झंति जाव अंतं करेंति। से केणट्टेणं भंते! एवं बुचइ महाविदेहे वासे १२, गोयमा! महाविदेहेणं वासे भरहेरवयहेमवयहेरण्णवय हरिवासरम्मगवासेहिंतो आयामविक्लंभसंठाणपरिणाहेणं वित्थिण्णतराए चेव विपुलतराए चेव महंततराए चेव सुप्पमाणतराए चेव महाविदेहा य इत्थ मणूसा परिवसंति, महाविदेहे य इत्थ देवे महिद्धीए जाव पिलओवमट्टिइए परिवसइ, से तेणद्रेणं गोयमा ! एवं बुचइ महाविदेहे वासे २, अदुत्तरं च णं गोयमा! महाविदेहस्स वासस्स सासए णामधेज्जे पण्णत्ते, जं ण कयाइ णासि ३ ॥सू० १७॥

छाया-त्रव खल भदन्त! जम्बूदीपे द्वीपे महाविदेहो नाम वर्ष प्रज्ञप्तम्, गौतम! नील-वतो वर्षथरपर्वतस्य दक्षिणेन निषधस्य वर्षधरपर्वतस्य उत्तरेण पौरस्त्यलवणसमुद्रस्य पश्चिमेन पाश्चात्यलवणसमुद्रस्य पौरस्त्येन अत्र खल जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहो नाम वर्ष प्रज्ञप्तम्, प्राचीनप्रतीचीनाऽऽयतम् उदीचीन दक्षिणविस्तीणं पल्यङ्कसंस्थानसंस्थितं द्विधा लवणसमुद्रं स्पृष्टं पौरस्त्य यावत् स्पृष्टं पाश्चात्यया कोटचा पाश्चात्यं यावत् स्पृष्टं त्रयस्त्रिञ्ञतं योजनसह-स्नाणि पद च चतुरजीतानि योजनञ्जतानि चतुरश्च एकोनविंजतिभागान योजनस्य विष्कमभे-णेति, तस्य बाहा पौरस्त्यपश्चिमेन त्रयस्त्रिञ्जतं योजनसहस्नाणि सप्त च सप्तपष्टानिं योजन-श्वतानि सप्त च एकोनविंगतिभागान् योजनस्य आयामेनेति, तस्य जीवा बहुमध्यदेशभागे प्राचीन प्रतीचीनायता द्विधा लवणसमुदं स्पृष्टा, पौरस्त्यया कोटचा पौरस्त्यं यावत् स्पृष्टा एवं पाश्चात्यया यावत् स्पृष्टा, एकं योजनशतसहस्रम् आयामेनेति, तस्य धनुरुभयोः पार्श्वयोः उत्तरदक्षिणेन एकं योजनशतसहस्रम् अष्ट पश्चाशतं योजनसहस्नाणि एकं च त्रयोदशोत्तरं योजनशतं षोडश च एकोन्विंशितमागान् योजनस्य किश्चिद्विशेषाधिकान् परिक्षेपेणेति, महाविदेहं खलु वर्षे चतुर्विधं चतुष्प्रत्यवतारं प्रज्ञसम्, तद्यथा—पूर्वविदेहः १ अपरिवदेहः २ देवकुरवः ३ उत्तरकुरवः, ४ महाविदेहस्य खलु भदन्त ! वर्षस्य कीदशक आकारभावप्रत्य-कतारः प्रज्ञसः ? गौतम ! बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञसः यावत् कुत्रिमैश्वैव अकुत्रिमैश्वेव । महाविदेहे खलु भदन्त ! वर्षे मनुजानां कीदशक आकारभावप्रत्यवतारः प्रज्ञसः ?, तेषां खलु मनुजानां पद्विधं संहननं पद्विधं संस्थानं पश्चिधनुः शतानि कथ्वेष्ठच्वत्वेन ज्ञावयेन अन्तर्ग्वहृतिम् उत्तर्षेण पूर्वकोटचायुः पालयन्ति पालयित्वा अप्येकके निरयगामिनः यावत् अप्येकके सिध्यन्ति यावदन्तं कुर्वन्ति । अथ केनाथेन भदन्त ! एवप्रच्यते—महाविदेहो वर्ष २ शौतम ! महाविदेहः खलु वर्षे भरतैरवत—हैमवत हैरण्यवतहरिवर्षरम्यकवर्षेभ्यः आयामविष्कसंस्थानपरिणाहेन विस्तीर्णतरक एव विपुलतरक एव महंततरक एक स्वप्रमाणतरक एव महाविदेहाश्वात्र मनुष्याः परिवसन्ति, महाविदेहश्वात्र देवो महर्द्धिको यावत् पल्योपम-स्थितिकः परिवसति स तेनार्थेन गौतम ! एवप्रच्यते महाविदेहो वर्षम् ३ यदुत्तरं च खलु गौतम ! महाविदेहस्य वर्षस्य शाश्चतं नामधेयं प्रज्ञसम् यन्न कदाचिन्नासीत् ३ ॥स्० १७॥

टीका-'कहि णं भंते ! जंबूदीवे दीवे महाविदेहे णामं वासे पण्णते ?, गोयमा ! णीळवंतस्स वासहरपव्वयस्स दिक्खणेणं' क्व खळ भदन्त ! जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहो नाम वर्षे चतुर्थे क्षेत्रं प्रज्ञप्तम् ?, इति प्रश्ने भगवानाह-'गोयमा ! णीळवंतस्स वास- हरपव्वयस्स दिक्खणेणं' गौतम ! नीळवंतो वर्षभरपर्वतस्य चतुर्थस्य क्षेत्रविभागकारिणो दिक्षणेन दक्षिणस्यां दिशि 'णिसहस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं' निषधस्य वर्षधर-

महाविदेह स्वरूपकथन

'कहिणं भंते! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे णामं वासे पण्णत्त''-इत्यादि टीकार्थ-गौतमने प्रभु से इस सूत्र द्वारा ऐसा पूछा है (कहिणं भंते! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे णामं वासे पण्णत्ते) हे भदन्त! इस जम्बूद्वीप नामके द्वीप में महाविदेह नामका द्वीप-चतुर्थद्वीप-कहां पर कहा गया है? इसके उत्तरमें प्रभु कहते हैं-(गोयमा! णीठवंतस्स वासहरपव्वयस्स दिक्खणेणं णिसहस्स वासहर-पव्वयस्स उत्तरेणं पुरत्थिमठवणसमुद्दस्स पच्चित्थमेणं, पच्चित्थमठवणसमुद्द-

'कहि णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे णामं वासे पण्णत्ते' इत्यादि

टीक्षर्य गीतमे भलुने का सूत्र वर्ड प्रश्न क्यों छे हैं 'कहि णं मंते! जंबुदीने दीने महानिदेहें णामं नासे पण्णत्ते' हे लहंत! का क'णूढीय नामक द्वीयमां महाविदेहें नामक द्वीय-यतुर्थ दीय क्या स्थणे कावेल छे ? कोना क्या प्रमां प्रभुश्री क्षे छे 'गोयमा! णीळ-वंतस्स नासहरपञ्त्रयस्स दाक्लोणं णिसहस्स नासहरपञ्त्रयस्स उत्तरेणं पुरिश्यमळवणसमु-इस्स पच्चित्रमेणं, पच्चित्रमळवणसमुद्दस्स पुरिश्यमेणं एत्थ णं जंबुदीने २ महानिदेहें णाम

म**ु**।विदेख_{्र}त्व३५ ४थन

पर्वतस्य उत्तरेण उत्तरस्यां दिश्चि 'पुरत्थिमलवणसम्रुद्दस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवण-समुद्दस्त पुरित्थिमेणं' पौरस्त्यलवणसमुद्रस्य पश्चिमेन-पश्चिमायां दिशि पाश्चात्यलवणसमुद्रस्य मौरस्त्येन पूर्वस्यां दिशि 'एत्थ णं जंबृदीवे २ महाविदेहे णामं वासे पण्णत्ते' अत्र खलु जम्बुद्धीपे द्वीपे महाविदेहो नाम वर्षे प्रज्ञहम् , 'पाईण पङ्गीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे' तच्य प्राचीनप्रतीचीनाऽऽयतं-पूर्वपश्चिमयोरायतं दीर्घम् उदीण दक्षिणविस्तीर्णम् उत्तर दक्षिः णयोर्दिशोर्विस्तीर्णम् 'पलियंकसंठाणसंठिए दुहा लवणसम्रहं पुट्टे पुरित्थम जाव पुट्टे' पत्यङ्क संस्थानसंस्थितम् आयतचतुरस्रत्वात् द्विधा छवणसमुद्रं स्पृतः तदाह-पौरस्त्वया यावत् याव-त्पदेन कोटचा पौरस्त्यलवणसमुद्रम् इति सङ्ग्राह्मम् , स्पृष्टः 'पच्चित्थिमिल्लाए कोडीए पच्चित्थिमिल्लं जाव पुट्टे' पाश्चात्यया कोटचा पाश्चाःयं यावत् यावत्पदेन 'लवणसमुद्रम्' इति सङ्ग्र:ह्यम् स्पृष्टः, व्याख्या प्राग्वत् , अस्य मानभाइ-'तेत्तीसं जोयणसहस्साइं छच्च चुल-सीए जोयणसए चतारि य एगूणवीसइभाए जोयणस्स' त्रयस्त्रिंशतं योजनसहस्राणि पट च स्स पुरिक्षमेणं एत्थणं जंबुद्दीवे २ महाविदेहे णामं वासे पण्णले) हे गौतम ! नीलवान वर्षधर पर्वतकी जो कि क्षेत्र विभागकारी चतुर्थ पर्वत है दक्षिण दिशा में तथा निषध वर्षधर पर्वतकी उत्तर दिशामें, एवं पूर्वदिग्वर्ती लवणसमुद्रकी पश्चिमदिशामें और पश्चिमदिग्वर्ती लवणसमुद्रकी पूर्वदिशामें इस जम्बूदीप नामके द्वीप में महाविदेहनामका क्षेत्र कहा गया है। (पाईणपडीणायए) यह क्षेत्र पूर्वसे पश्चिमतक लम्बा है (उदीण दाहिणविच्छिणे) और उत्तर से दक्षिण तक विस्तृत है (पलिअंकसंठाणसंठिए) जैसा पत्यंकका संस्थान होता है वैसा

जोयणसहस्साइं छच्च चुलसीए जोयणसए चत्तारिय एगूण वीसइभाए जोयवासे पण्णते' है गीतम! नीववान वर्षधर पर्वतनी—है के क्षेत्र-विकाशहरी बतुर्थ पर्वत
छे-हिक्षणु हिशामां तथा निषध वर्षधर पर्वतनी इत्तर हिशामां तेमक पूर्व हिश्वतीं विषय समुद्रनी पश्चिम हिशामां अने पश्चिम हिश्वतीं विषयु समुद्रनी पृर्व हिशामां अने कं कूद्रीप नामह द्वीपमां महाविदेख नामह क्षेत्र आवेद छे. 'पाईणपढीणायए' आ क्षेत्र पृर्वथी पश्चिम सुपी बांखुं छे. 'उद्दीणदाहिणविच्छिण्णे' अने इत्तरथी हिक्षणुमां विस्तार युक्त छे. 'पल्लियंकसंठाणसंठिए' केवुं पद्यं हतुं संस्थान है। ये छे तेवुं क ओनुं संस्थान छे. 'वृहा लवणसमुदं पृष्टे पुरस्थिम जाव पृष्टे पच्चिमिल्लाए कोडीए पच्चिमिल्लं जाव पृष्टे' ओ पोतानी पूर्व पश्चिमनी है।टिथी—हमशः पूर्व हिश्वतीं वविष्ठ समुद्रने अने पश्चिम हिश्वतीं

ही इसका संस्थान है। (दुहा लवणसमुदं पुट्टे पुरित्थम जाव पुट्टे पच्चित्थिमिल्लाए कोडीए पच्चित्थिमिल्लं जाव पुट्टे) यह अपनी पूर्वपश्चिमकी कोटिसे क्रमदाः पूर्व-दिग्वर्ती लवणसमुद्रको और पश्चिमदिग्वर्ती लवणसमुद्रको छूरहा है (तेस्तीसं

चत्तारिय एगूणवीसइभाए जोयणस्स

विक्खंभेणं' आ क्षेत्रने। विस्तार

क्षवण् समुद्रने २५शा^९ रह्यो छे. 'तेत्तीसं जो १णसहस्साई छच्च चुल्रशीए

चतुरशीतानि च गुरशी यधिकानि योजनशतानि चतुरशैकोनिर्वेशितिभागान् योजनस्य 'निस्सं भेणंति' विष्कम्भेण विस्तारेण प्रज्ञप्तिमिति एवेंण सम्बन्धः, निषधित्तिराद् द्विगुणविस्तार्त्तात्, अथास्य बाहा जोवा धनुष्पृष्ठस्व माइ—'तस्स बाहा' इत्यादि, 'तस्स बाहा पुरिश्य पच्चित्थिभेणं तेत्तीसं जोयणसहस्साई सत्त य सत्तसहे जोयणसए' तस्य महाविदेहस्य वर्षस्य पौरस्त्यपश्चिमेन त्रयिक्षितं योजनसहस्ताणि सप्त च सप्तपृष्टयधिकानि योजनशतानि 'सत्त य एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणंति' सप्त च एकोनिर्विशितिभागान् योजनस्य आदामेन दैव्येण इति, 'तस्स जीवा वहुमञ्चदेसभाए पाईणपढीणायया दुहा ठवणसमुदं पुट्ठा' तस्य महाविदेहस्य वर्षस्य जीवा वहुमञ्चदेशभागे अत्यन्तमध्यदेशभागे प्राचीन प्रतिवीनाऽऽयता पूर्वपश्चिमदीर्यो द्विधा ठवणसमुद्रं स्पृष्टा 'पुरत्थिमिल्हाए कोडीए पुरत्थिमिल्हं जाव पुट्ठा एवं पच्चित्थिमिल्हाए जाव पुट्ठा' पौरस्त्यया पूर्वदिग्भवया कोट्या पौरस्त्यं यावत् यावत्य-णस्स विक्यं भेणं) इस क्षेत्रका विस्तार ३३६८४ हे योजन का है इसप्रकार वर्ष, से दूना कुल पर्वत और कुल पर्वत से दूना आगेका वर्ष, इसत्तरह दृनी २ विस्ता रक्षी वृद्धि विदेह क्षेत्र पर्यन्त होती गई है इसके पश्चात्र क्रमञः क्षेत्र से पर्वन और पर्वतसे क्षेत्रका विस्तार आधा २ होता गया है कहा भी है प्विरसा दुगुणो अदी अदी दो दुगुणि दो परोविरसो जाव विदेहं दोहिं दुतत्तो अद्धद्धहाणिए"१

(तस्स बाहा पुरित्थम पच्चित्थमेगं तेन्तीसं जोयणसहस्साइं सत्तय सत्तसहे जोयणसए सत्त य एग्णवीसहभाए जोयणस्स आयामेगंति) इस क्षेत्रकी बाहा पूर्वसे पश्चिम तक ३३७६७ दे योजन प्रमाण है (तस्स जीवा बहुमज्झदेसभाए पाईणपडीणा यवा दुहा लवणसमुदं पुटा पुरित्थमिल्लाए कोडीए पुरित्थिमिल्लं जाव पुटा एवं पच्चित्थिमिल्लाए जाव पुटा, एगं जोयण सथसहस्सं आयामेणंति)

યાજન જેટલા છે. આ પ્રસાણે વર્ષ કરતાં બે ગણા કુલ પર્વાત અને કુલ પર્વાત કરતાં બે ગણા એના પછીના વર્ષ આ પ્રમાણે વિદેહ ક્ષેત્ર પર્યાન્ત બેગણી વૃદ્ધિ થતી ગઈ છે. ત્યાર બાદ ક્રમશ ક્ષેત્રથી પર્વાત અને પર્વાતથી ક્ષેત્રના વિસ્તાર અર્ધા-અર્ધા થતા ગયા છે. કહ્યું પણ છે-

'वरिसा दुगुणो, अदी अदीदो दुगुणि दो परोवरिसो जाव विदेहं दोहिं दुतत्तो अद्भद्धहाणीए'२

'तस्स वाहा पुरिश्यमपच्चित्रमेगं तेत्तीसं जोयणसहस्साइं सत्त य सत्तसहे जोयणस्य स्त् स्त य एगूणवीसइमाए जोयणस्य आत्रामेणंति' आ क्षेत्रनी वाहा पूर्वथी पश्चिम सुधी ३३७६७ हे थे। अन केटली हे. 'तस्स जीवा बहुमज्झदेसभाए पाईणयडीणायया दुहा छवणसमुदं पुट्टा पुरिश्यमिल्छाए कोडीए पुरिश्यमिल्छं जाव पुट्टा एवं पच्चित्रिमिल्छाए जाव पुट्टा, एगं जोयणसयसहस्सं आयामेणंति' भध्य साममां स्नेनी छत्र। स्नेटले हे भध्यमत

⁽१) ''तिलोयपण्णत्ती'' ए० १५५-गाथा नं० १०६

⁽२) 'तिलोयपण्णत्ती' पृ. १५५, आथा नं. १०६

देन 'लवणसमुद्रम्' इति सङ्ग्राह्यम् स्पृष्टा एवम् अनेन प्रकारेण पाधात्यया यावत् याचत्य-देन-"कोटचा पाधात्यं लवणसमुद्रिषिति संग्राह्यम् स्पृष्टा 'एगं जोयणसयसहस्सं आयामेणंति' एकं योजनशतसहस्रमायामेन दैर्ध्यणेति, 'तस्स घणु' तस्य महाविदेहस्य वर्षस्य खल्ड धनुः 'उभओ पासिं उत्तरद्दिणेणं' उभयोः द्वयोः पार्श्वयोः उत्तरदक्षिणेन भागेन 'एगं जोयणसय-सहस्सं अहावण्णं' एकं योजनशतसहस्रम् अष्टपञ्चाशतं च 'जोयणसहस्साइं एगं च तरस्त्रत्तरं' योजनशतसहस्रम् अष्टपञ्चाशतं च 'जोयणसहस्साइं एगं च तरस्त्रत्तरं' योजनसहस्नाणि एकं च त्रयोदशोत्तरं त्रयोदशाधिकं 'जोयणसयं' योजनशतं 'सोलस य एग् णवीसइ भागे जोयणस्स किंचि विसेसाहिए परिवलेवेणंति' घोडश च एकोनविंशतिभागान योजनस्य किश्चिद्विशेपाधिकान् परिक्षेपेणेति अत्राधिकपदेन सार्द्धाः पोडशकला ग्राह्याः ।

अथ महाविदेहवर्षस्य भेदाशिक्षपितुमाह-'महाविदेहेणं वासे चउन्विहे चउप्पडोयारे पण्णते, तं जहा-पुन्विदेहे १ अवरविदेहे २ देवकुरा ३ उत्तरकुरा ४' महाविदेहः खलु वर्ष चतुर्वियं चतुष्प्रकारकं प्विविदेहादेर्महाविदेहत्वेन न्यविद्यमाणत्वात् अत एव चतुष्प्रत्यवतां जीवा इसकी मध्यभाग में अर्थात् मध्यगत जीवा-पूर्व पश्चिमकी ओर दीर्घ हैं यह अपनी पूर्वकोटि से पूर्विदेग्वर्ती लवणसमुद्रको और पश्चिम कोटिसे पश्चिम दिग्वर्ती लवणसमुद्र को छूती है इसकी दीर्घता का प्रमाण १ लाख योजन क है। (तस्स घणु उभओ पासि उत्तर दाहिणेणं एगं जोयणसयसहस्सं अद्वावणं जोयणसहस्साइं एगं च तेरसुत्तरं जोयणसयं सोलम य एगूणवीसहभार जोयणस्य किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणंति) इस महाविदेह क्षेत्रका धनुष्ट परिक्षेपकी अपेक्षा दोनों पार्श्वभागों में उत्तर दक्षिणमें एक लाख अठावन हजा एक सौ तेरह योजन और एक योजन के १९ भागों में से कुछ अधिक १६ भाग प्रमाण है १५८११३ अर्थात् १६॥ कला प्रमाण है (महाविदेहेणं वासे चउन्विहे चउप्तियोगरे पण्णत्ते) यह महाविदेह क्षेत्र चतुष्प्रत्यवतार वाला चार भेद वाला-कहा गया है (त जहा) जैसे-(प्रविवदेहे १ अवरविदेहे २, देवकुरा ३

ल्वा पूर्व पश्चिम तरह हीर्घ छे. को पेतानी पूर्व है। टिथी पूर्व हिन्वर्ती अवण समुद्रने कमे पश्चिम है। टिथी पश्चिम हिन्दर्ती अवण समुद्रने रपर्शी रही छे. कोनी हीर्घ ताल प्रमाण १ को अक्ष आप ये। जन केटलुं छे. 'तम्स घणु उमको प सिं उत्तरहाहिणेणं एगं को यणस्म स्थान अहु विकास को यणसहस्साई एगं च तेरस्तां जो यणस्यं सो लस्य एग्ण्वीसहमाए जो यणस्स किंचिवसेसाहिए परिक्षेत्रवेणंति' का महाविहें के केन्न धनुः पृष्ठ यि हि पनि क्षेत्र को अक्ष अहावन है कार्य के के ते तेर के ये। अने को के ये। जनना १८ का ने। महाविहें हें वधारे १६ का प्रमाण छे १ पट १ १ केटले हैं हैं कोटले हैं १ १६॥ इला प्रमाण छे भिहाविहें होणं वासे च उत्विहें च उत्पहीयारे पण्णत्ते' का महाविहें हो वहाय होयारे पण्णत्ते' का महाविहें हो केटले हैं वहाय अनुष्ठ प्रत्यवतार युक्त—यार के इत्र युक्त हहेवामां आवेल छे. 'तं जहां' के महे 'पुन्वविहें १ अवरविहें २, देवकुरा ३, उत्तरकुरा ४' पूर्वविहें , पश्चिमविहें के

चतुर् पूर्वविदेहापरविदेहदेवकुरूत्तरकुरूलक्षणेषु क्षेत्रविशेषेषु प्रत्यवतारः समत्रतारो विचार्यत्वेन यस्य तत् तथाभूतं प्रज्ञप्तम् , तद्यथा—पूर्वविदेह इत्यादि—तत्र पूर्वविदेहः पूर्वश्रासौ विदेहश्चेति यो मेरोर्जम्बूद्धीपगतः ?, अपरविदेहः—अपरश्रासौ विदेहः पश्चिमविदेहः—पश्चिमदिग्गतोऽयं विदेहः २, देवकुरवः—अयं देवकुरुविदेहः दक्षिणतः ३, उत्तरकुरवः, उत्तरकुरुविदेह उत्तरतः ४, कुह शब्दस्य बहुत्वे दृष्टद्रत्वेन मूळे बहुवचनान्तत्वेन निर्देशः, अथास्य महाविदेहस्य स्वरूपं वर्णियतुमाह—'महाविदेहस्य णं' इत्यादि, 'महाविदेहस्स णं भंते! वासस्स केरिसए आगार-भावपद्योयारे पण्याते ?, गोयमा! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्याते जाव कित्तिमेहिंचेव अकित्तिमेहिंचेव' हे भदन्त! महाविदेहस्य वर्षस्य खळ कीदृश्चकः आकारभावप्रत्यवतारः तश्चाऽकारः स्वरूपं, भावाः तदन्तर्गताः पदार्थाः तदुभयसहितः प्रत्यवतारः प्रकटोभावः, प्रज्ञप्तः ? इति गौतमप्रकने भगवानुत्तरमाह—गौतम! तस्य बहुसमरमणीयः अत्यन्तसमोऽत एव रमणीयः—मनोहरः भूमिभागः प्रज्ञप्तः से कित्तर्थः ? इत्याह—यावत् यावत्यदेन 'आिल-

उत्तरकुरा ४) पूर्वविदेह पश्चिम विदेह, देवकुरु और उत्तरकुर मेरकी पूर्विदेशा में जो विदेह है वह पूर्वविदेह हैं मेरकी पश्चिम दिशा का जो विदेह है वह अपर विदेह है मेरकी दक्षिणिदशाका जो विदेह है वह देवकुर है और मेरकी उत्तर दिशा का जो विदेह है वह उत्तरकुर है। कुरु शब्दका प्रयोग बहुवचनमें देखा जाता है इसिलिये यहां पर मूल में उसे बहुवचनान्त रूपसे निर्दिष्ट किया गया है (महाविदेहस्स णं भंते ! वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते) अब गौतमने इसी प्रसङ्गों प्रभुसे ऐसा पूछा है-हे भदन्त ! महाविदेह क्षेत्रका आकार भाव प्रत्यवतार-स्वरूप कैसा कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-(गोयमा! बहुसमरमणिउजे भूमिभागे पण्णत्ते, जाव कित्तिमेहिं चेव अकित्ति मेहिं चेव) हे गौतम ! वहां का भूमिभाग बहुसमरमणीय कहा गया है यावत

हेवहुरु अने उत्तर हुरु, भेरनी पूर्ण हिशा ने। के विदेह छे ते पूर्ण विदेह छे अने भेरूनी पश्चिम हिशाने। के विदेह छे ते अपर विदेह छे. भेरूनी हिशाण हिशाने। के विदेह छे ते हेव हुरु छे अने भेरूनी उत्तर हिशाने। के विदेह छे तेउत्तर हुरु छे, हुरु शण्डने। प्रयोग अहुवयनमां जेवा भणे छे अधी अहीं मूझमां तेने अहुवयनांत रूपधी निर्दिष्ट कहवामां आवेल छे. 'महाविदेहरस णं मंते! वासरस केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते' हुने गौतमस्त्रामी भे भा प्रसंगमां के प्रश्लने आ जतने। प्रश्ल हुने छे अहे अहे अहे हुने। आक्षार, आव, प्रत्यवतार अहे हे स्वरूप हुने कहेवामां आवेल छे! अना कवाअमां प्रश्लश्री कहे छे—'गोयमा! बहुसमरमणिं मूमि भागे पण्णत्ते' जाव, कित्तिमेहं चेव अकित्तिमेहं चेव' है गौतम! त्यांने। अधिभाग अहु समरमणीं के हित्रामां आवेल छे! यावत् कृतिम तेमक अकृतिम नानाविध पंचवर्धावाणा मिणुओशी अने तृष्धि उपशोकित छे. अहीं यावत् पद्धी 'आलिंग पुष्करिमत्यादि'

क्षपुष्करमिति'' वेत्यादि भूमिभागवर्णनपरपदजातं पष्ठसूत्रोक्तरीत्या सङ्ग्राह्यम् , स च पुनः कृतिमैश्राकृतिमैश्र नानाविधपश्रवणैर्मणिभिः तृणैश्रोपशोभितः' इत्यादि वर्णनपरपदजातं रा नप्रश्रीयमुत्रस्य पश्चदशस्त्रादारभ्येकोनविंशतितमस्त्रत्रपर्यन्तं दृष्ट्वा संग्राह्मम्, अधुना महावि-देहवर्षीत्पन्नानां मनुष्याणां स्वरूपं निरूपयितुमाइ-'महाविदेहे णं भंते ! वासे मणुयाणां केरि-सए आयारभावपडीयारे पण्णत्ते' हे भदन्त ! महाविदेहे वर्षे खळ मनुष्याणां की दशकः आकारभावप्रत्यवतारः आकारः स्वरूपं, भावाः तद्वृत्ति संहननसंस्थानादयः पदार्थाः, तदु-भयसहितः प्रत्यवतारः प्राहुर्भावः प्रज्ञप्तः ? इति प्रवने भगवानाह-'तेन्सि णं मणुयाणं छव्विहे संहयणे छिविवहे संठाणे पंचधणुसयाई उद्धं उच्चत्तेणं' तेषा महाविदेहोत्पन्नानां खछ मनु ष्याणां संहननम् अस्थिसंचपः पङ्विधं पट्पकारं वज्रऋषभनाराच १ ऋषभनाराच २ बह कुन्निम एवं अकृत्रिम नानाविध पंचवणीं वाले मिणों से और तृणों से उपकोभित हैं यहां यावत् पद से आलिङ्ग पुष्कर मित्यादिरूप से जैसा छ**ठे** सूत्र में वर्णन कहा गया है वैसा ही वह वर्णन यहां पर भी कह छेना चाहिये तथा वह कृत्रिम एवं अकृत्रिम मणियों एवं तृणों से उपशोभित है इत्यादिरूप से इसका वर्णन यदि देखना हो तो राजप्रदनीय सूत्रके १५वें सूत्रसे छेकर १९वें सूत्रतक के कथन को देख छेना चाहिये (महाविदेहे णं भंते वासे !मणुयागं केरिसए आयारभावपुडोयारे पण्णारे। अब गौतम प्रभुसे ऐसा पूछ रहे हैं-हे भइन्त ! महाविदेइ क्षेत्र में मनुष्यों का आकार भावपत्यवतार-स्वरूप कैसा कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते है-(तेसि णं मणुआणं छव्विहे संघयणे छव्विहे संठाणे पश्चचणुसयाई उद्धं उच्चत्तेणं जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पुन्वकोडी आउयं पालेंति) हे गौतम ! वहां के मनुष्योंका संहनने छहों प्रकार का होता कहा गया है वज्रऋषभ नाराच संहनन भी होता कहा गया है, ऋषभनाराच संहनन भी होता कहा गया है, नाराच संहनन भी होता कहा गया है, अर्द्धनाराच संहनन भी होता है, कीलक संहनन भी होता कहा गया है, और सेवार्र्स संहनन

३५थी केम ६६। सूत्रमां वर्णन हरवामां आवेतुं छे तेवुं क वर्णन अते पण सम्भ सम्भ तेवुं कोई को. तेमक ते हृत्रिम अने अहृत्रिम मिणुका तेमक तृष्यि ६५शी. ति छे हित्याहि ३५मां कोनुं वर्णन को जेवानुं द्वाय ता राकप्रश्रीय सूत्रना १५ मां सूत्रथी मांडीने १६मा सुधीना हथनने कोई तेवु कोई को. 'महाविदेहेणं मंते! वासे मणुआणं केरिसए आयारभाववडोयारे वण्णत्ते' देवे गीतमस्त्राभी प्रभुने कोदी रीते प्रश्न हरे छे हे दे सहंत ! महाविदेहेणं मंते है वासे मणुआणं केरिसए आयारभाववडोयारे वण्णत्ते' देवे गीतमस्त्राभी प्रभुने कोदी रीते प्रश्न हरे छे हे दे सहंत ! महाविदेहें सेवयणे छित्रके सेठाणे पद्म धणुसवाइं खं उच्चत्तेणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुरुवकोडी आवयं पालेंति' दे गीतम त्यांना मनुष्यानुं संदनन ६ प्रहारनुं हद्देवामां आवेत छे. वक्त्रक्ष्यल नाराय संदनन देव छे लेवुं हदेवामा आवे छे. अष्टम नाराय संदन देव छे तेवुं हदेवाय छे. नाराय

नाराचा ३ ईनाराच ४ कीछिका ५ सेवार्त ६ भेदात् , तथा चोक्तम्-"वज्जरिसमनारायं, पढमं बीयं च रिसमनारायं। नाराय अद्धनाराय कीछिया तह य छेवहं॥१॥

छाया-वज्रऋषभ्नाराचं, प्रथमं द्वितीयं च ऋषभनाराचम् । नाराचार्द्धनाराच कीलिकास्तथा च सेवातम् ॥१॥ इति ।

संस्थानम् आकार्विशेषः षड्विधं परिमंडल १ वृत्त २ त्रंस ३ चतुरंसा ४ ऽऽयता ५ ऽनित्थंस्थ भेदात् पट्पकारकम् प्रज्ञप्तमिति पूर्वेण सम्बन्धः, पश्चधनुःशतानि पश्चशत धन् पि ऊर्घ्वमुच्चत्वेन उच्छूपेण, 'जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं' जघन्येन अपकृष्टत्वेन अन्तर्भहूर्तम् आयु-रित्यप्रिभेण सम्बन्धः, 'उक्कोसेणं पुच्चकोडी आउयं पालेति पालेता' उत्कर्षण उत्कृष्टित्वेन पूर्वकोटचायुः पूर्वाणां चतुरशीतिलक्षःणां चतुरशीतिलक्षेर्गणितानां वर्षाणां कोटी कोटीसंख्याः तत्पितिमतम् आयुः पालयन्ति विदेहवर्षीत्पन्ना मनुष्याः, पालयित्वा 'अष्पेगइया'

भी होता कहा गया है कहाभी है-

वज्जरिसभनारायं पढमं बीयं च रिसभनारायं । नाराय अद्धनाराय कीलिया तहय छेवहं ॥१॥

संस्थान नाम आकार का है यह संस्थान भी वहां छहों प्रकार का होता कहा गया है वे छह प्रकार इस प्रकार से हैं-पिरमंडल संस्थान, वृत्तसंस्थान, बंससंस्थान, चतुरंस संस्थान, आयत संस्थान और इत्थंस्थ संस्थान इन महाविदेह क्षेत्रों के मनुष्यों का दारीर ऊंचाई मे ५०० सौ धनुष का होता कहा गया है इनकी आयु जघन्यसे एक अन्तर्भृष्टतंकी होती कही गई है। और उत्कृष्ट से १ पूर्व कोटिकी होती कही गई है। ८४ लाख वर्षों का १ पूर्वाङ्ग होता है ८४ लाख पूर्वाङ्गों का एक पूर्व होता है ऐसे एक पूर्वकोटि की वहां उत्कृष्ट आयु होती कही गई है। (पिल्सा अप्पेगइया णिरयगामी जाव अप्पेगइया सिउझंति जाव अंत करेंति) इतनी आयु पालन करके कितनेक वहां के जीवतो नरकगामी

સંહનન હાય છે એવું કહેવાય છે. અર્દ્ધનારાચ સંહનન હાય છે એવું પણ કહેવાય છે. કીલક સંહનન પણ હાય છે. એવું કહેવાય છે. અને સેવાર્ત્ત સંહનન પણ હાય છે એવું કહેવાય છે. પણ કહ્યું પણ છે–

वन्निरिस्तमनारायं पढमं बीयं च रिस्तमनारायं । नाराय अद्धनाराय कीलिया तह्य छेवहं ॥१॥ संस्थान आक्षारतुं नाम छे. से संस्थान पणु त्यां ६ प्रकारतुं छाय छे. ते प्रकारा सामाणे छे-परिभां उत संस्थान, वृत्त संस्थान, त्रंस संस्थान, शतुरंस संस्थान, स्थान सांस्थान, स्थान, स्थान सहियान, स्थान सहियान, स्थान सहियान स्थान स

भाषिक केचित् 'णिरयगामी जाव अप्पेगइया सिङ्झति जाव अंतं करेंति' निरयगामिनः नर-कगितगामिनः, यावत् यावत्पदेन-अप्येकके तिर्थग्र गामिनः अप्येकके मनुजगामिनः अप्येकके देवगामिनः इति संख्याद्धम् अप्येकके सिध्यन्ति यावत् यावत्पदेन ''बुध्यन्ते मुच्यन्ते पिरिनिर्वान्ति सर्वदुःखानम्'' इति संग्राह्मम् अन्तं नाशं कुर्वन्ति विशेषिजज्ञासमिरेषां पदाना-मर्थ एकादशस्त्रद्रीकातो बोध्यः। अथास्य नामार्थ प्रश्लोत्तराभ्यां निरूपितुमाह-'से केणहेणं भंते! एवं बुच्चई-महाविदेहो वर्षम् २ ? अथ केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते महाविदेहो वर्षम् २ ? उत्तरस्त्रत्रे तु 'गोयमा!' हे गौतम! 'महाविदेहे णं वासे भरहेरवयहेमवयहेरण्णवयहरिवासरम्मगवासेहितो' महाविदेहः खळ वर्ष भरतेरवतहैमवत हैरण्यवतहरिवर्षरम्यकवर्षेभ्यः भरतादि रम्यकान्तवर्षापेक्षया 'आयामविक्खंभसंठाणपरिणाहेणं विच्छिण्णतराष् चेव महंततराष् चेव सुप्पमाणतराष् चेव' आयामविक्कम्भसंस्थानपरिणाहेन-

होते हैं कितनेक जीव देवगितगामी होते हैं कितनेक जीव मनुष्यगितगामी होते हैं कितनेक जीव तिर्यक्ष गितगामी होते हैं तथा कितनेक जीव मनुष्य-सिद्धगितगामी भी होते हैं यावत वे बुद्ध हो जाते हैं मुक्त होते हैं परिनिर्वात हो जाते हैं एवं समस्त दुःखों का वे अंत कर देते हैं। इन पदों की टीका ११ वे सूत्र की टीका ११ वे सूत्र की टीका से देख छेना चाहिये (से केणहेणं भंते ! एवं बुच्चइ महाविदेहे वासे २) हे भदन्त ! आपने इस क्षेत्र का नाम महाविदेह ऐसा किस कारण से कहा है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—(गोयमा ! महाविदेहे णं वासे भरहेरवय हेमवय हित्वास रम्मग वासेहिंतो आयामिवक्खंभे संठाणपरिणाहेणं विच्छिणातराए चेव विचछतराए चेव महंतराए चेव सुष्पमाणतराए चेव महाविदेहाय इत्थमणूसा परिवसंति) हे गौतम ! महाविदेह क्षेत्र भरत क्षेत्र ऐरवत क्षेत्र, हैमवत क्षेत्र, हैरण्यवत क्षेत्र, और रम्यक क्षेत्र की अपेक्षा आयाम विष्कम्भ, संस्थान एवं परिक्षेप को छेकर विस्तीर्णतर है, विपुछतर है महत्तर है तथा सुप्रमाणतरक

जाव अंतं करें ति आटडां आयु पसार हरीने त्यांना हैटलांह छिपा ते। नरह गाभी हाय छे, हैटलांह छिपा हेवाति गाभी हाय छे, हैटलांह छिपा मनुष्य-सिद्ध गित गाभी पण हाय छे. यावत् तेओ सुद्ध थर्ड जाय छे, युक्त थर्ड जाय छे. परिनिर्वात थर्ड जाय छे. तेमक तेओ समस्त हु: भाना आंत हरे छे. ओ पहानी व्याण्या ११ मां सूत्रनी टीहामां जीड देवी जीडिंगे. 'से केणहेणं मंते! एवं वुच्चइ महाविदेहे वासे २' हे लहंत आप श्रीओ आ क्षेत्रनं नाम महाविदेहे ओवुं शा हारख्यी हहां छे ? ओना कवालमां प्रसु हहे छे-'गोयमा! महाविदेहे णं वासे मरहेरवय-हेमवय हिवास रम्मगवासेहितो आयामिवक्लंमे संठाणपरिणाहे णं विच्छिण्णतराए चेव विच्छल्णतराए चेव महंततराए चेव सहंततराए चेव सुपमाणतराए चेव महाविदेहाय इत्य मणूसा परिवसंति' हे गौतम! महाविदेह क्षेत्र, लरत क्षेत्र, औरवत क्षेत्र, कैमवतक्षेत्र अने रम्यह क्षेत्रीनी अपेक्षा आयाम विन्हंस, संद्रान परिक्षंति' हो गौतम! महाविदेह क्षेत्र, संद्रान परिक्षंति' क्षेत्री आयाम विन्हंसे ले हो ले हो ले हो ले हो हो हो हिन्हं के क्षेत्री स्वाति हो सुपमाणतराए चेव सहाविदेहाय इत्य मणूसा परिवसंति' हो गौतम! महाविदेह क्षेत्र, स्वात क्षेत्र, औरवत क्षेत्र, कैमवतक्षेत्र अने रम्यह क्षेत्रीनी अपेक्षा आयाम विन्हंस, संत्रीन परिक्षेप्रहोने ला होने जीडिंग तो विस्तीर्ध्यंतर छे, विपुक्ष

तत्रायामो दैर्धम् विष्कम्भो विस्तारः संस्थानम् आकारविशेषः परिणादः परिधिश्वत्येषां समाद्वारस्तथाभृतेनः यथा सम्भवमस्ति विस्तीर्णतरक एव तत्र-विष्कम्भेणाति विस्तारयक्त एव साधिक चतुरशीति पद् शताधिक त्रयस्त्रिशद्योजनसदसप्रमाणत्वात्, विस्तारकः अतिविष्षुः संस्थानेन-पल्यङ्करूपेण महत्तरकः एव अतिमहानेव आयामेन, सुप्रमाणतरक एव बृहत्त्रमाणक एव परिणाहेनेत्येव योजना बोध्या, अत एव 'महाविदेहा य इत्थ मणूसा परिवसंति' महाविदेहाः महान् गरीयान् देहः शरीरम् आभोग इति यावत् येषां ते तथा, यद्वा महान् गरीयान् देहः शरीरं क्षेत्रवं येषां ते महाविदेहश्यात्र-महाविदेहवर्षे मनुष्याः परिवसन्ति, 'महाविदेहे य इत्थदेवे महिद्धीए जाव पश्चित्रोवमिद्दिइए परिवसइ' महाविदेहश्यात्र देवः परिवसन्ति, इह वस्तितियुत्तरेण सम्बन्धः स च कीदशः ? इत्याह-महर्द्धिको यावत् पत्योपमस्थितिकः, इह

है अर्थात् एक लक्ष प्रमाण जीवा वाला होने से यह आयाम की अपेक्षा महत्तर कही है, कुछ अधिक ८४ हजार ६ सी ३३ योजन प्रमाण युक्त होने से यह विस्तीर्ण तरक ही है, पल्यङ्क रूप संस्थान से युक्त होने के कारण यह विपुल तरक हो है, तथा परिणाह-परिधि से यह खुप्रमाणतरक ही है। अतएव यहां के मनुष्य महाविदेह महान अतिशय विशिष्ट-भारी है-देह-शरीर-जिन्हों का ऐसे होते हैं विजयों में सर्वदा ५०० धनुषकी जंचाई वाला शरीर होता है तथा देवकुर और उत्तर कुरु में तोन कोश जितना जंचा शरीर होता हैं इसी महाविदेहता को छेकर अकर्मभूमिरूप भी देवकुर और उत्तर कुरु इन क्षेत्रों को महाविदेह के भेद रूप से परिगणित किया गया है इस महाविदेहता से युक्त यहां रहते हैं और इन्हीं मनुष्यों के सम्बन्ध से इस क्षेत्र को महाविदेह कह दिया गया है तथा (महाविदेहे य इत्थदेवे महिद्धीए जाव पिछओवमिट्टइए परि-वसह, से तेणहेणं गोयमा! एवं युक्चइ महाविदेहे वासे२) महाविदेह नाम का

तर छे, महत्तर छे तथा सुप्रमाण तरह छे केटले हैं कोह लक्ष प्रमाण लवावालुं हावाथी कायामनी कपेक्षाके महत्तर छे. हं छेह क्षिष्ठ ८४ सहस्त ह से। 33 येक्न प्रमाण युक्त हावाथी के विस्तीर्ण तरह क छे. प्रश्यंह ३५ संस्थानधी युक्त हावा लहल के विपुत तरह क छे. तेमक परिष्णुह-परिधिथी के सुप्रमाण तरह क छे. केथी कहींना मनुष्या महाविदेह, महान् कतिशय-विशिष्ट लारी छे केमनां शरीरा केवा लारी हाथ छे, विकथामां सर्वहा ५०० धनुषनी अंशांवालुं शरीर हाथ छे, तेमक हेवहुरु कने उत्तर हुरुमां प्रणु गांव केटलुं डंयुं शरीर हाथ छे. का महाविदेहताने लहने कहमें लूम ३५ पण्ड हेवहुरु कने उत्तरहुरु के होत्रोने महाविदेहना लेह इपथी परित्राण्त हरवामां कायेल छे. का महाविदेह हहेवामां संभित्र का प्रतिने महाविदेह हहेवामां कायेल छे. नेमक भनुष्याना संभित्र का प्रतिने महाविदेह हहेवामां कायेल छे. नेमक भनुष्याना संभित्र का पिलओवमन हिंदुए परिवसद, से तेमहेणं गोयमा ! एवं वुच्चए महाविदेह वासे २' महाविदेह नामह हैव

यावत्पद संङ्ग्राह्मपदानां सङ्ग्रहार्थी विजयदेवाधिकारादण्टमस्त्रोक्ताद्वसेयो 'से तेणहेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ महाविदेहे वासे २' हे गीतम ! तेन अनन्तरोक्तेन अर्थेन कारणेन महाविदेहाधिष्टितत्वेन एयम् इत्थम् उच्यते महाविदेहो वर्षम् २, 'अदुत्तरं च णं गोयमा ! महाविदेहः विदेहस्स वासस्स सासए णामधेज्जे पण्णते' अदुत्तरम् अथ च खळ हे गीतम ! महाविदेहः स्य वर्षस्य शाश्चतं सर्वाधिकं नामधेयं नाम प्रज्ञसम् 'जं ण कयाइ णासि ३' यत् यस्मात्कारः णात् न कदाचित् कस्मिश्चित् समये नाऽऽसीत् ? अपि स्वासीदेवेत्यादि प्राय्वत् ॥स्० १०॥

अधुनोत्तरकुरून विवक्षस्तदुपयोगित्वेन प्रथमं गन्धमाद्नवक्षस्कारपर्वतं प्रश्लोत्तराभ्यामाह-'कहि णं भंते ! महाविदेहे' इत्यादि ।

मृलम्—किह णं भंते ! महाविदेहे वासे गंधनायणे णामं वक्षार-पव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! नीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेगं मंद-

देव यहां पर रहता है-यह देव महिद्धिक है यावत एक पल्योपम की आयुवाला है यहां यावत्पद से संग्रह पद और उनका अर्थ विजयदेवाधिकार में उक्त अध्य सूत्र की टीका से जान लेना चाहिये अतः इन सब कारणों को लेकर इस क्षेत्र का नाम 'महाविदेह' कहा गया है (अदुक्तरं च णं गोयमा! महाविदेहस्स वासस्स सासए णामधेउजे पण्णक्ते, जं ण कयाइ णासि ३) अथवा 'महाविदेह' ऐसा इस क्षेत्र का नाम अनादिकालिक है किसी निमिक्त को लेकर नहीं है क्योंकि भूतकाल में इसका ऐसा ही नाम था, अब भी इसका यही नाम है और भविष्य में भी ऐसा ही इसका नाम रहेगा ऐसा कोईसा भी समय नहीं हुआ है कि जिस में ऐसा इसका नाम न रहा हो, वर्तमान भी ऐसा नहीं है कि इसका ऐसा नाम न चल रहा हो और भविष्यत्र भी ऐसा नहीं होगा कि जिस में इसका नाम नहीं रहेगा ॥स्० १७॥

અહીં रहे छे. आ हेत महिदि यावत् એક पत्थापम केटलुं आयुष्य घरावे छे. अहीं यावत् पत्थी संग्रह पर अने तेमने। अर्थ विक्याधिक्षरमां एक्त अष्टम सूत्रनी टीक्नांथी काली सेवे। कीर्टिंगे. सेथी एपर्युक्त सर्व कारेखोने सहने आ क्षेत्रनुं नाम 'महाविदेह्य' सेलुं राभवामां आव्युं छे. 'अदुत्तरं च णं गोयमा! महाविदेह्यस वासस्स सासए णामघेडले पण्णत्ते, जं ण कयाइ णासि ३' अथवा 'महाविदेह्य' सेलुं आ क्षेत्रनुं नाम अनाहिक्षिक छे. केछि निमित्तना आधारे से न म नथी. केमिक सूत्रकाणमां सेनुं सेलुं क नाम हिक्षिक छे. केछि निमित्तना आधारे से न म नथी. केमिक सूत्रकाणमां सेनुं सेलुं क नाम हिक्षे सेने। केछि काण सेनुं सेलुं क नाम हिक्षे सेने। केछि काण सेनुं सेलुं न है। या वर्तभानमां पख् सेनुं नथी के तेनुं से नाम सामने। महाने सेथ सेने सिव्यमां पख् सेनुं न है। या वर्तभानमां पख् सेनुं नथी के तेनुं से नाम सामने। नहीं के तेनुं सेना माम सहिशे नहीं सेल सेनिव्यमां पख् सेनुं सेल नाम रहेशे। नथी के तेनुं सेनुं नाम सहिशे नहिं। सेटले के त्रेष्ठे काण सामने। नथी के तेमां सेनुं सेलुं नाम रहेशे नहिं। सेटले के त्रेष्ठे काण मां सेनुं सेलुं नाम रहेशे नहिं। सेटले के त्रेष्ठे काण साम रहेशे। नहीं है। से १९ ॥

रस्त पठवयस्स उत्तरपञ्चत्थिमेणं गंधिलावइस्स विजयस्स पुरत्थिमेणं उत्तरकुराए पच्चित्थिमेणं एत्थ णं सह विदेहे वासे गंधमायणे णामं वक्खार पद्यए पण्णत्ते, उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणवित्थिण्णे तीसं जोयण-सहस्साइं दुण्णि य णउत्तरे जोयणसए छच य एगूणवीसइभाए जोय-णस्स आयामेणं णीलवंतवासहरपव्वयं तेणं चत्तारि जोयणसयाई उद्धं उच्चत्तेणं चत्तारि गाउयसयाइं उब्वेहेणं पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं तयणंतरं च णं मायाए२ उस्से हुव्वेह परिवद्धीए परिवद्धमाणे२ विक्लंभः परिहाणीए परिहायमाणे२ मंदरपव्वयं तेणं पंच जोयणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं पंच गाउयसयाइं उब्वेहेणं अंगुलस्स असंखिजाइभागं विक्खं-भेगं पण्णत्ते गयद्तसंठाणसंठिए सन्वरयणामए अच्छे, उभओ पासि दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं सब्वओ समंता संपरिक्षिखत्ते, गंधमायणस्स णं वक्खारपव्ययस्स उप्पि बहुसमरमणिज्ने भूमिभागे जाव आसयंति । गंधयमायणे णं वक्खारपव्यष् कइ कूडा पण्णता ? गोयमा! सत्त कूडा तं जहा-सिद्धाययणकूडेश गंधमायणकूडेश गंधिलाः वईकृडे३ उत्तरकुरुकूडे४ फलिहकूडे५ लोहियकूडे६ आणंदकूडे७।

कहि णं भंते! गंधमायणे वक्षारपटवए सिद्धाययणकूडे णामं कूडे पण्णते?, गोयमा! मंदरस्स पट्यस्स उत्तरपचित्थमेणं गंधमायण-कूडस्स दाहिणपुरित्थमेणं, एत्थ णं गंधमायणे वक्षारपटवए सिद्धाय यणकूडे णामं कूडे पण्णते, जं चेव चुछिहमवंते सिद्धाययणकूडस्स पमाणं तं चेव एएसिं सट्वेसिं भाणियटवं, एवं चेव विदिसाहिं तिण्णिकूडा भाणियटवा, चउत्थे तइयस्स उत्तरपचित्थमेणं पंचमस्स दाहिणेणं, सेसा उत्तरदाहिणेणं, किछ्छोहियक्खेसु भोगंकरा भोगवईओ देवयाओ सेसेसु सिरसणामया देवा, छसुवि पासायवडेंसगा रायहाणीओ विदिसासु, से केणट्टेणं भते! एवं चुचइ, गंधमायणे वक्षारपटवए२१, गोयमा! गंधमायणस्स णं वक्खारपटवयस्स गंधे से जहा णामए कोट्रपुडाणवा जाव पीसीजमाणाण वा उिकरिजमाणाण वा विकरिजमाणाण वा

परिभुज्जमाणाण वा जाव ओराला मणुण्णा जाव गंधा अभिणिस्सवंति, भवे एयारूवे? णो इणद्वे समद्वे, गंधमायणस्स णं इत्तो इद्वतराए चेव जाव गंधे पण्णत्ते, से एएणद्वेणं गोयमा! एवं वृच्चइ गंधमायणे वक्खा-रपव्वए२, गंधमायणे य इत्थ देवे महिहिए परिवसइ, अदुत्तरं च णं सासए णामधिउते इति॥सू०१८॥

छाया-का खलु भदन्त! महाविदेहे वर्षे गन्दमादनो नाम वश्वस्कारपर्वतः प्रज्ञप्तः,
गौतम! नील्यतो वर्षथरपर्वतस्य दक्षिणेन मन्दरस्य पर्वतस्य उत्तरपश्चिमेन गन्धिलावत्या
विजयस्य पौरस्त्येन उत्तरकुरूणां पश्चिमेन अत्र खलु महाविदेहे वर्षे गन्दमादनो नाम वश्वस्कारपर्वतः प्रज्ञप्तः, उत्तरदक्षिणायतः प्राचीनप्रतीचीनविस्तीर्णः त्रिंशतं योजनसहस्राणि दे
च नवीत्तरे योजनशतानि अर्ध्वपुरुचत्वेन चत्वारि गृत्यूतशतानि उद्वेश्वेन पश्चयोजनशतानि विष्कमभेण तदनन्तरं च खलु मात्रया २ उत्सेधोद्वेधपरिवृद्धचा परिवर्द्धमानः २ विष्कम्भपरिहान्या
परिहीयमानः २ मन्दरपर्वतान्तेन पश्चयोजनशतानि अर्ध्वपुरुचत्वतेन पश्चमन्यूतशतानि उद्वेधेन
अङ्गुलस्य असंख्येयभागं विष्कम्भेण प्रज्ञप्तः गजदन्तसंस्थानसंस्थितः सर्वरत्नमयः अच्छः,
उभयोः पार्श्वयोः द्वाभ्यां पद्मवरवेदिकाभ्यां द्वाभ्यां च वनषण्डाभ्यां सर्वतः सन्ततात् संपरिक्षिप्तः, गन्धमादनस्य खलु वक्षष्कार पर्वतस्य उपरि बहुसमरणणीयो भूमिभागः यावद् आसते।

गन्धमादने खळ वक्षस्कारपर्वते कित्क्र्टानि प्रज्ञप्तानि, गौतम ! सप्तक्र्टानि, तद्यथा—
सिद्धायतनक्र्टम् १, गन्धमादनक्र्टम् २, गन्धिलावतीक्र्टम् ३, उत्तरकुरूक्र्टम् ४, स्फटिकक्र्टम् ५, लोहिताक्षक्र्टम् ६, आनन्दक्र्टम् ७। वत्र खळ भदन्त ! गन्धमादने वक्षस्कारपर्वते सिद्धायतनक्र्टं नाम क्र्टं प्रज्ञप्तम् ?, गौतम ! मन्दरस्य पर्वतस्य उत्तरपश्चिमेन गन्धमादनक्र्टस्य दक्षिणपौरस्त्येन, अत्र खळ गंधमादनवक्षस्कारपर्वते सिद्धायतनक्र्टं नाम क्र्टं
प्रज्ञप्तम्, यदेव क्षुद्रहिमवित सिद्धायतनक्र्टस्य प्रमाणं तदेव एतेषां सर्वेषां भणितव्यम्, एनमेव विदिशासु त्रीणि क्र्टानि भणितव्यानि, चतुर्धं तृतीयस्य उत्तरपश्चिमेन पञ्चमस्य दक्षिणेन,
शेषाणि तु उत्तर दक्षिणेन, स्फटिकछोहिताक्षयो भौगङ्करा भोगवत्यो देवते, शेषेषु सद्दशनामका देवाः, पट्स्यि प्रासादावतंसका राजधान्यो विदिशासु, अथ केनार्थेन भदन्त ! एवसुच्यते-गन्धमादनो वक्षस्कारपर्वतः २, गौतम ! गन्धमादनस्य खळ वक्षस्कारपर्वतस्य गन्धः स
यथा नामकः कोष्ठपुटानां वा यावत् विद्यमाणानां वा उत्कीर्यमाणानां वा विकीर्थमाणानां
वा परिस्रुज्यमाणानां वा यावत् उदारा मनोज्ञा यावद् गन्धा अभिनिःस्वन्ति, भवेद् एतदूपः ? नो अयमर्थः समर्थः, गन्धमादनस्य खळ इतङ्घ्टतरक एव यावद् गन्धः प्रज्ञप्तः, स
एतेनार्थेन गौतम ! एवसुच्यते गन्धमादनो वक्षस्कारपर्वतः २, गन्धमादनश्चात्र देवो महर्द्धिकः
परिवसित, अदुत्तरं च खळ शाश्चतं नामधेयमिति ॥ स० १८ ॥

टीका-'किह णं अंते ! महाबिदेहे' इत्यादि । 'किह णं मंते ! महाविदेहे वासे गंत्रमायणे णामं वन्छारपव्यय पण्णते' क्व ख्रञ्ज भर्न्त ! महाविदेहे वर्षे गन्धमादनो नाम वक्षरकार
पर्वतः वक्षरित मध्ये स्वगोपनीयं क्षेत्रं हो मिलित्वा कुर्वन्तीति वक्षरकाराः तज्जातीयोऽयिवित
वक्षरकारः स चासौ पर्वतश्रेति तथाभूतः प्रज्ञप्तः ?, 'गोयमा ! णीव वंतस्स वासहरपञ्चयस्म
दाहिणेणं मंद्रस्स एव्ययस्स उत्तरपच्चित्यमेणं' गौतम ! नीलवतः तन्नामकस्य वर्षश्ररपर्वतस्य
दक्षिणेन दक्षिणस्यां दिश्चि मन्दरस्य मेरोः पर्वतस्य उत्तरपश्चिमेन उत्तरस्याः पश्चिमायाश्च
अन्तरालवर्तिनि दिग् विभागे वायव्यकोण इत्यर्थः, अत्र सप्तम्यन्तादेनष्प्रत्ययः, 'गंधिलावइस्स वित्तयस्स पुरच्छिमेणं उत्तरकुराण् पच्चित्थमेणं एत्थ णं महाविदेहे वासे गंत्रमायणे
णामं वक्षारपच्चए पन्नते' गन्धिलावत्याः श्रीतोदामहानद्यत्तर्वर्तिनोऽष्टमस्य पौरस्त्येन
पूर्वेण पूर्वस्यां दिशीत्यर्थः, उत्तरकुरुगां सर्वेतिकृष्ट भोगभूमिक्षेत्रस्य पश्चिमेन पश्चिमायां दिशि
अत्र-अत्रान्तरे महाविदेहे वर्षे गन्त्यमादनो नाम वक्षरकारपर्वतः प्रज्ञप्तः, तस्य मानाचाह-'उत्तर

'कहि णं भंते! महाविदेहे वासे गंधमायणे णामं वक्तारपःवए' इत्यादि।
टीकार्थ-अब गौतमस्वामी! इस सूत्र द्वारा प्रमु से ऐसा पूछते हैं—(किह णं भंते! महाविदेहे वासे गंधमायणे णामं वक्त्वारपव्वए पण्णत्ते) हे भद्नत! महाविदेह क्षेत्र में गन्धमादन नामका वक्षस्कार पर्वत कहां पर कहा गया हैं! इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—(गोधमा! णीठवंतस्स वासहरपव्वधस्स दाहिणेणं मंदरस्स पद्वध्यस्म उत्तरपच्चित्थमेणं गंधिलावइस्स विजयस्स पुरच्छिमेणं उत्तरकुराए पच्चित्थमेणं एत्थणं महाविदेहे वासे गंधमायणे णामं वक्ष्वारपव्वए पण्णत्ते) हे गौतम! नीठवान वर्षधर पर्वतकी दक्षिण दिशा में, मन्दर पर्वत के वायव्यकोण में द्वितोदामहानदी की उत्तर दिशा में रहे हुए अप्टम विजय रूप गन्धिलावती विजय की पूर्व दिशा में तथा उत्तर कुर रूप सर्वोत्कृष्ट भूमि क्षेत्र की पश्चिम दिशा में महाविदेह क्षेत्र में गन्धमादन नामका वक्षस्कार पर्वत कहा गधा है जो

'किह् णं भेते! महाविदेहे वासे गंधमायणे णामं वक्स्वारपव्वए' इत्यादि,

टीह थी- खेचे गौतमस्वामी आ सूत्रवडे प्रक्षनी सामे आ प्रश्न मूरे छे डे-'कहिणं मंते! महाविदेहे वासे गंधमायणे णांमं वक्खारपव्वए पण्णते' छे लहंत! मह विहेक क्षेत्रमां गांध भाइन नामक वक्षस्थार पर्वत क्या स्थणे आवेश छे? छोना प्रवालमां, प्रक्ष के छे-'गोयमा! णीलवंतस्स वासहरपव्ययस्स दाहिणेणं मंदरस्स पव्ययस्स उत्तर-पच्चिथमेणं गंधिलावद्यस्स विजयस्स पुरिश्यमेणं उत्तरकुराए पच्चित्यमेणं एत्थणं महाविदेहे वासे गंधमायणे णामं वक्ष्यार पव्वए पण्णते' छे गौतम! नीलवान वर्षधर पर्वतनी दक्षिणु दिशामां, मन्दर पर्वतना वायव्य है। गौत म! नीलवान वर्षधर पर्वतनी दक्षिणु दिशामां, मन्दर पर्वतना वायव्य है। गुमां, शीतोहा महानदीनी दक्षिणु दिशामां आवेल अव्यम विजय इप गंधिलान वर्षा विजयनी पूर्व दिशामां तेमक उत्तर हुद्ध ३५ सवेतिहुव्य स्मिक्षेत्रनी पश्चिम दिशामां महाविदेह क्षेत्रमां गन्धमादन नामक वक्षस्कार पर्वत आवेल छे-हे के थे पर्वता मणीने

दाहिणायए पाईणपडीणविच्छिन्ने तीसं जोयणसहस्साइं दुण्णि य णउत्तरे जोयणसए' उत्तर दक्षिणायतः-उत्तरदक्षिणयोर्दिशोरायतः दीर्घः, प्राचीनप्रतीचीनविस्तीर्णः पूर्वपश्चिमदिशो विंस्तीर्णः, त्रिंशतं त्रिंशतसंख्यानि योजनसहस्राणि द्वे च नवीत्तरे नवाधिके योजनशते 'छच य एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं' पट्च एकोनविंशतिभागान् योजनस्य आयामेन अत्र यद्यपि वर्षवरपर्वतसंबद्धमूलानां वक्षस्कारपर्वतानां साधिकैकादशाष्टशत द्विचत्वारिंशद्यो-जनप्रमाणकुरुक्षेत्रान्तर्गतानामेतावानायामो न संपद्यते तथाऽप्येषां वक्रत्वेन परिणततया बहु-तरक्षेत्रप्रविष्टत्वादेतावानायामः संभवतीति, 'णीलवंतवासहरपव्ययं तेणं चत्तारि जोयण-सयाई उद्धं उच्चतेणं चत्तारि गाउयसयाई उठ्वेहेणं पंचजीयणसयाई विवखंभेणं तयणंतरं च णं मायाए २ उस्सेहुव्वेह परिवद्धीए परिवद्धमाणे २' नीलबद्वर्षधरपर्वतान्तेन-नीलबद्वर्ष-धरपर्वतसमीपे चत्वारि योजनशतानि अध्वेष्ठच्चत्वेन, चत्वारि गन्युतशतानि उद्देशेन भूमि-प्रविष्टत्वेन. पश्च योजनशतानि विष्कमभेण-विस्तारेण, तदनन्तरं च मात्रया २ क्रमेण दो पर्वत मिलकर अपने वक्षस-मध्य में क्षेत्र को छुपालेते हैं उनका नाम वक्ष स्कार पर्वत है (उत्तरदाहिणायए-पाईण पडीण विच्छिण्णे तीसं जोयणसहस्साई दुण्णि य णउत्तरे जोयणसए छच्च य एग्णवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं, णीलवंतवासहरपव्वयंतेणं चत्तारि जोयणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं चत्तारि गाउय-स्याइं उठ्वेहेणं. पंच जोयणस्याइं विक्खंभेणं) यह गन्धमाद्न नामका वक्ष-स्कार पर्वत उत्तर से दक्षिण दिशातक लम्बा है एवं पूर्व से पश्चिम तक विस्तीर्ण हैं इसका आयाम ३०२०९६ योजनका है यद्यपि वर्षधर पर्वत संबद्ध मूलवाछे वक्षस्कार पर्वतों का जोकि कुछ अधिक ११८४२ योजन प्रमाण वाले कुरुक्षेत्र में है इतना आयाम नहीं बनता है तथापि ये वक्षस्कार वक्र है इसलिये बहुत क्षेत्र में प्रविष्ट होने से इनका इतना आयाम वनजाना संभवित है यह वक्षस्कार-नीलवान् वर्षधर पर्वत के पास ४०० सौ योजनकी ऊंचाई वाला है उद्वेध इसका

पेताना वक्षस-भध्यमां क्षेत्रने छुपावी के छे, तेनुं नाम वक्षस्कार पर्वत छे. 'उत्तर दाहि णायए पाईणपढीणविन्छिणो तीसं जोयण सहस्साइं दुण्णि य णजत्तरे जोयणसए छच्च य एमूणवीसइमाए जोयणस्स आयामेणं, णीलवंतवासहरपटवयं तेणं चत्तारि जोयणस्याइं उद्धं उच्चतेणं चत्तारि गाउपसयाइं उट्टेहेणं पंच जोयणस्याइं विक्वंभेणं' स्त्रे अधि भाइन नामक वक्षस्कार पर्वत उत्तरथी हिक्षण सुधी कांणा छे तेमक पूर्वथी पश्चिम सुधी विस्तीर्ण छे. स्त्रेन स्थायाम उ०२६० वृद्धं येशकन केटेक्षा छे. को के वर्षधर पर्वत संखद्ध भूक्षाणा वक्षस्कार पर्वतीना के के कंकि वधारे १९८४२ थेशकन प्रमाण्याणा क्षस्क्षेत्रमां छे-आटक्षा स्थायाम थता नथी छतां स्त्रे वक्षस्कार वक्ष छे. स्त्रेश ध्राया क्षेत्रमां प्रविष्ट होवाथी स्त्रेन स्थायाम थहां नथी छतां स्त्रे वक्षस्कार वक्ष छे. स्त्रेश ध्राया स्त्रेन नीलवान वर्षधर पर्वतनी पासे ४८० येशकन केटेक्षी अंशावना करी शक्षया. स्त्रे वक्षस्कार नीलवान वर्षधर पर्वतनी पासे ४८० येशकन केटेक्षी अंशावना करी शक्षया. स्त्रे व्यवस्कार नीलवान वर्षधर पर्वतनी पासे ४८० येशकन केटेक्षी अंशावना छे. स्त्रानी छे. स्त्रेष्ट ४०० गाष्ट्रेष्ट पर्वतनी पासे ४८० येशकन केटेक्षी अंशावना छे. स्त्रेन छे. स्त्रेष्ट पर्वतनी पासे ४८० येशकन केटेक्ष अंशावना छे. स्त्रेन छे. स्त्रेष्ट पर्वतनी पासे ४८० येशकन केटेक्ष अंशावना छे. स्वरेष्ट स्त्रेष्ट पर्वतनी पासे ४८० येशकन केटेक्ष अंशावना छे.

उत्सेघोद्वेधपरिशृद्धया—उत्सेघोद्वेधयोः उच्चत्वोण्डत्वयोः परिशृद्धया परिवर्धनेन परिवर्धमानः २ वृद्धि गच्छन् २ 'विवर्खंभपरिहाणीष परिहायमाणे २ मंदर्श्व्वयं तेणं पंच जोयणसयाई उद्धं उच्चतेणं' विष्कम्भपरिहान्या विस्तारहासेन परिहीयमानः २ हूसन् २ मन्दरपर्वतान्तेन मेर्ह्यवत्समीपे पश्च योजनशतानि उर्ध्वम् उच्चत्वेन 'पंच गाउयसयाई उव्वेहेणं-अंगुलस्स असंख्जिइभागं विक्खंभेणं पण्णत्ते' पश्च गव्यूतशतानि उद्धेशेन भूमिप्रवेशेन अङ्गुलस्य असंख्येयभागम्—असंख्यभागं विष्कमभेण विस्तारेण प्रश्नप्तः, 'गयदंतसंठाणसंठिए सव्वरय-णामए अच्छे, उभओ पासि दोहि पउमवरवेइयाहि' स च गजदन्तसंस्थानसंस्थितः गजदन्तस्य हित्तदन्तस्य यद् आदौ नीचै रन्ते चोच्चैः संस्थानस् आकारविशेषः तेन तादशेन संस्थानेन संस्थितः पुनः स सर्वरत्नमयः—सर्वात्मना रत्नमयः अच्छः आकाशस्प्रटिकविद्यमिलः. पुनः स उभयोः—द्वयोः पार्श्वयो भागयोः द्वाभ्यां पद्मःरवेदिकाभ्यां 'दोहि य वणसंडेहि' द्वाभ्यां च वनण्डाभ्यां 'सव्वशो समंता संपरिक्षितः सर्वदिश्च समन्ततः सर्वविदिश्च च संपरिक्षितः परिवेष्टितः, 'गंथमायणस्स णं वनखारपव्वयस्स उप्पि बहुसमस्मणिज्जे

४०० कोश का है तथा विष्कम्भ में यह पांच सौ योजनका है इसके बाद यह कमशः जंचाई में और उद्धेय मे तो बढता जाता है और विष्कम्भ में घटता जाता है इस तरह मन्दर पर्वत के पास पांच सौ योजन की जंचाई हो जाती है और पांच सौ कोशका इसका उद्धेष हो जाता है तथा (अंगुलस्स असंखिज्ञहभागं विक्लंभेणं पण्णत्ते) अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण इसका विष्क मभ रह जाता है-(गयदंतसंठाणसंठिए सन्वर्यणामए अच्छे) यह पर्वत गज दन्त का जैसा संस्थान होता है वैसे ही संस्थान वाला है-तथा यह सर्वात्मन रत्नमय है और आकाश एवं स्फटिक के जैसा निर्मल है यह (उभयो पार्स दोहिं पडमवरवेइयाहिं दोहि अ वणसंडेहिं सन्वओ समंता संपरिक्खित्ते) दोने पार्श्वभागों में दो पद्मवरवेदिकाओं से और दो वनपंडों से अच्छी तरह सर ओर से घिरा हुआ है (गंधमायणस्स णं वक्खारपञ्चयस्स उप्लि बहुसमरम

જેટલા છે तेमक विष्ठं लमां के ५०० याकन केटला छे. त्यार णाह के अनुडमें अथाधमां अने उद्देश में वधता ज्या छे अने विष्ठं लमां काछा थता ज्या छे. आ प्रमाणे मंहर पर्वतनी पासे पांचसा याकन केटली कोनी अंशा थंडा ज्या छे. अने ५०० सा गाउ केटला कोना उद्देश थंडा ज्या छे. तेमक 'अंगुलस्स असंख्यित्वद्वसागं विक्खंमेणं पण्णत्ते' अंशुल्लना असंख्यातमां लाग प्रमाण केना विष्ठं ल रही ज्या छे. 'गयदंतसंगणसंठिए सव्वर्यणामए अच्छे' के पर्वत गक्ट तेनुं केवुं संस्थान है। य छे तेवाक संस्थानवाले छे. तेमक सर्वात्मक रत्नमय छे अने आक्षाश तेमक स्हिटिशनी केम निर्माण छे. के 'उमयो पासिं दोहिं पडमबरवेइयाहिं दोहि अ वणसंडिहं सव्वओ समंता संपरिक्खिते अन्ने पार्श्व लागामां छे पद्मवर वेहिशकोशी अने छे वनण अंशी सारी रीते वामेर्थ

मूमिभागे जाव आसयंति' गन्धमादानस्य खळ वक्षस्कारपर्वतस्य उपिर शिखरे वहुसमरम-णीयः अत्यन्तसमतया सुन्दरो भूमिभागः, यावत्—यावत्पदेन "प्रज्ञप्तः, स यथानामकः आलि-क्रपुष्करमिति वा यावद् नानाविधपश्चवणे भीणिभिस्तृणैरुपशोभितः, अत्र मणितृणवर्णनं वक्त-च्यम् एवं वर्ण-गन्ध-रस-स्पर्श-शब्द पुष्करिणी गृहमण्डप पृथिवीशिलापष्टका बोध्याः, तत्र खळ बहवो व्यन्तरा देवाश्च देव्यश्च" इति बोध्यम् आसते उपविशन्ति, एतत्सर्व पष्ठस्-त्रोक्त भूमिभाग वर्णकमनुस्दय बोध्यम् अतो विशेषजिज्ञासुभिः षष्ठस्त्रत्रीका विलोकनीया।

अधुना अत्र क्टवक्तव्यमाह-'गंधमायणेणं वक्खार्यव्वए कइकूडा पण्णता? गोयमा! सत्तक्रडा, तं नहा-सिद्धाययणक्रडे १ गंधमायणक्रडे २ गंधिलावईक्रडे ३, उत्तरक्रक्रडे ४ णिउजे भूमिभागे जाव आसयंति) इस गन्धमादन बक्षस्कार पर्वत के ऊपर की भूमि का भाग-भूमिरूप भाग बहुसमरमणीय कहा गया है। यावत् यहां पर अनेक देव और देवियां उठती वैठती रहती है एवं आराम विश्राम दायन करती रहती है यहां आगत यावत् दाब्द से 'पण्णत्तं' स यथा नामकः आलिङ्गपुष्कर-मितिवा, यावत् नानाविध पंचवणिर्मणिभिस्तृणैरूपकोभितः अत्र मणि तृण वर्णनं वक्तव्यम् एवं वर्ण गंधरस स्पर्ध-शब्द पुष्किरिणी गृह मण्डप पृथिवी दिलापहकाः बोध्याः तत्र खलु बहवो वयन्तरा देवाश्च देव्यश्च' ऐसा पाठ गृहीत हुआ है, यह पाठ छठे सूत्र में भूमिभाग के वर्णन के प्रसङ्ग में कहा गया है अतः वहीं से हसे देखलेना चाहिये।

(गंधमायणेणं वक्खारपव्वए कह कूडा पण्णत्ता) हे भदन्त ! इस गन्ध मादन वक्षस्कार पर्वत के उपर कितने कूट कहें गये हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-(गोयमा ! सत्तकूडा-तं जहा सिद्धायणणकूडे, गंधिलावईकूडे, उत्तरकुरुक्डे,

पिरवृत छे. 'गंधमायणस्स णं वनसारप्य्वयस्स उप्पि बहुसमरमणिको भूमिभागे जाब आसयंति' आ गंधभाइन बक्षस्कार पर्यतने। अपरने। भूमिलांग भूमिश्रा लाग अहु समरमाणीय
केहेवामां आवेल छे. यावल् अहीं अनेक हेवे। अने हेवीओ। ७६ती-मेसती रहे छे तेभक्ष
आराभ-विश्वाम-शयन करती रहे छे. अहीं आवेल 'यावत्' शण्डथी 'पण्णते स यथा
नामकः आलिङ्गपुष्करमितिवा, यावत् नानाविधपंचवणेंः मणिमिस्तृ जैरुपशोभितः अत्र मणितृणवर्णानं बक्तक्यम् एवं वर्णगंधरसस्पर्श-शब्द पुष्करिणी गृहमण्डप पृथिवी शिलापहृकाः
बोध्याः तत्र खलु बहवो व्यन्तरा देवाश्च देव्यश्च' अवे। पार्ठ संगृहीत थयेल छे. आ पार्ठ
६ हा सूत्रमां भूमिलागना वर्षुन-प्रसंगमां आवेल छे. स्थी त्यांथी क जाली लेवे। निर्धिन

'गंधमायणेणं वक्खारपञ्चए कइ कूडा पण्णत्ता' है लहंत ! स्ने अधभाइन वक्षस्कार पर्वतनी इपर हैटला हूटे। हहेवामां स्नावेला हे ? स्नेना कवालमां प्रसुधी हहे है-'गोयमा ! सत्त कूडा, तं जहा-सिद्धाययणकूडे, गंधमायणकूडे गंधिसावईकूडे, उत्तरकुरकूडे, स्रोहि-

फिलिइक्डे ५ लोहियक् खक्डे ६ आणंदक् छे ७" 'गन्धमादन' इत्यादि प्रश्नस्त्रमुत्तानार्थम् , उत्तरस्त्रे हे गौतम! सप्तक्रटानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—सिद्धायतनक्रटम् १, गन्धमादनक्रटम् २ गन्धिलावतीक्रटम् ३, उत्तरक्रस्क्रटम् ४ स्फिटिकक्रटम् ५, लोहिताक्षक्रटम् ६ आनन्दक्रटे ७, तत्र स्फिटिकक्रटं—स्फिटिकमणिमयत्यात् , लोहिताक्षक्रटम्—कोहितरत्नवर्णत्यात् , आनन्दक्रटम् आनन्दनामकस्य देवस्य क्रटम् ।

ननु यथा वैतादचादि गत सिद्धायतनादिक्टानां व्यवस्था पूर्वाप्रतया कृता तथाऽत्रापि ? किं वा ततः कश्चिद्विशेषः ? इत्याह-"कहि णं भंते ! गंधमायणे वक्लारपव्वए सिद्धाययण-कूडे णामं कूडे पण्णते ?, गोयना ! मं ररस्स पन्त्रयस्स उत्तरपच्चित्थमेणं गंधमायणकूडस्स दाहिणपुरित्थमेणं, पत्थ णं गंधमायणे वक्खारपव्यच सिद्धाययणकूडे णामं कूडे पण्पत्ते'' क्व खळ भदन्त ! इत्यादि – हे भदन्त ! गन्धमाद ने वक्षस्कारपर्वते सिद्धायतनकृटं का कुत्र प्रज्ञप्तम् ?, गौतम ! मन्दरस्य पर्वतस्य उत्तरपश्चिमेन उत्तरपश्चिमदिशोरन्तरास्रे बायव्य-लोहियक्खकूडे, आणंदकूडे) हे गौतम ! इस पर सातकूट कहे गये हैं-उनके नाम इस प्रकार से है-सिद्धायतनक्षर, गन्धमादनक्रूट, गंधिलावतीक्ट, उत्तर-क्करु क्ट, स्फटिककूट, लोहिताक्षकूट और आनन्दकूट। इनमें स्फटिककूट स्फटिक-रत्न मय है लोहिताक्षरत्नके जैसे वर्णवाला है और आनन्दकुट अम्बन्द नामक देवका कूट है। अब यहां पर गौतमस्वामी के इस प्रदनका कि जिस प्रकार से वैताहय आदिगत सिद्धायतनादि कूटों की व्यवस्था पूर्व अपर आदि रूप से की गई है उसी तरह की व्यवस्था क्या यहां पर भी की गई है ? या उसकी अपेक्षा यहां की व्यवस्था में कुछ अन्तर हैं ? उत्तर देते प्रभु कहते हैं (गोयमा मंदरस्स-पव्वयस्स उत्तरपच्चित्थमेणं गंधमायणकुडस्स दाहिणपुरत्थिमेणं गंधमायणे वक्लारपव्वए सिद्धाययणकूडे णामं कूडे पण्णत्ते-तं चेव क्षुल्लहिमवंते सिद्धाय-यणस्स कूडस्स पमाणं तं चेव एएसिं सन्वेसिं भाणियन्वं) हे गौतम ! मंदर

यक्खकूडे, आणंदकूढें & गीतम! स्थे पर्वत ६पर सात हुटे। आवेदा छे. तेमना नाम सा प्रभाषे छे-सिद्धायतन हुट, गंधमाहन हूट, गंधिद्धावती हूट, ६त्तरहुडु हूट, स्हिटिंड हूट, गंधमाहन हूट, दे दिंड रतन्मय छे, दे दिंड हूट से दिंड रतन्मय छे, दे दिंद हूट से दिंड रतन्मय छे, दे दिंद हिताक्षना रतन केवा वर्षावाणा छे. अने आनंद हूट आनंद नामड हेवने। हूट छे. दे यहीं गीतम प्रसुने प्रश्न करे छे डे केम वैतादय आदिगत सिद्धायतनाहि हूटोनी व्यवस्था पूर्व अपर वगेरे इपमां डरवामा आवेद्धी छे, ते प्रमाष्ट्र क शुं अद्धी पष्टु व्यवस्था हरवामां आवेद्धी छे है तेनी अपेक्षाको अद्धीनी व्यवस्थामां डंड तहावत छे है सेना कवासमां प्रसु डेड छे-'गोयमा! मंद्रस्स पटवयस्य उत्तरपच्चत्थिमेणं गंधमायणकूडस्स दाहिणपुरत्थिमेणं एत्थणं गंधमायणे वक्खारपट्वए सिद्धाययणकुडे णामं कूडे पण्णत्ते— तं चेव शुल्छहिमवंते सिद्धाययणस्स कूडस्स प्रमाणं तंचेव एएसिं सट्वेसिं भाणियटवं' दे

कोणे गन्धमादनक्टस्य दक्षिणपौरस्त्येन दक्षिणपूर्विदिशोरन्तरान्ने आग्नेयकोणे अत्र अत्रान्तरे सिद्धायतनक्टं नाम क्टं प्रज्ञप्तम्, 'जं वेव चुल्लिहमवंते सिद्धाययणकूडस्स पमाणं' यदेव प्रमाणं श्रुद्रहिमवती सिद्धायतनक्टस्य पूर्वमुक्तम् 'तं वेव एएसि सन्वेसि भाणिण्न्वं' तदेव प्रमाणम् एतेषां सिद्धायतनक्टादीनां सर्वेषां सप्तानां कूटानां भणितन्यम्, वक्तन्यम्, 'एवं-वेव विदिशाहिं तिण्णि कूडा' एवमेव-सिद्धायतनक्टानुसारेण विदिश्च (दिशास्त) तिस्षु विदिश्च वायन्यकोणेषु त्रीणि सिद्धायतनादोनि क्टानि 'भाणियन्या' भणितन्यानि वक्तन्यानि नन्न एकैव वायन्य विदिक्ष कथं बहुत्वेन निर्दिष्टा? इति चेदुच्यते—अत्र तिस्रो वायन्यो विदिश्चो मिलिता विवक्षिता इति बहुत्वेन तिन्तेदेशः, स च 'एवं चत्तारि विदारा—भाणियन्वा' इति स्त्रविवरणोक्तयुवत्या प्रमातन्यः, उक्तक्टत्रयावस्थानमेवम्—मेक्द्रो वायन्ये सिद्धायतनक्टम् तस्माद् वायन्ये गन्धमादनकूटम्, तस्माच्च वायन्ये गन्धिस्वतीकूटम् ३, एवं तिस्रो वाय-

पर्वत के वायव्यकोण में गंधमादन कुड के आग्नेय कोण में सिद्धायतन नामका कृट कहा गया है जो प्रमाण क्षुद्रहिमवान पर्वत पर सिद्धायतनकूट का कहा गया है वही प्रमाण इन सिद्धायतन आदि सब सातों कूटों का कहलेना चाहिये। (एवं चेव विदिसाहिं तिण्णि कूडा भाणियव्वा) इसी तरह सिद्धायतनकूटके कथनानुसारही तीन विदिशाओं में वायव्यकोनों में-तीन सिद्धायतन आदि कूट कहलेना चाहिये शंका-वायव्यविदिशा तो एक ही होती हैं फिर यहां तीन वायव्यकोनों ऐसा पाठ कैसा कहा? उ. यहां जो ऐसा कहा गया है वह तीन वायव्यविशाओं को समुदित करके कहा गया है 'एवं चत्तारि विदारा भाणियव्वा' इन तीन वायव्यदिशाओं को इस सूत्र के विवरण में उक्त युक्ति से समुदितिकिया गया है ताल्पर्य ऐसा है कि मेक से उत्तर पश्चिमदिशाओं के अन्तराल में वायव्यकोने में सिद्धायतनकूट है इस सिद्धायतनकूट से वायव्यकोने में गन्धमादनकूट है इससे वायव्यकोने में गन्धमादनकूट है इस प्रकार से ये

ગૌતમ! મંદરપર્વતના વાયત્ય કાષ્યુમાં ગંધમાદન ફૂડના આગ્નેય કાષ્યુમા સિદ્ધાયતન નામક ફૂટ ઉપર કહેવામાં આવેલ છે. જે પ્રમાણ ક્ષુદ્રહિમવાન પર્વત ઉપર સિદ્ધાયતનફૂટ—માટે કહેવામાં આવેલ છે, સિદ્ધાયતન વગેરે અધા સાતે ફૂગે માટે પણ આ મુજબ જ પ્રમાણ સમજવું 'હવં ચેવ विदिसाहि तिण्णि कूडा माणियव्वा' આ પ્રમાણે જ સિદ્ધાયતન ફૂટના કથન મુજબ જ ત્રણ વિદિશાઓમાં વાયબ્ય કાષ્યામાં ત્રણ સિદ્ધાયતન વગેરે ફૂટા કહેવા નાઈએ.

શંકા-વાયવ્ય વિદિશા તો એક જ હોય છે પછી અહીં ત્રણ વાયવ્ય કેણા એવા પાડ શા માટે કહેવામાં આવેલ છે ઉત્તર-અહીં જે એવું કહેવામાં આવેલું છે તે ત્રણ વાયવ્ય દિશાએને અનુલક્ષીને કહેવામાં આવેલું છે. 'एवं चत्तारि वि दारा भाणियव्या' એ ત્રણ વાયવ્ય દિશાઓને એ સૂત્રના વિવરણમાં ઉક્ત યુક્તિ વડે સમુદિત કરવામાં આવેલ છે. તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે મેરુથી ઉત્તર-પશ્ચિમ દિશાઓના અન્તરાલમાં-વાયવ્ય

व्यविदिशः सम्पद्यते कुटत्रयस्थामान्युवत्वा चतुर्थकुटस्थानमाह-'चउत्थे तत्तियस्स उत्तर-पच्चित्थमेणं पंचमसम दाहिणेणं सेसा उ उत्तरे दाहिणेणं चतुर्थमित्यादि-चतुर्थ चतुर्थ-कूटम् , उत्तरकुरुक्टं तृतीयस्य गन्धिलावतीकूटस्य उत्तरपश्चिमेन-उत्तरपश्चिमायां विदिशि वायव्यकोणे पश्चमस्य स्फटिकक्टस्य दक्षिणेन दक्षिणस्यां दिशि प्रज्ञप्तम् पश्चमादि कृटस्था-नमाह-शेषाणि कूटचतुष्टयातिरिक्तानि स्कटिकादीनि त्रीणि कूटानि तु उत्तरदक्षिणेन उत्तर-दक्षिणस्याम् उत्तरदक्षिणश्रेणि व्यवस्थया स्थितानि प्रज्ञप्तानि, अत्रेदं तात्पर्यम् पञ्चमं चढुर्थ-रगोत्तरतः पण्ठस्य दक्षिणतः, पष्ठं पश्चमस्योत्तरतः सप्तमस्य दक्षिणतः, सप्तमं पष्ठस्योत्तरत वायन्य विदिशा रूप कोने समुदितिकयेगये हैं इसीसे 'विदिसाहिं तिण्णि' ऐसे बहुवचनका प्रयोग किया गया है। अब चतुर्थकूट का स्थान कहने के लिये सूत्र-कार (चउत्थे ततिअस्स उत्तरपच्चित्थमेगं पश्चमस्स दाहिणेणं, सेसा उ उत्तर दाहिणेणं फलियलोहिअक्खेस भोगंकर भोगवइओ देवयाओ सेसेस सरिस-णामया देवा) इस सूत्र द्वारा समझाते हैं कि उत्तर कूट नामक जो चतुर्थकूट है वह तृतीयकूट जो मन्धिलावती कूट है उसकी वायव्य विदिशा में है और पांच वां जो स्फटिककूट है उसकी दक्षिणदिशा में है इन क्टों के अतिरिक्त जो स्फटिककूट लोहिताक्षकूट, आनन्दकूट ये तीन कूट हैं वे उत्तर दक्षिण-श्रेणि में व्यवस्थित हैं यहां ऐसा तात्पर्घ है-पांचवां जो कूट स्फटिक-क्ट है वह चतुर्थ क्टकी उत्तरदिशा में है और छठे कूट की दक्षिण विशामें है छठा जो फूट है चह पंचमक्ट की उत्तर दिशा में और सातवें कूट की दक्षिणदिशा में हैं सातवां जो कूट है वह छठे कूट की उत्तर दिशा में

કાષ્ડામાં સિહાયતન કૂટ છે. એ સિહાયતનકૂટથી વાયત્યકાષ્ટ્રમાં ગંધમાદનકૂટ છે. એનાથી વાયવ્ય કાષ્ડ્રમાં ગંધલાવતી કૂટ છે. આ પ્રમાણે એ વાયવ્ય વિદિશા રૂપકા વડે સમુદિત કરવામાં આવેલ છે. એથી જ 'विदिसाहिं तिष्णि' એવા બહુવચનના પ્રયાગ કરવામાં આવેલ છે. હવે ચતુર્થ કૂટનું સ્થાન કહેવા માટે સ્ત્રકાર 'च उत्थे तित्यस्स उत्तरपच्चित्यमेण पद्धमस्स दाहिणेणं, सेसाउ, उत्तरदाहिणेणं फल्चिय छोहिअक लेस मोगंकर मोगवइओ देवयाओ सेसेस सिंसणामया देवा' આ સ્ત્ર વડે સમળવે છે કે ઉત્તર ફૂટ નામના જે ચતુર્થ ફૂટ છે તે તૃતીય ફૂટ જે ગંધિલાવતી ફૂટ છે, તેની વાયવ્ય દિશામાં છે અને પાંચમા જે સ્ફાટક ફૂટ છે તેની દક્ષિણ દિશામાં છે. એ ફૂટા સિવાય જે સ્ફાટક ફૂટ તેની કહ્મણ દિશામાં છે. ઉત્તર દક્ષિણ શ્રેણિમાં વ્યવસ્થિત છે. અહીં એવા અર્થ કરવામાં આવે છે કે—પાંચમા જે સ્ફાટક ફૂટ છે તે ચતુર્થ ફૂટા છે તે ઉત્તર દક્ષિણ શ્રેણિમાં વ્યવસ્થિત છે. અહીં એવા અર્થ કરવામાં આવે છે કે—પાંચમા જે સ્ફાટક ફૂટ છે તે ચતુર્થ ફૂટની ઉત્તર દિશામાં છે અને દ ઠા ફૂટની દક્ષિણ દિશામાં છે. છઠા ફૂટ છે તે પંચમ—ફૂટની ઉત્તર દિશામાં અને સાતમા ફૂટની દક્ષિણ દિશામાં છે જે સાતમા ફૂટની દક્ષિણ દિશામાં છે જે સાતમા ફૂટની દક્ષિણ દિશામાં છે જે સાતમા ફૂટની દક્ષિણ દિશામાં છે છે સાતમા ફૂટની ક્ષ્મણ પરસ્પરમાં ઉત્તર દક્ષિણ ભાવ કહેલમાં આવેલ છે. અર્થ ક્ષાણ પરસ્પરમાં ઉત્તર—દક્ષિણ ભાવ કહેલમાં આવેલ છે. સ્ફાટિક ફૂટ અને લાહિતાક્ષ ફૂટ એ બે કટાની

इति परस्परमुत्तरदक्षिणभाव इति, अत्र पश्चश्चतयोजनिवस्ताराण्यि कृटानि क्रमहीयमानेथि मन्धमादनपर्वते यन्मान्ति तत् सहस्राङ्ककूटान्यनुम्रत्य बोध्यम् । अथेषां सप्तानां कूटानामधि-ष्टात्स्वरूषं निरूपयितुमाह—'कलिह लोहियक्खेमु भोगंकर भोगवईभो देवयाओ सेसेमु सरि-सणाभ्या देवा' स्फटिक लोहिताक्षयोरित्यादि—तत्र स्फटिक लोहिताक्षयोः पश्चम पष्टयोः कृटयोः क्रमेण भोगङ्करा भोगवत्यौ देवते द्वे दिक्कुमाधौं तद्धिष्ठाच्यौ वसतः, शेषेषु तद्वितिवतेषु पश्चमु कूटेषु साद्यश्नामकाः तत्तत्वृद्धसद्यश्नामकाः देवाः तद्धिष्ठातारो देवाः परिवस्तित, 'छमु वि पासायवर्षेसगा रायहाणीशो विदिसामु' पट्स्विप षट् स्वेवकूटेषु मासादावतंसकाः तत्तत्क्दाधिष्टातृदेववासयोग्य उत्तमप्रासादाः प्रज्ञप्ताः, तथाऽमीषां देवानां राजधान्यः अधिपतिवसतयोऽसङ्खयाततमे जम्बुद्धीपे विदिश्च वायव्यकोणेषु प्रज्ञप्ताः। अधुनाऽस्य नामार्थं प्रश्लोत्तराभ्यां निरूपितुमाह—'से केणहेणं भंते! एवं बुच्चः' 'अथ

केनार्थेन भदन्त!' इत्यादि-हे भदन्त! केन अर्थेन कारणेन एवम् इत्यम् उच्यते कथ्यते 'गंधमायणे वक्खार्यव्वए २ ?' गन्धमादनो वक्षस्कारपर्वतः २ ? इति, भगवानुत्ररमाइ— 'गोयमा!' गौतम! 'गंधमायणस्स णं वक्खारपञ्चयस्स गंधे से जहाणामए' गन्धमादनस्य है। इस तरह परस्पर में उत्तर दक्षिण भाव कहा गया है। स्फटिककूट और लोहिताक्षकूट इन दो कूटों के ऊपर भोगंकरा और भोगवती ये दो दिक्कुमा-रिकाएं रहती है। बाकी के और समस्त कूटों पर कूटों के अनुरूप नामवाले देव रहते हैं। लिसु वि पासायवहेंसगा रायहाणीओ विदिसासु) छह कूटों के अपर ही प्रासादावतंसक है-उस उस कूट के अधिष्ठायकदेवों के निवासकरने योग्य उत्तमप्रासाद हैं तथा इन इन देवों की राजधानियां असंख्यातवेभाग प्रमाण जम्बूद्रीप में वायव्यकोणों में है (से केणट्टेणं भंते! एवं बुच्चह गंधमायणे वक्सार-पव्वए २) हे भदन्त! आपने इस पर्वत का नाम 'गन्धमादन वक्षस्कार पर्वत ऐसा किसकारण से कहा है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं (गोयमा! गंधमायणस्स णं वक्खारपव्वयस्स गंधे से जहाणामए कोट्टपुडाणवा जाव पीसिज्जमाणाण

उपर क्षेणं करा अने क्षेणवती के कि हिंदु कुमारिक्षको रहे छे. शेव सर्व कूटे। उपर कूटे। अपन मामवाणा हैवे। रहे छे 'छम्न व पासायवहेंसगा रायहाणीओ विदिसःसु' ६ कूटे.नी उपर क प्रासाद्यवतं सक छे. तत् तत् कूटेना अधिष्ठायक हैवे।ना निवास माटे थे।व्य इत्तम प्रासाहे। छे, तेमक तत् तत् हेवे।नी राजधानीको। असं प्यातमा क्षाण प्रमाण् क' अद्वीपमां वायव्य के। खुमां छे. 'से केणहेण' मंते! एवं बुच्चइ गंधमायणे वक्खारपञ्चए र' है कहंत! आपश्री को आ पर्वतनुं नाम 'अन्धमादन वक्षस्कार पर्वत' केवुं शा कारण्यी कहां छे! के। केना क्यायमां प्रकु के छे 'गोयमा! गंधमायणस्म णं वक्खारपञ्चयस्म गंधे से जहा जामए कोटुपुडाण वा जाव पीसिज्जमाणाण वा डिकिरिज्जमाणाण वा विकिरिज्जमाणाण वा परिमुज्जमाणाण वा जाव कोराला मणुण्या जाव गंधा अभिणिस्सवंति भवेयाक्षवे शे णो इण्हे समहे'

खल वक्षर कारपर्वतस्य गन्धोऽभिस्नवति तत्र दृष्टान्तस्य प्रसद्धार्यस्यति स यथानामकेत्यादि स गन्धः यथा येन प्रकारेण नामक नामैव नामक प्रसिद्धः, अत्र प्रसिद्धार्थकनामशब्दात् स्वार्थेऽकच् प्रस्ययो बोध्यः, नामेत्यस्याव्ययत्वात् स च देः प्राक् तिद्धतायाच्य प्रत्यपस्य मध्यपतितत्यान्तरमध्यपतितन्यायेन नामशब्देन नामक शब्दस्यापि ग्रहणाद्व्ययत्वात्स्यपो छक् । मूले तृ प्राक्तः तत्वात्षुंस्त्वेन निर्देशः, 'कोष्टपुडाण वा जाव' कोष्ठपुडानां वा यावत् यावत्यदेन—'तगरपुटानां वा एलापुटानां वा चोयपुटानां वा चम्पापुटानां वा दमनकपुटीनां वा कुक्कुमशुटानां वा मिछकानपुटानां वा उश्लीरपुटानां वा मफ्कपुटानां वा जातीपुटानां वा प्रयिकापुटानां वा मिछकानपुटानां वा स्नानमिल्छकापुटानां वा कर्त्रत्युटानां वा पाटलीपुटानां वा व्यक्कपुटानां वा कर्प्रत्यानां वा पाटलीपुटानां वा अञ्चवते वा उद्भिद्यमानानां वा कर्प्रत्यानानां वा कर्प्रत्यानां वा वात्रपुटानां वा वात्रपुटानां वा अञ्चवते वा उद्भिद्यमानानां वा कर्प्रत्यानानां वा परिभुजनमाणाण वा जाव' पिष्यमानानां वा उत्किरिज्ञमाणाण वा विकिरिज्जमाणाण वा परिभुजनमाणाण वा जाव' पिष्यमानानां वा उत्किरिज्ञमाणानां वा परिभुजयमानानां वा यावत् यावत्यदेन—'भाण्डाद् भाण्डान्तरं संहित्यमाणानां वा एषां पदानां संग्रहो बोध्यः, 'ओराला मण्णा जाव गंधा अभिणिस्सवंति' उदाराः मनोज्ञाः यावत् यावत्यदेन—'भनोहराः, प्राणमनो निवृतिकराः

वा उक्किरिज्जनाणाण वा, विकिरिज्जमाणाण वा, परिभुज्जमाणाण वा जाव ओराला मणुण्णा जाव गंधा अभिणिस्सवंति भवेषास्वे ? णो इणहे समहे) हे गौतम। इस गंधमादननामक वक्षस्कार पर्वतका गन्ध जैसा पिसते हुए, बटते हुए क्टते हुए विखरे हुए आदि स्प में परिणत हुए कोष्ठपुटों का यावत् तगरपुटादिकसुगन्धित द्रव्य का, गंध होता है उसी प्रकार का है वह जैसा उदार मनोज्ञ आदि विशेषणों वाला होता है उसी प्रकारका इस वक्षस्कार से सदागंध निकलतारहता है। 'णामए' में नाम शब्द से अकच् प्रत्यय किया गया है—तव 'नामकः' ऐसा बनायागया है यहां यावत् शब्द से 'तगरपुटानां वा एलापुटानां वा, चोयपुटानां वा, चम्पापुटानां वा, दमनकपुटानां वा, जाती-पुटानां वा, यूथिकापुटानां वा' इत्यादिपदों का संग्रह हुआ है तथा 'माण्डात् भाण्डान्तरं संहियमाणानाम्' इन पदों का संग्रह द्वितीय यावत्यदसे हुआ है

है गौतम! आ गन्धमाहन नामक वश्वस्कार पर्वतने। गन्ध हणतां, क्रूटता, विशिर्ण थयेक्षां वगेरे इपमां परिष्कृत थयेक्षा केग्ठे पुटाने। यावत् तगर पुटाहिक सुगंधित द्रव्योने। गन्ध हित्य छे, तेवा प्रकारने। छे. ते केवा हिहार, मनाज्ञ वगेरे विशेष्णान्वाणा हित्य छे तेवाल गंध आ वश्वस्कारमांथी सर्वहा नीक्षणते। रहे छे 'णामए' मां नाम शण्हने 'अकच् प्रत्यय क्षणाद्रवामां आवेक्ष छे. केथी 'नामकः' से जातनुं पह अन्युं छे. अहीं यावत् शण्ह्यी 'तगरपुटानां वा एलापुटानां वा; चोयपुटानां वा, चम्पाप्टानां वा' दमनकपुटानां वा, जातीपुटानां वा, यूथिकापुटानां वा' वगेरे पढे। अहण थयेक्षा छे. तेमल भाण्डान् माण्डान्त्रं संहियमाणानाम्' से पहेने। संगुह दितीय यावत् पहथी थयेक्ष

सर्वतः समन्तात्" इत्येषां सङ्ग्रहः, एषां व्याख्या राजप्रश्नीयस्त्रस्याष्टादशस्त्रस्य मत्कृतस्विधिनीटीकातो बोध्या, गन्धाः अभिस्नवन्ति अभिनिःसरन्ति एवद्धुक्ते सिति शिष्यो
भगवन्तं एच्छिति—'भवे एयाछ्वे ?' भवेदेत्र्र्यः एतादशो गन्धो गन्धमादनस्य भवेत् ?, भगवानाह—'णो इण्हे समृहे' नो अयमधेः समर्थः अयं कोष्ठपुटादीनां गन्धछ्योऽर्थों नो समर्थः
न युक्तः, यद्येवं तिहं तदुपादानं किमर्थम् ? औपम्यं तत् गन्धमादनस्य 'गंधमायणस्स णं
इत्तो इहदराए चेव जाव गंधे पण्णत्ते' गन्धमादनपर्वतस्य खल्च गन्धः इतः कोष्ठपुटादि
गन्धाः इष्टतरकः अतिक्रयेनेष्टतर एव तथाभृतः अभीष्मतत्तर एव, तत्र कश्चिदकान्तोऽिष
गन्धः कस्यचिदिष्टतरो भवतीत्याह—यावत् यावत्यदेन—''कान्ततरक एव मनोज्ञतरक एव
मनोऽमतरक एव'' इत्येषां सङ्ग्रहः, एपां विवरणं राजप्रश्लीयस्त्रस्य पश्चदशस्त्रस्य मत्कृत
स्वोधिनी टीकातो बोध्यम्, एतादशो गन्धः प्रज्ञप्तः कथितः, 'से एएण्हेणं गोयमा ! एवं
तृतीय यावत्यद से 'मनोहरा घाणमनोनिष्टक्तिकराः सर्वतः समन्तात्' इन पदों
का संग्रह हुआ है इन सब पदों को यदि व्याख्यासहित देखना हो तो राजप्रद्वनिय सूत्रके अठारहवें सूत्रकी व्याख्याको देखना चाहिये। जब प्रसुते 'गन्धमादन' नाम होने के सम्बन्ध में ऐसा कहा तो गौतम ने पुनः प्रसु से ऐसा
पूछा—तो क्या हे भदन्त ! ऐसाही गन्ध उससे निकलता है ? तब इसके उक्तर

में प्रभुने उनसे कहा-हे गौतम! ऐसा यह अर्थ समर्थ नहीं है-क्यों कि (गंध-मायणस्स ण इसो इट्टतराए चेव जाव गंधे पण्णसे) गंधमादन वक्षस्कार पर्वत से जो गंध निकलती है वह तो इन कोष्ट पुटादिकों की गंध से भी बहुत अधिक इष्ट होती है यहां तो केवल गन्धमादनवक्षस्कार पर्वत की गंधको उपमित करने के लिए ही कोष्ट पुटादि सुंगन्धित पदार्थों की गन्ध को दृष्टान्त कोटि में रखा

गया है। यहां यादत्पद से 'अभीप्सिततर एव कान्ततरएव' आदिपदों का ग्रहण छे. तृतीय यथावत्पदथी 'मनोहरा ब्राणमनोनिवृत्तिकराः सर्वतः समन्तान्' से पहाने। संश्रह श्रेष छे. से सर्व पहाने सन्याण्या किवा हाय ते। 'शलप्रश्रीय सूत्र' ना १८मा स्त्रनी व्याण्याने किवी किहीं से. क्यारे प्रकुसे 'गंधमाहन' नाम विशे स्त्र। कातनी स्पब्दता हरी त्यारे भौतमे प्रकुने पुनः प्रश्न हथीं है हे कहन्त! शुं सेवा क गन्ध ते गन्धमाहनमांथी नीहणे छे? त्यारे सेना कवालमां प्रकुसे तेने हहुं है है भौतम! सेवा स्था समर्थ नथी. हमेह 'गंधमायणस्य णं इत्तो इहतराए-चेत्र जात्र गंधे पण्णत्ते' गंधमाहन वक्षस्हार पर्वतमांथी के गंध नीहणे छे ते ते। से हैं। एट पुटाहिंडोनी गंध हरतां पण्ण स्थित प्रवित्त हथा सेह हैं। से हिल गंधमाहन वक्षस्हार पर्वतमांथी के गंध नीहणे छे ते ते। सेहत गंधमाहन वक्षस्हार पर्वतनी गंधने छप्भित हरवा माटे क हैं। इत्तराए-चेत्र गंधमाहन वक्षस्हार पर्वतनी गंधने छप्भित हरवा माटे क हैं। कहीं ते। सेहत गंधमाहन वक्षस्हार पर्वतनी गंधने छप्भित हरवा माटे क हैं। कहीं यावत् पहथी 'अभिष्मिततर एव कान्ततर एव' वगेरे पहे। श्रेष्ठा थ्रा छे. सेहीं यावत् पहथी 'अभिष्मिततर एव कान्ततर एव' वगेरे पहे। श्रेष्ठा थ्रा छे. सेहीं विशेषण भूत पहेंगी व्याण्या

वुच्चइ गंधमायणे वक्खारपव्यएर' स एतेन अनन्तरोक्तेन अर्थेन कारणेन गौतम! एवम् इत्थम् उच्यते—गन्धमादनो वक्षस्कारपर्वतः २ गन्धेन स्वयं माद्यतीव मदयति वा तद्धिष्ठात्र-देवदेवीनां मनांसीति गन्धमादनः अत्र बहुल्काद्दीधः स वक्षस्कारश्रासौ पर्वतश्रेति वक्षस्कारपर्वतः २ गन्धमादनेत्यन्वर्थनामसद्भावे हेत्वन्तरमि न्यस्यति 'गंधमायणे य इत्थ देवे मिह्द्विष परिवसइ' 'गन्धमादनश्रात्र देव' इत्यादि—गन्धमादनः तन्नामा देवः उद्धिष्ठाता-स्वरः परिवसति स च कीद्यः ? इत्याह—महर्द्धिकः—महती विषुष्ठा ऋद्धः भवनपरिवारादि लक्षणा यस्य स तथा, अस्योपलक्षणतया 'महाद्युतिः, महावलः, महायशाः, महासौद्यः, महात्रुभावः, पल्योपमस्थितिकः' इत्येषां संग्राहकता बोध्या, महर्द्धिकादि पल्योपमस्थितिकःन कान्तपदानां व्याख्याऽष्टमस्रत्राद् बोध्याः, 'अदुत्तरं च णं सास्य णामधिज्जे' इति, अदुत्तन

हुआ है। इन गन्ध के विशेषण भूत पदों की न्याख्या राजप्रश्नीय सुन्न के १९ वें सुन्न की न्याख्या से जानलेनी चाहिये (से एएणहेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ गंधमायणे वक्खारपन्वए २) इस कारण हे गौतम ! मैने इस पर्वत का नाम गन्धमादन वक्षस्कार पर्वत ऐसा कहा है दूसरी बात इस पर्वत के इस प्रकार के नाम होने में ऐसी है (गंधमायणे अ इत्थ देवे महिद्धिए परिवसई) यहां पर विपुल्जनवन परिवार आदिरूप ऋद्धि से युक्त होने के कारण महिद्धिक आदि विशेषणों वाला गन्धमादन नामका एक न्यन्तर देव रहता है अतः उसके सम्बन्ध से इसका नाम 'गन्धमादन ऐसा हो गया है। यहां यावत्यद से 'महाप्रतिः, महाबलः, महायशा, महासौष्ट्यः, महातु भावः पर्योपमस्थितिकः' इन विशेषण भूत पदों का संग्रह हुआ है। इनकी न्याख्या आठवें सूत्र से ज्ञातन्य है। (अदु-

'राजप्रश्लीय सूत्रना' ना १प मा सूत्रनी व्याण्यामांथी काणी देवी कोंध्ये. 'से एएणहुणं गोयमा! एवं बुच्चइ गंधमायणे वक्खारपच्चए २' अथी है जीतम! में आ पर्वतनुं नाम जन्धमाहन वक्षरहार पर्वत अेंबुं हे धुं भिन्येन स्वयं माद्यति माद्यति। तद्द्विष्ठातृदेव देवीनां मनांसि इति गन्धमादनः' आ कातनी व्युत्पत्तिशी को नाम गुण्य निष्पन्न नाम छे. 'बाहुलकान्' सूत्रथी 'मादन' आ प्रमाणे हीर्ध थर्ध ने 'गन्धमादन' ओवे। शण्द अन्ये। छे. आ पर्वतना नाम विशे अिल ओह वात ओवी छे हैं 'गंधमायणे छा इत्थ देवे महिद्धिए परिवसइ' अहीं विभुक्ष भवन परिवार आहि ३५ अदिथी युक्त होवा अदि महिद्धिए परिवसइ' अहीं विभुक्ष भवन परिवार आहि ३५ अदिथी युक्त होवा अदि महिद्धिए परिवसइ' अहीं विभुक्त भवन परिवार आहि ३५ अदिथी युक्त होवा अदि महिद्धिए परिवसइ' नाम 'अन्धमादन नामह ओह व्यंतर देत रहे छे. ओथी ओना संज्ञां धुंग नाम 'अन्धमादन' ओवुं असिद्ध थर्ध गयुं छे. अहीं यावत् पद्धी 'महाद्युतिः, महावलः, महायशा, महासौख्यः महानुमावः पर्योपमिधितिकः' ओ विशेषण्य भूत पहेति। संअह थ्यो छे. ओ पहानी व्याण्या आहमा सूत्रमांथी काणी शहाय तेम

⁽१) गन्धेन स्वयं माद्यति माद्यतिवा तद्धिष्ठातृदेव देवीनां मनांसि इति गन्धमादनः' इस प्रकार की व्युत्पत्ति से यह नाम गुणनिष्यन्न है 'बाहुलकात्' सूत्र से मादन' ऐसा दीर्घ होकर गन्धमादन शब्द बना है।

रम्-अथ च खलु गन्धमादनेति शाश्चतं सार्वदिकं नामधेयं नाम, शाश्चतत्वविवरणं च चतुर्थ-स्रत्रोक्त पद्मवरवेदिकानुसारेण बोध्यम् इति ॥ स्०१८॥

अथोत्तर कुरु निरूपणायाइ-'कहि णं भंते महाविदेहे' इत्यादि

मृल्य्-किह णं भंते! महाविदेहे वासे उत्तरकुरा णामं कुरा पण्णता? गोयमा! मन्दरस्स पठवयस्स उत्तरेण णीलवंतस्स वासहरपठवयस्स दिक्खणेणं गन्धमायणस्स वक्खारपठवयस्स पुरित्थमेणं मालवंतस्स वक्खारपठवयस्स प्रात्थिमेणं एत्थ णं उत्तरकुरा णामं कुरा पण्णत्ता पाईणपडीणायया उदीणदाहिणवित्थिण्णा अद्धचंद संठाणसंठिया इकारस जोयणसहस्साइं अट्ट य बायाले जोयणसए दोण्णिय एग्णवीसइ-भाए जोयणस्स विक्खंभेणंति,

तीसे जीवा उत्तरेणं पाईणपडीणायया दुहा वक्खारपटवयं पुट्टा, तं जहा-पुरित्थिमिछाए कोडीए पुरित्थिमिल्लं वक्खारपटवयं पुट्टा एवं पचरिथिमिल्लाए जाव पचरिथिमिल्लं वक्खारपटवयं पुट्टा, तेवण्णं जोयण-सहस्साइं आयामेणंति,

तीसे णं धणुं दाहिणेणं सिट्टं जोयणसहस्साइं चत्तारि य अट्टारसे जोयणसए दुवालस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं, उत्तर-

त्तरं च णं सासए णामधिज्जे इति) इस प्रकार से निमित्तकृत 'गंधमादन' नामको प्रकट करके अब सूत्रकार इस सम्बन्ध में यह नाम अनिमित्तक है ऐसा कथन करने के अभिप्रायसे (अदुत्तरं चणं सासए णामधिज्जे इति) ऐसा कहते हैं— इसमें यह समझायागया है कि इसका ऐसा नाम शाश्वत है इस सम्बन्ध में विशेषरूप से जो अन्य और विशेषण शाश्वतत्वके विवरण में कहे गये हैं उन्हें चतुर्थ सूत्रोक्त पद्मवरवेदिकांके अनुसार जानछेना चाहिये।।सू० १८।।

છે. 'अदुत्तरं च णं सासए णामधिको इति' આ પ્રમાણે નિમિત કૃત 'ગ'ધમાદન' નામ વિશે સ્પેન્ટતા કરીને હવે સ્ત્રકાર આ સંબંધમાં આ નામ અનિમિત્તિક છે એવા કથનના અભિપ્રાય સાથે 'अदुत्तर' च णं सासए णामधिको इति' એવું કહે છે. એમાં એવી સ્પેન્ટતા કરવામાં આવી છે કે એનું એવું નામ શાશ્વત છે. એ સંબંધમાં વિશેષણ રૂપમાં જે અન્ય બીજા વિશેષણ શાશ્વતત્વના વિવરશુમાં કહેવામાં આવેલ છે, તે સંબંધમાં અતુર્ધ સ્ત્રોક્રત પદ્મવર વેદિકા મુજબ જાણી લેવું જોઈ એ. ા સૂ ૧૮ ા

कुराए णं भंते! कुराए केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णते?, गोयमा! बहुसमरमणिड्जे भूमिभागे पण्णते, एवं पुरुवविण्णया जच्चेव सुसम-सुसमावत्तव्वया सच्वेव णेयव्वा जाव पडमगंधाश मियगंधार अममा३ सहाथ तेतलीप सणिचारी६ ॥सू०१९॥

छाया-क्व खल्ज भदन्त ! महाविदेहे वर्षे उत्तरक्रुको नाम क्रुरवः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! मन्दरस्य पर्वतस्य उत्तरेण नीलवतो वर्षघरपर्वतस्य दक्षिणेन गन्धमादनस्य वक्षस्कारपर्वतस्य पिरस्त्येन माल्यवतो वक्षस्कारपर्वतस्य पश्चिमेन अत्र खल्ज उत्तरक्रुरवो नाम क्रुरवः प्रज्ञप्ताः, प्राचीनप्रतीचीनायताः उदीचीनद्ष्तिणविस्तीर्णाः अर्द्धचन्द्रसंस्थानसंस्थिताः एकादश्योजनसहस्राणि अष्ट च द्वाचत्वारिंशानि योजनशतानि द्वौ च एकोनविंशतिभागौ योजनस्य विष्क-म्भेणेति, तासां जीवा उत्तरेण प्राचीनप्रचीतीनायता द्विधा वक्षस्कारपर्वतं स्पृष्टा, तद्यथा-पौरस्त्यया कोटचा पौरस्त्यं वक्षस्कारपर्वतं स्पृष्टा, एवं पाश्चात्यया यावत् पाश्चात्यं वक्षस्कारपर्वतं स्पृष्टा, त्रिपश्चाशतं योजनसहस्राणि आयामेनेति, तासां खल्ज धनुः दक्षिणेन पष्टि योजनसहस्राणि चत्वारि च अष्टादशानि योजनशतानि द्वादश्च च एकोनविंशतिभागान योजनस्य परिक्षेपेण, उत्तरक्रुरूणां खल्ज भदन्त ! क्रुरूणां कीदृशकः आकार भाव प्रत्यवतारः प्रज्ञप्तः, गौतम ! बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः, एवं पूर्ववर्णिता येव स्पप्तस्यपा वक्तव्यता सैव नेतव्या यावत् पद्यगन्धाः १ मृगगन्धाः २ अममाः ३ सहाः ४ तेतिल्याः ५ शनैश्चरिणः ६ ॥ सू० १९ ॥

टीका-'किह णं भंते ! महाविदेहे' इत्यादि, 'उत्तरकुरा णामं कुरा पण्णत्ता' इत्यन्तम् छाया गम्यम्, 'पाईणपडीणायया उदीणदाहिणविच्छिण्णा अद्धचंदसंठाणसंठिया इकारस

उत्तरकुरुनिरूपण 'कहिणं भंते ! महाविदेहे वासे'

टीकार्थ-गौतमस्वामीने इस सूत्र द्वारा प्रभु से ऐसा पूछा है-(किह णं भंते ! महाविदेहें वासे उत्तरकुरा णामं कुरा पण्णत्ता) हे भदन्त ! महाविदेहक्षेत्र में उत्तरकुर नामका क्षेत्र कहां पर कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं (गोयमा ! मंदरस्स पव्ययस्स उत्तरेणं जीठवंतरस वासहरपव्ययस्स दिक्खणेणं गंधमायणस्स वक्खारपव्ययस्स पच्चित्थमेणं एत्थ जं उत्तरकुरा जामं

ઉત્તરકુરુ–નિરૂપણ

'कहिणं भंते! महाविदेहे वासे इत्यादि

टीडार्श-गीतमे आ सूत्र वर्ड प्रभुने केवे। प्रश्न ड्ये डै-'कहि णं मंते! महाविदेहे वासे उत्तरकुरा णामं कुरा पण्णत्ता' मढाविदेढ क्षेत्रमां उत्तरकुरा णामं कुरा पण्णत्ता' मढाविदेढ क्षेत्रमां उत्तरकुरा णामं कुरा पण्णत्ता' भढाविदेढ क्षेत्रमां उत्तरकुरा णामं कुरा पण्णत्ता' के गीतम! प्रव्ययस्य दिक्खणेणं वक्खारपञ्चयस्य पच्चिथमेणं उत्तरकुरा णामं कुरा पण्णत्ता' के गीतम!

जोयणसहस्साई' एतान्यपि छाया गम्यानि, 'अह य बायाछे जोयणसए दोण्णि य एगूण-वीसहभाए जोयणस्स विक्खंभेगंति' नवरम् अष्ट च द्वाचत्वारिंशानि-द्वाचत्वारिंशद्धिकानि योजनशतानि, द्वौ चैकोनविंशतिमागौ योजनस्य विष्कम्भेणेति, अथासाम्रचरकुरूणां जीवा माह-'तीसे जीवा उत्तरेणं पाइणपडीणायया दुहा वक्खारपव्वयं पुट्टा' 'तासां जीवेत्यादि-मुळे प्राकृतत्वादेकवचनम् 'तासिं' इति वक्तव्ये 'तीसे' इत्युक्तम्, तासाम् उत्तरकुरूणां जीवा प्रत्यश्चा सैव जीवा उत्तरेण उत्तरस्यां दिशि प्राचीनप्रतीचीनायता पूर्वपश्चिमदीर्घा, द्विधा वक्षस्कारपर्वतं स्पृष्टा स्पृष्टवर्ती, 'तं जहा-पुरिथमिन्छाए कोडीए-पुरिथमिन्छं वक्खारपव्ययं पुद्वा' तद्यथा-पौरस्त्यया पूर्वया कोटचा अग्रभागेन पौरस्त्यं प्राच्यं वक्षस्कार-पर्वतं स्पृष्टा स्पृष्टावती, 'एवं पचित्थिमित्लाए जाव पच्चित्थिमिल्लं वक्सारपव्वयं पुद्वा' एवम् अनेन प्रकारेण पाश्चात्यया पश्चिमया यावत् यावत्यदेन-'कोटचा' इति ब्राह्मम् पाश्चार्यं कुरा पण्णत्ता) हे गौतम ! मन्द्र पर्वत की उत्तरिद्दशामें, नीलवन्त वर्षधर पर्वत की दक्षिण दिशा में, गन्धमादन वक्षस्कार पर्वत की पूर्वदिशा में एवं माल्यवन्त वक्षस्कार पर्वत की पश्चिमदिका में उत्तरकुरु नामका क्षेत्र अकर्मभूमिका स्थान कहा गया है यह (पाईणपडीणायया, उदीणदाहिणचित्थिण्णा, अद्भवंदसंठाणसंठिया, इकारसजोयणसहस्साई अदृववायाले जोयणसए दोण्णिय एगूणवीसहभाए जोयणस्स विक्खंभेणंति) यह पूर्व से पश्चिमतक लम्बा है और उत्तर दक्षिण तक विस्तीर्ण है इसका विष्कम्भ ११८४२ ने घोजन प्रमाण है (तीसे जीवा उत्तरेणं पाईणपडीणायया दुहा वक्खारपव्वयं पुट्टा) उस उत्तरकुरु क्षेत्र की जीवा-प्रत्यश्चा उत्तर दिशा में पूर्व पश्चिम में दीर्घ है-लम्बी है-यह पूर्व दिग्वर्ती कोटि से पूर्वदिग्वर्ती वक्षस्कार पर्वतको छूती है और पश्चिमदिग्वर्ती कोटि से पश्चिमदिग्वती वक्षस्कारपर्वत को छती है यही बात (तं जहा-पुरिविधितलाए कोडीए पुरस्थिमिल्लं वक्खारपव्ययं पुडा एवं पच्चित्थिमिल्लाए

भंदर पर्वतनी उत्तर दिशामां नीक्षवंत वर्षधर पर्वतनी दक्षिण दिशामां, अन्धमादन वक्षरहार पर्वतनी पश्चिम दिशामां उत्तर हुरु नामह क्षेत्र—अहर्भ भूभिहानुं स्थान—आवेक्ष छे. 'पाईणपडीणायया उदीणदाहिणविक्षिण्णा, अद्ध—चंदसंठाणसंठिया इनकारसजोयणसहरसाइं अद्वयवाणले जोयणसए दील्णय एगूणवीसहमाए जोयणस्म विक्खंमेणंति' से पूर्वश्ची पश्चिम सुधी कांगा छे अने उत्तरथी दक्षिण सुधी विस्तीर्ण छे. सेना आहार अर्द्ध यांद्राहार केवे। छे. सेना विष्हं स ११८४२ दृहे थे। अन प्रमाण छे. 'तीसे जीवा उत्तरेणं पाईणपडीणायया दुहा वक्खारपव्ययं पुट्टा' आ उत्तर हुद्ध क्षेत्रनी छवा—प्रत्यं या—उत्तर दिशामां पर्व पश्चिममां दीर्ध छे. कांभी छे. से पूर्व दिश्वती है। शिथी पूर्व दिश्वती वक्षरहार पर्वतने स्पर्शे छे अने पश्चिम दिश्वती है। शिथी पश्चिम दिश्वती स्पर्शे छे अने पश्चिम दिश्वती है। हिश्वती स्पर्शि वक्षरहारने स्पर्शी रहेव छे. सेक वात 'तं जहा—पुरिश्वमिल्लाए कोडीए पुरिश्वमिल्लं आव वक्खारपव्ययं पुट्टा एवं पच्चिमिल्लाए जाव पच्चिमिल्लाए कोडीए पुरिश्वमिल्लं आव वक्खारपव्ययं पुट्टा एवं पच्चिमिल्लाए जाव पच्चिमिल्लं वक्षस्थारपव्ययं पुट्टा' से सूत्र वर्दे

पिश्वमं विश्वस्कारपर्वतं स्पृष्टा, तस्या जीताया मानमाह-'तेवण्णं जीयणसहस्साइं आयामेणंति' त्रिपञ्चाश्वतं योजनसहस्राणि-त्रिपञ्चाशत्सहस्रसंख्ययोजनानि आयामेन दैर्ध्येण, तासां
धनुष्पृष्टमानमाह-तीसेणं घणुं दाहिणेणं सिहुं जीयणसहस्साई चतारिय अद्वारसे जोयणसए' तासाम्, उत्तरकुरूणां खल्छ धनुः दक्षिणेन दक्षिणभागे मेर्जासन्ने षष्टिं योजनसहस्राणि
—पष्टिसहस्रसंख्ययोजनानि चत्वारि च अष्टादशानि अष्टादशाधिकानि योजनशतानि 'दुबालस्प एगूणवीसामाए जोयणस्य परिकखेवेणं' द्वादश च एकोनविंशतिभागान् योजनस्य
परिक्षेषेण-परिधिना, तथाहि-एकैकस्य वक्षस्कारपर्वतस्याऽऽयामस्त्रिशत् योजनसहस्राणि दे
च नवाधिके योजनशते पट् च कलाः तत उभयो मीनसङ्कलनया यथोक्तं मानं भवतीति
बोध्यम्। अयोत्तरकुरूणां स्वरूपं निरूपियहुमाह-'उत्तरकुराए णं मंते! कुराए केरिसए आयारभावपद्योयारे पण्णते ?' 'उत्तरकुरूणां खल्ख्' इत्यादि। हे भवन्त ! उत्तरकुरूणां खल्ख कुरूणां कोदशकः कीदशः आकारभावप्रत्यवतारः-तत्राकारः स्वरूपं भावाः तदन्तर्गताः
पदार्थाः तत्सहितः प्रत्यवतारः आविर्भाः प्रज्ञप्तः ?, भगवानाह-'गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिमाने पण्णते' गौतम ! बहुसमरमणीयो भूमिनानः प्रज्ञप्तः, भूमिभागवर्णनं

पच्चित्थिमिल्लं वक्लारपव्वयं पुद्व() इस स्वाद्वारा प्रकट की गई है। (तेवण्णं जोयणसहस्ताई आयामेणंति) यह प्रत्यक्षा आयाम में ५२००० छोजन की है (तीसेणं घणुं दाहिणेणं सिंडुं जोयणसहस्ताई, चत्तारिय अहारसे जोयण सए दुवालस य एग्णवीसहभाए जोयणस्स परिवलेवेणं) इस प्रत्यक्षा का धनुष्ट आयामकी अपेक्षा दक्षिणदिशा में मेरु के पास में ६०४१८ दे योजन का है यह प्रमाण इस रूपसे निकलता है कि एक एक वक्षस्कार पर्वतका आयाम २०२०९ दे योजनका है अतः दोनों वक्षस्कारोंका आयाम जोडने पर ६०४१८ दे आ जाता है (उत्तरकुराए णं मंते! कुराए केरिसए आयारभावपडोयारे प्रण्यते) अब गौतमने उत्तरकुरका स्वरूप जानने के लिये प्रसुसे ऐसा पूछा है - कि - हे भदन्त! उत्तरकुरका आकारभाव प्रत्यवतार स्वरूप-कैसा कहा गया है? उत्तर में प्रसुने कहा है-(गोयमा! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे प्रणत्ने एवं पुट्व-

प्रकृत करवामां आवेश छे. 'तीसेणं धणु द हिणेणं सिंहुं जोयणसहस्साइं, चतारिय अहारसे जोयणसए दुवालस य एगूणवीसइमाए जोयणस्स परिक्खेवेणं' आ प्रत्यं थानुं धनुः पृष्ठं आयामनी अपेक्षाओ दक्षिणु दिशामां मेरुनीपासे ६०४९८ के येकन केटलुं छे. आ प्रमाणु के रीते काण्वा मणे छे हे ओड-ओड वक्षस्कार पर्वतने। आयाम उ०२०६ के योजन केटले। हाय छे. ओथी अन्ने वक्षस्कारीने। आयाम केडीने ६०४१८ के आवी काय छे. 'उत्तरकुराएणं मंते! कुराए केरिसए आयारमावपडोयारे पण्णत्ते' हवे औत्तमस्वामी छत्तर इरुनुं स्वरूप काण्वा माटे प्रकुने ओवी रीते प्रक्ष क्यें हे हे लाइंत! एत्तरकुरना आकार-काव, प्रत्यवतार अने स्वरूप हेवां केडियामां आवेश छे शेना कराणमां प्रकु हिंदे भीगा। बहुसमरमणिक्ने मूमिमारे पण्णत्ते, एवं पुन्ववण्णिया जच्चेव सुसम सुसमाव-

चतुर्शस्त्राद् वोश्यम् 'एवं पुरुवत्रण्णिया जरुवेय ससमस्यामा वस्तर्वया सस्वेव णेयव्वा' एवम् उक्तरीत्या पूर्वत्रणिता पूर्वम् २२ स्त्रे भरतवर्षत्रकरणे वर्णिता उक्ता येय सुपमसुपमा वक्तव्यता— सुपमसुपमा अवसर्पिणोकालस्य प्रथमारकः, तस्याः वक्तव्यता वर्णनपद्धतिः सेव नेतव्या प्राह्मा सा च किमविधरित्याह—'जात्र पउत्रगंचा १, मियगंचा २, अममा ३ सहा ४ तेतली ५ सिणिवारी ६' यावत् पद्मगन्धाः इत्यादि—पद्मगन्धाः—पद्मवद्गंधयुक्ताः १, मृगगन्धाः —मृगस्य कस्त्री प्रधान मृगस्येव गन्यो येषां ते तथा २, अममाः—निर्ममाः ममता रहिताः ३, सहाः सहन्ते—प्रवनुवन्ति कार्ये इति सहाः—शक्ताः कार्य समर्थोः ४, तेतलिनः—विशिष्ट-पुण्यशालिनः ५, शनैश्वारिणः—मन्दगमनशीलाः एवं विधा मनुष्या यावत् तावत् उत्तरकुरुवर्णनं बोध्यम्, इत्युत्तरकुरु वक्तव्यता निरूपिता ।।स०१९॥

अथोत्तरकुरुवर्तिनी यमकपर्वतौ प्ररूपयितुमाइ-

मूलम्-किह णं भंते! उत्तरकुराए जमगा णामं दुवे पव्वया पण्णत्ता?, गोयमा। णीलवंतस्स वासहरपव्ययस्स दिन्न्लिणिल्लाओ चिरमंताओ अहुजोयणसए चोत्तीसे चत्तारि य सत्तमाए जोयणस्स अवाहाए सीयाए महाणईए उभओ कूले एत्थ णं जमगा णामं दुवे पव्यया पण्णत्ता जोयणसहस्सं उहुं उच्चतेणं अहुाइज्जाइं जोयणसयाइं उव्वेहेणं मूले एगं जोयणसहस्सं आयामविक्षंभेणं उवरिं च पंच जोयणसयाइं आयाम-विक्षंभेणं मूले तिण्ण जोयणसहस्साइं एगं च बावटूं जोयणसयं किंचि

विष्णया जन्चेव सुसमसुसमावसन्वया सन्चेव णेयन्वा जाव परमगंधा १ मिश्रगंधार अममा३ सहा४ तेतली५ सिणंचारी६) हे गौतम! वहांका भूमिभाग वहुसमरमणीय है इस तरह पूर्वविणत सुषमसुषमा नामक आरे की जो वक्तव्यता है वही वक्तव्यता यहां कह लेनी चाहिये-यावत् वहां के मनुष्य पद्म जैसी गंधवाले हैं कस्तूरीवाले मृग जैसी गन्धवाले हैं ममता रहित है कार्च करनेमें सक्षम है तेतली विद्याष्ट पुण्यदााली हैं और मन्द मन्द गित से चलनेवाले हैं। इसप्रकार से यह उक्तरकुरुका वर्णन हैं। ॥१९॥

त्तन्त्रया सच्चेव णेयन्या जाय पडमगंधा १, मिअगंधा २, अममा ३, सहा ४, तेतली ५, सर्जिचारी ६' हे गौतम! त्यांने। लूमिलाग लहुसमरमणीय छे. आ प्रमाणे पूर्व वर्णित सुषम सुषमा नामक आरानी के वक्ष्तव्यता छे तेक वक्ष्तव्यता अत्रे क्रण्यी कीर्छ थे. यावत् त्यांना मनुष्या पदा केवी गंधनाणा छे. क्ष्तूरी वाणा मृगनी केवा गंध वाणा छे, ममता रहित छे, कार्य करवामां सक्षम छे. तेतली विशिष्ट पुष्यशासी छे. अने धीमी धीमी यालथी यालनारा छे. आ प्रमाणे आ उत्तरकुरनुं वर्णुन छे। सू. १८ ॥

विसेसाहियं परिक्खेवेणं मञ्झे दो जोयणसहस्साइं तिण्यि बावत्तरे जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्लेवेणं उवरि एगं जोयणसहस्तं पंच य एकासीए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेंबेणं मूळे विस्थिण्णा मज्झे संखित्ता उप्पि तणुया जमगसंठाणसंठिया सब्वकगगामया अच्छा सण्हा पत्तेयंर पउमवरवेइयापिरिक्लिता पत्तेयंर वणसंडपरिक्लिता, ताओ णं पउमवरवेइयाओ दो गाउयाइं उद्धं उच्चत्तेणं पंचधणुसयाइं विक्खंभेणं, वेइयात्रणसंडवण्णओ भाणियव्वो, तेसि णं जमगपव्ययाणं उप्पि बहु-समरमणिज्जे भूमिभागे पण्णते, जाव तस्स णं बहुसमरमणिज्ञस्स भूमि-भागस्स बहुमज्झदेसभाए एथ्थ णं दुवे पासायवडेंसगा पण्णता, ते णं पासायविंसमा बाविंदूं जोयणाई अद्धजोयणं च उद्घं उच्चतेणं इक्षतीसं जोयणाइं कोसं च आयामिवबह्नंभेणं पासायवण्णओ भाणियव्वो, सीहासणसपरिवारा जाव पत्थ णं जमगाणं देवाणं सोलस्प्रहं आय-रक्खदेवसाहस्सीणं सोलस भद्दासणसाहस्सीओ पण्णताओ से केणट्रेणं भंते! एवं बुचइ जमगा पव्यया२?, गोयमा! जमगपव्यएसु णं तत्थर देसे तिहं २ बहवे खुड्डाखुड्डियासु वावीसु जाव बिलपंतियासु बहवे उप्प-लाई जाव जमगवण्णाभाई जमगा य इत्थ दुवे देवा महिहिया, ते णं तस्थ चउ०हं सामाणियसाहस्तीणं जाव भुंजमाणा विहरंति, से तेण ट्रेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जमगपव्यथा २, अदुत्तरं च णं सासए णाम-धिज्जे जाव जमगपव्यया २ । सू० २०॥

छाया—चय खळ भदन्त! उत्तरकुरुषु यमको नाम द्वी पर्वतौ प्रज्ञप्तौ, गौतम! नीलवतो वर्षधरपर्वतस्य दाक्षिणात्याच्चरमान्तात् अष्टयोजनशतानि चतुस्त्रिशानि चतुरश्च सप्त भागान् योजनस्य अवाधया सीताया महानद्याः उभयोः क्लयोः अत्र खळ यमकौ नाम द्वी पर्वतौ प्रज्ञप्तौ, योजन सहस्रमूर्ध्वप्रच्चत्वेन अर्द्धतृतीयानि योजनशतानि उद्धेषेन मूले एकं योजनसहस्रमायामविष्कमभेण मध्ये अर्द्धाष्टमानि योजनशतानि आयामविष्कमभेण उपरि पश्च योजनशतानि आयामविष्कमभेण मृले त्रीणि योजनसहस्राणि एकं च द्वाषण्टं योजनशतं किश्चिति होगाधिकं परिक्षेपेण मध्ये द्वे योजनसहस्र त्रीणि च द्वासप्ततानि योजनशतानि किश्चिति शेषाधिकानि परिक्षेपेण उपरि एकं योजनसहस्रं पश्च एकाशीतानि योजनशतानि किश्चिति

दिशेषाधिकानि परिक्षेषेणमूळे विस्तीणीं मध्ये संक्षिप्तौ उपिर तनुकौ यमकसंस्थानसंस्थिती सर्वकनकमयी अच्छौ श्रुक्षणी प्रत्येकं २ पन्नवरवेदिका परिक्षिप्तौ प्रत्येकं २ वनषण्डपिर क्षिप्तौ, ताः खळ पद्मवरवेदिकाः द्वे गञ्यूते ऊर्ध्वप्रच्यत्वेन पश्च धनुःशतानि विष्कम्भेण, वेदिका वनषण्डवर्णको भणितव्यः, तयोः खळ यमक पर्वतयोरुपिर बहुसमरमणीयस्य भूमि-भागस्य बहुमध्यदेशभागः अत्र खळ द्वौ प्रासादावतंसकौ प्रज्ञप्तौ, तौ खळ प्रासादवतंसकौ द्वापिट योजनानि अर्द्धयोजनं च ऊर्ध्वप्रच्यत्वेन एकित्रंशतं योजनानि क्रोशं च आयाम-विष्कम्भेण प्रासादवर्णको भणितव्यः, सिंहासनानि सपिरवाराणि यावद् अत्र खळ यमकयोः देवयोः पोडशानामात्मरक्षकदेवसाहस्रोणां षोडश भद्रासनसाहस्त्यः प्रज्ञप्ताः,

अध केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-यमकौ पर्वती २ ?, गौतम ! यमकपवतयोः खलु तत्र देशे तत्र श्रुद्राश्चद्रिकासु वापिसु यावद् विलपङ्कतिकासु वहूनि उत्पलानि यावत् यमकवर्णाभानि यमकौ चात्र द्वी देवी महर्द्धिकौ, ती च तत्र चतस्यां सामानिकसाइ-स्रीणां यावद् भ्रुश्चानौ विहरतः, तौ तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते-यमकपर्वतौ २, अदुत्तरं च खलु शाश्चतं नामधेयं यावद :यमकपर्वतौ २ ।। स्०२०।।

टीका-'किह णं भंते ! उत्तरकुराए' इत्यादि-'किह णं भंते ! उत्तरकुराए जयगा णामं दुवे पव्यया पणात्ता' क्व खळु भदन्त ! उत्तरकुरुषु यमको नाम द्वी पर्वतो प्रक्षमी ? अग-वानाह-'गोयमा ! णीळवंतस्स वासहरपव्ययस्स दिवखणिल्ळाओ चिरमंताओ' हे गौतम ! नीळवतो वर्षधरपर्वतस्य दाक्षिणात्याच्चरमान्तात्—इह स्यव्छोपे कर्मणि पश्चमी तेन दाक्षिणात्यं दक्षिणदिग्मवं चरमान्तं—सर्वान्तिमं प्रदेशम् आरभ्य—दाक्षिणात्याच्चरमान्तादारभ्यार्वाग्दिक्ष-णाभिमुखमित्यर्थः, 'श्रद्ध जोयणसप्' अष्ट-अष्टसंख्यानि योजनशतानि 'चोत्तीसे' चतु-र्विशानि—चतु स्त्रिशदिधकानि 'चतारि य सत्तभाए' चतुरश्च सप्तभागान 'जोयणस्स अवाहाए'

'कहि णं अंते ! उत्तरकुराए' इत्यादि

टीकार्थ-'किह णं मंते! उत्तरकुराए जमगा नामं दुवे पव्वया पण्णत्ता' हे भगवन उत्तरकुर में यमक नामके दो पर्वत कहां पर कहे गए हैं? इस प्रइन के उत्तर में महावीर प्रभु कहते हैं-'गोयमा! णीलवंतस्स वासहरपव्य-यस्स दिक्खणिल्लाओ चरिमंताओ' हे गौतम! णीलवन्त वर्षधर पर्वतके दक्षिण दिशा के चरमान्त से छेकर 'अडजोयणसए चोत्तीस' आठसो चोतीस योजन

'कहि णं भेते! उत्तरकुराए' धत्याहि

टीकार्थ-'किह णं मंते! उत्तरकुराए जमगा नामं दुवे पव्वया पण्णत्ता' है लगवन् ઉत्तरकुरामां यभक्ष नाम वाणा भे पर्वता क्यां आवेला छे? आ प्रश्नना उत्तरमां प्रसुश्री गौतमस्वामीने के हे छे हे-'गोयमा! णीलवंतस्य वासहरपव्यस्य दिक्खणिल्लाओ चरिमंताओं' है गौतम! नीलवंत वर्षधर पवर्तनी हिस्छ। हिशाना श्रामान्तथी लर्धने 'अह जोयणसए चोत्तीसे'

योजनस्य अबाधया-अपान्तराले कृत्वेति शेषः 'सीयाए' सीतायाः-सन्नामन्याः 'महाणईए' महानद्याः 'उभओ' उभयोः एकः पूर्वस्मिन् अपरश्च पश्चिमे इति द्वयोः 'कुल्ठे' कुलयोः-तटयोः 'एत्य णं' अत्र-अत्रान्तरे 'जमगा णामं दुवे पव्वया पण्णत्ता' यमकी नाम द्वी पर्वती प्रज्ञप्ती, अथैतयोर्मानाद्याह-'जोयणसहस्तं' योजनसहस्रं-सहस्रसंख्ययोजनानि 'उड्ढूं' ऊर्ध्वम् 'उच्चत्तेणं' उच्चत्वेन-उन्नतत्वेन, 'अङ्काइजाइं जोयणसयाइं' अर्धतृतीयानि योजनश्रतानि-सार्द्धशतद्वयसंख्ययोजनानि 'उव्वेहेणं" उद्वेधेन मूले-मूलावच्छेदेन 'एगं जोयणसहस्सं' एकं योजनसहस्रम् 'आयामविक्खंभेणं' आयामविष्कम्भेण-दैर्ध्वविस्ताराभ्याम् वृत्ताकारत्वात् 'मज्झे' मध्ये-मध्यदेशावच्छेदेन भूतलतः पश्चशतयोजनातिक्रमे 'अद्धरमःणि जोयणसयाई' अर्द्धाष्टमानि योजनशतानि-सार्द्धसप्तसंख्ययोजनानि 'आयामविवसंभेणं' आयामविष्कम्भेण 'उर्वार च' उपरि-सदस्रयोजनातिक्रमे 'पंच जोयणसयाई' पश्च योजनशतानि-पश्चशतयोज-नानि 'आयामविक्खंभेणं' आयामविष्कम्भेण, 'मूले तिष्णि जोयणसहस्साई' मूले-त्रीणि 'चसारिय सत्तभाए जोयणस्स' एक योजन के 🕇 चोथे भागके सप्तमांदा 'अवाहाए' अबाधासे–अपान्तरालमें 'सीयाए महाणईए' सीता नामकी महा-नदी के 'उभओ कुछे' पूर्वपश्चिम तट पर अर्थात् एक पूर्वतट पर पूर्व एक पश्चिम तट पर 'एत्थणं जमगा णामं दुवे पव्यथा पण्णाचा' इस प्रकार से यमक नामके दो पर्वत कहे हैं।

अब इन दो पर्वत के आयाम विस्तारादि सूत्रकार कहते हैं—'जोयण-सहस्सं' इत्यादि 'जोयणसहस्सं उड्ढं उच्चत्तंणं' एक सहस्र योजन उपर के भागमें जंचे एवं 'अड्ढाइजाइं जोयणसयाइं' ढाइसो योजन 'उच्चेहेणं' उद्वेध बाछे अर्थात् पृथ्वीके अंदर रहे हुए 'मूछे एगं जोयणसहस्सं' मूलभागमें एक हजार योजन 'आयामविक्खंभेणं' आयामविष्कम्भवाछे 'मज्झे अद्वहमाणि जोयणस्थाइं' मध्यमें साढे सातसो योजन 'आयामविक्खंभेणं' आयाम विष्क-

અાઠ સા ચાત્રીસ યાજન 'चत्तारिय सत्तभाए जोयणस्स' એક યાજનના હું ચાર સપ્તમાંશ 'अबाहाए' અબાધા—અન્તરાલ વિના 'सीयाए महाणईए' સીતા નામની મહાનદીના 'હમओ कूछे' પૂર્વ પશ્ચિમ કિનારા પર અર્થાત્ એક પૂર્વના કિનારા પર અને એક પશ્ચિમ કિનારા પર 'एत्थ णं जमगा णामं दुवे पव्वया पण्णत्ता' એ રીતે યમક નામના છે પર્વતા કહેલા છે.

હવે सूत्रकार आ थे पर्वतना आयाम विस्ताराहि मान अतावे हे. 'जोयणसहरसं' धिलाहि—'जोयणसहरसं छड्ढं उच्चत्तेणं' એક હજાર धीळन ઉपरनी तरह अंश हे. तेमक 'अद्दृहहजाई जोयणस्याइ' अदीसे। थीळन 'उट्वेहेणं' उदेधवाणा એટલે है जभीननी आंहर रहेल हे. 'मूळे एगं जोयणसहरसं' मूल काणमां એક હજાર धीळनना मध्यमां 'आयामविक्लंमेणं' लंभाई पहेलाई वाणा 'मज्झे अद्भुमाणि जोयणस्याइं' मध्यमां सादा सातसे। थीळनना 'आयामविक्लंमेणं' लंभाई पहेलाई वाणा 'उवहिं च' એક હજાર थीळन

योजनसहस्राणि-सहस्रत्रयसंख्ययोजनानि 'एगं च बावहं' एकं च द्वापष्टं-द्वापष्टचिधकं 'जोयणसयं किंचि विसेसाहियं' योजनशतं किश्चिद्विशेषाधिकं-कियत्कलमित्यर्थः, 'परिवर्षे-वेणं' परिक्षेपेण-परिधिना वर्तुलस्वेनेत्यर्थः, 'मज्झे दो जोयणसहस्साइं' मध्ये-द्वे योजन-सहस्रे-सहस्रद्वयसंख्ययोजनानि 'तिण्णि बावत्तरे' त्रीणि च द्वासप्ततानि-द्वासप्तत्यधिकानि 'जोयणसए' योजनशतानि 'किंचि विसेसाहिए' किञ्जिद्विशेषाधिकानि 'परिक्खेवेणं' परि-क्षेपेण-परिधिना, 'उवरि' उपरि-शिखरे 'प्रां' एकं 'जोयणसहस्सं पंच य एकासीष्' योजनसहस्रं पश्च च एकाशीतानि-एकाशीत्यधिकानि 'जोयणसए किंचि विसेसाहिए परि-क्खेवेणं' योजनशतानि किञ्चिद्विशेषाधिकानि परिक्षेपेण, अत एव 'मूळे वित्थिण्णा' मूळे विस्तीर्णौं, 'मज्झे' मध्ये-मुलापेक्षया 'संखित्ता' संक्षिप्तौ-अल्पपरिक्षेपकौ, 'उप्पि' उपरि-शिखरे मूळमध्यापेक्षया 'तणुया' तनुकौ-स्वल्पतरायामविष्कम्भौ, तथा 'जमगसंठाणसंठिया' म्भ वाले एवं 'उवरिं च' ऊपर एक सहस्र योजन पर 'पंचजोयणसयाइं' पांचसो योजन 'आयामविक्खंभेणं' आयामविष्कम्भ से युक्त 'मूछे तिमि जोयण सह-स्साई' मूलभागमें तीन हजार योजन 'एगं च वावट्टं जोयणसयं एकसो बासठ योजनसे 'किंचिविसेसाहियं' कुछ अधिक अर्थात् मूलभागमें ३१६२ योजनसे कुछ अधिक 'परिक्खेवेणं' परिधिवाछे (गोलाइमें) 'मज्झे दो जोयणसहस्साई' मध्यम भागमें दो हजार योजन 'तिन्निवाबत्तरे जीयणसए' तीनसो बहत्तर-योजन से 'किंचिविसेसाहिए' कुछ अधिक 'परिक्खेवेणं' परिक्षेप से युक्त 'उवरि शिखर के भाग में 'एगं जोयणसहस्सं पंचय-एकासीए जोयणसए, एक हजार पांचसो एकासी योजनसे 'किंचिविसेसाहिए परिक्लेवेणं' कुछ अधिक परिक्षेप वाले ये यमक पर्वत हैं ये 'मूले वित्थिन्ना' मूल भाग में विस्तार वाले 'मज्ज्ञे संखित्ता' मध्य भागमें कुछ संकुचित एवं 'उविं तणुया' शिखर के भागमें तनु अल्पतर आयाम विष्करभवाछे है तथा 'जगमसंठाणसंठिया' यमक संस्था-

उपरना लागमां 'पंचजीयणसयाइं' पांचसे। ये। जन 'आयामविक्खंमेणं' लं आर्ध पहे। जार्थणसयं' मेर्ड तिन्नि जोयणसहरसाइं' मूलमां त्रण्य हे जर ये। जन 'एगं च बावहुं जोयणसयं' मेर्ड से। आसर्ठ ये। जनथी 'किंचि विसेसाहियं' रुं छे प्रधार अर्थात मूणलागमां ३१६२ ये। जनथी रुं छे प्रधार 'परिक्खेवेणं' परिधिवाण। अर्थात गे। जार्थाशरमां 'मड्झे दो जोयणसहरसाइ' मध्यलागमां के हुलार ये। जन 'तिन्नि बावत्तरे जोयणसए' त्रण्युसे। क्षेतिर ये। जनशी 'किंचि विसेसाहिए' रुं छे प्रधार 'परिक्खेवेणं' परिधिवाण। 'ख्वरि' शिभरनी ६ परना लागमां 'एगं जोयणसहरसं पंचय एकासीए जोयणसए' के हुलार पांचसे। क्षेत्रसी ये। जनशी 'किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं' रुं छे प्रधार परिक्षेपणा। आ यमक पर्वत के. आ पर्वत 'मूले विश्विणणा' मूणमां विस्तारवाण। 'मड्झे संखित्ता' मध्य लागमां रुं छे सं है। य युक्त तथा 'ख्वरिं तणुया' उपरना लागमां तन्नु नाम अहपतर आयाम विष्ठं लवाण। के. तथा

यमकसंस्थानसंस्थितौ-यमकौ-युग्मजातौ आतरौ तयोर्थत् संस्थानम्-आकारविशेषस्तेन संस्थितौ-परस्परं सदशसंस्थानौ, यदा-यमका:-पश्चिविशेषास्तत्संस्थितौ, संस्थानं चानयौ र्मुलादारभ्य शिखरं यावत् अध्वीकृत गोपुच्छवत्क्रमिक हासवत्प्रमाणत्वेन बोध्यम् , तथा 'स्टब्कणग्रामया' सर्वकनकमयौ-सर्वात्मना स्वर्णमयौ 'अच्छा सण्हा' अच्छौ श्रद्धणौ 'पत्तेयं२' प्रत्येकम् २-एकैक एकैकः इति द्रौ पृथक् स्थितौ 'पउमवरवेइयापरिक्खिता' पद्मवरवेदिका परिक्षिप्ती--पद्मवरवेदिका परिवेष्टितौ 'पत्तेयं २' प्रत्येकं २ 'वणसंडपरिविखत्ता' वनषण्डपरि-क्षिप्ती-वनपण्डपरिवेष्टिती, अत्रैवानन्तरोक्तयोः पद्मवरवेदिका-वनपण्डयोः प्रमाणाद्याह-'ताओ णं' इत्यादि-'ताओ णं' ताः प्रागुक्ताः खळ 'पजमवरवेइयाओ' पदमवरवेदिकाः 'दो गाउयाई' द्वे गव्यु ते-चतुरःक्रोशान 'उद्धं उच्चतेणं' उध्वेमुच्चत्वेन 'पंच धणुसयाई' पश्च-धनुःशतानि-पश्चशतधन्ंषि 'विक्खंभेणं' विष्कम्भेण विस्तारेण, 'वेइयावणसंडवण्णओ' वेदिका नसे संस्थित अर्थात् परस्परमें समान संस्थान वाछे ये यमक पर्वत है अथवा यम-कनामके पक्षिविद्योग के आकार के जैसा आकार वाले ये यमक पर्वत है। अर्थात इसका संस्थान मूलसे शिखर पर्यन्त अंचे उठाए गए गाय के पुच्छ के आकार जैसे आकार वाले अर्थात् क्रमिक तनु होते जानेवाले प्रमाण वाला ये पर्वत है। ये यमक पर्वत 'सब्ब कणगामया' सर्वोत्मना सुवर्णमय है 'अच्छों सण्हा' अच्छ एवं श्लक्ष्ण है। 'परोधं २' प्रत्येक पृथक् पृथक् रहे हुए हैं अर्थात् दोनों अलग अलग स्थित है। 'पडमवरवेइया परिक्खिला' पद्मवर वेदिका से परिवेष्टित है 'पत्तयं २ वणसंडपरिक्खिता' वनषण्ड से प्रत्येक परिवेद्धित है।

अब पद्मवरवेदिका एवं बनषण्ड का प्रमाण कहते हैं-(ताओ णं) इत्यादि (ताओ णं) पहछे कही हुई 'पउमवरवेहयाओ' पद्मवरवेदिका (दो गाउयाई) दो गब्यूत अर्थात् चार कोस की 'उदं उच्चकेण' उपर की और ऊंची है 'पंच धणु-

'जमगसंठाणसंठिया' यम इ संस्थानथी संस्थित अर्थात् अन्योन्य समान संस्थानवाणा आ यम इ पर्वता छे. अथवा यम इ नामधारी पिस विशेषना आहार केवा आहारवाणा आ यम इ पर्वत छे. अर्थात् तेम दुं संस्थान भूणथी शिणर सुधी इ यु हरवामां आवेस आयना पूंछडाना आहार केवा आहारवाणा ओट ये हे इम इम था पातणा पडता कता प्रमाण् वाणा आ यम इ पर्वत छे. आ यम इ पर्वत 'सच्च इणगामया' सर्वात्मना सेनाना छे. 'अच्छा सण्हा' अव्छ अने श्वश्च छे. 'पत्तेयं पत्तेयं पत्तेयं पत्तेयं पत्तेयं पत्तेयं वणसंहपिविसत्ता' इरे इ वनषं देशी वींटायेसा छे.

હવે પદ્મવર વેઠિકા અને વનખંડનું પ્રમાણ અતાવવામાં આવે છે.-'તાઓળં' ઇત્યાદિ 'તાઓળં' પહેલાં કહેવામાં આવેલ 'વહમવરવેદ્યાઓ' પદ્મવરવેદિકા 'દો નાહ્યાદું' એ ગુરુયૂત અર્થાત્ આર ગાઉ 'હતું હદ્વત્તેળં' ઉપરની તરફ ઉંચી છે. 'પંચ, ઘળુસયાદ્ર' वनपण्डवर्णकः नवे दिका-वनपण्डयोर्वर्णनपरः पदसमूहो 'भाणियव्वो' भणितव्यः वक्तव्यः, स च चतुर्थपश्चस्त्राभ्यां बोध्यः, । अधुना यमकयोरुपरियद्स्ति तद्वार्णयितुमाह-'ते सिणं' इत्यादि-'तेसि णं जमगपव्वयाणं' तयोः यमकपर्वतयोः खल्छ 'उप्पि' उपिर शिखरे 'बहुसम-रमणिज्जे' बहुसमरमणीयः —अत्यन्तसमोऽत एव रमणीयः —मनोहरो 'भूमिभागे पण्णत्ते' भूमिभागः प्रज्ञप्तः, 'जाव' यावत्—यावत्पदेन—'आलिङ्गपुष्करमितिवेत्यादि तद्वर्णनपरः पदस्सम्हो राजप्रश्रीयस्त्रप्रय पश्चद्वस्त्रादारभयेकोनविंशतितमस्त्रपर्यन्ताक्षित्रन्थादवगन्तव्यः, स च किम्पर्यन्त इत्याह—'तस्स णं' इत्यादि—'तस्स णं बहुसमरमणीज्जस्स भूमिभागस्स बहु-मध्यदेशभागः अत्यन्तमध्यदेशभागः अस्तीति शेषः, 'एत्य णं दुवे पासायवर्डसगा' अत्र—

सयाहं' पांचसो धनुष जितना 'विवखंभेणं' उसका विष्कंभ याने विस्तार है 'वेहयावणसंडवण्णओ' वेदिका एवं वनषण्ड के वर्णन वाछे विशेषण यहां 'भाणि-यन्वो ' कहछेना यह वर्णन इस ४ थे वक्षस्कार के चतुर्थ एवं पांचवे सूत्रमें कहे गए है अतः वहां से समज छेवें।

अब यमक पर्वत के उपरितन भागका वर्णन करते हैं-'तेसिं णं' इत्यादि 'तेसिंणं जमगपन्वयाणं उप्पि' वे यमक पर्वत के उपर के शिखरमें 'बहु-समरमणिड़ जो' अत्यन्त समतल होने से अत्यन्त रमणीय' भूमिभागे पण्णत्ते' भूमिभाग कहा है 'जाव' यावत् पदसे गृहीत 'आलिङ्गपुष्करमितिवा' इत्यादि वर्णन परके पदसमूह राजप्रश्रीय सूत्र के पंद्रहवें सूत्रसे छेकर उन्नीसवे सूत्र तक कहे गये वर्णन वहां से जान छेवें। वह वर्णन कहां तक का यहां ग्रहण होता है? इस शंका के निवृत्ति के लिए सूत्रकार कहते हैं 'तस्स णं इत्यादि

तस्स णं बहुसमरमणीयस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए' वह बहुसम-रमणीय भूमिभाग के ठीक मध्य भागमें 'एत्थ णं दुव पासायवर्ड सगा' दो प्रसाद

પાંચરોા ધતુવ જેટલાે 'विक्संभेणं' તેના વિસ્તાર છે. 'वेइयावणसंड वण्णओ, વેદિકા અને વનષંડના વર્ણનવાળા વિશેષણ અહિંયા 'भाणियच्यो' કહી લેવા જોઈ એ. તે વર્ણન આ ૪થા વક્ષસ્કારના ચાથા પાંચમાં સૂત્રમાં કહેવામાં આવેલ છે. તેથી તે વર્ણન ત્યાંથી जोઇ લેવું.

હવે યમક પર્વતના ઉપરના ભાગનું વર્ણન કરવામાં આવે છે. 'તેસિં ળં' ઇત્યાદિ

'तेसि'णं जमगपन्ययाणं उपि' ते यभक पवर्तनी उपरना शिभरमां 'बहुसम-रमणिड्जे' अत्यंत समतण होवाधी रमणीय 'मूमिमागे पण्णत्ते' भूमिशाण कहें छे. 'जाव' यावत पहणी श्रह्ण करवामां आवेश 'आलिं गपुक्करमितिवा' छत्याहि वर्णुनना पहसम्ह शक्प्रश्लीय सूत्रना पंहरमा सूत्रथी शर्छ ने ओगणीसमां सूत्र सुधी कहेंवामां आवेश समश्र वर्णुन अही समल हे. ते वर्णुन अही या क्यां सुधीनं श्रह्ण करवामां आवेश छे? ते शंकाना शमन माटे सूत्रकार हहे छे. 'तरसणं' छत्याहि 'तरसणं बहुसमरमणिड्जस्स भूमि मागस्स बहुमङ्हदेसमाए' ते अहु सरणा खेवा भूमी भागनी अराजर मध्य भागमां 'एश्य णं दुवे पासायवहेंसगा' छे प्रासाह अर्थात् उत्तम महेश 'प्रणक्ता' कहेवामां आवेश छे. अत्रान्तरे खलु द्वी प्रासादावतंसकी-प्रासादोत्तमी 'पण्णता' प्रज्ञप्ती, तयोमीनमाइ-'तेणं' इत्यादि, 'तेणं पासायविल्समा' ती खलु प्रासादावतंसकी 'बाविद्व जोयणाई अद्ध्रजोयणं च' द्वापिट योजनानि अर्द्धयोजनम्-योजनस्यार्द्धम् च 'उद्धं उच्चत्तेणं इकतीसं' ऊर्ध्वमुच्चत्वेन एकिंत्रात्संख्यानि 'जोयणाइ' योजनानि 'कोसं च' क्रोश्रम्-एकं क्रोशं च 'आयामविव्खं-भेणं' आयामविष्कम्भेण-दैर्ध्यविस्ताराभ्याम् प्रज्ञप्ताविति पूर्वेण सम्बन्धः, 'पासायवण्णओ' प्रासादवर्णकः-प्रासादवर्णकः-वर्णनपरः पदसमूहो 'भाणियव्वो' भणितव्यः-वक्तव्यः, स च राजप्रश्रीयद्वत्रस्याष्ट्यष्टितमद्वत्रस्य मत्कृतस्रवोधिनी टीकातो बोध्यः, 'सीहासणा सपिर्वारा' सिंहासनानि सपिरवाराणि-इत्रसिंहासनसिहतानि मुख्यसिंहासनानि वर्णनीयानि तद्वर्णनमष्टमद्वत्रस्य टीकातो बोध्यम् तत् किम्पर्यन्तम् ? इत्याह 'जाव' यावत् 'एत्थ णं' इत्यादि-'एत्थ णं' अत्र-प्रासादस्थसिंहासनोपि खलु 'जमगाणं' यमकयोः-यमकनाम्नोः

अर्थात् उत्तम महल 'पण्णत्ता' कहे हैं। प्रासाद का नाम कहते हैं-'तेणं' इत्यादि

'तेणं पासायवडें सगा' वे प्रासादावंतसक 'वाविट जोयणाई अद्वजोयणं च' अर्द्ध योजन युक्त बासठ योजन 'उद्धं उच्चक्तेणं' उपरकी और ऊँचाई वाले हैं 'एकत्तीसं जोयणाई' इकतीस योजन 'कोसं च' और एक कोस उनका 'आयाम विक्लंभेणं' आयाम विक्कंम्भ वाले अर्थात् इन प्रासादों का विस्तार 'पण्णक्ता' कहा है 'पासायवण्णओ' प्रासाद का वर्णन 'भाणियव्वो' यहां पर कहलेने चाहिए। वह वर्णन राजप्रशीय सूत्रके ६८ अडसठवें सूत्रमें मेरे द्वारा की गई सुवोधिनी नाम की टीका से जान लेवें।

'सीहासणा सपरिवारा' यहां परिवार सहित सिंहासनों का वर्णन करछेवें बह बर्णन आठवें सूत्रकी टीकासे ज्ञात करछें। यह वर्णन कहां तक ग्रहण करना इसके लिए कहते हैं 'जाव' यावतू 'एत्थ णं' प्रासादमें रहे हुवे सिंहासनके उपरमें 'जमगाणं' यमक नामके 'देवाणं' देवके अर्थात् यमक पर्वत के अधिपति

હવે મહેલનું માપ કહેવામાં આવે છે. 'તેળં' ઇત્યાદિ

^{&#}x27;तेणं पासायवहेंसगा' ते उत्तम महेल 'बाविट्टं जोअणाइं अद्भजोयणं च' सारि आसरे येलन 'उद्धं उच्चत्तेणं' उपरनी तरह डंथा छे. 'इक्कतीसं जोयणाइं' એક्ट्रीस येलन 'कोसंच' अने એક गाउना 'आयामविक्खंमेणं' आयाम विष्ठं सवाणा अर्थात् એटले। એ प्रासादेनि। विस्तार 'पण्णत्ता' ठहेवामां आवेल छे 'पासायवण्णओ' प्रासादेलुं संपूर्ण वर्ष्न 'भाणियव्यो' अहीं ठही लेवुं कोई એ. ते दर्शन राजप्रश्लीय सूत्रना ६८ अडसरमां सूत्रनी में ठरेल सुले। धिनी टीकामांथी समक्ष क्षेतुं.

^{&#}x27;सीहासणा सरिपवारा' અહીં યાં પરિતાર સહિત સિંહાસનાનું વર્ણન કરી લેવું જોઇએ. તે વર્ણન આઠમા સ્ત્રની ટીકામાંથી સમજ લેવું. એ વર્ણન અહિયાં કયાં સુધીનું લેવું તેને માટે 'जाव' યાવત, 'વૃત્થળં' પ્રાસાદાની અ'દર રહેલા સિંહાસનાની ઉપર 'जमगाणं देवाणं'

'देवाणं' देवयोः यमकाख्यपर्वताधिपत्योः सुरयोः 'सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं' पोडशानाम् आत्मरक्षकदेवसाहस्रीणां-पोडशसहस्रसंख्यकात्मरक्षकदेवानाम् 'सोळसभदासणसाहस्तीओ' पोडश भद्रासनसाहरूपः-पोडशसहभद्रासनानि, 'पण्णत्ताओ' प्रश्चप्ताः, अथानयोर्नामार्थं प्रश्लोत्तराभ्यां वर्णयितुमाह-'से केणहेणं भंते !' इत्यादि-'से केणहेणं भंते ! एवं
युच्चइ' अथ-तदनन्तरं हे भदन्त ! केन अर्थेन-कारणेन प्रवस्यते यत् 'जमगा प्रव्या'
यमको पर्वतौरे ! भगवानुत्तरयित-'गोयमा !' हे गौतम ! 'जमगपव्यपसु णं तत्थ२' यमक
पर्वतयोः खल्ज तत्र तत्र-तिस्मस्तिस्मन् 'देसे तिहर' देशे तत्र २ तस्य देशस्यावान्तरे तिस्म
स्तिस्मन् प्रदेशे 'खुइडाखुइडियासु वावीसु जाव' खुदाशुद्रिकासु वापीसु यावत-यावत्यदेनपुष्किरणीषु, दीर्घिकासु, गुञ्जालिकासु, सरःपङ्क्तिकासु, सरःसरःपङ्क्तिकासु' इत्येषां
पदानां संग्रहो बोध्यः, तथा 'विल्ञपंतियासु' विल्पङ्किकासु, एपांपदानां व्याख्या राजप्रश्लीयस्वान्तर्गतचतुष्विद्यसस्त्रस्य मत्कृतसुबोधिनी टीकातो बोध्या, 'बहवे' बहुनि-पुष्कलानि
देवके 'सोलसण्हं आयरक्लदेवसाहस्सीणं' सोलह हजार आत्मरक्षक देवोके
'सोलस भदासणसाहस्सीओ' सोल हजार भद्रासन 'पण्णत्ताओ' कहे गए हैं

अब उनके नामकी अन्वर्धता प्रश्नोत्तर द्वारा दिखलाते हैं-'से केणहेणं अंते! एवं वुच्चहं' हें भगवन किस कारणसे ऐसा कहा जाता है कि 'यमगपव्चया! ये यमक तामके पर्वत है ? इस प्रइन के उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं 'गोयमा!' हे गौतम! 'जमगपव्चएस णं तत्थ र' यमक पर्वत के उस उस 'देसे तिहें र' देश एवं प्रदेशमें 'खुडु।खुडियास वावीस जाव' क्षुद्राक्षद्र वाव में यावत्र एष्करिणीमें, दीर्घिकामें गुआलिकामें, सरपंक्तियोंमें, सरः सरपंक्तियोंमें 'बिलपंतियास' बिलपंक्तिमें (इन पर्वो की स्थाख्या राजप्रइनीय सुत्रान्तर्गत ६४ चोसठवें सूत्र की मेरे द्वारा की गई सुबोधिनी नाम की टीका से जानलेवें) 'बहवे' अनेक-एष्कल 'उष्पलाइं जाव' उत्पल यावत् कुसुद, नलिन, सुभगसौगन्धिक पुंडरीक,-महा

यभक्ष नामना हेवना अर्थात् यभक पर्वतना स्वाभी हेवना 'सोलसण्हं आयरक्खदेवसाह-स्सीणं' सेाण ६ जार आत्मरक्षक हेवेनना 'सोलस भद्दासणसाहसीओ' सेाण ६ जार सद्रासने। 'पण्णत्ताओ' केंद्रेवामां आवेका छे.

હવે प्रश्लोत्तर द्वारा तेना नामनी सार्ध कता जतावे छे. 'से केंजहेंजं भंते! एवं बुक्चइ' छे भगवन शा कारण्यी क्षेम कडेवामां आवे छे. के-'यमगपन्त्रया' आ यभक नामना पर्वत छे? आ प्रश्लना उत्तरमां प्रभुश्ली कछे छे.—'गोयमा!' छे गौतम! 'जमगपन्त्रपष्टु जं तत्य तत्य' यभक नामक पर्वतना ते ते 'देसे तिहं तिहं' हेश अने प्रहेशमां 'खुद्दुाखुद्दी-यासु बावीसु जाव' नानी नानी वावेशमां यावत् पुष्करिष्ट्रीमां, हीर्घि कार्यामां, शुं लिलकिश्लोमां, सरपंत्रित्यामां, सरपंत्रित्यामां, सरपंत्रित्यामां, सरपंत्रित्यामां, सरपंत्रित्यामां, सरपंत्रित्यामां, सरपंत्रित्यामां आवेश राजप्रश्लीय सूत्रना ६४ यासक्ष्मां सूत्रनी में करेश सुक्षाधिनी दीक्षमां आपवामां आवेश छे ते। श्रुशासुक्षे त्यांथी समक्ष सेवं. 'बहुवे' अनेक 'उत्प्रज्ञाहं

'उप्पलाइ' जाव' उत्पलानि यावत्—यावत्पदेन 'कुमुद्-निलन—सुभग—सौगन्धिक—पुण्डरीक—महापुण्डरीक—शतपत्रसहस्रपत्र—शतसहस्रपत्राणि पुल्लानि केसरोपचितानि पद्मानि यमक-प्रभाणि यमकवर्णानि' एपां पदानां संग्रहो बोध्यः, एषां व्याख्या प्राग्वत् । तथा 'जमग-वण्णाभाइ' यमकवर्णभानि—यमकपर्वतवर्णसहश्वणोनि, यद्वा-'जमगा य इत्थ दुवे देवा महिड्डिया' यमकौ—यमकनामानौ चात्र द्वौ देवौ महर्द्धिकौ परिवसतः, तेन यमको पर्वतौ २ एवमुच्यते, 'तेणं तत्थ' यमकाभिधदेवौ खल्ज तत्र—यमकपर्वतयोक्षपरि 'चउण्हं सामाणिय-साइस्सीणं' चतस्यणां सामानिकसाहस्रीणां-चनुःसहस्रसामानिकानां देवानाम् 'जाव' यावत्—यावत्पदेन—'चतस्यणामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिस्रणां परिषदां सप्तानामनीकानां सप्ता-नामनीकाधिपतीनां पोडशानामारमरक्षदेवसाहस्रीणां यमकयोः पर्वतयोधमकाया राजधान्या अन्येषां च बहूनां यमका राजधानीवास्तव्यानां देवानां च देवीनां चाधिपत्यं पौरपत्यं स्वा-मित्वं भर्तृत्वं महत्तरकत्वमान्नेश्वरसेनापत्यं कारयन्तौ पालयन्तौ महता अहतनाटचगीतवादित्रतन्त्रीतलतालत्रुटितघनमृदङ्गपटुप्रवादित्रवेण दिच्यान भोगभोगान' इत्येषां पदानां संग्रहो

पुंडरीक, शतपत्र, सहस्रपत्र, शतसहस्रपत्र विकसित केसरयुक्त पर्म यमक के प्रभावाले 'जमगबण्णाभाई' यमक के वर्णवाले अर्थात् यमकपर्वत के वर्ण-सरीखे वर्णवाले होते हैं अतः अथवा 'जमगा हत्थ दुवे देवा महिंद्विया' यमक नामधारी यहां पर महर्द्धिक दो देव निवास करते हैं, इस कारणसे यमक पर्वत ऐसा यह कहा गया हैं।

'तेणं तत्थ' यमक नामधारी देव उस यमक पर्वत के ऊपर 'चउण्हं सामा-णियसाहस्सीणं' चार हजार सामानिक देवोंका 'जाव' यावत परिवार सहित चार हजार अग्रमहिषियों का, तीन परिषदाओं का, सात सेनाका सात सेनाधि-पतियों का, सोलह हजार आत्मरक्षक देवों का, यमक पर्वत का यमका नामकी राजधानी का एवं अन्य बहुतसे राजधानी में निवास कमनेवाले देव देवियों का आधिपत्य, पौरपत्य, स्वामित्व, भर्तृत्व महत्तरकत्व, आज्ञेश्वर सेनापत्य करवाता उनका पालन करता हुआ जोर जोर से ताडित नाटय, गीत, वादिन्त्र

जाव' ઉत्पक्ष यावत् हुमुह, निलन, सुभग, सीगिन्धिक, पुंउरीक, मह्यापुंउरीक, शतपत्र सहस्र पत्र शतसहस्र (क्षाण) पत्र भिवित क्रेंसरवाणा पद्मी यमक्री प्रभावाणा यमक वर्षां वाणा व्याप्त यमक पर्वतना वर्षां लेवा वर्षां वाणा हिय छे. तेथी अथवा 'जमगा इत्य दुवे देवा महिद्ग हिया' यमक नाम महिद्ध के हेवा अहिंया निवास करे छे. स्मे कारखुयी आ पर्वतनुं नाम यमक पर्वत से प्रमाखे कहिवामां आवे छे 'तेणं तत्य' से यमक नामवाणा हेव से यमक पर्वतनी अप 'चउण्हं सामाणिय साइस्सीणं' यार हुजर सामानिक हेवानुं 'जाव' यावत् परिवार सहित यार हुजर अश्वमहिषयोनुं, त्रख्य परिवहां भोनुं, सात सेनाधानुं, सात सेनाधानिनुं तथा ते शिवाय अन्य विद्या सेवा यमक

बोध्यः, एषां व्याख्याऽष्टमस्न्ताद्वोध्या, 'संजमाणा' सुञ्जानी-अनुसवन्तौ 'विहरंति' विहर् रतः-तिष्ठतः, 'से तेणहेणं गोयमा! एवं वुच्चहं' तौ-यमकपर्वतौ तेन-अनन्तरोवतेन अर्थन-कारणेन हे गौतम! एवसुच्यते-'जमगपव्वयार' यमकपर्वतौर, 'अदुत्तरं च णं' अदुत्तरम् अथ च खळु 'सासए णामधिष्यते' शाश्चतं नामधेयं 'जाव' यावत्-यावत्पदेन-'प्रज्ञप्तम्, यत् न कदाचिद्नाऽऽस्ताम् न कदाचित्र भवतो न कदाचिन्न भविष्यतः अभूतां च भवतश्च भविष्यतश्च श्रुवौ नियतौ शाश्वतौ अश्वतावन्ययौ अवस्थितौ नित्यौ तौ तेनर्थेन गौतम! एवसुच्यते-' इत्येषां पदानां संग्रहो बोध्यः, व्याख्या चैषां चतुर्थस्त्रानुसारेण-बोध्या, 'जमगपव्ययार' यमकपर्वतार इति ॥ ॥ २०।।

तंत्री तल ताल घृटित घतमुदंग के परुपुरुषों द्वारा प्रवादित शब्दों के श्रवण पूर्वक दिव्य भोगोपभोगको 'संज्ञमाणा' भोगता हुवा 'विहरंति' निवास करते हैं 'से तेणहेणं गोघमा! एवं बुच्चइ' इस कारणसे हे गौतम! ऐसा कहा गया है कि 'जमगपःवयाइं' इसका नाम यमक पर्वत है। 'अदुत्तरं च णं' और यह नाम 'सासए णामधिज्जे' शाश्वत है 'जाव' ये कदाचित इस नामवाले नहीं था ऐसा नहीं है। वर्तमानमें भी इस नामवाले नहीं है ऐसा नहीं है। भविष्यकाल मेंभी इस नामवाले नहीं होगा ऐसा नहीं है अर्थात पहले भी इस नामवाले वे वर्तमान में भी इसी नाम वाले हैं एवं भविष्य में भी यही नाम होगा कारण कि ये धुव, निथत एवं शाश्वत है। अक्षत, अव्यय, एवं एवस्थित है नित्य है इस कारण से हे गौतम! इसका नाम ऐसा कहा गया है। 'जमगपव्या' यावत्यद्याह्य पदोंका अर्थ चोथे सुत्रमें कहे अनुसार समज लेवें। सु. २०॥

अथानयो राजधान्यौ प्रश्नोत्तराभ्यां वर्णियतुमाह -

पुल्म्-कहि णं भंते ! जमगाणं देवाण जिमगाओ रायहाणीओ पण्णताओ १, गोयमा ! जंबुदीवे दीवे मंद्रस्स पव्ययस्स उत्तरेणं अव्णंमि जंबुदीवे दीवे वारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थ णं जमगाणं देवाणं जिमगाओ रायहाणीओ पण्णताओ बारस जोयणसहस्साइं आया-विक्खंभेणं सत्त तीसं जोयणसहस्साइं णव य अड्याले जोययसए किंचि विसेसाहिए परिक्लेवेणं, पत्तेयं२ पायारपरिक्लिता, ते णं पागारा सत्ततीसं जोयणाइं अद्धजोयणं च उद्धं उच्चतेणं, मूले-अद्धतेरसजोयणाइं विक्लंभेणं, मज्झे छसकोसाइं जोयणाइं विक्लंभेणं, उवरिं-तिविण स अद्धकोस इं जोयणाइं विक्लंभेणं, मृले-वित्थिण्णा, मज्झे संक्षिता, उपिंग तणुआ, वाहिं-वहा, अंतो-चउरंसा, सव्वरयणामया अच्छा,

तेणं पागारा णाणाविह्रंचवण्णमणीहिं कविसीसएहिं उवसोहिया, तं जहा—िकण्हेहिं जाव सुकिल्छेहिं, तेणं कविसीसगा अद्धकोसं आयामेणं देसूणं अद्धकोसं उद्धं उच्चत्तेणं पंच धणुसयाइं बाहल्छेणं सटवमणिमया अच्छा जिमगाणं रायहाणीणं एगमेगाए बाहाए पणवीसं पणवीसं दारस्यं पण्णत्तं, तेणं दारा बाविट्ठं जोयणाइं अद्धजोयणं च उद्धं उद्दिनंगं इक्कतीसं जोयणाइं कोसं च विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं, सेया वरकणगथूभियागा एवं रायण्पसेणइज्जविमाण वत्तव्वयाए दार वण्णओ जाव अट्टुमंगलगा इंति,

जिमगणं रायहाणीणं चउदिसिं पंच पंच जोयणसए अबाहाए चतारि वणसंडा पण्णत्ता, तं जहा-असोगवणे १ सित्तवण्णवणे २ चंपगवणे ३ चूयवणे ४, ते णं वणसंडा साइरेगाइं बारस जोयणसहस्साइं आयामेणं पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं पत्तेयं२ पागारपरिक्खिता किण्हा वणसंड-वण्णओ भूमीओ पासायवडेंसगा य भाणियव्वा, जिमगणं रायहाणीणं अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, वण्णगोत्ति, तेसिं णं बहु-

रमित्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए एत्थ णंदुवे उवयारियालयणा पण्णत्ता, बारस जोयणसयाई आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसहस्साई सत्त य पंचाणउए जोयणसए परिक्खेवेणं अद्धकोसं च बाहल्छेणं सब्व जंब्रुणयामया अच्छा, पत्तेयं२ पउमवरवेइया परिक्षित्ता, पत्तेयं२ वण-संडवण्णओ भाणियव्वो, तिसोवाणपडिरूवगा तोरणचउद्दिसि भूमिभागा य भाणियव्वति, तस्स णं बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं एगे पासायवडेंसए पण्णते बाविं जोयणाइं अद्धजोयणं च उद्धं उच्चतेणं इक्षतीसं जोय-णाइं कोसं च आयामविक्लंभेणं वण्णओ उछोया भूमिभागा सीहासणा सपरिवारा, एवं पासायपंतीओ (एत्थ पढमापंती ते णं पासायविंसगा) एकतीसं जोयणाइं कोसं च उद्धं उचतेणं साइरेगाइं अद्ध सोलस जोय-णाइं आयामविक्लंभेगं बिइयपासायपंती ते णं पासायवडेंसगा साइरेगाई अद्ध सोलस जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं साइरेगाइं अद्घट्टमाइं जोयणाइं आयामविवखंभेणं तइय पासायपंती ते णं पासायवेडसंगा साइरेगाइं अद्धरमाइं जोयणाइं उद्धं उच्चतेणं साइरेगाइं अद्धुदुजोयणाइं आयाम-विक्षंभेणं वण्णओ सिहासणा सपरिवारा तेसि णं मुलपासायवर्डि-सयाणं उत्तरपुरिथमे दिसीभाए एत्थ णं जमगाणं देवाणं सहाओ सुहम्माओ प्राचाओ, अद्धतेरसजोयणाइं आयामेणं छस्सकोसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं णव जोयणाइं उद्धं उच्चतेणं अणेगखंभसयसिण-विद्वाओ, सभावण्णओ, तासि णं सभाणं सुहुम्माणं तदिसिं तओ दारा परणता, ते णं दारा दो जोयणाई उद्धं उच्चत्तेणं जोयणं विक्लंभेणं त्तावइयं चेव पवेसेणं, सेया वण्णओ जाव वणमाला,

तेसि णं दाराणं पुरओ पत्तेयं २ तओ मुहमंडवा पण्णता, ते णं मुहमंडवा अद्धतेरसजोयणाइं आयामेणं छस्सकोसाइं जोयणाइं विक्खं-भेणं साइरेगाइं दो जोयणाइं उद्धं उच्चतेणं जाव दारा भूमिभागायंति पैच्छाघरमंडवाणं तं चेव पमाणं भूमिभागो मणिपेडियाओत्ति, ताओ णं मिणपेढियाओ जोयणं आयामिवक्खंभेणं अद्धजोयणं बाह्ह्लेणं सब्व मिणमईया सीहासणा भाणियव्वा ।

तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ मणिपेढियाओ पण्णताओ, ताओ णं भणिपेढियाओ दो जोयणाइं आयामविवक्षंभेणं जोयणं बाहल्लेणं सन्वमणिमईओ, तासि णं उप्पि पत्तेयं २ तओ थूभा, ते णं थूभा जोय-णाइं उद्धं उच्चतेणं दो जोयणाइं आयामविवक्षंभेणं सेया संखतल जाव अट्टुइमंगलगा।

तेसि णं थूभाणं चउिहसिं चतारि मिणिपेढियाओ पण्णताओ, ताओ णं मिणिपेढियाओ जोयणं आयामिविक्खंभेणं अद्ध जोयणं बाह-ब्लेणं, जिणपिडिमाओ वत्तव्वाओ, चेइयरुक्खाणं मिणिपेढियाओ दो जोय-णाइं आयामिविक्खंभेणं जोयणं बाहब्लेणं चेइयरुक्खवण्णओति ।

तेसि णं चेइयस्वलाणं पुरओ ताओ मणिपेढियाओ पण्णताओ, ताओ णं मणिपेढियाओ जोयणं आयामविक्लंभेणं अद्धजोयणं बाह-ल्लेणं तासि णं उप्पि पत्तेयं २ महिंद्ज्झया पण्णत्ता, ते णं अद्धटुमाइं जोयणाई उद्धं उच्चतेणं अद्धकोसं उद्वेहेणं अद्धकोसं बाहल्लेणं वइरा-मयवट्टवण्णओ वेइया वणसंडतिसोवाणतोरणा य भाणियद्वा ।

तासि णं सभाणं सुहम्माणं छच्च मणोगुलिया साहस्सीओ पण्णताओ, तं जहा—पुरित्थमेणं दो साहस्सीओ पण्णताओ पच्चित्थमेणं दो साह-स्सीओ दिक्खणेणं एगा साहस्सी उत्तरेणं एगा जाव दामा चिट्ठंतित्ति, एवं गोमाणसियाओ. णवरं धूवघडियाओत्ति,

तासि णं सुहम्माणं सभाणं अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्यत्ते, मणिपेढिया दो जोयणाइं आयामविवखंभेणं जोयणं बाहल्लेणं तासि णं मणिपेढियाणं उप्पं माणवए चेइयखंभे महिंदज्झयप्पमाणे उविरं छक्कोसे अोगाहिता हेट्टा छक्कोसे विजत्ता जिणसकहाओ पण्य-ताओत्ति, माणवगस्स पुठवेणं सीहासणा सपरिवारा पच्चित्थमेणं सय-

णिज्जवण्णओ, सयणिज्जाणं उत्तरपुरिथमे दिसीभाए खुडुगमिहंदज्झया मिणिपेढिया विहूणा मिहंदज्झयप्पमाणा, तेसि अवरेणं चोप्फाला पहरणकोसा, तत्थ णं बहवे फिलहरयणपामुक्खा जाव चिट्टंति, सुहम्माणं उिंप अट्टर्नुमंगलगा, तासि णं उत्तरपुरिथमेणं सिद्धाययणा एस चेव जिण्घराण वि गमोत्ति, णवरं इमं णाणत्तं एएसि णं बहुमज्जदेसभाए पत्तेयं २ मिणिपेढियाओ दो जोयणाइं आयामविक्लंभेणं जोयणं बाह्रक्लेणं, तासि उिंप पत्तेयं २ देवच्छंदगा पण्णता, दो जोयणाइं आयामविक्लंभेणं साइरेगाइं दो जोयणाइं उद्धं उच्चतेणं सव्वरयणामया जिण्पिडिमा वण्णओ जाव धूवकडुच्छुगा, एवं अवसेसाण वि सभाणं जाव उववायसभाए सयणिङ्जं हरओ य, अभिसेगसभाए बहुआंमिसेक्कं भंडे, अलंकारियसभाए बहुआंलकारियभंडे चिट्टइ, ववसायसभासु पुत्थ-यरयणा, णंदा पुक्लिरणीओ, बलिपेढा दो जोयणाइं आयामविक्लंभेणं जोयणं बाह्रलेणं जाव ति ।

उववाओं संकप्पो अभिसेय विहूसणा य ववसाओ। अच्चणियसुधम्मगमो जहा य परिवरणा इन्ही ॥१॥ जावइयंमि पमाणंमि हुंति जमगाओ णीलवंताओ। तावइयमंतरं खल्ल जमगदहाणं दहाणं च ॥२॥ ॥सू० २१॥

छाया-वय खल भदन्त यमकयोर्देवयोर्यमिके राजधान्यौ प्रज्ञप्ते ? गौतम ! जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य उत्तरेण अन्यस्मिन् जम्बूद्वीपे द्वीपे द्वादश योजनसहस्राणि अवगास अत्र खल यमकयोर्देवयोर्यमिके राजधान्यौ प्रज्ञप्ते, द्वादश योजनसहस्राणि आयामविष्कममेण सप्तित्रंशतं योजनसहस्राणि नव च अष्टचत्वारिशानि योजनशतानि किंचिद्विशेषाधिकानि परिक्षेपेण, प्रत्येकं २ प्राकारपरिक्षिप्ते, तौ खल प्राकारो सप्तित्रंशतं योजनानि अर्द्धयोजनं च अर्ध्वपुरचत्वेन, मुले-अर्द्धश्र्योदशानि योजनानि विष्कमभेण, मध्ये-पद सकोशानि योजनानि विष्कमभेण, उपरि त्रीणि सार्द्धकोशानि योजनानि विष्कमभेण, मुले-विस्तीर्णाः, मध्ये-संक्षिप्ताः, उपरि-तनुकाः, विदर्बत्तोशानि योजनानि विष्कमभेण, अर्च्छो, तौ खल प्राकारौ नानाविध पश्चर्यणमणिभिः किपशीर्पकैरपशोभितों, तद्यथा कृष्णेर्यावत् श्रवलैः तानि खल किपशीर्पकाणि अर्द्धकोशमायामेन देशोनमर्द्धकोशमूर्धमुद्धस्वत्वेन पश्चर्यनुःशतानि वादः

स्येन, सर्वमणिमयानि अच्छानि, यमिकयो राजधान्योः एकेकस्यां वाहायां पञ्चविंशं पञ्च-विंशं द्वारशतं प्रज्ञप्तम्, तानि खल्ल द्वाराणि द्वाषष्टिं योजनानि अद्धयोजनं च उर्ध्वमुच्चत्वेन एकत्रिशतं योजनानि क्रोशं च विष्कम्भेण तावदेव प्रवेशेन, श्वेतानि वरकनकस्तूपिकाकानि, एवं राजप्रश्रीयविमानवक्तव्यतायां द्वारवर्णको यावत् अष्टाण्टमङ्गलकानि इति,

यमिक्यो राजधान्योश्रतुर्दिशि पश्चपश्चयोजनानि अवाधायां चत्वारि वनखण्डानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-अशोकवनम् १ सप्तपणवनम् २ चम्पकवनम् ३ चृतवनम् ४, तानि खल्छ वन-खण्डानि सातिरेकाणि द्वादश योजनसदस्राणि आयामेन पश्चयोजनशतानि विष्कभ्भेण प्रत्येकं २ प्राकारपरिक्षिप्तानि कृष्णानि बनपण्डवर्णकः भूमयः प्रासादावतंसकाश्च भणितव्याः,

यमिकयो राजधान्योरन्तर्वहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः, वर्णक इति, तेषां खलु वहुसमरमणीयानां भूमिभागानां बहुमध्यदेशभागः, अत्र खलु दे उपकारिकालयने प्रज्ञप्ते, द्वादश योजनशतानि आयामविष्कम्भेण त्रीणि योजनसहस्राणि सप्त च पश्चनवतानि योजनशतानि परिक्षेपेण, अर्द्वकोशं च बाहल्येन सर्वज्ञाम्बूनदमयाः अच्छाः, प्रत्येकं २ पद्मवरः वेदिका परिक्षिप्ताः, प्रत्येकं २ वनषण्डवर्णको भणितन्यः, त्रिसोपानप्रतिरूपकाणि तोरण-चतुर्दिशि भूमिभागाश्च भणितन्या इति,

तस्य खलु बहुमध्यदेशभागः, अत्र खलु एकः प्रासादावतंसकः प्रज्ञप्तः,-द्वापिट योजनानि अर्द्धयोजनं च ऊर्ध्वयुच्चत्वेन एकत्रिंशतं योजनानि क्रोशं च आयामविष्कम्भेण वर्णकः
उल्लोको भूमिभागो सिंहासने सपरिवारे, एवं प्रासादपङ्क्तयः (अत्र खलु प्रथमा पङ्किः
ते खलु प्रासादावतंसकाः) एकत्रिंशतं योजनानि क्रोशं च ऊर्ध्वयुच्चत्वेन सातिरेकाणि अर्द्धपोडश योजनानि आयामविष्कम्भेण द्वितीया प्रासादपङ्किः-ते खलु प्रासादावतंसकाः
सातिरेकाणि अर्द्धपोडशयोजनानि अर्ध्वयुच्चत्वेन सातिरेकाणि अर्द्धाष्टमानि योजनानि
आयामविष्कम्भेण, तृतीया प्रासादपङ्किः-ते खलु प्रासादावतंसकाः सातिरेकाणि अर्द्धाष्टमानि योजनानि अर्थ्वयुच्चत्वेन सातिरेकाणि अध्युष्टयोजनानि आयामविष्कम्भेण, वर्णकः
सिंहासनानि सपरिवाराणि, तयोः खलु मूलप्रासादावतंसकयोः उत्तरपौरस्त्ये दिग्मागः,
अत्र खलु यमकयोर्देवयोः सभे ग्रधर्मे प्रज्ञप्ते, अर्द्धश्र्योदश योजनानि आयामेन पट्सक्रोशानि
विष्कम्भेण नव योजनानि ऊर्ध्वयुच्चत्वेन अनेकस्तम्भशतशतसिन्निष्टे, सभावर्णकः, तयोः
खलु सभयोः सुपर्मयोः त्रिदिशि त्रीणि द्वाराणि प्रज्ञप्तानि तानि खलु द्वाराणि द्वे योजने
ऊर्ध्वयुच्चत्वेन, योजनं विष्कम्भेण, तावदेव प्रवेशेन, श्वेतानि वर्णकः यावद् वनमाला,

तेषां खळ द्वाराणां पुरतः प्रत्येकं र त्रयो मुखमण्डपाः प्रज्ञप्ताः, ते खळ मुखमण्डपाः, अर्द्धत्रयोदशयोजनानि आयामेन पर्सकोशानि योजनानि विष्कम्भेण सातिरेके द्वे योजने कथ्वमुच्चत्वेन यावद् द्वाराणि भूमिभागाश्चेति, पेक्षागृहमण्डपानां तदेव प्रमाणं भूमिभागो मणिपीठिका इति, ताः खळ मणिपीठिकाः योजनमायामविष्कम्भेण अर्द्धयोजनं बाहल्येन, सर्वमणिमय्यः, सिंहासनानि भणितव्यानि,

तेषां खल प्रेक्षागृहमण्डपानां पुरतो मणिपीठिकाः प्रज्ञप्ताः, ताः खल मणिपीठिकाः द्वे योजने आयामविष्कम्भेण, योजनं बाहल्येन, सर्वमणिमय्यः, तासां खल उपरि प्रत्येकं प्रत्येकं जयस्तूपाः, ते खल स्तूपा द्वे योजने कथ्वेष्ठच्चत्वेन, द्वे योजने आयाभविष्कम्भेण, श्वेताः शङ्कतल यावत् अष्टाष्टमङ्गलकानि,

तेषां खल्ज स्तूपानां चतुर्दिशि चतस्रो मणिपीठिकाः प्रज्ञप्ताः, ताः खल्ज मणिपीठिकाः योजनमायामविष्कम्भेण, अर्द्धयोजनं बाहल्येन, जिनप्रतिमाः वक्तव्याः, चैत्यवृक्षाणां मणि-पीठिकाः द्वे योजने आयामविष्कम्भेण, योजनं बाहल्येन चैत्यवृक्षवर्णक इति ।

तेषां खलु चैत्यवृक्षाणां पुरतस्ताः मणिषीठिकाः प्रज्ञप्ताः, ताः खलु मणिषीठिकाः योजनमायामविष्कमभेण अर्द्धयोजनं बाह्रल्येन, तासामुपि प्रत्येकं २ महेन्द्रध्वजाः प्रज्ञप्ताः, ते खलु अर्द्धाः योजनानि अर्धमुच्चत्वेन, अर्द्धक्रोशं बाह्रल्येन, वज्रमयवृत्तवर्णकः वेदिकावनपण्डित्रसोपानतोरणाश्च भणितन्याः,

तयोः खळ सभयोः सुधर्मयोः पट् च मनोगुलिकासाहस्त्र्यः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-पौरस्त्येन द्वे साहस्त्र्यौ प्रज्ञप्ते, पाश्चात्येन द्वे साहस्त्र्यौ दक्षिणेन एका साहस्री उत्तरेण एका यावत् दामानि तिष्ठन्तीति, एवं गोमानसिकाः, नवरं धृषषठिका इति,

तयोः खलु सुधर्मयोः सभयोः अन्तः बहुसगरमणियो भूमिभागः प्रज्ञप्तः, मणिपीठिका हे योजने आयामिविष्कम्भेण, योजनं बाहुल्येन, तयोः खलु मणिपीठिकयोरुपरि माणविके चैत्यस्तम्भे महेन्द्रध्वजप्रमाणे उपिर घट्कोशान अवगाह्य अधः घट्कोशान वर्जयित्वा जिनसम्थीनि प्रज्ञप्तानि इति, माणवकस्य पूर्वेण सिंहासने सपितारे, पश्चिमेन शयनीयवर्णकः, शयनीययोरुत्तरपौरस्त्ये दिग्मागे श्रुद्रकमहेन्द्रध्वजी मणिपीठिकाविहीनौ महेन्द्रध्वजप्रमाणी, तयोरपरेण चोप्पाली प्रहरणकोशो, तत्र खलु बहुनि परिधरत्नप्रसुखाणि यावत् तिष्ठिन्ति, सुधर्मथोरुपरि अध्दाष्टमङ्गलकानि, तयोः खलु उत्तरपौरस्त्येन सिद्धायतने, एष प्रव जिनगृहाणामिष गम इति, नवरमिदं नानात्वम्—एतेषां खलु वहु मध्यदेशभागः प्रत्येकं स् मणिपीठिका हे योजने आयामिविष्कम्भेण योजनं बाह्रस्येन, तासाम्रुपरि प्रत्येकं स् देवन्त्यन्दके प्रज्ञपतिमा वर्णको यावत् भूषकहुन्छका, स्वमवशेषाणामिष सभाना यावद् उपपातसभायां शयनीयं हद्दक्त्र अभिषेकसभायां बहु अलङ्कारिकमाण्डं तिष्ठिति, व्यवसायसभयोः पुस्तकरत्ने नन्दापुष्करिण्यौ, बल्पिठे हे योजने आयामविष्कम्भण्डं तिष्ठित, व्यवसायसभयोः पुस्तकरत्ने नन्दापुष्करिण्यौ, बल्पिठे हे योजने आयामविष्कम्भणे योजनं बाह्रस्येन यावदिति—

'उपपातः सङ्कल्पः अभिषेकविभूषणा च व्यवसायः । अर्चनिका सुधर्मागमो यथा च परिवारणा ऋद्धिः ॥१॥ यावति प्रमाणे भवतो यमकौ नीलवतः । तावदन्तरं खळु यमकहूदाणां हूदाणां च ॥२॥स्र० २१॥ टीका-'किह णं भंते ! यमगाणां देवाणं' इत्यादि 'किह णं भंते ! यमगाणं देवाणं जिमगाओं गयहाणिओ पण्णत्ताओं' वव खळ भदन्त ! यमकयो: —यमक नामकयोः देवयोः यमिके नाग राजधान्यौ प्रज्ञप्ते !, भगवानाह—'गोयमा !' हे गोतम ! 'जंब्दीवे दीवे मंदरस्य' जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य-मन्दरनामकस्य 'पञ्चयस्स उत्तरेणं' पर्वतस्स उत्तरेण - उत्तरस्यां दिशि 'अण्णंमि' अन्यस्मिन् —अपरस्मिन् 'जंब्दीवे दीवे बारस जोयणसहस्साइं' जम्बूद्वीपे द्वीपे द्वादश योजनसदस्याणि—द्वादशसहस्रयोजनानि 'ओगाहित्ता' अवगाह्य-प्रविध्य 'पत्थ णं' अत्र - अत्रान्तरे खळ 'जमगाणं देवाणं जिमगाओ रायहाणिओ पण्णताओ' यमक्योदेवयोधिमिके राजधान्यौ प्रज्ञप्ते, तयोगीनाद्याह—'बारस जोयण सहस्साइं' द्वादश योजनसहस्राणि—द्वादशसहस्रयोजनानि 'आयामविक्खंभेणं 'सत्ततीसं जोयणसहस्साइं' सप्ततिंशतं

अब यमका राजधानी का प्रद्रनोत्तर द्वारा वर्णन करते हैं-'कहिणं भंते! जमगाणं देवाणं' इत्यादि

टीकार्थ-'कहिणं भंते! जमगाणं देवाणं जिमगाओ रायहाणिओ पण्णक्ताओ' हे भदन्त! यमक नामधारी देवकी यिमका नामकी राजधानी कहां पर कहीं गई है ? गौतमस्वामी के इस प्रकृत के उत्तरमें भगवान कहते हैं-'गोयमा!' हे गौतम! 'जंबूदीवे दीवे' जंबूदीप नाम के बीपमें 'मंद्रस्स पव्वयस्स उत्तरेणं' मंद्र पर्वत की उत्तर दिशामें 'अण्णंभि' दूसरे 'जंबूदीवे दीवे बारस जोयण सहस्साइं' जंबूदीप नामके बीपमें बारह हजार योजन 'ओगाहिक्ता' अवगाहना करने पर-जानेपर 'एत्थ णं' यहां पर 'जमगाणं देवाणं जिमगाओ रायहाणीओ पण्ण- ताओ' यमक देवकी यामिका नाम बाली दो राजधानी कही गई है।

अब उनका प्रमाण-विस्तार कहते हैं-

'बारस जोयणसहस्साइं ' बारह हजार योजन 'आयाम विक्खंभेणं' इनका

હવે તેનું પ્રમાણ વિસ્તાર કહે છે.

'बारस जोयणसहस्साई' आर ७००२ थे। जन-'आयामविक्संभेणं' तेने। आयाभ विष्कं अ

હવે યમકા રાજધાનીનું પ્રશ્નોત્તર દ્વારા વર્ણાન કરવામાં આવે છે. 'कहिणं मंते ! जमगाणं देवाणं' હિલાદિ

टीअर्थ-'कहिणं भंते! जमगाणं देवाणं जिमगाओ रायहाणीओ पण्णत्ताओ' हे लगवन् यमक नामना हेवनी यिमका नामनी राजधानी क्यां आवेल छे? गौतमस्वामीना आप्रश्नना उत्तरमां प्रलुश्री के छे. 'गोयमा! हे गौतम! 'जंबुहीवे दीवे.' क' णूढ़ीप नामना द्वीपमां 'मंदरस्स पव्ययस्स उत्तरेणं' मंदर पर्वतनी उत्तर दिशामा 'अण्णंमि' णीका 'जंबूहीवे दीवे बारस जोयण सहस्साइं' क' णूढ़ीप नामना द्वीपमां आर हुकार येकिन 'ओगाहित्ता' अवशह्ना करवाथी अर्थात् कवाथी 'एएथणं' त्यां आगण 'जमगाणं देवाणं जिमगाओ रायहाणीओ पण्णत्ताओं' यमक देवनी यिमका नामनी के राकधानीये। कहिवामां आवेल छे.

योजनसहस्राणि 'णय य' नय संख्यानि च 'अख्या छे' अष्टवत्वारिंशानि—अष्टवत्वारिंशद्धिकानि 'जोयणसण्' योजनशतानि 'किंचिविसेसाहिए' किश्चिद्धिश्चेष्ठानि 'पित्तिखेवेणं' पिरिक्षेपेण पिरिधना प्रज्ञप्ते इति पूर्वेण सम्बन्धः, एवमग्रेऽपि, 'पत्तेयंर' प्रत्येकंर हे अपि 'पापारपित्तिखत्ता' प्राकारपरिक्षिप्ते—वरणपरिवेष्टिते, तौ प्राकारौ की हशौ ? इत्यवेक्षायामाह—'ते णं' इत्यादि—'ते णं' तौ—यमकाराजधानी द्वयपरिवेष्टनभूतौ खल्छ 'पागारा' प्राकारौ—वरणौ 'सत्तर्तासं' रप्तित्र्यतं -सप्तित्र्यत्संख्यकानि 'जोयणाइं' धोजनानि 'अख्नोपणं च' अर्द्धयोजनं योजनस्पाद्धं—द्वौ कोशौ च 'उद्धं उच्चत्तेणं' कध्येष्ठच्यादेन 'मूले' मूले-मूलदेशावच्छेदेन 'अद्ध्वतेरस' अर्द्धत्रयोद्शानि—सार्द्धद्वाद्ध 'जोयणाइं दिवस्त्रंभेणं' योजनानि विष्क्रम्भेण—विस्तारेण, 'मज्ञ्चे' मध्ये—मध्यदेशावच्छेदेन 'छ सक्तीसाइं' पट्-पट्-रांख्यानि सक्रोशानि—क्रोशेन सहितानि 'जोयणाइं विवस्त्रंभेणं' योजनानि विष्क्रम्भेण—विस्तारेण, 'उवरिं' उपरितनभागावच्छेदेन 'तिष्णि' त्रीणि—त्रिसंख्यःनि 'सञ्चक्रो-आयणाम विष्कंभ है । 'सन्ततिसं जोयणसहस्साइं, से तीस हजार 'णवयक्षड-आयाम विष्कंभ है । 'सन्ततिसं जोयणसहस्साइं, से तीस हजार 'णवयक्षड-

आयाम विष्कंभ है। 'सत्ततीसं जोयणसहस्साइं, सेंतीस हजार 'जवयअड-याले' नवसहित अडतालीस 'जोयणसए किंचिविसेसाहिए' अर्थात् ३७९४८ सेंतीस हजार नव सो अडतालीस योजनसे कुछ अधिक 'परिक्खेलेंगं' इसका परिक्षेर-घेराव है 'पनेयं प्रत्येक-दोनों 'पायार परिक्खिता' प्राकार से वेष्टित है।

अब वह श्राकारका वर्णन करते हैं 'तेणं' इत्यादि 'तेणं' यमिका नामकी दोनों राजधानी के वेष्टनभूत 'पागारा' प्राकार-महल 'सत्ततीसं जोयणाई' सेंतीस योजन 'अद्वजोयणं च' एवं अधयोजन-दो कोका 'उद्धं उच्चत्तेणं' उपर की ओर उंचा है 'मूले अद्वतेरस जोयणाई विक्खंभेणं' मूलभागमें १२॥ साडे बारह योजनका इनका विष्कंभ है। अर्थात् इतना इसका मूलभागमें विस्तार है 'मज्झे छ सकोसाई जोयणाई विक्खंभेणं' मध्यभागमें इसका विष्कंभ छह योजन एवं एक कोस का है। 'उपरिं तिष्णि सअद्वकोसाई जोयणाई विक्खंभेणं'

संभाध पहेलाध छे. 'सत्ततीसं जोयणसहस्साइं' साउत्रीस हलार 'णवय अडयाले' नवसे। अउतासीस 'जोयणसए किंचि विसेसाहिए' येलिनथी डंध्ड वधारे अर्थात् ३७८४८ साउत्रीस हलार नवसे। अउतासीस येलिनथी डंध्ड वधारे 'परिक्खेवेणं' तेने। परिक्षेप धेरावे। छे. 'पत्तेयं पत्तेवं दरेड अर्थात् अन्ने राजधानी 'पायारपरिक्खिता' प्राधार—महें सथी पींटायेस छे.

હવે તે પ્રાકાર મહેલાનું વર્ણન કરવામાં આવે છે.

'तेणं' यिमिका नामनी थें शिक्ष्यांनीने वींटायें विषयारा' महेंदी। 'सत्ततीसं जोय-णाइं' साउत्रीस येक्क्रन 'अद्ध जोयणं च' अने अर्ध येक्क्रन-भे आहे 'उद्धं उच्चतेणं' ઉपरनी तरह हैं या छें. 'मूळे अद्ध तेरस जोयणाइं विक्खंभेणं' भूद काशमां साठा आर येक्क्रनना तेने। विष्ठं क छे. अर्थात् એटदी। એना भूण काशना विस्तार छें. 'मज्झे छसक्कोसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं' मध्य काशमां तेने। विष्ठं क छ येक्क्रन अने ओड आहिना छें. 'उन्हों तिर्णण सअद्धको साइं' सार्द्धकोशानि-क्रोशार्द्धसहितानि 'जोयणाइं विवर्खभेणं' योजनानि विष्करभेण, तौ पुनरत एव 'मुले वित्थिण्णा' मुले विस्तीणौं-मध्योपरितनभागापेक्षया विस्तारवन्तौ, 'मज्झे' मध्ये-मूलापेक्षया 'संखित्ता' संक्षिप्तौ-अल्पविस्तारवन्ती, 'उप्पि तणुया' उपरि तनु भी-मूलमध्यभागापेक्षया स्वल्पतरविस्तारयुक्ती, 'बाहिं वट्टा' बहि:-वृत्ती-वर्त् लाकारी, अंतो' अन्तः-मध्ये-'चउरंसा' चतुरस्ना-चतुष्कोणाकारौ, 'सव्वरयणामया' सर्वरत्नमयौ-सर्वात्मना रत्नमयौ, 'अच्छा' अच्छौ प्राग्वत्, तयोः किपशीर्षकवर्णकमाह-'तेणं' इत्यादि, 'ते णं' तौ-अनन्तरोक्तौ खळ 'पागारा' प्राकारी णाणाविह पंचवण्णमणीहिं' नानाविधपश्च-वर्णमणिभिः-नानाविधाः- पद्मरागमरकतस्फटिकाञ्चनदादि भेदाः पञ्चवर्णाः-कृष्णादि-वर्णविशिष्टाः मणयो येषु तानि नानाविधयञ्चवर्णमणीनि तैः 'कविसीसएहिं' कपिशीर्षकैः-कपिशीर्षाकारैः प्राकाराग्रैः, 'उवसोहिया' उपशोभितौ-अलङ्कृतौ, एतदेव विवृणोति 'तं जपरके भागमें इसका विष्कंभ तीन योजन एवं डेड कोसका है। इस प्रकारका विष्कंभ होने से वे यमक पर्वत ' मूळे वित्थिण्णा' मूल की ओर विस्तृत अर्थात् मध्यभाग एवं उपरके भागसे विस्तार वाला है 'मज्झे संखिता' मध्यभाग मूल भागसे संकुचित है अर्थान् अल्पविस्तार वाला है 'उप्पि तणुया' ऊपरका भाग मूलभाग एवं मध्यभागसे स्वरूप विस्तार वाला है। ये प्रासाद रैंबाहिं बहो' बाहर की बाजु वर्तुल आकार वाले हैं 'अंतो चडरंसा' मध्यभागमें चौरस आकार वाले हैं 'सब्बरयणामया' सर्वप्रकारसे रत्नमय है 'अच्छौ' स्वच्छ स्फटिक सददा है इत्यादि विशेषण पहले के समान समज लेवें।

अब इनके कपिशीर्ष-अग्रभागका वर्णन करते हैं-'तेणं' इत्यादि 'तेणॅ' आगे कहे गए 'पागारा' प्राकार 'णाणाविह पंचवण्णमणिहिं' अनेक प्रकारके पद्मरागादि पांच प्रकार के मणियों से 'कपिसीसएहिं' कपिशीर्ष के

साइं जोयणाइं विक्खंभेणं' ઉપરના ભાગમાં તેના વિષ્કંભ ત્રણ યાજન અને દાઢ ગાઉના છે.

આ પ્રકારના વિષ્કંભ હાવાથી ते यम पर्वत 'मूळे विश्विण्णा' मूल भागमा विस्तार वाणा अर्थात् मध्यक्षाण अने ઉपरना काणथी विस्तारवाणा छे. 'मज्झे संखिता' मध्य काण मूणकाणथी सांडिंग छे. એटसे है अरूप विस्तार वाणा छे. 'उर्णि तणुया' उपरने। काणी। मूलकाण अने मध्य काण हरतां थे। विस्तारवाणा छे. आ प्राहार 'बाहिं बहें' अर्दाश्यी वर्तुक्षाहार छे. 'अंतो चडरंसा' मध्य काणमां यारस आहारवाणा छे. 'सन्तर्यणा मया' सर्व प्रहारथी रत्नभय छे. 'अन्छे' स्वच्छ स्कृटिहना केवा छे. ध्याहि विशेषण्ये पहेंक्षां हहा। प्रमाण्येना सम्ला क्षेत्रां

હવે તેના કપિશીર્ય-અગ્રભાગનું વર્ણન કરવામાં આવે છે. 'તેળં' ઇત્યાદિ 'તેળં' પહેલા કહેવાઈ ગયેલા 'વાगारा' પ્રાકારા 'णाणाविह पंचवण्णमणिहिं' અનેક પ્રકા-રના પદ્મરાગાદિ પાંચ પ્રકારના 'मणिहि' મધ્યિયો 'क्रविसीसएहिं' કપિશીર્ય'ના આકારવાળા जहा-किण्हेहिं-नाव सुकिल्छेहिं' तद्यथा-कृष्णे यांवच्छुक्छै:-कृष्णादिवर्णवर्णनप्रकारः पष्टुः स्त्रानुसारेण बोध्यः। अथैतेषां किप्शिर्षकाणां मानाद्याह-'ते णं किवसीसगा' तानि खछ किपशिर्षकाणां 'अद्भक्तेसं आयामेणं' अद्भक्तेशम् आयामेन-दैघ्येण, 'देस्लं' देशोनं- किश्चिहेशेन हसितम् 'अद्भक्तेसं उद्धंउच्चतेणं' अर्द्धकोशम् उध्धम् उच्चत्वेन-उम्नतत्वेन प्रज्ञ-प्रानि एवमग्रेऽिष, 'पंच धणुसयाई' पश्च धनुः शतानि-पश्च शतधनंषि 'बाहल्छेणं' बाहल्येन पिण्डेन 'सव्वमणिमया' सर्वमणिमयानि सर्वात्मना मणिमयानि-पद्मरागादि मणि निर्मितानि, 'अच्छा' अच्छानि-आकाशस्फिटकविन्निस्ञानि, अथ यिकशराजधान्याः कियन्ति द्वाराणि सन्तीत्याह-'जिमगाणं' इत्यादि-'जिमगाणं' यिकशयो-यिमका नाम्स्योः 'राय-हाणीणं एगमेगाए' राजधान्योः एकैकस्यां-प्रत्येकं 'बाहाए' बाहायां-पार्श्वे 'पणवीसं पण-वीसं' पश्चितंशं २ पश्चित्रत्यिकं, 'दारसयं' द्वारशतं-द्वाराणां शतं-शतसंख्यानि द्वाराणि वीसं' पश्चितंशं २ पश्चित्रत्यिकं, 'दारसयं' द्वारशतं-द्वाराणां शतं-शतसंख्यानि द्वाराणि

आकार वाले प्राकार के अग्रभागसे 'उवसोहिया' शोभित किस प्रकारकी शोभा से युक्त थे? सो कहते हैंं-'तं जहा किण्हेहिं जाव सुक्किल्लेहिं' कृष्णवर्णवाले यावत् शुक्लवर्णवाले कृष्णादिवर्ण का वर्णन प्रकार छडे सूत्र से समझ लेवें।

अब किपशीर्ष का मानादिका वर्णन करते हैं-

'तेणं किपसीसगा' वह किपशोर्षक-प्रासादाग्र भाग 'अद्धकोसं आयामेणं' अधी कोसका आयाम वाला देखणं अद्धकोसं उद्धं उच्चत्तेणं' कुछ कम आधा कोस अपर की ओर से ऊंचा कहा है 'पंचधणुसयाई बाहल्लेणं' पांचसो धनुष बाहल्य मोटाइवाला कहा है 'सन्वमणिमया' सर्वप्रकार मणिमय कहा है 'अच्छा' आकाश एवं स्फटिक सहश निर्मल कहा है।

अब यमिका राजधानी के द्वार संख्या कहते हैं-

'जिमिगाणं रायहाणीणे' यमिका नामकी राजधानीके 'एगमेगाए वाहाए' प्रत्येक पार्श्वमें 'पणवीसं पणवीसं' पचीस पचीस अधिक 'दारसयं' सोद्रार

प्राष्ठारना अश्रक्षागर्थी 'उबसोहिया' शाक्षायमान् છે. કેવી શાભાષી સુશાભિત હતા ? એ કહેવામાં એવે છે. 'તં जहा किण्हेहिं जाव सुक्किल्लेहिं કાળા વર્ણવાળા યાવત્ સફેદ વર્ણવાળા, કૃષ્ણાદિ વર્ણનું વર્ણન છદ્દા સ્ત્રથી સમજ લેવું.

હવે કપિશૌર્ષના માનાદિતું વર્ષુન કરવામાં આવે છે.—'तेणं कविसीसगा' ते કપિ-શીર્ષં ક પ્રાસાદાગ્રભાગ 'अद्धकोसं आयामेणं' અર્ધા ગાઉના આયામવાળા છે. 'देसूणं अद्धकोसं उद्धं उच्चत्तेणं' અર્ધા ગાઉ ઉપરની બાજી ઉંચા છે. 'वंचधणुसयाई बाहल्लेणं' પાંચસા ધનુષ જેટલી બાહલ્ય-જાડાઇ વાળા કહેલ છે. 'अच्छा' આકાશ અને સ્ફટિક જેવા નિર્મળ કહેલ છે.

હવે યમિકા રાજધાનીના દ્વારાની સંખ્યા કહે છે.-

'जिमिगाणं रायहाणीणं' यिभिक्ष राजधानीना 'एगामेगाए बाहाए' ६२६ ५८आभां 'पण वीसं पणवीसं' पयीस पभीस अधिक 'दारसयं' એવા से। द्वारो ठढा छे. अर्थात् ६२६ आसु सवासे। सवासे। ६२वाकांको पण्णतं' ठेडेवामां आवेस छे. पश्चिविंशत्यिषकानि, 'पण्णत्तं' प्रज्ञप्तम्, इति द्वारशतिमत्यनेन सम्बध्यते, प्रज्ञप्तानीति द्वाराणी-त्यनेन उपिष्टादानीय सम्बन्धनीयम्, तेषां द्वाराणां मानाद्याह-'तेणं' तानि-अनन्तरोक्तानि खर्छ 'दारा' द्वाराणि 'बाविहें' द्वाष्टि-द्वाष्टि संख्यानि 'जोयणाइं अद्धयोजणं च' योजनानि अर्द्धयोजनं-योजनस्यार्द्ध-द्वो क्रोशी च 'उद्धं उच्चकेणं' उध्वमुच्चत्वेन 'इकतीसं जोयणाइं' एकत्रिंशतं योजनानि 'कोसं च क्रोशम्-एकं क्रोशंच 'विक्खंभेणं' विष्कम्भेण-विस्तारेण प्रज्ञप्तानि, एवमग्रेऽपि 'तावइयं चेव' तावदेव-क्रोशाधिकैक-विश्वद्योजनपमाणमेव 'पवेसेणं' प्रवेशेन-भूमिगतत्वेन 'सेया' श्वेतानि-श्वस्ववर्णानि, 'वरकणगश्वभियागा' वरकनकस्तूषिकाकानि-उत्तमसुवर्णमयस्वधृशिखरिविधिष्टानि, 'एवं' एवम्-एतत्प्रकारकः, 'रायप्य-सेणइज्जविमाणवत्तव्ययापं' राजप्रश्लीयस्त्रस्थ-विमानवक्तव्यतायां-राजप्रश्लीयस्त्रे यद्विमानं-स्वर्णमनामकं तस्य वक्तव्यतायां-वर्णने यो 'दारवण्णश्रो' द्वारवर्णकः-द्वारवर्णनपरः पदसम्हः स इहापि ग्राह्यः, स च किम्पर्यन्तः ? इत्याह-'जाव अष्टद्व मंगस्त्राइंति' यावद्ष्टाष्टमङ्गस्रक्तिन-अष्टाष्टमङ्गस्रकानीति पदपर्यन्तो द्वारवर्णको ग्राह्यः, स च वर्णको विजयद्वारवर्णन-कानि-अष्टाष्टमङ्गस्रकानीति पदपर्यन्तो द्वारवर्णको ग्राह्यः, स च वर्णको विजयद्वारवर्णन

कहे हैं अर्थान् प्रत्येक बाज एकसो पचीस एकसो पचीस द्वार 'पण्णाचं' कहा है

अब हारों के मानादिका वर्णन करते हैं—'तेणं' पहले कहे गए 'दारा' हार 'बाविंट जोयणाई अद्धजोयणं च' अर्द्ध योजन सहित बासठ योजन अर्थात्र साढे वासठ योजन 'उद्धं उच्चत्तेणं' उपरकी तरफ उंचाइवाले 'इकतीसं जोयणाई को संच विक्कंभेणं' इकतीस योजन और एक कोस के विष्कंभवाले कहे हैं 'तावइयं चेव' इतनाही इकतीस योजन और एक कोस 'पवेसेणं' भूमिगत कहे हैं 'सेया' वित 'बरकणगथूमियागा' श्रेष्ठ सुवर्णभय छोटे छोटे शिखरों से युक्त 'एवं' इस प्रकार से 'रायणसेणइज्जविमाण बक्तव्वयाए' राजप्रशीयसूत्र में सूर्याभनामका विमान के वर्णन में 'दारवण्णओ' हारों के वर्णन परक पद कहे हैं वि यहां भी समज लेवें। वह वर्णन कहां तक कहना इसके लिए कहते हैं 'जाव अइडलंगलगा इति' आठ आठ मंगलवाले यह पदप्र्वन्त हारका वर्णन यहां पर

हवे द्वाराना मानाहिनुं वर्णुन करवामां आवे छे.—'तेणं' ते पहेलां कहिवामां आवेल 'दारा' दारा 'बाविंदुं जोयणाई अद्धजोयणं च' अद्धा शिलन सिहत आसं थालन अर्थात साठा आसं थालन 'उद्धं उच्चत्तेणं' ઉपर तरह उंचाधिवाणा 'इक्कतीसं जोयणाई कोसं च विक्खंमेणं' ओक्ष्यीस थालन अने ओक गाउ केटला विष्कं भवाणा कहिल छे. 'ताबइयं खेव' ओटला ल ओटले हैं के केष्ठ्रीस थालन अने ओक्ष है।स 'ववेसेणं' भूभिनी आंदर केहिल छे. 'सेया' सहद 'वरकणगधूमियागा' उत्तम सुवर्णुभय नाना नाना शिभराधी सुक्त 'एवं' ओ रीतना 'रायण्यसेणइज्जिमाणवत्तव्ययाएं' रालप्रश्रीय सूत्रमां सूर्याभ नामना विभानना वर्णुनमां 'दार वण्णओ' दाराना वर्णुन करनारा पहें ले कहा छे, ते अधा अद्धीयां पण्च समळ देवां. ते वर्णुन क्यां सुधीनं अद्धियां कहें वुं ते माटे केहे छे. 'जाव अद्दुह मंगलाई' आठ आठ मांगलवाणा ओ पहना कथन पर्यन्त दारानुं वर्णुन

प्रसङ्गेऽ्डमध्त्रदीकायां प्राग्रकस्तत एव प्रात्वः, प्रन्थविस्तारभयादत्र नोपन्यस्यते ।

अथ यमिकाराधान्यो वहिर्भागे परितो वनपण्डवक्तव्यमाह-'जमियाणं रायहाणीणं' इत्यादि—'जिमियाणं रायहाणीणं चउिद्दितं' यमिकयो राजधान्यो श्रतुर्दिकि—पूर्वादि दिक्च चतुष्टिये, 'पंच पंच जोयणसए अवाहाए चत्तारि वणसंडा पण्णत्ता' पश्च पश्च योजनञ्ञतानि अवाधायाम्—व्यवधानेन्यस्य चत्वारि वनपण्डानि प्रज्ञप्तानि, एतदेव दर्शयति—'तं जहा—असोगवणे' द्यथा—अशोकवनम्—एतत्पूर्वस्थाम् १ 'सत्तिवण्णवणे' सप्तपणंवनम्—एतदक्षिणस्थाम् २, 'चंपगवणे' चम्पकवनम्—एतत्पूर्वस्थाम् १, 'चूयवणे' चृतवनम्—आम्रवनम्, एतदुत्त-रस्याम् १, अथैतेषां मानमाह—'ते णं वणसंडा' इत्यादि—'ते णं वणसंडा' तानि—अनन्तरोक्तानि वनपण्डानि—वनसमूहा, 'साइरेगाइं' सातिरेकाणि—किश्चदिषकानि 'वारसजोयण-सहस्साइं' द्वादश्योजनसहस्राणि—द्वादश्यहस्रसंख्यानि योजनानि 'आयामेणं' आयामेन प्रहणकर समझ छेवें। यह वर्णन विजयद्वारके वर्णन प्रसंगमें आठवें सूत्रकी टीकामें पहछे कहे हैं अतः वहां से समझ छेवें। प्रन्थविस्तार भयसे वे यहां दुवारा नहीं कहते हैं।

यिका राजधानी के बाहर के भागमें चारों तरफ वनषण्ड का वर्णन करते हैं-'जिमयाणं रायहाणीणं' इत्यादि

'जिमयाणं राघहाणीणं चउिहसिं' यभिका राजधानीके चारों ओर 'पंच पंच जोयणसए अवाहाए चलारि वणसंडा पण्णला' पांचसो पांचसो योजनके व्यव-धानमें चार बनषण्ड कहे गये हैं। 'तं जहा' वे बनषण्ड इस प्रकारके थे। 'असोग-वणे' अशोकवन, इसके पूर्वनें १ 'सत्तवण्ण वणे' सप्तपर्ण वन यह दक्षिणमें २ 'चंपगवणे' चम्पकवन, यह पश्चिममें ३ 'चूयवणे' आज्ञवन, यह उत्तर दिशा में

अब वनषण्डका मान कहते हैं-'तेर्ग वणसंडा' वह वनषण्ड 'साइरेगाई' कुछ अधिक 'वारक्ष जोयणसहस्साई आयाभेणं' बारह हजार घोजन कि लम्बाई

અહીં યા લહુણ કરીને સમજ હેવું. તે વર્લ્યુન વિજયદ્વારના વર્લ્યુનના પ્રસંગમાં આઠમાં સૂત્રની ટીકામાં કહેલ છે. તેથી તે ત્યાંની સમજ લેવું

યમિકા રોજધાનીના બહારના ભાગમાં અરે તરફ આવેલ વનષંડનું વર્ણુન કરવામાં આવે છે. 'जिमिगाणं रायहाणीणं' ઈત્યાદિ

'जिन्मिणं रायहाणीणं चडिहिसं' यिभिक्ष राजधानीनी यारे हिशामां 'पंच पंचजोयणः सए अझाहाए धत्तारि दणसंखा पण्णता' पंचसे। पांचसे। ये।जनना व्यवधान वाणा यार वनपंउ के कि। के. 'तं जहा' ते वनधंउ आ अभाखे के १ 'असोगवणे' स्रोक्षित तेनी पूर्वभां 'सत्तवण्णवणे' सप्तपर्ध वन आ दक्षिण दिशामां के २ 'चंपगवणे' यापक्षन, स्रोध्या के एश्चिममं के. 3 'चूयवणे' आस्रवन से उत्तर दिशामां के.

હવે वनषंउतुं भान-प्रभाषा इंडिवामां आवे छे. 'तेणं वणसंडा' ओ वनषंउ 'साइरे-गाइं' इंडि वधारे 'बारस जोयण सहस्साई आयामेणं' आर હजर येजिननी संआधवाजा 'पंच' पश्च-पश्चसंख्यानि 'जोयणसयाइं' योजनशतानि 'विवखंभेणं' विष्कम्भेण-विस्तारेण, 'पत्तेयं २' प्रत्येकं २ चत्वारोऽपि वनषण्डाः 'पागारपरिविखत्ता' प्राकारपरिक्षिप्ताः-वरणपरिवेष्टिनाः, 'किण्हा' कृष्णाः-कृष्णवर्णाः, एतत्पदोपलक्षतो जम्बूद्वीपपद्मवरवेदिका प्रकरणगतःसम्पूर्णो 'वणसंखवण्यभो' वनषण्डवर्णकः तथा 'भूमीओ पासायवर्डेसगाय भाणियव्या' भूमयः प्रासादावर्तसकाश्च भणितव्याः-वक्तव्याः, तत्र वनषण्डभूमिभागयोर्वर्णकः पश्चमप्यत्यस्यायाः, प्रासादावर्तसकवर्णकश्च राजप्रश्लीयस्त्रस्याष्टपिटतमस्त्रस्य मत्कृत सुवोधिनी टीकातोऽत्रत्याष्टमस्त्र टीकातश्च वोध्यः, तथैव बहुसमरमणीयो भूमिभागः उल्लोकः सपरिवाराणि सिंहासनानि च वक्तव्यानि, तत्र खल्च चत्वारो देवा महर्ष्दिका यावत् पर्वोपमस्थितिकाः परिवसन्ति, तद्यथा-अशोकः १ सप्तपर्णः २ चम्पकः ३ चृतः ४, तत्राशोकनामादेवोऽशोकवनप्रासादे परिवसन्ति, एवं शेषेषु त्रिष्वपि वनसद्दशनामानस्रयो देवाः परिवसन्ति।

बाले हैं। 'पंच जोयणसघाइं विक्लंभेणं' पांचसो घोजनका इसका विष्कंभ चोडाई-है। 'पत्तेयं' प्रत्येक वनषण्ड 'पागार परिक्लिक्ता' प्राकारसे परिवेष्टित हैं। 'किण्हा' कृष्णाः कृष्णवर्णसे युक्त थे कृष्णादि पदोपलक्षित पदसमूह जंबूद्वीप पद्मवर वेदिका प्रकरणमें कहे अनुसार 'वनसंडवण्णओ' सपूर्ण वनषण्डका वर्णन कह लेना चाहिए। तथा—'भूमिओ पासायवडेंसगा य भाणियव्वाः' भूमि एवं प्रासादावतंसक कहना चाहिए' उसमें वनषण्ड और भूमिभागका वर्णन पांचवे एवं छहे सुत्रसे कहना चाहिए। तथा प्रासादावतंसकका वर्णन राजप्रशीय सूत्रके ६ वें सूत्रकी मेरे द्वारा की गई सुबोधिनी टीका से जम्बूद्वीप प्रज्ञप्तिके आठवें सूत्रकी टीकासे समझ लेवें। वह इस प्रकार है-उसका भूमिभाग बहुसम एवं रमणीय है, उल्लोक-अगासी वाले हैं उसमें सपरिवार सिंहासन कहे गए हैं। उसमें चार देव जो कि महर्द्धिक यावत् पल्योपमकी स्थितवाले है चार देवके नाम इस प्रकार हैं-अशोकर, सक्षपर्णर, चम्पकर, एवं च्तुर, उसमें अशोक

इद्धेला छे. 'पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं' पांचसी योकनना तेमना विष्ठं ल-पहाणाई इद्धेल छे. 'पत्तेयं पत्तेयं' हरेड वनषंड 'पागारपरिक्छिता' प्राधारथी वींटणायेल छे. 'किण्हा' कृष्णु—कृष्णु वर्णुवाणा छे. डण्णुहि पहथी छाधहराता पहसमृह क'णूदीपनी पद्मवरवेहिडाना प्रकरणुमां इह्या प्रभोणे 'वनसंडवण्णजो' संपूर्णु वनषंडनु वर्णुन इही होतु लेडि को. तेमक 'भूमिओ पासायवडेंसगाय माणियव्वा' भूमिअने प्राप्त हाव तसड इहि लेवा लेडि को. तेमां वनषंड अने भूमिलागनुं वर्णुन पांचमा अने छहा सूत्रमांथी इही लेबे लेडि को. तेमां वनषंड अने भूमिलागनुं वर्णुन पांचमा अने छहा सूत्रमांथी इही लेबे लेडि को. तथा प्राप्ताहावत सहनुं वर्णुन राकप्रश्लीय सूत्रना ६८ मा सूत्रनी मारा द्वारा इरवामां आवेल सुमिली टीकामांथी समल लेवुं. ते वर्णुन आ प्रमाणे छे—तेना भूमिलाग अहसम अने रमणीय छे. उन्हों स्थला छे. तेमां सपरिवार सिंहासन इहेवामां आवेला छे. यार हेव है के को महद्धिक यावत् पद्योपमनी स्थितवाला छे. तेमां यार हेवेला नाम आ प्रमाणे हहेला छे. अशेल १ सण्तपर्णु २ सम्पष्ठ ३ अने यूत ४

अथ यमिकयोरन्तर्भागवर्णकमाठ-'जिमयाणं' इत्यणिद, 'जिमिगाणं रायद्दाणीणं' यमिकयो राजधान्योः प्रत्येकम् 'अंतो' अन्तः—मध्यभागे 'बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णते'
बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञसः, तस्य 'वण्णगोत्ति' वर्णकः प्राग्वद्बोध्यः यथा प्राक्क् थालिङ्गपुष्करमिति वा यावत् पश्चवर्णैमीणिभिरूपशोभितः वनपण्डिविहीनो यावद् बह्वो देवाश्च देव्यश्चाऽऽसते यावद् विहरन्तीति पर्यन्तोऽभिहितः सोऽत्रापि प्राह्यः, विशेषिज्ञास्तिः पश्चमपण्ठसत्रे विशेकनीये। 'तेसि णं बहुसमरमणिज्ञाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए' तेषां च बहुसमरमणीयानां भूमिभागानां बहुमध्यदेशभागः, 'एत्य णं' अत्र—अत्रान्तरे खळु 'द्वे उवयारियालयणा' द्वे उपकारिकालयने—उपकरोति—उपष्टभ्नाति प्रासादावतंसकानीत्यु-पकारिका—राजधानीपितसत्कप्रासादावतंसकादीनां पीठिका, अन्यत्रत्वयमुपकार्योपकारिकेति प्रसिद्धा, उवतं च—'गृहस्थानं समृतं राज्ञामुपकार्योपकारिका' इति सा लयनमिव—गृहिमवेत्यु-नामधारी देव अञ्जोक वन के प्रासाद में निवास करते हैं, इसी प्रकार बाकी के तीनों देव वन सरीखे नाम वाले तत् तत् प्रासादों में निवास करते हैं।

अब यमिका राजधानीके अन्दरके भागका वर्णन करते हैं -'जिमगाणं' इ० 'जिमिगाणं रायहाणीणं' प्रत्येक यमिका राजधानीके 'अंतो' मध्यभागमें 'बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते' अत्यन्त सम एवं रमणीय भूमिभाग कहा गया है। उसका वर्णन 'वण्णगोत्ति' जैसे पहले आलिंग पुष्करके समान यावत् पांच वर्ण वाले मणियोंसे शोभायमान थे एवं अनेक देव एवं देवियां शयन करते हैं यावत विचरते हैं यह कथन पर्यन्त प्रथम कहे अनुसार समझ लेवें विशेष जिज्ञास पांचवें एवं लहा सूत्रमें देख लेवें।

'तेसिणं बहुसमरमणिज्ञाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए' यह बहुसमरम-णीय भूमिभागके ठीक मध्यभागमें 'एत्थणं' यहां पर 'दुवे उपयारियालयणा' दो उपकारिकालयन अर्थात् प्रासादावतंसक पीठिका जो उपकारिकाके नामसे प्रसिद्ध

તે અશે!ક નામવાળા દેવ અશોકવનના પ્રાસાદમાં નિવાસ કરે છે. એજ પ્રમાણે આકીના ત્રણે દેવા વનના નામ સરખા નામવાળા એ-એ પ્રાસાદામાં નિવાસ કરે છે.

હવે यभिक्ष राजधानीना आंदरना कागतुं वर्जन करवामां आवे छे. 'जमिगाणं' धे. 'जमिगाणं' धे. 'जमिगाणं रायहाणीणं' दरेक यभिक्षा राजधानीना 'अंतो' मध्य कागमां 'बहुसमरम- णिक्जे मूमिमागे पण्णत्ते' अत्यंत सम अने रमाणीय क्षेवे। लूमिकाग क्रिक्ष छे. 'वण्ण गोत्ति' वर्जन क्रेम पहेंद्रां आदिंग पुष्करनी सराणा यावत् पांच वर्जुवाणा माणुयोधी शेषियमान हतो. तेमक अनेक हेवे। अने देवियो शयन करे छे. यावत् विचरे छे. आ क्ष्यन पर्यन्त पहेंद्रां कथनातुसार समा हेद्रुं.

'तेसिंणं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए' ते अडु सभरभाषीय अभि काजना अराअर भध्य काजमां 'एत्थणं' अडिंथां 'दुवे उत्रयारियाळवणा' के ઉप-क्षरिकायन अर्थात् प्रासादावतं सक्ष पीडिका के अपकारिकाना नामथी प्रसिद्ध छे. क्रह्युं पकारिकालयनं, तच्च द्वयोराजयान्योरेकैकमिति दे ते इति द्विस्वेन निर्देश इति उपकारिकालयने 'पण्णत्ता' प्रज्ञमे, तयोमीनाद्याह—'बारस' इत्यादि—'बारस गोयणसयाई आलामित्र संभेणं' द्वादशयो ननशतानि आयामित्र कम्मेण—दैष्ट्वे दिम्ताराभ्याम्, सूले समाहारद्व हः, 'तिण्णि जोयणसहस्साई' त्रीणि—त्रिसंख्यानि योजनसङ्खाणि 'सत्त य' सम्मन्स संख्यकाति 'पंचाण्यए' पश्चनवतानि—पश्चनवत्यधिकानि 'जोयणसए' योजनशदानि 'परिक्खेवेणं' परिक्षेपेण परिधिना प्रज्ञप्ते इति पूर्वेण सम्बन्धः, एक्ष्मग्रेऽति 'अद्धकोलं च' अद्धकोशं क्रोशस्याद्धं 'बाह्र लेणं' वाह्र लेपेन —पिण्डेन, 'सन्व जंबूण सम्बन्धः' सर्व त्रम्बूनद्व परे —सर्वात्यना जाम्बूनद्व स्थे क्ष्मचूनद्व स्थानि । जाव्य क्ष्मच्यां सर्व त्रम्बूनद्व परे —सर्वात्यना जाम्बूनद्व स्थे परिक्षिणते । तथा 'अच्छा' अच्छो—आकाशकारिक दिक्षिणे, 'प्लेयं र' प्रत्येकं रे दे अपि 'प्रमवर वे इयापरिकिश्च त्या' प्रद्मवर वे दिका परिक्षिण्ते—पद्भवत्ये दिकाभ्यां परिक्षिण्ते—पर्व विदेश स्थां परिक्षिण्ते—पर्व विदेश स्थां परिक्षिण्ते—पर्व विदेश स्थां परिक्षिण्ते—पर्व विदेश स्थां परिक्षिण्ते—परिवेष्टिते, 'पत्ते यं र' प्रत्ये कं र —हयोः 'वणसं इवण्याओ' वनपण्ड वर्शकः वनपण्ड योः

है। कहा भी है-'ग्रहस्थानं स्मृतं राज्ञा मुनकार्योपकारिका' राजाओंका ग्रहस्थान उपकारिका एवं अपकारिका से युक्त कहा है। वह ग्रह के जैसे उपकारिकालयन दोनों राजधानी में एक एकके कमसे दो 'पण्णत्ते' कहे हैं

अब उपकारिकालयनका मानादि कहते हैं–'बारस' इत्यादि 🔔

'वारस जोगणसयाइं आयामविक्खंभेणं' बारह योजन के लम्बे चौडे हैं 'तििण जोयण सहस्साइं' तीन हजार योजन 'सत्तय पंचाणउए जोयणसए' सातसो पंचाणु योजन 'परिक्खेवेणं' इसना परिक्षेप हैं 'अद्धकोसं च' आधाकोस की 'बाहल्छेणं' मोटाई हैं 'सब्वजंबुणयामया' सर्वात्मना जंबूनदमय उत्तम सुवर्ण मय है। 'अच्छा' आकाश एवं स्फटिक सहशानिर्मल है। 'पत्तेयं २' प्रत्येक अर्थात् दोनों उपकारिकालयन 'पडमवरवेह्या परिक्खिता' पद्मवर वेदिका से परिवेष्टित हैं 'पत्तेयं २' दोनों 'वणसण्डवण्णओ' बनषण्ड वर्णन परक पदसमूह

પણું છે.—'गृहस्थानं समृतं राज्ञामुपकार्योपकरिका राજાએ। ના ગૃહસ્થાન ઉપકારિકા અને અપકા-રિકાથી યુક્ત કહેલ છે. એ ઉપકારિકાલયન બેઉ રાજધાનીયોમાં ગૃહના રૂપમાં એક એકના કમશી બે 'पण्णत्ता' કહેલ છે.

હવે ઉપકારિકાલયનના માનાદિ પ્રમાણ અતાવે છે. 'बारस' ઇત્યાદિ

'बारस जोयणसयाइं आयामविक्षंभेणं' आरसी थे। जन केटबा बांका पहेला छे. 'तिनिन जोयणसहस्साइं' त्रध् ढुलर थे। जन 'सत्तय पंचाणडर जोयणसए' सातसी पंचाधुं थे। जन 'परिक्षेवेगं' तेने। परिक्षेप हहेब छे. 'अद्धकीसं च' अर्धा गांड केटबी 'बाहल्हेणं' तेनी काडाई छे. 'सटब जंबूणया मया' सर्व रीते कं जूनद नामना उत्तम सुवर्ध भय छे. 'अच्छा' आहाश अने स्कृटिक सरणा निर्माल छे. 'पत्तेयं २' दरेक केटबे है केड उपकारिका बयन 'पडमवरवेइगा परिक्खिता' पदावर वेदिकाशी वींटणायेल छे. 'पत्तेयं' केडना 'व्यासंद व्याओ' वनष्दता वर्धन संभित्री पहें। 'भाणिअव्यो' कही क्षेत्रा कोईके. के

वर्णकः नवर्णनपरः पदसम्हो 'माणियव्वो' भणितव्यः नवकव्यः, स च पश्चमस्त्रोक्त जम्मूद्वीपजगतीवनपण्डिविवरणतो बोध्यः, उपकारिकालयनमध्ये चतुर्दिश्चि 'तिसोवाणपिडिरूवगा'
विसोपानप्रतिरूपकाणि सुन्दरारोहावरोहित्रमार्गा 'तोरण चउहिसिं' तोरणचतुर्दिशीत्यत्र
तोरणेति — स्वप्निक्तिकं पदम् तेन तोरणानीति पृथक् बोध्यम्, ततश्चतुर्दिशि पूर्वादि दिक्
चतुष्ट्ये तोरणानि – बहिर्द्वाराणि चत्वारि, तथा 'भूमिभागा य' भूमिभागा उपकारिकालयनमध्ये
'माणियव्वित्ति' भणितव्याः, इति, तत्स्त्रमाणि जीवाभिगमोपाङ्गगतानि क्रमेणेवम् – 'से णं
वणसंडे देस्लाइं दो जोयणाइं चक्रवालिविक्संभेणं उत्रयारियालयणसमए परिक्खेवेणं, तेसि
णं उवयारियालयाणं चउहिर्सि चत्तारि तिसोवाणपिडिरूवगा पण्णत्ता, वण्णभो, तेसि णं तिसोवाणपिडिरूवगाणं पुरभो पत्तेयं र तोरणा पण्णत्ता, वण्णभो, तेसि णं उवयारियालयाणं उप्पि यहुसमरमणिव ते भूतिभागे पण्णते जाव सगीहिं उवसोभिए इति, एतच्छाया व्याख्या च सुगमा।

'भाणियव्यो' कहना चाहिए। वह पद समूह पांच्यें सूत्र में जंबूद्वीप जगती एवं यनषंडके वर्णन प्रसंगसे ज्ञात करछेवें। उपकारिकालयन के मध्य में चारों तरफ 'तिसोवाणपडिरूवगा' खंदर आरोह अवरोह युक्त त्रिमार्ग कहे हैं 'तोरण चउ- दिसिं' चारों द्वारके चारों दिशामें तोरण चार कहे हैं 'भूमिभागाय' उपरिकालयन के बीचों भूमिभाग 'भाणियव्यक्ति' कहना चाहिए तत्संबंधि सुत्रपाठ जीवा- भिगम उपांममें कहे हैं वह कमसे इस प्रकार है 'से णं वणसंडे देस्णाइं दो जोयणाइं चक्कवाल विक्यंत्रभेणं उवरियालयण समए परिक्खेवेणं' तेसिंणं उवरियालयणाणं चर्रदिसिंस चलारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णला, वण्णओ तेसिणं तिसोवाणपडिरूवगाणं पुरओ एलेयं २ तोरणा पण्णला। वण्णओ 'तेसिंणं उवयारियालयणाणं उपिंपं बहुसमरसणिक्जे भूमिआंगे पण्णला जाव मणीहिं उवसोभिए इति' अब यमक देवके सूल प्रासादका वर्णन करते हैं—'तस्स णं' उपरमें वर्णित

वर्णुन संगंधी पहें। पांचमां सूत्रमां जंजूदीपनी जगती अने वनषंउना वर्णुनना प्रसंग्रंथी सम्ल हैवां इपहारिहासयननी वयमां यारे अजुओ 'तिसोवाणपहिस्त्वमा' उत्तरवा यर-वाने अनुहूज लेवा सुंहर त्रष्णु मार्ग इद्धेसा छे. 'तोरण चडिह्सिं' यारे हरवाजानी यारे हिशामां तेरिष्णु इद्धेसा छे. 'मूमिमागाय' तेमल लूमिलाग 'माणियव्वो' इद्धि को वर्णुन संगंधी सूत्रपाठ लवाभिणम नामना उपाजमां इद्धेस छे. ते इमथी आ प्रमाखे छे —'से णं वणसंडे देसूणाई दो जोदणाई चक्कवालिक्लंभेणं उवरियालयणसमए परिक्लेबेणं तेसिंणं उवरियालयणाणं चडिहिंसं चत्तारि तिसोबाणपहिस्त्वगा पण्णत्ता वण्णको तेसिंणं तिसोबाणपिक्तवगाणं पुरक्षो वत्तेयं र तोरणा पण्णता वण्णको तेसिंणं उवरियालयणाणं उप्पं वहुसमरमणिजने मूमिमागे पण्णत्ते जाव मिलिहिं उवसोभिए इति' देवे यभड हेवना मूल प्रासाहनुं वर्णुन हरवामां आवे छे.—

'तस्स ળં' ઉપર વર્ણુંન કર**વામાં આવેલ ઉપકારિકાલયનના 'ब**हुमज्ञदेसमाए' ખરાે

ह्य उपकारिकालयनस्य खल्ल 'बहुमज्झदेसभाष' बहुमध्यदेशभागः, 'एत्थ णं' अत्र-अत्रा-न्तरे खळु 'एगे पासायवर्डेसए पण्णते' एकः प्रासादावतंसकः प्रज्ञसः, अस्य मानमाह-'बावद्वि' द्वापष्टिं-द्वापष्टि संख्यानि 'जोयणाई अद्धजोयणं च' योजनानि अर्द्धयोजनं च-योजनस्यार्द्ध च 'उद्धं उच्चत्तेणं' अर्ध्वमुच्चत्वेन, 'इकतीसं एकत्रिंशतम्-एकत्रिंशतसंख्यानि 'जीयणाई' योजनानि 'कोसं च' क्रोशं च 'आयामविक्खंभेणं' आयामविक्यम्भेण-दैर्धविस्ताराभ्याम् प्रज्ञप्तः, तस्य 'वण्णओ' वर्णकोऽष्टमसूत्रगतिक्जयप्रासादानुसारेण बोध्यः, 'उल्लोगा' उल्लोकौ-उपरितनभागौ, 'भूमिभागा' भूमिभागौ-अधोभागौ, 'सीहासणो सपरिवारा' सिंहासने सपरि-वारे-सामानिकादि सुरपरिवाराणां भद्रासनरूपपरिवारसहिते, एपामुङ्कोकादीनां द्वित्वेन प्रासादस्य चैकत्वेन विवक्षा सत्रकारप्रवृत्तिवैचित्र्यात्, अथं मूलप्रासादावतंसकस्य परिवार-प्रासादपङ्क्तित्रयं प्ररूपयति--'एवं पासायपंतीओ' इत्यादि--'एवं' एवं-मूलप्रासादावर्तसक-वत् 'पासायपंतीओ' प्रासादपङ्क्यः-परिवारप्रासादश्रेणयो ज्ञातव्याः, ताश्र जीवाभिगमाद् उपकारिकालयन का 'बहुमज्झदेसभाए' बहुमध्यदेशभाग है एत्थणं' वहां पर 'एगे पासायवडेंसए पण्णत्ते' एक प्राप्तादावतंसक महल विशेष कुहा है। उस पासादावतंसक का मानादि का वर्णन करते हैं 'वाविंड जोयणाई अद्धजोयणं च उद्धं उच्चक्तणं' साडि बासठ योजनकी उसकी उपरकी तरफकी ऊंचाइ कही है। 'इकतीसं जोयणाई कोसं च आयामविक्खंभेणं' एकतीस योजन और एक कोस का उसकी लम्बाइ चोडाई कही है, उसका 'वण्णओ' वर्णन आठवें सूत्रमें विजय प्रासाद के वर्णन समान समझ छेवें 'उह्होया' ऊपर का 'भूमिभागा' नीचे का भूमिभाग 'सीहासणा सपरिवारा' सपरिवार सिंहासन अर्थात् सामानिकादि देव परिवार के भद्रासन सहित कहना चाहिए।

अथ यमकदेवयोर्म् लत्रासादस्वरूपमाइ-'तस्स णं' इत्यादि-'तस्स णं' तस्य-अनन्तरोक्त-

अब मूलप्रासादावतंसक की परिवारभूत तीन प्रासाद पंक्तिका वर्णन करते अर भध्य कागमां 'एव्थणं' त्यां आगण 'एगे पासायवडेंसए पण्णते' ओड प्रासादावतंसड अर्थात भद्धेक डेडेवामां आवेक छे.

હવે એ મહેલના માપનું વર્ણન કરે છે.

'बावद्विं जोयणाइं अद्धजोयणं च उद्धं उच्चत्तंण' साठी आसठ ये। जननी तेनी ઉंथार्ध छे. 'इक्तिसं जोयणाइं कोसं च आयामिवक्तंभेणं र्रेश्त्रीस ये। जन अने र्रेष्ठ आउ नेटबी तेनी क्षंभाधं पहे। जांधं अहेल छे. तेनुं 'वण्णओ' वर्णुन आठमां सूत्रमां विलय द्वारना वर्णुन प्रमाणे सम्ल केतुं, 'उल्लोया' ઉपरने। काग 'मूमिमागा' नीयेना क्षिमकाग 'सीहा सणा सपरिवारा' परिवार सिंदित सिंद्धासने। अर्थात् सामानिक वर्णेरे हेवे। ना परिवारना क्ष्रासने। सिंदित वर्णुन करवुं लेधियो.

હવે મૂળ પ્રાસાદાવત સંકના પરિવાર રૂપ ત્રણ પ્રાસાદ પંક્તિનું વર્ણન કરવામાં આવે છે.

बोध्याः, ताश्र मुलप्रासादतश्रतसृषु दिश्च पद्मानामित्र परिवेष्टनरूपा बोध्याः, न पुनः सूचि-श्रेणिरूपाः, तत्र प्रथम-प्रासादपङ्क्ति पाठ एवम्-'सेणं पासायवडेंसए अण्णेहिं चडहिं तदद्धु-च्चत्तपमाणमित्ते हिं पासायवडेंसएहिं सव्वओ समता संपरिक्खिते' एतच्छाया-स खळ प्रासा-दावतंसकोऽन्येश्रतुर्भिस्तदद्धींच्चत्वप्रमाणमात्रैः प्रासादावतंसकैः सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्तः एतदृष्या या-सः - मूलप्रासादावतंसकः खळ अन्यैः - स्वातिरिवतैः चतुर्भिः तदद्धींच्चत्व-प्रमाणमात्रै:-अत्रोचचत्वशब्द उत्सेधपरः, प्रमाणशब्दश्च तिष्कम्भायामपरः, तेन तस्मात्-मूलप्रासादात् मूलप्रासादमपेक्ष्येत्यर्थः, अद्भम्-उच्चत्वम्-उत्सेघः, प्रमाणमात्रं-प्रमाणं-मानं तदेव प्रमाणमात्रम् विष्कमभायारूपप्रमाणमेत्र च येषां ताहशैः सकैः सर्वतः-सर्वदिश्च समन्तात्-सर्वविदिश्च संपरिक्षिप्तः-परिवेष्टितः, एषां संपरिक्षेप-प्रासादानामुच्चत्वादिकं तु स्वकारः साक्षादेवाह-'एकतीसं' इत्यादि - ते खळ प्रासादावतं-सकाः 'एकतीसं' एकत्रिंशतम्-एकत्रिंशतसंख्यानि 'जोयणाइं' योजनानि 'कोसं च' क्रोशम् एकं क्रोशं च 'उद्धं उच्चत्तेणं' अर्ध्वयुच्चत्वेन, 'साइरेगाइ' सातिरेकाणि-अर्द्धकोशाधिकानि 'अदसोलस जोयणाइ' अर्द्धेषोडशयोजनानि-सार्द्धेपश्चदशयोजनानि 'आयामविक्खंभेणं' आयामनिष्कस्भेग-दैष्ट्य-विस्तारभ्याम् १, 'बिइयपासायपंती' अथ द्वितीयप्रासाद-

हैं-'एवं' मूलप्रासादावतंसक के समान 'पासाय पंतीओ' परिवारभूत प्रासाद पंक्तियों का वर्णन समजलेवें। उसका वर्णन जीवाभिगम सूत्र से जानलेवें। वे पंक्तियां मूलपासादसे चारों दिशामें पद्मों के समान परिवेष्टन रूप समजलेवें सूचि के श्रेणि समान न समजें

वहां प्रथम प्रासाद्वंक्ति का वर्णनस्य पाठ इस प्रकारहै - 'से णं पासायवडेंसए चउहिं तद्द्धुच्चत्तपमाणमित्तेहिं पासायवडेंसएहिं सन्वओ समंता संपित-क्लिते' वह मूल प्रासादावतंसक दूसरे उससे अर्धा उंच्चत्वप्रमाण वाले चार प्रासादावतंसकों से सर्व दिशामें अर्थात् चारों ओर परिवेष्टित ऐसे कहे गए हैं।

वे परिवेष्टित प्रासादों के उच्चत्वादि स्वयं कहते हैं-वे प्रासादावतंसक 'एक-तीसं' इकतीस 'जोधणाई कोसं च उद्घं उच्चत्तंत्र' योजन एवं एक कोस उपर

^{&#}x27;एवं' મૂલ પ્રાસાદાવત સકની સમાન 'યાસાય પંતીઓ' પરિવાર ભૂત પ્રાસાદ પંક્રિત-યાનું વર્જુન સમજી લેવું. તે પ્રાસાદ પંક્રિતયા મૂલ પ્રાસાદની ચારે દિશામાં કમળાની જેમ વીંટળાયેલ સમજી લેવી સાઈની પંક્રિત પ્રમાણે ન સમજે.

त्यां पहें बी प्रासाहपं हितना वर्णुन इप पाठ आ प्रभाशे छे. 'से णं पासायवहेंसए अण्णेहिं चडहिं तदद्धुच्चत्तपमाणिमत्तेहिं पासायवहें सपिहें सब्वओ समंता संपिरिक्लिते' ते भूण प्रासाहावतं सक्ष भीका तेनाथी अधि उंशार्ध वाणा यार प्राप्ताहावतं सक्षेत्रथी यारेथ हिशामां अर्थात् यारे तरह वींटणायेस कहा छे. ते वींटणायेस प्राप्ताहानी उंशार्ध विशेष्ट संजंधी कथन स्वयं स्त्रकार केंद्रे छे. ते प्रासाहावतं सक्षेत्र 'एक्स्तीसं' अक्ष्रतीस 'जोयणाइं

पङ्किः, तत्स्चकपाठश्रेवम् — 'तेणं पासा वर्डेशमा अण्णेहिं चउि तद्व्युच्वकप्पमाणमित्तेहिं पासायवर्डेसएहिं सव्वभो समंता संपरिविख्वा' एतच्छाया—पाठमात्रगम्या,
ट्याख्यातु—रे—प्रथमपङ्किगताश्रत्वारः खल्ल प्रासादावर्तसकः वत्ये ह्य अन्यैः—स्वभिन्नैः
चतुभिः तद्धे च्चत्वप्रमाणमात्रैः—मूलप्रासादात्सेपविष्कम्मायायपम्पन्नैः—पूलप्रसादापेक्षया
चतुभीगप्रमाणैः प्रासादैः संपरिक्षिप्ताः, इति, अत एव चतुर्दिश्च चत्वारश्रत्वार इति
संकल्पया सर्वे पोडश प्रासादाः, एषाग्रुच्चत्वादिकं तु स्वकृत् साक्षादेवाह—'तेणं पासायवर्डेसगा' ते खल्ल प्रासादावतंसकाः—'साइरेगाइ' सातिरेकाणि—अर्द्धकोशाधिकानि :'अद्धसोक्रसजोयणाइं' आर्द्धपोडशयोजनानि—सार्द्धपश्चदशयोजनानि 'उद्धं उच्चतेणं' अर्द्धगुच्चत्वेन, 'साइरेगाइ' सातिरेकाणि—क्रोशचतुर्थीशाधिकानि 'अद्धद्वपाइ' अर्द्धाष्टमानि—सार्द्धसप्त
'जोयणाइ' योजनानि 'आयामविक्खंभेणं' आयामविष्कम्भेण इति २, अ्थ 'तइयपासायपंती' तृतीयप्रासादपङ्किः—तत्स्चकपाठ एवम्—'ते णं पासायवर्डेसगा अण्णेहिं चउिहं

की और जंचा कहा है। 'साइरेगाई' दुछ अधिक 'अद्यसीलन जोयणाई' आयामविक्खंभेणं' साढे पंद्रह योजन उसकी लंबाई चोडाइ कही है।

अब दूसरी प्रासाद्वंक्ति सूचक पाठ इस प्रकारहै—'तेणं प्रसायवहसया भण्णेहिं चहिं तद्द्धुच्चत्त पमाणमित्तिहं पासायवहेंसएहिं सव्वओ समंता संवितिखत्ता' प्रथम पंक्तिमें कहे गए चारों प्रासादावंतसक, दूसरे उससे आधि ऊंचाइवाले मूलप्रासाद से आधे उत्सेध आयामविष्कंभ वाले मूल प्रासाद की अपेक्षा चतुर्भाग प्रमाणवाले चार प्रासादों से परिवेष्टित कहे हैं, इस प्रकार चारों दिशाओंमें चार-चार कहने से १६ सोलह प्रासाद हो जाते हैं। उनकी ऊंचाइ आदि मान सूचकार स्वयं कहते हैं—'तेणं पासायवहेंसगा' वे प्रासादा-बतंसक 'सातिरेगाइं' अब कोस अधिक 'अद्धसोलस जोयणाइं' साढे पन्त्रह योजन 'उद्धं उच्चत्तेगं' उंचा कहाहैं 'साइरेगाइं' पाव कोस अधिक 'अद्धद्वमाइं जोयणाइं आयामविक्लंभेणं' साढेसात धोजनका इनका आयामविष्कंभकहा है।

कोर्स च छडं उच्चत्तेणं' ये.जन अने ओड गाउँ जेटबा ઉंचा डहा। छे. 'साइरेगाई' डांडंड वधारे 'अद्धसोलसजोयणाई आयामविक्तंभेणं' साडा पंहर ये। ४ननी तेनी खंगार्ड पडेाणार्ड छे.

હुवे थील प्राप्तहपंडित संगंधी पाठ हुई छे-'ते णं पासायवहें सगा अणोहिं चहिं तद्युच्चतपमाणिमित्ते हिं पासायवहें सगहें सन्वओ समंता संपरिक्खिता' पहें श्री प्राप्ताह पंडितमां हुई वार्ध प्राप्ताहावतं सह थिना तेनाथी अर्द्ध हैं वार्धवाणा भूव प्राप्ताहथी अर्धा आयाम विष्ठं सामाह्याणा भूव प्राप्ताहना हरतां अतुर्भाग प्रामाध्याणा आर प्राप्ताहाथी वींटायें हैं. आ रीते आरे हिशालीमां आर आर हिंदिवाथी १६ सीण प्राप्ताही था क्या छे. तेनी हैं आर्ध वगेरे प्रमाध स्त्रहार स्वयं अतावे छे.—'तेणं पासाय वहेंसगा' से प्राप्ताहं तसह 'सातिरेगाइं' अर्धी गाउँ क्यिं 'अद्धसोलस जोयणाइं' साठा-पंडर येक्पन 'वहं उच्चतेणं' हैं या हहें हैं साहरेगाइं' पा गाड़ अधिक 'अह्हमाइं

तद्द्धुच्चत्तप्पमाणिमित्ते विं पासायवडें सण्विं सन्त्रश्रो समंता संपितिष्यता' एतच्छाया प्राग्वत् व्याख्यातु—ते—द्वितीयपरिधिगताः षोडशप्रासाद्यवतंसकाः खळ प्रत्येकमन्यैश्रद्धिम्तद्धीं च-त्व प्रमाणमात्रैः-मूळप्रासादापेक्षयाऽष्टां शप्रमाणश्चत्वविष्कम्भायामेः सर्वतः समन्तात् सम्पिरिक्षिताः, अत एवत्तीयपङ्क्तिगताः प्रासादाश्चतुष्पष्टिः, एपामुच्चत्वादिकं स्त्रकृत् स्वयमाद्य-'ते णं पासायवडें सगा' ते— चतुष्पिटरिप प्रासादावतंसकाः खळ 'लाइरेगाइ' सातिरेकाणि —प्रद्वेक्षोशाधिकानि 'अद्बुद्धमाइं' अद्बीष्टिमानि—सार्द्धसप्त 'जोयणाइं' योजनानि 'उद्धं उच्च-तेणं' उद्धीमुच्चत्वेन, 'साइरेगाइ' सातिरेकाणि—सार्द्धकोशाष्ट्रमांशाधिकानि 'अद्धुद्धजोय-णाइ' अध्युष्टयोजनानि—अध्युष्टानि—सार्द्धत्वीयानि योजनानि 'आयामविक्खंभेणं' आया-मविष्कम्भेन—दैर्ध्य—विस्ताराभ्याम् एषां सर्वेषां 'वण्णश्रो' वर्णकः—वर्णनपरः पदसमूदः 'सीहासणा सपरिवारा' सिंहासनानि च सपरिवाराणि-सामानिकादि सुरपरिवाराणां भद्रा-

अव 'तह्य पासायपंती' तीसरी प्रासादपंक्ति का वर्णन करते हैं-तेणं पासायवडेंसगा अण्णेहिं चडिं तद्द्धुच्चत्तपमाणिमत्तेहिं सन्वओ समंता संपरिक्वित्ता' दूसरी परिधिगत सोलह प्रासादावतंसक प्रत्येक दूसरे उससे आधे ऊंचे
ऐसे चार प्रासादावतंसक की जो मूल प्रासाद की अपेक्षा अष्टमांशा प्रमाण एवं
आयामविष्कंभ से चारों तरफ संपरिक्षिप्त कहे हैं। अतः तीसरी पंक्तिगत चोसठ
प्रासाद होते हैं। उसका उच्चत्वादि सूत्रकार स्वयं कहते हैं—'तेणं पासायबडेंसगा' वे ६४ चोसठ प्रासादावतंसक 'साइरेगाइं' आधा कोस अधिक 'अद्धुद्वमाइं
जोयणाई उद्धं उच्चत्त्रणं' साडे सात योजन ऊंचे कहे हैं। 'साइरेगाइं' कुछ अधिक
'अद्धुद्वजोयणाई आयाम विश्वंभेणं' साडे सात योजन के आयाम विष्कंभवाले
कहे हैं। इन सबका 'वण्णओ' वर्णन परक पद समूह 'सीहासणा सपरिवारा'
परिवार सहित सिंहासन अर्थात् सामानिकादि देव के परिवार के भद्रासन रूप

जोयणाइं आयामिविक्खंभेणं' साठा सात थेलिन केटली तेनी लंभाध पहेलाधं अहेल छे. हिते 'तइय पासायपंती' त्रील प्रासादपंतितुं वर्जन करवामां आवे छे.—'तेणं पासायवहें सगा अण्णेहिं चडिं तदद्धुच्चत्तपमाणिमित्तेहिं सव्वओ समंता संपिरिक्खता' णील पिरिधिशत सेल प्रासादावंतसके। हरेड णील तेनाधी अधि ઉंधाधवाला स्रेवा थार प्रासादावंतसके। हे के भूव प्रासादना इन्तां आठमां लाग केटला प्रमाणना आयाम अने विष्ठं लवालाके।थी बारे जाल वीटियेल हहा। छे. आ रीते त्रील पंडितना बासठ प्रासादे थाय छे. तेनी हं बाध विशेर प्रमाण स्त्रकार स्थां जतावे छे.—'ते णं पासायवहें सगा' के ६४ प्रासादावतंसके। 'साइरेगाइं' अर्धा शां अधिक अद्धुमाइं जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं' साठा सात थेलिन केटला हैं था अहेल छे 'साइरेगाइं' कंधि वधारे 'अद्धु जोयणाइं अयामिविक्खंभेणं' साठा सात थेलिन केटला आयाम विष्ठं लवाला हेलेल छे. के अधाना 'वण्णओ' वर्धन दर्शक पढ़े। 'संहासणा सपरिवार' परिवार साथ सिंदासन

मुळप्रासादे तु मुलर्सिहासनं सिंहासनपरिवारसहितमित्यादि, क्षेत्रसमासवृत्ती, तथा प्रथम्-त्तीयपङ्कचोर्मे् अप्रासादे परिवारत्वेन भद्रासनानि द्वितीयपङ्कचौ च परिवारतया पद्मा-सनानि, इति जीवाभिगमोपाङ्गे इत्यादि विसंवादसमाधानं बहुश्रुतगम्यम् , यद्यपि जीवाभि-गमे विजयदेवप्रकरणे तथा श्री भगवत्यङ्गवृत्ती चमरप्रकरणे चतस्रः प्रासादपङ्क्य उक्ताः, तथाऽपीह यमकाधिकारे तिस्र एवोक्ता इति बोध्यम् , तिस्रणामि पङ्कीनां प्रासादसङ्कल-नैवम्-मूलप्रासादेन सार्द्धे सर्वेषां प्रासादानां पञ्चाशीतिः संख्या ८५, अथात्र सभापञ्चकं निरूपियुरादौ सुधर्मासमास्वरूपमाह-'तेसि णं मूलपासायवर्डिसयाणं उत्तरपुरिवयमे' तयोः खळ मूळप्रासाद्वतंसकयोः उत्तरपूर्वस्याम् - ईशानकोणे 'दिसीमाए' दिग्मामे दिशोर्द्धयो-र्भागे-अंशे 'पत्थ णं' अत्र-अत्रान्तरे खर्ख 'जमगाणं देवाणं' यमकयोर्देवयोः योग्ये 'सुह-परिवार सहित पहले वर्णित प्रकार से वर्णन करलेवें। यहां पंक्ति प्रासादों में प्रत्येक को एक एक सिंहासन कहे है। मूल प्रासाद में तो मूल सिंहासन सिंहा-सन के परिवार सहित क्षेत्र समास वृत्ति में कहे हैं। तथा प्रथम एवं तीसरी पंक्ति में मूल प्रासाद में परिवार रूप भद्रासन एवं दूसरी पंक्ति-में परिवार भूत पद्मासन जीवाभिगम उपाङ्ग में कहा है। इस विसंवाद का समाधान बहुश्रुत गम्य है। यद्यपि जीवाभिगम में विजय देव के प्रकरण में तथा श्री भगवतीसूत्र में चमर के प्रसंग में चार प्रासाद पंक्ति कही है तथापि यहां यह गमकाधिकार में तीन ही पासादपंक्ति कही है। तीनों पंक्ति प्रासादों का संकलन करने पर कुल संख्या ८५ पचाशी आती हैं।

सनरूपपरिवारसहितानि प्राग्वत् संप्राह्याणि । अत्र पङ्क्तिप्रासादेषु सिंहासनं प्रत्येकमेकैकम्,

अब सभा पंचक का निरूपण करते हुए सूत्रकार प्रथम सुधर्मासभा का वर्णन करते हैं—'तेसिं णं मूल पासायविंसगाणं ऊत्तर पुरिक्थमें' उन मूल प्रासाद के

અર્થાત્ સામાનિકારિ દેવના પરિવારના ભદ્રાસના રૂપ પરિવાર સહિત પહેલાં વર્ણુન કરેલ પ્રકારથી વર્ણુન કરી લેવું. અહિં પક્તિ પ્રાસાદેમાં દરેકને એક એક સિંહાસન કહેલ છે. મૂળ પ્રાસાદેમાં તો મૂળ સિંહાસન સિંહાસનના પરિવાર ક્ષેત્ર સમાસ વૃત્તિમાં કહેલ છે. તથા પહેલી અને ત્રીજી પંક્તિમાં મૂલ પ્રાસાદમાં પરિવાર રૂપ ભદ્રાસન તથા બીજી પંક્તિમાં પરિવાર ભૂત પદ્માસન જીવાભિગમ ઉપાંગમાં કહેલ છે. આ ફેરફારનું સમાધાન અહુશ્રુત જ સમજી શકે તેમ છે. જો કે જીવામિગમમાં વિજય દેવના પ્રકરણમાં તથા શ્રી ભગવતી સ્ત્રમાં ચમરના પ્રસંગમાં ચાર પ્રાસાદ પંક્તિ કહી છે. તો પણ અહિંયા યમકાધિકારમાં ત્રણ જ પ્રાસાદપંક્તિ કહેલ છે. ત્રણે પ્રાસાદપંક્તિના પ્રાસાદો મેળવવાથી ૮૫ પંચાસી થાય છે.

&वे सला पंचकतुं निरूपण् करता सूत्रकार पहेला सुधर्मा सलातुं वर्णन करे छे. 'तेसिं णं मूलपासायविद्याणं उत्तरपुरियमे' स्मे भूल प्रासादावंतसक्ती धीशान 'दिसीभाए' म्माओ' सुधर्मे-सुब्दु शोभनो धर्मः-सापराधनिरपराधनियहानुग्रहलक्षणो राजधर्में यश्र ते तथा, पत्रमाम्न्यों 'सहाओ' सभे प्रत्येकमेकैकेति हे 'पण्णताओं' प्रझप्ते, तयोमीनाद्याह-'अद्ध-तेरस' इत्यादि 'अद्धतेरसजोयणाइं' अर्द्धत्रयोदशयोजनानि 'आयामेणं छस्सकोसाइं' आया-मेन पट्ट सक्रोशानि 'जोयणाइं' योजनानि 'विक्खंभेणं' विष्कम्भेण विस्तारेण 'णव जोयणाइं उद्धं उच्चतेणं' नव योजनानि उध्वं प्रचत्वेन, अनयोर्वणक्षत्रमतिदिशति-ग्रन्थलाघषायम् 'अणेगखंभसयसण्णिविद्वाओं' अनेकस्तम्भशतसिक्षिविष्टे इत्यादिपदघटितं तद्वर्णनपरं सत्रं बोध्यम् प्तावताऽपरितृष्यन्नाह-'सभावण्णओं' इति स च जीवाभिगमोक्तो ग्राह्यः, स चैवम्- 'अणेगखंभसयसण्णिविद्वाओं अब्धुग्गयसुकयवइरषेइया तोरणवररइयसालभंजिया सुसिलिह-विसद्वसंठियपसत्थवेरुलियविमलखंभाओ णाणामणिकणगरयणखइयउज्जलबहुसमस्विभत्त-

इशान (कोण) 'दिसीभाए' दिशाकी ओर 'एत्थणं' यहा पर 'जमगाणं देवाणं' यमक देव के 'सुहम्माओ' सुधर्मा नाम की 'सहाओ' दो सभा प्रत्येक की एक एक के कमसे 'पण्णत्ताओ' कही गई है

अब सूत्रकार उसका मानादि प्रमाण कहते हैं-'अद्धतेरस जोयणाइं आया-मेणं' इसका आयाम—लंबाई साढे बारह योजन की है। 'छ सक्कोसाई जोयणाइं विक्खंभेणं' इसकी चोडाई एक कोस अधिक छ योजन की है-'णव जोयणाइं उद्धं उच्चतेणं' नव योजन की इनकी ऊंचाई कही हैं 'अणेग खंभसयसण्णिव-हाओं' अनेक स्तंभ दात सन्निविष्ट इत्यादि पद घटित उसका वर्णन समझलेवें! वह 'सभा वण्णओं' सुधर्मो सभा का वर्णन जीवाभिगम सूत्र में कहे अनुसार ग्रहण कह लेना वहां पर सभा का वर्णन इस प्रकार है 'अणेग खंभसयसन्नि-विद्वाओं अन्भुग्गय सुक्रय वहरवेइयातोरणवररइयसालभंजिया सुसलिष्ट विसिष्ठ संठिय पसत्थ वेरलियविमलखंभाओं णाणामणिकणगरयण खद्दय उज्जल बहुसमसुविभक्तभूमिभायाओं ईहामिग उसभ तुरगणरमगर विद्वा

દિશાની તરફ 'एत्थणं' અહીં આગળ 'जमगाणं देवाणं' યમક દેવની 'सुहम्माओ' સુધર્મા નામની 'सहाओ' છે સભાએ। દરેકની એક એકના ક્રમથી 'पण्णत्ताओ' કહેલ છે.

हवे स्त्रकार तेनुं भानाहि प्रभाषु अतावे छे. 'अद्धतेरस जोयणाइं आयामेणं' तेनी आयाभ-लंआई साठा अतर येाजननी छे. 'छ सकोसाई जोयणाइं विक्खंभेणं' तेनी पहेा- आधं ओं आड़ अधिक छ ये।जननी छे. 'णव जोयणाइं उद्ध उच्चत्तेणं' नव ये।जन जेटला ते छं या छे. 'अणेगखंभसयसण्णिविद्वाओं' अनेक सें केंडा स्तं ले।थी वींटणायेल छत्याहि पह युक्त तेनुं वर्णुन सम्ल हेवुं. ते 'समा वण्णओं' सुधर्भासलानुं वर्णुन ल्वालिशभ स्त्रभां कहा। प्रभाषे समल हेवुं कोई के. ल्वालिशभ स्त्रभां कहा। प्रभाषे समल हेवुं कोई के. ल्वालिशभ स्त्रभां कहा। प्रभाषे समल हेवुं कोई के. ल्वालिशभस्त्रभां सलानुं वर्णुन का प्रभाषे छे. ल्वालिशभस्त्रभां कहा। प्रभाषे समल हेवुं कोई के. ल्वालिशभस्त्रभां सलानुं वर्णुन का प्रभाषे छे. ल्वालिशमस्त्रभां कहा। प्रभाषे समल हेवुं कोई के ल्वालिशभस्त्रभां सलानुं वर्णुन का प्रभाषे छे. ल्वालिशमस्त्रभां सलानुं वर्णुन का प्रभाषे छे. ल्वालिशमस्त्रभां सलानुं वर्णुन का प्रभाषे छे. ल्वालिशमस्त्रभाविमस्त्रभाषों जाणामणिकणगर्यणखड्य समस्त्रविमस्त्रभम्भविमत्त स्त्रभागाओं

भूमिभागाओ ईहामिगउसभतुरगणरमगरविहगवालगर्षिनररुहसरभचमरकुं जरवणलयपउमलयभातिवित्ता भो खंग्रगयवहर वेहयापरिगयाभिरामाओ विज्ञाहरजमलज्ञयलजंतज्ञत्ताओविव अच्चीसहरसमालणीयाओ रूवगसहस्सकलियाओ भिस्माणीओ भिव्भिसमाणीओ चवखुल्लो-यणलेस्साओ सहसायोग सहसारीयरूवाओ कंचणमणिरयणपूभियागाओ णाणाविहपंच-वण्णघटापडागपरिमंडियग्गसिहराओ घवलाओ मरीइकवयं विणिम्मुयं शेओ लाउलोहय-महियाओ गोसीससरससुरभिरत्तचंदणदहरदिण्णपंचंगुलितलाओ उववियचंदणकृत्वसाओ चंदणघडसुकयतोरणपिडदुवारदेसभागाओ आसत्तोसत्तविष्ठ इवहवग्यारियमल्लदामकलावाशो पंचवण्णसरससुरहिएक १ प्पंत्रोवयारकलियाओ कालगारुपवरकुंदुरुकतुरुकधूवडज्झंतमवमध्त-गंधुद्धुयाभिरामाओ सुगंधवरगंधियाओ गंधवहिभूयाओ अच्छरगणसंघिविकिणाओ दिव्व-हुिष्ठयसहसपणादियाओ सव्यर्यणामईओ अच्छाओ जाव पिड्व्याओं इति, एनच्छाया-

बालग किंनर रह सरभ चमर कुंजर वणलय पउमलय भक्तिचिलाओ खंभुगय बहरवेइयापरिगयाभिरामाओ विज्जाहर जमल जुयलजंतजुलाओविव अच्ची सहस्समालणीयाओ रूवगमहस्सकलियाओं भिसमाणीओं भिविभसमा णीओ चक्खुल्लोयणलेसाओं सुहफासाओं सिस्सिरीयरूवाओं कुंचण मणि-रयणध्भियागाओं णाणाविह पंचवण्ण घंटापडायमंडियग्ग सिहराओं धव-लाओं मरीइ कथ्यं विणिम्मुयंताओं लाउल्लोइय महियाओं गोसीस सरस सुरभिरत्तचंदणदहरदिण्णपंचंगुलितलाओं उवचियचंदणकलसाओं चंदणघडसुक-यतोरण पडिदुवारदेसभागाओं आसत्तोसत्त विजल वह वन्धारिय मललदाम कलावाओं पंच वण्ण सरस सुरिह मुक्क पुष्फपुंजोवयारकलियाओं कालागुरुपवर-कुंदृरुक्क तुरुक्क धृव डज्झंत मधमधंत गंधुद्धुयाभिरामाओं सुगंधवर गंधियाओं गंधविह भूयाओं अच्छरगण संघ विकिण्णाओं दिव्य तुडिय सहसंपणादियाओं

ईहामिग उसमतुरगणरमगरविह्गवालगिकंनरहरूसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभित्तिचित्ताओ खंभुगयवइरवेइयापरिगायाभिरामाओ विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्ताओ विव अच्चीसहस्समालणीयाओ, ह्वगसहस्सकलियाओ भिसमाणीओ भिल्मिसमाणीओ चक्खुल्लोयणलेसाओ सुहफासाओ सस्सिरीयह्वाओ कंचमणिरयणभूमिभागाओ णाणाविह्पंचयणणंटापडागपरिमंडियगसिहराओ धवलाओ मरीइकवयं विणिम्मुदंताओ लाउल्लोइयमहियाओ गोसीससरसपुरभिरत्तचंदणदद्गिवृण्णपंचंगुलितलाओ उवचियचंदणकलसाओ चंदणघडसुइयतोरणपडिद्वबारदेसभागाओ आसत्तोसत्त विउल्लब्ह्वग्वारियमल्लद्गमकलावाओ पंचवण्णसरसपुरिहसुक्कपुष्फपुंजोवयारकलियाओ कालागुरूपवर्जंदुरुक्कनुरुक्कधूवडञ्जंतमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामाओ सुगंधवरगंधियाओ गंधविह्मूयाओ अच्छरगणसंघविकिण्णाओ दिव्च तुडिय सहसंपणादियाओ
सन्वर्यणामईओ अच्छाओ जाव पडिह्वाओ' अने के केंडिय क्तंलिथी युक्त नलक्ष्मां
केंद्रिस क्षुंदर वक्रवेदिकाना सुंदर तेरिह्मानी उपर शाक्षकंलका-पुन्तिथीनी स्थना

सन्व रयणा मईओ अच्छाओ जाव पडिस्वाओ' अनेक से कड़ों स्तंभो से युक्त समीपस्थ सुकृत वज्रवेदिका के श्रेष्ठ तोरण के उपर शालभिक्षका —पुक्तिका की रचना वाली अच्छे प्रकारसे संस्थित प्रशस्त वेंडूर्यमणि का स्तंभ जिस में हैं ऐसी अनेक प्रकार के मिण, सुवर्ण एवं रत्नों से जिसका भूमिभाग खिनत अत एव प्रकाशयुक्त भूमिभाग वाली, ईहागृग वृषभ, तुरग, नर, मगर, विहग, व्यालक, किन्नर, रुरु, शरभ, चमरी गाय, हाथी, वनलता, पद्मलता, के चित्र से युक्त, स्तम्भ के भीतर वज्रवेदिका होनेसे अत्यंत मनोरम, विद्याधरों के यमल युगलों के यन्त्र युक्त न हो ऐसी से कड़ो किरणों से व्याप्त, हजारों ह्यों से युक्त, प्रकाशमान, अत्यंत प्रकाशमान नेत्र से अवलोकनीय सुखद स्पर्शवाले सश्रीक स्पवालो कांचन, मिण एवं रत्नों की स्तृपिका वाली अनेक प्रकार के पंचवर्णवाले घण्टा एवं पताका—ध्वज से जिसका अग्रशिखर परिमंडित है ऐसी श्वेत किरण रूपी कवच को छोडनेवाली लीपी पोती अतः महित—शोभित गोरो-चन रससे युक्त ऐसे चंदन के घट से प्रति हार में तोरण बनाये हैं जिस में ऐसी वार वार सिक्त करने से बड़ि एवं गोलाकार लंबी मालाओं के सख्दवालो पांच

વાળી સારી રીતે રહેલ શ્રેષ્ઠ વૈદુર્ય મિણના સ્તાંભ જેમાં છે, એવા અનેક પ્રકાશના મિણ, સુવર્ણ તેમજ રતનાથી જેના ભૂમિભાગ જડેલા છે અને એટલે જ પ્રકાશનાળા છે તથા એકદમ સરખા અને સુવિભકત ભૂમિનાળા, કહિયુગ, વૃષભ, તુરગ, નર, મગર, સિંહ, ત્યાલક, કિન્નર, રુરૂ, શરભ ચમરી—ગાય, હાથી, વનલતા, પદ્મલતાના નિવાથી સુકત સ્તાંભમાં વજ વેદિકા હાવાથી, અત્યંત મનારમ, નિદાધરાના સુગલા યંત્રસુકત જ ન હેલ્ય? એવી સેંકડા કિરણાથી વ્યાપ્ત, હજારા રૂપાથી સુકત, પ્રકાશમાન, અત્યંત પ્રકાશમાન આંખાથી એલા લાયક, સુખદ સ્પર્શવાળા, સશ્રીકર્યવાળા, કાંચન, મિણ તથા રતનાની સ્તૃપિકાવાળા અનેક પ્રકારના પાંચ વર્ણવાળા ઘંટા તેમજ પતાકા—ધન્નએથી જેના અલભાગ શાભાય માન છે, એવી, ધાળા કિરણરૂપી કવચાને છાડવાવાળી, લીપેલ તથા ધાળેલ, અને તેથી જ મહિ—શાભિત ગારાચન રસથી સુકત એવા ચંદનના ઘડાએલી દરેક દ્વારામાં તારણ

र्षेत्रण्कभूपदश्यमानमधमधायमानगन्धोद्भूताभिरामे सुगन्धवरगन्धिते गन्धवर्तिभूते अप्स-रोगणगङ्घविकीणे दिच्यत्रुटितशब्दसंप्रनदिते सर्वरत्नमध्यो अच्छे यावत् प्रतिरूपे' इति, एत-द्व्याख्या चद्वदंशपश्चदशस्त्रोक्तसिद्धायतनवर्णकानुसारेण बोध्या, तत्र नपुंसकत्वेनैकत्वेन च पदिनर्देशः, अत्र स्नीत्वेन द्वित्वेन च पदिनर्देश इति तत एतावान भेदोऽन्यत्सर्व समानम् । नवरम्-अप्सरोगणसङ्घविकीणे-अप्सरोगण-अप्सरः परिवारास्तेषां सङ्घन समुदायेन विकीणे वि-सम्यक् -शोभनतया कीणे व्याप्ते तथा दिव्यत्रुटितशब्दसंप्रनदिते-दिव्यानां-दिवि भवा-नाम् बुटितानां-वाद्यानां ये शब्दास्तैः सम्-सम्यक् प्र-प्रकर्षेण नदिते-शब्दिते सर्वरत्न-मय्यावित्यादि प्राग्वत् ।

अय तयोः समयोः कित द्वाराणि सन्तीत्याह-'तासि णं सभाणं' इत्यादि-'तासि णं सभाणं सहम्माणं' तयोः - सुधमेयोः खल सभयोः 'तिदिसि' विदिश्चि-तिस्पु दिश्च 'तओ वर्ण वाले सरस सुगन्धित पुष्पों के पुल्ल से लक्षित, जलते कालागरु श्रेष्ठ कुंदुरुक, तुरुष्क, के भूप से मधमधायमान गंधसे अभिराम-श्रेष्ठ सुगंधसे सुगन्धित गंध की गुटिका समान अप्सराओं के संघ द्वारा विकीण दिव्य श्रुटित शब्द से शब्दायमान सर्व प्रकारसे रत्नमयी अच्छ यावत् प्रतिरूप, आदि व्याख्या चौद्र हवें एवं पंद्रहवें सूत्र में वर्णित सिद्धायतन वर्णन के अनुसार समज छेवें। वहां पर नपुंसकत्वसे और एकवचन से वर्णन किया है। यहां पर स्त्री लिंग एवं दिव्यन से कहना चाहिए, इतना ही वहां का वर्णक के साथ भे ; है, अन्य सब समान है विशेष यह है-'अप्सरोंगणसङ्घविकीणें' अप्सराओं के संघ समुदायसे व्यास, दिव्य श्रुटित शब्दसे शब्दायमान, सर्व रत्नमय इत्यादि प्राग्वत् वर्णित कर लेवें।

अब वे सुधर्म सभा के कितने द्वार थे वह सूचकार कहते हैं-'तासि णं सभा णं सुहम्माणं' वे सुधर्मसभा के 'तिदिसिं' तीनों दिशाओं में 'तओ दार। पण्णत्ता'

અનાવેલ છે. એવી તથા વારં વાર છંટકાવ કરવાથી માટી અને ગાલાકાર લાંબી માળાઓના સમ્દ્રથી, પાંચ વર્ણ વાળા સરસ સુગંધિત પુષ્પોના પુંજ—સમૂદ્રથી નેવાતી કાલાગુરૂ, ઉત્તમ કું દુરૂક, તુર્ષ્કના ધૂપથી મધમઘાયમાન ગંધથી અભિરામ, શ્રેષ્ઠ સુગંધથી સુગંધિત ગંધની ગાળી સરખા, અપ્સરાઓના સમૃદ્ધ દ્વારા વેરાયેલ દિલ્ય ઝુટિતના શખ્દાથી શખ્દાયમાન સર્વ રીતે રતનમય અચ્છ યાવત્પ્રતિરૂપ વિગેરે વ્યાખ્યા ચૌદમા અને પંદરમાં સ્ત્રમાં વર્ણ વેલ સિદ્ધાયતનના વર્ણન પ્રમાણે સમજી લેવી. ત્યાં નપુંસકથી અને એક વચનથી વર્ણન કરેલ છે, અને અદિયાં અલિંગ અને દ્વિયનથી કંહેવાનું છે. એટલા જ એ વર્ણનથી આ વર્ણનમાં ફેરફાર કરવાના છે. વિશેષતા આ પ્રમાણે છે.—'અપ્સરોમળસંઘ- વિજીળ' અપ્સરાઓના સમુદ્દાયથી વ્યાખ્ત, દિવ્ય, ઝુટિતના શખ્દાથી શખ્દાયમાન સર્વ રતનમય ઇત્યાદિ પહેલાની જેમ વર્ણન કરી લેવું.

હવે સુધર્મ સભાના કેટલા દારા છે? એ સૂત્રકાર કહે છે.-'तासिंगं सभागं हहम्मा मं' એ સુધર્મ સભાની 'तिदिसिं' त्रधे हिशाओमां 'तओ दारा पण्णत्ता' त्रध् हरवालाओ। दारा पण्णत्ता' त्रीणि द्वाराणि प्रज्ञप्तानि, तेषां मानाद्याह-'ते णं दारा' तानि खल्ल द्वाराणि 'दो जोयणाई उद्धं उच्चत्तेणं' द्वे योजने ऊर्ध्वमुच्चत्वेन, 'जोयणं विक्खंभेणं' योजनं विष्क-म्भेण-विस्तारेण, 'तावइयं चेव' तावदेव—योजनप्रमाणमेव 'पवेसेणं' प्रवेशेन-सभान्तः प्रवेश्वस्थलावच्छेदेन प्रज्ञप्तानीति पूर्वेण सम्बन्धः, त्रीण्यपि 'सेया वण्णश्रो' वर्णेन श्वेतानि—शुक्लः वर्णोनि, इत्युपलक्षणं सम्पूर्णद्वारवर्णकस्य एतदेवाह—वर्णकः—सम्पूर्णो वर्णनपरः पदसमूहोऽत्र बोध्यः, स च किम्पर्यन्तः ? इत्याह—'जाव वणमाला' यावद् वनमाला—वनमालापदपर्यन्तः, अयं वर्णकोऽष्टमस्त्राद्विजयद्वारवर्णकानुसारेण सङ्ख्याह्यः,

अथ मुखमण्डपादि पट्सं निरूपियतुमाह-'तेसि णं' इत्यादि-'तेसि णं' तेषाम्-अन-न्तरोत्तानां खल त्रयाणां 'दाराणां पुरओ' द्वाराणां पुरतः-अप्रे 'पत्तेयंर' प्रत्येकम्र-एकैकस्य 'तओ मुहमंडवा' त्रयो मुखमण्डपाः-सुधर्मासमाहाराप्रवर्तिनो मण्डपाः-देशननाश्रयाः 'पण्णता' तीन द्वार कहे हैं 'ते णं दारा' वे द्वार 'दो जोयणाइं उद्धं उच्चत्ताणं' दो योजन के ऊंचे 'जोयणं विक्खंभेणं' एक योजना इनका विस्तार है, 'तावहयं चेव पवेसेणं' हतना ही इनका प्रवेश कहा है। तीनों द्वार 'सेया वण्णओ' श्वेतवर्ण वाले कहे हैं। यहां पर श्वेत पद उपलक्षण है अतः संपूर्ण द्वार का वर्णन करने वाले पद् समूह यहां कहलेवें। वह वर्णन कहां तक कहना चाहिए? इस शंका की निवृत्ति के लिए कहतें हैं 'जाब वणमाला' वनमाला पद पर्यन्त वर्णन यहां ग्रहण करलेवें। वह वर्णन आहवें सूत्र में विजय द्वार वर्णन में कहा है अतः तदनुसार यहां पर वर्णित करलेवें।

अव सत्रकार मुखमण्डपादि का निरूपण करते हैं 'तेसिं णं दाराणं' आगे कहे गए तोनों द्वारों के 'पुरओ' आगे 'पत्तेयं पत्तेयं' प्रत्येक के 'तओ मुहमंडवा' तीन मुख मण्डप-सुधर्म सभाके द्वारके आगे रहे हुवे मण्डप 'पण्णत्ता' कहे हैं-

हिंद्या छे. 'तेणं दारा' ते द्वारा 'दो जोयणाई उद्धं उच्चत्तंण' छे थालन लेटला हिंथा छे 'जोयणं विक्तंमेणं' स्नेह थालन लेटला तेना विस्तार छे. 'ताबइयं चेव प्रवेसेणं' स्नेटला लेटला किंदा विस्तार छे. 'ताबइयं चेव प्रवेसेणं' स्नेटला लेटला किंदा केंद्रे के स्नेता प्रवेस हिंदु छे, स्नेता प्रवेश हिंद्र हो. से अध्या वण्णओं' धाणा रंगना है।वानुं हिंदु छे, स्नितं पह हातला छे. तेथी संपूर्ण द्वारानु वर्णन हरनारा पहसम्द्र सहीं हिंदा लेटि से स्नेत स्वापना समाधान माटे स्वापन हेंद्रे छे. 'जाव वणमाला' वनमाला पह सुधीनुं स्ने वर्णन सहीं अद्वापन होंद्रे हेंद्रे हेंद्रे से वर्णन साठा स्वापना वर्णन प्रसंगमां हेंद्रेवामां स्वापन छे, तेथी तेना वर्णन प्रमाधे स्वापन हों वर्णन हरी हेंद्रे हेंद्रे तेना वर्णन प्रमाधे स्वापन हिंद्रेन हरी हेंद्रे हेंद्रे तेना वर्णन प्रमाधे स्वापन हरी हेंद्रे हेंद्रे तेना वर्णन प्रमाधे स्वापन हरी हेंद्रे हेंद्रे तेना वर्णन प्रमाधे स्वापन हरी हेंद्रे हेंद्रे हेंद्रे तेना वर्णन प्रमाधे स्वापन हरी हेंद्रे हेंद्

હવે સૂત્રકાર મૂખમંડપાદિનું નિરૂપણ કરતાં કહે છે—'તેસિંગં દારાળં' આગળ કહેલા ત્રણ દ્વારાની 'પુરલો' આગળ 'વત્તેયં વત્તેયં' દરેકના 'તલો મુદ્દમંદવા' ત્રણ મુખ મંડપ એટલે કે સુધર્મ સભાના દ્વારની આગળ રહેલા મંડપ 'વળ્ળત્તા' કહ્યા છે. प्रज्ञप्ताः, तेषां मानाचाह-'ते णं ग्रुह्मंडवा' ते खळ ग्रुखमण्डवाः, 'अद्धतेरसजोयणाई' अर्द्धत्रयोजनानि—सार्द्धद्वयोजनानि 'आयामेणं'—आयामेन-दैष्ट्येण, 'छ्र्सकोसाई' पर सक्रोशानि—एकक्रोशसिहतानि 'ओयणाई विक्खंभेणं' योजनानि विष्क्रम्भेण—विस्तारेण, 'साइरेगाई' सातिरेके—िकञ्चिद्धिके 'दो जोयणाई उद्धं उच्यत्तेणं' हे योजने उध्वीपुच्चत्वेन—उभ्तत्वेन प्रज्ञक्षा इति पूर्वेण सम्बन्धः, एतेषां ग्रुखमण्डपानामिष 'अनेक्र्तम्भशतसिन्निष्टा' इत्यादिवर्णनं ग्रुधमासभानुसारेण बोध्यम् तच्च किम्पर्यन्तम् ? इत्याह—'जाव दारा' इत्यादि, 'नाव दारा' यावद् द्वाराणि-ग्रुखमण्डपानां द्वाराणि 'मूमिमागायंति' भूमिमागांश्वाभिव्याप्य वर्णनं बोध्यम् । यद्यप्यत्र सभावणनं द्वारपर्यन्तमेव तथेव ग्रुखमण्डपद्वत्रेऽपि द्वारपर्यन्तमेव-वर्णनमायाति तथाऽपि भूमिमागपर्यन्तवर्णनमत्रोक्तं, जीवाभिगमादिषु ग्रुखमण्डपर्यणकप्रसङ्गे भूमिभागवर्णकदर्शनात्,

अब उनके मानादि कहते हैं—'तेणं मुहमंडवा' वे मुखमंडप 'अद्ध तेरस जोयणाई आयामेणं' साडे बारह योजन लम्बे हैं 'छास कोसाई' एक कोष सहित छह
'जोयणाई विक्खं मेणं' योजन विष्कंभ वाले हैं अर्थात् इतना चौडा है। 'साइरे
गाई दो जोयणाई उद्धं उच्चत्तेणं' कुछ अधिक दो योजन के उंचे कहे हैं। इन
मुखमण्डपों के भी 'अनेक से कड़ों स्तम्भोंसे युक्त' इत्यादि वर्णन सुधर्मा सभा
के वर्णनातुसार समज लेवें। वह वर्णन कहां तक का यहां ग्रहण करना चाहिए?
इसके समाधानार्थ कहते हैं—'जाव दारा' यावत् द्वारवर्णन 'एवं भूमिभागायंति'
एवं भूमिभाग के वर्णन पर्यन्त गृहीत कर लेना। यद्यपि यहां सभाका वर्णन
द्वार पर्यन्त ही आता है अतः मुखमण्डप सूत्र में भी द्वार पर्यन्त ही वर्णन आसकता
है तथापि यहां भूमिभाग पर्यन्त कहा है वह जीवाभिगमादि में मुखमण्डप
वर्णन प्रसङ्ग, में भूमिभाग का वर्णन देखने में आता है अतः ऐसा कहा है

हुवे तेना भानाहिनु इथन हरे छे-'तेण मुह्मंड्या' ते भुणभंडपा 'अद्वतेरस जीय-णाइं आयामेणं' साडा भार येकिन केटलां लांभा छे. 'इस्सकोसाइ' ओह है। साथे छ 'जीयणाईं विक्लंभेणं' येकिनना विष्हं स युक्त छे. अर्थात् ओटली तेनी पहाणां छे 'साइरेगाइं दो जीयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं' हं छेड वधारे छे येकिननी तेनी ઉं यां हहीं छे. ओ भुणभंडपामां पण अनेह सें हड़े। स्तं लेखी युक्त छे. छत्याहि वर्णन सुधर्भसलाना वर्णन प्रभाणे सम्ल लेखें। ओ वर्णन ह्यां सुधीनुं अहियां बहुण हरतुं कोई ओ तेना सभाधान माटे हड़े छे-'जाब दारा' यावत् द्वार वर्णन 'एवं मूमिमागायंति' लूमिसानना वर्णन पर्यन्त ओ वर्णन अहण हरी लेतुं.

જોકે અહીં સભાતું વર્ણન ક્ષર પર્યન્ત જ આવે છે. તેથી મુખમંડપ સ્ત્રમાં પણ ક્ષર પર્યન્તતું જ વર્ણન આવી શકે છતાં અહિં જે ભૂમિલાગ પર્યન્ત ક્ષેવાનું કહેલ છે તે જીવાલિગમ વગેરમાં મુખમંડપ વર્ણનના પ્રસંગમાં ભૂમિલાગતું વર્ણન अथ लावनार्थे प्रेक्षामण्डपवर्णकमाह-'पेच्छाघरमंडवाणं' इत्यादि-'पेच्छाघरमंडवाणं' प्रेक्षागृहं-नाटचशाला तस्य मण्डपानां 'तं चेव' तदेव ग्रुखमण्डपोक्तमेव 'पमाणं' प्रमाणम्-आयामविष्कम्भोचत्व द्रक्षणं मानम् बोध्यम् तथा 'भूमिभागो' भूमिभागः-द्वारादारभ्य भूमिभागपर्यन्तं सर्वे वस्तु वर्णनीयम्, एषु च 'मणिपेहियाशीनि' मणिपीठिकाः-मणिमयासन-विशेषा अपि वर्णनीया इति, एतावदर्थस्वकं स्त्रं चैवम्-

'तेसि णं मुह्मंडवाणं पुरओ पत्तेयं २ पेच्छाघरमंडवा पण्णता ते णं पेच्छाघरमंडवा अद्धतेरसजोयणाइं आयामेणं जाव दो जोयणाइं उद्धं उच्वत्तेणं जाव मणिफासो, तेसि णं बहुमज्झदेसमाए पत्तेयं २ वइरामया अक्लाडया पण्णत्ता, तेसि णं बहुमज्झदेसमाए पत्तेयं २ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ'त्ति, एतच्छायाऽश्रीं सुगमी, नवरम्-अक्षपाटकाः-अक्षपाटा एवाक्षपाटकाः, ते च चतुष्कोणारस्राकारा मणिपीठिकाधारविशेषा भवन्तीति परिचयः,

अब संक्षेत करने के लिए प्रेक्षामंडए का वर्णन कहते हैं-'पेच्छाघरमंड-वाणं' प्रेक्षाग्रह-नाटघशाला के मंडपों का 'तं चेव पमाणं' मुखमंडए के जितना ही प्रमाण है अर्थात् आयाम विष्कंभ उच्चत्वादि प्रमाण मुख मंडए के जितना: ही है। 'मृश्मिभागो' द्वार से लेकर भूमिभाग पर्यन्त सब वर्णन करना चाहिए और उस में 'मणिपेढियाओस्ति' मणिमय आसन विशेष का भी वर्णन करलेवें। वह बताने वाला सूत्रपाठ इस प्रकार है-'तेसिणं मुहमंडवाणं पुरओ पत्तेयं २ पेच्छाघरमंडवा पण्णत्ता, तेणं पेच्छाघरमंडवा अद्ध तेरस जोयणाई आयामेणं जाव दो जोयणाई उद्धं उच्चत्तेणं जाव मणि फासो, तेसि णं बहुमजझदेसभाए पत्तेयं पत्तेयं वहरामया अक्खाडया पण्णत्ता तेसिणं बहुमजझदेसभाए पत्तेयं २ मणिपेढियाओ पण्णत्तेसि' अर्थ सुगम है। अक्षपाटक-चतुष्कोण अस्त्राकार मणिपीठिका आधार विशेष को कहते हैं

કરેલ નેવામાં આવે છે. તેથી એ પ્રમાણે ગ્રહ્મણ કરવાનું કહેલ છે.

ढेवे संक्षेप करवा भाटे प्रेक्षामंडपतुं वर्णुन करे छे-'पेच्छाघरमंडवाणं' प्रेक्षागृद्ध-नाटक शाणाना भंडपेतां 'तं चेत्र पमाणं' सुण भंडप केटलुं प्रभाखु कहेल छे.
अर्थात् आयाभ विष्कंल उच्यत्वाहि प्रभाखु सुण भंडपना प्रभाखु केटलुं क छे. 'सृमि
भागो' द्वारयी लि ने ल्मिलाण पर्यान सद्यु, वर्णुन करी लेवुं, अने तेमां 'मणिपेहिया
ओत्ति' मिख्मिय आसन विशेष तुं वर्णुन पखु करी लेवुं, तो वर्णुन दर्शक सूत्रपाठ
आ प्रभाखें छे 'तेसिंणं मुहमंडगणं पुरओ पत्तंय पत्तंय पेच्छाघरमंडवा पण्णत्ता तेणं
पेच्छाघरमंडता अद्धतेरसजीयगाई आयामेणं जाव दो जीयणाई उद्धं उच्चत्तेणं जाव मणि
फासो, तेसिं णं बहुमज्झदेसभाए पत्तंयं पत्तंयं वइरामया अक्लाख्या पण्णत्ता, तेसिं णं बहु
मज्झदेसभाए पत्तंयं पत्तंयं मणिपेहियाओ पण्णतेत्ति' आ स्त्रपाठने। अर्थ सरण छे. अक्षर
पाट-यार सुख्वावाणा अस्ताकार मिख्याओ पण्णतेत्ति' आ स्त्रपाठने। अर्थ सरण छे.

तासां मणिपीठिकानां मानाद्याह-'ताओ णं' इत्यादि-'ताओ णं' ताः-अनन्तरोक्ताः खलु 'मणिपेढियाओ' मणिपीठिकाः 'जोयणं' योजनम्-एकं योजनम् 'आयामनिवखंभेणं' आयाम- विष्क्षम्भेण-दैर्ध्यविस्ताराभ्याम्, 'अद्धनोयणं' अद्धयोजनं 'बाह्रुलेणं' बाह्रुल्येन-पिण्डेन, ताः पुनः 'सन्त्रमणिमईया' सर्वमणिमय्यः-सर्गत्मना-स्फटिकमरकतादि-मणिमय्यः, 'सोहा-सणा भाणियन्वा' सिंहासनानि भणितव्याः, प्रज्ञप्ता इति पूर्वेण सम्बन्धः,

'तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ' तेषां खल प्रेक्षागृहमण्डपानां पुरतो 'मणिपेहियाओ पण्णत्ताओ' मणिपीठिकाः प्रज्ञप्ताः 'ताओ णं मणिपेहियाओ दो जोयणाइं' ताः खल मणिपीठिकाः हे योजने 'आयामिवक्षंभेणं' आयामिवक्कम्भेण 'जोयणं बाहल्लेणं' योजनं बाहल्येन 'सब्बमिणमईओ' सर्वमणिपय्यः, अथ तन्मणिपीठिकोपरितनान् स्तृपान् वर्णियतुमाह—'तासि णं' इत्यादि—'तासि णं' तासां खल मणिपीठिकानाम् 'उप्पं पत्तेयंन्' उपरि प्रत्ये-कम्न-एकैकस्या मणिपीठिकायाः 'तओ' त्रयः—त्रिसंख्यकाः 'थूभा' स्तृपाः स्मृतिस्तम्भाः

अब मणिपीठिका के मानादि को कहते हैं-'ताओणं मणिपेढियाओ' आगे कही गई मणिपीठिका 'जोघणं आयामविक्खंभेणं' एक योजन लंबि चौडी हैं 'अद्ध जोघणं बाहल्लेणं' आधा योजन मोटी हैं 'सन्वमणिमइया' सर्वात्मना स्फटिक, मरकत आदि मणिमय हैं 'सीहासणा भाणियन्वा' यहां सिंहासन कहेगए हैं।

'तेसिंणं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ' उन नाट्यशालाओं के आगे 'मणिपेढि-याओं पण्णताओं' मणिपीठिका कही गई है। 'ताओणं मणिपेढियाओं' दो जोय-णाई' वे मणिपीठिकाएं दो योजन का 'आयाम विक्खंभेणं' आया विष्कंभ वाली कही हैं 'जोयणं बाहल्लेणं' एक योजन इतनी मोटाई है। 'सव्व मणिमईओ' सर्वोत्मना मणिमय है

अब उन मणिपीठिका के ऊपर के स्तंभ का वर्णन करते हैं-'तासिं णं' उन मणिपीठिका के 'उप्पि' ऊपर 'पत्तेयं पत्तेयं' प्रत्येक के 'तओ धूभा पण्णत्ता' तीन

હવે મणिपीिंडिशना भानाहिनुं अथन अरे छे-'ताओणं मणिपेंडियाओ' એ मणि पीिंडिश 'जोदणं आदामविक्खंभेणं' એક येल्पन केटली लांजी पहेली छे. 'अद्ध जोयणं बाह्ल्डेणं' अर्धा येल्पनना विस्तार वाली छें 'सन्वमणिमइया' सर्व रीते स्कृटिक, भर-क्रत विशेर मिण्निय छे. 'सीहासणा माणियन्त्रा' अद्धियां सिंह्रासनीनुं क्रथन क्ररी देवुं.

'तेसिंगं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ' એ नाटयशाणानी आगण 'मणिपेडियाओ पण्णताओ' मिष्यिपिठिश ४ छे 'ताओणं मणिपेडियाओ हो जोयणाइं' के मिष्यिठिशको से येजन केटली 'आयामिवक्खंभंणं' आयाम विष्ठं स वाणी छे. 'जोयणं बाइल्लेणं' એક येजन केटली विस्तृत छे. 'सच्च मणिमइओ' सर्व रीते मिष्यिभय छे.

હવે એ મહિ,પીઠિકાના ઉપરના સ્તંભનું વર્લાન કરવામાં આવે છે.-'તેસિનં' એ મિલ,પીઠિકાની 'ઉભિ' ઉપર 'पત્તેંચ પત્તેંચં' પ્રત્યેકના 'તઓ શૂમા પન્નાં' ત્રણ સ્તં લા

प्रज्ञप्ताः, जीवाभिगमादौ तु चैत्यस्तूवा इति पाठः 'तेणं भूभा ते स्तूवाः खख दे 'जोण-णाइं योजने 'उद्धं उच्चत्तेणं' उद्धं पुच्चत्वेन 'दो जोयणाइं आयामिवक्संभेणं' द्वे योजने आयामविष्करभेण-दैर्ध-विस्ताराभ्याम् , तत्र द्वे योजने देशोने ग्राह्ये अन्यथा मणिपीठिका-तदुपरितनस्तूपयोः समानमानता स्यात्, जीवाभिगमादौ तु सातिरेके द्वे योजने उच्चत्वेन ते वर्णिताः, ते च स्तूषाः 'सेवा' श्वेताः-श्वेतवर्णाः, श्वेतत्त्रमेवीपमया दृढी करोति-'संख तल जाव' शङ्कतलयावदिति-यावत्पदेनात्र-शङ्क-दल शब्दघटितं पदं बोध्यम् तथा च 'शङ्क-तलविमलनिर्मलद्धिवनगोक्षीरफेनरजतनिकरप्रकाशः" इति ग्राह्यम् , तत्र शङ्खतलं –तदेव विमलं स्त्रच्छवर्णं, प्राकृतत्वादिह विशेषणपरप्रयोगः, विमलशङ्खतलमिति पर्धवसितम् -निर्मल-द्धिवनः- स्वच्छगाढद्धि गोक्षीरफेनः-गोदुग्ध फेनः रजतं-रूप्यम् एतेषां यो निकरः-समूह्स्तस्य प्रकाश इव प्रकाशो येषां ते तथा-निर्मळशङ्खतलादि समृहसदृश्चेतवर्णाः ते पुनः सर्वरत्नमयाः अच्छा यावत् प्रतिरूपाः' इति प्राग्वत् किम्पर्यन्तं ग्राह्यमित्याइ-'अद्वद्वमंगलगा' तीन स्तंभ कहे गए हैं। अर्थात् स्मृति स्तंभ कहे हैं। जीवाभिगम में चैत्य स्तूप ऐसा पाठ है 'तेणं थुभा' वे स्तंभ 'दो जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं' दो योजन ऊपर ऊंचे थे। 'दो जोयणाई आयामविक्खंभेणं' दो योजन का इनका विस्तार हैं। वहां दो योजन देशून ग्राह्य है अन्यथा मणिपीठिका एवं उसके उपर के स्तृप का समान मान हो जायगा. जीवाभिगमादि में तो सातिरेक कुछ अधिक दो योजन कहकर वर्णित किया हैं। वे स्तूप 'सेया' श्वेत कहे हैं वे किस प्रकार की भ्वेतता बाले हैं उसके लिए कहते हैं-'संखतल जाव' संखके तल के समान यावत् निर्मल दही के समान घन गाय के द्धके फेन के समान चांदी के ढेर के समान श्वेत है। वे सर्वात्मना रत्नमय है। अच्छ यावत प्रतिरूप इत्यादि पहले कहे अनुसार समजलेवें वह वर्णन कहां तक गृहण करे ? इसके लिए कहते हैं-'अट्रड

કહેલા છે, એટલે કે ત્રણ સ્મૃતિ સ્તં ભા કહ્યા છે. જીવાલિગમમાં ચૈત્યસ્ત્ય એ પ્રમાણેના પાઠ છે. 'તેળં થૂમા' એ સ્તં લા 'તો जोयणाइ आयामित्रक्षं मेળ' એ ચાજન જેટલા તેના આયામિત્રક લ છે. 'તો जોયणाइ उद्धं उच्च तेणं' એ ચાજન જેટલા ઊચા છે. અહીં યાં આ એ ચાજન કંઈક ન્યૂન ચહુણ કરવાના છે, નહીં તર મણિપીઠિકા અને તેની ઉપરના સ્તૂપનું સરખું માપ થઈ જશે. જીવાલિ મ વગેરમાંના સાતિરેક કંઈક વધારે એ ચાજન એ પ્રમાણે કહીને વર્ણન કરવ માં આવેલ છે. એ સ્તૂપ 'તેયા' સફેદ કહેવામાં આત્યા છે. તે કેવા પ્રકારની સફેદાઈ વાળા છે. તે અતાવવા માટે સૃત્રકાર કહે છે —'સંસ્થતન जાયના દૂધના કાંખના તળિયા સરખા અહિયા યાવત્ પદથી નિર્મળ દહીં ની સમાન ગાયના દૂધના કીધુની સમાન ચોદીના ઢગલાની સમાન એ સફેદ છે. એ સ્તૂપ સર્વાત્મના રત્નમય છે. અચ્છ યાવત્ પ્રતિરૂપ ઈત્યાદિ વિશેષણા પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે સમજ લેવાં. એ વર્ણન અહિયાં ક્યાં સુધીનું ચહુણ કરવાનું છે? એ માટે સ્ત્રકાર કહે છે. 'અટ્ટુ મંગના ' આઠ

अष्टाष्ट्रमङ्ग त्रकानीति—अष्टाष्ट्रमङ्गलकानीत्येतत्पद्वर्थन्तम् ।

अथ तत्सन्पचतुर्दिशि यद्सित तदाह-'नेसि णं थूभाणं चउहिति' तेषां खळ स्त्पानां चतुर्दिशि—चतस्य दिश्व 'चतारि मणिपेहियाओ पण्णत्ताओ' चतस्रा मणिपीठिकाः प्रज्ञप्ताः, तासां मानमाह-'ताओणं गणिपेहियाओ जोयणं आयामवित्संभेणं' ताः खळ मणिपीठिकाः योजनम् आयामविद्धम्भेण-दैष्ट्येविस्ताराभ्याम्, 'अद्धजोयणं बाह्रुलेणं' अर्द्धयोजनं बाह्ल्येन-पिण्डेन, अत्र मणिपीठिकासु 'जिणपिडिमाओ' जिनप्रतिमाः-जिनप्रतिकृतयो 'वत्तव्वाओ' वक्तव्याः, तत्त्वत्रगेवम्-'तासि णं मणिपेहियाणं उप्पि पनेयं पनेयं चत्तारि जिनपिडिमाओ जिणुस्सेहप्पमाणिमत्ताओ पिल्यंकसिण्णसण्णाओ धूमाभिमुहीओ चिहंति, तं जहा-उसभार बद्धमाणार चंदाणणा वारिसेणा' एतच्छायाऽथीं सुगमी। एतद्दर्णना-दिकं वैतादचपर्वतीय सिद्धायतनाधिकारे पूवमभिहितम्।

इति स्तुपवर्णनम् ॥

मंगलगा' आठ आठ मंगल द्रन्य यह पद पर्यन्त समझ छेवें ।

अब वह स्तूप के चारों तरफ चार मणिपीठिकादि कहते हैं-'तेसिंणं धूमाणं चडिसिं' वह स्तूप के चारों ओर 'चत्तारि मणिपेठियाओ पण्णत्ताओ' चार मणिपीठिकाएं कही गई है। 'ताओणं मणिपीढियाओ' वे मणिपीठिकाएं 'जोयणं आयामविक्खं मेणं' एक एक योजन की लंबी चौडी हैं। 'अद्ध जोयणं बाहल्लेणं' आधे योजन की मोटी हैं इन मणिपीठिका में 'जिण पिडमाओ वत्तव्वाओ' जिन प्रतिमा कहनी चाहिए। उसका सञ्जपाठ इस प्रकार का है-'तासिंणं मणिपेढिया णं उप्पि पत्तेयं पत्तेयं चत्तारि जिणपिडमाओ जिणुस्सेहपमाणिमित्ताओ पिलयंक स्विणसण्णाओ धूमाभिष्ठहीओ चिट्टंति तं जहा-उसभा १ बद्धमाणा २, चंदाणणा ३ वारिसेणा ४ इसका अर्थ सुगम है। यह वर्णनादि वताढ्य पर्वत में सिद्धायतन के वर्णन में पहले कहा हैं तदनुसार यहां पर वर्णित करलेवें।

स्तूप वर्णन समाप्त

આઠ મંગલ દ્રવ્ય કહેલ છે. એ પાઠ પર્યાન્ત એ કથન ગ્ર**હણ** કરી લેવું.

હવે એ સ્તૂપની ચારે બાજી ચાર મિલ્યુપીઠિકાદિનું કથન કરવામાં આવે છે.—'तेसि णं शुमाणं चडिं सिं' એ સ્તૂપની ચારે બાજી 'चत्तार मिल्यिढियाओ पण्णत्ताओ' ચાર મિલ્યુ પીડિકાએ કહેલ છે. 'તઓનં मिल्यिढियाओ' એ મિલ્યુપીઠિકાએ 'जोयणं आयासिवक्संमेणं' એક એક ધાજન જેટલી લાંબી અને પહાળી છે. 'अइजोयणं बाह्ल्लेणं' અર્ધા ધાજન જેટલી વિસ્તૃત છે, એ મિલ્યુપીઠિકામાં 'जिल्यिडिमाओ पण्णत्त ओ' છન પ્રતિમાએ કહેલ છે. તેના સ્ત્રપાઠ આ પ્રમાણે છે. 'तार्सिणं मिल्यिढियाणं डोप्य पत्तेयं चत्तारि जिल्यिडिमाओ जिलुस्सेह्यमाणिमत्ताओ पिल्यंकसिल्यिसण्लाओ थूमाभिमुहीओ चिट्ठंति, तं जहा—उसमा १ वद्यमाणा २ चंदाण्ला ३ वारिसेणा ४' આ પાઠના અર્ધ સરસ છે જેથી આપેલ નથી. આ વર્ણન પહેલાં સિદ્ધાયતનના વર્ણનમાં કહેલ તે પ્રમાણે અર્દ્ધિયાં પણ વર્ણન કરી લેવું.

अथ चैत्यवृक्षान् वर्णियतुमुपक्रमते-'चेइयरुक्खाणं मणिपेढियाओ दो जोयणाइं आयामित्रखंभेणं जोयणं बाइल्छेणं' चैत्यवृक्षाणां मणिपीठिकाः द्वे योजने आयाम-विष्क्रम्भेण
योजनं बाइल्येन-पिण्डेन अत्र सम्पूर्णः 'चेइयरुक्खाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते,
च जीवाभिगमत्रोक्तोऽत्र न्यस्यते-'तेसि णं चेइयरुक्खाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते,
तं जहा-वहरम्लर्थयसुप्रहियविडिमा रिद्वामयकंद्वेरुलियरुइल्खंशा सुजायवरुजायरूक्षमदुवविसालसाला णाणामणिर्यणविविद्दसाहप्पसाहचेरुलियपत्तविण्जजपत्तवेटा जंबुणयरक्षमदुवसुकुमालपवालपल्लववर्वसुर्थरा विचित्तमणिर्यणसुरभिकुसुमफलभरणियसाला सच्छाया
सप्पमा सिस्सिरीया सउजनोया अमयर्सस्ममरसफला अहियमणनयणिच्बुइकरा पासाईया
जाव पिड्लवा४' इति, एत्वल्लाया-तेषां खलु चैत्यवृक्षाणामयमेतदूषो वर्णावासः प्रज्ञप्तः,
तद्यथा-वज्रमूलर्जतसुप्रतिष्ठितविडिमाः रिष्टप्यकन्दवैहूर्यरुचिरस्कन्धाः सुजातवरजातरूपप्रथमविशालशालाः नानामणिर्रनिविधिशाखात्रशाखावैहूर्यपत्रतपनीयपत्रवृन्ताः जाम्बूनदरक्त-

अब स्त्रकार चैत्यवृक्षका वर्णन करते हैं-'चइयहक्खाणं मणिपेदियाओं दो जोयणाई आयामविक्तंभेणं जोयणं बाहरूछेणं' चैत्यवृक्ष की मणिपीठिका का आयाम विष्कम्भ-लंबाइ चोडाइ दो योजन की है एवं एक योजन की मोटाई है। 'चेइयहक्खवण्डों' यहां पर सम्पूर्ण जीवाभिगम में कहे अनुसार कहना चाहिए, जो इस प्रकार है-'तेसिंगं चेइयहक्खाणं अयमेयारूवे बण्णाबासे पण्णत्ते तं जहा बहरमूलरयय सुपइट्टिय विडिमा रिट्टामयकंदवेहिलयहहल्खंधा सुजायबरजायरूव पढमविसालसाला णाणामणिरयणविविह्साहप्पसाह देहिलय पत्ततवणिष्ज-पत्तवेटा, जंबूणयर समउयसुकुमालय्वालपत्लववरंकुरधरा विचित्तमणिरयण-सुरभिकुसुमफलभरणियसाला सच्छाया, सप्पभा, सिस्सरीया सउदजोया, अमयरससमरस्पला अहियमणणयणिनव्युद्दकरा पासाईया, दिस्सणिज्ञा जाब पडिक्वा ४ इति।

द्वे स्त्रधर वैत्यवृक्षतुं वर्ण्न इरे छे. 'चेइयक्त्रखाणं मणिपेढियाओ दो जोयणाई आयामवित्रखंभेणं जोयणं बाहल्छेणं' वैत्यवृक्षती भिष्णुपीिऽधने। आयाम विष्डंस संभाधि पहें। यह से छे थे। यह से छे थे। यह से छे थे। यह से छे। विस्तारवाणी छे. 'चेइयक्त्रखवण्णओं' अही'यां संपूर्ण वैत्यवृक्षतुं वर्ण्न हरी क्षेत्रं के छे वर्ण्न छवासिगमसूत्रभां हहा। प्रभाषे हहीं क्षेत्रं ले आ प्रभाषे छे—'तेसिणं चेइयक्त्रखाणं अवसेयाक्त्रे वण्णावासे पण्णत्ते' तं जहा—वइत्यूळ्रयय सुवइद्विविद्या रिट्टामयकं देवेरिळ्यक्डळंथा सुजाय—वर्जाय क्ष्व परमित्रसाळ्याळा णाणामणिरयण विविद्य साहणसाह वेरिळ्य पत्ततवणिज्जपत्तवेटा, जंबूणयरत्त मजयसुकुमाळ्यवाळ्वरंकुरघरा, विचित्तमणिरयणसुरिभकुसुमफळ्भरणियसाळा, सच्छाया, सप्पभा, सिस्सिरिया, सडब्जोया, अमयरससमरसफ्छा, अहिय मणणयण णिव्युइकरा पासाइया द्रिसणिड्जा जाव पडिक्वा, ४ इति

मृदुकसुकुमारप्रवालपञ्जवनराङ्करधराः विचित्रमणिरत्नसुरभिकुसुमफलभरणमितशालाः सच्छा-याः, सत्प्रभाः, संश्रीकाः सोद्द्योताः अमृतरससमरसकलाः अधिकमनोनयननिर्वृतिकराः प्रासादीयाः यावत् प्रतिरूपाः' इति, एतद्व्यारूया-'तेसि णं' इत्यादि-तेषां खळ चैत्य-वृक्षाणां-स्तूपवृक्षाणाम् अयमेतद्रूषः-अनुपदं वक्ष्यमाणस्वरूषः वर्णानासः वर्णनकमः, प्रज्ञप्तः, तद्यथा-वज्जमयरजतसुप्रतिष्ठितविडिमा:-वज्ञाणि एव वज्ररत्ममयानि मूलानि येषां ते वज्र-मूलाः ते च ते रजतसुप्रतिष्ठितविडिमाः रजतमेव रजतमयी सुप्रतिष्ठिता – सुष्ठु प्रतिष्ठिता अवस्थिता विडिमा अत्यन्तमध्यदेशभागे ऊर्ध्वनिः सतशाखा येषां ते तथाभूताश्चेति तथा, रिष्टमयकन्दवैद्वर्यरुचिरस्कन्धाः - रिष्टमयः - रिष्टरत्नमयः कन्दौ येषां ते रिष्टमयकन्दाः, ते च ते वैड्रथरुचिरस्कन्धाः-वैड्रथमेव-वैड्रथमयः रुचिरः शोभनः स्कन्धो येपां ते तथाभूताश्चेति तथा, सुजातवरजातरूपप्रथमविशालशाखाः - सुजातं मूलद्रव्यशुद्धं वरं-प्रथानं च यज्जातरूपं रजतं तदेव तन्मयी प्रथमः=मूलभूता, विशालाः-विस्तारयुक्ताः शालाः-शाला येषां ते तथा, नानामणिरत्नविविधवाखावैहर्भपत्रतपनीयवृत्ताः-नानामणिरत्नान्येव - नानामणिरत्नमध्यः विविधाः-अनेकप्रकाराः शाखाः-मूरशाखा निःष्ठतशाखाः प्रशाखाः-शाखानिःस्तशाखाः येषां ते तथाभूताश्च ते वैडूर्यवत्राः वैडूर्याण्येत्र-वैडूर्यमयानि एत्रःणि येषां ते तथाभूताश्च ते तपनीयवृत्ताः तपनीयानि सुवर्णानि तान्येव-तन्मयानि वृत्तानि-प्रसवबन्धमानि येषां ते तथाभूताश्चेति तथा, जाम्बूनदरक्तमृदुकसुकुमारप्रवालप्रख्यवराङ्करथराः-जाम्ब्नदानि तन्ना-मकस्वर्णिविशेषाः, तान्येव-तन्मया रक्ताः-रक्तवर्णाः मृदुकसुकुमाराः-मृदुकाः मृद्व एव मृदुका-स्तेषु-सुकुमारास्तथा-अत्यन्तकोमलाः प्रवालाः-ईषदुन्मीलितपत्रभावरूपाः परलवाः-संजातः

उन स्तृप बृक्षों के वर्णन प्रकार इस प्रकार है-वज्रमय रजत सुविद्या इस की विडिमा-शाखाएं हैं। अर्थात् वज्रस्तमय मूज प्रदेश रजत से स्प्रतिष्ठित शाखाएं हैं एवं वे शाखाएं बहुत जंबी उठि हुई है। रिष्ट रत्नमय उनका कंद है, वैड्रथरत्नमयकचिर स्कंध है। संदर जातरूप-चांदी मय विस्तारयुक्त प्रथम शाखाः वाले, अनेक प्रकार के रत्नमय विविध शाखाबाले, देड्रथ रत्नसरीसे पत्तेवाले, सुवर्णमय बृत्तवाले जंणूनद नाम के सुवर्णभय रक्तवर्णवाले कोमल अतएव सुकुः मार-अत्यन्त कोमल प्रवाल से युक्त, कुछ जुके हुवे पत्लब से युक्त, संदर अंकुर

એ સ્તૂપ વૃક્ષાના વર્જીન પ્રકાર આ પ્રમાણે છે-વજમય રજત સુપ્રતિષ્ઠિત તેની વિડિમા–શીખાએ છે. અર્થાત્ વજારતનમય મૂલપ્રદેશ રજતથી સુપ્રતિષ્ઠિત એવી શાખાએ છે, તેમજ એ શાખાએ ઘણી જ હંચી ગયેલ છે. રિષ્ઠરતનમય તેનું શડ છે. વૈડ્યંરતન મય રૂચિર સ્કંઘ છે. સુંદર જાત રૂપ કહેતાં અંદિમય અને વિસ્તારવાળી પ્રથમશાખા વાળા, અનેક પ્રકારના રતનમય વિવિધશાખાવાળા, વૈડ્યંરતના પાંદડાવાળા, સુવર્જી મય વૃંત દીટાવાળા, જંખૂનદ નામના સુવર્જી મય લાલવર્જી વાળા કામળ એથીજ સુકુમાર અત્યંત કામળ પ્રવાલથી યુક્ત, કંઇક નમેલ પાંદડાવાળા, જેના સુંદર અંકુરા છે એવા પ્રાથમિક

पूर्णप्रथमपत्रमावनक्षणाः ये वराङ्कराः-प्राथमिकोद्भेदप्राप्ता अभिन्नोदितः तेषां घराः-घारका ये ते तथा, विचित्रमणिरत्नस्रभिकुसुमफलभरनितशाखाः-विचित्राणि यानि मणिरत्नानि चैतदुभयानि तान्येय-तन्मयानि स्रभिकुसुमफलानि स्रभीणि-सुगन्धीनि यानि कुसुमानि-पुष्पाणि तानि फलानि चैतदुभयानि तेषां भरेण-समूहेन निम्ताः-नम्नी-कृताः शाखा येषां ते तथा, सच्छाया-सती-श्लोभना-निविद्धेति भावः छाया येषां ते तथा, सत्प्रभाः-सती-समीचीना प्रभा-कान्तिर्येषां ते तथा, 'सप्पभा' इत्यस्य 'सप्रभाः'' इति-च्छापापक्षे तु प्रभाया सहिता इति विवरणम्, अत एव सश्लीकाः-श्लिया-श्लोभया सहिताः, सोद्द्योताः-सप्रकाशाः मणिरत्नगण्किरणस्फुरणस्चात्, अमृतरससम्रसफ्लाः-अमृतरस-सम्रसानि-अमृतस्य यो रसः-द्रशः तेन समः-समानः रसो येषां तानि तथाभूतानि फलानि येषां ते तथा, अधिकमनोनयनिर्वृतिकराः-अधिकं-प्रचूरं यथास्याचथा मनोनयनिर्वृतिं मनोनयनयोः-चित्तनेत्रयोः निर्वृतिम्-आनन्दं कुर्वन्ति-सम्पादयन्तीत्येषं शीलाः, प्रासा-दीयाः यावत्-यावत्यदेन 'दर्शनीयाः, अभक्षपा' इत्येतः पदद्वयं सङ्ग्राह्मम् तथा प्रतिकृषाः, एषां व्याख्या प्राग्वद्वोध्या।

'तेणं चेइयस्वा अन्ते हिं वहू हिं तिलयल वय च्छत्तो वर्गासरी ससत्ति वणाद हिवणालो द्व-धवचंदणनी वकुड वक्तयं चपणस्तालतमाल पियाल पियाण पियापादावयरायस्व सनंदिस्क से हिं सन्व ओ समंता संपि विस्ता' इति, एत च छाया—'ते सल्ल अन्ये बहु भिः तिलक लवग च छत्रो पाशिरी प

जिन के हैं प्राथमिक जिल्में को प्राप्त, नवोदित पत्ते से युक्त विचित्र मणि रहनमय सुरिम कुसुम एवं फल के भार से निमत-जुकी हुई है शाखाएं जिनकी ऐसे अत्यंत गाढ छाया से युक्त, खंदर कान्तिवाल एवं खंदर कांति से युक्त शोभा से युक्त, मणि एवं रहन समूह के किरण के स्फुरण से प्रकाशवाले, अमृत के रस सरीखे रसवाले फलोंसे युक्त, मन एवं नेत्र के अतीव आनंदपद प्रासादीय, यावत दर्शनीय, एवं अभिक्ष, प्रतिकृप कहे हैं प्रासादीय इत्यादि पदों का अर्थ पहले कहे गए हैं। अतः वह जिज्ञास वहां से समजलेवें, 'तेणं चेइयक्चा अण्णेहिं बहुहिं तिलय लवयक्छत्तोवग सिरीससिन्तवण्ण दहिवण्ण लोद धव चंदण नीव कुडय क्यंव पणस ताल तमाल पियालपियंग्र पारावय रायक्वलणंदीक्वलेहिं सब्बओ

७द्रसेदने प्राप्त नवा आवेदा पांडडावाणा, विचित्रमिण् रतनभय सुगंधित पुण्य अने क्षणाना सारधी नमेली छे शाणाणा जेमनी छेवा, अत्यंत धाढ छायावाणा, सुंहर क्षंतिवाणा तेमज सुंहर क्षंतिथी युक्त, शासायभान मिण् अने रत्नाना समूहना किरिणाना क्रिकाश क्षशायाणा, अभृतना रस जेवा रसवाणा क्षणायी युक्त, भन अने नेत्राने अत्यंत आनंह आपवावाणा. प्रासाधीय विशेष पढ़ीना अर्थ पढ़ेलां क्षहेवामां आवेल छे. तेथी श्रासुणाओ ते अर्थ त्यांथी सम्ल लेवा. 'तेणं चेइचहक्ला अण्णेहिं बहुहिं तिलय लवयच्छत्तोवग सिरीससतिवण्णदहिवण्णलोद्धधवचंदणनीवकुडयक्यंवपणसतालतमाल पियालपियंगुपारावयराय-हक्लणंदीहक्लेहिं सन्वओ समंता संपरिक्लिता इति' से सैत्यवृक्षा भीना अनेक तिलक्ष

सप्तपर्णद्धिपर्णछोध्रधवचन्दननीपक्टुटजकदम्बपनसतालत्यालप्रियालप्रियल्यास्यत्राजवृक्ष-नन्दिवृक्षैः सर्वतः समन्तात् सम्परिक्षिप्ताः, व्याख्या च च्छायागम्या, तिलकादि वृक्षपरिचयो लोककोशगम्यः,

'ते णं तिल्या जाव नंदिरुवि मूलवंतो कंद्यंतो जाव सुरम्मा' लाया—ते खल तिल्का यावद् नन्दिवृक्षाः मूलवन्तः कन्दवन्तो यावद् सुरम्याः, इति, व्याख्या—ते खल्ल—उपर्युक्ताः तिल्का यावक्षन्दिवृक्षाः—तिल्कादि नन्दिपर्यन्तवृक्षाः परिक्षेपभूताः कीद्याः ? इत्याह—मूलवन्तः कन्दवन्तो यावत्सुरम्याः, इह यावत्पदेन—'स्कन्धवन्तः, स्वय्वन्तः, शालावन्तः, प्रवालवन्तः, पत्रवन्तः, पुष्पवन्तः, बीजयन्तः, आनुपूर्वीसु नातरुचिरवृत्तभावपरिणताः एक-स्कन्धिनः, अनेकशाखाप्रशाखाविद्याः, अनेक नरत्यामसुप्रसारिताम्बद्यमविदुलवृत्तस्कन्धाः, अच्छिद्रपत्राः अविरलपत्राः, अवातीनपत्राः अनीतिपत्राः, निर्धृतन्तरुठपाण्ड्षयाः, नवहरित-समंता संपरिक्तिला इति' वे चैत्यवृक्ष अन्य अनेक तिलक्ष, लवक, लत्रोपग, शिरीष, सप्तपर्ण, दिधपणे, लोध, धव चन्दन, नींब, कुटज, कदम्य, पनस, ताल तमाल, प्रियाल, प्रियंगु, पारावत, राजवृक्ष नन्दीवृक्ष्य, इत्यादि वृक्षों से चारों ओर से व्याप्त हैं इनवृक्षों का परिचय लोकव्यवहार एवं कोष से समझ लेवें।

'तेणं तिल्या जाव नंदीस्क्ला मूलवंतो कंद्वंता जाव खरम्मों उपर में कहे गए तिलक, यावत् नंदिवृक्ष पर्यन्त के वृक्ष मूल से युक्त, कंद से युक्त यावत् खरम्य हैं यहां यावस्पद से स्कंध से युक्त, त्वचासे युक्त, शाखासे युक्त, प्रवाल से युक्त, पत्र से युक्त, पुष्पसे युक्त, फलसे युक्त, बीज से युक्त, अनुक्रमसे खंदर प्रकार के रुचिर वृक्तभाव से परिणत ऐसे एकस्कन्ध वाले अनेक शाखा प्रशाखा एवं पत्तेवाले, अनेक मनुष्य ने फेलाई हुई व्याम से अहण करते योग्य ऐसा घन विस्तृत गोलाकार से युक्त स्कंधवाले, छिद्रविना के पत्तेवाले अविरल-साद पत्तेवाले निर्धु मजाल से पीत पत्तेवाले नये अतए हरित वर्णवाले प्रकाशमान

લવક, છત્રાપગ, શિરીષ, સપ્તપર્ણ, દિધપર્ણ, લેધ, ધવ, ચંદન, નીવ, કુટજ, કુંદન, પાલુસ, તમાલપ્રિયાલ, પ્રિયંગુ, પારાદત, રાજવૃક્ષ, નંદીવૃક્ષ, વિગેરે વૃક્ષાથી ચારે તમ્ફથી વ્યાપ્ત થયેલ છે. આ વૃક્ષાના પારચય લાક વ્યવદાર તેમજ કાય પ્રાથાથી સમજ લેવા.

'तेणं तिलया जाव णंदीहक्ता मूलवंतो, कंदवंतो, जाय सुरम्गा' ७५२ ४६वामां आवेस तिस्क यावत् मंदीवृक्ष सुधीना वृक्षेत्, भूसथीशुक्रत, कंदशीशुक्रत यावत् सुरम्य छे, अढीयां यावत्पद्धी स्कंधधीशुक्रत, छासथीशुक्रत, उलाधी शुक्रत, प्रवासथी शुक्रत, प्रतिथीशुक्रत, पुष्पेश्वी शुक्रत, प्रवासथी शुक्रत, प्रवासथी शुक्रत, प्रवासथी शुक्रत, प्रवासथी शुक्रत, अनुक्षमथी सुंदर प्रश्चरना इचिर वृन्तकावथी परिख्रत क्रीवा क्रीक स्कंधवाला, अनेक शाणा प्रशाणा, तेमक पत्रीवाला अनेक मनुष्ये के देसावेस वामथी अढ्य करवा येल्य क्रेवुं धन विस्तारवालुं. जोसाक्षार स्कंधवालुं छिद्र विनाना प्रताक्षेत्राकुं अविरक्ष-सान्द्र पत्ताक्षेत्रावालुं. निर्धूम कराधी पीला पत्ताक्षेत्रावाला नवा द्वावाथी

भासमानपत्रभारान्यकारगम्भीरदर्शनीयाः, उपविनिर्गत नवतरुणपत्रपछवकोमलोज्ज्वलचलिकसलयसकुमारप्रवालकोभितवराङ्कुराग्रशिखराः, नित्यं कुसुमिताः, नित्यं मुकुलिताः, नित्यं लविकताः नित्यं स्तविकताः, नित्यं गुलिमताः, नित्यं गुलिखताः, नित्यं यमलिताः, नित्यं युगलिताः, नित्यं विनिमताः नित्यं प्रणमिताः, नित्यं सुविभक्तप्रतिमञ्जर्यवतंसकथराः, नित्यं कुसुमिवमुकुलितलविक्तिताः नित्यं प्रणमिताः, नित्यं सुविभक्तप्रतिमञ्जर्यवतंसकथराः, नित्यं कुसुमिवमुकुलितलविक्तित्रणमितस्विन्मतप्रविन्मतप्रविमञ्जर्यवतंसकथराः, शुक्रवर्षण—मदन—श्रलाका—कोकिल—कोरक—भृङ्गारक—कोण्ड-लक्क-जीवञ्जविक—नन्दीमुख—कपिक—पिङ्गलाक्षक—कारण्डव—चक्रवाक—कलहंस—सारसानेक शक्कनगणमिथुनविरिचतशब्दोन्नतमधुरस्वरनादिताः' इत्येषां पदानां सङ्ग्रहो बोध्यः सरम्याः प्रां मूलवद्यदि सरम्याणां पदानां व्याख्या पञ्चमस्त्रतो बोध्या,

'ते णं तिल्या जाव नंदिरवला अन्नाहि बहु हिं पडमलयाहि जाव सामलयाहि सव्वओ समंता संपरिविखना' लाया-ते खल तिलका यावनिद्शाः अन्याभिर्वहुभिः पद्मलताि पत्नों के भार के अन्धकार से गम्भीर दर्शनीय, ज्यर ऊठे हुवे नये एवं तरण कोमल पत्ने से प्रकाशित चलायमान किसलय एवं सुकुमार प्रवाल से शोभित सुन्दर अंकुराग्र शिलरवाले, नित्य कुसुमित, नित्य मुकुलित, नित्य लवित नित्य स्ववित, नित्य गुल्मित, नित्य गुल्मित, नित्य गुल्लित, नित्य यमिलित, नित्य यगिलित, नित्य विन्मित, नित्य प्रणमित, नित्य अच्छे प्रकार से विभक्त प्रति मंजरी रूप अवतंसक-विस्त्र को धारण करनेवाले, शुक्त, बहि, मदनशलाका कोकिल-कोरक भुङ्गारक कोंडलक, जीवं जीवक-नंदीमुख-कपिल-पिंगलाक्षक कारंडव चक्रवाक, कलहंस सारसादि अनेक पिक्षगण के मिथुन के द्वारा किए गए उच्च एवं मधुर स्वर से नादित, इन सब पद यावत पद से ग्रहीत करलेना। सुरम्य आदि पदों की व्याख्या पांचवें सुत्र से समझलेवें।

'तेणं तिलया जाव नंदिसक्खा अन्नाहिं बहुहिं पश्मलयाहिं जाव सामलयाहिं

લીલારંગ વાળા પ્રકાશમાન પત્રાના ભારના અંધકારથી ગંભીર, દર્શનીય ઉપર હઠેલા નવા અને તરૂલુ કામળ પત્રાથી પ્રકાશિત ચલાયમાન કિસલય અને સુકુમાર પ્રવાલાથી શાભાયમાન સુંદર અંકુરાત્ર શિખરાવાળા નિત્ય કુસુમિત્ત, નિત્ય સુકુલિત, નિત્ય લવક્તિ, નિત્ય સ્તાબક્તિ, નિત્ય સુલિત, નિત્ય લવક્તિ, નિત્ય પ્રશુમિત, નિત્ય સુલિત, નિત્ય વિનમિત, નિત્ય પ્રશુમિત, નિત્ય સુંદર રીતે વિભક્ત, પ્રતિમંજરી રૂપ અવતંસક—વસ્ત્રને ધારણ કરવાવાળા શુક, અહિં, ચંદનશલાકા, કારક, ભૃંગારક, કોંડલક, જીવંજીવક, નંદીમુખ-દિપલ, પિંગલાક્ષક કારંડવ ચક્રવાલ, કલઢંસ સારસાદ અનેક પક્ષિત્રણેના મિશુના દ્વારા કરવામાં આવેલા ઉંચા મીઠા સ્વરાના નાદવાળા, આ બધા પદા યાવત પદથી સમજ લેવા. સુરમ્ય વિગેર પદાની વ્યાખ્યા પાંચમાં સૂત્રથી સમજ લેવી.

'तेणं तिलया जाव नंदिरुक्ता अन्ताहिं बहुहिं पउमलयाहिं जाव सामलयाहिं सव्वओ

यावच्छ्यामछताभिः सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्ताः, व्याख्या स्पष्टा नवरं पद्मछताभियीयः च्छ्यामछताभिरित्यत्र यावत्पदेन-'अशोकछताभिः, चम्पकछताभिः, च्वत्छताभिः, वन-छताभिः, वासन्तीछताभिः' इति सङ्ग्रत्ह्यम् ।

'ताओ णं पउमलयाओ जाव सामलयाओ निच्चं कुसुमियाओ जाव पहिस्वाओ' छाया-ताः खल पद्मलताः नित्यंकुसुमिता यावत् प्रतिरूपाः, व्याख्या स्पष्टा-प्रथमयाव-त्यदेन—नामलताः, अशोकलताः, चम्पकलताः वनलताः, वासन्तीलताः, अतिस्क्रकलताः, तिनिशलताः, च्तलताः' इत्येषां पदानां सङ्ग्रहः, द्वितीययावत्पदेन नित्यं सुकुलिता इत्यादि पदाना मन्नैव सन्त्रे संगृहीतानां ग्रहणं कार्यम्, एपां व्याख्या पञ्चमस्त्रतो बोध्या, किन्तु शाक्त्तंगृहीतेषु सम्पादिमद्दसभ्रमरादिपदानां सङ्ग्रहो नास्ति तेषां सङ्ग्रहो व्याख्या चैते पञ्चमस्त्रादेव ग्राह्म ।

सन्वओ समंता संपरितिखत्ता' ये तिलक यावत् नंदीवृक्ष अन्य वहुसंख्यक पद्मलता यावत् इयामलताओं से चारां ओर सर्वातमना व्यास रहते कहे हैं। यहां यावत्पद से अशोकलता, चम्मकलता, आमलता वनलता, वासन्तीलता का संग्रह समझ छेवें। 'ताओं णं पडमलयाओं जाव सामलयाओं निच्चं कुसुमियाओं जाव पडिख्वाओं' वह पद्मलता यावत् इयामलता नित्य कुसुमित यावत् प्रतिख्प आदि विशेषण विशिष्ट कही गई है। यहां प्रथम के यावत्पद से नागलता, अशोकलता, चम्पकलता वनलता, वासन्तीलता, अतिमुक्तकलता, तिनीशलता, आमलता, कुन्दलता इन लताओं का भहण समझलेवें। एवं दूसरे यावत्पद से नित्यं मुकुलिता इत्यादि पद जो इसी सन्न में पहले कहे गये हैं वे यहां पर भी बहीत करलेवें। इन पदों का अर्थ पांचवें स्त्रसे समझलेवें। परंतु पहले संग्रहीत संम्पातिम, हप्त, भ्रमर आदि पद का यहां ग्रहण नहीं है।

'तेसिणं चेइयरक्खाणं उप्पि अट्टह मंगलया बहवे झया छत्ताइछत्ता' वे चैत्य-

समंता संपरिक्खतां के तिलय यावत नं हिन्दक्ष भीछ धणी पदावता करने श्यामलताकाधी करि तरह सर्वात्मना व्याप्त रहे छे. कहिंचा यावत्पदधी कशोष्ठलता, वस्पक्षता, काम्र लता, वनलता, वायन्तीलताना संबद्ध ध्येत सम्भ लेवुं.

'તા કો ण पडमल्याओ जाब सामल्याओ निच्चं कुष्टुमियाओ, जाब पहिस्वाओ' એ પદ્મલતા યાવત શ્યામલતા નિત્ય કુસુમિત યાવતપ્રતિરૂપ વિગેર વિશેષણાથી વિશેષિત કહે-વામાં આવેલ છે, અહિંયાં પહેલાના યાવતપદથી નાગલતા, અશાકલતા, ચમ્પકલતા, વાસ-ન્તીલતા, અતિમુક્તકલતા, તિનીશલતા, આમલતા, કન્દલતા, આ લતાઓ ગ્રહણ કરાઈ છે. તેમજ ખીજા યાવતપદથી 'નિત્યં મુજી જિત્તા' વિગેર પદા કે જે આજ સૂત્રમાં પહેલા કહેવાઇ ગયેલ છે, તે અહીંયાં ગ્રહણ કરી લેવાં. આ પદાના અર્થ પાંચમાં સ્ત્રથી સમજ લેવા. પરંતુ પહેલાં સંગ્રહ કરાયેલ સંપાતિમ—દમ ભ્રમર વિગેર પદા અહીંયાં ગ્રહણ કરવાના નથી.

'तेसिंणं चेइयरक्साणं उप्पिं अट्टुट्ट मंगलया बहवे झया छत्ताइछता' ये यैत्यवृक्षनी

'ते सि णं चे इय रुवखाणं उप्पि अद्वद्धमंग्रस्या बहवे झया छत्ताइच्छत्ता' छाया-तेषां खलु चैत्यवृक्षाणामुपरि अष्टाष्टमङ्गलकानि बहवो ध्वजाः छत्र।तिच्छत्राणि' इति, व्याख्या छायागम्या, चैत्यवृक्षवर्णनं चैत्यस्तूपवद् बोध्यम् ।

इति चैत्यवृक्षवर्णनम् ।

अथ महेन्द्रध्वजावसरः—'तेसि णं चेइयक्वखाणं' इत्यादि—'तेसि णं' तेषां खल्ल पूर्वीकानां 'चेइयक्क्खाणं पुरओ' चैत्यवृक्षाणां पुरतः—अग्रे 'ताओं ताः—पूर्वोक्ताः 'मणिपेढियाओ
पण्णताओं' मणिपीठिकाः श्रज्ञप्ताः, तासां म नमाह—'ताओं णं मणिपेट्याओं जोयणं आयामविवखंभेणं' ताः खल्ल मणिपीठिकाः योजनमायामविष्कम्भेण देष्ट्यं—विस्ताराभ्याम् 'अद्धजोयणं' अद्धं योजनम्—योजनस्यार्द्धं 'बाहरुलेणं' बाहरुयेन—पिण्डेन, 'तिसि णं उप्पि' तासां
मणिपीठिकानासुपरि 'वत्यंर' प्रत्येकम् २ एकस्यामेकस्याम् 'महिंदाला पण्णत्ता' महेन्द्रध्वजाः प्रज्ञप्ताः, तेषां मानमाह—'ते णं' इत्यादिना—'ते णं' ते अननतनोक्ताः खल्ल महेन्द्रध्वजाः 'अद्ध्वमाइ' अद्धिरमानि—सार्द्धसप्त 'जोयणाइं उद्धं उच्चतेणं' योजनानि जध्वसुध्यत्वेन—उम्रतत्वेन 'अद्धकोसं' अर्द्धकोशम्—क्रोशस्यार्द्धम् 'उच्वेहेणं' उद्धेथेन—उण्डत्वेन 'अद्धवक्ष्य के जपर में आह्य आह्य महालक्ष्य अनेक ध्वजारं, एवं छन्नःतिस्त्र कहे हैं।

वृक्ष के उपर में आठ, आठ, भंगलक अनेक ध्वजाएं, एवं छत्र।तिछत्र कहे हैं।
॥ चैत्यवृक्ष का वर्णन समाप्त ॥

अव महेन्द्र ध्वज का वर्णन किया जाता है-'तेसिंणं चेइयर रखाणं पुरओ' पूर्वोक्त चैत्येवृक्ष के आगे 'ताओ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओं' वे पूर्वोक्त मणिपीठि-काएं कही है। 'ताओणं मणिपेढियाओ जोयणं आयामविक्खंभेणं' वे पूर्वोक्त मणिपीठिकाएं एक योजन का आयाम विष्कंभ-लंबाइ चोडाइ वाली एवं 'अद्ध जोयणं बाहल्लेणं' आधे योजन की बाहल्यवाली कही है 'तानिंणं उप्पि' वे मणि पीठिका के उपर 'पत्तेयंर,' प्रत्येक के उपर 'महिंद्द्रथ्या पन्नत्ता' महेन्द्रध्वजाएं कही गई हैं। 'तेण' वे महेन्द्रध्वजाएं 'अद्ध हुमाई' साडे सात 'जोयणाई उद्धं उच्चत्तेणं' योजन की जंबी कही है। 'अद्ध कोसं उच्चेहेणं' आधे कोस की उंडाई वाली है। यहां आधा कोस का माप एक सहस्र धनुष जितना लेवें। उसी प्रकार

ઉપર આઠ અઠ મંગલક અનેક ધજાએ। તેમજ છત્રાતિછત્રેા દેાવાનું કહેલ છે. ચૈત્યવૃક્ષનું વર્ષન સમાપ્ત

હવે મહેન્દ્ર धलानुं वर्णुन करवामां आवे छे -'तेसिंणं चेइयरवसाणं पुरओ' એ ज्यान्धिनी अज्ञाण 'ताओं मणिपेढियाओं पण्णत्ताओं' स्थे पूर्विक्रत मिल्पिरिका कहें छे. 'ताओणं मणिपेढियाओं जोयणं आयामविक्षंभेणं' स्थे पूर्विक्रत मिल्पिरिकाओं ने। आयाम अने विष्कृत स्थिपिर्वा केरे थे। अने केरेसा केरेसा केरेसा केरेसा किरतान्वाणी केरेस छे. 'तेसिंणं चिष्पि' स्थे मिल्पिरिकानी उपर 'पत्तेयं' हरेक्षनी उपर 'महिंद्ब्या पण्णत्ता' महेन्द्र धलायो। केरेस छे. 'तेणं' स्थे महिन्द्र धलायो। 'अद्भट्टनाई' साठा सात 'जोयणाई उद्धं उच्चतेणं' अर्धा है। से केरेसी डिंथी छे. अर्दीयां अर्धा

कोसं' अर्द्धकोक्षमानं च धतुः सहस्रं बोध्यम्, तदेव च 'बाह्रलेणं' बाह्रल्येन पिण्डेन, एवं महेन्द्रध्वजानां मानपुत्रता विशेषणमाह्—'ब्र्रामयबृह्वणाओ' व्यामयहृतिति—एतच्छ्रद्रपृटितं तद्वर्णकर्त्वतं वोध्यम् तथाहि 'ब्र्रामयबृह्लहृसंिठयसुसिलिहृपिरघृष्ट्महृसुव्हृद्विया अणेगवर्पंचवण्ण कुडभीसह्स्सपिरमंडियाभिरामा बाउद्धृयविजयवेज्ञयंती पडागा छत्ताइच्छत्तकलिया ढांगा गगणतलमिलंवमाणसिहरा पासाईया जाव पडिल्वा' इति छाया—वज्रमयवृत्तल्यः संिध्यत सुिल्हिट पृष्ट सुप्रतिष्ठिताः अनेक वर पञ्चवर्णकुडभीसहस्तपरिषण्डिताभिरामाः वातोद्धृतविजयवेजयन्ती पताकाच्छत्रातिच्छत्रकलिताः तुङ्गाः गगनतलमिल्हिताभिरामाः वातोद्धृतविजयवेजयन्ती पताकाच्छत्रातिच्छत्रकलिताः तुङ्गाः गगनतलमिल्हित्ताभिरामाः वातोद्धृतविजयवेजयन्ती पताकाच्छत्रातिच्छत्रकलिताः तुङ्गाः गगनतलमिल्हित्ताभिरामाः वातोद्धृतविजयवेजयन्ती पताकाच्छत्रातिच्छत्रकलिताः तुङ्गाः गगनतलमिल्हित्ताभ्याख्य तेच वृत्तल्वः संस्थिताः—वृत्तं—वर्त्तलं पतिच्छत्राः प्रासादीचाः यावत् प्रतिच्वाः—संल्याः तेच परिघृष्टाः—सम्यक् खरशाणया वर्षण्यासा ये प्रस्तरस्तं इव—परिघृष्टकल्याः तेच प्रद्याः कोमल्याणया मार्जन प्राप्ता इव—मृष्ट सहशाः ते च सुप्रतिष्ठिताः— सुस्थिराः—निश्चलाश्चेति तथा, अनेकेत्यादि—अनेकानि यानि वराणि—प्रधानानि पञ्चवर्णानि कुष्णाननील—लोहित—हारिद्र—सुक्लवर्णानि कुष्पीसहसाणि कुष्टभीनां लघुपताकानां सहस्राणि तैः परिमण्डिताः—सुशोभिताः अतप्वाभिरामाः—मनो-

वाहरुलेणं' उनका बाहरय का मान हैं अर्थात् उद्घेध के जितना ही इनका वाहरय है। 'वहरामय यह वण्णओं' वज्रमय वृत्त इत्यादि चान्दवाला उनका वर्णक सुन्न कह लेवें वह इस प्रकार हैं—'वहरामय वहलह संठिय सुसिलिह परिघट मह सुप् इहिया अणेगवरपंचवण्णकुडभीसहस्सपरिमंडियाभिरामा वाउद्ध्रुय विजयवेजयंती पडागा छत्ताइछत्त कलिया, तुंगा, गगणतलमभिलंधमाणसिहरा, पासार इया जाव, पडिकवा' इति वज्रमय वृत्त-वर्तुलाकार एवं मनोहर संस्थान वाले स्वाधार में संलग्न एवं खरसाण में घिसागया प्रातर-पथ्थरके जैसे कोमल ज्ञार णसे छिटके गए एवं सुस्थिर और निश्चल अनेक जो श्रेष्ठ पांचवर्ण-कृष्ण, नील, लोहित, हारिद्र, एवं शुक्ल ऐसे पांचवर्ण के छोटि छोटियताका से सुद्योभित

डे। अनु भाप क्षेष्ठ ६ कर धनुष केटलुं लेवानुं छे. क्षेक प्रमाखे 'बाहल्लेणं' तेनी करिन्यतानुं भाप अर्थात् उद्देधना केटलुं क तेनुं आहृत्य छे. 'वइरामय वृह्वण्णओं' वक्षभय वृत्त विभेरे शण्हे। वाणुं तेनुं वर्षुष्ठ सूत्र अर्थीं या हर्षी लेवुं ते क्या प्रमाखे छे.—'वइरामय वृह्लहुमंठियत्सिलिहु, परिघृष्ट महु सुपई हिया अणेगवर पंचवण्णकु हभी सहरस परिमंडिया भिरामा वा उद्ध्य विजयवेज यंती पड़ागा छत्ता इछत्तक छिया, तुंगा, गगणतल मिलंघमाण सिहरा; पासाइया. जाव पडिक्ता' धित वक्षभय वर्तु लाहार तेमक भने हिर संस्थानवाणा, पोताना आधारमां संलग्न तेमक भरशाख्मां धसेल पथ्थरना केवा है। भण शाख्यी छंटहाव हरेल तेमक सुरिधर तथा निश्चल क्येन्ड के उत्तम पांचवर्षु—हुम्खु, नील, लेबित, हारिष्ठ, क्येने शुरुल, केवा पांच रंगनी नानी नानी ध्राक्षोधी शोलायमान क्येने तथी क मनने

हराः, वातोद्यृतेत्यादि—वातेन-वायुना उद्धृताः—उत्कम्पिता याः विजयवेजयन्तीपताकाः— विजयवेजयन्त्यः—विजयस्चिका वैजयन्त्यः पताकाः, पुनरन्याः सामान्याः पताकाश्च, तथा— छत्रातिच्छत्राणि छत्रात् सामान्यच्छत्रात् अतिशायीनि च्छत्राणि च एतैः किछताः—युक्ताः, तुङ्गाः—उन्नताः, अत एव गगनतलम्—आकाशतलम् अभिलङ्क्षयच्छिखराः—अभिलङ्क्षयत्— अतिकाम्यत् शिखरम्—अग्रभागो येषां ते तथा, प्रायादीयाः यावत्—यावत्पदेन—दर्शनीयाः, अभिल्वाः, इति पदस्यं प्रत्यम् तथा प्रतिल्याः, एषां व्याख्या प्राय्वत्, एवं महेन्द्रध्वजानां वर्णकः तथा 'वेइयावणसंद्यतिसावाणतोरणा य भाणियच्ता' वेदिका—वनषण्ड-त्रिसोपान— तोरणाश्च भणितव्याः—वन्तव्याः. तत्र वेदिका—वनषण्डयोर्वर्णनं पश्चम—षष्ठ सत्राभ्यां बोध्यम् त्रिसोपानदर्णनं राजप्रश्रीयस्त्रस्य द्वादशम्त्राब्दोध्यम् । तोरणवर्णनं चाष्टमस्त्रस्थ विजयं-द्वाराधिकाराब्दोध्यम् तत्रस्चकस्त्रभवम्—'तेसि णं महिंद्ष्ययाणं पुरश्चो तिदिसि तशो' णदापुक्खरिणीञो पण्णत्ताओ, अद्धतेरस जोयणाइं आयामेणं छस्सकोसाइं जोयणाइं विक्खं-

अतएव अभिराम सुंदर वायु से कम्पायमान विजय स्वक्रपताका, सामान्य छन्न एवं विशेष प्रकार के छन्नसे युक्त उच्च होनेसे आकाश को उल्लंघन करे ऐसा अग्रभागवाले प्रासादीय, यावत् पद से दर्शनीय अभिरूप ये पद गृहीत हुए हैं इन शब्दों का अर्थ प्राक्रथनानुसार समझलें। इसी प्रकार महेन्द्रवज का वर्णन करलेवे। तथा 'वेह्या वर्णसंड तिसोबाण तोरणाय भाणियव्वा' वेदिका, वनपंड, एवं त्रिसोपान पंक्ति यहां पर कहलेना उन में वेदिका एवं वनषण्ड का वर्णन पांचवें एवं छठे सूत्रसे समझलें और त्रिसोपान का वर्णन राजप्रश्नीय सूत्र के बारहवें सूत्र से समझलें और त्रिसोपान का वर्णन राजप्रश्नीय सूत्र के बारहवें सूत्र से समझलें लेवे तथा तोरण का वर्णन आठवे सूत्र में विजयद्वार के वर्णनावसरसे समझलें लेवे। वह वर्णक सूत्र इस प्रकार है—'तेसिंणं महिंद्श्रयाणं पुरओ तिदिसिं तओ णंदा पुक्चिरणीको पुण्यक्ताओं अद्धतेरस जोयणाइं आयामेणं छ सक्कोसाइं जोय-

भानं ह आपनार तेमक प्यन्थी हं पायमान विकय सूब पता सामान्य छत्र तथा विशेष प्रधारना छत्रशी युष्ठत ६ नी हिवाथी आहाशनं ६ दे बेच कर सेवा अश्वभागवाणी प्रासाहीय, यावत्पहथी हर्शानीय, अलिइप के अन्ने पहें। श्रेड्ड इराया छे. तथा प्रतिइप आ शण्होने। अर्थ पहेंद्रां हर्हा प्रमाणे सम्ल देवे। तेमक केक रीते महेन्द्र धल्मेन पश्च वर्षन हरी देवुं. तथा विद्वा वणसंडितसोवाण तोरणाय माणियव्वा वेहिष्ठा, वन्य उ, तेमक त्रिसेपान पंडितनं हथन अहींया हरी देवुं. तेमां वेहिष्ठा अने वन्यं उन्नं वर्षन पांचमा तथा छहा सूत्रमां हरवामां आवेद छे कथी त्यांथी समल देवुं. तथा त्रिसेपान पंडितनं वर्षन राकप्रश्रीय सूत्रमां भारमा सूत्रमां हहा। प्रमाणे समल देवुं तथा तिर्धापान पंडितनं वर्षन राकप्रश्रीय सूत्रमा भारमा सूत्रमां हहा। प्रमाणे समल देवुं तथा तेरखनं वर्षन आहेमां सूत्रमां विकयदारना वर्षान प्रसंगमांथी समल देवुं ते वर्षा प्रमाणे अद्वतेरसजोयणाई अवामेणं छसक्कोसाई जोयणाई विक्खेमेणं दस जोयणाई उव्वेहेणं अच्छाओ सण्हाओ पुक्खरिणी

भेणं दस जोयणाइ उन्वेहेणं अच्छाओ सण्हाओ पुन्तिरिणीवणाओ पत्तेयं २ प्रम्वरवेह्या परिक्लिताओ पत्तेयं २ वणसंडपरिक्लिताओ वण्णो, तथा 'ताणि णं णंदापुक्खरिणीणं पत्तेयं २ तिदिसिं तओ तिसोवाणपिडक्वगा पण्णत्ता, तेसि णं तिसोवाणपिडक्वगाणं वण्णाओ तोरण वण्णाओ य भाणियव्वो जाव छत्ताइच्छत्ताइ' इति, एतच्छायाथौं सुगमी।

अथ सुधर्मा समयोर्यद्स्ति तदाइ-'तासि णं' इत्यादि-'तासि णं' तयोः-पूर्वोक्तयोः खर्ख 'सभाणं सुहम्माणं' सुधर्मयोः सभयोः 'छच्च' षट् षट् संख्यकाः 'मणोगुलिया साह्रस्तीभो' मनोगुलिका साह्रच्यः-षट् सहस्रीमनोगुलिका इत्यर्थः, ताः 'पण्णताओ' प्रज्ञप्ताः-

णाई विक्लंभेणं दस जोयणाई उन्वेहेणं अच्छाओ सण्हाओ पुक्खरिणी वण्णओ पर्सयं पर्सयं वणसंड परिकिखत्ता भी तामिणं णंदापुक्छरिणीणं पर्सयं पर्सयं तिदि सिं तओ तिसोवाणपिडिरूवगा पण्णत्ता तिसिणं तिसोवाणपिडिरूवगाणं वण्णओ तोरणवण्णओय भाणियन्त्रो जाव छत्ताइच्छत्ताई इति । उस महेन्द्रध्वज के तीन दिशा में तीन नंदापुष्करिणो कही है । वह साडे बारह योजन का आयामवाली एवं एक कोस और छ योजन के विष्कंभ वाली तथा दस योजन की गहराइ वाली कही है । वे अच्छ माने स्वच्छ एवं निर्मल कही है । वे पुष्करिणीका प्रत्येक पद्मवरवेदिका से व्याप्त है । प्रत्येक वनषंड से व्याप्त हैं इत्यादि वर्णन कर लेना उन णंदा पुष्करिणी के आगे प्रत्येक के तीन दिशा में तीन तीन त्रिसोण्यामप्रतिरूपक कहे हैं उन त्रिसोणान प्रतिरूपक का वर्णन एवं तोरण का वर्णन यहाँ पर 'जाव छत्ताइछत्ताइं' यह पद पर्यन्त कर लेना चाहिए ।

अब सुधर्मसभा के भीतरी भाग का वर्णन करते हैं-'तेसिणं' उन पूर्वोक्त 'सभाणं सहस्माणं' सुधर्मसभा में 'छच्च मणोगुलिका साहस्सीओ' छह हजार

वण्णओ पतेयं पत्तेयं वणसंडपरिक्खिताओं तासिणं णंदा पुक्चिरिणीणं पत्तेयं पत्तेयं तिदिसिं तको तिसोवाणपिक्विया। पण्णता, तेसिं णं तिसोवाणपिक्वियाः णं घण्णओं तोरणवण्णओं य भाणि-यव्वो जाव छत्ताइछत्ताइं इति' से भहेन्द्र धळानी त्रष्ट्र दिशामां त्रष्ट्र नंदापु हिल्ली हिल्ले छे, ते पुष्टिरिष्ट्रीये। साठा णार ये। जन केटला स्थायभवाणी स्थाने है। से स्थाने छ ये। जन केटला विष्टे लवाणी तथा दस ये। जन केटली छंडी हुई छे, ते स्थाय स्थाय स्थाय विष्टे लवाणी तथा दस ये। जन केटली छंडी हुई छे, ते स्थाय स्थाय स्थाय केटला विष्टे लवाणी तथा दस ये। जन केटली छंडी हुई छे, ते स्थाय छे, दरेह पुष्टिरिष्ट्रीये। पद्मवरवेदिहास्थायी व्याप्त छे, दरेह पुष्टिरिष्ट्रीये। पद्मवरवेदिहास्थायी व्याप्त छे, दरेह पुष्टिरिष्ट्रीये। वन्त्र प्रथा छे, विशेरे वर्षान हिशामां त्रष्ट्रा त्रिसे। पान प्रतिहर्पे हुई छेला छे, से त्रिसे। पान प्रतिहर्पे हुई वर्षान तथा ते। रेष्ट्रान स्था त्रिसे। क्षाय क्षाय

હવે સુધર્મ સભાની અંદરના ભાગનું વર્ણન કરે છે.—'तेसिंणं' એ પૂર્વોક્ત 'समाणं सुहम्माणं' સુધર્મ સભામાં 'छच्च मणोगुलिया साहस्सीओ' છ હજાર મનાગુલિકા અર્થાત્ तत्र मनोगुलिकाः-पीठिकाः, 'तं जहा-पुरिश्यमेणं' तद्यथा-पौरस्त्येन-पूर्वस्यां दिशि 'दो साहस्ताओ' हे साहस्त्र्यो-सहस्ने 'पण्णताओ' प्रज्ञप्ते 'पच्चित्थमेणं' पश्चिमेन-पश्चिमायां दिशि 'दो साहस्तीओ' हे साहस्त्र्यों, 'दिनिखणेणं' दिशि 'एगा' एका साहस्ती, अत्र सर्वत्र स्वाहस्ती' एका साहस्ती, अत्र सर्वत्र स्वीलिङ्गपूर्वादि शब्देभ्यः सप्तम्येकवचनान्तेभ्य एकपत्ययः, 'सर्वनाम्नोष्टत्तिमात्रे पुंबद्भाव' इति पुंबद्भावेनापो निवृत्तिः, 'जाव दामा चिहंतीत्ति' यावद् दामानि तिष्ठन्तीस्यत्र यावन्त्पदेन 'तासु णं मणोगुलिथासु बहवे सुवण्णरूपमया फलगा पण्णत्ता, तेसि णं सुवण्णरूपमएसु फलगेसु बहवे वहरामया णागदंतगा पण्णत्ता, तेसु णं वहरामपस्र नागदंतेसु बहवे किण्इसत्तवग्वारियमल्लदामकलावा, ते णं दामा तविगिजनलंब्सना चिहंतित्ति, एवां पदानां छायाऽथौं सुनभौ । सर्वचैतद्ष्टमस्त्रोक्तविजयद्वारासुसारेण बोध्यम् , 'एवं' एवम्-मनोगुलिकावत् 'गोमाणसियाओ' गोमानसिकाः-गोमानस्य एव गोमानसिकाः-शट्यारूपाः स्थानविशेषा वक्तव्याः, 'णवरं' नवरं-केवलं 'धूव-घियाओ त्ति' धूपघटिकाः-द्रामस्थाने धूपघटिकावर्णनीयाः, इति मनोगुलिकापेक्षया गोमानसिकाव्याःने विशेषः, तदितिरक्तं द्वयोः सर्वं समानमेव वर्णनम् ।

मनोगुलिका अर्थात् पीठिका कही है-'तं जहां' वह इस प्रकार है 'पुरिक्षमेणं दो साहस्सीओ' पूर्व दिशा में दो हजार 'पण्णसाओ' कही है 'पञ्चित्थमेणं दो साहस्सीओ' पश्चिम में दो हजार (जाव दामा चिंहतीत्ति) यावत् दामा-पुष्पमालाएं रिवेख हैं यहां पर यावत् शब्द से (तासुणं मनागुलियासु बहवे सुवण्ण रूपमया फलगा पण्णसा) इत्यादि पाठ जो टीका में लिखा गया है वह समझलेवें सरल होनेसे अर्थ नहीं दिया है सो मूलसे ज्ञात करलें। यह संपूर्ण वर्णन आठवें सूत्र में विजय द्वार के वर्णनानुसार समझलेवें (एवं) पीठिका के जैसा (गोमाणसिया ओ) गोमानसिका-शब्यास्प स्थान विशेष समझलेवें। (णवरं) केवल (धूवधिड-याओत्ति) दाम के स्थान पर धूपदानी कहनी चाहिए, इतना मनोगुलिकासे गोमानसिका के वर्णन में अन्तर है अन्य सब वर्णन दोनों का समान ही है।

पीिंडिश हेंडें थे. 'तं जहा' ते आ प्रमाधे थे. 'पुरिक्षमेणं दो साहरसीओ' पूर्व हिशामां थे डेलिश 'दिक्षणेणं एगा साहरसी' हिशामां थेड डेलिश 'उत्तरेणं एगा' उत्तर हिशामां थेड डेलिश 'जाव दामा चिट्ठंतित्ति' यावत पुष्पमादाथे। राणेद थे. अिंडियां याव-त्राण्डयीं 'तासुणं मणोगुलियासु बहवे सुवण्णरूपमया फलगा पण्णत्ता' विशेरे पार्ड के टीडामां दाणवामां आवेद थे. ते सर्व पार्ड अहीयां सम्छ देवा. सरद हावाथी तेना अर्थ आपेद नथी. आ संपूर्ण वर्षुन आहमां सूत्रमां विषय दारना वर्षुन अनुसार सम्छ देवुं. तथा पीिंडिडानी केम 'गोमाणसियाओं' शेमानसिंडा शब्या ३प स्थान विशेष सम्छ देवुं. 'णवरं' डेवण 'धूश्विख्याओत्ति' हामना स्थान पर धूपहानी हर्देवी लेखें थेटलुं क अंतर मनेशिद्धाना वर्षुनथी शेमानसिंडाना वर्षुनमां थे. शिल्डं अधु वर्षुन अन्नेनुं सर्भुंक थे.

अथ सुधमेयोरेव भूमिभागवर्णकमाह-'तासि णं' इत्यादि-'तासि णं सुहम्माणं अंतो' तयोः खल सुधमेयोः समयोः अन्तः-मध्ये, 'बहुसमरमणिड जे' बहुसमरमणीयः-अत्यन्तः समः-अत्यन्तसमत्त्रः अत्यव रमणीयः-सुन्दरः 'भूमिभागे पण्णते' भूमिभागः प्रइष्तः, भूमिभागःग्रंजनमण्टमसूत्रोक्तविजयद्वारवद्वोध्यम्, अत्र मणीनां वर्णादयो वर्णनीयाः, उल्लोकाः प्रवलतादयोऽपि च चित्रकृषा ऊहनीयाः, अत्र विद्येषतो वक्तव्यं व्यनक्ति-'मणिपेढिया' इत्यादि-अनयोः सुधमयोः सभयोमध्यभागे 'मणिपेढिया' मणिपेठिका-मणिमयीपीठिका-आसनिक्षेषः, प्रत्येकं वक्तव्या, अम्या मानभाह-'दो भोयणाई' द्वे योजने 'आयामविवर्षं-भेणं' आयामविव्यन-पिण्डेन, प्रज्ञप्तेति सम्बन्धः, 'तासि णं मणिपेढियाणं उप्पि' तयोः खल्ल मणिपेठिका- पीठिकयोः उपि अञ्चर्तेति सम्बन्धः, 'तासि णं मणिपेढियाणं उपि' तयोः खल्ल मणिपेठिकयोः उपि अधिकयोः सिन्दं प्रत्येकं 'माणवए' माणवके-माणवक्तनामकं 'वेद्यसंभे' चैत्यस्तम्भे 'महिद्दः स्वप्यमाणे' महेन्द्रध्वजप्रमाणे-महेन्द्रध्वजसमाने प्रमाणतोऽधाष्टमयोजनममाणे

अब सुधमसभाके भूमिभागका वर्णन करते हैं—(तासिणं सहस्माणं सभाणं अंतो) वे सुधमसभा के मध्य में (बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते) अत्यन्त समतल युक्त होने से रमणीय भूमिभाग कहा है। यहां भूमिभागका वर्णन आठवें सूत्र में विजयहार के जैसा समझलें । यहां मणियों के वर्णाद का वर्णन भी करलें एवं उल्लोक पद्मलतादि का वर्णन भी चित्रह्रपसे कहलेना। यहां पर विशेषवक्तव्य इस प्रकार है-ये सुधमसभा के मध्यभागमें 'मणिपेढिया' मणि मय आमनविशेष प्रत्येक में कहने चाहिए (दो जोयणाइं आयामविश्वं भेणं) दो योजन की लंबाई चोडाई है। (जोयणं बाहल्लेणं) एक योजन की मोटी है। (तासिणं मणिपेढियाणं उप्पं) उन मणिपीढिका के ऊपर (माणवए चेइयलंभे) माणवक्षनामक चैत्यस्तम्भ (महिंद्ज्झयप्यमाणे) महेन्द्रध्वज के समान प्रमाण बाला अर्थात् साडे सात् योजन प्रमाण इत्यादि महेन्द्रध्वज के वर्णन सरीला

द्वे सुधर्भ सलाना लूमिलागनुं वर्णन करवामां आवे छे.-'तेसिणं सुहम्माणं सभाणं अंतो' के सुधर्भ सलानी मध्यमां 'बहुसमरमणिक्ते भूमिमागे पण्णत्ते' अत्यन्त समत्त युक्त द्वावाधी रमाणीय लूमिलाग कहेत छे. अद्वीं वां कूमि लागनुं वर्णन आठमां सूत्रमां विजयदारना वर्णन प्रमाणे समल होतुं अद्विंयां मिण्येता वर्णाहिनं वर्णन पण करी हेतुं तथा हिल्ते प्रसद्धता विगेरेनुं वर्णन पण कदी हेतुं अद्वीं वां विशेष वक्षत्रय आप्रमाणे छे. के सुधर्म सलाना मध्य लागमां 'मिण्येतिया' मिण्येतियां वर्णाम विशेष हरेकमां कदिवा निर्धे 'दो जोयणाई आयामित्रक्लंभेण' के येत्रननी ह्वं आध पहेत्यार्थ कही छे. 'जोयणं वाह्ललेण' क्षेत्र थेत्रन केटली माटी छे. 'तासिणं मिण्येतियाणं उप्पं' के मिल्योतिकानी हिपर 'मणवण चेइ्यलंभे' माण्यक नामना चैत्य स्तं ल 'महिं दंज्झ-क्ष्माणे' भद्धेन्द्र ध्वलना सरणा प्रमाणवाणे। अर्थात् साठा सात येत्रन केटला प्रमाण

वर्णकतो महेन्द्रध्यजनत् 'उवरिं' उपरि 'छकोसे ओगाहित्ता' पट्कोशान् अवगाह्य-प्रावश्य उपरितनान् पट् कोशान् विजित्वा विहास 'हेद्वा' अधः -अधस्ताद्धि 'छकोसे विजित्ता' पट् क्रोशान् विजित्वा मध्येऽधेपश्चमेषु योजनेषु इति गम्यम् , 'जिणसकहाओ' जिलस्त्वधीनि-जिनकीकसानि 'पण्णताओत्ति' प्रज्ञप्तानि इति, इह जिनसिक्धप्रहणे व्यन्तर्ज्ञातीयानां देवानां नाधिकारो स्ति, किन्तु सौथर्मेशानवमरवलीन्द्राणामेश्य तद्ग्रहणेऽधिकारोऽस्तीति जिन-सक्थीनि-जिनदंष्ट्रारूप साथीनि तत्र निक्षिप्तानि प्रज्ञप्तानीति बोध्यम् , अवशिष्टो वर्णकथ जीवाभिगसस्त्रोक्तो बोध्यः स चैत्रम्-

'तस्स णं माणका नेदग्रस खंगस्स उत्रि छकोसे ओगाहिला हेद्वा वि छकोसे विज्ञाला मन्झे अद्धपंचमेसु जोगणेसु एत्थ णं वहवे सुवण्णरूपस्या फलगा पण्णत्ता तेसु णं वहवे वहरामया णागदंतमा पण्णत्ता, तेसु णं बहवे रथयामया सिकता पण्णत्ता, तेसु णं बहवे वहरामया गोण्यद्दसमुग्गया पण्णत्ता, तेसु णं वहवे जिणसकाहाओ सिष्णि विख्ताओ चिहंति, जाओ णं जमगाणं देवाणं अन्नेसि च बहुणं वालमंतराणं देशण य (उविर छक्कोसे ओगाहिला) ऊपर के भाग में छ कोस जाने पर अर्थात् ऊपरका छ कोस के छोडकर एवं (हेद्वा छ कोसे विज्ञत्ता) नीचेसेभी छह कोस वर्जित कर मध्य के साडे चार योजन में (जिण सकहाओ) जिन के सक्षी हड़डी (पण्णत्ताओ) कहें.हैं यहां पर जिन सक्षी कहनेसे व्यन्तर जाती के देव का अधिकार नही है, किन्तु—सोधमें, ईशान, चमर एवं बलीन्द्रका ही अधिकार आजाता है अतः 'जिन सक्षी' कहने से जिनकी दाढ रूपी हड़डी वहां रखी हुई है ऐसा समझ छेवें। होष वर्णन जीवाधिकाम में कहे अनुसार समझ छेवें। वहां वह वर्णन इस प्रकार हैं—'तस्स णं माणवगचेइयस्स खंभस्म उविर छक्कोसे ओगाहिला' हेट्टा वि छ कोसे विज्ञत्ता, मड्शे अद्ध पंचमेसु जोयणेसु एत्थ णं बहवे सुवण्णरूष्यमया पत्रगा पण्णत्ता, तेसुणं वहवे वहरामया गोल्यदृद्दसमुग्गया पण्णता, तेसुणं वहवे जिण सकहाओं सिण्णिक्यत्ताओ चिहंति,

वाणा विशेर भहेन्द्रध्वलना वर्णु व प्रमाण समल्यं 'उविरं छक्कोसे ओणहिला' उपसी तरह छ है। स कवाणी अर्थात् उपरना छ है। सने छे। जीने 'एवं हेट्टा छक्कोसे बिज्जिला' नियेना छ है। से छे। जैने वयका साज कार ये। कनमां 'जिणसक्काओं' छतस्थि (इ। उक्ष) 'पण्णताओं' इदि छे. अहीं यां छन सिष्ठ इदिवाथी व्यन्तर क्रितना हैवने। अधिक्षंत्र नथी परंतु धंशान सीधर्म व्यमर अने असीन्द्रनील अधिकार आदी काय छे. तेथी छनसिष्ठ इदिवाथी छननी हाढ ३५ हाउहुं त्यां राजेश छे तेम समछ हेवुं. त्यां से वर्णुन आ प्रमाणे छे. 'तस्मणं माणवनचेइयस्म संमस्म उविरं छक्कोसे ओगाहिला हेट्टा वि, छक्कोसे विज्ञिला मज्झे अद्धपंचमेसु जोयणेसु एत्थणं बहवे सुवण्णक्ष्यम्या प्रस्ता पण्णला तेसु णं बहवे वद्यमया णागदंतमा पण्णला, तेसु णं बहवे रययामया सिक्कगा पण्णला तेसु णं बहवे जिणसक हाओं सिण्णिक्खिलाओ चिट्टांति जाओं णं जमगाणं देवाणं अन्तेसिंच बहुणं बाणमतराणं देवाण य

देवीण य अचिणिजनाओं वंदणिजनाओं प्यणिजनाओं सकारणिजनाओं हमाणिणिजनाओं करणां मंगलं देश्यं चेइयं पज्ज्ञवासणिजनाओं इति, एतच्छाया-तस्य खलु माणवकचैत्यस्य स्तम्भस्य उपिर पद् कोशानवगाह्य अधोऽपि पदकोशान वर्जियत्वा मध्ये अद्धेपश्चमेषु योजनेषु अत्र खलु बहुनि सुवर्णरूप्यमयानि फलकानि प्रज्ञप्तानि, तेषु खलु बहुवो वज्रमया नागदन्तकाः प्रज्ञप्ताः, तेषु खलु बहुनि रजतमयानि शिवयकानि प्रज्ञप्तानि, तेषु खलु वहुवो वज्रमया गोलकष्ट्रत्तसप्तद्व्याः प्रज्ञप्ताः, तेषु खलु बहुनि जिनसप्यीनि सिक्षिप्तानि तिष्ठिन्ति, यानि खलु यमकयोदेवयोः अन्येषां च बहुनां वानमन्त्रराणां (व्यन्तराणां) देवानां च देवीनां च अर्चनीयानि वन्दनीयानि प्रजनीयानि सत्करणीयानि सम्माननीयानि कल्याणं मङ्गलं देवतं चैत्यं पर्युपासनीयानि' इति,

एत् द्व्याख्या छायागम्या, नवरम्-गोलकष्टत्तसपुद्गकाः-गोलकः-वर्त्लोपलस्तद्वद्-१त्तः-दर्जुलाः सश्वद्रकाः-सग्रद्गाः सग्रन्धद्रव्यविशेषसम्पुटकाः, त एव सग्रद्गकाः, अर्व-नीयानि-चन्दनादिना, बन्दनीयानि-स्तुत्यादिना, पूजनीयानि-पुष्पादिना, सत्करणीयानि-वस्तादिनः, सम्माननीयानि बहुमानकरणात्, कल्याणं मङ्गलं दैवतं चैत्यमिति पर्युपासनी-यानि-सेवनीयानीति, एतदाशातनानयेनैव तत्र देवा युवतिनिदेवीभिः सम्नोगादिकं नाच-

जाओणं जमगाणं देवाणं अन्नेसि च बहुणं वाणमंतराणं देवाण य देवीणव अच्च-णिजजाओ वंदणिजाओ प्रयणिज्जाओ सकारणिज्जाओ सम्माणणिजाओ' इति.

वह माणवक चैत्य स्तंभ के ऊपर के छ कोस तथा नीचे के छ कोस को वर्जित कर मध्य के साढ़े चार योजन पर अनेक सुवर्णरूप्य मय फलक कहे हैं उसमें अनेक बज्रमय खीले कहे हैं उसमें अनेक रजतमय शिके कहे हैं। उसमें अनेक गोल वर्जुल सगुद्धक-सुगन्धि इव्य विशेष के सम्पुट कहे हैं। उसमें अनेक जिनसिक्थ-जिनकी हड्डियां रखी हुई है जो यमक देव के एवं अन्य अनेक वान-व्यन्तर जाति के देव एवं देवियों के अर्चनीय, वंदनीय, पूजनीय, सत्कारणीय, सम्माननीय, कल्याणस्वरूप, मङ्गलस्वरूप, देवतस्वरूप उपासनीय कही है। इनकी आशातना के भयसे ही वहां देव देवि के साथ सम्भोगादि का आचरण नहीं करते। मित्ररूप देवादि हास्य कीडादि भी नहीं करते।

रन्ति, नावि मित्रभूतैर्देवादिहीस्यक्रीडादि । 'माणवगस्स' इत्यादि—'माणवगस्स' माणवकस्य चैत्यस्तम्भस्य 'पुठवेणं' पूर्वेण—पूर्वस्यां दिशि सुधर्मयोः 'सीहासणा सपरिवारा' सिंहासने सपरिवारे—मद्रासनपरिवारसहिते स्तः, 'पठ्चित्थमेणं' पश्चिमेन—पश्चिमायां दिशि 'सयणिज्ञ-वण्णभो' शयनीयवर्णकः—शयनीयेस्तः तयोर्वर्णको वक्तव्यः, स च श्रीदेवीवर्णनाधिकारतो प्राह्यः, तयोः 'सयणिज्ञाणं उत्तरपुरिक्थमे' शयनीययोः उत्तरपौरस्त्ये—ईश्लानकोणे 'दिसी-भाए' दिग्मागे 'खुडुगमहिंदज्झ्या' खुद्रकमहेन्द्रध्वजौ स्तः, तौ च मानतो महेन्द्रध्वजप्रमाणौ, सार्द्धसम्योजनश्माणाव् वैमुच्चत्वेन इद्धिकोश्लामुद्धेयेन बाहत्यत इत्यर्थः।

नजु यदीमौ मानतो महेन्द्रध्वजप्रमाणावुक्तौ तदा तत्तुरुयतायाः स्पादत्वात् श्चद्रत्व-विशेषेणं तत्र न किञ्चिद्रपकारकम्-इति चेत् सत्यम्, अत्र मणिपीठिकःविहीनत्वेन श्चद्रत्वं

'माणवगत्स पुरुवेणं' माणवक चैत्यस्तम्भ की पूर्व दिशामें सुधर्म सभा में 'सीहासणा सपरिवारा' परिवार सहित भद्रासनादि परिवार युक्त सिहासन कहे हैं। 'पच्चित्थमेणं' पश्चिमदिशा में 'सपणिज्ज बण्णओं' शयनीय-शय्या स्थान हैं उसका वर्णन यहां करलेना चाहिए। वह वर्णन देवी के वर्णनाधिकार से समझ लेवें। 'सपणिज्जाणं उत्तरपुरिथमे दिसीभाए' शयनीय के ईशान कोण में 'खुहुगमहिं दज्झया' दो क्षुद्रक-छोटा महेन्द्रध्वज कहा है। उन दोनों का मान महेन्द्रध्वज के समान हैं अर्थात् साढे सात योजन प्रमाण अंचे, आधा कोस का उद्वेध वाहल्यवाले है

रंका-यदि ये दौनों महेन्द्रध्वज के समान है तो महेन्द्रध्वज के तुल्य कहना चाहिए अतः यहां 'क्षुद्र' यह विशेषण की क्या आवश्यकता है ?

उत्तर-यहां पर मणिपीठिका रहित होनेसे क्षुद्रत्व है प्रमाणसे क्षुद्र नहीं है। इससे ऐसा समझें की दो योजन की पीठिका के ऊपर रहनेसे पूर्वका महेन्द्रध्वज

हैवाहि हास्य ३५ डीडा विशेरे पण डरता नथी, 'माणवगरस पुन्वेणं' माण्वम यै यस्त लनी पूर्विहिशाओ सुधर्म सलामां 'सीहासणा सपरिवारा' परिवार सहित लद्रासनाहि परिवार साथै सिंहासनी उहेता छे. 'पन्चित्रमेणं' पश्चिम हिशामां 'सयणिडजवण्णओ' शब्यारथान छे. अहीयां तेनुं वर्णुन डरी लेवुं लेपुंथे से वर्णुन हेरीना वर्णुन धिक्षारथी सम्ल लेवुं. 'सयणिजाणं उत्तरपुरिव्यमे दिसीमाए' शयनीयना धंशान डेाधुमां 'खुडुगमहिंद इस्या' के अद्रक्षनाना महेन्द्र क्य ठहेत छे. स्थ लनेनुं माप महेन्द्र क्यनी सरभुं छे. स्थात् साडा सात ये। अन प्रमाण हां या अर्धा डेास केटला हिद्रेष-आहेदयवाणा छे.

શંકા—જો એ બેઉ મહેન્દ્રધ્વજ સરખા છે તો તેને મહેન્દ્રધ્વજ સરખા કહેવા જોઈએ. તેથી અહિયાં કાદ્ર એ વિશેષણનીશી આવશ્યકતા છે?

ઉત્તર- અહીં યાં મિલ્પોરિકા રહિત હાવાથી સુદ્રત્વ છે. પ્રમાણથી સુદ્રત્વ નથી, તેથી એવું સમજવું કે બે ચાજનની પીરિકાની ઉપર રહેવાથી પહેલાના મહેન્દ્રધ્વજ મહાન

न तु प्रमाणविद्यीनस्वेन, ततश्चेदं पर्यवसितम्, द्वियोजनत्रमाणमणिपीठिकोपरिस्यितस्वेन पूर्वे महान्तो महेन्द्रध्वजास्तद्येश्वया महेन्द्रध्त्रजाविमी श्चद्राविति, एतदाह 'मणि पेढिया विहूणा महिंदः झपप्पमाणा ' मणिपीठिका विहीनौ महेन्द्रध्वजप्रमाणौ इति, 'तेसिं' तयोः शुद्रमहेन्द्र ध्वजयोः एकैक राजधानीवर्तिन्योः, 'अवरेणं' अपरेण-अपरस्यां-पश्चिमायां दिशि 'चोप्फा-ला' चोष्पाली-सन्नामकी 'यहरणकोसा' प्रहरणकोशी-प्रहरणानि--आयुधानि तेषां कोशी-भाण्डागारे, प्रहारी, 'तत्थ णं' तत्र-तयोः प्रदरणकोशयोः खळ 'बहवे' बहूनि 'फल्डिहरयण-पामुक्छा' परिवरत्नप्रमुखाणि-परिघरत्नादीनि 'जाव' यावत्-यावत्पदेन-प्रहरणरत्नानि सिन्निक्षिप्तानि, इति ग्राह्यम् तानि 'चिह्नंति' तिष्ठन्ति-सन्ति । 'सुहम्माणं उप्पि' इत्यादि-तयोर्द्धयोः 'सुहम्माणं' सुधर्मयोः समयोः 'उप्पि' उपरि-अर्ध्वमागे 'अहद्यंगलगा' अन्टान्ट-मङ्गळकानि-स्वस्तिक१ श्रीवत्स२ नन्दिकावर्त ६ वर्द्धमानक४ अद्रःसव५ कलश६ मस्य७ द्रिण८ 'सेदाद्ष्यङ्गलानि प्रज्ञप्तानि, इत्यारभ्य बहवः सहस्रपत्रहस्तकाः सर्वरत्नमयाः इत्यादि तद्वर्णनिमह वोध्यम् । तच्च राजप्रश्लीयस्त्रस्य चतुर्दशस्त्रात् संग्राह्यम् । सुधर्मसभातः परं महान है, उस अपेक्षा से ये दोनों क्षुद्र कहना चाहिए। वही सूत्रकार कहते हैं 'मणिपेटिया विष्टणा महिंदज्झयप्यमाणा' मणिपीठिका रहित एवं महेंन्द्रवज के प्रमाण से युक्त है 'तेसिं' उन राजधानी के क्षुद्रमहेन्द्र वज 'अक्रेणं'पश्चि-मदिशा में 'चोष्फाला' चोष्फाल नामके 'पहरण कोसा' आयुध के कोष-भंडार कहा है। 'तत्थ पं' उस प्रहरण कोष में 'बहवे' फलिहरयणपामुक्ला' परिध आदि 'जाव' यावत् प्रहरण रत्न आदि 'चिद्वंति' रक्खे हुए हैं ।

'सहम्माणं उपि' उन सुधमसभा के ऊपर 'अदृह संगलगा' आठ आठ मंगल दृष्य जो इस प्रकार है—स्वस्तिक १, श्रीवत्स २, नंदिकावर्त ३, वर्धमानक ४, भद्रास्त्र ५, कलका ६, मत्स्य ७, दर्पण ८, रक्खे हैं तथाच अनेक सहस्र पत्र हाथ में धारणिकण, सर्व रत्नमय इत्यादि उसका सब वर्णन यहां पर सबझलेवें। वह वर्णन राजप्रश्लीय सूत्र के १४ चौदहवें सूत्र से ज्ञात करलेवें।

छे. को क्यपेक्षाकी क्या जन्मेने शुद्र ठेडेवा केंडिको कोक स्त्रकार ठेडे छे—'निणोहियाविर्णा महिंद्द्यप्यमाणा' मिल्पिडिश विनाना क्यने मिडेन्द्रध्वकना प्रभाण्यी युक्त छे. 'तेसिं' को क्रेड क्येड राक्षानीना क्षद्र मिडेन्द्रध्वक 'अवरेणं' पश्चिम हिशामां 'चोक्फाला' वेप्शिक्ष नामना 'पहरणकोसा' व्याप्त केंडिश है। 'तत्यणं' के प्रह खु है। प्रमां 'बहवे फिलिह्र्यणपामोक्खा' परिध रतन विगेरे 'जाव' यावत् प्रहरण्य विगेरे 'चिट्टंति' राजेब छे. 'सुहम्माणं उपि' को सुधर्म सलानी उपर 'अट्टुट्र मंगलगा' क्याड काड मंगद द्रव्य छे के क्या प्रमाणे छे.—स्वित्ति १ श्रीवत्स र नहिं हावत' उ वर्धभानक ४ लद्रासन प्रक्षिश ६ मत्स्य ७ हर्षण्य ८ राजेब छे. तथा क्यनेड सहस्य पत्र हाथमां धारण्य करेब, सर्व रतन्मय विगेरे तेनुं तमाम वर्णुन राक्ष्यश्रीय सूत्रना १४मां स्त्रभांथी समक्ष बेवुं,

किमस्तीत्याह-'तासि णं' इत्यादि-'तासि णं' तयोः सुप्रमंयोः खळु 'उत्तरपुरत्थिमेणं' उत्तरपौरस्त्येन-उत्तरपूर्वस्याम्-ईशानकोणे विदिश्चि 'सिद्धाययणा' सिद्धायतने-हे प्रक्षप्ते, प्रतिसभमेकैकसद्भावात्, अत्र लाघवार्थमतिदेशमाह-'एस चेव' इत्यादि-'एस चेव' एष एव-सुध्मांसभोक्त एव 'गमोत्ति' गमः-पाठः 'जिणधराण वि' जिनस्हाणामपि-बोध्यः, स च गम एवम्-'ते णं सिद्धाययणा अद्धतेरसजोयणाई आयामेणं छस्सकोसाई विक्खंभेणं णव जोयणाई उद्धं उच्चत्तेणं अणेग्रखंभस्यसण्णि हिट्ठा' इत्यादि, एतच्छाया-ते खळु सिद्धायसने अर्द्धत्रयोदश्योजनानि आयामेन पट् सक्रोशानि विष्कम्भेण नव योजनानि उद्धं प्रचर्दनेन अनेकस्तम्भशतसिन्निविष्टे' एतद्व्याख्या स्पष्टा, यथा सुधर्मसभया पूर्वदक्षिणोत्तरदिख्ततीं नि त्रीणि द्वाराणि सन्ति, तेषां च पुरतो मुख्यण्डपाः, तेषां च पुरतः प्रेक्षामण्डपाः, तेषां च पुरतः तेषां च पुरतः तेषां च पुरतो सहेन्द्रध्वनाः, तेषां च पुरतो स्व

सुधर्मसभा में और क्या है सो कहते हैं

'तिसि णं' उन सुधर्म सभा के 'उत्तरपुरिधमेणं' ईशान कोण में 'सिद्धाय-यणणा' दो सिद्धायतन कहे हैं।' प्रत्येक सभा में एक एक होने से दो कहे हैं 'एसचेव गमोत्ति' यही सुधर्मसभोक्त सब पाठ 'जिनघराण वि' जिनग्रह का भी कहना चाहिए। वह पाठ इस प्रकार हैं—'तेणं सिद्धाययणा अद्धतेरस जोयणाईं' आयामेणं छस्स कोसाई विक्लंभेणं पाव जोयणाई उद्धं उच्चत्तेणं अणेगलंभ-स्यसिविद्धिं' वे सिद्धायतन साडे बार हजार योजन के आयामवाले हैं। एक कोस के सहित छ योजन के विष्कंभवाले हैं। नव योजन के उंचे हैं। अनेक से कड़ों स्तम्भो से युक्त कहे हैं

जिस प्रकार सुधर्मसभा के पूर्व, दक्षिण एवं उत्तर दिशा में तीन दरवाजे उनके आगे मुख्यमंडप, उनके आगे प्रक्षामंडप उनके आगे स्तृप, उनके आगे वैद्यवृक्ष, उनके आगे महेन्द्रध्वज, उनके आगे नंदा पुष्करिणी कही है तदनन्तर सभामें –छहजार मनोगुलिका छह हजार गोमानसी कही है उसी प्रकार यहां

नन्दापुष्करिण्य उक्ताः, तदनन्तरं सभायां षड्मनोगुलिकासहस्राणि पट्ट च गोमानसीसहस्राणि प्रोक्तानि तथैव जिनगृहविषयेऽपि सर्च वक्तव्यमिति भावः। अत्र च सुधमीसभातो यो विज्ञोष्टतमाह—'णवरं' इत्यादि—'णवरं' नवरं केवलम् 'इमं' इदम्—एतत् 'णाणत्तं' नानात्वम्—अने-कत्त्म् मेद इति मानः, सुधमीसभाषेक्षयेतिशेषः 'एएसिणं' एतेषां—जिनगृहाणां खल्ल 'बहु-मञ्झदेसभाए' बहुमव्यदेशभागे—अत्यन्तमध्यदेशभागे 'पत्तेयंश' प्रत्येकंश एवैकस्मिन् जिनगृहो 'मिणपेहियाओ' मिणपीठिकाः—मिणमयासनविशेषाः प्रज्ञप्ताः, ताश्च मिणपीठिकाः प्रमाणतः 'दो जोयणाई आयामविक्खंभेणं' हे योजने आयाम—विष्कम्भेण—देधिविस्तारा-भ्याम्, 'जोयणं बाहल्लेणं' योजनं बाहल्येन—पिण्डेन, 'तासि' तासां—मिणपीठिकानाम् 'उप्ति' उपरि—ऊर्ध्वभागे 'पत्तेयंश' प्रत्येकंश 'देवच्छंदगा' देवच्छन्दके—जिनदेवासने 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्ते, तन्मानमाह—'दो जोयणाइं आयामविक्खंभेणं' हे योजने आयामविष्कम्भेण 'साइरेगाइ' सातिरेके—किश्चिद्धिके 'दो जोयणाइं हे योजने 'उद्धं उच्चक्तेणं' ऊर्ध्वमुच्चत्वेन, ते च देवच्छन्दके 'सब्बरयणामया' सर्वरत्नमये—सर्वात्मना रत्नमये, 'जिणपिडमा' जिनप्रतिमा

जिनगृह में भी यह सब वर्णित करलेवें।

यहां पर सुधर्मसभा से जो विद्योष वक्तव्यता है वह कहा जाता है-'णवरं इमं णाणत्तं' केवल यही यहां पर सुधर्मसभा से भिन्नता है 'एएसिखं' इन जिन गृहों के 'बहुमज्झदेसभाए' ठीक मध्यभाग में 'पत्तेयं पत्तेयं' एक एक गृह में 'मणिपेढियाओ' मणिमय आसन विद्योष कहे हैं। उन मणिपीठिका का प्रमाण इस प्रकार कहा है-'दो जोयणाइं आयाम विश्वंभेणं' उनका विस्तार 'दो योजन का कहा है अर्थात उनकी लंबाइ चोडाइ दो योजन की कही है। 'जोयणं बाहल्खेणं' उनका बाहल्य एक योजन का कहा है। 'तासिं' उन मणिपीठिका के 'उप्णि' जपर के भागमें 'पत्तेयं पत्तेयं' प्रत्येक में 'देवच्छंदगा' जिनदेव का आसन 'पण्णत्ता' कहा है 'दो जोयणाइं आयाम विवक्तंभेणं' वे आसन की छंबाई चोडाइ दो योजन की कही है। 'साइरेगाइं' कुछ अधिक 'दो जोयणाइं उद्धं उच्च-

એજ પ્રમાણે અહીં જનગૃહમાં પણ એ તમામનું વર્ણન કરી લેવું.

અહીયાં સુધર્મ સભાના વર્લુથી જે વિશેષ વક્તવ્ય છે, તે કહેવામાં આવે છે. 'णवरं इमं णाणत्तं' અહિયાં કેવળ સુધર્મ સભાથી એટલી જ ભિન્નતા છે. 'एएसिण'' એ છત એહાની 'बहुमज्झरेसमाए' ભરાખર મધ્ય ભાગમાં 'વત્તેયં વત્ત્વં' એક એક ગૃહમાં 'मणि पेढियाओं' મिશુમય આસન વિશેષ કહેલા છે. એ મિશુપીઠિકાનું પ્રમાણ આ પ્રમાણે કહેલ છે. 'दो जोयणाइं आयामविक्खं मेण'' તેના વિસ્તાર બે યોજનના કહેલ છે. અર્થાત્ તેની લંબાઇ પહેલાઇ બે યોજનની કહેલ છે. 'जोयणं बाह्त्लेण' તેનું આહલ્ય એક યોજનનું કહેલ છે. 'तासि'' એ મિશુપીઠિકાના 'चाप्प' ઉપરત્યા ભાગમાં વત્ત્વંય વર્ત્ત્ યં' દરેકમાં 'देव च्छंदगा' છન દેવના આસન 'पण्णत्ता' કહેલ છે. 'तो जोयणाइं आयामविक्खं मेणं' એ આસનની લંબાઇ પહેલાઇ બે યોજનની કહેલ છે. 'ता जोयणाइं आयामविक्खं मेणं' એ આસનની લંબાઇ પહેલાઇ બે યોજનની કહેલ છે. 'ताइरेगाइ'' કંઇક વધારે 'તો जोयणाइं

वक्तव्या तस्याश्च 'वण्णभो' वर्णकः-वर्णनपरपदसमूदश्च वक्तव्यः, किम्पर्यन्तः ? इत्याह-'जाव भूवकड्चछुगा' यावद् भूपकटुच्छका-अष्टसदस्रसीवर्णकछश्चादितत्प्रमाणभूपकटुच्छकापर्यन्तो-वर्णको राजप्रश्नीयस्त्रस्य सप्ताशीतितमस्त्रश्चवसेयः ।

अथ सुधर्मासभोक्तमेव सभाचतुष्ट्येऽतिदिश्ञहाह-'एवं अवसेसाण वि सभाणं' इत्यादि 'एवं' एवम्-सुधर्मासभावत् 'अवसेसाणिव' अवशेषाणां-सुधर्मासभाऽतिरिक्तानाम् उपपातादि सभानाम् वर्णनं प्राक्षथितानुसारेणबोध्यम् किम्पर्यन्तम् ? इत्याह-'जाव उववायसभाए' यावत् उपपातसभायाम्—उत्पित्सु देवोत्पत्युपलक्षितसभायां 'सयणिङ्जं' शयनीयं सृहकं चाभि-व्याप्य वर्णनीयम् तथा 'हरभोय' हृदश्च नन्दापुष्करिणी प्रमाणो वक्तव्यः, सचोत्पन्नदेवस्य श्राचत्व-जळकीडाद्यर्थः, 'अभिसेयसभाए' ततोऽभिषेकसभायाम्-अभिनवोत्पन्नदेवाभिषेक

सेणं' दो योजन के जंचे हैं। वे आसन 'सव्वरयणामया' सर्वात्मना रत्नमय कहे हैं 'जिणपिडमा' यहां जिन प्रतिमा कही हैं 'वण्णओ' इसका वर्णन कह-छेना वह कहांतक कहे इसके छिए कहते हैं 'जाव धूवकडुच्छुया' यावत धूप कडुच्छक पर्यन्त कहे अर्थात् आठ हजार सुवर्ण कलशादि उनके प्रमाण जितनी धूपदानी कही है यह कथन पर्यन्त वर्णन समझछेवें। यह वर्णन राजप्रदनीय सूत्र के ८७ सतासीवें सूत्रमें कहे अनुसार समझछेवें।

अब सुध्रमंसभा में जो चार सभा कही है उसका वर्णन किया जाता है—
'एवं' सुध्रमसभा के कथनानुसार 'अवसेसाणं वि' सुध्रमसभासे अतिरिक्त उपपातादि सभाका वर्णन भी समझलेवें वह वर्णन 'जाव उववायसभाए' यावत् उपपात सभा देवोत्पत्युपलक्षित सभामें 'सयणिडजं' दायनीय ग्रह पर्यन्त यह वर्णन
कह लेना तथा 'हरओय' नन्दा पुष्करिणी प्रमाण हृद्का वर्णन कहे वह वहां
उत्पन्न देव के जल की डार्थ है 'अभिसेगसभाए' तदनन्तर अभिषेक सभा में

उद्धं उच्चत्तेणं' એ યાજન જેટલા ઉંચા છે. એ ખાસ 'सव्वरयणामया' સર્વાત્મના રતન મય કહેલા છે. 'जिणपिडमा' અહીં છન પ્રતિમા કહેલ છે. 'जृण्णओ' તેનું વર્ણન કરી લેવું તે વર્ણન ક્યાં સુધીનું કરવું તે માટે સૂત્રકાર કહે છે. 'जाव धूत्रकडुच्छुया' યાવત્ ધૂપ કડ્ડેચ્છક પર્યન્ત તે વર્ણન કહેવું. અર્થાત્ આઠ હનાર સુવર્ણ કલશાદિ તેના પ્રમાણ જેટલી ધૂપદાની કહેલ છે. આ કથન પર્યન્ત વર્ણન સમજ લેવું. આ વર્ણન રાજપ્રશ્રીય સૂત્રના ૮૭ સત્યાશીમાં સૂત્રમાં કહ્યા પ્રમાણે સમજ લેવું.

હવે સુધર્મ સભામાં જે ચાર સભા કહેલ છે. તેનું વર્ણન કરવામાં આવે છે.

'एवं' સુધમ'સભાના કથન પ્રમાણે 'अवसेसाण वि' સુધમ'સભાથી અન્ય ઉપપાતા દિસભાનું વર્ણ'ન પણ સમજ લેવું. એ વર્ણન 'जाब उबबायसमाए' યાવત્ ઉપપાતસભા દેવાત્પત્યુપલક્ષિત સભામાં 'सयणिडज' શયનીયગૃહ પર્ય'ન્ત આ વર્ણુન કહી લેવું તથા 'हरजोय' નંદા પુષ્કરિણી પ્રમાણ હૃદનું વર્ણન કહેવું તે હૃદ ત્યાં ઉત્પન્ન થયેલ દેવાની महोत्सवस्थानभूतायां 'बहु अभिसेक्के' बहु आभिषेक्यम्-अभिषेक्योग्यं 'मंडे' भाण्ड-पात्रं वक्तव्यम्, 'अलंकारियसभाए' अलङ्कारिक सभायाम् - अभिविक्तदेवानां भूषणधारणस्थानरू-पायां 'बहु अलंकारिय भंडें' बहु अलङ्कारिकभाण्डम्-भलङ्कारयोग्यं भाण्डं 'चिट्टई' तिष्ठन्ति, 'ववसारसभासु' व्यवसायसभयोः-अङङ्कृतानां देवानां शुभाष्यवसायानुचिन्तनस्थानरूपयोः 'पुत्थयरयणा' पुस्तकरतने - उत्तमपुस्तके ततो 'णंदा पुनखरिणीओ' नन्दा पुष्करिण्यो 'बिळि पेढा' बलिपीठे 'दो जोयणाइं भाषाम विवसंभेणं' हे योजने आयाम-विष्कम्भेण-दैर्ध्य-विस्ताराभ्याम्, अर्चनिकोत्तरकारुं नवोत्पन्नदेवयोर्चित्रिवसर्जनपीठे अपि तथैव, 'जोयणं बाहरुछेणं' योजनं बाहरुयेन-पिण्डेन 'जावत्ति' यावत्-यावत्पदेन-'सर्वरत्नमथे प्रासादीये दर्शनीये अभिरूपे, तत्र नन्दाभिधाने पुष्करिण्यो च बलिक्षेपोत्तरकालं सुधर्माः सभायां जिगमिषतोरभिनवोत्पन्नयोर्देवयोईस्तपादप्रक्षाळनार्थे बोध्ये, अथ यथा सुधर्मसभात-अभिनवोत्पन्न देवाभिषेक स्थानरूप 'बहु अभिसेक्के' अनेक अभिषेक योग्य 'संडे' पात्र कहे हैं 'अलंकारियसभाए' अभिषेक देव के भूषण धारण स्थान रूप 'बहु अलंकारिय भेडें अनेक अलङ्कार योग्य पात्र 'चिट्टइ' रखे हैं 'ववसायसभासु' अलंकार धारण किये हुवे देवों के द्युभ अध्यवसाय का चिन्तन करने का स्थान रूप स्थल 'पुत्थयरयणा' उत्तम पुस्तकरत्न 'नंदा पुक्खरिणीओ' दो नन्दापुष्करिणी वावडी 'बलिपेढा' दो बलिपीठ 'दो जोयणाई आयाम विक्खंभेणं' वह बलिपीठ दो योजन के लंबाई चोडाई वाले हैं अर्चनिका काल के अनन्तर नया उत्पन्न हुवे देवके बलिरखनेका पीठ भी तथा 'जोयणं बाइल्लेणं' वह एक घोजन का मोटाई बाला है 'जावत्ति' यहां यावत्पदसे सर्च रत्नमय अच्छा, प्रासादीय, दर्शनीय, अभिरूप वहां नन्दा पुष्करिणी नामकी दो वावडी विटरखने के अनन्तर सुधर्मी

જલકે ડા માટે છે. 'अभिसेगसभाए' ते पछी अलिपेड सलामां नवा ઉत्पन्न थयेत देवा- लिपेड स्थान इप 'बहु अभिसेक्के' अनेड अलिपेड येथ्य 'मंहे' पात्रों डग्रा छे, 'अलंकारिय सभाए' अलिपेड ठरायेल हेवना आल्ष्णु धारणु ठरवाना स्थान इप 'बहु अलंकारियमंहे' अनेड अलंडार येथ्य पात्री 'चिट्ठइ' राणेला छे. 'बबसायसमामु' अल डार धारणु ठरेल हेवाना शुल अध्यवसायनुं जिन्तन डरवाना स्थान इप 'पुत्थयस्यणां उत्तम पुस्तठरतन 'नंदा पुक्खरिणीओं' छे नंदा पुष्ठरिण्य वाव 'बल्लिपेडा' छे अलिपीड 'हो जोयणाई आयाम विक्खंभेणं' के अलीपीड छे येथ्यन केटली लांणी पहाणी छे. अर्थानिडा डाल पछी नवा उत्पन्न थयेल हेवना अलि राभवाना पीठ पणु तथा 'जोयणं वाहत्लेणं' के केड येथ्यन केटला विस्तारवाणुं छे. 'जावत्ति' अली यावत्पद्यी सर्वरत्नसय. अव्छ, प्रासादीय, दर्शश्रीय, अलिइप के विशेषणे अहणु थयेल छे. त्यां नंदा पुष्डरिण्या नामनी छे वावे अलि राभ्या पछी सुधर्मासलामां कवानी छव्छावाणा अने नवा उत्पन्न थयेल हेवना दाय प्राधीवा माटे छे तेम समक्युं.

ईशानकोणे सिद्धायतनं तथा तस्येशानकोणे उपपातसभा एवं पूर्वस्मात् २ परं परमीशानकोणे नक्तन्यं यावद्वलिपीठादुत्तरपूर्वस्यां नन्दापुष्करिणीति, क्विन्द् हिन्वेन क्विचिच्चैकस्वेन पदिनिर्देशः स्त्रकारप्रवृत्तिवैचित्र्याद् बोध्यः ।

इति यमिका राजधान्योर्वर्गनम् ॥

अथ यिनका राजधान्यधिषयोर्थमकदेवयो रुत्पत्यादि स्वरूपं संक्षिपन् सङ्ग्रहगाथामाह— 'उनवाओ संकप्पो' इत्यादि—'उनवाओ' उपपातः—यिमकामिधयोदिवयोरुत्पत्तिः सा वाच्या, ततः 'सकप्पो'— सङ्करपः—उत्पन्नयो देवयोः शुभन्यवसायचिन्तनस्क्षणः सङ्करपः ततः 'अभिसेय विहुसणा' अभिषेक—विभूषणा अभिषेकः—इन्द्रकृताभिषेकः तत्सिहता विभूषणा— सभा में जानेकी इच्छावास्त्रे एवं नये उत्पन्न देवके हस्तपाद—हाथ पाउं घोने के लिये है ऐसा समझे'

जैसा सुधर्म सभा के ईशान कोण में सिद्धायतन कहा है उसी प्रकार सिद्धायतनके ईशान कोण में उपपात सभा है एवं पूर्व से अन्य अन्य ईशान कोण में कहना चाहिए यावत् बलिपीठ के ईशान में नन्दापुष्करिणी कही है।

'किहं पर दिवचन एवं किहं पर एक वचन से जो निर्देश किया है सो सुत्र कार की शैलि की विचित्रता से समझे'

'यमिकाराजधानी का वर्णन समाप्त'

अब यमिका राजधानी के अधिपति यमकदेव के उत्पक्ति आदि स्वरूप को संक्षिप्त कर संग्रह गाथा कहते हैं-'उववाओ संकप्पो' इत्यादि-'उववाओ' उपपात यमिक नामधारीदेंच की उत्पत्ति कहनी तदनन्तर 'संकप्पो' उत्पन्न हुवे देव के शुभव्यवसाय चिन्तनरूप संकल्प उसके पीछे 'अभिसेय विह्नसणा' इन्द्रने किया हुवा अभिषेक सहित अलङ्कार सभा में अलङ्कारों से दारीर को अलंकृत करना

જેવું સુધર્મસભાષી ઇશાન દિશામાં સિદ્ધાયતન કહેલ છે. એજ રીતે સિદ્ધાયતનની કશાન દિશામાં ઉપપાત સભા આવેલ છે, પહેલાંથી અન્ય—અન્ય કશાન દિશામાં કહેવા ત્રેકેએ યાવત અલિપીઠની કશાનમાં નંદા પ્રષ્કરિશી કહેલ છે.

ક્યાંક દ્વિવચન અને ક્યાંક એકવચનથી જે કથન કરેલ છે તે સ્વકારની શૈલીની વિચિત્રતાથી છે તેમ સમજવું.

ા યામિકા રાજધાનીનું વર્ણન સમાપ્ત ા

હવે યામિકા રાજધાનીના અધિપતિ ચમક દેવની ઉત્પત્તિ આદિના કથનને ટુંકવીને સંગ્રહ ગાથા કહે છે.

'खबवाओं संकष्पो' ઇત्યાદિ 'खबवाओं' ઉપપાત-યમિક નામવાળા દેવની ઉત્પત્તિ કહેવી ते પછી 'संकष्पो' ઉત્પन्न થયેલ દેવના શુભાષ્યવસાયના ચિન્તન રૂપ સંકલ્પ, તે પછી 'अभिसेयविद्यसणा' ઇન્દ્રે કરેલ અભિષેક સહિત અલંકાર સભામાં અલંકારાથી શરીરને अलङ्कारसभायामलङ्कारैः श्ररीरालङ्करणम् च-पुनः 'ववसायो' व्यवसायः-पुरतकरत्नोद्धाः टनलक्षणो व्यवसायः। ततो 'अचिणिय सुधम्मगमो' अचिनिका सुधम्गमः-अचिनिका-सिद्धाः यतनाद्यची तत्सिहितः सुधम्गमः-सुधमीयां सभायां, गमः-गमनम् 'जहा य' यथा च 'प्रि-वरणा' परिवारणा-परिवेष्टना तत्तिहिश्च परिवारस्थापना सैव 'इद्धी' ऋद्धिः-सम्पत् यथा यमकयो देवयोः सिहासनयोः परितो वामभागे चतुः-सहस्रसामानिकभद्रासनस्थापना तथा वक्तव्यं जीवाभिगमादितः,अथ यमकौ हृदाश्च यावताऽन्तरेण परस्परं स्थितास्तिन्निर्णेतुमाह- 'जावइ्यंमि' इत्यादि—'जावइ्यंमि पमाणंमि' यावति—यत्त्रमाणके प्रमाणे—माने 'णीलवं-ताओ' नीलवतः—तन्नामकात् पर्वतात् 'हति जमगाओ' यमकौ पर्वती भवतः 'तावइ्यमंतरं' तावत्कं-तावत्-तत्त्रमाणकम् 'खल्ख' खल्ज-निश्चयेन 'जमगदहाणं—दहाणं च' यमकहृदयो हदानां चान्तरं बोध्यम् तच्वान्तरं योजनसप्तमागचतुर्भागाभ्यधिक चतुर्स्विशद्धिकाष्ट्रशत्योजनरूषं इयम् उपपत्तिस्तु प्राग्वत् ।।स्०२१।।

और 'ववसायो' पुस्तकरत्न के खोलने रूप व्यवसाय तत्पश्चात् 'अच्चणिय सुह-म्मगमो' सिद्धायतन आदि की अर्ची सहित सुधमें सभा में जाना 'जहाय' जैसे 'परिवरणा' उस दिशामें परिवार की स्थापना वही 'इद्धी' सम्पत्ति जैसा की-गमिक देवके सिंहासन की चारों ओर चार चार हजार सामानिक देवें के भद्रा-सन की स्थापना जीवाभिगम आदि में कहे अनुसार कहे।

अब यमिका राजधानी एवं हृद जितने अंतर से परस्पर में स्थित है उसका निर्णयार्थ कहते हैं—'जावइयंमि पमाणंमि' जितने प्रमाण के मान 'णीलवंताओ' नोलवंत पर्वत के 'हंति जमगाओं' यमक पर्वत कहे हैं, 'तावइयमंतरं' उतना प्रमाण निश्चय से 'जमगदहाणं च' यमक हृदका एवं अन्य हृदका अन्तर समझ छेना वह अंतर ८३४ योजन सातिया चार भाग प्रमाण है समझना उपपत्तिका कथन पहले कहे अनुसार कहना ॥सु०२१॥

शालाववुं. अने 'ववसायो' पुस्तक रतना भासवा ३५ व्यवसाय, ते पछी 'अच्चिणिय सुहम्मगमो' सिद्धायतन विगेरेनी अर्था सिद्धात सुधर्म सलामां क्युं 'जहाय' केम 'परिवरणा' ते ते दिशामां परिवारनी स्थापना 'इद्धी' सम्पत्ति केमके यिमक हेवना सिद्धासननी यारे तरक् यार यार द्वातर सामानिक हेवना सहासनीनी स्थापना छवालिगम विगेरेमां कहा। प्रमाणे केदेवा.

હવે યમિકા રાજધાની અને હૃદનું અંતર કેટલું છે તેના નિર્ણય માટે સૂત્રકાર કહે છે—'जाबइ'મિ पमाणिમિ' જેટલા પ્રમાણનું માપ 'ળી હવેતાઓ નીલવ'ત પવ'તનું છે 'जमगાओ ताबइयमंतर' યમક પવિતનું પણ તેટલું અંતર છે. 'जमगदहाणं दहाणं च' યમક હૃદનું અને બીજા હૃદેનું અંતર સમાન છે. એટલે કે તે અંતર ૮૩૪ ચાજન સાતિયા આર ભાગ જેટલા પ્રમાણનું હું સમજવું ઉપપત્તિનું કથન પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે કહેવું તસ્ર ૨૧૫

अथ येषां हदानामन्तरमानं प्रागुक्तं तान् स्वरूपतो निर्दिशति ।

म्लम्—किह णं भंते ! उत्तरक्राए णीलवंतहहे णामं हहे पण्णते ? गोयमा ! जमगाणं दिक्लिणिल्लाओ चिरमंताओ अट्ठसए चोत्तीसे चत्तारि य सत्तभाए जोयणस्स अवाहाए सीयाए महाणईए बहुमज्झ-देसभाए एत्थ णं णीलवंतहहे णामं दहे पण्णते दाहिणउत्तरायए पाईणपडीणिविस्थिण्णे जहेव पउमहहे तहेव पण्णओ णेयटवो णाणतं दोहिं पउनवरवेइयाहिं दोहि य वगसंडेहिं संपर्शिवखत्ते, णीलवंते णामं णागकुमारे देवे सेसं तं चेव णेयटवं, णीलवंतहहस्स पुटवावरे पासे दस २ जोयणाइं अबाहाए एत्थ णं वीसं कंचणगपटवया पण्णत्ता, एगं जोयणसयं उद्धं उच्चतेणं।

मूलंमि जोयणसयं पण्णत्तरि जोयणाइं मज्झंमि ।
उत्तरितले कंचणगा पण्णासं जोयणा हुंति ॥१॥
मूलंम् तिण्णि सोले सत्ततीसाइं दुण्णि मज्झंमि ।
अट्टावण्णं च सयं उत्तरितले परिरओ होइ ॥२॥
पहमित्थ नीलवंतो१ बितीओ उत्तरकुरुर मुणेयव्वो ।
चंददहोत्थ तइओ३ एरावय४ मालवंतो य ५ ॥३॥
एवं वण्णओ अट्टो पमाणं पलिओवमट्टिइया देवा ॥ सू०२२॥

छाया-का खलु भदन्त ! उत्तर कुरुषु नीलदद् ह्दो नाम हदः प्रज्ञप्तः, गौतम ! यमकयोदां क्षिणात्याक्चरमान्तात् अष्टक्षतं चतुर्क्षिकां चतुरक्ष सप्तभागान योजनस्य अवाधया
सीताया महानद्या बहुमध्यदेशभागः, अत्र खलु नीलबद्घदो नाम हृदः प्रज्ञप्तः, दक्षिणोत्तरायतः प्राचीनप्रतीचीनिवस्तीणः यथैत पद्महृदः तथैव वर्णको नेत्रव्यः, नानात्त्वं द्वाभ्यां
पद्मवर्षेदिकाभ्यां द्वाभ्यां च वनषण्डाभ्यां सम्परिक्षिप्तः, नीलवान् नाम नागकुमारो देवः
शेषं तदेव नेत्रव्यम्, नीलबद्घदस्य पूर्वापरे पार्थे दश र योजनानि अवाधयाऽत्र खलु
विश्वतिः काञ्चनकपर्वताः प्रज्ञप्ताः, एकं योजनशतम् ध्वेषुच्चत्वेन-

मूळे योजनशतं पश्चसप्ततियोंजनानि मध्ये । उपरित्र कश्चनकाः पश्चाशघोजनानि भवन्ति ।।१। मूळे त्रीणि पोडशे सप्ततिंशे द्वे मध्ये । अष्ट पश्चाशंच शतसुपरित छे परिस्यो भवति ॥२॥ प्रथमो नीलवान् १ द्वितीय उत्तरकुरुक्षीतव्यः२ । चन्द्र हृदोऽत्र तृतीयः ३ ऐरावतश्व४ माल्यवाश्व ५॥३॥ एवं वर्णकः अर्थः प्रमाणं पल्योपमस्थितिका देवाः ॥स्व०२२॥

टीका-'किह णं भंते !' इत्यादि, 'किह णं भंते ! उत्तरकुराए णीलवंतद्दे णामं दहे पणाने' हे भदन्त ! क्य-कुत्र उत्तरकुरुषु २ नीलवद्ध्रदो नाम हृदः प्रज्ञप्तः ?, भगवानाह-'भोयमा ! जमगाणं दिक्खणिल्लाओ' गौतम ! यमकथोः दाक्षिणात्यात्-दक्षिण-दिग्भत्रात् 'चिरमंताओ' चरमान्तात्—सर्वान्तात् 'अद्वष्तए' अण्ट्यत्य्—अण्टानां शतानां समाहारोऽण्ट्यतम् 'चोत्तीसे' चतुर्स्त्र्यं—चतुर्स्त्र्यद्धिकं 'चत्तारिय सत्त्रभाए जोयणस्स अवाहाए' चरुर्थ सप्तभागान् यो ननस्य अवाध्या कृत्वेति गम्यम् अपान्तराले मुक्तवेति भावः, 'सीयाए' सीतायाः—तन्त्रामन्याः 'महाणईए बहुमज्यदेसभाए' यहानद्याः बहुमध्यदेशभागः—अस्ति, 'एत्थ णं' अत्र—अत्रान्तरे खल्ल 'णीलवंतदहे णामं दहे पण्णत्ते' नीलवद्द्दो नाम हृदः प्रज्ञप्तः, स च हृदः 'दाहिण उत्तरायए' दक्षिणोत्तरायतः—दक्षिणोत्तरयोदिकोः आयतः—दिधः, 'पाईणपङ्गिणवित्थिण्णे' प्राचीनप्रतीचीनिक्स्तीर्णः पूर्वपश्चिमयोदिको विस्ती-

कहि णं अंते ! इत्यादि,

टीकार्थ—'किह णं भंते! उत्तरकुराए णीलवंतदहे णामं दहे पण्णत्ते' हे हे भगवन उत्तरकुर में नीलवंत नामका हृद कहां पर कहा है? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं 'गोयमा जमगाणं दिक्विणिल्लाओं' हे गौतम! यमक के दक्षिण दिकाके 'चिरमंताओं' चरमान्त से 'अट्टसए' आठसो 'चोत्तीसे चोत्तीस 'चत्तारिय सत्तभाए जोयणस्स अवाहाए' योजनका है भाग अपान्तरालको छोडकर 'सीयाए' सीता नामकी 'महाणईए बहुमज्झदेसभाए' महानदी का ठीक मध्यभाग है 'एत्थ णं' यहां पर 'णीलवंतदहे णामं दहे पण्णत्ते' नीलवंत हृद नामका हृद कहा है। वह हृद 'दाहिणउत्तरायए' दक्षिण उत्तर दिशा में लंबा है 'पाईणपडीणवित्थिण्णे' पूर्व पश्चिम दिशा की ओर विस्तार युक्त है। उस

'कहिणं मंते !' छत्याहि

टीक्षार्थ-'किह णं मंते! उत्तरकुराए णीखवंतद्दे णामं दहे पण्णत्ते' हे लगवन् उत्तर कुत्रमां नीलवंत हृद क्यां कहेल छे? आ प्रश्नना उत्तरमां प्रसुश्री कहे छे-'गोयमा! जम गाणं दिक्सिणिल्लाओं' हे गौतम! यमक्रनी दक्षिणु दिशाना 'चरमंताओं' यरमान्तथी 'अद्रुसए' आहे हो 'चोत्तीसे' यात्रीस 'चत्तारिय सत्तमाए जोयणस्स अवाहाएं' ये। जनने। हुँ लाग अपान्तरालने छे। डीने 'सीयाए' सीता नामनी 'महाणईए बहुमज्झदेसमाए' महानदीने। अराजर मध्यलाग छे. 'एत्थणं' त्यां 'णीलवंतद्दे णामं दृहे पण्णत्ते' नीलवंत नामनं हुद कुहुल छे, ते हुद 'दाहिणउत्तरायए' दक्षिणु उत्तर दिशामां क्षां छे. 'पाईण पईण वित्थण्णे'

णी:-विस्तारयुक्तः, तस्य च 'जहेव पउमद्दे' यथैव पद्महदः 'तद्देव वष्णभो णेयन्वो' तथैव वर्णको नेतन्यः-प्राह्यः, 'णाणत्तं' नानात्वं-विशेषश्चायम्-'दोहिं पउमवरवेदयाहिं दोहि य वणसंहेहिं संपरिविखते' द्वाभ्यां पद्मवरवेदिकाभ्यां द्वाभ्यां च वनपण्डाभ्यां संपरिक्षिप्तः- परिवेष्ठितः,-अयं भावः-पद्महृदस्तु एकया पद्मवरवेदिकया एकेन च वनपण्डेन सम्परिक्षिप्तः, अयं नीलवान हृदस्तु द्वाभ्यां र ताभ्यां सम्परिक्षिप्तः सोतामहान्या द्विमागीकृतत्वेन उभयपार्थवर्ति वेदिकाद्वययुक्तत्वात्, अत्र 'णीलवंते णामं णागकुमारे देवे' देवश्च नीलवान् नागकुमारः इति विशेषः 'सेसं तं चेव' शेषं तदेव पद्महदोक्तमेव 'णेयव्वं' नेतव्यम्-प्राह्मम्, पद्मादिकं शेषं पद्महद्वद्वोध्यम्, तन्मानसंख्या परिक्षेपादिकं च तथैव ।

हृदका वर्णन 'जहेव पडमदहे' इस कथनानुसार पद्महृद के वर्णन के समान 'तहेव बण्णओ णेयन्वो' उसका वर्णन समझछेवे'' 'णाणसं' उसवर्णन एवं इस वर्णन में जो विशेषता है वह इस प्रकार है 'दोहिं पडमवरवेइयाहिं दोहिय वणसंडेहिं संपरिक्षित्तते' यह हृद दो पद्मवर वेदिका और दो वनषंडसे परिवेष्टित हैं। कहने का भाव यह है कि पद्महृद एक पद्मवरवेदिका और एक वनषण्ड से परिवेष्टित है तब की यह नीलवंत हृद दो पद्मवर वेदिका एवं दो वनषंडसे परिवेष्टित है। सीता महानदी का दो भाग करने से दोनों पार्श्ववर्ति दो वेदिका युक्त होने से

अथ काञ्चनमिरिव्यवस्थामाह-'णीलवंतदहस्स' इत्यादि-'णीलवंतदहस्स पुन्वावरे'

यहां पर 'नीलवंते नागकुमारेदेवे' नीलवान नामका नागकुमारदेव है यह विशेष है 'सेसं तं चेव' अन्य सब कथन पर्महृद के समान ही 'णेयव्वं' कहना चाहिए, पर्मादिक शेष सब कथन पर्महृद के समान ही समझलेवें, उसका मान परिक्षेप आदि भी उसी प्रकार है।

पूर्व पश्चिम हिशा तरक् विस्तारवाणुं छे. ते हुइनुं वर्षुन 'ज्ञहेव पडमहहें' भे अथन प्रमाखे पद्महृहना वर्षुन सरभुं छे. 'तहेव वण्णओ णेयव्वो' तेनुं वर्षुन सम्भ के बेवुं. 'णाणत्तं' को वर्षुन अने आ दर्षानमां के विशेषता छे ते आ प्रमाखेनी छे. 'दोहिं पष्मम्वरवेइयाहिं दोहिंग वणसंडेहिं संपरिक्तितों' को हुइ के पद्मवर वेहिंश अने के वनषंडथी वींटणायेल छे. अहेगाना काव को छे हे-पद्महुइ को पद्मवर वेहिंश अने के वनषंडथी वींटणायेल छे. अने नीलवंत हुइ के पद्मवर वेहिंश अने के वनषंडथी वींटणायेल छे. अने नीलवंत हुइ के पद्मवर वेहिंश अने के वनषंडथी वींटणायेल छे, सीता महाना के लाग इरवाथी अन्ने आजुधी के वेहिंश युक्त होवाथी अध्के इहेल छे.

અહીં યાં 'નીਲવંતે નામ નાગજીમારે દેવે' નીલવાન નામના નાગકુમાર દેવ છે. એટલું વિશેષ છે. 'સેસં ત વેચ' બીજી તમામ કથન પદ્માહૃદના કથન સરખું જ 'ળેયદવં' કહી લેવું પદ્માદિક બાકીનું તમામ કથન પદ્માહૃદના સરખું જ સમજી લેવું, તેનું માપ પરિશેષ વિગેરે પણ એજ પ્રમાણે છે.

दो दो कहा है।

नीलवद्धदस्य पूर्वापरे-पूर्वस्मिश्नपरिस्म 'पासे दसर जोयणाई अवाहाए' पार्श्वे दश र योजनानि अवाधया कृत्वेति गम्यम्-अपान्तराले मुक्त्वेति मावः, 'एत्थ णं' अत्र-अत्रान्तरे खल्छ दक्षिणोत्तरश्रेण्या परस्परं मूले संबद्धाः, अन्यथा शतयोजनविस्ताराणा मेपां सहस्रयोजनमाने हृदायामेऽवकाशासम्भव इति 'वीसं' विशतिः-विशति संख्यकाः र 'कंचणगपव्चया' काश्चनपर्वताः-सुवर्णपर्वताः 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्ताः, 'एगं जोयणसयं उद्धं उच्चत्तेणं' एकं योजन- यतम् अर्धमुच्चत्वेन, एषां काश्चनपर्वतानां विष्कम्भ-पिरक्षेपौ गाथाद्वयेनाह-'मूलंमि जोयणसयं' इत्यादि-'मूलंमि' मूले-मूलावच्छेदेन 'जोयणसयं' योजनशतम् 'पण्णत्ति जोयणाइं मज्झंमि' मध्ये पश्चसप्ततिः योजनानि, 'उवित्तले' उपस्तिले-शिखस्तले 'कंचणगा' काश्चनकाः-काश्चनपर्वताः 'पण्णासं जोयणा हुंति' पश्चाशतं योजनानि भवन्ति ।१।

'मूळंमि तिण्णि' मूळे त्रीणि योजनशतानि 'सोछे' षोडशानि-षोडशाधिकानि, 'सत्त

अब काञ्चनगिरिकी व्यवस्था कहते हैं-'नीठवंतस्स दहस्स पुव्वावरे' नीठ-वंत हृद के पूर्व एवं पश्चिम 'पासे दस जोयणाइं अवाहाए' पार्श्व में दस दस योजन की अवाधासे अर्थात् अपान्तराठ में छोड करके 'एत्थ णं' यहां दक्षिणो-त्तर श्रेणीसे परस्पर मूठ में संबद्ध अन्यथा सो योजन विस्तार वाछे, इनको हजार योजन मान में हृद का आयाम-ठंबाई का अवकाशका असम्भव होता 'वीसं' वीस 'कंचणगपव्यया' कांचन पर्वत-अर्थात् सुवर्ण पर्वत 'पण्णत्ता' कहा है वे पर्वत 'एगं जोयणसयं उद्धं उच्चत्तेणं' एकसो योजन का ऊंचा है।

अब वे कांचन पर्वत का विष्कम्भपरिक्षेप दो गाथा से कहते हैं-'मूलंमि जोयणसयं' मूल भाग में सो योजन 'पण्णत्तरि जोयणाई मज्झंमि' सतावन योजन मध्य भाग में 'उवरितहे' शिखर के भाग में कांचन पर्वत 'पण्णासं जोयणा हुंति' पचास योजन होता है ॥१॥

हुवे डांयन जिनिना संभाधमां डथन डरनामां आवे हे —'नीलवंतरस दहस्स पुट्या वरे' नीलवंत हुदना पूर्व अने पश्चिम 'पासे दस दस जोयणाइं अवाहाए' भाला के इस इस योजननी अभाधायी अर्थात् अपान्तरालमां छाडीने 'एत्थणं' त्यां आगण दक्षिणात्तर श्रेष्ट्रीयी परस्पर संभद्ध अन्यथा से। योजन निस्तास्वाणा आने हुजर योजनना मापमां हुदनी आयाम—लंभाधना अवडाशना असम्भवधात, 'बीसं' वीस 'कंचणग पट्यया' डांयन पर्वत अर्थात् सुवर्ष्ट्र पर्वत 'पण्णत्ता' डहेल छे. के पर्वत 'एगं जोयणसंग उद्धं उच्चन्तेणं' कोड से। योजन केटले। हिंथा डहेल छे.

હવે ते अंथन पर्वतने। विष्ठं ल अने परिक्षेप के गाया द्वारा हुं छे 'मूलंमि जोयणसयं' मूझ लागमां से। येक्नन 'पण्णसरि जोयणाई मङ्झंमि' सत्तावन येक्नन भध्य लागमां 'उवरित्तले' शिभरना लागमां अंथन पर्वत 'पण्णासं जोयणा हुं ति' पथास येक्नने। थाय छे. ॥ १ ॥

तीसाई दुष्णि मज्झंमि' मध्ये सप्तित्रंशे-सप्तित्रंशद्धिके द्वे योजनशते 'उवरित्रले' उपस्तिले 'अहावण्णं च' अष्टपञ्चाशम् अष्ट पञ्चाशद्धिकं 'सयं' शतं 'परिरञ्जा' परिरयः—परिधिः ।२। इह च मूले परिधौ मध्यपरिधौ च किञ्चिद्विशेषाधिकमनुक्तमि बोध्यम् , अथ क्रमेण पञ्चा-नामिप हदानां नामानि निर्दिशति—'पढमित्थ' इत्यादि—'पढमित्थ' प्रथमः—आदिमः 'णील-वंतो'—वितीओ उत्तरकुरु सुणेयन्त्रो' नीलवान् १ द्वितीय उत्तरकुरुः शातन्यः—बोध्यः, 'चंदइहोत्थ तहओ३' इन्द्रहृदः अत्र—पञ्चसु तृतीयः ३ 'एरावए' ऐरावतः चतुर्थः ४ 'माल-वंतो य' माल्यवान् च पञ्चमः ५ बोध्यः ।३।

अथानन्तरोक्तानां काञ्चनपर्वतानामेषां हृदादीनां च स्वरूपनिरूपणार्थे छाघवार्थमेकमेव स्वमाह-'एवं वण्णओ' इत्यादि-'एवं' एवं-नीलवद्धदानुसारेण उत्तरकुरु हृदादीनामिष 'वण्णओ अहो' वर्णकोऽर्थश्च बोध्यः, तथा तेषां 'पमाणं' प्रमाणं-मानं तत्र परयोपमस्थितिका

'मूलंमि तिण्णि' मूल में तीनसो योजन 'सोले' सोलह अर्थात् मूल में तीन सो सोलह योजन 'सत्ततीसाई दुण्णि मज्झंमि' दोसो से तीस योजन मध्य में 'जबरितले' उत्तर के भाग में 'अट्टावण्णं च' अठावन 'सयं' सो अर्थात् अट्टा-वनसो का 'परिरओ' परिधि-घेराव है ॥२॥

यहां मूलकी परिधि एवं मध्य की परिधि में कुछ विशेषाधिक भी कहा है। अब कम से पांचों हदों के नाम कहते हैं-'पढमित्थणीलवंतो' प्रथम नील वंत पर्वत है, 'बितीयो उत्तरकुरु मुणेयव्वो' दूसरा उत्तरकुरु कहा है, 'चंद- दहोत्थ तहओ' चंद्र हद तीसरा कहा है 'एरावए चउत्थ' ऐरावत चोथा है 'माल वंतो य' माल्यवान पांचवां कहा है ॥३॥

अब पूर्वोक्त काँचन पर्वत एवं उनके हृदादि के स्वरूप निरूपणके लिए लाघव करने के हेतु से एक ही खूत्र कहते हैं-'एवं' नीलवंत हृद के कथनानु-सार उत्तर कुरू हृदादि के भी 'वण्णओं अहो' वर्णन करलेना, तथा उनका

'मूर्लमि तिण्णि' भूणमां त्रष्युसे। ये। जन 'सोले' से। अर्थात् भूणमां त्रष्यु से। से। जे। जन 'सत्ततीसाइं दुण्हि मज्झंमि' असे। साउत्रीस ये। जन भध्यमां 'उवित्तले' अप्रना लागमां 'अट्ठावणं च' अट्ठावन 'सयं' से। अर्थात् अट्ठावन से।ने। 'परिरओ' परिधि धेरावे। छे. ॥ २॥ अक्षीयां भूसनी परिधि अने भध्यनी परिधिमां कं छे विशेषाधिक पण्य कहें से छे.

હુવે ક્રમથી યાંચે હુદાના નામ કહે છે.—'पढिमित्थ णीलवंते' યહેલું નીલવંત હુદ છે. 'बितीयो उत्तरकुरु मुणेय वो' ખીજે ઉત્તર કુરૂ કહેલ છે. 'चंद्रहोत्थ तईयो' ચંદ્ર હુદ ત્રીજે કહેલ છે. 'एरावए चडत्थे' એરાવત ચાર્થા છે. 'मालवंतोय' માલ્યવાન્ હુદ પાંચમું છે.॥ उ॥

હવે પૂર્વોક્રત કાંચન પર્વાત અને તેના હુદાદિના સ્વરૂપનું કથન કરવા માટે સંક્ષેપ કરવાના હેતુથી એક જ સૂત્ર કહે છે-'एવં' નીલવંત હુદના કથન પ્રમાણે ઉત્તર કુરૂ આદિ હુદાદીનું 'વण્णओ अट्टो' વર્ણન કરી લેવું. તથા તેનું 'प्रमाणं' માનાદિ પ્રમાણ પણ એજ देवाश्र बोध्याः पद्मवरवेदिकावनषण्डित्रसोपानप्रतिरूपकतोरणम् रुपद्माण्टोत्तरशतपद्मपरिवारपद्मशेषपद्मपरिक्षेपत्रयवर्णनमिप बोध्यम् । तथैवार्थः - उत्तरकुर्वादि हदनामान्वर्थः - उत्तरकुरुह्द प्रभोत्तरकुरुह्दाकारोत्पलादियोगाद् उत्तरकुरुद्देवस्वामिकत्वाच्य उत्तरकुरुह्दः २ इति ।
चन्द्रहृद्दप्रगणि - चन्द्रहृद्दाकाराणि चन्द्रहृद्दवर्णानि चन्द्रश्चात्र देवः स्वामीति तथोगात्तद्धिष्ठितत्वाच चन्द्रहृदः ३, ऐरावतं - तक्षामक्षयुत्तरपार्श्ववर्तिभरतक्षेत्रप्रतिरूपकक्षेत्रम् तत्प्रभाणि तदाकाराणि - आरोपितज्यधनुराकाराणि उत्पलादीनि ऐरावतश्चात्र देवः स्वामीत्यैरावतः,
माल्यवद्धक्षस्कारप्रभोत्पलादि योगानमाल्यवदेवस्वामिकत्वाच्य माल्यवदृदृद् इति, प्रमाणं च
'पमाणं' मानादि प्रमाण भी उसी प्रकार समझ छेवे' वहां के देव की स्थिति
एक पल्योपम की कही है । पद्मवर वेदिका, वनषंड, जिस्तोपान प्रतिरूपक, तोरण
मूल, एक सो आठ पद्म, पद्मका परिवार, पद्मद्रोष, तीन पद्म परिक्षेप का
वर्णन भी यहां करछेवें । उत्तर कुरु आदि हृदों का 'अन्वर्थ नाम जैसे उत्तर
कुरु हृद्द में उत्परन उत्तर कुरु हृद्द के आकार वाले पद्म के घोग से एवं उत्तर
कुरु देव स्वामी होने से उत्तर कुरु हृद्द ऐसा नाम कहा है ।

चन्द्र हृद के प्रभा-के जैसा प्रभा होने से, चन्द्र हृद के आकार वाले होने से, चन्द्र हृद के जैसे वर्ण होने से एवं चन्द्र यहां के देव होने से चन्द्र यहां के अधिष्ठाता होने से चंद्र हृद ऐसा नाम कहा है ॥३॥

एरवत नाम वाला उत्तरपार्श्व में भरतक्षेत्र के समानक्षेत्र है। उसकी प्रभा-वाले, उसके जैसे आकार वाले अर्थात् सज्जित् धनुष के जैसे आकार वाले उत्पलादि होने से ऐरावत देव वहां का स्वामी होने से उसका नाम ऐरवत ऐसा कहा है।

माल्यवान् वक्षस्कार की प्रभा होने से एवं उत्तरहादि माल्यवान् के जैसे होने से तथा माल्यवान् देव वहां का स्वामी होने से भाल्यवान् हृद ऐसा कहा

પ્રમાણે સમજ લેવું ત્યાંના દેવની સ્થિતિ એક પલ્પાલની કહેલ છે. પદ્મવર વેદિકા વનષાંડ, ત્રિસાપાન પ્રતિરૂપક, તારણ મૂળ એકસા આઠ પદ્મ, પદ્મોનાપરિવાર, પદ્મશેષ અને ત્રણ પદ્મ પરિક્ષેપનું વર્ણન પણ અહીંયાં કરી લેવું. ઉત્તરકુરુ વિગેરે હૃદોનું અન્વર્થ નામ જેમ ઉત્તર કુરૂ હૃદમાં ઉત્પન્ન થયેલ ઉત્તરકુરૂ હૃદના આકારવાળા પદ્મના યાગથી તેમજ ઉત્તર કુરૂ હૃદાકાર ઉત્પલ વિગેરના યાગથી ઉત્તરકુરૂ હૃદ એવુ નામ કહેલ છે.

ચંદ્ર હું ની પ્રભાના જેવી પ્રભા હોવાથી ચંદ્ર હુંદના જેવા આકાર હાવાથી, ચંદ્ર હુંદના જેવા વર્લ હાવાથી તેમજ ચંદ્ર તેના દેવ હાવાથી, ચંદ્ર તેના અધિષ્ઠાતા હોવાથી ચંદ્રહૃદ એવું નામ કહેલ છે. ૩

ઐરવત નામનું ઉત્તર પાર્શ્વમાં ભરતક્ષેત્રના સરખું ક્ષેત્ર છે. તેની પ્રભાવાળું, તેના આકારવાળું અર્થાત્ સજ્જ કરેલ ધતુષના જેવા આકારવાળા ઉત્પલાદિ હાવાથી ઐરવત દેવ ત્યાંના અધિષ્ઠાતા દેવ હાવાથી તેમનું નામ ઐરવત એ પ્રમાણે કહેલ છે.

सहस्रं योजनानि आयामः, तद्धं विष्तम्भः, इत्यादिकम्, तत्रःऽऽद्यस्य नागेन्द्र उक्तः, शेषाणां व्यन्तरेन्द्राः, काञ्चनपर्वतानां वर्णको यमक पर्वतत्रद् वक्तव्यः, नामःन्वर्थस्तु काञ्चन-वर्णोत्पल्लादि योगात् काञ्चनपर्वताः, प्रमाणं योजनशतोच्चत्वं मूले योजनवतं विस्तार इत्यादिकम् उत्तरक्तरहृद्दादिशेषहृद्दपार्श्ववर्तिकाञ्चनपर्वतापेक्षयेदं वोध्यम् अथवा प्रमाणं प्रतिहृदं विश्वतिः प्रतिपार्श्व दश्च सर्वसंख्यासंकलनया शतमित्यादिकम् 'पलिओवमिड्इया देवा' पर्योपमस्थितिकाश्च देवा इति, राजधान्यश्चैतेषामनुक्ता अपि यमकदेवरा नधानीवद् वक्तव्याः, ताश्च तत्तद्भिल्लापेन वाच्या, ःस् ० २२॥

जाता है। उसका प्रमाण एक हजार योजन का आयाम एवं उससे अद्धी विष्कम्भ कहा है। उनमें प्रथम जो उत्तर कुरु नामका हृद है उसका इन्द्र नागेन्द्र कहा है, बाकी के सब हृदों के व्यन्तरेन्द्र इन्द्र है।

कांचन पर्वत का वर्णन यमक पर्वत के समान कहना चाहिए उसके नामकी अन्वर्धता कांचन वर्णन उत्पलादि होने से एवं उसके थोग से कांचन पर्वत ऐसा कहे जाते हैं। उसका-प्रमाण एकसो योजन ऊंचा मूल में सो योजन के विस्तारवाले इत्यादि उत्तर कुरु हृदादि दोषहृद के पार्श्वस्थ कांचन पर्वत की अपेक्षा से जानना, अथवा प्रतिहृद का प्रमाण वीस योजन प्रतिपार्श्व का दस योजन संघ को जोडने से सो योजन इत्यादि समझलेवें 'पिलओवमिड्डिंगा देवा' पत्योपम की स्थितिवालेदेव इत्यादि तथा उनकी राजधानी यहां न कहने पर भी यमक देवकी राजधानी के कथनानुसार समझलेवें ॥स्०२२॥

માલ્યવાન્ વક્ષસ્કારના જેવી કાંતી હાવાથી તેમજ ઉત્પલ વિગેરે માલ્યવાનના જેવા હોવાથી તથા માલ્યવાન્ દેવ ત્યાંના સ્વામી હાવાથી માલ્યવાન્ હુદ એવું નામ કહેવાય છે. તેનું પ્રમાણ એક હજાર યોજન જેટલા આયામ અને તેનાથી અર્ધા નિષ્કંભ કહેલ છે. તેમાં પહેલું જે ઉત્તરકુરૂ નામનું હુદ છે, તેના ઇન્દ્ર નાગેન્દ્ર કહેલ છે. આકીના બીજા અધા હુદાના ઇદ્ર વ્યન્તર દેવ છે.

કંચન પર્વતનું વર્ણન યમક પર્વતના વર્ણન પ્રમાણે કંકેવું જોઇએ. તેના નામની અન્વર્થતા કાંચન વર્ણના ઉત્પલારિ હોવાથી અને તેના ચાંગથી કાંચન પર્વત એ પ્રમાણેનું નામ કહેવાય છે. તેનું પ્રમાણ એક સા ચાંજન જેટલા ઉંચા મૂલમાં એક સા ચાંજનના વિસ્તારવાળા ઇત્યાદિ પ્રકારથી ઉત્તરકુર હુદાદિ શેલ હુદના પાર્ધિસ્થ કાંચન પર્વતની અપે ક્ષાથી સમજવું અથવા દરેક હુદનું પ્રમાણ વીસ ચાંજનનું દરેક પાર્ધાનું દસ ચાંજન અધાને મેળવવાથી સા ચાંજન થઈ જાય છે ઇત્યાદિ સમજી લેવું. 'વિજ્યોવમદિર્દ્યા દ્વા' પલ્યાપમની સ્થિતિવાળા દેવા ઇત્યાદિ તથા તેમની રાજધાની અહિયાં ન કહેવા છતાં યમક દેવની રાજવાનીના કથનાનુસાર સમજી લેવી. ॥ સૂ. ૨૨ ॥

अथ यन्नाम्नायं नम्बूहीणः ख्यातस्तां सुदर्शनानाम्नीं जम्बूं विवश्वस्तद्धिष्ठानमाह प्रम — किह णं भंते! उत्तरकुराए र जंबूपेटे णामं पेटे एणणने?, गोयमा! णीलवंतस्स वासहरपटवयस्स दिक्लणेणं मंदरस्स उत्तरेणं माल वंतस्स वक्लारपव्वयस्स पच्चित्थमेणं सीयाए महाणईए पुरिश्यमिछे कूले एत्थ णं उत्तरकुराए जंबूपेटे णामं पेटे पण्णते, पंच जोयणस्याई आयाम-विक्लंभेणं पण्णरस एकासीयाई जोयणस्याई किंचिविसेसाहियाई परिक्लेवेणं, बहुमज्झदेसभाए बारस जायणाई बाहल्लेणं, तयणंतरं च णं मायाए र पएसपरिहाणीए र सट्वेसु णं चिरमपेरंतेसु दो दो गाउयाई बाहल्लेणं सट्वजंबूणयामए अच्छे, से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सट्वओ समंता संपरिक्लिने, दुण्हंपि वण्णओ,

तस्स णं जंबूपेढस्स चउिद्दसिं एए चतारि तिसोवाणपिड रूवगा पण्णता, वण्णओ जाव तेरिणाइं, तस्स णं जंबूपेढस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं मिणपेढिया पण्णता, अटुजायणाइं आयामित्र खंभेणं, चतारि जोयणाइं बाह ल्लेणं, तीसे णं मिणपेढियाए उप्पं एत्थणं जंबूसुदंसणा पण्णता, अटु जोयणाइं उद्धं उच्चतेणं अद्धजोयणं उटवेहेणं, तीसेणं खंधो दो जोयणाइं उद्धं उच्चतेणं अद्धजोयणं बाह ल्लेणं, तीसे णं साला छ जोयणाइं उद्धं उच्चतेणं अद्धजोयणं बाह ल्लेणं, तीसे णं साला छ जोयणाइं उद्धं उच्चतेणं बहुमज्झदेसभाए अटु जोयणाइं आयामित्र खंभेणं साइरेगाइं अटु जायणाइं सट्वम्गेणं, तीसे णं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णते-वहरामया मूला रययसुपइटुयितिडिमा जाव अहियमण्णिव्युइकरी पासाईया दरिसणिजा.

जंबूए णं सुदंसणाए चउहिसिं चत्तारि साला पण्णता, तेसि णं सालाणं बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं सिद्धाययणे पण्णते, कोसं आयामेणं अद्धकोणं विक्खंभेणं देसूणगं कोसं उद्घं उच्चत्तेणं अणेगखंभसयसिण्णिबिट्ठं जाव दारा पंचधणुसयाइं उद्घं उच्चत्तेणं जाव वणमालाओ मणिपेढिया पंचधणुसयाइं आयामविक्खंभेणं अद्धाइजाइं धणुसयाइं बाहल्लेणं, तीसे णं मिणपिढियाए उप्पिं देवच्छंदए पंचधणुसयाइं आयामविवसंभेणं साइरेगाइं पंचधणुसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं, जिणपिडमावण्णओ णेयव्वात्ति।

तत्थ णं जे से पुरिधमिल्ले साले एत्थ णं भवणे पण्णते, कोसं आयामेणं, एवमेव णवरमित्थ संयणिजं सेसेसु पासायवर्डसया सीहासणा य सपरिवारा इति। जंबू णं वारसहिं पउमवरवेइयाहिं सब्वओ समंता संपरिक्षिता, वेइयाणं वरणओ, जंबू णं अण्णेगं अहुसएणं जंबू णं तद्बुचत्ताणं सद्वओ समंता संपरिक्खिता, तासि णं वःणओ, ताओ णं जंबू छहिं पउसवस्वेइयाहिं संपरिक्खिता, जंबूए ७ं ुदंसणाए उत्तर-पुरिथमेणं उत्तरेणं उत्तरपचिरिथमेणं एत्थ णं अणाढियस्स देवस्स चउण्हं सामाणियस।हस्सीणं चत्तारि जंबूसाहस्सीओ पण्णताओ, तीसे णं पुर-रिथमेणं चउण्हं अग्गमहिसीणं चत्तारि जंबुओ पण्णताओ-दिवखणपुर-त्थिमे द्क्षिलणेण तह अवरद्क्षिलणेणं च। अटूद्स बारसेव य भवंति जंबुसहस्साइं ॥१॥ अणियाहिवाण पचित्थिमेण सत्तेव होति जंबुओ। सोळस साहरूतीओ चउद्दिसि आयरबलाणं ॥२॥ जंबूएणं तिहिं सइएहिं वणसंडेहिं सब्बओ समंता संपरिक्षित्रता, जंबूए णं पुरिथमेणं पण्णासं जोयणाई पहमं वणसंड ओगाहित्ता एत्थ ण भवणे पञ्णत्ते, कोसं आया-मेणं सो चेव वण्णओ सयणिजं च। एवं सेसासु विदिसासु भवणा, जंबूए णं उत्तरपुरिक्षमेणं पढमं वणसंडं पण्णासं जोयणाइं ओगाहिता एत्थ णं चत्तारि पुत्रखरिणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा-पउमा १ पउमप्पभा २ कुमुदा ३ कुमुदण्पभा ४ ताओ णं कोसं आयामेणं अद्वकोसं विवर्षं-भेणं पंचधणुसयाई उच्चेहेणं वण्णओ, तासि णं मज्झे पासायवर्डेसगा कोसं आयामेणं अद्धकोसं विक्खंभेणं देसुणं कोसं उद्धं उच्चतेणं वण्णओ सीहासणा सपरिवारा, एवं सेसासु विदिसासु,

> गाहा—पउमा पउमप्पभा चेत्र, कुमुदा कुमुदप्पहा ! उप्पलगुम्मा णलिणा, उप्पला उप्पलुज्जला ॥१॥

भिंगा भिंगप्यभा चेव, अंजणा कजलप्यभा।
सिरिकंता सिरिमहिमा, सिरिचंदा चेव सिरिनिलया।।२॥
जंबूए णं पुरिधमिल्लस्स भवणस्स उत्तरेणं उत्तरपुरिधमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स दिक्लणेणं एत्थ णं कूढे पण्णत्ते, अटु जोयणाइं उद्धं उच्चतेणं, दो
जोयणाइं उट्वेहेणं मूले अटुजोयणाइ आयामविक्यंभेणं बहुमज्झदेसभाए
छजोयणाइं आयासविक्लंभेणं उवरिं चत्तारिजोयणाइं आयामविक्लंभेणं

पणवोसट्टेरस बारसे मूळे य मिड्झ उवरिंच। सविसेसाइं परिरओ कूडस्स इमस्स बोद्धव्दो ॥१॥

मूळे वित्थिण्णे मञ्झे संखित्ते उवरिं तणुए सब्बकणगामए अच्छे वेइया-वणसंडवणगओ, एवं सेसावि कूडा इति ।

जंबूर णं सुदंसणाए दुवालस णामधेरजा पण्णता, तं जहा-सुदंसणा १ अमोहा २ य, सुप्पबुद्धा ३ जसोहरा ४ ।

विदेह जंबू ५ सोमणता ६ णियया ७ णिच्चमंडिया ८ ॥१॥ सुभदा ९ य विसाला १० य, सुजाया ११ सुपणा १२ विया। सुदंसणाए जंबूए णामघेज्जा दुवालस ॥२॥

जंबूए णं अट्टुमंगलगा पण्णता, से केणट्टे मंते ! एवं वुच्चइ जंबू सुदंसणा २१, गोयमा ! जंबूए णं सुदंसणाए अणाहिए णामं जंबूहोवाहिवई परिवसइ महिद्धीए. से णं तत्थ चउण्हं सामाणियसाह-स्तीणं जाव आयरक्खदेवसाहस्सीणं, जंबूहीवस्स णं दीवस्स जंबूए सुदंसणाए अणाहियाए रायहाणीए अण्णेसिं च बहुणं देवाण य देवीण य जाव विहरइ, से तेणटुणं गोयमा! एवं बुच्चइ, अदुत्तरं चणं गोयमा! जंबूसुदंसणा जाव भुविं च ३ धुवा णियया सासया अवख्या जाव अवट्रिया। कहिणं मंते! अणाहियस्स देवस्स अणाहिया णामं राय-हाणी पण्णता ?, गोयमा ! जंबूहीवे मंदरस्स पव्चयस्स उत्तरेणं ज चेव

पुट्यविणयं जिमगापमाणं तं चेव णेयव्वं, जाव उववाओ अभिसेओ य निरवसेसोत्ति ॥सू०२३॥

छाया-नव खल उत्तरकुरुष २ जम्यूपीठं नाम पीठं प्रज्ञप्तम् १, गौतम ! नीलवतो वर्ष-धरपर्वतस्य दक्षिणेन मन्दरस्य उत्तरेण माल्यवतो वक्षरक रपर्वतस्य पश्चिमेन सीताया महानद्याः पौरस्त्ये क्ले अत्र खल उत्तरकुरुष कुरुषु जम्बूपीठं नाम पीठं प्रज्ञप्तम्, पश्च योजनञ्जतानि आयामविष्कमभेण, पश्चद्श एकाशीतानि योजनञ्जतानि किश्चिद्विशेषाधिकानि परिक्षेपेण, बहुमध्यदेशभागे द्वादश योजनानि वाहल्येन तदनन्तरं च खल मात्रया २ प्रदेश-परिद्वान्या २ सर्वेभ्यः खल चरमपर्यन्तेषु द्वे द्वे गन्यूते बाहल्येन सर्वजम्बूनदमयम् अच्छम्। तद एकया पद्मवरवेदिकया एकेन च वनपण्डेन सर्वतः समन्तान् संपरिक्षिप्तम्, द्वयोरिप वर्णकः,

तस्य खलु जम्बूपीठस्य चतुर्दिशि एनानि चरारि त्रिसीपानप्रतिरूपकाणि प्रज्ञप्तानि, वर्णकः यावत् तोरणानि, तस्य खलु जम्बूपीठस्य बहुमध्यदेशभागः, अत्र खलु मणिपीठिका प्रज्ञप्ता, अष्टयोजनानि आयामिविष्कमभेण चरवारि योजनानि बाह्रत्येन, तस्याः खलु मणिपीठिकाया उपरि अत्र खलु जम्बूपुदर्शना प्रज्ञप्ता, अष्टयोजनानि ऊर्ध्यपुच्चत्वेन अर्द्ध्योजन्म सुद्धेचेन, तस्याः खलु सक्याः दे योजने अर्ध्यपुच्चत्वेन अर्द्धयोजनानि अर्ध्यपुच्चत्वेन बहुमध्यदेशभागे अष्ट योजनानि आयामिविष्कमभेण, सातिरेकाणि अष्टयोजनानि सर्वाग्रेण, तस्याः खलु अयमेतद्व्यो वर्णागासः प्रज्ञप्तः—वज्ञमयम् एत्रा रजतस्वप्रतिष्ठतिविष्ठमा यावत् अधिकमनोनिर्द्धतिकरी मासादीया दर्शनीयाः । जम्ब्बाः खलु सद्धानायाः चतुर्दिशि चतसः शालाः प्रज्ञप्ताः, तासां खलु शालानां बहुमध्यदेशभागः, अत्र खलु सिद्धायतनं प्रज्ञप्तम्, कोशमायामेन अर्द्धकोशं विष्कमभेण देशोनकं कोशमूर्ध्वपुच्चत्वेन अत्र खलु सिद्धायतनं प्रज्ञप्तम्, कोशमायामेन अर्द्धकोशं विष्कमभेण देशोनकं कोशमूर्ध्वपुच्चत्वेन अत्र खलु सिद्धायतनं प्रज्ञप्तम्, कोशमायामेन अर्द्धकोशं विष्कमभेण देशोनकं कोशमूर्ध्वपुच्चत्वेन अत्र खलु सिद्धायतनं प्रज्ञप्तानि आयासविष्कमभेण अर्द्धत्वीयानि धनुः शतानि बाह्ययेन, तस्याः खलु मणिपाठिकाया उपरि देवन्छन्दकं पश्च धनुःशतानि आयामविष्कमभेण साति-रेकाणि पश्च धनुःशतानि जर्ध्वपुच्चत्वेन, जिनप्रतिमावर्णको नेतव्य इति ।

तत्र खलु या सा पौरस्त्या शाला अत्र खलु भगनं प्रज्ञप्तम्, क्रोशमायामेन एवमेव नव-रमत्र शयनीयं शेषासु प्रासादवतंसकाः सिंहासनानि च सपित्वाराणीति । जम्बूः खलु द्वाद-शिमः पद्मवरवेदिकाश्चः सर्वतः समन्तात् सम्परिक्षितः, वेदिकानां वर्णकः, जम्बूः खलु अन्येन अध्यातेन जम्बूनां तद्धीं च्चत्वानां सर्वतः समन्तात् संपरिक्षितः, तस्याः खलु वर्णकः, ताः खलु जम्ब्बः पह्माः पद्मवरवेदिकाभिः संपरिक्षिताः, जम्ब्बाः खलु सुदर्शनायाः उत्तर-पौरस्त्येन उत्तरेण उत्तरपश्चिमेन अत्र खलु अनाहतस्य देवस्य चत्तसणां सामानिकसाहस्रीणां चतस्रो जम्ब्सा जम्बूसाहस्त्रयः प्रज्ञप्ताः तस्याः खलु पौरस्त्येन चतस्रणामग्रमहिषीणां चतस्रो जम्ब्वः प्रज्ञप्ताः नस्याः खलु पौरस्त्येन चतस्रणामग्रमहिषीणां चतस्रो जम्ब्वः प्रज्ञप्ताः—दक्षिणपौरस्त्ये दक्षिणेन तथा अपरदक्षिणेन च । अष्ट दश्च द्वादशैव च भवन्ति जम्बूसहस्राणि ।१। अनीकाधिपानां पश्चिमेन सप्तेत्र भवन्ति जम्ब्वः । षोडशसाहस्त्र्यश्चतुर्दिश्च

आत्मरक्षाणाम् ।२। जम्ब्वः खलु त्रिभिः शितिः वनषण्डैः सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्ताः, जम्बाः खलु पोरस्त्येन पश्चाश्तं योजनानि प्रथमं वनषण्डम् अवगास अत्र खलु भवनं प्रश्नः सम्, क्रोशमायामेन स एव दर्णकः श्वयतियं च, एवं शेषास्विप दिश्व भवनानि, जम्ब्याः खलु उत्तरपौरस्त्येन प्रथमं वनषण्डं पश्चाशतं योजनानि अवगास अत्र खलु चतसः पुष्करिण्यः प्रश्नाः तद्यथा-पद्मार्थ पद्मप्रभा २ क्रमुदा ३ क्रमुद्रप्रभा ४. ताः खलु क्रोशमायामेन अर्द्धकोशं विष्कम्भेण पश्चधमुःशतानि उद्वेपेन, वर्णकः, तासां खलु मध्ये प्रासादावतंसकाः क्रोशमायामेन, अर्द्धकोशं विष्कम्भेण, देशोनं क्रोशमृध्वमुद्यस्वतेन, वर्णकः सिंहासनानि संपरिवाराणि, एवं शेषास विदिश्व, गाथा-पद्मा पद्मप्रभा चैव, क्रमुद्रा क्रमुद्रप्रभा । उत्पल्लग्रसानिलना उत्पलोष्टवला ।१। मृङ्गा मृङ्गप्रभा चैव, अञ्चना कष्ठत्रस्त्रभा । श्रीकान्ता श्रीमहिता श्रीचन्द्रा चैव श्रीनिल्या।२।

जम्बाः खलु पौरस्त्यस्य भवनस्य उत्तरेण उत्तरपौरस्त्यस्य प्रासादावदंसकस्य दक्षिणेन अत्र खलु क्टं प्रज्ञप्तम्, अष्ट योजनानि कर्ध्व मुच्चत्वेन द्वे योजने उद्वेधेन मूळे अष्ट योजनानि आयामविष्कम्भेण उपरि चलारि योजनानि आयामविष्कम्भेण उपरि चलारि योजनानि आयामविष्कम्भेण -पश्चविंशतिमष्टादश द्वादशैव मूळे च मध्ये उपरि च । सवि शेषाणि परिरयः क्टस्यास्य बोद्धव्यः ।१। मूळे विस्तीर्णं मध्ये संक्षिप्तमुपरि त्नुक्षम् सर्व-कनकमयम् अच्छम् वेदिकावनषण्डवर्णकः, एवं शेषाण्यपि क्टानि इति ।

जम्ब्बाः खल सुद्र्शनायाः द्वादश नामधेयानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—सुद्र्शना १ अमोघा २ च सुप्रबुद्धा ३ यशोधरा ४ । विदेह जम्बूः ५ सौमनस्या ६ नियता ७ नित्यमण्डिता ८ ।१। सुभद्रा च ९ विश्वाला च १० .सुजाता ११ सुमना १२ अपि च । सुद्र्शनायाः जम्ब्बाः नामधेयानि द्वादश ॥२॥

जम्ब्वाः खळु अष्टाष्टमङ्गळकानि०, केनार्थेन भदन्त ! एत्रमुच्यते जम्बूः सुदर्शना २ ? गौतम ! जम्ब्वां खळु सुदर्शनायामनाइतो नाम जम्बूद्वीपाधिपतिः परिवसति महर्द्धिकः, स खळु तत्र चतसणां सामानिकसाहस्रीणां यावद् आत्मरक्षदेवसाहस्रीणां, जम्बूद्वीपस्य खळ द्वीपस्य जम्ब्वाः सुदर्शनायाः अनाइतायाः राजधान्या अन्येषां च बहूनां देवानां च देवीनां च यावद् विहरति, सा तेनार्थेन गौतम ! एत्रमुच्यते अदुत्तरं च गौतम ! जम्बूसुदर्शना यावद् अभूत् च ३ ध्रुवा नियता शाश्वती अक्षया यावद् अवस्थिता । क्व खळु भदन्त ! अना- इतस्य देवस्य अनाइता नाम राजधानी प्रज्ञप्ता ?, गौतम ! जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य उत्तर्भ यदेव पूर्ववर्णितं यमिका प्रमाणं तदेव नेतव्यम्, उपपातोऽभिषेकश्च निरवशेष इति ।।स्०२ ३॥

अब जिन के नामवाला यह जम्बूबीप कहा है वह सुदर्शनानामवाली जम्बू का कथन करने की विवक्षा से उसका अधिष्ठान कहते हैं-

હવે જેના નામથી આ જંળૂઢીય કહેલ છે તે સુદર્શના નામવાળા જાંળૂનું કથન કરવાની વિવક્ષાથી તેનું અધિષ્ઠાન કહે છે.

टीका—'किह णं भंते!' इत्यादि—'किह णं भंते! उत्तरकुरः ए २ जंब्पेढे णामं पेढे पण्णते' क खल भरन्त! उत्तरकुरुषु जम्बूपीठं नाम पीठं प्रज्ञप्तम्? भगवानाह—'गोयमा! णीलवंतस्स वासहरपन्वयस्स दिखणेणं' हे गौतम! नीलवंतो वर्षथरपर्वतस्य दक्षिणेन—दिश्वणस्यां दिश्वि 'मंदरस्य' मन्दरस्य—तन्नामक पर्वतस्य 'उत्तरेणं' उत्तरेणं उत्तरस्यां दिश्वि—'माळवंतस्स ववखारपन्वयस्स पच्चित्थमेणं' माल्यवतो वक्षस्कारपर्वतस्य पश्चिमेन—पश्चिमायां दिश्वि 'सीयाए' सीताया:—एतन्नामन्याः 'महाणईए पुरित्थिमिरुले' महानद्याः पौरस्त्ये पूर्व दिग्भवे 'कूले' कूले—तटे—सीताद्विभागी कृतोत्तरकुरुप्वद्वि तत्रापि मध्यभागे 'एत्थ णं उत्तरकुराए जंब्पेढे णामं पेढे पण्णते' अत्र खल उत्तरकुरुणां जम्बूपीठं नाम पीठं प्रज्ञप्तम्, अस्य मानाद्याह—'पंच जोयणस्याः' पश्च योजनशतानि—तत् पीठं पश्चभत-योजनानि 'आयामविक्छंभेणं' आयामविक्कम्भेण—दैर्ध्यविस्ताराभ्यां प्रज्ञप्तम् एवमग्रेऽपि

कहिणं भंते ! इत्यादि ।

टीकार्थ-'किह णं भंते! उत्तरकुराए कुराए जंब्रेपेढे णामं पेढे पण्णते' हे भगवन उत्तरकुरु में जंब्र्पीठ नामका पीठ कहां पर कहा है ! इस प्रश्न के उत्तर में महावीर प्रभुश्नी कहते हैं-'गोयमा! णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दिक्खणेणं' हे गौतम! नीलवंत वर्षधर पर्वत के दक्षिणिदिशा में 'मंदरस्स' मंदर पर्वत, के 'उत्तरेणं' उत्तर दिशाकी ओर 'मालवंतस्स वक्खारपव्ययस्स पच्चित्रमेणं' माल्यवान वक्षस्कार पर्वत के पश्चिम दिशा में 'सीयाए महाणइए पुरित्थिमिल्छे कुछे' सीता महा नदी की पूर्व दिशा के किनार में अर्थात् दो भाग कि गई सीता महानदी के उत्तर कुरु रूप पूर्वार्ड में उसके भी मध्य भाग में 'एत्थ णं उत्तरकुराए जंब्र्पेढे णामं पेढे पण्णत्ते' यहां पर उत्तर कुरु का जंब्र्पीठ नामका पीठ कहा है।

अब इसका मानादि प्रमाण कहते हैं-पंच जोयणसयाई' वह पीठ पांचसौ

'कहि णं भंते' छत्याहि

'पण्गरसष्कासीयाइ' पश्चदश एकाशीतानि-एकाशीत्यधिकानि 'जोयणसयाइ' किंचिनिसेसाहियाइ' योजनशतानि किश्चिद्विशेषाधिकानि-किश्चिद्धिकानि 'परिवर्षवेणं' परिक्षेपेण-परिधिना, तत-पुनः 'बहुमज्झदेसभाए' वहुमध्यदेशभागे-अत्यन्तमध्यदेशभागावक्छेदेन 'बारसजोयणाइ' बाहरुलेणं' द्वाद्शयोजनानि वाहरुथेन-पिण्डेन, 'तयणंतर' च णं'
तदनन्तरं च-ततः परं च खल्ल 'नायाए २' मात्रया २-क्रमेण २ 'पएसपरिहाणीए २'
प्रदेशपरिहान्या किश्चित्प्रदेशस्य ह्रासेन परिहीयमानं-ह्रस्त्रीभवत् 'सन्वेख णं चिरमपेरंतेषु'
सर्वेभ्यः खल्ल चरमपर्यन्तेषु-अन्तिमपर्यन्तेषु पीठेषु मध्यतोऽर्द्धत्तीययोजनशतोल्लङ्घने
'दो दो गाउयाइ' द्वे दे गन्यूते-क्रोशयुग्मे चतुःक्रोशान् 'वाहरुलेणं' बाहरुयेन-पिण्डेन,
'सन्वजंबुणयामए' तत् जाम्बुनद्मयं-जाम्बुनदाख्योचमस्वर्णमयम् 'अच्ले' अच्लम्-आकाशस्फटिकवदतिनिर्मलम्-एतदुपलक्षणंश्चर्रक्षणादीनामिपि, तद्व्याख्या प्राग्वत्। 'से णं' तत्
अनन्तरोक्तं जम्बुपीठं खल्ल 'एगाए पटमवरवेइयाए एगेण वणसंडेणं सन्वश्रो समंता'

योजन के 'आयामिवत्रखंभेणं' विस्तार वाला है अर्थात् इतना इसका विष्कंभ है। तथा 'पण्णरस एकासीयाइं' पंद्रहसो इकासी 'जोयणाइं किंचि विसेसाहि- याइं' योजन से कुछ विशेषाधिक 'परिवलेवेणं' उसका परिकेष अर्थात् परिधि कही है। वह पीठ 'बहुमज्झदेसभाए' ठीक मध्य भाग में 'बारस जोयणाइं बाहल्छेणं' बारह योजन स्थूल-मोटा है। 'तयणंतरंच णं' तत्पश्चात् 'मायाए मायाए' कम कम से 'पएसपरिहाणीए' कुछ प्रदेश का द्वास होने से लघु होता हुआ 'सब्वेसु णं चरिमपेरंतेसु' सब से अन्तिम भाग में अर्थात् मध्य भागसे हाइसो योजन जाने पर 'दो दो गाउयाइं' दो दो गव्यूत अर्थात् चार कोस 'बाह ल्छेणं' मोटाई से कहा है। 'सब्ब जब्णयामए' सर्वात्मना जम्बूनद् नामके सुवर्ण मय है, 'अच्छे' आकाश एवं स्फटिक के समान अत्यन्त निर्भल है यहां 'अच्छ' पद उपलक्षण है अतः श्लक्षणादि सब कथन पूर्व के जैसे समझलेवें।

'आयाम विक्खंभेणं' विस्तारवाणुं छे. अर्थात् ओट्रेंश तेना विष्ठंस (धरावा) छे, तथा 'पानरस एक्कासीयाइं' पंढर से। ८१ अक्षेश्वा 'जोयणाइं किंचि विसेसाहियाइं' ये। जनधी क्षेष्ठ विशेषाधिक 'परिक्खेवेणं' परिक्षेप अर्थात् परिधि क्षेष्ठ छे. ते पीऽ 'बहुमज्झदेसमाए' अराजर मध्य काणमां 'बारसजोयणाइं बाहरूलेणं' जार ये। जन केटलुं काडुं छे. 'तयणंतरं च जं' ते पछी 'मायाए मायाए' क्षेम्श 'पएसपरिहाणीए' कं क्षेत्र प्रदेशना द्वास थवाथी नाने। थतां थतां 'सहवेसु जं चरिमपेरंतेसु' अधाथी छेल्ला काणमां अर्थात् मध्यकाणमां अर्थि से। ये। जन कवाथी 'दो दो गाउयाइं' अज्ले गज्यूत अर्थात् यार गाउ 'बाहरूलेजं' केटली माटा अर्थत क्षेत्र छे. 'सहब जंबूणयामए' सर्व प्रकारथी कं जनह नामना सुवर्ण भय छे 'अच्छे' आक्षाश अने स्कृटिकना समान अत्यंत निर्मण छे. अर्थीयां 'अन्वर्थ' पद इप बक्षणु छे. तेथीन्दक्षणाहि तमाम विशेषण्वा पहेलानी केम समक्ष केवा. 'से जं' से कं जू

एकया पश्चरवेदिकया एकेन च वनषण्डेन सर्वतः समन्तात्-सर्वदिग्विदिक्षु 'संपरिक्षिते' सम्परिक्षितम्, 'दुण्हेंपि' द्वयोरिप-पश्चवरवेदिका-वनपण्डयोरुभयोरिप 'वण्णभो' वर्णकः - वर्णनपरपदसमूदः अत्र बोध्यः, स च पश्चम-पष्ठ स्त्राम्यां होयः, तच्च जम्बूपीठं जधन्यतोऽपिवरमान्ते द्विकोक्युच्चकथं सुखारोहावरोहम् ? इत्याशङ्कयाह -'तस्स णं' इत्यादि—'तस्स णं' तस्य-पूर्वेक्तिस्य खळ 'जंब्पेहस्स चउिह्सीं' जम्बूपीठस्य चतुर्दिशि-चतुरुषु दिश्च-'एए चत्तारि' एतानि-इमानि चत्वारि 'तिसोवाणपिडिक्वगा' त्रिसोपानप्रतिकृपकाणि-सुन्दरित्रसोपानानि 'पण्णता' प्रज्ञप्तानि, तेषां 'वण्णशो' कर्णकोऽत्र बोध्यः, सच किम्पर्यन्तः इत्याह—'जाव तोरण इं' यावत् तोरणानि-तोरणपर्णनप्यन्तः, विसोपानप्रतिकृपक्षक्षक्षेत्रो द्वादशस्त्रतो राजप्रश्लीयस्य तोरणवर्णक्षश्च त्रयोदशस्त्रतो वोध्यः,

'सेणं' वह जम्बूपीट 'एगाए पडमवरवेइयाए एगेण वणसंडेणं सन्वओ समंता' एक पद्मवरवेदिका एवं एक वनषंड से चारों ओर से 'संपरिक्सिने' ज्यास रहता है ? 'दुण्हंपि वण्णओ' पद्मवरवेदिका एवं वनषंड का वर्णन सर्व प्रकार से यहां पर समझछेवें' वह वर्णन पांचवें एवं छठे सूत्र से ज्ञातकर छेवें।

वह अम्बूरीठ कम से कम चरमान्तमें दो कोस की ऊंचाइ वाला होने से सूख पूर्वक आना जाना कैसे बन सकता है? इस इंका की निवृत्ति के लिए कहते हैं 'तस्क्ष णं अंबूरेढस्स चउिंदसी' वह पूर्वोक्त जंबूरीठ के चारों दिशा में 'एए चत्तारि तिसोवाणपिक्ष्यमा पण्णत्ता' यह चार सुंदर पगिथएं कहे हैं। उसका 'वण्णओ' समग्र वर्णन यहां पर समझछेवें वह वर्णन कहां तक का गृहण करने योग्य है? इसके लिए कहते हैं 'जाव तोरणाइं' यावत् तोरण वर्णन पर्यन्त उसका वर्णन यहां पर कहछेवें। त्रिसोपान प्रतिरूपकका वर्णन राज प्रभीय सुन्न के वारहवें सुन्न से एवं तोरण का वर्णन तेरहवें सुन्न से समझ

भीठ 'एगाए पउमवरवेड्याए एगेण वणसंडेणं सम्बओं समंता' એક पश्चवर वेहिंडा तेमक क्रिक वनवंडथी वारे तरहथी 'संपरिक्सित' न्याप्त रहे छे. 'दुण्हं पि वण्णओ' पश्चवर वेहिंडा अने वनवंडतुं वर्जुन पांचमा अने छट्डा सूत्रथी समक्ष क्षेतुं.

એ જંગૂ પીડ એછામાં એછું ચરમાન્તથી બે ગાઉ જેટલી ઉંચાઇવાળું હાવાથી સૂખ પૂર્વક આવવાજવાનું (જવર અવર) કેવી રીતે થઇ શકે છે? આ પ્રકારની શંકાના સમાધાન માટે કહે છે—'તરસાં નંથ્વેદરસ चહિંદસી' એ પૂર્વોક્ત જંગૂપીઠની ચારે દિશામાં 'વળ चત્તારિ તિસોગાળવિક હવા પાળળત્તા' આ ચાર સુંદર પગથિયાએ કહેલ છે. તેનું 'વળાઓ' સંપૂર્ણ વર્ણન અહીંયાં કરી લેવું. તે વર્ણન કયાં સુધીનું ગ્રહણ કરવાનું છે? તે માટે કહે છે—'નાવ તોરળાદું' યાવત તારેણના વર્ણન પર્યન્ત તેનું વર્ણન અહીંયાં કહી લેવું. ત્રિસોપાનપ્રતિરૂપકનું વર્ણન રાજપ્રશ્નીય સૂત્રના આરમા સૂત્રમાંથી અને તારેણનું વર્ણન તેરમાં સૂત્રમાંથી સમજ લેવું. વિસ્તાર ભયથી અહીંયાં તેના ઉલ્લેખ કરેલ નથી.

अथ जम्बूपीठस्य मणिपीठिकां वर्णियतुमाह-'तस्त णं जंबूपेढस्स बहुमज्झदेसभाए' तस्य खळ जम्बूपीठस्य बहुमध्यदेशभागः—अत्यन्तमध्यदेशभागः अस्तीतिशेषः, 'एत्थ णं' अत्र—अत्रा तो खळ 'मणिपेढिया' मणिपीठिका—मणिमयासनिवशेषः, 'पण्णत्ता' प्रञ्जप्ता, सा च 'अह जोय-णाइं आयामिविक्खंभेणं' अष्ट योजनानि आयाम—विष्कमभेण—देष्ट्ये—विस्ताराभ्याम्, 'चत्तारि जोयणाइं वाहल्छेणं' चत्वारि योजनानि बाहल्येन—पिण्डेन, 'तीसे णं' तस्याः—अनन्तरो-कायाः खळ 'मणिपेढियाए उप्पि' मणिपीठिकायाः उपरि—ऊर्ध्वभागे 'एत्थणं जंबू सुदंसणा' अत्र खळ जम्बूः—सुद्धनानाम्नी 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्ता, तस्या मानमाह—'अह जोयणाइं उदं उच्चरेणं' अष्ट योजनानि अर्ध्वसुच्चत्वेन, 'अद्भायणं उद्यवेहेणं' अर्द्ध योजनम् उद्वेधेन—भूप्रवेशेन, अथास्याः स्कन्धमानमाह—'तीसे णं' तस्याः—मणिपीठिकायाः खळ 'खंधो' स्कन्धः—कः इादुपरितनशास्तानिर्गमनस्थानपर्यन्तोऽवयवः 'दो जोयणाइं उद्धं उच्चतेणं'

छेवें विस्तार भय से यहां उल्छेख नही किया है।

अब जंब्रीठ की मणिवीठिका का वर्णन करते हैं-'तरस णं जंब्र् पेहस्स बहु मज्झदेसभाए' उस जंब्र्वीठका ठीक मध्य भाग में 'एत्थ णं मणिपेढिया पण्णत्त' मणिपीठिका कही है। 'अद्ध जोयणाइं आयामिवक्खंभेणं' वह जंब्र्वीठ की मणिपीठिका काठ योजन की लंबाई चोडाई वाली है। 'चत्तारि जोयणाइं वाहरलेणं' चार योजन की माटाई वाली है। 'तीसे णं मणिपेढियाए' वह पूर्वोक्त उस मणिपीठिका के 'उप्पि' उपर के भाग में 'एत्थ णं जंब्र्सुदंसणा पण्णत्ता' जंब्रसुद्दंना नाम की मणिपीठिका कही है। 'अट्ट जोयणाइं उड्डं उच्चत्तेणं' वह पीठिका आठ योजन की उंची है, 'अद्ध जोयणाइं उट्वेहेणं' आधा योजनका उसका उद्धेध हैं अर्थात् इतना भाग भूमि के भीतर प्रविद्य है।

अब इसका स्कंधका मान कहते हैं-'तीसे णं' उस मणिपीठिका का 'खंधो' स्कन्ध-कन्द से उपर की शाखा का उद्गमस्थान पर्यन्त का भाग 'दो जोयणाई

હવે તેના સ્કંધ ભાગતું માપ ખતાવે છે.-'તીસેળં' એ મણિપીઠિકાના 'ત્વેવે' સ્કન્ધ સ્કંધથી ઉપરની શાખાતું ઉદ્ગમસ્થાન સુધીના ભાગ 'દો जोयणाई उद्घं उच्चत्तेण' બે યાજન

હવે જંખૂદીયની મિલ્યુપીદિકાનું વર્લુન કરવામાં આવે છે.—'तरस णं जंबूपेदरस बहुमः झ-देसमाए' એ જંખૂપીઠના ખરાખર વચલા ભાગમાં 'एत्थणं मिल्येदिया पण्णत्ता' मिल्यिपीिडिश इडिस छे. 'अट्ट जोयणाइं आयामिक्संभेणं' ते જંખૂપીઠની મિલ્યિપીઠિશની લંબાઇ પહેલાબાઈ અઠ યાજન જેટલી છે. 'चत्तारि जोयणाइं बाह्ल्डेणं' तेनी काठाઇ ચાર યાજન જેટલી છે. 'तीसेणं मिणिपेदियाए' ते पूर्व इत मिल्यिपीिडिशनी 'उद्धि' ઉपरना भागमां 'एत्थणं जंबूयुदं-सणा पण्णत्ता' જંખૂ સુદર્શના નામની મિલ્યિપીઠિશ કહેલ છે. 'अट्टु जोयणाइं उद्धं उच्चते णं' ते पीठिश आठ याळन જેટલી ઉંચી છે. 'अद्धजोयणाइं उद्धेहणं' अर्धा याळन જેટલી तेना ઉદ્દેધ છે. અર્થાત્ એટલા ભાગ બૂમિની અંદર રહેલ છે.

द्वे योजने ऊर्ध्वप्रुच्चत्वेन–उच्छ्येण, 'अद्धजोयणं बाहल्छेणं' अर्द्धयोजनं बाहल्येन–पिण्डेन प्रज्ञप्त इति सम्बन्धः, 'तीसे णं' तस्याः-पूर्वीकायाः मणिपीठिकायाः खलु 'साला' शाला-विडिमापरपर्याया दिक् प्रसता शाखा 'छनोयणाई उद्धं उच्चतेणं' पह योजनानि ऊर्ध्व-मुच्चत्वेन, तथा 'बहुमज्झदेसभाए' बहुमध्यदेशभागे-अत्यन्तमध्यदेशभागे 'अह जोयणाई आयामविक्खंभेणं' अष्ट योजनानि आयाम-विष्यम्भेण-दैर्ध्य-विस्ताराभ्याम्, प्रज्ञप्तेति बोध्यम्, तानि चास्याः स्कन्दोपरितनभागाच्चतसृष्यपि दिश्च प्रत्येक मेकैका शाखा निर्गता, ताश्र शाखाः क्रोशोनानि चत्यारि योजनानि तेन पूर्वापरशाखा दैर्ध्य-इकन्धवाहरूय-सम्बन्ध्यर्द्धयोजनमेलनेनानन्तरोक्तसंख्या पूर्तिजीयते बहुमध्यदेशभागश्रात्र व्यावहारिको प्राह्मः, बुसादीनां शास्त्रोद्भवस्थाने मध्यदेशस्य लोकैवर्धवहियमाणत्वात्, यथापुरुष कटिभःगी-मध्यदेशो च्यपदिश्यते, अन्यथा विडिमायाः द्वियोजनातिक्रमणे निश्चितस्य मध्यदेशभागस्य उद्धं उच्चनेणं' दो योजन के ऊंचाइ एवं 'अद्ध जोयणाई बाहल्लेणं' आधा योजन का मोटा कहा है 'तीसे णं साला' वह पूर्वोक्त मणिपीठिका की शाखाएं 'छ जोय-णाइं उद्धं उच्चत्तेणं' छ योजन की ऊंची 'अह जोयणाई आयामविक्खंभेणं' आठ योजन की लंबाई चोडाइ वाली कही है। वे शाखा के 'बहुमज्झदेसभाए' ठीक मध्य भाग में 'अह जोयणाई आयामविक्खंभेणं' आठ योजन पर्यन्त की लम्बी चोडी कही है। वे शाखाएं इसके स्कन्द के ऊपर के भाग से चारों दिशा में प्रत्येक दिंचों। में एक एक के क्रम से चार नीकलती है। वे शाखाएं एक कोस कम चार घोजन की कही है। अतः पूर्व पश्चिम की द्यांचा की लंबाई-स्कन्धकी मोटाई सम्बन्धी आधा योजन मिलाने से पूर्व कथित संख्या की पूर्ति हो जाती है। बहुमध्य देश भाग यहां पर व्यावहारिक छेना चाहिए कारण की वृक्षादि की शास्त्रा के उद्गमन स्थान को लोक में मध्य देश भाग से व्यवहार करते हैं।

केटली ઉंચાઇવાળા અને 'अद्धजोचणाई बाह्ल्डेणं' અર्धा ये। कन केटले। कहे। छे. 'तीसेणं साला' ते पूर्व कत मिखुर्य हिंडानी शाणाओं 'छ जोचणाई उद्धं उच्चतेणं' छ ये। कन केटली ઉंચी छे. 'अट्ठ जोचणाई आयामिवक्कं मेणं' आठ ये। कन केटली लंगां प्रदेश के शाणाओं। ना 'बहुमड्झदेसमाएं' करे। करे ये। कन केटली लंगां आयामिवक्कं मेणं' आठ ये। कन केटली तेनी लंगां अने पहे। लां के छे छे. ते शाणाओं। तेना स्डंट-यदना उपरना कागंधी यारे हिंशाओं। मंहरें हिंशामां ओं के ओं इना इमंधी यार नीइणे छे. ते शाणाओं ओं अं गांडी ओं शंचा यार ये। कन केटली इहेल छे. तेथी तेनी पूर्व पश्चिम हिशानी शाणानी लंगांध-थदनी कांधां आई मेथ्य हेश मांग व्यवहारिक लेवे। पूर्व धित संक्यांनी पूर्वि थई काथ छे. अहीं यां कहुमध्य हेश मांग व्यवहारिक लेवे। कोंधी डारखु है वृक्षाहिनी शाणाओंना उद्गामनस्थानने मध्यकांग तरीहै व्यवहार डरे छे. केम पुरुषना हम्भर कांगी मध्यकांग तरीहै इहे छे. आ रीते न हहे ते। शाणाना छे

ग्रहणे पूर्वापरशाखाद्वयिवस्तारस्य विषमश्रेणिकत्वाद् ग्रहणं प्रसक्तं स्यात्, यदा-बहुमध्यदेशः भागः कासामित्यपेक्षायां शाखानामिति गम्यते, यतश्रतुर्दिक् शाखामध्यभागस्तिस्मित्रित्यर्थः, अष्टयोजनानयनं तुप्राग्वदेव। उच्चताया तु 'सव्वग्गेणं' सर्वाग्रेण सर्वसङ्ख्यया कन्द-स्कन्ध-विद्यमापित्माणमेलने 'साइरेगाइं' सातिरेकाणि-किश्चिद्विकानि 'अद्र जोयणाइं' अष्ट योजनानि जम्बूखदर्शना प्रज्ञप्तेति सम्बन्धः। अथास्या वर्णकमाइ-'तीसे णं अयमेयारूवे-वण्णावासे पण्णत्ते' तस्याः-जम्बूखदर्शनायाः खलु अयमेतद्वृपो वर्णावासः प्रज्ञप्तः, 'वइराम्या मूला' वज्जयानि-वज्ञरत्नमयानि मूलानि यस्या सा तथा-दीर्वश्च प्राकृतत्वात्, 'रयय-सुपइदिविद्या' रजतसुप्रतिष्ठितविद्या-रजतयेद-त्रन्मयी सा चासो सुप्रतिष्ठितविद्या-सुप्रतिष्ठितविद्या-वहुमध्यदेशभागे उपरिनिस्सता शाखा यस्या सा तथा, 'जाव' यावत्-यावत्यदेन चैत्यवृक्षवर्णकः सर्वेऽपि ग्राह्योऽत्र। किम्पर्यन्तो वर्णक इत्याह-

जैसा पुरुष के किंट भाग की मध्य भाग से कहते हैं, इस प्रकार न कहे तो शाखा के दो योजन पर्यन्त फैलने पर निश्चित मध्यभाग का ग्रहण करने पर पूर्व पश्चिम की दो शाखा के विस्तार की विषम श्रेणी हो जाती अतः यह व्यावहारिक मध्यभाग ग्रहण करना ठीक है। अथवा किसका बहुमध्यदेशभाग इस अपेक्षा में शाखा का ऐसा जान पडता हैं अतः चारों दिशा की शाखा का मध्य भाग ऐसा कहा जायतो पहले के कथनानुसार आठ योजन आजाता है। उच्चत्व के बारे में 'सव्यग्गेणं' सर्वात्मना स्कन्द स्कन्ध एवं शाखा का मान का मिलान करने से 'साइरेगाइं' कुछ अधिक 'अह जोयणाइं' आठ योजन की जम्बू सुदर्शना कही है।

अब जंब सुद्दीनाका वर्णन करते हैं-'तीसे णं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णाते' उस अंब सुद्दीना का वर्णन प्रकार इस प्रकार कहा है 'वहरामया मूला' वज्ररत्नमय उसका मूल भाग है 'रययसुपइडियदिडिमा' रजतम्य सुव्रतिष्ठित विडिमा-शाखाएं हैं अर्थात् बहुमध्य देशमाग भें उपर की ओर

ચાજન પર્ય ન્ત ફેલાવાથી નિશ્ચિત મધ્યભાગનું શહુણુ કરવાથાં પૂર્વ પશ્ચિમની છે શાખાના વિસ્તારની વિષમ શ્રેગી થઇ જાત એથી આ વ્યવહારિક મધ્યભાગ શહુણ કરવા એજ ઉચિત છે. અયવા કે ના અહુમધ્ય દેશભાગ એ અપેશામાં શાખાના મધ્ય ભાગ એમ કહુવામાં આવે તા પહેલાના કથન પ્રમાણે આઠ યાજન આવીજ ય છે. ઉંચાઇના કથનમાં 'સદ્યમાંળં' સર્વાત્મના સ્કંદ –સ્કંધ શાખાઓતું માપ મેળવવાથી 'સાદ્દરેગાદ્દ' કંઇક વધારે 'જ્ઞદ્ર जोयणाद्દ' આઠ યોજન જેટલી જંબૂ સુદર્શના કહેલ છે.

હવે જંખમુદર્શનનું વર્ણન કરવામાં આવે છે.—'तीसेणं अयमेयास्त्वे वण्णावासे पण्णत्ते' को જંખમુદર્શનના वर्णन प्रकार आ रीते ४६६ छे.—'वइरामया मूला' वर्ष रत्न भय तेना भूण लाग छे. 'र्ययमुपइट्टिय विडिमा' रक्तभय सुप्रतिष्ठित विडिमा–शाणाकी छे. अर्थात् अर्धन् अर्धन् अर्थन् वेशकागमां ઉपरनी तरह नीडणें शाणाकी छे. 'जाव' यावत्

'अहियमणणिच्युइकरी' अधिकमनोनिर्द्धतिकरी-अत्यन्तचित्ताऽऽनन्दकारिणी 'पासाईया दरिसणिज्जा' प्रासादीयदर्शनीयेत्यादिप्राग्वत् ।

अधास्याः शाखाः परिगणयन्नाह-"जंबूएणं सुदंसणाए चउदिसिं' जम्ब्वाः खल सुदर्श-नायाः चतुर्दिश्चि-दिक्चतृष्टये 'चत्तारि साला पण्णत्ता' शालाः-शाखाः ताः प्रतिदिक् एकै-केति चतसः प्रश्नप्ताः, 'तेसि णं' तासां-अनन्तरोक्तानां खल्ल 'सालाणं' शालानां-शाखानां यो 'बहुमज्बदेसभाए' बहुमध्यदेशभागोऽस्ति, 'एत्थ णं' अत्र-अत्रान्तरे खल्ल उपरितनवि-डिमाशाखायामित्यर्थः, एकं 'सिद्धाययणे पण्णत्ते' सिद्धायतनं प्रज्ञसम्, इदं च सिद्धायतनं वैताढचगिरिसिद्धक्टगतसिद्धायतनवद् बोध्यम् अस्य मानाद्याह-'कोसं आयामेणं' क्रोशमाया-मेन-देध्येण 'अद्धकोसं विक्खंभेणं' अर्द्धकोशं विष्कम्भेण विस्तारेण, 'देस्णगं' देशोनं-किञ्चि

नीकली हुई ज्ञाखाएं है। 'जाव' यावत् चैत्यवृक्ष के वर्णन के समान समग्र वर्णन यहां पर कहलेवें। यह वर्णन कहां तक का ग्रहण करना चाहिए' इसके लिए कहते हैं-अहियमणणित्व इकरी' अत्यन्त चिक्तको आनंद कराने वाली 'पासा-इया दरिसणिज्जा' प्राक्षादीय दर्शनीय इत्यादि पहले कथनानुसार समझलेवें।

अब शाखा की गिनती करते हुए कहते हैं—'जंबूएणं सुंदंसणाए चडिसिं' जंबूसुद्दीना की चारों दिशामें 'चत्तारि साला पण्णत्ता' चार शाखाएं कही है 'तेसिं णं सालाणं' वे पूर्वोक्तशोखाओं का जो 'बहुमज्झदेसभाए' ठीक मध्य भाग है 'एत्थ णं^{रे} यहां पर अर्थात् उपर शाखा में 'एगे सिद्धाययणे पण्णत्ते' एक सिद्धायतन कहा है। यह सिद्धायतन बैताद्धगिरि के सिद्ध कूट में कहा गया सिद्धायतन के जैसा जाने।

'अब उसका मानादि प्रमाण कहते हैं 'कोसं आयामेणं' एक कोस उसका आयाम नाम लंबाई चोडाई कही है। 'अद्धकोसं विक्खंभेणं' आधा कोसका

ચિત્ય વૃક્ષના વર્જીન પ્રમાણે અધું જ વર્જીન અહીંયાં કરી લેવું. એ વર્જીન કયાં સુધીનું અહિંયાં લેવાતું છે. તે માટે સૂત્રકાર કહે છે. 'अहियमणिव्वृह्करी' चित्तने અત્યંત આનંદ કરાવનાર 'पासाइया दिसणिडजा' પ્રાસાદીય દર્શનીય ઇત્યાદિ પહેલા કહ્યા પ્રમાણે અહીંયાં કથન સમજ લેવું.

હવે शाणानी अध्यो करतां के छे - जंबूएणं सुदंसणाए चडिं सिं कंणू सुदर्शनानी यारे दिशामां 'चतारि साला पण्णता' यार शाणाको के छे छे. अर्थात् दरेक दिशामां क्षेत्र के अर्थात् दरेक दिशामां क्षेत्र के अर्थात् दरेक दिशामां क्षेत्र के के शाणाको वार शाणा थाय छे. 'तेसिंणं सालाणं' के शाणाकोना के 'बहुमज्झ-देसमाए' अराजर वयदे। बाग छे. 'एत्थणं' त्यां आगण अर्थात् शाणानी अपर 'एने सिद्धाययणे पण्णत्तं' के सिद्धायतन केंद्रेस छे. के सिद्धायतन वैतादय गिरिना सिद्ध कृटमां केंद्रेस सिद्धायतनना केंद्रं समक्युं.

હવે તેના માનાદિ પ્રમ ણવું કથન કરે છે.-'कोसं आयामेणं' એક ગાઉ જેટલાે તેના

देशन्यूनं 'कोसं उदं उचन्तेणं' क्रोशम्-अध्वेमुच्यत्वेन, तथा-'अणेगखंभसयसण्णिविद्वे' अने कस्तम्भशतसिनिविष्टम्-इत्यारभ्य 'जाव दारा' यावद् द्वाराणि-द्वारपर्यन्तवस्तु वर्ण-क्रोऽत्रकोध्यः, अने कस्तम्भादिपद्व्याख्या पश्चदशद्धत्राब्दोध्या, द्वारवर्णनमष्टमद्धत्रोक्त विषयद्वाराधिकाराब्दोध्यम्, तानि द्वाराणि च 'पंचधणुसयाई' पश्चधनुःशतानि-पश्चशती- धन्तंषि अध्वेमुच्यत्वेन इत्यारभ्य 'जाव वणमालाओ' यावत् वनमालाः-वनमाला पर्यन्तवर्णन- मिह बोध्यम्-अत्र 'मणिपेदिया' मणिपी ठिकाऽषि वर्णनीया सा च 'पंचधणुसवाई आया- मविवखंभेणं' पश्चधनुः-शतानि आयामविष्कमभेण-देध्य-विस्ताराभ्याम् 'अद्वाइज्वाई धणु- सयाई बाह्यत्वेणं' अर्थत्वीयानि धनुः शतानि वाह्ययेन पिण्डेन, 'तीसे णं' तस्याः अनन्त- रोक्तायाः खल्ज 'मणिपेदियाए उपिंव' मणिपीठिकावाः उपिर-अर्ध्वभागे 'देवच्छंइष्' देव-

उसका विस्तार है 'देस्लं कोसं उद्धं उच्चत्तेणं' कुछ कम एक कोस का उंचा है। तथा 'अणेगखंभसय सिणाविद्दो अनेक से कड़ों स्तम्भों से सिलिविष्ट यहां से आरंभ करके 'जाब दारा' यावत् द्वार पर्यन्त का वर्णन यहां पर समझछेवे' अनेकस्तम्भादि पदों का अर्थ पंद्रहवें सूत्र से समझछेवें। द्वारों का वर्णन आठवें सूत्र में कहे गए विजयद्वाराधिकार से जानछेवें। वे द्वार 'पंच धणुसयाई' पांचसों धनुष के ऊंचे कहे हैं यहां से आरंभ करके 'जाब वर्णमालाओ' यावत् वनमाला-चनमालाके वर्णन पर्यन्त का वर्णन यहां पर ग्रहण कर छेवें। यहां पर 'मिणपेढिया' मिणपीठिका का वर्णन भी वर्णित करछेवें। यह मिणपीठिका का 'पंचधणुसयाई आयामविक्खंभेणं' पांचसों धनुष का आयामविक्कंभ कहा है। 'अद्वाइज्वाइं धणुसयाई वाहल्छेणं' ढाइसो धनुष की मोटाई कही है, 'तीसेणं मिणपेढियाए उपिं' उसमणिपीठिका के ज्वर 'देवच्छंदए' देवों के बैठने का

भायाम-अर्थात् लंणार्ध पहाणार्ध हही छे. 'अद्धप्तीसं विक्खंभेणं' अर्धा गाउँ केटवी तेनी विक्तार छे. 'देसूणं कोसं उद्धं उच्चत्तेणं' कंधे ओछा ओठ गाउँ केटवी तेनी उंचार्ध छे. तथा 'अणेगखंमसयसन्निविद्वा' अनेक सेंक्षें स्तंलाधी सन्निविष्ट अहींथी आरंसीने 'जाब दारा' यावत् द्वार सुंभीनुं वर्णुं न अहींयां समक क्षेत्रं. अनेक स्तंलाहिपहोनी अर्थ पंहरमां सूत्रथी समक क्षेत्रं द्वारानुं वर्णुं न आहमा सूत्रमां क्षेत्रं विक्य द्वाराना अधिक्षर मांथी समक क्षेत्रं. के द्वारा 'पंच धगुमयाई' पांत्रसी धनुष केटवा उद्धा कहें छे. आ कथनथी आरंस करीने 'जाब वणनालाओं' यावत् वनमाला-वनमाणाना वर्णुं न पर्यं नतनुं वर्णुं न अहींयां समक क्षेत्रं. अहींयां मिलपेडियां मिलपेडियां पर्णुपीहिकानुं वर्णुं न पर्यु केटवी मिल्ड पीरिकानी 'पंचधणुसयाई आयामविक्त्यं मेणं' पांत्रसी धनुष केटवी भाषाम विष्कं के के के अद्धाइन्जाई धगुसयाई बाहल्लेणं' अहीं से। धनुष केटवी केनी कराध कहें छे 'तीसेणं मिणपेडियाण उप्पं अ मिल्रपेडिकानी उपर 'देवच्छंद्य' देवीने केसवाना आसन कहें छे. ते आसन 'पंच धणुसयाई उद्धं उच्चत्तेणं'

च्छन्दकं-देवोपवेशनार्थमासनम् प्रज्ञप्तम्, तच्य 'पंचधणुसयाई' पश्च धतुःशतानि-पश्चशतः धत्तंपि 'अत्यामिवक्संभेणं' आयामिविक्संभेणं 'साइरेगाई' सातिरेकाणि—साधिकानि 'पंच धणुसयाई उद्धं उच्चतेणं' पश्चधतुः -शतानि अर्ध्वभुच्चत्वेन। अत्र 'निणपिडमा वण्णओ' जिन प्रतिमावणिको वोध्यः, सच प्राग्वत् 'णेयव्वोत्ति' नेतव्यः -ग्राह्यः, इति। 'तत्थ णं' तत्र -चत्रसृष्ठं शालासु खळु 'जे से पुरिव्धिमिव्छे' या सा पौरस्त्या -पूर्वदिग्गता 'साछे' शालाऽस्ति 'एत्थ णं' अत्र -अत्रान्तरे खळु एकं 'मवणे' भवनं -गृहं 'पण्णत्ते' प्रज्ञम्म तच्च मानतः 'कोसं आग्रामेणं' कोशमायामेन प्रज्ञप्तम्, 'एवमेव' एवमेव -भवनवदेव 'णवरिमत्थ' नवरं -केवळम् अत्र -भवने 'सयिजिज्ञं' श्वभीयं श्वया, वर्णनीयम् 'सेसेसु' शेषासु -पूर्वदिगवस्थितशालातिरिक्तासु दाक्षिणाःयादि शालासु मूळे पुस्तवं प्राकृतत्वाब्दोध्यम् प्रत्येकमेकैकसद्भावेन त्रयः 'पासाव्यवेसया' प्रासादातंसकाः -प्रसादवराः 'सीहासणा सपरिवारा' सिहासनानि -सपरिवाराणि आसन कहा है वह आसन 'पंच धणुसयाई जिद्धं उच्चत्तरादिक का वर्णन कर छेवें। यहां पर 'जिणपिडमावण्यओ' जिनप्रतिमा व्यन्तरादिक का वर्णन कर छेवें। वह वर्णन पहले कहे अनुसार 'णेयव्वोत्ति' समझलेवें।

'तत्थ णं'चार द्वाखा में 'जे से पुरिक्षिमिल्छे साछे' जो पूर्व दिशा की ओर गई हुई शाखा है 'एत्थ णं' वहां पर एक 'भवणे' भवन 'पण्णत्तं' कहा है। उसका मान 'कोसं आषामेणं' एक कोस का उसका आयाम कहा है 'एव मेव' भवन के जैसा ही उसका वर्णन समझछेवें। 'णवरं मित्थ' विशेष केवल इस भवन में 'सयणिडजं' शय्या का वर्णन करछेवें' 'सेसेसु' पूर्वदिशा में गई हुई शाखा से अतिरिक्त दक्षिण दिशादि अन्य दिशा की ओर गई हुई शाखाओं में मूल में जो पुल्लिंग से निर्देश किया है वह प्राकृत होने से हुवा है ऐसा समझछें। प्रस्थेक दिशामें एक एक के कम से तीनों दिशा की तीन शाखा होती है 'पासाय वहें' सया' प्रासादावतंसक अर्थात् उत्तम महल 'सीहासणा सपरिवारा' भद्रासनादि

पांचिसा धनुष केटबुं ७ खुं छे. अहीं यां 'जिलपिडमा विल्लाओं' व्यन्तराहि छन प्रतिमानुं वर्णुन हरी देवुं, स्ने वर्णुन पहेंद्रा हहा। प्रमाणे 'लेयव्वोत्ति' सम्छ देवुं 'त्रव्यणं' से यार शाणास्मामां 'जे से पुरिविमित्रके साले' के पूर्व हिशा तरह अधेद शाणा छे. 'एत्थणं' त्यां स्नेह 'मवले' भवन 'पण्णत्तं' हहेंद्रा छे. तेनुं मान—'कोसं आयामेणं' सेह आउ केटद्रा तेना स्नायाम हहेंद्रा छे 'एवमेव' भवनना हथन प्रमाणे क तेनुं वर्णुन समक्युं. 'लवरमित्य' विशेष हेवण स्ना अवनमां 'स्यणिन्जं' शब्यानुं वर्णुन हरी देवुं. 'सेसेतुं' पूर्व हिशामां अथेद्र शाणा शिवायनी हिल्ला विशेष हिशामां अथेद्र शाणास्मामं मूद्रमां के पुल्तिं अथी निहंश हरेद्र छे ते प्राहृत है।वाथी थयेद्र छे. तेम समक्युं. हरेह हिशामां स्थेष्ठ स्थेष्ठ स्थानां स्थेष्ठ स्थानां स्थान हिशामां हिशामां स्थान हिशामां हिशा

मद्रासनपरिवारसहितानि वक्तव्यानि, इति, तेपां प्रासादावर्तसकानां प्रमाणं भवनस्येव बोध्यम् तत्र शयनीयानि खेदापनोदार्थानि, प्रासादावतंसकेषु सर्वेषु त्वास्थानपरिषद् इति बोध्यम् ।

नतु भवनानि विषमाऽऽयामविष्कम्भाणि भवन्ति पद्महूदादि-मूल्पद्मभवनानां तथा हृष्टत्वात् प्रासादस्तु समानायामविष्कम्भाः दीर्घवैतात्वच्छत्यातानां वृत्तवैतात्वच्यातानां विज-यादि राजधानीगतानां तद्दतिरिक्तानामपि विमानादिगतानां प्रासादानां समचतुष्कोणत्वेन समानायामविष्कम्भत्वस्य सिद्धान्तसिद्धत्वात् कथमत्र प्रासादानां भवनवत् प्रमाणं घटते ? उच्यते—'ते पासाया कोसमूसिया अद्धकोसवित्थिण्णा' इत्यस्य गाथार्द्धस्य वृत्तो 'ते प्रासादा क्रोशमेकं देशोनम्' इति शेषः, उच्छिताः—उन्नताः, अर्द्धकोशम्—कोशस्यार्द्धम् विस्तीणाः विस्तारयुक्ताः, परिपूर्णमेकं क्रोशं दीर्घा इति केचिदादुः, तथा—जम्बूद्धीपसमासप्रकरणे 'प्राच्ये शास्त्रे भवनम् इतरेषु प्रासादाः मध्ये सिद्धायतनं सर्वाणि विजयार्द्धमानानीति श्रीमदुः परिवार सहित सिंहासन कहस्रेवें । उन प्रासादावतंसकका प्रमाण भवन के जैसा समझस्रेवें । वहां खेददूर करने योग्य द्यायनीय, सर्व प्रासादावतंसको में

रंका-भवन विषम आयामविष्कम्भ वाले होते हैं, पद्महृद्र्मद् मूल पद्म भवनों में उस प्रकार देखेजाने से। प्रासाद तो समान आयाम विष्कंभ वाले होता है। दींघ वैतादय क्रमत, वृत्तवैतादय क्रमत, विजयादि राजधानीगत उनसे अतिरिक्त विमानादि गत प्रासादों के समचतुष्कोण होने से समान आयाम विष्कंभवाला होना सिद्धान्त सिद्ध है, तो यहां पर प्रासादों के भवन के जैसा प्रमाण किस प्रकार घटित होता है ?

आस्थान परिषद कही है ऐसा समझछेवें।

उत्तर-'ते पासाया कोसमृसिया अद्धकोसिवित्थिण्णा' इस गाथा की वृत्ति में 'ते प्रासादा कोशमेकं देशोनं' यह शेष है अर्थात् वे प्रासाद कुछ कम एक कोश ऊंचे हैं, एवं आधा कोसका उसका विस्तार है। परिपूर्ण एक कोस लंबे हैं ऐसा

સિંહાસના કહી લેવા. એ પ્રાસાદાવત સકતું પ્રમાણ ભવનના પ્રમાણ જેટલું સમછ લેવું. ત્યાં એક દૂર કરવા યાગ્ય શયનીય તથા સર્વ પ્રાસાદાવત સકામાં આસ્થાન પરિષદ્ કહેલ છે. તેમ સમજવું.

શંકા—ભવના વિષમ આયામ વિષ્કંભવાળા હાય છે. પદ્મહૃદાદિ મૂળ પદ્મ ભવનામાં એ રીતે જોઇ શકાય છે. અને પ્રાપ્તાદતા સમાન આયામ વિષ્કંભવાળા હાય છે. દીઈ વૈતાહય કૂટ ગત તેનાથી અતિરિક્ત વિમાનાદિગત પ્રાપ્તાદો સમગતુષ્કાે હોવાથી સમાન આયામ વિષ્કંભનું હોવું સિદ્ધાંત સિદ્ધ છે તો અહીંયાં પ્રાપ્તાદાનું ભવનના સરખું પ્રમાણ કેવી રીતે ઘટી શકે છે?

ઉत्तर-'ते पासाया कोसभूमिया अद्धकोसविश्यिणा' आ गाथानी वृत्तिमां 'ते प्रासादा क्रोशमेकं देशोनं, आ शेष छे. अर्थात् ते प्रासाहे। इंग्डंड आछा ओड गांड केटलां डिया मास्त्रातिवाचकः, तथा-पासाया सेसिद्सासाछासु वेयद्धिगिरिगयव्य तओ इत्यस्या गाथाया अवचूर्णो - 'शेपासु तिसुपु शास्त्रासु प्रत्येक मेकैव भावेन तत्र त्रयः प्रत्यादाः - प्रस्थानो नितानि मन्दिराणि देशोनं क्रोशपुच्चाः क्रोशार्द्ध विस्तीर्णाः पूर्ण क्रोशं दीर्घाः' इति सुगरत्नस्यः प्राहुः। तदाशयेन प्रस्तुतोपाङ्गस्योत्तरत्र जम्बूपिरक्षेपकवनवापीपरिगतप्रासादप्रमाणस्यासुः सारेण च जम्बूपकरणप्रासादा विषमाऽऽयामविष्कम्भाः सन्तीति निश्चिन्मः। यत्तु जीवाः मिगमसूत्रवृत्तो - 'क्रांशमेकपूर्वसुच्चैहत्वेन अर्द्धक्रोशं विष्कम्भेण' इत्युक्तं तच्चिन्त्यम्।

अधारयाः पद्मत्ररवेदिकादि स्त्ररूपमाह-'जंबू णं' इत्यादि-'जंबू णं' जम्बूः खलु किसी का मत है। तथा जंबूद्वीप के समास प्रकरण में पूर्व की शाला में भवन एवं अन्य शाला में प्रासाद तथा मध्य में सिद्धायतन ये सबका मान जो विज्यद्वार के वर्णन में कहा है उससे आधा है, ऐसा उमास्वाति बच्कि का कथन है। तथा 'पासाया सेसिदिसासालासु वेयद्धिगिरि गयव्वतओ' इस गाथा की अवचूर्णि में शेष तीन शासादी में प्रत्येक में एक एक के कम से तीन प्रासाद हुए रनेयोग्य स्थान वह कुछ कम एक कोस उंचे हैं आधाकोस का उसका विस्तार है, एक कोस पूरे लंबे हैं इस प्रकार गुणरतन स्त्रिका कथन है। इस आदाय से प्रस्तुत उपांग में कहा हैं यहाँ जम्बूपिक्षेपक वन, वन, में कहे गए प्रासाद का प्रमाण सूत्रानुसार जम्बू प्रकरण प्रासाद से विषम आयाम विष्कंभवाले हैं ऐसा निश्चित है। जीवाभिगम सूत्र की वृत्ति में एक कोस ऊंचा एवं आधा कोसका विष्कंभ वाला कहा है वह विचारणीय है।

अब इसकी पर्मवरवेदिकादिके स्वरूपका कथन करते हैं-'जंबूणं' जंबूद्वीप 'बारसहिं' बारह 'पडअबरवेइयाहिं' प्राकार विद्योषरूप पर्मवरवेदिकासे 'सब्वओ

છે. તેમજ અર્ધા કાસના તેના વિસ્તાર છે. પરિપૂર્ણ એક ગાઉ જેટલા લાંબા છે. એમ કાઈકના મત છે. તથા જંબૂદીયના સમાસ પ્રકરભુમાં પૂર્વની શાલામાં ભવન તથા અન્ય શાલામાં પ્રાસાદ તથા મધ્યમાં સિદ્ધાયત એ તમામનું માય જે વિજય દ્વારના વર્ણનમાં કહ્યું છે, તેનાથી અર્ધું છે, એમ ઉમાસ્વાતિ વાચકનું કયન છે. તથા 'વાસાયા સેસિવિસા સાઝાસુ વેયદ્ધિપિ गયવ્યલ્લો' આ ગાથાની અવયૂર્ભિકામાં શેષ ત્રણ શાખાઓમાં દરેકમાં એક એકના કમથી ત્રણ પ્રાસાદા-રહેવા યાવ્ય સ્થાન છે. તે કંઇક કમ એક ગાઉ જેટલા ઉંચાં છે. અર્ધા ગાઉ જેટલા તેના વિસ્તાર છે. પૂરા એક તે કંઇક કમ એક ગાઉ જેટલા ઉંચાં છે. અર્ધા ગાઉ જેટલા તેના વિસ્તાર છે. પૂરા એક તે કંઇક ક હતા લાંબા છે. આ પ્રમાણે ગુણરત્નસુરીનું કથન છે. આ આશયથી પ્રસ્તુત ઉપાંગમાં કહ્યું છે. અહીં યાં જંબૂ પરિક્ષેપક વન, વાવમાં કહેલા પ્રાસાદાનું પ્રમાણ સ્ત્રાનુસાર જંબૂ પ્રકરણના પ્રાસાદીય વિષમ આયામ વિષ્કં ભવાળું છે, એ નિશ્ચિત છે. જવાબિગમ સ્ત્રની વૃત્તિમાં એક ગાઉ ઉંચા અને અર્ધા ગાઉના વિષ્કં-ભવાળા કહેલ છે. તે વિચારણીય છે.

&वे तेनी पदावर वेहिशहिना स्पर्वपतुं ध्यन करवामां आवे छे -'जंबूणं' क'णूद्वीप 'बारसहिं' आर 'वडमवरवेइवाहिं' आधार विशेष३५ पदावर वेहिशथी 'सव्वओ समंता' 'बारसहिं' द्वादश्वभिः-द्वादशसंख्यकाभिः 'पउमवरवेइयाहिं' पद्ववरवेदिकासिः-प्राकारविशेष-रूपाभिः 'सब्बओ' सर्वतः सर्वदिश्च 'समंता' समन्ताद्—सर्वविदिश्च 'संपरिविखत्ता' सम्परि-क्षिप्ता-परिवेष्टिता अस्तीति शेषः, तासां-'पउमवरवेइयाणं वष्णभो' पद्मवरवेदिकानां वर्णकः प्राग्वद् वक्तव्यः, स च चतुर्थस्त्राद् प्राह्मः । इसाथ पद्मवरवेदिकाः मूलजम्बं परिवेष्टच स्थिता बोध्याः, यातु पीठपरिवेष्टिका पद्मवरवेदिका सा पूर्वमेव प्रतिषादिता ।

अथार्याः जम्बाः प्रथमपरिक्षेपमाह-'जंबू णं अण्णेणं' इत्यादि-'जंबू णं अण्णेणं' अध्यः खन्न अन्येन-स्वातिरिक्तेन 'अहुसएणं' अध्यातेन-अध्यात्तरकातेन 'जंबू णं' जम्बूनां- जम्बूब्रक्षाणां 'तद्द्धुच्वत्ताणं सञ्बभो समंता संपरिविखत्ता' तद्धौंच्चत्वानां सर्वतः समन्तात् सम्परिक्षिता, तत्र 'तद्धौंच्चत्वानामित्युपलक्षणं, तेन तद्धौंद्धेशायाम विषक्रमभाणामित्यपि जम्बूनां विशेषणसमर्थकं बोध्यम् । तस्याः-मूल जम्ब्याः अर्थम्-अर्धप्रमाणाः उद्देशायामविषक्षमभा यासां जम्बूनां तास्तद्द्धौंद्वेशायामविषक्षमभास्तासां तथा, तथाहि--'ता अध्याः- चिक्रश्वतसंख्या जम्ब्यः प्रत्येकं चत्वारि योजनानि उच्चैस्त्वेन क्रोशमेकमवगाहेन एकं

समंता' सर्वतः चारों ओर से 'संपरिक्षित्ता' परिवेष्टित है। वे 'पडमवरवेड्या णं वण्णओ' पद्मवरवेदिकाकावर्णन पहले के समान कहलेवें। वह वर्णन चौधे स्त्रानु सार ग्रहण करले। इन पद्मवरवेदिका मूल जंबू को वेष्टित होकर स्थित है ऐसा समझें। जो पीठकोपरिवेष्टित पद्मवरवेदिका कही है वह पहले ही प्रतिपादित की है।

अव इस जंबूका प्रथमपरिक्षेप का कथन किया जाता है-'जंबू णं अण्णेणं' जंबू दूसरे 'अहमएणं' एकसो आठ 'जंबूणं' जंबूबृक्षों से कि जो 'तदद्भुच्च साणं सन्वश्रो समंता संपरिक्षित्सा' मूल जंबू से आधि ऊंचाइ बाछे चारों ओर से परिवेष्टित करके स्थित हैं ? यहां पर तदद्वोच्चत्व यह उपलक्षण है, इससे उससे आधा उद्देध आयाम विष्कंभका भी ग्रहण हो जाता है, मूल जंबू से आधा ग्रमाणका उद्देध-आयाम विष्कंभवाछे वे एकसो आठ जंबू प्रत्येक चार

સર્વત: ચારે આનુથી 'સંવરિ क्खिता' વીંટાયેલ છે. તે 'पडमवरवेड्याणं वण्णओ' પદાવર વેદિકાનું વર્ણન પહેલાં કહ્યા પ્રમાણે શ્રહણ કરી લેવું. આ પદ્મવરવેદિકા મૂળ જંખૂને વીંટળાઇને રહેલ છે. તેમ સમજવું. પીઠને વીંટળ ઇને રહેલ જે પદ્મવરવેદિકા કહી છે, તે પહેલા જ વર્ણવેલ છે.

હતે આ જંખૂના પહેલા પરિક્ષેપનું કથન કરવામાં આવે છે-'जंबूणं अण्णेणं' જંખૂ બીજા 'अट्टसएणं' એક્સે આઠ 'जंबूणं' જંખૂ વૃક્ષાથી કે જે 'तरद्धुच्चसाणं सन्वओ समंता संपरिक्षित्रता' મૂળ જંખૂથી અર્ધિ ઉંચાઇવાળા ચારે બાજીથી વીંટળાઇને રહેલ છે. અહિંયા 'तद्द्धोच्चत्व' એ ઉપલક્ષણ છે. તેથી તેનાથી અર્ધા ઉદ્દેધ—આયામ વિષ્કંભનું પણ શ્રદ્ધણ થઇ જાય છે. મૂળમાં જંખૂથી અર્ધા પ્રમાણના ઉદ્દેધ આયામ વિષ્કંભવાળા તે એક સા આઠ જંખૂ દરેક ચાર યોજન જેટલા ઉંચા છે. તથા એક ગાઉ જેટલા તેના અવગાહ— योजनमुच्चः स्कन्धः त्रीणि योजनानि विडिधा सर्वाग्रेणोच्चैस्त्वेन सातिरेकाणि चत्वारि योजनानि, तत्रैका शाखा अर्द्धकोशहीने द्वे योजने दीघी, क्रोशपृथुत्वः स्कन्धः इति सर्व-संख्यया आयामविष्कम्भतश्रत्वारि योजनानि संषद्यन्ते, आमु जम्बुषु चानादतदेवस्याभरणा-दिकं तिष्ठति, आसां वर्णक स्चनार्थमाह—'तासि णं वण्णओ' इति, 'तासि णं' तासां पृवेक्तिनां जम्बुनां खद्ध 'वण्णओ' वर्णकः—वर्णनपरपदसमूहोऽत्र वक्तव्यः, स च मूलजम्बुवदेव बोध्यः ।

अथाऽऽसां यावत्यः पद्मवरवेदिकास्ता आह-'ताओ णं' इत्यादि-'ताओ णं' ताः-अनन्तरोक्ताः खळु 'जंबू छिंदें' जाब्दः पङ्भिः-षट्संख्याभिः 'पउमवरवेद्याहि संपरिविखत्ता' पद्मवर रेशिकाभिः सम्परिक्षिताः-परिवेष्टिताः, प्रतिजम्बूतरु पट् पट् पद्मारवेदिकास्तद्वेष्टन-भूताः सन्तीत्यर्थः, एतासु जम्बूषु अत्रद्भत्रे जीवाभिगमे बृहन्क्षेत्रविचारादौ स्त्रकृतो युत्तिवृतश्च

योजन के ऊंचे हैं। तथा एक कोस का उसका अवगाह-ऊंडाई कही गई हैं। एक योजन के उंचाइवाछे स्कंघ तथा तीन योजन ऊंचाई वाली काखाएं हैं सर्वात्मना ऊंचाइ कुछ अधिक चार योजन की हैं। उसमें एक शाखा देढ योजन की लंबी है। एक कोस की मोटाई स्कंघ की है इस प्रकार सर्व प्रकार से आधामविष्कंभ चार योजन मिल जाता है, इस जंबू में अनाहतदेव के आभरणादि रहते हैं। इसका वर्णक स्चनार्थ कहते हैंं-'तासिं णं वण्णओ' पूर्वोक्त जंबू के वर्णन पद परक पद-समूह यहां पर कहलेवें। वह वर्णन पद परक पद मूल जंबू के वर्णन के जैसा समझलेवें।

अब इसकी जितनी पर्मवरवेदिका कही है उसको कहते हैं-'ताओ णं' प्रवेक्ति 'जंबू छहिं' जंबूबुक्ष छह 'पउमवरवेइयाहिं संपरिविखता' पर्मवरवेदिका से घिरेहुए हैं। अर्थात् वे प्रत्येक जंबू बुक्ष छह, छह पर्मवरवेदिका से घिराया हुआ है। इन जंबू में इस सुत्रमें एवं जीवाभिगम की बृहत्केन्न विचारादिमे

ઉંડાઇ કહેલ છે. એક યોજન જેટલી ઉંચાઇવાળા સ્કંધ અને ત્રણ યોજન ઉંચાઇવાળી શાળા ડાળા છે. સર્વાત્મના ઉંચાઇ કંઇક વધારે ચાર યોજનની છે. તેમાં એક શાળા દેહ યોજન જેટલી લાંળી છે. સ્કંધની જાડ ઇ એક કાસ જેટલી છે. આ રીતે સર્વ પ્રકારથી આયામ વિષ્કંભથી ચાર યોજન મળી જાય છે. આ જંખમાં અનાદત દેવના આભરણાદિ રહે છે તેનું વર્ણન સ્ત્ર્યનાર્થ કહે છે —'તાસિંગ વળ્ળકો' પૂર્વીક્ત જંખૂ વર્ણન પદપરક પદ સમૃહ અહીંયાં કહી લેવાં આ વર્ણન પરક પદ મૂલ જંખના વર્ણનની જેમ સમજ લેવા.

હવે તેની જેટલી પદ્મવરવેદિકા કહી છે તેનું કથન કરે છે.—'તાओ ળં' પૂર્વેક્તિ 'जंत्रू छहिं' જંખૂવૃક્ષ છ 'पउमवरवेइयाहिं संपरिक्खित्ता' પદ્મવર વેદિકાથી ઘેરાયેલ છે. અર્થાત્ એ દરેક જંખૂવૃક્ષ છ, છ પદ્મવરવેદિકાથી ઘેરાયેલ છે. આ જંખૂમાં આ સ્ત્રમાં અને જીવાલિગમની ખૃહ-ક્ષેત્ર વિચારાદિમાં સ્ત્રત્રકાર તથા વૃત્તિકારે જીનલવન અને લવન

जिन भवन भवनप्रासादानां चर्वां न चकुः, अन्येऽपि विद्वांसो मूलजम्बृब्क्षगततत्प्रथमवन-खण्डगतक्टाष्टकजिनभवनैः सह संकलस्य सप्तद्शाधिकशतं जिनभवनानां स्वीकुर्वाणा इहाप्येकैकं सिद्धायतनं प्रामुक्तप्रमाणं स्वीचकुः, ततोऽत्र तत्त्वं केवलिनो विदुरिति ।

अधुनाऽस्याःशेषपिक्षेपान् वक्तुं स्ववत्ष्यमाहः 'जंबूए णं सुदंसणाए उत्तरपुरियमेणं' जम्ब्बाः सुद्र्शनायाः खळ उत्तरपौरस्त्येन-ईशानकोणे 'उत्तरेणं' उत्तरेण - उत्तरस्यां दिशि 'उत्तर-प्वत्थिमेणं' उत्तरपश्चिमेन-उत्तरपश्चिमायां - वायन्यविदिशि 'एत्थ णं' अत्र-अत्राग्तरे दिक्त्रये खळ 'अणाहियस्स' अनाहतस्य अनाहतनामकस्य 'देवस्स चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं' देव-स्य चत्रस्यां सामानिकसाहस्रीणां - चतुःसहस्रसंख्यरामानिकानां 'चत्तारि जंबुसाहस्सीभो' चतस्रो जन्मवृताहस्त्रयः - चतुःसहस्रसंख्यरामानिकानां 'चत्रारि जंबुसाहस्सीभो'

सूबकार एवं वृत्ति कारने जिन भवन एवं भवन प्रासादों की चर्चा नहीं की हैं अन्य बिद्वान भी मूल जंब्र्व्यक्षमें कही हुई उस प्रथम वनखण्डमें कही हुई जिन भवन के साथ आठ कूट का संकलन करके एकसो सबह जिन भवनों का स्वीकार करके यहां पर प्रथम कहे प्रमाण वाला एक एक सिद्धायतन का स्वीकार करते हैं तो इसमें क्या हेतु है सो केवलि भगवान ही जाने।

अब इसके दोष परिक्षेप को कहने के हेतु से चार सूत्र कहते हैं-'जबूएणं सुद्सणाए' इत्यादि 'जबूएणं सुद्सणाए उत्तरपुरिक्षमेणं' जबू सुद्दीना के ईशानकोणमें 'उत्तरेणं' उत्तर दिशा में 'उत्तरपच्चित्थमेणं' उत्तर पश्चिम अर्थात् वायव्यकोण में 'एत्थ णं' ये तीनों दिशा में 'अणाढियस्स देवस्स' अनाहत नामक देवका 'चउण्हं सामाणिय साहस्सीणं' चार हजार सामानिक देवों के 'चतारि जबू साहस्सीओ' पण्णत्ताओं चार हजार जबूबुक्ष कहे हैं। 'तीसेणं' उस्त जंबू सुद्दीना के 'पुरिव्यमेणं' पूर्वदिशामें 'चउण्हं अग्नमहिसीणं' चार अग्र-

પ્રાસાદાની અર્ચા કરેલ નથી. અન્ય વિદ્વાના પણ મૃલ જંળવૃક્ષમાં કહેલ એ પ્રથમ વન-ખંડમાં કહેલ જીતલવનાની સાથે આઠ કૂટોનું મિલાન કરી એક સા સત્તર જીનલવ-નોના સ્વીકાર કરીને અહીંયાં પહેલા કહેલ પ્રમાણવાળા એક એક સિદ્ધાયતનના સ્વીકાર કરે છે. તા તેમ કરવામાં તેમના શું હતુ છે? તે કેવલી લગવાન જ બણી શકે.

ढ्वे तेना शेष परिक्षेपने क्ष्डेवाना देतुथी यार सूत्र क्ष्डे छे.-'जंबूएणं सुरंसणाए' छत्याहि क'ण् हर्शनानी धंशान हिशामां 'उत्तरेणं' उत्तर हिशामां 'उत्तरपच्चित्रिमेणं' उत्तर पश्चिम अर्थात् वायव्य िशामां 'अणाहियस्स देवस्स' अन्हत नामना हैवना 'चउन्हं सामाणियसाहस्सीणं' यार ढलार सामानिक हेवाना 'चत्तारि जंबूसाहस्सीओ पण्णताओ' यार ढलार कंण् पृक्षे। कहा छे. 'तीसेणं' यो क'ण्सुहर्शनानी 'पुरिक्षमेणं' पूर्व हिशामां 'चउन्हं अगामिहसीणं' यार अअमिद्धियोना 'चतारि जंबूओ पण्णता' यार क'ण् पृक्षे। क्षेडा छे.

तस्याः — जम्बूसुद्र्शनायाः खर्छ 'पुरित्थमेणं पौरस्त्येन — पूर्वस्यां दिशि 'चउण्हं' अग्गमहिसीणं' चनसणाम् अग्रमहिषीणां — प्रधानमिहषीणाम् — सर्वश्रेष्ठराज्ञीनाम् 'चत्तारि जंबूओ पण्णताओं' चत्तः। जम्ब्यः प्रज्ञसाः — कथिताः। अथ गाथाद्वयेन पाष्ट्रदेवजम्बूराह — 'दिक्खणेत्यादि — 'दिक्खणपुरित्थमें' दिश्चणपौरस्त्ये — अग्निकोणे, 'दिक्खणेण' दिश्चणेन — दक्षणस्यां दिशि 'तह अप्रदिक्खणणं च' तथा अपरदिक्षणेन अपरदिक्षणस्यां निर्द्रत्यविदिशि च — एतिहक्ष्त्रये यथाकमम् । 'अद्वदस्वारसेव य' अष्टद्रबद्धाद्य — तत्राग्निकोणे अष्ट, दिश्चणस्यां दिशि दश, निर्द्रत्यकोणे द्वादश च 'भवंति जंबुसहस्साइं' जम्बूसहसाणि — जम्बूनां सहसाणि मवन्ति एव इन्द्रोऽवधारणार्थः, तेन न न्यूनानि नाधिकानि इति व्यवच्छेदार्थः ।१। 'अणियाहिवाण' अनीकाधिपानाम् — सेनाधिपतीनां देवानां सप्तानां 'पच्चित्थमेण' पश्चिमेन पश्चिमायां दिशि 'सत्तेव होति जंबुओं' सप्तेव सप्तसंख्या एव न न्यूनाधिका जम्ब्वो भवन्ति । इति द्वितीयः परिश्लेपः।

अथ तृतीयपरिक्षेपमाह-'सोलसे' इत्यादि-'आयरक्खाणं' आत्मरक्षाणाग्-आत्मरक्षा-कारिणाम् अनादतदेवस्य सामानिक 'चतुर्गुणानां सोलस साहस्सीओ' पोडशसद्याणां देवानां महिषियों के 'चत्तारि जंबुओ पण्णात्ताओं' चार जंबु वृक्ष कहे हैं।

अब दो गाथा से पार्षद देव के जंबू कहते हैं—'दिक्खण पुरिश्वने' अग्नि-कोणमें 'दिक्खणेण' दिक्षण दिशामें 'तहअवर दिक्खणेणं च' नैऋत दिशामें ये तीनों दिशामें कमसे 'अद्वदस बारसेव'आठ, दस, बारह उनमें अग्निकोणमें आठ, दिक्षणिद्शामें दस नैऋत्य कोण में बारह 'भवंति जंबू सहस्साइं' इतना हजार जंबुगृक्ष होते हैं। अर्थात् अग्निकोणमें आठ हजार, दिक्षण दिशामें दसहजार नैऋत्य कोण में बारह हजार जंबुगृक्ष होते हैं—इससे न्यूनाधिक नहीं होते हैं। १। 'अणियाहिवाण' सात सेनापितदेवों के 'प्रच्चित्थमेण' पश्चिमदिशामें 'सत्तेव होति जंबुओ' सात जंबुगृक्ष होते हैं। यह दूसरा 'परिक्षेप कहा?

अब तीसरा परिक्षेप कहते हैं-'आयरक्खाणं' अत्मरक्षक देवों के सामानिकों से चोगुने होने से 'सोलहसाहस्सीओ' सोलह हजार 'चडिंदिस' पूर्वादि चारों

હવે ત્રીને પરિક્ષેપ કહેવામાં આવે છે.—'आयरक्खाणं' આત્મરક્ષક हैवे।ना सामा-નિકાથી ચાર ગણા હાવાથી 'सोळहसाहस्सीओ' से।ળ હુળાર 'चडिहसि' પૂર્વાદિ આરે દિશામાં

હવે भे गाथाथी पार्षंद हैवना कंणू डेंडे छे.—'दिविखणपुरिक्षमें' आग्नेय डेंाखुमां 'दिविखणेण' दिख्य दिशामां 'तह अवरदिव्खणेणं च' नेअत्य दिशामां आ अधे दिशामां डमशः 'अह दस बारसेव' आठ, दस, आर,—तेमांअग्निडेंाखुमां आठ, दक्षिण दिशामां दस नैअत्य-डेंाखुमां आर 'मवंति जंबूसहरसाइं' आटला ढलार कंणूवृक्षा डेंग्य छे. अर्थात् अग्नि डेंाखुमां आठ ढलार, दक्षिण दिशामां दस ढलार, नैअत्य डेंग्युमां आर ढलार कंणु वृक्षा डेंग्य छे. तेनाथी ओछावत्ता डेंगा नथी. ॥१॥ 'अणियाहिवाण' सात सेनापित हेंगाना 'पर्चित्यमेण' पश्चिम दिशामां 'सत्तेव होंति जंबूओ' सात कंणुवृक्षा डेंग्य छे. आ जीलो परिक्षेप डहाो. ॥ २॥

'चउदिसिं' चतुर्दिशि—पूर्वादि दिक्चतुष्ट्ये षोडश साहस्त्र्यः जम्बूनामितिशेषः भवन्तीति क्रियाध्याहारोऽत्र बोध्यः, तत्र एकैकस्यां दिशि चतस्रश्रतस्रः साहस्त्र्य इति दिक्चतृष्ट्ये पोडश साहस्त्रयो भावनीयाः । यद्यप्यनयो द्वितीय तृतीयपरिक्षेपयोः प्रमाणचर्चा पूर्वाचार्यैर्न कृता, तर्हि मानज्ञानं कथमनयोः स्यादिति जागतिं जिज्ञासा, तथाऽपि पद्महृद्पद्मपरिक्षेपानु-सारेण पूर्वपूर्वपरिक्षेपजम्ब्वपेक्षयोत्तरोत्तरपरिक्षेपजम्ब्वोऽर्द्धप्रमाणा बोध्याः, अत्रापि प्रत्येकं परिक्षेपे एकैकस्यां श्रेण्यां विधीयमानां क्षेत्रसङ्कीर्णत्वेनानवकाशदोषस्तथैव प्रादुर्भवति तेन परिक्षेपजातयस्तिस्रस्तथैव वक्तव्याः । अधुनाऽस्या एव विवनपण्डीपरिक्षेपान् ववनुमाह-'जंबूएणं' इत्यादि-'जंबूए णं तिहिं' जम्ब्वाः खलु त्रिभिः-त्रिसंख्यकैः 'संइएहिं' शतिकै:-योजनशतप्रमाणै:, 'बणसंडेहिं सब्बओ समंता संपरिविखत्ता' वनपण्डैः सर्वतः समन्तात् सम्परिक्षिप्ताः-परिवेष्टताः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-अभ्यन्तरेण मध्यमेन बाह्येन चेति । अथात्र यथा यदस्ति तथा तदाह-'जंबुए णं' 'इत्यादि-जंबुए णं' जम्ब्वाः सपरिवारायाः दिशा में सोलह हजार जंब्र्युक्ष होते हैं' एक एक दिशामें चार हजार के क्रम से चारों दिशामें मिलके सोलह हजार समझ छेवें। यद्यवि इन दसरे तीसरे परिक्षेप के प्रमाण की चर्चा पूर्वाचार्यने की नहीं है तब उसका मानादिज्ञान कैसे जाना जा सके ? इस प्रकार की जिज्ञासा जाग्रत होती है. तो भी पद्महृद के पदमपरिक्षेप के कथनानुसार पूर्व पूर्व परिक्षेप जंबू की अपेक्षा से उत्तर उत्तर

अब तीन वनषण्ड के परिक्षेप का कथन करते हैं-'जंबूएणं तिर्हि सइएहिं' जंबू तीनसो योजन प्रमाण वाले 'वणसंहेहिं सव्वओ समता संपरिक्खिता' वन-षण्डों से चारों दिशामें व्याप्त होकर स्थित है। वे तीन वनषण्ड इस प्रकार है-आभ्यन्तर, मध्यम एवं बाह्य।

के परिक्षेप जंबू से अर्द्ध प्रमाण वाला समझें। यहां पर भी प्रत्येक परिक्षेपमें एक श्रेणी में होने वाली क्षेत्र संकीर्णता से अनवकाश दोष उसी प्रकार आ

जाता है अतः तीन३ परिक्षेप जाती कहनी चाहिए।

સાળ હુજાર જંખૂવૃક્ષા હૈાય છે. એક એક દિશામાં ચાર હુ નરના કમથી ચારે દિશાના મળીને સાળ હુજાર થાય છે તેમ સમજવું. યદ્યપિ આ બીજા અને ત્રીજા પરિક્ષેપના પ્રમાણની ચર્ચા પૂર્વાચાર્યોએ કરેલ નથી. તા તેના માનાદિતું જ્ઞાન કૈવી રીતે જણી શકાય? આ રીતની જજ્ઞાસા ઉત્પન્ન થાય છે, તા પણ પદ્માહૃદના પદ્મ પરિક્ષેપના કથનાનુસાર પૂર્વ પ્રફિષ્પ જંખૂથી અર્ધા પ્રમાણવાળા સમજે, અહીં યાં પણ દરેક પરિક્ષેપમાં એક શ્રેણીમાં થવાવાળી ક્ષેત્ર સંકીર્ણનાથી અનવકાશ દોષ એજ રીતે આવી જાય છે. તેથી ત્રશ્રુ પરિક્ષેપ જાતી કહેવી જોઇએ.

&ये त्रणु वनषंउना परिक्षेपनुं ४थन ४२ छे-'जंबूएणं तिहिं सइएहिं' कंणू त्रणुसे। ये.जन प्रमाणुवाणा 'वनसंडेहिं सञ्ज्ञो समंता संपरिक्खिता' वनषं उथी यारे हिशामां व्याप्त थर्मने रहेद छे. को त्रणु वनषंउ का प्रमाणु छे,-आक्ष्यंतर, मध्य कने लाहा. खल 'पुरित्यमेणं' पौरस्त्येन-पूर्वेण पूर्विदिशि 'वणासं जोयणाइं पढमं' पश्चाशतं योजनानि प्रथमम्-आदिमं 'वणसंढं ओगाहित्ता' वनषण्डम्' अवगाह्य-प्रविश्य 'एत्थ णं' अत्र—अत्रान्तरे खल्ल 'भवणे' भवनं-एहं 'पण्णत्ते' प्रश्चप्तम्, तस्य मानमाह-'कोसं आयामेणं' क्रोशमायामेन-दैर्घ्येण, प्रञ्चप्तम् एतावताऽपरितृष्यम्नाह-'सो चेव' स एवेति—सः-पूर्वोक्तो मूल-जम्बू पूर्वशालागत भवनसम्बन्ध्येव 'वण्णओ' वर्णकः—वर्णनपरपदसम्होऽत्र बोध्यः, 'सयणिज्जं च' शयनीयं शय्या, अनाहतदेवयोग्यम् यत् तदिष बोध्यम् 'एवं' एवम्-अनेन प्रकारेण 'सेसासु वि' शेषासु—अविशृष्ठासु दक्षिणादिषु तिसृषु 'दिसासु' दिश्च प्रत्येकं पश्चशतं योजनान्यवगाह्य प्रथमवनषण्डे 'भवणा' भवनानि वक्तव्यानि, अथात्र प्रथमवने पुष्करिणी चतुष्टयं वर्णयति—'जंबूए णं' इत्यादि—जंबूए णं उत्तरपुरित्थमेणं' जम्ब्बाः खल्ल उत्तरपीरस्त्येन—ईशानकोणे दिग्भागे 'पढमं वणसंढं पण्णासं—जोयणाइं ओगाहित्ता' प्रथमं वनषण्डं पश्चाशतं योजनानि अवगाह्य-प्रविश्य 'एत्थ णं' अत्र—अत्रान्तरे खल्ल 'चत्तारि' चतसः—चतुःसंख्याः

अब जंबू बृक्षके भीतरी भाग का वर्णन करते हैं—'जंबूएणं' सपरिवार जंबू के 'पुरिथमेणं' पूर्विद्शा की तरफ 'पण्णासं जोयणाइं पढमं' पचास योजन पर पहला 'वणसंड ओगाहित्ता' वनषंड में प्रवेश करके 'एत्थ णं भवणे पण्णत्त' यहां पर भवन कहा है, वह भवन 'कोसं आयामेणं' एक कोस लंबा है, 'सोचेव वण्णओ' मूल ज़ंबू के वर्णन में पूर्वशाखा में कहा हुआ भवन संबंधी समस्त वर्णन यहां पर समझ छेवें, 'सयणिज्जं च' अनाहत देव के योग्य शय्या भी कह छेवें। 'एवं' इसी प्रकार 'सेसासु' बाकी की दक्षिणादि तीनों 'दिसासु' दिशाओं में प्रत्येक में पांचसो २ योजन प्रविष्ट होने पर प्रथम यवनषंड में 'भवणा' भवन कह छेवें।

अब प्रथमभवन में चार पुष्करिणियों का वर्णन करते हैं-'जंबूएणं उत्तर पुर-रिथमेणं' जंबू की ईशान दिशा में 'पढमं वणसंडं पण्णासं जोयणाई' ओगा

हुवे क'लृवृक्षना आंहरना लागतुं वर्णुन डरे छे-'जंबृएणं' सपरिवार क'लृना पुरत्थिमेणं' पूर्व हिशानी तरक्ष 'पण्णासं जोयणाइं पढमं' पथास थे।कन पर पहेंद्धा 'वनसंडं ओगाहित्ता' वनषं उमां प्रवेश डरीने 'एत्थ णं भवणे पण्णत्ते' त्यां लवने। आवेदा छे. से लवने। 'कोसं आयामेणं' ओड गां केटदा द्यांणा छे. 'सो चेव वण्णओ' भूण क'लृना वर्णुनमां पूर्व शाणामां डहेदा लवन संणंधी सद्यशुं वर्णुन आहींयां समक देवुं. 'सय णिड्जं च' अनाहत हेवने थे।व्य शब्या पण्ड डही देवी 'एवं' ओक रीते 'सेसासु' आहीनी हिस्छाहि त्रेषु 'दिसासु' हिशाओमां हरेडमां पांचसा थे।कन प्रवेश डरवाधी पहेदा वन-षंउमां 'भवणा' लवने। समक देवां

હવે पहेता वनमां यार पुष्डिरिणियोतुं वर्णुन ४२ छे.-'जंबूएणं उत्तरपुरिक्षमेण' क्रंभूती धशान दिशामां 'पढमं वणसंडं पण्णासं पण्णासं जोयणाई ओगाहिता' पहेता वन

'पुक्खरिणीओ' पुष्करिण्यः-वर्तुलवापीनाम जलाशयविशेषाः 'पष्णत्ताओ' प्रज्ञप्ताः, ता नामतो निर्दिशति-'तं जहा' तद्यथा-'पउमा' पद्मा १ 'पउमप्पभा' पद्मप्रभा २ 'कुमुदा' कुमुदा३ 'कुमदप्पभा' कुमुदप्रभा ४, एताः पूर्वादि दिक्क्रमेण स्वविदिग्गतप्रासादं पश्चिष्टच व्यव-स्थिताः, अनयैव रीत्याऽग्निकोणादि विदिक्त्रये प्रत्येकं चतस्रश्चतस्रः पुष्करिण्यो वक्तव्याः, तासां मानमाइ-'ताओ णं' ताः खळ पुष्करिण्यः 'कोसं आयामेणं' क्रोशम् आयामेन-दैध्येण, 'अद्कोसं' अर्दक्रोशम्-क्रोशस्यार्द्धं 'विवखंभेणं' विष्कम्भेण-विस्तारेण 'पंच घणुसयाई' पञ्च धनुःशतानि पश्चशतीधनुं वि 'उन्वेहेणं' उद्देधेन-भूप्रवेशेन प्रज्ञप्ताः । तासां 'वण्णओ' वर्णकः वर्णनपरपदसमूहोऽत्र बोध्यः स च प्रकरणान्तराद् ग्राह्यः, 'तासि णं' तासां चतसृणां वापीनां खळ 'मज्झे' मध्ये-मध्यभागे 'पासायवर्डेसगा' प्रासादावतंसकाः-प्रासादेषु उत्तमाः प्रासादाः प्रक्रसाः, अत्र बहुवचनमुक्तवक्ष्यमाणवापीनां प्रासादापेक्षया बोध्यम् तेन प्रति-हित्ता' प्रथम वनषण्ड के पचास योजन प्रवेश करने पर 'एत्थ णं' यहां पर 'चत्तारि' चार 'पुत्रखरिणीओ' वावडियां 'पण्णत्ताओ' कही गई है-उनके नामादि कहते हैं-'तं जहा-'पउमा' पर्मा१ 'पउमप्पभा' पर्मप्रभा२, 'क्रुमुदा'३ 'क्रुमुद् प्पभा' कुनुद्यभा४ ये पूर्वादि दिशा के कमसे अपने से विदिशामें आये हुए प्रासा-दको चारों ओर से घिरकर स्थित रहते हैं। इसी प्रकार से अग्निकोणादि तीन विदिशामे प्रत्येक को चार चार पुष्करणियां कहनी चाहिए। उनका मान कहते हैं-'ताओं भं' वे पुष्करणियां 'कोसं आयामेणं' एक कोस की छंबाई बाली कही हैं 'अद्धकोसं विक्खंभेगं' आधा कोसका उसका विष्कंभ-विस्तार कहा है। 'पंचधणुसयाई उब्वेहेणं' पांचसो धनुष का उनका उद्वेध-गहराई हैं। 'वण्णओ' इनका समझ वर्णन अन्य पकरण में कहे अनुसार समझ छेवें। 'तासिणं' वे चारों वाव^{िं}डके 'मज्झे' मध्य भागमे 'पासायपडेंसगा' प्रासादावतंसक–श्रेष्ठ महल कहे है। यहां बहुवचन बक्ष्यमाणवापी के प्रासादों की अपेक्षा से जानना

षंडमां प्यास येकिन प्रवेश करवाथी 'एत्थण' अहीं यां 'चतारि' यार 'पुक्खरिणीओ' वावा 'पण्णताओं' कहेवामां आवेल छे. तेना नामाहि आ प्रमाणे छे 'तं जहां' केमें प्रमा १ 'पत्रमप्पमा' पद्मप्रका २ 'कुमुद्दा' क्षुमुद्दा ३ 'कुमुद्दप्पमा' कुमुद्दप्पमा' कुमुद्दप्पमा अर्थे ये पूर्वाहि हिशाना क्षमथी पातानाथी विहिशामां आवेल प्रासाहोने यार तरक्षी घरीने रहे छे. ओक प्रमाणे अविन केणाहि त्रण् विहिशामां प्रत्येक्षने यार यार पुष्करिख्ये। कुद्धिनी किर्ह के तेने भाष अतावे छे.—'ताओं णं' के पुष्करिख्ये। 'कोसं आयामेणं' क्षेष्ठ गाउ केटली लांभी केहेल छे 'अद्धकोसं विक्लंभेणं' क्षमां गाउ केटली तेने। विष्कृत्त विक्लंभे छे. 'पंच धणुस्त्याइं उत्वेहेणं' पांयसे। धनुष केटली तेने। उद्धेध—७ उत्ति क्षी छे. 'वण्णओ' तेनं संपूर्ण् वर्णुन यन्य प्रकर्णुमां पहेल। कहा। प्रमाणे समक्ष लेवं. 'तासिणं' को यारे वावीनी 'मज्हों' मध्य काशमां 'पासायवहेंसगा' प्रासाहावतं सक्ष उत्तम महिलां

वापि एकैकप्रासादसद्भावेन चत्वारः प्रासादाः सम्पद्यन्ते इति बोध्यम्। एवं निर्देशोलाघवार्थः। ते च प्रासादाः 'कोसं' क्रोशम्—एकं क्रोशम् 'आयामेणं' आयामेन—दैध्येण
प्रज्ञप्ताः, एवमग्रेऽपि, 'अद्धक्तोसं' अर्द्धक्रोशम्—क्रोशस्यार्द्ध 'विक्खंभेणं' विष्कम्भेण—विस्तारेण
'देख्यं' देशोनं—किश्चिदेशविहीन 'कोसं उद्धं उच्चतेणं' क्रोशम् अर्ध्वग्रच्चत्वेन, तेषां प्रासादानां 'वण्णओ' वर्णकोऽत्र वक्तव्यः तत्र सीहासणा सपरिवारा' सिंहासनानि सपरिवाराणि
मद्रासनरूपपरिवारसिहतानि वक्तव्यानि जीवाभिगमेत्वपरिवाराण्येव सिंहासनानि वर्णनीयतयोवतानि, 'एवं' एवम्—अनेन प्रकारेण 'सेसाग्र विदिसाग्रु' शेपाग्रु' शेपाग्रु ईशान विदिग्भिन्नाग्रु आग्नेयादि विदिश्च पुष्करिण्यः (वाष्यः) प्रासादावतंसकाश्च वाच्याः, एतासामीशानादिविदिक्पूर्वादिदिग्गतवापीनां क्रमेण नामनिर्देष्टुं पद्यद्वयमाह—गाथे पद्य—'पउमा'
पद्मा १ 'पउमप्पभाचेव' पद्मप्रभा २ चैव 'कुमुदा' कुमुदा ३ 'कुमुद्प्पहा' कुमुद्पभा ४।

चाहिए। इससे प्रत्येक वापीमें एक एक प्रासाद होने से चार प्रासाद होते हैं ऐसा समझ छेवें। यह निर्देश लाघवार्थ किया है। वे प्रासाद 'कोसं' एक कोस 'आयामेणं' छंवे 'अद्धकोसं' आधा कोसका उनका 'विक्खं मेणं' विष्कंभ कहा है। 'देसूणं कोसं उदं उच्चत्तेणं' कुछ कम एक कोस ऊंचा है। उन प्रासादों का 'वणाओ' वर्णन परक पदसमूह यहां कह छेवें। वह इस प्रकार से हैं – वहां 'सीहासणा सपरिवारा' भद्रासनरूप परिवारसहित सिंहासन कहे हैं। जीवा भिगममें विना परिवार सिंहासन का वर्णन कहा है। 'एवं' इस प्रकार से 'सेसासु विदिसासु' शेष ईशान विदिशा से भिन्न आग्नेयादि विदिशा में पुष्करिणियां वाविडियां एवं प्रासादावतंसक कह छेवें। ये ईशानादिविदिक् एवं पूर्वादिदिशामें कही हुई वापी के कम से नाम निर्देश के लिए दो पय कहते हैं—'पडमा' पद्मा? 'पडमप्पभाचेव' पद्मप्रभार, 'कुसुदा ३, 'कुसुद्प्पहा' कुसुद

इह्या छे, अहीं यां अहुवयन वह्यमाणु वावाना प्रासाहीनी अपेक्षाथी छ तेम समकवं. अथी हरेड वावामां એड એड प्रासाह होवाधी यार प्रासाही होय छे, तेम समकवं. आ निर्देश संहेपार्थ हहेत छे. ये प्रासाही 'कोसं' એड गां केटता 'आयामेण' तांआ छे. 'अह्नकोसं' अर्धा आ केटती तेनी 'विक्लंमेण' विष्डं अ हहेत छे. 'देसूणं कोसं उहं उच्चतेण' डांधंड ओछा એड गां केटती तेनी 'विक्लंमेण' विष्डं अ प्रासाहीनं 'वण्णओ' वर्णुन डर्नाश पहें। अही हेता ते आ प्रमाणे छे-'सीहासणा सपरिवारा' त्यां अद्राप्तन ३५ परिवार अहित लिंहासन्तुं वर्णुन डरी तेवुं. 'एवं' ओक प्रमाणे 'सेसामु विदिसामु' आहिनी छशान विदिशायी जीक आव्यानेयाहि विदिशामां पुष्डरिणीयी-वावा अने प्रासाहावत्तं सह डडी तेवा. ओ छितानाहि विदिशा अने पूर्वाहि हिशामां हडेत वावाना इमथी नाम अताववा माटे के पद्यो डहेत छे. केमरें-'पडमा' पद्या १ 'वडमण्यमा चेव' पद्य प्रका २ 'कुमुदा' डुमुहा ३, 'कुमुद्दहा' डुमुह्मका ४' 'उपलग्रामा' हत्यल शुरम ५, 'णाइणा'

'उप्पलगुम्मा' उत्पलगुल्मा ५ 'णलिणा' निलना ६ 'उप्पला' उत्पला ७ 'उप्पल्जला' उपल्पलगिष्ठ विषय । १॥ 'भिंगा' भृङ्गा९ 'भिंगप्पमा चेव' भृङ्गप्रभा चैव१० 'अंजणा' अञ्जना ११ 'कज्जलप्पमा' कज्जलप्रभा १२ । 'सिरिकंता' श्रीकान्ता १३ 'सिरिमहिता' श्रीमहिता १४ 'सिरिचंदा' श्रीचन्द्रा १५ 'चेव सिरिनलयां चैत श्रीनिलया १६।२। इमे गाथे स्पष्टार्थे।

पद्मादीनां प्रागुक्तत्वेन पुनिरहोक्तिः पुनिरुक्ति तेषं सम्भावयति परन्तु स पुनिरुक्तिः पद्मबद्धत्वेन तेषां संग्रहणान्निराक्तरणीया। एताश्च सर्वा अपि पुष्करिण्यः त्रिसोपानचतुर्द्वारालङ्क्कृताः पद्मवरवेदिका-वनपण्डमण्डिताश्च बोध्याः। तत्राग्नेयकोणे उत्पलगुल्मा, पूर्वस्यां
निलिना, दक्षिणस्यामुत्पलोज्ज्वला, पश्चिमायामुत्पला, उत्तरस्यां तथा, नैक्दित्यकोणे भृङ्गा
मृङ्गप्रभा अञ्चना कज्जलप्रभा तथा वायव्यकोणे श्रीकान्ता श्रीमहिता श्रीचन्द्रा श्रीनिलया
चेति दिग्विपर्यासेन बोध्यम्।

प्रभा ४ 'उप्पलगुम्मा' उत्पलगुल्म ६, 'णलिणा' निलना ६, 'उप्पला' उत्पल ७, 'उप्पलुज्जला' उत्पलोड वलाट, ॥१॥ 'भिंगा' मृंग६ 'भिंगप्पभाचेव' गृंगप्रभा१० 'अंजणा' अंजना ११ 'कजलप्पभा' कजलप्रभा १२ 'सिरिकंता' श्रीकान्ता १३ 'सिरिमहिता' श्री महिता१४ 'सिरिचंदा' श्रीचन्द्रा १६ 'चेव सिरिनिल्या' श्री निल्या१६ ॥२॥ पद्मादि का कथन पहले किया गया है अतः यहां पर दुवारा कथन पुनकक्ति दोष की सम्भावना करते हैं परन्तु वह पुनकक्ति पद्मबद्धत्व से निरस्त हो जाती है। ये सभी पुष्करिणियां तीन सोपानपंक्ति एवं चार द्वारों से सुशोभित एवं पद्मवरवेदिका एवं वनषण्ड से मंडित हैं। उसमें अगिनकोणमें उत्पल गुल्म, पूर्वमें निलन, दक्षिण में उत्पलोज्जवला, पश्चिम में उत्पला , उत्तर दिशा एवं नैकल्य कोण में गृंगा एवं भृंगप्रभा अंजना कजल प्रभा, वायव्य कोण में श्रीकान्ता, श्री महिता, श्रीचन्द्रा श्रीनिल्या ये दिशाके विपर्यास से जान छेवें।

પદ્માદિનું કથન પહેલા કરવામાં આવી ગયેલ છે. તેથી અહીયાં ફરીથી કથન યુન ફક્તિ દેષની સંભાવના કરે છે. પરંતુ એ યુનર્ક્તિ પદ્મબદ્ધત્વથી દ્વર થઇ જાય છે એ તમામ વાવા ત્રણ સાપાનપંક્તિ અને ચાર દરવાજાઓથી સુશાભિત અને પદ્મવર વેદિકા અને વનષંડથી યુક્ત છે. તેમાં અગ્નિકાણમાં ઉત્પલ ગુલ્મ, પૂર્વમાં નલિન, દક્ષિણમાં ઉત્પલા, ઉત્તર દિશા તથા નૈઝત્ય કેાણમાં ભૃંગ અને ભૃંગપ્રભં, અંજના, કજ્યલપ્રભા, વાયવ્ય કેાણમાં, શ્રી કાન્તા, શ્રી મહિતા શ્રી અંદ્રા, શ્રી નિલયા એ ખદ્મા દિશાના ફેરફારથી સમજ લેવા.

निस्ति। ६, 'उप्पक्षा' ઉत्पत्ता ७, 'उप्पलुङ जला' उत्प्रदेश्यित्यसा ८, ॥ १ ॥ 'भिंगा' भृंग ६, 'भिंगप्पमा चेव' भुंगप्रसा १०, 'अंजणा' आंथना ११, 'कःजलप्पमा' क्ष्य्यसप्रसा १२, 'सिरि-कंता' श्री कान्ता १३, 'सिरिमहिता' श्री मिद्धिता १४, 'सिरिचंदा' श्री यंद्रा १५, चेव सिरिनिल्या' श्री निस्या १६०॥ २॥

अथास्य वनस्य मध्यवर्तीनि क्र्रानि स्वस्त्वतो द्र्शयित-'जंब्ए णं' इत्यादि-'जंब्ए णं' जम्ब्वा:-जम्ब्सुद्र्शनायाः अस्मिन्नेव प्रथमे वनपण्डे 'पुरिव्यमिल्लस्य' पौरस्त्यस्य-पूर्वदिन्मवस्य 'मवणस्स' भवनस्य-गृहस्य 'उत्तरेणं' उत्तरेण-उत्तरस्यां दिशि 'उत्तरपुरिव्यमिल्लस्स' उत्तरपौरस्त्यस्य-ईशानकोणगतस्य 'पासायवर्डेसगस्स' प्रासादादतंसकस्य 'दिविखणेणं' दिक्षणेन-दिक्षणस्यां दिशि 'एत्य णं' अत्र-अत्रान्तरे खळु 'क्र्डे' क्र्टं-शिखरं 'पण्णाते' प्रक्षमम्, तच्च मानतः 'अहजोयणाइं उद्धं उच्चतेणं' अष्ट योजनानि अर्ध्यमुच्चत्वेन, 'दो जो-यणाइं उव्वेहेणं' द्व योजने उद्धेभेन-भूत्रवेशेन, वृत्तत्वेन य एवाऽऽयामः स एव विष्कम्भ इति, तच्च पुनः 'मूल्ले' मूल्ले मूलावच्छेदेन 'अह नोयणाइं आयामविवस्तंभेणं' अष्टयोजनानि आयाम-दिष्य-देश्य-विस्ताराभ्याम् 'बहुमज्झदेसभाए' 'बहुमध्यदेशमागे-अत्यन्तमध्यदेशभागावच्छेदेन भूमितश्रतुर्षु योजनेषु गतेषु 'छ जोयणाइं' वृद्ध्योजनानि 'आयामविवस्तंभेणं' आयानविष्कम्भेण-दैर्ध्य-विस्ताराभ्याम्, 'उविरं' उपरि-शिखरभागे 'चत्तारि जोयणाइं आयामविक्संभेण' चत्वारि योजनानि आयामविक्सम्भेण-आयाम-विष्कम्भाभ्याम्,

अब वन के मध्यवि क्र का स्वस्प कहते हैं - 'जंबूएणं' जम्बू सुद्दाना के इसी प्रथम वनषण्ड में 'पुरित्थिमिह्सस भवणस्स' पूर्विद्या में रहे हुए गृह का 'उत्तरेणं' उत्तर दिशा में 'उत्तर पुरित्थिमिह्सस' ईशान दिशा में रहे हुए 'पासाय बेंसगस्स' उत्तम प्राप्ताद – महल के 'दि क्षिणणं' दिशा में रहे हुए 'पासाय बेंसगस्स' उत्तम प्राप्ताद – महल के 'दि क्षिणणं' दिशा दिशा में 'एत्थणं' यहां पर 'क्रेडें' शिखर 'पण्णत्ते कहा है उसका मान इस प्रकार से हैं – 'अहजोयणा हं उद्धे उच्चतेणं' आठ योजन का उंचा है 'दो जोयणा इं उद्धे हेणं' दो योजन का उद्धे प्रमूमि के अंदर कहा है। वृत्त – वर्तुल होने से जितना उसका आयाम – लंबाई कहा है उतना ही उसका विष्कं म चोडाई कहा है। वह आयाम विष्कं म 'मूले' मूल भागमें 'अहजोयणा इं आयामिश्व क्षे मेणं' आठ योजन का आयामिश्व कं में हैं 'बहुम इद्ये सभाए' ठीक मध्य भागमें भूमि से चार योजन गत होने पर 'छ' जोयणा इं आयामिश्व कं मेणं' छ योजन आयाम विष्कं म

द्वे वननी मध्यमां आवेश इंटनुं वर्णुन ठरे छे.-'जंबूएणं' कंणूसुदर्शनाना आ वनषं उमां 'पुरित्यमिल्लस्स मवणस्स' पूर्व दिशामां आवेश सवनेता 'उत्तरेण' उत्तर दिशामां 'उत्तर्युरियमिल्लस्स' धिशान दिशामां आवेश 'पासायवहेंसगस्स' उत्तम प्रासाद-महेशना 'दिक्खणेणं' दक्षिण् दिशामां 'एत्थणं' आ स्थेणे 'कूडा' शिभरा 'पण्णत्ता' केहेशा छे. तेनुं भाप आ प्रमाण् छे.-'अट्ट जोयणोई उद्धं उच्चत्तेणं' आठ थाक्रन केटशा छे. 'वो जोयणाई उद्धेहेणं' थे थाक्रन केटशे। इदेध-क्रमीननी आंदर प्रवेशिशा छे. एत्त-वर्तुश है। वर्षेश केटशे। तेना आयाम छे. क्रेटशेक्ष तेना विष्ठं स-पहेषणां केहेश छे. ते आयाम विष्ठं स पूले' मूल स्थान केटशे। अयामविखं मेणं' आठ थाक्रन केटशे। अयामविखं मेणं' आठ थाक्रन केटशे। अयामविखं मेणं' आठ थाक्रन हें याद्याम विष्ठं स छे. 'बहुमज्झदेसमाए' अराजर मध्य साजमां क्रमीनधी व्यस् थाक्रन हं व्यक्तिं विष्ठं स छे. 'व्यक्तिं' शिक्षाचा

अथैषां परिधिं वक्तुं पद्ममहन्म्यां प्रासाद्यवंस्थानां 'सूले' मूले-मूल्यव्हलेदेन 'पण-वीसं' पञ्चविद्यति योजनानि सविद्येषाणि किञ्चिद्धिकानि प्रिर्यः-परिधिः वर्तुल्य्यम्, च-पुनः 'मिन्त्र' मध्ये मध्यदेशावच्छेदेन 'हारस' अष्टादश योजनः नि 'सविसेस्यः' अविद्ययोजन्मिन परिर्यो 'क्ष्डस्स इमस्स वोद्ध्वां' अस्य-क्र्टस्य बोद्ध्व्यः इति रीत्या प्रथासंख्यं योजनीयम् । प्रयं सित तत्क्क्टं 'मूले वित्यण्णे' मूले-विस्तीर्णम् -विस्तारयुक्तम् 'मन्द्रो संखित्ते' मध्ये संक्षित्तम् इस्वनां गतम्, 'उवरिं' उपरि-शिखरमाने 'क्ष्णुए' तनुकम्-प्रतन्न-मूल्यध्यापेस्या, तथा-तत्क्टं 'सन्त्र कणगामए' सर्वरत्त्रमयम्-सर्वत्तमा-वेह्यीदि-रत्तमयम्, 'अन्त्ये' अच्छम्-प्राकाशस्प्रहिक्यिणम् इत्याद्यपि वक्तव्यम् तेषां व्याख्या प्राप्यत्, 'वेह्या-वणसंख्वण्यां' वेदिका वनहोता है 'उवरिं' शिखर के भाग में 'चसारि जोधणाइं आयामविक्यं भेणं' चार योजन का आयामविक्यंभ कहा है ।

अब उसकी परिधी का मान कहते हैं-इन प्रासादावतंसक के 'मूछे' मूल भाग में 'पणवीसं' पचीस योजन से कुछ अधिक परिधि-वर्तृहत्व कहा है। 'मिज्झ' मध्य भाग में 'द्वारस' अठारह योजन से 'सिवसेसाई' कुछ अधिक 'परिरओ' परिधि 'कूडस्स इमस्स बोद्धव्वो' इस कूट का प्रमाण जान छेना चाहिए। इस प्रकार से वह कूट 'मूछे वित्थिण्णे' मूल भागमें विस्तृत 'मज्झे संखित्ते' मध्यमें संकुचित 'उवरिं' शिखर के भाग में 'तणुए' मूल भाग एवं मध्य भाग की अपेक्षा से पतला कहा है। तथा वह कूट 'सव्वकणगामए' सर्वी-त्मना रत्नमय 'अच्छे' आकाश एवं स्फटिक के जैसा निर्मल यह अच्छ पद श्लक्षण इत्यादि का उपलक्षण है अतिः श्लक्ष्णादि समग्र विशेषणविशिष्ट कहलेना। इन पदों की व्याख्या पूर्ववत् समझलेवें 'वेइया वणसंडवण्णओ' यहां पर वेदिका एवं वनषंड का वर्णन संपूर्ण कह छेवें।

कागमां 'चतारि जोयणाई आयामविक्सं मेणं' शर थाक्रन केटले। आयाम विष्ठं के छेद छे.

देवे तेनी परिधीनं भाप अतावे छे.—आ प्रासादावतं सक्षेता 'मूले' मूलकागमां 'प्राचीसं' प्रश्वीस थेक्रनथी ठंडें प्रविध परिध वर्तु तता ठेडेल छे. 'मिन्झं' मध्यकागमां 'दुरसं' अदार थेक्षनथी 'सिवसेसाइ' ठंडेठ वधारे 'परिरओ' परिधी ठेडेल छे. उत्रिं' उपरता कागमां 'बारसेत्र' आर थेक्कनथी ठंडेठ वधारे 'परिरओ' परिधी ठेडेल छे. उत्रिं' उपरता कागमां 'बारसेत्र' आर थेक्कनथी ठंडेठ वधारे 'परिरओ' परिधि 'क्इस्स इमस्स बोद्धन्त्रो' आ इटनं प्रभाष समक्ष्यं कोई को भीते को इट 'मूले विश्विणो' मूलकागमां विस्तारवाणा 'मन्झे संक्लिते' मध्यमां संडुथित 'उवरि' शिभरना कागमां 'तणुए' मूल काग अने मध्यकागनी अपेक्षाथी पातणा छे. तथा को इट 'सन्वक्रणगामए' सर्वात्मना रत्नभय, 'अन्छ' आडाश कने स्ड्रिनी केवा निर्भाण का कर्छ पह श्लक्ष्याहिनुं उपलक्षण छे. तथी श्री श्री तमाम विशेषश्रीथी विशेषित ठिडेतेवा. आ पडीनी व्याप्या पहेलानी कोम

पण्डरणिकोऽत्र-बोध्यः, अथ शेषक्रटवक्तव्यतामितिदिशित-'एवं सेसावि कूडा इति' एवं शेषाण्यिष क्रटानि-एवम्-प्रथमक्रटवत् शेषाणि-प्रथमक्रटातिरिक्तानि द्वितीयादीन्यिष सप्तक्रटानि
बोध्यानि इति । तानि शेषक्रटानि वर्णप्रमाणपरिध्याद्यपेक्षयोक्तरीत्या बोध्यानि, तेषां स्थानविभागस्त्वेवम्-तथाहि-पूर्विदग्भाविनो भवनस्य दक्षिणतः, आग्नेयविदिग्भाविनः प्रासादावर्तसक्तस्योक्तरतो द्वितीयं क्रटम् तथा-दक्षिणदिग्भाविनो भवनस्य पूर्वस्यां विह्निशेणभाविनः
प्रासादावतंसकस्य पश्चिमायां दिशि तृतीयं कूटं, तथा-नैक्टिश्यकोणभाविनः प्रासादावतंसकस्य पूर्वस्यां दिशि चहुर्थं कूटम् तथा पश्चिमदिग्भाविनो भवनस्य दक्षिणस्यां दिशि नैक्टिश्यकोण आविनः प्रासादावतंसकस्योत्तरस्यां दिशि पञ्चमं कूटम् तथा-पश्चिमदिग्भाविनो भवनस्योत्तरस्यां वायव्यकोणभाविनः प्रासादावतंसकस्य दक्षिणस्यां षष्ठं कूटम् तथोत्तरदिग्भाविनो भवनस्य पश्चिमायां दिशि वायव्यकोणभाविनः प्रासादावतंसकस्य पूर्वस्यां दिशि सप्तमं
क्र्टं, तथोत्तरदिग्भाविनो भवनस्य पूर्वस्यां दिशि ईशानकोणभाविनः प्रासादावतंसकस्य

अय रोष क्रों का वक्त व्य कहते हैं—'एवं सेसावि क्र्डा' इसी प्रकार बाकी के सात क्रूट के विषय में भी समझ छेवें। वे सबकूट वर्णा, प्रमाण, परिधि आदि की अपेक्षा से पूर्वोक्त प्रकार से समझ छेवें उनके स्थानादि भाग इस प्रकार से हैं-पूर्व दिशाके भवन कि दक्षिण दिशा में आरनेय विदिशाके भवन की उक्तर दिशा में दूसरा कूट कहा है। तथा दक्षिण दिशा के भवन के पूर्व में अपिन कोण भावि भवन की पश्चिम दिशा में तीसरा क्रूट आता है। तथा नैऋत्यकोण भावि भवन की पूर्व दिशा में चौथा कूट कहा है। तथा पश्चिम दिश्मावि भवन की दक्षिण दिशा में, नैऋत्यविदिश्मावि भवन की उक्तर दिशा में पांचवां कूट कहा है। तथा पश्चिम दिशा में पांचवां कूट कहा है। तथा पश्चिम दिशा में पांचवां क्रूट कहा है। तथा पश्चिम दिशा में छहाकूट कहा है। तथा उक्तर दिशा में, वायव्यकोण भावि भवन के दक्षिण दिशा में छहाकूट कहा है। तथा उक्तर दिशा के भवन की पूर्व दिशा में ईशान

સમછ લેવી. 'वेइया वणसंडवण्णओ' અહીં યાં વેદિકા અને વનષંડનું વર્ણુનસં પૂર્ણ કરી લેવું.

હવે બાકીના કૂટોનું કથન કરે છે.-'एवं सेम्रावि कूडा' એજ પ્રમાણે બાકીના સાત કૂરોના સંબંધમાં પણ સમજ લેવું. તે બધા કૂટા વર્ણ, પ્રમાણ, પરિધિ વિગેરની અપે-ક્ષાથી પૂર્વેક્તિ પ્રકારથી સમજ લેવા. તેમના સ્થાનાદિ વિભાગ આ પ્રમાણે છે.

પૂર્વ દિશાના ભવનની દક્ષિણ દિશામાં, આગ્નેય વિદિશાના ભવનની ઉત્તર દિશામાં બીએ ફૂટ કહેલ છે. તથા દક્ષિણ દિશાના ભવનની પૂર્વમાં, અગ્નિ કાષ્યુમાં આવેલ ભવનની પશ્ચિમ દિશામાં ત્રીએ ફૂટ આવેલ છે. તથા નિઋત્ય કાષ્યુમાં આવેલ ભવનની પૂર્વદિશામાં ચાયા ફૂટ કહેલ છે. તથા પશ્ચિમ દિશામાં આવેલ ભવનની દક્ષિણ દિશામાં નિઋત્યવિદિશામાં આવેલ ભવનની ઉત્તર દિશામાં પાંચમા ફૂટ આવેલ છે. તથા પશ્ચિમ દિશાના ભવનથી ઉત્તર દિશામાં વાયા કાષ્યુમાં આવેલ ભવનની દક્ષિણ દિશામાં છટ્ઠા ફૂટ કહેલ છે. તથા ઉત્તર દિશામાં આવેલ ભવનથી પશ્ચિમ દિશામાં વાયા કાષ્યુમાં આવેલ ભવનની દક્ષિણ દિશામાં આવેલ ભવનની છે. તથા ઉત્તર દિશામાં આવેલ ભવનથી પશ્ચિમ દિશામાં વાયા કાષ્યુમાં આવેલ ભવનની

पश्चिमदिश्यष्टमं क्रुटमित्यष्टौ क्रुटानि सन्ति तत्तत्स्थानस्थितानि । अत्रैषां स्थापना यथा यन्त्रे तथा द्वष्टव्या ।

| कूटाष्ट्रकस्थापना-यन्त्रम् | |
|---------------------------------|--|
| ्रुष्टाष्ट्रकस्य। यम्।—यन्त्रभू | |

| | 2 - 2 - 1 1 1 1 1 1 | |
|----------------|---------------------|-----------------|
| ई० | पूर्व | अ० |
| प्रा०० | क्र॰ भं० क्र० | प्रा॰॰ |
| 0 | <u> </u> | |
| 18° V | | 6 0 |
| ± | | क की व्य |
| 187 | | व संव |
| િ જેનુ લે | | 2 91 |
| • | | o€ ° |
| 0 % | 3 4 | |
| F 5 0 | र्कु स्र क्र | 。。 <u>]K</u> |
| ļ | pr≨jp | |

अथ जम्ब्वाः सुद्र्शनाया द्वाद्शनामान्याह-'जंबूए णं' इत्यादि-'जंबूए णं' जम्ब्वाः खर्छ 'सुदंसणाए-दुवालसणामधेज्ञा' सुद्र्शनायाः द्वादशनामधेयानि-नामानि 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्तानि, 'तं जहा' तद्यथा-'सुदंसणा' सुद्र्शना १, 'अमोहा य' अमोवा २ च 'सुप्पबुद्धा' सुप्रबुद्धा ३ 'जसोहरा' यशोधरा ४ । 'विदेरजंबू' विदेहजम्बूः ५ 'सोमणसा' सौमनस्या ६

कोण भावि भवन की पश्चिमिद्दा। में आठवां कूटकहा है ? इस प्रकार से आठ कूट कहे हैं। वे सभी तत् तत् स्थान में स्थित है। इनकी स्थापना संस्कृत टीका में यंत्र रूप में दिखलाइ है सो वहां देखकर समझलेवें।

अब जम्बू खुद्दीना के बारह नाम कहते हैं-'जंबूएणं खुद्सणाए' जंबू खुद्दीना के 'दुवालस नामधेज्जा पण्णासा' बारह नाम कहे हैं 'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं-'खुदंसणा' खुद्दीना १, 'अमोहाय' अमोधा २, 'खुष्पबुद्धा' खुप्र-बुद्धा ३, 'जसोहरा' यशोधरा ४, 'विदेह जंबू' विदेह जंबू ५, 'सोमणसा सौमन-स्या ६, 'णियया' नियता ७, 'णिच्चमंडिया' नित्यमंडिता ८, ॥१॥ 'सुभहाय'

પૂર્વ દિશામાં સાતમા કૂટ આવેલ છે. તથા ઉત્તર દિશામાં આવેલ ભવનની પૂર્વ દિશામાં ઇશાન કૈત્લુમાં આવેલ ભવનની પશ્ચિમ દિશામાં આઠમા કૂટ કહેલ છે. આ રીતે આઠ કૂટા કહેલા છે તે બધા તે તે સ્થાન પર આવેલ છે.

तेनी स्थापना संस्कृत टीक्षमां यंत्र ३पे अतावेश छे. ते त्यांथी लिएने समल होवी. हेवे कं भू सुदर्शनाना भार नामा कहेवामां आवे छे. -'जंबूएणं सुद्देसणाए' कं भूसुदर्शनाना "दुवालस नामधेजा पण्णता' भार नामा कहेवा छे. 'तं जहा' के आ प्रभाषे छे. 'सुदंसणा' सुदर्शना १ 'अमोहाय' अमेश्या २ 'सुद्वबुद्धा' सुप्रभुद्ध ३ जसोहरा' यशाधरा ४ 'विदेहजंबू' विदेह कं भू ५ 'सोमण्या' सीमनस्या ६ 'णियया' नियता ७ 'णिच्चमंहिया'

'णियया' नियता ७ 'णिच्चमंडिया' नित्यमण्डिता ८।१। 'सुभदा च' सुभदा ९ च 'विसाला य' विशाला १० च 'सुजाया' सुजाता ११ 'सुमणा' सुमनाः १२ अपि च । 'सुदंसणाए जंबूए णामधेज्ञा दुवालस' सुदर्शनाया जम्ब्या नामधेयानि द्वादश् ।२। तत्र-सुदर्शना-स--सुष्ठु-शोभनं दर्शनं-ने वमनआह्लादकं वीक्षणं यस्याः सा तथा १, अमोघा-मोघा-विफला न मोघा अमोघा-नत्रत्र विरोधार्थक इति विफला विरोधिनी सफलेरपर्थ: इयम-मोघा हि स्व स्वामिभावेन प्रतिपन्ना सती जम्बूद्वीपाधिपत्यं जनयति, तद् विना तदेश स्वामित्वस्यैवायोगात् २, सुप्रबुद्धा-सु-अतिशयेन प्रबुद्धा-उत्फुल्ला-उत्फुल्ल फुल्ल-योगादिः यमप्युत्फुल्ला ३, यशोधरा-धरतीति धरा पचादित्वादच् यशसः -सर्वजगद्व्यापिनो यशसो धरा यशोधरा, अनया जम्ब्या हि जम्बूद्वीयस्त्रिश्चवने रूयातप्रभाव इत्यन्वर्थे नामधेयमस्याः ४ । विदेहजम्बू:-विदेहेषु-स्वनामरुवातक्षेत्रविशेषेषु जम्बू विदेह जम्बू:-विदेहान्तर्वत्युत्तर-कुरुकृतनिवासत्वात् ५ । सौमनस्या-सौमनस्यं सुमनसो भावः, तदस्त्यस्याः जन्यस्वेति सुभद्रा ९, 'विसालाय' विशाला १०, 'सुजाया' सुजाता ११, 'सुमणा' सुमना १२, दूसरा प्रकार इस प्रकार कहा है 'सुदंसणाए जंबूए नामधेजा दुवालस' सुद्रीना जंबू के बारह नाम कहे हैं। सुद्रीना अर्थात् नेत्र एवं मनको प्रीति-कारक होता है दर्शन जिसका यह सुदर्शना कहलाता है १, 'अमोघा' निष्कल न होने वाला अर्थात् सफला, यह अमोघा ही स्वस्वामिभाव से प्राप्त होती हुई

नित्यभंडिता ८ ॥ १ ॥ सुभद्दाय' सुलद्रा ६ 'विसालाय' विशास। १० 'सुजाया' सुजाता ११, 'सुमणा' सुभना १२,

जंबूद्वीप का आधिपत्य को करता है, कारण उसके विना उस देशके स्वामिन त्वका ही अभाव रहता हैर, सुप्रबुद्धा अतिशय प्रबुद्ध खिले हुए३, यशोधरा

सर्व जगद्वधापीयश को धारण करने वाला इससे जंब से जंबूद्वीप तीनों भवनों में विख्यात प्रभाव वाला है इससे यह नाम यथा योग्य है ४, बिदेह जंबू-विदेशों में-स्वनामसे, प्रसिद्ध क्षेत्रों में जो जंबू है वह विदेह जंबू कहलाता है, विदेहान्त वैति उत्तरकुरु में निवास करने से भी विदेह जंबू कहते हैं ५, सौमनस्या' सुम-

णीली प्रकार का प्रभाणे केहेल छे-'सुदंसणाए जंबूए नामचेन्जा दुवालस' सुदर्शना कंजूना जार नामा कहेला छे. सुदर्शना अर्थात् आंभ कने मनने प्रीतिकारक हैत्य छे, दर्शन केतुं ते सुदर्शना कहेवाय छे. १, 'अमोघा' निष्हण न थवावाणुं अर्थात् सहला, आ अभोधा क स्वस्वामिलावयो प्राप्त थनारा कंजूबीएनुं अधिपति पणुं करे छे. कारणु के तेना विना को देशना स्वामिपणुनी क अलाव रहे छे. २, 'सुप्रबुद्धा' अत्यंत प्रभुद्ध भिक्षेता ३, यशोधरा सर्व कजत व्यापी यशने धारणु करवावाणा आनायी कंजूबी कंजूबीप त्रणे लवनेतामां विष्यात प्रभाववाणा छे. तथी आ नाम येण्य क छे. ४, विदेख कंजू-विदेखामां स्वनामथी प्रसिद्ध क्षेत्रीमां के कंजू छे ते विदेख कंजू कहेवाय छे. विदेख-न्तवंति उत्तरकुइमां निवास करवाथी पणु विदेख कंजू कहेवाय छे. प्र, सीमनस्य सुमनसने

सौमनस्या—सौमनस्योत्पादिका द्रष्टु जनमनः प्रसादिनी ६। नियता—सद् (ऽवस्थिता शायतत्वात् ७, नित्यमण्डिता—नित्यं सततं मण्डिता—भूषिता तथा—सदा भूषणसमलङ्कृतत्वात् ८।१। सुभद्रा—सु—सुन्दु अन्याहत भद्रं—कल्याणं यस्याः सा सुभद्रा—सुन्द्रकल्याणवती निरुपद्रवा महर्द्धिकदेवाधिष्ठितत्वात् ९। च शन्दः समुच्यार्थकः । विशाला—विस्तारयुक्ता १० आयाम—विस्करमाभ्यामुच्चत्वेन चाष्ट्रयोजनप्रमाणत्वात्, चः प्राग्वत्, सुनाता—सु—शोभनं-जातं—जननं यस्या सा तथा, स्वच्लमणिकनकरत्नमूलद्रव्यजनितत्वेन जन्मदोपरहितेति मावः ११। सुमनाः -सु—शोभनं मनो यतः सा तथा १२, अपिचेति समुच्चयार्थे अव्यये । अत्र जीवाभिगमादिषु नामव्यत्यासेन पाठस्य दृष्टत्वेऽपि न कश्चिद्विरोधः, क्रमत्यागेऽपि द्वादश-संख्यापूर्ति सम्भवात् । जम्ब्च्यां—अम्बूसुदर्शनायां खल्ल अष्टाष्ट मङ्गलकानि—स्वस्तिक १ श्रीवत्ता २ नन्दिकावर्त ३ वर्धमानक ४ भद्रासन ५ कल्या ६ मत्स्य ७ दर्पण इत्यष्टी मङ्गलानि एव मङ्गलकानि—कल्याणकराणि—अत्र मङ्गलजनकेषु मङ्गलत्वमौपचारिकम् उपलक्षण-मिदं तन ध्वजच्छत्रादीन्यपि वर्णनीयानीह बोध्यानि,

नस को उत्पन्न करने वाला अर्थात् देखने वाले के मनको आनंद देने वाला दे, नियता—सदा अवस्थितरहने से अर्थात् चाश्वत होने से ७, नित्यमंडिता—सतत भूषण से अर्डकृत रहने से ८ ॥१॥ सुभद्रा—सुंद्र कल्याण करनेवाली—निरूपद्रव होने से अहर्द्धिकदेव के अधिष्ठानभूत होने से ९ । विद्याला—विस्तारयुक्त होने से १०, अर्थात् आयाम, विष्कंभ एवं उच्चत्व से आठ योजन प्रमाण होने से । सजाना—स्वच्छमणि कनकरत्न मूल द्रव्य को उत्पन्न करने वाला होने से अर्थात् जन्म दोषरहित होने से ११, सुमना—द्योभन मन होने से १२, यहां जीवाभिगमादि भें नामका व्यत्यास—फिरफार वाला पाठ होने पर भी कोई विरोध नहीं है । कम का फिरफार होने पर भी बारह की संख्या पूर्ण होती है।

जंब खुदर्शना में आठ आठ मंगलक कहे हैं-जो इस प्रकार से हैं-स्वस्तिक, श्रीवत्सर, नंदिकावर्त ३, वर्धमानक ४, भद्रासन ५, कलश ६, मत्स्य ७, दर्पण

ઉત્પન્ન કરવાવાળા અર્થાત્ જોનારાના મનને આનંદ આપનાર દ, નિયતા, સદા અવસ્થિત રહેવાથી અર્થાત્ શાધ્યત હોવાથી છ, નિત્યમંડિતા—સતત આમ્ષ્ણોથી અલંકૃત રહેવાથી ૮, ાા ૧ ાા સુભદ્રા—સુંદર કલ્યાણુ કરવાવાળી નિરૂપદ્રવ હોવાથી મહર્દ્ધિક દેવના અધિષ્ઠાન ભૂત ૯, વિશાલા—વિસ્તાર સુકત હોવાથી આયામ વિષ્કંભ અને ઉચ્ચત્વથી આઠ ચાજન પ્રમાણુ હોવાથી. ૧૦, સુજાત—સ્વચ્છ મણુકનક રતન મૂલ દ્રવ્યને ઉત્પન્ન કરનારા હોવાથી અર્થાત્ જન્મ દોષ રહિત હોવાથી ૧૧, સુમના—શાભનમન હોવાથી ૧૨, અહીં જીવાભિ અમાદિમાં નામના ફેરફાર વાળા પાઠ હોવા છતાં પણ ભારની સંખ્યા પૂરી થાય છે.

જં ખૂસુદર્શન માં આઠ આઠ મંગલક કહેલા છે. જે આ પ્રમાણે છે.–સ્વસ્તિક ૧, શ્રીવત્સ ૨, નંદીકાવર્ત ૩, વર્ષમાનક ૪; ભદ્રાસન ૫, કલશ ૬, મત્સ્ય ૭, દર્પણ ૮, अधुना सुद्रश्निताशब्दप्रवृत्तिनिमित्तं प्रष्टुकाम इदमाह-'जंबूए णं' इत्यादि-'जंबूए णं' अट्ट मंगलगा पण्यत्ता' जम्ब्याः खलु अष्टाष्ट मंगलकानि 'से' अथ-सुद्रश्नीस्वरूपवर्णनान-तरम् 'भंते !' हे भदन्त ! इयं जिज्ञासोदेति यत् 'केणहेणं' केन अर्थेन-कारणेन 'एवं' एवम्-इत्थम् 'जुच्चइ' उच्यते-कथ्यते-'जंबू सुदंसणा २ ?' जम्बूः सुद्रश्नी २ इति ?, भगवांस्त-दुत्तरमाह-'गोयमा !' हे गौतम ! 'जंबूए णं सुदंसणाए अणाहिए' जम्ब्वां खलु सुद्रश्नीयाम् अनाहतः-नाहताः-न सम्मानिताः स्वातिरिक्ता जम्बूद्रीपनिवासिनो देवा येन सोऽनाहतः- उपेक्षितान्यमहर्द्धिकः अनाहतेत्यन्वर्थनामको 'णामं' नाम-प्रसिद्धो 'नंबूदीवाहिबई' जम्बू-द्रीपाधिपतिः 'परिवसइ' परिवसति, स कीह्यः ? इति जिज्ञासायामाह-'महिद्धीए' महर्द्धिकः-महती भवनपरिवारादि समृद्धियस्य स तथा, इदम्रपलक्षणं तेन ''महाद्यतिकः, ८। ये आठ मंगलक ही कल्याण करने वाले कहे हैं। यहां मंगल जनकों में मंगलत्व यह औपचारिक है यह उपलक्षण है अतः यहां ध्वज छन्नादिका भी वर्णन करलेना चाहिए।

अब सुदर्शना राज्द की प्रवृत्ति के निमित्त को लेकर पूछने की इच्छा से इस प्रकार कहते हैं 'जंबू सुदर्शना में आठ आठ मंगल द्रव्य कहे हैं 'से' सुद्र्य की स्वरूप वर्णन के पीछे 'मंते!' हे भगवन इस प्रकार की जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि ने पाडेणं एवं बुच्चह' किस कारण से इस प्रकार कहा जाता है कि 'जंबू सुद्ंसणा जंबू सुदंसणा' यह जंबूसुद्र्शना इस प्रकार से कहा जाता है ? इस प्रश्न के उत्तर निमित्त महावीर प्रसुश्री कहते हैं –'गोयमा!' हे गौतम! 'जंबूएणं सुदंसणाए' जंबूसुद्र्शना में 'अणाढिए णामं' अनाहत नामधारी देव 'जंबू दीवाहिवई' 'जंबूबीप का अधिपति 'परिवसई' निवास करता है। वह कैसा है इस प्रकार की जिज्ञासा निष्टत्यर्थ कहते हैं –'महिड्डीए' भवनपरिवारा-

આ આઠ મંગલક જ કલ્યાણુ કરનારા કહ્યા છે. અહીં મંગલ જનકામાં મંગલત્વ એ ઔપચારિક છે. એ ઉપલક્ષણુ છે. તેથી અહીં ધ્વજ અને છત્રાદિનું વર્ણુન પણુકરી લેવું.

હવે સુદર્શના શण्डनी प्रवृत्तिना निभित्तने वर्ध ने पूछवानी धन्छाथी क्या प्रभाखें केहेल छे.—'जंत्रूएणं अहुह संरह्णा पण्णत्ता' के जूसहर्शनामां आठ आठ मांगल द्रव्य कहेल छे. 'से' सुदर्शनाना स्वरूप वर्णननी पछी 'मंते!' हे लगवन् आवी रीतनी छत्रासा हत्पन्न थाय छे है—'केणहुणं एवं बुच्चइ' शा कारण्यी आ रीते केहेवामां आवे छे है—जंत्रूसुदंसणा जंत्रूसुदंसणा' आ कंज्रुसुर्शना के प्रभाखें केहेवाय छे हैं आ प्रक्षना हत्तरमां श्रीमहावीर प्रक्ष केहें छे—'गोयमा! हे जीतम! जंत्रूषणं सुदंसणाए' कंज्रुसुदंसणां 'अणाहिए णामं' अनाहत नामधारी हेन, 'जंत्रू दीवाहिबई' कंज्रुदीप नामना द्रीपना अधिपति 'परिवसइ' निवास हरे छे. ते हेव हेवा छे हैं को रीतनी छत्रानी निवृत्ति माटे कहे छे—'महिड्डीए' लवन परिवाराहि समृदिथी युक्त होवाथी महिद्धिक छे. महिद्धिक पह इपदक्ष छे, तेथी महाद्वितवाणा,

महाबलः, महायशाः, महासौक्या, महानुभावः, पत्योपमस्थितिवः'' इत्येपां ग्रहणम्, व्याक्याचाष्ट्रमस्त्राद्वोध्या । 'से णं तत्थ' स खल्ल अनादताभिधो देवः, तत्र-जम्बू सुद्र्शनाः याम् विहरति, किं कुर्वन् ? इत्यपेक्षायामाह-'चउण्हं' चतस्रणाम् इत्यादि-'चउण्हं' सामाणिय साहस्सीणं' चतस्रणां सामानिक-साहस्रीणां-चतुः सहस्र संक्ष्यक सामानिक देवानाम् 'जाव' यावत्-यावत्पदेन 'चतस्रणामग्रमहिपीणाम्, सपित्वाराणां तिस्रणां परिषदां सप्तानामनीका-नाम् सप्तानामनोकाधिपतीनाम्, षोडशानाम्' इत्येपां पदानां सङ्ग्रहो बोध्यः, एषां व्याक्याऽ-ष्टमस्त्राद्वोध्या । 'आयरवखदेवसाहस्सीणं' आत्मरक्षदेवसाहस्त्रीणाम्-पोडशसंख्यानामात्मरक्षक्तसहस्राणाम् तथा 'जंबूदीवस्सणं दीवस्स' जम्बूद्वीपस्य खल्ल द्वीपस्य तथा-'जंबूल् सुदंस-णाए' जम्ब्वाः सुद्र्शनायाः तथा 'अणादियाए' अनादतायाः-अनादृताभिधानायाः 'रायहाणीए अण्णेसिं च' राजवान्याः अन्येपाम्-चतुसहस्रसामानिकदेवाचितिरक्तानां च 'बहूणं देवाण य देवीण य' बहूनां देवानां च देनीनां च 'जाव' यावत्-यावत्पदेन-आधिपत्यं

दिसमृद्धि से युक्त होने से महद्धिक है-महद्धिक पद उपलक्षण हैं अतः महाधृति वाला महाबल ज्ञाली, महान यशवाला, महा सुखवाला, महानु भाव एक पत्योप्पम की स्थितिवाला है इन पदों का अर्थ आठवें सूत्र में कहे अनुसार समझलें 'से णं तत्थ' वह अनाहतदेव जंब सुद्दीना में निवास करते हैं-वहां निवास करता हुआ वह क्या करते हैं इस जिज्ञासा शमनार्थ कहते हैं-'चउण्हं सामाणिय साहस्सीणं' चार हजार सामानिक देवों का 'जाव' यावत्पद से परिवार सहित चार हजार अथमहिषीयों का तीन परिषदाओं का सात सेनाओं का, सात सेनाधिपतियोंका यहां षोडश पद का संग्रह समझलें अतः 'आयरक्खदेवसाहस्सीणं' सोलह हजार आत्मरक्षक देवों का तथा 'जंबू हीवस्स णं दीवस्स' जंबूदीप नामक द्वीपका तथा जंबूए सुदंसणाए' जंबू सुदर्शनाका तथा 'आणादियाए' आनाहता नामकी 'रायहाणोए' राजधानी का इससे मिन्न 'बहूणं देवाण य देवीण य' अनेक देव देवियों का 'जाव' यावत् अधिपतित्व, पुर-

भक्षालिक्षाली; भक्षान यशवाणा, भक्षासुणवाणा, भक्षासुलाव, स्वेष्ठ पृथ्योपभनी स्थितिवाणा हे, आ तभाभ पहाने। स्वर्ध आठमां स्व्रमां हहा। प्रमाणे समल देवा. 'से णं तत्थ' आ सनाहत हैव कं णूसुहर्शनामां निवास हरे हे. त्यां निवास हरतां हरता ते शुं हरे हे ? स्वेश ल्यासाना शभन भाटे स्व्रहार हर्डे हे—'चडण्हं सामाणियसाहस्सीणं' यार हजर सामानिह हैवानुं 'जाव' यावत् पहथी सपरिवार बार हजर अश्रमहिषियानुं, त्रणु परिषदान स्वानं, सात सेनास्थानुं सात सेनाधिपतियानुं, अहिंयां षेष्ठश पहने। संश्रह समल देवा. तथी 'आयरक्खदेवसाहस्सीणं' सेण हजर आत्मरक्षह हेवानुं, तथा 'जंबूदीवस्स णं हीवस्स' कं णूहीप नामना दीपनुं, तथा 'जंबूण् सुदंसणाए' कं णू सुदर्शनानुं, तथा 'अणाहिवाए' सन्ति नामनी 'रायहाणीए' राक्षानीनुं ते शिवाय 'बहूणं देवाण य देवीण य'

पौरपत्यं स्वामित्वं भर्तृत्वं महत्तरकत्वम् आज्ञेश्वरसेनापत्यं कारयन् पालयन् महताऽहतनाटच गीतवादित्रतन्त्रीतलतालत्रुटितयनमृद्क्षपटुप्रवादितरवेण दिव्यान् भोगभोगान् भुद्धानः' इत्येषां पदानां सङ्ग्रहो वोध्यः, एषां विवरणमष्टमस्त्राद् वोध्यम्, 'विहरइ' विहरति—विद्यते । 'से तेणहेणं गोयमा !' सा—जम्बृः सुदर्शना तेन-अनन्तरोवतेन अर्थेन-कारणेन हे गौतम ! 'एवं' एवम्—इत्थम् 'वुच्चइ' उच्यते—कथ्यते—जम्बृसुदर्शना २ जम्बृश्वासौ सुदर्शना—सु—सुष्ठ्—कोभनमित्वयिनं वा दर्शनम् तिन्नवासिदेवस्यानाहतदेवस्येव महर्द्धिकत्वस्य ज्ञानं यस्यां सा, यद्वा—सु—कोभनमित्वयितं वा दर्शनं विचारणमनन्तरोक्तस्वरूपं चिन्तनमनाहतदेवस्य यतः सा सुदर्शना, इति, अथ जम्बूसुदर्शनायाः शाश्वतत्वसंश्वयमपनुदन्धाद—अदुत्तरं चेत्यादि, 'अदुत्तरं च णं' अदुत्तरम् देशीयोऽयं शब्दोऽयथार्थे, तेन अथ अनन्तरस् इत्यर्थः, च खळ

पितत्व स्वामित्व, भर्तृत्व, महत्तरकत्व, आज्ञेश्वर सेनापितत्व करता हुवा, पालता हुवा जोर जोर से वादित नाय्य, गीत, वादित्र तंत्री, तल, ताल, चुित घन मृदंग को चतुर पुरुषों द्वारा प्रवादित ज्ञाब्द के साथ दिव्य भोगोपभोग को भोगता हुआ 'विहरई' निवास करता हैं यहां यावत पद से जिन ज्ञाब्दों का ग्रहण हुआ है इनका विशेष स्पष्टार्थ आठवें सूत्र में कहे हैं अतः जिज्ञासु वहां से समझलेवें। 'से तेणहेणं गोयमा!' है गौतम! पूर्वोक्त कारणों को लेकर 'एवं' इस प्रकार से 'युच्चइ' कहा जाता है जंबू सुद्दीना जंबू सुद्दीना अथवा सुंद्र है द्दीन जिसका ऐसा उसमें निवास करनेवाले अनाहत देव का महद्धि कत्वादि ज्ञान जिसमें हो अथवा सुद्दीभाति शाधि है द्दीन जिसका वह सुद्दीना कहलाती है।

अव जंबुसुद्दीना के शाश्वतत्व संबंधी संशय को दूर करते हुए सूत्रकार कहते हैं-'अदुत्तरंच णं' अथ अनन्तर 'गोयमा ! हे गौतम ! 'जंबुसुदंसणा'

અનેક દેવ દેવિયોનું 'जाव' યાવત અધિપતિત્વ, પુરપતિત્વ, સ્વામિત્વ, ભર્તૃત્વ, મહત્તર-કત્વ, આર્ગ્ગેશ્વર સેનાપતિત્વ, કરતા થકા દેવેરદેવે થાગતા તંત્રી, તલ, તાલ, ત્રુટિત, ઘન મૃદંગને ચતુર પુરૂષો દ્વારા વગાડાતા શખ્દોની સાથે દિવ્ય એવા ભાગાપદ્યોગોને ભાગવતા થકા 'त्रिहरह' વિચર છે. અહીંયાં યાવત્પદથી જે શખ્દો બહાલુ કરાયા છે, તેના વિશેષ સ્પષ્ટ અર્થ આઠમાં સૂત્રમાં કહેલ છે. તેથી જિજ્ઞાસુએ ત્યાંથી સમજ લેવા.

'से तेणहेणं गोयमा' હે ગૌતમ! પૂર્વોકત કારણાને લઇને 'एवं बुच्चइ' એ પ્રમાણે કહેવામાં આવે છે. જંખૂસુદર્શના જંબૂસુદર્શનાં. અત્યંત સુંદર છે દર્શન જેનું એવા તેમાં નિવાસ કરવાવાળા અનાદત દેવનું મહર્દ્ધિકત્વાદિ જ્ઞાન જેમાં હાય, અથવા શાભાતિશાયિ છે દર્શન જેનું તે સુદર્શના કહેવાય છે.

હવે જંખૂ સુદર્શનાના શાધતત્વ સંબંધી સંશયને દ્વર કરતા થકા સ્ત્રકાર કહે છે 'अदुत्तरं च णं' अथ अनंतर 'गोयमा!' હે ગૌતમ! 'जंबूसुदंसणा' જંખૂસુદર્શના 'जाब' यावत् 'गोयमा !' गौतम ! 'जंबुसुदंसणा' जम्बुसुदर्शना-'जाव' यावत् -यावस्पदेन -इति द्याश्वतं नामधेयं प्रज्ञप्तम् यत् 'स्रविं च ३' न कदाचित्नाऽऽधीत् न कदाचित्रास्ति, न कदाचित्र भविष्यति 'धुवा णियया सासया अवखया जाद' धुवा नियदा शाधदी अक्षया यादद-याव-त्पदेन-अव्यया इत्येषां पदानां सङ्ग्रहो बोध्यः, 'अवद्विया' अवस्थिता, इत्येषां व्याख्याऽष्ट-मस्त्राद्बोध्या । अथ प्रसङ्गादनादतदेवस्य राज गर्नी विवक्षराउ-'किर एं' इत्यादि-'किर्द णं भंते !' क्रुत्र खळु भदन्त ! 'अणाढियस्स' अनादतस्य अनादतनाम इस्य 'देवस्स' देवस्य 'अणाढिया' अनादता 'णामं' नाम प्रसिद्धा 'रावदाणी' राजवानी-राजनिवासस्थानविशेषः 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्ता?, इति प्रश्ने भगवानुत्तरसाह-'गोयमा !' हे गौतम ! 'जस्यूदीये' जम्यूद्वीपे-जम्बुद्धीपवर्तिनः 'मंदरस्स' मन्दरस्य-मन्दराभिषस्य, 'पव्ययस्स' पर्वतस्य 'उत्तरेणं' उत्तरेण--उत्तरस्यां दिशि अत्र सप्तम्यन्तादेनप्प्रत्ययः, 'जं चेव' यदेव 'पुटववण्णियं' पूर्ववर्णितं पूर्वे प्राक्त वर्णितम् - उक्तम्, 'जिमिगा पमाणं' यमिका प्रमाणं - यमिकायाः - तम्त्राग्न्या राजधान्याः जंबुसुदर्शना 'जाव' यावत् शाश्वत नाम कहा है । 'सुर्विच ३' कोई समय वह नाम नहीं था ऐसा नहीं है। वर्तमान में नहीं है ऐसा नहीं है। भविष्य में वह नाम नहीं होगा ऐसा भी नहीं है। 'धुवा णियया सासया अक्खया जाव' ध्रव, नियत ज्ञाश्वत, अक्षय यावत्पद से अव्यय पद का ग्रहण समझ लेवे "अवद्विया" अवस्थित है इन शब्दों की व्याख्या आठवें सूत्र से समझ लेवें।

अब प्रसंगोपात अनाहत देव की राजधानी का वर्णन करने की इच्छा से कहते हैं—'किहणं भंते! अणाहियस्स देवस्स' हे अगवन अनाहत देवकी 'अण-हिया णामं रायहाणी' अनाहता नामकी राजधानी 'पण्णत्ता' कही गई है? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं- गोयमा! है गौतम! 'जंबूदीवे' जंबूदीप में 'मंद-रस्स पञ्चयस्स' मंदर नामके पर्वत से 'उत्तरेणं' उत्तर दिशा मे 'जिमगा पमाणं' यिमका नाम की राजधानी के समान प्रमाण वाली अर्थात् आयाम विष्कंभ,

शाश्वत नाम डहे छे. 'मुर्तिच ३' डे। ७ पण समये ये नाम न हतुं तेम नथी वर्तभानमां नथी योम पण नथी. अने अविष्यमां ये नाम नहीं हरे येम पण नथी. 'घुवो, णियया, सासया, अक्खया, जाव' धुव,नियत, शाश्वत, यावत्पद्दथी अव्यय, पदनुं अहण समल क्षेतुं. 'अवद्रियां' अवस्थित छे या शण्दोनी व्याण्या आहमां सूत्रथी समल क्षेत्री.

હેવે પ્રસંગોપાત અનાદત દેવની રાજધાનીનું વર્ણન કરવાની ઈચ્છાથી કહે છે-'किहि णं मंते! अणाढियस्स देवस्स' હે ભગવન્ અનાદત દેવની 'अणाढिया णामं रायहाणी, અના-દત નામની રાજધાની કર્યા 'पण्णत्ता' કહેલ છે ?

આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે—'गोयमा!' હે ગૌતમ! 'जंबुद्दीवे' જંખૂદ્દીપમાં 'मंद्रस्स पन्त्रयस्स' મંદર નામના પર્વતની 'उत्तरेणं' ઉત્તર દિશામાં 'जिमिगापमाणं, યિમકા નામની રાજધાની સરખા પ્રમાણવાળી અર્થાત્ આયામ,વિષ્કંભ, પરિધિના સરખા પ્રમાણ

प्रमाणम्-आयामविष्यम्भपरिधिरूपमानं 'तं चेव' तदेव अत्रापि 'णेयव्वं' नेतव्यं-बुद्धिप्थ प्रापणीयं-घोध्यमिति यावत्, तत् किम्पर्यन्तम् ? इत्याह—'जाव' इत्यादि—यावत्—यावत्पदेन— 'अण्णंमि—जंबुदीवे दीवे बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थ णं अणादियस्स देवस्स अणादियाणामं रायहाणी पण्णत्ताः बारसजोयणसहस्साइं आयामविष्यंभेणं, सत्ततीसं जोय-णमहस्माइं णव य' इत्यारभ्य 'उववाओं अभिसेओ य' इति पर्यन्तः 'निरवसेसो' निरवशेषः सर्वः पाठोऽत्र बोध्यः, स च सञ्चाख्यो यमिका राजधानी वर्णनाधिकाराद् ग्राह्यः ॥स०२३॥ अथोत्तरक्रस्नामार्थं पिप्रविद्युद्शह

मूलम्—से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ—उत्तरकुरार ?, गोयझा ! उत्तर-कुराए उत्तरकुरू णामं देवे परिवसइ महिन्दीए जात पलिओवमिट्टिए, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—उत्तरकुरार, अदुत्तरं च णंति जाव सासए । कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे मालवंते णामं वक्कारपव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरिथमेणं नीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं उत्तरकुराए पुरिथमेणं वच्छस्स चक्कविटि-विजयस्स पच्चित्थमेणं एत्थ णं महाविदेहे वासे मालवंते णामं वक्छार-पव्वए पण्णत्ते उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणवित्थिण्णे जं चेव गंधमाय-

परिधि के प्रमाण बाली 'तं चेव णेयव्वं' यिमका राजधानी का सव वर्णन यहां भी कह लेना वह कहां तक कहे ? इस जिज्ञासा के लिए कहते हैं—'जावं' यावत् यहां यावत्यदसे 'अण्णंमि जंबूदीवे दीवे बारस जोयण सहस्साइं ओगहित्ता एत्थ णं अणाढियस्स देवस्स अणाढिया णामं रायहाणी पण्णत्ता बारस जोयणसहस्साइं आयामविक्वं भेणं सत्तत्तीसं जायणसहस्साइं णवयं यहां से लेकर 'उववाओ अभिसेओ' इस कथन पर्यन्त 'निरवसेसो' समग्र पाठ यहां कह लेवें। वह पाठ व्याख्या सहित यिमका राजधानी के वर्णन से यहां पर ग्रहण कर कह लेवें। सू०२३॥

वाणी 'तं चेव णेयव्वं' यिभिष्ठा राजधानीतुं सध्युं वर्धुन अर्डीया पण् क्रेडी देवुं. ते वर्धुन क्र्यां सुधीनुं अरुण् कर्र्युं ते श्रिक्तासानी निवृत्ति भाटे क्रेडे छे—'जाव' यावत् अर्डीया यावत् पर्द्यां अर्णामि जंबूदीवे दीवे बारस जोयण सहस्साइं ओगाहित्ता एत्थ णं अणाढियस्स देवस्स अणाढिया णामं रायहाणी पण्णत्ता बारस जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं सत्ततीसं जोयणसहस्साइं णवयं आ स्त्रपाठथी क्षर्धने 'उववाओ अभिसेओ' आ क्ष्यन पर्यन्त 'निरवसेसो' संपूर्णु पाठ अर्डीया कर्डी देवे। ते पाठ तेनी व्याण्या साथे यिभिक्षा राज्यधानीना वर्णुनथी अर्डीयां अरुण् करी देवे। ॥ स्त्र, २३॥

णस्स पमाणं विक्खंभो य णवर मिमं णाणत्तं सब्ववेरुलियामए अव-सिटुं तं चेव जाव गोयमा । णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा-सिद्धाययणकूडे० (गाहा) सिद्धे य मालवंते, उत्तरकुरु कच्छसागरे रयए। सीयाए पुण्णभद्दे हरिस्सहे चेव बोद्धब्वे।१।

किह णं भंते! माठवंते वक्खारपव्वए सिद्धाययणकूडे णामं कूडे पण्णत्ते? गोयमा! मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरिथमेणं माठवंतस्स कूड-स्स द्राहिणपञ्चित्थमेणं एत्थ णं सिद्धाययणे कूडे पण्णत्ते पंच जोयण-स्याइं उद्धं उच्चतेणं अवसिटुं तं चेव रायहाणी, एवं माठवंतस्स कूड-स्स उत्तरकुरुकूडस्स, एए चत्तारि कूडा दिसाहिं पमाणेहिं णेयव्वा, कूडसरिसणामया देवा, किह णं भंते! माठवंते सागरकूडे णामं कूडे पण्णत्ते? गोयमा! वच्छकूडस्स उत्तरपुरिथमेणं रययकूडस्स दिखणेणं एत्थ णं सागरकूडे णामं कूडे पण्णत्ते, पंच जोयणसयाइं उद्धं उच्चतेणं अवसिटुं तं चेव सुभोगा देवी रायहाणी उत्तरपुरिथमेणं रययकूडे भोगमाठिणी देवी रायहाणी उत्तरपुरिथमेणं, अवसिटुा कूडा उत्तर-दाहिणेणं णेयव्वा एक्केणं पमाणेणं ॥सू० २४॥

छाया-अथ केनार्थेन भदन्त ! एवप्रच्यते-उत्तरक्ररवः ?, २ गौतम ! उत्तरक्रकपु उत्तर कुर्नामदेवः परिवसित महर्द्धिको यावत् पर्योपमिस्थितिकः, स तेनार्थेन गौतम ! एवप्रच्यते-उत्तर कुरवः २, अदुत्तरं च खल्ळ इति यावत् शाश्चतम् । वव खल्ळ भदन्त ! महाविदेहे वर्षे माल्यवान् नाम वक्षस्कारपर्वतः प्रज्ञप्तः ? गौतम ! मन्दरस्य पर्वतस्य उत्तरपौरस्त्येन नीष्ठ वतो वर्षधरपर्वतस्य दक्षिणेन उत्तरक्रुक्भ्यः पौरस्त्येन वच्छस्य चक्षश्वितिक्रयस्य पश्चिमेः अत्र खल्ळ महाविदेहे वर्षे माल्यवान् नाम वक्षस्कारपर्वतः प्रज्ञप्तः, उत्तरदक्षिणायतः प्राचीन प्रतीचीनविस्तीर्णः यदेव गन्धमादनस्य प्रमाणं विष्कम्भश्च नवरम् इदं नानात्वं सर्ववैद्धर्यमयः अविद्याचेत्वत्वत्वे यावद् गौतम ! नवक्तटानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—सिद्धायतनक्रटं िसद्धं च । माल्यवत् २ उत्तरक्रकः ३ कच्छ ४ सागरे ५ रजतम् ६ सीतायाः ७ पूर्णभद्गं ८ हरिःस्सः ९ चैव बौद्धच्यम् ॥१॥ वव खल्ळ भदन्त ! माल्यवतिवक्षस्कारपर्वते सिद्धायतनक्रटं नाम क्र्यं प्रज्ञप्तम् १, गौतम ! मन्दरस्य पर्वतस्य उत्तरपौरस्त्येन माल्यवतः क्र्टस्य दक्षिणपश्चिमेन अध्यक्ष सिद्धायतनं क्र्टं प्रज्ञप्तम् पश्च योजनशतानि अर्थ्वमुच्चत्वेन अवशिष्टं तदेव यावत् राज्ञ खल्ळ सिद्धायतनं क्र्टं प्रज्ञप्तम् पश्च योजनशतानि अर्थ्वमुच्चत्वेन अवशिष्टं तदेव यावत् राज्ञ

धानी, एवं माल्यवतः क्टस्य उत्तरकुरुक्टस्य कच्छक्टस्य, एतानि चत्वारि क्टानि दिग्भिः प्रमाणैः नेतव्यानि । वव खलु भदन्त ! माल्यवति सागरक्टं नाम क्टं प्रज्ञप्तम् ?, गौतम ! कच्छक्टस्य उत्तरपौरस्त्येन रजतक्टस्य दक्षिणेन अत्र खलु सागरक्टं नाम क्टं प्रज्ञप्तम् पश्च योजनशतानि अर्ध्वग्रुच्चत्वेन अवशिष्टं तदेव सुभोगादेवी राजधानी उत्तरपौरस्त्येन रजत क्टं भोगमालिनी देवी राजधानी उत्तरपौरस्त्येन अवशिष्टानि क्टानि उत्तरदक्षिणेन नेतव्यानि एकेन प्रमाणेन ।।स०२४।।

टीका-'से केणहेणं मंते !' इत्यादि-प्रश्न स्त्रं स्पष्टम् उत्तरस्त्रेन-'गौयमा !' हे गौतम ! 'उत्तरकुराए' उत्तरकुरुषु मूळे प्राकृतत्वादेकचनम् 'उत्तरकुरु णामं' 'उत्तरकुरुनीम 'देवे' देवः 'परिवसइ' परिवसति, स च की हशः ? इत्याह-'महद्धीए जाव पिलञोवमिहिइए' महद्धिको यावत् पच्योपमस्थितिकः-महर्द्धिक इत्यारभ्य पच्योपमस्थितिक इति-पर्यन्तपदानां तद्धि-शेषणतया संग्रहो यावत्पदेन बोध्यः-तथाहि-महर्द्धिकः, महाद्युतिकः, महाबलः, महायशाः, महासीख्यः, महानुभावः, पच्योपमस्थितिकः, इति फलितम् एपां व्याख्याऽष्टमस्त्रत्वादवग-न्तव्या, 'से तेणहेणं गोयमा!' तत् तेनार्थेन गौतम ! ते-अनन्तरोक्ताः उत्तरकुरवः तेन-प्रागु-

॥ से केणहेणं भंते ! इत्यादि॥

टीका-'से केणट्टेणं भंते! एवं वुच्चह' हे भगवन् किस हेतु से ऐसा कहा गया है 'उत्तर क्ररा उत्तरक्ररा' अर्थात् उत्तरक्ररा इस प्रकार से किस कारण से कहा जाता है ? इस प्रइन के उत्तर में प्रभु श्री कहते हैं-'गोयमा! हे गौतम! 'उत्तर क्रराए' उत्तर क्ररू में 'उत्तरक्ररूणामं' उत्तर क्ररू नाम वाला 'देवे परिवसह' देव निवास करता है। वह देव 'महड्डीए जाव पिलओवमिट्टईए' महर्द्धिक यावत् पत्योपम की स्थिति वाला है। यहां पर महर्द्धिक पद से लेकर पत्योपम स्थिति वाला इतने तक के पद का संग्रह यावत्पद से हुआ है, जो इस प्रकार है-महर्द्धिक महाचुतिक, महावल, महायश, महासौख्य, महानुभाव, पत्योपम की स्थिति वाला इन पदों की व्याख्या आठवें सूत्र से समझ लेवें 'से तेणहेणं गोयमा!' इस

'से केणहुणं मंते !' ઇत्याहि

टीकार्थ-'से केणटुंणं मंते! एवं बुच्चइ' है अगवन् शा कारण्यी खेलुं कहेतामां आवे छे? आ छे. 'उत्तरकुरा उत्तरकुरा' अर्थात् उत्तरकुरा के प्रमाणे शा कारण्यी कहेवामां आवे छे? आ प्रश्नना उत्तरमां प्रसु श्री कहे छे-'गोयमा!' हे गौतम! 'उत्तरकुराए' उत्तरकुराए' उत्तरकुराएं उत्तरकुरणां 'उत्तर कुरुणामा' उत्तरकुर के नामधारी 'देवे परिवसइ' हेव निवास करे छे. ते हेव 'मह्ह्हीए जाव पिछओवमिट्टिइए' महिद्धिक यावत् क्षेष्ठ पद्यीपमनी स्थितवाणा छे. अहीं यां महिद्धिक पह्यौ सहिने पद्यीपमनी स्थितवाणा छे. अहीं यां महिद्धिक पह्यौ सहिने पद्यीपमनी स्थितवाणा केटला सुधीना पहाने। संबह्ध यावत् पद्यी थयेल छे. के आ प्रमाणे छे-महिद्धिक, महाद्यीतक, महालव, महावश्च, महासीण्य, महानुसाव, पद्यीपमनी स्थितवाणा, आ अधा पहानी व्याण्या आठमा सुत्रथी सम्ल देवी 'से तेणटुंणं गोयमा!'

क्तेन अर्थेन कारणेन हे गीतम! 'एवं वुच्चइ' एवग्रुच्यते-उत्तर कुरवः२ इति 'अदुत्तरं' अथ 'च णंति' च खलु इति 'जाव सासए' यावच्छाश्वतम् 'अदुत्तरं च णं' इत्यारभ्य 'सासए णाम-धिज्जे पण्णत्ते' शाश्वतम् नामधेयं प्रज्ञप्तम् इति पर्यन्तं वर्णनीयम्, तथाहि-'अदुत्तरं चणं उत्तर-कुराए ति सासयं णामधिज्जं पण्णत्ते' अथ च खलु उत्तरकुरव इति शाश्वतं नामधेयं प्रज्ञप्तम् ।

अथ यस्मात्पश्चिमायामुत्तरकुरव उक्तास्तं माल्यवन्तं नाम द्वितीयं गजदन्ताकारं पर्वतं निरू-पयति—'किह णं' इत्यादि—प्रश्न स्रतं स्पष्टार्थम् उत्तरस्रत्ने 'गोयमा !' हे गौतम ! 'मंदरस्स' मन्दरस्य—मन्दरनामकस्य 'पञ्त्रयस्स' पर्वतस्य 'उत्तरपुरित्थमेणं' उत्तरपौरस्त्येन—उत्तरपूर्वेण ईशानकोणे 'णीलवंतस्स' नीलवतः नीलवन्नाम्नः 'वासहरपञ्वयस्स' वर्षथरपर्वतस्य 'दाहिणेणं' दक्षिणेन—दक्षिणस्यां दिशि 'उत्तरकुराए' उत्तरकुरुभ्यः 'पुरित्थमेणं' पौरस्त्येन—पूर्वस्यां दिशि

कारण हे गौतम ! वह पूर्वोक्त उत्तर कुरु को 'एवं वुच्चइ' उत्तर कुरु इस प्रकार से कहते हैं-'अदुत्तरं च णंति' इससे अलावा वह 'जाव सासए' यावत् शाश्वत है 'अदुत्तरंच णं' यहां से छेकर 'सासए नामधिज्जे पण्णत्ते' शाश्वत नाम कहा है यहां तक समग्र वर्णन कह छेवें। वह वर्णन इस प्रकार से है-'अदुत्तरं च णं उत्तर कुराएति सासयं नाम धिज्जं पण्णत्तं' उत्तर कुरु इस प्रकार का नाम शौश्वत कहा है।

अब जिसकी पश्चिम दिशा में उत्तर क्रुरु कहा है वह माल्यवन्त नाम का गज-दन्ताकार दूसरा पर्वत का वर्णन करते हैं-'किह णं भंते! महाविदेहे वासे' हे भग-वन महाविदेह वर्ष में कहां पर 'मालवंते णामं वक्खारपव्वए पण्णसे' माल्यवंत नाम का वक्षस्कार पर्वत कहा है? इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा! मन्दरस्य पव्यस्त' मन्दर नाम के पर्वत के 'उत्तर पुरिश्यमेणं' ईशान कोण में 'णीलवंतरस' नीलबंत नाम का 'वासहरपव्ययस्त' वर्षघर पर्वत की 'दाहिणेणं' दक्षिण दिशा में 'उत्तर कराए' उत्तर क्रुरु से 'पुरिश्यमेणं' पूर्विदेशा में 'कच्छस्स'

क्षे धारें श्री हैं गीतम! के पूर्वी ध्रत ઉत्तरकुर्ने 'एवं वुच्चइ' उत्तरकुर् के प्रमाणे के छे. 'अदुत्तरं च णंति' तेनाथी भीन्तु ते 'जाब सासए' यावत् शाश्वत छे. 'अदुत्तरं च णं' के पहथी क्षध्ने 'सासए नामधिक्ते पण्णत्ते' शाश्वत नाम के देव छे. के देवा सुधीन समग्र वर्णन करी क्षेत्रः ते वर्णन का प्रमाणे छे. 'अदुत्तरं च णं उत्तरकुराएति सासयं नामधिकां पण्णत्तं उत्तर कुर के प्रकारन नाम शाश्वत कहां छे.

दुवे केनी पश्चिम हिशामां ७त्तर ५३ ठेंदे छे ते माल्यवन्त नामना गर्थहन्ताधार जीना पर्वतनुं वर्धन ६२ छे- कहि णं मंते! महाविदेहे वासे' दे क्शावन् मदाविदेह वर्धमां ठ्यां आगण 'मालवंते णामं वक्खारपञ्चए पण्णते' माल्यवंत नामनी वक्षस्थार पर्वत ठेंदि छे? आ प्रश्नना ७त्तरमां प्रक्षश्री ठेंदे छे-'गोयमा!' दे गौतम! 'मंद्रस्स पञ्चयस्स' मंदर नामना पर्वतनी 'उत्तरपुरिक्षमेणं' ध्शान डैाखुमां 'णीलवंतस्स' नीक्षवान् नामना 'वासहर पञ्चयस्स' वर्ध घर पर्वतनी 'दाहिणेणं' दक्षिण दिशामां 'उत्तरकुराए' ७त्तर ६३ ३थी 'पुरिक्षमेणं'

'कच्छस्स' कच्छस्य-कच्छ-नामकस्य 'चक्कविद्विजयस्स' चक्रवितिवजयस्य 'पच्चित्थमेणं' पश्चिमेन-पश्चिमायां दिशि 'एत्थ' अत्र-अत्रान्तरे 'णं' खर्छ 'महाविदेहें' महाविदेहें—महाविदेह नामके 'वासे' वर्षे—क्षेत्रे 'मलवंते' माल्यवान 'णामं' नाम वक्खारपव्वए' वक्षस्कारपर्वतः सीमाकारिपर्वतः 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तः कथितः, अस्य मानाद्याह—'उत्तरदक्षिणायएं' उत्तरदक्षिणायतः—उत्तरदक्षिणयोर्दिशोरायतः—दीर्घः, 'पाईणपडीणवित्थिण्णे' प्राचीन-प्रतीचीनविस्तीर्णः—विस्तारग्रुक्तः, किं बहुना 'जं चेव' यदेव 'गंधमायणस्स' गन्धमादनस्य—पूर्वोक्तवक्षस्कारपर्वतस्य 'पमाणं' त्रमाणं 'विक्खंभो' विष्कम्भः—विस्तारः 'य' च, उक्तस्तदेव प्रमाणं स एव च विष्कम्भो बोध्यः, 'णवरं' नवरम्—केवलम्—'इमं' इदम् 'णाणत्तं' नानात्वं—भेदः—विशेषोऽयम् 'सव्ववेष्ठियामप' सर्ववेष्ट्रर्थमयः—सर्वात्मना—वेह्र्यरत्नमयः 'अवसिद्धं' अवशिष्टं—कोषं 'तं चेव' तदेव—पूर्वोक्तमेव, तत् किम्पर्यन्तम् ? इत्यपेक्षायामाह—'जाव गोयमा! नव क्ष्डा पण्णत्ता' यावद् गौतम नवक्र्टानि प्रज्ञप्तानि, स्पष्टम् 'तं जहा' तद् कच्छ नाम के 'चक्कविद्विजयस्स' चक्रवित्विजय के 'पच्चित्थमेणं' पश्चिमदिशा में 'एत्थ' यहाँ पर 'णां' निश्चय से 'महाविदेहे' महाविदेह नाम का 'वासे' क्षेत्र 'मालवंते णामं' माल्यवान नाम का 'वक्त्वारपव्वए' सीमाकारी पर्वत 'पण्णत्ते' कहा है।

अब इसका मानादि प्रमाण कहते हैं - 'उत्तरदाहिणायए' वह पर्वत उत्तर दक्षिण में लंबा है, 'पाईणपडीणवित्थिण्णे' पूर्व पश्चिम दिशा की ओर विस्तार बाला है, अधिक क्या कहे, जं चेव गंधमायणस्स' जो गंधमादन वक्षस्कार पर्वत का 'पमाणं' प्रमाण 'विक्लंभो' विष्कंभ या जो कहा है वही प्रमाण और वही विष्कंभ इसका भी समझ लेना। 'णवरं' केवल 'इमं' यही 'णाणत्तं' विशेष कथन कि 'सब्ववेरुलियामए' यह पर्वत सर्वोत्मना वेडूर्थ रत्नमय कहा है 'अवसिष्ट तं चेव' बाकिका सर्वकथक पूर्वोक्त कथन के जैसा ही है। वह कथन कहां तक का ग्रहण करना चाहिए इस संशय की निष्टत्यर्थ कहते हैं 'जाव गोयमा! नवकूडा

पूर्व हिशामां 'कच्छस्स' ४२७ नामना 'वक्कवित्विजयस्स' २४५ती विकथना 'पच्चित्थमेणं' पश्चिम हिशामां 'एत्थ' अर्द्धी'यां 'णं' निश्चयशी 'महाविदेहे' मढाविदेढनामना 'वासे' क्षेत्र 'मालबंते णामं' माल्यवान् नामना 'वक्खारपञ्चए' सीमाठरी पर्वत 'पण्णत्ते' ४९८ छे

હવે તેના માનાદિ પ્રમાણનું કથન કરે છે—'उत्तर दाहिणायए' તે પર્વાત ઉત્તર દક્ષિ-ણુમાં લાંબા છે. 'पाईणप डिणिविधिणो' પૂર્વ પશ્ચિમ દિશા તરફ વિસ્તારવાળા છે. વધારે શું કહેવાય ? 'जं चेव હાંચલાવળસ્સ' જે ગંધમાદન વક્ષસ્કારનું 'पमणે' પ્રસાણ 'વિવસોમો' વિષ્કંભ ત્યાં જે કહેલ છે. એજ પ્રમાણ અને એજ વિષ્કંભ આના પણ સમજ લેવા. 'ળવર' કેવળ 'इसं' એજ 'ળાળત્તં' વિશેષતા છે, કે—'સદ્વવેરુ જિયામણ' આ પર્વત સવી-ત્મના વૈદ્ધ રતનમય છે. 'અધસિદું, તં चેવ' બાકીનું સઘળું કથન પહેલાના કથન પ્રમણે જ છે તે કથન કયાં સુધીનું શક્ષ્ય કહ્યું બેઇએ ! એ જિશાસાની નિવૃત્તિ માટે કહે છે.

क्टानि नामनिर्देशेनाह-'सिद्धेय' सिद्धं च इत्यादि स्पष्टम् नवरम् उत्तरस्त्रेत्रे उक्तस्यापि सिद्धा-यतनक्रटस्य पुनरुपादानं गाथानिबद्धत्वेन सर्वक्रटसङ्ग्रहार्थमिति, सिद्धं-सिद्धायतनक्र्टम् नामैकदेशे नामग्रहणात्, च शब्दः पादपूरणार्थकः १, 'मालवंते' माल्यवत्-माल्यवन्नामकं कूटम् प्रस्तुतवक्षस्कारप्रतिकूटम् २, 'उत्तरकुरु' उत्तरकुरुनामकं कूटम् – उत्तरकुरुदेवकूटं ३, 'कच्छसागरे' कच्छसागरे-कच्छं कच्छविजयाधिषं क्टं सागरं च सागरनामकं कूटम्४-५, 'रयए' रजतं-रजतनामकं क्रुटम् इदश्चान्यत्र रुचकनाम्ना प्रसिद्धम् ६, 'सीयाए' सीतायाः सीतानद्याः सूर्याः क्टम् क्वचित् 'सीओयेति' पाठः तत्पक्षे सीते चेतिच्छाया, सीताक्टिमिति पण्णत्ता' यावत् हे गौतम ! नव क्रूट कहे है इस कथन पर्यन्त पूर्वोक्त कथन ग्रहण करछेवें। 'तं जहा' वे नवकूट इस प्रकार से कहे हैं-'सिद्धाययणकूडे' सिद्धाय-तन कूट, इत्यादि नवकूट कहे हैं। अब वे नव कूटों के पृथक् पृथक् नाम निर्देश दिखलाते हैं-'सिद्धया' सिद्ध इत्यादि स्पष्ट है। विशेषता यह है कि यह सिद्ध कूट उत्तर सूत्र में कहने पर भी सिद्धायतन कूटका पुनरुच्चारण गाधा में सर्व कूटों के नाम संग्रहार्थ कहा है ऐसा समझछेवें। गाथा में 'सिद्ध' कहकेसे सिद्धा-यतन कूट ऐसा समझछेना चाहिए, कारण कि नामका एकदेवा के कहनेसे संपूर्ण नाम ग्रहण होजाता है १, 'मालवंते' माल्यवान नामका क्ट यह प्रस्तुत वक्ष-स्कारका प्रतिकूट है २, 'उत्तरकुरु' उत्तरकुरु नामका कूट यह उत्तरकुरु देव का कूट है ३, 'कच्छसागरे' कच्छ नाम का कूट ४ तथा सागर नाम का कूट ५, 'रयए' रजत नाम का कृट यह अन्य स्थान में रुचक नामसे प्रसिद्ध है ६, 'सीयाए' सीता नदी का सूर्य कूट हैं, कहीं पर 'सीयोएति' ऐसा पाठ है, इस पक्ष में 'सीता

यथा-'सिद्धाययणक्रडे॰' सिद्धायतनक्रुटम्॰ इत्यादीनि नवक्टानि यावत् इति तानि नव-

जाव गोयमा! णव कुडा पण्णत्ता' यावत् हे गौतम! नव इटा अहेदा छे. आ अथन पर्यन्त पूर्विक्त अथन अहण् अरी देवुं 'तं जहां' ते नव इटा आ प्रमाणे छे. 'सिद्धाययणकूडे' सिद्धायतन इट धत्यादि नव इटे। छे.

હવે એ નવ કૂટા જુદા નામ નિર્દેશપૂર્યંક ખતાવે છે –'સિંહેય' સિંદ્ધ ઇત્યાદિ ગાથાર્થ સ્પષ્ટ છે. વિશેષતા એ છે કે—આ સિંદ્ધ કૂટ ઉત્તર સૂત્રમાં કહેવા છતાં પણ સિદ્ધા- થતન કૂટનું પુનરચ્ચારણ ગાથામાં સર્વ ફૂટાના નામના સંગ્રહ ખતાવવા માટે કહેલ છે. તેમ સમજ લેવું. ગાથામાં 'સિંદ્ધ' કહેવાથી સિદ્ધાયતન ફૂટ એમ સમજ લેવું એઇએ. કારણ કે—નામના એક દેશને કહેવાથી સંપૂર્ણ નામનું બ્રહણ થઇ જાય છે? 'માહવંતે' માલ્યવાન્ નામના ફૂટ એ પ્રસ્તુત વક્ષસ્કારના પ્રતિકૂટ છે. ૨ 'उत्तरकुરુ' ઉત્તરકુર નામના ફૂટ આ ઉત્તર કુર નામના દેવના ફૂટ છે ૩ 'અચ્છલાગરે' કચ્છ નામના ફૂટ જ તથા સાગર નામના ફૂટ પ 'રચણ' રજત નામના ફૂટ આ ફૂટ અન્ય સ્થાનમાં રૂચક નામથી પ્રસિદ્ધ છે. ફ 'સીચાણ' સીતા નદીના સૂર્ય ફૂટ છે. કયાંક 'સીચોણત્તિ' એવા પાઠ છે, એ પક્ષમાં 'સીતા

तदर्थः, नामैकदेशे नाम्नोग्रहणात् तत्र सीतानदी देवीक्टमिति परमार्थः, च सम्रच्चये७, 'पुण्णभद्दे' पूर्णभद्रं-पूर्णभद्रनामकस्य व्यन्तराधिपस्य क्टं पूर्णभद्रक्टम् ८, 'हरिस्सहे चेव बोद्धव्वे'
हरिस्सहं चैव बोद्धव्यम्, हरिस्सह नाम्न उत्तरश्रेणिपतिविद्युत्कुमारेन्द्रस्य क्टं हरिस्सहकूटम्
च समुच्चये, एव शब्दोऽवधारणे बोद्धव्यं- क्षेयम्९, अथ नवक्टस्थानं निरूपितुमाह—
'किह् णं भंते !' कव खल्ल भदन्त ! इत्यादि-अश्नस्त्रभुत्तानार्थकम् उत्तरद्वत्रे-'गोयमा !'
गौतम ! 'मंदरस्त' मन्दरस्य-एतमामकस्य 'पव्ययस्त' पर्वतस्य 'उत्तरपुरिध्यमेणं' उत्तरपौरस्त्येन-उत्तरपूर्वदिगन्तराले ईशानकोणे 'मालवंतस्त' माल्यवतः 'कूडस्त' कूटस्य,
'दाहिणपच्चित्थमेणं' दक्षिणपश्चिमेन रिर्क्तिकोणे 'एत्थ' अत्र 'णं' खल्ल 'सिद्धाययणे'
सिद्धयतनं 'कूढें कूटं 'पण्णत्तं' प्रज्ञप्तम् तत् किम्प्रमाणं कीदशं चेत्यपेक्षायामाह-'पंच जोयणचेति' ऐसी छाया होती है अतः सीता क्ट ऐसा उसका अर्थ होताहै कारण कि
नामैकदेश के ग्रहण से समग्र नामका ग्रहण हो जाता है इस पक्ष में सीतानदी

चिति' ऐसी छाया होती है अतः सीता क्र्ट ऐसा उसका अथे होताहै कारण कि नामैकदेश के ग्रहण से समग्र नामका ग्रहण हो जाता है इस पक्ष में सीतानदी देवीक्ट ऐसा अर्थ हो जाता है ७। 'पुण्णभदे' पूर्णभद्र, पूर्णभद्र नामका व्यन्त-राधिपति देवका क्र्ट पूर्णभद्र क्र्ट है ८, 'हरिस्सहे चेवबोद्धव्वे' हरिस्सह नामका उत्तर श्रेणि का अधिपति विद्युत्कुमारेन्द्र का क्र्ट हरिस्सह क्रूट है ऐसा जानना ९,

अब नव कूटों के स्थानों का निरूपण करते हुए सूत्रकार कहते हैं-'कहिणं मंते! मालवंते वक्खारपव्वए' हे भगवन माल्यवन्त वक्षस्कार पर्वत में 'सिद्धा-ययण कूडे णामं कूडे पण्णत्ते' सिद्धायतन कूट नामका कूट कहां पर कहा है? इसी प्रश्न के उत्तर में प्रश्न श्री गौतम को कहते हैं 'गोयमा!' हे गौतम! 'मंदरस्स' मंदर नाम के 'पव्वएस्स' पर्वत के 'उत्तरपुरिधमेणं' ईशान कोण में 'मालवंतस्स' माल्यवान 'कूडस्स' कूटका 'दाहिण पच्चित्थमेणं' नैऋत्य कोण में 'एत्थ' यहां पर 'णं' निश्चित 'सिद्धाययणे' सिद्धायतन 'कूडे' कूट 'पण्णत्तं' कहा गया है

चेति' स्थि छाया थाय छे. तेथी सीता इट स्थे तेना स्थ थाय छे. डारण है-नामैड हेशना अहण्यी संपूर्ण नामनुं अहण् थर्ण जय छे. से पक्षमां सीता नही हेथी इट स्थे वा स्थ थर्ण जय छे ७, 'पुण्णमदे' पूर्ण अद्र व्यन्तर धिपति हेवने। इट पूर्ण अद्र इट छे. ८; 'हरिस्सहे चेव बोह्यव्वे' हिरसह नामना उत्तर श्रेणीना स्थिपति विद्युत्रुमार रेन्द्रने। इट हिरसह इट छे. तेम समक्ष्युं ६.

ढेवे नव कृटेना स्थानेन्तुं निर्भाषु अस्तां सूत्रकार अहे छे. - 'कहिणं मंते! मालवंत-वक्खारपव्वए' हे लगवन् भाव्यवन्त वक्षस्कार पर्यतमां 'सिद्धाययणकूहे णामं कूडे पण्णत्ते' सिद्धायतन नामने। कूट क्यां आवेदी। छे? आ प्रश्नना हत्तरमां प्रक्षश्री गौतमस्वाभीने कहे छे-'गोयमा!' हे गौतम! 'मंद्रस्स' भंदर नामना 'पच्चयस्स' पर्यतना 'उत्तरपुरिधमेणं' धिशान डे। शुभा 'मालवंतस्स' भाव्यवान् 'कूडस्स' कूटना 'दाहिणपच्चित्रिमेणं' नैऋत्यिदिशामां 'प्रथ' अहीं यां 'ण' निश्चयथी 'सिद्धाययणे' सिद्धायतन 'कूडे' कूट 'पण्णत्तं' कहें हे.

सयाइं' पश्चयोजनशतानीत्यादि-पश्चशतयोजनानि 'उद्धं' ऊर्ध्वम् 'उच्चतेष्' उच्चत्वेन 'अवसिष्टं' अवशिष्टं-मूलविष्कम्भादिकम् 'तं चेव' तदेव-गन्धमादनसिद्ध्यतनक्टोक्तमेव-मूलविष्कम्मादिकमत्रापि वक्तन्यम् किम्पर्यन्तम् ? इत्याह-'जाव रायहाण्ं' याश्च् राजधानी वर्णकपर्यन्तम्-अयमाश्चयः-सिद्धायतनक्टवर्णके सामान्यतः कूटवर्णकस्त्रं विशेषतः सिद्धाय-तनवर्णकस्त्रं चेतद्द्यमपि वक्तन्यम् तत्र सिद्धायतनक्टे राजधानीस्त्रं न युज्यतेऽतो राज-धानीस्त्रं विहाय तद्धस्तनस्त्रं वक्तन्यमिति, अत्र यावच्छन्दो न सङ्ग्राहकः किन्त्वविधमात्र-स्वकः, अथ लाधवार्थमतिदेशस्त्रमाह-'एवं मालवंतस्त्तं' एवं मालयवतः इत्यादि-एवम्-इत्थम्-सिद्धायतनक्टवत् मालयवतः-मालयवन्नामकस्य 'कूडस्स' कूटस्य 'उत्तरकुष्क्रूडस्स'

उस कूट का क्या प्रमाण है एवं वह कूट कैसा है इस अपेक्षा निवृत्यर्थ सूत्रकार कहते हैं—'पंच जोयणसयाई' पांच सो योजन का 'उद्धं उच्चलेणं' उपर के भाग में ऊंचा है 'अवसिद्धं' रोष कथन अर्थात् मूल विष्कंभादि का कथन 'तं चेव' गंधमादन एवं सिद्धायतन कूट के जैसाही कहा है। वह कथन कहांतक समान है ? इसके लिए कहते हैं 'जाव रायहाणी' यावत् राजधानी अर्थात् राजधानी का वर्णन पर्यन्त वह कथन ग्रहण करलेवें।

इस कथन का भाव यह है कि सिद्धायतन कूट के वर्णन में साम्मून्य से कूट वर्णन सूत्र एवं विशेषतया सिद्धायतन का वर्णन सूत्र ये दोनों कहना चाहिए उस कथन में सिद्धायतन कूट के वर्णन में राजधानी सबंधी सूत्र नहीं कहना चाहिए अतः राजधानी के कथन को छोडकर उसके नीचे का वर्णन परक सूत्र कहलेवें। यहां पर यावत् शब्द संग्रहार्थ में नहीं है अपितु अवधिमात्र सूचक है।

अब संक्षेप करने के उद्देश से अतिदेश सूत्र कहते हैं-'एवं मालवंतस्स' सिद्धायतन कूट के कथनानुसार माल्यवान् नामक 'कूडस्स' कूटका 'उत्तरकुरू

को इटनुं शुं प्रभाष छे ? अने को इट हैवे। छे ? को अपेक्षानी निवृत्ति निभित्ते सम्बहार हहे छे. 'पंचजोयणसयाइं' पांचसे। येक्षन केटले। 'उद्धं उच्चत्तेणं' ઉपरनी तरह उसे। छे. 'अवसिट्टं' आधीनुं हथन अर्थात् भूल विष्हं स विशेर हथन 'तं चेव' शंधभाइन अने सिद्धायतन इटनी केभक हहेल छे. जाव रायहाणी' यावत् राक्धानीना वर्णुन पर्यन्त ते हथन अहणु हरी लेवुं.

આ કથનના લાવ એ છે કૈ—સિહાયતન કૂટના વર્ણનમાં સામાન્ય રીતે કૂટનું વર્ણન કરનાર સૂત્ર અને વિશેષ રીતે સિહાયતનનું વર્ણન કરનાર સૃત્ર એ અન્ને કહેવા નહેંએ. એ કથમાં સિહાયતન કૂટના વર્ણનમાં રાજધાની સંખંધી સૂત્ર કહેવાનું નથી. તેથી રાજધાનીના કથનના ત્યાગ કરીને તેની નીચેનું વર્ણન પરક સૂત્ર કહી લેવું. અહીં યાં યાવત્ શબ્દ સંત્રહાર્થમાં નથી. પરંતુ અવધિમાત્રનું સૂચક છે.

હुवे संक्षेप करवाना ®देशथी अतिहेश सूत्र केंद्रे छे.-'एवं माळवंतस्स' सिद्धायतन

तरकुरुक्टस्य उत्तरकुरुदेवकूटस्य' 'कच्छस्स' कच्छस्य-कच्छविजयाधिपकूटस्य आयामगेरकम्भादिकं वक्तव्यम्, इत्युपरिष्टाद्ध्याहार्यम्, अथैतानि किं परस्परं स्थानादिना तुल्यानेवाऽतुल्यानीत्यपेक्षायामाह-'एए वत्तारि' एतानि चत्यारि' इत्यादि-एतानि-अनन्तरोक्ताने चत्वारि-सिद्धायतनादीनि 'कूडा' कूटानि परस्परं 'दिसाहिं' दिग्मिः-ईशानादिविदिग्
ग्रिश्मानिः 'पमाणेहिं' प्रमाणैः-प्रायामादिशिमानिः तुल्यानि 'नेयव्वा' नेतव्यानि-बोधपर्थ
।।पणीयानि बोध्यानि, अयमाश्रयः-प्रथमं सिद्धायतनकूटं १, मेरोक्तरस्यां दिशि स्थितम्,
।तस्तिहिशि द्वितीयं माल्यवत्कूटंर ततस्तस्यामेव दिशि तृतीयमुत्तरकुक्कूटं ३, वतोऽगुष्यां दिशि चतुर्धे कच्छकूटम् ४, एतानि चत्यार्थपि कूटानि विदिग्वर्त्तीनि मानतो
हेमत्रत्कूटतुल्यानि इति । एषु कूटेषु किं नामका देवाः १ इत्याह-'कूडसरिसनामया
हेवा' कूटसदश-नामकाः देशः-यथा कूटानां नामानि तथा देवानामिष, परमत्र
कूडस्स' उत्तर कुरु देव कूट का 'कच्छस्स' कच्छिविजयाधिपति के कूटका आयाम
विद्यंभादिक कहन्नेवं ।

ये सब कूट के स्थानादि समान है ? या असमान है ? इस शंका कि निवृ-त्तिके लिए सूत्रकार कहते हैं 'एए चत्तारि कूडा' ये पूर्वोक्त चार कूट आपस में 'दिसाहिं' ईशानादि दिशाओं के 'पमाणेहिं' प्रमाण से अर्थात् आयामादि प्रमाण से समान 'णेयव्दा' जानलेना।

इस कथन का भाव यह है कि-पहला सिद्धायतन कूट मेरु की उत्तर दिशा
में स्थित हैं १, उस के पीछे उसी दिशामें दूसरा माल्यवान कूट कहा है २, तदनन्तर उसी दिशामें तीसरा उत्तरकुरु कूट आता है ३, पश्चात उसी दिशामें
चौथा कच्छ नामका कूट आता है ४, यह चारों कूट विदिशामें स्थित है एवं इन
सवका मान हिमवान कूट के समान है। इन कूटों में कौन नाम धारी देव वसते
है वह कहते हैं-'कूडसरिसनामया देवा' कूट के नाम सरीखे नाम धारी देव

કૂટના કથન પ્રમાણે માલ્યવાન્ નામના 'कूडस्स' કૂટના 'उत्तरकुरुकूडस्स' ઉત્તર કુરૂ દેવ કૂટના 'कच्छस्स' કચ્છ વિજયાધિપતિના કૂટના આયામ વિષ્કં ભાદિ કહી લેવા.

આ બધા કૂટોના સ્થાનાદિ એક સરખા છે ? કે અસમાન છે ? એ શંકાના સમા-ધાન નિમિત્તે સૂત્રકાર કહે છે 'एए चत्तारिकृडा' આ પૂર્વોક્રત ચાર કૂટ પરસ્પરમાં 'दिसा हिं' ઇશાનાદિ દિશાઓના 'पमाणेहिं' પ્રમાણથી અર્થાત્ આયામાદિ પ્રમાણથી એક સરખા 'णेयव्या' સમજલેવા.

આ કથનના લાવ એ છે કૈ-પહેલા સિદ્ધાયતન ફૂટ મેફની ઉત્તર દિશામાં રહેલ છે ૧ તેના પછી એજ દિશામાં બીએ માલ્યવાન ફૂટ કહેલ છે ૨, તે પછી એજ દિશામાં ત્રીએ ઉત્તરકુર ફૂટ આવેલ છે ૩, તે પછી એજ દિશામાં રાશે કચ્છ નામના ફૂટ આવે છે. ૪, એ ચારે ફૂટ વિદિશામાં રહેલ છે. એ અધાનું માપ હિંમવાન ફૂટના સરખું છે આ ફૂટામાં કા નામવાળા દેવ વસે છે તે સ્ત્રકાર કહે છે.-'कूडसिरसनामया देवा' ફૂટના

'यावत्सं मतं विधि प्राप्ति' रिति न्यायात् सिद्धायतनक्टातिरिक्तेषु त्रिषु कूटेषु मान्यवदादिषु कूटसदशनामका देवा इति बोध्यम्, सिद्धायतनक्टेतु सिद्धायतनं न तु देवः, अन्यथा 'छ सयरिकूडेसु तहाचूलाच उवणतरुसु जिणभवणा। भणिया जंबुदीवे सदेवया सेस ठाणेसु।।१।।' एतच्छाया-षद् सप्रतिकूटेषु तथा चूलाः चतुर्वनतरुषु जिनभवनानि। भणितानि जम्बूद्धीपे सदेवकानि शेषस्थानेषु ॥१॥ इति वचने न विरोधः स्यात्। तस्मात्तत्र सिद्धानामायतन मेवास्तीति निश्चितम्। अथ शेषकूटस्य रूपमाह-'किह णं' वच खलु-इस्यादि--प्रश्नस्त्रं व्यक्तम्, उत्तरस्त्रे 'गोयमा !' हे गौतम ! 'कच्छकू इस्स' कच्छक्टस्य

वहां वसते हैं अर्थात् जैसा कूटका नाम है वैसाही उन उन कूटाधिष्ठित देवका नाम है। परंतु यहां पर 'यावत् संभव विधि की प्राप्ति' इस न्याय से सिद्धाय-तन कूट से भिन्न तीन कूटों में अर्थात् माल्यवदादि में कूट के सहदा नामवाछे देव हैं ऐसा समझछेवें। परंतु सिद्धायतन कूटमें सिद्धायतन है देव नहीं हैं अन्यथा

'छस्परि कटेसु तहा चूला चडवण तरुसु जिणभवणा। भणिया जंबुदीवे सदेवया सेस्टाणेसु॥१॥

सडसठ कूटों में तथा चूला, चार वन तरुओं में जिन भवन कहे है रोष स्थानों जंब्द्वीप में देव सहित कहें है, इस वचन में विरोध नहीं आता हैं। अतः सिद्धायतन कूट में सिद्धों का आवासही है यह निश्चित होता है

अब दोष कृटों के स्वरूप का निरूपण करते हैं-

'कहि णं भंते ! हे भगवन् कहांपर 'मालवंते सागरकूडे णामं' मान्यवन्त सागरकूट नामका 'कूडे पण्णत्ते' कूट कहा है ? इस प्रदन के उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—'गोयमा ! ' हे गौतम! 'कच्छ कूडस्स' चोथा कच्छकूड के 'उत्तरपुरिष

નામ સરખા નામવાળા દેવ ત્યાં વસે છે. અર્થાત્ જેવું ફૂટનું નામ છે. એવાજ નામવાળા તે તે ફૂટાધિષ્ઠિત દેવ છે. પરંતુ અહીં યાં યાવત્સ લવ વિધિની પ્રાપ્તિ એ ન્યાયથી જૂદા ત્રણ ફૂટામાં અર્થાત્ માલ્યવદાદિમાં ફૂટના સરખા નામવાળા દેવ છે. તેમ સમજ લેવું પરંતુ સિદ્ધાયતન ફૂટમાં સિદ્ધાયતન દેવ નથી. નહીંતર—

> 'छसयरि कूटेसु तहा चूला चउाणतरुसु जिणभवणा। भणिया जंबुदीवे सदेवया सेसठाणेसु ॥ १ ॥

જં ખૂઢીપમાં સડસઠ કૂટોમાં તથા ચૂલા, ચાર વન તરૂએામાં જીનભવના કહેલા છે. ખાકીના સ્થાના દેવ સહિત કહ્યા છે. આ વચનમાં વિરાધ આવતા નથી. તેથી સિહાય-તન કૂટમાં સિહોના આવાસ જ છે. એ વાત નિશ્ચિત થાય છે.

હવે आडीना इटीना स्वइपनं निइपश करवामां आवे छे.—'कहिणं मंते!' छे अगवन् क्यां आजण 'मालवंते सागरकूडे णामं' माल्यवान् सागर इट नामने। 'कूडे पण्णत्ते' इट क्रेडेस छे? आ प्रश्नना ઉत्तरमां प्रसुधी क्रेडे छे—'गोयमा!' छे जीतम! 'क्टछकूडस्स' वेश्वा

चतुर्थस्य 'उत्तर्पुरिथमेणं' उत्तरपौरस्त्येन-उत्तरपूर्वस्याम् ईश्चानकोणे 'र्ययकूडस्स' रजतं कूटस्य 'दिविखणेण' दिक्षणेन दिक्षणस्यां दिशि 'एत्थ' अत्र-अत्रान्तरे 'णं' खल्ल 'सागरकूढे सागरकूढे 'णामं' नाम 'कूढे' कूटं 'पण्णत्तं' प्रज्ञप्तम्, तस्य मानमाह-'पंच जोयणस्याइं पश्च योजनशतानि-पश्चशतयोजनानि 'उदं' ऊर्ध्वम् 'उच्चतेणं' उच्चत्वेन 'अवसिद्धं' अविश्व-रं-शेषम् मूलविष्कम्मादिकम् 'तं चेव' तदेव-गन्धमादनाभिधश्कस्कारपर्वतवत्, अत्र देवी-माह-'सुश्रोगादेवी' सुभोगादेवी-अधोलोकवासिनी दिक्कुमारी, अस्या राजधानीमाह- 'रायहाणी' राजधानी .'उत्तरपुरत्थिमेणं' उत्तरपौरस्त्येन-उत्तरपूर्वस्याम्-ईशानकोणे,

अथ र जतकूटे देवीमाइ-'रययकूडे' र जतकूटे-१०ठे, 'भोगमालिणी' भोगमालिनी दिक्कुमारी देवी, अस्या राजधानीमाइ-'रायहाणी' राजधानी 'उत्तरपुरियमेणं' उत्तरपीररत्येन-ईशान-कोणे, एवं षट्कूटान्युक्तानि अथ सप्तमादि नवमान्तकूटानि निरूपितुमाह-'अवसिद्धा कूडा' अविश्वष्टानि कूटानि सीताकूटादीनि त्रीणि 'उत्तरदाहिणेणं' उत्तरद्क्षिणेन-उत्तरदक्षिणस्याम्-नेतच्यानि-बोधप्यं-नेयानि बोध्यानि, अयमाश्यः-पूर्वस्मात्पूर्वस्मात् कूटात् उत्तरोत्तरं कूट-

मेणं' ईशाम कोण में 'रययक्डस्स' रजतकूट की 'दिक्खणेणं' दक्षिण दिशा में 'एत्थ' यहां पर 'णं' निश्चय से 'सागरकूडे णामं' सागरकूट नामका 'कूडे पण्णत्ते' कूट कहा है। 'पंच जोयणसयाइं' पांचसो योजन का 'उद्धं उच्चत्तेणं' ऊंचा है। 'अवसिद्धं' शेष मूल विष्कंभादि कथन 'तं चेव' गंधमादन वक्षस्कार पर्वत के जैसा ही कहा हैं। 'सुभोगा देवी' अधोलोक में वसनेवाली दिक्कुमारी सुभोगा यहां की देवी है।

अब सागर कूट की राजधानी का कथन करते हैं-'रायहाणी उत्तरपुरिधमेणं यहां की राजधानी ईशान कोणमें कही है। इस प्रकार छ कूटों का कथन किया हैं।

अब सातवें कूट से लेकर नववें कूट का कथन करते हैं-'अवसिट्टा कूडां' अविदाष्ट सीतादि तीन कूट 'उत्तरदहिणेणं' उत्तर दक्षिणमें समझ छेवें।

इस कथन का भाव यह है कि-पहले पहले कूटों से पीछे पीछेका कूट उक्ता

क्षण कूरनी 'उत्तर पुरिश्चमेणं' धीरान दिशामां 'रयय कूडरस' रे ते कूरनी 'दिक्खणेणं' दिख्णे दिशामां 'एत्थ' अहीं यां 'णं' निश्चय 'सागर कूडे णामं' सागर कूरे नामना 'कूडे पण्यते' कूरे कहें हैं हैं 'पंच जोयणसयाई' पांचसी येश्वन 'उद्घं उच्चत्तेणं' हैं या छे 'अविस्तृं' आहीना मूण विष्कं विगेरे क्ष्यन 'तं वेच' गंधमाहन व्यस्कार पर्वतना क्ष्यन प्रभाशे के कहेंदि छे. 'सुमोगा देवी' अधादीकमां वसनारी दिक्षकमारी सुलेशा अहींनी देवी छे.

હવે સાગર કૂટની રાજધાનીનું કથન કરે છે.-'रायहाणी उत्तरपुरिधमेणं' અહીંની રાજ-ધાની ઈશાન કૈણમાં કહેલ છે. આ રીતે છ કૂટાનું કથન કરવામાં આવેલ છે.

હવે સાતમા કૂટથી લઇને નવમાં કૂટ સુધીના કૂટાનું કથન કરે છે-'अवसिट्ठा कूडा' બાકીના સીતાદિ ત્રણ કૂટ 'उत्तरदाहिणेण' ઉત્તર દક્ષિણમાં સમજ લેવા.

આ કચનના ભાવ એ છે કે-પહેલા પહેલા કૂટાથી પછિ-પછિના કૂટા ઉત્તર દિશામાં

मुत्तरस्यामुत्तरस्यां दिशि, यचौत्तरस्यामुत्तरस्यां स्थितं तस्मादुत्तरस्माद्क्तरस्मादकूटात् पूर्वे पूर्वे कृटं दक्षिणस्यां दक्षिणस्यां दिशि स्थितमिति, तानि त्रीण्यपि कृटानि सीत कृटादीनि 'एक्षेणं' एकेन तुरुयेन 'पमाणेणं' प्रमाणेन स्थितानि सर्वेषामपि हिमवत्कृट प्रमाणत्वात् ॥स्० २४॥ अथ पूर्वेषु नवसु कृटेषु नवमं हरिस्सहकृटं सहस्राङ्कमिति तत् पृथग्निर्देष्टुमाह-

म्लम्-किह णं भंते ! मालवंते हरिस्तहकूडे णामं कूडे पण्णते ? गोयमा ! पुण्णभदस्स उत्तरेणं णीलवंतस्स द्विखणेणं एत्थ णं हरिस्सह-कुडे णामं कूडे पण्णते, एगं जोयणसहस्तं उर्द उच्चत्तेणं जमगपमा-णेंजं जेयडवं, रायहाजी उत्तरेणं असंखेडजे दीवे अण्णंमि जंबुद्दीवे दीवे उत्तरेणं बारस जोयणसहस्साइं ओगाहिता एत्थ णं हरिस्सहस्स देव-स्त हरिस्तहा णामं रायहाणी पण्णता, चउरासीइं जोयणसहस्साइं आयासविव बंभेणं वे जोयणसयसहस्साइं पण्णिट्टं च सहस्साइं छच छत्तीसे जोयणसए परिक्खेवेणं, सेसं जहा चमरचंचाए रायहाणीए तहा पमानं भाणियव्यं, महिद्धीए महज्जुईए, से केणट्रेणं भंते ! एवं वुचइ-मालदंते बब्खारपटवष्र ?, गोयमा ! मालवंते णं वबस्तारपटवए तत्थ तत्थ देखे तहिर इहवे सरियाग्रम्मा णोमालियाग्रम्मा जाव मगदंतिया गुम्मा, ते णं गुम्मा दसद्भवण्णं कुसुमं कुसुमेंति, जे णं तं मालवंतस्स वक्खार व्ययस्य बहुसमरमणिङ्जं भूमिभागं वायविधुयग्गसालामुकपुर प्फ्लंब्रेजोब्र्यास्किछियं करेंति, मालवंते य इत्थ देवे महिस्रीए जाव पिल-ओवमहिइए परिवसइ, से तेणट्रेणं गोयमा! एवं वुच्चइ, अदुत्तरं च णं जाव जिच्चे ॥सू० २५॥

दिशा में कहा है एवं जो उत्तर दिशामें स्थित है उस उत्तर उत्तरकूट से पहला पहलाकूट दक्षिण दिशामें रहे हुवे हैं वे तीने सीतादिकूट 'एक्केणं' एक सरीखे 'पमाणेणं' प्रमाण से स्थित है कारण कि सब कूटों का प्रमाण हिमवत्कूट के सहश कहा गया है। अतः समान प्रमाण वाले तीनों कूट कहे हैं ॥ सू. २४॥

કહેલા છે. અને જે ઉત્તર દિશામાં રહેલા છે એ ઉત્તર ઉત્તર કૂટથી પહેલા પહેલા કૂટા દક્ષિણ દિશામાં રહેલા છે. એ ત્રણે સીતાદિકૂટ 'एक्केणं' એક સરખા 'पमाणेणं' પ્રમાણથી રહેલા છે. કારણ કે ખધા કૂટાનું પ્રમાણ હિમલ ફૂટના સરખુ કહેવામા આવેલ છે. તેથી સરખા પ્રમાણવાળા ત્રણે ફૂટા કહેલા છે. ા સૂ. ૨૪ ॥

छाया-वन खलु भदन्त ! माल्यवित हरिस्सहक्टं नामक्टं प्रझसम् ?, गौतम ! पूर्णभद्रस्य उत्तरेण नीलवती दक्षिणेन अन्न खलु हरिस्सहक्टं नामक्टं प्रझसम्, एकं योजनसहस्म उर्ध्व- मुच्चत्वेन यमकप्रमाणेन नेतव्यम्, राजधानी उत्तरेण असंख्येयान् द्वीपान् अन्यस्मिन् जम्बू- द्वीपे द्वीपे उत्तरेण द्वाद्य योजनसहस्राणि अन्नगाह्य अत्र खल्ल हरिस्सहस्य देवस्य हरिस्सहा नाम राजधानी प्रझप्ता, चतुर्श्वीति योजनसहस्राणि आयामविष्कम्भेण द्वे योजनशतसहस्रे पद्व पृष्ट च सहस्राणि पद च पट्तिशाति योजनशतानि परिक्षेपेण शेषं यथा चमरच्याया राजधान्यास्तथा प्रमाणं भणितच्यम्, महर्द्धिको महाद्यतिकः, अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमु- च्यते—माल्यवान् वक्षस्कारपर्वतः २ ?, गौतम ! माल्यवति खल्ल वक्षस्कारपर्वते तत्र तत्र देशे तत्र तत्र बहवः सरिकागुल्माः नवमालिकागुल्माः यावद् मगदन्तिकागुल्माः, ते खल्ल गुल्माः दशार्द्धवर्णे कुग्धमं कुग्धमयन्ति, ये खल्ल तं माल्यवतो वक्षस्कारपर्वतस्य बहुसमरमणीयं भूमि- भागं वातविधुताग्रशालामुकपुष्पपुञ्जोपचारकलितं कुर्वन्ति, माल्यवांयात्र देवो महर्द्धिको यावत् पल्योपमस्थितिकः परिवर्सात, स तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते, अदुत्तरम् (अथ) च खल्ल यावत् नित्यः।।स० २५॥

टीका-'किह णं मंते !' क्व खल भदन्त' इत्यादि-क्व-कुत्र खल भदन्त ! 'मालवंते' मालवित-मालयवित्रामके वलस्कारपर्वते 'हिरस्सहकुढे' हिरस्सहकूटं 'णामं' नाम 'कूडे' कूटं 'पणाने' प्रज्ञुक्षम् ?, इति प्रश्नस्योत्तरं भगवानाह-'गोयमा !' गौतम ! 'पुण्णभदस्स' पूर्णभद्र-स्य-अनन्तरस्त्रोक्तस्य तन्नामककूटस्य 'उत्तरेणं' उत्तरेण-उत्तरस्यां दिशि 'णीळवंतस्स' नीळवतः पर्वतस्य 'दिक्खणेणं' दक्षिणेन-दक्षिणस्यां दिशि 'एत्थ' अत्र-अत्रान्तरे 'णं' खल्ड 'हिरस्सहकुडे' हिरस्सहकुटं 'णामं' नाम 'कूडे' कूटं 'पण्णत्तं' प्रज्ञक्षम्, तत् कि प्रमाणम् ?

'कहि णं भंते ! भालवंते हरिस्सहकूडे' इत्यादि

टीकार्थ-'कहि णं भंते! मालवंते' हे भगवन कहांपर माल्यवान नामक वक्ष-स्कार पर्वत में 'हरिस्सहकूडे' हरिस्सह कूट 'णामं कूडे' नामका कूट 'पण्णत्ते' कहा है? इस प्रदेशके उत्तर में प्रभु श्री कहते हैं—'गोयमा! हे गौतम! पुण्ण भदस्स' पूर्व सूत्र में कहा हुआ पूर्णभद्र कूट की 'उत्तरेणं' उत्तर दिशामें 'णील-वंतस्स' नीलवान पर्वत की 'दिक्सणेणं' दक्षिण दिशामें 'एरथ' यहां पर 'णं' निश्चयसे 'हरिस्तह कूडे' हरिस्सकूट 'णामं कूडे' नामका कूट 'पण्णत्ता' कहा

टीडार्थ-'किह णं मंते! मालवंते' है लगवन् डयां आगण माल्यवान् नाइन, वद्दरहार पर्वतमां 'हरिस्सह कूडें' हिस्सिंह डूटे 'णानं कूडें' नामना डूट 'पण्णत्ते' डहेल छे आ प्रश्नना उत्तरमा अलुश्री डहे छे-'गोबमा!' है जीतम! 'पुण्णमहस्स' पूर्व सूत्रमां डहेल पूर्णालद्र डूटनी 'उत्तरेण' इत्तर हिशामां 'णील तस्स' नीलवान् पर्वतनी 'दक्किणेण' हिंसाधु हिशामां 'एह्य' अहीं यां 'णं' निश्चयथी 'हरिस्सहकूडे' हिरसह डूट 'णामं कूडे' नामना

^{&#}x27;किह णं भंते! भालवंते हरिस्सहकूडें' धलाहि

इत्याह-'एगं' एकं 'जोयणसहस्सं' योजनसहस्तम् 'उद्धं' ऊर्ध्वम् 'उच्चतेणं' उच्चत्वेन अविषष्टमायामविष्कम्मादिकम् 'जमगपमाणेणं' यमकत्रमाणेन-यमकनामकपर्वतप्रमाणेन 'णेयव्वं'
नेतव्यं-बोधपयं प्रापणीयं-बोध्यम् तथाहि-'अद्धाइज्जाइं जोयणसयाइं उव्वेहेणं मूछे एगं
जोयणसहस्सं आयामविष्कम्भेणं' एतच्छाया-अद्धेतृतीयानि योजनशतानि उद्धेत्रेन मूछे एकं
योजनसहस्तम् आयामविष्कम्भेणं, व्याख्या चास्य सुगमा, इत्यादि यमकपर्वतप्रमाणेनास्योद्वेधादि बोध्यम्, अस्य हरिस्सहक्र्टस्याधिपतेरन्य राजधानीतो दिवप्रमाणाद्वैर्विशेषो राजधान्यामिति तां राजधानीयक्तुकाम आह-'रायहाणी' राजधानी अग्रे वक्ष्यमाणा हरिस्सहाभिधाना 'उत्तरेणं' उत्तरेण-उत्तरस्यां दिशि, एतदेव विश्वद्यति—'असंखेज्जे' असंख्येयान्संख्यातुमश्च्यान् 'दीवे' द्वीयान् अस्याग्रेतनेन ''अवगाह्य" इत्यनेन सम्बन्धः, इद्युपलक्षम्तेन ''मंदरस्स पञ्चयस्स उत्तरेणं तिरियमसंखेज्जाइं दीवससुद्दाइं वीईवइत्ता" इदं ग्रःह्यम्,

है। 'एगं जोयणसहस्सं' वह एक हजार योजन 'उद्धं' ऊपर की ओर 'उच्चत्तेणं' ऊंचा है। दोष आयाम विष्कंभादिक 'जमगपमाणेणं' जमक नाम के पर्वत के आयाम विष्कंभ के समान 'णेयव्वं' जान छेवें। जो इस प्रकार से है-'अद्धाइ- उजाई जोयणस्याई उच्चेहेणं सूछे एगं जोयणसहस्सं आयामविक्खंभेणं' दाईसो योजन का उसका उद्धेध है, मूल में एक हजार योजन इसका आयाम विष्कंभ कहा है। इत्यादि समग्र कथन यमक पर्वत के कथनानुसार समझ छेवें।

इस हरिस्सहक्रट केअधिपति की राजधानी के कथन में अन्य राजधानी से दिक्प्रमाणादि से विशेषता है अतः उस राजधानी का कथन करते हैं-'राय-हाणी'इसकी राजधानी हरिस्सहा नामकी 'उत्तरेणं' इत्तर दिशा में 'असंखेज्जे' असंख्यात 'दीवो' द्वीपों को 'अवगाहन करके' ऐसा आगे सम्बन्ध आता है यह द्वीप पद उपलक्षण है अतः 'मंदरस्स पव्ययस्स उत्तरेणं तिरियमसंखेज्जाइं दीव-समुदाइं वीईवहत्ता' यह पाठ ग्रहण होता है ? मन्दर पर्वत की उत्तर दिशा में

धूर 'पण्णत्त' हें हैं हैं. 'एगं जोयणसहरसं' के धूर के ह कर येकित 'उद्ध' उपरनी आख़ 'उच्चतेण' उन्थे हैं. आधीतुं आधाम विष्हं स विगेरे 'जमगपमाणेण' यमह नामना पर्वन्तना आधाम विष्हं सनी सरणुं 'णेयहव' समक्ष क्षेतुं. के आ प्रमाणे हें—'अद्धः इडजाइं जोयणसयाइं उन्वेहेणं मूळे एगं जोयणसहसं आयामविक्खंमेण' अिती। येकिन केटके। तेना उद्देश हैं. विगेरे तमाम हथन यमह पर्वतना हथनानुसार समक्ष क्षेतुं. राकधानीना हथनमां आ हिरसह धूरना अधिपतिनी अन्य राकधानीथी हिंदू प्रमाणाहिथी विशेषपणुं हैं. तेथी के राकधानीनुं हथन हरवामां आवे हें.—'रायहाणी' केनी राकधानी हिरस्सहा नामनी 'उत्तरेण' उत्तर हिशामां 'असंखेडजे' असंभ्यात 'दीवे' दीपाने अवगाहित हरीने क्षेत्र प्रमाणे आवे हैं. आ हीप पह उपकक्षण हैं. तेथी 'मंदरस्स पत्त्रय-

एत्ज्याया-'मन्दरस्य पर्वतस्य उत्तरेण तिर्यगसंख्येयान् द्वीपसमुद्रान् व्यतित्रस्य' इति एतस्य व्याख्या स्पष्टा नवरम् व्यतिव्रज्य-अतिक्रम्य 'अर्णामि' अन्यस्मिन् 'जंबुद्दीवे' जम्बूद्वीपे 'दीवे' द्वीपे 'उत्तरेणं' उत्तरेण-उत्तरस्यां दिशि 'बारस' द्वादश 'जोयणसहस्साइं' योजन-सहस्राणि द्वादशसहस्रयोजनानीति सङ्खिलार्थः, 'ओगाहित्ता' अवगाह्य-प्रविश्य 'एत्थ' अत्र-अत्रान्तरे 'णं' खल्ड 'इरिस्सहस्स' इरिस्सहस्य-एतम्बामकस्य 'देवस्स' देवस्य-हरिस्सह-कूटाधिपस्य 'हरिस्सद्दा' हरिस्सद्दा 'णामं' नाम 'रायदाणी' राजवानी 'पण्णत्ता' प्रज्ञाहा, तस्या मानमाह-'चउरासीइ' चतुराझीति 'जोयणसहस्साइ' योजनसहस्राणि 'शयामविक्खं-भेगं' आयामविष्कम्भेण-दैर्ध्वस्ताराभ्याम् 'बे' द्वे 'जीयणसयसहस्याइ' योजनशतसहस्रे-योजनलक्षे 'पण्णिहें' पञ्चपष्टि 'च' च 'सहस्साइं' सहस्राणि-योजनसहस्राणि 'छच्च' षट् च 'छत्तीसे' षट्त्रिंशानि-षट्त्रिंशद्धिकानि 'जोयणसए' योजनशतानि 'परिक्खेवेणं' परि-क्षेपेण-परिधिन। प्रज्ञप्तेति पूर्वेण सम्बन्धः, 'सेसं' शेषम्-अविश्वष्टम् उच्चलोद्धेधादिकम् 'जहा' यथा-येन प्रकारेण 'चमरचंचाए' चमरचआयाः-'रायहाणीए' राजधान्याः चमरेन्द्र-तिरहे असंख्यात द्वीप समुद्रों को उहुंघन करके 'अण्णंमि' दूसरे जंबुद्दीवे' जंबु बीप नाम के 'दीवे' बीप में 'उत्तरेणं' उत्तर दिशा में 'वारस जोयणसहस्साइं' बारह हजार योजन 'ओगाहित्ता' प्रवेदा करके 'एत्थ' यहां पर 'णं' निश्चय से 'हरिस्सहस्स देवस्स' हरिस्सह नाम के देवका 'हरिस्सहा णामं रायहाणी पण्ण-त्ता' हरिस्सहा नामकी राजधानी कही है।

अब इसका प्रमाण कहते हैं—'चउरासीइं जोयणसहस्साई' चोरासी हजार योजन 'आयाम विक्खंभेगं' उसकी लंबाई चोडाई कही है। 'बे जोयणसयसह-स्साई' दो लाख योजन'पण्णिंडं च सहस्साई' पैसठ हजार 'छच्च छक्तीसे'छक्तीस अधिक 'जोयणसए' छसो योजन 'परिक्खेवेणं' ईसका परिक्षेप कहा है। 'सेसं' बाकिका समग्र कथन अथीत् उच्चत्व उद्देशादिक 'जहा' जैसा 'चमरचंचाए' चम-

स्स उत्तरेणं तिरियमसंखेज्जाइं दीवसमुदाइं वीईवइत्ता' आ पार्ठ अद्ध्यु थाय छे. भन्दर पर्वतनी उत्तर दिशाभां तिर्शाभसं एयात द्वीप समुद्रोने भाणंगीने 'अण्णंमि' शील 'जंबू- हीवे' क' अदीप नाभना 'दीवे' द्वीपमां उत्तरेण' उत्तर दिशाभां 'बारस जोयणमहस्साइं' आर देलर यीकन 'ओगाहित्ता' अवेश करीने 'एत्थ' अदीयां 'णं' निश्चयथी 'हरिस्सहस्स देवस्स' देवस्स देवस्स नाभना देवनी 'हरिस्सहा णामं रायहाणी पण्यत्ता' द्विरस्स नाभनी राक्धानी कदेश छे.

हेवे तेनुं प्रभाष् अताववामां आवे छे.—'चरासीइं जोयणसरस्साइं' यार्थाशी हलर येश्वन 'आयामविक्लं मेणं' तेनी लंकाध पहालाई इंहेली छे. 'वे जोयणसयसहरसाइं' में लाभ येश्वन 'पण्णिट्टं च सहस्साइं' पांसडे हलर 'छच्च छत्तीसे' छत्रीस वधारे 'जोयण सए' से। येश्वन 'परिक्लेवेणं' तेने। परिक्षेप हहेल छे. 'सेसं' आडीनुं समय इथन अर्थात् इय्यत्व इदेधादि 'जहां' क्रेम 'चमरचंचाए' यमर यंत्रा नामनी 'रायहाणीए' राक्धानीनुं रानधान्यास्तन्नामन्याः 'तहा' तथा – तेन प्रकारेण 'पमाणं' प्रमाणं – प्रासादादीनां मानम् 'भाणियव्वं' भणितव्यं – वक्तव्यम्, अस्यां राजधान्यां हरिस्सहाभियो देवः 'माद्धीए महन्जुइए'
महद्धिकः महाद्युतिकः 'जाव' यावत् 'पिलिशोवमिट्टिइए' पित्वसिति यावत्यदसङ्ग्राह्याणि पदानि
अन्द्रमस्त्रतः सव्याख्यानि सङ्ग्रहीतव्यानि, यद्यपीठ जाव शब्दो नास्ति तथापि स्वकत्या
महद्धिकादिपदेनैव तद्बोद्धमुचितत्वेन तेषां सङ्ग्रहो बोध्यः । एवं हरिस्सहक्रुटस्य नामविषयप्रश्लोत्तरे स्वयति, तेन तस्यान्वर्थनामप्रश्लस्त्रं बोध्यम् तथाहि—''से केणहेणं अंते ! एवं
वुच्छ – हरिस्सहक्र्डे २ श्वोयमा ! हरिस्सहक्र्डे बहवे उप्पलाइं पउमाइं हरिस्सहक्र्डसमवग्णाइं जाव हरिस्सहे णामं देवे य इत्थ महिद्धीए जाव परिवसइ से तेणहेणं जाव अदुत्तरं
च गं गोयमा ! जाव सासए णामधेज्जे'' इति, एतच्छाया—अथ केनार्थेन अदन्त ! एवमुचयते—हरिस्सहक्र्टं २ श्वीतम ! हरिस्सहक्र्टे वहृनि उत्पलानि पद्मानि हरिस्सहक्र्टसम-

रचचा नामकी 'रायहाणीए' राजधानी का कहा है 'तहा' वैसा ही 'पमाणं' प्रासा-दिक का मान 'भाणियव्वं' कह छेना चाहिए। इस राजधानी का अधिपति हरि-स्सह नाम का देव हैं, वह 'महद्धीए महज्जुहए' महाऋद्धिसंपन्न एवं महाद्युतिवाला है 'जाव पिलओवमिडिहए' यावत एक पत्योपम की स्थिति वाला निवास करता है। यहां पर यावत्पदसे संग्राहक पद आठवें सुत्र से अर्थ सिहत प्रहण कर छेवें। यद्यपि यहां पर 'जाव' शब्द नहीं है तो भी महद्धिकादिक पद से उसको जान छेना उचित होने से उन पदों का संग्रह समझ छेवें। इस प्रकार हरिस्सह कूट के नाम विषयक प्रश्नोत्तर में सचित हैं। अतः उसका अन्वर्थ नाम विषय पाठ समझ छेवें। जो इस प्रकार हैं—'से केणहेणं भंते! एवं युचचह हरिस्सहकू हे हरिस्सह कू छे शोयमा! हरिस्सह कू छे बहवे उप्पलाइं पडमाइं हरिस्सहकू छे समचण्याइं जाव हरिस्सहे णामं देवे य इत्थ महिद्धीए जाव परिवसह से तेणहेणं जाव अदुत्तरं च णं गोयमा! जाव सासए नामधेज्जे' इति हे भगवन् किस कारण से ऐसा कहा जाता है कि यह हरिस्सह नाम का हरिस्सह कूट है ?

हेंदेल छे 'तहा' खेळ प्रभाषे 'पमाणं' प्रासाहिक्तं भाप 'भाणियव्वं' करी होतुं लिए की. क्या राळधानीमां हिरुस्यहं नामना हेव छे. ते हेव 'महद्वीए महज्जुइए' महाज्ञहि संपन्न तेमळ महाद्वीतवाणा छे. 'जाव पिळजोवमिट्टइए' यावत् ते हेव खेठ पत्थीपमनी स्थितिवाणा छे ते निवास करे छे अहीं यां यावतपहथी संधह थता पहें। आहमां स्त्रथी अर्थ सहित अहणु करी होवां ले हे अहीं यां 'जाव' शण्ह आपेह नथी ते। पा महितिहाहि पहथी तेने समळ होवां थां थां वावां शिवा संधह समळ होवां. को रीते हिरस्सह कूट नानाम विषयक प्रक्षोत्तरमां स्थावेद छे. तथी तेना अन्वर्थ नाम संधि पाह समळ होवां ले अपहों प्रमाणे हिरस्सहकूडे वहवे उपलाइं पडमाइं हिरस्सहकूड समवण्णाइं जाव हिरस्सहकूडे शायमा! हिरस्सहकूडे वहवे उपलाइं पडमाइं हिरस्सहकूड समवण्णाइं जाव हिरस्सह णामं देव य इत्य महिद्वीए जाव परिवसइ से तेणहेणं जाव अहुत्तरं च णं गोयमा! जाव सासए नाम-

वर्णानि यावद् हरिस्सहो नाम देवश्वात्र महद्धिको यावत् परिवसति, तत् तेनार्थेन यावद् अदुत्तरं च खल गौतम ! यावत् शाश्वतं नामश्रेयम्'' इति । एतद्वचाख्या सुगमा,

अथास्य वश्नस्कारपर्वतस्य नामार्थे प्रच्छति—'से केणहेणं' इत्यादि प्रश्नस्त्रं सुगमम् उत्तरस्वकस्त्रं—'गोयमा !' हे गौतम ! 'मालवंते' मालयवति—एतन्नामके 'णं' खल्छ 'वक्खारपव्यक्' वस्त्रकारपर्वते 'तत्थ तत्थ' तत्र तत्र—तिस्तिस्तिन् 'देसे' देशे—स्थाने 'तिहिंश' तत्र
र—देशैक—देशे—देशावान्तरप्रदेशे 'वहवे' बहवः—अनेके 'सिर्याग्रम्मा' सिरिकागुल्माः—सिरिका
पुष्पल्ला विशेषः, तस्या गुल्माः—स्त्रम्वाः, 'णोमालिया—गुम्मा' नवलिका गुल्माः—नव्यालिका
—पुष्पल्लातिशेषस्तद्गुल्माः, 'जाव' यावत् —'मगदंतियाग्रम्मा' मगदन्तिकागुल्माः—मगदन्ति
कागुष्पल्ला विशेषस्तद्गुल्माः सन्तिति शेषः, 'ते' ते—पूर्वीकाः 'णं' खल्ल 'गुम्मा' गुल्माः
उत्तर में प्रसुश्री कहते हैं हे गौतम ! हरिस्सह कूट में बहुत से उत्तरू एवं बहुत
से पद्म हरिस्सह कूट के समान वर्ण बाले हैं। यावत् हरिस्सह नामका देव जो
महद्धिकादिक विशेषण विशिष्ट है वह घहां निवास करता है। इस कारण से
इस कूट का नाम हरिस्सह ऐसा हुआ है। इससे अलावा हे गौतम! यह नाम

अब इस वक्षस्कार पर्वत के नामार्थ विषयक प्रदन करते हैं-

'से केणहेणं अते ! एवं बुच्चइ' हे अगवन किस कारण से ऐसा कहा जाता है कि 'मालवंते वक्खारपव्चए' यह माल्यवन्त नामका वक्षरकार पर्वत है ? इस प्रदन के उत्तर में श्री महावीर प्रभु कहते हैं –'गोयमा !' हे गौतम ! माल-वंते' माल्यवान नाम के 'णं' निश्चय से 'वक्खारपव्चए' वक्षरकार पर्वत में 'तत्थ तत्थ' उस २ 'देसे' प्रदेश में अर्थात् स्थान में 'तहिं तहिं' स्थान के एक भाग मे 'बहवो' अनेक 'सरियागुम्मा' सरिका नामक पुष्पवल्ली विद्योष के समूह 'णोमा-

घेडजे' ઈ તિ હે લગવન કયા કારણથી એમ કહેવામાં આવે છે, કે આ હિરિસ્સહ નામના હિરિસ્સહ કૂટ છે? ઉત્તરમાં પ્રભુશ્રી કહે છે કે—હે ગૌતમ! હિરિસ્સહ કૂટમાં ઘણા ઉત્પલા અને ઘણા પદ્મો હિરિસ્સહ કૂટના સરખા વર્ણવાળા છે, યાવત હિરિસ્સહ નામના દેવ કે જે મહિદિક વિગેરે વિશેષણ વાળા છે. તે ત્યાં નિવાસ કરે છે. એ કારણથી આ કૂટનું નામ હિરિસ્સહ એવું પડેલ છે. તે શિવાય હે ગૌતમ! એ નામ શાશ્વત નામ છે.

ढ्वे के वक्षरकार पर्वतना नामार्थ संभंधी प्रश्न करे छे-'से केणहुणं मंते! एवं वुच्चइ' हे कावन शा कारख्यी केवुं कहेवामां आवे छे हे-'मालवंते वक्खारपटवए' आ माल्यवंत नामना वक्षरकार पर्वत छे? आ प्रश्नना उत्तरमां श्री महावीर प्रक्ष केहे छे-'गोयमा!' हे जीतम! 'मालवंते' माल्यवान् नामना 'णं' निश्चयथी 'वक्खारपटवए' वक्षरकार पर्वतमां 'तहां तह्य' ते ते 'देसे' देशमां आर्थात् स्थानमां 'तहिं तहिं' स्थानना केक काजमां 'बहवे' अनेक 'सरिया गुम्मा' सरिका नामना पुष्प वल्की विशेषना समूद्ध

शाश्वत है।

'दसद्धवणां' दशार्द्धवर्ण-णञ्चवण-कृष्णनीललोहितहारिद्रशुक्लदर्णमिति यावत् 'कुसुमं' कुसुमं पुष्पं 'कुसुमेंति' कुसुमयन्ति कुसुमं जनयन्ति, अत्र कुसुमशब्दाज्जिन धात्वर्थे णिच् 'जे' ये 'णं' खल्ल गुल्माः तं-प्रसिद्धं भूमिभागमित्यग्रिमेण सम्बन्धः, 'मालवंतस्स' माल्यवतः-माल्यव्यामकस्य 'वक्लारपव्वयस्स' वक्षस्कारपर्वतस्य 'बहुसमरमणिङ्जं' बहुसमरमणीयम्-अत्य-त्रसमत्तल्यत् एव रमणीयं मनोहरं 'भूमिभागं' भूमिभागं 'वायविधुयग्मसाला सुक्कपुष्कः पुंजोवयारकल्लियं' वातविधुताग्रशालासुक्तपुष्वपुद्धोपचारकल्लितं-वातेन-वायुना विधुताग्रा-विधुतं-किम्पतमग्रम्-उपरिमागो यस्पाः सा तथाभूता या शाला-शाला तस्या सुक्तो यः पुष्पपुद्धः-पुष्पसमूहः स एवोपचारः-शोमासामग्री तेन कल्लितं-युक्तं 'करेति' कर्वन्ति ततः 'मालवंते' माल्यवान् माल्यं-पुष्पमाल्यं पुष्पं वा नित्यमस्त्यस्येति माल्यवान्-माल्यवन्नामकः 'य' च 'इत्थ' अत्र-श्रस्मन् माल्यवति वक्षस्कारपर्वते देवः-अधिष्ठाता परिवसतीत्यन्त्रतेन सम्बन्धः, स च कीदशः ? इत्याद-'महद्धिष् जाव पलिओवमहिङ्ग्' महद्धिको यावत् पल्योपमस्थितिकः-महद्धिक इत्यारभ्य पल्योपमस्थितिक इति पर्यन्तानां तद्विशेषण्वाचकपदानामत्र यावत्पदेन सङ्ग्रहो बोध्यः, स च साथौंऽष्टमस्त्राद्बोध्यः। तेन तद्यो

लिया गुम्मा' नवमालिका नामकी पुष्पलता विशेष के 'समूह जाव' यावत् 'मग-दं तिया गुम्मा' मगदंतिका नामक पुष्पलता के समूह हैं। 'तेणं गुम्मा' वे समूह 'दसद्भवणं' कृष्ण नील लोहित हारिद्र एवं शुक्त ऐसा पांच वर्ण वाले 'कुसुमं कुसुमें ति' पुष्पों को उत्पन्न करते हैं। 'जे णं' जो वल्ली समूह 'मालवंतस्स' माल्यवान नामके 'वक्खारपव्वयस्स' वक्षस्कार पर्वत के 'बहुसमरमणिज्ज' अत्यन्त समतल होने से रमणीय 'भूमिभागं' भूमि भाग के वायविधुधग्गसाला मुक्कपुष्फपुंजो वयारकलियं' वायु के बारा कंपित अग्रभाग वाली शाखाओं से गिरे हुए पुष्प समूह रूपी शोभा सामग्री से युक्त 'करे ति' करते हैं। तथा 'मालवंते' माल्यवान नाम का देव 'य इत्थ' यहां पर निवास करते हैं यह सम्बन्ध आगे कहा जायग बह देव कैसा है ? सो कहते हैं –'महद्वीए जाव पलिओवमट्टिइए' महद्विक से

'णोमालिया गुम्मा' नव भासिक्षा नामनी पुष्पसता विशेषना समूह 'जाव' यावत 'माग दंतिया गुम्मा' भाग इंतिक्षा नामनी पुष्पसताना समूह छे. 'तेणं गुम्मा' ओ समूह 'दस द्वणणं' कृष्ण, नीस, देगिहत, हिर्द्र, अने शुंक्ष ओम पांच रंगवाणा 'कुसुमं कुसुमेंति' पुष्पोने ઉत्पन्न करे छे. 'जे णं' के सता समूह 'मालवंतस्स' भाव्यवान् नामना 'वक्सार-पव्वयस्स' वक्षरकार पर्वता 'बहुसमरमणिडजं' अत्यंत समत्त हिलाथी रमणीय अवा 'मूमिमागं' भूमिकागं' प्रवन्थी कंपा-यमान 'वायविध्यगमाला मुक्तपुष्कपुं नोवयारकलियं' पवनथी कंपा-यमान अश्वकाणवाणी शामाओथी भरेसा पुष्प समूह ३पी शिकाथी शुक्त 'करेंति' करे छे. तथा 'मालवंते' माल्यवान् नामना हेव 'इत्थ' त्या निवास करे छे. ओ सम्भन्ध आगण कहियामां आवशे ते देव हैवा छे? ते कहे छे 'महत्वांच जाव पलिओवमहिइए' महिक यावत् अक प्रवेग्यमनी स्थितिवाणा छे. अहींयां महिद्धिक प्रदर्श सर्थ सि ने प्रवेग्यमनी

गादसाविष मान्यवानित्युच्यते, तदेवाह-'से तेणहेणं गोयमा! एवं वुच्चइ' स तेनार्थेन गौतम एवमुच्यते, सः-अनन्तरोक्तो मान्यवान् वक्षस्कारपर्वतः तेन-पूर्वोचतेन अर्थेन-कारणेन एवम्-इत्थम् उच्यते-मान्यवानिति । 'अदुत्तरं च णं' अदुत्तरम्-अथ च खळु 'जाव णिच्चे' यावद् नित्यम्-नित्य इति पर्यन्तः पाठो बौध्यः ॥स्व०२५॥

इह द्विविधा विदेहाः पूर्वापरभेदाभ्याम्, तत्र पूर्वविदेहाः मेरोः पूर्वस्यां सीतास्त्यमहान्द्या दक्षिणोत्तरभागाभ्यां द्विधा विभक्ताः, अपरिवदेहाश्च मेरोः पश्चिमायां सीतामहानद्या छतद्विभागाः एवं विदेहानां भागचतुष्ट्यं प्रदर्शितम्, अधुनाऽमीषु विजयवक्षस्कारादिव्यवस्था छाधवाय पिण्डार्धगत्या सत्रकारेण दर्शयिष्यमाणया रीत्या दुरावगमाः प्रतिभान्ति विजयादय इति विस्तरेण प्ररूप्यन्ते, तत्रैकस्मिन् भागे माल्यवत्प्रभृति गजदन्ताकारवक्षस्कारपर्वतस्थान्ते प्रकारपर्वतस्थान

छेकर पत्योपम की स्थिति पर्यन्त के उसके विशेषण वाचक पर्हों का यावत्पद् से संग्रह जान छेवें। वह समग्र पाठ अर्थ सहित आठवें सूत्र से समझ छेवें। इस देव के योग से यह पर्वत भी मात्यवान नाम से कहा जाता है वही सूत्र-कार कहते हैं 'से तेणहेणं गोयमा एवं बुच्चइ' इस कारण से हे गौतम! यह माल्यवान पर्वत है ऐसा कहा जाता है। 'अदुत्तरं च णं' इससे अलावा भी 'जाव णिच्चे' यावत् यह माल्यवान् ऐसा नाम नित्य है। यहां यावत् पद से नित्य पर्यन्त का संपूर्ण पाठ ग्रहण कर छेवें।।२५॥

यहां पूर्वे एवं अपर के भेद से विदेह दो कहा है इसमें पूर्वविदेह मेरकी पूर्व दिशा में सीता महा नदी के दक्षिण तथा उत्तर भाग से दो भाग में अलग किया है। अपरविदेह मेरु की पश्चिम दिशा में सीता महा नदी के द्वारा विभक्त है। इस प्रकार विदेह के चार भाग दिखाया है। अब इसमें विजयबन्ध सस्कारादि की व्यवस्था को संक्षिप्त करने के लिए पी डाई गति से सुन्नकार द्वारा

स्थिति पर्यन्तना तेना विशेषण् वायक पहाने। संयक्ष यावत्पद्धी समक्ष दिवे। यो संपूर्ण् पाठ अर्थ साथ आहमां स्त्रथी समक्ष देवे। यो हेवना ये। गर्थी आ पर्वत पण् मान्यवान् नामथी क्षडेवाय छे. 'से तेणहेणं गोयमा! एवं वुच्चइ' यो क्षारण्थी हे गौतम! आ माल्यवान् पर्वत छे, योभ क्षडेवामां आवे छे. 'अदुत्तरं च ण' ते शिवाय पण् 'जाव णिच्चे' यावत् या माल्यवान् योवुं नाम नित्य छे. अहींयां यावत्पद्धी नित्य पर्यन्तने। संपूर्ण् पाठ अहण् करी देवे। ॥ सू. २५ ॥

અહીં યાં પૂર્વ અને અપરના લેદથી વિદેહ બે કહ્યા છે. તેમાં પૂર્વ વિદેહ મેરૂની પૂર્વ દિશામાં સીતા મહા નદીના દક્ષિણ તથા ઉત્તર ભાગથી બે ભાગમાં અલગ કર્યા છે. અપર વિદેહ મેરૂની પશ્ચિમ દિશામાં સીતામહા નદી દ્વારા અલગ કરાયેલ છે. એ રીતે વિદેહના ચાર ભાગ બતાવ્યા છે. હવે તેમાં વિજય વક્ષસ્કાર દિની વ્યવસ્થાને સંક્ષિપ્ત કરવા માટે પીંડાર્ધ અતિથી સત્રકાર દ્વારા કહેવામાં આવનારી રીતથી વિજયાદિ દુર્બોધ જેવા પ્રતીત થાય છે. તેથી વિશ્તાર પૂર્વક તેનું નિરૂપણ કરવામાં આવે છે. તેમાં એક

सन्न एको विजयः, तथा चत्वारः ऋजवो वक्षस्कारपर्वतास्तिस्रोऽन्तर्नद्यः, एतत्सप्तकस्या Sन्तराणि, प्रत्यन्तरे एकैकविजयसत्त्वेन पड्ड विजयाः, एते चत्वारो वक्षस्कारपर्वता एकैक मध्यवर्तिनद्या अति इति चतुर्णा वक्षस्कारपर्वतानां मध्ये तिस्रो अन्तर्नद्य इति तद्वचवस्था बोध्या, तथा वनमुखमवधीकृत्यैको विजय इति पतिविभागेऽष्टौ विजयाः सिद्धाः-चत्वारो वसस्कारगिर्यस्तिस्रोऽन्तर्नद्य एकं धनमुख्मिति इयमत्र तद्वचवस्था-पूर्वविदेहेषु माल्यवतो गजदन्तपर्वतस्य पूर्वस्यां सीताया महानद्या उत्तरस्यामेको विजयः, ततः पूर्वस्यां प्रथमो वसस्कारपर्वतः, ततः पूर्वस्यां द्वितीयो विजयः, ततः पूर्वस्यां प्रथमाऽन्तर्नदी, एवं क्रमेण सुतीयो विजयो द्वितीयो वसस्कारपर्वतश्रतुर्थौ विजयो द्वितीयाऽन्तर्नदी पश्चमो विजयस्तुः तीयो वक्षस्कारगिरिः, पष्टो विनयस्तृतीयाऽन्तिनदी, सप्तमो विजयश्रतुर्थी वक्षस्कारगिरि-कही जाने वाली रीति से विजयादि दुर्वोधसा प्रतीत होता है। अतः विस्तार पूर्वक इसका निरूपण करते हैं। उसमें एक भाग में माल्यवदादि गजदंताकार बक्षस्कार पर्वत के नजदीक एक विजय कहा है। तथा चार ऋजु वक्षस्कार पर्वत तीन अन्तर्वदियां इन सातों के अन्तर, प्रत्यन्तर में एक एक विजय होने से छ विजय हो जाते हैं। ये चार वक्षस्कार पर्वत एक एक मध्यवर्तिनी नदी से अंतरित है, इस प्रकार चार वक्षस्कार पर्वत के बीच में तीन अन्तर्नदीयां होती है, इस प्रकार की इनकी व्यवस्था समझें। तथा प्रत्येक वनसुख में एक प्रक विजय कहा है इस प्रकार प्रति विभाग में आठ विजय सिद्ध होते हैं ? चार वक्षस्कार पर्वत तीन अन्तर्वदीयां एक वनमुख इस प्रकार उसकी व्यवस्था होती है-पूर्वविदेह में माल्यवात् गजदन्त पर्वत की पूर्व दिशा में तथा सीता महानदी की उत्तर दिशा में एक एक विजय होता है। उससे पूर्व में पहला वक्षस्कार पर्वत आता है। उसके पूर्व में दूसरा विजय, उससे पूर्व में पहली अन्तर्नदी, इस प्रकार के क्रम से तीसरा विजय तथा दूसरा वक्षत्कार पर्वत, चोथा विजय तथा दूसरी

ભાગમાં માલ્યવદાદિ ગજદનતાકાર વક્ષસ્કાર પર્વતની નજીક એક વિજય કહેલ છે. તથા શ્રાર ઋજુ વક્ષસ્કાર પર્વત ત્રણ અન્તર્ના દીયો એ સાતેના અંતર, પ્રત્યન્તરમાં એક એક વિજય હોવાથી છ વિજય થઈ જાય છે આ ચાર વક્ષસ્કાર પર્વત એક એક મધ્યમાં આવેલ નદીથી અન્તરવાળા છે, આ રીતે ચાર વક્ષસ્કાર પર્વતાની વચમાં ત્રણ અન્તર્ન દીયો શ્રાય છે. આ રીતની વ્યવસ્થા સમજવી. તેથી દરેક વનના મુખ પ્રદેશમાં એક એક વિજય કહેલ છે. આ રીતે દરેક વિભાગમાં આઠ વિજયો સિદ્ધ થાય છે. ૧ ચાર વક્ષસ્કાર પર્વત, ત્રણ અન્તર્ન દીયો, એક વનમુખ આ રીતે તેની વ્યવસ્થા હોય છે પૂર્વ વિદેહમાં માલ્યવાન્ ગજદન્ત પર્વતની પૂર્વ દિશામાં તથા સીતા મહા નદીની ઉત્તર દિશામાં એક એક વિજય હાય છે. તેની પૂર્વમાં ખેલેલી વક્ષસ્કાર પર્વત આવે છે. તેની પૂર્વમાં બીજી વિજય, તેનાથી પૂર્વમાં પહેલી અન્તર્ન દી, આ રીતના ક્રમથી ત્રીજ વિજય તથા બીજે વક્ષસ્કાર પર્વત શ્રાય બિજય અને ત્રીજે વક્ષસ્કાર પર્વત છે.

रष्टमो विजय एकं जगत्यासन्नं वनष्ठसमिति, एवं सीतामहानद्या दक्षिणस्यामि सौमनसगजदन्तिगरेः पूर्वस्यामयमेव विजयादि व्यवस्थाक्रमः, तथा सीतामहानद्या उत्तरस्यामिष गन्धमादनस्य पश्चिमायां विजयादि स्थापनाक्रमो बोध्यः । अथ प्रदक्षिणक्रमेण विजयादि निरूपणेऽयमेव प्रथमइति, प्रथमविभागमुखे कच्छविजयनिरूपयिषुराह-

म्लम-कहि णं भंते! जंबूदीवे दीवे महाविदेहे वासे कच्छे णामं विजए पण्णते ? गोयमा ! सीयाए महाणईए उत्तरेणं णीलवंतस्स वासहरप-व्वयस्स द्विषणेगं चित्तकूडस्स वक्खारपव्वयस्स पञ्चित्थमेणं माळवं-तस्स ववखारपव्ययस्स पुरित्थमेणं एत्थ णं जंबूदीवे दीवे महाविदेहे वासे कच्छे णामं विजए पण्णत्ते, उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणवित्थिएणे पिलयंकसंठाणसंठिए गंगा-सिंधुहिं महाणईहिं वेयद्धेण य पटवएणं छब्भागपिभन्ने सोलस जोयणसहस्साई पंच य बाणउए जोयणसए दोण्णि य एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं दो जोयणसहस्साइं दोण्णि य तेरसुत्तरे जोयणसए किंचिविसेसूणे विक्खंभेणंति कच्छस्स णं विजयस्त बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं वेयद्धे णामं पव्वए पण्णत्ते, जे णं कच्छविजयं दुहा विभयमाणे २ चिट्टइ, तं जहा-दाहिणद्धकच्छं १ च उत्तरद्वकच्छं चेति, कहिणं भंते! जंबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे दाहि-णद्यकच्छे णामं विजय पण्णत्ते ?, गोधमा वियद्धस्स पत्रयस्स दाहिणेणं सीयाए महाणईए उत्तरेणं चित्तकृडस्स वक्खारपव्ययस्स पचिरिथमेणं मालनंतस्स वक्वारण्टवयस्स पुरस्थिमेणं एत्थणं जंबुद्दोवे दीवे महा-

अन्तर्नदी, पांचां विजय एवं तीसरा वक्षरकार पर्वत, छहा विजय तथा तीसरी अन्तर्नदी, सातवां विजय तथा चौथा वक्षरकार पर्वत, आठवां विजय एक जगती के नजदीक का वज्ञ ख ईसी प्रकार सीता ग्रहानदी की दक्षिण दिशा में भी सौननस तथा गजदन्त पर्वत के पूर्व में यही विजयादि व्यवस्था का कम है तथा सीता महानदी के उत्तर में नथा गन्धमादन के पश्चिम में भी विजयादि की स्थापना का कम समझ छेवें।

વિજય અને ત્રીજી અન્તર્નાદી, સાતમું વિજય તથા એથા વક્ષસ્કાર પર્વત, આઠમું વિજય, અને એક જગતીની નજીકનું વનમુખ એ રીડ સીતા મહા નદીની ઉત્તરમાં તથા ગન્ધ-માદનની પશ્ચિમમાં પણ વિજયાદિની સ્થાયનાના ક્રેમ સમજી લેવા.

विदेहे वासे दाहिण इकच्छे णामं विजए पण्णते, उत्तरदाहिणायए पाईण-पडीण वित्थिणे अट्ट जोयणसहस्साइं दोणिण य एगसत्तरे जोयणसए एकं च एगूण वीसइ भागं जोयणस्त आयामेणं दो जोयणसहस्साइं दोणिण य तेरसुत्तरे जोयणसए किंचिविसेसूणे विक्लंभेणं पिछयंकसंठा-णसंठिए, दाहिण इकच्छस्स णं भंते ! विजयस्स केरिसए आयारभाव-पडोयारे पण्णते ?, गोयमा! बहुसमरमणि ज्जे भूमिभागे पण्णते, तं जहा कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेन, दाहिण द्वकच्छे णं भंते! विजए मणु-याणं केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णते ?, गोयमा! तेसिणं मणु-याणं छिववहे संघयणे जत्व सव्बद्धकाणमंतं करेति।

कहिणं भंते ! जंबुहीबे दीवे महाविदेहे वासे कच्छे विजए वेयद्धे णामं पटवए?, गोयमा ! दाहिणद्धकच्छिवजयस्स उत्तरेणं उत्तरद्धकच्छस्स दाहिणेणं चित्तकूडस्स पच्चित्थमेणं माल्ठवंतस्स वक्खारपटवयस्स-पुरित्थ मेणं एत्थणं कच्छे विजए वेयद्धे णामं पटवए पण्णत्ते, तं जहा पाईणपडी-णायए उदीणदाहिणवित्थिणे दुहा वक्खारपवए पुट्टे पुरित्थिमिछाए कोडीए जाव दोहिं वि पुट्टे भरहवेयद्धसरिसए णवरं दो गाहाओ जीवा धणुपट्टं च णं कायव्वं विजयविक्खंभसित्से आयामेणं, विक्खंभो उच्चतं उच्चेहो तहेव च विजाहर आभियोगसेढीओ तहेव, णवरं पणपण्णं २ विजाहरण-गरावासा पण्णत्ता, आभियोगसेढीए उत्तरिछाओ सेढीओ सीयाए ईसाण्स्स सेसाओ सकस्सत्ति, कुडा-सिद्धे १ कच्छे २ खंडग ३ माणी४ वेयद्ध पुण्ण ६ तिमिसग्रहा ७ कच्छ ८ वेसमणे ९ वा वेयद्धे होति कूडाइं ॥१॥

कहि णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे उत्तरद्धकच्छे णामं विजए पण्णते?, गोयमा! वेयद्धस्स पव्वयस्स उत्तरेणं णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स पुरित्थमेणं वित्तक्टुइस्स वक्खारपव्वयस्स पञ्चित्थमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे जाव सिज्झंति, तहेव णेयव्वं सव्वं। किह णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे महा-विदेहे वासे उत्तरद्धकच्छे विजए सिंधुकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते?, गोयमा!

मालवंतस्त वक्खारपव्ययस्स पुरितथमेणं उसमकूडस्स पचरिथमेणं णील-वंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणिव्ले णितंबे एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे उत्तरङ्कच्छविजए सिंधु कुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते, सिंटू जोयणाणि आयामविवखंभेणं जाव भवणं अट्टो रायहाणी य णेयव्वा, भरहसिंधु कुंडसरिसं सब्बं णेयब्वं जाव तस्स णं सिंधुकुंडस्स दाहि-णिल्लेणं तोरणेणं सिंधुमहाणई पवृदा समाणी उत्तरद्धकरछविजयं एउनेमाणीर सत्तिहिं सिळळासहस्तेहिं आपूरिमाणीर अहे तिमिः सगुहाए वेयद्भपव्ययं दालियता दाहिणकच्छविजयं एउजेमाणी २ चोइसहिं सिळलासहस्तेहिं समग्गा दाहिणेणं सीयं महाणइं सम-प्पेइ, सिंधु महाणई पवहे य मूळे य भरहसिंधुसरिसा पमाणेणं जाव दोहिं वणसंडेहिं संपिक्षिखता। कहि णं भंते! उत्तरद्धकच्छविजए उसमकूडे णामं पव्वए पण्णत्ते ?, गोयमा ! सिंधुकुंडस्स पुरित्थमेणं गंगाकुंडस्स पचरिथमेणं णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणिछे णितंबे एत्थ णे उत्तरद्धकच्छविजए उसहकूडे णामं पव्वए पण्णत्ते, अट्टु जोय-णाइं उन्नं उचनेणं तं चेव पमाणं जाव रायहाणी से णवरं उत्तरेणं भाणियव्वा । कहि णं भंते ! उत्तरद्धकच्छे विजए गंगाकुंडे णामं कुंडे प ग्णते ?. गोयमा ! चित्तकूडस्स वक्लारपटवयस्स पञ्चितथमेणं उसह-कृडस्स पव्वयस्स पुरित्थमेणं णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स द।हिणिह्रे णितंबे पत्थ णं उत्तरद्धकच्छे गंगाकुंडे णामं कुंडे पण्णते सिद्धं जोय-णाई आयामविक्खंभेणं तहेव जहां सिंधू जांच वणसंडेण ये संपरि-क्लिता। से केण्ट्रेणं भंते ! एवं बुचइ कच्छे विजए कच्छे विजए ?, गोयमा ! कच्छे विजए वेयद्धस्स पव्तयस्स दाहिणेणं सीयाए महाणईए पचरिथमेणं दाहिणद्धकच्छविजयस्स बहुमङ्झदेसभाष्, एत्थ णं खेमा-णामं रायहाणी पण्णत्ता विणीया रायहाणीसरिसा भाणियव्वा, तत्थणं खेमाए रायहाणीए कच्छे णामं राया समुष्पज्ञइ, महया हिमवंत जाव सङ्वं भरहोयवणं भाणियद्वं निवखमणवज्जं सेसं सङ्वं भाणियद्वं

जान मुंजए माणुस्सए सुहे कच्छ णामधेज्जे य कच्छे इत्यदेवे महि-छीए जान पिलओनमिट्टिईए परिनसङ, से एएण्डुणं गोयसा! एनं वुच्चइ कच्छे निजए कच्छे निजए जान णिच्चे ॥सू० २६॥

छाया-क खल भदन्त ! जम्बूदीपे द्वीपे महाबिदेहे वर्षे कच्छो नःम विजयः प्रज्ञप्तः ?, गौतन ! सोताया महानद्या उत्तरेण नील्यतो वर्षपरपर्वतस्य दक्षिणेन चित्रक्रटस्य वक्षस्का-पर्वतस्य पश्चिमेन मारुववतो वक्षस्कारपर्वतस्य धीरश्त्येन अत्र खळ जञ्जूद्वीपे द्वीपे महाविदेहे वर्षे कच्छो नाम विजयः प्रज्ञप्तः, उत्तरदक्षिणायतः प्राचीनप्रतिचीदविस्तीर्धः पस्यङ्कसंस्थान-संस्थितः गङ्गा-सिन्धुभ्यां महानदीभ्यां वैताढचेन च पर्वतेन षड्रमागप्रविमकः षोडश योजन-सहस्राणि पश्च च द्वि नवतानि योजनशतानि द्वौ च एकोनविंशतिभागौ योजनस्य आयामेन द्वे योजनसद्दे द्वे च त्रयोदशीत्तरे योजनशते किञ्चिद्विशेषोने विष्कम्भेणेति ! कच्छस्य खखु विनयस्य बहुमध्यदेशभागे अत्र खलु वैतादचो नाम पर्वतः प्रज्ञप्तः, यः खलु कच्छं विजयं हिया विभनमानः २ तिष्ठति, तद्यथा-दक्षिणार्द्ध कच्छम्रत्तरार्द्धकच्छं चेति, क्व खछ भदन्त! जम्बूढीपे द्वीपे महाविदेहे वर्षे दक्षिणार्द्धकच्छो नाम विजयः प्रज्ञप्तः ?, गौतम ! वैतादचस्य पर्वतस्य दक्षिणेन सीताया महानद्या उत्तरेण चित्रकूटस्य वक्षस्कारपर्वतस्य पश्चिमेन माल्य-वतो वक्षम्कारपर्वतस्य पौरस्त्येन अत्र खळ जन्युद्रीपे द्वीपे महाविदेहे वर्षे दक्षिणाईकच्छो नाम विजयः प्रज्ञप्तः, उत्तरदक्षिणायतः प्राचीन प्रतीचीनविस्तीर्णः अष्ट योजनसहस्राणि द्वे च एकसप्तते योजनशते एकं च एकोनविंशतिभागं योजनस्य आयामेन द्वे योजनसहस्रे द्वे च त्रयोदशोत्तरे योजनशते किञ्जिद्विशेषोने विष्कमभेण पत्यङ्क-संस्थानसंस्थितः, दक्षिणार्द्ध-कच्छस्य खल्छ भदन्त ! विजयस्य कीदशक आकारभावप्रत्यवतारः प्रज्ञप्तः ?, गौतम ! बहुस-मर्मणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः, तचथा-यावत् कृत्रिमैश्रैव अकृत्रिमैश्रैव । दक्षिणाईकच्छे खुळ भदन्त ! विजये मनुजानां की दशक आकारभावप्रत्यवतारः प्रज्ञप्तः ?, गौतम ! तेषां खछ मनुत्रानां षड्विधं संहननं यावत् सर्वेदुःखानामन्तं कुर्वन्ति । क्व खळु भदन्त ! जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहे वर्षे कच्छे विजये वैताढचो नाम पर्वतः ?, गौतम! दक्षिणार्द्धकच्छविजयस्य उत्तरेण उत्तरार्द्धकच्छस्य दक्षिणेन चित्रकुटस्य पश्चिमेन माल्यवतो वक्षस्कारपर्वतस्य पौरस्त्येन अत्र खलु कच्छे विजये वैताढचो नाम पर्वतः प्रज्ञप्तः, तद्यथा-प्राचीनप्रतीचिनाऽऽयतः उदीची-नदक्षिणविस्तीर्णः द्विधा वक्षस्कारपर्वतौ स्पृष्टः-पौरस्त्वया कोटचा यावद् द्वाभ्यामि रुपृष्टः भरतवैताढचसदशकः नवरं द्वे बाहे जीवा धनुष्पृष्ठं च न कर्तव्यम्, विजयविष्कम्भसदशः आयामेन, विष्कम्भ उच्चत्वमुद्धेथस्तथैव च विद्याधराभियोज्यश्रेण्यौ तथैव नवरं पश्चपश्चाश्वर्र-विद्याधरनगरावासाः प्रज्ञप्ताः, आभियोज्यश्रेण्यां औत्तराह्यः श्रेणयः सीतायाः ईशानस्य शेषाः शकस्येति, क्रुरानि-सिद्धं १ कच्छं २ खण्डक ३ माणि ४ वैताढच ५ पूर्ण ६ तमिस्रगुडा ७ कच्छं ८ वैश्रवणं ९ वा वैताढचे भवन्ति क्टानि ।१। क्व खळु भदन्त ! जम्बूद्वीपे द्वीपे महा-

विदेहें वर्षे उत्तरकच्छो नाम विजयः प्रज्ञप्तः ?, गौतम ! वैतादचस्य पर्वतस्य उत्तरेण नीलवतो वर्षधरप्वतस्य दक्षिणेन माल्यवतो वक्षस्कारपर्वतस्य पौर्स्त्येन चित्रक्र्यस्य वक्षस्कारपर्वतस्य पश्चिमेन अत्र खल्छ जम्बूद्वीपे द्वीपे यावत् सिध्यन्ति, तथैव नेतन्यं सर्वम्, कव खल्छ भदन्तः! जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहे वर्षे उत्तरकच्छे विजये सिन्धुकुण्डं नाम कुण्डं प्रज्ञप्तम् ?, गौतम ! माल्यवतो वक्षस्कारपर्वतस्य पौर्स्त्येन ऋषमक्र्यस्य पश्चिमेन नीलवतो वर्षधरपर्वतस्य दक्षि णात्ये नितम्बे अत्र खल्छ जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहे वर्षे उत्तरार्द्धकच्छविजये सिन्धुकुण्डं नाम कुण्डं प्रज्ञप्तम् ?, पृष्टि योजनानि आयामविष्कम्भेण यावद् भवनम् अर्थो राजधानी च नेतन्या, भरतकुण्डसद्यं सर्वं नेतन्यम्, यावत् तस्य खल्छ सिन्धुकुण्डस्य दक्षिणात्येन तोरणेन सिन्धुम्पदानदी प्रव्यूद्धा सर्वी उत्तरार्द्धकच्छविजयम् इर्यती २ सप्तिमाः सिल्छासद्धः आपूर्यमाणा २ अधस्तिमसगुद्दायाः वैतादचपर्वतं दारियता दक्षिणकच्छविजमं इर्यती २ चतुर्दश्विभः सिल्छासद्धः समग्रा दक्षिणेन सीतां महानदीं समाप्नोति, सिन्धु महानदी प्रवहे च मूले च मरत-सिन्धुसद्द्शी प्रमाणेन यावद् द्वाभ्यां वनपण्डाभ्यां सम्परिक्षिप्ता ।

वन खलु भदन्त ! उत्तरार्द्धकच्छिवजये ऋषभक्टो नाम पर्वतः प्रज्ञप्तः ?, गौतम ! सिन्धुकुण्डस्य पौरस्त्येन गङ्गाकुण्डस्य पश्चिमेन नीलवती वर्षधरपर्वतस्य दाक्षिणात्ये नितम्बे अन खलु उत्तरार्द्धकच्छिवजये ऋषभक्टो नाम पर्वतः प्रज्ञप्तः, अष्ट योजनानि अर्ध्वग्रुच्चत्वेन तदेव प्रमाणं यावद् राजधानी सा नवरम् उत्तरेण भणित्व्या ।

क्व खलु भद्रत ! उत्तरकच्छे विजये गङ्गाकुण्डं नाम कुण्डं प्रक्षसम् ?, गौतम ! चित्रक्ट-स्य वसस्कारपर्वतस्य पश्चिमेन ऋषभकूटस्य पर्वतस्य पौरस्टयेन नील्यतो वर्षधरपर्वतस्य दाक्षि-णात्ये नितम्बे अत्र खलु उत्तराईकच्छे गङ्गाकुण्डं नाम कुण्डं प्रज्ञसम्, पिष्टं योजनानि आयाम-विष्कम्भेण तथैव यथा सिन्धुः यावद् वनषण्डेन च सम्परिक्षिता । अथ केनार्थेन भद्रत्त ! एसमुच्यते—कच्छो विजयः कच्छो विजयः ?, गौतम ! कच्छे विजये वैतादयस्य पर्वतस्य दक्षिणेन सीताया महानद्या उत्तरेण गङ्गाया महानद्याः पश्चिमेन सिन्ध्वा महानद्याः पौरस्त्येन दक्षिणाईकच्छविजयस्य वहुमध्यदेशभागे, अत्र खलु क्षेमा नाम राजधानी प्रज्ञप्ता विनीता राजधानी सद्दशी भणितच्या, तत्र खलु क्षेमायां राजधान्यां; कच्छो नाम राजा समुत्पद्यते, महाहिम्वत् यावत् सर्व भरतसाधनं भणितच्यम् निष्क्रमणवर्जं शेषं सर्व भणितच्यं यावद् अङ्को मानुष्यकानि सुखानि, कच्छनामधेयश्च कच्छोऽत्र देवो महर्दिको यावत् पत्योपमस्थितिकःपरिवसति, स एतेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते—कच्छो विजयः कच्छो विजयः यावत् नित्यः ।।स्र०२६।।

अब प्रदक्षिणा के क्रम से विजयादि के निरूपण में यही पहला है, इस हेतु से प्रथम विभागमुख से कच्छाविजय का निरूपण करने की इच्छा से सूत्रकार

હવે પ્રદક્ષિણાના ક્રમથી વિજયાદિના નિરૂપણુમાં આજ પહેલા છે, એ હેતુશી પહેલાં વિભાગમુખથી કચ્છ વિજયનું નિરૂપણ કરવાની ઈચ્છાથી સુત્રકાર સુત્ર કહે છે-'कहिणं टीका-'किह णं भंते !' इत्यादि-'किह णं भंते !' वय खलु भदन्त ! 'जंबुद्दीवे दीवे' जम्बूद्धीपे द्वीपे 'महाविदेहें वासे' महाविदेहें वर्षे 'कच्छे' कच्छः 'णामं' नाम 'विजए' विजय:-चक्रवर्ति विजेतव्य-भूविभागरूपः 'पण्णते' प्रज्ञप्तः ?, इति प्रश्ने भगवानाह-'गोयमा!' गौतम ! 'सीयाए महाईए' सीताया महानद्याः 'उत्तरेणं' उत्तरेण-उत्तरदिशि, अत्र सप्तम्य-त्तादेनप्प्रत्ययः, एवमग्रेऽपि, तथा 'णीलवंतस्स' नीलवतः 'वासहरपव्वयस्स' वर्षधरपर्वतस्य 'दिच्छणेणं' दक्षिणेन-दक्षिणदिशि, तथा 'चित्तकूडस्य' वित्रकूटस्य-एतश्नामकस्य 'वक्खार-पव्वयस्स' वक्षस्कारपर्वतस्य 'पच्चिमेणं' पश्चिमेन-पश्चिमदिशि 'मालवंतस्स' मालयवतः-गजदन्ताकारस्य 'वक्खारपव्वयस्स' वक्षस्कारपर्वतस्य 'पुरित्थमेणं' पौरस्त्येन-पूर्विदिशि-'एत्थ' अत्र-अत्रान्तरे 'णं' खलु 'जंबुद्दीवे दीवे' जम्बूद्वीपे द्वीपे 'महाविदेहे वासे' महाविदेहे वर्षे 'कच्छे णामं विजए' कच्छो नाम विजयः 'पण्णते' प्रज्ञप्तः, स च कीटशः ? इत्यपेक्षायामाह- 'उत्तरदक्षिणायए' उत्तरदक्षिणायतः-उत्तरदक्षिणयोदिंशोरायतः-दीर्घः, तथा 'पाइणपडीण-

सूत्र कहते हैं-'कहि णं भंते! इत्यादि

टीकार्थ-'किह णं भंते! जंबूदीवे दीवे' हे भगवन जंबू द्वीप नाम के बीप में 'महाविदेहे वासे' महाविदेह क्षेत्र में 'करें णामं' कर्क नामका 'विजए' विजय चक्रवर्ति के द्वारा जितने योग्य भूमिभागरूप. 'पण्णत्ते' कहा है ? इस प्रदन के उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—'गोयमा! हे गौतम! 'सीयाए महाण्ईए' सीता महानदी के 'उत्तरेणं' उत्तर दिशा में तथा 'णीलवंतस्स' नीलवान 'वासहरपःवयस्स' वर्षधर पर्वत के 'दिक्खणेणं' दक्षिण दिशा में तथा 'चित्रकुट मामका 'वक्खारपःवयस्स' वक्षस्कार पर्वत की 'पच्चित्रिणं' पश्चिम दिशा में 'मालवंत्रस्स' गजदन्ताकार माल्यवान 'वक्खार पच्चयस्स' वक्षस्कार पर्वत की 'पच्चयस्स' वक्षस्कार पर्वत के 'पुरिथमेणं' पूर्विदिशा में 'एत्थ णं' यहां पर निश्चय से 'जंबू दीवे दीवे' जंबू द्वीप नाम के द्वीप से 'महाविदेहे वासे' महाविदेह क्षेत्र में 'कच्छेणामं विजए' कच्छ नामका विजय 'पण्णत्ते' कहा है। वह विजय किस प्रकार का है ? इस अपेक्षा निष्टिस के लिए कहते हैं—'उत्तरदाहिणायए' वह

भंते ! ' धत्याहि

टीअर्थ-'किह णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे' हे लगवन् कं भुद्धीय नामना द्वीपमां 'महावि-देहे वासे' महाविद्ध क्षेत्रमां 'कच्छे णामं' ४२७ नामनुं 'विजए' विकय २५वित द्वारा ळतवाने येग्य लूमिलाग ३५ 'पण्णत्ते' ४हें हे छे? आ प्रश्नना हत्तरमां प्रभुश्री ४हे छे-'गोयमा!' हे गौतम! 'सीयाए महाणईए' सीता महा नहीनी 'उत्तरेणं' हत्तर हिशामां तथा 'णीळवंत्तरस' नीतवान् 'वासहरपञ्चयस्स' दर्शधर पर्वतनी 'दिक्खणेणं' हिशामां तथा 'चित्तकूडस्स' थित्रकूट नामना 'वक्खारपञ्चयस्स' वक्षस्थार पर्वतनी 'पच्चित्यमेणं' पूर्व हिशामां 'एत्थणं' अहीं यां निश्चय 'जंबुद्दीवे दीवे' कं भुद्दीय नामना द्वीपना 'महाविदेहे वासे' महाविदेह क्षेत्रमां 'कच्छे णामं विजए' ४२७ नामनुं विकय 'प्रणुत्ते' ४हेत छे. ते विकय हेवुं छे १ ते अपेक्षानी निवृत्ति माटे ४हे छे-'उत्तरदाहिणायए' ते हत्तर दक्षिणु दिशामां तांभु

वित्थिण्णे' प्राचीन प्रतीचीनविस्तीर्णः-पूर्वपश्चिमयोर्दिशोविंस्तारयुक्तः, तथा 'पश्चियंकसंठाण-संठिए' पत्यङ्कसंस्थानसंस्थितः -पर्यङ्काकारेण संस्थितः, आयतचतुरस्रत्वात्, 'गंगा-सिंधृहिं' गङ्गा-सिन्धुभ्याम् 'महाणईहिं' महानदीभ्याम् 'वेयद्धेण य' वैताढचेन च-वैताढध-नामकेन च 'पव्यएण' पर्वतेन 'छव्मागयविभत्तः' पङ्भागप्रविभकः-पङ्भि भौगैः प्रविभक्तः-पङ्धा खिंडतः एवमन्येऽपि विजया भावनीयाः, परन्तु सीताया उदीचीनाः कच्छादयः शीतोदाया दाक्षिणात्याः पक्ष्मादयो गङ्गा सिन्धुभ्यां षडधा विभक्ताः, सीताया दाक्षिणात्या वच्छादयः शीतोदाया उदीचीना नप्रादयो रक्तारक्तवतीभ्यां पडधा विभक्ता इति उत्तरदक्षिणायतेति विशदयति 'सोलस' इत्यादि 'सोलस' षोडश 'जोयणसहस्साई' योजनसहस्राणि 'पंच य' पश्च च 'वाणउए' द्विनवतानि –द्विनवत्यधिकानि 'जोयणसष्' योजनज्ञतानि 'जोयणस्स' योजनस्य 'दोष्णि य' द्वौ च 'एगूणवीसइभाए' एकोनविंशतिभागौ 'आयामेणं' आयामेन-उत्तर दक्षिण दिशा में लंबा है 'पाईणपईणवित्थिण्णे' पूर्वपश्चिम दिशा में विस्तृत है तथा 'पलियंकसंठाणसंठिए' पर्यङ्काकार से स्थित है, लंबा एवं चौकोण होने से । 'गंगासिंधृहिं' गंगा एवं सिंधु नामकी 'महाणईहिं' महानदी से तथा 'वेयड्रेण य' वैतादय नाम के 'पव्वएण' पर्वत से 'छव्भागपविभन्ते' छ भाग मे विभक्त होता है। इसी प्रकार अन्य विजयों के संबंध में भी समझ छेवें। परंतु सीता महानदी की उत्तर दिशा में कच्छादि विजय शीतोदा की दक्षिण दिशा के पक्ष्मादि गैंगा एवं सिंधु महानदी के बारा छ प्रकार से विभक्त होता है। सीत। महानदी की दक्षिण ओर के वच्छादि तथा शीतोदा की उत्तर दिशा में वपादि रक्त एवं रक्तवती नदी के द्वारा छ प्रकार से विभक्त होता है।

अब उत्तर दक्षिण की दीर्घता को स्वष्ट करते हैं-'सीलसजीयणसहस्साइं' सोलह हजार घोजन 'पंचय वाणउए' जोयणसए' पांचसी विरानवें अर्थात १६५९२ कोघणस्स' एक घोजन के 'दोण्णिय' दो 'एग्र्णवीसइ भागे' जन्नीसर्वा

ढेवे ઉत्तर दक्षिणुनी ल'लार्ड ने २५०८ ४रे छे-'सोलस जोयणसहस्साइं' सेाण ढुलर येक्ष्य पंचय बाणउए' पांयसेत आधु 'जोयमस्स' ओड येक्ष्यनना 'दोण्णिय' के 'एगूणवीसड

છે. 'पाईणपईणवित्थिणो' પૂર્વ પશ્ચિમ દિશામાં વિસ્તૃત છે. तथा 'पल्लियंकसंठाणसंठिए' પર્ય 'કાકાર રીતે સ્થિત છે. લાંછુ અને અતુષ્કાણ હાવાથી 'गंगासिंधूहिं' ગંગા અને સિંધુ નામની 'महाणईहिं' મહા નદીથી તથા 'વેચइढेणय' વૈતાહય નામના 'पञ्चएणं' પર્વ તથી 'छडमा-गविभत्ते' છ ભાગમાં અલગ થાય છે. આજ રીતે બીજા વિજયોના સંબંધમાં પણ સમજી લેવું. પરંતુ સીતા મહાનદીની ઉત્તર દિશામાં કચ્છાદિ વિજય શૌતાદાની દક્ષિણ દિશાના પદ્માદિ ગંગા અને સિંધુ મહાનદી દ્રારા છ પ્રકારથી અલગ થાય છે. સીતા મહાનદીની દક્ષિણ તરફના વચ્છાદિ તથા શીતાદાની ઉત્તર દિશામાં વપ્રાદિ રક્ત અને રક્તવતી નદી દ્રારા છ ભાગમાં અલગ થાય છે.

दैध्येण, इहोषपत्ति रेत्रम्-योजन ३२६८४ कळा ८ रूपाद्विदेहविस्तारात्सीतायाः शीतोदाया वा नद्या विस्तारो पश्चशतमित योजनलक्षणः प्राप्यते, यथोक्तमानं शेपस्यार्द्धे लभ्यते, इह यधि सीतायाः शीतोदाया वा नद्याः समुद्रप्रवेशस्थाने एव पश्चशतयोजनप्रमाणो विस्तारोऽस्ति अन्यत्र तु स्वल्पः स्वल्पतरो विस्तारोऽस्ति, तथापि कच्छादिविजयसमीपेतटद्वयवर्तिनौ रमण-देशावादाय पश्चशतयोजनप्रमाणो विस्तारो लभ्यत इति, कच्छविजयस्योत्तरदक्षिणायतत्व-विवरणं गतम्, अधुना पूर्वपश्चिमविस्तीर्णस्वं विवियते-'दो जोयणसहस्साइं' इत्यादि - द्वे योजनसहस्त 'दोण्णि य' द्वे च 'तेरस्तरे' त्रयोदशोत्तरे-त्रयोदशाधिके 'जोयणसप' योजनशते 'किंचिविसेस्यणे' किश्चिद्वश्चेषोने-किश्चिन्यन्युने 'विवर्खंभेणं' विष्कम्भेण प्रज्ञप्त इति, इहाऽप्यु-पपत्ति रेवम्-इह महाविदेहेषु देवकुरूत्तरकुरुमेरुभद्रशालवनयक्षस्कारपर्वतान्तरनदीवनस्खा-भाग अधित् एक योजन के उन्नीसिया दो भाग । 'आयामेणं' लंबाई से होते हैं।

यहां इस प्रकार से समझना चाहिए-३२६८४ योजन कला ८ रूप विदेह क्षेत्र के विस्तार से सीता एवं सीतोदा नदी का विस्तार पांचसो योजन के प्रमाणवाला मिलता है। यथोक्त प्रमाण दोष के आधे से प्राप्त होता है, यहां पर यद्यपि सीता अथवा शीतोदा नदी के समुद्र प्रवेशस्थान में ही पांचसो योजन प्रमाण का विस्तार है अन्यन्न स्वल्प या स्वल्पतर विस्तार होता है तो भी कच्छादि विजय के समीप दोनों तटवर्ति प्रदेश कीडास्थान को लेकर पांचसो योजन प्रमाण का विस्तार लभ्य हो जाता है, इस प्रकार कच्छ विजय का उत्तर दक्षिण में लंबाई का विवरण होता है।

अब पूर्व पश्चिम के विस्तार का निरूपण करते हैं-'दो जोयण सहस्साई' दो हजार 'दोणिण य तेरसुसरे जोयणसए' दोसो तेरह योजन से 'किंचि विसेस्णे' कुछ कम 'विक्खंभेणं' विष्कंभ से कहा है। यहां पर भी इस प्रकार से ज्ञात

माने' એ!ગણીસમા ભાગ અર્થાત્ એક યાજનના ^{૧૬} એ!ગણીસયાં એ ભાગ 'आयामेणं' લંબાઈ થાય છે.

અહીં યાં આ રીતે સમજવું એઇએ ૩૨૬૮૪ યાજન કલા ૮ રૂપ વિદેહ ક્ષેત્રના વિસ્તારથી સીતા અને શીતાદા નદીના વિસ્તાર પાંચસા યાજન પ્રમાણ મળે છે. યથાકત પ્રમાણ શેષના અર્ધામાં મળે છે. અહીં યાં એ કે સીતા અગર શીતાદા નદીના સમુદ્ર પ્રવેશ માર્ગમાં જ પાંચસા યાજન પ્રમાણના વિસ્તાર છે, બીજે સ્વલ્પ અગર સ્વલ્પતર વિસ્તાર થાય છે. તો પણ કચ્છાદિ વિજયની નજીક એઉ તટવર્તિ પ્રદેશ કીડા સ્થાનને લઈને પાંચસા યાજન પ્રમાણના વિસ્તાર પ્રાપ્ત થઈ જાય છે. આ રીતે કચ્છ વિજયની ઉત્તર દક્ષિણમાં લંબાઇનું વર્ણન થાય છે.

ढ्वे पूर्व पश्चिमना विस्तारनुं निर्धेषु करे छे.-'दो जोयणसहस्साई' भे ढ्र अर 'दोणिण य तेरसुत्तरे जोयणसव' असे। तेर थे।कनथी 'किंचि विसेसूणे' कंधिक कम 'विक्खंभेणं'

तिरिक्तेषु सर्वेषु विजयाः सन्ति, ते च पूर्वपश्चिमयोः समविस्तारकाः, तत्रैकस्मिन् दक्षिणभागे उत्तरमागे वा वक्षस्कारपर्वता अष्टी सन्ति, एकैकस्य वक्षस्कारपर्वतस्य-पश्चशतयोजनप्रमाण आयामः, अष्टानां वक्षस्कारगिरीणःमध्यामसङ्कलनाया चतुःसदस्रयोजनानि भवन्ति । तत्रान्तरनद्यः पट् सन्ति, तासु एकै इस्या अन्तरनद्या विस्तारः पश्चविंशत्यधिकं योजन-शतम्, पण्णामन्तरनदीनां विस्तारप्रमाणसंख्यासङ्कलनायां पश्चश्चर्धकान् सप्तश्चती सम्पः श्वते, वनद्वाले च द्वे स्तः, तत्रैकैकस्य वनस्रक्षस्य विस्तारो द्वाविंशत्यधिकैकोन त्रिशः च्छतानि २९२२, द्वयोविंस्तार-संख्यासंकलनायां चतुश्रत्वारिंशदुत्तराष्ट पश्चाशच्छतानि ५८४४, मेरुविस्तारो दशसदस्र योजनानि १००००, पूर्वपश्चिमभद्रशास्वनयोरायामश्चतुश्च-त्वारिंशत् सहस्राणि ४४०००, सर्वसंख्यासंकलनाया चतुर्नवत्यधिक पश्चशताधिक चतुष्विट-होता है-महाविदेह क्षेत्र में देवकुरु एवं उत्तरकुरु, मेरु भद्रशालवन वक्षस्कार पर्वतसे अन्तरित नदी वनमुख से निन्न सर्वस्थान में विजय कहे हैं। वे पूर्व पश्चिम में समान विस्तार वाले हैं। उसमें एक एक के दक्षिण भाग में अथवा उत्तर भाग में आठ वक्षस्कार पर्वत होते हैं। एक एक वक्षस्कार पर्वत का पांचसो योजन का आयाम-लंबाई है। आठों पर्वतों के आयाम का संकलन करने से चार हजार योजन हो जाता है। उसमें अन्तर्निदियां छह होती है, उनमें एक एक अन्तर्नदी का विस्तार के प्रमाण की संख्या को जोडने से ७५० सातसो पचास ही जाता हैं। वनमुख दो होते हैं उनमें एक एक वनमुखका विस्तार २९२२ उन्तीससी बावीस होता है, दोनों के विस्तार की संख्या को जोडने से ५८४४

વિષ્કંભ કહેલ છે.

અહીંયા પણ આ રીતે જણાય છે. મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં દેવકુરૂ અને ઉત્તરકુરૂ, મેરૂ, ભદ્ર શાલવન વક્ષસ્કાર પર્વતથી અંતરવાળું, નદી વનમુખથી અલગ બધા સ્થાનમાં વિજય કહ્યા છે. તે પૂર્વ પશ્ચિમમાં સરખા વિસ્તારવાળા છે. તેમાં એકના દક્ષિણ ભાગમાં અથવા ઉત્તરભાગમાં આઠ વક્ષસ્કાર પર્વત હાય છે. એક એક વક્ષસ્કાર પર્વતના પાંચસા યોજનના આયામ-લંબાઇ છે. આઠે પર્વતાની લંબાઇ મેળવવાથી આર હજાર યોજન થઈ જાય છે. તેમાં અન્તર્નદીયા હાય છે. તેમાં એક એક અન્તર્નદીના વિસ્તારના પ્રમાણની સંખ્યા મેળવવાથી હપા સાતસા પચાસ થઈ જાય છે. વનમુખ બે હાય છે. તેમાં એક એક મનસુખના વિસ્તાર રહ્રર એાગણ ત્રીસસા બાવીસ થાય છે. બેઉના વિસ્તારની સંખ્યા મેળવવાથી પાંચ હજાર આઠસા શુંમાળીસ થાય છે. મેરૂના વિસ્તાર ૧૦૦૦૦ દસ હજાર યોજનના છે. પૂર્વ પશ્ચિમના બદ્રશાલવનના આયામ-૪૪૦૦૦ શુંમાળીસ હજાર યોજનના

पांच हजार २ आठसो चवालीस होता है। मेरु का विस्तार १०००० दस हजार योजन का हैं पूर्व पश्चिम के भद्रशालवन का आयाम ४४००० चुवालीस हजार योजन का होता है। सब को जोडने से चौसठ हजार पांचसो चउराणवे सहस्राणि ६४५९४, एतत्त्रमाणं जम्बूद्वीपिवस्ताराच्छोध्यते । ततश्च शेषं जातम्-३५४०६ षद्धत्तरचतुः शताधिक पश्चित्रिंशत्महस्राणि, एकैकस्मिन् दक्षिणे उत्तरे वा भागे षोडश विजयाः सन्ति, ततः षोडशिभ भागे हते ३५४०६ ÷ १६ = २२१३ छब्धानि किश्चिन्य्यूनत्रयोद्दशाधिक द्वाविंशति शतानि, त्रयोदशस्य योजनस्य षोडशचतुर्दशभागरूपत्वात्, एतावानेव एकैकस्य विजयस्य विस्तारोऽस्ति । अयं च कच्छविजयो भरतवद् वैताढचपर्वतेन द्विधा विभक्त इति द्विधाविभाजकं वैताढचं वर्णयितुमाह—'कच्छस्स णं' इत्यादि—कच्छस्य खर्छ 'विजयस्स' विजयस्य 'बहुमज्झदेसभाए' बहुमध्यदेशभागे—अत्यन्तमध्यदेशभागे 'एत्थ' अत्र—अत्रान्तरे 'णं' खर्छ 'वेयद्धे' वैताढचः 'णामं' नाम 'पव्यए' पर्वतः 'पण्णते' प्रज्ञप्तः, 'जे णं' यः खर्छ 'कच्छं विजयं' कच्छं विजयम् 'दुहा' द्विधा 'विभयमाणे २' विभजमानः २ विभक्तं कुर्वाणः २ 'चिट्टइ' तिष्ठति, विभागप्रकारमाह—'तं जहा' तद्यथा—'दाहिणद्धवन्छं' दक्षिणार्द्धकच्छं 'च' च 'उत्तरद्धकच्छंचेति' उत्तरार्द्धकच्छंचेति कच्छद्वयं विभजमानो वैताढचपर्वतस्तिष्ठतीति

६४५९४ योजन है। यह प्रमाण जंबूबीप के विस्तार से शोधित किया जाता है। उसमें से शेष पैतीस हजार चारसो छ ३५४०६ योजन होता है। दक्षिण अथवा उत्तर की ओर सोलह विजय होते हैं। उसका सोल से भाग करने पर कुछ कम बाबीससो तेरह प्राप्त होते हैं। तेरहवें योजन के सोलहवें या चौदहवें भागरूप होने से इतना ही एक एक विजय का विस्तार होता है।

यह कच्छविजय भरत के जैसा वैताहय पर्वत से दो भाग में विभक्त हुआ है अतः दो भाग में विभक्त करने वाला वैताहय पर्वत का वर्णन करने के उद्देश्य से कहते हैं-'कच्छस्स णं विजयस्स' कच्छ विजय के 'बहु-मज्झदेसभाए' ठीक मध्यभाग में 'एत्थणं' यहां पर 'वेयहुं णामं पब्वए पण्णक्ते' वैताहच वामका पर्वत कहा है। 'जे णं' जोिक 'कच्छं विजयं' कच्छ विजय को 'दुहा विभयमाणे २' दो भाग में विभक्त करता हुआ 'चिद्रह' स्थित है। 'तं जहा' विभक्त

છે. એ બધાને મેળવવાથી ૧૪૫૯૪ ચાસઠ હજાર પાંચસા ચારાણુ યાજન થાય છે. આ પ્રમાણ જંબદીપના વિસ્તારથી શાધિત કરવામાં આવે છે. તેમાંથી બાકીના ૩૫૪૦૬ પાંત્રીસ હજાર ચારસા છ રાજન થાય છે. દક્ષિણ અને ઉત્તરની તરફ સાળ વિજય હાય છે. તેને સાળથી ભાગવાથી કંઇક એાછા ૨૨૧૩ બાવીસ સા તેર પ્રાપ્ત થાય છે. તેરમા ચાજનના સાળમાં અગર ચીદમા ભાગ રૂપ હાવાથી એટલાજ એક એક વિજયના વિસ્તાર હાય છે.

भा ३२७ विकथ सरतनी केम वैतादय पर्वतथी के सागमां वहें यायेस छे. तेथी के सागमां असग इरनार वैतादय पर्वतनुं वर्णुन इरनाना एदेशथी सूत्रधार इन्हें छे— 'कच्छस्स णं विजयस्स' इन्छ विकथना 'बहुमज्झदेसभाए' अराभर मध्य सागमां 'एस्य णं' अहीं यां 'वेयद्दे णामं पत्र्वर पण्णत्ते' वैतादय नामने। पर्वत इन्हेंस छे. 'जे णं' है के कच्छं विजयं' इन्छ विकथने 'दुहा विभयमाणे र' के सागमां वहें यीने 'चिट्टह' स्थित छे. 'तं जहां' असग इरवाने। प्रकार आ प्रमाधे छे. 'दाहिणद्धकच्छं च' दक्षिणार्ध इन्छ

प्र्वेणान्वयः । च शब्दद्वयग्रुभयोः कच्छयोः समकक्षता सचनार्थम् । दक्षिणार्द्धकच्छः छुत्रा-स्तीति पृच्छन्नाह-'किह णं भंते' इत्यादि नव खल्छ भदन्त ! 'जंबु ही वे दी वे' जम्बू द्वीपे द्वीपे महाविदेहे वासे' महाविदेहे वर्षे 'दाहिण द्धकच्छे णामं विजयः 'पण्णत्ते' प्रज्ञासः ?, इति प्रश्ने भगवानाह -'गोयमा !' गौतम ! 'वेयद्धस्स' वैतादचस्स 'पव्य-यस्स' पर्वतस्य 'दाहिणेणं' दक्षिणेन - दक्षिणिदिश्च 'सीयाए' सीतायाः - सीताभिधानायाः 'महाणईए' महानद्याः 'उत्तरेणं' उत्तरेण - उत्तरदिश्च - 'चित्तकू दस्स' चित्रकू दस्य - चित्रकू दना मकस्य 'वक्खारपव्यस्स' वक्षस्कारपर्वतस्य 'पचित्रथमेणं' पश्चिमेन - पश्चिमदिश्च 'प्रथ' अत्र - अत्रान्तरे 'णं' खल्छ 'जंबु ही वे दी वे' जम्बू द्वीपे द्वीपे 'महाविदेहे वासे' महाविदेहे वर्षे 'दाहिणद्धकच्छे णामं विजय' दक्षिणार्द्धकच्छे नाम विजयः 'पण्णत्ते' प्रज्ञपः, स च की दशः ? इत्यपेक्षायामाह - 'उत्तरदाहिणायए' उत्तरदिक्षणायतः - उत्तर - दक्षिणयोदिक्षोरायतः - दीर्घः, 'पाईणपदीणवित्थिण्णे' प्राचीनप्रतीचीनविस्तीर्थः - पूर्वपश्चिमदिशोविस्तारयुक्तः, 'अद्वः' अष्ट अष्ट का प्रकार इस प्रकार है - 'दाहिणद्धकच्छंच' दक्षिणार्द्धकच्छ एवं 'उत्तरद्धकच्छंच' उत्तरदिक्षणार्द्धकच्छ पे दे दो कच्छ के विभाग करने वाला वैतादय पर्वत है । 'किहिणं-भते ! जंबू हीवे दीवे' हे भगवन ! जंबू द्वीप नाम के द्वीप में कहां पर 'महाविदेहे वासे' महाविदेह केत्र में 'दाहिणद्धकच्छे णामं विजयः दक्षिणार्धकच्छ नाम का देहेवासे' महाविदेह केत्र में 'दाहिणद्धकच्छे णामं विजयः' दक्षिणार्धकच्छ नाम का

विजय 'पण्णच्च' कहा है ? इस प्रद्म के उत्तर में श्री महावीर प्रभु कहते हैं— 'गोयमा !' हे गौतम ! 'वेयद्धस्स पन्वयस्स' वैताद्ध पर्वत की 'दाहिणेणं' दक्षिण दिशा में 'सीयाए महाणईए' सीता महानदी की 'उत्तरेणं' उत्तर दिशा में 'चित्त-क्रूडस्स' चित्रक्ट नाम के 'वक्खारपन्वयस्स' वक्षस्कार पर्वत के 'पञ्चित्रभेणं' पश्चिम दिशा में 'एत्थणं' यहां पर जंब्रदीवे दीवे' जंब्र द्वीप नाम के द्वीप के 'महां विदेहे वासे' महाविदेह क्षेत्र में 'दाहिणकच्छे णामं विजए' दक्षिणार्द्ध कच्छ नाम का विजय 'पण्णत्ते' कहा है । वह 'उत्तर दाहिणायए' उत्तर दक्षिण दिशा में लंबा है । 'पाईणपडीणवित्थिणे' पूर्व पश्चिम दिशा में विस्तार वाला है 'अट्ट-

भने 'उत्तरद्धकच्छं च' ઉत्तरार्ध ४२७ स्मे रीते स्मे से लागमां ४२७ विजयने स्थान ४२नार वैतादय पर्वत से 'कहिणं मंते! जंबुद्दीवे दीवे' है लगवन् जंजूदीय नामना द्वीयमां ४थां आगणा 'महाविदेहे वासे' सहाविदेह क्षेत्रमां 'दाहिणद्धकच्छे णामं विजए' हिस्खार्ध ४२७ नामनुं विजय 'पण्णत्ते' रहेद से शे आ प्रश्नना उत्तरमां महावीर प्रभुश्री ४६ से 'ने गोयमा!' है जीतम! 'वेयद्धस्स पव्वयस्स' वैतादय पर्वतनी 'दाहिणेणं' हिस्खा हिशामां 'सीयाए महाणईए' सीता महानहीनी 'उत्तरेणं' उत्तर हिशामां 'चित्तकूड्स्स' यित्र रूट नामना 'वक्तारपव्ययस' वक्षस्तार पर्वतनी 'पच्चित्रिमणं' पश्चिम हिशामां 'एत्य णं' अहीयां 'जंबुद्दीवे दीवे' जंजूदीय नामना द्वीयना 'महाविदेहे वासे' महाविदेह क्षेत्रमां 'दाहिणकच्छे णामं विजए' हिस्खार्ध ४२७ नामनुं विजय 'पण्णत्ते' रहेद से, ते विजय

'जोयणसहस्साई' योजनसहस्राणि 'दोण्णि' हे 'य' च एगसत्तरे' एकसप्ति 'जोयणस्य' योजनश्रते 'एक्कं' एकं 'च' च 'एगूणवीसहमागं' एकोनविश्वतिमागं 'जोयणस्स' योजनस्य 'आयामेणं' आयामेन-दैध्येण 'दो' हे 'जोयणसहस्साई' योजनसहस्राणि 'दोण्णि' हे 'य' च 'तेरग्रुत्तरे' त्रयोदशोत्तरे-त्रयोदशाधिके 'जोयणसए' योजनशते 'किंचिविसेस्णे' किश्वि-दिशेषोने - किश्चिन्य्यूने 'विवर्खंभेणं' विष्यम्भेण-विस्तारेण, इत्यायाम-विष्कम्भाभ्यां तस्र क्ला संस्थानेनाह—'पल्लियंकसंठाणसंठिष' पल्यङ्कसंस्थानसंस्थितः—पर्यङ्काकारेण संस्थितः । अथास्याकारभावप्रत्यवतारं प्रश्लोत्तराम्यामाह—'दाहिणद्धकच्छस्स' इत्यादि-दक्षिणार्द्धकच्छ-स्य 'णं' खल्ल 'विजयस्स' विजयस्य 'केरिसए' कीद्दशकः—कीद्दशः 'आयारभावपढोयारे' आकारभावप्रत्यवतारः—तत्राऽऽकारः—स्वरूपम् भावाः—पृथिवीवक्षस्कारादयस्तदन्तर्गताः पदा-

जीयणसहस्साइं' आठ हजार योजन 'दोण्णिय एगसत्तरे जोयणसए' दो हजार एकसो इकहत्तर योजन 'एक च' एक 'एग्णवीसइभागं' उन्नीसवां भाग 'जोय-णस्स' योजन का 'आयामेणं' लंबाइ से 'दो जोयणसहस्साइं' दो हजार योजस 'दोण्णि' दो 'तेरस्त्रत्तरे' तेरह अधिक 'जोयणसए' योजन दात अर्थात् दोसो तेरह योजन से 'किंचि विसेस्णे' कुछ कम 'विक्खंभेणं' विस्तार से हैं।

इस प्रकार आयाम विष्कंभ से वर्णन करके उसका संस्थान कहते हैं-'पस्टि यंकसंठाणसंठिए' पर्यकाकार से स्थित है।

अब इसका आकार भाव प्रत्यवतार प्रइनोत्तर द्वारा कहते हैं—'दाहिणद्ध कच्छस्स णं' दक्षिणार्द्धकच्छ 'विजयस्स' विजय का 'केरिसए' किस प्रकार का 'आयारभावपडोयारे' आकार भाव प्रत्यवतार आकार अर्थात् स्वरूप भाव माने पृथिवी वक्षस्कारादि उसके अन्तर्गत पदार्थ सोही कहा है प्रत्यवतार माने प्रकटी-

'उत्तर दाहिणायए' उत्तर हिंक्षणु हिशामां लांणुं छे. 'पाईणपईणवित्थिण्णे' पूर्व पश्चिम हिशामां विस्तृत छे. 'अट्ठ जीयणसहस्साइं' आठ ईकार ये। पन 'दोण्णिय एगसत्तरे जोयणसए' छेडकार ओडसे। छ डे।तेर ये। पन 'एक्कं च' એड ये। पनना 'एगूणवीसइमागं' ओ। प्राचीसमा लाग 'जीयणस्स' ये। पनना 'आयामेणं' ले आडियी 'दो जोयणसहस्साइं' छे डकार ये। पन 'दोण्णिय' असे। 'तेरसुत्तरे' तेर 'जोयणसए' ये। पनशत अर्थात् असे। तेर ये। पनथी 'किंचि विसेस्णे' डंधि डम 'विक्लंमेणं' विस्तारथी छे.

આ રીતે આયામ વિષ્કંભથી વર્ષું ન કરીને તેનું સંસ્થાન ખતાવે છે.-'पछियंक संठाणसंठिए' पर्योक्षां स्थित છે.

हुवे तेने। आक्षार लाव प्रत्यवतार प्रश्लोत्तर द्वारा कहे छे. 'दाहिणद्वकच्छस्स गं' हिल्लाक्षकच्छस्स गं' हिल्लाक्षकच्छस्स गं' हिल्लाक्षकच्छस्स गं' किरिसए' क्या प्रकारना 'आयारभावपडोयारे' आक्षार लाव प्रत्यवतार आक्षार ओटहे स्वरूप लाव ओटहे पृथिवी वक्षस्काराहि तेना आंत-गं'त पहार्थ, प्रत्यवतार ओटहे प्रकटी लाव 'पण्णत्ते' कहें छे है आ प्रक्षना उत्तरमां श्ली थांः, तद्युक्तः प्रत्यवतारः -प्रकटीभावः, 'पण्णते' प्रज्ञप्तः ? इति प्रश्ने भगवानाइ-'गोयमा !'
गौतम ! अस्य दक्षिणार्द्धकच्छविजयस्य 'बहुसमरमणिज्जे' बहुसमरमणीयः अत्यन्त समोऽत एव रमणीयः मनोहरः 'भूमिभागे' भूमिभागः' 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तः, तस्य वर्णनं स्चित्रदुमाइ'तं जहा' तद्यथा 'जाव कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव' यावत् कृत्रिमैश्वेव अकृत्रिमैश्वेव अत्र
यावत्पदेन 'आर्त्तिगपुक्रवेरइ वा' इत्यारभ्य कृत्रिमैश्वेवाकृत्रिमैश्वेव मणिभिस्तृणैश्वोपशोभित
इति पर्यन्तो वर्णको ग्राह्यः, सच पष्टस्त्रादवगन्तव्यः, ग्रन्थविस्तरभयादत्र नोपन्यस्यते । अधुनाऽत्र वास्तव्यानां मनुष्याणामाकार मावप्रत्यवतारं प्रश्लोत्तराभ्यामाह-'दाहिणकच्छे' इत्यादिदक्षिणार्द्धकच्छे प्रागुक्त स्वरूपे 'णं' खल्ड 'भंते !' भदन्त ! 'विज्ञप' विजये 'मनुयाणं' मनुजानां मनुष्याणां 'केरिसप' कीद्यकः कीद्याः 'आयारभावपडोयारे' आकारभावप्रत्यवतारः—
तत्राकारः स्वरूपम् भावाः तदन्तर्गताः संहननादयः पदार्थाः तदुभयसिहतः प्रत्यवतारः प्रादु-

भाव 'पण्णत्ते' कहा है? इस प्रदन के उत्तर में श्रीमहावीर प्रभुश्री कहते हैं— 'गोयमा'! हे गौतम! इस दक्षिणार्द्ध कच्छ विजय का 'बहुसमरमणिज्जो' अत्यन्त समहोने से रमणीय 'भूमिभागे' भूमिभाग 'पण्णत्ते' कहा है। उसका वर्णन सूचनार्थ कहते हैं 'तं जहा' जो इस प्रकार है 'जाब कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव' यावत् कृत्रिम अथवा अकृत्रिम यहां यावत्पदसे 'आर्छिंग पुक्खरे इवा'—अर्छिंगपुष्कर के कथन से प्रारंभ कर के कृत्रिम अथवा अकृत्रिम मणि एवं तृणों से उपद्योभित इस कथन पर्यन्त का वर्णन करछेना चाहिए वह वर्णन छठे सूत्र से समझलेवें ग्रंथ के विस्तार भय से यहां पुनः प्रदर्शित नहीं किया है।

अब दक्षिणाई कच्छ में निवास करनेवाले मनुष्यों के आकारभाव प्रत्यव-तार प्रश्लोत्तर द्वारा कहते हैं-'दाहिणद्धकच्छे' इत्यादि पूर्वोक्त दक्षिणाईकच्छ में 'णं भंते!' हे भगवन 'विजए' विजय में 'मणुयाणं मनुष्यों के 'केरिसए' किस

महावीर प्रसुष्ठी हाँ छे 'गोयमा!' है गौतम! आ हिस्सुर्ध हिन्छ विकथना 'बहुसम-रमणि को' अत्यंत समहोवाथी रमणीय अवे। 'मूमिमागे' स्मिशा 'पण्णते' हहेत छे. तेनुं वर्धुंन सूथना ३५ अतावे छे. 'तं जहा' के आ प्रमाणे छे. 'जाव कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव' यावत् हित्रम अथवा अहित्रम अहीं यां यावत् पहथी 'आल्हिं गपुक्सरे-इवा आक्षिंय पुष्टरना हथनथी आरंस हरीने हित्रम अथवा अहित्रम मिस्से। अने तृष्टेशिश शिक्षायमान आ हथन पर्यन्तनुं सम्भुं वर्धुन हरी देवुं ते वर्धुन छर्डा सूत्रमांथी सम्भु देवुं. पुस्तहना विस्तारस्थी अहीं यां ते पुनः स्तावेत नथी.

હવे दक्षिणार्ध ४२७मां वसनारा मनुष्याना आकार लाव अने प्रत्यवतार प्रश्नोत्तर द्वारा प्रगट ४२ छे.-'दाहिणद्धक≠छे' धत्यादि पुवेक्ति दक्षिणार्ध ४२७मां 'णं मंते!' हे स्थावन् 'विज्ञए' विजयमां 'मणुयाणं' मनुष्याना 'केरिसए' डेवा प्रकारना 'आयारमावपद्धो भीतः 'पण्णत्ते ?' प्रज्ञप्तः, इति प्रश्ने मगवानाइ-'गोयमा !' गौतम ! 'तेसि' तेषां दक्षिणार्द्ध विजयोत्पन्नानां 'णं' खळ 'मणुयाणं' मनुनानां 'छिव्वहे' पह्विधं 'संघयणं' संहननम्-अस्थिसंचयः तत् 'पह्विधं-वजऋषभनाराच १ ऋपभनाराच २ नाराच ३ अर्द्धनाराच ४ कीलिका ५ सेवार्त्त ६ भेदात् 'जाव' यावत्-अत्र यावत्पदेन 'छिव्वहे संठाणे पंचधणुसयाइं उद्धं उच्चे-तेणं जहण्णेणं अंतोमुहुतं उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउयं पार्छेति पार्छेता अप्पेगइया णिरयगामी जाव अप्पेगइया सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वायंति' इति सङ्ग्राह्मम् एतच्छाया-'षड़-विधं संस्थानं पञ्चधनुः शतानि उर्ध्वमुच्चत्वेन जधन्येन अन्तर्महूर्त्तम् उत्कर्षण पूर्वकोठचायुः पायलन्ति पालयित्वा अप्येकके निरयगामिनः यावत् अप्येकके सिद्धचन्ति बुध्यन्ते मुच्यन्ते परिनिर्वान्ति' इति 'सब्बदुक्खाणमंतं' सर्वदुक्खानामन्तं 'करेति' कुर्वन्ति एषां व्याख्या परिनिर्वान्ति' इति 'सब्बदुक्खाणमंतं' सर्वदुक्खानामन्तं 'करेति' कुर्वन्ति एषां व्याख्या

प्रकार का आयार भावपड़ोयारे' आकार भाव प्रत्यवतार आकार माने स्वरूप भाव-अन्तर्गत भाव अर्थात् संहननादि पदार्थ उन दोनों के साथ प्रत्यवतार पादुर्भाव 'पण्णते?' कहा है ? इस प्रश्न के उत्तर में भगवान कहते हैं -'गोयमा!' हे गौतम! 'तेसिं' उस दक्षिणाई विजय में उत्पन्न हुए 'णं मणुयाणां' मतुष्यों के 'छिन्वहे' छह प्रकार का 'संवयणे' संहनन अर्थात् अस्थिसंचय-वह छप्रकार वज्रऋषभनाराचरे, ऋषभनाराचरे, नाराचरे, अर्द्धनारणं ४, कीलिका ५, सेवार्स ६, के भद से हैं 'जाव' यावत् यहां यावत्पद से 'छिन्वहे संठाणे पंच घणुसयाइं उद्धं उच्चते णं जहणोणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुन्वकोडी आउयं पालेति पालेला अप्पेगइया निरयगामी जाव अप्पेगइया सिज्झति बुज्झति मुच्चंति परिणित्वा-यंति' इन पदों का संग्रह हुवा है। इस का अर्थ इस प्रकार है –छ प्रकार का संस्थान है, पांचसो घनुष के अंचे है, जयन्य से अन्तर्महूर्त की एवं उत्कृष्ट से पूर्वकोटि की आयुवाले हैं आयु के क्षय होने पर कितनेक माक्षगामी होते हैं यावत् कितनेक सिद्ध, वुद्ध एवं मुक्त होते हुए परिनिर्घाण को प्राप्त कर के 'सन्व दुःखाणमंतं

यारे' आंधार लाव अने अत्यवतार अर्थात् आंधार ओटले स्वरूप लाव ओटले आंतर्शत लाव अर्थात् संक्रनािंद पदार्थ अत्यवतार—आहुलांव 'पण्णत्ते' केहेल छे ? आ अक्षना अवालमां अलुश्री केहे ——'गोयमा!' है जीतम! 'तेसिं' ओ दक्षिणार्ध विश्वमां उत्पन्न ध्येला 'णं मणुयाणं' मनुष्येाना 'छिव्वहें' छ अधारना 'संघयणे' संक्रनन अर्थात् अस्थि संअथ छे. ते छ अधार आ अमाणे छे.—वळ्ळपलनाराय १, ऋषलनाराय २, नाराय ३, अर्धनाराय ४; धिक्षा प, सेवार्त कराि छे. 'जाव' यावत् अहीं यां यावत्पदथी 'छव्विहें संठािणे पंचधणुसयाई उद्धं उच्चत्तेंण जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्षोसेणं पुव्वकोडी आउयं पालेंति पालेता अप्पेगइया निरयगामी जाव अप्पेगईया सिज्झेति, मुच्चेत्ति, परिणिञ्चायंति' आ पहािना संअक्ष थयेल छे. आने। अर्थ आ अमाणे छे.—छ अधारना संस्थान छे. पांचसा धनुष केटला डिंया छे. क्राना अर्थ आ अमाणे छे.—छ अधारना संस्थान छे. पांचसा धनुष केटला डिंया छे. क्रान्यथी अन्तर्भु दुर्तनी अने उत्कृष्ट्यी पूर्व क्रांटिनुं आयुष्य छे. आयुना

चैकादशस्त्राद् बोध्या। एवं चास्य कर्मभूमिरूपत्वं निर्णीतम् अथास्य सीमाकारी वैताहच-पर्वतः कुत्रास्त्रीति पृच्छति—'किह णं' इत्यादि वव खल्ल 'मंते! भद्रन्त! 'जंबुदीवे दीवे' जम्बूद्वीपे द्वीपे 'महाविदेहे वासे' महाविदेहे वर्षे 'कच्छे' कच्छे 'विजप' विजये 'वेयद्धे' वैताहचः 'णामं' नाम 'पञ्चए!' पर्वतः ? प्रज्ञप्त इति शेषः, इति प्रश्ने भगवानाह— 'गोयमा!' गौतम! 'दाहिणद्धकच्छविजयस्स' दक्षिणार्द्धकच्छविजयस्य 'दाहिणेणं' दक्षिणेन दक्षिणदिश्चि 'चित्तकूडस्स' चित्रकूटस्य पर्वतस्य 'पचित्थमेणं' पश्चिमेन पश्चिमदिश्चि 'माल्ठ-वंतस्स' माल्यवतः माल्यवन्नालकस्य 'वक्खारपञ्चयस्सा वक्षस्कारपर्वतस्य 'पुरत्थिमेणं' पौर्दत्ये-न—पूर्वदिश्चि 'एत्थ' अत्र—अत्रान्तरे 'णं' खल्ल 'कच्छे विजए' कच्छे विजये 'वेयद्धो णामं'

करें ति' समस्त दुःखों का अन्त-पार करते हैं। इस की समग्र व्याख्या ग्यारहवें सूत्र से समझलेवें। इस प्रकार इस का कर्मभूमिरूप निरूपित किया है।

अब सीमाकारी बैताढ्य पर्वत कहां पर है ? इस विषय की गौतमस्वामी प्रच्छा करते हैं—'किह णं मंते!' हे भगवन कहां पर 'जंबुदीवे दीवे' जंबूदीप नाम के बीप में 'महाबिदेहे वासे' महाबिदेहक्षेत्र में 'कच्छे विजए' कच्छनाम का विजय में 'वेयद्ध' बैताढ्य 'णामं' नामका 'पव्वए' पर्वत कहा है ? इस प्रश्न के उत्तर में श्री महाबीर प्रभु कहते हैं—'गोयमा!' हे गौतम 'दाहिणद्ध कच्छविजयस्स' दक्षिणार्द्ध कच्छविजय की 'दाहिणेणं दक्षिणदिशा में 'चित्तकूडस्स' चित्रकूट पर्वत की 'पच्चित्रमेणं' पश्चिमदिशा में 'मालवंतस्स' माल्यवान नाम के 'वत्रखारपव्वयस्स' वक्षस्कार पर्वत की 'प्रित्थमेणं' पूर्विद्शा में 'एत्थ' यहां पर 'णं' निश्चित 'कच्छे विजए' कच्छविजय में 'वेयद्धो णाम पव्वए' वैताढ्य नाम का पर्वत 'पण्णत्ते' कहा है 'तं जहा' वह पर्वत कैसा है ? सो कहते हैं—

क्षय थवाथी કેટલાક માહ્મગામી થાય છે. યાવત્ કેટલાક સિદ્ધ, ભુદ્ધ, અને મુક્ત થઇ ને પરિનિર્વાણને પ્રાપ્ત કરીને 'सब्ब दुक्खाणमंतं करें ति' સઘળા દુઃખાના અંત-પાર કરે છે. આની તમામ ત્યાખ્યા અગીયારમાં સૂત્રમાંથી સમજ લેવી. આ રીતે આમનું કમંબ્રિ રૂપ નિરૂપણ કરેલ છે.

હવે सीमाधारी वैतादय पर्वत क्यां आवेद छे? आ विषय संभिधी गौतमस्वामी प्रश्न करें छे.—'कहिणं मंते!' है अगवन्! क्यां आगण 'जंबुदीवे दीवे' अंभूदीप नामना दीपमां 'महाविदेहे वासे' महाविदेह क्षेत्रमां 'कच्छे विजए' क्ष्य नामना विअथमां 'वेयह्ने' वैतादय 'णामं' नामना 'पच्वए' पर्वत कहेंद्व छे?

न्या પ્રश्नना ઉત્તરમાં મહાવીર પ્રભુશ્રી કહે છે.—'गोयमा!' હે ગૌતમ! 'दाहिणद्व कच्छविजयस्स' દक्षिणाध કચ્છ વિજયની 'दाहिणेणं' દक्षिण દિશામા 'चित्तकृष्टस्स' ચિત્રફ્રુટ પર્વ-તની 'पच्चित्थिमेणं' પશ્चિમ દિશામાં 'माळवंतस्स' માલ્યવાન્ નામના 'वक्रसारपञ्चयस्स' વક્ષસ્કાર પર્વતની 'पुरस्थिमेणं' પૂર્વ દિશામાં 'एत्थणं' ત્યાં આગળ 'कच्छे विजए' કચ્છ पव्यप्' वैतादचो नाम पर्वतः 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तः 'तं जहा' तचथा-व्यविदेतत्पाठो नास्ति, स च की हकाः ? इति जिज्ञासायामाइ-'पाईणपडीणायए' प्राचीनप्रतीचीनायतः-पूर्वपश्चिमदिशो र्दीर्घः 'उदीणदाहिणविश्थिण्णे' उदीचीनदक्षिणविस्तीर्णः-उत्तरदक्षिणदिशो विस्तारयुक्तः 'दुहा' द्विधा 'वक्खारपञ्चए' वक्षस्कारपर्वतौ 'पुट्टे' स्पृष्टः स्पृष्टवान् अत्र स्पृश् धातोः कर्तरिक्त प्रस्ययस्तेन कर्मणि द्वितीया, एतदेव स्पष्टीकरोति 'पुरित्थिमिल्लाए' पौरस्त्यया पूर्विद्मिनया 'कोडीए' कोटचा—अग्रभागेन 'जाव' यावत् यावत्पदेन-'पुरिधमिल्लं वक्खारपव्वयं पच्च-त्थिमिल्लाए कोडीए पच्चित्थिमिल्लं वक्खारपव्वयं' इति सङ्ग्राह्यम् एतच्छाया-'पौरस्त्यं वक्षस्कारपर्वतं पाश्चात्यया कोटचा पाश्चात्यं वक्षस्कारपर्वतम्' इति, एतद्वचाख्या सुगमा, प्ताभ्यां (दोहि वि) द्वाभ्यामपि कोटीभ्यां पूर्वेक्ति पौरस्त्यपाश्चात्यौ चित्रक्टमाल्यवन्तौ वक्षस्कारपर्वतौ (पुद्धे) स्पृष्टः स्पृष्टवान एवं सः (भरहवेयद्धसरिसए) भरतवैताढणसदशकः भरतवर्षवर्तिवैताढचवत् रजतमयत्वाद्वचकसंस्थानसंस्थितत्वाच्च बोध्यः (णवरं) नवरं-केव-लम् (दो बाहाओ) हे बाहे (जीवा) जीवा (धणुपुट्टं च) धनुष्पृष्ठं चैतद्वस्तुत्रयं (ण कायव्वं) न 'पाईणपडीणायए' पूर्व एवं पश्चिमदिशा में वह छंवा है। 'उदीण दाहिणवित्थिणों' उत्तर एवं दक्षिणदिशा में विस्तार युक्त है। 'दुहा' दोनों तरफ 'वक्खारपब्वए' वक्षस्कार पर्वत 'पुद्दो' स्पृष्टः स्पृष्ट हैं' 'पुरिधमिल्लाए' पूर्वदिशा'संबंधी 'कोडीए' कोटी से 'जाब' यावत् 'पुरिक्थिमिल्लं वक्खारपव्वयं' पूर्वदिशा के वक्षस्कार पर्वत को 'पच्चत्थिमिछाए कोडीए' पश्चिमदिद्या संबंधी कोटी से 'पच्चित्थिमिल्लं बक्खारपब्बयं' पश्चिमदिशा के बक्षस्कार पर्वत को इस प्रकार ये 'दोहि बि' दोनों कोटी से पूर्वपश्चिम के चित्रक्ट एवं माल्यवन्त वक्षस्कार पर्वत 'पुट्टे' स्पृष्ट है। इस प्रकार वह 'भरह वेयद्धसरिसए' भरत वैतादय के समान अर्थात् भरत वर्षस्थित वैतादय के सददा-अर्थात् रजतमय एवं रुचक संस्थान में संस्थित होने से समझछेवें। 'णवरं' केवल 'दो बाहाओ' दो बाहा 'जीवा'

विजयमां 'वेयद्धे णामं पव्यए' वैतादय नामने। पर्वत 'पण्णत्ते' अदेव छे. 'तं जहां' ते पर्वत हैवे। छे । से अतावे छे. 'पाईणपडीणायए' पूर्व अने पश्चिम हिशामां ते क्षांणा छे. 'उद्गणदाहिणवित्थिणो' छत्तर अने हिशा हिशामां विस्तारवाणे। छे. 'उद्गाणदाहिणवित्थिणो' छत्तर अने हिशा हिशामां विस्तारवाणे। छे. 'उद्गाणदाहिणवित्थिणो' छत्तर अने हिशा हिशामां विस्तारवाणे। छे. 'उद्गाणदाहिणवित्थिणो' पर्वत 'प्रति 'पुट्ठे' स्पर्शे के 'पुरत्थिमिल्छाए' पूर्व हिशा सं अंधी 'क्षेत्र क्षेत्र पर्वतने 'प्रक्षिमिल्छाए कोडीए' पश्चिम हिशा सं अंधी है। हीथी 'प्रच्चिथिमिल्छं वक्षारपव्ययं' पश्चिम हिशाना वक्षस्कार पर्वतने के रीते के 'दोहिवि' पूर्व पश्चिम अने है। हिथी अर्थात् चित्रकृत अने माक्ष्यवान् वक्षस्कार पर्वतने 'पुट्ठे' स्पर्शे छे. आ रीते ते 'मरहवेयद्ध सित्सए' अरत अने वैतादय पर्वती सरेभा केटले है रत्नमय अने इयक संस्थानमां संस्थित है।वाथी तेम सम्ल क्षेत्र 'जवरं' हैवण दो वाहाओं के वाहा 'जीवा' छवा 'घणु-

कर्तव्यम्-न वर्णनीयम् त्याज्यम् अवक्रक्षेत्रवर्तित्वात् स्वम्बमागश्च न भरतवैतादयवदित्याह-(विजयविवर्खं भसरिसे) विजयविष्कमभसद्याः -विजयस्य - कच्छादिरूपस्य यो विष्कमभः -विस्तारः किञ्चिन्न्युनत्रयोदशाधिक द्वार्विशतिशतयोजनरूपस्तेन सद्दशः-तुल्यः (आयामेणं) आयामेन-दैध्यें अयम्भावः-कच्छादिविजयस्य यो विष्यम्भागः सो अस्य वैतादचस्यास्य यामभाग इति, (विक्खंभो) विष्कम्भः-विस्तारः (उच्चत्तं) उच्चत्वम् (उच्वेह) उद्वेधः-भूमिप्रवेशश्चेते (तहेव) तथैव-भरतवैताढचवदेव बोध्याः, तत्र-विष्क्रम्भः पञ्चाशद्योजनात्मकः, उच्चत्वं पश्चविश्वतियोजनरूपम् उद्वेधश्च-पश्चविंशतिक्रोशलक्षणो भरतवैताढचस्य (तहेव) तथैव अस्य वैताढचस्यापि, (च) च-पुनः (विज्जाहरथामिओगसेढीओ) विद्याध-राऽऽभियोख्यश्रेण्यौ-विद्यायराणामाभियोग्यानां च श्रेण्यो तत्र-विद्याधरश्रेण्यौ प्रथमदश्चयो-जनानन्तरं (तहेव) तथैव भरतवर्षवर्तिवैताढचवदेव बोध्ये (णवरं) नवरं केवलम् विशेषोऽयम् जीवा 'घणुपुडंच' धनुष्पृष्ठ ये तीनों 'ण कायव्वं' न कहे अवक्रक्षेत्रवर्ति होनें से पूर्वोक्त तीनों अवक्तव्य है। इस का दीर्घभाग भरत एवं वैतादय के सददा नहीं है। 'विजयविव खंभसरिसे' कच्छादि विजय का जो विस्तार अर्थात् कुछ कम बाबीससो तेरह २२१३ योजन २२५ उसके समान 'आयामेणं' दीर्घता से इस कथन का भाव यह है की कच्छादि विजय का जो विष्कम्भ भाग है वह इस वैताढय का आयाम भाग अर्थात् दीर्घ भाग है 'विक्खंभो' विष्कंभ-विस्तार 'उच्चत्तं' उर्चेचत्व 'उव्वेहो' उद्वेध भूमि के अन्तर्गत भाग ये सब 'तहेव' भरत एवं वैतादय के समानही समझहेवें, उसमें विष्कंभ प्यास योजनात्मक एवं उच्चस्व पचीस योजनात्मक एवं उद्वेघ पचीस कोशात्मक भरत वैतादय का जैसा कहा है 'तहेव' उसी प्रकार इस वैताढ्य पर्वत का भी समझना चाहिए' 'च' और 'विज्ञाहर आभिओगसेढीओ' विद्याधर एवं आभियोग्य देवों की श्रेणी उसी प्रकार कही है अर्थात् विद्याधरों की श्रेणी प्रथम दश योजन के

पुरुंच' धनुष्पृष्ट आ त्रशे 'ण कायव्यं' न अडेवा अवङक्षेत्रवर्ति होवाथी पूर्वोक्त त्रशे अहेवाना नथी. तेना लांणा लाग लरत अने वैताहयना केवा नथी 'विजयविक्खंभसिसे' अध्छाहि विकथना के विस्तार अर्थात् अंधि ओछा आवीस से। तेर २१९३ थे।कन३प तेनी समान 'आयामेणं' लंणाधियी छे. आ अथनना लाव के छे हे—अच्छाहि विकथना के विषक्षं लां के लेक लाग छे. ते आ वैताहयना आयाम लाग केटले लंणाधिवाणा लाग छे. 'विक्खंमें' विस्तार 'उच्चत्तं' ઉंथाधं 'उच्चेहों' उद्देश अर्थात् कमीननी अंहरना लाग के अधुं तहेव' सरत अने वैताहय पर्वतनी सरभा क सम्ल लेवा. तेमां विष्ठं स प० प्यास योकनात्मक अने हिंचाई प्रथिस योकनात्मक तथा हिंदेश पर्यास है।शात्मक (प्रयीस गाह केटले।) सरत वैताहयना के प्रमाशे केहल छे. 'तहेव' केक प्रमाशे आ वैताहय पर्वतना प्रश् सम्ल लेवा केहले के प्रमाशे केहल के प्रमाशे केहले छे. 'तहेव' केक प्रमाशे आ वैताहय पर्वतना प्रश् सम्ल लेवा केहले केहले केहले के प्रमाशे अने भिन्न केहले केहले

(पणपणां २) पश्चपश्चाशत् २ अस्य दक्षिणश्रेण्यां पश्चपश्चाशत् उत्तरश्रेण्यामिष पश्च पश्चाशत् (विज्जाहरणगरावासा) विद्याधरनगरावासाः (पण्णता) प्रज्ञप्ताः, भरतवर्षवर्तिवैतादश्यस्य तु दक्षिणश्रेण्यां पश्चाशत् उत्तरश्रेण्यां च षष्टि विद्याधरनगरावासाः ते त्वाभियोग्यश्रेण्यो विद्याधरश्रेण्योः पश्चपश्चाशत् पश्चपश्चाशद्विद्याधरनगरावासाः ते चाभियोग्यश्रेण्यो विद्याधरश्रेणभ्याम् अर्ध्व दश्योजनानन्तरं दक्षिणोत्तरभेदेन द्वेस्तः प्रत्येकं श्रेणौ समा विद्याधरनगरावासाः, ता श्रेणयः कस्य कस्येति जिज्ञासायामाह—'आभियोगसेदीए' आभियोग्यश्येण्याम् 'सीआए' सीताया महानद्याः 'उत्तरिक्टाओ' उत्तराद्यः उत्तरिक्शवाः 'सेदीओ' श्रेण्यः 'ईसाणस्स' ईशानस्य द्वितीयकटपेन्द्रस्य 'सेसाओ' श्रेषाः अवशिष्टाः सीता महानदीदक्षिणस्थाः श्रेणयः 'सक्कस्सत्ति' शक्रस्य प्रथमकटपेन्द्रस्य

अयम्भावः सीताया उत्तरदिशि ये विजयवैताहवास्तेषु यो दक्षिणोत्तरवर्तिन्य आभियोग्य पश्चात् 'तहेव' भरत वर्षविति वैताहय के सहश समझछेवें 'णवरं' केवल यही विशेषता है 'पणपण्णं' पचपन 'विज्जाहर णगरावासा' विद्याधरों के नगरावास इसकी दक्षिण श्रेणी में ५५ एवं उत्तर श्रेणी में भी ५५ विद्याधर नगरावास 'पण्णत्ता' कहा है भरतवर्षविति वैताहय पर्वत का दक्षिण श्रेणी में पूचास एवं उत्तर श्रेणी में ६० साठ विद्याधरों के नगरावास कहा है यही मेद-भिन्नता है। उसी मकार आभियोग्य श्रेणी से ५५ पचपन योजन विद्याधरों के नगरावास है। वे अभियोग्य श्रेणी विद्याधर श्रेणी से उपर दश योजनानन्तर दक्षिणोत्तर के भेद से दो कहे हैं। प्रत्येक श्रेणी में सरखें विद्याधरों के नगरावास है। वे श्रेणी किसकिसकी कही है? इस जिज्ञासा के शमनार्थ कहते हैं—'आभिओग से हीए' आभियोग्य श्रेणी 'सीआए' सीता महानदी के 'उत्तरिहाओ' उत्तर दिशा

દેવાની શ્રેણી એજ પ્રમાણે કહેલ છે. અર્થાત્ વિદાધરાની શ્રેણી પહેલા દસ યોજન પછી 'તहેવ' ભરત વર્ષમાં આવેલ વૈતાહયના સમાન સમજ લેવું. 'ળવર' દેવળ એજ વિશેષ્તા છે કે 'વળવળળં' પપ પંચાવન 'વિચ્ચાદ્દરનારાવાસા' વિદાધરાના નગરાવાસો એટલે કે આની દક્ષિણ શ્રેણીમાં પપ અને ઉત્તર શ્રેણીમાં પણ પપ વિદાધરાના નગરાવાસો 'વળળત્તા' કહેલા છે. ભરતવર્ષવર્તિ વૈતાહય પર્વતની દક્ષિણ શ્રેણીમાં પચાસ અને ઉત્તર શ્રેણીમાં દે સાઇઠ વિદાધરાના નગરાવાસો કહેલા છે. એજ આમાં જદાઇ છે એજ રીતે આભિયાય શ્રેણીથી પપ પંચાવન યોજન વિદાધરાના નગરાવાસો છે. તે આભિયાય શ્રેણીથી ઉપર દશ યોજન પછી દક્ષિણોત્તરના લેદથી એ કહેલ છે દરેક શ્રેણીમાં સરખા વિદાધરાના નગરાવાસો છે. તે શ્રેણી કાની કાની કહેલ છે? એ જજ્ઞાસની નિવૃત્તિ માટે સ્ત્રકાર કહે છે. 'આમિઓમસેટીપ' આભિયાય શ્રેણીમાં 'સીઆપ' સોતા મહાનદીના 'उત્તરિસ્છાઓ' ઉત્તર દિશાની 'સેટીઓ' શ્રેણીયા 'ईसાળસ્સ' ઇશાનદેવની 'સેસાઓ' બાકીની સીતા મહાનદીની દક્ષિણ દિશાની શ્રેણી 'સક્કસ્તત્તિ' શકેન્દ્રની કહેલ

श्रेण्यस्ताःसर्वाः सौधर्मेन्द्रस्य, अत्र बहुवचनं विजयवर्ति सर्ववैतादचश्रेण्यपेक्षया बोध्यम्, अथात्र क्टानि नामतो निर्दिश्वहाद-'क्डा' क्टानि यथा-'सिद्धे' सिद्धं सिद्धायतनक्टं १, तच्च पूर्वदिशि ततः पश्चमदिशि शेपाण्यष्टाविष क्टानि वक्तव्यानि यथा-'कच्छे' कच्छं-दक्षिणकच्छाद्धेक्चटं द्वितीयम् २, 'खंडग' खण्डीकं-खण्डप्रपातग्रहाक्टं तृतीयम् ३ 'माणी' माणि माणिभद्रक्टम् चतुर्थम् ४ नामैकदेशो नामग्रहणात् 'वेयद्ध' वैतादचक्टम् पश्चमम् ५ 'पुण्ण' पूर्ण भद्रक्टं पष्टम् ६ 'तिनिसग्रहा' तिमसग्रहा तिमसग्रहाक्टं सप्तमम् ७ 'कच्छे' कच्छं-कच्छक्टम् अष्टमम् ८ 'वेसमणे वा' वैश्वत्रणक्टं नवमम् ९ वा, एतानि नव 'वेयद्धे' वैतादच वैतादचपर्वते 'होंति' भवन्ति 'क्टाइं' क्टानि ॥१॥ इति ।

अथोत्तरकच्छविजयं पृच्छित-'किह णं' क्व खल्ल 'भंते !' भदन्त ! 'जंबुदीवे दीवे' की 'सेढीओ' श्रेणी 'ईसाणस्स' ईशान देवकी 'सेसाओ' शेष सीता महा नदी की दक्षिणिदशा की श्रेणी 'सक्कस्सित्ति' शकेन्द्र की कही है। इस कथनका भाव इस प्रकार है-सीता महा नदों की उत्तरिशा में जो विजय वैताल्य है, उसमें जो दक्षिणोत्तर दिग्वित आभियोग्य श्रेणीयां है, सब सौवर्नेन्द्र की कही है। यहां पर बहु वचन का प्रयोग विजयवित्त सर्व वैताल्य श्रेणियों की अवेक्षा से है।

अब नामिनिर्देशपूर्वक कूटों का कथन करते हैं - 'कूडा' कूटें यथा 'सिद्धे' सिद्धायतन कूट रे, वह पूर्व दिशामें हैं उसकी पश्चिम दिशामें शेष आठों कूट कहना चाहिए। कथा 'कच्छे' कच्छ-दक्षिणकच्छाई कूट यह दूसरा कूट है रे, 'खंडग' खंड कप्रपातग्रहाकूट नामका तीसरा कूट है रे, 'माणी' माणि भद्रकूट नामका चोथा कूट है ४, 'वेषद्ध' वैतादय कूट नामका पांचवां कूट है ५, 'पुण्ण' पूर्णभद्रकूट नामका छठा कूट है ६, तिमिसग्रहा' तिमिस्रग्रहाकूट नामका सातवां कूट है ७, 'कच्छे' कच्छकूट नामका आठवां कूट है ८, 'वेसमणे वा' वैश्रवणकूट नववां कूट है ९, ये नव 'वेयद्धे' वैतादयपर्वत में 'होति' होते हैं 'कूडाई' कूट होते हैं ॥ १॥

છે. આ કથનના ભાવ આ પ્રમાણે કે.-સીતા મહાનદીની ઉત્તર દિશામાં જે વિજય વિતાહય છે તેમાં જે દક્ષિણાત્તર દિગ્વર્તિ આભિયાગ શ્રેણીયા છે એ અધી સૌધર્મેન્દ્રની કહેલ છે. અહીંયાં બહુ વચનના પ્રયાગ વિજયવર્તિ સઘળી વૈતાહય શ્રેણિયાની અપેક્ષાથી છે.

હવે नाम निर्देश पूर्वं इरोतं क्थन कर छे-'कूडां' इरो के भड़े 'सिद्धे' सिद्धायतन कूर १, के कूर पूर्वं दिशामां छे. आक्षीना आठे कूर केंद्रेवा निर्ध के के भड़े-'कच्छे' क्वछ दक्षिण क्रच्छार्ध कूर का जीने कूर छे. २, 'खंडग' अंउक्षपात शुक्षाइर नामना त्रीने कूर छे. ३, 'माणी' मिश्रुक्षद्र कूर नामना थाये कूर छे. ४, 'वेयद्धा' वैतादय नामने। पांचमा कूर छे. 'पुण्णा' पूर्ण् लद्र कूर नामना छट्टी कूर छे ६, 'विमिसगुद्धा' तिमिसशुक्षा कूर सातमा कूर छे ७, 'कच्छे' क्वछ कूर नामना क्यारेमा कूर छे ८, 'वेसमणे वा' वैश्वषण्च नामना नवमा कूर छे. ६, ये नव कूर 'वेयद्धे' वैतादय पर्वतमां 'होति' है।य छे. 'कूडाइं' कूर हाय छे. ॥१॥

जम्बूद्वीपे द्वीपे 'महाविदेहे वासे' महाविदेहे वर्षे 'उत्तरद्धकच्छे णामं विजए' उत्तरद्धकच्छोनाम विजयः 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तः ? इति प्रक्षते भगवानुत्तरमाह—'गोयमा ! गौतमः ! वेयद्धस्त'
वैताद्व्यस्य 'पव्वयस्य' पर्वतस्य 'उत्तरेणं' उत्तरेण उत्तरिक्षि 'णीलवंतस्य' नीलवतः 'वासहरपव्ययस्य' वर्षपरपर्वतस्य 'दाहिणेणं' दक्षिणेन—दक्षिणदिशि 'मालवंतस्य' माल्यवतः
'वक्खारपव्वयस्य' वक्षस्कारपर्वतस्य 'पुरित्थमेणं' पौरस्त्येन—पूर्वदिशि 'चित्तकूडस्स' चित्रकूटस्य 'वक्खारपव्वयस्य' वक्षस्कारपर्वतस्य 'पच्चित्थमेणं' पश्चिमेन—पश्चिमदिशि 'प्रत्थ'
अत्र-अत्रान्तरे 'णं' खल्ड 'जंबुद्दीचे दीचे' जम्बूद्वीपे द्वीपे 'जाव सिज्झंति' यावत् सिद्धाधनित अत्र यावत्पदेन ।

'ऊत्तरद्धकच्छे णामं विजए पण्णते उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणवित्थिण्णे अट्ठजोयण-सदस्साई दोण्णिय एगसत्तरे जोयणसए एक्कं चं एगूणवीसइभागं जोयणस्स आयामेणं दो

अब गौतमस्वामी कच्छविजय के विषय में प्रभु से प्रदन करते हैं - 'कहि णं' कहां पर 'मंते' हे भगवन 'जंबुदीवे दीवे' जंबुदीप नामक द्वीपमें 'महाविदेहें वासे' महाविदेह वर्षमें 'उत्तरद्धय च्छे णामं विजए' उत्तरार्द्धकच्छ नामका विजय 'पण्णत्ते' कहा है ? इस प्रदन के उत्तर में भगवान श्री महावीर प्रभु कहते हैं - 'गोयमा!' हे गौतम! 'वेयद्धस्स' वैतादय 'पच्चयस्स' पर्वत की 'उत्तरेणं' उत्तर दिशामें 'णीलवंतस्स' नीलवान 'वामहरपच्चयस्स' वर्षघर पर्वत की 'दाहिणेणं' दक्षिणिद्शा में 'मालवंतस्स' माल्यवान 'वक्खार पच्चयस्स' वक्षस्कार पर्वत की 'पुरिक्थमेणं' पूर्व दिशामें 'चित्तकूडस्स' चित्रकूट नाम के 'वक्खार पच्चयस्स' वक्षस्कार पर्वत की 'पुरिक्थमेणं' पूर्व दिशामें 'चित्तकूडस्स' चित्रकूट नाम के 'वक्खार पच्चयस्स' वक्षस्कार पर्वत की 'पच्चित्रमेणं' पश्चिम दिशामें 'एत्थ' यहां पर 'णं' निश्चित 'जंबुद्दीवे दीवे' जंबुद्दीपनामक द्वीपमें 'जाव सिज्झंति' यावत सिद्ध होते हैं। यहां यावत्पद से 'उत्तरद्धकच्छे णामं विजए पण्णत्ते, 'उत्तरदाहिणायए, पर्दण

ह्वे गौतभस्वामी इच्छ विजयना विषयमां प्रसुने प्रश्न पूछे छे 'कहिणं' इयां आगण 'मंते!' हे सगवन् 'जंबुदीवे दीवे' जंजूदीप नामना दीपमां 'महाविदेहे वासे' महाविदेहे वासे' प्रश्निया पर्वति 'वासहरपद्यस्त' वेदाहेश पर्वति 'वाहिणेणं' हिशामां 'मालवंतस्त' माह्यवान् 'वक्खारपद्यस्त' वहारहार पर्वति 'पुरस्थिमेणं' पूर्व हिशामां 'वित्तकूडस्त' यिवहूट नामना 'वक्खारपद्यस्त' वहारहार पर्वति (पुरस्थिमेणं' पृत्व हिशामां 'वित्तकूडस्त' यिवहूट नामना 'वक्खारपद्यस्त वहारहार पर्वति ती 'पुरस्थिमेणं' पृत्व हिशामां 'वित्तकूडस्त' यिवहूट नामना 'वक्खारपद्यस्त वहारहार पर्वति ती 'पुरस्थिमेणं' पृत्व हिशामां 'वित्तकूडस्त' यावत् सिद्ध थाय छे. अही या यावत्पहथी 'उत्तरकच्छे णामं विजय पण्णते, उत्तर दाहिणायए पाईणपडीणविद्धिण्णे, अह जोयण सहस्साइं दोण्णिय एगसत्तरे जोयणसए एकं च एगूणवीसई भागं जोयणस्त आयामेणं दो जोयणसहस्ताइं

जोयणसहस्साई दोण्णि य तेरस्तरे जोयणसए किंचिविसेस्रणे विवसंभेणं पिछयंकसंठाण-संठिए, उत्तरद्धकच्छस्स णं भंते ! विजयस्स केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! बहुसमरमणिङ्जे भूमिभागे पण्णते तं जहा कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव जाव उवसोभिए, उत्तरद्धकच्छे णं भंते ! विजए मणुयाणं केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते ?, गोयमा ! तेसि णं मणुयाणं छिव्वहे संघयणे जाव बहुई वासाई पाठेंति पाठित्ता अप्पेगइया णियरगामी अप्पेगइया तिरियगामी अप्पेगइया मणुयगाभी अप्पेगइया देवगामी अप्पे-गइया' इतिपर्यन्तपदसङ्ग्रहो वोध्यः, एतच्छायाऽथें सुगमौ सिज्झंतीत्युपलक्षशं तेन 'बुङ्गंति, मुच्चंति, परिणिच्वायंति, सच्चदुक्खाणमंतं करेंति, इत्येषां सङ्ग्रहः एतद्वचाख्या चैकादशस्त्राद् ग्राह्या । एवं दक्षिणार्द्धकच्छवद् बोध्यम् एतदेव सचियतुमाह—'तहेव णेयव्वं सच्वं तथैव नेतव्यं सर्वमिति तथैव दक्षिणार्द्धकच्छवदेव सर्वम् आयामविष्कम्भादिकम् नेतव्यं बोधपथं प्रापणीयं बोध्यमित्यर्थः,

पडीणिवित्थिणो अह जोयणसहस्साई दोणिणय एगसत्तरे जोयणसए एकं च एग्णवीसहभागं जोयणस्स आयामेणं दो जोयणसहस्साई दोण्णिय तेरस्त्तरे जोयणसए किंचि विसेस्णे विक्लंभेणं पिल्यंकसंठाणसंठिए, उत्तरद्धकच्छस्स णं भंते! विजयस्स केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते? गोयमा! बहुसम रमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते' तं जहा-कित्तिमेहिं चेव अकिति मेहिं चेव जाव उवसोभिए, उत्तरद्धकच्छे णं भंते! विजए मणुयाणं केरिसए आयारभावपडो-यारे पण्णत्ते? गोयमा! तेसिणं मणुयाणं छिव्वहें संघयणे जाव बहुइं वासाइं पालेंति पालिता अप्येगइया णिरयगामी अप्येगइया तिरियगामी अप्येगइया मणुयगामी अप्येगइया देवगाथी अप्येगाइया' इन पदों का संग्रह हुआ है। इन पदों का अर्थ सुगम है अतः यहां नहीं दिया है। 'सिज्झंति' यह पद उपल-क्षण है अतः 'बुउझंति, मुच्चंति, परिणिव्वायंति, सव्बदुःखाणमंतं करेंति, इन पदों को भी ग्रहण करछेवें। और सब वर्णन दक्षिणाई कच्छ के वर्णन के जैसा

दोणिण य तेरपुत्तरे जोशणसए किंचिविसेसूणे विक्लंभेणं पिछ्यंकसंठाणसंठिए उत्तरद्धकच्छास णं मंते! धिजयस्स केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णते । गोयमा! बहुसमरमणिज्जे भूमि-भागे पण्णते । तं जहा कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव जाव उवसोभिए ! उत्तरद्धकच्छे णं मंते! विजय मणुयाणं केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णते ? गोयमा! तेसिणं मणुयाणं छिविवहे संघयणे जाव बहुई वासाई पालेति पालिता अप्पेगइया णिरयगामी अप्पेगइया तिरियगामी अप्पेगइया मणुयगामी अप्पेगइया देवगामी अप्पेगइया णिरयगामी अप्पेगइया तिरियगामी अप्पेगइया मणुयगामी अप्पेगइया देवगामी अप्पेगइया 'आ पहीनो संध्रह थये अ छे. आ पहीना अर्थ सरण छे. केथी अद्योग ते जतावेल नथी. 'सिज्झंति' आ पर छपलक्षण छे. तेथी 'बुज्झंति, मुच्चंति, परिणिव्यारंति सव्बदुःखाणमंतं करेति' आ परे छपलक्षण छे. तेथी 'बुज्झंति, मुच्चंति, परिणिव्यारंति सव्बदुःखाणमंतं करेति' आ परेति पणु अहुणु हरी लेवा जील्ज तमाम वर्णन हक्षिणाई हक्ष्मा वर्णननी लेम समल खेतुं. आ जतावना मारे सूत्रहारे 'तहेव णेयव्यं सव्यं' हिस्लार्ध हक्ष्मा वर्णननी सरुणु खेतुं. आ जतावना मारे सूत्रहारे 'तहेव णेयव्यं सव्यं' हिस्लार्ध हक्ष्मा वर्णननी सरुणु खेतुं. आ जतावना मारे सूत्रहारे 'तहेव णेयव्यं सव्यं' हिस्लार्ध हक्ष्मा वर्णननी सरुणु

अथैतदन्तर्विति सिन्धुकुण्डं विवर्णि धिषुराह-'कि ह णं मंते !' क्व खल भदन्त ! 'जंबुहीवे दीवे' जम्बूद्वीपे द्वीपे 'महाविदेहे वासे' महाविदेहे वाहें 'उत्तरद्धक च्ले विजय' उत्तराईकच्ले विजये 'सिंधुकुंडे णामं कुंडे' सिन्धुकुण्डं नाम कुण्डं 'पण्णत्ते ?' प्रज्ञप्तः ?, इति प्रश्ने
भगवानाह—'गोयमा !' गौतम ! 'मालवंतस्स' मालयवतः 'वक्खारपव्वयस्स' वक्षस्कारपर्वतस्य
'पुरिथमेणं' पौरस्त्येन-पूर्वदिशि 'उस्तमकू इस्स' ऋष्मकृटस्य 'पच्चित्थमेणं' पश्चिमेन
पश्चिमदिशि 'णीलवंतस्स' नीलवतः 'वासहरपव्वयस्स' वर्षधरपर्वतस्य 'दाहिणिल्ले' दािक्षणात्ये—दिक्षणिदिग्भवे 'णितंबे' नितम्बे—मध्यमागे मेखलारूषे 'एत्थ' अत्र अत्रान्तरे 'णं'
खल्ल 'जंबुदीवे दीवे' जम्बूदीपे द्वीपे 'महाविदेहे वासे' महाविदेहे वर्षे 'उत्तरहुकच्लविजए'
समझलेवें, यह कहने के लिए स्वत्रकार ने 'तहेच णेयव्वं सद्वं' उसी प्रकार
अर्थात् दिक्षणार्द्धकच्ल के वर्णन के सहदा सब वर्णन समझलेवें यह पद दिया
है। इसका आधाम विष्कंभ आदि सबवर्णन दिक्षणार्द्धकच्ल के कथनानसार समझलेवें।

अब उत्तरार्द्धकच्छविजय के अंतर्गत सिंधुकुंड का वर्णन करने की इच्छा से सूत्रकार कहते हैं—'किह णं भंते!' हे भगवन कहां पर 'जंबुदीवे दीवें' जंबूदीप नाम के द्वीपमें 'महाविदेहे वासे' महाविदेह वर्षमें 'उत्तरद्धकच्छे विजए' उत्तरा- ईकच्छ विजय में 'सिंधुकुंडे णामं कुंडे' सिंधुकुंड नामका कुंड 'पण्णत्त' कहा है ? इस प्रदन के उत्तर में महावीर प्रसुश्री कहते हैं—'गोयमा!' हे गौतम! 'मालवंतस्स' मालयवान नाम के 'वक्खारपव्चयस्स' वक्षस्कार पर्वत की 'पुरिध-मेणं' पूर्व दिशामें 'उसभक्रडस्स' ऋषभक्रट नाम के वक्षस्कार पर्वत के 'पच्चित्यमेणं' पिक्षम दिशामें 'णीलवंतस्स' नीलवंत 'वासहरपव्ययस्स' वर्षधर पर्वत के 'दाहिणिल्छे' दक्षिणदिशा के 'णितंबे' मध्यभाग में—मेखलारूप में 'एत्थणं' यहां पर 'जंबुदीवे दीवे' जंबूदीप नाम के द्विपमें 'महाविदेहे वासे' महाविदेह

તમામ વર્ણન સમજ દોવું. આ પદ આપેલ છે. આના આયામ વિષ્કંભાદિ સઘળું વર્ણન દક્ષિણાર્ધ કચ્છના વર્ણન પ્રમાણે સમજ લેવું.

हुवे उत्तरार्ध केन्छ विकयनी आंहर आवेत सिंधु कुंडनुं वर्धन करवानी कावनाथी सूत्रकार के छे-'कहि णं मंते!' है कावन क्यां आगण 'जंबुदीवे दोवे' लं णृदीप नामना द्वीपमां 'महाविदेहे वासे' महाविदेह वर्धमां 'उरद्वक्टछे विजए' उत्तरार्ध केन्छ विकयमां 'सिंधुकुंडे णामं कुंडे' सिंधुकुंडे नामना कुंडे 'पण्णत्ते' केहेत छे हैं आ प्रश्नना उत्तरमां महाविदेहें के 'गोयमा!' है गौतम! 'मालवंतस्स' माल्यवान नामना 'वक्लार-पन्वयस्स' वस्तरकार पर्वतनी 'प्रश्लिमेणं' पूर्व दिशामां 'उसमकूंडस्स' अपक कूट नामना वश्चकार पर्वतनी 'पच्चित्रमेणं' पश्चिम दिशामां 'जीलवंतस्स' नीसवंत 'वासहरपन्वयस्स' वर्धकार पर्वतनी 'पन्चित्रमेणं' पश्चिम दिशामां 'जीलवंतस्स' नीसवंत 'वासहरपन्वयस्स' वर्धकार पर्वतनी 'दाहिणिल्ले' दक्षिण दिशाना 'जितंवे' मध्य कागमां–मेणला ३पमां 'एत्य णं' सहीं आजण 'जंबुदीवे दीवे' लंभूदीप नामना दीपमां 'महाविदेहे वासे' महाविदेहे

उत्तरार्द्धकच्छविजये 'सिंधुकुंडं णामं कुंडं' सिन्धुकुण्डं नाम कुण्डं 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तम्, तच 'सर्हिं' षष्टिं 'जोयणाणि' योजनानि 'आयामविक्खंभेणं' आयामविष्कम्भेण-दैर्ध्य-विस्ताराभ्याम् 'जाव भवणं' यावद् भवनं-भवनपर्यन्तम् वर्णनीयम् 'अहं' अर्थः-सिन्धुकुण्डेति नामार्थः'राय-हाणी' राजधानी 'य' च 'णेयव्वा' नेत्व्या प्रापणीया बोध्या, ळाघवार्थमतिदेशमाह-'भरह-सिंधुकुंड सरिसं सव्वं णेयव्वं भरतसिन्धुकुण्डसदृशं सर्वं नेतव्यं भरतवर्षवर्ति सिन्धुकुण्डवत् सर्व नेतव्यम् ज्ञेयम्। तच्च किम्पर्यन्तम् इत्याह-'जाव' इत्यादि-यावत् 'तस्स' तस्य 'णं' खछ 'सिंधुकुंडस्सं' सिन्धुकु॰डस्य 'दाहिणिच्छेणं' दाक्षिणात्येन दक्षिणदिग्भवेन 'तोरणेणं' तोर-णेन बहिद्वरिण 'सिंधुमहाणई' सिन्धुमहानदी 'पवूढा' प्रव्यूढा निर्गता 'समाणी' सती 'उत्तरद्ध कच्छविनयं' उत्तरार्द्धकच्छविजयम् 'एउजेमाणी २' इर्थतो २ भूयो भूयो गच्छन्ती 'सत्तर्हिं' सप्तिः सिल्लासहस्सेहिं सिल्लासहस्नैः-नदीसहस्नैः 'आपूरेमाणीर' आपूर्यमाणा २ पुनः वर्षमें 'उत्तरहुकच्छविजए' उत्तराद्धीकच्छविजय में 'सिंधुकुंडे णामं कुंडं' सिन्धुकुंड नामका कुंड 'पण्णत्ते' कहा है। वह सिंधुकुंड 'सिंहें' साइठ ६० 'जीयणाणि' योजन 'आयाप्रविक्खंभेणं' लंबाई चोडाई से कहा है 'जाव भवणं' यावत् भवत के वर्णन पर्यन्त का वर्णन करछेवें 'अहं' सिंधुकुंड के नामार्थ 'रायहाणी' उसकी राजधानी 'य' एवं 'जेयव्वा' सब वर्णन समझछेवें इस वर्ण को संक्षेत्र करने के हेतु से अतिदेश द्वारा सूत्रकार कहते हैं-'भरहसिंधुकुंड-सरिसं सन्वेणियन्वं' भरतकुंड के वर्णन के समान समग्र वर्णन समझलेवें। वह वर्णन यहां कहांतक का ग्राह्य है ? इस के लिए कहते हैं 'जाव' इत्यादि यावत् 'तस्स णं' उस 'सिंयुक्जं डस्स' सिंयुक्जं ड कि 'दाहिणिल्छेणं' दक्षिणदिशा के 'तोरणेणं' बहिद्यार से 'सिंयुमहाणई' सिंयु महा नदी 'पब्ढासमाणी' निकलती हुई 'उत्तरद्वकच्छविजयं' उत्तराद्विकच्छविजय को 'एउजमाणी२' स्पर्धं करती हुई२ 'सत्ति हैं' सात 'सिलला सहस्से हिं' हजार नदीयों से 'आपूरे-

वर्षमां 'उत्तरद्धयच्छिविज्ञर' उत्तरार्ध ४२७ विजयमां 'सिंघुकुंडे णामं कुंडं' सिंधुडं अनामने। डुं उं 'पण्णते' रहें छे. ये सिंधुडं उं 'सिंहुं' सार्धि ६० 'जोयणाणि' येलिन 'आयाम विक्लंमेणं' लंजार्ध पहें।जार्ध्यी रहें छे. 'जाव मवणा यावत् लवनना वर्ष्धन पर्यातनुं वर्ष्धन हरी लेवुं. 'अहुं' सिंधुडुं उना नामार्थ 'रायहाणीय' राज्धानी विजेरे 'णेयव्वा' सह्युं वर्ष्धन सम्ल लेवुं. या वर्ष्धनने संक्षेप डरवाना हेतुथी वर्षित हरा दारा सूत्रकार रहें छे. 'भरहिंधुकुं इसिरसं सव्वं णेयव्वं' सरत्रकुं उना वर्ष्धन प्रभाणे सह्युं वर्ष्धन समल लेवुं. ये वर्ष्धन वर्ष्धन अस्तुं हर्षित्रकुं इस्त' सिंधुकुं इस्त' सिंधु इंउनी 'व्हिणिल्लेगं' हिस्सु हिशाना 'तोरणेंगं' अहिद्दिश्यी 'सिंधुमहाणई' सिंधु महानदी 'पवृद्धा समाणी' नीर्डणीने 'उत्तरकच्छविज्यं' उत्तरार्ध रूथ विजयने 'एन्जमाणी २' रपर्धाती रपर्याती 'सत्तहं' सात 'सल्लेखासहस्सेहं' हर्णर नहीं थे। 'आपूरेमाणी २' वारंवार सर्दी

युनः सम्पूरिता भवन्ति 'अहे' अधः अधोमामे 'तिमिसगुहाए' तिमिसगुहायाः 'वेयद्भुप्व्वयं' वेताद्वयपर्वतं 'दालियत्ता' दारियत्वा 'दाहिणकच्छविजयं' दक्षिणवच्छित्रियम् 'एज्जेमाणी २' इयेती २ पुनः पुनः, गच्छन्तो 'चोइसिंहं' चतुर्दशिमः 'सिललासहस्तेहि' सिल्लासहस्तेः 'समग्गा' समग्रा—सम्पूर्णा 'दाहिणेणं' दक्षिणेन- दक्षिणिदिशि 'सीयं' सीतां 'महाणइं' महानदीं 'समप्पेह' समाप्नोति सम्—सम्यक्तया आप्नोति गच्छिति प्रविश्वतीतिभावः, 'सिंधु-महाणई' सिन्धुमहानदी 'पवहे' प्रवहे—समुद्रप्रवेशे 'य' च पुनः 'मूले' मूले निर्गमस्थाने 'य' च 'भरहिसंधुसिरसा' भरतिसन्धुसहशी भरतवर्षवर्ति सिन्धुमहानदीवत् 'पमाणेणं' प्रमाणेन आयामविष्कमभादिमानेन इत्यारभ्य 'नाव दोहिं वण्डंडेहिं संपरिविखत्ता' यावद् द्वाभ्यां वनपण्डाभ्यां सम्परिक्षिप्ता परिवेष्टिता इति पर्यन्तं वर्णनं बोध्यम् । एतत्सर्वं भरतवर्षवर्ति सिन्धुमहानदी प्रकरणतो ग्राह्यम् ।

अयोत्तराईकच्छान्तर्वति ऋषमक्रं पर्वतं दर्णियतुमाह—'किह णं मंते!' वव खलु माणीर' बार बार पूरित होती हुई 'अहो' अघो भागमें 'तिमिसगुहाए' तिमसा गुहामें 'वेयद्धपट्वयं' वैताहयपर्वत को 'दालियसा' पार कर के 'दाहिणकच्छिवजयं' दक्षिणिदिशा के कच्छिवजय को 'एज्जमाणीर' बार बार स्पर्शती हुई 'चोदसिहें' चतुर्दश चौदह 'सिलिलासहस्सेहिं' १४ हजार नदीयों से 'समग्गा' सम्पूर्ण होती हुई 'दाहिणेणं' दक्षिण दिशामें 'सीयं 'महागई' सीता महानदो को 'समप्येई' प्राप्त करती है अर्थात् सीता महा नदी में मिलती है। 'सिंधुमहाणई' सिंधु महा नदी 'पवहेय' समुद्रप्रवेश में और 'मुले' मुलमें अर्थात् उद्गमस्थान में 'य' और 'मरह सिंधुसिरिसा' भरत-वर्षगत सिंधु महानदी के जैसी 'पमाणेणं' आयामविष्कभादि प्रमाण से यहां से आरम्भ कर 'जाव दोहिं वणसंडेहिं संपरिक्षित्वसा' यावत् दो वनषण्डों से वेष्टित होती हुई इस कथन पर्यन्त का सम्पूर्ण वर्णन समझ्छेवें। यह सब वर्णन भरत-वर्ष में रही सिंधुमहा नदी के वर्णनावश्वर से समझ्छेवें।

थंडी 'अहे' अधे। लागमा 'तिमिसगुहाए' तिभिक्षगुद्धामां 'वेयद्भप्टवयं' वैतादय पर्वतने 'दालियता' पार करीने 'दाहणकच्छविजयं' दक्षिणु दिशाना कच्छ विजयने 'एक्जमाणीर' स्पर्शती स्पर्शती 'चोइसिंहं' औद 'सिल्लासहरसेंहिं' दुलर नहींथेथी 'समगा लराती लराती 'दाहिणेंगं' दक्षिणु दिशामां 'सीयं महाणइं' सीता महानहींने 'समलेंइ' प्राप्त करे छे. अर्थात् सीता महानहींने भणे छे. 'सिंधु महाणई' सिंधुमहानहीं 'पवहेय' समुद्र प्रवेशमां अने 'मूले' गूणमां ओटसे के अत्पत्ति स्थानमां 'य' अने 'मरहसिंधु सिरसा' लरत वर्णमां आवेद सिंधु महानदीना केवी 'पमाणेंगं आयाम विष्कं लाहि प्रमाण्यी अहीं थारं आरंभीने 'जाव दोहिं वणसंडहिं संपरिक्षित्तता' यावत् के वनव देशि वीटणाती आ कथन पर्यन्तनं पुरेपुरं वर्णन सम्ल क्षेत्रं. आ अधुं वर्णन लरतवर्णमां आवेद सिंधुमहा नहीना वर्णन प्रसंगथी सम्ल क्षेत्रं.

भदन्त ! 'उत्तरद्धकच्छविजए' उत्तरार्द्धकच्छविजये 'उसभकूडे णामं' ऋषभक्टो नाम 'पञ्चए' पर्वतः 'पण्णचे ?' प्रज्ञप्तः ?, इति प्रश्ने भगवानाह—'गोयमा !' गौतम ! 'सिंधुकुंडस्स' सिन्धुकुण्डस्य 'पुरित्थमेणं' परिस्त्येन पूर्विदिशि 'गंगाकुंडस्स' गङ्गाकुण्डस्य 'पच्चित्थमेणं' पश्चिमेन पश्चिमदिशि 'णीलवंतस्स' नीलवतः 'वासहरपच्वयस्स' वर्षभरपर्वतस्य 'दाहिणिल्ले' दाक्षिणात्ये 'णितंबे' नितम्बे मध्यभागे मेखलालक्षणे 'एत्थ' अत्र अत्रान्तरे 'णं' खल्छ 'उत्तरद्धकच्छविजए' उत्तरार्द्धकच्छविजये 'उसहकूडे' ऋषभक्षटः 'णामं' नाम 'पञ्चए' पर्वतः 'पण्णते' प्रज्ञमः, स च 'अद्व' अष्ट 'जोयणाइं' योजनानि 'उद्धं' ऊर्ध्वम् 'उच्चतेणं' उच्चत्वे त्वेन प्रकाः 'तं चेव' तदेव एकोनिविश्वतितमस्त्रोक्तोत्तरार्द्धभरतवर्षवर्तिऋपभक्षटपर्वतवदेव 'पमाणं' प्रमाणम् उच्चत्वोद्देधादिमानं बोध्यम् एवं तत्रत्यः सर्वे वर्णकोऽत्र ग्राह्यः, स च

अब उत्तराई यच्छ के अन्तर्वति ऋषभक्र पर्वत का वर्णन करते हुवे सूत्रकार कहते हैं—'किह णं भंते!' हे भगवन कहां पर 'उत्तर इकच्छिवजए' उत्तराईकच्छिवजय में 'उस्त भक्क हे नामं' ऋषभक्र नामका 'पव्यए' पर्वत 'पण्णत्ते' कहा
है? इस प्रश्न के उत्तर में भगवान श्री कहते हैं—'गोयना!' हे गौतम!
'सिंधुक इस्स सिंधुक इकी 'पुरित्थमेणं' पूर्विदेशा में 'गंगाक इस्स' गंगाक इ की
'पच्चित्थमेणं' पश्चिमिद्शा में 'णील वित्स' नीलवान 'वासहरपव्ययस्स' वर्षधर
पर्वत की 'दाहिणि रखें' दक्षिण का 'णि किं में स्व ठाका प्रध्यभाग में 'एत्थणं'
यहां पर 'उत्तर इकच्छित्वणं' उत्तराई यच्छ विजय में 'उसहक् हे' ऋषभक्ष्र
'णामं' नामका 'पव्यणं' पर्वत 'पण्णत्ते' कहा है। वह पर्वत अष्ट' आठ' जोयणाहं'
योजन 'उद्धं उच्चत्तेणं' उपर की ओर उंचा है। 'तं खेव' उत्तीसवें सूत्रमें
कहा गया उत्तराई भरत वर्ष ऋषभक्ष्र पर्वत के कथनानुसार ही 'पमाणं'
प्रमाण अर्थात् उच्चत्व उद्धेष आदि मान जानना चाहिए। इसी प्रकार ऋषभक्ष्र

डवे उत्तरार्ध इव्छना आंतर्वति अषकारूट पर्वतनुं वर्धन इरतां सुत्रकार कडे छे-'कहि णं मंते !'डे कागवन् क्यां आजण 'उत्तरसङ्क्छविजए' उत्तरार्ध कव्छ विकयमां 'उसमकूडे णामं' अपन हुट नामना 'पट्यए' पर्वत 'पण्णत्ते' के से छे ?

आ प्रश्नना उत्तरमां प्रज्ञुश्री ४६ छे 'गोगमा!' है गौतम! 'सिंगुकुंडस्स' सिंधु कुंडनी 'पुरिश्यमेणं' पूर्व दिशामां 'गंगाकुंडस्स' गंगा कुंडनी 'पच्चित्र्यमेणं' पश्चिम दिशामां 'णीलवंत्रस्स' नीसवान् 'वासहरपञ्चयस्स' वर्षधर पर्वतनी 'दाहिणिल्ले' दक्षिणु लागना 'णितंवे' मध्य लागमां 'एत्थणं' अहीं आगणा 'उत्तरद्धकच्छविजए' उत्तरार्ध ४२७ विक्यमां 'उत्तहकूहे' अपल ६८ 'णामं' नामना 'पृत्वए' पर्वत 'पण्णते' ४हेस छे. से पर्वत 'अहुं अहुं आई 'जोगणाइं' थे।कन 'उद्धं उच्चत्तंणं' उपरनी आल्ड हिंथा छे 'तं चेव' से।गाल्डीन समां सूत्रमां ४हेवामां आवेस उत्तरार्ध लरत वर्षवित् अपल ६८ पर्वतना ४थन प्रमाणेनुं 'प्रमाणं' प्रमाणु अर्थात उत्थल, इद्देध, विगेर भाष सम्ल केवुं.

किम्पर्यन्तः इत्याह-'अश्व रायहःणी' यावद् राजधानी राजधानीवर्णकपर्यन्तः, किन्तु तत्र दक्षिणेन राजधानी प्रोक्ता अत्र तु 'से' सा राजधानी 'णवरं' केवलं 'उत्तरेणं' उत्तरेण उत्तर-दिश्चि 'भाणियन्वा' भणितन्या—वक्तन्या, अन्यत् सर्वं तद्वदेव वर्णनीयभिति । विशेषिज्ञाः-सुभिरेकोनिर्वेशितिमसूत्रं विलोकनीयम्। अथैतदन्तर्वितंगङ्गाकुण्डं वर्णयितुम।६—'कहि णं मंते !' इत्यादि वव खळ भदन्त ! 'उत्तरद्धकच्छविजए' उत्तरार्द्धकच्छविजये 'गंगाकुं हे' गङ्गाकुण्डं 'णामं' नाम 'कुं हे' कुण्डं 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तम् ?, इति प्रश्ने भगवानाह—'गोयमा !' गौतम । 'चित्तकूडस्स' चित्रकूटस्य 'ववसारपव्ययस्स' वक्षस्कारपर्वतस्य 'पच्चित्थमेणं' पश्चिमेन पश्चिमदिश्चि 'उस्तभकूडस्स' ऋपभकूटस्य 'पच्चयस्स' पर्वतस्य 'पुरित्थमेणं' पौरस्त्येन—पूर्वदिश्चे 'णीलवंतस्स' नीलवतः 'वासहरपव्ययस्स' वर्षपरपर्वतस्य 'दाहिणिह्ले' दाक्षिणात्ये

पर्वत का समग्र वर्णन यहां समझलेना चाहिए। वह वर्णन कहां तक का ग्रहण करना इस के लिए कहते हैं 'जाव रायहाणी' यावत् राजधानी के वर्णन पर्यन्त का सभी वर्णन यहां पर समझलेवें। परंतु वहां पर राजधानी दक्षिणदिशा में कही गई है, एवं यहां पर 'से' वह राजधानी 'णवरं' केवल 'उत्तरेणं' उत्तर दिशामें भाणियव्वा' कहनी चाहिए। और सभी कथन वहां के वर्णनानुसार वर्णित करलेवें। विशेष जिज्ञासुओं को उन्नीसवां सूत्र देखलेना चाहिए।

अब उसके अन्तर्वित गंगाकुंड का वर्णन करने के हेतु से कहते हैं-'किह णं भंते!' इत्यादि हे भगवन कहां पर 'उत्तरद्धकच्छविजए' उत्तरार्द्धकच्छविजय में 'गंगाकुंडे' गंगाकुंड 'णामं' नामका 'कुंडे' कुंड 'पण्णत्ते' कहा है? इस प्रदन के उत्तर में श्री महाबीर प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा!' हे गौतम! 'चित्त-कूडस्स' चित्रकूट 'वक्खारपव्वयस्स' वक्षस्कारपर्वत की 'पच्चित्थमेणं' पश्चिम दिशामें 'उसभकूडस्स' ऋषभकूड 'पव्वयस्स' धर्वत की 'पुरत्थिमेणं' पूर्वदिशामें

ढेवे तेनी आंदरआवेस गंगांडुउनुं वर्णुन करवाना हेतुथी कहे छे 'कहिणं मंते!' सगवन् क्यां आगण 'उत्तरद्धकच्छविजर' उत्तरार्ध कच्छ विकथमां 'गंगाकुंडे' गंगांडुंडे 'णामं' नोमना 'कुंडे' कुंडे 'वण्णत्ते' कहेस छे ? आ प्रश्नना उत्तरमां महावीर प्रसु श्री कहे छे-'गोयमा!' हे गौतम! 'चित्तकृहस्स' थिश्रकृट 'वक्खारवव्वयस्स' वृक्षस्कार पर्वतनी 'वस्विक्षमेणं' पश्चिम दिशामां 'उसमकृहस्स' अष्यस कुट 'वव्ययस्स' प्रवर्तनी 'पुरिक्षमेणं'

के अभाषे अगल કૂટ પર્વતનું સંપૂર્ણ વર્ણન અહીં યાં સમજ હેવું. તે વર્ણન ક્યાં સુધીનું અહણ કરતું? એ માટે કહે છે—'जाव रायहाणी' યાવત રાજધાની પર્યન્તનું અધુ વર્ણન અહીં યાં સમજ હેવું ને કએ પરંતુ ત્યાં રાજધાની દક્ષિણ દિશામાં કહેલ છે. અને અહીં યાં 'સે' એ રાજધાની 'णवरं' કેવળ 'उत्तरेणं' ઉત્તર દિશામાં 'માળિયચ્ચા' કહેવી ને અહીં યાં 'સે' એ રાજધાની 'णवरં' કેવળ 'उત્તરે છે. હતા દિશામાં 'માળિયચ્ચા' કહેવી ને અહીં એ. ખીજાં તમામ કથન ત્યાંના વર્ણન પ્રમાણે વર્ણવી હેવું. વિશેષ જિજ્ઞાસુઓએ એ આગણીસમું સૂત્ર ને હેવું ને હેવું એ એ.

'णितंबे' नितम्बे मध्यभागे 'एत्थ' अत्र अत्रान्तरे 'णं' खळु 'उत्तरद्धकच्छे' उत्तरार्द्धकच्छे 'गंगाकुंडे' गङ्गाकुण्डम् 'णामं' नाम 'कुंडे' कुण्डं 'पण्णाचे' प्रज्ञप्तम् तच 'सिंहें' पिंह 'जोय-णाइं' योजनानि 'आयामविवसंभेणं' आयामविष्कमभेण-दैर्ध्यदिस्ताराभ्याम् प्रज्ञप्तम् इदं च 'तहेव' तथैव तद्वदेव 'जहा' यथा 'सिंघू' सिन्धु:-सिन्धुमहानदी गङ्गामहानदीवद् गङ्गा-सिन्धुस्वरूपवर्णनाधिकारे वर्णिता तद्वर्णकांश्रमेव दर्शयित्वमाह-'जाव वणसंडेण य संपरिविख-त्तेति' यावद् वनपण्डेन च सम्परिक्षिप्ता तत्र सिन्धु-प्रपातकुण्डं गङ्गाप्रपातकुण्डवदेव वर्णितं तदशेषं वर्णनिमहापि वाच्यम् तथा चात्र गङ्गाकुण्डं सिन्धुकुण्डत्रद् वर्णनीयमिति पर्यवसितम् किन्तु तत्र प्रथमं गङ्गावर्णनं ततः सिःधुवर्णनम् अत्र तु व्यत्ययः, तत्कारणं च माल्यबद्वक्ष-स्कारतो विजयप्ररूपणायाः प्रकान्तत्वेन तदासन्नन्वात् सिन्धुकुण्डस्य प्ररूपणा प्रथमतः कर्तु-'णीलबंतस्स' नीलवान् 'वासहरपव्ययस्स' वर्षधर पर्वत की 'दाहिल्छे' दक्षिण-दिशा के 'णितंबे' मध्यभाग में 'एत्थणं' यहां पर 'उत्तरद्वकच्छे' उत्तरार्द्धकच्छ का 'गंगाकु डे' गंगाकु ड 'णामं' नामका 'कु डे' कु ड 'पण्ण से' कहा गया है। वह कुंड 'सिंहें' साईठ 'जोयणाइं' योजन 'आयामविक्लंभेणं' लंबाई चोडाई से कहा है। इसका वर्णन 'तहेव' वैसाही समझें कि 'जहा' जिस प्रकार 'सिंधू' सिंधुमहा नदी गंगामहा नदी के वर्णनसमान गंगा सिंधुस्वरूप वर्णनाधिकार में वर्णित किया है 🕂 उस वर्णनांदा को प्रकट करते हुवे कहते हैं-'जाव वणसंडेण य संपरिक्षिक्ते सि' यावह नषं इ से परिक्षिप्त वहां पर सिंधुप्रपातकुं इ का वर्णन गंगाप्रपातक ड के सदशही किया है, वही समग्र वर्णन यहां पर भी कहलेना चाहिये। इस प्रकार यहां पर गंगाकुंड का वर्णन सिंधुकुंड के सददावर्णित कर छेना यह निश्चित हुआ। परंतु वहां पर पहला गंगाका वर्णन आया है, तदनन्तर सिन्धु का वर्णन है। यहां पर व्यत्यय है उसका कारण माल्यवान वक्षस्कार

 मुचितेति तिव्यमेतायाः सिन्धोः अपि प्ररूपणाऽत्र प्रथमतः कृता ततो गङ्गाया इति, परन्तु गङ्गाप्रपातकुण्डनिर्मता गङ्गामहानदी खण्डप्रपातगृहाया अधो वैताढचिमिरि दारियत्वा दक्षिण-भागे सीतानदी मुपैतीति विशेषः।

अध प्रश्नोत्तराभ्यां कच्छविजयेति नामार्थमाह - 'से केणहे णं मंते !' इत्यादि - अथ केनाथेन केन कारणेन भदन्त! 'एवं बुच्ह' एवधुच्यते 'कच्छे विजए कच्छे विजए ?' कच्छो नाम
विजयः कच्छो विजयः इति, गौतमस्त्रामिनः प्रश्नोत्तरं भगवानाह - 'गोयमा !' गौतम ! 'कच्छे विजए' कच्छो विजयः 'वेयद्धस्स' वैताहचनामकस्य 'पव्ययस्स' पर्वेदस्य 'दाहिणेणं' दक्षिणेन दक्षिणदिशि 'सीयाए' सीतायाः 'महाणईए' महानद्याः 'उत्तरेणं' उत्तरेण उत्तर-दिशि 'गंगाए' गङ्गायाः 'महाणईए' महानद्याः 'पचित्यमेणं' पश्चिमेन पश्चिमदिशि 'सिंधुए' सिन्ध्याः 'महाणईए' महानद्याः 'पुरत्थिमेणं' पौरस्त्येन पूर्वदिशि 'दाहिणद्धकच्छविजयस्स'

पर्वत से विजय की प्ररूपणा का प्रकारान्तर से उसका समीपवर्ति पना होने से सिंधुक ड की प्ररूपणा प्रथम करना उचित होने से वहां से निर्मत सिंधु की प्ररूपणा प्रथम की है, तत्पश्चात् गंगाक ड की। परंतु गंगाप्रपातक ड से निकली हुई गंगामहा नदी खंडप्रपातगुहा के नीचे वैतादय गिरिको द्वाकर दक्षिणभाग में सीतानदी को प्राप्त होता है यह विशेष है।

अब प्रद्रनोत्तर द्वारा कच्छविजय नामका अर्थ कहते हैं-'से केणहेणं भंते!'
हे भगवन किस कारण से 'एवं युच्चई' ऐसा कहा जाता है कि 'कच्छेविजए कच्छेविजए' इस का नाम कच्छविजय इस प्रकार कहा है ? गौतमस्वामी के इस प्रद्रन के उत्तर में श्रीभगवान कहते हैं-'गोयमा!' हे गौतम 'कच्छे विजए' कच्छविजय 'वेयद्धस्स' वैताढय 'पव्वयस्स' पर्वत की 'दाहिणेणं' दक्षिणदिशा में 'सीयाए' सीता 'महाणईए' महानदी कि 'उत्तरे णं' उत्तरदिशा में 'गंगाए' गंगा

ન્તરથી તેનું નજીક પણું હાવાથી ત્યાંથી નીઠળેલ સિંધુની પ્રરૂપણા પહેલાં કરેલ છે. તે પછી ગંગાકુંડની પરંતુ ગંગાપ્રપાત કુંડથી નીકળેલ ગંગા મહાનદી અંડ પ્રપાત ગુહાની નીચ વૈતાહય પત્ર'તને દખાવીને દક્ષિણ ભાગમાં સીતા નદીને મળે છે એ વિશેષતા છે.

द्वे प्रश्नोत्तर द्वारा इच्छ विकथ नामने। अर्थ जतावे छे-से केंट्रेणं मंते! ' अगवन् शा हारख्यी 'एवं वुरुवइ' छेम हहेदामां आवे छे. हे-'क्रच्छे विजए, कच्छे विजए' आनुं नाम हच्छ विकथ के प्रमाखें हहेद छे आ प्रश्नना उत्तरमां प्रभुश्री हहें छे- 'गोयमा!' हे जीतम! 'कच्छे विजए' हच्छ विकथ 'वेयद्धस्स' वैताद्ध्य 'पन्त्रयस्स' पर्वतनी 'नहिणेण' दक्षिण दिशामां 'सीयाए' सीता 'महाणईए' महानदीनी 'उत्तरेणं' उत्तर दिशामां 'गंगाए जंगा 'महाणदीए' महा नदीनी 'पच्चित्रमेणं' पश्चिम दिशामां 'सिंघु' सिंधु 'महाणईए' महानदीनी 'पुरिश्चमेणं' पूर्व दिशामां 'दाहिणकच्छविजयस्स' दक्षिणार्घ हच्छ विकथनी 'बहुमडझदेपमाए' अर्डु भव्य देशकागमां 'एव्यणं' अर्डीयां 'वेमा णामं'

दक्षिणार्द्धकच्छविजयस्य 'वहुमज्झदेसमाप' वहुमध्यदेशभागे-मध्यखण्डे 'एत्थ' अत्र-अत्रा-न्तरे 'णं' खर्छ 'खेमाणामं' क्षेमा नाम 'रायहाणी' राजधानी 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्ता, सा च 'वि-णीया रायहाणी सरिसा' विनीता राजधानी सदशी विनीताराजधानीवत् 'भाणियव्या' भणितव्या वक्तव्या, विनीतावर्णकः स्त्रान्तराद् प्राह्यः 'तत्थ' तत्र 'णं' खळ 'खेमाए' क्षेमा-यास् 'रायहाणीए' राजधान्याम् 'कच्छे णामं' कच्छो नाम 'राया' राजा चकवर्ती 'समुष्यज्जह' सम्रुष्यते संजायते। अयम्यावः-श्लेमाराजधान्यामुत्पद्यमानः पट्खण्डैश्वर्यभोगी कच्छ इति लोकैर्व्यवहियते, अत्र वर्तमाननिर्देशेन सर्वदाऽपि यथासम्भवं चक्रवर्तिरामोत्यितः सचिता, नतु अरतवर्षक्षेत्र इव चक्रवर्ति राजोत्वर्त्तौ कालिनयम इति, स च राजा कीटलकः ? इति जिञ्जासायामाह-'महया हिमवंत०' महाहिमवन्मलयमन्दरमहेन्द्रसारः--महाहिपवान्-हैमवत-क्षेत्रस्योत्तरतः सीमाकारी वर्षधरः पर्वतः, मलयः- पर्वतिविशेषः, मन्दरः-मेरुः, सहेन्द्रः-पर्वत-'महाणदीए' महानदी की 'पच्चित्थमेणं' पश्चिमदिशा कें 'शिंहुं हुं' सिधु 'महाणईए' महानदी के 'पुरिंथमेणं' पूर्वेदशा में 'दाहिणद्धक्रच्छविजयस्स' दक्षिणाद्ध कच्छविजय के 'बहुमज्झदेसभाए' बहुमध्यदेशभाग हैं 'एत्य णं' यहां पर 'खेमा णामं' क्षेमा नामकी 'रायहाणी' राजधानी 'पण्णात्ता' कही गई है। वह राजधानी 'विणीयारायहाणी सरिसा' विजीता राजधानी के समान 'भाणियव्वा' कहनी चाहिए। विनीता का वर्णन अन्य सूत्र से ज्ञात करछेवें। 'तत्थ णं' वहां पर 'खेमाए' क्षेमा 'रायहाणीए' राजधानी में 'कच्छेणामं' कच्छनामका 'राया' चक्रवर्ति राजा 'सञ्जूष्यज्जह' उत्पन्न होगा! इस कथन का भाव इस प्रकार है-क्षेमाराजधानी में उत्पन्न होनेवाला कच्छनामका राजा षट्खंड ऐश्वर्य का भोक्ता होगा ऐसा लोकोक्ति है। यहां पर वर्तमान निर्देश से यथासम्भव चक्रवर्ति राजा की उत्पत्ति सूचित की है-भरतवर्ष क्षेत्र के जैसे चक्रवर्ति राजा की उपित में कालुनियस नहीं है, वह राजा कैसा है? इस के लिए कहते हैं-'महयाहिमवंत' महाहिमवन्मलय-मंदर महेन्द्र के जैसे सारवान महाहिमवान्–हैमवत क्षेत्र के उत्तर में सीमाकारी

हिमा नामनी 'रायहाणी' राजधानी 'पण्णत्ता' डहेल छे. से राजधानी 'विणीयारायहाणी सिर्सा' विनीता राजधानीनी सरणी 'माणियव्वा' डहेली कोई से. विनीता राजधानीनुं वर्धुंन णील सूत्र अधामांथी लाखी होतुं. 'तत्थ णं' त्यां आगण 'हिमाए' होमा नामनी 'रायहाणीए' राजधानीमां 'कच्छे णामं' डन्छ नामधारी 'राया' सहवर्ति राज पर्ण उद्यासम्भव सेशावनार धरी तेम ही। हे। हित छे अहीं यां वर्षभानना निर्देशशी सर्वहा यथासम्भव यहवर्ति राजनी इत्यत्ति सूथवेद छे. भरत वर्ष होत्रना लेवा यहवर्ति राजनी इत्यत्तिमां हादा नियम नथी. ते राज हैवे। छे १ ते अताववा माटे हहे छे. 'मह्याहिमवंत' महा हिमवन्यस्य मंदर महेन्द्रना लेवे। सारवाणा महाहिमवान् हैमवतहात्रनी इत्तरमां सीमा हारी वर्षधर पर्वत महय-पर्वत विशेष आ अधानी

विशेषश्चेते इव सारः-प्रधानः' इत्यादि पदसमूहो राजवर्णनपरोऽत्र बोध्य इति स्चियितुमाह-'जान' यावत् 'सव्वं' सर्वे 'भरदोअवणं' भरतसाधनं-भरतक्षेत्रस्वायत्तीकरणमभिव्याप्य 'माणि-यद्वं' भणितव्यम् वक्तव्यम् परन्तु 'णिक्खमणवज्तं' निष्क्रमणवर्जे प्रव्रज्याग्रहणं त्यक्त्वा 'सेसं' सर्वे निःशेषं 'भाणियव्वं' भणितव्यम् वाच्यम् यतो भरतचक्रवर्ति ना सर्वेविरतिः स्वीकृता कच्छचक्रवर्तिनस्तु सर्वविरतिस्वीकारे नियमाभावो लभ्यते इति, तत्सर्वे किम्पर्यन्तम् ? इत्यपेक्षायामाह-'जाव अंत्रष माणुस्सप सुहे' यावद् 'संके मानुष्यकानि सुखानि' मानुष्य-कानि सुखानि' मानुष्यकानि 'मनुष्यसम्बन्धीनि सुखानि सुंक्ते' इत्येतद्वर्णकपर्यन्तमित्यर्थः अत्रत्य यावत्पदसङ्ग्राह्य औषपातिकसूत्रस्यैकादशस्त्रतः कार्यः, तदर्थश्च तत्रैव मत्कृतपीयू-षवर्षिणी टीकातो बोध्यः, इत्येकं कच्छविजयनामकारणम् अपरं च कारणमाह-'कच्छ-णामभेजजे य' कच्छनामधेयश्च 'कच्छे इत्थ' कच्छोऽत्र विजये 'देवे' देवः राजा परिवसतीति वर्षधर पर्वत मलय-पर्वतविद्योष-मन्दर-मेरु-महेन्द्र पर्वतविद्योष-ये सब के समान प्रधान इत्यादि पद्समूह यहां पर राजवर्णनपरक कहलेवें। यह सूचन के लिये कहते हैं-'जाव' यावत् 'सब्वं' सब 'भरहोअवणं' भरतक्षेत्र के स्वायत्ती करण से छेकर 'भाणियव्वं' कहछेवें परंतु 'णिक्स्वमणवज्जं' निष्क्रमण-प्रवच्या ग्रहण को छोडकर 'सेसं' अवशिष्ट निष्क्रमण प्रतिपादक वर्णनाति-रिक्त 'सब्वं' समग्र वर्णन 'भाणियव्वं' कहलेवें । कारण भरत चक्रवर्तिने सर्व-विरति (दीक्षा) का स्वीकार किया था। कच्छचकवर्ति ने तो दीक्षास्वीकार में नियमाभाव होता है। वह सब वर्णन कहांतक का ग्रहण करना इस लिये कहते हैं-'जाव संजर माणुस्मए सुहै' याचत् मनुष्य संबंधी सुख भोगते हैं यह कथन पर्यन्त यहां के यावत्पद से ग्रहण करने घाग्य संग्रह औपपातिक सूत्र के ग्यारहवें सूत्र से ग्रहण करछेवें । उसका अधभी वहां पर मेरे द्वारा की गई पीयूषवर्षिणी टीका से समझलेवें। यह कच्छविजय इसनाम होने का एक कारण है।

સરખા પ્રધાન ઇત્યાદિ પદસમૃહ અહીં યાં રાજવર્ણું નના સંબંધમાં કહી લેવા. એ સૂચન માટે સ્ત્રકાર કહે છે—'जाब' યાવત્ 'सच्बं' સઘળું 'મરहો अवणं' ભરત ફોત્રના સ્વાધીન કરણ્યાં લર્ષને 'માળિયવ્વ'' કહી લેવું. પરંતુ 'ખિરુ સમળવા વાય 'સવ્વ'' સઘળું વર્ષ્યુને 'શોળિય કર્યો હતાં 'તે સંત્ર' બાકીનું નિષ્ક્રમણ્ પ્રતિપાદક વર્ણન શિવાય 'સવ્વ'' સઘળું વર્ષ્યુન 'માળિય વ્વં' કહી લેવું. કારણું કે ભરત ચક્રવર્તિએ સર્વ વિરતિ (દીક્ષા)ના સ્વાંકાર કર્યો હતાં. ક્ર-છ ચક્રવર્તિએ દીક્ષાસ્વીકારમાં નિયમાભાવ થાય છે. આ બધું વર્ણન કર્યા સુધીનું શહ્યુ કરવું એ અતાવવા કહે છે. 'जाब મું જ્ઞણ મणुरसण सુદ્દે' યાવત મનુષ્યભવ સંખધી સુખો લોગવે છે. આ કથન પર્યન્ત શહ્યુ કરી લેવું. અહીંના યાવત્પદથી શહ્યુ કરવા યોગ્ય સંગ્રહ ઔપપાતિક સ્ત્રના અગીયારમા સ્ત્રથી શહ્યુ કરી લેવું. તેના અર્થ પણ ત્યાં મેં કરેલ પીયૂધવર્ષિણી ટીકામાંથી સમજ લેવા. કચ્છ વિજય એ નામ થવાનું આ એક કારણું છે.

परेणान्वयः स च की दशः ? इत्यपेक्षायामाइ—'महद्धीण जाव पिल्ञओवमिट्टईण परिवसइ' महद्धिको यावत् पल्योपमस्थितिकः परिवसित—'महद्धिकः' इत्यारभ्य 'पल्योपमस्थितिकः' इति पर्यन्तानां तिद्विशेषणवाचकपदानां सङ्ग्रहो अत्र वोध्यः सचाष्ट्रमञ्जात् कार्यः, तद्येश्च तत्रेत्र कृतो ग्राह्यः 'से' सः—कच्छविजयः 'एएणहेणं' एतेनार्थेन अग्रुना हेतुना 'गोयमा !' गौतम ! 'एवं वुचइ' एवम् इत्थम् उच्यते कथ्यते 'कच्छे विजए कच्छे विजए' कच्छो विजयः क्छ भदन्त ! कालतः कियचिं भवति १, गौतम ! न कदाचिन्नाऽऽसीत् न कदाचिन्न भवति न कदाचिन्न भवति । क्योचिन्नाऽप्रीत् न कदाचिन्न भवति । क्योचिन्नाऽप्रीत् न कदाचिन्ना भवति । क्योचिन्ना भविष्यति च भव

अब दूसरा कारण कहते हैं-'कच्छणामधेउनेय' कच्छ नामका 'कच्छे इत्थ' कच्छ यहां पर विजय में 'देवे' देव राजा रहता हैं-वह राजा कैसा हैं-'मइद्वीए जाव पिलेओवमिट्टिइए पिरवसह' महिद्धिक यावत् एक पत्योपम की स्थिति वाला निवास करता है। महिद्धिक इस पद से आरंभ कर के पत्योपमित्थिति पर्यन्त के तिष्ठषेषण वाचक पद का संग्रह यहां पर समझलेवें। वह आठवें सूत्र से समझलेवें। उसका अर्थ भी वहां पर लिखा हैं वहां से समझलेवें। 'से' वह कच्छविजय को 'एएट्टेणं' इस कारण से 'गोयमा!' हे गौतम! 'एवं बुच्चइ' ऐसा कहा जाता है 'कच्छे विजए कच्छेविजए' यह कच्छविजय है यह कच्छविजय है 'जाव णिच्चे' यावत् वह नित्य है 'नित्य' पद पर्यन्त का सूत्र यहां पर कहलेवें वह इस प्रकार है-हे भगवन कच्छविजय काल से कितना होता है ? हे गौतम! वह कदापि नहीं था वैसा नहीं हैं अर्थात् भूतकाल में वह था, वर्तमान में नहीं है वैसाभी नही है वर्तमान में विद्यमान है। एवं भविष्य में नहीं होगा वैसा नहीं है । भूतकाल में था, वर्तमान में है एवं भविष्य

હવે બીજું કારણ ખતાવે છે.—'कच्छणामधेज्जेय' કચ્છ નામના 'कच्छे इत्य' મહીં યાં કચ્છિવિજયમાં 'देवे' દેવ રાજા રહે છે. તે રાજા કેવા છે ? તે ખતાવે છે. 'महद्वीए जाव पिछओवमिट्टिईए पिरवसइ' મહિહિંક યાવત એક પલ્યાપમની સ્થિતિવાળા નિવાસ કરે છે. મહિહિંક એ પદથી આર'લ કરીને પલ્યાપમની સ્થિતિ સુધીના તેના વિશેષણા ખતાવનારા પહાના સંગ્રહ અહીં યાં સમજ લેવા. તે સંગ્રહ આઠમા સૂત્રમાંથી સમજ લેવા. તેના અર્થ પણ ત્યાં ખતાવેલ છે. 'તે' એ કચ્છ વિજયને 'एएट्टेण' એ કારણથી 'गोयमा!' હે ગૌતમ! 'एवं वृच्चइ' એમ કહેવામાં આવે છે. 'कच्छे विजए कच्छे विजए' આ કચ્છ વિજય છે, આ કચ્છ વિજય છે. 'जाव णिच्चे' યાવત તે નિત્ય છે. નિત્ય પદ સુધીના સૂત્રપાઠ અહીં યાં કહી લેવા. તે આ પ્રમાણે છે.—હે લગવન્ કચ્છ વિજય કાળથી કેટલા કહેવાય છે ! હે ગૌતમ! તે કાઈ કાળ ન હતા તેમ નથી. અર્થાત્ ભૂતકાળમાં તે હતા. વર્તમાનમાં

यो अवस्थितो नित्यः' इति स्त्रपर्यवसितम् एतद्विवरणं चतुर्थस्त्राब्दोध्यम् तत्र पद्मवरवे-दिका प्रस्तावात् स्त्रीत्वेन विवृतम् अत्र पुंस्त्वेन विवरणीयमिति भेदः । अन्यत् समानम् । इति प्रथमस्य कच्छविजयस्य वर्णनं सम्पूर्णम् ॥स्र० २६॥

अथ चित्रकूटस्य वक्षस्कारपर्वतस्य पश्चिमेन कच्छविष्यउक्तस्तत्रोत्थिताकाङ्कक्षचित्र-कूटं वर्णियतुमाइ-'कहि णं भंते !' इत्यादि ।

म्लम्-कहि णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे चित्तकृडे णामं वक्कारपव्वय पण्णते ?, गोयमा ! सीयाए महाणईए उत्तरेणं णीलवंत-स्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेगं कच्छविजयस्स पुरित्थमेणं सुकच्छविज-यस्स पचित्थिमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे चित्तकूडे णामं वक्खारपटवए पण्णते उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणवित्थिण्णे सोलः जोयणसहस्साइं पंचय बाणउए जोयणसए दुविण य एगूणवीसइभाए जोयणसए आयामेणं पंचजोयणसयाइं विक्खंभेणं णीलवंतवासहर-पठवयंतेणं चतारि जोयणसयाइं उद्धं उच्चतेणं चतारि गाउयसयाइं उच्चेहेणं तयणंतरं च णं मायाए २ उस्सेहोट्वेहपरिबुद्धीए परिवद्ध-माणे २ सीयाबहाणई अंतेणं पंचजोयणसयाहं उद्धें उच्चत्तेणं पंच गाउय-सवाइं उठ्वेहेणं अस्सखंधसंठाणसंठिए सव्वरयणामए अच्छे स०हे जाव पडिरूचे उसओ पासि दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहिं य वणसंडेहिं संप-

में होगा। हुद, नियत शाश्वत अक्षय अन्यय, अवस्थित एवं नित्य हैं। यह कथन पर्वन्त सबकथक समझलेवें । इसका विवरण चौथे सूत्रे से समझलेवें वहां पर पद्मदरवेदिका के प्रस्ताव से स्त्रीलिंग से वर्णन किया है। यहां पर पुर्विलग से वर्णन करना यही भेद समझे । और सब कथन समान होते हैं॥२६।

इस प्रकार पहला कच्छविजय का कथन सम्प्रण

તે નથી તેમ પગુ નગી. વર્તમાનમાં તે વિદ્યમાન છે. તેમજ ભવિષ્ય કાળમાં તે નહીં હેય તેમ પણ નથી. અર્થાત્ ભૂતકાળમાં હતા, વર્તમાનમાં છે, અને ભવિષ્યમાં પણ હશે જ એટલે કે તે ધુવ, નિયત, શાશ્વત, અક્ષય, અવ્યય, અવસ્થિત અને નિત્ય છે. આ કચન પર્યાન્તનું સઘળું કથન અહીંયાં સમજ લેવું. આનું વિશેષ વિવરણ ચાયા સ્ત્રમાંથી સમજ લેવું. ત્યાં આગળ પદ્મવર વેદિકાના પ્રસ્તાવથી તે સ્ત્રીલિંગના નિર્દેશથી વર્ણવેલ છે, અને અઢીંયાં પુલ્લિંગના નિર્દેશથી વર્ણન કરવાતું છે એટલાજ ફરક છે. ખાકીતું તમામ કથન સરખું જ છે. ॥ સૂ. ૨૬ ॥

આ રીતે પહેલા કચ્છ વિજયનું કથન સંપૂર્ણ

रिविख से, व गणओ दुण्ह वि, चित्तकूड स्स णं वक्खारपट वयस्स उिंप बहुसमरमणि जो भूमिभागे पण्णते जाव आसयंति, चित्तकूडे णं भंते! वक्खारपट वय कई कूडा पण्णता? गोयमा! चत्तारि कूडा पण्णता, तं जहा—सिद्धाययणकूडे चित्तकूडे कच्छकूडे सुकच्छकूडे, समाउत्तरदाहि-णेणं परुष्यरंति, पढमं सीयाए उत्तरेणं चउत्थए णीलवंतस्स वासहर-पट वयस्स दाहिणेणं एत्थ णं चित्तकूडे णामं देवे महिद्धीए जाव रायहाणी से ति ॥सू० २७॥

छाया-क्व खल्ज भदन्त ! जम्बृद्धीये द्वीये महाविदेहे वर्षे चित्रक्र्टो नाम वक्षस्कारपर्वतः प्रज्ञप्तः ?, गौतम ! सीताया महानद्या उत्तरेण नीलवतो वर्षथरपर्वतस्य दक्षिणेन कच्छविज्ञ-यस्य पौरस्त्येन सुकच्छविज्ञयस्य पश्चिमेन अत्र खल्ज जम्बृद्धीये द्वीये महाविदेहे वर्षे चित्रक्र्टो नाम वक्षस्कारपर्वतः प्रज्ञप्तः, उत्तरदक्षिणायतः प्राचीनप्रतीचीनविस्तीणः पोल्ज्ञयोजनसहस्त्राणि पश्च द्विनवतानि योजनशतानि द्वी च एकोनविंशति भागौ योजनस्य आयामेन पश्च योजनशतानि विष्क्रम्मेण नीलवद्वर्षयरपर्वतान्ते खल्ज चत्वारि योजनसहस्राणि ऊर्ध्व मुच्चत्वेन चत्वारि गन्यूतशतानि उद्वेथेन, तदनन्तरं च खल्ज मात्रया २ उत्सेथोद्वेधपरिष्टुद्धचा परिवर्धमानः र-स्रीतामहानद्यन्ते खल्ज पश्च योजनशतानि ऊर्धमुण्चत्वेन पश्च गन्यूतशतानि उद्वेथेन अश्वस्कन्थसंस्थानसंस्थितः सर्वरत्नमयः अच्छः श्रुक्षणः यावत् प्रतिरूपः उभयोः पार्श्वयोद्धान्यां पश्चरदेदिकाभ्यां द्वाभ्यां च वनपण्डाभ्यां सम्परिक्षिप्तः, वर्णको द्वयोरपि, चित्रक्र्टस्य खल्ज वक्षस्कारपर्वतस्य उपरि बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः यावद् आसते, चित्रक्र्टस्य खल्ज वक्षस्कारपर्वतस्य उपरि बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः यावद् आसते, चित्रक्र्टस्य खल्ज वक्षस्कारपर्वतस्य उपरि बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः यावद् आसते, चित्रक्र्टे खल्ज भदन्तः । वक्षस्कारपर्वते कति क्र्टानि प्रज्ञप्तानि ?, गौतम ! चत्वारि क्र्यानि प्रज्ञप्ति, तद्यया सिद्धायतनक्र्टं १ चित्रक्र्टं २ कच्छक्र्टं ३ स्रकच्छक्र्टम् ४, समानि उत्तर-दक्षिणेन परस्वरमिति, प्रथमं सीताया उत्तरेण चत्र्यक्षं नीलवतो वर्षथरपर्वतस्य दक्षिणेन अत्र खल्ज स्थितस्य देवो महर्द्धिको यावत् राजधानी सेति ॥स० २०॥

यह कच्छविजय चित्रक्ट दक्षस्कार पर्वत की पश्चिमिद्शा में है-अतः अब उस चित्रकृट दक्षस्कार का कथन किया जाता है-

'किह णं अंते। अंब्रुदीचे दीवे महाविदेहे वासे' इत्यादि।

टीकार्थ-गौतमने प्रसु से पूछा है-'कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे

ગા કચ્છ વિજય ચિત્રકૂટ, જક્ષસ્કાર પર્વતની પશ્ચિમ દિશામાં આવેલ છે. એશી હવે તે ચિત્રકૂટ વક્ષસ્કારનું કલન સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે

^{&#}x27;कहि णं भेते! जंबुद्दीवे दीवे महादिदेहे वासे' इत्यादि

टीका-'कहि णं भंते !' इत्यादि-छायागम्यम्, नवरम् 'उत्तरदाहिणायए' उत्तर-दक्षिणा यतः-उत्तरदक्षिणयो दिशो रायतः दीर्घः-'पाईणपडीणवित्थण्णे' प्राचीनप्रतीचीन विस्तीर्णः-पूर्वपश्चिमयोः दिशोर्विस्तीर्णः विस्तारयुक्तः 'सोलसजीयणसहस्साइं' पोडशयोजन सहस्राणि-पोडशसहस्रयोजनानि 'पंच य' पश्च च 'बाणउए' द्विनवतानि द्विनवत्यधिकानि 'जोयणसए' योजनशतानि 'दुष्णि य' द्वौ च 'एगुणवीस३भाए' एकोनविंशतिभागौ 'जोयः णस्स' योजनस्य 'आयामेणं' आयामेन-दैध्येण प्रज्ञप्त इति पूर्वेणान्त्रयः, एवमायामोऽस्य विजयवत् परन्तु 'पंचजीयणसयाइं' पश्च योजनशतानि 'विक्खंभेणं' विष्कमभेण-विस्तारे-णेति विशेषः नतु विष्कम्मे पञ्च योजनशतानीति कथम् ?, इति चेदुच्यते-जम्बृद्वीपपरि-वासे' हे भयन्त! जम्बूढीप नाम के ढीपमें महाविदेहक्षेत्रमें 'चित्रकुढे णामं वक्खारपव्वए पण्णासे' चित्रकूटनामकाबक्षस्कार पर्वत कहां पर कहा गया है उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा! सीआए महाणईए उत्तरेण जीलवंतस्स वासहरपव्य-यस्म टाहिणेणं कच्छविजयस्म पुरस्थिभेणं सुकच्छविजयस्स पच्चित्थिभेणं एत्थ णं जंबहीवे दीवे महाविदेहे वासे चित्तकडे णामं वक्खारपव्वए पण्णते' हे गौतम ! सीतामहानदी की उत्तरदिशा में नीलबन्त वर्षधर पर्वत की दक्षिणदिशा में कच्छ-विजय की पूर्वदिशा में, और सुकच्छविजय की पश्चिमदिशा में जंबूडींप नाम के द्वीप के भीतर वर्तमान महाविदेहक्षेत्र में चित्रकूटनाम का वक्षस्कार पर्वत कहा गया है ' उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिण्णे' यह पर्वत उत्तर से दक्षिण-तक दीर्घ है तथा पूर्व पश्चिम दिशा में विस्तीर्ण है 'सोलसजोयणसहस्साई पंचय बाणउए जोयणसए दुण्णिय एग्णवीसहभाए जोयणस्स आयामेणं पंच जोयण-सयाइं विक्लंभेणं' इस का आयाम १६५९२ चे योजन का है और ५०० सौ योजन का इस का विष्कम्भ है 'नीलवंतवासहरपव्ययंतेणं चत्तारि जोयणसयाइं

विदेहे वासें हे लहंत! लंभुद्धीय नामह द्वीयमां महाविदेह क्षेत्रमां 'चित्तकूडे णामं वनखार-पटवप पण्णते' थित्रहूट नामह वक्षरहार पर्वत ह्या स्थणे आवेद छे ? स्नेना उत्तरमां प्रभु हहे छे—'गोयमा! सीआए महाणईए उत्तरेणं णीलवंतस्स वासहरपट्यस्स दाहिणेणं क्षरुखित्रयस्स पुरिक्षमेणं सुक्रच्छिवित्रयस्स पच्चित्रमेणं एत्थणं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे चित्तकूडे णामं वक्त्वारपट्यए पण्णते' हे गौतम! सीता महानदीनी उत्तर दिशामां नील वन्त वर्षधर पर्वतनी दक्षिणु दिशामां इच्छ विजयनी पूर्व दिशामां अने सुहच्छ विजयनी पश्चिम हिशामां लंभुद्दीय नामह दीपनी अंदर वर्तमान महाविदेह क्षेत्रमां थित्रहूट नामह वक्षरहार पर्वत आवेद छे. 'उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिण्णे' आ पर्वत उत्तरथी हिक्षणु सुधी दीर्घ छे तेमल पूर्व—पश्चिम दिशामां विस्तीर्ध छे. 'सोलस जोयणसहस्साइं पंचय बाणउए जोयणसए दुण्णिय एगूणवीसइमाए जोयणस्स आयामेणं पंच जोयणसयाइं विक्यंभेणं' स्नेना आयाम १६५६२ वृद्ध थेलन लेटदी। छे सने प०० थेलन लेटदी। स्नेना

माणविस्तारात पणवित्सहस्रेषु शोधिनेषु शेषाणि चत्वारि सहस्राणि एकस्मिन् दक्षिणे उत्तरे वा भागेऽष्टी वक्षस्काराः पर्वताः सन्तीति तैरष्टाभिर्विभज्यन्ते ततो वक्षस्काराणां पर्व-तानां प्रत्येकं प्रागुक्तो विष्कम्भः सम्पद्यत इति, इह विदेहेषु विजयान्तरनदीमुखवनमेर्वाद विद्यास्यत्र सर्वत्र वक्षस्काराः पर्वताः पूर्वपश्चिमदिश्चो विंस्तृताः सन्ति तेच समानविष्कम्भा इति विष्कम्भपरिमाणमेवम्, तत्र पोडशानां विजयानां विस्तारः षष्ट्रतरचतुःशताधिक पञ्चः त्रिंशत्सहसाणि ३५४०६, पण्णामन्तरनदीनां विस्तारः पञ्चाशदधिकसप्तशती ७५०, मेरो र्बिस्टारः पूर्वपश्चिमवर्तिभद्रशास्त्रवनस्य चायामः ५४०००, मुख्यनयोर्विस्तारः-चतुश्चत्वारिः शदधिकाऽष्ट्रपञ्चाशच्छती ५८४४, सकलसङ्कलनाया १६०००, षण्णवतिसहस्राणि जातानि उद्धं उच्चत्तेणं, चत्तारि गाउयसयाई उच्चेहेणं' नीलवन्त वर्षघर पर्वत के समीप यह चारसौ योजन की ऊँचाई बाला है तथा इसका उद्वेघ चारसौ कोश का है विष्कम्भ जो इसका पांचसी योजन का कहा गया है वह इस प्रकार से कहा गया है जम्बूबीप का परिमाण १ लाख योजन का कहा गया है उसमें से ९६००० कम करनेपर ४००० रह जाते हैं दक्षिणभाग में आठवक्षस्कार पर्वत है और उत्तर भागमें आठवक्षस्कार पर्वत है ४००० में आठका भाग देनेपर ५०० आते हैं यही प्रत्येक बक्षस्कारपर्वत का विष्कम्भ आता है इन विदेहों में विजयान्तरनदीसुख वन मेरु आदि को छोड कर अन्यत्र सर्वत्र वक्षस्कार पर्वत पूर्व पश्चिम दिशामें बिस्तृत हैं और समान विष्कम्भवाछे हैं। इसिलिये यह विष्कम्भ का परिमाण है। १६ विजयों का विश्तार ३५४०५ है ६ अन्तरनदियों का विस्तार ७५० है मेरु का विस्तार और पूर्वपश्चिमवर्ती भद्रशालवन का आयाम-विस्तार ५४००० है दोनों मुखबनों का बिस्तार ५८४४ है इस प्रकार से

इति, तथा 'णीलवंतवासहरपव्वयंतेणं' नीलवहर्षघरपर्वतान्ते खल्ल-नीलवन्नामकस्य वर्षधर-पर्वतस्य अन्ते निकटे अन्तश्रव्दस्यात्र समीपपरत्वात् तथा चोक्तम् 'अन्तः स्वरूपे निकटे प्रान्ते निश्चय नाश्चयोः' इति हमकोशे, 'चलारि' चत्वारि 'जोयणस्याः' योगन्यतानि 'उदं' कर्ध्वम् 'उच्चेलेणं' उच्चत्वेन 'चलारि' चत्वारि 'गाउयस्याः' गव्युत्वतानि 'उव्वेहेणं' उद्वेधेन भूषवेशेन 'तयणंतरं चणं' तदनन्तरं च खल्ल 'मायापर' मात्रवार-क्रमेण २ 'उस्सेहो-व्वेहपितृद्धीए' उत्सेघोद्धेपपरिवृद्धचा उच्चत्वभूषवेश्वयोः परिवर्धनेन 'परिवद्धाणे २' परिवर्द्धमानः २ यत्र यावानुत्सेधः तत्र तच्चतुर्थभाग उद्वेथ इति द्वाम्यां प्रकाराभ्यां पुनः पुनर्धिकतरो भवन 'सीयामाहाणई अंतेणं' सीतामहानद्यन्ते खल्ल-सीतामहानदीसमीपे 'पंच जोयणसयाई' पश्च योजनशतानि 'उदं' उर्ध्वम् 'उच्चतेणं' उच्चत्वेन 'पंचगाउयसयाई' पश्चगव्युतशतानि-दश्चतकोशानिति पदद्वयार्थः, 'उच्चेहेण' उद्वेपेन भूमिप्रवेशेन, अत एव 'अस्तखंधसंठाणसंठीए' अश्वस्कन्धसंस्थानसंस्थितः घोटकस्कन्धाकारेण संस्थितः आदी निम्नत्वादन्ते क्रमेण तुङ्गत्वात् स च 'सव्वरयणामए' सर्वरत्नमयः-सर्वात्मना रत्नमयः 'अच्छे' अच्छः-आकाशस्पटिकवित्रर्थकः 'सण्हे' श्चक्षणः इत्यारभ्य 'जाव पिष्क्ते' याव-द्रपतिक्त्यः -प्रतिक्त्य इति पर्यन्तस्तद्वर्णक्त्यदसमूहो चोध्यः स च चतुर्थस्त्राद् ग्राह्यः, प्राद्वः, प्रतिक्त्यः -प्रतिक्त्य इति पर्यन्तस्तद्वर्णक्त्यदसमूहो चोध्यः स च चतुर्थस्त्राद्व ग्राह्यः,

इन सबका जोड़ ९६००० होता है इन्हों को जम्बूद्धीप के विस्तार में कम किया गया है—'तयणंतरं च णं मायाए २ उस्सेहो विषयिश्विद्धीए परिवद्धमाणे२ सीया-महाणदी अंतेणं पंचजोयणसयाई उद्धं उच्चलेणं पंचगाउयसयाई उद्वेहेण अस्स-संधसंठाणसंठिए सव्वरयणामए अच्छे सण्हे जाव पडिक्रवे' फिर यह चित्रकूट वक्षस्कार पर्वत नीलवन्त वर्षधर के पास से कमशः उत्सेध और उद्धेध की परिचृद्धि करता २ सीतामहानदी के पास में इसकी ऊँचाई पांचसो योजन की हो जाती है और उद्धेध इस का ५०० कोश का हो जाता है इस का आकार जैसा घोड़े का स्कंध होता है वैसा है। यह सर्वात्मना रत्नमय है और आकाश एवं स्फ-टिक के जैसा वह निर्मल है। श्रुष्ण यावत प्रतिरूप हैं यहां यावत्पदग्राह्म पर्दो

वनीनी विस्तार ५८४४ छे. आ प्रमाधे को अधानी सरवाणी ६६००० थाय छे. सेमने क क मूदीपना विस्तारमांथी आह करवामां आवेल छे. 'तयंत्रतरं च णं मायाए र उस्से होट्वेह्पिशुद्धहोए परिवद्धमाणे र सीया महाणदी अंतेणं पंचजीयणसयाईं उद्धं उच्चतेण पंचगाउयसयाइं उद्धेहेण अस्सखंधसंठाणसंठिए सद्धरयणामए अच्छे सण्हे जाव पिक क्वें पछी को वित्रहूट वक्षरकार पर्वत नीलवन्त वर्षधरनी पासेथी क्षमश उत्सेध अने उद्देशनी पिरिवृद्धि करती—करती सीता महा नहीनी पासे पांचसी येथिन केटली अधि अधि कार्य छे. कोना आकार धारा थहीं कार्य छे, अने आने। उद्देश प०० आउ केटली शर्ध कार्य छे. कोना आकार धारा केटी छे. के सर्वात्मना रत्नमय छे अने आकार तेमक स्कृटिकनी केम को निर्मण छे. श्विष् यावत् प्रतिवृप्त छे. अहीं यावत् पहथी के पहेलुं अहु थशुं छे ते सर्वनी

तदर्थश्च तजेव द्रष्टव्यः, 'उभञ्चो पासिं' उभयोः —द्वयोः पार्श्वयोः मागयोः 'दोहिं' द्वाभ्यां 'पउमनरवेह्याहिं' पमवरवेदिकाभ्याम् 'दोहि य' द्वाभ्यां च 'वणसंडेहिं' वनपण्डाभ्याम् 'संपरिक्षित्तः सम्यक् प्रकारेण परिवेष्टितः, 'वण्णञ्चो' वर्णकःवर्णनपरः पद्सम्हः 'दुण्ह िं' द्वयोरिष अत्र अन्यत उद्दृत्य न्यसनीयः, तत्र पमवरवेदिका वर्णकश्चतुर्थस्त्रात् वनपण्डवर्णकश्च पश्चमस्त्राद् वोष्यः । नथास्य शिखरभागवर्णनमाह—'चित्रकृडस्सं' चित्रकृटस्य 'णं' खद्ध 'वनखारपव्नयस्सं' वश्चस्कान्पर्वतस्य 'उप्पि' उपि 'बहुसमरमणि को' बहुसमरमणीचः 'स्विभागे' भूमिभागः 'पण्णचे' प्रज्ञक्षः 'जाव आसर्यति' यावदासते अत्र यावत्यदेन भूमिभागवर्णनं तथा 'तत्य वहवे वाण्यमन्तरा देवाय देवीओय' इति च सङ्ग्रहास्, एनच्यया—'तत्र बहवः व्यन्तराः 'वान्यमत्तराः' देवाश्च देव्यश्च' इति, तत्र—भूशियागदर्णनं पष्ट स्त्रात् संग्रहस्य तथा—तत्रेत्यादीनां पदानामर्थश्च तत एव बोध्यः, ।

की जानकारी चतुर्थ सूत्र से करलेनी चाहिये 'लभओ पासि दोहि पडसवर-वेहयाहिं दोहि य वणसंडेहिं संपरिक्खितः' यह दोनों पार्श्व आगों भी तरफ दो पद्मवरवेदिकाओं से एवं दो वनषंडों से अच्छी तरह से चिरा हुआ है। 'वण्यओ' वनपंड और पद्मवरवेदिका का वर्णन यहां पर करलेना चाहिये यह इसका वर्णन कमदाः पंचम सूत्र और चतुर्थ सूत्र में किया जा खुका है। 'चिराकूडस्स वयखारपव्वयस्स उपि बहुसमरमणिज्जे भूमिमागे पण्णत्ते' चित्रकूडवामके यक्ष-स्कार पर्वत का ऊपर की भूमिका जो भाग है वह बहुसमरमणीय है 'जाव आसयंति' यहां यावत् अनेक देव देवियां आराम किया करती है तथा सोती उठती बैठती रहती हैं। यहां यावत् पद से भूमिभाग के वर्णन करने की एवं 'तत्थ बहवे बाणमंतरा देवाय देवीओय' इस प्रकार से पाठको प्रहण करने की बात कही गई है भूमिभाग के वर्णन को जानने के लिये छठा सूत्र देखना चाहिये 'चित्तकूडे णं वक्खारपव्वए कह कूडा पण्णत्ता' हे भदन्त ! इस चित्रकूट वक्षस्कार पर्वत पर कितने कूट कहे गये हैं? उत्तर में प्रसु कहते हैं 'गोयमा!

व्याण्या यतुर्ध सूत्रमांथी लोध सेवी लोध को. 'उमओ पासि दोहिं पडमवरवेइयाहिं दोहिय वणसंडेहिं संपरिक्सितं' को पर्वत अन्ते पार्श्व लागे। तरक के पदावर वेहिकाकांथी तेमल के वनण देशी सारी रीते परिवृत के. 'वणाओ' वनण दे को पदावर वेहिकानुं वर्धुन अहीं करवुं लोध को अन्तेनुं वर्धुन कमशः पंचम सूत्र अने यतुर्थ सूत्रमां करवामां आवेस के. 'चित्तकूडस्स वक्खारपव्ययस्स उपि बहुसमरमणिउने मूमिगगो पण्णत्ते' थित्र कृट नामक वक्षरकार पर्वतनी अपरनी अभिक्षाने। के लाग के. ते अहु समरमधीय के. 'जाव आपर्यति' अहीं यावत् अनेक हैव-देवीको आराम करती रहे के तेमल सूती, इतिने किसती रहे के. अहीं यावत् पदथी अभिलागनुं वर्धुन करवानी तेमल 'तत्य वहवे वाणगंतरदेवा य देवीको य' आ प्रमाधे पाठ अहु करवानी वात कहेवामां आवेसी के. भूमिलागना वर्धुन विधे लाखुवा माटे छक्षा सूत्रनी व्याण्या वांचवी लेई के. 'चित्तकूडे

अथास्य क्टानां वर्णनं चिकीर्षुः संख्यां प्रदर्शयितुमाइ—'चित्तक्डे' चित्रक्टे 'णं' खलु 'वक्खारपव्यए' वक्षस्कारपर्वते 'कइ' कित 'कूडा' कूटानि 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्तानि ? इति प्रश्ने मगवानाइ—'गोयमाः!' मो गौतम! 'चत्तारि' चत्वारि 'कूडा' कूटानि 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्तानि, 'तं जहा' तद्यथा 'सिद्धाययणकूडे' सिद्धायतनकूटम् इदं च द्वितीयस्य चित्रकूटस्य दक्षिणस्यां दिशिर, 'चित्तकूडे' चित्रकूटम् इदं च सिद्धायतनकूटस्योत्तरदिशि २, 'कच्छकूडे' कच्छकूटम् इदं च चित्रकूटस्यास्य उत्तरदिशि ३, 'सुकच्छकूडे' सुकच्छकूटम् इदं च कच्छकूटम् इदं च कम्यां दिशि सम्तीत्याह—'पढमं' प्रथमं सिद्धायतनकूटम् 'सीयाए उत्तरेणं' सीताया उत्तरेण उत्तर-दिशि 'चउत्थे' चतुर्थे सुकच्छकूटम् 'नीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स' नीलवतो वर्षधरपर्वतस्य 'दाहिणेणं' दक्षिणेन दक्षिणदिशि द्वितीयं चित्रकृटं तु स्त्रोक्तक्रमवलात् सिद्धायतनान्तरं वोध्यम् तृतीयं कच्छकटं च सुकच्छात् प्राक् अवसेयं।

चत्तारि कुडा पण्णत्ता' हे गौतम ! चार कूट कहे गये हैं 'तं जहा' वे इस प्रकार से हैं-'सिद्धाययणकूडे' सिद्धायतनकूट-यह द्वितीय चित्रकूट की दक्षिण दिशामें है 'चितकूडे' चित्रकूट-यह सिद्धायतनकूट की उत्तर दिशा में है 'कच्छकूडे' कच्छकूडे' कच्छकूट-यह कच्छक्ट चित्रकूट की उत्तर दिशा में है। 'सुकच्छकूडे' और चतुर्थ सुकच्छक्ट यह कच्छक्ट से दक्षिणदिशा में है। ये सीतामहानदी और नीलवान वर्षधर पर्वत की किस दिशा में हैं अब इस बात को सुत्रकार प्रकट करते हैं।

'पढमं सीयाए उत्तरेणं, चउत्थे नीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं'
प्रथम जो सिद्धायतनकूट है वह सीता महानदी की उत्तरिद्धा में है। तथा चतुर्थ
जो सुकच्छकूट है वह नीलवन्त वर्षधर पर्वत की दक्षिण दिशामें द्वितीय चित्र
कूट सूत्र क्रमके बल से सिद्धायतनकूट के वाद है तीसरा कच्छकूट सुकच्छकृट
के पहिले हैं। 'एत्थणं चित्तकूडे णामं देवे महिद्धिए जाव परिवसह) चित्रकूट जो

णं वक्खारण्डवए कई कृडा पण्णता' हे लह'त! आ थित्रहूट दक्षरहार पर्वत उपर हेटला हूटा आवेला छे? जवाणमां प्रलुशी हहे छे-'गोयमा! चत्तारि कृडा पण्णत्ता' हे जीतम! सार हूटा आवेला छे. 'तं जहा' ते हूटा आ प्रमाणे छे-'सिद्धाययणकृडे' सिद्धायतन हूट आ दितीय थित्रहूटनी दक्षिण दिशामां छे. 'चित्तकृडे' थित्रहूट- के सिद्धायतन हूटनी हत्तर दिशामां छे. 'कच्छकृडे' हे-धहूट- आ हे-धहूट थित्रहूटनी उत्तर दिशामां छे. 'सुकच्छकृडे' अने शतुर्ध सुहन्ध हूट के हे-धहूट आ हे-धहूट थित्रहूटनी उत्तर दिशामां छे. 'सुकच्छकृडे' अने शतुर्ध सुहन्ध हूट के हे-धहूटथी दक्षिण दिशामां आवेल छे. के सीता महानदी अने नीलवान वर्ष धर पर्वतनी हुई दिशा तरह आवेल छे, ते अंगे सूत्रहारे स्पष्टता हरे छे-'पढमं सीयाए उत्तरेणं, चज्ले नीलवंतस्य वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं' प्रथम के सिद्धायतन हूट छे, ते सीता महानदीनी उत्तर दिशामां आवेल छे, तेमक शतुर्ध के सुहन्ध हूट छे ते नीलवन्त वर्ष घर पर्वतनी दक्षिण दिशामां—दितीय थित्रहूट सूत्रीहत हमना अण्यी सिद्धायतन हूट पृथी आवेल छे. त्रीले हन्ध हुट छे ते सुहन्ध हूट हिशामां सिद्धायतन हूट पृथी आवेल छे. त्रीले हन्ध हुट छे ते सुहन्ध हुट छो ले सुहन्ध आवेल छे. त्रीले हन्ध हुट छे ते सुहन्ध हुट छे ते सुहन्ध हुट छो ले सुहन्ध हुट छो ले सुहन्ध हुट छो ते सुहन्ध हुट छो ते सुहन्ध हुट छो ले सुहन्ध छो ले हुट छो हुट छो ले हुट हुट छो ले हुट छो

अथास्य नामार्थे प्ररूपितुमाह-'प्तथ' इत्यादि-अत्र-अस्मिन् चित्रक्टे 'णं' खद्ध 'चित्रक्टे णामं' चित्रक्टो नाम 'देवे' देवः परिवसति, स च कीद्द्यः ? इत्यपेक्षायामाह- 'महिद्धीए जाव' महिद्धिको यावत् यावत्पदेत-'महाद्युतिकः, महाबद्धः, महायशाः, महास्त्रीख्यः, महाव्याः, पर्यापमस्थितिकः' इत्येषां पदानां संग्रहो वोध्यः, तद्र्थश्चाष्टम- स्त्राद्वोध्यः, तथाऽस्य 'रायहाणी' राजधानी मेरुगिरेहत्तरस्यां दिशि सीतामहानद्या उदीच्य वक्षस्काराधिपत्यात् प्वमग्रिमेष्वपि वक्षस्कारगिरिषु यथासम्भवं वक्तव्यमिति ।। स्व २ २७॥

॥ इति प्रथमवक्षस्कारवर्णनं समाप्तम् ॥

अथ द्वितीयविजयं वर्णयितुम्रुपक्रमते-'किह णं भंते !' इत्यादि ।

मूल्म-किह णं भंते! जंबुद्दीवे दोवे महाविदेहे वासे सुकच्छे णामं विजए पण्णते ? गोयमा! सीयाए महाणईए उत्तरेणं णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं गाहावईए महाणईए पच्चित्थमेणं चित्तकू इस्स वक्खारपव्वयस्स पुरित्थमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे सुकच्छे णामं विजए पण्णते, उत्तरदाहिणायए जहेव कच्छे विजए तहेव सुकच्छे विजए, णवरं खेमपुरा रायहाणी सुकच्छे राया समुपज्जइ

ऐसानाम इसका हुआ है उसमें कारण यह है कि यहां पर चित्रकूट नामका महिंदिक यावत एकपल्योपम की स्थितिवाला देव रहता है 'यहां यावत पदसे महाचुितकः, महाबलः, महायकाः, महासौख्यः, महानुभावः, पल्योपमस्थितकः' इन पदों का संग्रह हुआ है इन पदों की व्याख्या जानने के लिये अध्यम सूत्र देखना चाहिये इस चित्रकूट नामक देवकी राजधानी मेरु पर्वत की उत्तरदिशा में है। क्योंकि यह सीता महानदी की उत्तर दिशा के वक्षस्कार का अधिपति है इसी प्रकार से आगे के वक्षस्कार गिरियों-पर्वतों के सम्बन्ध में भी यथा संभव कहलेना चाहिये॥ २७॥

प्रथमवक्षस्कार वर्णन समाप्त

महिद्धिए जात्र परिवसइ' थित्रहूट छेवुं नाम के छेनु सुप्रसिद्ध थयुं छे तेमां क्रारण का छे के अर्डी थित्रहूट नामक महिद्धिक यावत् छेक पत्थापम केटली स्थितिवाणा देव रहे छे. अहीं आवेला यावत् पद्धी-'महाशुतिकः, महाबलः, महायशाः, महासौल्यः महानुभावः पत्योपमस्थितिकः' छे पहीतुं अहुण थयुं छे. छे पहीनी व्याण्या काण्वा माटे अन्द्रम सत्रनी व्याण्या केवी कोई छे. छे थित्रहूट नामक देवनी राक्षानी मेरु पर्वतनी उत्तर दिशामां छे, केमके के सीता महानदीनी उत्तर दिशाना व्यवस्थारने। अधिपति छे. आप्रमाणे हवे पछीना व्यवस्थारे।-जिरिको।-पवर्ताना संअध्मां पण्ड यथा संअव स्पन्दता करी देवी कोई छे. ॥ सू. २७॥

પ્રથમ વક્ષસ્કાર વર્જીન સમાપ્ત

तहेव सव्वं। किह णं भंते ! जंबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे गाहाबइकुंडे पण्णत्ते ? गोयमा ! सुकच्छविजयस्स पुरित्थमेणं महाकच्छस्स विज-यस्स पच्चित्थमेणं णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणिव्ले णितंबे एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे गाहावइकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते, जहेव रोहियंसाकुंडे तहेव जाव गाहावइ दीवे भवणे, तस्स णं गाहा-वइस्स कुंडस्स दाहिणिल्लेणं तोरणेणं गाहावई महाणई पवूढा समाणी सुकच्छमहाकच्छविजए दुहा विभयमाणी २ अट्टावीसाए सलिला सहस्से हिं समग्गा दाहिणेगं सीयं महाणइं समप्पेइ, गाहावई णं महा-णई पवहेय मुहेय सञ्बत्थ समा पणवीसं जोयणसयं विक्लंभेगं अद्धा-इजाइं जोयणाइं उन्वेहेणं उभओ पासिं दोहि य पउमवरवेइयाहिं दोहिय वजसंडेहिं जाव दुण्हवि वण्णओ इति। कहि णं भंते। महा-विदेहे वासे सहाकच्छे णामं विजय पण्णते !, गोयमा ! जीलवंतस्त वासहरषट यस्स दाहिणेगं सीयाए महाणईए उत्तरेणं पउमकूडस्स वक्कारवच्यस्स षच्चित्थमेणं गाहावईए पुरित्थमेणं एत्थणं महाविदेहे वास महाकच्छे णामं विजए पण्णते, सेसं जहा कच्छविजयस्स जाव महाकच्छे इस्थ देवे महिद्धीए अट्टोय भाणियव्यो। कहि णं भंते! महा विदेहे बाह्य पडमकुडे णामं वक्खारपवष पण्णते ?, गोयमा ! णीलवं-तस्त द्विल्णे संस्थाप महाणईए उत्तरेणं महाकच्छस्स पुरिथमेणं कच्छावईष पचरियमेणं एत्थ णं महाविदेहे वासे पउमकूडे णानं वक्ला-रपव्यच पण्णेसे, उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविश्यिषणे सेसं जहा चित्तज्ञहरूस काव आसयंति, पडमकूडे चत्तारि कूडा पण्णता, तं जहा सिद्धाययणकूडे १ पउमकूड २ महाकच्छकूडे ३ कच्छाव्हकूडे ४ एवं जाव अट्टो, पउमकुंड इत्थ देवे महद्वीए पिल्झोवमट्टिईए परिवसइ, से तेयहुणं गोयमा ! एवं वुष्चइ । कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे कच्छगावई णामं विजय पण्णते ? गोयमा । णीळवंतस्स दाहिणेणं सीयाए महा-

णईए उत्तरेणं दहावईए महाणईए पच्चित्थमेणं पउमकृडस्स पुरित्थः मेणं इत्थ णं महाविदेहे वासे कच्छावई णामं विजए पण्णेस, उत्तर दाहिणायए पाईणपडीणिवतथण्णे सेसं जहा कच्छस्स विजयस्स जाव कच्छावई य इत्थ देवे, किह णं भंते ! महाविदेहे वासे दहावई कुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते ?, गोयमा ! आवत्तस्स विजयस्स पञ्चत्थिमेणं कच्छ-गावईए विजयस्स पुरित्थमेणं णीलबंतस्स दाहिणिल्ले णितंबे एत्थ णं महाविदेहे वासे दहावई कुंडे णानं कुंडे पण्णत्ते, सेसं जहा गाहावई कुंडस्स जाव अट्टो, तस्स णं दहावईकुंडस्स दाहिणेगं तोरणेगं दहा-वई महाणई पवूढा समाणी कच्छावई आवत्ते विजए दुहा विभय-माणीर दाहिणेणं सीयं महाणई समप्पेइ, सेसं जहा गाहावईए। कहि णं भंते! नहाविदेहे वासे आवते णामं विजए पण्णते ? गोयमा! णील तस्स वासहरपव्ययस्स दाहिणेणं सीयाए महाणईए उत्तरेणं णिळणक्डर्स वक्क्खारपव्वयरस पच्चित्थिमेणं दहावईए महाणईए पुर-रिथमेणं एत्थ णं महाविदेहे वासे आवत्ते णामं विजए पण्णते, सेसं जहा कच्छस्स विजयस्स इति ।

किह णं अंते ! महाबिदेहे वासे णिळणकूडे णामं वक्खारपटवए पण्णते ?, गोयमा ! णीळवंतस्स दाहिणेणं सीयाए उत्तरेणं मंगलाव-इस्स विजयस्स पटचित्धमेणं आवत्तस्स विजयस्स पुरित्थमेणं इत्थणं महाविदेहे वासे णिळणकूडे णामं वक्खारपटवए पण्णते, उत्तरदाहिणा-यए पाईणखीणिकित्थण्णे सेसं जडा चित्तकूडस्स जाव आसयंति णिळणकूडेणं भंते ! कइ कूडा पण्णता ?, गोयमा ! चत्तारि कूडा पण्णता, तं जडा-शिखाययण कूडे णिळणकूडे आवत्तकूडे मंगलावत्त-कूडे, एए कूडा पंचसइया रायहाणीओ उत्तरेणं ।

कि वो वंदे ! सहाविदेहें यासे गंगळावत्ते णामं विजय पण्णते ?, गोयमा ! णीळवंतस्स दिवलणेणं सीयाय उत्तरेणं णिळणकूडस्स पुर- रिथमेणं पंकावईए पच्चित्थिमेणं एरथणं मंगलावत्ते णामं विजए पण्णत्ते, जहा कच्छम्स विजए तहा एसो भाणियव्वो जाव मंगला वत्तेय इत्थ देवे परिवसइ, से एएट्टेणं ०।

कहिणं भंते! महाविदेहे वासे पंकावई कुंडे णामं कुंडे पण्णते?, गोयमा! मंगलावत्तस्स पुरित्थमेणं पुक्खलविजयस्स पच्चित्थमेणं णीलवंतस्स दाहिणे णितंबे, एत्थ णं पंकावई जाव कुंडे पण्णते तं चेव गाहावइकुंडप्पमाणं जाव मंगलवत्त पुक्खलावत्तविजए दुहा विभय-माणी२ अवसेसं तं चेव जं चेव गाहावईए। कहि णं भंते! महाविदेहे बासे पुक्खलावते णामं विजए पण्णते?, गोयमा! णीलवंतस्स दाहिणेणं सीयाए उत्तरेणं पंकावईए पुरित्थमेणं एकसेलस्स वक्खार-पुठ्वयस्स पुक्चतिभणं, एत्थ णं पुक्खलावते णांमं विजए पण्णते जहा कच्छविजए तहा भाणियव्वं जाव पुक्खले य इत्यदेवे महिड्डीए पिल-ओवमट्टिइए परिवसइ, से एएणटुणं ०।

कि गं भेते ! महाविदेहे वासे एगसेले णामं वक्खारपव्वए पण्णते ? गोयमा ! पुक्खलावत्तचक्कविविजयस्स पुरिश्यमेणं पोक्खलाव्यक्कविविजयस्स प्रचित्रियमेणं णीलवंतस्स दिक्खणेणं सीयाए उत्तरेणं, एत्थ णं एगसेले णामं वक्खारपव्वए पण्णत्ते, चित्तकूडगमेणं णेयव्यो जाव देवा आसयंति, चत्तारि कूडा, तं जहा—सिद्धाययणकूडे एगसेलकूडे पुक्खलावत्तकूडे पुक्खलावईकूडे, कूडाणं तं चेव पंचसइयं परिमाणं जाव एगसेले य देवे महिद्धीए।

कहि णं भंते ! महानिदेहे नासे पुक्खलानई णामं चक्कनिट निजए पण्णते ?, गोयमा ! णीलनंतस्स दिवखणेणं सीयाए उत्तरेणं उत्तरिखस्स सीयामुहनणस्स पच्चित्थमेणं एगसेलस्स नक्खारपञ्नयस्स पुरिक्षमेणं, एत्थणं महानिदेहे नासे पुक्खलानई णामं निजए पण्णते, उत्तरदाहिणायए एनं जहा कच्छिनजयस्स जान पुक्खलानई य इत्थ

देवे परिवसइ, एएणट्रेणं ०।

कि णं भंते ! महाविदेहे वासे सीयाए महाणईए उत्तरिक्ले सीय। मुहवणे णामं वणे पण्णत्ते ?, गोयमा ! णीलवंतस्स द्विखणेणं सीयाए उत्तरेणं पुरित्थमलवणसमुहस्स पचिरिथमेणं पुक्खलावइ चक्कविडिविजयस्स पुरित्थमेणं, सीयामुहवणे णामं वणे पण्णत्ते, उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविरिथण्णे सोलसजोयणसहस्साइं पंच य बाणउए जोयणसए दोण्णि य एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं सीयाए महाणईए अंतेणं दो जोयणसहस्साइं नव य बावीसे जोयणसए विवखंभेणं तयणंतरं च णं मायाए २ परिहायमाणे २ णीलवंतवासहरप्रव्यंतेणं एगं एगूणवीसइभागं जोयणस्स विवखंभेणंति, से णं एगाए पडमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं संपरिक्खतं वण्णओ सीयामुहवणस्स जाव देवा आसयंति, एवं उत्तरिक्लं पासं समत्तं। विजया भूणिया रायहाणीओ इमाओ—खेमा? खेमपुरा२ चेव, रिटा३ रिट्ठपुरा४ तहा। खग्गी ५ मंजुसा ६ अवि य ७ पुंडरीगिणो ८॥१॥

सोलसविजाहरसेढीओ तावइयाओ अभियोगसेढीओ सव्वाओ इमाओ ईसाणस्स, सव्वेसु विजएसु कच्छवत्तव्वया जाव अट्ठो रायाणो सरिसणामगा विजएसु सोलसण्हं ववस्वारपव्वयाणं चित्तकूडवत्तव्वया जाव कूडा चतारि २ बारसण्हं णईणं गाहावइ वत्तव्वया जाव उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइयाहिं वणसंडेहिय वण्णओ ॥सू०२८॥

छाया-क्व खल्छ भदन्त ! जम्बूद्दीपे द्वीपे महाविदेहे वर्षे : सुकच्छो नाम विजयः प्रज्ञप्तः ?, गौतम ! सीताया महानद्याः उत्तरेणं नीलवतो वर्षधरपर्वतस्य दक्षिणेन ग्राहावत्या महानद्याः पश्चिमेन चित्रक्रटस्य वक्षस्कारपर्वतस्य पौरस्त्येन अत्र खल्ज जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहे वर्षे सुकच्छो नाम विजयः प्रज्ञप्तः, उत्तरदक्षिणायतः यथैव कच्छो विजयः तथैव सुकच्छो विजयः तथैव सर्वम् । क्व खल्च सुकच्छो विजयः, नवरं क्षेमपुरा राजधानी सुकच्छो राजा समुत्पद्यते तथैव सर्वम् । क्व खल्च भदन्त ! जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहे वर्षे ग्राहावतीकुण्डं प्रज्ञप्तम् ?, गौतम ! सुकच्छविजयः स्य पौरस्त्येन महाकच्छस्य विजयस्य पश्चिमेन नीलवतो वर्षधरपर्वतस्य दाक्षिणात्ये नितम्बे अत्र खल्ज जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहे वर्षे ग्राहावतीकुण्डं नाम कुण्डं प्रज्ञप्तम् यथैव रोद्वितां-

ज्ञाकुण्डं तथैव यावत् प्राहावतीद्वीषं भवनम् तस्य खल्च प्राहावत्याः कुण्डस्य दाक्षिणात्येन तोरणेन ग्राहावती महानदी प्रन्युदा सती सुकच्छमहाकच्छिवजयी द्विवा विभव्यमाना २ अष्टार्विशस्या सिळ्डासहस्रेः समग्रा दक्षिणेन सीतां महानदीं समाणीति, प्राह्मास्याः छछ महानद्याः प्रवहे च मुखे च सर्वत्र समा पश्चविद्यानि योजनशतानि विव्हामधेण अर्धतृतीयानि योजनानि उद्वेधेन उभयोः पार्श्वयोः द्वाभ्यां च प्वाय्रवेदिवाभ्यां द्वाभ्यां च वनएण्डाभ्यां यावद द्वयोरपि वर्णकः इति । क्व खलु भदन्त ! महानिदेहे वर्षे महाकच्छो नाम विजयः प्रज्ञप्तः ?, गौतम ! नीलवतो दर्भपरपर्वतस्य दक्षिणेन सीताया महानद्या उत्तरेण पक्षमकूटस्य वक्षरकार्वर्वतस्य पश्चिमेन ग्राहाबत्या महानद्याः पौरस्त्येन अत्र खळ महाविहेहे वर्षे महा-क्षच्छी नाम विनयः प्रज्ञप्तः, शेषं यथा फच्छविजयस्य यावद् महाकच्छोऽत्र देवो महर्द्धितः अर्थश्च भिणतच्यः । क्व खळ भदन्त ! महाविदेहे वर्षे पश्मक्तरो नाम वक्षस्कारपर्वतः प्रज्ञप्तः ?, गौतम ! नीलवतो दक्षिणेन सीताया महागद्याः उत्तरेण महाकच्छस्य पौरस्त्येन कच्छावत्याः पश्चिमेन अत्र खछ महाविदेहे वर्षे पक्ष्मकूटो नाम वक्षस्कारपर्वतः प्रज्ञप्तः, उत्तर-दक्षिणायतः प्राचीनप्रतीचीनविस्तीर्णः शेषं यथा चित्रक्रटस्य याददासते, एक्ष्मकूटे चत्वारि कूटानि प्रज्ञप्तानि, तथ्या सिद्धायतनक्टं १ पक्ष्मक्टं २ महाकच्छक्टं ३ कच्छावतीक्टम् ४ एवं याबद् अर्थ:, पक्ष्मकूटोऽत्र देवो महर्द्धिकः पत्योपमस्थितिकः परिवसति, स तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते । वव खलु भदन्त ! महाविदेहे वर्षे कच्छावती नाम विजयः प्रज्ञक्षः, गौतम ! नीछवतो दक्षिणेन सीताया महानद्या उत्तरेण हदावत्या महानद्याः पश्चियेन पक्ष्मकूटस्य पौरस्त्येन अत्र खल्ल महाविदेहे वर्षे कच्छावती नाम विजयः प्रज्ञप्तः, उत्तरदक्षिणायतः प्राचीनप्रतीचीनविस्तीर्णः शेषं यथा कच्छस्य विजयस्य यावत् कच्छावती चात्र देव:, नव खल भदन्त ! महाविदेहे वर्षे हूदानती कुण्डं नाम कुण्डं प्रज्ञप्तम्, गौतम ! आवर्तस्य विजयस्य पश्चिमेन कच्छकावत्या विजयस्य पौरस्त्येन नीलवतोदाक्षिणात्ये नितम्बे अत्र खुळु महाचिदेहे वर्षे हदावतीकुण्डं नामकुण्डं प्रज्ञप्तम्, शेषं चथा ग्राहावतीकुण्डस्य यावद्अर्थः, तस्य खल हदावतीकुण्डस्य दक्षिणेन तोरणेन हूदावती महानदी प्रव्युदासती कच्छावत्यावतीं विजयी द्विधा विभजमाना २ दक्षिणेन सीतां महानदीं समाप्नोति, शेषं यथा ग्राहावत्याः।

वन खल भदन्त ! महानिदेहे वर्षे आवर्ती नाम निजयः प्रज्ञप्तः ?, गौतम ! नीलन्तो वर्षधरपर्वतस्य दक्षिणेन सीताया महानद्या उत्तरेण निलन्कटस्य वक्षस्कारपर्वतस्य पश्चिमेन ह्दावत्या महानद्याः पौरस्त्येन अत्र खल महानिदेहे वर्षे आवर्ती नाम निजयः प्रज्ञप्तः, शेषं यथा कच्छस्य निजयस्य इति । क्व खल भदन्त ! महानिदेहे वर्षे निलन्कटो नाम वक्षस्कार-पर्वतः प्रज्ञप्तः ?, गौतम ! नीलवतो दक्षिणेन सीताया उत्तरेण मङ्गलावत्याः निजयस्य पश्चिमेन आवर्त्तस्य विजयस्य पौरस्त्येन अत्र खल महानिदेहे वर्षे निलन्कटो नाम वक्षस्कारपर्वतः प्रज्ञप्तः, उत्तरदक्षिणायतः प्राचीनप्रतीचीनदिस्तीर्णः शेषं यथा चित्रकृटस्य यावत् आसते, निलन्कटे खल भदन्त ! कितिक्टानि प्रज्ञप्तानि ?, गौतम ! चत्वारि क्टानि प्रज्ञप्तानि,

तद्यथा-सिद्धायतनक्टं १ निलनक्टं २ आवर्त्तक्टं ३ मङ्गळावर्त्तक्टम् ४ एतानि क्टानि पश्चभितकाराजधान्य उत्तरेण, क्व खळ भदन्त ! महाविदेहे वर्षे मङ्गालावत्ते नाम विजयः प्रज्ञप्तः १, गौतम ! नीलवतो दक्षिणेन सीताया उत्तरेण निलनक्टस्य पौरस्त्येन पङ्कावत्याः पश्चिमेन, अत्र खळ मङ्गालवत्ती नाम विजयः प्रज्ञप्तः, यथा कच्छस्य विजयः तथा एष भणितव्यः यावद् मङ्गलावत्तीऽत्र देवः परिवसति, स एतेनार्थेन ।

नव खलु भदन्त ! महाविदेहे वर्षे पङ्कावती कुण्डं नाम कुण्डं प्रज्ञष्तम् ?, गौतम ! मङ्गलावर्त्तस्य पौरस्त्येन पुष्कलविजयस्य पश्चिमेन नीलवतो दाक्षिणात्ये नितम्बे अत्र खलु पङ्कावती यावत् कुण्डं प्रज्ञष्तम्, तदेव ग्राहावातीकुण्डप्रमाणं यावत् मङ्गलावर्त्तपुष्कलावर्त्तविजयौ द्विधा विभजमाना २ अवशेषं तदेव यदेव ग्राहावत्याः ।

वव खल भरन्त । महाविदेहे वर्षे पुष्कलावत्तीं नाम विजयः प्रज्ञप्तः ?, गौतम ! नील-बतो दक्षिणेन सीताया उत्तरेण पङ्कावत्याः पौरस्त्येन एकशैलस्य वक्षस्कारपर्वतस्य पश्चिमेन, अत्र खल पुष्कलावत्तीं नाम विजयः प्रज्ञप्तः, यथा कच्छविजयः तथा भणितन्यम् यावत् पुष्कलोऽत्र देवो महर्द्धिकः पल्योपमस्थितिकः प्रतिवसति, स एतेनार्थेन०।

वन खल भदन्त! महानिदेहैं नर्षे एकशैलो नाम नक्षस्कारपर्वतः प्रञ्जप्तः ?, गौतम! पुष्कलान्तं चक्रनितिन्यस्य पौरस्त्येन पुष्कलान्ती चक्रनितिन्यस्य पश्चिमेन नीलन्तो दक्षिणेन सीताया उत्तरेण, अत्र खल एकशैलो नाम नक्षस्कारपर्वतः प्रज्ञप्तः, चित्रक्टगमेन नेतन्यो यानद् देना आसते, चत्नारि क्टानि तद्यथा—सिद्धायतनक्टम् १ एकशैलक्टं २ पुष्कलान्त्रेक्त्रं ३ पुष्कलान्तिक्त्रं अपाणं यानद् एकशैलोऽत्र-देनो महर्द्धिकः। क्व खल भदन्त! महानिदेहे नर्षे पुष्कलान्ती नाम चक्रनिति निजयः प्रज्ञप्तः?, गौतम! नीलन्तो दक्षिणेन सीताया उत्तरेण औत्तराहस्य सीतामुखननस्य पश्चिमेन एकशैल-स्य नक्षस्कारपर्वतस्य पौरस्त्येन, अत्र खल महानिदेहे नर्षे पुष्कलान्ती नाम निजयः प्रज्ञप्तः, उत्तरदक्षिणायतः एवं यथा कच्लिन्यस्य यानत् पुष्कलान्ती चात्रदेनः परिनस्ति, एतेनार्थनः।

वत खलु भदन्त ! महाविदेहे वर्षे सीताया महानद्या औत्तराहे सीतामुखवनं नाम वनं प्रज्ञप्तम् ?, गौतम ! नीलवतो दक्षिणेन सीताया उत्तरेण पौरस्त्यलवणसमुद्रस्य पश्चिमेन पुष्क-लावती चक्रवर्तिविजयस्य पौरस्त्येन, अत्र खलु सीतामुखवनं नाम वनं प्रज्ञप्तम्, उत्तरदक्षिणा-यतं प्राचीनप्रतीचीनविस्तीर्णे पोड्य योजनसहस्राणि पश्च च द्वानवतानि योजनशतानि द्वी च एकोनविंशतिमागौ योजनस्य आयामेन सीताया महानद्या अन्तेन योजनसहस्राणि नव च द्वाविंशानि योजनशतानि विष्क्रमभेण तदनन्तरं च खलु मात्रया २ परिहोयमानं २ नीलवद्वः पंथरपर्वतान्तेन एकोनविंशतिमागं योजनस्य विष्क्रमभेणेति, तत् खलु एकया पद्मवर्षेदिक्या एकेन च वनपण्डेन संपरिक्षिप्तम् वर्णकः सीतामुखवनस्य यावद् देवा आसते, एवमौत्तराहं पार्श्व समाप्तम् । विजया भणिताः । राजधान्य इमाः—क्षेमा १ क्षेमपुरा २ चैव अरिष्ठा ३ अरिष्ठपुरा ४ तथा । खड्नी ५ मज्जूषा ६ अपि च औष्थी ७ पुण्डरीकिणी ८॥१॥

षोडश विचाधरश्रेण्यः तावत्य आभियोग्यश्रेणयः सर्वा इमा ईशानस्य, सर्वेषु विजयेषु कच्छवक्तव्यता यावत् अर्थो राजानः सदशनामकाः विजयेषु षोडशानां वसस्कारपर्वतानां चित्रकृटवक्तव्यता यावत् क्र्टानि चत्वारि २ द्वादशानां नदीनां ग्राहावती वक्तव्यता यावद् उभयोः पार्श्वयोः द्वाभ्यां पन्नवर्वेदिकाभ्यां वनषण्डाभ्यां च ०, वर्णकः ।। स्० २८।।

टीका-'किह णं भंते !' इत्यादि-का खल भदन्त ! 'जंबुद्दीवे दीवे' जम्बूद्वीपे द्वीपे 'महाविदेहे वासे' महाविदेहे वर्षे 'सुकच्छे णामं विजय' सुकच्छो नाम विजय: 'पणाचे' प्रज्ञाः ?, इति प्रश्ने अगवानाह-'गोयमा !' इत्यासुचरस्त्रं सुगमं कच्छवद्वर्णनीयत्वात् 'णवरं'

द्वितीय विजय वक्षस्कार का वर्णन

'किह णं मंते ! जंबूदीवे दीवे महाविदेहे वासे' इत्यादि

टीकार्थ-इस सूत्र द्वारा गौतम प्रश्च से ऐसा पूछ रहे हैं-'किह णं मंते। जंब्हीवे दीवे महाविदेहे वासे छकच्छे णामं विजए पण्णत्ते' हे भदन्त! इस जम्बूझीप
नाम के झीपमें जो महाविदेह क्षेत्र है उसमें छकच्छनामका विजय कहां पर
कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रश्च कहते हैं-'गोयमा! सीयाए महाणईए
उत्तरेणं णीळवंतस्स वासहरपन्त्रयस्स दाहिणेणं गाहावईए महाणईए पच्चित्रिमेणं
चित्रकुडस्स वक्खारपन्वयस्स पुरित्थिमेणं जंब्र्हीवे दीवे-महाविदेहे बासे छकच्छेणामं विजए पण्णत्ते' हे गौतम। सीता महानदीकी पश्चिम दिशामें, नीळवन्त
वर्षघर पर्वत की दक्षिण दिशामें ग्राहावतो महानदी की पश्चिम दिशामें एवं
चित्रकूट वक्षस्कार पर्वत की पूर्व दिशामें जम्ब्रूझीप नामके झीप के भीतर वर्तमान
महाविदेह क्षेत्रमें सुकच्छ नामका विजय कहा गया है 'उत्तरदाहिणायए जहेव

द्वितीय विकथवक्षस्धारनुं वर्षुन

'कहि णं भंते! जंबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे' इलादि

टीकार्थ-आ सूत्रवंड जीतमस्वामी प्रकुने आ जातना प्रश्न डरे छे है-'कहि णं मंते! जंबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे सुकच्छे णामं विजय पण्णत्ते' है लढ़ंत! ओ जंजूदीय नामक दीपमां जे महाविदेहे क्षेत्र छे, तेमां सुक्ष्य्थ नामक विजय क्या स्थणे आवेद छे? ओना जवा-अमां प्रकु के छे-'गोयमा! सीयाए महाणईए उत्तरेणं णीळवंतस्स वासहरपट्ययस्य दाहिणेणं गाहा-वईए महाणईए पच्चित्थमेणं चित्तकूडस्स वक्खारपट्ययस्स पुरिश्यमेणं एत्थ णं जंत्रूदीवे दीवे महाविदेहे वासे सुकच्छे णामं विजय पण्णत्ते' हे जीतम! सीता महानदीनी हत्तर दिशामां नीक्ष्यतंत वर्षाचर पर्वतनी दक्षिण दिशामां जाहावती महानदीनी पश्चिम दिशामां तेमज यित्रकूट वक्षस्कार पर्वतनी पूर्व दिशामां जाहावती महानदीनी पश्चिम दिशामां तेमज यित्रकूट वक्षस्कार पर्वतनी पूर्व दिशामां, जम्लूदीय नामक द्वीपनी आंदर वर्षभान महाविदेह क्षेत्रमां सुक्ष्य नामक विजय आवेद्य छे. 'उत्तरदाहिणायए जहेव कच्छे विजय तहेव सुकच्छे णामं विजय पण्णत्ते' आ सुक्ष्य नामक विजय इत्तरथी दक्षिण दिशा सुधी आयत दीर्घ छे अने पूर्वथी

नवरं केवलम् 'खेमपुग रायहाणी' क्षेमपुरा राजधानी, तत्र 'सुकच्छे राया' सुकच्छो राजा सुकच्छ नामा राजा चकवर्ती 'समुप्पज्जइ' समुत्पद्यते विजयस्वायत्तीकरणादिकं 'तहेव' तथैव-कच्छवदेव 'सव्वं' सर्व वाच्यमितिशेषः । अथ प्रथमान्तरनदीं वर्णयितुमुपक्रमते – 'कहि णं भंते' इत्यादि-क्व खळ अदन्त ! 'जंबुद्दीवे दीवे' जम्बूद्वीपे द्वीपे 'महाविदेहे वासे' महाविदेहे वर्षे 'गाहावइकुंडे' ग्राहावतीकुण्डं ग्राहानत्याख्यान्तरनदी प्रभवस्थानं 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तम् ?, इति प्रश्ने भगवानाह-'गोयमा !' गौतम ! 'सुकच्छविजयस्स' सुकच्छविजयस्य 'पुरित्थमेणं' पौर-स्त्येन-पूर्वदिशि 'महाकच्छस्स विजयस्स' महाकच्छस्य विजयस्य 'पच्चत्थिमेणं' पश्चिमेन-पश्चिमदिशि 'णील्बंतस्य वासहरपव्वयस्स' नील्वतो वर्षपरपर्वतस्य 'दाहिणिल्ले' दाक्षिणा-त्ये 'णितंबे' नितम्बे मध्यभागे 'इत्थ' अत्र अत्रान्तरे मध्यभागसमीपे 'णं' खलु 'जंबुदीवे कच्छे विजए तहेव सुकच्छे णामं विजए पण्णासे' यह सुकच्छ नामका विजय उसर से दक्षिण दिशातक आयत लम्बा है और पूर्व से पश्चिम तक विस्तीर्ण है इत्यादि रूपसे सब कथन कच्छ विजय पकरण में जैसा कहा गया है वैसाही वह सब कथन इस सुकच्छ विजय प्रकरण में भी करलेना चाहिये 'णवरं खेमपुरा राय-हाणी, सुकच्छे राया, समुष्यज्जइ तहेव सव्वं' परन्तु यहां पर क्षेपपुरा नामकी राजधानी है उसमें सुकच्छ नामका चकवर्ती राजा ज्ञासन करता है इत्यादि सब कथन जैसा कच्छ विजय प्रकरण में कच्छ चक्रवर्ती राजा के सम्बन्ध में किया जा चुकों है वैसाही वह सब कथन यहां पर भी कहछेना चाहिये।

'किह णं भंते ! जबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे गाहावहकुं डे पण्णत्तं' हे भदन्त ! जम्बूडीप नामके इस डीपमें वर्तमान महाविदेह क्षेत्रमें ग्राहावती नामका कुंड कहां पर कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रसु कहते हैं—'गोयमा। सुकच्छ विजयस्स पुरित्थमेणं महाकच्छस्स विजयस्स पच्चित्थमेणं णीलवंतस्स बासहरपव्वयस्स दाहिणि इंडे णितंबे एत्थ णं जबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे

પશ્ચિમ સુધી વિસ્ત્રીર્ણ છે. ઇત્યાદિ રૂપથી સર્વ કથન કચ્છ વિજય પ્રકરણમાં જે પ્રમાણે કહેલું છે તેવું જ બધું કથન આ સુકચ્છ વિજય પ્રકરણમાં પણ સમછ લેવું જોઇએ. 'ળવરં હોમપુરા રાયદાળી સુજ્ર હો રાયા, सમુવ્યગ્ર तहेव सहवं' પણ અહીં ક્ષેમપુરા નામક રાજધાની છે તેમાં સુકચ્છ નામક ચક્કવર્તી રાજા શાસન કરે છે, વગેરે બધું કથન જેવું કચ્છ વિજય પ્રકરણમાં કચ્છ ચક્કવર્તી રાજાના સંબંધમાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવેલ છે. તેવું જ બધું કથન અહીં પણ સમછ લેવું જોઇએ.

'कहिणं मंते! जंबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे गाहावइकुंडे पण्णत्ते' & अदंत! अभ्धू-द्वीप नामक आ दीपमां वर्तमान मुद्धाविदेद क्षेत्रमां आद्धावती नामक कुंद क्या स्थणे आवेद छे? स्थेना अवासमां प्रक्ष के छे-'गोयमा! सुकच्छविजयस्स पुरस्थिमेणं महा कच्छरस विजयस्स पच्चित्थिमेणं णील्रवंतस्स वासहरपव्त्रयस्स दाहिणिह्छे णितंबे एत्यणं जंबु- दीवे' जम्बूद्रोपे द्वीपे 'महाविदेहे वासे' महाविदेहे वर्षे 'माहावहकुंडं णामं कुण्डं' ग्राहावती-कुण्डं नाम कुण्डं 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तम्, तत् की ह्याम् ? इत्यपेक्षायामाह—'जहेव रोहियंसाकुंडे तहेव' यथेव रोहितांशा कुण्डं तथेव—अयम्भावः—रोरितांशाकुण्डं यथा—'सवीसं जोयणसयं आयाम-विक्खंभेणं तिण्णि असीए जोयणसए किंचिविसेखणे परिक्खेवेणं दस जोयणाइं उन्वेहेणं' इत्यादि वर्णकेन वर्णितं तथेवेदमपि वर्णनीयमिति किम्पर्यन्तम् इत्यपेक्षायामाह—'जाव गाहा-वइ दीवे भवणे' यावद् ग्राहावती द्वीपं भवनम् ग्राहावत्यां द्वीपं भवनं चाभिन्याप्य वर्णनीयम् अस्योपलक्षणतया तम्नामार्थ खत्रमधिह बोध्यम् तथाहि—'से केणहेणं मंते एवं बुच्छ-गाहावई दीवे गाहावई दीवे ?, गोयमा ! गाहावई दीवे णं वहुई उप्पल्लाई जाव सहस्तपत्ताई गाहावइ दीपसमप्पमाई समवण्णाई' इत्यादि एतच्लाया—अथ केनार्थेन भदन्त ! एवग्रुच्यते—ग्राहावती द्वीपो ग्राहावती द्वीप: ?, गोतम ! ग्राहावती द्वीपे खल्ल बहुनि उत्पल्लानि यावत् सहस्रपत्राणि ग्राहावती द्वीपो ग्राहावती द्वीपसमप्रभाणि समवर्णानि' इत्यादि, एतद्वचाल्या स्रामा,

गाहाबइकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते' हे गौतम! सुकच्छ विजयकी पूर्व दिशामें महा कच्छ विजयकी पश्चिम दिशामें नीलवन्त वर्षधर पर्वत की दक्षिण दिशामें वर्तमान नितम्ब के ऊपर-ठीक मध्यभाग के ऊपर-जम्बूडीप नामके डीपमें वर्तमान महाविदेह क्षेत्रमें प्राहावती कुंड नामका कुण्ड कहा गया है 'जहेव रीहिअंसा कुंडे तहेव जाव गाहाबइदीवे भवणे' रोहितांशा कुण्ड की तरह इसका आयाम और विष्कम्भ १२० योजन का है परिक्षेप इसका कुछकम ३८० योजन का है १० योजन का उद्वेध है इत्यादि रूप से सब वर्णन इसका करछेना चाहिये ग्राहावती नामका इसमें डीप है और उसमें इसी नामका भवन है। इस डीपका ऐसा नाम किस कारण से हुआ है ? तो इस सम्बन्ध में ऐसा कहछेना चाहिये कि ग्राहावती दीप में अनेक उत्पल यावत् सहस्त्रपञ्च ग्राहावती दोपकी जैसी प्रभावाले होते हैं। अतः इसका नाम ग्राहावती दीप हुआ है तथा और भी जो कथन

अथास्माद् ग्राहावती कुण्डािक्तः सरन्तीं स्नोतस्वतीं वर्णियतुमुपकमते—'तस्स णं' तस्य खलु 'गाहावईस्स' ग्राहावत्याः 'कुंडस्स' कुण्डस्य 'दाहिणिक्लेणं' दाक्षिणात्येन दक्षिणिदिग्मवेन 'तीरणेणं' तोरणेन विहर्हारेण 'गाहावई' ग्राहावती 'महाणई' महानदी 'पवृहा' प्रच्यृहा निर्मता 'समाणी' सती 'सुक्रच्छमहाकच्छित्रण्' सुक्रच्छमहाकच्छित्रण्' सुक्रच्छमहाकच्छित्रण्यो 'दुहा' हिधा 'विभयमाणी र' विभन्नमाना र विभक्षो कुर्योणा र 'अष्टावीसाण्' अष्टाविंगत्या 'सिल्लिलासहस्तेहें' सिल्लिलासहस्तेः नदी सहस्तेः 'समग्गा' समग्रा सम्पूर्णा मेरोः 'दाहिणेणं' दक्षिणेन दक्षिणभागेन 'सीयं महाणई' सीतां महानदीम् 'समण्पें 'समाप्नोति समुपैति अथास्या ग्राहावत्या विष्कम्भादिकमाह-'गाहावई णं' ग्राहावती खल्ड 'महाणई' महानदी 'पवहे य मुहे य' प्रवहे—ग्राहावती कुण्डािमर्गमे च पुनः मुखे—सीतामहानदी प्रवेशे च 'सन्वत्थ' सर्वत्र मुख प्रवहयोस्तथा तदितिकेऽपि स्थाने 'समा' समानविष्कमभा द्वेषा प्रज्ञप्ता, एतदेव ग्रद्श्यिति—'पणवीसं जोयणसयं' पञ्चिवंशं—पञ्चिक्तत्या-िषकं योजनशतम् 'विक्खंभेणं' विष्कमभेण—विस्तारेण 'अद्धाइज्जाइं' अर्द्धतृतीयानि 'जोयणाइं' योजनानि 'उच्चेहेणं' उद्देधेन भूत्रवेशेन उण्डत्वेन सपादशतयोजनानां पञ्चाशक्तमभागे एतावत एव मानस्य लामात्, प्रथुलता च पूर्वगत्, तथाहि—महाविदेहेषु कुरुगेरुभद्रशालविज्यवक्षस्कार-इस नामनिक्षेप में जैसा पीछे कहा जा जुका है वैसा ही करलेना चाहिये—यावत्र यह शाश्वत नाम चाला हैं।

'तस्सणं गाहावहस्स कुंडस्स दाहिणिरलेणं तोरणेणं गाहावई महाणई पवृहा समाणी सुँकच्छमहाकच्छविजए दुहा विभजमाणी २ अहावीसाए सिललासहर् स्सेहिं समगा दाहिणेणं सीअं महाणइं समप्पेइ' उस ग्राहावती कुण्ड के दक्षिणदिग्वर्ती तोरण से ग्राहावती नामकी नदी निकली है और सुकच्छ और महाकच्छ विजयों को विभक्त करती हुइ यह २८ हजार नदियों से परिपूर्ण होकर दक्षिण भाग से सीता महानदी में प्रविष्ट हो गह है 'गाह।वईणं महाणई पवहे अ सुहें य सम्बत्य समा पणवीसं जोयणसयं विक्खंभेणं अद्धाइज्जाइ जोयणाइं उन्वेहेणं, उभओ पासिं दोहिंय पडमवरवेइआहिं दोहि अ वण

નામ ગ્રાહાવતી દીપ તરીકે સુપ્રસિદ્ધ થયું. તેમજ ળીજું જે કંઈ કથન એ નામ નિદ્મેપમાં સંભવી શકતું હાય તે પહેલાં જેમ કહેવામાં આવ્યુ છે તેવું જ સમજી લેવું નેઇએ. યાવત્ એ શાશ્વત નામવાળા દીપ છે.

'तरसणं गाहावहरस कुंडरस दाहिणिल्छेणं तोरणेणं गाहावई महाणई पवृदा समाणी सुकच्छ महाकच्छिविजए दुहा विभजमाणी २ अहावीसाए सिळ्ळासहरसेहिं समग्गा दाहिणेणं सीअं महाणइं समणेइ' ते आक्षावती हुंउनी हिस्स्थे आवेदा तेरखुथी आक्षावती नामक नही नीकणी छे, अने सुक्ष्य अने महाक्य विकथिने विलक्ष्त करती से २८ ढूलर नहीं सेथी परि पूर्ण थर्धने हिस्स्थ लाजथी सीता महानहींमां प्रविष्ट थर्ध गर्ध छे.

'गाहावईणं महाणई पवहे अ मुहे य सन्त्रत्य समापणवीसं जोयणसयं विक्खंभेणं

तत्रेषेवं प्रमाणम् -तत्र-मेरुविष्कम्भस्य पूर्वपश्चिमवति भद्रशालवनयोरायामस्य च प्रमाणं चतुः पञ्चाशत्सहस्राणि ५४०००, विजयविस्वारश्र पद्यवरचतुः शताधिकपश्चत्रिशत् सहस्राणि ३५४०६, दक्षास्कारपर्वतिविस्तारः चलारि सङ्घाणि ४०००, ग्रुखवनयोविंस्तारः ५८४४ चतुश्रत्वारिंशद्धिकाष्ट्रशत्युत्तरपञ्चशती, राक्ष्ठसंकछनायां कृतायाम्, पञ्चाशद्धिकद्विशत्युत्तर नवनवतिसहस्राणि ९९२५०, एतच प्रमाणं जम्बृद्धीपस्य लक्षयो वनप्रमाणविष्कमभात संशो-संडेहिं जाव दुण्ह वि वण्णओ इति' यह ब्राहावती महानदी प्रवह में-ब्राहावती कुण्ड से निर्गंत स्थान में-एवं सीता नदी में जहां से प्रवेश करती है उस स्थान में सर्वत्र समान है अर्थात् सुख प्रवह एवं इनसे अतिरिक्त स्थानीं में समान विष्कंभ और समान उद्वेध वाली है इसी बात को सफ्ट करने के लिए सुत्रकार कहते हैं इसका विष्कंभ १२५ योजन का है और उद्येघ इसका २॥ योजन का है क्यों कि १२५ योजन का पचासवां भाग इतना हो होता है। उसकी मोटाई पूर्ववत् समझ छेवे । महाविदेश क्षेत्र में कुरु, मेर अद्रशालविजय वक्षस्कार मुखबन के सिवाय सर्वत्र अन्तर्नदीयां कही गई हैं। वे नदीयां पूर्व पश्चिम में विस्तार वाली है, समान विस्तार वाली हैं, इस प्रकार उनका प्रमाम होता है-मेर के क्षिकंभ पूर्व पश्चिम में भद्रशालवन के आयाम का प्रमाण ५४००० चोपन हजार, घोजन, विजय का विस्तार ३५४०६ पैतीस हजार चार सो छह घोजन, वेक्षस्कार पर्वतं का विस्तार ४००० चार हजार योजन, मुखबन को विस्तार ५८४४ पांच हजार आठ सो चुमालिस योजन। सबको जोडने से-९९२५० नण्णाणु हजार दो सो पचास योजन होता है

मुखबनातिरिवनेषु सर्वत्रान्तरनद्यः सन्ति, ताश्च पूर्वपाश्चिमविस्तृताः समृविस्तारप्रमाणाः.

अद्धाइ जाइं जोयणाइं उच्चेहेणं, उमओ पासिं दोहिं य पउतवर वेइ आहिं दोहि अ वणसं हें जात्र दुण्ह वि वण्णओ इति' से आड़ा तती मड़ नही प्रवह्मां - आड़ा वती हुं उना निर्णमन स्थानमां - नेम असेता नहीं मां अयांथी प्रवेश हरे छे ते स्थानमां - सर्वंत्र समान छे. सेटें है मुख्य प्रवह्म तेमल अन्य जी जा स्थाने मां समान विष्हं ल अने समान इदेधवाणी छे. को बातने स्पष्ट हरेया माटे स्त्रहार हहें छे हैं आने। विष्हं ल १२५ थे। जन केटेंदे। छे अने इदंध रा। थे। जन केटेंदे। छे हैं महें १२५ थे। जनने। प्यासकी। कार्य आटदे। ज शाय छे. तेनी जड़ाई पहेंदां हहा। प्रमाणे समल्यी कोई से मढ़ाविहेंद्व हो मां मेरे सद्रशादिवलय वह्मस्हार मुख्यन सिवाय अधे क अन्तर्नहींथे। हहेदी छे. ते नहींथे। पूर्वपश्चिममां विस्तारवाणी छे. सेने ते समान विस्तारवाणी छे. तेनुं प्रमाण आ रीते थाय छे-मेरे पर्वतन। विष्हं लनी पूर्व पश्चिममां सद्रशाद्यवनना आयामनुं प्रमाण प४००० थापन हजर शेलन, विष्यने। विस्तार ४००० थार हजर थे। जन, मुख्यने। विस्तार ४००० थार हजर थे। जन, मुख्यने। विस्तार ४००० थार हजर थे। जन, मुख्यने। विस्तार ४००० थार हजर थे। अन्तर्नो। विस्तार ४००० थार हजर थे। अन्तर्नो। विस्तार ४०४४ पांयह जर आठसे। शुंभाणीस ये। जन, से अधाने मेणववाथी ६६२५० नवालु हजर कसे। प्रयास थे। अन थाय छे.

ध्यते तथा सति पश्चाग्रद्धिक सप्तग्नती ७५० सम्भ्यते, इदं च विष्कम्भप्रमाणं दक्षिणोत्तरयो भौगयोरन्तर्वितिनीनां पण्णां नदीनां पङ्भिभीने हते लभ्यते इति, आयामस्तु विजयस्य तद्र-क्षास्कारपर्वतान्तरनदीमुखबनानां च सम एवेति, नतु अन्तरनदीनामुक्त आयामो न सङ्गच्छते पश्चचलारिंशत्सहस्रप्रमाणस्यैवायामस्य सत्त्रात् तथा चोक्तम्-

> जावइया सल्लिओ माणुसलोगंमि सन्वंमि। पणयालीस सहस्सा आयामो होइ सन्वसरियाणं ॥

एतच्छाया-यावत्यः सिञ्चिला मानुष्यलोके सर्वस्मिन् । पञ्चनत्वारिश्चत् सहसाणि आयामो भवति सर्व सिरताम् ॥ इतिचेत्, अत्रोच्यते-पञ्चवत्वारिश्चतसहस्रायामग्रतिपादकवचनमितं भरतान्दर्गतगङ्गादि

यह प्रमाण जंबूदीप के एक लाख योजन बिष्कं म से शोधित करने पर ७५० सात सो पचास योजन रह जाता है। यह विष्कं म प्रमाण दक्षिण एवं उत्तर भाग में अन्तवर्तिनी छह नदीयों के छह से भाग देने पर निकलता है।

विजय वहस्कार का आयान एवं अन्तवर्ति वक्षस्कारों का एवं नदी मुख वनों का आयाम समान ही कहा है

शंका-अन्तर्नदीयों का उक्त आयाम कहना ठीक नहीं होगा कारण चोपन हजार का ही-आयाम पहले कहा है कहा भी है-सर्व मनुष्य लोक में जितनी नदीयां हैं उनका आयाम चोपन हजार योजन का ही कहा है।

उत्तर-चोपन हजार योजन का आधाम का प्रतिपादक यह बचन भरत क्षेत्रान्तर्गत गंगादि नदीयों का साधारण कहा है अतः जैसे वहां नदी क्षेत्र का अरुप परिणाम होने से अनुपपित्त होने से उसकी उपपत्ति कोद्वाकरण न्याय का आश्रयणीय है

આ પ્રમાણે જંખૂંદીપના એકલાખ ધાજનના વિષ્કંભમાંથી ખાદ કરવાથી ૭૫૦ સાડા-સાતસા ધાજન શેષ રહે છે આ વિષ્કંભનું પ્રમાણ દક્ષિણ અને ઉત્તર ભાગમાં અન્તર્વાર્તિ છ નદીધાને છથી ભાગવાથી નીકળે છે. વિજય વસસ્કારના આયામ અને અન્તર્વાર્તિ વક્ષ-સ્કારા અને નદી મુખવનાના આયામ સરખા જ છે.

શંકા-અન્તર્નાદીયાના એ પ્રમાણેના આયામ કહેવા તે અરાગર નથી કારણ કૈ-તેના આયામ ચાપન હજાર યાજનના જ કહ્યો છે. કહ્યું પણ છે-અધા મનુષ્ય લાકમાં જેટલી નદીયા છે, તેના આયામ ચાપન હજાર યાજનના જ છે.

ઉત્તર-ચાપન હજાર યાજનના જઆવામ કહેવા. તે બરાબર નથી. કારણ કે-તે પ્રમા-ભેના આયામનું પ્રતિપાદક આ વગન ભરતભ્રત્રવર્તિ ગંગાદિ નદીયાનું સાધારણ કહેલે છે. જેથી ત્યાં નદી ક્ષેત્રનું અલ્પપ્રમાણ કહેવાથી સંગતતા ન થવાથી તેની સંગતી માટે કાેષ્ટા-કરણ ન્યાયના આશ્રય લઇને સમજ લેવું. नदीसाधारणं तेन यथा तत्र नदीक्षेत्रस्याल्पपरिमः। णत्वे नातुपपत्तौ तदुपपत्तयः कोट्टाककरणः माश्रयणीयं भवति तथाऽत्रापि तमाश्रयणीयम्

'उभओ पासिं' उभयोः द्वयोः पार्श्वयोः भागयोः 'दोहि य पउमवरवेइयाहिं' द्वाभ्यां च पद्मवरवेदिकाभ्याम् 'दोहि य वणसंडेहिं' द्वाभ्यां च वनपण्डाभ्यां 'जाव' यावत् यावत्प-देन 'संपरिक्षित्ता' इति सङ्ग्रःह्मम् संपरिक्षिप्तेति तच्छाया तदर्थश्च परिवेष्टितेति 'दुण्ड-वि' द्वयोरपि पद्मवरवेदिका-वनपण्डयोरपि वर्णकः वर्णनपरपदसमूहोऽत्र बोध्यः, स च चतुर्थपञ्चद्धत्रतो ग्राह्यः, अथ तृतीयं महाकच्छविजयं वर्णयितुमुपक्रमते—'कहि णं भंते !'

इसकी दोनों तरफ दो पद्मवरवेदिकाएं हैं और दो वनषण्ड हैं उनसे यह घिरी हुई है (जाव दुण्ह वि वण्ण अ)) यहां यावत् चाइए से वद्मवर वेदिका एवं वन षण्ड इन दोनों का वर्णन कर छेना चाहिए (किह णं मंते! महाविदेहें वासे महाकच्छे णामं विजए पण्णत्ते) हे भदन्त! महाविदेह क्षेत्र में महाकच्छ नामका विजय कहां पर कहा है? इसके उत्तर में प्रसु कहते हैं— (गोयमा! णीठवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं सीयाए महाणइए उत्तरेणं पउमक् इस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चित्थमेणं गाहावईए पुरित्थमेणं एत्थ णं महाविदेहें वासे महाकच्छे णामं विजए पण्णत्ते) हे गौतम! नीठवंत वर्षधर पर्वत की दक्षिण दिशा में सीता महानदी की उत्तर दिशा में पद्मकूट वक्षस्कार पर्वत की पश्चिम दिशा में एवं याहावती महानदी की पूर्व दिशा में महाविदेह क्षेत्र के भीतर महाकच्छ नामका विजय कहा गया है (सेसं जहा कच्छविजयस्स जाव महाकच्छे इत्थदेवे महिद्धीए अद्दो अ भाणियच्यो) वाकी का और सब कथन इसके सम्बन्ध का जैसा कच्छ विजय के प्रकरण में कहा गया है वैसा ही जानना चाहिए इसका महाकच्छ विजय ऐसा जो नाम हुआ है उसका कारण यावत

चेना जन्ने पार्धकांगामां के पदार विहिन्नो छे अने के वनणंडा छे, तेम नाथी के परिवृत छे. 'जाब दुण्ह वि वण्ण मो' अहीं यावत् अन्नेनुं वर्षन् करी देवुं जोर्ध के 'कहिणं मंते! महाविदेहें वासे महाकच्छे णामं विजय पण्णते' हे करंत! महाविदेहें वासे महाकच्छे णामं विजय पण्णते' हे करंत! महाविदेहें वासे महावच्छे णामं विजय पण्णते' है करंत ! महाविदेहें वासे महावच्छे छे-'गोयमा! णीलवंतस्य वासहरपञ्चयस्य दाहिणें सीआए महाणईए उत्तरेणं पत्मकूडस्स वक्खारपञ्चयस्य पच्चित्वमेणं णोहावईए पुरिश्मिणं एत्थ णं महाविदेहें वासे महावच्छे णामं विजय पण्णते' हे जोतम! नीक्षवन्त वर्ष घर पर्वतनी हिस्ख हिशामां सीता महावहीनी उत्तर हिशामां पद्मेश्र वक्षस्थार पर्वतनी पश्चिम हिशामां तेमल ब्राह्मवती महानहीनी पूर्व हिशामां महाविदेह क्षेत्रनी अंहर महा कच्छिवजयस्य जाव महाकच्छे इत्य देवे महिद्धीए अहो अ माणियद्यो' शेष अधुं कच्छिवजयस्य जाव महाकच्छे इत्य देवे महिद्धीए अहो अ माणियद्यो' शेष अधुं कथन को संणंधमां केम कच्छ विकय प्रकरख्यां कहेवामां आवेक्ष छे, तेवुं क सम्लयुं कोधिके. को विकयनुं महाकच्छे विकय कीवुं के नाम प्रसिद्ध थयुं छे तेवुं हारखु यावत

इत्यादि छायागम्यम् नवरं 'जाव' महाकच्छे इत्थ देवे' यावद् महाकच्छोऽत्र देवः, परिवसिति स च कीह्यः ? इत्याह-'महिद्धीए' महद्धिकः इत्युपलक्षणम् तेन महाद्युतिक इत्यादिपदानां सङ्ग्रहो बोध्यः स चाष्ट्रमद्भत्रात् सञ्याख्यो ग्राह्यः, यावत्यदेन-'तत्थ णं अस्ट्वाए रायहाणीए महाकच्छे णामं राया समुप्पज्जइ, महया हिमवंत जाव सन्वं भरहो अ वणं भाणियन्वं,
णिक्खमणवज्जं सेसं भाणियन्वं जाव मंजइ माणुस्सए महो, महाकच्छणामधेज्जे' इति ग्रहीतन्यम्
एतच्छाया-'तत्र खळ अस्टियां राजधान्यां महाकच्छो नाम राजा समुत्यद्यते, महा-

हिमवद् यावत् सर्वे भरतसाधनं भणितव्यं यावद् गुङ्कते मानुष्यकानि ग्रुखानि महाकच्छनामधेयः' इति तत्र 'महाहिमवद् यावद् इत्यत्र यावत्पदेन-'मलयमन्दरमहेन्द्रसारः'
इति ग्राह्मम् तस्य च महाहिमवत्पदेन योगो बोध्यः, तथा सति महाहिमवन्मलयमन्दरमहेन्द्रमहाकच्छ नामका यहां पर महिद्विक देव कि जिसकी एक पल्योपम की स्थिति
है रहता है यहां यावत् पद से महाग्रुतिक महाबल आदि पदों का ग्रहण हुआ है
तथा 'तत्थ णं अरिष्ठाए रायहाणीए महाकच्छे णामं राया समुष्पज्जइ मह्या हिमवंत जाव सब्वं भरहो अ वणं भाणियव्वं णिक्खमणवज्जं सेसं भाणियव्वं जाव
संजइ माणुस्सए सहे महाकच्छणामधेज्जे'' वहां पर अरिष्ठा नामकी राजधानी
है महाकच्छ नामका चकवर्ती राजा उसका शासन करता है यह महाहिमवंत
पर्वत आदि के जैसा विशिष्ट शिक्तशाली और अजेय है भरतचकवर्ती की
तरह यह मनुष्य भव सम्बन्धी सुखों का भोकता है परन्तु इसने अपने जीवन
में सकल संयम धारण नहीं किया ऐसा यह सब प्रकरण पूर्व की तरह यहां
पर कह लेना चाहिये महाकच्छ ऐसा नाम इसका क्यों हुआ सो इस सम्बन्ध में
यहां पर महाकच्छ नाम का ही चकवर्ती यहां पर होता रहता है तथा महाकच्छ
नामका देव रहता है इस कारण इसका नाम महाकच्छ ऐसा कहा गया है।

भहाइच्छ नामक महिद्धिक देव के लेनी ओक पत्थापम लेटली स्थिति रहे छे. गहीं यावत् पद्यी 'महागुतिकः' वंगेरे पदानुं अह्रण् थयुं छे. तेमल 'तत्थणं अरिट्ठाए रायहाणीए महाकचे णामं राया समुप्यज्ञइ, मह्या हिमांत जाव सन्वं भरहोअवणं भाणियन्वं णिक्खमणवर्जं जाव सेसं भाणियन्वं जाव मंजइ, माणुरसए सुहे महाकच्छ णामघेडजे' त्यां अरिष्टा नामनी राल्धानी छे. महा कच्छनामक च्छनती राल्य तेना शासन कर्ता छे. ओ महाहिभवंत पर्यत वंगेरे लेवा विशिष्ट शिक्तिशाणी अने अलेथ छे. लरत चक्ठीनी लेभ ओ मनुष्य लव संखंधी सुणाना लेखता छे, पणु तेले पोताना छवनमां सक्ष्य संयम धारणु क्युं नथी ओवुं ते लघुं प्रकरणु पूर्ववत् अहीं पणु समछ हेवुं लिए ओ. महाकच्छ ओवुं नाम ओनुं शा कारणुश्ची प्रसिद्ध थयुं? ते। ओना संखंधमां आटलुं ल कहेवुं पर्याप्त छे के अहीं महाकच्छ नामे चक्रवर्ती रहे छे तेमल महाकच्छ नामक हेव रहे छे आ कारणु ओनुं नाम महाकच्छ ओवुं कहेवामां आवेल छे.

सार इति समस्तं पदम्, तद्वचाख्या पूर्वे गता, 'यावद् ग्रङ्कं देत्यत्रत्य यावत्पदसङ्ग्राह्यानां पदानां सङ्ग्रह औपपातिकस्त्रस्यैकादशस्त्रतः कार्यः तद्र्यश्च तत्रैव मत्कृतपीयुषवर्षिणी टीकातो वोध्यः, ईदशाभिलापेन महाकच्छशब्दस्य 'अत्थो य माणियव्यो' अर्थञ्च मणित्य्यः वाच्यः सम्प्रति ब्रह्मक्टाख्यं वश्चस्कारपर्वतं वर्णायतुष्ठपक्रमते 'कहि णं मंते !' इत्यादि छायागम्यम् नवरम् 'सेसं जहा चित्तक्रृडस्स जाव आसयिते' शेषं यथा चिशक्र्टस्य याव-दासते—शेषं वर्णातिरियतं सर्वं यथा चिशक्र्टस्य तथा वाच्यम् तत् किम्पर्यन्तम् इत्याह—यावदासते—यावत्पदेन आयामादि स्त्यं भूमिभागवर्णनस्त्रपर्यन्तं च सर्वं भणितव्यम्,

अथात्र कूटानि वर्णयितुमाह-'पउमकूढे चत्तारि कूडा' इत्यादि-सुगगम् 'एवं' एवम्-

(कहि णं भंते! महाविदेहे वासे पडमक् है णामं वक्सारपव्यए पण्णत्ते) हे भदन्त! महाविदेह क्षेत्र में पद्मक्र्य नामका वक्षस्कार पर्धत कहां पर कहा गया है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-(गोपमा! णीलवंतस्स दक्षिणें सीपाए महाणईए उत्तरेणं महाकच्छस्स पुरित्थमेणं कच्छावईए पन्चित्थमेणं एत्थणं महाविदेहे वासे पडमक् हे णामं पवक्खारपव्यए पण्णत्ते) हे गौतम! नीलवंत पर्वत की दक्षिण दिशा में, सीता महानदी की उत्तर दिशा में, महाकच्छ विजय की पूर्व दिशा में एवं कच्छावती की पश्चिम दिशा में महाविदेह के भीतर पद्मक्ष्य नामका वक्षस्कार पर्वत कहा गया है। (उत्तरदाहिणायए पाईणपडीण विच्छिन्ने) यह पद्मक्ष्य नामका वक्षस्कार पर्वत उत्तर से दक्षिण तक तो लंबा है तथा पूर्व से पश्चिम तक विस्तीर्ण है-(सेसं जहा चिलक्ष्यस्मार के प्रकरण में जैसा कहा गया है वैसा ही है यावत् वहां पर अनेक व्यन्तर देव और देवियां आराम करती है विश्राम करती है। (पडमक्रुड चत्तारि कृष्डा पण्णत्ता) पद्मक्रुड के ऊपर

'कहिण मंते! महाविदेहे वासे पडमकृडें णामं वनसारपटबए पण्णते' है लहंत! महाविदेह क्षेत्रमां पड़ाइट नामड वक्षत्रार पूर्वत ड्या स्थणे आवेत छे हैं छोना कवालमां प्रसु हें छे हैं 'गोयमा! णीलवंतस्स दक्षिक्षणेणं सीयाए महाणईए पच्चित्रमेणं एत्थ णं महाविदेहें वासे पवडमकूडें णामं वनसारपटबए पण्णत्ते' हैं जीतम! नीक्षवन्त पर्वतिनो हिलाख़ हिशामां सीता महानहीनी उत्तर हिशामां, महाइच्छ विकयनी पूर्व हिशामां तेमक इच्छावतीनी पश्चिमहिशामां महाविदेहनी आंदर पड़ाइट नामड वक्षत्रार पर्वत आवेत छे. 'उत्तर हाहिणायए पाईणपडीणविच्छिन्ते' से पड़ाइट नामड वक्षत्रार पर्वत आवेत छे. 'उत्तर हाहिणायए पाईणपडीणविच्छिन्ते' से पड़ाइट नामड वक्षत्रार पर्वत आवेत छे. 'उत्तर हाहिणायए पाईणपडीणविच्छिन्ते' से पड़ाइट नामड वक्षत्रार पर्वत आवेत छे. 'उत्तर हाहिणायए पाईणपडीणविच्छिन्ते' से पड़ाइट नामड वक्षत्रार पर्वत आवेत छे. 'सेसं जहा चित्तकूडस्स जाय आसयेति' से संअधा शेष अधु वर्णन यित्रइट वक्षत्रक्षरना प्रकरणुमां कहां चित्तकूडस्स जाय आसयेति' से संअधा शेष अधु वर्णन यित्रइट वक्षत्रक्षरना प्रकरणुमां कहां छे तेवुं क समक्ष्युं यावत त्यां धणु व्यन्तर हेवे। अने हेवीको आराम करे छे, विश्वाम करे छे. 'पडमकृडे चत्तारि कृष्डा पण्णत्ता' पढ़ाइटनी उपर यार इटे। कहिवामां आवेत छे. 'तं जहा' तेमना नामा आ

अनेन प्रकारेण चित्रकृटयक्षरकारपर्वतान्तक्रटानुसारेण इमानि चत्वारि क्र्टानि वर्णनीयानि जाव' यावत्—यावत्पदेन 'समा उत्तरदाहिणेणं परुपरंति, पढमं सीयाए उत्तरेणं' इत्यादि सङ्ग्राह्मम् एतत्समस्तवनन्तरोक्त स्त्राद्वोध्यम्, छायाऽथौं तत एव ज्ञातच्यो 'अद्दः' अर्थः— ब्रह्मक्र्टेति नाम्नोऽर्थः प्राग्वत् तथाहि—'से केणहेणं मंते! एवं वुच्चइ-पडमक्र्डे पडमक्र्डे ? गोयमा! पडमक्र्डे य इत्थ देने महिद्धीए जाव पिलेओ अमिहिईए परिवसइ, से तेणहेणं गोयमा! एवं वुच्चइ पडमक्र्डे पडमक्र्डे ? इति एतच्छायाथौं सुगमौ, अत्र देवविशेषणवाच-कानां महिद्धिकादि पल्योपमिस्थितिकपर्यन्तानां पदानां सङ्ग्रहः सन्याख्योऽष्टमस्त्रस्थादिः जयद्वारदेवाधिकाराद्वोध्यः,

अय चतुर्थ कच्छकावतीनामकं विजयं वर्णमितुमुपक्रमते 'कहि णं भंते !' इत्यादि— चार कूट कहे गये हैं। 'तं जहा' उनके नाम इस प्रकार से हैं—(सिद्धायणकूडे १, पउमकूडे२, महाकच्छकूडे३, कच्छावहकूडे४) सिद्धायतनकूट, पदाकूट, महा-कच्छकूट और कच्छवतीकूट, (एवं जाव अहो) यहां आगत इस यावत्पद से (समा उत्तर दाहिणेणं परुष्परंति, पहमं सीयाए उत्तरेणं) इत्यादि पदों का संग्रह हुआ है यह सब कथन अनन्तरोक्त सूत्र से जाना जा सकता है। पदाकूट ऐसा इसका नाम क्यों हुआ-इस विषय में आलाप इस प्रकार से बनाना चाहिये 'से केणहेणं अंते, एवं वुच्चइ पडमकूडे' उत्तर में प्रभु कहते हैं—'गोयमा' पडम कूडे य इत्थ देवे महिद्धीए जाव पिलओवमिट्टईए परिवसह, से तेण हेणं गोयमा! एवं वुच्चइपडमकूडे२,' इस आलापक की, जो प्रश्न और उत्तर रूपमें है अर्थ सुगम है। देवके विद्योषणभूत सहिद्धिक आदि पदोंकी व्याख्या अष्टमसूत्रस्थ विजयहार के देवाधिकार से जानलेनी चाहिये।

(किह णं अंते ! महाविदेहे वासे कच्छगावती णामं विजए पण्णत्ते) हे भदन्त !

प्रभाषे छे. 'सिद्धाचयणकृष्ठे १, पडमकृष्टे-२, महाकच्छकृष्ठे ३, कच्छावइकृष्ठे-४' सिद्धायतन ६८, पदा६८, महा६० ६८ अने ६० अवती ६८ 'एवं जाव अहो' अहीं आवेल
यावत पहथी 'समा उत्तरताहिणेणं पहत्परें ति, पढमं सीयाए उत्तरेणं' वगेरे पहानुं अहुषु
धशुं छे. आ अधुं ६६ अन्तरताहिणेणं पहत्परें ति, पढमं सीयाए उत्तरेणं' वगेरे पहानुं अहुषु
धशुं छे. आ अधुं ६६ अन्तरताहिणेणं पहत्परें ति, पढमं सीयाए उत्तरेणं वगेरे पहानुं नाम पदा
६८ ओवुं शा कारण्यी सुप्रसिद्ध धशुं है आना संअधमां आलापक अवी रीते समक्ते।
लिश्ने 'से केणहेणं मंते ! एवं वुच्चइ पडमकृष्ठें' उत्तरमां प्रसु क्रेडे छे-'गोयमा ! पडमकृष्ठे य इत्यदेवे महिद्धीए जाव पछिओवमहिईए परिवसह, से तेणहेणं गोयमा ! एवं पुच्चइ
पडमकृष्ठे, २' ओ आलापके के के प्रक्ष अने उत्तर ३५मां छे-अर्थ सुगम छे. हेवना विशेष्णुभूत महिद्धीक वगेरे पहानी व्याण्या अष्टम सूत्रस्थ विकयदारना हेवाधिकारभांथी
लाष्ट्री केवी लिक्षेओ.

'कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे कच्छगानती णामं विजय पण्णत्ते' 🗟 शहन्त ! महा

सुगमम् नवरं 'कच्छकावती-कच्छः तटं, स एव कच्छकः सोऽस्त्यामिति कच्छकावती अति-श्रयार्थेऽत्र मतुष् प्रत्ययः स्त्रीत्वान्ङीष् दीर्घस्तु शरादित्वाद्वीध्यः, 'सेसं जहा कच्छस्स विजयस्म' शेषम् उक्तातिरिक्तं सर्वेकथनम् यथा कच्छस्य विजयस्य तथाऽस्यापि विजयस्य सर्वे वक्तव्यम् तत् किम्पर्यन्तम् ? इत्याइ-'जाव कच्छमावई य इत्थ देवे' यावत् कच्छकावती चात्रदेवः परिवसतीति पर्यन्तं सर्वे वाच्यम्. तत्र देवविशेषगानि प्राग्वत् अथास्मात्प्राच्यमन्तर-नदीं वर्णयितुमुपक्रमते 'कहि णं भंते !' इत्यादि-प्रश्नस्त्रं सुगमम् उत्तरस्त्रे 'गोयमा !' हे गौतम ! 'आवत्तस्त' आवर्तस्य-एतन्नामकस्य 'विजयस्त' विजयस्य 'पच्चत्थिमेणं' पश्चिमेन पश्चिमदिशि : 'कच्छगावईष्' कच्छकावत्याः एतन्नामकस्य 'विजयस्ते' विजयस्य 'पुरिथमेणं' पौरस्त्येन-पूर्वदिशि 'णीलवंतस्स' नीलवतः एतन्नःमकस्य वर्षथरपर्वतस्य 'दाहि-णिल्छे' दाक्षिणात्ये 'णितंबे' नितम्बे-मध्यभागे 'एत्थ' अत्र अत्रान्तरे 'णं' खलु 'महा-महाविदेह क्षेत्रमें चतुर्थ क च्छकावती नामका विजय कहां पर कहा गया है इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा! णीलवंतस्स दाहिणेणं सीयाए महाण-ईए उत्तरेणं दहावतीए महाणईए, पच्चित्थमेणं पउमक्क्डस्स पुरिथमेणं एत्थ णं महाविदेहे वासे कच्छगावती णामं विजए पण्णत्ते' हे गौतम! नीलवन्त की दक्षिणदिशा में, सीता महानदी की उत्तरदिशा में, हूदावती महानदी की पश्चिमदिशा में एवं पद्मकूट की पूर्वदिशा में महाविदेह क्षेत्र के भीतर कच्छा-कावती नामका विजय कहा गया है। (उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिन्ने) यह विजए उत्तर दक्षिण दिशाकी ओर दीई-लंबा है और पूर्व और पश्चिम की

'कहि णं मंते! महाविदेहे वासे दहावई कुंडे पण्णेस् है भदनत! महाविदेह विदे क्षेत्रमां यतुर्थ इन्छक्षवती नामक विजय कता स्थण आवेद छे? ओना जवाणमां प्रक्ष कंडे छे-'गोयमा! णीलवंतास दाहिणेणं सीयार महाणईए उत्तरे णं दहावतीए महाणईए पच्चियमेणं पडमकूडस्स पुरिश्यमेणं पत्य णं महाविदेहे वाते कच्छगावती णामं विजय पण्णेसे छे जीतम! नीक्षवन्तनी हिश्च हिशामां, सीता महानदीनी उत्तर हिशामां, छुदावती महानदीनी पश्चिम हिशामां तेमज पद्मदूरनी पूर्व हिशामां महाविदेह क्षेत्रनी आंदर इन्छि वाती नामक विजय आवेद हैं, 'उत्तरदाहिणायए पाई० पडीणविच्छिन्ते' ओ विजय इत्तर दक्षिण हिशा तरह दिशे ओटले हैं दांणा छे, अने पूर्व अने पश्चिम तरह विस्तीर्ण छे. 'सेसं जहा कच्छस्स विजयस्स जाव कच्छावई अ इत्य देवे' शेष अधुं इयन इन्छिन्यमा वर्णन मुज्य जाणी लेवे वे सहाविदेहे वासे दहावई कुडे पण्णते' है अदन महाविदेहे वासे दहावई कुडे पण्णते' है अदन्त महाविदेहे क्षेत्रमां दहावदी नामक हुं उ क्या स्थेणे आवे स

तरफ विस्तीर्ण है। 'सेसं जहा कच्छम्स विजयम्स जाव कच्छगावई अ इत्थदेवे' इस से अवशिष्ट और सब कथन कच्छविजय के कथनानुसार ही जानना चाहिये

यायत् कच्छकावती नामका देव थहां पर रहता है।

विदेहें महाविदेहें 'वासे' वर्षे 'दहावई कुंडे णामं कुंडे' हदावती कुण्डं नाम कुण्डं 'पण्णेने' प्रश्नसम् 'सेसं' रोपम् आयामविष्कम्भादिकम् 'जहा' यथा 'गाहावई कुंड स्स' ग्राहावती कुंड स्य तथाऽस्यापि बोध्यम् किम्पर्यतम् ? इत्याह—'जाव अद्वो' यावदर्थः—ग्राहावती ति नामार्थ-वर्णनपरस्वत्रपर्यन्तिमत्यर्थः, नवरं हृदावती द्वीभावनं हदावती प्रभपश्चादि योगादिदं कुण्डमपि हदावतीत्यन्वर्थनामकम् इति वोध्यम् तत्र हदाः अगाधा जलाशयास्ते सन्त्यस्यामि हदावती अत्र शरादित्वाही धः पूर्ववत् सुझानः, अध यथेयं सीतामहानदीं गच्छति तथाऽइ 'तस्य णं' इत्यादि तस्य खल्ड 'दाहावई कुंड स्स' हदावती कुण्डस्य 'दाहिणेणं' दक्षिणेन—दक्षिणदिकस्थेन 'तोरणेणं' तोरणेन बहिद्विरेण 'दहावई महाणई' हदावती महानदीं 'पवृदा' प्रव्युदा निर्गता 'समाणी' सत्ती 'कच्छावई आवत्ते' कच्छावत्यावत्तीं 'विजप' विजयौं 'दुहा' द्विधा 'विभयमाणी स्' विभनमाना २ दाहिणेणं' दक्षिणेन—दक्षिणदिक्षि 'सीयं' सीताम् 'महाणई' महानदीं 'समप्पेइ' समाप्नोति समुपैतीत्यर्थः, अथ पञ्चमं विजयं 'सीयं' सीताम् 'महाणई' महानदीं 'समप्पेइ' समाप्नोति समुपैतीत्यर्थः, अथ पञ्चमं विजयं

क्षेत्र में हूदावती नामका कुण्ड कहां पर कहा गया है? इसके उत्तर में प्रमु कहते हैं— 'गोयमा! आवत्तस्स विजयस्स पच्चित्थमेणं कच्छगावहए विजयस्स पुरित्थमेणं नीलवंतस्स दाहिणिल्ले णितंबे एत्थ णं महाविदेहे वासे दहावईकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते' हे गौतम! आवर्तनामक विजय की पश्चिमदिशा में कच्छकावती विजय की पूर्विद्शा में, तथा नीलवन्त प्वत के दक्षिणिदशा में रहे हुए नितम्बपर महावि-देह क्षेत्र के भीतर दहावती नामका कुण्ड कहा गया है। 'से सं जहा गाहावई कुंडस्स जाव अहो' इस कथन के अतिरिक्त और सब इस कुण्ड के विषय का आगेका कथन प्राहावती कुण्ड के कथन जैसाही यावत् इसका नाम ऐसा क्यों हुआ इस अन्तिम कथन तक यहां पर जानना चाहिये 'तस्स णं दहावह कुंडस्स दाहिणेणं तोरणेणं दहावई महाणई पब्हा समाणी कच्छावई आवत्ते विजए दहा विभजन माणीर दाहिणेणं सी अं महाणई समप्येह' उस दहावती कुण्डके दक्षिणतोरणदार

छे? ओना जवाणमां प्रसु डेंछे छे-'गोयमा! आवत्तस्स विजयस्स पच्चित्यमेणं कच्छगाबइए विजयस्स पुरिक्षमेणं णीछवंतस्स दाहिणिल्छे णितंवे एत्थ णं महाविदेहे वासे दहावई कुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते' छे जीतम! आवर्त नामड विजयनी पश्चिम हिशामां डेन्छडावती विजयनी पूर्व हिशामां तथा नीववन्त पर्वतनी हिशा हिशामां आवेव नितंण भाग एपर महाविदेह केन्नी अंहर द्रहावती नामड डंड आवेव छे. 'सेसं जहा गाहावई कुंडस्स जाव अट्टी' आ डथन शिवाय णीलुं अधुं आ डुंड विधेनुं डथन अहावती डुंडना डथन केनुं ज छे यावत् अनुं नाम ओवुं शा डारख्यी राणवामां आव्युं आ अंतिम डथन सुधी अहीं जाखी बेनुं जोडंकी. 'तस्स णं दहावइ कुंडस्स दाहिणेणं तोरणेगं दहावई महाणई पवूडा समाणी कच्छावई आवत्ते विजय दुहा विभजमाणीर दाहिणेणं सीअं महाणइं समप्तेइ' ते द्रहावती डुंडना हिश्खू ते।रखू

वर्णियतुमुपक्रमते—'किह णं भंते !' इत्यादि—१२ खल भदन्त ! 'महाविदेहे' महाविदेहें 'वासे' वर्षे 'आवत्तो णामं विजय' आवत्तों नाम विजयः 'पण्णते ?' प्रज्ञप्तः ? 'गोयमा !' इत्याद्यसम्भं स्पष्टार्थकम्, नवरम् 'सेसं' शेषम् आयामविष्कम्भादिकम् 'जहा कच्छस्स विजयस्स' यथा कच्छस्य विजयस्य तथाऽस्याप्यावर्त्तविजयस्येति । अध तृतीयं निलन्हर-नामकवक्षस्कारपर्वतं वर्णियतुमुपकविते 'किहि णं भंते !' इत्यादि—प्रश्नसूत्रमुत्तरस्त्रं च स्पष्टम्

से द्रहावनी नामकी बहानदी निकली है और यह महानदी कच्छावती एवं आवर्त विजयको दो विभागों में विभक्त करती हुई दक्षिणिदिशा में सीता महानदी में प्रविष्ट हो जाती है 'से लं जहा गाहावईए' इस के सम्बन्ध में आगे का और सब कथन ग्राहावनी नदी के सम्बन्ध में कहे गये वक्तन्य के अनुसार समझना चाहिये 'कहि णं संते! महाविदेहे वासे आवले णामं विजय एण्णत्ते' हे भदन्त! महाविदेह क्षेत्र में आवर्तविजय नामका विजय कहां पर कहा गया है? उत्तर में प्रसु कहते हैं—'गोयमा! जीलचन्तरस वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं सीयाए महाणई उत्तरें जिल्लाकुंडस्स यक्त्वारपव्वयस्स पच्चित्थमेणं दहावतीए महाणई ए पुरिष्यमेणं एत्थ जं महाविदेहे वासे आवत्ते जामं विजय प्रणात्ते' हे गौतम! नीलवन्त वर्षधर पर्वत की दक्षिणिदिशा में सीता महानदी की उत्तर-दिशा में निलक्कण्ड वहास्कार पर्वत की पश्चिमदिशा में सीता महानदी की पूर्वदिशा में महाविदेह क्षेत्र के भीतर आवर्त नामका विजय कहा गया है। 'सेसं जहा कच्छस्स विजयस्स इति' इसके आयाम और विष्कम्भ आदि का कथन जैसा कच्छविजय का गकरण में कहा जा चुका है वैसाही है 'कहि णं मंते!

हारथी द्रहावती नामे महा नहीं नींडणी छे अने के महानहीं ड्रच्छावती अने आवर्त विकयने के विकाशमां विकारत हरती हिस्स हियामां सीता महानहीं मां प्रविष्ट थर्छ काय छे. 'सेसं जहां गाहावहरं' केना संअधमां शेप अर्धुं हरान आहावती नहींना संअधमां स्पष्ट हरवामां आवेल वहताय सुक्ष काष्ट्री लेखें के 'कहिणे मंते! महाविदेहें वासे आवत्ते णामं विजय पण्णत्ते' हे अहंत! महाविदेहें क्षेत्रमां आवर्त विक्रय नामह विक्रय हरा स्थेणे आवेल छे श क्षांत्रमां प्रसु हरें छे-'गोयमा! णींहवंतरस वासहरपव्ययस दाहिणेणं सीयाण महाणईए उत्तरेणं पहिणकुंडरस वक्षारपव्ययस्स पव्यविधामणं दहावतीए महाणईए पुरिव्यामणं एत्य णं महाविदेहें वासे आवर्त्ते णामं विजय पण्णत्ते' हे जीतम! नींलवन्त वर्ष घर पर्वतनी दक्षिण हिशामां सीता महा नहींनी हत्तर दिशामां निलन क्षंत्र पर्यातनी दक्षिण हिशामां दहावती महानहींनी पूर्व दिशामां निलन क्षंत्रमां अहाविदेह क्षेत्रनी अंदर आवर्त नामह विक्रय आवेल छे. 'सेतं जहा कच्छास विजयस इति' केना अध्याम विष्ठं आहि आंजेनं क्षान के प्रमाण्डे क्रय विक्रयना प्रक्रण्यां क्षेत्रवामां आवेल छे, तेलुं क्र छे. 'कहि णं मंते! महाविदेहें वासे णिलणकुंड णामं वक्षारपव्य पण्णत्ते' है अदन्त महाविदेहें वासे णिलणकुंड णामं वक्षारपव्य पण्णते' है अदन्त महाविदेश कासे पण्णते स्वाप्त विक्रय पण्णते हैं अदन्त महाविदेश कासे पण्णते स्वाप्त विक्रय पण्णते स्वाप्त पण्णते हैं अदन्त सहाविद्य पण्णते हैं स्वाप्त सहाविद्य पण्णते हैं स्वाप्त सहाविद्य पण्णते स्वाप्त सहाविद्य पण्णते हैं स्वाप्त सहाविद्य स्वाप्त सहाविद्य स्वाप्त सहाविद्य स्वाप्त सहाविद्य स्वाप्त सहाविद्य सहाविद्य सहाविद्य स्वाप्त सहाविद्य सहाविद्य सहाविद्य स्वाप्त सहाविद्य सहाविद्य स्वाप्त सहाविद्य सहाविद्य सहाविद्य सहावि

नवरम् सच 'उत्तरदाहिणायए' उत्तरदक्षिणायतः - उत्तरदक्षिणदिशोर्दीर्घः 'पाईभवडीणवित्थि-ण्णे' प्राचीनप्रतीचीन विस्तीर्णः-पूर्वपश्चिमदिशो विंस्तारयुक्तः 'सेसं' शेपग्-उद्वेशादिकम् 'जहा' यथा 'चित्तकूडस्स' चित्रकृष्टस्य तथाऽस्यापि तत् किम्पर्यन्तम् ? इत्याह--'जाव आस-यंति' यावदासते अत्र यावत्पदेन-'तत्थ णं वहवे बाणसन्तरा देवा य देवी प्रो य ' इति सङ्ग्राहचम्, एतच्छाया-'तत्र खळु बहवी व्यन्तराः 'वानव्यन्तराः' देवाश्र देव्यश्र' इति 'आसत' इत्युपलक्षणम् तेन 'सयंति विद्वति णिसीयंति तुयहंति रमंति ललंति कीलंति किहंति मोहंति' इत्येषां ग्रहणस्, एतच्छाया - 'शेरते तिष्टन्ति निवीदन्ति, त्यचयन्ति, समनते, ललन्ति, क्रीडन्ति, कीर्तयन्ति, मोहन्ति इति एषां व्याख्या पष्टसूत्रे गताऽतस्ततो बोध्या, महाविदेहे वासे णलिणकृढे णाञं वक्खारपञ्चए पण्यासे' हे भदन्त । महाविदेह क्षेत्र में मलिनकुट नामका वक्षरकार पर्वत कहां पर कहा गया है ? उत्तर में प्रभु कइते हैं-'भोयमा ! जीलवंतस्स दाहिजेणं सीयाए उक्तरेणं संगटावहस्स विज-यस्स पच्चतिथ्रमेणं आवत्तरस विजयस्य पुर्तिथ्रभेगं एत्थ्र णं महाविदेहे वासे णलिणकुढे णायं वत्रवारपावर पण्याते' हे गौतमा! नीलवन्त पर्वत की दक्षिण दिशामें, सीता महानदी की उत्तरदिशा में, मंगलावती विजय की पश्चिमदिशा में और आवर्त विजय की पूर्व दिशा में महाविदेह क्षेत्र के भीतर निलनकूट नामका वक्षस्कार पर्वत कहा राधा है। 'उत्तरदाणाियए, पाईणपडीणविच्छिण्णे,

'सेसं जहा चित्तक्त्रहस्स जाव आसयंति' यह निलनक्रूट नामका वक्षस्कार पर्वत उत्तर और दक्षिण में आयत-दीर्घ-लम्बा है, तथा पूर्व पश्चिम में दिस्तीर्ण है। याकीका इसके सम्बन्धका-और सब आयामादि के प्रमाण का कथन जैसा चित्रक्रूट के प्रकरण में कहा गया है वैसा ही है यहां यावत् पद से अनेक

विदेड क्षेत्रमां नितन कूट नामक वक्षरकार पर्वत क्या स्थणे व्यत्वेत छे? जवालमां प्रसु केडे छे-'गोयमा! जीलवंतास दाहिणें सीयाग उत्तरें गंनलावइस्स विजयस्स पर्वित्यें जावत्त्सा विजयस्स प्रतियों एत्थ णं महाविदेहें वासे जिल्लकुंडे जामं वक्तारक्व्वण पण्णतें हे जौतम! नीतवन्त पर्वतनी दिश्च दिशामां सीता महानदीनी उत्तर दिशामां मंजतावती विजयनी पश्चिम दिशामां वन्ने नावर्त विजयनी पूर्व दिशामां महाविदेह क्षेत्रनी अंदर नितन कूट नामे वक्षरकार पर्वत जावेत छे. 'उत्तरदाहिणायण पाईणपढीणविच्छिणों, सेसं जहा चित्तकूडस्स जाव आसयंति' था नितन कूट नामक वश्वरकार पर्वत उत्तर अने दिश्चमां व्यतनिद्ध हैं जायाम अंगेना प्रमाणुनुं क्यन जेवुं विवक्षरा प्रकाशमां विस्तीर्ज छे. आ संवांचमां शेषकां आयाम अंगेना प्रमाणुनुं क्यन जेवुं विवक्षरा प्रकाशमां केडेवामां आवेत छे, तेवुं ज समज्वुं यावत् पद्यी अद्धीं अनेक व्यन्तर देव—देवीओ व्यापीने विश्वाम करे छे अने आराम करे छे. (१) (अद्धीं यावत् क्षप्दशी 'संवति, चिट्टांति, णिसीयंति, तुयट्टांति। (रमंति, ललंति, कीलंति, किट्टांति, मोहंति) ओ पढी संवदी, विश्वा छे. ओ पढीनी व्याप्या

अथ निल्न कूटा स्यवक्ष स्कारिंग कूटानि विषृच्छिषुराइ—'निल्ण कूटे णं भंते' इत्यादि— छायागम्यम्, नवरं तत्रोत्तरस्त्रे 'एए कूडा पंचसइथा' एतानि कूटानि पंश्वशिवकानि-पश्चश-तप्रमाणानि कूटवर्तिन्यो राजधान्यः कस्यां दिश्यवतिष्ठन्त इत्याह—'रायहाणीश्रो उत्तरेणं' राजधान्यः—राजवसत्यः, उत्तरेण—उत्तरिंदिशि,

अथ षष्ठं विजयं वर्णियतुमुपक्रमते—'किह णं भंते !' इत्यादि सुगमम्, नवरं 'पंकावईए' व्यतर देव-देवियां आकर विश्राम करती है और आराम करती है।

'णिलणकूडेणं भंते! कितकूडा पन्नता' हे भदन्त! निलनकूट के उपर कितने कूट कहे गये हैं! 'गोयमा! चत्तारि कूडा पण्णता' हे गौतम! चार कूट कहे गये हैं 'तं जहा' उनके नाम इस प्रकार से हैं-'सिद्धाययणकूडे, णिलणकूडे, आवत्तकूडे मंगलावत्तकूडे, एए कूडा पंचसइया रायहाणीओ उत्तरेणं) सिद्धायतन कूट, निलन कूट, आवर्त कूट, और मंगलावर्त्त कूट ये कूट, पांच सो हैं यहां पर राजधानियां उत्तर दिशा में हैं। (किहणं भंते! महाचिदेहे वासे मंगलावत्ते णामं विजए पण्णत्ते) हे भदंत! महाचिदेह क्षेत्र में मंगलावर्त नामका विजय कहां पर कहा गया है (गोयमा! नीलवंतस्स दिक्षणेणं सीयाए उत्तरेणं णिलणकूडस्स पुरित्थमेणं पंकावईए पच्चित्थमेणं एत्य णं मंगलावत्ते णानं विजए पण्णत्ते)हे गौतम! नीलवंत पर्वत की दक्षिण दिशा में, सीता महानदी की उत्तर दिशा में, निलन कूट की पूर्व दिशा में एवं पंकावती की पश्चिम दिशा में महाचिदेह क्षेत्र के भीतर मंगलावर्त्त नामका विजय कहा गया है।

छहा सूत्रमांथी लाखी दोशी लोई थे. 'णिलणकूडेणं मंते! कित कूडां पन्तता' हे सहंत! निवित्त हूट उपर डेटबा डूटा (शिणरा) आवेबा छे? 'गोयमा! चत्तारि कूडा पण्णता हे हे जीतम! यार इटा आवेबा छे. 'तं जहा' तेना नामा आ प्रमाणे छे. 'सिद्धाययणकूडे, णिलणकूडे. आवत्तकूडे, मंगलावत्तकूडे, एए कूडा, पंचलइया रायहाणी उत्तरेणं' सिद्धायतन्त्र्टे, निवित्त इट, आवर्त इट अने भंजवावर्त इट से इटा प०० छे. अहीं राज धानीको उत्तर हिशामां डही छे. 'कहिणं मंते! महाविदेहे वासे मंगलावत्ते णामं विजए पण्णत्ते' हे सहनत! मह विदेह क्षेत्रमां भंजवावर्त नामड विजय डया स्थणे आवेब छे? 'गोयमा! नीलवंतस्स दिख्णेणं सीयाए उत्तरेणं णिलणकूडस्स पुरिश्यमेणं पंकावईए पच्चित्रमेणं एया मंगलावत्ते णामं विजए पण्णत्ते' हे औतम! नीववन्त पर्वतनी हिश्च हिशामां, सीता महानहीनी उत्तर हिशामां निवार पण्णत्ते' हे औतम! नीववन्त पर्वतनी हिश्च हिशामां, सीता महानहीनी उत्तर हिशामां निवार पण्णत्ते' निवार भूवी हिशामां तेम प्रभावतीनी पश्चिम हिशामां महाविदेह क्षेत्रनी अंहर मंगलावर्त्त नामे विजय आवेब छे. 'जहा कच्छस्स

⁽१) यहां याचत् शब्द से" संयति, चिट्टंति, णिसीयंति, तुथ्टंति, रमंति, ललंति, कीलंति, किटंति, मोहंति" इन पदोंका ग्रहण हुआ है इनकी ज्याख्या छठे सूत्र से जान लेनी चाहिए।

सम्भगत् तथा 'तावइआओ' तावत्यः पोडशसंख्यकाः 'अभियोगसेढीओ' आभियोग्यश्रेणयः यक्तव्याः 'सव्वाओ इमाओ' सर्नी इमाः अनन्तरोक्ताः अधियोग्यश्रेणयः 'ईसाणस्स' ईशानस्य ईशानाख्यस्येव्द्रस्य अधीना बोध्याः मेस्त उत्तरिद्वित्वित्तंत्त, अधावशिष्टानां विजयवक्षस्त्रारपर्वतादीनां स्वरूपं वर्णयितुं लापवार्थमितिदेशस्त्रआह—'सव्वेसु विजपसु' इत्यादि—सर्वेषु विजयेषु 'कच्छवत्तव्यया' कच्छवक्तव्यया—कच्छस्य विजयस्य या वक्तव्यता वर्णनरीतिः सा बोध्या, सा किम्पर्यन्ता ? इत्याद—'जाव अहो' यावदर्थः—अर्थः तत्तद्विज-यानां नामार्थः तत्पर्यन्ता वक्तव्यता नोध्या तत्र च विजयेषु 'रायाणो' राजानः अधिपत्यः 'सिरसणामगा' सद्दशनामकाः तत्तद्विजयसद्दशनामका बोध्याः, तथा 'विजयेषु' विजयेषु 'सोलप्तव्यः' 'पोडशानां वक्तवारपव्ययाणं' वक्षस्कारपर्वतानां 'चित्तकूडवत्तव्यया' चित्रकूटवक्त-व्यता—वित्रकूटपर्वतवद् वक्तव्यता वर्णनरीतिः बोध्या 'जाव कूडा चत्तारि २' यावत् कूटानि

अब सत्रकार कच्छादि विजयों में से प्रत्येक विजय में जो दो दो विद्याधर श्रेणियां है जनका निर्देश करते हुए कहते हैं-(सोलस विजाहरसेढीओ तावह्याओ आभि शेगमेढीओ सन्वाओ हमाओ ईसाणस्स)हन पूर्वोक्त कच्छादि विजयों में प्रति वैताहय पर्वत के जपर दो आणियों के सद्भाव से तथा हतनी ही आभियोग्य श्रेणियों के सद्भाव से १६ विद्याधर श्रेणियां और १६ आभियोग्य श्रेणियां हैं। ये आभियोग्य श्रेणियां ईशानेन्द्र की हैं अर्थात् ईशान देव लोक के इन्द्र की अधीनता में ये रहती हैं। क्यों कि ये मेर से उत्तर दिशा में वर्तमान हैं। (सन्वेद्ध विज्ञणस कच्छ वन्यव्या जाव अही रायाणो सरिस्णामगा विज्ञणस सीलक्षण वक्ष्यारपव्ययाणं चित्तकृड वत्तव्या जाव कृडा चत्तारि २ वारसण्ह नईणं गाहावह वत्तव्या जाव उन्नओ पासि दोहिं पउमवरवेहयाहिं वणसंडेहिं अ वण्णओ) जितने ये विज्ञण कहे गये हैं उन सब विजयों में जो वक्तव्यता है वह उस २ विजय के बाम पर्यन्त तक कच्छ विजय

इमाओ ईसाणस्सं के पूर्विक्रत ह्य्छाहि विक्योमां प्रति वैवाद्य पर्वतनी उप के श्रेष्ठी-केंगा सहसावधी तेमक केंट्रिशी क आक्षियेक्य श्रेष्ठीकेंगा सहसावधी १६ सेक विद्यान्धर श्रेष्ठीकेंगा क्षिण विद्यान्धर श्रेष्ठीकेंगा क्ष्रिक विद्यान्धर श्रेष्ठीकेंगा क्ष्रिक विद्यान्धर श्रेष्ठीकेंगा क्ष्रिक विद्यामां वर्षामां के रहे के कें भेड्यी उत्तर हिशामां वर्षामान के सहवेस विज्ञास कच्छवत्तव्या जाव अट्ठी रायणी सरिसणामगा विज्ञास सोलसण्हं वक्सार पव्ययाणं वित्तक इवत्वया जाव कूडा चत्तारि २ वारसण्हं नईणं गाहावइ वत्तव्यया जाव उभओ पापि देशहं प्रवस्त्र वेद्याहं वणसंडेहं अ वण्णओं केट्रिशा के विक्यो केंद्रेशमां आवेश के ते सर्व विक्योमां के वक्ष्तव्यता के ते वक्ष्तव्यता तत्सं भंधी विक्यानामा सुधी इव्छ विक्यानी वक्ष्तव्यता केंद्री के तेमक ते विक्योना केंद्रां नामा के, ते नाम अनुसार क त्यां श्रेष्ठवर्ती राक्षकेंगाना नामा के. तेमक केंद्र विक्यमां केंद्र-केंद्र वक्षस्कार

बन्दारि २ चत्वारि २ क्टानि याबद्धणितानि भवन्ति तावत् चित्रक्टवक्तव्यता बोध्या, तथा 'बारसण्हं' द्वादशानां 'णईणं' नदीनाम्-अन्तरनदीनाम् 'गाहावइवक्तव्यया' ग्राहावतीवक्तः इयता बोध्या, साच किम्पर्यन्ता ? इत्याह—'जाव उभभो' इत्यादि वावद् उभयोः द्वयोः 'पासिं' पार्श्वयोः 'दोहिं' द्वाश्यां 'पउमदरवेइयाहिं' पद्मवरवेदिकाभ्यां द्वाभ्यां 'वणसंहेहिं' वनषण्डाभ्यां सम्परिक्षिप्ता इति पर्यन्ता, तत्र पद्मवरवेदिकावनपण्डयोः 'वण्णओ' वर्णकः वर्णनपरपदसमूहो बोध्यः, सच चतुर्थपश्चमस्त्रानुसारेण बोध्यः । स्व० २८।।

अथ द्वितीयं विदेहविभागं प्रदर्शियतुमाह-'व्हिषं भंते' इत्यादि

मूलम् - कहि णं भंते ! जंबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे सीयाए महाण्ईए दाहिणिल्ले सीयामुहवणे णामं वणे पण्णते ?, एवं जहचेव उत्तरिल्लं सीयामुहवणं तह चेव दाहिणं पि भाणियव्वं, णवरं णिसह-इस वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं सीयाए महाणईए दहिणेणं पुरिश्यमल-व्रणसमुद्दस्स पचरिथमेणं वच्छस्स विजयस्स पुरिक्षित्रेणं एरथ णं जंबुः हीवे दीवे महाविदेहे वासे सीयाए महाणईए दाहिणिल्ले सीयामुहवणे णामं वणे पण्णते उत्तरदाहिणायए तहेव सब्वं णवरं णिसहवासहर प्रवयंतेणं एगमेगूणवीसइभागं जोयणस्स विक्लंभेणं किण्हे किण्हो-भासे जाव महया गंधद्वाणि मुझंते जाव आसयंति उभओ पासि की बक्तव्यता जैसी है तथा उन विजयों का जैसा नाम है उसी नाम के अनुसार वहां चक्रवर्ती राजाओं का नाय है। तथा विजयों में जो प्रत्येक विजय में एक एक वक्षस्कार पर्वत के होने से १६ वक्षस्कार पर्वत कहे गये हैं। उन वक्षस्कार पर्वतों की वक्तव्यता चित्रक्ट वक्षस्कार पर्वत की वक्तव्यता जैसी है तथा इन बक्षस्कार पर्वतों के ऊपर हर एक बक्षस्कार पर्वत पर ४-४ जो कट प्रकट किये गये हैं उनकी वक्तव्यता चिलकूट पर्वत के कूटों जैसी है। तथा १२ अन्तर निद्यों की वक्तव्यता ग्राहावती नदी की दोनों पार्श्व भागों में दो पद्म

बर बेदिकाएं और दो चनएंड़ों के चर्णन तक की चक्तण्या के जैसी है ॥२८॥ भवीत हिवाधी हुल १६ वक्षस्कार पवीती धाय छे. ते सर्व वक्षस्कार पवीत विधेनी क्षक्तव्यता थित्रहुट वक्षस्कार पवीतनी वक्षतव्यता केवी छे तेमक को वक्षस्कार पवीतनी क्ष्यर क्षेटले है दरें इंदे क्ष्यस्कार पवीत उपर सार-सार हूटे। प्रक्षट करवामां आवेला छे अने तेमनी वक्षतव्यता थित्रहुट पवीतना केवी छे. तेमक १२ आंतर नदीकीनी क्ष्यत्व्यता थाद्यावती नदीना अन्ते पार्थाकारोत्मां छे पद्मप्तरवेदिका अने छे वन्यां आवेश सुधी वक्षतव्यता केवी छे॥ २८॥

दोहिं पउमवरवेइयाहिं वणवण्णओं इति।

कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे अहाविदेहे वासे वच्छे णामं विजय पण्णते ?, गोवमा । णिसहस्स वासहर्यव्ययस्स उत्तरेणं सीयाए महा-णईए द।हिणेणं दाहिणिस्लस्स सीयासुइवणस्स पच्चित्थेमणं तिउहस्स वक्खारपटवयस्स पुरित्थमेणं प्रथणं जंबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे वच्छे णामं विजए पण्णेत तं चेव पमाणं सुसीमा रायहाणी १, तिउडे वक्खार-पव्वए सुवच्छे विजए कुंडला रायहाणी २, तत्तजलाणई, महावच्छे विजए अपराजिया रायहाणी ३, वेलमणकूडे वक्खारपटवए वच्छावई विजय पर्भकरा रायहाणी ४, सत्तजलाणई रम्मे विजय अंकावई राय-हाणी ५, अंजणे वक्लारपठवए रम्मगे विजए पम्हावई रायहाणी ६. उम्मत्तजला महाणई रमणिक्जे विजय सुभा रायहाणी ७, मायं जणे वक्खारपञ्चए मंगलावई विजए रयणसंचया रायहाणीति ८, एवं जह चेव सीयाए महाणईए उत्तरं पासं तहचेव द्विखिणहरूं भाणियह्वे, दाहिणिव्लं सीयामुहवणाइ, इमे वक्खार हूडा-तं जहा-तिउडे १ वेस-मणकूंड २ अंजणे ३ मायंजणे ४ (छई उ तत्तजला १ मत्तजला २ उम्मत्त जला ३) विजया तं जहा-वच्छे सुवच्छे महावच्छे, चउत्थे वच्छगावई । रम्मे रम्बष् चेत्र, रमणित्जे मंगळावई ॥१॥ रायहाणीऔ तं जहा-सुसीमः छुंडला चेत्र अपराजिय पहंकरा । अंकावई पम्हावई सुहा रयणसंचया ॥२॥ वच्छस्स विजयस्य णिसहे दृष्टिणेणं सीया उत्त-रेणं दाहिणिल्ले सीयामुहवणे पुरस्थिमेणं तिउडे पचरिथमेणं सुसीमा रायहाणी पमाणं तं चेवेति, वच्छाणंतरं तिउडे तभो सुवच्छे विजए एएगं कमेणं तत्तजला गई महावच्छे विजए वेसमणकू हे वक्लारपव्यए वच्छावई विजए मत्त तला णई रम्मे विजए अंजणे वक्खारपट अस रम्मए विजए उम्मत्तजला णई रमणिउजे विजए मायंजणे वक्खारपदवए मंग-लावई विजए ॥ सू०२९॥

छाया-का खल भदन्त ! जम्बूद्वीपे द्वीपे महाजिदेहे वर्षे शीताया महानद्याः दाक्षिणात्यं शीतामुख्यनं नाम यनं प्रज्ञप्तम् ? एवं यथेय ओत्तराहं शीतामुख्यनं तथेय दक्षिणमपि भणित-व्यम्, नवरं निषधस्य वर्षपरपर्वतस्य उत्तरेण शीताया महानद्या दक्षिणेन पौरस्त्यलणसमुदस्य पश्चिमेन वत्सस्य विजयस्य पौरस्तयेन अत्र खल जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहे दर्षे शीताया महानद्या दाक्षिणात्यं शीतामुख्यनं नाम वनं प्रज्ञप्तम् उत्तरदक्षिणायतं तथेय सर्वं नवरं निषधवर्षधर-पर्वतान्तेन एकमेकोनविंशितिसागं योजनस्य विष्क्रम्भेण कृष्णं कृष्णायसासं यावत् महागन्ध-द्वाणं मुझन्तो यावद् आश्चते उभयोः पार्श्वयोः द्वाभ्यां पद्मवरवेदिकाभ्यां वनवर्णक इति ।

का खळु भदन्त ! जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहे वर्षे वत्सी नाम विजयः प्रज्ञप्तः ?, गीतम ! निषधस्य वर्षधरपर्वतस्य उत्तरेण शीताया महानद्या दक्षिणेन दक्षिणात्यस्य शीताम्रखननस्य पश्चिमेन त्रिक्टस्य वक्षस्कारपर्वतस्य पौरस्त्येन अत्र खल्ल जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहे वर्षे बस्सो नाम विजयः प्रज्ञप्तः, प्रमाणं सुसीमा राजधानीं १, त्रिक्टो वक्षस्कारपर्वतः सुवत्सो विजयः कुण्डला राजवानी २, तप्त जला नदी महावत्सो विजयः अपराजिता राजधानी ३, वैश्रवणकृटो वक्षस्कारपर्वतो वत्सावती विजयः प्रसङ्करा राजधानी ४, मत्तजला नदी रम्यो विजयः अङ्कावती राजधानी ५, अञ्चनो वक्षस्कारपर्वतो रम्यको विजयः पक्ष्मावती राज-धानी ६, उन्मत्तज्ञ महानदी रमणीयो विजयः शुभा राजधानी ७, मात्कनो वक्षस्कार-पर्वतो मङ्गलावती विजयः रत्नसञ्जया राजधानी ८, एवं यथैव शीताया महानद्या उत्तरं पार्श्व तथैव दाक्षिणात्यं भणितव्यम्, दाक्षिणात्यशैतामुखवनादि, इमानि वक्षस्कारक्र्टाः तद्यथा त्रिक्टः १ वैश्रवणक्टः २ अञ्चनः ३ मातञ्जनः ४ 'न दी तु-तप्तजला १ मत्तजला २ उन्मत्तज्ञा ३१ विजयाः तद्यथा -वत्सः सुवत्सो महावत्सः चतुर्थी वत्सक्।वती । रुम्यो रम्यकश्चेत्र रमणीयो मङ्गलावती ॥१॥ राजधान्यः, तद्यथा-सुसीमाकुण्डला चैव अपराजिता प्रभक्करा अङ्कावती पश्मावती शुभा रत्वसञ्जया ॥२॥ वत्सस्य विजयस्य निषधो दक्षिणेन श्रीता उत्तरेण दाक्षिणात्यसीताग्रुखवनं धीरस्त्येन त्रिक्टः पश्चिमेन सुसीमा राजधानी प्रमाणं तदेवेि, वत्सानन्तरं त्रिक्टः, ततः छवत्सो विजयः, एतेन क्रमेण दक्षजला नदो महावत्सो विजयः वैश्रवणक्टो वक्षस्कारपर्वतो वत्सावती विजयो मत्तजला नदी रम्यो विजयः अञ्जनो वक्षस्कारपर्वतः रम्यको विजय उन्मत्तजला नदी रमणीयो विजयो मातञ्जनो वक्षस्कारपर्वतः मङ्गलावती विजयः ॥ स्० २९॥

बितीय विदेह की प्ररूपणा-

'कहिणं मंते ! जंबुदीवे दीवे महाबिदेहे वासे'-इत्यादि टीकार्थ-इस सूत्र द्वारा गौतमस्वामी ने प्रभु से ऐसा पूछा है-(किह णं द्वितीय विदेख विभागनी प्रत्रपक्ष

'कहिणं भंते! जंबुदीवे दीवे महःविदेहे वासे' इत्यादि टीक्षार्थ-म्या सूत्र वडे गौतमस्वाभी में प्रभुने स्थेवी रीते प्रश्न क्ष्यों से हैं 'काइणं मंते! टीका-किह णं भंते! इत्यादि-का खळ भदन्त! 'जंबुद्दीवे' जम्बूद्वीपे जम्बूद्वीप-नामके 'दीवे' द्वीपे 'महाविदेहें 'महाविदेहें 'वासे' वर्षे 'सीयाए' श्रीताया श्रीतानामन्याः 'महाणईए' महानद्याः 'दाहिणिन्छे' दाक्षिणात्यं—दक्षिणदिग्वितं 'सीयाष्ट्रहवणे' श्रीताष्ठुख्वनं (णामं' नाम 'वणे' वनं 'पण्णते?' प्रज्ञप्तम् ?, इतिप्रश्ने औत्तराह श्रीताष्ठुख्वनः त तद्वर्ण-यितुमतिदेशस्त्रत्वनोत्तरस्त्रमाह—'एवं जहचेव' इत्यादि—एवम् अग्रना प्रकारेण यथैव 'उत्तरिन्छं' औत्तराहम्—उत्तरदिग्वितं 'सीयाष्ट्रहवणं' श्रीताष्ठुख्वनं प्रागुक्तं 'तहचेव' तथैव तेनैव प्रकारेण 'दाहिणंपि' दक्षिणमपि—दक्षिणदिग्वत्यपि श्रीताष्ठुख्वनं प्रागुक्तं 'काणयन्वयं वक्तव्यम्, परन्तु अनन्तरस्त्रशेक्तोत्तराह—श्रीताष्ठुख्वनाद्यो विशेषस्तं प्रदर्शयितुमाह—'णवरं' इत्यादि नवरं केवलं 'णिसहस्स' निषधस्य—निषधनाप्तकस्य 'वासहरपव्वयस्स' वर्षप्रपर्वतस्य 'उत्तरेणं' उत्तरेण—उत्तरदिश्चि 'सीयाप' श्रीतायाः 'महाणईप' महानद्याः 'दाहिणेणं' दक्षि-णेन दक्षिणदिश्चि 'पुरत्थिमळवणसमुदस्स' पौरस्त्यळवणसमुद्रस्य—पूर्वदिग्वर्तिळवणसमुद्रस्य 'पचित्थमेणं' पश्चिमेन—पश्चिमदिश्च 'वच्छस्स' वत्सन्य—वत्सनामसस्य विदेहद्वितीय भागव-तिनः प्रथमस्य 'विनयस्स' विजयस्य 'पुरत्थिमेणं' पौरस्त्येन—पूर्वस्यो दिश्च 'एत्थ' अत्र—

भंते! जंबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे सीयाए महाणईए दाहिणिल्छे सीयामुहवणो णामं वणे पण्णसे) हे भद्न्त! जम्बूदीष नाम के इस झीप में महाविदेह
क्षेत्र में सीता महानदी का दक्षिण दिग्भागवर्ती सीता मुख्यन नामका वन कहां
पर कहाँ गया है इंसके उत्तर में प्रमु कहने हैं-एवं जह स्थ उत्तरिल्छं सीयामुहवणं तह चेय दाहिणंपि भाणियव्यं) हे गौतस! जैला कथन सीता महानदी
के उत्तर दिग्यती सीतामुख्यन नाम के बन के विषय में किया गया है वैसा
ही कथन इस दक्षिणदिग्यती सीतामुख्यनके विषय में भी जान छेना चाहिए
(णवरं णिसहस्स वासहरपव्ययस्स उत्तरेणं सीयाए महाणईए दाहिणेणं पुरिष्यमलवणसमुद्दस्स पच्चित्यतेणं बच्छस्म विजयस्स पुरिष्यमेणं एत्थणं जबुदीवे दीवे
महाविदेहे वासे) परन्तु उत्तरदिग्यती सीतामुख्यन की अपेक्षा जो इस बन

जंबुदीवे दीवे महाविवेहे वासे सीयाए महाणईए दाहिणिल्ले सीयामुह्वणे णामं वणे पण्णते' हे लहंत! ओड क्षाण थे। जन विस्तारवाणा जंजूदीय नामड आ दीपना महाविदेह क्षेत्रमां सीता महानदीना दिख्छ लाग सीतामुणवन नामे वन ठ्या स्थेणे आवेक छे? अना जवाममां प्रसुश्री डिंडे हे—'एवं जहचेय उत्तरिल्डं सीयामुह्वणं तहचेय दाहिणं वि भाणियन्वं' हे गीतम! जेवुंड्यन सीता महानदीना इत्तर दिग्वर्ता सीता मुणवन नामड वन विधे स्पष्ट करवामां आवेक छे, तेवुं ज ड्यन आ दक्षिण दिग्वर्ती सीता मुणवन नामड वनविधे पण्ड लाखी देवुं लेहें भे. 'णवरं जितहरस वासहरपन्यसस उत्तरेणं सीयाए महाणईए दाहिणेणं पुरिश्यमस्वणसमुद्दसस पच्चिक्षमेणं वच्छास विजयस्स पुरिश्यमेणं एत्थणं जंबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे' पण्ड इत्तरिवर्ता सीता भुणवननी अपेक्षाओं जे आ वनना

अत्रान्तरे 'णं' खुळु 'जंबुद्दीवे' जम्बूद्धीपे 'दीवे' द्वीपे 'महाविदेहे' महाविदेहे 'वासे' वर्षे 'सीयाए' शीतायाः 'महाणईए' महानद्याः 'दाहिणिल्छे' दाक्षिणात्यं-दक्षिणदिग्वर्ति 'सीया-महबणे' श्रीतामुख्यनं 'णाम' नाम 'वणे' वनं 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तम्, एतच 'उत्तरदाहिणायए' उत्तरदक्षिणायतम्-उत्तरदक्षिणदिशोदीर्घ 'तहेव' तथैव औत्तराहशीतामुखवनबदेव 'सञ्बं' सर्वे प्राचीनप्रतीचीनिक्तीणे षोडशयोजनसहस्राणि पश्च च द्वानबत्यधिकानि योजनशतानि द्वी च एकोनविंत्रविभागी योजनस्य आयामेन इत्येतत्समस्तं च तथैव अतः परं ततो विशेषं दर्शयितुमाह-'णवरं' नवरं केवलं 'णिसहवासहरपव्वयंते णं' निषधवर्षधरपर्वतान्ते-निषध-नामक वर्षधरपर्वतस्यान्ते समीपे खलु 'एगं' एकम् 'एगूणवीसइभागं' एकोनविंशतिभागम् 'जोयणस्स' योजनस्य 'तिवखंभेणं' विष्क्रम्भेण-विस्तारेण प्रनस्तत् कीदशम् ? इत्याह-के कथन में विशेषता है वह ऐसी है कि यह दक्षिणदिग्वर्ती सीतामुखवन निषध बर्षधर पर्वत की उत्तर दिशा में, सीतामहानदी की दक्षिण दिशा में, पूर्व दिग्वर्ती लवणसमुद्र की पश्चिम दिशा में और विदेह के ब्रितीय भाग में रहे हुए बत्स नाम के प्रथम विजय की पूर्व दिशा में इस जंबूद्रीय के अन्तर्गत बिदेह क्षेत्र के भीतर कहा गया है। यह वन (उत्तर दाहिणायए तहेव सव्वं णवरं णिसहवासहर पव्वयंतेणं एगमेग्णवीसङ्भागं जोयणस्स विक्खंभेणं, किंग्हें किण्होभासे, जाव महया गंधद्वाणि मुयंते जाव आसयंति) उत्तर से दक्षिण तक लम्बा है इत्यादि रूप से सब कथन उत्तर दिग्वर्ती सीता मुखवन की तरह से यहाँ पर कह छेना चाहिए तथाच पूर्व से पश्चिम तक विस्तृत है १६५९२ चोजन का इसका आयाम है इत्यादि परन्तु यह क्रमदाः घटते २ निषध वर्षधर पर्वत के पास में 🚉 योजन प्रमाण अर्थात् १ योजन के १९ भागों मेंसे १ भाग प्रभाग विस्तार वाला रह जाता है यह वन क्यचित् २ कृष्ण

हयनमां विशेषता छे ते का प्रमाणे छे है का हिल्ल ियती सीता मुण्यन निषध वर्षधर पर्यतनी उत्तर हिशामां सीता महा नहीं हिल्ला हिलामां, पूर्व हिंग्वर्ता लव्ण समुद्रनी पश्चिम हिशामां कने विहेद्धना दिलीय साममां कावेल वत्स नामक प्रथम विक्यनी पूर्व हिशा तरक कं मुद्धीपविहेद्धमां छे. का वन 'उत्तरहाहिण यए तहेव सक्वं णवरं णिसहवासहरपव्यक्तेणं एगमेगूणवीसहभागं जोदणस्म विक्वंभेणं किन्हे किन्होमासे, जाव महया गंधद्धाणं मुंखे जाव आसंवित' उत्तरधी हिल्ला सुधी हीर्ध छे, वगेरे इपमां अधुं क्ष्म उत्तर हिन्दती सीता मुण्यननी केम क अदी पण्च समक्ष सेवं किन्हों किन्हों के तथाय पूर्वथी पश्चिम सुधी विस्तृत छे. १६ दर्व सेवं येकन केटला क्षमा आयाम छे छत्यहि, पण्च आ अनुक्षमें क्षीण श्रतं अधुं छे अने निषध वर्षधर पर्वतनी पासे विह्न येकन प्रमाण केटले हैं वेकन हैं विशेष हैं विश्वी हैं विश्वी हैं हैं वेकन प्रमाण केटले हैं विश्वी विश्वी सहस्त हैं विश्वी केटले हैं विश्वी केटले हैं विश्वी केटले हैं विश्वी हैं विश्वी हैं विश्वी हैं विश्वी विश्वी सिक्त हैं विश्वी सिक्वी हैं विश्वी हैं विश्वी

'किण्हे' इत्यादि-कृष्णं कृष्णवर्णम् मध्यमावस्थायां कृष्णवर्णपत्रसम्पन्नसादनमपि कृष्णवर्णम् न चोपवारमात्रेण कृष्णमिति व्यपदिश्यते किन्तु कृष्णतया प्रतिभासनात् तथाऽऽह 'किण्हो भासे' कृष्णावभासम् यावति वनभागे कृष्णदलानि सन्ति तावति तद्भागे तद्धनमतीव कृष्ण-वर्णमवभासमानम् अतः परं नीलं नीलावभासमित्यादि सङ्ग्रहीतुमाह—'जाव' अत्र यावत्पदेन सङ्ग्रहचपदानां सङ्ग्रहोऽर्थश्च पत्र्वमस्त्रटीकातो वोध्यः 'महया गंथद्धाणि' महागन्धव्राणि 'मुअंते' मुञ्चन्तः इत्यारभ्य 'जाव आसयंति' यावदासते 'आसते' इति पर्यन्तानां पदानां सङ्ग्रहोऽत्र बोध्याः स च सार्थः पञ्चमपष्ठस्त्राभ्यां बोध्यः। तथा तत् 'उभओ पासि उभयोः द्वयोः पार्श्वयोः भागयोः 'दोहिं' द्वाभ्यां 'पउमवरवेद्वाभ्यास् इत्युपलक्षणं तेन द्वाभ्यां वनपण्डाभ्यां च सम्परिक्षिप्तम् इत्येतत्पदद्वयस्य सङ्ग्रहो बोध्यः, तयोः 'वण्णओ' वर्णकः—वर्णनपरपदसम्होऽत्र बोध्यः स च प्राग्वत् चतुर्थपञ्चमस्त्राभ्यां बोध्यः।

अथ द्वितीये महाविदेहविभागे वत्सादिविजय-तत्त्रमाणसुसीमादि-राजधानी त्रिक्रटादि वसस्कारपर्वतः तप्तत्रलादि नदी व्यवस्थामाह-'किह णं मंते!' इत्यादि-प्रश्नस्त्रं स्पष्टम्, वर्ण वाले पन्नों से युक्त होने के कारण कृष्ण है, और इसी कारण यह कृष्ण रूप से प्रतिभासित होता है क्वचित् २ यह बन नील पन्नों से युक्त होने ने कारण नीला है और इसी से यह नीला प्रतीत होता है इत्यादि रूप से इस बन का वर्णन पंचम सूत्र की टीका के अनुसार कर लेना चाहिये यहां आगत याव-त्यद से यही बात प्रकट की गई है 'महया गंधद्धाण सुयंते'' से लेकर 'जाव आसयंति'' यहां तक के पदों का संग्रह पंचय और छठे खूत्र के कथनानुसार यहां पर कर लेना चाहिये यह बन (उभभो पासि दोहिं पडमवरवेहयाहिं दोहिं वणसंडेहिं संपरिविखन्ते) दोनों ओर दो पद्मवरवेदिकाओं से एवं दो बनपंडों से घरा हुआ है इन दोनों का पद्मवरवेदिका और वत्रवंड का-वर्णनकरने वाले पदसमूह समग्र प्रकार से यहां चतुर्थ पंचम सूत्र से समझ लेना चाहिये (किह णं भंते! जंबुदीवे दीवे महाविदेहे बाले चच्छे णामं विज्ञ पण्णान्ते) भदनत! जंबुदीय

हुण्यु छे. अने अधी ज आ हुण्यु इपमां प्रतिशासित शाप छे. ६वसित्-६वसित् आ वन नीसपत्रिथी युक्त हिला अहस नीसुं छे अने अधी ज आ नीसुं प्रतीत धाय छे. हिलाहि इपमां आ वननुं वर्षान पंचम सूचनी टीका मुप्ल समल सेवुं प्रतीत धाय छे. हिलाहि इपमां आ वननुं वर्षान पंचम सूचनी टीका मुप्ल समल सेवुं के छे थे. असी आवेसा यावतू पहथी अज बात प्रकृट करवामां आवी छे 'हह्या गंघद्वाणि मुयंते' असी भांदीने 'जाव आसयंति' असी सुचीना पहानुं अद्ध्यु पंचम अने पष्ठ सूचना कथन मुजल असी करी सेवुं कि सूचना कथन मुजल असी करी सेवुं कि श्री हो अप अने प्यापत्र हो सेविं प्रतिक्र के पद्मवरवेदिका असी तेमज के वनण दिशा आवेस छे. विकास के वनण दिशा असी असी वनण दिशा असी स्वापत्र के पद्मवरवेदिका असी प्यापत्र के पद्मवरवेदिका असी प्रतिक्र के वनण दिशा असी क्ष्यून यहाँ कहि का सेते । जंबुहीवे दीवे महाविदेहे वासे वच्छे

उत्तरस्त्रे 'गोयमा !' हे गौतम ! 'णिसहरस' निषधस्य-निषधनामकस्य 'वासहरपव्वयस्स' वर्षथरपर्वतस्य 'उत्तरेणं' उत्तरेण-उत्तरदिशि 'सीयाए' शीतायाः 'महाणईए' महानद्याः 'दाहिणेणं' दक्षिणेन-दक्षिणदिशि 'दाहिणिस्लस्स' दाक्षिणात्यस्य दक्षिणदिग्वर्दिनः 'सीया-सहवणस्स' शीताष्टुखननस्य 'पचित्थियेणं' पश्चिमेन-पश्चिमदिशि 'तिउद्धस्स' त्रिकूटस्य-त्रिक्टनामकस्य 'वक्खारपव्वयस्स' वक्षस्कारपर्वतस्य 'पुरत्थियेणं' पौरस्त्येन पूर्वदिशि 'एत्य' क्ष्र अत्रान्तरे 'णं' खळ 'जंबुद्दीवे' जम्बृद्धीपे 'दीवे' द्वीपे 'महाविदेहे' महाविदेहे 'वासे' वर्षे 'वस्के' वत्सः 'णामं' नाम 'विजए' विजयः 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तः, अस्य 'तं चेव' तदेव 'पमाणं' प्रमाणम् 'सुसीमा' सुसीमा-सुसीमा नाम्नी 'रायहाणी' राजधानी अस्याः प्रमाण-मयोध्याराजधानीवत्, अथ विजयविभ!जकं वक्षस्कारगिरिमाह-'तिउद्धे' त्रिकूटः क्रिकूट-नामकः 'वक्खारपञ्चए' वक्षस्कारपर्वतः १, 'सुवच्छे' स्वत्तः-सुवत्सनामा 'विजए' विजयः 'क्रंडला' कुण्डला कुण्डलानाम्नी 'रायहाणी २' राजधानी 'तत्तजलाणई' तप्तजला नदी

नाम के द्वीप में महाविदेह क्षेत्र में वस्स नाम का विजय कहां पर कहा है? उत्तर में प्रभु कहते हैं-(गोयमा! णिसहस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं सीयाए महाणईए दाहिणेणं दाहिणिछस्स सीयामुहवणस्स पच्चित्थमेणं तिउडस्स वक्खारपव्वयस्स पुरित्थमेणं एत्थ णं जंबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे वच्छे णामं विजय पण्णते) हे गौतम! निषध वर्षधर पर्वत की उत्तर दिशा में सीता महानदी की दक्षिण दिशा में, दक्षिण दिग्वती सीता मुखवन की पश्चिम दिशा में जिकूट वक्षस्कार पर्वत की पूर्व दिशा में जम्बूदीप नाम के द्वीप में वर्तमान विदेह क्षेत्र-महाविदेह क्षेत्र के भीतर बत्स नाम का विजय कहा गया है (तं चेव पक्षाणं स्वस्त रायहाणी तिउडे वक्षारपव्वए सुबच्छे विजय कुंडला रायहाणी २ तत्त्रजला णई महाव छे विजय अपराजिया रायहाणी ३) इसका प्रमाण वही है सुक्षोमा यहां राजधानी है इसका वर्णन अयोध्या राजधानी के

उत्तर नदी 'महावच्छे' महावत्सः—महावत्सनामा 'विजए' विजयः 'अपराजिया' अपराजिता-अपराजितानामनी 'रायहाणी' राजधानी ३ 'वेसमणक्र्डे' वैश्रवणक्टः—वेश्रवणक्टनामा 'वक्खारपव्यए' वक्षस्कारपर्वतः 'वच्छावईविजए' वत्सावती विजयः 'पभंकरा' प्रभइरा-प्रभक्करा नामनी 'रायहाणी' राजधानी ४ 'मचजळा णई' मचजळा नदी 'रम्मे विजए'
रम्यः रम्यनामा विजयः 'अंकावई रायहाणी' अङ्कावती राजधानी ५ 'अंजणे' अञ्चनः
अञ्चननामा 'वक्खारपव्यए' वक्षस्कारपर्वतः 'रम्मगे' रम्यकः—रम्यकनामा 'विजए' विजयः
'पम्हःवई' पश्चमावती—पश्चमावतीनामनी 'रायहाणी' राजधानी ६, 'उम्मचजळा महाणई'
उन्मचजळा उन्मचजळानामनी महानदी 'रमणिजजे' रमणीयः—रमणीयनामा 'विजए'
विजयः 'सुभा' शुभः—शुभानामनी 'रायहाणी' राजधानी ७ 'मायंजणे' मातञ्चनः—मातञ्चननामा 'वक्खारपव्यए' वक्षस्कारपर्वतः 'संगळावई विजए' मङ्गळावती—प्रकृष्णवतीनामकः

जैसा है। त्रिक्ड नाम का वक्षरकार पर्टत है खुवस्स विजय है, खंडला नामकी यहां राजधानी है और तस्तलला नाम की नदी है महावस्स नामका विजय है अपराजिता नाम की राजधानी है (एवं वेसनणकुडे वक्ष्णारपन्वए) वैश्रवण कुट नामका वक्षरकार पर्वत है (बच्छावई विजए पर्मकरा रायहाणी) वस्सावती विजय है और इसमें प्रभंकरा नामकी राजधानी है (अन्तलला णई) मन्तलला नाम की नदी है (रम्झे विजए, अंकावई रायहाणी ५ अंजणे वक्ष्वारपव्वए) रम्य नाम का विजय है, अङ्कावती नाम की इसमें राजधानी है अंजन नाम का वक्षरकार पर्वत है (रम्मे विजए प्रमहावई रायहाणी ६ उन्मन्तलला महाणई) रम्यक नाम का विजय है, पद्मावती नामकी इसमें राजधानी है और उन्मन्त जला नामकी नदी है (रमणिउजे विजय सभा रायहाणी ७ मायंजणे वक्खारपव्वए) रमणीय नाभका विजय है खुआ नाम ही रायहाणी ७ मायंजणे वक्खारपव्वए) रमणीय नाभका विजय है खुआ नाम ही रायहाणी ७ मायंजणे वक्खारपव्वए) रमणीय नाभका विजय है खुआ नाम ही राजनानी है और मातञ्जन नाम का वक्षरकार पर्वत है (मंगलावई विजय रयणंसच्या रायहाणी ८) भंगलावती

अहीं चित्र हूट नामे वक्षरहार पर्वत छे अने सुवत्स विकय छे अहीं हुंउदा नामह शक्षानी छे अने तफ्तकड़ा नामह नहीं छे. महावत्स नामह विकय छे अने अपराक्षिता नामह शक्षानी छे. 'एवं वेस्प्रणकुड़े दक्ष्यार्यकाए' वश्रवण हूट नामह वश्व-रहार पर्वत छे. 'वक्कावईविजए पर्वकरा रायहाणी' वत्सावती विकय छे अने ओमां प्रशंहरा नामह राक्षानी छे. 'मत्तजला जई' मत्तकदा नामे नहीं छे. 'रम्मे विजए, अंकावई रायहाणी ५ डांजो वक्षारपद्यए' २२५ नामह विकय छे, अंहावती नामे ओमां राक्षानी छे. अंक्षान नामह वश्वरहार पर्वत छे. 'रम्मो विजए पक्हावइ रायहाणी ६ उन्मत्तजला महाणई' २२४६ नामि विकय छे. अंहावती नामह ओमां राक्षानी छे अने उन्मत्त कथा नामह नहीं छे. 'रमिणिडने विजय छे. अंहावती नामह ओमां राक्षानी छे अने उन्मत्त कथा नामह नहीं छे. 'रमिणिडने विजय छे. अंहावती नामह ओमां राक्षानी छे अने सातंकन नामह वश्वरहार रमणीय नामह विकय छे. शुला नामह राक्षानी छे अने सातंकन नामह वश्वरहार

'विजए' विजयः 'रयणसंचया रायहाणी' रत्त्रसञ्चया-रत्नसञ्चयानाम्नी राजधाती ८, इमा राजधान्यः शीतामहानदी दक्षिणदिग्वर्तित्वेन विजयानामुत्तराद्धमध्यम्खण्डेषु वोध्या,

अथ विजयादीनां विष्कम्भादि समानत्वे दिश्ति ऽपि कञ्चिदपि पार्श्वयोः परस्परं भेदी न स्फूटी भिवतुनहेंदिति संशयं निराक्तुमाह-'एवं जह चेव' इत्यादि-एवस् पूर्वोक्तप्रकारेण पर्यव-येनैव प्रकारेण 'सीयाए' शीतायाः 'महाणईए' महानद्याः 'उत्तरं पासं' उत्तरं पार्श्वं प्राच्यम् 'तह चेव' वर्षेव-तेनैव प्रकारेण 'दिविखणिएलं' दाक्षिणात्यं-दक्षिणदिम्वर्ति पार्श्वमिप 'भाणियव्वं' भिजतव्यं-वक्तव्यं तच्च कीहद्वम् इत्याह-'दाहिणिल्लसीयाम्रहवणाइ' दाक्षिणात्यक्षीतामुखवनादि-दाक्षिणात्यं शीतामुखवनमादिः प्रथमं यस्य तद् दाक्षिणात्यक्षीतामुखवनादि, एतेन यथा प्रथमविभागस्य कच्छविजय आदिरभिहितस्तथा द्वितीयविभागस्यादिः दाक्षिणात्यक्षीतामुखवनमुक्ति तथा 'इमे ववस्थारकूला' इमे वक्षस्कारकूटाः-वक्षस्काराश्चते क्टाः-क्टानि सक्त्येषामिति क्टाः-क्टवन्तः अवाश आदित्वाद् प्रत्ययो बोध्यः, वक्षस्कारक्टाः-वक्षस्कारपर्वताः 'तं जहा' तद्यथा-'तिउद्धे' विक्रटः १ 'वेसमणकूढे' वैश्रवण-स्कारक्टाः-वक्षस्कारपर्वताः 'तं जहा' तद्यथा-'तिउद्धे' विक्रटः १ 'वेसमणकूढे' वैश्रवण-

पर्वत छे. 'मंगलावई विजय रयणसंचया रायहाणी ८' मंगलावती विकथ छे. रत्नसंचया नामह राज्यानी छे. छे सर्व राज्यानी छो। शीता महानदीनी दक्षिण दिशतमां छे छेथी छो। विकथीना उत्तरार्ध मध्य भंडिमां व्यवस्थित छे. 'एवं जहचेन सीयाए महानद्देए उत्तरं पासं तहचेन दिख्लाण्डलं आणियञ्नं' आ प्रमाणे केन सीताना उत्तर दिख्ती पार्श्वलाण विषे वर्धन हरवामां आवेश्व छे, तेशुं क आ सीता नहींन हिल्ला पिश्वम लाग पण्ड हेंडेवामां आवेश्व छे. 'दाहिणिस्क्रसीयामुह्यणाई३' के प्रमाणे प्रथम विकागना प्रारंशमां हिल्ला विषे हेंडेवामां आवेश्व छे. 'दाहिणिस्क्रसीयामुह्यणाई३' के प्रमाणे प्रथम विकागना प्रारंशमां हिल्लाय विषे हेंडेवामां आवेश्व छे ते प्रमाणे आ दितीय विकागना प्रारंशमां हिल्लाइंडेवती सीतामुण वन विषे पण्ड समक्षतुं केंडि छे. 'इमे वक्लारक्र्डा' आ वक्षरहार पर्वती छे. 'तं जहा' केम है—'तिखंड १, वेसमणक्रडे २, अंजणे ३, मार्यजणे ४, 'त्रिहर, वेश्वमण्ड हूर, आंकण्ड हूर अने साथं कन हूर 'णइ उत्तर जला ३, मत्तज्ञा २, उत्मत्तज्ञा ३, त्रित्वक्षा १, मत्तज्ञा २, अने उन्मत्तज्ञा ३, त्रित्वक्षा १, मत्तज्ञा २, अने उन्मत्तक्षा

कृटः २ 'अंत्रणे' अझनः ३ 'मायंत्रणे' मातझनः ४ 'णईउ तत्तजला १ मनजला २ उम्मन जला ३' नदोतु—तप्तजला १ मनजला २ उम्मनजला ३ इमास्तिम्नः । अथ वत्सादि विजयानां सङ्ग्रहार्थमाइ—'विजया तं लहा' इत्यादि—विजयाः तद्यथा—'वच्छे सुवच्छे' इत्यादि पद्यमुन्तानार्थम् १, एतच पद्यं विजयानामेकदैव सुखबोधार्थमुक्तं तेन न पुनरुक्तिः शङ्कनीया, एवं राजधानीनामेकव नामानि सङ्ग्रहीतुं पद्यमाइ—'रायहाणीओ तं जहा' इत्यादि राजधान्यः, तद्यथा 'सुसीमा कुंडला चेव' इत्यादि पद्यं सुगमम् ।

अथ पूर्वस्रवाहत्सविजयस्य दिङ्नियमे सुगमेऽपि स्वाप्त्रविचित्रयात्तियमनार्थे क्रमान्तरमाह—'वच्छस्त' इत्यादि—वत्सस्य—वत्सनामहस्य 'विजयस्स' विजयस्य 'णिसहे' निषधः—निषधनामको वर्षधरपर्वतः 'दाहिणेणं' दक्षिणेन दक्षिणदिशि तथाऽस्य 'सीया' शीता—शीतानामनी महानदी 'उत्तरेणं' उत्तरेण उत्तरदिशि वर्तते 'दाहिणिल्लसीयामुहवणे' दाक्षिणात्यशीतामुख्यनं 'पुरित्थमेणं' पौरक्षयेन—पूर्वदिशि 'तिउडे' विक्टः—त्रिक्टनामा वक्षस्कारगिरिः 'पच्चित्थमेणं' पश्चिमेन—पश्चिमदिशि 'छसीना' सुसीमा 'रायहाणी' राजधानी अस्याः 'पमाणं' प्रमाणं 'तं चेव' तदेव—पूर्वोक्तमेव—अयोध्याराजधानीवत् इतिभावः, राजधान्याः पुनरूपादानं प्रमाणकथनार्थम् तेन न पुनरुक्तिदोषः,

(विजया तं जहा) ये विजय हैं—(वच्छे, सुवच्छे, महावच्छे, चडत्थे वच्छेगावई रम्मे स्म्मए चेव रमणिज्जे मंगलावह ॥१॥ वत्स, सुवत्स, महावत्स,
वत्सकावती, रम्य, रम्यक, रमणीय और मंगलावती (रायहाणीओ (तं जहा)
ये राजधानियां हैं—(सुसीमा इंडला चेव अपराज्ञिय पहंकरा अंकावई पम्हावई
सहा रयणसंच्या) सुसीमा, इंडला, अपराज्ञिता, प्रभंकरा, अंकावती, पश्मावती, शुभा और रत्नसंच्या, (दम्हास विजयहत णिसहे दाहिणेणं सीया
उत्तरेणं दाहिणिह्रसीयामुहवणे पुरियमेणं तिउडे पच्चित्थमेणं सुसीमा रायहाणी प्रमाणं तं चेवेति) दत्स विजय की दक्षिण दिया में निषय पर्वत है और
उत्तर दिका में सीता महानदी है तथा पूर्वदिका में सीतामुखवन है और पश्चिम

क्षे अधी नहीं थे. 'विजया तं जहा' का विजयी थे डेमडे-'वच्छे, मुक्छे, महावच्छे, चडरथे वच्छगावई, रम्मे रम्मए चेव रमणिको मंगलावई ॥१॥ 'वत्स, सुवत्स, महावच्छे, वत्सावती, रम्भ रम्मए चेव रमणिको मंगलावई ॥१॥ 'वत्स, सुवत्स, महावत्स, वित्सावती, रम्भ, रम्था, रम्था, रम्था, मंजलावती. 'रायहाणीओ तं जहा' का राज्यधानीं थे। छे-'मुसीमा छंडलाचेत्र अपराजिय पहंकरा अंकावई पम्हावई सुहा रयणसंचया' सुसीमा, इंडला, अपराजिता, प्रलंडरा, आंडावती, प्रक्षमावती, शुला अने रत्नसंचया वच्छरस विजयस्स णिसहे दाहिणेणं सीया उत्तरेणं दाहिणिल्लसीयामुहवणे पुरत्थिमेणं तिउडे पच्चियमेणं सुसीमा रायहाणी पमाणं तं चेवेति' वत्सविजयनी हिस्छा हिशामां निषध मर्वत छे अने उत्तर दिशामां सीता महानही छे तेमक पूर्व हिशामां सीता भुणवन छे अने पश्चिम हिशामां त्रिकृट वक्षरकार पर्वत छे. सुसीमा अकी राजधानी छे. केत

अथेषां वत्सादि विजयानां स्थानक्रमं प्रदर्शियतुमाइ-'वच्छाणंतरं' इत्यादि-वत्सानन्तरं वत्सस्य वत्सनामकविजयस्य अनन्तरं-परम् 'तिउडे' क्षिक्टः-त्रिक्टनामको दक्षस्कारपर्वतो-ऽस्ति स च पश्चिमतो बोध्यः 'तओ' ततः-त्रिक्टावन्तरं 'छद्दक्ते' सुदत्सः-सुवत्सनामकः 'विजए' विजयः 'एएणं' एतेन अनन्तरोक्तेन 'क्षमेणं' क्रमेण रीत्या 'दत्तज्ञछा' तप्तज्ञणां 'णई' नदी शेषं स्पष्टम् ॥स् ० २९॥

अथ क्रमप्राप्तं सौमनसाख्यं गजदन्तपर्वतं छक्षियद्भाह-'कि णं अंते!' इत्यादि ।

मूलम्-कि णं अंते! जंबुदीवे दीवे अहाविदेहे वाले सोमणसे
णामं वक्खारपव्वए पण्णके?, गोयमा! णिसहस्त पासहरपव्वयस्स
उत्तरेणं अंदरस्स पव्ययस्स दाहिणपुरिथमेणं अंगळावई विजयस्स पचित्थमेणं देवकुराए पुरिथमेणं एत्थ णं जंबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे
सोमणसे णामं वक्खारपव्यए पण्णत्ते, उत्तरदाहिणायए पाईणपड़ीणवित्थिणणे जहा आळवंते वक्खारपव्यए तहा, णवरं सव्यरयणामए अच्छे
जाव पडिरूचे, णिसहवासहरपव्ययंतेणं चतारि जोयणसयः इं उद्धं उच्चतेणं चत्तारि गाजयसयाइं उव्वेहेणं सेसं तहेव सव्वं णवरं अट्ठो से

दिशा में त्रिक्ट यक्षःकार पर्वत है सुसीमा यहां राजधानी है इसका प्रमाण अयोध्या के जैसा ही है (बच्छाणंतरं तिउडे तओ सुबच्छे विजए एएणं कमेणं तत्तजला णई महावच्छे विजए वेसमणकूडे वक्ष्वारपव्वए वच्छावई विजए मसजला णई) वत्स विजय के अनन्तर ही त्रिक्ट नामका वक्षस्कार पर्वत है और यह पश्चिम दिशा में है त्रिक्ट वक्षस्कार पर्वत के अनन्तर सुवत्स नामका विजय है इस अनन्तरोक्त कम के अनुसार तसजला नाम की नदी है इसके बाद महावत्स नामका विजय है उसके बाद वैश्वमणकूट है फिर बत्सावती विजय है बाद में मत्तजला नामकी नदी है इत्यादि रूप से ही आगे का यह कथन स्पष्ट रूप से जान छेना चाहिए ॥२९॥

प्रभाष अथे। हैं थे थे. 'वच्छाणंतरं तिउडे तओ सुवच्छे विजए एएणं कमेणं तल जलाणई महावच्छे विजए वेसमणकूडे वक्खारपटाए वच्छावई विजए मत्तजला णई' वस्स विकथ पछी क विदूर नामड वक्षस्थार पर्वत छे अने आ पश्चिम दिशामां छे. विदूर वक्षस्थार पर्वत पछी सुवत्स नामड विकथ छे. आ अनंतरे। इत डम मुक्रण तप्त क्या नामे नहीं छे. त्यार आह महावत्स नामड विकथ छे. त्यार आह वेश्वमण्ड हूर छे. पछी वत्सावती विकथ छे. त्यार आह मत्तक्या नामड नहीं छे. ध्रियादि इपमां शेष डथन क्षम् वेदी की छी. ॥ २६ ॥

गोयमा! सोमणसेणं वक्खारपटकए बहुवे देवा य देवीओ य सोमा सुमणा सोमणसे य इत्थ देवे महिद्धीए जाव परिवसइ से एएणटुणं गोयमा! जाव णिच्चे। सोमणसे वक्खारपटकए कइकूडा पण्णता?, गोयमा! सत्तकूडा पण्णता, तं जहा-सिद्धेश, सोमणसेश, बिअ बोद्धव्वे मंगलावई कूडेश, देवकूडेश विमलप कंचण६ वसिटुकूडेण य बोद्धव्वे॥१॥ एवं सट्वे पंचसइया कूडा, एएसि पुच्छा दिसिविदिसाए भाणियट्या जहा गंधमायणस्स, विमलकंचणकूडेसु णवरं देवयाओ सुवच्छा वच्छ-मित्ताय अवसिट्टेस कूडेस सरिसणामगा देवारायहाणीओ दिविक्षणेणंति।

कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे देवकुरा णामं कुरा पण्णता ?, गोयमा ! मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं णिसहस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं विज्जुप्पहस्स ववखारपव्ययस्स पुरिश्यमेणं सोमणसवक्खारपव्य यस्स पच्चित्थमेणं एत्थ णं महाविदेहे वासे देवकुरा णामं कुरा पण्णता पाईणपडीग्रायया उदीणदाहिणवित्थिण्णा इक्कारस जोयणसहस्साइं अट्ट य वायाले जोयणसए दुण्णि य ध्यूणवीसइभाए जोयणस्स विक्खंभेणं जहा उत्तरकुराए वत्तव्यया जाव अणुसज्जमाणा पम्हगंधा मियगन्धा अममा सहा तेतली सणिचारीति ६ । सू० ६०॥

छाया-त्रव खल भरन्त! जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहे वर्षे सीमनतो नःम वक्षस्कारपर्वतः प्रज्ञप्तः?, गौतम! निषधस्य वर्षधरपर्वतस्य उत्तरेण मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिण पौरस्त्येन
मङ्गलावती विजयस्य पश्चिमेन देवकुरुणां पौरस्त्येन अत्र खल जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहे
वर्षे सोमनसो नाम वक्षस्कारपर्वतः प्रज्ञप्तः उत्तरक्षिणायतः प्राचीनप्रतीचीनविस्तीर्णः यथा
मारुयवान् वक्षस्कारपर्वतः तथा, नवरं सर्वरत्नमयः अच्छो यावत् प्रतिक्षाः, निषधवर्षधरपर्वतान्तेन चलारि योजनशतानि उध्वंश्चत्वेन चत्वारि गच्यूतश्चतानि उद्वेषेन शेषं तथेव
सर्व नवरम् अर्थः सः गौतम! सौमनसे खल वक्षस्कारपर्वते वहतो देवाश्च देव्यश्च सोम्याः
सुमनसः सौमनसशात्र देवो महर्द्धिको यावत् प्रतिवति स एतेनार्थेन गौतम! याविद्यः।
सौमनसे वक्षस्कारपर्वते कति कृटानि प्रज्ञप्तानि?, गौतम! सप्त कृटानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथासिद्धं १ सौमनसमिप च २ बोद्धव्यं मङ्गलावती कूट्य ३। देवज्ञरु ४ विमल ५ कञ्चन ६
वासिष्ठक्षटं ७ च बोद्धव्यम् ॥१ः। एवं सर्वाणि पञ्चशतिकानि कृटानि, एतेषां पृच्छा दिन्तिः

दिशि भणितव्या यथा गन्धमादनस्य, विमलकाश्चनक्टयोः नवरं देवताः-सुवत्सा वत्सिमत्रा च, अत्रशिष्टेषु कूटेषु सदशनामका देवाः, राजधान्यो दक्षिणेनेति ।

वय खल भदन्त ! महाविदेहे वर्षे देवलुखो नाम कुरवः प्रज्ञप्ताः ?, गौतम ! मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणेन निषयस्य वर्षध्यवितस्य उत्तरेण विद्युत्प्रभस्य दक्षस्कारपर्वतस्य पौरस्त्येन सोमनसयक्षस्कारपर्वतस्य पश्चिमेन अत्र खल महाविदेहे वर्षे देवकुखो नाम कुरवः प्रज्ञप्ताः प्राचीनप्रतीचीनायताः उदीचीनदक्षिणविस्तीर्णाः एकाद्य योजनसहस्राणि अष्ट च द्वाचलारि- ग्रानि योजनस्तानि हो च एकोनविंशतिभागौ योजनस्य विष्कम्भेण यथोत्तरकुण्णां वक्तव्यता यावद् अनुसळ्लन्तः पद्यगन्धाः मृगगन्धाः अममाः सहाः तेतिकिनः शनैश्वारिण इति ।। स्व० ३०॥

टीका-'कि व मंते !' इत्यादि-प्रश्नस्त्रं स्पष्टार्थकम्, उत्तरस्त्रे 'गोयमा !' हे गौतम ! 'णिसहस्स' निषयस्य-निषधनामकस्य 'वासहरपव्ययस्स' वर्षधरपर्दतस्य 'उत्तरेणं' उत्तरेण उत्तरदिशि 'मंदरस्स' मन्दरस्य-मन्दरनामकस्य 'पव्ययस्स' पर्वतस्य 'दाहिणपुरिथमेणं' दक्षिणपौरस्त्येन-आम्नेयकोणे 'मंगलावई विजयस्य' मङ्गलावतीविजयस्य 'पच्तिथमेणं' पश्चिमन-पश्चिमदिशि 'देवकुराष्' देवकुरूणां 'पुरिव्धमेणं' पौरहत्येन-पूर्वदिशि 'ए-थ' अत्र-

सीमनस गजदन्त पर्वन का कथन

'कहि णं भंते ! जंबुद्दीने दीपे महाविदेहे दाखे-इत्पादि।

टीकार्ध-इस सूत्र द्वारा अब गौतयने प्रसु से ऐसा पूछा है-(किह णं भंते! जंबुहीवे दीवे महाविदेहे वासे) हे भदन्त! कहां पर इस जंबुद्धीप के भीतर महाविदेह क्षेत्र में (सोमणसे णामं) सीमनस नामका (वक्र खारपव्वए) वक्षस्कार पर्वत (पण्णत्ते) कहा गया है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-(शोयमा! णिसहस्त वास- हरपव्वयस्स उत्तरेणं मंदरस्स पव्ययस्स दाहिणपुरिथमेणं मंगलावई विजयस्स पच्चित्थमेणं देवकुराए पुरिथमेणं एत्थणं जंबुद्दीवे २ महाविदेहे वासे सोमणसे णामं वक्त्वारपव्वए पण्णत्ते) हे गौतम! निषध वर्षधर पर्वत की उत्तर दिशा में मंदर की आग्नेय विदिशा में-आग्नेय कोण में-मंगलावती विजय की

'कहिणं मंते! जंबुद्दीवे दीवे महाचिदेहे वासे-इत्यादि

रिहार्य-आ सूत्रविदे वो गीतभस्वाभीओ प्रश्चने अवी शीते प्रश्न क्षेषे छे है-'कहिणं मंते ! जंबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे' छे शदन्त! क्ष्या स्थणे आ कं भूदीपनी आंदर महाविदेहे वासे' छे शदन्त! क्ष्या स्थणे आ कं भूदीपनी आंदर महाविदेह क्षेत्रमां 'सोमणते णामं' सीमनस नाम 'वक्कारपटक्षणे व्यवस्था पर्वत 'पण्णत्ते' के हेवामां आविद छे ? योना कवाणमां प्रश्च के छे-'गोयमा! णिसहस्स वासहरपटक्यस्स उत्तरेणं मंदरस्स पटक्यस्स हाहिणपुरिधमेणं मंगळावई विजयस्स पच्चित्रमेणं देवकुराए पुरिधमेणं पत्थणं जंबुद्दीवे २ महाविदेहे वासे णामं वक्कारपटकए पण्णते' छे भौतम! निषध वर्षधर पूर्वतनी उत्तर दिशामां मंदर पर्वतनी आक्नेय विदिशामां-आक्नेय के धूमां-मंगकावती

સૌયનસ ગજદન્ત પર્વતનું કથન

अत्रान्तरे 'णं' खल्ल निश्चयेन 'जंबुरीवे दीवे' जम्बृद्धीपे द्वीपे 'महाविदेहे वासे' महाविदेहे वर्षे 'सोमणसे णामं' सीमनसो नाम 'वक्खारपच्चए' वसस्कारपर्वतः 'पण्णत्ते' प्रह्नक्षः, स च कीद्याः ? इत्यपेक्षायामाइ—'उत्तरदाहिणायए' उत्तरदक्षिणायतः—उत्तरदक्षिणदिशोदीं घः, प्रुतः 'पाईणपढीणवित्थिणाः' प्राचीनप्रतिचीनविस्तीणः—पूर्वपश्चिमयो दिशो विस्तारयुक्तः, अयं दि 'जहा' यथा 'मालवंते' मालयवान नाम 'वक्खारपच्चए' वक्षस्त्रारपर्वतः प्राव्वणितः 'तहा' तथा वर्णनीयः, ततोऽत्र यो विशेषस्तं दर्शियतुमाइ—'णवरं' नदरं केवलं 'सव्वरययामए' सर्वरजतमयः—सर्वत्मना रजतमयः मालयवांस्तु वैद्वर्थमयः तथा 'अच्ले जाव पिटक्वे' अच्लो यावत्प्रतिकृपः अच्ल इत्यारभ्य प्रतिकृप इति पर्यन्तानां तद्विशेषणवाचकानां पदानामत्र सङ्ग्रहो बोध्यः, स च बहुषु स्त्रेषु प्रसङ्गात्कृतो बोध्यः। अयं च 'णिसह वासहस्पव्वयंतेणं' निषयवर्षथरपर्वतान्ते—निषधवर्षधरनामकपर्वतसभीपे खल्ल माल्यवांस्तु नीव्यत्समीपे 'चत्तारि' चतारि 'जोयणसयाई' योजनशतानि 'उद्धं' उद्वीम् 'उच्चत्तेणं' उद्वत्वेन 'चत्तारि' चतारि 'जोयणसयाई' योजनशतानि 'उद्धं' उद्वीम् 'उच्चत्तेणं' उद्वत्वेन 'चत्तारि' चतारि पश्चिम दिशा में जंबूद्वीप नाम के द्वीप के भीतर वर्तमान महाविदेह क्षेत्र में सौधनस नामका वश्चस्कार पर्वत कहा गया है (उत्तर-दाहिणायए पाइणपईणवित्थिण्णे) यह दक्षस्कार पर्वत उत्तर से दक्षिण तक दीर्घ है और पूर्व से पश्चिम तक विस्तीर्ण है।

(जहा मालबंते वक्खारपव्वए तहा-णवरं सव्वरघणामए अच्छे जाव पहिच्चे) जिस प्रकार से माल्यवान पर्वत के वर्णन के सम्बन्ध में कथन किया जा चुका है उसी प्रकार का वर्णन इस पर्वत का है, परन्तु यह सौमनस नामका वक्षस्कार पर्वत सर्वीत्मना रत्नमय है आकाश और स्फटिक के जैसा निर्मल है यावत् प्रतिरूप है यहां पर दर्शनीय आदि शेष पदों का संग्रह यावत् पद से किया गया है इन संग्रहीत पदों की व्याख्या यथास्थान कंइ स्थलों में की जा चुकी है अतः वहीं से इसे समझ छेना चाहिये (णिसहवासहरण्यव्यंतेणं चत्तारि जोयण

विजयनी पश्चिम हिशामां तेमक हेवहु होत्रनी पूर्व हिशामां कंणू ही प नाम ही पनी आंहर वर्त मान महाविदे होत्रमां सौमनस नाम अलिरमणीय वक्षरहार पर्वत आवेल छे. 'उत्तर- हाहिणायण पाईणपडीणविश्विष्णों' आ वक्षरहार उत्तरथी हिल्ल हुधी ही हैं छे, अने पूर्व श्री पश्चिम सुधी विस्तीर्ण छे. 'जहा माळवंते वन्नवारपव्वण तहा-णवरं सव्वरयणामण अच्छे जाव पडी हतें के प्रभाषे माल्यवान पर्वतना वर्णन विषे हथन हरवामां आवेलुं छे. तेवुं क वर्णन आ पवर्तनुं छे, पण्ड आ सौमनस नाम वक्षरहार पर्वत सर्वात्मना रत्नमय छे. आहाश अने स्हिटिनी केम निर्मण यावत प्रतिइप छे. अहीं 'व्हीनीय' वर्णेर शेष पहीनुं अहण यावत् पहथी श्रेलुं छे. के पहीनी व्याप्या यथारथान अने हरवामां आवेली छे, अथी कि ज्ञासुका त्यांश क काण्या यता हरे. 'णिसवासहर-पव्ययंतेणं चतारि जोयणसयाइं उद्धं उच्चतेंणं चतारि गाज्यसयाई उद्धे हेणं सेसं तहेव सद्धं

'गाऊयसयाई' गन्यूतशतानि 'उन्बेहेणं' उद्देधेन-भूमिप्रवेशेन 'सेसं' शेषम् अवशिष्टम्-विष्यम्भादि 'तहेव' तथेव-माल्यवद्वक्षस्कारगिरिवदेव 'सब्वं' सर्व बोध्यम् 'णवरं' नवरं केवलम् 'अट्टो' अर्थः सौमनसेतिनामार्थः शेषेषु विशेषः तं च नःमार्थं प्ररूपितुं सूत्रं स्मारयति-'से' इति—से केणहेगं भंते ! एवं बुचवह सोमणसे वक्खारपन्वए२?, इत्यादि सूत्रं बोध्यम् अथ केना-र्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-संमनसो वशस्कारपर्वतः २ ? इति, प्राप्यत् 'गोयमा !' भो गौतम ! 'सोमणसे' संीमनमे 'गं' खल्ल 'वन्खारपञ्चए' वक्षरकारपर्वते 'वहवे' वहवः 'देवाय' देवाश्र 'देवीओ य' देव्यश्च 'सोमा' सौम्याः-सरङस्यभावाः 'सुमणा' सुमनसः-सुभावनाकल्ठित-मानसाः आसते यावद् भेदन्ते ततः सुमनसामयमावासः सौमनसोऽयं गिरिः, अत्र देवमाह-'सोमणसे य' सौमनस्थ 'इत्थ' अत्र 'देवे' देवः तद्धिपतिः परिवसतीति परेणान्वयः, सच देव: की दश: ? इत्यपेक्षायामाह-'महिद्धीए जाव परिवसइ' महिद्धिको यावत परिवसति-महद्धिक इत्यारभ्य परिवसतीति पर्यन्तानां पदानामत्र सङ्ग्रही बोध्यः तथाहि-'महर्द्धिकः, महाद्युतिकः, महावळः, महायशाः, महासीख्यः महानुभातः, पत्योपमस्थितिकः परिवसिति' इति, एवामर्थश्राष्ट्रमसूत्रव्याख्याती ग्राह्मः। इति नामकारणग्रुक्लोपसंहरति-'से एएणहेणं स्याइं उद्धं उच्चत्तेणं चतारि गाउयस्याइं उब्वेहेणं सेसं तहेव सृव्वं, णवरं अद्दों से गोयमा। सोमणसेणं वक्खारपव्वए बहुवे देवा य देवीओं अ) यह सौमनस नामका बक्षस्कार पर्वत निषध वर्षधर पर्वत के पास में चारसौ योजन

सौमनस नामका वधास्कार पर्वत निषध वर्षधर पर्वत के पास में चारसी योजन का जंबा है, और चारसी कोश का उद्वेध वाला है बाकी का और सब विद्वांभ आदि का वधन माल्ययान पर्वत के प्रकरण जैसा ही है। किन्तु इसका को 'सौमनस" ऐसा नाम कहा गया है वह यहां पर अनेक देव और देवियां आकर विश्वाम करती है आराम करती है। ये सब देव और देवियां सरल स्वभाव वाली होती है और शुभ भावना वाली होती हैं। तथा (सोमणसे अ इत्थ देवे महिद्धीए जाव परिवसह) सौमनस नामका देव जो महिद्धिक आदि विशेषणों वाला है यहां पर रहना है (से एएणडेणं गोयमा। जाव णिच्चे) इस

णवरं अहो से गोयमा! सामणसेणं वक्खाराव्वए बहवे देवाय देवीओ अ०' आ सीमनस नामक वक्षरकार पर्वत निषध वर्षधर पर्वतनी पासे आवेल छे अने ते यारसे (४००) याजन केटला अमाणुमां एदेधवाणा छे शेष अधुं विषक्षं वजेरेना संअधमां क्ष्यन माल्यवान वक्षरकार पर्वतना अक्षरण केवुं क छे. पणु अनुं के 'सौमनस' अवुं नाम राणवामां आ०थुं छे तेनुं कारण अदीं अनेक हेव-हेवीओ आवीने विश्वाम करे छे, आराम करे छे. ओ हेव हेनीओ सरल रवलाववाणां हाय छे. अने शुक्त लावनावाणां हाय छे तेमक 'सोमनस नामक हेव के के महिद्धिक वजेरे विशेषणा वाणा छे अही रहे छे. 'से एएण-हेणं गोयमा! जाव णिच्चे' सेथी हे जीतम! अनुं नाम 'सौमनस' सेवुं राणवामां आ०थुं

गोयमा!' इति सः-सीमनसो वक्षस्कारगिरिः एतेन अनन्तरोक्तेन अर्थेन कारणेन हे गौतम! एवमुच्यते सोमनसो वक्षस्कारपर्वतः २ इति 'जाव णिच्चे' याविष्नत्यः-'अदुत्तरं च णं गोयमा! सोमणतिति सासए णामधिज्जे पण्णते। सोमणसेणं अंते! किं सासए असासए?, गोयमा! सिय सासए सिय असासए, से केणहेणं सिय सासए सिय असासए? गोयमा! द्व्यह्याए सासए वण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासए, से तेणहेणं एवं बुच्चइ-सिय सासए सिय असासए। सोमणसे णं अंते! कालओ केवच्चिरं होइ?, जोधमा! ण कयाइ णासी ण कयाइ ण भवइ ण कयाइ ण भविस्तइ सुविं च अवइ च अविस्तइ य धुवे णियए सासए अव्वष्ट अन्वए अविदेश णिच्चे' इति सूत्रं पर्यवसितिमिति, व्याख्या चास्य चतुर्थस्त्रटीकातो वोध्या, चतुर्थस्त्रे पद्मवरवेदिका प्रसङ्गात्स्त्रीत्वेनोक्तमत्र पुंस्त्वेन वक्त-

कारण हे गौतम ! इसका नाम "सौमनस" ऐसा कहा गया है "जाब जिल्ले" इस खत्रांश को संगत बैठाने के लिये इसके पहिले 'अदुतरंख णं-नोखमा! सोमणसे ति सासए णामधिज्जे पण्णत्ते ! सोमणसेणं मंते ! किं सासए अहासए गोयमा सिय सासए सिय असासए से केणहेणं सिय सासए सिय अहासए शोयमा ! दब्बहुयाए सासए, बण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासए से तेणहेणं एवं बुच्चह सिय सासए सिय असासए सोमणसेणं मंते ! कालओ केविच्चरं होई ? गोयमा ! ण कयाइ णासी ण कयाइ ण अवह, ण कयाइ ण अविस्सह, मुर्विच अवहय अविस्सह य धुवे णियए, सासए अक्खए, अव्वए, अवहिए णिच्चे' यह पाठ लगा हेना चाहिये इस पाठकी व्याख्या चतुर्थ खत्रकी टीका से जानलेनी चाहिये चतुर्थ सूत्रमें यह पाठ पद्मवर वेदिका के प्रसङ्ग में स्त्री लिङ्ग में पदोंको रखकर कहा गया है और यहां उसे पुलिङ्ग में पदोंको रखकर कहा गया है और यहां उसे पुलिङ्ग में पदोंको रखकर कहा गया है अर्थ में कोई अन्तर नहीं हैं (सोमणसे-

छे. 'जाव णिच्छे' आ सूत्रांशनी संगति शिसाउवा भाटे कोनी पहेलां 'अदुत्तरं च णं गोयमा सोमणसे ति सासए णामधिको पण्णते सोमणसेणं भंते! किं सासए असासए गोयमा सिय सासए सिय असासए से केणहेणं सिय सासए सिय असासए शोयमा! दक्वह्याए सासए वण्ण पक्जवेहिं गंधवक्जवेहिं फासपक्जवेहिं असासए से तेणहेणं एवं बुच्चइ सिय सासए सिय असासए सोमससेणं भंते कालओ केविच्चरं होई? गोयमा! ण कयाइ णासी ण कयाइ ण भवइ, ण कयाइ ण भविस्सइ, भृविं च भवइय भविस्सइ य, धुवे णियए सासए अक्खए, अव्वए अवद्विए णिच्चे' आ पाठ भूडवे। लोधेओ. आ पाठनी व्याप्या, यतुर्थ सूत्रनी टीडामांथी वांथी होवे। लोधेओ. आ पाठनी व्याप्या, यतुर्थ सूत्रनी टीडामांथी वांथी होवे। लिधेओ. आ पाठ यतुर्थ सूत्रमां पद्मवश्वेहिडाना संहर्णमां श्री हिंगमां पहेले भूडी ने हहेवामां आवेल छे, पण् अहीं ते पाठना पहेले पुलिंगनां गोठवीने अध्याहत हरवामां आवेल छे. भात्र अहीं तहावत आटले। वर्ष छे. अर्थमां डे।धे पण् जतने। तहावत नथी. 'सोमणसे वक्खारपव्वए कइ कूडा पण्णता' हे लहंत! आ

व्यमिति स्त्रयमूहनीयम्, अथास्योपरिवर्तीनि सिद्धायतनादीनि कूटानि वर्णियानाह-'सोम-णसे' इत्यादि-सीमनसे-सीमनसनामके 'वक्खारपव्वए' वसस्कारपर्वते 'कइ' कति कियन्ति 'क्छा' कूटानि शिखराणि 'पण्णत्ते' प्रश्नप्तानि, अत्र पुंस्त्वं प्राकृतत्वात् सूत्रकृतोक्तम् एवमप्रे-ऽपि इतिष्रक्षे भगवानुत्तरमाह-'सत्ते' सप्त क्छा' कूटानि 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तानि, तानि नामतो निर्दिशति-'तं जहा-सिद्धे' इत्यादि तद्यथा-सिद्धं-सिद्धायतनकूटम् अत्र नामैकदेशप्रहणे नामप्रहण्ण् 'इति नियमेन सिद्धेति नामैकदेशेन सिद्धायतनकूटेति सम्पूर्णनामप्रहणं बोध्यम् एवमप्रेऽपि १, 'सोमणसे २ वि य' सीमनसमित च-सीमनसकूटमित च 'वोद्धव्वे' बोद्धव्यं क्रेयम् २, 'मंगलावईकूढे ३' मङ्गलावतीकू:म् ३। 'देवकुरु ४ विमल ५ कंचण ६ वसिद्धकुढे ७' देवकुरु ४ विमल ५ कञ्चन ६ वासिष्ठकूटम्-अत्र समाहारद्धन्द्वान्ते श्रूयमाणस्य कूटस्य प्रत्येकं सम्बन्धात् देवकुरुकूटं ४ विमलक्कृटम्-अत्र समाहारद्धन्द्वान्ते श्रूयमाणस्य कूटस्य प्रत्येकं सम्बन्धात् देवकुरुकूटं ४ विमलक्कृटम् ५ काञ्चनकूटम् ६ वासिष्ठकूटमित्यर्थः, 'य' च 'बोद्धव्वे' बोद्धव्यम् ॥१॥ अथादितः सर्वकूटसङ्कल्यायो यावन्ति कूटानि भवन्ति तावन्त्याह- 'एवं सन्वे पंचसङ्ग्या कूडा' इति एवम् इत्थम् सर्वाणि आदित आरभ्य सीमनसर्वतेतिपरिव-तीनि सक्तलानि सप्तापि क्टानि पञ्चश्वतिकानि पञ्चश्वतयोजनप्रमाणानि जायन्ते, 'एएसिं'

वक्लारपञ्चए कहक्डा पण्णत्तां हे भदन्त! इस सौमनसबक्षरकार पर्वत पर कितने क्रूट कहे गये हैं ? 'पण्णत्तां में पुलिङ्गता प्राकृत होने से कही गई है। उत्तर में प्रमुने कहा है-(गोयमा! सत्त क्रूडा पण्णत्ता) हे गौतम! यहां पर सात क्रूट कहे गये हैं (तं जहा) उनके नाम इस प्रकार से हैं (सिद्धे सोमणसे वि थ बोद्धन्वे मंगलावईक्रुडे, देवकुरु विमल कंचणवसिट्ठ क्रूडेअ बोद्धन्वे) सिद्धाः यतनक्रूट१, सोमणसक्र्ट२, मंगलावतीक्र्ट२, देवकुरुक्ट४, विमलक्र्ट५, कंचनक्रूट६, और विशाष्ट्रक्ट७ ऐसा नियम हैं कि नामके एकदेश से पूरे नामका ग्रहण हो जाता है-अतः इसी नियमके अनुसार 'सिद्धे' पदसे सिद्धायतनक्रूट ऐसा पूरा नाम गृहीत हो गया है तथा बद्धान्ते अ्यमाणं पदं प्रत्येकं संबद्ध्यते' इस कथन के अनुसार प्रत्येक पद के साथ क्रूट शब्द का प्रयोग हुआ जानलेना

सीमनस वक्षस्कार पर्वत ઉपर केटला : कृटी (शिष्णरे।) आवेला छे १ 'पण्णत्ता' मां प्राकृत हिलाशी पुलिंगता प्रष्ट करवामां आवेली छे. खेना जवाणमां प्रसु कहे छे-'गोयमा! सत्त कृष्ठा पण्णत्ता' है गीतमा अहीं सात कृटी आवेला छे. 'तं जहा' ते कृटीना नामी आ प्रमाखें छे-'सिद्धे सोमणसे वि य बोद्धव्ये मंगलावई कृष्ठे, देवहरू विमल कंचण वसिदृक्र्हें अ बोद्धव्ये' सिद्धापतन कृट १, सीमनस कृट २, मंगलावती कृट ३, देवहरू कृट ४, भिला कृट ५, केचन कृट १ अने विशाल कृट १, मंगलावती कृट ३, देवहरू कृट ४, भिला कृट ५, कंचन कृट १ अने विशाल कृट ७ खेले। नियम छे है नामना खेह देखी पूरा नामनुं अहाल थाय छे. खेली आ नियम मुज्य 'सिद्धे' पहथी सिद्धायतन कृट थेले पुरा नामनुं अहाल थाय छे. खेली आ नियम मुज्य 'सिद्धे' पहथी सिद्धायतन कृट खेलें पुरा नाम गृहीत थयुं छे तेमक 'द्वन्द्वान्ते श्रूयमाणं पदं प्रत्येकं संबद्ध्यते' अकृत मुज्य हरेड पहनी साथ कृट शण्ड प्रयुक्त थयेल छे, खेलं सम्ल सेवुं लिएके

पतेषां प्राग्तकानां क्टानां 'पुच्छा' पृच्छा स्त्रनिर्दिष्टः प्रश्नः 'दिसि विदिसाए' दिग्वि-दिश्च विदिश्च वेत्यर्थः 'जहा' यथा येन प्रकारेण 'गंधनायणस्स' गन्धमादनस्य पर्वतस्य भणिता तथा 'भाणियच्चा' भणितच्या वक्तव्या प्रथमवक्षस्कार गन्धमादनवदेषां क्टानां प्रश्नस्त्रं दिग्विदिश्च वक्तव्यमिति सम्रदितार्थः, तत्र प्रश्नस्त्रं हि—'कहि णं भंते! सोमणसे वक्षारपञ्चए सिद्धाययणक्रुडे णामं क्रेडे पण्णते?' इत्यादि, एतच्छाया—क खल्ज भदन्त! सौमनिस वक्षस्कारपर्वते सिद्धायतन-क्रं नाम क्रं प्रज्ञसम् ? इति क्टानां दिग्विदिग्वक्तव्यताहि—मेक्शिरेः समीपवर्ति दिश्वण-पूर्वस्यां विदिश्चि सिद्धायतनक्रं २ तस्य दिश्वणपूर्वस्यां विदिश्चि सिद्धायतनक्रं २ तस्य चिश्वणपूर्वस्यां विदिश्चि सिद्धायतनक्रं २ तस्य

चाहिये (एवं सव्वे पंच सहया कूडा) इस तरह आदिसे छेकर सीमनस पर्वत तक के जितने भी कूट कहे गये हैं वे सब पांचसी योजन प्रमाणवाले हैं। (एएसिं पुच्छा दिसि विदिसाए भाणिअव्वा) इन सीमनस पर्वत सम्धन्धीकूटों के होने में दिशा और विदिशाको छेकर प्रश्न पूछना चाहिये जैसा कि पहिले (गंध-मायणस्स) गन्धमादन पर्वत के कूटों के प्रकरण में पूछा गया है। अर्थात् (कहिणं भंते! सोमणसे वक्खारपव्वए सिद्धाययणकूडे णामं कूडे पण्णक्ते) हे भदन्त! सौमनस वश्चस्कार पर्वत पर सिद्धायतन नामका कूट कहां पर कहा गया है? इत्यादि—तो इन प्रश्नों के उत्तर में ऐसा कहना चाहिये—मेशिरिके पास उसकी दक्षिण पूर्वदिशा के अन्तराल में सिद्धायतन कूट कहा गया है उसकी दक्षिण पूर्वदिशा के अन्तराल में वितीय सौमनसकूट कहा गया है और उसकी दक्षिण पूर्वदिशा के अन्तराल में वितीय सौमनसकूट कहा गया है ये ३ कूट विदिग्भावी हैं। मंगलावती कूटकी दक्षिण पूर्वदिशा के अन्तराल में कृटकी दक्षिण पूर्वदिशा के अन्तराल में कृटकी दक्षिण पूर्वदिशा के अन्तराल में लितीय सौमनसकूट कहा गया है ये ३ कूट

'एवं सच्चे पंचसइया कूडा' आ प्रभाखे प्रारं सथी मांडीने सीमनस पर्नत सुधीना केटला कूटे। अहेवामां आवेला छे, ते अधा पांचसा थे। जन प्रमाख्याणा छे. 'एएसिं पुच्छा दिसि विदिसाए माणि अच्या' ओ सीमनस पर्नतथी सम्अद कूटे। ना अस्तित्व विधे अने हिशा तिमक विहिशा विधे प्रश्लो करवा लिएको. लोटले हैं के प्रमाखे 'गंधमायणस्स' गंधमाहन पर्वतना कृटे। ना प्रकरख्मां प्रश्लो पूछवामां आवेला छे. तेवी क रीते अहीं पख्य प्रश्लो करवा लोई ओ अर्थात् 'कहिणं मंते! सोमणसे वक्खारपञ्चए सिद्धाययणकूडे णामं कूडे पण्णत्ते' हे कहंत! सौमनस वक्षरकार पर्वत इपर सिद्धायतन नामना कूट क्या स्थणे आवेल छे? धत्याहि. ओ प्रश्लना इत्तरमां आ प्रमाखे समक्युं लिएको है मेरुगिरिनी पांसे तेनी हिशाख पूर्व हिशाना अन्तरालमां सिद्धायतन कूट छे. ते कूटनी हिशाला अन्तरालमां कित्रायता कूट आवेल छे अने तेनी पख्य हिशाला पूर्व हिशाना आंतरालमां तितीय सीमनस कूट आवेल छे अने तेनी पख्य हिशाख पूर्व हिशाना आंतरालमां तृतीय मंगलावती कूट आवेल छे. ओ अख्य क्रिंग विहिन्कावी छे. मंगलावती कूटनी हिशाख पूर्व

क्रूटस्योत्तरस्यां चतुर्थे देवकुरुक्टम् ४, तस्य दक्षिणस्यां पश्चमं विमलकूटं ५ तस्य च दक्षिणस्यां पिष्ठं काश्चनकृटम् ६, तस्य दक्षिणस्यां निषधस्योत्तरस्यां सप्तमं वासिष्ठकूटम् ७, एतानि च सर्वात्मना रत्नमयानि बोध्यानि, हिमवत्क्र्टप्रमाणानि, तत्प्रासादादिकमपि तद्वदेव वोध्यम्, तत्र यो विशेषस्तं दर्शयति—'विमलकंचक्र्डेसु णवरं देवयाओ' विमलकाश्चनक्र्टयोः नवरं—देवते—देव्यौ ते च 'सुवच्छा वच्छमित्ताय' सुवत्सा वत्सिमित्रा चेति द्वे क्रमेण देव्यौ बोध्ये 'अवसिद्वेसु क्रडेसु' अवशिष्टेषु पश्चसु क्र्टेषु 'सरिसणामगा देवा' सदशनामकाः क्रूटसदशनामकाः देवाः अधिपतयो बोध्याः तेषां 'रायहाणीओ' राजधान्यः 'दिक्खणेण' दक्षिणेन—दक्षिणस्यां दिशि मेरोरिति शेषः इति ।

इदानीं देवकुरं निरूपियतुष्ठपक्रमते-'किह णं मंते!' इत्यादि-क खल भदन्त! 'महा-पंचम विमलकूट की उत्तर दिशामें चतुर्थ देवकुर नामका कूट कहा गया है देवकुर क्रूटकी दक्षिण दिशामें पांचवा विमलकूट कहा गया है विमलकूट की दक्षिणदिशा में छहा काञ्चनकूट कहा गया है काञ्चनकूट की दक्षिणदिशा में और निषध पर्वत की उत्तरदिशा में सातवां विसन्दक्ट कहा गया है ये सब कूट सर्वीत्मना रत्नमय हैं। परिमाण में ये सब हिमवत के कूटों के तुल्य हैं यहां पर प्रासादादिक सब उसी प्रकार से हैं। (विमल कंचणकूडेस णवरं देव-याओ वच्छमित्ताय, अवसिद्धेस कूडेस सरिसणामया देवा रायहाणीओ दिक्खणेणंति) विमलकूट पर और कांचनकूट पर केवल सुवत्सा और वत्सिमंत्रा ये दो देवियां रहती हैं और बाकी के कूटों पर-पांच कूटों पर- कूट सहश नाम बाले देव रहेते हैं इनकी राजधानियां मेहकी दक्षिणदिशा में हैं।

देवकूरू का निरूपण

(काँह णं भंते ! महाविदेहे वासे देवकुरू णामं कुरा पण्णाता) हे भदन्त!

हिशाना अंतरातमां अने पंचम विमण्डूटनी उत्तरहिशामां चतुर्थ हेवहुरु नामह इट आवेत छे. हेवहुरु इटनी हिक्षणु हिशामां पंचम विमण इट आवेत छे. विमण इटनी हिक्षणु हिशामां यक्त हिशामां यक्त हिशामां यक्त इट आवेत छे. डांचन इटनी हिक्षणु हिशामां अने निषध पर्वतनी उत्तर हिशामां सप्तम विशष्ठ इट आवेत छे. ओ अधा इटेर सर्वत्मना रत्नमय छे. परिमाणुगां ओ अधा दिसवतना इटेर तुल्य छे. अहीं प्रासाहाहिड अधुं ते प्रमाणे के परिमाण्या देवा विश्वकां वण्ड्वं सु सरिसणामया देवाओं वच्छिमित्ताय, अवसिट्टेस कूडेस, सरिसणायया देवा रायहाणं ओ दिस्कांगंति' विभण इट उपर तने डांचन इट उपर इड्त सुरत्सा अने वत्सिमा ओ थे हेवी थे। रहे छे अने शेष इटेर अर ओटते हे पांच इटेर उपर इट सहश्र नामवाणा हेवे। रहे छे. ओमनी राजधानी ओ मेट्रंनी हिक्षणु हिशामां छे.

દેવકુરુનું નિરૂપણ

'कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे देवकुरु णामं कुरा पण्णत्ता' हे अहंत ! महाविदेहमां

विदेहे वासे' महाविदेहे वर्षे 'देवकुरा णामं कुरा' देवकुरवो नाम कुरवः 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्ताः, इतिप्रश्ने भगवानुत्तरमाह्-'गोयमा!' इत्यादि-गीतम! 'मंदरस्स' मन्दरस्य 'पव्वयस्स' पर्वतस्य 'दाहिणेणं' दक्षिणेन दक्षिणदिशि 'णिसहस्स' निपधस्य 'वासहरपव्वयस्स' वर्षधर-पर्वतस्य 'उत्तरेणं' उत्तरेण-उत्तर दिशि 'विज्जुष्पहस्स' विद्युत्प्रभस्य 'वक्खारपव्वयस्स' वक्ष-स्कारपर्वतस्य 'पुरिव्यमेणं' पौरस्त्येन-पूर्वदिशि 'सोमणसवक्खारपव्वयस्स' सौमनसबक्षस्कार-पर्वतस्य 'पचित्थिमेणं' पश्चिमेन पश्चिमदिशि 'एत्थ' अत्र अत्रान्तरे 'णं' खलु 'महाविदेहे वासे' महाविदेहे वर्षे 'देवकुरा णामं' देवकुरवो नाम 'कुरा' कुरवः 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्ताः, ते च कोदशः ? इत्याह-'पाईणपडीणायया' प्राचीनप्रतीचीनायताः - पूर्वपश्चिमदिशोदींघीः 'उदीण-दाहिणवित्थिण्णा' उदीचीनदक्षिणविस्तीर्णाः-उत्तरदक्षिणयोर्दिशोः, विस्तारयुक्ताः 'इकारस' एकादश 'जोयणसहस्साई' योजनसहस्राणि 'अह य' अष्ट च 'बायाले' द्वाचत्वारिशानि-द्वाचत्वारिंशद्धिकानि 'जोयणसए' योजनशतानि 'दुण्णि य' द्वौ च 'एगूणवीसइभाए' एकोनविंशतिभागौ 'जोयणस्त' योजनस्य 'विक्खंभेणं' विष्कम्भेण-विस्तारेण प्रज्ञप्ताः. एषां शेषवर्णनमुत्तरकुरुवन्निर्देष्टुमाह-'जहा उत्तरकुराए वत्तव्वया' यथा उत्तरकुरूणां वक्तव्यता महाविदेह में देवकुर नामके कुरु कहां पर कहे गये हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-(गोयमा ? मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं णिसहस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं विज्जुप्पहस्स वक्खारपव्वयस्स पुरित्थमेणं सोमणसवक्खारपव्वयस्स पच्च-त्थिमेणं एत्थणं महाविदेहें वासे देवकुरा णामं कुरा पण्णत्ता) हे गौतम । मन्दर पर्वत की दक्षिणदिशा में निषध वर्षधर पर्वत की उत्तरदिशा में, विद्युत्प्रभवक्ष-स्कार पर्वत की पूर्वदिशा में, एवं सौमनस वक्षस्कार पर्वत की पश्चिमदिशा में महाविदेह क्षेत्र के भीतर देवकुरु नाम के क्ररु कहे गये हैं। (पाईण पडीणायया उदीणदाहिणविच्छिण्णा) ये कुरु पूर्व से पश्चिम तक दीर्घ हैं और उत्तर से दक्षिण तक विस्तीर्ण हैं (एकारसजोयणसहस्साई अद्वय बायाले जोयणसए दुण्णि य एग्णवीसहभाए जोयणस्स विक्खंभेणं जहा उत्तरकुराए वत्तव्वया

हेवहुरु हथा रूपण आवेश छे । योना जानाजमां प्रसु हेड छे-'गोयमा ! मंद्रस्स पव्यय-स्म दाहिणें जिसहस्त बासहरपञ्चयस्त उत्तरें विज्ञुष्पहस्स वन्सारपव्ययस्य पुरिक्षमेणं सोमणसवन्स्यारपव्ययस्य पञ्चिथिमेणं एत्य णं महाविदेहे वासे देन्कुरा णामं कुरा' पण्णत्ता' हे जीतम ! अन्हर पवर्तनी हिहास हिशासां, निष्ध वर्षधर पर्वतनी हत्तर हिशामां, विद्युत्प्रस वश्चरक्षर पर्वतनी पूर्व दिशासां तेमल सीमनस वश्चरक्षर पर्वतनी पश्चिम हिशामां महाविदेह क्षेत्रनी यांदर देवहुरु नामे हुरुं यावेश छे. 'पाईण पहीणायया उदीण वाहिणदिविद्यण्णा' यो हुरुकी पूर्वी पश्चिम सुधी होर्ब छे अने उत्तरथी हिशास सुधी विस्तीर्क्ष छे. 'एक्कारसजोयणसहस्साइं अट्टय बायाले जोयणसए दुण्णिय एगूणवीसइ भाए जोयणस्स विद्रशंभेणं जहा उत्तरकुराए वत्तव्यया जाव अणुसन्जमाणा पम्हगंधिम वर्णनर्रातिः तथैपामपि वोध्या, सा च किम्पर्यन्ता ? इत्याह-'जाव अणुसक्जमाणा' यावद् अनुपक्जन्तः-सन्तानेनानुवर्तमानाः सन्ति, तत्रानुषक्जन्तीति अनुपक्जन्त इति वर्तमानिन्देशः काल्लवयेऽपि एषां सत्ता स्वनार्थः, तेऽनुपक्जन्तः के सन्ति ? इत्याह-'पम्हगंथा भियगंथा अममा सहा तेत्ली सणिचारीति ६' पद्मगन्धाः १, मृगगन्धाः २, अममाः ३, सहाः ४, तेत्लिनः ५, शनैश्वारिणः ६ इति षड्र मनुष्यजाति भेदाः, एषां विशेषतो विवर्णं सुपमसुप-माकाळवर्णनमसङ्गे प्रागुक्तं, तिक्विज्ञासुभिस्ततो बोध्यम् ॥स्० ३०॥

अथात्र वर्तिनी चित्रविचित्रक्र्टी गिरी वर्णियतुष्पत्रमते—'किह णं भंते !' इत्यादि । पृष्टम्—किह णं भंते ! देवकुराए चित्तविचित्तकूडा णामं दुवे पवया पण्णत्ता ?, गोयमा ! णिसहस्स वासहरपठवयस्स उत्तरिल्लाओ चिरि-मंताओ अटु चोत्तीसे जोयणसए चत्तारि य सत्तभाए जोयणस्स अधा-हाए सीयोयाए महाणईए पुरित्थमपञ्चित्थमेणं उभओ कूले एत्थ णं

जाब अणुसजमाणा पम्हगंधिमअगंधा अमया सहा तेतली सणिचारीति) इनका विस्तार ११८४२ योजन और एक योजन के १९ भागों में से दो भाग प्रमाण है बाकी का इनका दोष वर्णन उत्तर कुरु के वर्णन जैसा है—यही बात सूत्रकारने (जहा उत्तरकुराए वत्तन्वया) इस सूत्रपाठ द्वारा प्रकट की है यहां वर्णन उत्तर कुरु के जैसा 'अणुसज्जमाणा पम्हगन्धा, मिअगंधा अमया सहा तेतली-सणिचारीति' वहां के इस वर्णन तक करना चाहिये 'अणुसज्जमाणा' पद यह प्रकट करता है कि इनकी वंशपरंपरा का त्रिकाल में भी विच्छेद नहीं होता है इनके शरीर की गन्ध पद्म की गन्ध जैसी होती है इत्यादि रूपसे वहां दी षट्ट प्रकार की मनुष्यजाति के भेदों का वर्णन करनेवाले इन मृगगंध आदि पदों की व्याख्या सुषम सुषमाकाल वर्णन के प्रसङ्ग में हमने पहिले करदी है अतः वहीं से यह समझलेनी चाहिये॥३०॥

अगंधा अगया सहा तेतली सिणचारीति' स्थेभने। विस्तार १९८४२ थे। अन सने र्रोड थे। अनना १६ कार्गामांथी के कार्य प्रमास्त्र के स्थान के हैं है। कि कार्य प्रमास्त्र के स्थान के हैं है। के अप वात सूत्रकारे 'जहा उत्तरकुराए वत्तव्यया' स्था सूत्रपाठ वडे प्रकृत करी सिल्यारीति' कि उत्तरकुरनी के भे 'अणुसज्जमाणा पम्हरांधा मिल्रगंधा अगया सहा तेतली सिल्यारीति' सहीं सुधीनं समक्त्र कि कि से 'अणुसज्जमाणा' पढ आवात प्रकृत के हैं के सम्मानी वंशपरंपराने। त्रिष्ठांद्रमां पश्च विश्वेद शक्ष्य नथी, स्थान। शरीरने। यांध पद्म मांध के वेत हैं, वर्गेर प्रमान त्यांना है प्रकारनी मनुष्ययतिकान। के होना वर्शन करनार। स्थानंघ' वर्गेर पहानी व्याण्या सुष्म सुष्माक्ष्य वर्शनन। प्रसंगमां स्थान पहें करी हैं, स्थान के से प्रहानी वर्शन सुष्माक्ष्य वर्शनन। प्रसंगमां स्थान प्रहानी क्याण्या सुष्म सुष्माक्ष्य वर्शनन। प्रसंगमां स्थान प्रहें करी हैं, स्थान के से प्रहानी करास से स्थान करें। । सू-उ० ॥

चित्तविचित्तक्डा णामं दुवे पव्यथा पण्णत्ता, एवं जं चेव जमगपवयाणं तं चेव एएसिं, रायहाणीओ दिक्खणेणंति ॥ सू० ३१॥

छाया- वन खलु भदन्त ! देनकुम्षु चित्रविचित्रकृटौ नाम द्वौ पर्वतौ प्रज्ञप्तौ ?, गौतम ! निषधस्य वर्षभरपर्वतस्य औत्तराहात् चरमान्तात् अष्ट चतुर्स्विशानि योजनशतानि चतुरश्च सप्त-भागान् योजनस्य अनाधया शीतोदाशा महानद्याः पौरस्त्यपश्चिमेन उभयोः क्लयोः अत्र चित्रविचित्रकृटौ नाम द्वौ पर्वतौ प्रज्ञप्तौ, एवं यदेव यम प्रपर्वतयोः तदेवैतयोः, राजधान्यौ दक्षिणोनेति ॥ ॥ ३१॥

टीका-'कहि णं मंते ! देवकुराए' इत्यादि । सुगमम्, नवरम् एवम् उक्तरीत्या 'यं चेव' यदेव वर्णनं 'जमगपव्ययाणं' यमकपर्वदयोः प्रामृक्तयोः 'तं चेव' तदेव वर्णनं 'एएसिं' एतयोः चित्रविचित्रकृष्टयोः पर्वतयो बें ध्यम्, एतयोरधियती चित्रविचित्रौ स्वनामसदृशनामकी, तयोः

चित्रविचित्र पर्वतों की व्याख्या

'कहिणं भंते ! देवकुराए चिन्तविचित्तकुडा'-इत्यादि

धीकार्थ-(कहिणं मंते। देवकुराए चित्तविचित्तकुडा णामं दुवे पव्वया पण्णता) हे भदन्त! देवकुरु में चित्र और चिचित्र नाग के दो पर्वत कहां पर कहे गये हैं? उत्तर में प्रशु कहते हैं-'गोयमा! णिसहस्स वासहरपव्ययस्स उत्तरिक्लाओ चिरमंताओ अह चोत्तीसे जोयणपए चलारिय सत्त्रभाए जोयणस्स अवाहाए सोओयाए महाणईए पुरित्थम पच्चित्थमेणं उभओ कुछे एत्थणं चित्तविचित्तकुडा णामं दुवे पव्वया पण्णता) हे गौतम! निषध वर्षधर पर्वत के उत्तर दिग्वर्ती चरमान्त से ८३४ हैं- योजन की दुरी पर सीतोदा महानदी के पूर्व पश्चिम दिशा के अन्तराल में दोनों तटों पर ये चित्रविचित्र नाम के दो पर्वत कहे गये हैं। 'एवं जंचेव जमग पद्याणं तं चेव एएसि रायहाणीओ दिश्व

ચિત્ર-વિચિત્ર પર્વતાની વ્યાખ્યા

'कद्दिणं भंते ! देवकुराए चित्तविचित्तकूडा' इत्यादि

टीशर्थ-'कहिणं भंते! देवकुराए विक्तिविक्तकूडा णागं दुवे पव्वया पण्णक्ता' है लहंत! हेन हुन अने विश्वित्र नाम असे भे पर्वता हथा स्थणे आवेदा छे? जवालमां असुश्री हुन हैं ने ने समा! णिसहस्स वासहरपव्वयस्स उति हिल्लाओ चिरमंताओ अहु चोत्तीसे जोयणसए चत्तारिय सत्तभाए जोयणस्स अवाहाए सोओयाए महाणईए पुरिध्यमपच्चित्रभेणं उभओं कूले एथणं चित्तविचित्तकूडा णामं दुवे पव्यया पण्णक्ता' है जौतम! निषध वर्षधर पर्वतना उत्तर हिण्वती अरभान्तथी ८३४ है थे। न केटले हर सीताहा महानहीनी पूर्व-पश्चिम हिशाना अन्तरालमां अन्ते हिनाराक्षा उप के खित्र-विधित्र नामे भे पर्वता आवेदा छे. 'एवं जं चेव जमगपव्ययाणं तं चेव एएसिं रायहाणोओ दिक्सणेणंति' के वर्षीन यम अ

'रायहाणीओ' राजधान्यौ चित्रा विचित्रे 'दाहिणेणं' दक्षिणेत-दक्षिणदिशि बोध्ये ॥स् ३१॥ अथ पश्चानां हदानां स्वरूपमाह-'कहि णं भंते !' इत्यादि ।

मूल्य-कहि णं भंते! देवकुराय कुराय णिसडहहे पानं दहे पवनते?, गोयमा! तेसि चित्तविचित्तकूडाणं पठवणाणं उत्तरिहळाओ चिरिनंताओं अटु चोत्तीसे जोयणसय चतारि य सत्तभाय जोयणस्त अबाहाय सीओ-याय महाणईय बहुमडझदेसभाय परथ जं जिसहहहे जातं दहे पवजते, जा चेत्र नीळवंत उत्तरकुरु चंदे रावयकाळदंताणं वत्तठत्रया सा चेव िसह देवकुरुस्रसुळसविज्जुप्यभाणं णेयवा रायहाणीओ दिख्लणेणंति।सू.३२।

छाया-क्व खल भदन्त ! देवकुरुषु कुरुषु निषधहूदो नाम हूदः प्रज्ञप्तः ?, गौतम ! तयो श्वित-विचित्रकूटयोः पर्वतयोः औत्तराच्चरमान्तात् अष्ट चतुर्श्विशानि योजनशतानि चतुरश्व सप्तमागान् योजनस्य अवाधया श्रीतोदाया महानद्याः बहुमध्यदेशभागे अत्र खलु निषधहदो नाम हूदः प्रज्ञप्तः, येत्र नीलगदुत्तरक्करुचन्द्रैरा गतमास्यवतां वक्तव्यता सेव निषधदेवकुरु सूर-सुलसविद्युत्प्रभाणां नेतव्या राजधान्यो दक्षिणेनेति ॥सू० ३२॥

णेणंति) जो वर्णन यमक पर्वतों के सम्बन्ध में कहा गया है वही वर्णन इन चित्र विचित्र पर्वतों के सम्बन्ध में कहा गया है इनके अधिपति चित्रविचित्र नाम के हैं इनकी राजधानियां भी चित्रा विचित्रा नामकी है और ये मेरु की दक्षिण दिशा में हैं ॥३१॥

'किह णं भंते ! देवकुराए कुराए णिसहदहे णामं दहे पण्णसे' इत्यादि टीकार्थ-(किह णं भंते ! देवकुराए कुराए णिसहदहे णामं दहे पण्णत्ते) हे भदन्त ! निषध द्रह नामका द्रह देवकुरु में कहां पर कहा गया है ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-गोयमा! तेसिं चित्तविचित्तकुडाणं पव्वयाणं उत्तरिस्लाओ चरिमंताओ अहचोत्तीसे जोयणसए चत्तारिय सत्तभाए जोयणस्स अवाहाए सीयोयाए महाणईए बहुमज्झदेसभाए एत्थणं णिसहदहे णामं दहे पण्णत्ते) हे

પર્વતાના સંદર્ભમાં કરવામાં આવેલું છે તે જ વર્ણન આ ચિત્રવિચિત્ર પર્વતાના સંદર્ભમાં પણ જાણવું જોઇએ. એમના અધિપતિ ચિત્રવિચિત્ર નામક છે. એમની રાજધાનીએ પણ ચિત્ર-વિચિત્રા નામક છે અને એ મેરુની દક્ષિણ દિશામાં આવેલી છે. ॥ ૩૧ ॥

'कहिणं भंते ! देवकुराए कुराए णिसहदहे णामं दहे पण्णत्ते' इत्यादि

टी डार्थ-'कहिणं मंते! देवकुराए कुराए णिसह द्हे णामं दहे पण्णत्ते' है अहंत! निषध द्रहे नाम इद्रहे देव डुरुमां डया स्थणे आवेल छे? जवालमां प्रसुधी हहे छे-'गोयमा! तेसिं चित्त-विचित्तकूडाणं पव्वयाणं उत्तरिल्लाओ चहिमंताओ अट्ट चोत्तीसे जोयणसए चत्तारि य

टीका-'किह णं भंते ! देवकुराए' इत्यादि—सुगमम्, नवरम् एवम् उकालापकानुसारेण यैव नीलवदुत्तरकुरुचन्द्रेरावतमाल्यवतां पश्चानां द्रानामुत्तरकुरुषु वक्तव्यता सैव निषधदेवकुरु-सूरस्रवस्विद्युलाभाणामपि वक्तव्यता नेतव्या वोधपथं प्रापणीया बोध्येति भावः, एषां राज्ञ-धान्यः 'दक्ष्णिणं' दक्षिणेल-मेरोदेशिणादिशि बोध्या इति ॥सू० ३२॥

अथ देवकुरुष्वेव क्रुटशालमन्नीपीठं वर्णियतुमपक्रमते-'कहि णं भंते !' इत्यादि ।

प्रण्-कि णं मंते ! देवळुराए छुराए कुडलामिळिपेढे णाशं पेढे पण्यत्ते ?, गोयमा ! मंद्रस्स पण्ययस्स दाहिणपचित्रिके ितहस्स वासहरपञ्चस्त उत्तरेणं विज्जुष्पभस्स वक्खारपञ्चयस्त उत्तरिकोणं सीओयाए महाणईए पचित्रियमेणं देवळुरु पचित्रिभद्धस्य चहुन्वद्वदेसमाए एत्थ णं देवळुराए कुडसामळीपेढे णामं पेढे पण्यत्ते, एवं जा चेव सुदंसणाए वत्तव्वया सा चेव सामळीए वि भाणियव्वा प्राकृषिहूणा गरुळदेवे रायहाणी दिक्खणेणं अवसिटुं तं चेव जाव देवळुरु य इत्थदेवे पिळओवमिटुइए परिवसइ, से तेणटुणं गोयमा! एवं वुच्चइ देवळुरार, अदुत्तरं च णं देवळुराए० ।।सू० ३३॥

गौतम ! उन चित्र विचित्र पर्वतों के उत्तर दिग्वती चरमान्त से ८३४ है छोजन की दूरी पर सीतोदा महानदी के ठीक मध्यम भाग में निषध नाम का द्रह कहा गया है। (जा चेव णीलवंत उत्तरकुरुंचदेरावयमालवंताणं बच्च्चया सा चेव णिसहदेवकुरुस्रस्लसविज्जुप्पभाणं णेयव्वा रायहाणीओ दिक्खणेणंति) जो वक्तव्यता नीलवंत, उत्तर कुरु, चन्द्र, एरावत और मालवंत इन पांच द्रहों की उत्तर कुरु में कही गई है। वही वक्तव्यता, निषध, देवकुरु, सूर खलस और विशुत्पभ इन पांच द्रहों की कही गई है ऐसा जानना चाहिये। यहां पर इसी के नाम के देव हैं इनकी राजधानियां मेरु की दक्षिण दिशा में हैं। १२१।

सत्तमाए जोयणस्स अवाहाए सीयोयाए महाणईए बहुमन्झदेसभाए एत्थणं णिसहदहे णामं वहें पण्णत्ते' हे गौतम! ते यित्रविधित्र पर्वतना उत्तरहिन्दती यरमान्तथी ८३४ आहरी यात्रीस सातीयायार येकिन केटसे इर सीतीहा महानहीना ही है मध्यक्षाणमां निषध नामे द्रहे आवेस सातीयायार येकिन केटसे इर सीतीहा महानहीना ही है मध्यक्षाणमां निषध नामे द्रहे आवेस छे. 'जा चेव णीलवंत उत्तरकुर चंदेरावयमालवंताणं वत्तव्वया सा चेव णिसहदेवकुरसूर-सुलसविष्णुप्पमाणं णेयव्वा रायहाणीओ दिक्खणेणंति' के पद्भत्यता उत्तरकुरमां नीदव त, उत्तरकुर, यन्द्र, कैरावत अने मासवन्त के पांच द्रहे। विषे कहेवामां आवेसी छे, तेक वक्षत्यता निषध, हेवहुर, सूर, सुसस अने विद्यत्यक्ष के पांच द्रहे।नी पद्म कहेवामां आवेसी छे. केद्रुं काद्यी सेवुं केहियामां आवेसी छे. केद्रुं काद्यी सेवुं केहियामां आवेसी छे. ।। सूर उर् ॥

छाया-क्व खलु भदन्त! देवकुरुषु कुरुषु कुट्यालमलीपीठं नाम पेठं प्रज्ञप्तम् ?, गौतम! मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणपश्चिमेन निषधस्य वर्षथरपर्वतस्य उत्तरेण विद्युत्प्रभस्य वक्ष-स्कारपर्वतस्य पौरस्तयेन शीतोदायाः महानद्याः पश्चिमेन देवकुरुपश्चिमार्द्धस्य बहुमध्यदेशभागे अत्र खलु देवकुरुषु कुरुषु कुट्यालमलीपीठं नाम पीठं प्रज्ञप्तम्, एवं यैव जम्ब्याः सुदर्शनायाः वक्तव्यता सैव शाल्मल्या अपि भणितव्या नामविद्दीना गरुडदेवः राजधानी दक्षिणेन अविश्वर्टं तदेव यावद् देवकुरुश्चात्र देवः पल्योपमस्थितिकः परिवसति, तत् तेनार्थेन गौतम! एवसुच्यते—देवकुरवः कुरवः, अदुत्तरं च खलु देवकुरूणां ।।सू० ३३।।

टीका-'किह णं भंते देवकुराए' इत्यादि-प्रश्नस्त्रं सुगमम्, नवरं कृटशालमलीपीठं-कृटं शिखरं, तदाकारा शालमली-वृक्षविशेषः, कृटशालमली, तस्याः पीठम्-आसनम् कृटशालमली-उत्तरस्त्रेन-'गोयमा !' गौतम ! 'मंदरस्य' मन्दरस्य 'पञ्चयस्त्र' पर्वतस्य 'दाहिणपञ्चत्थमेणं' दक्षिणपश्चिमेन नैर्क्यत्यकोणे 'णिसहस्त्र' निषधस्य 'वासहरपञ्चयस्त्त' वर्षपरपर्वतस्य 'उत्तरेणं' उत्तरेण-उत्तरदिशि 'विज्जुष्पभस्त्र' विद्युत्प्रभस्य 'वन्खारपञ्चयस्त्र' वक्षस्कारपर्वतस्य 'पुरित्थमेणं' पौरस्त्येन प्वैदिशि 'सीयोयाए' श्रीतोदाया-श्रीतोदानाम्न्याः 'महाणईए' महानद्याः 'पञ्चिमेन-पश्चिमदिशि 'देवकुरुपञ्चत्थमद्धस्य देवकुरुपश्चिमार्द्धस्य 'वहुमज्झदेसभाए' वहुमध्यदेशभागे 'एत्थ' अत्र अत्रान्तरे 'णं' खल्ळ 'देवकुरुपण्' देवकुरुषु

-क्रदशाल्मली पीठ वक्तव्यता-

"कहिणं भंते ! देवकुराए कुराए कुडसामली" इत्यादि-

टीकार्थ-गौतमने इस सूत्र द्वारा प्रमु से ऐसा पूछा -है (कहिण मंते! देवकुराए कुराए कुडसामलिपेढे णामं पेढे पण्णत्ते) हे भदन्त! देवकुरु नाम के कुरु में कूट चाल्मलीपीठ कहां पर कहा गया है? उत्तर में प्रमु कहते हैं=(गोयमा! मंद्रस्स पट्य यस्स दाहिणपच्चित्थमेणं जिसहस्स वासहरपट्ययस्स उत्तरेणं विज्जुप्पभस्स व स्वारपट्ययस्स पुरिथमेणं सीयाए महाणईए पच्चित्थमेणं देवकुरुपचित्थमद्वस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं देवकुराए कूडसामलिपेढे णामं पेढे पण्णत्ते) हे गौतम! मन्दर पर्वत के नैक तकोण में निषधवर्षथर पर्वत की उत्तरदिशा में विद्युत्थ-

કૂટ શાલ્મલી પીઠે વક્તવ્યતા

'किह णं भेते ! देवकुराए कूडसामली' इत्यादि

टीकार्थ-गौतमे आ स्त्रवंड प्रभुने आ जातने। प्रश्न क्ये छे है-'कहिणं मंते! देव कुराए कुराए कुडसामिलिपेढे णामं पेढे पण्णत्ते' है भगवन् हेवडुइ नामना डुइमां ६८ शाहमन् क्षेपीठ क्यां आवेल छे हैं 'गोयमा! मंद्रस्य पव्ययस्य दाहिणपच्चित्रमेणं णिसहस्य वास्त्रस्य प्रविययस्य उरिधमेणं सीयाए महाणईए पच्चित्रमेणं देवकुर पच्चित्रमद्भस्य वक्षारपव्ययस्य पुरिधमेणं सीयाए महाणईए पच्चित्रमेणं देवकुर पच्चित्रमद्भस्य बहुमञ्झदेसभाए एत्थणं देवकुराए कुडसामलिपेढे णामं पेढे पण्णत्ते' है गौतम! मन्दर पर्वतना नैअल्थ डेाधुमां, निषध पर्वध पर्वतनी इत्तर हिशामां,

'कुराए' कुरुषु 'कूडसामली पेढे' कूटशाल्मीपीठं 'णामं' नाम 'पेढे' पीठं 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तम् 'एवं' एवम्-अनन्तरोक्तस्त्रानुसारेण 'जा चेव' यैव 'जम्बूए' जम्ब्वाः 'सुदंसणाए' सुद्री-नायाः 'वत्तव्वया' वक्तव्यता 'सा चेव' सैव 'सामलीए वि' शाल्मल्या अपि 'भाणियन्वा' भणितव्या-वक्तव्या, इह जम्बुसुदर्शनातो विशेषं दर्शयितुमाह-'णामविहूणा' नाम विहीना नामभिः प्रायुक्तेद्वीदशभिजेम्बूनामभिर्विहीना-वर्जिता वक्तव्यता भिणतव्या इह शाल्मली नामानि न सन्तीति तदिहीना वक्तव्यता वाच्येति तात्पर्यम्, तथा 'गरुढदेवे' गरुढदेवः जम्बूसुद्र्भनायां तु अनादतो देव इति ततोऽत्र विशेषः, तत्र गरुडजातीयो वेणुदेवनामा देवो निवसतीति तदर्थः तस्य च 'रायहाणी' राजधानी 'दिक्खणेणं' दक्षिणेत मेरुगिरितो दक्षिणदिशि विद्यत इति बोध्यम् 'अवसिद्धं' अवशिष्टं शेषं प्रासादभवनादि 'तं चेव' तदेव जम्बूसुदर्शनावदेव बोध्यम्, तत् किम्पर्यन्तम् ? इत्याह-'जाव देवकुरु य इत्य देवे' यावद् भवक्षस्कार पर्वत की पूर्वदिशा में, एवं शीतोदा महानदी की पश्चिमदिशा में देवकुरु के पश्चिमाई के-शीतादा नदी द्वारा द्वीघाकृत देवकुरु के पश्चिमाई के-बह मध्य देशभाग में देवकुरुक्षेत्र में कुट शाल्मली पीठ कहा गया है। (एवं जच्चेव जम्बूए सुदंसणाए वत्तव्यया सञ्चेव सामलीए वि भाणियव्या णामविद्वणा गरूल देवे रायहाणी दिवलणेणं) जो वक्तव्यता जम्बू नामक खुद्दीना की है वही वक्त-ब्यता इस शाल्मली पीठकी है जम्बू सुद्दीना के उसकी वक्तव्यता में १२ नाम प्रकट किये गये हैं पर ऐसे १२ नाम यहां शाल्मली पीठ की वक्तव्यता में नहीं कहे गये हैं। गरुडदेव यहां पर रहता है-जैसा कि वहां पर अनादत देव रहता है। इसकी राजधानी मेरकी दक्षिणदिशा में है। (अवसिष्टं तं चेव जाव देवक्कर अ देवे पिलओवमिट्टहर परिवसह) प्रासाद भवनादिका कथन जम्बू सुदर्शना के प्रकरण में जैसा कहा गया है वैसा ही कहलेना चाहिये-यावत देवकुरु नामका देव यहां पर रहता है। इसकी एक पल्योपमकी स्थिति है। यहां

विद्युत्प्रक्ष वक्षस्कार पर्वातनी पूर्व हिशामां अने शीतीहा महानहीनी पश्चिम हिशामां, हेव क्रुरुना पश्चिमार्ह्धना—सीतीहा नही वहे दिधाकृत हेव क्रुरुना पश्चिमार्ह्धना—अहमध्य हेशकान्यमां, हेव क्रुरु क्षेत्रमां कृट शाहमदीपीठ आवेदा छे. 'एवं जरुवेव जम्बृए सुदंसणाए वक्तव्वया सम्चेव सामछीए वि माणियव्वा णामविहूणा गरुछदेवे रायहाणी दिवसणेणं' के वक्ष्तव्यता कम्भू नामक सुदर्शनानी छे तेक वक्ष्तव्यता आ शाहमदीपीठनी पण्च छे. कम्भूसदर्शना भाठे तेनी वक्षतव्यतामां १२ नामा प्रकट करवामां आवेदां छे पण्च शाहमदीपीठनी अहीं के वक्ष्तव्यतामां १२ नामा प्रकट करवामां आवेदां छे पण्च शाहमदीपीठनी अहीं के वक्षतव्यता छे तेमां नामा प्रकट करवामां आव्या नथी. अहीं शक्र हेव रहे छे. अने त्यां अनादत हेव रहे छे. अनी राजधानी मेरुनी दक्षिण्च दिशामां छे 'अवसिद्धं तंचेव जाव देवकुर अदेवे पछिओवमद्विद्ध परिवसद्द प्रासाद क्षवनादिक विषेतुं कथन कम्भूसदर्शनाना प्रकरण्यां के प्रमाणे के समाणे कहेवामां आव्यां छे तेवुं क अहीं पण्च समक्षुं केंग्रे. यावतू

देवकुरुश्चात्र देवः 'पिल्ञिओवमिद्धिइए' परयोपमिस्थितिकः 'पिरविसाइ' परिवसित इह यावत्यद सङ्ग्राह्मपदानि अष्टमस्त्रतात्सङ्ग्राह्माणि, तदर्थश्च तत एव ज्ञेयः, देवकुरुनामार्थस्त्रं प्राग्वद्विवरणीयम् ।।स् ० ३३॥

अथ चतुर्थ विद्युत्प्रभनामकं बक्षस्कारपर्वतं वर्णयितुम्रुपक्रमते-'किह णं भंते ! जंबुदीवे' इत्यादि ।

मूलम्—किह णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे विज्जुप्पमे णामं वक्लारपव्वए पण्णते?, गोयमा! णिसहस्स वासहरपव्यस्स उत्तरेणं मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणपच्चित्थमेणं देवकुराए पच्चित्थमेणं पम्हस्स विजयस्स पुरित्थमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे विज्जुष्पमे णामं वक्लारपव्वए पण्णत्ते, उत्तरदाहिणायए एवं जहा मालवंते णवरं सव्वतविण्जम् अच्छे जाव देवा आसयंति।

विक्जुप्पभेणं भंते ! वक्लारपटवए कइकूडा पण्णता ? गोयमा ! नवकूडा पण्णता, तं जहा—सिद्धाययणकूडे विक्जुप्पमकूडे देवकुरुकूडे पम्हकूडे कण्णकूडे सोवित्थयकूडे सीयोयाकूडे सयज्ञलकुडे हरिकूडे । सिद्धे च विक्जुणामे देवकुरु पम्हकणगसोवत्थी । सीयोया य सयज्जल हरिकूडे चेव बोद्धव्वे ॥१॥ एए हरिकूडवज्ञा पंचसइया णेयच्वा, एएसिं कूडाणं पुन्छा दिसि विदिसाओ णेयव्वाओ जहा मालवंतस्स हरिस्सहकूडे तह चेव हरिकूडे रायहाणो जह चेव दाहिणेणं चमरचंचा रायहाणी तह जेव हरिकूडे रायहाणो जह चेव दाहिणेणं चमरचंचा रायहाणी तह णेयव्वा, कणगसोवित्थयकूडेसु वारिसेणबलाहयाओ दो देवथाओ अवसिट्टेसु कूडसरिसणामगा देवा रायहाणीओ दाहिणेणं से केणट्टेलं भंते ! एवं वुच्चइ विक्जुप्पभे वक्लारपटवए २१, गोयमा !

यावत्पद संग्राह्य पदीं को और उनके अर्थ को जानने के लिये अष्टम सूत्र से जानलेना चाहिये तथा देवकुरु नामार्थ सूत्र पहिले कथित पद्धति के अनुसार ही विद्युत करलेना चाहिये॥३३॥

દેવકુરુ નામક દેવ અહીં રહે છે. એની એક પલ્યાપમ જેટલી રિઘતિ છે. અહીં યાવત્ પદ સંગ્રાહ્ય પદા અને તેમના અર્થ જાણવા માટે અલ્ટમ સૂત્રમાં જોવું જેઈએ. તેમજ દેવકુરુ નામાર્થ સૂત્ર પૂર્વ કથિત પહિતિ મુજબ જ વિવૃત કરી લેવું જોઇએ ॥ સૂ. ૩૩ ॥ विज्जुष्पभेणं वक्लारपटवए विज्जिमिव सटवओ समंता ओभासेइ उज्जोवेइ पभासइ विज्जुष्पभे य इत्थ देवे पिलओवमट्टिइए जाव परि-वसइ, से एएणट्टेणं गोयमा! एवं बुच्चइ-विज्जुष्पभेर, अदुत्तरं च णं जाव णिच्चे ॥सू० ३४॥

छाया-क खल भदन्त ! जम्बूढीपे द्वीपे महाविदेहे वर्षे विद्युत्प्रभो नाम वक्षस्कारपर्वतः प्रज्ञप्तः ?, गौतम ! निषधस्य वर्षधरपर्वतस्य उत्तरेण मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणपश्चिमेन देवकुरुणां पश्चिमेन पद्मस्य विजयस्य पौरस्त्येन अत्र खल्ल जम्बूढीपे द्वीपे महाविदेहे वर्षे विद्युत्प्रभो नाम वक्षस्कारपर्वतः प्रज्ञप्तः, उत्तरदक्षिणायतः एवं यथा माल्यवान् नवरं सर्वतः पनीयमयः अच्छो यावद् देवा आसते ।

विद्युत्प्रमे खल भदन्त ! वक्षस्कारपर्वते कित्क्र्टानि प्रज्ञप्तानि ?, गौतम ! नव क्र्टानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—सिद्धायतनक्र्टं विद्युत्प्रमक्र्टं देवक्रक्क्रंटं कनकक्रटं स्वस्तिकक्र्टं शितोदा-क्र्टं शतज्बलक्र्टं हरिक्र्टम् । सिद्धं च विद्युन्नाम देवक्रक् प्रक्रनक—स्वस्तिकानि । शीतोदा च शतज्बल हरिक्र्टं चैव बोद्धल्यम् ॥१॥ एतानि हरिक्र्टवर्जानि पश्चशतिकानि नेतव्यानि, एतेषां क्र्टानां पृच्छा दिग्विदिशो नेतव्याः यथा माल्यवतो हरिस्सहक्र्टं तथैव हरिक्र्टं राजधानी वैथैव दक्षिणेन चमरचश्चा राजधानी तथा नेतव्या, कनक—स्वस्तिकक्र्टयोः वारि-पेणा—बलाहिके हे देवते, अविद्युद्ध क्र्टेषु क्र्टसद्यनामका देवाः राजधानयो दक्षिणेन, अथ केनार्थेन भदन्त ! एवम्रुच्यते—विद्युत्प्रमो वक्षस्कारपर्वतः २ ?, गौतम ! विद्युत्प्रमश खल वक्षस्कारपर्वतो विद्युद्धि सर्वतः समन्ताद् अवभासते उद्घोतयित प्रभासते विद्युत्प्रमशात्र देवः पल्यौपमस्थितिको यावत् परिवस्ति, स एतेनार्थेन गौतम ! एवम्रुच्यते—विद्युत्प्रमः २, अदुत्तरं च खल्च याविवत्यः ॥स० ३४।

टीका-'किह णं भंते जंबुदीके'-इत्यादि-छगमम्, किन्तु माल्यवानिवायग्रुक्तस्तत्र माल्यवतो विशेषं दर्शयितुमाह-'णवरं' नवरं केवलं 'तर्वायज्जमए' तपनीयमयः-तपनीयं रक्त-

विशुरप्रभवसंस्कार पर्देत की वक्तव्यता-

'कहिणं अंते ! जबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे विज्जुप्पमें' इत्यादि । टीकार्थ- (कहिणं अंते ! जंबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे) हे अदन्त ! इस जम्बूदीप नाम के द्वीप में वर्तमान महाविदेह क्षेत्र में विश्वतप्रम नाम का वक्ष-स्कार पर्वत कहां पर कहा गया है ? उत्तर से प्रश्च कहते हैं-(गोयमा ! णिसह-

विद्युत्प्रस पदास्कार पर्वातनी वक्तव्यता

'कहिणं मंते ! जंबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे विज्जुष्पमे' इत्यादि टीक्षथ-'कहिणं मंते ! जंबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे' हे लडत ! आ क'णुदीप नामक सुवर्ण, तन्मयोऽयम् तथा 'अच्छे' अच्छः-आकाशस्किटिकवद्तिनिर्मलः 'जाव' यावत् – यावत्पदेन 'श्लक्ष्णः, घृष्टः, मृष्टः, नीरजाः, निर्मलः, निष्पङ्कः निष्कङ्कटच्छायः, सप्रभः, समरीचिकः, सोद्धोतः, प्रासादीयः, दर्शनीयः, अभिरूपः, प्रतिरूपः,' इत्येषां सङ्ग्रहो बोध्यः, एषां व्याख्या चतुर्थस्त्रटीकातो बोध्या तथा तत्र खल्ज बहवो व्यन्तरा इत्येषामि

सस वासहरपट्चयस्स उत्तरेणं मंदरस्स पट्चयस्स दाहिणपच्चित्थिमेणं देव कुराए पच्चित्थिमेणं पम्हम्स विजयस्स पुरित्थिमेणं एत्थणं जंबुदीवे दीवे महा-विदेहे वासे विज्जुष्पभे णामं वक्खारपट्चए पण्णत्ते) हे गौतम ! निषध वर्षधर पर्वत की उत्तर दिशा में, मेरु पर्वत के दक्षिण पश्चिम कोने में देवकुरु की पश्चिम दिशा में और पद्म विजय की पूर्व दिशा में जम्बूद्धीप के भीतर वर्तमान महा-विदेह क्षेत्र में विद्युत्पभ नामका वक्षस्कार पर्वत कहा गया है (उत्तरदाहिणायए एवं जहा मालवंते णविर सच्च तविण्जमए अच्छे जाव देवा आस्यंति) यह वक्षस्कार पर्वत उत्तर से दक्षिण तक दीर्घ है इस तरह से जैसा कथन माल्य-चन्त पर्वत के प्रकरण में किया गया है वैसा ही कथन यहां पर भी कर छेना चाहिये यह पर्वत सर्वात्मना तपनीय मय है आकाश और स्फटिक के जैसा निर्मल है यावत इस पर अनेक व्यन्तर देव और देवियां आकर विश्राम करती हैं और आराम करती है। यहां यावत्पद से 'श्लक्ष्णः, चृष्टः, मृष्टः, नीरजाः, निर्मलः, निष्पद्कः, निष्कंटकछायः, सप्रभः, समरीचिकः, सोद्योतः, प्रासादीयः, दशै

हीपमां, वर्तमान महाविदेह क्षेत्रमां विद्युत्प्रल नामक वक्षस्कार पर्वत क्या स्थणे आवेल छे ? क्यालमां प्रलु श्री केहे छे—'गोयमा ! णिसहरस वासहरपट्ययस्स उत्तरेणं मंद्रस्स पट्ययस्स द्वाहिणपच्चित्यमेणं देवकुराए पच्चित्यमेणं पम्हस्स विजयस्स पुरित्यमेण एत्थणं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे विज्ञुप्पमे णामं वक्षारपट्यए पण्णत्ते' हे जौतम ! निषध वर्षधर पर्वतनी इत्तर हिशामां, मेरु पर्वतना हिशामां वक्ष्यारपट्यए पण्णत्ते' हे जौतम ! निषध वर्षधर पर्वतनी इत्तर विशामां श्रे पद्म विशामां श्रे पद्म विशामां श्रे पद्म विश्वयमां देवहुत्रमां विद्युत्प्रल नामे विश्वयमां पूर्व हिशामां श्रे जूर्वीपनी श्रं हर वर्तामान महाविदेह क्षेत्रमां विद्युत्प्रल नामे वक्षस्कार पर्वत आवेल छे. 'उत्तरवाहिणायए एवं जहा मालवंते णविर सव्ववयणिष्ठमण श्रे कें जाब देवा आसर्यति' श्रा वक्षस्कार पर्वत इत्तर्था हिश्चिष्ठ सुधी हिर्ध छे. श्रा प्रमाण् कें कुं क्यान माल्यवन पर्वतना प्रक्षकुमां करवामां आवेल छे तेवुं क ध्यन श्रे श्री पण्ण क्षमक्ष्य कें भागि श्रे श्रे श्रे प्रमाण क्षमक्ष्य कें तेवुं का प्रवास करे छे श्रे श्री श्राम करे छे श्रे श्री विश्राम करे छे श्रे श्री श्री हिर्ध कें अने श्री श्री हिर्ध व्यावत् स्वर्ध प्रमाण क्षित्र स्वर्ध प्रमाण क्षित्र स्वर्ध स्वर्ध अभिक्ष, प्रतिक्रवः, निष्त्र स्वर्ध भागि कर्म स्वर्ध स्वर्ध क्ष्मे स्वर्ध क्ष्मे स्वर्ध क्ष्मे स्वर्ध क्ष्मे स्वर्ध कर्मा स्वर्ध स्वर्ध क्ष्मे स्वर्ध स्वर्ध क्ष्मे स्वर्ध क्ष्मे स्वर्ध क्ष्मे स्वर्ध कर्म स्वर्ध कर्मा स्वर्ध स्वर्ध कर्मा स्वर्ध स्वर्ध कर्मा स्वर्ध कर्म स्वर्ध कर्मा स्वर्ध कर्म स्वर्ध कर

संग्रहः 'देश' देशः इत्युपलक्षणं, तेन वहवो देव्यश्च 'आसयंति' आसते इत्यप्युपलक्षणं तेन शेरते तिष्ठन्ति निषीदन्ति त्वम्वर्तियन्ति इत्यादि वोध्यम् ।

अथात्र क्टानि वर्णियतुप्रक्रमते-'विष्णुप्पभे णं भंते !' इत्यादि प्रश्नस्त्रप्रतानार्थम्, उत्तरस्त्रे तु-नवक्टानि यथा 'सिद्धाययणक्डे' सिद्धायतनक्र्टम् १ 'विष्णुप्पभक्कें' विद्युत्प्रभक्त्रं न्विष्णुप्पभक्कें' देवकुरुक्टं क्ष्मकृटं भ 'क्षायाकं कूटम् ४ 'कणगकूढे' कनककूटम् ५ 'सोवित्थयकूढे' स्वस्तिककूटम् ६ 'सीयोयाक्टं' शीतोदाकूटम् ७ 'सयज्ञलकूडे' शत्त्रवलकूटम् ८ 'हितकूडे' हितकूटं हित्नामकस्य दक्षिणश्रेण्यिपस्य विद्युत्कुमारेन्द्रस्य कूटं हितकूटम् ९ इति, इमान्येव नव कूटानि से समझ लेनी चाहिये देव पद यहां उपलक्ष्मणक्ष्य है इससे देवियों का भी प्रहण हो जाता है। तथा 'आस्रयंति' इस किया पद से उपलक्ष्मण रूप होने के कारण 'दोरते, तिष्ठित्त, निषीदन्ति, त्वग्वर्तयन्ति, इत्यादि कियापदों का प्रहण हो जाता है।

(विजुष्पभेणं भंते ! बक्खारपव्वए कइ क्डा पण्णत्ता) हे भदन्त ! बिगुरप्रभ वक्षस्कार पर्वत पर कितने कूट कहे गये हैं ? इत्तर में प्रभु कहते हैं (गोयमा ! नवकूडा पण्णत्ता) हे गौतम ! नौ कूट कहे गये हैं (तं जहा) उन कूटों के नाम इस प्रकार हैं – (सिद्धाययणकूडे, विज्जुष्पभकूडे, देवकुरुकूडे, पम्हकूडे, कणगकूडे, सोवित्थयकूडे, सीओआकूडे, सयज्ञलकूडे, हिरकूडे,) सिद्धेय, विज्जुणामे, देवकुरु पम्हकणग, सोवत्थी सीओआ य सयज्ञल हिरकूडे चेव बोद्धव्वा ॥१॥ (एए हिरकूडवज्ञा पंचसइया णेयव्वा) सिद्धायतनकूट, विगुरप्रभक्ट, देवकुरुकूट, पद्मकूट कनककूट, स्वस्तिककूट, सीतोदाकूट, शतज्वलकूट, और हिरकूट इनमें

પદ અહીં ઉપલક્ષણ રૂપ છે. એનાથી દેવીઓનું પણ ગ્રહણ થયું છે. તથા 'आसयंति' આ ક્રિયાપદથી ઉપલક્ષણ રૂપ હેાવા અદલ 'રોરતે, તિષ્ઠત્તિ, નિષીदन्ति, ત્યમ્વર્તચન્તિ' વિગેરે ક્રિયાપદથી શ્રહણ થઇ જાય છે.

'विज्ञापमेणं मंते! वक्खारपव्वए कइ कूडा पण्णता' है लहन्त! विद्युत्प्रल पक्षस्कार पर्वत ७५२ हैटला कूटे। आवेला छे? खेना अवाधमां प्रलु हुं छे—'गोयमा! नवकूडा पण्णता' है जीतम! नव कूटे। आवेला छे. 'तं जहा' ते कूटे।ना नाम आ प्रमाधे है—'सिद्धायण कूडे, विज्जुप्पमकूडे, देवकुरुकूडे, पम्हकूडे, क्षणगकूडे, सोविध्यकूडे, सीओआकूडे, सय-ज्जलकूडे, हरिकूडे सिद्धेय, विज्जुणामे देवकुरु पम्हकणगसोविध्य सीओआ य सयज्जवल हरि कूडे चेव बोद्धव्वे ॥ १॥ एए हरिकूडवज्जा पंचसद्या णेयव्या' सिद्धायतन कूट, विधत्प्रक्ष कूट, हेवकुरु कृट, पद्मकूट, कनक कूट, स्वस्तिक कूट, सीटाटा कूट, शतलवल कूट अने हिर कूट खेमां के विद्युत्प्रक्ष वक्षस्कार पर्वत विशेष केवा नाभवाणा कूट छे, तेनुं नाम विद्युत्प्रक गाथया सङ्ग्रहीतुमाह-'सिद्धे य' इत्यादि-छायागम्यम्, अथ सर्वाणि कूटानि परिगणियतुमाह-'एए हरिकूडवज्ञा' एतानि हरिकूटवर्जानि हरिकूटं वर्जियत्वा हरिकूटस्य सहस्रयोजनप्रमाणत्वात्, श्रेषाणि सिद्धायत्वादीनि अष्टकूटानि 'पंचसह्या' पञ्चशितकानि पञ्चश्वतयोजनप्रमाणानि 'णेयव्वा' नेतव्यानि वोधपणं प्राप्याणि बोध्यानि, तत्र हरिकूटस्य
प्रमुखता परिगणनायामैन्दिक्षकी न तु कामिकी 'एएसिं' एतेषाम् अनन्तरोक्तावाम् 'कूडाणं'
कूटानां पुच्छा' पृच्छा-सूत्रनिर्दिष्टः प्रशः प्रश्नस्त्रनिति मावः तथा तदाधारत्वा 'दिसिविदिसाओ' दिग्विदिशः दिशो विदिशश्च 'णेयव्वाशो' नेतव्याः-इश्तव्याः, तत्र प्रश्नस्त्रं
हि-'किह णं भंते ! विज्जुल्पभे वन्छारपञ्चए सिद्धाययणक्त्रं णामं कृडे पण्णके ?' एवमादिकृपम्, दिग्विदिशश्चेवम्-मेरोर्दक्षिणपश्चिमायां विदिशि मेरुसमीपवर्ति प्रथमं सिद्धायतनक्त्रं,
तस्य निर्कृतिकोणे विद्युत्प्रमक्तं नाम द्वितीयं कृटम्, तस्य निर्कृतिकोणे तृतीयं देवक्रं,

जो विद्युत्प्रभ वक्षस्कारपर्वत विशेष के जैसे नाम वाला क्ट है? उसका नाम विद्युत्प्रभ क्ट है। देवक्कर के जैसे नाम वाला देवक्करक्ट है पश्म नामक विजय के जैसा नाम वाला पश्मक्ट है दक्षिण श्रेणी का जो अधिपति विद्युत्क्क्ष्मारेन्द्र है उसका जो क्ट है वह हरिक्ट है इन्हीं नो क्टों का इस सिद्ध आदि गाथा द्वारा संग्रह किया गया है—इनमें हरि क्ट को छोडकर वाकी के जो आठ क्ट हैं वे एक एक क्ट पांचसौर योजन के हैं हरिक्ट का प्रमाण एक हजार योजन का है (एएसिं क्डाणं पुच्छा दिसि विदिसाओ णेयच्वाओ जहा मालवंतस्स) इन क्टों के सम्बन्ध में दिशा में और विदिशा में कौन कौन क्ट हैं" ऐसा प्रच्या यहां पर कर छेनी चाहिये ''जैसे कहिणं भंते! विज्जुप्पमे वक्ष्यारप्य्वए सिद्धाय-यणक्रहे णामं क्रहे पण्णत्ते) हे भदन्त! विश्वुत्प्रभ वक्षस्कारप्वत पर सिद्धायन नामका क्ट कहां पर कहा गया है? तब उत्तर में ऐसा कहना-हे गौतम! मेर के दक्षिण पश्चिम कोने में मेरसमीपवर्ती प्रथम सिद्धायतन क्ट कहा गया है

हूर छे. हेनहुरु केवा नामवाणा हेवहुरु हूट छे. पक्षम नामह विकथना केवा नामवाणा पक्षम हूट, छे. हिसाखु श्रेष्ट्रीना के अधिपति विद्युद्धमारेन्द्र छे, तेना के इट छे ते हिरिह्रट छे. से नव हूटाना मा सिद्ध आहि शाधा वह संश्रह हरवामां आवेस छे. सेमां हिरिह्रटने आह हरी शेष के आह हूटा छे ते हरेहे हरेह पांचसा थाकन केटसा छे. हिरिह्रटन प्रमाणु के ह हजार थाकन केटसुं छे. 'एएसिं कूडाणं पुच्छा दिसि विद्साओं णेयव्याओं जहा मालवित्सा' से इटाना सं अधिमां हिशामां अने विहिशामां हथा हथा हूटा छे? सेवी पृच्छा अते हरी सेवी केडिसे. केमहैं—'कहिणं मंते! विद्युत्पमें वक्खारपव्यय सिद्धाययणकूडे णामं कूडे पण्णत्ते' हे भहंत! विद्युत्पस वक्षस्थार पर्यंत छपर सिद्धाययन हूट हथां स्थणे आवेस छे? तथारे कवाणमां प्रस्त हहे छे—हे गौतम! मेरुना हिस्सु—पश्चिम है।खुमां मेरु समीपवती प्रथम सिद्धायतन हुट स्थावेस छे. सिद्धायतन हुटनी नैऋत्य विहिशामां विद्युत्म

तस्य निर्म्हितकोणे चतुर्थ पश्मक्टं, पश्मक्टस्य निर्म्हितकोणे स्यस्तिकक्टस्योत्तरिक्षि पश्चमं कनकक्र्टं, तस्य दक्षिणस्यां दिशि स्वस्तिकक्टं नाम षष्ठं क्र्टं, तस्य दक्षिणदिशि सप्तमं शिद्यां क्रिक्टं, तस्य दक्षिणदिशि सप्तमं शिद्यां क्रिक्टं, तस्य दक्षिणदिशि शतष्वछक्टं नामाण्टमं क्र्टं, नवमं हिस्क्टं शितोदाक्टस्य दक्षिणस्यां दिशि निषधपर्वतस्यीपन्ति, अस्य यो विशेषस्तमतिदिशति—'जहा मालवंतस्स' यथा मालवदतो वक्षस्कारपर्वतस्य 'हरिस्सइक्टं' हरिस्सइक्टं नाम क्ट्रयेक्षलइस्रयोजनोञ्च- मर्केत्तीयश्वान्यवगाढं मुखे सहस्रयोजनानि विस्तीर्णं यमकप्रमाणेन झातुं प्राकृत्विदिंदं 'तह चेव' तथेव हरिक्टं बोध्यम्, हरिस्सहक्टं च पूर्णसद्भयोजरिक्षि नीहवतो हिणदिशि प्राणक्तम्, अस्य राजधानी प्रदर्शयदुमाह—'श्यहाणी जह चेव दहिणेशं चमरचंवा रायहाणी तह णेवन्त्रा' राजधानी पर्येव दक्षिणेन—दक्षिणदिशि चमरचञ्चा राजधानी दक्षिता तथेव

सिद्धायतन क्रूट की नैऋत विदिशा में विशुत्यभ क्रूट कहा गया है विद्युत्यभ क्रूट की नैऋत विदिशा में देवकुक क्रूट कहा गया है देवकुक क्रूट की नैऋत विदिशा में पक्ष्मक्रट कहा गया है पक्ष्मक्रट की नैऋत विदिशा में अरेर स्वस्तिक क्रूट की उत्तर दिशा में पाचवां कनकक्रट कहा गया है कावक्र्य की दक्षिण दिशा में स्वस्तिकक्रट नामका छट्टा क्रूट कहा गया है स्वस्तिकक्रट की दक्षिण दिशा में सातवां शितोदाक्रट कहा गया है, शितोदाक्रट की दक्षिण दिशा में सातवां शितोदाक्रट कहा गया है, शितोदाक्रट की दक्षिण दिशा में शत्रविक नामका आठवां क्रूट कहा गया है, शितोदाक्रट की दक्षिण दिशा में शत्रविक नामका आठवां क्रूट कहा गया है नौवा जो हरिक्रट है यह शितोदा क्रूट की दक्षिण दिशा में निषध पर्वत के समीपवर्ती कहा गया है जैसा माल्यवन्त वक्षस्कारपर्वत का (हरिस्सहक्र्डे तह चेव हरिक्रडे) हरिस्सह नाम का क्रूट है वैसा ही यह क्रूट है यह क्रूट एक हजार १००० योजन का ऊंचा है २॥ सौ २५० योजन का इसका जमीन के भीतर अवगाह है मूल में यह एक हजार योजन का मोटा है ऐसा ही हरिस्सहक्रूट है हरिस्सहक्र्ट एणभद्र की उत्तर दिशा

ત્પ્રભ ફૂટ આવેલ છે. વિદ્યુત્પ્રભ ફૂટની નૈઝાત્ય વિકિશામાં દેવકુરુ ફૂટ આવેલ છે. દેવકુરુની નૈઝાત્ય વિકિશામાં પરમકૂટ આવેલ છે. પરમ ફૂટની નૈઝાત્ય વિકિશામાં અને સ્વસ્તિક ફૂટની ઉત્તર દિશામાં પાંચમા કનકફૂટ નામના ફૂટ આવેલ છે. કનક ફૂટની દક્ષિણ દિશામાં સ્વસ્તિક ફૂટ નામના છટે ફૂટ આવેલ છે. સ્વસ્તિક ફૂટની દક્ષિણ દિશામાં શતજવલ નામક અબ્ટમ ફૂટ આવેલ છે. નવમા જે હરિકૂટ છે તે શૌતાદા ફૂટની દક્ષિણ દિશામાં નિષધ પર્વતની પાસે આવેલ છે. જેવા માલ્યવન્ત વક્ષસ્કાર પર્વતના 'हिस्सिह कूडे तहचेव हित्कूडे' હરિસ્સહ નામક ફૂટ છે તેવા જ આ હરિકૂટ પણ છે. આ ફૂટ એક હજાર યાજન જેટલા ઊંચા છે. જમીનની અંદર એના અવગાહ ૨૫૦ યાજન જેટલા છે. મૂળમાં એક હજાર યાજન જેટલા એ માટા છે. એવા નીલવન્ત પર્વતની દક્ષિણ દિશામાં છે. આ પ્રમાણે પહેલા કહાના કહાના છે. આ મારાણે પહેલા કહાના કહાના છે. જાને નીલવન્ત પર્વતની દક્ષિણ દિશામાં છે. આ પ્રમાણે પહેલા કહાના આવ્યું છે. 'રાયદાળી जहचેવ दाहिणેળં चમર-

इरिक्टस्यापि राजधानी नेतच्या बोधपथं प्रापणीया बोध्या 'कणगसोवित्थयक्डेसु' कनक स्वस्तिकक्टयोः 'वारिसेण वलाहयाओ' वारिषेणा बलाहिके 'दो देवयाओ' दे देवते दिवकुमार्थी देव्यो परिवसतः 'अवसिट्टेसु' अविधिष्टेषु विद्युत्प्रभादिषु 'क्डेसु' कूटेषु 'कूड-सरिसणामगा' कृटसद्शनामकाः 'देवा' देवाः परिवसन्ति, तेषां 'रायद्दाणीओ' राजधान्यः 'दाहिणेणं' दक्षिणेन-दक्षिणदिशि बोध्याः।

अथास्य नामार्थ प्रदर्शियतुमुपक्रमते—'से केणहेणं मंते !' इत्यादि—अथ केन अर्थेन कारणेन भदन्त ! 'एवं वृच्छ' एवमुच्यते 'विज्जुष्पभे' विद्युत्पभः 'वक्खारपञ्चए २ ?' वक्ष-स्कारपर्वतः २ ?, इतिप्रक्षे भगवानुत्तरमाह—'गोयमा !' गौतम ! 'विज्जुष्पभेणं' विद्युत्पभः खळ 'वक्खारपञ्चए' वक्षस्कारपर्वतः 'विज्जुविव' विद्युदिव रक्तवर्णत्वात् 'सञ्ब्यो' सर्वतः में हैं और नीळवंत पर्वत की दक्षिण दिशा में हैं ऐसा पहले कहा जा चुका है

में है और नीलवंत पर्वत की दक्षिण दिशा में हैं ऐसा पहले कहा जा चुका है (रायहाणी जह चेव दाहिणेणं चमरचंचा रायहाणी तह णेयव्वा) जिस प्रकार से दक्षिण दिशा में चमरचंत्रा नामकी राजधानी कही गई है अर्थात् चमरचंचा नामकी राजधानी का जैसा वर्णन किया गया है वैसा ही वर्णन यहां की राजधानी का भी कहा गया है। हिर कूट की भी यह राजधानी मेठ की दक्षिण दिशा में है। (कणगसोवित्थय कूडेस वारिसेणवलाहयाओं दो देवयाओं अवसिद्ध कूडेस कूडसरिसणामगा देवा रायहाणीओं दाहिणेणं) कनक कूट और सौवस्तिक कूट इन दो कूटों पर वारिसेणा और बलाहका ये दो दिक्कुमारिकाएं रहती है और अवशिष्ठ विद्युत्प्रभ आदि कूटों पर कूट जैसेही नाम वासे देव रहते हैं। इनकी राजधानियां मेरू की दक्षिण दिशा में है

(से केणहेणं भंते ! एव घुच्चइ विज्जुष्पमे २ वक्खारपव्वए) हे भदन्त ! इस पर्वत का विद्युत्प्रभ वक्षस्कार पर्वत ऐसा नाम किस कारण से कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं (गोयमा ! विज्जुष्पभेणं वक्खारपव्वए विज्जुमिव

चंचा रायहाणी तह णेयव्वा' के प्रभाणे हिस्स्य दिशामां श्रमस्य'शा नामे राकधानी कावेली छे कोटले के समर श्रंथा नामक राकधानीनुं के प्रमाणे वर्णुन करवामां आवेलुं छे तेलुं क वर्णुन अहींनी राकधानीनुं पण्ड छे. हिस्स्ट्रेनी राकधानी पण्ड मेरुनी हिस्स्य हिशामां छे. 'कणगानित्यक्रें वारिसेणवलाह्याओं दो देवयाओं अवसिहेसु कूडेसु कूडसरिसणामगा देवा रायहाणीओं दाहिणेणं' इनक इट अने सीवस्तिक इट ओ छे इटे। उपर वारिसेण्य ओं अलाहित ओं पे हिस्स्मारिकाओं रहे छे. अने अवशिष्ट विद्युत्पस वगेरे इटे। उपर इटना केवा नामवाणा हेवा रहे छे. अमनी राकधानीओं मेरुनी हिस्स्य हिशामां आवेली छे.

'से केणहेणं मंते! एवं बुच्चइ विज्जुपभे २ वक्खारपञ्चए' हे अहंत! आ पर्वतनुं विद्युत्प्रक्ष वक्षस्कार पर्वत स्थेवुं नाम शा कारण्यी राणवामां आवेकुं छे ? स्थेना कवालमां प्रक्षु के छे-'गोयमा! विज्जुपभेणं वक्खारपञ्चए विज्जुमिव सन्वश्रो समंता ओमासेइ, उज्जो

सर्वदिश्व 'समंता' समन्तात् सर्वविदिश्व च 'ओभासेइ' अवभासते द्रष्ट्रृणां छोचनपथे प्रतिभाति यदयं विद्युत्प्रकाश इति, एतदेव दृढयितुमाइ-'उज्जोवेइ' उद्घोतयित भाष्ठरत्वात्
स्वासन्नं वस्तुजातं प्रकाशयित, स च स्वयमि 'पभासइ' प्रभासते प्रकाशते तेन विद्युत्प्रभः
विद्युदिव प्रभातीति विद्युत्प्रभोऽन्वर्थनामाऽयं वक्षस्कारिगिरि अस्य देवमाइ-'विज्जुत्पभे य
इत्य देवे' विद्युत्प्रभश्चात्र देवः परिवसतीत्यिप्रमेणान्वयः, स च देवः कीदशः? इत्याइ'पिछओवमिद्वइए जाव परिवसइ' पल्योपमस्थितिको यावत् परिवसति महर्द्धिक इत्यारभ्य
पल्योपमस्थितिक इति पर्यन्तपदानामत्र सङ्ग्रहो बोध्यः, स चाष्टमद्धन्नात् सविवरणो
बोध्यः एतादशो महर्द्धिकत्वादि विशिष्टो देवः परिवसति तद्धिष्ठितज्ञादिष विद्युत्प्रभ
इत्येवग्रुच्यते एतदेवोपसंहरति-'स एएणद्वेणं गोयमा!' सः-विद्युत्प्रभः एतेन-अनन्तरोक्तेन
अर्थेन हेतुना हे गौतम! एवग्रुच्यते विद्युत्प्रभो इति शेषं प्राग्वत् ।।द्व० ३४।।

सन्वओ समंता ओभासेह, उज्जोवेह, पभासेह विज्जुपभे य इत्थ देवे पिलओवमिंदए जाव परिवसह से एएणहेणं गोयमा! एवं बुच्चह विज्जुपभे २) हे
गौतम! यह विषुत्पभ नाम का वक्षस्कार पर्वत विद्युत की तरह रक्तवर्ण होने
से दिशाओं और विदिशाओं में चमकता रहता है अतः लोकों को ऐसा प्रतीत
होता है कि यह विजली का प्रकाश है भासुर होने के कारण यह अपने निकटवर्ती पदार्थों को भी प्रकाशयुक्त करता है और स्वयं भी प्रकाशित होता है
इसी कारण हे गौतम! मैने इसका नाम विद्युत्पभ ऐसा कहा है! दूसरी बात
यह भी है कि यहां पर विद्युत्पभ नाम का देव रहता है इसकी एक परयोपम
की स्थित है यहां यावत शब्द से महद्धिक से लेकर परयोपम स्थिति तक के
बीच में आये हुए पदों का संग्रह हुआ है! इन पदों का अर्थ अष्टम सूत्र से
जाना जा सकता है अतः हे गौतम! विद्युत के जैसी आभा वाला होने से
तथा विद्युत्पभ देव का निवास स्थान होने से इस पर्वत का नाम विद्युत्पभ
ऐसा कहा गया है ॥३४॥

वेह, पभासेइ विज्जुष्पभेय इत्थ देवे पिछओवमिट्टिइए जाव परिवस से एएणिट्रणं गोयमा! एवं वुच्च इविज्जुष्पभे २' हे गीतम! आ विद्युत्म नामक वस्तरकार पर्वत विद्युत्मी केम रक्षतवर्ध हिं। विद्युत्मी कोम विदिशाओमां श्रमकते। रहे छे. श्रेशी दे। होने श्रेष्ठ दार्श हे के विद्युत्मे। प्रकाश के छे. लासुर हे। वाशी श्रेष्ठ पे। ताना निकटवर्ता पहार्थीने पश्च प्रकाशश्चकत करे छे अने स्वयं पश्च प्रकाशित थाय छे. श्रेशी कहे गीतम! में श्रेष्ठ नाम विद्युत्रक श्रेष्ठ राण्युं छे. जील वात श्रेष्ठ के अहीं विद्युत्रक नामे हेव रहे छे. श्रेमी श्रेष्ठ पहें। पर्थापम केटली स्थित छे. श्रेष्ठी यावत् शण्डशी महिद्यित सुधीना सर्व पहें। संश्रेष्ठ थ्या छे. श्रेष्ठीने अन्तरमांशी काश्ची श्रिष्ठाय स्थित सुधीना सर्व पहें। संश्रेष्ठ थ्या छे. श्रेष्ठीने अन्तरमांशी काश्ची श्रिष्ठाय

अथ महाविदेहवर्षस्य दाक्षिणात्यपश्चिमारूयं सृतीयविभागं वक्तुं तदन्तर्वर्तिनो विजया-दीनाह-'एवं पम्हे विजए' इत्यादि ।

म्लम्-एवं पम्हे विजए अस्सपुरा रायहाणी अकावई दक्लार-पव्वए ? सुपम्हे विजए सीहपुरा रायहाणी खीरोदा महाणई २, महा-पम्हे विजए महापुरा रायहाणी पम्हावई वक्खारपटवए ३,पम्हगावई विजए विजयपुरा रायहाणी सीयसोया महाणई ४, संखे विजए अव-राइया रायहाणी आसीविसे वक्खारपठवए ५, क्रुमुदे विजए अरजा रायहाणी अंतोवाहिणी महाणई ६, णिलणे विजय असोगा रायहाणी सुहावहे वक्लारपव्वए ७, णलिणावई विजए वीयसोगा रायहाणी ८, दाहिणिल्ले सीयोया मुहवणसंडे, उत्तरिल्ले वि एवमेव भाणियब्वे जहा सीयाए, वप्पे विजए विजया रायहाणी चंदे वक्खारपक्वए १, सुवप्पे विजए जयंती रायहाणी उम्मिमालिणीणई, महावप्पे विजय जयंती रायहाणी सूरे वक्खारपव्वए ३, वप्पावई विजए अपराइया रायहाणी फेणमालिणी णई ४. वग्गू विजए चक्कपुरा रायहाणी णागे वक्खार-पव्यष् ५, सुवग्यू विजय् खग्गपुरा रायहाणी गंभीरमालिणी अंतरणई ६, गंधिले विजए अवज्झा रायहाणी देवे वक्खारपटवए ७, गंधिला-वई विअए अयोज्झा रायहाणी ८, एवं मंद्रस्स पठवयस्स पच्चित्थ-मिल्लं पासं भाणियव्यं, तत्थ ताव सीयोयाए णईए दाहिणिल्ले णं कूले इसे विजया तं जहा-पम्हे सुपम्हे चउत्थे पम्हगावई संखे। कुमुए णिलणे, अटुमे णिलणावई ॥१॥ इमाओ रावहाणीओ, तं जहा-आस पुरा सीइपुरा चेव हवड़ विजयपुरा, अवराइया य अरथा असोगा तह वीयसोगा य ॥२॥ इमे वक्खाग, तं जहा-अंके पम्हे आसीविसे सुहा-वहे एवं इत्थ परिवाडीए दो दो विजया कूडसरिसणामगा भाणियव्वा दिसा विदिसाओ य भाणियव्वाओ, सीयोयामुहदणं च भाणियव्वं तेम छे. अथी है जीतम! विद्युत् केवी आसावाणा है।वाथी तेमक विद्युत्अस हेवतुं નિવાસસ્થાન **હે**ાવા ખદલ આ પવ^રતને વિદ્યુત્પ્રભ નામથી સંબાધમાં આવે છે. ા સ્. ૩૪ ા

सीयोयाए दाहिणिव्लं उत्तरिव्लं च, सीयोयाए उत्तरिब्ले पासे इमे विजया, तं जहा—वप्पे सुवप्पे महावप्पे चउत्थे वप्पयावई । वग्गू य सुवग्गू य, गंधिले गंधिलावई ॥१॥

रायहाणीओ इमाओ, तं जहा-विजया वेजयंती जयंती अपरा-जिया। चक्कपुरा खग्गपुरा हवइ अवज्झा अउज्झाय ॥२॥ इमे वक्खारा, तं जहा-चंदपव्वए १ सुरपव्वए २ णागपव्वए ३ देवपव्वए ४, इमाओ णईओ सीयोयाए महाणईए दाहिणिल्ले कूले-खीरोया सीयसोया अंतरवाहिणीओ णईओ ३, उम्मिमालिणी १ फेणमालिणी २ गंभीर-मालिणी ३ उत्तरिल्लविजयाणंतराउत्ति, इस्थ परिवाडीए दो दो कूडा विजयसरिसणामया भाणियव्वा, इमे दो दो कूडा अवद्विया, तं जहा-सिद्धाययणकूड पव्वयसरिसणामकूडे ॥सू० ३५॥

छाया-एवं पक्ष्मो विजयः अश्वयुरी राजधानी अङ्कावती वक्षस्कारपर्वतः १, सुपक्ष्मो विजयः सिंहपुरी राजधानी क्षीरोदा महानदी २, महापक्ष्मो विजयः महापुरी राजधानी पक्ष्मावती वक्षे स्कारपर्वतः ३, पक्ष्मकावती विजयः विजयपुरी राजधानी शीतस्रोता महानदी ४, शङ्को विजयः अपराजिता राजधानी आशीविशो वक्षस्कारपर्वतः ५, कुमुदो विजयः अरजा राजधानी अन्तर्वाहिणी महानदी ६, निलने विजयः अशोका राजधानी सुखावशे वक्षस्कार-पर्वतः ७, नलिनावती विजयः वीतशोका राजधानी ८, दाक्षिणात्ये शीतोदामुखवनखण्डे, औत्तराहेऽपि एवमेव भणितन्यम् यथा शीतायाः वश्रो विजयः विजया राजधानी चन्द्रो वक्षस्कारपर्वतः १, सुदश्रो विजयः जयन्ती राजधानी उर्मिमालिनी नदी २, महावप्रो विजयः जयन्ती राजधानी सूरो वक्षस्कारपर्वतः ३, वप्रावती विजयः अपराजिता राजधानी फेन-मालिनी नदी ४, वरत्विंजयः चक्रपुरी राजधानी नागौ वक्षस्कारपर्वतः ५, सुवरत्विजयः खब्नपुरी राजधानी गम्भीरमालिनी अन्टरनदी ६, गन्धिली विजयः अवध्या राजधानी देवो वक्षस्कारपर्वतः ७, गन्धिलावती विजयः अयोध्या राजधानी ८, एवं मन्दरस्य पर्वतस्य पाथिमात्यं पार्थे भणितन्यम् तत्र तायत् भीतोदाया नद्या दाक्षिणात्ये खळ कूळे इमे विजयाः, उद्यथा-पश्मः सुपश्मो महापश्मः, चहुर्थः पश्मकावती । शहः सुमुदो निस्नः, अष्टमो चलिनावती ॥१॥ इया राजधान्यः, तद्यथा-अश्वपुरी सिंहपुरी महापुरी चैव भवति विजयपुरो । अपराजिता च अरुजा अशोका तथा वीतशोका च ॥२॥ इमे वक्षस्काराः, तद्यया-अङ्कः पक्ष्म आश्वीविषः सुखावहः एवमत्र परिपाटयां द्वौ द्वौ विजयौ क्टसद्यना-मकौ भणितव्यौ दिशो विदिशश्च भणितव्याः, श्रीतोदाश्चखवनं च भणितव्यं शीतोदाया दाक्षिणात्यमीत्तराहं च, शीतोदाया औत्तराहे पार्श्वे इमे विजयाः, तद्यथा-वप्रः सुवध्रो महावप्रश्रत्यों वप्रकावती । वस्तुश्र सुवस्तुश्च गन्धिलो गन्धिलावती ॥१॥ राजधान्य इमा, तद्यथा-विजया वजयन्ती जयन्ती अपराजिता । चक्रपुरी खद्गपुरी भवति अवध्या अयोध्या च ॥२॥ इमे वक्षस्काराः पर्वतस्य-चन्द्रपर्वतः १, स्रपर्वतः २, नागपर्वतः ३, देवपर्वतः ४, इमा नद्यः शीतोदाया महानद्या दाक्षिणात्ये क्ले-क्षीरोदा १ शीतस्रोता २ अन्तरवाहिन्यौ नद्यौ, ऊर्मिमालिनी १ फेनमालिनी २ गम्भीरमालिनी ३ औत्तराह विजयानामन्तरा इति, अत्र परिपाटचां द्वे हे क्ले विजयसद्यनामके भणितव्ये, इमे द्वे द्वे क्ले अवस्थिते, तद्यथा सिद्धायतनकृटं १ पर्वतसद्यनामकृटम् २ ॥६० ३५॥

टीका-'एवं पम्हे विजए' इत्यादि-छायागम्यम्, नेवरम् 'अस्सपुरा' अश्वपुरी, मुले आवन्तत्वं स्वार्षत्वात्, एवमग्रेऽपि 'सीहपुरा' इत्यादौ बोध्यम्, इति श्रीतोदा महानद्या दाक्षिणात्यमुखवनखण्डे विजयराजधानी वक्षस्कारपर्वतनदीनिरूपगम्। अथ महाविदेह-

'एवं पम्हे विजए अस्सपुरा रायहाणी अंकावई वक्खारपव्वए' इत्यादि

टीकार्थ-इसी तरह पक्ष्म नाम का विजय है उसमें अश्वपुरी नामकी राज्ञधानी है और अङ्कावती नाम का वक्षस्कार पर्वत है (सुपम्हे विज्ञए सीहपुरा रायहाणी खीरोदा महाणई) सुपक्ष्म नाम का विजय है, सीहपुरी नाम की राजधानी है क्षीरोदा नाम की इसमें महानदी है (महापम्हे विज्ञए महापुरा रायहाणी पम्हावई वक्खारपव्वए) महापक्ष्म नामका विजय है इसमें महापुरी नाम की राजधानी है और पक्ष्मावती नाम का वक्षस्कार पर्वत है (पम्हगावई विज्ञए विज्ञयपुरा रायहाणी सीअसोआ महाणई) पक्ष्मावती नाम का विज्ञय है, इसमें विज्ञयपुरी नाम की राजधानी है कीतस्रोता नाम की महानदी है (संखे विज्ञए अवराइया रायहाणी आसीविसे वक्खारपव्वए) कांख नाम का विज्ञय है इसमें अपराजिता नाम की राजधानी है और आक्षीविषानाम का

^{&#}x27;एवं पम्हे विजय अस्सपुरा रायहाणी अंकावई वक्खारपञ्चए' इत्यादि

टीडार्थ- आ असाखे पहम नामक विजय छे. तेमां अश्वपुरी नामक राजधानी छे. अने अंडावती नामक वक्षरकार पर्वत छे. 'सुपम्हे विजए सीहपुरा रायहाणी खीरोदा महाणई' सुपहम नामक विजय छे. सीढपुरी नामक राजधानी छे. क्षीदेग्धा नामक क्षेमां मढा नदी छे. 'महापम्हे विजए महापुरा रायहाणी पम्हावई वम्खारपव्वए' मढापहम नामक विजय छे. भेमां मढापुरा नामक राजधानी छे अने पहमावती नामक वक्षरकार पर्वत छे. 'पम्हगावई विजए विजयपुरा रायहाणी सीअसोआ महाणई' पहमावती नामक विजय छे. क्षेमां विजयपुरी नामक राजधानी छे. शीतकोता नामक मढानदी छे. 'संखे विजए अव राइया रायहाणी आसीविसे वक्खारपव्वए' शंभा नामक विजय छे. क्षेमां अपराजिता नामक राजधानी छे अने आशीविष नामक वक्षरकार पर्वत छे. 'कुमुदे विजए, अरजा

स्य चतुर्थविभागे शीताया औत्तराह मुखननखण्डे विजयादी श्रिक्षपितुमाह-'उत्तरिक्छे वि एवमेव माणियन्ते' इत्यादि-औत्तराहे-उत्तरिदम्ने अपि च शीताया मुखननखण्डे एनमेव-उक्तप्रकारेणेव शीताया दाक्षिणात्यमुखननखण्डवदेव विजयादि मणितन्यं वक्तन्यम्, एतदेव इडियतुमाह-'जहा सीयाए' इति यथा येन प्रकारेण शीताया महानद्या दाक्षिणात्यं मुखनन-खण्डं भणितं तथैवौत्तराहननखण्डमपि भणितन्यमित्यर्थः, तत्र विजयादी शिर्दिशति-'वप्पे विजए' इत्यादि सुगमम्, नवरम् 'उग्मिमाङिणी' ऊर्मिमाङिनी-ऊर्मीन्-तरङ्गान्-माळते

वक्षस्कार पर्वत हैं (कुमुदे विजए, अरजारायहाणी, अंतोवाहिणी महाणई) कुमुद नाम का विजय है इसमें अरजा नामकी राजधानी है और अन्तर्वाहिनी नाम की महानदी है (णिलिणे विजए असोगा रायहाणी, खुहावहे वक्ष्वार-पट्टए) निलन नामका विजय है, इसमें अद्योक्षा नाम की राजधानी है और खुखावह नाम का वक्षस्कार पर्वत है (णिलिणावई विजए, वीयसोगा रायहाणी दाहिणिल्छे सीओआमुहवणसंडे) निलनावती विजय है, इसमें चीतद्योक्षा नाम की खुरम्य राजधानी है और दक्षिण दिशा में रहा हुआ द्यीतोदा मुखबनषण्ड हैं (उतिरिल्छेबि एमेव भाणिअव्वे जहा सीआए) दाक्षिणात्य श्रीतामुखबन के कथन अनुसार ही उत्तर दिग्मावि श्रीतोदा मुखबनषण्ड में भी ऐसा ही कथन कर छेना चाहिये जिस तरह से शीता के दक्षिणदिग्वतीं मुखबन में विजयादिकों का व्याख्यान किया गया है उसी तरह से शीता के उत्तरदिग्वतीं मुखबन में भी विजयादिकों का कथन कर छेना चाहिये इसी बात को अब खूत्रकार स्पष्ट करते हैं (वप्पे विजए विजया रायहाणी, चंदे वक्खारपट्टए) शीता महानदी के उत्तरदिग्वतीं मुखवनखण्ड में चप्र नाम का विजय है विजया नाम की राजधानी है और चन्द्र नाम का वक्षस्कारपर्वत है

रायहाणी अंसोवाहिणी महाणई' इस्ट नामक विजय छे. योमां अरल न'मक राजधानी छे यने अन्तर्वाहिनी नामक महानही छे. 'णलिणे विजय असोगा रायहाणी, मुहावहे वक्खार-पव्वए' निवन नामे विजय छे. योमां अशोका नामक राजधानी छे अने सुभावह नामक वक्षरकार पर्वत छे. 'णलिणावई विजय, वीयसोगा रायहाणी दाहिणिल्ले सीओआमुहवणसंहे' निवनावती विजय छे योमां वीतशोक्षा नामक राजधानी छे अने दक्षिण दिशामां आवेदा शीतोहामुण वनणंड छे. 'उत्तरिल्ले वि एमेव माणिअन्वे जहा सीआए' दाहिणाल्य शीता मुभवनणंडमां पण् योवुं थ हैयन समक्ष देवुं लिएसे असे सीतोहाना दक्षिण हिंग्वनीं मुभवनमां विजयादिका विषे निर्मण करवामां आवेद्धं छे तेमक शीताना उत्तरहिंग्वतीं मुभवनमां पण् विजयादिका पण्य विजयादिका पण्य विजयादिका पण्य विजयादिका पण्य विजयादिका पण्य विजयादिका स्थान करवामां आवेद्धं छे तेमक शीताना उत्तरहिंग्वतीं मुभवनमां पण्य विजयादिका करवामां सावेद्धं छे तेमक शीताना उत्तरहिंग्वतीं मुभवनमां पण्य विजयादिका करवामां सावेद्धं छे तेमक शीताना उत्तरहिंग्वतीं मुभवनमां पण्य विजयादिका करवामां रायहाणी, चेदे वक्खारप्रवर्ण शीता महानदीना उत्तर

धारयतीत्येवं शीला अत्र 'मल, मल धारणे' इति भौवादिक मलधातो जिति प्रत्यये नान्तस्वक्षणो ङीप्प्रत्ययः खियां बोध्यः, एवमभ्रे केनमालिनी सम्भीरमालिनीत्यवापि, तत्र सम्भीरमालिनीत्यस्य गम्भीरं-निम्नं जलं मालते इत्येवं शीलेत्यर्थः 'एवं मंद्र्य पव्ययस्य'
इत्यादि-एवम्-उक्ताभिलापेन शीतोदा महानदीकृतिभाग प्रविकार्वकीत हिजवादि निकः
पणप्रकारेण मन्दरस्य पर्वतस्य 'पचित्यमं' पाश्चार्यं 'पासं' पार्थ 'साणियव्यं' स्थितव्यंवक्तव्यम् 'तत्य' तत्र विजयादिषु 'ताव' रावद् इति वात्रयालङ्कारे 'सीयोगाए णईए'
(स्वप्ये विजए वेजयंती रायहाणी कोश्चित्यालिको वर्ष) सुबध मान का विजय

(सुबध्ये विजए वेजयंती रायहाणी औछिन्नतालिणी वही सुबध मानका विजय है, वैजयन्ती नामकी राजधानी है और उधिमालिनी नाम की नदी है (महावप्ये विजए जयंति रायहाणी, सूरे वक्खारप्रवण्ण) महावप्र नाम का विजय है जयन्ती नामकी राजधानी है और सूर नाम का वक्षरकार पर्वत है (वप्पावई विजए, अपराह्या रायहाणी फेणमालिणी णई) वधावती नामका विजय है अपराजिता नाम की राजधानी है और फेनमालिनी नामका नदी है (वग्गू विजए चक्कपुरारायहाणी, णागे वक्खारप्रवण्ण) वल्गू नाम का विजय है, चक्कपुरा नामकी राजधानी है और नाम नाम का वक्षरकार पर्वत है (सुवग्गू विजए, खामपुरा रायहाणी, गंभीरमालिणी अंतरणई) सुवल्गू नाम का विजय है, खजुपुरी नामकी राजधानी है, और गंभीरमालिनी नामकी अन्तर नदी है (गंधिलसे विजए, अवज्या रायहाणो, देवे वक्खारप्रवण्ण) गंधिल्ला नामका विजय है, श्रीर संवर्ध विजय अभोज्या रायहाणी) ८ वां विजय गंधिलावती नाम का है और इसमें अयोज्या नाम की राजधानी है (एवं मंदरस्स प्रवत है

हिञ्बती भुअवन अंडमां वप्र नामक विश्य छे. विश्या नामे राजधानी छे. अने यन्द्र नामक वक्षरकार पर्वत छे. 'मुक्यों विजय वेजयंती रायहाणी ओम्मिमालिणी नई' सुवप्र नामक विश्य छे. विश्यान्ती नामे राजधानी छे अने उमि मालिनी नामनी नहीं छे. 'महावत्ये विजय, जयंति रायहाणी, सूरे वक्खारपव्वय' महाव्यं मामक विश्य छे. अयन्ती नामक राजधानी छे अने सूर नामे वक्षरकार पर्वत छे. 'वत्यावई विजय, अपराइया रायहाणी केणमालिणी णई' वप्रावती नामक विश्य छे. अपराजिता नामे राजधानी छे अने हेनमाि विश्य छे. 'वम्मू विजय चक्कपुरा, रायहाणी णागे वक्खारपव्वय' विश्य नामे विश्य छे. 'मुक्मू विजय छे, अक्ष्युरी नामक राजधानी छे अने नांग नामक वक्षरकार पर्वत छे. 'मुक्मू विजय छे, अक्ष्युरी नामक राजधानी छे अने नांग नामक वक्षरकार पर्वत छे. 'मुक्मू विजय, खम्मपुरा रायहाणी, गंभीरमालिणी अंतरणई' सुवव्यु नामे विश्य छे. अभां अर्थ पुरी नामक राजधानी छे अने गंभीर मालिनी नामक अन्तर नहीं छे. 'गंधिल्ले विजय, अवज्ञा रायहाणी, देवे वक्खारपव्वए' गंधिल्य नामक विश्य छे. अवध्या नामक राजधानी छे अने हेव नामे वक्षरकार पर्वत छे. 'गंधिल्ले विजय, अवज्ञा रायहाणी, देवे वक्खारपव्यए' गंधिल्य नामक विश्य छे. अवध्या नामक राजधानी छे अने हेव नामे वक्षरकार पर्वत छे. 'गंधिल्लावई विजय अओज्ञा, रायहाणी'

बीबोदाया नद्याः महानद्याः 'दिनिखणिल्ले' दाक्षिणात्ये-दक्षिणदिग्भवे 'णं' खलु 'कूले' कुले तटे 'इमे' इमे अनुपदं चक्ष्यमाणाः 'विजया' विजयाः चक्रवर्तिविजेतच्या विषयाः, तद्यथा-गाथया तान् विजयानाइ'एम्हे' इत्यादि-छायागम्यम् । एवं राजधानी राह--'इमाओ रायहाणीओ इमाः बक्ष्यमाणा राजधान्यः सन्ति 'तं जहा' तद्यथा-ता राजधानी ग्रीथयाह-'आस पुरा' इत्यादि-स्पष्टम्। वक्षस्कारपर्वतानाह-'इमे वक्खारा तं जहा अंके' इत्यादि अहः अङ्कावती नागैकदेशे नामग्रहणात्, एवं 'पम्हे' पक्ष्म:-पक्ष्मावती 'आसीविसे' आशीविषः 'स्डावहे' सुखावह इति, अथ द्वात्रिंशतोऽपि विजयानां नामानि प्रदर्शयितुमाह-'एवं इत्थ यस्स पच्चित्थिमिल्लं पासं भागियव्वं तत्थ ताव सीओआए णईए दक्खि-णिल्छे णं कुछे इमे विजया) इस तरह से मन्दर पर्वत का पश्चिम दिग्वर्ती पार्श्वभाग कहलेना चाहिये, वहां पर शीतोदा महानदी के दक्षिण दिग्वर्ती कुल पर ये विजय है-(तं जहा) उनके नाम इस प्रकार हैं-(पम्हे, सुपम्हे, महापम्हे, चउत्थे पम्हगावई, संखे, कुमुए, णलिणे, अद्दमे णलिणावई) पक्ष्म सुपक्ष्म, महापक्ष्म, पक्ष्मकावती, बाह्म, कुमुद, मलिन, मलिनावती (इमाओ रायहाणीओं तं जहा) ये वहां राजधानियां हैं जिनके नाम इस प्रकार से हैं (आसपुरा सीहपुरा, महापुराचेव, हव्ह विजयपुरा, अवराह्या य अरया असोग तहकीयसोगा य) अश्वपुरी, सिंहपुरी, महापुरी, विजयपुरी, अपराजिता अरजा अशोका और वीतशोका (इमे बक्खारा तं जहा) ये वहां वक्षस्कार पर्वत है जिनके नाम इस प्रकार से हैं-(अंके, पम्हे, आसीविसे, सुहाबहे एवं इस्थ परिवाडीए दो दो विजया कुडसरिसणामया आणियव्वा, दिसाविदिसाओ अ भाणियव्वाओ एवं सीआमुहदणं च भाणिअव्वं) अङ्क-अङ्कावती पक्ष्मा-

भार्डमें विजय अधितावती नामे छे. भेमां अधिका नामें राजधानी छे. 'एवं मंद्रस्स पत्त्वसस्स पत्त्विधिमिल्लं पासं भाणियन्वं तत्य ताव सीओआए णईए दिक्खिणिल्ले णं कूले इमें विजया' आ प्रमाणे मंहर पर्वतना पश्चिम हिन्वतीं पार्श्वलांग विषे पण्ड वर्णन समस्त्र सेवुं कोई ले त्यां शीतोहा महानहीना हिल्ला हिन्वतीं इदा पर से विजया आवेदा छे 'तं जहा' तेमना नामा आ प्रमाणे छे—'पम्हे, मुप्म्हे, महापम्हे, चउत्थे, पम्ह्गावई, संखे, कुमुए णिल्णे, अहमे णिल्णावई' पहम, सुप्म्म, महाप्म्हे, पहम, एहमडावती, शंभ, इसुह, नितन अने नितनावती. 'इमाओ रायहाणीओ तं जहां तो आ प्रमाणे राजधानीं छे तेमना नामा आ प्रमाणे छे—'आसपुरा, सीहपुरा, महापुरा चेव हवह विजयपुरा, अवराइया अरया असोगतह वीयसोगाय' अध्यपुरी, सिंहपुरी, महापुरा चेव हवह विजयपुरा, अवराइया अरया असोगतह वीयसोगाय' अध्यपुरी, सिंहपुरी, महापुरी, विजयपुरी, अपराज्या अरक्ष अशोडा, अने वीतशोडा 'इमे वक्खारा तं जहां आ प्रमाणे त्यां वक्षम्हार पर्वता आवेदा छे. तेमना नामा आ प्रमाणे छे—'अंके पम्हे, आसीविसे, महावहे एवं एत्य परिवाडीए दो दो विजया कुडसरिसणामया भाणियन्त्रा, दिसाविदिसाओ अ भाणियन्त्राओ एवं सीआमुह-

परिवाडीए' इत्यादि एवम्-अनन्तरोक्त प्रकारेण अत्र अस्यां परिपाटचां-महाविदेह विभाग-चतुष्ट्यवर्तिविजयक्रमें 'दो दो विजया' ह्रौ ह्रौ विजयी 'कुडसरिसणामगा' कुटसद्दशनामकी 'भाणियव्वा' भणितव्योः स्वस्वविजयविभःजकवक्षस्कारपर्वतं तृतीय चतुर्थकृट सद्दशनामकौ यक्तन्यौ, तथाहि-चित्रक्टाभिधवक्षस्कारगिरौ क्टचतुष्टये कच्छक्टसुकच्छक्टे तृतीय-चतुर्थे उक्ते तत्संदशनामकौ कच्छसुकच्छौ विजयौ, एवमन्यत्र सर्वत्रोहनीयम् तथा 'दिसो विदिसाओ य भाणियन्वाओ' दिश:-पूर्वादयः, विदिशः दिग्द्वयोरन्तरालभागवता अग्नि-कोणादयः, च अपि भणितव्याः वक्तव्याः, एवं दिग्विदिङ्वियमो विधेयः, तथाहि कच्छो विजयः शीतामहानद्या उत्तरदिशि नीलवतो वर्षभरपर्वतस्य दक्षिणदिशि चित्रकृटस्य सरल-वश्वस्कारगिरेः पश्चिमदिशि माल्यवतो गजदन्ताकारदश्चरकारपर्वतस्य पूर्वदिशि वर्तत इति, एवं सुकच्छादि विजयेष्वपि स्वस्वदिग्वर्तिवस्त्वनुसारेण तत्तिदिशो नियमनीयाः, एवं 'सीयो-वती आशीविष एवं सुखावह इस परिपाटीरूप इस तरह विभाग चतुष्टयवर्ती विस्तारक्रम में कूट के समान नाम वाले दो दो विजय कह लेना चाहिये तथा दिशाएं और विदिशाएं भी इनके होने के सम्बन्ध में अर्थात् चित्रकूट नामका वक्षस्कार गिरि के ऊपर चार कूट कहे गये हैं उनमें कच्छकूट और सुकच्छकूट ये तृतीय और चतुर्थ स्थान पर कहे गये हैं और इन्हीं के नाम जैसे कच्छ विजय और सुकच्छ विजय कहे गये हैं इसी प्रकार से इसे अन्यन्न जान छेना चाहिए। अर्थात् ये किस किस दिशा में किस २ विदिशा में हैं इस प्रक्त के उत्तर में ये असुक २ दिशा में असुक २ विदिशा में है इस प्रकार से दिशाओं को और विदिशाओं को भी कहलेना चाहिये। जैसे कच्छविजय शीता महा-नदी की उत्तर दिशा में नीलवन्त पर्वन की दक्षिण दिशा में सरल वक्षस्कार गिरिरूप चित्रकुट की पश्चिम दिशा में एवं गजदन्ताकार रूप माल्यवन्त वक्षकार

वर्णं च माणिअव्वं' आंड, आंडावती, पहमावती, आशीविष अने सुणावह आ परिपाटी इप कोटले हे आ प्रमाशे विसान वाप्ति विस्तार हममां हूट लेवा नामवाणा अण्णे विश्वेश आवेला छे, तेमल हिशाओ। अने विहिशाओ। संअधमां अर्थात् यित्र हूट नामड वश्वस्थार जिरिनी उपर यार हूटे। आवेला छे. तेमां इन्छडूट अने सुडन्छडूट के हूटे। बीला अने वेश्वा स्थान ७५२ आवेला छे. अने केमना नाम लेवा ल इन्छिविश्य अने सुडन्छिव्य आवेला छे. आ प्रमाशे आ संअधमां अन्यव्यी पण्ड कणी शक्षय छे. केटले हे के केटी केटी हिशाओ। मां अने केटी केटी विहिशाओ। मां आवेला छे? के प्रक्षना जवाणमां को अमुड-अमुड हिशाओ। मां अमुड-अमुड विहिशाओ। मां आवेला छे. आ प्रमाशे हिशाओ। को विहेशाओ। विषे पण्ड कणी लेवें केटी केटी केटी केटी विह्याओ। से अने विहिशाओ। विषे पण्ड कणी लेवें केटी केटी केटी केटी विह्याओ। से अनुहुटनी पश्चिम हिशामां, नीलवन्त पर्वतनी हिशाछ। हिशामां, सरलवश्वस्थार जिल्लिंग विशामां छे. आ प्रमारिशामां तेमल अल्डलेताशर इप माल्यवंत वश्वस्थार पर्वतनी पूर्व हिशामां छे. आ प्रमारिशामां तेमल अल्डलेताशर इप माल्यवंत वश्वस्थार पर्वतनी पूर्व हिशामां छे. आ प्रमारिशामां तेमल अल्डलेताशर इप माल्यवंत वश्वस्थार पर्वतनी पूर्व हिशामां छे. आ प्रमारिशामां तेमल अल्डलेताशर इप माल्यवंत वश्वस्थार पर्वतनी पूर्व हिशामां छे. आ प्रमारिशामां तेमल अल्डलेताशर इप माल्यवंत वश्वस्थार पर्वतनी पूर्व हिशामां छे. आ प्रमारिशामां तेमल अल्डलेताशर इप माल्यवंत वश्वस्थार पर्वतनी पूर्व हिशामां छे. आ प्रमारिशामां केटी केटी केटी केटी केटी केटी हिशामां छे.

याम्रहवर्णं च' शीतोदामुखवनं च 'माणियव्वं' माणितव्यं वाच्यम् तद्विभागतो दर्शयितुमाह-'सीयोयाए दाहिणिव्हं उत्तरिव्हं च' इति शीतोदायाः महानद्या दाक्षिणात्यं दक्षिणदिग्म-वम् औत्तरिकम् उत्तरदिग्भवं च शीतोदामुखवनं मिलतव्यमिति पूर्वेण सम्बन्धः ।

अथ चतुर्थविभागगतित्रज्ञादीन् सङ्ग्रहीतुमाह-'सीयोयाए' शीतोदाया महानद्याः 'उत्तरिल्ले' औत्तराहे-उत्तरिद्रभवे 'पासे' पार्थे 'इमे' इमे अनुपदं वक्ष्यमाणाः विजयाद्यः, सन्तीति शेषः तत्र विजयान् गाथयाऽऽह-'तं जहा' इत्यादि-तद्यथा 'वप्पे सुवप्पे महावप्पे' हत्यादि गाथा-छायागम्या, नदरं 'वप्पगावई' वप्रकावती वप्रावती विजयः ॥१॥ विजयादि राजधानीः सङ्ग्रहीतुमाह-'रायहणीओ इमाओ' राजधान्यः इमाः अनुपदं वक्ष्यमाणाः सन्तीति शेषः 'तं जहा' तद्यथा 'विजया' इत्यादि छायागम्यम् । वक्षस्कारगिरीन् सङ्ग्रहीतुमाह-'इमे वक्खारा' अनुपदं वक्ष्यमाणाः वक्षस्काराः वक्षस्कारपर्वताः सन्ति 'तं जहा' तद्यथा-पर्वत की पूर्वदिशा में है इशी प्रकार से सुकच्छादि विजयों में भी अपने दिग्वती वस्तु के अनुसार उन २ दिशाओं को नियमित कर लेना चाहिये।

तथा इसी प्रकार से जीतोदा महानदी का दक्षिण दिग्वर्ता और उत्तर दिग्वर्ता मुखवन भी कहछेना चाहिये (सीओआए उत्तरिल्छे पासे इमें विजया—तं जहा) इस जीतोदा महानदी के उत्तर दिग्वर्ता पार्श्व भाग में ये विजय हैं जिनके नाम इस प्रकार से हैं—(वप्पे, सुवप्पे, महावप्पे, चउत्थे, वप्प-गावई वग्ग्य सुवग्ग्य गंधिछे गंधिलावई ॥१॥ वप्र, सुवप्र, महावप्र, वप्रकावती, वत्ग्र सुवन्ग्र, गन्धिल और गन्धिलावती (रायहाणीओ इमाओ तं जहा) ये राजधानियां हैं जिनके नाम इस प्रकार से हैं—(विजया, वेजयंती, जयंती अपरा-जिता, चक्कपुरा, खग्गपुरा, हबइ, अवज्झाय ॥२॥ विजया वैजयन्ती, जयन्ती, अपराजिता चक्कपुरी, खद्गपुरी, अवन्ध्या और अयोध्या (इमें वक्खारा—तं जहा—(चंद प्रवप, सूर्यव्वए, नाग्यव्वए, इमाओ णईओ—सीओदाए महाणईए दाहि-

ध्रेष સુકચ્છાદિ વિજયામાં પણ તત્ તત્ દિગ્વતી વસ્તુ સુજબ તત્ તત્ દિશાઓને નિય-મિત કરી લેવી જોઇ એ.

तेमक आ प्रमाणे क शिताहा महानहीतुं हिल्ल हिन्नतीं अने उत्तर हिन्नतीं मुणवन विषे पण्ड हही देवुं कोई अ. 'सीओआए उत्तरिल्ले पासे इमे विजया-तं जहां' आ शिताहा महानहीना उत्तर हिन्नतीं पार्श्व भागमां से विक्यों। आवेदा छे. विक्यों नामा आ प्रमाणे छे-'वप्पे, सुवप्पे, महावप्पे, चडर्थे, वप्पगावई, कग्गूय, सुवग्गूय, गंधिले, गंधिलावई ॥ १ ॥' वप्र, सुवप, महावप्पे, वप्रधावती, वल्गू, सुवल्गू, अन्धिद्ध अने अन्धिद्धावतीं. 'रायहाणीओ इमोओ तं जहां' राकधानीं आ अने तेमना नामा आ प्रमाणे छे-विजया, वेजयंती, जयंती, अपराजिया चक्कपुरा, खग्गपुरा, हवई, अवन्हार्य ॥ २ ॥' विक्या, वेक्यन्ती क्यन्ती, अपराजिया चक्कपुरा, खग्गपुरा, हवई, अवन्हार्य ॥ २ ॥' विक्या, वेक्यन्ती क्यन्ती, अपराजिया चक्कपुरा, खग्गपुरा, स्ववंदा, अवन्हार्य भने अयेष्या. 'इमे वक्कारा-तं जहां

'चंदपव्यए' इत्यादि छायागम्यम्, अधुना प्रागनुक्ता अपि पाश्चात्यविभागद्ववान्तरनदीः सङ्ग्रहीतुमाह-'इसाओ णईओ सीयोयाए' इत्यादि-इमाः अनुषदं दक्ष्यमाणाः नद्यः सीतो-दायाः 'महाणईए' महारुधाः 'दाहिणिरुले' दाक्षिणात्ये 'कूले' कूले तटे सन्ति 'खीरोया' क्षीरोदा 'सीयसोया' शीवस्रोताः शीवं शीवलं स्रोतः अम्बुसरणं यस्याः सा शीवस्रोताः इमें द्वे 'अंतरवाहिणोओ' अन्तरवाहिन्यौ 'णईओ' नधौ स्त:, अथ शीतोदाया औत्त-राहत्यवर्तिनां वश्रसवश्रमहावश्रवश्रावतीश्रश्रति विजयानामन्तरनदीं सङ्ग्रहीत्। हार-'उम्मि-मालिणी १. अर्भिमालिनी १ 'फेणमालिणी २. फेनमालिनी २ 'गंतीरमालिणी ३. गम्भीर-मालिनी ३ इमास्तिसः 'उत्तरिल्ल विजया गंतराउ त्ति' औत्तराहविजयःनाम अन्तराः अन्तर-णिल्ले कुले खीरोआ, सीहसोआ, अंतरवाहिणीओ णईओ) ये वक्षत्कार पर्वत हैं नाम उनके इस प्रकार से हैं-चन्द्र पर्वत सूर्य पर्वत एवं नाग पर्वत ये नदियां हैं जो सीतोदा महानदी के दक्षिण दिग्वर्ती कुछ पर हैं-एक क्षीरोदा और दसरी शीतस्रोता ये दोनों अन्तर बदियां है। अब शीतोदा महानदी के उत्तर दिग्वर्ती तट पर रहे हुए वप्र सुवप्र महावप्र, एवं वप्रावती विजयों की जो अन्तर नदियां हैं उनका नाम ऐसा है, (उभ्त्रिमालिनी फेणमालिणी गंभीरमालिणी उत्तरिल्ल विजयाणन्तरा उत्ति) उर्भिमालिनी फेनमालिनी गंभीरमालिनी इसै कथन का तात्पर्य ऐसा है कि वप्रविजय में विजया :राजधानी है और चन्द्र वक्षस्कार पर्वत है सुवमा नाम के विजय में वैजयन्ती नामकी राजधानी है और उमिमालिनी नामकी नदी है महाबपविजय में जयन्ती नामकी राज-धानी है सर नामका वक्षरकार पर्वत है वजावती विजय में अपराजिता नामकी राजधानी है और फेनमालिनी नामकी नदी है वल्ग्विजय में चक्रुरी राज

चंद्रपट्चए सूरपट्चए, नागपट्चए, इमाओ णई ओ-सीओइए महाणईए दाहिणिल्ले कुले खीरो आ सीहसीआ, अंतरशहिणीओ णईओ' એ वक्षर्रार पर्वती छे. तेमना नामा आ प्रमाणे छे—यन्द्र पर्वत, सूर्य पर्वत अने नाग पर्वत आ नहीं छे. तेमना नामा आ प्रमाणे छे—यन्द्र पर्वत, सूर्य पर्वत अने नाग पर्वत आ नहीं छे। छे—हे के थे। सीताहा महान नहीं छे। हिश्व हिश्वती हुंद ७ पर छे— ओ हिश्व हिश्वती तिट पर आवेदा वप, सुवप, महान प्रतिभाव वपावती विक्यों नी के लन्तर नहीं छे। छे—तेमना नामा अताववामां आवे छे. उन्मिमालिणी, फेलमालिणी, गंभीरमालिणी, उत्तरिल्ड विजयाणन्तरावत्ति छिम मादिनी, हेन मादिनी, गंभीर मादिनी, आ इथनना भावार्य आ प्रमाणे छे हे वप्रविक्यमां विक्या राजधानी छे अने यन्द्र नामह, वश्वरहार पर्वत छे. सुवप्र नामह विक्यमां वैक्यन्ती नामह राजधानी छे अने छमिमादिनी नामह नहीं छे. महावप्र विक्यमां क्यन्ती नामह राजधानी छे सूर नामह वश्वरहार पर्वत छे. वप्रवती विक्यमां अपराक्ति नामह राजधानी छे स्वर नामह वश्वरहार पर्वत छे. वप्रवती विक्यमां अपराक्ति नामह राजधानी छे स्वर नामह वश्वरहार पर्वत छे. वप्रवती विक्यमां अपराक्ति नामह राजधानी छे स्वर नामह वश्वरहार पर्वत छे. वप्रवती विक्यमां अपराक्ति नामह राजधानी छे स्वर नामह वश्वरहार पर्वत छे. वप्रवती विक्यमां अपराक्ति नामह राजधानी छे स्वर नामह वश्वरहार पर्वत छे. वस्वर्य विक्यमां अपराक्ति नामह राजधानी छे स्वर नामह वश्वरहार पर्वत छे. वस्वर्य विक्यमां यहपुरी राजधानी छे सने नाण

नधः सन्ति अत्रोत्तरपद्छोपो बोध्यः, तत्रोत्तरपद्छोपविधायकं वार्तिकम्-'विनाऽपि प्रत्ययं पूर्वेत्तिरपदयो वा छोपो वाच्यः' इति, यथा-भीमः, भीमसेनः, सत्या, सत्यभामा, पार्श्वः, पार्श्वनाथः, इत्यादि । यत्तु पूर्वित्रभागे विजयादयः प्राच्यविभागद्वये चान्तरनद्यो न सङ्ग्रहीताः, तत्र स्वत्रकृतां प्रवृत्तिवैचित्र्यमेव बीजं व्यवच्छिन्नस्वत्रत्वं वेति बोध्यम्, अत्र सर्छवक्षस्कारकृतेषु नामानयनप्रकारमःह-'इत्य परिवाडीए' इत्यादि-अत्र अस्यां परि-पाटचां-वक्षस्कारपर्वतानुक्रमे 'दो दो कूडा' द्वी दौ कूटौ 'विजयसरिसणामगा' विजयसद्श्व-

धानी है और नाग नाम का वक्षस्कार पर्वत है सुवल्यू विजय में खद्मपुरी नामकी राजधानी है और गंभीरमालिनी नामकी अन्तर नदी है गन्धिल विजय में अवध्या नामकी राजधानी है और देव नामका वक्षस्कार पर्वत है गन्धिला वती विजय में अयोध्या नामकी राजधानी हैं। इस तरह शीतोदा नदी के बारा कृत विभागहय में वर्तमान विजयादिकों के निरूपण से मन्दर पर्वत का पाश्चात्य पार्श्व भणितच्य कहा गया हो जाता है ऐसा यह सब कथन अपर से स्पष्ट कर दिया गया है। इस तरह ये उर्मिमालिनी आदि जो तीन निद्यां हैं ये शीतोदा नदी के उत्तर दिग्वर्ती तट पर रहे हुए, वम सुवप आदि विजयों की अन्तर निद्यां हैं। "अंतराउत्ति" में जो नदी शब्द का प्रयोग नहीं किया है वह 'विनाऽपिपत्ययं पूर्वोत्तरपद्योवी लोगे वाच्यः' इस वार्त्तिक के अनुसार लुस हो गया है तथा पूर्व विभाग में विजयादिकों का और प्राच्य विभाग हय में अन्तर निद्यों का जो संग्रह नहीं किया गया है वह स्वकारों की प्रवृत्ति की विचित्रता का योतक है। अथवा इनका संग्रह कारक सूत्र व्यवच्छित्र हो गया है ऐसा जानना चाहिये (इत्थ परिवाडीए दो दो कूडा विजयस्रिसणामगा

नामं वक्षस्कार पर्वत छे. सुवल्यू विजयमां अड्यपुरी नामं राजधानी छे अने गंभीर मार्बिनी नामं अन्तर नहीं छे. शन्धि विजयमां अविध्या नामं राजधानी छे अने देव नामं वक्षस्कार पर्वत छे. शन्धिवावती विजयमां अविध्या नामं राजधानी छे. आ प्रमाण्डि शीतोहा नहीं वहे विभक्षत से लांगेतमां वर्तमान विजयहिं होना निर्पण्यी मन्दर पर्वतनी पाश्चात्य पार्श्वलांग क्रयनीय छे अेवुं रपष्ट थर्छ लाय छे. आ प्रमाण्डे आ अधु क्षयन पहेंबां रपष्ट करवामां आवेबुं छे. आम ओ हिम मार्बिनी वगेरे ले त्रण्य नहीं छे ते शीतोहा नहींना हत्तर हिन्दता तट हपर आवेबा वप्र, सुवप्र, वगेरे विजये नी अन्तर नहीं शो छे 'अंतराइत्ति' मां ले 'नहीं' शण्डने। प्रपात करवामां आवेश नथी ते 'विनाइपि प्रत्ययं पूर्वोत्तरपद्योशीलोगे वाच्यः आ वार्ति अल्य क्षय धर्म यह गये। छे. तेमल पूर्व विभागमां विजयहिंकोने। अने प्राय्य विभागमां द्वयमां अन्तर नहीं के ले संश्रद करवामां आवेश नथी ते स्त्रकारेनी विचित्र प्रयुत्तिने बिक्षित करे छे. अथवा स्रेमना संश्रद्धश्र सम्भद्ध सूत्र व्यवस्थिन थर्छ अधुं छे, स्रेवुं लाखी बेवुं क्रिश्च से. 'इत्य परिवाडीए, दो दो कूडा विजयसरिसणामगा माणियद्या' वश्चरक्षरोनी आनुपूर्वीमां अष्टे हुटे। पीत—पीताना

नामके 'भाणियःवा' भणितव्यौ वक्तव्यौः, अयमाशयः-प्रतिवश्चस्कारं चलारि चलारि कूटानि सन्ति तत्रादिमे हे नियते एव, तथा सत्रकारः स्वयं वक्ष्यति, तृतीयचतुर्थे चानियते, तत्र यो यो वक्षस्कारपर्वती भी यौ विजयौ विभजते, तत्र विजयमानविजयमध्ये यो यः पाश्चात्ये विजयस्तद्विजयसद्यनामकं तृतीयं कूटं तस्मिन्वक्षस्कारगिरौ बोध्यम्, यो यश्च पूर्वी विजय-स्तद्विजयसदशनामकं चतुर्थं कूटं तत्र ज्ञेयम्, 'इमे दो दो कूडा अवहिया' इमे द्वे द्वे कूटे अवस्थिते नियते 'तं जहा' तद्यथा-'सिद्धाययणक्रुहे' सिद्धायतनक्रुटम् १, अपरं च 'पत्र्यय-सरिसणामकूढे' पर्वतसद्यनामकूटम्-वक्षस्कारपर्वतसद्यनामककूटम् २, कस्मिन्नपि वक्षस्कार-पर्वते इमे द्वे कूटे स्वनामाक्षरपरिवर्तनं न प्राप्तुत इति हेतो स्वस्थिते यथावद्वचवस्थिते एव तिष्ठतः, नजु द्वयोः शूटयोर्मध्ये सिद्धायतनकूटस्यावस्थितत्वं समीचीनं परन्तु पर्वतसद्दशना-भाणियञ्चा) दक्षस्कारों की आनुपूर्वी में दो दो कूट अपने २ विजय के जैसे नाम वाछे कह छेना चाहिये तात्पर्य इस कथन का ऐसा है की-हर एक वक्षस्कार में चार २ कूट होते हैं इनमें आदि के दो कूट तो नियत रूप से हैं और तृतीय चतुर्थ कूट अनियत (अनिश्चित) है इस बात को सूत्रकार स्वयं कहने वाले हैं। इनमें जो जो बक्षस्कार पर्वत जिन दो कूटों को विभक्त करता है उस विभन्यमान पर्वत के जो जो पाश्चात्य विजय है उसके जैसे नाम वाला उस वक्षरकार पर्वत पर तृतीय कृट है और जो अग्रिम विजय है उसके जैसे नामवाला चतुर्थ कूट है इस तरह से तृतीय और चतुर्थ कूट में अनियतता प्रकट की गई है और जो प्रथम एवं हितीय क्रूट में नियतता प्रकट की गई है उसका ताल्पर्य ऐसा है कि सिद्धायतन कूट और दूसरा पर्वत के नाम वाला कूट इनका नाम नहीं बदलने से ये दो कूट अवस्थित हैं यदि यहां पर ऐसी आशंका की जाने कि सिद्धायतन कर तो अवस्थित जो कहा गया है वह तो नाम नहीं बदलने से अवस्थित माना વિજયના જેવા નામવાળા જાણી લેવા જોઈએ. આ કથનના ભાવાર્થ એવા થાય છે કે **હરે**કે દરેક વક્ષસ્કારમ[ે] ચાર કૂટે⊧ છે એમાં પ્રારંભના બે કૂટેા તો નિયત અને તૃતીય⊸ ચતર્થ કુટે। અનિયત છે. એ વાતને સૂત્રકાર યાતે કહેશે એમાં જે-જે વક્ષસ્કાર પર્વત જે

દરેકે દરેક વક્ષરકારમાં ચાર કૂટા છે એમાં પ્રારંભના બે કૂટા તો નિયત અને તૃતીય— ચતુર્ધ કૂટા અનિયત છે. એ વાતને સ્ત્રકાર પાતે કહેશે એમાં જે—જે વક્ષરકાર પર્વત જે બે કૂટાને વિભક્ત કરે છે, તે વિભજયમાન પર્વતના મધ્યમાં જે—જે પશ્ચાત્ય વિજયો છે તેના જેવા નામવાળા તે વક્ષરકાર પર્વત ઉપર તૃતીય ફૂટ છે અને જે અગ્રિમ વિજય છે તેના જેવા નામવાળા ચતુર્ધ કૂટ છે. આ પ્રમાણે તૃતીય અને ચતુર્ધ ફૂટમાં અનિય-તતા પ્રકટ કરવામાં આવી છે અને પ્રથમ અને દિતીય ફૂટમાં નિયતના પ્રકટ કરવામાં આવી છે. તેના ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે સિદ્ધાયતન ફૂટ અને બીજો પર્વત જેવા નામ વાળા ફૂટ એ બન્નેના નામા નહિ બદલાવાર્થી એ બન્ને ફૂટા અવસ્થિત છે. જો અઢી' એવી આશ'કા કરવામાં આવે કે સિદ્ધાયતન ફૂટ તો અવસ્થિત કહેવામાં આવેલ છે, તે તો નામ નહિ બદલવાથી અવસ્થિત કહી શકાય તેમ છે પથ દિતીય ફૂટ જેવું તેના પર્વતનું નામ मकस्य क्रटस्य तत्तद्वक्षस्कारनामानुसारिनामकत्वेन कथमविस्थितत्विमित चेद्? अत्रोच्यते— पर्वतसद्दशनामकत्वलक्षणधर्मस्य सकलवक्षस्कार द्वितीयकूटेषु समनुगतत्वाद् व्यभिचारिणा तेन धर्मेणाविस्थितत्वं पर्वतसद्दशनामककूटस्यापि युक्तमेव, न चैवं विजयसद्दशनामकत्वरूपः धर्मेण कच्छमुकच्छयोरिव तद्दन्ययोरिप कूटयोरविस्थितत्वं प्रसज्जेदुक्तधर्मस्य कच्छमुक च्छातिरिक्तेषु सर्वेष्विप तत्तद्वक्षस्कारत्तीयचतुर्थकूटेषु समनुगतत्वेनाव्यभिचरितत्वादिति बाच्यम्, विजयसद्दशनामकत्वधर्मस्य तत्तद्वक्षस्कारसद्दशनामकयो द्वेयोः कूटयोवृत्तित्वेन तेन तयोरेकतरस्य निर्णयाभावेन नामव्यवदारस्य सपदि भर्तुमक्षव्यत्वादिति । स् ० ३५॥

अधुना महाविदेहवर्षस्य पूर्वपश्चिमविभानकं मेरुं 'मंद्रं' वर्षियतुमुपक्रमते-किह णं भंते ! जंबुदीवे २ इत्यादि !

म्लम्-किह णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे मंद्रे णामं पठवए पण्णते ?, गोयमा ! उत्तरकुराए दिक्छणेणं देवकुराए उत्तरेणं पुठविदेहस्स वासस्स पच्चित्थमेणं अवरविदेहस्स वासस्स पुरित्थमेणं जंबुद्दीवेस्स बहुमञ्झदेसभाए एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे मंद्रे णामं पठवए पण्णत्ते, णवणउइजोयणसहस्साइं उद्धं उच्चतेणं एगं कोयणसहस्सं उठवेहेणं मूले दसजोयणसहस्साइं णवइं च जोयणाइं ६स च एगारसभाए जोयणस्स विक्खंभेणं, धरिणथले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं तयणंतरं च णं मायाद मायाद परिहायमाणे परिहायमाणे उवरितले

जा सकता है परन्तु ब्रितीय कूट जैसा उसके पर्वत का नाम हो जा बैसा उसका नाम हो जाने से अवस्थित नाम वाला कैसे हो सकता है? तो इसका समाधान ऐसा है की यहां जो अवस्थित नामता कही गई है वह क्टों के नाम के सहश नाम को लेकर ही कही गई है अतः जितने भी क्ट होंगे और उनमें जो नामता होगी वही ब्रितीय कूट का नाम होगा ऐसी नामता तृतीय चतुर्थ कूट में नियमित नहीं है। इसी हृद्य को लेकर स्वकार ने (इमे दो दो कूडा अविदिया सिद्धाययणकूढे पव्वयस्तिसणामकूढे) यह सुन्न कहा है। इस।

હશે तेवुं तेतुं नाम थर्ध कवाथी अवस्थित नामवाणा हैवी रीते थर्ध शहरों ? ते। आ शंहातुं समाधान आ प्रमाणे छे हे अहीं के अवस्थित नामता हहेवामां आवेली छे, ते हुटेाना नाम सहश नामाने अनुसङ्गीने क हत्वामां आवेली छे. रेग्थी केटला हूटे। हरो अने तेमां के नामता थरो तेक दितीय हूटनुं नाम हरो. अेली नामता तृतीय— यतुर्थ हूटमां नियमित नथी. येक आशयने सर्थने स्वहारे हमें हो हो कूडा अवद्विया सिद्धाययणकूडे पव्वयसरिसणामकूडें आ स्व हहां छे. ॥ उप ॥ एगं जोयणसहस्सं विश्वलंभेणं मूळे एकसीसं जोयणसहस्साइं णव य दसुत्तरे जोयणसए तिष्णि य एगारसभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं धर-णिअले एकत्तीसं जोयणसहस्साइं छच तेत्रीसे जोयणसए परिक्खेवेणं उवरितले तिपिण जोयणसहस्साई एगं च बावटूं जोयणसयं विसेसाहियं परिवर्षेषेणं मूले विस्थिण्णे मज्झे संखिते उवरिं तलुए गोपुच्छप्तंठाणसंठिए सब्वरयणामए अच्छे सण्हेति। से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सब्बओ समंता संपरिक्षित्ते वण्ण-ओत्ति, मंदरेणं भंते ! पव्वए कइ वणा पण्णता ?, गोयमा ! चतारि वणा पण्णता, तं जहा-भइसालवणे १ लंदणवणे२ सोमणसवणे३ पंड-गवणेश, कहि णं भंते ! मंदरे पटवए भइसाछवणे णामं वणे वण्णेते?, गोयमा ! धरणिअले एत्थ णं मंदरे पव्वए भइसालवणे णामं वणे पण्णते पाईणपडीणायए उदीणदाहिणवित्थिष्णो सोमणस विज्जुप्पह-गंधमायणभाळवंतेहिं वक्षारपव्वएहिं सीयासीयोयाहिं य महाणईहिं अट्रभागपविभन्ते संदरस्स पठवयस्स पुरित्थमपचरिथमेणं वावीसं वाबीसं जोयणसहस्साई आयामेणं उत्तरदाहिणेणं अद्धाइजाई अद्धाइजाई जोयणसबाई विक्लंभेणंति, से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेषां सब्दओ समंता संपरिक्रिखते दुण्हित वण्णओ भाणियव्दो, किव्हो किव्होभासो जाव देवा आसयंति सयंति, मंद्रस्स णं पठवयस्स पुरिथमेणं भइसालवणं पण्णासं जोयणाई ओगाहिता एत्थणं महं एगे सिद्धाययणे वण्यत्ते पण्णासं जोयणाइं आयामेणं पणत्रीसं जोयणाइं विक्खं-भेणं छत्तीसं जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं अणोगखंभसयसण्णिविट्रं ववणओ, तस्स णं सिद्धाययणस्स तिदिसिं तशो दारा पण्यत्ता, ते णं दारा अट्ट जोयणाई उद्धं उच्चत्तेणं चत्तारि जोयणाई विक्खंभेणं तावइयं चेव पत्रेतेणं सेया वरकणगथूभियागा जाव वणमालाओ भूमिभागो य भाणियव्वो, तस्स णं बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगा मणिपेढिया पण्णता अट्ट

जोयणाइं आयामविवखंभेणं चत्तारि जोयणाइं वाहब्लेणं सद्वरयणामई अच्छा, तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं देवच्छंदए अट्रजोयणाइं आयामः विक्लंभेणं साइरेगाइं अट्ट जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं जाव जिणपडिमा वण्णओ देवच्छंदगस्स जाव धूवकडुच्छुआणं इति । संदरस्स णं पठब-यस्स दाहिणेणं भइसालवणं पण्णासं एवं चउ दिसिं वि मंद्रस्स भइ-सालवणे चतारि सिद्धाययणा भाणियव्या, मंद्रस्स णं पव्वयस्स उत्तर-पुरिथमेणं भद्दसालवणं पण्णासं जोयणाइं ओगाहिता पत्थ णं चतारि णंदापुक्लरिजीओ पण्णत्ताओ, तं जहा-पउमा १ पउमप्पभा २ चेत्र कुमुदा३ कुमुदप्यभार, ताओ णं पुक्खरिणीओ पण्यासं जोयणाइं आया-मेणं पणवीसं जोयणाइं विक्खंभेणं दस जोयणाइं उठवेहेणं वण्णओ वेइयावणसंदाणं भाणियव्यो, चउिहसिं तोरणा जान तासि णं पुक्खरि णीणं बहुमज्झदेसभाए एत्थं णं महं एगे ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो पासायविंसए पण्णते दंच नोयणसयः इं उद्धं उच्चत्तेणं अद्धाइजाइं जोयण-सयाइं क्विखंभेणं, अब्भुग्गयमूसि य एवं सपरिवारो पासायवर्डिसओ भोणियद्यो, संदरस्स णं एवं दाहिणपुरिथमेणं पुक्खरिणीओ उप्पल-ग्रम्मा णलिणा उप्पला उप्पल्लाला तं चेत्र पमाणं मन्झे पासायवर्डिसओ सकस्स सपरिवारो ते णं चेत्र पत्राणेणं दाहिणपचित्थिमेण वि पुक्खरि-णीओ भिंगा भिंगणिभाचेव, अंजणा अंजणपमा पासायविंसओ सकस्त सीहासणं सपरिवारं उत्तरपञ्चरियमेणं पुक्खरिणीओ सिरिकंताश सिरिचंदार सिरिमहिया३ चेत्र सिरिणिलया४। पासायवर्डिसओ ईसा-णस्स सीहास गं सपरिवारंति । संदरेणं भंते ! पव्वष् भहसाळवणे कइ दिसाहत्थिकूडा पण्णता?, गोयमा! अट्ट दिसाहत्थिकूडा पण्णता, तं जहा-पउमुत्तरेर जीलबंते२ सुहत्थी३ अंजणगिरि४। कुमुदे य ५ पलासे य६ वर्डिसे७ रोयणागिरीट ॥१॥ कहि णं भंते ! मंदरे पव्यष् भइसालक्ष्णे पउमुक्तरे णामं दिसाहत्थिकूडे पण्यते ?, गोयमा ! मंद्र रस पव्ययस्स उत्तरपुरिथमेणं पुरिधमिल्लाए सीयाए उत्तरेणं एत्थ णं

पउमुत्तरे णामं दिसाहत्थिकूढे पण्णते पंचजोयणसयाइं उद्धं उचतेणं पंचगाउयसयाइं उठवेहेणं एवं विक्लंभपिक्षवेत्रो भाणियद्यो चुल्लहिम-वंतसरिक्षो, पासायाण य तं चेव पउमुत्तरो देवो रायहाणी उत्तरपुरस्थि-मेणं१। एवं णीलवंतदिसाहरिथकूडे संदरस्स दाहिणपुरस्थिमेणं पुरस्थि-मिल्लाए सीयाए द्विखणेणं एयस्स दि जीलवंतो देवो रायहाणी दाहि-णपुरिथमेणे२, एवं सुहिरधिद्साहित्थकूडे संदरस्स दाहिणपुरिथमेणं दिक्लिणिल्लाए सीयोयाय पुरस्थिमेणं एयस्स दि सुहत्थी देवो रायहाणी दाहिणपुरितथमेणं ३, एवं चेत्र अंजणिगिरिदिसाहितथकूढे मंदरस्स दाहि-णपचरिथमेणं दक्षिखणिव्लाए सोबोयाए पचरिथमेणं, एयस्स वि अंज-णगिरिदेवो रायहाणी दाहिणपचरिथमेणं४, एवं कुसुदे वि दिसाहरिथकूडे भंदरस्स दाहिणपचरिथमेणं पचरिवमिल्लाए सीयोगाए द्विखणेणं एयस्स वि कुमुदो देशो रायहाणी दाहिणपचित्थिमेणं५, एबं पळासे-विदिस हित्यकूडे मंदरस्स उत्तरपद्मत्थिमेणं पद्मत्थिमिल्लाए सीयोयाए उत्तरेणं एयरस वि प्रजासी देशे रायहाणी उत्तरपचित्थिमेणं६, एवं वडेंसे विदिसाहत्थिकूडे मंद्रस्स उत्तरपुरिथमेणं उत्तरिल्छाए सीयाए महाणईए पचित्थमेणं एयस्स वि वर्डेसो देवो रायहाणी उत्तरपचितथ-मेणं, एवं रोवणागिरिदिसाइत्थिकूडे संदरस्स उत्तरपुरिथमेणं उत्तरि-ल्लाए सीयाए पुरित्थमेणं एयस्स वि रोवणागिरि देवो रायहाणी उत्तरपुरियमेणं ॥सू० ३६॥

छाया-वन खल भदन्त ! जम्बूझीपे द्वीपे महाविदेहे वर्ष मन्द्रो नाम पर्वतः प्रज्ञप्तः १, गौतम ! उत्तरकुरूणां दक्षिणेन देवकुरूणामुत्तरेणं पूर्विविदेहस्य वर्षस्य पश्चिमेन अपरिविदेहस्य धर्षस्य पौरस्त्येन जम्बूझीपरा बहुमध्यदेशसामे अत्र खल जम्बूझीपे द्वीपे मन्द्रो नाम पर्वतः प्रज्ञप्तः, नवनवति योजनसहस्राणि जध्वे इच्चत्वेन एकं योजनसहस्रमुद्धेचेन मूले दशयोजनसहस्राणि नवितं च योजनानि दश च एकादशभागान योजनस्य विष्क्रमभेण, धरणितले दशयोजनसहस्राणि विष्क्रमभेण तद्मन्दरं च खल मात्रया मात्रया परिहीयमानः परिहीयमानः परिहीयमानः परिहीयमानः उपरितले एकं योजनसहस्राणि नव च स्थान

त्ताणि योजनशतानि त्रीश्र एक द्वसागान् शोजनस्य परिक्षेपेण धरणितले एक त्रिशतं योजनशहस्ताणि पर च त्रयोतिशा ने योजनशतानि परिक्षेपेण उपस्तिले त्रीणि योजनसह-स्नाणि एकं च द्वापष्टं योजनशतं किश्चिद्विशेषाधिकं परिक्षेपेण मूले विस्तीणीः मध्ये संक्षिप्तः उपि तत्रुकः गोपुच्छ संस्थानसंस्थितः सर्व रत्नमयः अच्छाः श्चक्षण इति । स ख्छ प्कया पद्मत्रत्वेदिकया एकेन च वनपण्डेन सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्तः, यणेक इति, मन्दरे ख्छ भदन्त ! पर्वते कति वनानि प्रज्ञप्तानि !, गौतम ! चत्वारि वनानि प्रज्ञप्तानि,

तद्यथा-भद्रशा (सा) छवनं १ नन्दरवनं २ सीवनसवनं ३ पण्डकवनम् ४ वय खळु भदन्त ! मन्दरपर्वते भद्रशालवनं नाम वनं प्रज्ञप्तम् ?, गौतम ! घरणित्रे अत्र खलु मन्दरे पर्वते भद्रशालवनं नाम वनं प्रज्ञप्तं प्राचीनप्रतीचीनायतम् उदीणदक्षिणविस्तीणं सौमनसविद्युत्प्रम गन्धमादन गल्यवद्भि र्वक्षस्कारपर्वतैः श्रीताशीतोदाभ्यां च महानदीभ्याम् अष्टभागप्रविभक्तं मन्दरस्य पर्वतस्य पौरस्ट्यपश्चिमेन द्वाविंशति द्वाविशति योजनसद्द्वाणि आयामेन उत्तर-दक्षिणेन अर्द्धतृतीयानि अर्द्धतृतीयानि योजनशतानि विष्यमेषेति, तत् खळ एकया पदम-वरवेदिकथा एकेन वनषण्डेन सर्वतः समन्तात् संपितिक्षप्तं द्वयोरिष वर्णको अवणितव्यः कृष्णः कृष्णावनासः या द् देशा असते शेरते, मन्दरस्य खळ पर्वतस्य पौरस्येन भद्रशाल-वर्न पश्चर्यतं योजनानि अवगाह्य अत्र खळ महदेकं तिद्धायतनं प्रज्ञप्तं पश्चायतं योजनानि आयामेन पश्चविश्वति योजनानि विष्कःभेण पट्तिशतं योजनानि ऊर्ध्वेषुच्चत्वेन अनेक-स्तम्भञ्जतसिद्धं विष्टं वर्णकः, तस्य खल ृसिद्धायतनस्य त्रिदिश्चित्रीणि द्वाराणि प्रज्ञतानि. तानि खलु द्वाराणि अप्र योजनानि अर्ध्वप्रच्यत्वेन चत्यारि योजनानि विष्क्रमभेण ताबहेन च प्रवेशेन श्रेताः वरकन हस्त्विकाकाः यावद् वनमः छाः भूमिमागश्र भणितव्यः, तस्य खुळ बहुमध्यदेशभागे अत्र खल्ल महत्येका मिलिपी ठिका प्रज्ञप्ता अष्ट योजनानि भाषामविष्कमभेण चरवारि योजनानि बाइल्येन सर्वरत्नमधी अच्छा, तस्याः खल्छ मणिपीठिकाया उपरि हेव-रुड्डन्डकोऽष्ट्रयोजनानि आयामविष्क्रम्भेण सातिरेकाणि अष्ट्योजनानि अर्ध्वग्रुरुवन्वेन यात्रत् जिनप्रतिमात्रभेकः देवच्छन्दकस्य यात्रद् भूपकडुच्छुकाणामिति । मन्दरस्य खछ पर्व-तस्य दक्षिणेन भद्रशालवर्न पञ्च शतं (योजनानि) एवं चतुर्दिव्यपि मन्दरस्य भद्रशालयने चःवारि सिद्धायतमानि भणितव्यानि मन्दरस्य खलु पर्वतस्य उत्तरपौरस्त्येन भद्रशास्त्रवनं पश्चाशतं योजनानि अव्याह्य अत्र खळु चतस्रो जन्दापु करिण्यः प्रज्ञप्ताः तद्यया-पदुना १ पद्मप्रमा २ चेव कुमदा ३ कुपद्यमा ४, ताः खल पुष्करिण्यः पश्चवतं योजनानि आया-मेन पत्रविंशति योजनानि विष्क्रम्भेण दशयोजनानि उद्वेथेन दर्णकः वेदिका वनपण्डयो भेणितव्यः, चतुर्दिशि तोरणाः यावत् तासां खळ पुष्करिणीनां बहुमध्यदेशमागे अत्र खलु महानेक ईशानस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य प्रासादावतंसकः प्रश्नमः पश्चयोजनशतानि जध्बे कुरु तत्वे न अद्भत्तियानि योजनशतानि विष्क्रभेण, अभ्युद्धनः च्छित् एवं सपरिवाः प्रासादावतं प्रको भणि त्रव्यः, मन्दरस्य खळ एवं दक्षिणपीरस्त्येन पुष्करिण्यः उत्पत्रग्रहसा

१ नलिना २ उत्पत्ना ३ उत्पत्नोज्ञवला ४ तदेव प्रमाणं मध्ये प्रासादावतंसक शक्रम्य सपरि वारः तेनैव प्रमाणेन दक्षिणपश्चिमेनापि पुष्करिण्यः-भृता १ भृत्ननिमा २ चैव अञ्जना ३ अञ्जनप्रभा ४ । प्रासाद।वरंसकः प्रकस्य सिंहासनं सपरिवारम् उत्तरपश्चिमेन पुष्करिण्यः श्रीकान्ता १ श्रीवन्द्रा २ श्रीमहिता ३ चैव श्रीनिल्या ४ प्रःसादावतंसकः ईशानस्य सिंहा-सनं सपरिवारिकति । सन्दरे खलु भदन्त ! पर्वते भद्रज्ञालाने कति दिग्हस्तिकूटानि प्रज्ञ-प्तानि ?, गौतव ! अष्ट दिग्धस्ति क्रुटानि प्रज्ञप्तःनि, तद्यथा-पदमोत्तरो १ नीलवान् २ सुइ स्ती ३ अञ्जनामिरिः ४ । क्रमुद्ध ५ पलाश्च ६ अवर्तसो ७ रोचनामिरिः ८ ॥१॥ व्य ख्रु भदन्त ! मन्दरे पर्वते भद्रशास्त्रवने पद्मोत्तरो नाम दिग्वस्तिक्टः प्रज्ञप्तः ?, गौतम ! मन्द-रस्य पर्वतस्य उत्तरपौरस्त्वेन पौरस्त्यायाः शीताया उत्तरेण अत्र खल पदमोत्तरो नाम दिग्रहस्तिक्टः प्रज्ञप्तः, पश्चयोजनशतानि अर्ध्वग्रुच्चत्वेन पश्चगव्यृतशतानि उद्देधेन, एवं विष्कमभपरिक्षेपी भणितव्यः, खुद्रहिमबत्सद्यः, प्रासादानां च तदेव पद्मोत्तरो देवी राज-धानी उत्तरपोरस्त्येन १, एवं नीलबिदिग्हस्तिक्टो मन्दरस्य दक्षिणपौरस्त्येन पौरस्त्यायाः शीताया दक्षिणेन एतस्यापि नील्यान देवो राजधानी दक्षिणपौरस्त्येन २, एवं सहस्ति-दिग्वस्तिक्रटो मन्दरस्य दक्षिणपौरस्त्येन दाक्षिणात्यायाः शीतोदायाः पौरस्त्येन प्तस्याप् सुइस्ती देवो राजधानी दक्षिणपौरस्त्येन ३, एवमेव अञ्चनगिरिदिग्हस्तिकूटो मन्दरस्य दक्षिणपश्चिमेन दाक्षिणात्यायाः शीवोदायाः पश्चिमेन, एतस्यापि अञ्चनगिरिदेवो राजधानी दक्षिणपश्चिमेन पाश्चात्थायाः शीतोदायाः दक्षिणेन एतस्यापि क्रमुदो देवो राजधानी दक्षिण-पश्चिमेन ५, एवं पछाशो विदिग्हस्तिकृटो सन्दरस्य उत्तरपश्चिमेन पाश्चात्यायाः शीतोदाया उत्तरेण एतस्यापि पलाशो देवो राजधानी उत्तरपश्चिमेन ६, एवमवर्तसो विदिग्हस्तिक्कटो मन्द रस्योत्तरपश्चिमेन भौतरिकायाः शीताया महानद्याः पश्चिमेन एउस्यापि अवतंसो देवो राज-धानी उत्तरपश्चिमेन, एवं रोचनामिरिदिग्हस्तिकूटो पन्दरस्य उत्तरपौरस्त्येन औत्तरिकायाः ्शीतायाः पौरस्त्येन एतस्यापि रोचनागिरिर्देशे राजधानी उत्तरपौरस्त्येन ॥ स्ट० ३६ ॥ टीका-'कहि णं भंते ! जम्बूहीचे' इत्यादि-प्रश्रस्त्रं छायःगम्यम् उत्तरस्त्रे 'गोयमा !'

मेरु यक्तव्यता

'कहि णं भंते! जंबुहीचे दीचे महाविदेहे'-इत्यादि

टीकार्थ-(किह णं भंते! जंबुदीचे दीचे महाविदेहे वासे मंदरे णामं पब्चए पण्णात्ते) इस सूत्र द्वारा गौतमस्वामी ने प्रभु से ऐसा पूछा है की हे भदन्त! इस जम्बू द्वीप नाम के द्वीप में महाविदेह क्षेत्र में मन्दर नाम का पर्वत किस स्थान पर कहा गया है?

भेरु वक्ष्तव्यता

'कहि णं भेते! जंबुदीवे दीवे महाविदेहे' इत्यादि

ટીકાર્થ-'कहि णं मंते! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे मंदरे णामं पटवए पण्णते' આ સૂત્ર વહે ગૌતમસ્વામી મે પ્રસુતે એવા પ્રક્ષ કર્યો છે કે હે ભદન્ત! આ જંબૂદ્ધીય વામક દ્વીયમાં

गौतम ! 'उत्तरकुराए' उत्तरकुरूणाम् मूले प्रकृत्तवादे हवचने न निर्देशः, यद्वा-कस्यविन्मित्कक्षकवचनेऽपि प्रयोगा उत्तरकुरोरित्यर्थः, एत्मग्रेऽपि 'दिव्खणोगं' दक्षिणदिशि 'देवकुराए' देवकुरूणाम् 'उत्तरेणं' उत्तरेण उत्तरिद्धि 'पुट्रविदेहस्स' पूर्वविदेहस्य 'वासस्स' वर्षस्य 'पख-रियमेणं' पश्चिम-पित्रिश्च 'अवस्विदेहस्स' अपस्विदेहस्य पश्चिम महाविदेहस्य 'वासस्स' वर्षस्य 'पुरुत्थिमेणं' पौरस्त्येन-पूर्वदिश्च 'जंबुदीनस्स' जम्बूद्धीपस्य द्वीपस्य 'बहुमण्यदेस-भाए' बहुमण्यदेशमागे-अत्यःतमध्यदेशमागे 'एत्थ' अत्र-अत्रान्तरे 'णं' खळु जंबुदीवे दीवे' जम्बुदीपे द्वीपे 'मंदरे णाम' मन्दरो नाम 'पव्वए' पर्वतः 'पण्णत्ते' प्रज्ञाः, स च कि प्रमाणकः ? इति जिज्ञातायामाह-'णवणवित जोयणसहस्माइं' नवनवित योजनसहस्नाणि-नवनवित-सहस्रयोजनानि 'उद्धं' उर्ध्वम् 'उच्चत्तेणं' उद्धेषेन भूमिप्रवेशेन 'मूळे' मू छे-मूळा-वच्छेदेन 'दस जोयणसहस्मादं' दशयोजनसहस्र णि-दशसहस्रयोजनानि 'णवादं च जोयणसहस् जिन्स्य 'विवस्त्रमेणं' विवक्तंभेणं' विवक्तंभेणं विवक्तंभेण-विस्तारेण प्रज्ञाः 'यरणिअले' धरणितले पृथ्वितिले समे भागे

इसके उत्तर में प्रमुश्री कहते हैं—(गोधमा! उत्तरक्तराए दिक्खणेणं देवक्रराए उत्तरेणं पुन्विवदेहस्स वासस्स प्रविधमेणं जंबुहोवस्स बहुमन्झदेसभाए एत्थ णं जबुदीवे मंदरे णाभं पन्वए पण्णत्ते) हे गौतम!
उत्तर करु की दक्षिण दिशा में देवकुरु की उत्तर दिशा में पूर्विवदेह क्षेत्र की पश्चिम
दिशा में एवं अपरिवदेह क्षेत्र की पूर्विदिशा में जंबूबीप के भीतर ठीक उसके
मध्यभाग में मन्दर नामका पर्वत कहा गया हैं (णवण उहजोयण सहस्साइं उद्धं
उच्चत्तेणं एगं जोधण सहस्सं उद्धे हेंणं मूळे दसजोयण सहस्साइं णवइं च
जोधणाइं दसय एगारसभाए जोधणस्स विक्लंभेणं) इस पर्यत की अंबाई ९९
हजार योजन को है एक हजार योजन का इसका उद्धेध है १००९० दे पोजन का
मूळ में विस्तार है (धरणियळे दसजोयण सहस्साइं विक्लंभेणं तथणंतरं च णं

महाविदेह क्षेत्रमां मंदर नामक पर्यंत क्या स्थणे आवेल छे? ओना कवालमां प्रभु कहे छे-'गोगमा! उत्तरकुराए दिक्लणेणं देवकुराए उत्तरेणं पुन्विविदेहस्स वासस्स पच्चित्रमेणं अवरिविदेहस्स वासस्स पुरित्यमेणं जंबुदीवन्स बहुम्ड्सदेसमाए एत्थ णं जंबुदीवे दीवे मंदरे ण.मं पव्वए पण्णत्ते' हे जीतम! उत्तर कुल्मी दिख्णा दिशामां देवकुरुनी उत्तर दिशामा पूर्व' विदेह क्षेत्रनी पश्चिम दिशामां, तेमक आपरिविदेह क्षेत्रनी पूर्व दिशामां क'णूदीपनी आंदर ठीक तेना मध्यलागमां मन्दर नामक पर्वत आवेल छे. 'णवणउद्द्रजोयणसहस्साइं दस य एगारसमाए जोयणस्स विक्लंभेणं' आ पर्वतनी शिंचाई ६८ हलर योकन केटली छे. खेक हलर येकिन केटली छे. खेक हलर येकिन केटली छे. चेक हलर येकिन केटली छे. चेक हलर येकिन

'दस जोयणसहस्साइ' दशयोजनसःस्राणि 'दिवदां वेणं' विष्कमभेण, मूलतो योजनसहस्र मूर्ध्वगमेन मूलगतःनि नवित्योजनानि योजनस्य दश वैकादशमागास्तुटिमापुरित्यर्थः 'तयणंतरं च' तदनन्तरं च' ततः परं च 'शायाप २' मालदा २ कमेण २ अर्ध्वगमने सम्प्रति मन्दरपर्वतवर्तिवनखण्डाणि वर्णयितुषुपक्रमते—'मंदरेणं' इत्यादि गन्दरे इत्यादि प्रश्नद्भनं स्पष्टा

मायाए २ परिहायमाणे २ उबरित छे एगं जोयणसहरसं विक्लंभेणं मूल एकतीसं जोयणसहरसाइं णव य दसुसरे जोयणसए परिवस्तेवेणं उबरित ले तिणिण जोयणसहरसाइं एगं च बावहं जोयणसयं किंचि विसेसाहियं परिवस्तेवेणं भूछे विच्छि०णे मज्झे संखित्ते जबरिं तणुए गोपुच्छसंठाणसंठिए सव्वरयणान्त्रये अच्छे सण्हेत्ति) पृथ्वी पर इसका विस्तार १० हजार योजन का है इसके बाद यह कमदा: २ घटना २ उपर में इसका विस्तार १ एक हजार योजन का रह गदा है मूलमें इसका परिक्षेप ३१९१० के योजन का है और उपर में इसका परिक्षेप कुछ अधिक तोन हजार एकसी वास्त्रट योजन का है यह इस तरह मूलमें वित्तीर्ण हो गया है, मध्य भें संक्षिप्त हो गया है और उपर में पतला हो गया है वह सर्वात्मना रत्नमय है आकाज और स्कटिक के जैसा यह निर्मल है एवं १०६१ म अदि विद्यायों से युक्त है (से णं एगए पउमवरवेह्याए एगेण य वणसंडेणं सन्व भी सर्मतः संवरिक्तिले) यह एक पबवरवेदिका से और एक वनवण्ड से चारों और से अच्छी तरह से घराहुआ है (वण्णओत्त्र) यहां पर पद्मवरवेदिका और वनवण्ड का जैसा पीछे वर्णन किया जा चुका वैसाही वर्णन

विस्तार छे. 'धरणियले दस जीयणसहस्ताई विक्लंभेणं तयणंतरं च णं मायाए २ परिहायमाणे २ उबरितले एगं जोयणसहरसं जिक्लंभेणं मूळे एकतीसं एगं च बावहं जोयणसवं किंचि विसेसाहियं परिक्लंबेणं मूळे विक्लिणों मद्धे संखिते उबरिं तणुए गोपुच्छसंठाणसंठिए सद्धर्यणामये अच्छे सण्हेत्ति' पृथ्वी ७ परना व्येना विस्तार १० ६ कर ये। कन केटले। छे. त्यार थाड अनुक्रमे क्षेणु धता—धता ७ पर कोना विस्तार १ ६ कर ये। कन केटले। छे. त्यार थाड अनुक्रमे क्षेणु धता—धता ७ पर कोना विस्तार १ ६ कर ये। कन केटले। रही गये। छे. भूलमां कोना परिक्षप अर्थर विक्रम केटले। छे अने ७ परना लागमां कोना परिक्षण कंपे वधारे त्रणु ६ कर केडले। थाड व्येन केटले। छे. काम का मूणमां विस्तीर्णु धार्च गये। छे, मध्यमां संक्षिप धार्च गये। छे. कने ७ परना लागमां पातणा धार गये। छे. कोथी कोना का कर गयाना पूंछना का कार केवे। धार्च गये। छे. को सर्वात्मना रतन्य छे. का कार कने स्कृति को स्वात्मना रतन्य छे. का अर्थ कोने स्कृति विशेषणे। यो छक्त के प्राप्त प्रमार प्रमार विदेशियो। यो निर्मण तेमक श्वरूणु वजेरे विशेषणे। यो छक्त के. 'से णं एगाए पडमवरवेइयाए एगेण य वणसंहेणं सञ्चओ समंता संवरिक्लते' का को प्रमाय विदेशियो। कोने के केवे। यो सिर्मण स्वरूण वजेरे विशेषणे। यो का स्वरूप विशेषणे। यो वणको सिर्मण स्वरूप विदेशियी कोने केवे। को का सिर्मण स्वरूप सिर्मण सिर्मण स्वरूप सिर्मण केवे। यो विर्मणायेत छे. 'वणको सिर्मण स्वरूप विशेषणे। यो केवे। यो सिर्मण स्वरूप सिर्मण सि

र्थम्, उत्तरस्त्रे 'गोयमा !' गाँतम ! 'चलारि' चलारि 'वणा' वनानि 'पण्णता' प्रश्नशानि 'तं जहा' तद्यथा-'भइसाअकणे' सद्गालवनं-भद्राः सद्भूभवत्वेत सत्याः शालाः-आलयाः 'सालाः' बृक्षशास्त्रा वा यरिमन् तत् भद्रशालं 'सालं तच्य तद्दनं भद्रशालवनम् यद्वा भद्राः

समझले वें (मंदरेणं भंते! कई वणापण्णता) हे भइन्त मंदर पर्वत पर कितने बन कहे गये हैं? (गोयमा! चतारि वणा पण्णता) हे गौतम! चार बन कहे गये हैं (वण्णभो) यहां पर पद्मवरवेदिका और वनषण्ड का वर्णन करनेवाला पद समूह पीछे के खुनों हारा कहा जा जुका है अतः वहीं से इसे समझलेना चाहिये सुमेर पर्वत का विस्तार एक लाख योजन का कहा गया है-सो इसमें ९९ हजार योजन की तो उसकी उंचाई है और १ हजार योजन का इसका उद्धेष है इस तरह १ लाख योजन पूरा हो जाता है परन्तु इसकी जो चुलिका है वह ४० चालीस हजार योजनकी है अतः यह प्रमाण सिलाने से सुमेर पर्वत का १ लाख योजन से अधिक प्रमाण हो जाता है। यह जो पहिले कहा गया है कि जितनी जंचाई जिस पर्वत की होती है उसका चतुर्यों जा उसका उद्धेष होता है सो यह यान मेरवर्ज पर्वतों के ही सम्बन्ध में लागू पड़ती है इस केर पर्वत के सम्बन्ध में नही इसलिये इसका उद्धेष १ हजार योजन का कहा गया है। अब चार वनों का नाम निर्देश करने के निमित्र प्रभु गौतमस्वामी से कहते हैं—(तं जहा—भदसालवमें, णंदणवणे सोमणसवणे, पंडगदणे) हे गौतम! उन चार वनों के नाम इस प्रकार से हैं—भद्रशालवन, नन्दनवन, सीमनसवन और पण्डकवन इनमें जो भद्रशाल से हैं—भद्रशालवन, नन्दनवन, सीमनसवन और पण्डकवन इनमें जो भद्रशाल

शालाः वृक्षाः यस्मिरतद् भद्रशालं शेषं प्राम्वत् १, 'णंदणवने' मन्दमवनं नन्दयति-सुगदीनानन्दयतीति नन्दनं तच्च तहनं नन्दनवनम् २, 'सोमणसवणे' सौमनसवनं सुमनसो देवास्तेपामिदं सौमनसं तच्च तहनं तथा, देवोपभोग्य भूमिकासनादि शालित्वात् ३, 'पंडगवणे'
पण्डकवनं-पण्डते तीर्थकृतत्यन्माभिषेकधामतया सक्तवनेषु मूधन्यतां शच्छतीति पण्डकं,
तच तहनं तत्तथा ४, इमानि चत्वारि मन्दरं परिवेष्ट्य स्वस्वस्थाने तिष्टन्ति, तत्र प्रथमवन
स्थानं निर्देष्टुमुपक्रमते—'किह णं भंते !' वव एल भदन्त ! इत्यादि प्रश्नव्रत्रं सुगमम्, उत्तरसत्रे-'गोयमा !' गौतम ! 'धरणिक्षले' धरणित्ले 'एत्थ' अत्र-अत्रान्तरे 'णं' सल्ल 'मंदरेमेरी 'पच्चप' पर्वते 'भइसालवणे' भद्रशालवनं 'णाः' नाम 'वणे' वनं 'पण्णते' प्रज्ञसम्,
तच 'पाईणपडीणायए' प्राचीनप्रतीचीनायतं पूर्वपश्चित्रदीर्घम् 'सोमणसविज्जुष्पद्दगंधमायणमालवंते हिं' सौमनसिव युत्प्रभगन्धमादनमालयक्दः 'वक्खारपव्यप्ति 'सोमणसविज्जुष्पदगंधमायणमालवंते हिं' सौमनसिव युत्प्रभगन्धमादनमालयक्दः 'वक्खारपव्यप्ति 'सहमालपविभन्ते'
'सीया सीयोयादि' शोताशोतोदाभयां 'य' च 'महाणई वि' महानदीभ्याम् 'अट्टभारपविभन्ते'

वन है उसमें आलय या बृक्षशाखाएँ या बृक्ष बहुत ही सरल है सीधे-हैं देखे मेडे नही हैं। द्वितीय नन्दन वन में देवादिक आनन्द करते हैं सौमनस्वन एक प्रकार से देवताओं का घर जैसा है तथा जो पंडकवन है उसमें तीर्थंकरों का जन्माभिषेक होता है अतः इसे सब बनों से उत्तम कहा गया है ये चार वन मेक्को अपनी अपनी जगह पर घेरे हुए स्थित है। अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं—(कहिणं भंते! मंदरे पव्वए भह्सालवणे नाम वणे पण्णत्ते) हे भदन्त! मन्दर पर्वत पर भद्रशालवन कहां पर कहा गया है? इसके उत्तरमें प्रभु कहते हैं—(गोयमा! घरणिअले एत्थणं मंदरे पव्वए भह्सालवणे णामंवणे पण्णत्ते) हे गौतम! इस पृथ्वी पर वर्तमान सुमेरार्वत के उपर भद्रशालवन कहा गया है (पाईणपढीणायए) यह वन पूर्व से पश्चिम तक लम्बा है (उदीणदाहिणविच्छण्णे) उत्तर और से दक्षिणतक विस्तीणं हैं (सोमणसविज्जुप्पह गंधमायण मालवंतिहिं

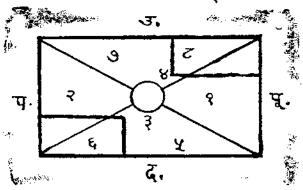
नस्वन अने पंउडवन. अभां के लद्रशाल वन छे, तेमां आलय अथवा वृक्षशाणाओं अथवा वृक्षा अतीव सवल छे—सीवा छे—वांडा—वृक्षा नवी, द्वितीय नन्दनवनमां देगिहिंडा आनंद इरे छे. सीमनसवन अंड रीते देवताओाना माटे घर केवुं छे. तथा के पंउडवन छे तेमां तीर्था इरोने। कन्मालिषेड थाय छे. अथी आने अधा वनामां उत्तम इद्धेवामां आवेल छे ओ यार वना मेरुने पातपाताना स्थाने आवृत इरीने स्थित छे. देवे गौतमस्वामी प्रभुने आ जावना प्रक्ष इरे छे डे कहिंगं मंते! मं रे पव्वण मदसालवणे पण्णत्ते दे लहंत! मंदरपर्वत उपर लद्रशालवन इयां स्थणे आवेल छे? ओना कवालमां प्रभु इद्धे छे—'गोयमा! धरणि अले एत्थां मंदरे पव्वण मदसालवणे णामं वणे पण्णत्ते' दे औतम ! त्या पृथ्वी धरणि वर्तामा सुमेरु पर्वतनी उपर लद्रशाल वन आवेलुं छे. 'पाईणपढीणायए' आ वन पूर्वथी पश्चिम सुधी दीर्घ छे. 'स्वीणदाहिण विच्छाणे' अने उत्तरथी दक्षिण सुधी

अष्टमागप्रिनिमक्तम् अष्टघा कृतम्, तद्यथा मेरुगिरेः पूर्वस्यां दिशि प्रथमो भागः १, तस्यैव गिरेः पश्चिमायां दिशि द्वितीयोभागः २, विद्युत्प्रभ सीमनसयो वेश्वस्कारपर्वतयोर्मध्ये दिशिणस्यां दिशि तृतीयो मागः ३, गन्धमादनमाल्यवतो वेश्वस्कारपर्वतयो र्मध्ये उत्तरस्यां दिशि नृत्यो भागः ४, मेरुक्तरतो वहन्त्या शीतोदा महानद्या पूर्वपश्चिमविभागाभ्यां द्वैथीकृत्वदिशिणस्वण्डरूपः पश्चमो भागः ५, मेरुपश्चिमदिशि वहन्त्या शीतोदाया दक्षिणोत्तरविभागाभ्यां द्वैथीकृतपश्चिमस्वण्डरूपः पष्ठो भागः ६, मेरुद्विणाभिमुख्वाहिन्या शीतामहानद्याः पूर्वपश्चिमविभागाभ्यां द्वैथीकृतोत्तरस्वण्डरूपः सप्तमो भागः ७, तथैव नचाः पूर्वाभिमुख्वाहिन्यां वक्तरापव्यपहि सीया सीओदाहि य महाणईहिं अह भागपविभन्ते मंद्रस्य पव्यपस्य पुरित्थिमपञ्चित्योणं बावीसे २ जोयण सहस्साई आयामेणं) यह वन सौमनस्, विद्युत्प्रभ, गंधमादन, और माल्यवान् इन वक्षस्कार पर्वतों से एवं शीतासीतोदा महानदियों से आठ विभाग रूप में विभक्त कर दिया गया है उसके आठ भाग इस प्रकार से हैं—मेरुगिरिकी पूर्व दिशा में इसका प्रथम भाग

सौमनस, विद्युत्प्रभ, गंधमादन, और माल्यवान इन वक्षस्कार पर्वतों से एवं शितासीतोदा महानदियों से आठ विभाग रूप में विभक्त कर दिया गया है उसके आठ भाग इस प्रकार से हैं-मेरुगिरिकी पूर्व दिशा में इसका प्रथम भाग है मेरुगिरि की पश्चिमदिशा में इसका द्वितीय भाग है विद्युत्प्रभ सौमनस इन दो वक्षस्कार पर्वतों के बीच में दक्षिणदिशा की ओर इसका तृतीयभाग है गन्धमादन और माल्यवान वक्षस्कार पर्वतों के बीच में उत्तर दिशा की ओर इसका चतुर्थ भाग है मेरु की उत्तरदिशा में बहनेवाली शीतोदा महानदी के द्वारा पूर्व पश्चिम भाग रूप से देधिकृत दक्षिणखण्डरूप इसका पांचवां भाग है मेरुकी पश्चिमदिशा में बहनेवाली शीतोदा महानदी के द्वारा दक्षिण पश्चिमभाग रूप से देधिकृत पश्चिमखण्डरूप छट्टा भाग है मेरु की दक्षिणदिशा की ओर वहनेवाली शीता महानदी के द्वारा पूर्वपश्चिम विभागरूप से देधिकृत उत्तर खंड

विश्तीर्ष छे. 'सोमणसविष्जुपहगंधमायण मालवंतेहिं वक्खारपव्ववहि सीया सीओ दाहिय महाणईहिं अट्ट मागपविभत्ते मंदरस्स पव्वयस्स पुरित्यमपच्चित्यमेणं बावीसे र जोयणसहरसाई आयामेणं' आ वन सौभनस, विद्युत्पल, गंधमाहन अने भाल्यवान के वक्षस्थार पर्वतीर्थी तेमक सीता सीतेहा महानहीं आश्री आह विलाग इपमां विलक्ष्त अस्वामां आवेद छे. तेना को आह लागे। आ प्रमाणे छे मेरु गिरिनी पूर्व हिशामां केना प्रथम लाग छे. मेरु गिरिनी पश्चिम हिशामां केना द्वितीय लाग छे. विद्युत्पल सौभनस को ले वक्षस्थार पर्वतीना मध्य लागमां हिस्स हिशा तरई केना तृतीय लाग छे. गन्धमाहन अने माल्यवान वक्षस्थार पर्वतीना मध्यमां उत्तर हिशा तरई केना बतुर्य लाग छे. मेरुनी उत्तर हिशामां प्रवाहित थती शीतोहा महानही वह पूर्व पश्चिम लाग इपथी दिधाइत हिशा अं इप केना पंचम लाग छे. मेरुनी पश्चिम हिशामां प्रवाहित थती शीतोहा महानही वह पूर्व पश्चिम आं उद्याहित थती शीतोहा महानही वह पूर्व पश्चिम आं उद्याहित थती शीतोहा महानही वह पूर्व स्थिम अं उद्याहित थती शीता महा नही वह पूर्व स्थिष पर्व स्थान हिशामां प्रवाहित थती शीतोहा महानही वह हिशा हिशा तरह प्रवाहित थती शीता महा नही वह पूर्व स्थान स्थान हिशा सहानही वह पूर्व स्थान हिशा हिशा सहानही वह सुख्य हिशा तरह प्रवाहित थती शीता महा नही वह पूर्व स्थान स्थान हिशा सहानही वह पूर्व स्थान हिशा सहानही वह सुख्य हिशा तरह प्रवाहित थती शीता सहा नही वह पूर्व स्थान स्थान हिशा सहानही वह पूर्व स्थान हिशा सहानही वह पूर्व स्थान हिशा सहानहीं वह पूर्व स्थान हिशा सहानहीं स्थान हिशा सहानहीं स्थान हिशा सहानहीं हिशा सहानहीं स्थान हिशा सहानहीं स्थान हिशा सहानहीं हिशा सहानहीं सह

दक्षिणोत्तरविभागाभ्यां द्वैभीकृतपूर्वखण्डरूपोऽष्टमो भागः ८, विभागाष्ट्रकः कोष्ठम्



'मंदरस्य' मन्दरस्य 'पञ्चयस्स' पर्वतस्य 'पुरिव्यमपचित्यमेणं' पौरस्त्यपश्चिमेन पूर्व-पश्चिमयो दिशोः प्रत्येकं 'बाबीसं २' द्वाविंशति २ 'जोयणसद्दस्साइं' योजनसहस्राणि 'आयामेणं' आयामेन, तत्प्रकारो यथा—कुरुजीवा ५३००० त्रिपश्चाशघोजनसहस्राणि, एकैक-स्यां जीवायां स्थितस्य वक्षस्कारपर्वतस्य मूळे विस्तारः पञ्चयोजनशतानि ५०० द्वयो द्वयो र्वक्षस्कारपर्वतयोर्मू छे विस्तारमानं योजनसहस्रं तस्य पूर्वराशौ प्रक्षेपे ५४००० चरुष्पञ्चाश-

इसका सातवां भाग है। तथा मेरु से पूर्विदशा की ओर बहनेवाली शीता महा-नदी के द्वारा दक्षिण उत्तरिवभाग रूप से द्वैधीकृत पूर्वलण्डरूप इसका ८ आठवां भाग है। मन्दरपर्वत की पूर्वपश्चिम दिशा में इसका आयाम बाईस बाईस हजार योजन का है यहां पर संस्कृत टीका में दी हुइ आकृति देख छेना चाहिये।

(उत्तर दाहिणेणं अद्धाइज्जाइं जोयणसयाइं) तथा उत्तर और दक्षिण दिशा में इसका विष्कम्म २॥-२॥ सौ योजन का है इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार से है-कुरुक्षेत्र की जीवा प्रत्यश्चा-५२००० योजन की है एक एक जीवा में स्थितों वक्षस्कार पर्वत का मूल में विस्तार ५०० सौ योजन का है दो वक्षस्कार पर्वत के मूल में विस्तार का प्रमाण १००० योजन का होता है-५३००० में इस

પશ્ચિમ વિભાગ રૂપથી દિધાકૃત ઉત્તર ખંડ એના સપ્તમ ભાગ છે. તેમજ મેરુથી પૂર્વ દિશા તરફ પ્રવાહિત થતી શીતા મહા નદી વડે દક્ષિણ ઉત્તર વિભાગ રૂપથી દિધાકૃત પૂર્વ ખંડ રૂપ એના અષ્ટમ ભાગ છે.

મન્દર પર્વતની પૂર્વ પશ્ચિમ દિશામાં એના આયામ ખાવીસ હજાર યોજન જેટલા છે. અહીં સંસ્કૃતમાં આપ્યા પ્રમાણે આકૃતિ જોઈ લેવી.

उत्तरदाहिणेणं अद्धाइड्डाई जोयणसयाइ' तेभग उत्तर दक्षिण दिशामां क्रेना विष्ठं स र॥-२॥ से। ये जन केटेदी। छे. क्रेनुं स्पष्टीहरण क्या प्रमाणे छे-इनुक्षेत्रनी छवा प्रत्यं या-५३००० ये।जन केटेदी छे. क्रेड-क्रेड छवामां स्थित वक्षण्डार पर्वतने। मूद्रमां विस्तार ५०० ये।जन केटेदी छे. छे वक्षस्कार पर्वतीना मूणना विस्तारनुं प्रमाणु १००० ये।जन केटेदी होय धोजनसहस्राणि, तस्मान्मेरुविस्तारे शोधिते शेषं ४४००० चतुश्रतारिंश घोजनसहस्राणि, त्रेषामद्धे २२००० द्वार्विशति योंजनसहस्राणि मन्दरपर्वतस्य पूर्वपश्चिमयो दिंशो भ्वन्ति, पतत्प्रकारान्तरं हि-शीतावनमुखं २९२२ द्वार्विशत्यधिक नवशताधिक द्वि सहस्र योजनानि, अन्तरनद्यः पद च ७५० सार्द्ध सप्तशतयोजनानि, अन्तरनद्यः पद च ७५० सार्द्ध सप्तशतयोजनानि, अन्तर्य वक्षस्कारपर्वताः चतुःसहस्रयोजनानि, श्रातोदामुखवनं २९२२ शीतामुखवनवद् द्वार्विशत्यधिकनवशताधिक द्विसहस्रयोजनानि, पतेषां विस्तारसंख्यासंकलनायाम् पद चत्वारिंशद्योजनसहस्राणि भवन्ति, एतत्प्रमाणं च खक्षप्रमाणमहाविदेहजीवायाः शोध्यते, शेषं चतुःपश्चाशद्योजनसहस्राणि, एतत्प्रमाणं भद्र-शालवनं क्षेत्रं, तच मेरुयुतमिति धरणितल्रवृत्ति दशयोजनसहस्रशोधने शेषं चत्वारिंशद्योजनन

एक हजार की राशि को जोड़ने पर ५४००० होते हैं मेरु के विस्तार में से ५४००० कम कर देने पर ४४००० बचते हैं-इनको आधा करने पर २२००० जो आते हैं यही मन्दर पर्वत की पूर्व पश्चिम दिशा में इसके आया- मका प्रमाण निकल आता है अथवा यह संख्या इस प्रकार से भी लभ्य हो जाती है शीता नदी का वनमुख २९२२ योजन का है छह अन्तर निद्यों का विस्तार ७५० योजन का है आठ वक्षस्कारों का विस्तार ४००० योजन का है १६ विजयों-का प्रशुत्व ३५४०६ योजन का है शीतोदानदी का वनमुख २९२२ योजन का है इन सबका जोड ४६००० आता है महाविदेह क्षेत्र की जीवा का प्रमाण १ लाख योजन का है एक लाख मे से ४६ हजार को घटाने से ५४००० हजार बचते हैं सो यह प्रमाण भद्रशाल बन क्षेत्र का है इस में मेरुके घरणी- तल का प्रमाण भी सिष्मिलित है-अतः मेरु के घरणीतल का १००० हजार योजन का प्रमाण और कम कर देने पर ४४ हजार योजन आ जाते हैं इनका आधा

છે. પ૩૦૦૦માં આ એક હજાર જેટલી રાશિને જેડીએ તો પ૪૦૦૦ થાય છે. મેડુના વિસ્તારમાંથી પ૪૦૦૦ સંખ્યા અદ કરવાથી ૪૪૦૦૦ શેષ રહે છે. આ સંખ્યાને અર્ધા કરીએ તો ૨૨૦૦૦ થાય છે. અજ મન્દર પર્વતની પૂર્વ-પશ્ચિમ દિશામાં એના આયામનું પ્રમાણ છે. અથવા આ સંખ્યા આ પ્રમાણે પણ મેળવી શકાય તેમ છે. શીતા નદીનું વનસુખ ૨૯૩૨ યાજન જેટલું છે. ૬ છ અંતર નદીઓના વિસ્તાર ૭૫૦ યાજન જેટલા છે. ૮ વલસ્કારોના વિસ્તાર ૪૦૦ યાજન જેટલાં છે. ૧૬ વિજયાથી સમ્ખદ્ધ પૃથુત્વ ૩૫૪૦૨ યાજન જેટલું છે. શીતાદા નદીનું વનસુખ ૨૯૨૨ યાજન જેટલું છે. એ સર્વના સરવાળા ૪૬૦૦૦ થાય છે. શીતાદા નદીનું વનસુખ ૨૯૨૨ યાજન જેટલું છે. એ સર્વના સરવાળા ૪૬૦૦૦ થાય છે. મહાવિદેહ ક્ષેત્રની જીવાનું પ્રમાણ ૧ લાખ યાજન જેટલું છે. એક લાખમાંથી ૪૬ હજારને આદ કરીએ તો ૫૪૦૦૦ શેષ રહે છે. તો આ પ્રમાણ લદ્ગ- શાલ વન ક્ષેત્રનું છે. આમાં મેડુના ધરણીતલનું પ્રમાણ પણ સમ્મિલિત છે. એથી મેડુના ધરણીતલનું ૧૦૦૦ (એક હજાર) યાજન પ્રમાણ કમ કરવાળી ૪૪ હજાર યાજન આવી

सहसाणि तस्याद्धें एकैकस्मिन् पार्श्वे द्वाविंशतिः २ योजनसहस्राणि सम्पद्यन्त इति । तथा मन्दरगिरेः 'उत्तरदाहिणेणं' उत्तरदक्षिणेन उत्तरदक्षिणयो दिंशोः प्रत्येकं 'अद्धाइज्जाइं २' अर्द्धतृतीयानि २ 'जोयणसयाइं' योजनशतानि 'विक्खंभेणं' विष्कम्भेण-विस्तारेण मद्रशाल्यकं देवोत्तरक्षस्तु प्रविष्टितित्यंः, अथैतस्य पद्मवरवेदिकायनषण्डपरिवेष्टितत्त्वेन तद् वर्णयति—'से णं' तत् खल्ल भद्रशाल्यनं 'एगाए' एक्षया 'पउमवरवेदिकाय पद्मवरवेदिकया 'एगेण य' एकेन च 'वणसंहेणं' वनषण्डेन 'सन्वश्रो समंता' सर्वतःसमन्तात् 'संपरिविखते' सम्परिक्षिप्तं—परिवेष्टितमस्ति, अनयोः 'दुण्डवि' द्वयोरि पद्मवरवेदिका वनषण्डयोः 'वण्णओ' वर्णकः—वर्णनपरपदसमूहः 'भाणियव्वो' भणितव्यः—वक्तव्यः, तत्र पद्मवरवेदिका-वर्णकश्रत्वे सूत्रव्याख्यातो बोध्यः, वनषण्डवर्णकोऽिष 'किण्हे किण्होभासे' कृष्णः कृष्णाव-भास इत्यादिः चतुर्थ सूत्रव्याख्यातो बोध्यः, तद्योऽिष तत एव बोध्यः, 'जाव देवा आसरवंति सयंति' यावद् देवा आसते श्रेरते—इत्यत्र यावस्पदेन—'तत्थ णं बहवो बाणमन्तरा'

२२ हजार २२ हजार योजन होता है सो यही प्रमाण इसके पूर्व पश्चिम दिशा में आयाम का निकल आता है तथा दक्षिण और उत्तर में जो इसके विस्तार का प्रमाण २॥-२॥ योजन का कहा गया है सो इसका ताल्पर्य ऐसा है कि यह देवकुर और उत्तर कुरु में २॥-२॥ सो योजन तक भीतर प्रवेश किया हुआ है (से णं एगाए पडमवरवेह याए एगेण य वणसंडेण सक्वओ समंता संपरिक्षित्र को वह भद्रशाल वन एक पद्मवरवेदिका और एक वनखंड से अच्छी तरह सब तरफ से घिरा हुआ है (दुण्हविवण्णओ) यहां पर इन दोनों का वर्णक पाठ चतुर्थ सूत्र से और वनषण्ड का वर्णक पाठ "किण्हे किण्हो भासे" इत्यादि स्प में चतुर्थ सूत्र की व्याख्या से समझलेना चाहिये (जाव देवा आसयंति सयंति) यहा यावल्पद से "तत्थणं वहवे वाणमन्तर।" इन पदों का संग्रह हुआ है "देवा" पद यहां उपलक्षण रूप है इसमें "देवीओ य" इस पदका संग्रह हो जाता है

लाय छे. એना ण लाग डरी से तो २२ ढलर, २२ ढलर येलन थर्ड लाय छे. सेल प्रमाण केना पूर्व पश्चिम हिशामां स्वायमतुं नीडणी स्वाये छे. तेमल हिशासुं सन्तमां के सेना विस्तारनुं प्रमाण दार या येलन लेटलुं डढ़ेवामां स्वावे छे तो सेना लावार्थ स्वाय प्रमाणे छे है स्वा हेवडुंदु स्वने उत्तरपुंदुमां राा—रार येलन सुधी संहर प्रविष्ट ध्रिक्ष छे. 'से ण एगाए पडमवरवे इयाए एगेण य वणसंडे लं सब्ब से समंता संपरिक्षित ते' ते लद्रशालवन सेंड पदावरवे हिंडा स्वने केंड वनणंद्रशी योभर सत्री रीते वीटणाये लुं छे. 'दुण्ह वि वण्ण को' स्वा केने विश्वे पाठ हिंडा येल सेना वर्ण हें पाठ हिंडा छे, तेने लगते। वर्णुंड पाठ यतुर्थ स्त्रमांथी सेने वनणंद्रने। वर्णुंड पाठ 'किण्हें किण्हों मासे' वगेरे ३ पमां यतुर्थ स्त्रमांथी काष्ट्री हेवुं लेडि से. 'जाव देवा कास्येति संयंति' स्वी यावत् पहर्थी 'तत्थणं बहवे वाणमंतरा' से पडीने। संश्रुह थेथे।

इति सङ्ग्राह्यम् 'देवा' इत्यु पलक्षणं, तेन 'देशी भो य' इत्यस्य ग्रहणम् 'आसते शेरते' इत्यु-पछलणं, तेन 'चिहंति णि नोयं ते' इत्यादीनां पदानां ग्रहणम्, एतेषां पदानां विवरणं पञ्चम-सूत्राब्दोध्यम्, अथात्र सिद्धायतनादि वक्तव्यमाह-'मंदरस्स णं' मन्दरस्य खल्ज 'पव्ययस्स' पर्वतस्य मेरुगिरेः 'पुरित्थमेणं' पौरस्त्येन-पूर्वस्यां दिशि 'भद्दसालवनं' भद्रशालवनं 'पण्णासं' पश्चाशतं 'जोयणाइं' योजनानि 'ओगाहित्ता' अवगाह्य-प्रविश्य- अतिक्रम्येति यावत् 'एत्थ' अत्र-अत्रान्तरे 'णं' खळु 'महं एगे' महदेवं 'सिद्धाययणे' सिद्धायतनं 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तम्, तच प्रमाणादिना वर्णयति-'पण्णासं' पञ्चाशतं 'जोयणाई' योजनानि 'आयामेणं' आयामेन दैंध्येंण, 'पणवीसं' पञ्चर्विञ्चति 'जोयणाइं' योजनानि विक्खंभेणं' विष्क्रम्भेण-विस्तारेण 'छत्तीसं' पट्टिशतं 'जोयणाइं' योजनानि 'उद्धं' ऊर्ध्वम् 'उच्चत्तेणं' उच्चत्वेन 'अणेगसंभ-सयसिणविद्रे' अनेकस्तम्भशतसिश्विष्टम् इत्युपलक्षणं, तेन स्तम्भोद्गतेत्यादि पदानां सङ्ग्रहणम् एवं 'वण्णभौ' वर्णकोऽत्र बोध्यः, स च पश्चदशस्त्रात्सार्थी बोध्यः, अयात्र द्वारादि वर्णयितुमाह-'तस्स णं' तस्य-सिद्धायतनस्य खन्छ 'तिदिश्चि' त्रिदिसि विसृषु दिश्च "आसते दोरते" ये कियापद भी उपलक्षण रूप है-इन से" चिट्टंति, णिसीयंति" इत्यादि कियापदों का ग्रहण किया गया है इन सबका विवरण पंचम सूत्र से समझलेना चाहिये (मंदरस्स णं पन्वयस्स पुरित्थमेणं भइसालवणं पण्णासं जोय-णाई ओगाहिसा एत्थणं महं एगे सिद्धाययणे पण्णसे) मंद्र पर्वत की पूर्वदिशा में भद्रवालवन है इस से ५० योजन आगे जाने पर एक बहुत विद्याल सिद्धा-यतन है (पण्णासं जोयणाई आयामेणं, पणवीसं जोयणाई विक्लंभेणं, छत्तीसं जोयणई उद्धं उच्चत्तेणं अणेगसंभसयसंनिविद्धं वण्णओ) यह सिद्धायतन आयाम की अपेक्षा ५० योजन का है और विष्कंम्भ की अपेक्षा ६५ योजन का है इसकी ऊंचाई ३६ योजन की है यह सैंकडो स्तम्भों के उपर खडा हुआ है इसका वर्णकपाठ पंद्रह १५ वे सूत्र से जानलेना चाहिए (तस्स णं सिद्धायय)

छे. 'देवा' पह अहीं उपत्यक्षण ३५ छे. योमां 'देवीओ य' आ पहाना संग्रह थया छे. 'आसते, शेरते' यो हियापहे। पण उपत्यक्षण ३५ छे. योनाथी—'चिट्टंति, णिसीयंति, धर्याहि हियापहे। नुं अहण थयुं छे. यो सर्वनुं विवरण पंयम सूत्रमांथी समल क्षेतुं लिहिया मंदरस्स णं पत्वयस्स पुरिश्यमेणं महसालवणं पण्णासं जोयणाई ओगाहिता एथ्यणं महं एगे सिद्धाययणे वण्णत्ते' मंहर पर्वतनी पूर्व हिशामां सद्राय्यत कावेतुं छे. योनाथी प० योजन आगण कतां उपर योज अतीव विशाण सिद्धायतन आवेतुं छे. (पण्णासं जोयणाई आयामेणं, पणवीसं जोयणाई विक्संमेणं छत्तीसं जोयणाई उद्धं उच्चत्तंणं अणेगसंमसय-संनिविट्टं वण्णओ' आ सिद्धायतन आयामनी अपेक्षाये प० योजन केटतुं छे. अने विष्ठं सनी अपेक्षाये ये २५ योजन केटती छे. आ सहस्रो स्तंभि छे २५ योजन केटती छे. या सहस्रो स्तंभी उपर अपेक्षाये ये २५ योजन केटती छे. या सहस्रो स्तंभी उपर अपेक्षाये थे २५ योजन केटती छे. या सहस्रो स्तंभी उपर अपेक्षा थे २५ थे। योजन केटती छे. या सहस्रो स्तंभी उपर अपेक्षा थे २५ योजन केटती छे. या सहस्रो स्तंभी उपर अपेक्षा थे २५ थे। योजन केटती छे. या सहस्रो स्तंभी उपर अपेक्षा थे २५ थे। योजन केटती छे. या सहस्रो स्तंभी उपर अपेक्षा छे. योनी वर्षा अपेक्षा स्तंभी आधी होते। लेडि योजन केटली छे. योनी वर्षा पर परंहरमां सूत्रमांथी आधी होते। लेडि योजन केटली छे.

'तओ दारा' जीणि द्वाराणि 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्तानि, 'ते णं' तानि खल्ल 'दारा' द्वाराणि 'अद्व जोयणाइं' अष्ट योजनानि 'उद्धं उच्चत्तेणं' अर्ध्वमुच्चत्वेन 'चत्तारि' चत्वारि 'जोयणाइं' योजनानि 'विक्खंभेणं' विष्कम्भेण-विस्तारेण 'तावइयं चेव' तावदेव-तत्प्रमाणमेव योजन-चतुष्टयमेवेत्पर्थः 'पवेसेणं' प्रवेशेन प्रवेशमार्गावच्छेदेन, 'सेया' श्वेतानि-शुक्छवर्णानि 'वरकणगधूभियागा' वरकनकस्तूपिकानि-उत्तमस्त्र्णमयशिखरम्रक्तानि, एतद्वाराणि वर्णियतुं स्चयति-'जाव वणमालाओ' यावद्वनमालाः-ईहामृगेत्यारभ्य वनमालापर्यन्तवर्णको वोध्यः, सचाष्टमस्त्रात्सार्थो प्राह्यः । तथा 'भूमिभागो य' भूमिभागश्च 'भाणियव्यो' भणितव्यः-वक्तव्यः तस्य वर्णनं पश्चमस्त्रवाद्वोध्यम्, 'तस्स णं' तस्य भूमिभागस्य खल्ल 'बहुमञ्झदेसभाए' बहुमध्यदेशभागे-अत्यन्तमध्यदेशभागे 'एत्थ णं' अत्र-अत्रान्तरे खल्ल 'महं एगा' महत्येका 'मिणपेतिया' मणिपीठिका मणिमयत्रासनविशेवः, 'पण्णत्तः' प्रज्ञप्ता, सा च 'अह' अष्ट 'जोयणाइं' योजनानि 'आयामविक्खंभेणं' आयामविष्कम्भेण देध्येविस्ताराभ्याम् 'चक्तारि'

णस्स तिदिसि तओ दारा पण्णत्ता) इस सिद्धायतन के तीन दिशाओं में तीन द्रवाजें कहे गये हैं। (ते णं दारा अद्वजीयणाई उद्घं उच्चत्तेण, चलारि जोयणाई विक्लंभेणं ताबहयं चेव पवेसेणं सेआ वरकणगथू नियागा जाब वणमालाओं भूमिभागो य भाणियव्वो) ये द्वार आठ योजन के ऊंचे हैं चार योजन का इनका विक्लम्भ है और इतना ही इनका प्रवेश हैं ये श्वेत वर्ण के हैं और इनकी जो शिखरे हैं वे सुन्दर सोने की बनी हुई हैं। यहां पर वन मालाओं का एवं भूमिभाग का वर्णन करलेना चाहिये वनमालाओं का वर्णन "इहामिय" आदि पाठ से जानलेना चाहिये यह पाठ अष्टम सूत्र से और भूमिभाग का वर्णन पश्चम सूत्र से समझलेना चाहिये वनमाला और भूमिभाग के वर्णन तक ही इन द्वारों का वर्णन किया गया है (तस्सणं वहुज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगा मिण्चेिया पण्णत्ता) उसी भूमिभाग के ठीक बीच में एक विशाल मिणपीठिका

'तरस णं सिद्धाययणस्स तिदिसिं तओ दारा पण्णत्ता' का सिद्धायतननी त्रण् दिशाओमां त्रण् हरवालको। आवेसा छे. 'तेणं दारा अह जोयणाई उद्धं उच्चतेणं, चतारि जोयणाई विक्षं भेणं तावइयं चेव पवसेणं सेआ वरकणगयूमियागा जाव वणमछाओ मूमिमागो य माणियन्त्रों के द्वारा आठ थे। अन केटसा छे. थार थे। अन केटसा के द्वारोनी विष्ठं स छे, अने आटसे। अने अने अने अवेश छे. थे। द्वारो वर्षा के केमना के शिक्षरा छे ते अंहर सुवर्ण् निर्मित छे. अहीं वनमाणाको तेमक स्मिसागनुं वर्णुन हरी सेवुं लिएके। वनमाणाको तेमक स्मिसागनुं वर्णुन हरी सेवुं लिएके। वनमाणाको लेक क्षिसागनुं वर्णुन इहामिय' वर्गेरे पाठवी लाणुं सेवुं लिएके। का पाठ अष्टम सूक्ष्माथी अने स्मिसागनुं वर्णुन पंथम सूत्रमांथी लाणुं सेवुं लिएके। वनमाणा अने स्मिसागना वर्णुन सुधी क को द्वारोनुं वर्णुन हरवामां आवेसुं छे. 'तस्स णं बहुमज्झदेस-साण एत्थणं महं एगा मणिपेडिया पण्णत्ता' ते स्मिसागना ठीड भध्य सागमां के

चत्वारि 'जोयणाइ'' योजनानि 'बाइल्छेणं' बाइल्येन-पिण्डेन 'सव्वर्यणामई' सर्वरत्नमयी सर्वीत्मना रत्नमयी 'अच्छा' अच्छा, इद्मुपलक्षणं, तेन श्ळक्षणादि परिग्रहः पूर्ववत् । 'तीसे णं' तस्याः खळु 'मणिपेढियाए' मणिपीठिकायाः 'उवरिं' उपरि 'देवच्छंदए' देवच्छन्दकः देवो-पवेशनार्थमासनम्, स च 'अह जोयणाइ'' अष्ट योजनानि 'आयामविक्खंभेषं' आयामविष्कम्भेष 'साइरेगाइं' सातिरेकाणि-किश्चिद्धिकानि 'अह जोयणाइं' अष्ट योजनानि 'उद्धं उच्चत्तेणं' ऊर्ध्वग्रुच्चत्वेन 'जाव जिणपिडमावण्णओ' याविज्ञिनप्रतिमावर्णकः .अत्र यावत्पदेन-'इत्थ अहसर जिजपिडिमाणं पण्णत्ते, तासि णं जिजपिडिमाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णतें इत्यादिरूपो जिनप्रतिमानां -यक्षप्रतिमानां वर्णको ग्राह्यः, तथा 'देवच्छंदग्रस' देवच्छन्द्क-स्य देवासनविशेषस्य 'सन्वरयणामये' इत्यादिरूपो वर्णको बोध्यः 'जाव ध्रुवकडुच्छ्याणं' कही गई है (अड जोषणाइ आयामविक्लंभेणं) इस मणिपीठिका का आयाम और विष्कम्भ आठ योजन का है। (चत्तारिजीयणाइं बाहल्लेणं सन्वरयणामई अच्छा) इसका बाहल्य-मोटाई-चार योजन का है यह सर्वात्मना रतनमयी है और आकाश एवं स्फटिक मणिके जैसी निर्मल है ''अच्छा'' यह पद यहां उपल-क्षण रूप है, इस से श्रक्षण आदि पदों का ग्रहण हो जाता है (तीसे णं मणिपेडि-याए उवरि देवच्छंदए अह जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, साइरेगाइं अह जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं जाव जिणपिडमा वण्णओ) उस मणिपीठिका के जपर एक देवच्छन्दें देवों के बैठने का आसन है उस आसन का आयाम और विष्कम्भ आठ योजन का है और इसकी ऊंचाई भी कुछ अधिक आठ योजन की ही है यहां यावत जिन प्रतिमाएं है यहां यावत्पद से ''इत्थ अहसए जिण पडिमाणं पण्णते तासिणं जिणपडिमाणं अयमेवारूवे वण्णावासे पण्णते" इस पाठ का संग्रह हुआ है यहां जिनप्रतिमा से कामदेव की प्रतिमा तथा यक्ष

विशाण मिल्पिरिंडा आवेली छे. 'अंद्र जोयणाई आयामिक्कंमेणंओ' आ मिल्पिरिंडाना आयाम-विष्डं का आठ थेलिन केटलें छे. 'चत्तारि जोयणाई बाहल्केणं सम्वर्यणामई अच्छा' अने। आह्रक्य अटले हे मेटार्ड यार थेलिन केटली छे. आ सर्वात्मना रत्नमयी छे, अने आडाश तेमक स्ह्रिड मिल्वित् निर्मण छे. 'अच्छा' आ पह अहीं अपलक्ष ३५ छे. अनाथी श्वक्ष वगेरे पहेानुं अहुण थयुं छे. 'तीसेणं मिणिपेडियाए खबरि देवच्छंदए अहु जोयणाई आयामिक्कंमेणं, साइरेगाई अहु जोयणाई उद्धं उच्चतेणं जाव जिणपिडिया वण्णओ' ते मिल्पिरिंडानी अप अंड हेवच्छन्ह ओटले हे हेवाने असवा माटेनुं आसन छे ते आसन्ती। आयाम-विष्डं का आठ थेलिन केटले छे हेवच्छन्ह ओटले केटले हे हेवाने असवा माटेनुं आसन छे ते आसन्ती। आयाम-विष्डं का आठ थेलिन केटले छे लेने तेनी अवार्ड पण्ड इंग्ड वधारे आठ थेलिन केटली छे. अहीं थावत्प पड़िंची किन प्रतिमाओने। संअह थ्ये। छे. अहीं यावत्प केटली छे. अहीं किन प्रतिमाओने। संअह थ्ये। छे. अहीं यावत्प केटली ईत्य अटलए जिलपिडनाणं पण्णते तासिणं जिलपिडनाणं अयमेयाक्षवे वण्णान्वासे पण्णते' ओ पाठने। संथह थ्ये। छे. अहीं किन प्रतिमाओशी डामहेवनी प्रतिमा

णावद्ध्पकडुच्छुकानाम् अत्र यावत्पदेन 'अहसए' इत्यस्य ग्रहणम्, तथा च अष्टशतं ध्रपकडुच्छुकानां ध्रपात्रविशेषाणां प्रज्ञप्तम्, अनयोिननप्रतिमा ध्रपकडुच्छक्यो वेर्णको राजनप्रशीयस्त्रस्याशीतितमैकाशीतितमाभ्यां स्त्राभ्यां ग्राह्यः, तद्येश्व तयोरेव मत्कृतसुवीधिनीटीकातोऽवसेय इति । अथावशिष्ट सिद्धायतनवर्णनार्थमुक्तरीितं प्रदर्शयति—'मंदरस्स णं' मन्द्रस्य खळु 'पन्वयस्स' पर्वतस्य 'दाहिणेणं' दक्षिणेन—दक्षिणदिशि 'भइसाळवनं' भद्रशाळवनं 'पण्णासं' पश्चाशतं योजनािन अवगाहि त्र ग्रह्मम् 'एवं' एवम् उक्तरीत्या 'चउदि-सिदि' चतुर्दिश्यपि दिक्चतुष्टयेऽपि 'मंदरस्स' मन्दरस्य पर्वतस्य 'भइसाळवणे' भद्रशाळवने 'चत्तारि' चत्वारि 'सिद्धाययणा' सिद्धायतनािन 'माणियन्वा' मणितन्यािन, वक्तव्यानीत्यर्थः यद्त्र सिद्धायतनित्रकस्यातिदेशे कर्चन्ये तन्चतुष्टयातिदेशः कृतस्त्रत्र समाधानं जम्बूद्धीप-द्धारवर्णकोक्तम् 'एवं चत्तारि वि दारा माणियन्वा' इत्येतत्स्त्रत्यास्यानमनुसत्य बोध्यम्, अवैतदन्तर्गतपुष्टकरिणो चतुष्टयं वर्णयितुमुपक्रमते—'मंदरस्स' मन्दरस्य 'णं' खळु 'पन्वयस्स' पर्वतस्य 'उत्तरपुरिश्यमेणं' उत्तरपीरस्त्येन ईशानकोणे 'भइसाळवनं 'मदशाळवनं 'पण्णासं'

प्रतिमाओं को जानना चाहिये (देव चंदि गस्स जाव धूवक डुच्छुयाणं इति) यह देव चंदि सर्वोत्मना रत्नमय है यावत् यहां पर १०८ धूपक डाहे हैं – जिनमे धूप जलाई जाती है जिनप्रतिमा और धूपक टाहों का वर्णन जानने के लिये राजप्रद्रनीय सूत्र के ८० और ८१ सूत्रों को देखना चाहिये उनकी टीका में मैने इस विषय को स्पष्ट किया है (मंद्रस्स णं पव्वयस्स दाहिणेणं भद्दसालवणं पण्णासं एवं चडिहिंसं पि मद्रस्स भद्दसालवणे चलारि सिद्धाययणा भाणिय व्वा) मन्द्र पर्वत की दक्षिण दिशा में भद्रशालवन में ५० योजन आगे जाने पर – भद्रशालवन में ५० योजन प्रवेश करने पर मन्द्र पर्वत की चारों दिशाओं में भद्रशालवन में सिद्धायतन है यहां तीन सिद्धायतन कहना चाहिये थे – परन्तु जो चार सिद्धायतन कहे गये हैं इस सम्बन्ध में समाधान जम्बू द्वीपदार के वर्णक में कह

तेमक यह प्रतिमाणे। काण्वी कोई थे. 'देवच्छंदगस्स जाव ध्वकडुच्छुयाणं इति' आ देवच्छंद सर्वात्मना रत्नमय छे. यावत् अहीं १०८ धूप इटाहे। छे. केमां धूप सण्याव-वामां आवे छे. किनप्रतिमाणे। अने धूप इटाहे।ना वर्णुन विषे काण्वा माटे राक प्रश्नीय सूत्रना ८० अने ८१मा सुत्रो केवा कोई थे. भे सूत्रोनी टीहामां में आ विषयत रप्रशीय सूत्रना ८० अने ८१मा सुत्रो केवा कोई थे. भे सूत्रोनी टीहामां में आ विषयत रप्रशीहरण इहीं छे. 'मंदरस्स णं पव्ययस्स दाहिणेणं मद्मालवणं पण्णासं एवं चडिहिंस पि मंदरस्स महसालवणे चत्तारि सिद्धाययणा भाणियव्वा' मंदर पर्वतनी दक्षिण दिशामां अद्रशास वनमां प० ये।कन प्रविष्ट ध्या पछी मन्दर पर्वतनी थे।भेर, अद्रशास वनमां थार सिद्धायतना आवेसा छे. अहीं त्रष्ट्र सिद्धायतना इहेवामां आवेसा छे, अहीं त्रष्ट्र सिद्धायतना इहेवामां आवेसा छे, सिद्धायतना इहेवामां आवेसा छे, स्राधान करं धूदीप दारना वर्णुक्षमां इरवामां आवेसुं छे. आ समाधान

पञ्चाशतं 'नोयणाई' योजनानि 'ओगाहित्ता' अवतात्व अतीत्य 'एत्य र्णं' अत्र अन्नान्तरे **खंख 'चत्तारि' चतसः 'णंदापुक्खरिणीओ**' नन्दापुष्करिण्यः नन्दाख्याः शाश्वताः पुष्करिण्यः 'पण्णत्ताओ' प्रज्ञप्ताः 'तं जहा' तद्यथा 'पउमा' पद्मार 'पउमप्पभा' पद्मप्रभा २ 'चेव' चैव 'क्रुमुदा' कुमुदा ३ 'कुमुद्प्पभा' कुमुद्र्यभा ४ इति, ताः प्रमाण-दितो वर्णयितुमा**ह-'ताओ णं'** इत्यादि ताः अनन्तरोक्ताः खळु 'पुत्रखविणीओ' पुष्करिण्यः 'यंचासं' पञ्चाशतं 'जोयणाई' योजनानि 'अध्यापेणं' आयामेन दैध्येंण 'पणवीसं' पश्चविंशतिं 'जोयणाई' योजनानि 'विक्खंभेंंंं' विष्क्र≄भेण विस्तारेण 'दसजोयणंइं' दशयोजनानि 'उघ्वेदेणं' उद्वेधेन भूमि-प्रवेशेन इण्डत्वेन 'वेइया वनसंडाणं' वेदिका वनपण्डयोः 'वण्णओ' वर्णकः 'भाणियध्वो' भणितव्यः-वक्तव्यः, स च चतुर्थस्य मत्कृतव्याख्यातो बोध्यः, तद्रथश्च तत एव बोध्यः, 'चतुः दिया गया है यह समाधान वहां 'एवं चत्तारिवि दारा भाणियव्वा' इस सूत्र के अनुसार जानलेना चाहिये (मन्दरस्स णं पव्ययस्स उत्तरपुरिथमेणं भइसालवर्ण पण्णसिं जोचणाइं ओगाहिसा एत्थणं चत्तारि णंदापुक्खरिणीओ पण्णसाओ) मन्दर पर्वत के ईशानकोण में भद्रशालवन को ५० योजन पार करके आगत-स्थान में चार नन्दा नामकी शाश्वत पुष्करिणियां हैं (तं जहा) इनके नाम इस प्रकार से है-(वडमार, वडमव्यभार, चेव कुमुदा३, कुमुद्व्यभा४) पद्मा, पद्म-प्रभा, कुमुदा और कुमुदप्रभा (ताओ णं पुरुखरिणीओ पण्णासं जोगणाई आया-मेणं पणवीसं जोयणाइं विक्खंभेणं, दस जोयणाइं डब्बेहेणं वण्णओ वेध्या-वणसंडाणं भाणियवद्यो) ये पुष्करिणियां आयाम में ५० योजन की हैं और विष्कम्म में २५ योजन की हैं तथा इनकी गहराई १० योजन की हैं। यहां वेदिका और वनषण्ड का वर्णन कर**लेना चाहि**ये और वह चतुर्थ <mark>सूत्रकी</mark> ब्याख्या से समझछेना चाहिये (चउदिसिं तोरणा जाव तासिणं पुक्खरिणीणं

त्यां 'एवं चत्तारि वि दारा भाणियव्या' आ सूत्र भुक्ष क काणी सेवुं की की भी 'मंद्रस्स णं पव्ययस्स उत्तरपुरित्यमेणं भद्दसालवणं पण्णासं जोयणाइं ओगाहित्ता एत्य णं चत्तारि णंदा-पुत्रसिरणोओ पण्णत्ताओं भन्दर पर्व तना ध्यान डेग्लुमां लद्रशासवनने प० थे।कन वटावी कर्छ को त्यारणाह के स्थान आवे छे त्यां नन्दा नाभड़ यार शाश्वत पुष्डिरिष्टी को छे 'तं जहां' तेमना नाभा आ भ्रमाणे छे—'पडमा १, पडमप्पमा २, चेव कुमुदा ३ कुमुदप्पमा ४' पद्मा, पद्मप्रला, इमुदा अने इमुद्रप्रभा 'ताओणं पुक्खरिणीओ पण्णासं जोयणाइं आयामेणं पणवीसं जोयणाइं विक्संभेणं, दस जोयणाइं उव्वेहेणं वण्णओ वेद्यावणसंद्याणं माणियव्यो' से पुष्डिरिष्टी को आयामनी अपेक्षाओ प० थे।कन केटली छे. अने विष्डं लनी अपेक्षाओ २५ थे।कन केटली छे. तेमक केमनी अंशिरता (अंडार्ड) १० थे।कन-केटली छे. अही वेदिडा अने वन्त्रं वर्ष्ट्रन करी सेवुं केहंके. अने वेदिडा अने वन्त्रं विषेतुं वर्ष्ट्रन यतुर्थं सूत्रनी व्याप्यामंथी काष्ट्री सेवुं किही को. 'चइदिसं तोरणा जाव तोसिणं पुक्खरिणीणं

दिसि' चतुर्दिशि-दिक्चतुष्टये तोरणानि विद्विराणि 'जाव' यावत्-अत्र यावत्पदेन-'नाना-मिणिमयानि' इत्यादीनां तोरणविशेषणवाचकपदानां सङ्ग्रहो बोध्यः, स च सार्थः राजप्रश्ली-यद्वत्रस्य त्रयोदशस्त्रस्य मत्कृतसुबोधिनी टीकातोऽवसेयः, अधैतत्पुष्करिणीमध्यवर्तिप्रासा-दावतंसकं वर्णियतुमुपक्रमते-'तासि णं' तासां खळ 'पुत्रखरिणीणं' पुष्करिणीनां 'बहुमज्श-देसमाए' बहुमध्यदेशमागे-अत्यन्तमध्यदेशमागे 'एत्थ' अत्र अत्रान्तरे 'णं' खळ 'मई एगें' सहानेकः 'ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णेर' ईशानस्य देवेग्द्रस्य देवराजस्य 'पासायवर्डिसए' प्रासादावतंसकः उत्तमप्रासादः 'वण्णते' प्रज्ञप्तः - स्वपरिवेष्टनीभूतपुष्करिणीचतुष्टयबहुमध्य-देशभागवर्ती प्रासादोऽयमुक्त इत्यर्थः, स च 'पंचणोयणसयाई' पश्च योजनशतानि 'उद्धं जुरुचतेणं' अर्ध्वपुरुचस्वेन 'अद्धाइज्जाई' अर्द्धवृतीयानि 'जोयणनयाई' योजनशतानि 'विक्खं-भेणं' विष्कम्भेण-विस्तारेण 'अब्धुग्गयम्सियपहसिय इव' अभ्युद्धतो च्छ्तप्रहसित इव इत्यादिपदानां प्रासादविशेषणवाचकःनामत्र सङ्ग्रहो शेष्यः, स च राजप्रश्लोयद्वत्रस्य मत्कृत-बहुमज्झदेसभाए एतथणं एमे महं ईसाणस्य देविंदस्स देवरण्णो पासाययिंसमे पण्णात्ते) यहां चारों दिशाओं में तोरण-बहिद्यार है यहां यावस्पद से "नाना मणिमयानि" इत्यादिरूप से कहे गये तोरणों के विशेषणों का ग्रहण हुआ है इन्हें राजप्रक्रीय सूत्र की खुबोधिनी टीका से समझ छेना चाहिये इन पुष्करिणियों के ठीक मध्यभाग में एक विद्याल देवेन्द्र देवराज ईशान क प्रासादावतंसक-श्रेष्ठ प्रासाद-कहा गया है (पंच जोगणसमाई उड्डू उच्चतेण अद्धाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेगं, अञ्चुगगयसूक्षिय एवं सपरिवारे पासायवर्डिसगो भाणियच्वो) यह प्रासादावतंत्रक ऊंचाई में ५ योजन क 🕏 २५० योजनका इसका विष्कम्भ है "अञ्झुरगय इत्यादि पदों का जोवि . प्रासादावतंसक के विदोषणरूप से प्रयुक्त किये गये हैं यहां संग्रह हुआ है इन पदों का संग्रह श्रीराजग्रहनीय सूत्र से समझलेना चाहिये प्रासादातंसक का वर्णन मुख्यासन और गौणासन रूप परिवार सहित करलेना चाहिये (संदर

बहुमन्झदेसभाए एत्थणं एने महं ईसाणस्स देविंद्रस देवरण्णो पाकायविंद्रसने पण्णत्ते' अहीं धाद हिशाओमां तेरिश्—अहिर्दार—हे. अहीं थावत पहधी 'नाना मणिमयानि' वजेरे इपमां अधित तेरिश्चेना विशेषश्चेनुं अहेश थयुं हे. के विशेषश्चेना व्यर्थ 'राज्यशीयसूत्र' नी सुमिधिनी टीडामांथी लाशी देवे। केंडिके. के एक्डरिश्चीकोना डीड मध्यकाणमां केड विशाण हैवेन्द्र हेवराक धशानना प्रासादावतं सड-श्रेष्ठ आसाद—जावेद हे, 'पंच जोगणस्याई उद्दं उच्चतेणं अद्धाइन्जाई जोयणस्याई विक्खंमेणं, अन्भुग्यमृस्थि एवं सपरिवारो पासायविंद्र समो माणियव्वो' का प्रासादवतं सड शियां भां ये थेलन केटदे। हे. २५० थेलन केटदे। केने। विष्ठं सड हे. 'अद्भुग्यय' वजेरे पद्दीने। व्यत्रे संबद्ध थये। हे. के पद्दी प्रासादावन संस्था विष्ठं सड़ अपना प्रासादावन स्थाना विष्ठं सड़ है। अपना प्रासादावन स्थाना विशेषश्च इपमां प्रयुक्त थयेलां है. के पद्दीने। कावार्थ राज्यश्चीय स्थानां

सुनोविनी टीकातः साथौँ असेयः, 'एवं' एवम्-अनेन प्रकारेण 'सपरिवारो' सपरिवारः सुख्यासनगौजासनरूपपित्वारसहितः 'पासायविक्तभो' प्राप्तादावनंसकः 'माणियक्त्रो' मणितन्यः वक्तन्यः अथ प्रदक्षिणक्रमेण वर्ततानाविक्तिष्टकोणगतपुष्करिण्यादि प्ररूपित्वसाह— 'मंद्रस्स णं' मन्द्रस्य मेरोः सन्छ 'एवं' एदम् उक्तरीत्या—भद्रशाल्यनं पश्चाशतं योजनान्ययम् गाह्य 'दाहिणपुरिव्यमेणं' दक्षिणपौरस्त्येन—अग्निकोणे 'पुक्खरिणीओ' पुष्करिण्यः चतसः प्रज्ञाः, ताश्च पूर्वक्रमेणेमाः 'उप्पलग्नमा' उत्पलगुरुष्तः १ 'णिलिणा' निलना २ 'उप्पला' उत्पला ३ 'उप्पल्ला' उत्पलग्ना ४ इति, 'तं चेत्र' तदेव ईशानकोणगतप्रासादप्रमाण-मेन पतालामपि पुष्करिणीनां मध्यवर्तिप्रासादस्य 'पमाणं' प्रमाणम् एतद्गिनकोणगतप्रष्कर्करिणीनां 'सज्ज्ञे' मध्ये 'पासायवर्षिसओ' प्रासादावतंसकः 'सकस्स' शकस्य—शकेन्द्रस्य 'सपरिवारो' सपरिवारः एरिवारसिद्वतो वक्तत्र्यः, स च प्राप्यत् 'तेणं चेव' तेनैव—पूर्वोक्तेनेव 'पमाणेणं' प्रमाणेन वाच्यः 'दाहिणपच्चतिथमेण वि' दक्षिणपश्चिमेनापि—नैक्तर्यकोणेऽपि 'पुक्लरिणीओ' पुष्करिण्यः चतसः प्रज्ञाः, ताश्च 'भिंगा' भङ्गा १ 'भिंगनिमा' भङ्गनिमा २ 'वेव' चैव 'अंजणा' अञ्चन ३ 'अंजणप्यभा' अञ्चनप्रमा ४ इति । एतन्नैक्तर्यकोणवर्ति-

स्सणं एवं दाहिणपुरित्थमेणं पुनन्तरिणीओ उप्पलगुम्माणिलणा उप्पला उप्पल लुजला तंचेव पमाणं मज्झे पासायदिंसओ सक्कस्स सपरिवारो) इसी प्रकार मन्दर मेरुके अद्रशाल वनके भीतर ५० योजन जानेपर आग्नेयकोण में चार पुष्करिणियां हैं उनके जान इस प्रकार से हैं उत्पलगुल्मा १, निल्ना २ उत्पला १ और उत्पलोज्जवला ४ इन पुष्करिणियों के भी ठीक मध्यभाग में एक प्रासादाब-तंसक है इसका भी यहां पर प्रमाण ईशान कोणगत प्रासादावतंसक के जितना ही है यह देवेन्द्र देवराज शक्षेन्द्र का है यहां पर शक्षेन्द्र अपने परिवार सहित रहता है ऐसा वर्णन इसका भी करलेना चाहिये (ते णं चेव प्रमाणेणं दाहिण-पस्चित्थमेणिव पुक्खरिणीओ जिंगा, भिंगनिआ चेव, अंजणा अंजणप्रभा पासायविंसओ सक्करस सीहासणं सपरिवारं) इसी प्रकार से नैर्फतकोण में

पुष्करिणी बहुमध्यदेशभागवर्ती 'पासायविद्यस्था' प्रासादावर्तसकः 'सबस्स' शकस्यशक्रेन्द्रस्य शक्रेन्द्राधिष्ठितोऽयमितिभावः, तत्प्रासादावर्तसकवर्ति 'सीप्रासणं' सिंहासनं
'सपिरवारं' सपिरवारं-भद्रासनादि परिवारसिंहतं पूर्ववदेवात्रापि वक्तव्यम्, तथा 'उत्तरपंचत्थिमेणं' उत्तरपश्चिमेन वायव्यकोणे 'पुत्रखरिणीओ' पुष्करिण्यः 'सिरिकंता' श्रीकान्ता १
'सिरिचंदा' श्रीचन्द्रा २ 'सिरिमदिया' श्रीमहिता ३ 'चेव' चैव 'सिरिणिलया' श्रीनिलया
४ एतत्पुष्करिणी बहुमध्यदेशभागवर्ती 'पात्रायविद्यस्थो' प्रासादावतंसकः 'ईसाणस्स'
ईशानस्य-ईशानेन्द्रस्य तत्प्रासादमध्यवर्ति 'सीहासणं' सिंहासनं 'सपिरवारं' सपिरवारंभद्रासनादि परिवारसिंहतं वक्तव्यमिति । अधुनाऽस्मिन्नेव भद्रशालवने दिग्वस्तिकूटानि वर्णवित्रुष्ठपक्रमते—'मंदरे णं' इत्यादि—मन्दरे—मेरो खल्ल 'मंते !' भदन्त ! 'पव्यए' पर्वते 'महसालवणे' भद्रशालवने 'कइ' कित कियन्ति 'दिसाहित्यक्त्डा' दिग्हस्तिकृटानि 'पण्णत्ता !'

भी चार पुष्करिणियां है उनके नाम इस प्रकार से हैं-भृक्षा, भृक्षितभा, अंजना और अञ्चनप्रभा इन पुष्करिणियों के ठीक मध्यभाग में प्रासादावतंसक है यह प्रासादावतंसक भी शकेन्द्र से अधिष्ठित है इस प्रासादावतंसक का मध्यवतां सिंहासन भी पूर्व की तरह अपने परिवारभूत अन्य सिंहासनों से परिवेष्टित है (उत्तरपुरिथमेणं पुक्खरिणिओ) इसी प्रकार वायव्यकोण में भी पुक्खरिणियां हैं उनके नाम (सिरिकंता, सिरिचंदा, सिरीमहिया चेव सिरिणिलया) श्री कान्ता, श्रीचन्द्रा, श्री महिता, और श्री निलया है (पासायविंसओ ईसाणस्स सीहासणं सपरिवारं) इनके मध्यभाग में भी प्रासादावतंसक कहे गये हैं यह प्रासादावतंसक ईशानेन्द्रका है इस प्रासादावतंसक का मध्यवर्ती सिंहासन भीअपने-अपने परिवारभूत सिंहासनों के साथ विणित कर लेना चाहिये (मंदरेणं भंते ! पव्वर भइसालवणे कह दिसाहिथकूडा पण्णत्ता हे भदन्त! इस मन्दरपर्वतवर्ती

अंजणपमा पासायविद्धसं सक्कास सीहासणं सपरिवारं आ प्रमाणे नैअत्य डेाणुमां पण् श्रार पुण्डिरिणीओं छे. तेमना नामें। आ प्रमाणे छे-लांगा-१, लांगिनला-२, आंजना ३, अने आंजनप्रला ४. आ पुण्डिरिणीओना ठीड मध्यलागमां प्रासादाव तसङ्ख छे. आ प्रासाद्धाव तसङ्ख छे. आ प्रासाद्धाव तसङ्ख छे. आ प्रासाद्धाव तसङ्ख छे. आ प्रासाद्धाव तसङ्ख पण्डे शहेन्द्र वडे अधिष्ठित छे. आ प्रासाद्धावत सङ्ख मध्यवती सिंद्धासन पण्च पद्धिसानी लेम पेताना परिवार लूत अन्य सिंद्धासने। धी परिवेष्टित छे. 'उत्तरपुरिक्ष मेणं पुक्खरिणिओं' आ प्रमाणे वायव्य डेाणुमां पण्ड पुण्डिरिणीओं छे. तेमना नामे। आ प्रमाणे छे-'सिरिकंता, सिरिचंदा, सिरिमिह्या चेव सिरिणिछया' श्री डान्ता, श्री यन्द्रा, श्री मद्धिता अने श्री निक्ष्या. 'पासायविद्धासओं ईसाणस्स सीहसणं सपरिवारं' छोमना मध्य भागमां पण्ड प्रासादावतं सङ्ग आवेद्धा छे. ओ प्रसादावं तसङ्ग छि।नेन्द्रने। छे. आ प्रासा द्वावं तसङ्ग मध्यवर्ता सिंद्धासन पण्ड पेत-पेताना परिवार लूत सिंद्धासने।नी साथै विर्णित इरी क्षेत्रं मध्यवर्ता सिंद्धासन पण्ड पेत-पेताना परिवार लूत सिंद्धासने।नी साथै विर्णित इरी क्षेत्रं लेखें भंते! प्रवार महसालवणे कह विसाहित्य कृडा पण्णत्ता' है लहना! आ मंदर पर्वतवर्ती लद्रशास वनमां हैटेका हिन्दिन कृटे। आवेद्धा छे ? अ कृटे। धिशाद

प्रज्ञप्तानि ?, 'गोयमा !' गौतम ! 'अह' अष्ट 'दिसाइ त्थिक् छा' दिग्र इस्तिक्टानि दिश्व हे कान्यादिष्ठ विद्यादिष्ठ इस्तिक्टानि इस्त्याकाराणि कटानि 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्तानि 'तं जहां' तद्यथा 'पउमुत्तरे' पद्मोत्तरः १, 'णीळवंते' नीळवान २, 'म्रुइत्थी' म्रुइस्ती ३, 'अंजणिरी' अञ्चनिगिरः, अत्राञ्चनशब्दस्य 'वनिगर्योः संज्ञायां कोटरिकं' श्रुलुकादीनाम् । इ।३।११७॥' इति पाणिनीयस्त्रेण दीर्घः ४, 'क्रुमुदे य' क्रुमुद्श्च ५, 'पलासे य' पलाश्च ६, 'बिहंसे' वतंसः ७, 'रोयणागिरी' रोचनागिरिः ववचिद् रोहणागिरिः पठचाते अत्रापि उपितनस्त्रेणेव दीर्घः ८ । ॥१॥ अथेषां क्टानां दिशो व्यवस्थापित्र प्रुपक्षमते—'किह णं मंते!' इत्यादि—क खल्ल मदन्त ! 'मंदरे पन्वप' मन्दरे पर्वते, 'मदसालवणे' मद्रशालवने 'पउमुत्तरे' पद्मोतरः पद्मोत्रं 'णामं' नाम प्रसिद्धं 'दिसाइ स्तक् हे' दिग्ह स्तिक्टं 'पण्णते' प्रक्षप्तम् विथतम् ? 'गोयमा !' गौतम ! 'मंदरस्स पन्वयस्स' मन्दरस्स पर्वतस्य 'उत्तरपुर-रिथमेणं' उत्तरपौरस्त्येन—ईशानकोणे 'पुरिधिमल्लाए' पौरस्त्यायाः—पूर्वदिग्वतिन्याः

भद्रशाल वन में कितने दिग्रहस्ति क्र्ट कहे गये हैं। ये क्र्ट ईशान आदि विदि-शाओं में एवं प्रवीदि दिशाओं में होते हैं और आकार इसका हस्ति का जैसा होता है इस कारण इनको हस्तिक्ट कहा गया है उत्तर में प्रमु कहते हें—(गोपमा! अह दिसाहत्थि क्रुडा पण्णत्ता) हे गौतम! आठ दिग्रहस्तिक्ट कहे गये हैं (तं जहा) जो इस प्रकारसे हैं (पउमुत्तरे १ णीलवंते २ सहत्थि ३, अंजणागिरि ४, कुमुदेअ ५ पलासे ६, बिंसे ७, रीयणागिरि ॥८।) पद्मोत्तर १, नीलवान २ सहस्ति ३, अंजनगिरि ४, कुमुद ४, पलाश ३, वतं छ और रोचनागिरि या रोहणागिरि ८ (कहिणं भंते ! मन्दरे पत्वए भइसालवणे पउमुत्तरे णानं दिसाहत्थिक् छे पण्णत्ते) हे भदन्त ! मन्दर पर्वत एर वर्तमान भद्रशाल वन में पद्मोत्तर नामका दिग्र हस्तिक्ट कहां पर कहा गया है १ उत्तर मे प्रमु कहते हैं (गोयमा! मंदरस्स पञ्चपस्स उत्तरपुरत्थिमेणं पुरत्थिमि-ल्लाए सीयाए उत्तरेणं एत्थणं पउमुत्तरे णामं दिशाहत्थिक् हे पण्णते) हे गौतम!

वंशेर विदिशाक्षीमां तेमक पूर्वाहि हिशाक्षीमां छाय छे. क्यने काक्षर क्येमना छित्तिक केवा छाय छे. क्षेथी क को छित्तिकूट कछवामां क्याव्या छे. क्ष्वाक्षमां अक्ष कछे छे- 'गोयमा! अह दिसाहत्थिकृडा पण्णत्ता' छे गौतम! काठ विक्रहित कूटे। कछवामां क्यावेस छे. 'तं जहा' ते क्या प्रमाणे छे-'१ पडमुत्तरे २, जीलवंशे ३, सहत्थि ४, अंजणागिरि ५, क्रमुदेश ६, पलासे ख ५, विहासे ८, रोयणागिरि ९ ॥१॥ 'पभीत्तर-१, नीक्षवान-२, सुद्धित ३, क्यंक्रनिशिर-४, कुमुद्धित ५, रोयणागिरि ९ ॥१॥ 'पभीत्तर-१, नीक्षवान-२, सुद्धित ३, क्यंक्रनिशिर-४, कुमुद्धित ५, रोयणागिरि ९ ॥१॥ 'पभीत्तर-१, नीक्षवान-२, सुद्धित ३, क्यंक्रनिशिर-४, कुमुद्ध-प, पक्षाश्च-६, वतंस-७, क्रमे रेश्वनिशिक् हे रोद्ध्याजिरि. 'कहिणं भंते! मंदरे पत्वण भहसालवणे पडमुत्तरे णामं दिसाहत्थिकृडे पण्णत्ते' छे भहंत! भंदर पर्वत ७५२ वर्तभान अदृशाक्षयनमां पद्भीत्तर नाभक्ष हिश्दुहित कूट काया स्थणे क्यावेस छे ९ उत्तरमां प्रसु के हे हे-'गोयमा! मंदरस्स पत्र्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं पुरिश्व-भित्राप सीयाए उत्तरेणं पत्थणं पडमुत्तरे णामं दिसाहत्थिकृडे पण्णत्ते' छे गौतम! भंदर

'सीयाए' शीढाया मदानद्याः 'उत्तरेणं' उत्तरेण-उत्तरदिशि 'एत्य' अत्र-अत्रान्तरे 'णं' ख्छ 'पउतुत्तरे' प्बोत्तर:-पद्मोत्तरनामकं 'णामं' नाम प्रसिद्धं 'दिसाहस्तिकूडे' दिग्हस्तिकूटं 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तम् तच्च 'पंचजोयणसयाई' पंच योजनशतानि 'उद्धं उच्चतेणं' उर्ध्वप्रुच्चत्वेन 'पंचगाउयसयाई' पश्चगव्यूःशतानि 'उःवेद्देणं' उद्वेधेन-भूमिष्ठवेक्षेन 'एवं' एवम् उच्चत्वा-दिवत् 'विक्खंभपरिक्खेवो' विष्करभपरिक्षेपः विष्करभपरिक्षेपः विष्करशो विस्तारस्तत्सहितः परिश्लेषः परिधिः 'साणियच्यो' भणितच्यः वक्तव्यः, तथाहि मुळे पञ्चयोजनशतानि मध्ये योजनानां शतत्रयम् पश्चसप्तत्यधिकम् उपरि अर्द्धतृतीयानि योजनशतानीत्येवंह्रपो विष्कम्भः, परिक्षेपश्च-मूळे पञ्चदशयोजनशतानि एकाशीत्यधिकानि, मध्ये एकादशयोजनशतानि षड-शीत्यधिकानि किञ्चिद्नानि उपरि किञ्चिन्न्यूनानि एकनवत्यिकानि सप्त योजनशतानि इत्येवं रूपः 'चुरुष्टक्ष्मिवंतसरिसो' क्षुद्रहिमवत्सदशो वक्षच्यः (पासायाण य) प्रासादानां च मन्दर पर्वत की उत्तरदिशा और पूर्वदिशा के अन्तराल में-इशान कोणमें पद्मोत्तर नामका दिग्हस्तिकार कहा गया है (पंच जोयणस्वयाह उद्धं उच्चतेर्ण पंच गाउधसयाइं उद्देहेलं एवं विवसंभपरिक्सेवो भाणियव्यो चुल्लहिमवंत-सरिसो) यह कूट पांचसौ घोजन की ऊंचाई वाला है तथा जमीन के भीतर यह पांचसौ कोश तक नीचे गया है अर्थात् ज्ञित्रीन के भीतर इसकी नीव ५०० कोशतक गहरी गई हुई है विष्कंग्स और परिक्षेप इसका इस प्रकार से है मूटमें इसका विष्करम ५०० पांचसौ योजन का है मध्यमे इसका विस्तार ३०० तीनसौ ७५ योजन का है और ऊपर में इसका विस्तार २५० योजन का है मुख्यें इसका परिक्षेप १५८१ सौ योजन का है मध्यमें इसका परिक्षेप कुछकम ११८६ योजन का है और उपर में इसका परिक्षेप कुछ कम ७९१ योजन का है। इस तरह यह क्रूट क्षुद्र हिमवान पर्वत के जैसा है (पाहायाण य तं चेव) जो प्रभाण क्षुद्र हीमवत्

पर्वतनी उत्तर हिशा अने पूर्व हिशाना अतराखमां- हंशान हे। श्रुमां तेमक पूर्व हिश्वती शिता महानी उत्तर िशामां पहमें तर नामह हिश्हित हूट आदेख छे पंत्र जीयण सगाई उद्धे उच्चतेणं पंच गाउयसयाई उद्धेहेणं एवं विक्खंमपरिक्खेशों माणियच्यों चुल्लहिम- वंतसिसी' आ हूट पांचसे। शेकन केटली अंधारंबाणा छे तेमक कमीननी आंहर पणु पांचसे। शां अधी नीचे अधेक्षे। छे. छेटले हे जानिनी आंहर छेनी नीम प०० आउं केटली उदी छे. छेना विष्डं अपिन्यिक्षेशे आ प्रमाणे छे. मूलमां छेनी निष्डं अप०० थे। के केटली उदी छे. मेथमां छेनी विस्तार अथ्य थे। कन केटले। छे अमी विस्तार २५० थे। कन केटले। छे अमी परिक्षेप १५८१ थे। यहिष्ठेप १५८१ थे। कन केटले। छे. मध्यमां छेनी परिक्षेप १५८१ थे। वस्तार छेनी परिक्षेप १५८१ थे। कन केटले। छे. आधा अभी परिक्षेप १५८१ थे। कन केटले। छे. आप अभाणे आ हूट छुद्र हिमवान पर्वत केटले। छे. 'पासायाणय तं चेव' केटले। प्रमाण क्षुद्र हिमवान पर्वत केटले। छे, तेटलें क प्रमाण आनी उपर आवेलां विस्तार कर प्रमाणे आनी उपर आवेलां के केटले। प्रमाण आनी उपर आवेलां केटले केटले प्रमाण आनी उपर आवेलां केटले केटले प्रमाण आनी उपर आवेलां केटले केटले प्रमाण आनी उपर आवेलां केटलें केटलें प्रमाण आनी उपर आवेलां

'तं चेव' तदेव प्रमाणम् बोध्यं यत् श्चद्रहमबत्क्टाविषप्रासादस्य, अत्र बहुत्वेन निर्देशो वश्यमाण दिग्हिस्तिक्टवर्ति प्रासादेष्विष प्रमाणसाम्यद्भचनार्थः, पद्मोत्तरस्याधिषतिमाह'पउप्रचरो देवो' पद्मोत्तरः पद्मोत्तर नामको देवः तद्धिपतिरस्तीति शेषः, अस्य देवस्य 'रायहाणी' राजधानी 'उत्तपुरिथमेणं' उत्तरपौरस्त्येन ईशानकोणे तद्वर्ति क्टाधिषत्वादिति १,
अथ शेषक्टानि प्रदक्षिणक्रमेण वर्णयित्मतिदिशति-'एवं णील्वंतिदेसाहत्थिक्हे' इत्यादि
एवम् उत्तप्रकारेण नील्विहिरहस्तिकृटं 'मंदरस्त' मन्दरस्य 'दाहिणपुरिथमेणं' दक्षिणपौरस्त्येन-अग्निकोणे 'पुरिव्धमिल्लःए' पौरस्त्यायाः 'सीयाए' श्वीताया महानद्याः 'दिन्छणेणं' दक्षिणिदिशि बोध्यम्, 'एयस्स वि' एतस्यापि नीलवन्नामकस्यापि क्टस्य
णीलवंतो देवो' नीलवान् देवः अधिपतिः, अस्य 'रायहाणी' राजधानी 'दाहिणपुरिथमेणं'
दक्षिणपौरस्त्येन अग्निकोणे अस्तीति शेषः २, 'एवं' एवम् उक्तकृटवत् 'सुहित्थ दिसाहत्थिकुहे' सुहस्विदिग्हस्तिकूटं 'मंदरस्स' मन्दरस्य पर्वतस्य (दाहिणपुरित्थमेणं) दक्षिण-

क्र्रियित के प्रासाद का कहा गया है वही उसके ऊपर रहें हुए देव प्रासादों का कहा गया है। यहां बहुबबन का निर्देश वक्ष्यमाणदिग्हास्त क्र्रियति प्रासादों को छेकर किया गया है अतः उन सबके प्रमाण भी क्षुद्र हिमवत् क्र्र के अधिपति के प्रासाद के जैसा ही है ऐसा प्रकट किया गया जानना चाहिये (पउमुक्तरो देवो रायहाणी उत्तरपुरिथमेणं) इस पद्मोत्तर दिग्हिस्तक्र्र का अधिपति पद्मोत्तर केंग्रिका देव है इसकी राजधानी ईशानकोणमें है। (एवं णीलवंत दिसाहित्यक्र्ड मंद्रस्स दाहिणपुरिथमेणं पुरित्यमिल्लाए सीयाए दिक्खणेणं एयस्स वि णीलवंतो देवो रायहाणी दाहिणपुरिधमेणं) इसी प्रकार नीलवन्ति दिसाहित्यक्र्ड मंद्रस्स दाहिणपुरिथमेणं पुरित्यमिल्लाए सीयाए दिक्खणेणं एयस्स वि णीलवंतो देवो रायहाणी दाहिणपुरिधमेणं) इसी प्रकार नीलवन्ति दिसणदिशा में है इस नीलवन्त नामक दिग्हित क्र्र मन्दर पर्वत के अग्निकोण में तथा पूर्वदिग्वर्ती सीता महानदी की दिसणदिशा में है इस नीलवन्त नामका दिग्हित क्र्रका अधिपित इसी नामका है इसकी राजधानी इस दिग्हितक्र्र के आग्नेयकोण में है। (एवं सहित्यदिसा-हित्यक्र्ड अंदरस्स दाहिणपुरिथमेणं दिवस्विणल्लाए सीओआए पुरिथमेणं हित्यक्रित व्हित्स्विणल्लाए सीओआए पुरिथमेणं

देव प्रासाह मारे पण जल्युं. अहीं लहुवयन हथन वह्यमाण हिन्ह स्तिइटवर्ती प्रासाहाने वर्णने हरवामां आवेद्धं छे. अथी ते अधानुं प्रमाण पण क्षुद्रहिमवत् इटना अधिपतिना प्रसाह लेद्धं ले छे, अवुं जाणी देवुं निर्धि के पण पह्यात्तर हिन्ह स्ति इटने। अधिपति पह्मीत्तर नामह देव छे. अनी राजधानी हंशान है। शुमां आवेद्धी छे. 'एवं णीठवंतिदसाहिश्यक् में मंदरस्त दाहिणपुरिश्यमेणं पुरिश्यमिललाए सीयाए दिक्खणणं एयस्स वि णीठवंतो देवो रायहाणी-दाहिणपुरिश्यमेणं प्रमाणे क बीद्धवन्त हिन्हित इट मन्दर पर्वतन। अन्निहेणुमां तेमल पूर्व हिन्वती सीता महानहीनी दक्षिण दिशामां आवेद्ध छे. आ नौद्धवन्त नामह हिन्हित इटने। अधि भति के क नामने। छे. केनी राजधानी आ हिन्हित इटना आन्नेय है, सुमां आवेद्धी

पोरस्त्येन अग्निकोणे 'विविखणिल्लाए' दाक्षिणात्यायाः दक्षिणदिग्वर्तिन्याः 'सीओयाए' श्रीतोदायाः 'पुरित्थमेणं' पौरस्त्येन-पूर्वदिशि अस्तीति शेषः 'एयस्स वि' एतस्यापि सुद्द्र-रिथनामकस्यापि क्रुटस्य 'सुद्दत्थी' सुद्द्रस्ति नामकः 'देवो' देवः अधिपतिः अस्तीति शेषः, अस्य 'रायहाणी' राज्ञानी 'दाहिणपुरित्थिमेणं' दक्षिणपौरस्त्येन-अग्निकोणे अग्निकोण-वर्तिक्रुटाचिपतित्वात् ३, 'एवंचेव' एवमेव उक्तप्रकारेणैव 'अंजणागिरिदिसाहित्यकूढे' अञ्चनागिरिदिग्द्रस्तिक्टं 'मंदरस्य' मन्दरस्य मेरोः पर्वतस्य 'दाहिणपच्चियमेणं' दक्षिणपश्चिमेन नैर्क्रुत्यकोणे 'दिक्खणिल्लाए' दाक्षिणात्याः दक्षिणाभिमुखं वहन्त्याः 'सीओयाए' शीतो-दायाः महानद्याः 'पच्चित्थमेणं' पश्चिमेन पश्चिमदिशि अस्तीति शेषः, 'एयस्स वि' 'एतस्स वि' एतस्यापि क्टस्य अंजनागिरीदेवो अञ्चनागिरि नीम देवः अधिपोऽस्ति, अस्य 'राय-हाणी' राजधानी 'दाहिणाचित्थमेणं' दक्षिणपश्चिमेन नैर्क्रत्यकोणेऽस्ति ४, 'एवं' एवस् अनेन प्रकारेण 'क्रुमुदे वि दिसाहिष्यकृढे' क्रुमुदः क्रुमुदा विदिग्हस्तिकृटं 'मंदरस्य' मन्दरस्य पर्वतस्य 'दाहिणपच्चियमेणं' दक्षिणपश्चिमेन नैर्क्रत्यकोणे 'पच्चित्थमेणं' दक्षिणपश्चिमेन नैर्क्रत्यकोणे 'पच्चित्थमेणं' दक्षिणेन-एयस्स वि सुद्धिस्थ देवो रायहाणी दाहिणपुरित्थमेणं) सुद्धस्ती नामका दिग्हस्ति-एयस्स वि सुद्धि देवो रायहाणी दाहिणपुरित्थमेणं) सुद्धस्ती नामका दिग्हस्ति-

एयस्स वि सुहित्थ देवो रायहाणी दाहिणपुरित्थमेण) सुहस्ती नामका दिग्हस्तिकूट भी मन्दर पर्वत की आग्नेय विदिशा में हैं तथा दक्षिण दिगवर्ती सीतोदानदी की पूर्विदेशा में है इस कूटका भी अधिपति सुहस्ती नामका देव है और
इसकी राजधानी आग्नेयकोण में है (एवंचेव अंजणागिरि दिसाहित्थकूडे मंदरस्स
दाहिणपुच्चित्थमेणं दिखाणिस्लाए सीधोयाए पुच्चित्थमेणं एयस्स वि अंजणगिरि देवो राधहाणी दाहिणपुच्चित्थमेणं) अंजनगिरि नामका जो दिग्हस्तिकूट
है वह मन्दर पर्वत की नैक्यां विदिशा में है तथा दक्षिण की ओर वहती हुई
सीतोदा महानदी की पश्चिमदिशा में है इस कूट पर इसी नामका देव रहता है
इसकी राजधानी इसी कूट के नैक्यां तकोने में हैं। (एवं कुमुदे विदिसाहित्थकूडे
मंदरस्स दाहिणपुच्चित्थमेणं पुच्चित्थमिल्लाए सीओआए दिख्खणेणं) कुमुद

छे. 'एवं सुहत्थि दिसाहत्थिकृडे मंद्रस्स दाहिणपुरत्थिमेणं दिक्खणिल्लाए सीओआए पुर्त्थिमेणं एयस्स वि सुहिथदेवो रायहाणी दाहिणपुरत्थिमेणं' सुर्द्धस्ति नामक हिन्द्वस्ति हुट पण् मांहर पर्वतनी आन्नेय विदिशामां आवेदा छे तथा हिक्षण् हिन्दती सीताहा नहींनी पूर्व हिशामां आवेदा छे. आ इटना अधिपति पण् सुदुस्तो नामक हेव छे अने ओनी राजधानी आन्नेय केण्यमां आवेदा छे. 'एवं चेव अंजणागिरि दिसाहिथिकृडे मंद्रस्स दाहिण-पुरिश्यमेणं' आंजनिशित नाम के हिन्द्वस्ति हुट छे. ते मन्हर पर्वतनी नैऋत्य हिशामां छे लिशा हिशा हिशा तरह प्रवादित थती सीताहा नामनी महानहीनी पश्चिम हिशामां छे के कुट छपर ओज नामना हेव रहे छे ओनी राजधानी खेळ कुटना नैऋत्य हिशामां छे के कुट छपर ओज नामना हेव रहे छे ओनी राजधानी खेळ कुटना नैऋत्य केण्यमां आवेदार छा कुर्मुदे विदिसाहत्थिकृडे मंद्रस्स दाहिणपच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमिल्लाए सीओआए

दक्षिणदिशि विद्यत इति शेषः (एयस्सवि) एतस्यापि कूटस्य 'क्कसदो देवो' कुस्दो नामदेवः— श्रूषिपोऽस्ति अस्य 'रायहाणी' राज्यानी 'वाहिणयच्चित्थिमेणं' दक्षिणपश्चिमेन—नैर्क्रस्यकोणेऽस्ति ५, 'एवं' एवम् अनेन प्रकारेण 'पळासे' पळाशः—पळाशाभिषं 'विदिसाहत्थिक्दे'
विदिग्हस्तिक्टं 'मंदरस्य' मन्दरस्य 'उत्तरपच्चित्थिमेणं' उत्तरपश्चिमेन वायव्यकोणे 'प्रचित्थिः
मिल्लाए' पश्चिमात्यायाः पश्चिमाभिसुखं वहन्त्याः 'सीयोयाए' शीतोदाया माहानद्याः 'उत्तरणं' उत्तरेण—'उत्तरदिशि अस्तीति शेषः 'एयस्स वि' एतस्यापि कूटस्य 'पलासे देवो' पळाशो
नाम देवः—अधिपितरस्तीति शेषः, अस्य 'रायहाणी' राजधानी 'उत्तरपच्चित्थिमेणं' उत्तरपश्चिमेन वायव्यक्षोणे अस्तीति शेषः ६, 'एवं' एवम्—अनेन प्रकारेण 'वर्डेसे' अवतंसः—अवतंसाभिष्ठं 'विदिसाहत्थिक्डें' विदिग्हस्तिक्टं 'मंदरस्स' मन्दरस्य पर्वतस्य 'उत्तरपच्चित्थिमेणं'
उत्तरपश्चिमेन—वायव्यकोणे 'उत्तरिल्लाए' औत्तराह्याः उत्तराभिष्ठखं वहन्त्याः 'सीयाए' शीतायाः 'महाणईव' महानद्याः 'पचनत्थिमेणं' पश्चिमेन—पश्चिमदिशि विद्यत्त इति शेषः, 'एयस्स

नामका जो दिग्हस्तिक्त्र है वह मन्दर पर्वत की नैक्त तकोण में है तथा पश्चिमदिशा की ओर वहती हुई शीतोदा महानदी की दक्षिणिदशा में है (एयस्स
विक्रमुदो देशो रायहाणी दाहिणपच्चित्थमेणं) इस कूट के अधिपति का नाम
क्रमुद है और यह देय है इसकी राजधानी हस कूट की नैक्त तरूप विदिशा में
है (एवं पहासे वि दिसाहिथकू हे मंद्रस्स उत्तरपच्चित्थमेणं पच्चित्थमिल्लाए
सीओआए उत्तरेणं एयस्स जि पलासो देशो रायहाणी उत्तरपच्चित्थमेणं) इसी
तरह पलाश नामका जो दिग्हस्तिकूट है यह कूट भी मन्दर पर्वत की बायव्यकोणरूप विद्शा में हैं तथा पश्चिमदिशा की ओर वहनेवाली शीतोदा महानदी
की उत्तरिक्शा में है इस कूटका देश इसी पलाश नामका है इसकी राजधानी
वायव्यकोण में है

(एवं वडेंसे विदिसाहत्थिक्डे संदरस्स उत्तरपञ्चत्थिमेणं उत्तरिस्लाए

दिक्खणणं कुमुह नामे के हिन्द्वस्ति कूट छे ते मन्दर पर्यतना नऋत्य के श्वामां आवेल छे तथा पश्चिम हिशान्तरङ् प्रवादित थती शीताहा महानहीनी हिश्च हिशामां आवेल छे. 'एयस्स वि कुमुहो देवो रायहाणी दाहिणपच्चित्थमेणं' आ कूटना अधिपतिन नाम कुमुह छे अने आ अधिपति हेव छे. जेनी राजधानी आ कूटना नैऋत्य ३५ हिशामां आवेली छे. 'एवं पलासे विदिसाहत्थिक्डे मंद्रस्स उत्तरपच्चित्थमेणं पच्चित्यमिल्लाए सीओआए उत्तरेणं एयस्स वि पलासो देवो रायहाणी उत्तरपच्चित्थमेणं' आ प्रमाशे के पलाश नामक हिन्दिस्त कूट छे, आ कूट पश्च मन्हर पर्यतनी वायन्य-के श्वा ३५ विदिशामां आवेल छे. तेमक पश्चिम हिशा तरक प्रवाहित थती शीताहा महानहीनी उत्तर हिशामां आवेल छे. आ कूटनी हेव पलाश नामथी क सुपसिद्ध छे अने जेनी राजधानी वायन्य के श्वामा आवेली छे.

वि' एतस्यापि कूटस्य 'बडें सो देवो' अवतं यो नाम देवः अधिपति रस्तीति शेषः, अस्य 'राय-हाणी' राजधानी 'उत्तरपच्चित्थमेणं' उत्तरपश्चिमेन-वायव्यकोणे अस्तीति शेषः ७, 'एवं' एवस्-अनेन प्रकारेण 'रोयणागिरी' रोचनागिरिः एतन्नामकं 'दिसाहित्यकुडे' दिम्हस्तिकूटं 'मंदरस्य' मन्दरस्य पर्वतस्य 'उत्तरपुरिक्षणेणं' उत्तरपौरस्त्येन-ईशानकोणे 'उत्तरिक्लाए' औत्तराह्याः उत्तराभिष्ठखं बहन्त्याः 'सीपाए' शीतायाः महानद्याः 'पुरित्थमेणं' पौरस्त्येन-पूर्वदिश्चि विद्यत इति शेषः 'एयस्स वि' एतस्यापि कूटस्य 'रोयणागिरीदेवो' रोयनागिरि-नाम देवः अधिपतिरस्ति अस्य 'रायहाणी' राजधानी 'उत्तरपुरित्थमेणं' उत्तरपौरस्त्येन हशानकोणे वर्तत इति शेषः ८ ॥ स्व०३६॥

अथ नन्दनवनं वर्णे ित्तुमुपक्रमते -किंह णं भंते ! मंद्रे ! इलादि ।

मूलम्—किह णं भंते ! मंदरे पटनए णंदणवणे णामं वणे पटणते?, गोयमा! भइसालवणस्त बहुसमरमिणिकाओ भूमिसागाओ पंचजोयण-सयाइं उद्धं उप्पइत्ता एरथ णं मंदरे पत्रवए णंदणवणे णानं वणे पण्णते पंच जोयणसयाइं चक्कवालिवक्वंभेणं बट्टे वलयःकारसंठाणुसंठिए जे णं मंदरं पटवयं सटवओ समंता संपरिक्षित्वत्ताणं चिट्टइत्ति णवजोयण-

सीयाए महाणईए पच्चित्थिमेणं एयस्स वि वर्डेसो देवो रायहाणी उत्तरपच्चित्थिमेणं) वतंस नामका जो दिग्हिस्तक्कृट है वह मन्दर पर्वतकी वायव्य विदिशा में है तथा उत्तरदिशा की ओर वहनेवाली सीता महानदी की पश्चिमदिशा में है हस कूट के अधिपति देवका नाम वतंस है इसकी राजधानी वायव्यकोण में है (एवं रोअणागिरि दिसा हत्थिक्डे मंदरस्स उत्तरपुरिक्षिणेणं, उत्तरिष्ठाए सीआए पुरिक्षिणेणं एयस्स वि रोयणागिरि देवो रायहाणी उत्तर पुरिक्षिणेणं) रोचना-गिरि नामका जो दिग्हिस्तक्ट है वह अन्दर पर्वत की ईशान विदिशा में है तथा उत्तरदिशा की ओर वहती हुई सीतानदी की पूर्विद्शा में इस कूट के अधिपति का नाम रोचनागिरि है इसकी राजधानी ईशानकोण में है ॥३६॥

इए पच्चित्यमेणं एयस्स वि वहेंसो देवो रायहाणी उत्तरपच्चित्रमेणं वतास नामक के हिण्कित कृट छे ते मंहर पर्वतनी वायव्य—विहिशामां आवेल छे तेमक उत्तर हिशा तरक्ष्र प्रवाद्धित थती सीता महानदीनी पश्चिम हिशामां छे. आ इटना अधिपति हेवनुं नाम वतास छे. ओनी राकधानी वाव्यक्षेण्यमां आवेली छे. 'एवं रोअणागिरि दिसाहित्यकूडे मंदरस्य उत्तरपुत्थिमेणं उत्तरित्छाए सीआए पुरित्यमेणं एयस्स वि रोयणागिरि देवो रायहाणी उत्तर पुरित्यमेणं रोयनाजिरि नामक के हिल्किस्त कृट छे, ते मन्हर पर्वतनी छिशान विहिशामां आवेल छे तथा उत्तर हिशा तरक्ष प्रवाद्धित थती शीता नहीनी पूर्व हिशामां आवेल छे. आ इटना अधिपतिनुं नाम रे।यनाजिरि छे. ओनी राकधानी धशान केल्यमां आवेली छे. ॥सूत्र उदाा

सहस्साइं णत्र य चउपपण्णे जोयणसए छच्चेगारसभाए जोयणस्स बाहिं गिरिविक्लं मो एगत्तीसं जोयणसहस्साइ चतारि य अउणासीए जोयणसप् किःचिविसेसादिए वाहिं गिरिपरिस्एणं अट्र जोयणसहस्साइं णव य चउष्पण्णे जोयणसए छच्चेगारसभाए जोयणस्स अंतो गिरि-विक्लंनो अट्रारीसं जोनणसहस्साइं तिष्यि य सोलसुत्तरे जोयणसप अटू य इक्कारसभाष जोवलस्स अंतो गिरियरिरएवं, से णं एगाए पउ-मवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सब्दओ समंता संपरिक्लिने वण्णओ जात्र देवा आसयंति, संदरस्त णं पद्ययस्स पुरित्थमेणं एत्थ णं महं एगे सिद्धाययणे प्रकते, एवं चउदिसि चत्तारि सिद्धाययणा विदिसासु पुत्रसरिणीओ तं चेव पमाणं सिद्धाययणाणं पुत्रस्वरि-णीणं च पासायइडिंसगा तहचेत्र सक्केसाणाणं तेणं चेव पमाणेणं, णंदणवणेणं भंते! कइ कूडा पण्णता?, गोयमा! णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा-णंदणवणकुडेश मंद्रकूडेश णिसहकूडेश हिमवयकूँडेश रययकूडे ५ रयगकूडे ६ सागरिवत्तकूडे ७ वइरकूडे ८ बलकूडे ९। किह णं भंते ! णंदणवणे णंदणवणकूडे णामं कूडे पण्णते?. गोयमा ! मंदरस्स पब्वयस्स ः पुरित्थिमिल्लसिद्धाययणस्स उत्तरेणं उत्तरपुरित्थिमिल्लस्स पासायवर्डेसयस्स दिक्लणेणं, एत्थ णं णंदणवणे णंदणवणे णामं कूडे पण्णत्ते पंच सङ्या कूडा पुठववण्णिया आणियव्वा, देवी मेहंकरा राय-हाणी विदिसार ति?, एयःहिं चेन पुठ्याभिलावेणं णेयव्वा, इमे कूडा इमाहिं दिसाहिं पुरिथिमिल्लस्स भवणस्स दाहिणेणं दाहिणपुरिथिमि ल्लस्स पासायवडेंसगस्स उत्तरेणं मंद्रे कूडे मेहवई रायहाणी पुटवेणंर द्किखणिह्ळस्स भवणस्स पुरिथमेणं दाहिणपुरिथमिह्छस्स पासाय-वडेंसगस्स पचरिथमेणं णिसहे कूडे सुमेहा देवी रायहाणी दिक्खणेणं३ द्विखणिहलस्स भवगस्स पञ्चत्थिमेणं द्विखणपञ्चत्थिमिहलस्स पासाय-वडेंसगस्स पुरस्थिमेणं हेमवए कूंडे हेममालिणी देवी रायहाणी दिक्ष- णोणं ४, दिक्खिणिहळस्स भवणस्स पचित्थिमेणं दिक्खिणपचित्थिमिज्छस्स पासाय अडेंसगस्स उत्तरेणं रथप कृडे सुब्द्छा देनी रायहाणी पचित्थिमेणं ४, पचित्थिमिहळस्स भवणस्स उत्तरेणं उत्तरपचित्थिमिहळस्स पासाय वेडेंसगस्स दिक्खिणेणं रूपमे कृडे वच्छिमित्ता देनी रायहाणी पचित्थि मेणंद उत्तरिहळस्स भवणस्स पचित्थिमेणं उत्तरपचित्थिमिहळस्स पासाय वेडेंसगस्स पुरित्थिमेणं सागरिवित्ते कृडे वइस्तेणा देवी रायहाणी उत्तरेणं ७ उत्तरिहळस्स भवणस्स पुरित्थिमेणं उत्तरपुरित्थिमिहळस्स पासाय वेडेंसगस्स पुरित्थिमेणं सागरिवित्ते कृडे वइसेणा देवी रायहाणी उत्तरेणं ७ उत्तरिहळस्स भवणस्स पुरित्थिमेणं उत्तरपुरित्थिमिहळस्स पासायवेडेंसगस्स पचित्थिमेणं वइरकृडे बळाह्या देवी रायहाणी उत्तरेणंकिट, किह णं भंते! णंदणवणे बळकूडे णामं कृडे पण्णते, एवं जं चेव हिरस्सहकूडस्स पमाणं रायहाणी य तं चेव बळकूडस्स वि, णवरं बळो देवो रायहाणी उत्तरपुरित्थिमेणं ।।सू० ३७॥

छाया—क खुछ अद्देश ! मन्द्रे पर्वते नन्दनवनं नाम वनं प्रज्ञतम् १ गीतम ! मद्रवालयनस्य यहुसमरमणीयाद् भूमिमागात् पश्च योजनशतानि ऊर्ध्वमुत्त्त्य अत्र खुछ मन्द्रे पर्वते
नन्दमवनं नाम वनं प्रज्ञतम् पश्च योजनशतानि चक्रवालविष्कम्मेण वृत्तं वलयानारसंस्थानसंस्थितं यत् खुछ मन्द्रं पर्वतं सर्वतः समन्तात् सम्परिक्षिष्य खुछ तिष्ठतीति नवयोजनसहस्नाणि नव च चतुष्पञ्चाशानि योजनशतानि षट् चैकादशभागान् योजनशतानि किश्चिद्विशेषाधिक्यानि वहिर्गिरिरयेण अष्ट योजनसहस्नाणि चत्यारि च ऊनाशीतानि योजनशतानि किश्चिद्विशेषाधिक्यानि वहिर्गिरिरयेण अष्ट योजनसहस्नाणि नव च चतुष्पञ्चाशानि योजनशतानि पट् चैकादशभागान् योजनस्य अन्तर्गिरिविष्कम्भः अष्टाविशति योजनसहस्नाणि त्रीले च पोडशोत्तराणि
योजनशतानि अष्ट च एकादशमागान् योजनस्य अन्तर्गिरिपरिरयेण, तत् खुछ एकया प्रवरवेदिकया एकेन च वनपण्डेन सर्वतः समन्तात् सम्परिक्षितम्, वर्णकः यावद् देवा आसते,
मन्द्रस्य खुछ पर्वतस्य पौरस्त्येन अत्र खुछ महदेकं सिद्धायतनं प्रज्ञसम्, एवं चतुर्दिक्षि
चन्दारि सिद्धायतनानि विद्धु पुष्करिण्यः तदेव प्रमाणं सिद्धायतनानां पुष्करिणीनां च
प्रासादावतंसकास्त्येव शक्केशानयोः तेनैव प्रमाणेन, नन्दनवने खुछ भदन्त ! किति क्र्टानि
प्रज्ञानि ? गौतम ! नव क्रटानि प्रज्ञाति तद्यथा—नन्दनवनक्रं १ मन्दरक्रं २ निष्पक्रं

३ हिमन कूट ४ रजतकूट ५ रुचककूट ६ सागरचित्रकूट ७ वज्रकूट ८ वलकूटम् ९ वव खळ भदन्त ! नन्दननने नन्दननन्तूटं नाम कूटं प्रज्ञप्तम् ?, गौतम ! मन्दरस्य पर्वतस्य पौर-स्त्यसिद्धायतनस्य उत्तरेणं उत्तरपौरस्त्यस्य प्रासादावतंसकस्य दक्षिणेन, अत्र खळ नन्दनवने नन्दनवनं नाम कूटं प्रज्ञप्तं पश्चयतिकानि कूटानि पूर्ववर्णितानि भणितव्यानि, देवी मेघक्करा राजधानी विदिशीति १, एतानिरेव पूर्वाभिलापेन नेतव्यानि इमानि क्टानि आधिर्दिगिभः पौरस्त्यस्य भवनस्य दक्षिणेन दक्षिणवौरस्त्यस्य प्रासादावतंसकस्य उत्तरेण मन्द्रे कूटे मेघवती राजधानी पूर्वेण २, दाक्षिणात्यस्य भवनस्य पौरस्त्येन दक्षिणपौरस्त्यस्य प्रासादा-वतंसकस्य पश्चिमेन निष्धे कूटे सुमेषा देवी राजधानी दक्षिणेन ३, दाक्षिणात्यस्य भवनस्य पश्चिमेन दक्षिणपश्चिमरूप प्रासादावतंसकस्य पौरस्त्येन हैमवते कूटे हेममालिनी देवी राजधानी दक्षिणेन ४, पाश्चात्यस्य भवनस्य दक्षिणेन दक्षिणपश्चिमत्य प्रासादावतंसकस्य उत्तरेण रजते कूटे सुवत्सा देवी राजधानी पश्चिमेन ५, पाश्चिमात्यस्य भवनस्य उत्तरेण उत्तरपश्चिमस्य प्रासादावतंसकस्य दक्षिणेन रुचके कृटे वत्सिमत्रा देवी राजधानी पश्चिमेन ६, औत्तराहस्य भवनस्य पश्चिमेन उत्तरपश्चिमस्य प्रासादावतंस्कस्य पौरस्त्येन सागरचित्रे कूटे वज्रसेना देवी राजधानी उत्तरेण ७, श्रीत्तरादस्य भवनस्य पौरस्त्येन उत्तरपौरस्त्यस्य श्रीसादावतंसकस्य पश्चिमेन वज्रकृटे बलाहिका देवी राजधानी उत्तरेणेति ८, बन् खळु मदन्त ! नन्दनवने बल-कूटं नाम कूटं प्रज्ञसम् ?, गौतम ! मन्दरस्य पर्वतस्य उत्तरपौरस्त्येन अत्र खल्ल नन्दनवने बलकूट नाम-कूट प्रज्ञप्तम्, एवं यदेव हरिश्सहकूटस्य प्रमाणं राजधानी च तदेव बलकूटस्यापि, नवरं बलो देवो राजधानी उत्तरपौरस्त्येनेति ॥स् ० ३०॥

टीका-'किह णं भंते !' इत्यादि-क्व खल भदन्त ! 'मंदरे पञ्चए' मन्दरे-मेरी पर्वतें 'णंदणवणे णामं' नन्दनवनं नाम 'वणे' वनं 'पण्णत्ते ?' अज्ञप्तम् ?, इति प्रश्नस्योत्तरं मगवा-नाद-'गोयमा !' हे गौतग ! 'भइसालवणस्स' भद्रशालवनस्य 'बहुसमरमणिज्जा भो' बहुसम-

नन्दवनवस्तव्यता

'कहिणं भंते ! मंद्रे पन्वए णंदणवणे णामं वणे पण्णसे' इत्यादि

टीकार्थ-गौतम ने इस सूत्र द्वारा प्रभु से ऐसा पूछा है-(कहि णे भंते मंदरे-पव्यए णंदणवर्णे णामं वर्णे पण्णेसे) हे भदन्त ! मंदर पर्यत में नन्दन वन नामका वन कहां पर कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं (गोयमा ! भदसाल-यणस्स बहुसमरमणिङजाओं भूमिभागाओं पंचजीयणस्थाई उद्धं उप्पद्दसा

नंहनयन वक्तत्यता

'कहिंग भंते। मंदरे पटनए णंदणवणे णामं वणे पण्णते इत्यादि

शिश्य - गौतभरवाभी थे प्रभुते आ सूत्रवडे किवी रीते प्रश्न हथे छे हैं 'कहिणं मंते ! मंद्रे पहत्रव जंदणवणे जामं वणे पण्यात्ते' दे भहति ! भंदर पर्वतमां नंदन वन नामे वन हथा स्थणे आवेक्ष छे ? कोना अवालमां प्रभु हदें छे-'गोयमा ! भइसालवणस्य बहुसमरमणि- रमणीत्-अत्यन्तसमत्लरमणीयात् 'भूमिभागाओ' भूमिभागात् 'पंचनोयणसयाइं' पंच योजनशतानि 'उद्धं' ऊर्ध्वम् 'उप्पइत्ता' उत्पत्य गत्वा अग्रतो वर्धिष्णाविति गम्यम्, तस्य वक्ष्यमाणेन 'मंदरे पर्वते' इत्येनान्वयः 'एत्य' अन-अन्नान्तरे 'णं' खल्ल 'मंदरे पव्वए' मन्दरे पर्वते 'णंदणवणे णामं' नन्दनवनं नाम 'वणे' वनं 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तं, तच्च 'पंचनोयण-सयाइं' पश्च योजनशतानि 'चक्कवालिक्खंभेणं' चक्रशालिक्कम्भेण चक्रवालशब्दोऽत्र सम-चक्रवालपरो विशेषस्य सामान्यान्तर्गतत्वात्, तेन समचक्रवालं सममण्डलं तस्य यो विष्कम्भः स्वपरिधेः सर्वतः समप्रमाणत्वेन विस्तारस्तेन, अत्र समत्वविशेषणोपादानेन विषमत्वादि विशिष्ट चक्रवालविष्कम्भस्य व्यावृत्तिः, अत एव तद्वनं 'वष्टे' वृत्तं-वर्तुलं, तच्चायोगोलका-दिवद् घनमपि सम्भाव्येतेत्यत आह—'वल्याकारसंठाणसंठिए' वल्याकारसंस्थानसंस्थितः— बल्यः कङ्कणं तच्च मध्यविवरस्रतं भवति, तस्येन आकारः—स्वरूपं रिक्कमध्यत्वं यस्य संस्थानस्य तद् बल्याकारं तच्च तत् संस्थानं वल्याकारसंस्थानं तेन संस्थितम् एतदेव स्पष्टीकरोति— 'जे णं' यत् खल्ज 'मंदरं पठ्वयं' मन्दरं पर्वतं 'सन्वश्चो' सर्वतः—सर्वदिश्च 'समंता' समन्तात्

एत्थणं मंदरे प्रव्यए णंदणवणे णागं वणे पण्णत्ते) हे गौतम ! भद्रवालवन के बहु समरमणीय भूमिश्राग से पांचसो योजन ऊपर जाने पर आगत ठीक इसी स्थान पर मन्दर पर्वत के ऊपर नन्दनवन नामका वन कहा गया है (पंचजोयण स्याइं चक्कवालिक्खंभेणं वहे वलयाकारसंठाणसंठिय) यह वन चक्रवाल विक्कम्भ की अपेक्षा पांचसो योजन विस्तार वाला है चक्रवाल वाव्द से यहां समचक्र बाल विवक्षित हुआ है समचक्रवाल का अर्थ सममंडल ऐसा होता है अपनी परीधि का जो बराबर का विस्तार है वही समचक्रवाल विष्कंम्भ है। विष्कंभ चक्रवाल विष्कम्भ की निवृत्ति के लिये यहां समविद्येषण का उपादान करलेना चाहिये इसी कारण इस बनको "वह" वृत गोल बतलाया गया है और इसी से इसका आकार जैसा बलय का होता है वैसा प्रकट किया गया हैं। (जे णं मंदरं प्रवर्ष

ब्जाओ मुमिमागाओ पंच जोयणसयाई उद्धं उपदत्ता एत्थणं मंदरे पठवए णंदणवणे णामं वणे पण्णत्ते' है गीतम! भद्रशास वनना अहुसमरमञ्जीय भूमि भाग्धी प्रायसे। येाजन हपर जवा आह जे स्थान आवे छे, ठीइ ते स्थान छपर मंदर पर्वतनी हपर नंदनवन नामड वन आवे छे. 'पंच जोयगसयाई चक्कवालिक्संमेणं बहे वल्याकारसंठाणसंठिए' आ वन यहवास निष्डं भाी अपेक्षाओ पांचसे। येाजन जेटहां छे. यहवास शण्दयी अहीं समयहवास विविक्षत थेरेत छे. समयहवासने। अर्थ सम भंडण केवे। थाय छे. पोतानी परिधिना जे अराअर विस्तार छे तेज समयहवास विष्डं अ. विष्ठं अ अहवास विष्ठं अनी माटे अहीं समविशेषण्यनं हपादन हरी हेवुं निष्ठे. के हारण्यी ज को वनने 'वहु' केटसे हे दन्त (गेरण) अतावव मां आवेस हे, अने केथी ज कोनी आहार केवे। वस्त्रने हैं। हें हे तेवे। ज प्रहट हरवामां आवेस हे,

सर्वविदिश्च 'संपरिक्शिचा' 'संपरिक्षिप्य-परिवेष्टय 'णं' खर्छ 'चिट्ठ इति' तिष्ठतीति, अय मन्दरस्य बिहिविंष्कम्भादिमानमाइ-'णव जोयणसहस्साइं' इत्यादि-नव नवसंख्यानि योजन-सहस्राणि 'णव य' नव च 'चउप्पण्णे' चतुष्पश्चशानि चतुष्पश्चाशद्धिकानि 'जोयणसए' योजनशतानि 'छच्चेगारसभाए' पर् चैकादशभागान् 'जोयणस्स' योजनस्य 'बाहिं' बिहः बिहः प्रदेशे 'गिरिविव्यंभो' गिरिविष्कम्भः गिरिः मन्दरस्य पर्वतस्य विष्कम्भः विस्तारः, पर्वतानां हि नितम्बभागे बाह्याभ्यन्तरभेदाद् द्वौ विष्कम्भौ भवतः, तन्न बाह्यो विष्कम्भः उक्तः, तथा—'एगचीसं' एकत्रिंशतं 'जोयणसदस्साइं' योजनसहस्राणि 'चत्तारि य' चतारि च 'अउण्यान्यं काशोतानि—कनाशीत्यधिकानि 'जोयणसए' योजनशतानि 'किंचिविसेसाहिए' किश्चिद्विशेषाधिकानि—किश्चिद्विधिकानि 'बाहिं' बिहः—बिहः प्रदेशवर्ती 'गिरिपरिएणं' गिरिपरियः गिरेः मन्दरस्य परिरयः परिधिः 'णं' खर्छ अस्तीति शेषः तथा 'अट' अष्ट 'जोयणसहस्साइं' योजनसहस्राणि 'णव य' नव च 'चउप्पण्णे' चतुष्पञ्चाशानि—चतुष्पञ्चाशद्धिकानि 'जोयणसए' योजनशतानि 'छच्चेगारसभाए' पर् चैकादशभागान् 'जोयणस्स' योजनस्य 'अंतो' अन्तः—मध्ये नन्दनवनात् प्राय् 'गिरिविष्कंभो' गिरिविष्कम्भः—मेरुपर्वतिविस्तारः,

तथा (अहावीसं) अष्टार्विशर्ति (जोयणसहस्साइं) योजनसहस्राणि (तिण्णिय) त्रीणि च 'सोलसुत्तरं' वोडशोत्तराणि—पोडशिधिकानि (जोयणसण्) योजनशतानि (अह्य) अष्ट्रच सव्वओ समंता संपरिक्खिताणं चिह्रइति) यह नन्दन वन सुमेरु पर्वत को चारों ओर से घेरे हुए है। (णवजोयणसहस्साइंणव य चडण्पण्णे जोयणसण् छच्चेगारसभाण् जोयणसण् वाहिं गिरिविक्खंभो) सुमेरुपर्वत का बाह्य विष्कम्भ ९९५४ योजन का और एक योजन के ११ भागों में ६ भाग प्रमाण है (एगतीसं जोयणसहस्साइं चत्तारि य अडणासीण् जोयणसण् किंचि विसेसाहिण् वाहिं गिरिपरिरएणं, अह जोयणसहस्साइं णव य चडपण्णे जोयणसण् छच्चेगारसभाण् जोयणस्स अंतो गिरिविक्खंभो) इस गिरि का बाह्य परिक्षेप कुछ अधिक ३१४७९ थोजन का है और भीतरी विस्तार इसका ५९५४ योजन का है और एक योजन के ११ भागों में से छ भाग प्रमाण है (अट्टावीसं जोयणसहस्साइं

'जेणं मंदरं पद्यशं सद्यक्षो समंता संपरिविखत्ताणं चिट्ठइत्ति' आ नंदनदन सभेरु पर्वतथी थे।भेर अवित छे. 'णय जोयणसरस्साइं णयय चडण्यणो जोयणसए छच्चेगारसभाए जोयणसए बाहिं गिरिविक्खंभो' सुभेरु पर्वतने। आहा विष्ठं स ६६५४ शिक्षन केटिंश अने छे।४ शिक्षनना ११ लागे।भां ६ लाग प्रभाष्य छे. 'एगतीसं जोयणसहस्साइं चत्तारिय अडणासीए जोयणसए किंचि विसेसाहिए बाहिं गिरिपरिरएणं, अट्ठ जोयणसहस्साइं णवय चडपण्णे जोयणसए छच्चेगारसभाए जोयणस्स अंतो गिरिविक्खंभो' आ गिरिने। आहा परिश्चेप ४ हं।४ अधि ३१४७६ थे।४न केटिंश छ अने सीतरी विस्तार ओने। ८६५४ थे।कन केटिंश अने शिक्षा अभे थे।कनना १९ लागे।भांशी ६ लाग प्रभाष्य छे. 'अट्ठावीसं जोयण-

(इकारसभाए) एकादशभागान् (जोयणस्प्त) योजनस्य (अंतो) अन्तः-अभ्यन्तरवर्ती (शिदि-परिरप) पिरिपरिरय:-मेरुपर्वतपरिधिः (णं) खळ अस्तीति शेषः, अथात्र पद्मवरवेदिकाद्दि-कमाह-(से णं एगाए) इत्यादि उद् नन्दनवनं खल्ल एकया (पलमवरवेइयाए) पद्मवरवेदिकया (एमेण य) एकेन च (दणसंडेगं) वनपण्डेन (सन्त्रओ) सर्वतः सर्वदिश्च (समंता) समन्तात्-सर्वविदिश्च (संपरिक्खित्ते) सम्परिक्षिप्तं-परिवेष्टितं विद्यत इति शेषः, तयोः पद्मवरवेदिका-सनक्ष्डयोः (वण्णओ) वर्णकः-वर्णनपरपदसमूहोऽत वोध्यः, स च चतुर्थपश्चमसूत्रतो ग्राह्यः, स च किम्पर्यन्तो ग्राह्य इति जिज्ञासायामाह-'जाव देवा आसर्यति' यावद्देवा आसते 'देवा भासते' इति पदपर्यन्तो वर्णको प्राह्मः, अत्र यावत्पदसङ्ग्राह्मपदसङ्ग्राह्मपदसङ्ग्राह्मपदमस्त्रात्कर्तव्यः, तत्र-'देवा' इत्युपलक्षणं, तेन 'सर्वति, चिहंति' इत्यादिनां ग्रहणम्, एवं पदानां व्याख्या षश्चमसूत्रव्यारूपातोऽवसेया, अथात्र सिद्धायतनानि वर्णयितुमुपक्रमते-'मंदरस्स णं पव्ययस्स' इत्यादि-मन्दरस्य मेरोः खल्ल पर्वतस्य 'पुरत्थिमेणं' पौरस्त्येन-पूर्वदिशि 'प्रथ' अत्र-तिष्णि य सोलसुत्तरे जोयणसए अट्टय इक्कारसभाए जोयणस्ह अंतोगिरि परि-रयेणं) तथा इस गिरिका भीनरी परिक्षेप २८३१६ योजन का और एक योजन के ११ भागों में से आठ भाग प्रमाण है। (से णं एगाए पडमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सब्बओ समंता संपरिक्खिले) वह नन्दन वन एक पद्मवर वेदिका से और एक वनषण्ड से चारों ओर से घिरा हुआ है (वण्णओ जाव देवा आस यंति) इस पदावर वेदिका और वनषण्ड का वर्णक यहां पर कहलेना चाहिये इसे जानने के लिये चतुर्थ और पंचम सूत्र देखिये यहां पर यह वर्णन 'आसपंति' पद कहा गया है यहाँ यावत्यद से जो पद संगृहीत हुए हैं वे पंचम सूत्र से जाने जा सकते हैं। "आसयंति" यह पद उपलक्षण रूप है इससे "स्वयंति चिहंति"

सहस्साई तिण्णिय सोलसुत्तरे जोयणसए अहुय इकारसभाए जोयणस्स अंतो गिरि परिर येणं' तेभक आ जिरिना अंहरने। परिक्षेप २८३१६ येक्नन केटले: अने ओह येक्नन। ११ काजेमांथी आहे लीग प्रभाष्ट्र छे. 'से णं एगाए पडमवरवेइयाए ऐगेण य वणसंडेगं सन्वजो समंता संपितिक्खते' आ नन्दन वन ओह पद्मवर वेहिहाथी अने ओह वनणंड्रथी श्रामेर आहुत छे. 'वण्णओ जाव देवा आसयंति' आ पद्मवर वेहिहा अने वनणंड्रना वर्णंह विचे अहीं अध्याहृत हरी लेखें के के सं संभां काष्ट्रवा भाटे यतुर्थं अने पंचम सूत्रमां किहासुओं के केवुं केछेंगे. अहीं आ वर्णुन 'आसयंति' पद्धी संअद छे. अहीं यावत पद्धी के पहें। संगृहीत थया छे ते अहीं पंचम सूत्रमांथी काष्ट्री शहाय तेम छे. 'आसयंति' आ पह उपलक्ष्य ३५ छे. ओनाथी सयंति चिट्टंतिं वगेरे हिपापहातुं अहण्य थयुं छे. ओ पहानी आण्या पंचम सूत्रमां हरवामां आवेली छे. 'मंदरस्म णं पत्त्रयस्म पुरिया मेणं एत्थणं महं एने सिद्धाययणे पण्णत्ते' आ भंदर पद्यती पूर्व हिशामां ओह विशाण सिद्धायतन आवेल छे. 'एवं चडिहिंस चतारि सिद्धाययणा विदिसास पुरुखरिणीओ तं चेत्र पमाणं

अवान्तरे 'णं' खलु 'महं एगं' महदेकं 'सिद्धार्यणे' सिद्धायतनं 'पण्णत्ते' प्रश्नप्तं 'एवं' एवम्-अनन्तरस्त्रोक्तमद्रशालवनानुसारेण 'चलिदिनं' चतुर्दिशि पूर्वादिदिनचतुष्ठये प्रतिदिगे-कैकमिति 'चलारि' चरवारि 'सिद्धाययणा' सिद्धायतनानि प्रज्ञप्तानि, तथा 'विदिसासु' विदिश्च ईशानादिकोणेसु 'पुन्खरिणी अं' पुन्करिण्यः प्रज्ञप्ताः आसाम् 'तंचेव' तदेव मदशाल-वनोक्तमेव 'पमाणं' प्रमाणं-विष्कमश्चादिमानम् 'सिद्धाययणाणं' सिद्धायतनानाम् 'पुनखरिणीणं च' पुष्कारिणीनां च बहुमध्यदेशभागवर्तिनः 'पासायवर्डिसगा' प्रासादावतंसकाः 'तहचेव' तथेव मदशालवनशर्तिन-दापुष्करिणीगतप्रासादावतंसकादेव 'सकेसाणाणं' शकेशानयोः-शके-न्द्रसम्बन्धिन ईशानेन्द्रसम्बन्धिनथ भणितच्याः, अयमाशयः यथा भद्रशालवने शकेन्द्रसम्बन्धिन आग्नेय नैकेर्द्रसम्बन्धिनो वायव्येशान-

आदि किया परों ग्रहण हुआ है। इन परों की न्याख्या पंचम सूत्र में की गई है। (मंदरस्स णं पन्चयस्स पुरिक्षिमेंण एत्थ णं महं एगे सिद्धाययणे पण्णात्ते) इस मन्दर पर्वत की पूर्विद्या में एक विशाल सिद्धायतन कहा गया है (एवं चउदि-सि चत्तारि सिद्धायपणा विदिसासु पुत्रखरिणीओ तंचेव पमाणं) मेरु पर्वत की पूर्विद्या में भी एक एक सिद्धायतन कहा गया है इस तरह कुल सिद्धायतन पूर्वीदि दिशाओं में से एक दिशा में एक एक के होने से ४ प्रतिपादित हुए हैं। (विदिसासु पुत्रखरिणीओ तंचेव पमाणं) तथा इस कथन के अनुसार विदिशाओं में ईशान आदि कोनां में पुष्करिणीयां प्रतिपादित हुई है। इन पुष्करिणियों के विष्कंभादि के प्रमाण जैसा ही कहा गया है तथा (शिद्धायथणाणं) सिद्धायतनों का विष्कंभादि के प्रमाण जैसा ही कहा गया है तथा (शिद्धायथणाणं) सिद्धायतनों का विष्कंभादि के प्रमाण जैसा ही कहा गया है। (पुत्रखरिणीणं च पासायवर्डेसगा तह चेव) पुष्करिणियों के बहुमध्यदेशवर्तिभासादावतंसक भद्रशालवनवर्ती नन्दा पुष्करिणिगत प्रासादावतंक के जैसे ही हैं। (तहचेव सक्केसाणाणं तेणं चेव पमाणेणं)

मेरु पर्वतनी पूर्व हिशामां केतं सिद्धायतन कहेवामां आवेल छे. आ प्रमाणे पूर्व वर्णरे यारेयार हिशामां ओक-ओक सिद्धायतन छे तेथी कुल यार सिद्धायतने। थयां 'विदिसासु पुरुक्तिणीओ तं चेव पमाणं' तेम के आ क्ष्म मुक्क विहिश के मां छंशान वर्णरे के छे छे। भे पुरुक्तिणीओ प्रतिपाहित कहें छे. के पुरुक्तिणीओ मा विष्कं लाहिना प्रमाण् कद्रशालवननी पुष्कं रिण्डी थे।ना विष्कं लाहिनाप्रमाण् केतं के छे. तेमक 'सिद्धाययणा णं' सिद्धायतनीना विष्कं लाहि प्रमाण् पण् कद्रशालना प्रकरणां के छे तेमक 'सिद्धाययणा णं' सिद्धायतनीना विष्कं लाहि प्रमाण् पण् कद्रशालना प्रकरणां के छित सिद्धायतनीना प्रमाण्वत क छे. 'पुक्करिणी णं च पासाय वहें सगा तहचेव' पुष्करिण्डी के।ना अहुमध्य हेशवित प्रासाद्धावतं सक्के। पण् कद्रशालवनवर्ती नन्हा पुष्करिण्डियत प्रासाद्धावतं सक्के। के छे। 'तहचेव सक्केसाणाणं तेणं चेव प्रमाणेणं' के प्रासाद्धावतं सक्के। शक्ष अने छेशानना छे कोटसे के केम कद्रशाल वनमां आन्नेय अने

कोणवर्तिनः प्रासादावतंसका भणिताः, तथैव नन्दनवनेऽपि शक्रेवानेन्द्रयोहतत्वत्तत्कोणवर्तिनः प्रासादावतंसका वाच्या इति, ते च प्रासादा भद्रवाळवनवर्ति पूर्वेत्तरादि कोणगत प्रवादि पुष्कारिणीवहुमध्यदेशवर्तिन इव नन्दनवनदर्ति पूर्वेत्तरादिकोणगतनन्दोत्तरादि पुष्करिणी बहुमध्यदेशवर्तिनो बोध्याः, ताश्च पुष्कारिण्योऽत्र नागतो निर्दित्रयन्ते तथाहि नन्दोत्तरा १ नन्दा २ सम्दा २ सम्दा अनेवा श्वेता ईशानकोणे, तथा नन्दिवेणा १ अमोवा २ गोस्तूपा १ सदर्वना ४ चैता अगनेयकोणे, तथा नप्रदा १ विशाला २ क्षत्रदा ३ पुष्डरीकिणी ४ चैता नैक्तरय-कोणे, तथा नविजया १ वैजयन्ती २ अपराजिता १ जयन्ती ४ चैता वायव्यकोणे, इति प्रतिकोणं

ये प्रासाद।वतंसक दाक और ईशान के हैं-अर्थात् जिस प्रकार से अद्रशाल वन में आग्नेय और नैर्ऋत्यकोण संबंधी प्रासाद।वतंसक शकेन्द्र संबंधी कहे गये हैं उसी प्रकार से इस नन्दनवन में भी आग्नेय और नैर्ऋत्यकोणवर्ती प्रासाद।वतंसक शकेन्द्र संबंधी और वायव्य एवं ईशानकोणवर्ती प्रासाद।वतंसक ईशानेन्द्र सम्बंधी है ऐसा जानना चाहिए। वे प्रासाद अद्रशालवनवर्ति पूर्वोत्तरादिकोण गत पद्मादि पुष्करिणियों के बहु अध्यदेश भाग में जैसे प्रकट किये गये हैं बैसे ही ये प्रासाद नन्दनवनवर्ती पूर्वोतरादिकोण गत नन्दोत्तर।दि पुष्करिणियों के बहुमध्य देशवर्ती हैं ऐसा जानना चाहिये यहां पर नन्दोत्तराद प्रकारिणियों के बहुमध्य देशवर्ती हैं ऐसा जानना चाहिये यहां पर नन्दोत्तरा, जन्दा, खनन्दा नन्दिवर्धना ये चार पुष्करिणियां ईशानकोण में हैं तथा-नन्दियेणा. अमोधा गोस्तूपा, और खदर्शना ये चार पुष्करिणियां आग्नेयकोण में हैं अहा, विशाला, कुसुदा और पुण्डरीकिणी ये चार पुष्करिणियां नैर्ऋत्यकोण में हैं और विजया,

નેજ્જત્ય કાેેેંગુથી સંબદ્ધ પ્રાસાદાવત સકા શકેન્દ્ર સંબંધી દહેવામાં આવેલા છે અને જેમ વાયવ્ય અને ઇશાનવર્તી પ્રાસાદાવત સક ઇશાનેન્દ્ર સંબંધી કહેવામાં આવેલ છે તેમજ આ ન-દનવનમાં પણ આવનેય અને નૈજ્જત્ય દાેં ણવતી પ્રાસાદાવત સકા શકેન્દ્ર સંબંધી અને વાયત્મ તેમજ ઇશાન કે ણવતી પ્રાસાદાવત સકા ઇશાનેન્દ્ર સંબંધી છે, એવું જાણવું જોઇએ. એ પ્રાસાદા ભદ્રશાલવન વર્તિ પૂર્વોત્તરાદિ કે ણ ગત પદ્માદિ પુષ્કરિણીઓના અહુમધ્ય દેશ ભાગમાં જે પ્રમાણે નિરૂપિત કરવામાં આવેલ છે તેવા જ એ પ્રાસાદે ન-દનવનવર્તિ પૂર્વોત્તરાદિ કાેણ ગત ન-દોત્તર દિ પુષ્કરિણીઓના અહુમધ્ય દેશવર્તી છે. એમ જાણવું જોઈ એ અહીં ન-દોત્તરા, નન્દા, સુનન્દા, ન-દિવર્ષના એ ચાર પુષ્કરિણીઓ ઇશાન કાેણુપાં આવેલી છે. તેમજ નન્દિષેણા, અમાદ્યા, ગેસ્ત્ત્યા અને સુદર્શના એ ચાર પુષ્કરિણીઓ આગનેય કાેણુમાં આવેલી છે. ભદ્રા વિશાલા, કુમુદા અને પુંડરીકિણી એ ચાર પુષ્કરિણીઓ નૈજ્જાય કાેણુમાં આવેલી છે, અને વિજયા, વૈજયન્તી, જયન્તી અને અપરાજિતા એ ચાર પુષ્કરિણીઓ

चतस्र असः पुष्कि रिण्योऽवसेयाः, एतत्युष्करिणी बहुमध्यदेशभागवर्तिनस्ते प्रासादाः 'तेणं चे अ' भद्रशालक्ष नातप्रासादीक्षेत्र पञ्च शतयो जनो चत्या दिरूपेण 'पमाणेणं' प्रमाणेन वाच्याः वस्यमाणानि क्रटाण्यपि से इपर्वता चादरयेवान्तरे सिद्धायतनप्रासादावतं सक्षमध्यवर्तीनि बोध्यानि, तत्र संख्या—नामक्रत मेदं प्रदर्शिद्धमाह—'मंदणवणे णं भंते !' इत्यादि—नन्दनवने खलु भ रन्त ! 'कर्' कति—कियन्ति 'क्र्डा' क्रटानि 'पग्णना' प्रज्ञप्तानि 'गोयमा' गौतम ! 'णव' नव 'क्रडा' क्रटानि 'पग्णना' प्रज्ञप्तानि 'गोयमा' गौतम ! 'णव' नव 'क्रडा' क्रटानि 'पण्णचा' प्रज्ञप्तानि 'तं जहा' तहाथा—'णंदणक्षणक्रहे' नन्दनवनक्रूटं १ 'मंदरक्रहे' मन्दरक्र्टं २ 'णिसहक्रहे' निषधक्र्रं ३ 'हिनवयक्र्हे' हिमवत्क्र्टं ४ 'रययक्र्हे' रजतक्र्टं ५ 'रयपक्र्हें स्वतक्र्टं १ 'रयपक्र्हें वजक्र्टं १ विषक्र्हें वजक्र्टं १ 'रयपक्र्हें वजक्र्टं १ विषक्रक्रें १ विषक्रक्रें १ विषक्रिक्रें १ विषक्रिक्रें १ विषक्रक्रें वजक्र्टं १ विषक्रक्रें वजक्र्टं १ विषक्रक्रें १ विषक्रक्रें १ विषक्रिक्रें १ विषक्रिक्रें १ विषक्रक्रें १ विषक्रक्रें १ विषक्रक्रें १ विषक्रिक्रें १ विषक्रिक्रें १ विषक्रक्रें १ विषक्रिक्रें १ विषक्रिक्रें १ विषक्रक्रें १ विषक्रक्रें १ विषक्रिक्रें १ विषक्रक्रें १ विषक्रक्रें १ विषक्रिक्रें १ विषक्रिक्रें १ विषक्रिक्रें १ विषक्रिक्रें १ विषक्रें १ विषक्रक्रें १ विषक

तरह हर एक कोण में चार २ पुष्करिणियां है ? इन पुष्करिणियों के बहुमध्यदेश भाग में प्रासादावनंसक हैं जिस प्रकार की पांचसों योजन की उच्चता आदि
स्व प्रमाणता भद्रशालवनगत प्रासादों की कही गई है वैसी ही उच्चता आदिस्व प्रमाणता इन प्रासादों की भी कही गई जाननी चाहिये। मेर पर्वत से उतने
ही अन्तर में सिद्धायतन और प्रासादावतंसकों के मध्य में ये नी कूट कहे गये
हैं गौतमस्वामी ने जब प्रमु से ऐसा प्रशा-(णंदणवणेणं मंते। कइकूडा पण्णता)
हे भदन्त। तन्दनवन में कितने कूट कहे गये हैं ? तब प्रभुने उनसे ऐसा कहा(गोयमा। णव कूडा पण्णत्ता) हे गौतम। यहां पर नो कूट कहे गये हैं (तं जहा-)
उनके नाम इस प्रकार से हैं-(णंदणवणकूडे, मंदरकूडे, णिसहकूडे, हिमवयकूडे, रययकूडे, स्यगकूडे, सागरचित्तकूडे, वहरकूडे, बलकूडे) नन्दनवनकूट,
मन्दरकूट, निषधकूट, हिमवतकूट, रजतकूट, रचककूट, सागरचित्रकूट, बल्रकूट,
और बलकूट। अब गौतम। ने प्रभु से ऐसा पूछा है-(कहि णं भंते। णंदणवणे णंदणवणकूडे पण्णते) हे भदन्त! नन्दन वनमें नन्दन वन नामका कूट कहां पर कहा

वायत्य हे खुमां आवेशी छे. आ प्रमाखे हरेह है।खुमां यार-यार पुण्डिरिखी थे। आवेशी छे. अ प्रारंती पांचरे। अ पुण्डिरिखी थे। ना अह मध्य हेश लागमां प्रासाहायतं सहै। आवेशा छे. के प्रकारनी पांचरे। ये। के के विश्वा के स्था विश्व के के प्रमाख्या का प्रसाही में अह होनी है के प्रमाख्या के प्रासाही का प्रसाही पि है के प्रमाख्या के प्रासाही पि है के के प्रमाख्या के प्रासाही के स्था के नव हुटे। आवेशा छे. हे वे गौतमस्वमी प्रसान अप रीते प्रश्न डर्था 'जंदणवर्णणं मंते! कह्कूहा पण्णत्ता' है लहंत! नन्हनवनमां है देशा हुटे। हे हे वामां आवेशा छे ? त्यारे प्रसाणे तेमने हें ही मां प्रमाखे छे जंदणवणकूहे, में द्यहें, णिसहकूहें, हिमवयकूहें, रयवकूहें, रयवकूहें, स्वगकूहें, स्वगरिक्त हुटे, संवरकूहें, वहरकूहें, वहरकूहें, वहरकूहें, वहरकूहें, वहरकूहें, स्वगक्त हुटे, संवरकूहें, महनवन हुटे, मंदरकूटे, मिदरकूटे, निष्धहूटे, हिमवयकूहें, रववकूहें, रववकूहें, रववकूहें, रववकूहें, स्वगक्त हुटे, संवरहें, संवरकूटे, सागर वित्रहूटे, सागर वित्रहूटें, वहरकूटें नन्हनवन हुटे, में हरहेंटे, निष्धहूटे, हिमवेशहेंटे, हिमवेशहेंटे, रवित्रहूटें, रवित्रहूटें, सागर वित्रहूटें, सागर वित्रहूटें सागर वित्रहूटें सागर वित्रहूटें सागर वित्रहूटें सागर वित्रहूटें सागर वित्रहूटें सागर वित्रह

नन्दनवने 'णंदणवणक्रुडे णामं' तन्दनवनक्रंट नाम 'क्र्डे' क्र्टं 'पण्णते ?' प्रज्ञप्तम् 'गोयमा' गौतम ! 'मंदरस्स पव्ययस्स' मन्दरस्य पर्वतस्य 'प्रत्थिमिन्छसिद्धाययणस्य' पौरस्त्य सिद्धा-यतनस्य 'उत्तरेणं उत्तरेण-उत्तरिद्धा 'उत्तरपुरिथमिन्छस्स' उत्तरपौरस्त्यस्य-ईशानकोण-वर्तिनः 'पासायवर्डेसयस्स' प्रासादावतं सक्रस्य 'दिव्खणेणं' दक्षिणेन -दक्षिणदिक्षि 'एत्थ' अन्न-अन्नान्तरे 'णं' खळ 'णंदणवणे' नन्दनवणे 'णंदवणे णामं' नन्दनवनं नःम 'क्र्डे' क्टं 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तम् अन्नावि मेरतः सिद्धायतनपञ्चाक्ष्योजनानि व्यतिव्रक्ष्येव क्षेत्रनियमो बोध्यः, अन्यथाऽस्य प्रासादावतं सक्रभवनयोरन्तराळवित्तरं न स्यात् ।

अथ वर्णितवर्णियष्यमाणकूटानां सङ्ख्यामितदेष्टुमाह-'पंचसइया कूडा' पश्चशितकानि कूटानि 'पुट्विणिया' पूर्ववर्णितानि-पूर्व-त्राग् विदिग्हिस्तकूटवर्णनप्रसङ्गे वर्णितानि उच्चत्वविष्कम्भपिधिवर्णसंस्थानदेवराजधानी दिगादिभिक्तः।नि तानि चात्र 'भाणियव्वा' भिणितव्यानि वक्तव्यानि सद्दश्याठतात् अत्र 'देवी' देवी अधिष्ठात्री देवता 'मेहंकरा' मेय-,गया है ! उत्तर में प्रभु कहते हैं-(गो यमा ! मंदरस्स पव्वयस्स पुरिधिमिल्छे सिद्धाययणस्स उत्तरेणं उत्तरपुरिधिमिल्छस्स पासायबडें सयस्स दिक्खणेणं-एत्थणं णंदवणे णंदणवणे णामं कूडे पण्णत्ते) हे गौत्र ! मन्दर पर्वत की पूर्वदिशा में रहे हुए सिद्धायतन की उत्तरदिशा में तथा-ईशानकोणवर्ती प्रासादावतंसक की दिक्षणिदिशा में नन्दनवन में नन्दनवन नामका कूट कहा गया है यहां पर भी मेरको पचास योजन पार करके ही क्षेत्रका नियम कहा गया जानन। चाहिये। यदि ऐसा न मानाजावे तो किर प्रासादावतंसक और भवन के अन्तराख में वर्तित्व इस कूट में नहीं आवेगा। (पंचसईथाकूडा पुन्वविण्या भाणि-पव्धा, देवी मेहंकरा रायहाणी विदिसाएत्ति) जिस प्रकार से विदिग्हितकूट के प्रकरण में उच्चता, व्यास-विष्कंम्भ, परिधि परिक्षेप-वर्ण, संस्थान, देव,

वन्दूर अने अल्लाइट. इरीथी जीतस्वामी प्रस्त अवा प्रश्न हथीं है 'हिहंण संते! णंदण वण णंदणवण कूडे पण्णत्ते' हे सहंत! नन्हनवनमां नंहनवन नामें हूर हया स्थणे आवेल हैं। अना अवाणमां प्रस्तु हहें हैं में ने स्वत्य प्रतिश्विमल्ले सिद्धाययणस्स उत्तरेणं उत्तरपुरिथमिल्ले सिद्धाययणस्स उत्तरेणं उत्तरपुरिथमिल्लस्स पासायवडें सयस्स दिक्लिणेणं एत्थणं णंदणवणे णंदणवणे णामं कूडे पण्णत्ते' हे जीतम! मन्हर पर्वतनी पूर्व हिशामां आवेला सिद्धायतननी उत्तर हिशामां तेमक हेशान हेल्वती प्रासाहावतं सहनी हिशामां नन्हनवनमां नन्हनवन नामे हूर आवेल है. अहीं पृष्टु मेरुने प्रयास देशिन पार हरीने क हित्रने। नियम हहें वाकेले कहावे कि आहीं पृष्टु मेरुने प्रयास देशिन पार हरीने क हित्रने। नियम हहें वाकेले कहावे कि आहीं केशिन आप प्रमाह्य मानवामां निक्ष आवे ते। पृष्टी प्रासाहावतं सह अने स्वन्ता आत्रालवित्व आ हुरमां आवशे क नीहे. 'पंचसईया कृष्टा पृष्ट्य विविध्यामां माणियव्या, देवी मेहंकरा रायहाणी विदिसाएत्ति' के प्रमाह्य विदिश्य हिशाही हिशाह प्रमाह्य विदिश्य हिशाही हिशाही उत्थान हिशाही प्रमाह्य हिशाही है हिशाही है हिशाही है हिशाही हिशाही हिशाही है हिशाही हि

द्वराभिधाना अस्याः देव्याः 'रायहाणी' राजधानी 'विदिसाएत्ति' विदिशि-ईशानकीणे पद्मोत्तरकूटवर्षणेनीयत्वात्, इति प्रथमकूटवर्णनम् १ अथावशिष्टरकूटानां तहेवीनां तद्राजधानीनां च व्यवस्थां चिकीषुराह 'एयाहिं इत्यादि एताभिः देवीभिः 'चेव' चकारात् राजधानीभिः -अनन्तरस्चे वक्ष्यमाणाभिरेव सह 'पुव्याभिछावेणं' पूर्वभिछापेन -पूर्वेण नन्द- नवनकूटोक्तेन अभिछापेन -स्त्रपाठेन 'णेयव्या' नेतव्यानि, बोध्यानि 'हमेकूडा' इमानि वक्ष्यमाणानि क्रुटानि 'इमाहिं दिसाहिं' इमाभिः वक्ष्यमाणाभिर्दिग्नः भिणतव्यानीति शेषः, एतदेव रपष्टीकरोति 'पुपत्थिमिछस्स' पौरस्त्यस्य -पूर्वदिग्भवस्य 'भवणस्स' भवनस्य 'दाहिणेणं' दक्षिणेन -दक्षिणदिसि 'दाहिणपुरत्थिमिछस्स' दक्षिणपीरस्त्य आग्नेयकोणवर्तिनः 'पासायवर्डसगस्स' प्रासादावतंसकस्य 'उत्तरेणं' उत्तरेण -उत्तरदिशि 'मंदरे' मन्दरे -मन्दर- नाम्नि 'कूडे' कूटे 'मेहवई' मेघवती नाम 'रायहाणी' राजधानी 'पुव्वेणं' पूर्वेण पूर्वस्थां नाम्मि 'कूडे' कूटे 'मेहवई' मेघवती नाम 'रायहाणी' राजधानी 'पुव्वेणं' पूर्वेण पूर्वस्थां नाम्मि 'कूडे' कूटे 'मेहवई' मेघवती नाम 'रायहाणी' राजधानी 'पुव्वेणं' पूर्वेण पूर्वस्थां

राजधानी दिशा आदि हारों को छेकर क्रूटवर्णित किये गये हैं उसी प्रकार से यहां पर भी इन क्टों का वर्णन इन्हीं सब उच्चता आदि हारों को छेकर कर्छना चाहिये क्यों कि उस पाठ में और यहां के पाठ में कोई अन्तर नहीं है। अतः इन हारों को छेकर जैसा परनोत्तर रूप से वहां पर क्टों का कथन किया गया है वसा ही वह सब कथन यहां पर भी है उस वर्णन में और इस वर्णन में कोई अन्तर नहीं है ये सब क्ट पांचसों योजन के विस्तारवाछे हैं। यहां पर देवी मेच क्रूरा नामकी है इसकी राजधानी विदिशा में ईशानकोण में है इस तरह पर्मोत्तरक्ट की तरह ही इस क्रूटका वर्णन है (एथाहिं चेव पुटवाभिलावणं गेयव्या इमें कृडा इमाहिं दिसाहिं पुरिथिमिल्लस्स भवणस्स दाहिणे णं दाहिण पुरिथिमिल्लस्स पासायवडें सगस्स उत्तरेणं मंदरे कूडे मेहवईराय हाणी) इसी मेच क्टोत्त अभिलाप के अनुसार इन २ दिशाओं में देवियों और राजधानियों से युक्त ये अवशिष्टकूट समझछेना चाहिये जैसे कि पूर्व

विगेरेना द्वाराधी मांडीने हूटे। विषे वर्णुन हरवामां अविश्वं छे, ते प्रमाणे क अहीं पण् की हूटेनुं वर्णुन समक देवुं कोई के हैम हे ते पाडमां अने अहींना पाडमां हेाई पण् तक्षावत नथी. अधी ओ द्वाराना माटे प्रश्नोत्तर इपमां त्यां हूटे। विषे हथन स्पष्ट हरवामां आवेश्वं छे तेषुं क अधुं हथन अहीं पण् समक्ष्युं कोई के. ते वर्णुनमां अने आ वर्णुनमां है। पण् कतने। तक्षावत नथी. ओ अधा हूटे! पांचसा थे। न केटला विस्तारवाणा छे. अहीं भेषं हरा नामह हेवी छे. अनी राक्षानी विहिश मां धितान है। आप पद्मीत्तर हूटनी केम क आ हूटनुं पण् वर्णुन समक्षानुं छे. 'एआहिं चेत्र पुन्तामिलावेणं णेयन्त्रा इमे कृडा इमाहिं दिसाहिं पुरिविमित्लस्स मत्रणस्स वाहिणेणं वाहिण पुरिविमित्लस्स पासायवर्डेसगास उत्तरेणं मंदरे कूडे मेहनई रायहागीं आ भेध हूटे। भ अभिक्षाप भुक्ष तत् तत् दिशाओभां हेवीओ। अने राक्धानीओशी युक्त ओ अवशिष्ट हूटे। समक देवा

दिशि, इति द्वितीयकूटवर्णनम् २ 'दिनखणिल्लस्स' दाक्षिणात्यस्य—दक्षिणदिग्भवस्य 'भरण-स्स' भवनस्य 'पुरत्थिमेण' पौरस्त्येन—पूर्विदिशि 'दाहिणपुरित्थिमेल्लस्स' दक्षिणपौरस्त्यस्य—आग्नेयकोणवर्तिनः 'पासःयवर्डंसगस्स' प्रासादावर्तसकस्य 'पचित्थिमेणं' पश्चिमेन पश्चिपदिशि 'णिसहे कूढे' निषधं नाम कूटं प्रज्ञप्तम् 'अस्याधिष्ठात्री 'सुमेहा देवी' सुमेधा नाम देवी प्रज्ञप्ता 'रायहाणी' राजधानी 'दिवखणेणं' दक्षिणेन—दक्षिणदिशि प्रज्ञप्ता इति तृतीयकूटवर्णनम् ३ अथ चतुर्थकूटवर्णनम्-'दिवखणिल्लस्स' दाक्षिणात्यस्य 'भवणस्स' भवनस्य 'पचित्थिमेणं' पश्चिमेन—पश्चिमदिशि 'दिवखणपच्चित्थिमिल्लस्स' दक्षिणपश्चिमस्य—नैर्कृत्यकोणवर्तिनः 'पासायवर्डेसगस्स' प्रासादावर्तसकस्य 'पुरत्थिमेणं' पौरस्त्येन—पूर्वदिशि 'हेमवएकूढे' हैमवरं नाम कूटं प्रज्ञक्षम्, अस्याधिष्ठात्री 'हेममालिणो देवी' हेममालिनी नाम देवी प्रज्ञप्ता, अस्य हैमवत्कूटस्य 'रायहाणो' राजधानी 'दिवखणेणं' दक्षिणेन—दक्षिणदिशि प्रज्ञप्ता इति चतुर्थकूटदिग्वर्ती भवन की दक्षिणदिशा में तथा आग्नेयकोणवर्ती प्रासादावर्तसक की

दिग्वर्ती भवन की दक्षिणदिशा में तथा आग्नेयकोणवर्ती प्रासादावतंसक की उत्तरिद्शा में वर्तमान मन्दर नामके कूट पर मेघवती नामकी राजधानी है यह राजधानी कूट की पूर्वदिशा में है २।

(दिक्लिणिल्लस्स भवणस्त पुरित्थमेणं दाहिणपुरित्थिमिल्लस्स पुासायवडें सगस्स पच्चित्थमेणं णिसहे कूटे सुमेहा देवी, रायहाणी दिक्लिणेणं ३) दक्षिणित्वर्ती भवन की पूर्विदेशा में तथा आग्नेयकोणविन प्रासादावतंसक की पश्चिमित्रा में निषध नामका कूट है इसकी अधिष्ठात्री सुमेधा नामकी देवी है इसकी राजधानी इस कूट की दक्षिणित्शा में कही गई है (दिक्लिणिल्लस्स भवणस्स पच्चित्थमेणं हेमवए कूडे हेममालिनी देवी रायहाणी दिक्लिणं ४) दक्षिणित्वर्ती भवन की पश्चिमदिशा में तथा नैक्रित्यकोणवर्ती प्रासादावतंसक की पूर्विद्शा में हैमवत नामका कूट है इसकी अधिष्ठात्री हेममालिनी नामकी देवी

ત્રાઈએ. જેમકે પૂર્વ દિગ્વતી ભવનની દક્ષિણ દિશામાં તેમ / અગ્નેય કેાણવતી પ્રસાદાવતં-સકની ઉત્તર દિશામાં વર્તમાન મંદર નામક ફૂડ ઉપર મેવવતી નામક રાજધાની છે. આ રાજધાની ફૂટની પૂર્વ દિશામાં આવેલી છે. ર

दिस्खणिल्लस्स भवणस्स पुरित्थमेणं दाहिणपुरिथिमिल्लस्स पासायविष्टं सगस्स पच्चित्सीणं णिसहे कृष्ठे सुमेहादेवी, रायहाणी दिक्खणेणं ३' ६क्षिणु दिव्यती लवननी पूर्व हिशामां तेमक व्याप्तेय केष्णुवर्ती प्रासादावतं सक्ष्मी पश्चिम दिशामां निषध नामक कूट व्याप्ते छे. क्षेनी शक्षानी कूटनी क्षिणु दिशामां व्यापेद्वी छे. 'दिक्खणिल्लस्स मवणस्स पच्चित्रमेणं दिक्खणपच्चित्रिमिल्लस्स पासायविष्ठं सगस्स पुरित्थमेणं देमवप कृष्ठे हेममालिनी देवी रायहाणी दिक्खणेणं ४' ६क्षिणु दिश्वती लवननी पश्चिम दिशामां तेमक नैक्षित्य केष्णुवर्ती प्रासादावतं सक्ष्मी पूर्विदशामां केमवत नामक केट व्यापेद्व छे. क्षे कूटनी अधिष्ठात्री हेममालिनी नामक देवी छे अने क्षेनी

दर्णनम् ४ अय पश्चमक्टवर्णनम्-'पर्चित्थिमिस्लस्स' पाश्चिमत्यस्य-पश्चिमदिखितिः 'भवणस्स' भवनस्य 'दिक्लिणेणं' दिलिणेन-दिलिणदिशि 'दाहिणपर्चित्यिमिस्लस्स' दिलिण-पश्चिमस्य-नैर्कृत्यकोणवितिः 'पासायवर्डेसगस्स' प्रासादावतंसकस्य 'उत्तरेणं' उत्तरेण उत्तरिशि 'रयए' रजां नाम 'क्र्टे' क्र्टं प्रकृतम् अस्याधिष्ठात्री 'सुबच्छा देवी' सुवत्सा नाम देवी प्रज्ञप्ता, अस्य र नतक्रटस्य 'रायहाणी' राजधानी 'पर्चित्थिमेणं' पश्चिमेन पश्चिमदिशि प्रज्ञप्ता इति पश्चमक्रटवर्णनम् । अथ षष्ठक्रटवर्णनम् 'पर्चित्थिमिस्लस्स' पाश्चिमात्य-स्य-पश्चिमदिश्वितिः 'भवणस्स' भवनस्य 'उत्तरेणं' उत्तरेण-उत्तरिशि 'उत्तरपर्चित्यिमिल्लस्स' पाश्चिमात्य-स्य-पश्चिमदिश्वितिः 'भवणस्स' भवनस्य 'उत्तरेणं' उत्तरेण-उत्तरिशि 'उत्तरपर्चित्यिमिल्ल-स्स' उत्तरपश्चिमस्य-वायव्यकोणवित्तिः 'पासायवर्डेसगस्स' प्रासाद्यवतंसकस्य 'दिक्लिणेणं' दिल्लिणेन-दिलिणदिशि 'रुयगे' रुचकं नाम 'क्रूटे' क्र्टं प्रज्ञप्तम् अस्य क्रूटस्याधिष्ठात्री 'बल्लिमित्ता देवी' वत्सिमित्रा नाम देवी प्रज्ञप्ता, अस्य क्रूटस्य 'रायहाणी' 'प्रच्चित्थिमेणं' पश्चिमेन-पश्चिमदिशि प्रज्ञप्ता, इति पष्ठक्र्टवर्णनम् ६ ।

है और इसकी राजधानी कृट की दक्षिणदिशा में है। (पच्चित्थिमिल्लस्स भवणस्स दिख्णेणं दाहिणपच्चित्थिमिल्लस्स पासायवडें सगस्स उत्तरेणं रयए कृडे सुवच्छा देवी राधहाणी पच्चित्थिमेणं) पिश्वमिद्ग्वर्ती भवन की दिक्षणिद्शा में तथा नैर्क्टत्यकोणवर्ती प्रासादावतंसक की उत्तरदिशा में रजत नामका कूट् है उसकी अधिष्ठात्री देवी सुवत्सा है इसकी राजधानी कृट की पश्चिमिदशा में हैं (पच्चित्थिमिल्लस्स अवणस्स उत्तरेणं उत्तरपच्चित्थिमिल्लस्स पासायवडें सगस्स दिवसणेणं रुपगे कूडे वच्छिमत्ता देवी रायहाणी पच्चित्थिमेणं६) पश्चिमदिग्वर्ती भवन की उत्तर दिशा में तथा उत्तरपश्चिम दिग्वर्ती—वायव्यकोणवर्ती प्रासादवतंसक की दक्षिणिदशा में रुचक नामका कूट है यहां की अधिष्ठात्री वत्सिमद्रा नामकी देवी है इसकी राजधानी इस कूट की पश्चिमदिशा में है (उत्तरिल्लस्स भवणस्स पच्चित्थिमेणं उत्तरपच्चित्थिमिल्लस्स पासायवडें सगस्स पुरिथमेणं सागरियत्ते कूडे वइरसेणा देवी रायहाणी

राजधानी इटनी हिलाणु हिशामां आवेली छे. 'पच्चित्थिमिस्टस्स भवणस्स दिखाणेणं दाहिण पच्चित्थिमिस्टास पासायवडें सगस्स उत्तरेणं रयए कूडे सुवच्छा देवी रायहाणी पच्चित्थिमेणं ५' पश्चिम हिग्वती लवननी हिलाणु हिशामां तेमज नैर्फ त्य है खुवती प्रासाहावत सहनी इत्तर दिशामां रजता नामह इट आवेल छे. के इटनी अधिष्ठात्री देवी सुवत्सा छे. केनी राजधानी इटनी पश्चिम दिशामां छे. 'पच्चित्थिमिस्टस्स भवणस्स उत्तरेणं उत्तरपच्चित्थिमिस्टस्स पासायवडें सगस्स दिशामां छे. 'पच्चित्रिमिस्टस्स भवणस्स उत्तरेणं उत्तरपच्चित्थिमिस्टस्स पासायवडें सगस्स दिशामां हेश कूडे वच्छिमित्ता देशी रायहाणी पच्चित्थिमेणं ६' पश्चिम हिग्वती लवननी उत्तर हिशामां तेमज इत्तर पश्चिम हिग्वती वायव्य है। खुवती प्रासाहावत सहनी हिशा हिशामां हुए आदेल छे. अहीं नी अधिष्ठात्री हेनी वत्सिम्त्रा नामे छे. केनी वाजधानी को इटनी पश्चिम हिशामां आवेली छे. 'वत्तरिस्टस्स मवणस प्रचित्या

अय सप्तमक्रूटवर्णनम्—'उत्तरिस्टस्स' औत्तराहस्य उत्तरिद्धितिः 'भवणस्स' भवनस्स 'पच्चित्थिमेणं' पश्चिमेन—पश्चिमदिशि 'उत्तरपचित्थिमस्टस्स' उत्तरपश्चिमस्य वायव्यक्तोण-वर्तिनः 'पासायवर्डेसगस्स' प्रासादावतंसकस्य 'पुरित्थिमेणं' पौरस्त्येन पूर्वदिशि 'सागरिचत्तेन कृदे' सागरिचत्र नाम कृटं प्रज्ञसम् , अस्य कृटस्याधिष्ठात्री 'वहरसेणा देवी' वज्रसेना नाम देवी प्रज्ञता, अस्य कृटस्य 'रायहाणी' राजधानो 'उत्तरेणं' उत्तरेण—उत्तरिक्शि प्रज्ञता, इति सप्तमक्टर्यणनम् । अथाष्ट्रमक्ट्रवर्णनम् —'उत्तरिस्टस्स' औत्तराहस्य—उत्तरिक्शितः भवणस्स' मवनस्य 'पुरित्थिमेणं' पौरस्त्येन पूर्वदिशि 'उत्तरपुरित्थिमिस्टस्स' उत्तरपौरस्त्यस्य—ईशानकोण-वर्तिनः 'पासायवर्डेसगस्स' प्रासादावतंसकस्य 'पचित्थिमेणं' पश्चिमेन पश्चिमदिशि 'वहरकृष्टे' वज्यकृटं नाम कृटं प्रज्ञसम्, अस्य कृटस्याधिष्ठात्री 'वलाह्यादेशी' वलाहिका देवी प्रज्ञता, अस्य कृटस्य 'रायहाणी' राजधानी 'उत्तरेणंति' उत्तरेण उत्तरदिशि प्रज्ञतेति अष्टमकृटवर्णनं गतम् ।

अथ नवमं वलकूटं सहस्राङ्गापरनामकिमिति नन्दनवनक्टादितः पृथ्यवर्णियतुमुपक्रमते— 'किहणं मंते!' इत्यादि का खल भदन्त! 'णंदणवणे' नन्दनवने 'बलकूढेणामं कूढे' बलकूटं नामकूटं 'पण्णते?' प्रज्ञप्तम्?, 'गोयमा!' गौतम! 'मंदरस्य' मन्दरस्य 'पव्ययस्स' पर्वतस्य उत्तरेणं ७) उत्तर दिग्वती भवन की पश्चिमिदिशा में तथा क्रायव्यकोणवर्ति प्रासादावतंसक की पूर्वदिशा में सागर चित्र नामका कूट है वल्रसेना नामकी देवी यहां को अधिष्ठात्रो देवी है इसकी राजधानी इस क्रुटकी उत्तरदिशा में हैं। (उत्तरिललस्स भवणस्स पुरित्थमेणं उत्तरपुरित्थिमिललस्स पासायवढें -सगस्स पच्चित्थमेणं चहरकूढे बलाह्या देवी रायहाणी उत्तरेणंति ८) उत्तर दिग्वती भवन की पूर्वदिशा में तथा-ईशानकोणवर्ती प्रासादावतंसक की पश्चिमिदेशा में वल्रकूट नामका कूट है। इस कूट की अधिष्ठात्री देवी बलाहिका है इसकी राजधानी कूट की उत्तरदिशा में है। (कहिणं भंते! णंदणवणे बल-कूढे णामं कुढे पण्णत्ते) हे भदन्त। नन्दनवन में बलकूट नामका कूट कहां पर कहा गया है? उत्तर में प्रभु कहने हैं—(गोयमा! मंदरस्स पव्ययस्स उत्तरपुर

मेणं उत्तरपच्चित्यिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स पुरित्यमेणं सागरचित्तं कुढे वहरसेणा हैवी रायहाणी उत्तरेणं ७' उत्तर दिग्वती लवननी पश्चिम दिशामां तेमल वायव्य डेाणुवती प्रासादावतं सडनी पूर्वं दिशामां सागरियत्र नामड डूट आवेल छे. वलसेना नामे त्यां अधिष्ठात्री हेवी छे. थेनी रालधानी से डूटनी उत्तर दिशामां आवेली छे. 'उत्तरिल्लस्स भवणस्स पुरित्यमेणं उत्तरपुरित्यमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स पच्चित्यमेणं वहरकूडे बलाह्या देवी रायहाणी उत्तरेणंति ८' उत्तरिव्यती लवननी पूर्व दिशामां तेमल धिशान डेाणुवती प्रासादावतं सडनी पश्चिम दिशामां वल इट नामड इट आवेल छे. से डूटनी अधिष्ठात्री देवी अश्वादिष्ठा छे. सेनी रालधानी डूटनी उत्तर दिशामां आवेली छे. 'कहिणं मंते! णंदणक्षों वलकुडे णामं कुडे पण्णत्ते' के लडनत! नन्दवनमां अक्षड्ट नामड इट ड्या स्थेणे आवेल विश्वास्थान क्रिके प्रामिश्वास्थान क्रिकेटना क्रिकेटना सन्दियनमां अक्षड्ट नामड इट ड्या स्थेणे आवेल विश्वास्थान क्रिकेटना क्रिकेटना नन्दवनमां अक्षड्ट नामड इट ड्या स्थेणे आवेल विश्वास्थान क्रिकेटना क्रिकेटना नन्दवनमां अक्षड्ट नामड इट ड्या स्थेणे आवेल क्रिकेटना क्रिकेटना नन्दवनमां अक्षड्ट नामड इट ड्या स्थेणे आवेल क्रिकेटना क्रिकेटना नन्दवनमां अक्षड्ट नामड इट ड्या स्थेणे आवेल क्रिकेटना क्रिकेटना नन्दवनमां अक्षड्ट नामड इट ड्या स्थेणे आवेल क्रिकेटना निव्यत्व सामडें प्राप्त क्रिकेटना क्रिकेटना निव्यत्व स्थापित्र क्रिकेटना स्थापित्र क्रिकेटना स्थापित्र स्थापित्र क्रिकेटना क्रिकेटना स्थापित्र क्रिकेटना क्रिकेटना स्थापित्र सामडेंच क्रिकेटना क्रिकेटना स्थापित्र स्थापित्र सामडेंच क्रिकेटना क्रिकेटना स्थापित्र सामडेंच क्रिकेटना सामडेंच सामडेंच सामडेंच सामडेंच क्रिकेटना सामडेंच सामडेंच सामडेंच सामडेंच सामडेंच सामडेंच सामडेंच क्रिकेटना है सामडेंच सामडेंच सामडेंच सामडेंच क्रिकेटना है सामडेंच सामडेंच क्रिकेटना सामडेंच सामडेंच सामडेंच क्रिकेटना सामडेंच सामडेंच सामडेंच सामडेंच क्रिकेटना सामडेंच सा

'उत्तरपुरस्थिमेणं' उत्तरपौरस्त्येन ईशानकोणे 'एत्य' अत्र-अवान्तरे 'णं' खेळ 'णंदणवणें' मंग्दनवने 'वलकुडे णामं कूडे' वलकुटं नाम कूटं 'पण्ण ते' प्रज्ञप्तम् अन्नेदं तात्पर्यम्-मेक्शिरितेः पश्चाशघोजनानन्तरे ईशानकोणे ऐशानप्रासादः प्रज्ञप्तस्ततोऽपि ईशानकोणे बलकूटं नाम कूटं विशास्त्र वस्तुन आधारस्यापि विशास्त्रमत्वात् प्रकृते विशास्त्रमस्य बस्कूटस्याधारमूतै-शानकोणस्य विशालतमप्रमाणकस्वमिति । 'एवं' एवम्-अनेन प्रकारेण उक्तामिलापानुसारेण 'र्ज चेव' यदेव 'हरिस्सहकूडस्स' हरिस्सहकूटस्य-माल्यवन्नामकवक्षस्कारपर्वतवर्तिनो नवसकूटस्य 'पमाणं' प्रमाणं सहस्रयोजनलक्षणं तद्गिरिक्टवर्णनप्रकरणे प्रागुक्तम् 'रायहाणी य' राजधानी च इरिस्सहा नामनी आयामविष्कमभतश्रद्धरशीति योजनसहस्रवमाणा वर्णिता 'तं चेव' तदेव प्रमाणं 'बलक् इस्सवि' बलक्टस्यापि वाच्यम्, एवं हरिस्सह राजधानी वद् बलक्ट्र-त्थिमेणं एत्थ णं णंदणवणे बलकुडे णामं कूडे पण्णत्ते) हे गौतम ! मन्दर पर्वत की ईशान विदिशा में नन्दनवन में बलकूट नामका कूट कहा गया इस कूटका वृसका नाम सहस्राङ्क कूट भी है इसका तात्पर्य ऐसा है कि मेर पर्वत से ५० योजन आगे जाने पर ईशानकोण में ऐशान इन्द्र का प्रासाद है इसके भी ईशानकोण में यह बलकूट नामका कूट है। जो बस्तु विशालतम होती है यहां उस विशाल तम ही आधार की आवइयकता होती है इस क्टकी आधारमूत जो विदिशों है वह विशासतम प्रमाणवाली है। (एवं जं चेव हरिस्सहकूडस्स पमाणं रायहाणी अ तं चेच बलकूडस्स वि, णवरं बलो देवो रायहाणी उत्तर-पुरिथमेणंति) इस तरह जो हरिस्मह कूटकी-माल्यवान पर्वतवर्ती नौवें कूट की-एक हजार योजनरूप प्रमाणता-पहिले कही गई है, तथा हरिस्सहा नामकी जो राजधानी आयाम विष्कंभ की अपेक्षालेकर ८४ हजारयोजन प्रमाण वाली कंही गई है वही सब कथन यहां पर भी कहलेना चाहिये अर्थात् इस बलकट को

है शिवालमां प्रक्ष के छे—'गोयमा! मंद्रस्य पञ्चयस्य उत्तरपुरियमेणं एत्यणं णंद्णवणे बलकूडे णामं कूडे पण्णत्ते' हे जीतम! मन्दर पवर्तनी धिशान विदिशामां नन्दनवनमां अव कूट नामक कूट व्यापेस छे. को कूट सहस्रांक कूट नामकी पण्ण सुप्रसिद्ध छे. कानुं तात्पर्य क्या प्रमाणे छे के मेरु पर्वत्यी प० येकिन काणण कवाशीधिशान केण्यमां कैशान धन्द्रना महेस छे. तेना पण्ण धिशान केण्यमां का लक्ष्य नामक कूट छे के वस्तु विशासतम द्वाय छे, तेना माटे विशासतम काधारनी कइरत वहे छे. कहीं के कूटनी के आधारमूत विदिशा छे ते विशासतम प्रमाण्याणी छे. 'एवं जं चेव हिस्सहकूहस्स प्रमाणं रायहाणी अ तं चेव बलकूहस्स कि, णवरं बले देवो रायहाणी उत्तरपुरियमेणं ति' का प्रमाणे नवम हिस्सह कूटस कि, णवरं बले देवो रायहाणी उत्तरपुरियमेणं ति' का प्रमाणे नवम हिस्सह कूटनी केटसे के माध्यवान पर्वत्वती नवम कूटनी—केठ सहस्र येकिन ३५ प्रमाण्यता पहेसां स्पष्ट करवामां कावेसी छे. तेमक हिस्सहा नामे के राक्थानी छे ते कायाम—विष्कंसनी कपेक्षाके ८४ हकार येकिन प्रमाण केटसी केटसी किता मामे के राकथानी छे ते कायाम—विष्कंसनी कपेक्षाके ८४ हकार येकिन प्रमाण केटसी केटसी किता मामे के राकथानी छे ते कायाम—विष्कंसनी कपेक्षाके ८४ हकार येकिन प्रमाण केटसी केटसी किता माम केटसी छे. का प्रमाणे शेष कर्म कर्मी

स्यापि राजधान्याः प्रमाणं वाच्यम् 'णवरं' नवरं-केवलं वलकूटस्याधिष्ठाता 'वलो देवो' सलो नाम देवः, हरिस्सहकूटस्य तु हरिस्सहो नाम देव उक्त इति विशेषः, वलदेवस्य 'रायहाणी' राजधानी 'उत्तरपुरिथमेणंति' उत्तरपौरस्त्येन-ईशानकोणे प्रक्षप्तेति नवमकूट-वर्णनं गतम्, इति मन्दरगिरिवर्ति नन्दनवननतानां नवकूटानां नन्दनवनकूटादि वर्णनम्, इति मन्दरविवन्दनवर्णनं समाप्तम् ।। स् ० ३ ७।।

अथ तृतीयं सौमनसवनं वर्णयितुम्रपक्रमते-'कहिणं भंते' इत्यादि ।

प्रम-किह णं भंते ! संदरे पठवए सोमणसवणे णामं वणे पण्णते ? गोयमा ! णंदणवणस्स बहुसमरमणिज्ञाओ भूमिभागाओ अद्ध तेविहुं जोयणसहस्साइं उद्धं उप्पइत्ता एत्थ णं मंदरे पठवए सोमणसवणे णामं वणे पण्णते, पंच जोयणसयाइं चक्कवाळिविक्छंभेणं वट्टे वलयाकारसंठा-णसंठिए जे णं मंदरं पठवयं सठवओ सन्नता संपरिक्खित्ता णं चिटुइ, चतारि जोयणसहस्साइं दुण्णि य दावत्तरे जोयणसए अट्ट य इक्कारस-भाए जोयणस्स बाहिं गिरिविक्छंभेणं तेरस जोयणसहस्साइं पंचय एक्कारे जोयणसए छच एकक्कारसभाए जोयणस्म वाहिं गिरिपरिरएणं तिणिण जोयणसहस्साइं दुण्णि य बावत्तरे जोयणसए अटुय इक्कारस-

प्रमाण एक हजार योजन का है और बलकूट नामकी राजधानी के आयाम विष्कंम्भ का प्रमाण ८४ हजार योजन का है (णवरं) पद द्वारा उसकी अपेक्षा जो यहां अन्तर है वह ऐसा है कि यहां पर बल नामका देव उसका अधिष्ठाता है हरिस्सह कूटका अधिष्ठाता हरिस्सह नामका देव है इस बलदेव की राज घानी इस कूटकी ईशान विदिशा में कही गई है। इस प्रकार से मन्दर गिरिवर्ति जो नन्दनवन है और इसमें जो ये नौ कूट हैं उनका सबका कथन समाप्त हुआ यह नन्दनवन मन्दरगिरिका वितीय वन है। १९।।

પણ સમજ લેવું જોઈએ. એટલે કે એ ખલકૂટનું પ્રમાણ એક હતાર યાજન જેટલું છે અને ખલકૂટ નામની રાજધાનીના આયામ-વિગ્ક લાનું પ્રમાણ ૮૪ હતાર યાજન જેટલું છે. 'ળવર' પદ વડે એ ખતાવ્યું છે કે તેની અપેક્ષાએ જે અહીં આંતર છે, તે આ પ્રમાણે છે કે અહીં ખલ નામક દેવ એના અધિગ્ઠાતા છે. હરિસ્સહ કૂટના અધિગ્ઠાતા હરિસ્સહ નામક દેવ છે. એ ખલદેવની રાજધાની એ કૂટની ઇશાન વિદિશામાં આવેલી છે. આ પ્રમાણે મન્દર ગિરિવર્તી જે નન્દન વન છે અને એમાં જે નવકૂટા આવેલા છે. તે ખધા વિષેષ્ઠાન સમાપ્ત થયું. આ નન્દનવન મન્દર ગિરિનું દ્વિતીય વન છે. ા સૂત્ર-૩૭ ા

भाए जोयणस्स अंतो गिरिविक्खंभेणं दस जोयणसहस्साइं तिषिण य अउणापण्णे जोयणसए तििण य इकारसभाए जोयणस्स अंतो गिरि-परिरएणंति । से णं एगाए पउभवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सब्वओ समंता संपरिविखत्ते, वण्णओ किण्हे किण्होभासे जाव आसयंति कूड-वजा सा चेव णंदणवणवत्तदवदा भाणियद्वा, तं चेव ओगाहिऊण जाव पासायविस्ताग सकीसाणाणंति ॥सू० ३८॥

छाया-का खलु भदन्त! सन्दरे पर्वते सौमनसवनं नाम वनं प्रज्ञप्तम्?, गौतम! नन्दनवनस्य बहुसमराणीयाद् भूमिभागात् अद्विष्ठिं योजनसहस्राणि उर्ध्वमुत्पत्य अत्र खलु मन्दरे पर्वते सौमनसवनं नाम वनं प्रज्ञप्तम्, पञ्चयोजनशतानि चक्रवालिविष्कम्भेण वृत्तं वलयाकारसंस्थानपंस्थितं यत् खलु मन्दरं पर्वतं सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिष्य खलु तिष्ठति, चत्वारि योजनसहस्राणि हे च हासप्तते योजनशते अष्ट च एकादशभागान् योजनस्य बहिगिरिविष्कम्भेण त्रयोदन्न योजनसहस्राणि पञ्च च एकादशभागां योजनशतानि च पट् च एकादशभागान् योजनस्य वहिगिरिविष्कम्भेण त्रयोदन्न योजनसहस्राणि योजनसहस्राणि हे च हासप्तते योजनशतानि श्रेत अष्ट च एकादशभागान् अन्तर्गिरिविष्कम्भेण दश्च योजनसहस्राणि त्रोणि च एकोनपञ्चाक्राति योजनशतानि श्रीश्च एकादशभागान् योजनस्य अन्तर्गिरिविर्कम्भेण दश्च योजनसहस्राणि त्रीणि च एकोनपञ्चाक्राति योजनशतानि श्रीश्च एकादशभागान् योजनस्य अन्तर्गिरिविर्कम्भेण त्रात्व वर्णकः कृष्णाम् पद्मवर्गविद्वया एकेन च वनपण्डेन सर्वतः समन्तात् सम्परिक्षिप्तं वर्णकः कृष्णाः कृष्णाम् भासो यावद् आसते, एवं कृटवर्जा सैव नन्दनवनवक्तव्यतः भणितव्या, तदेव अवगाह्य यावत् प्रासादावतस्यः शक्तशान्योरिति ।।स० ३८।।

टीका-'कि व भंते! मंदरे' इत्यादि-क्व खल भदन्त! 'मंदरे' मन्दरे मेरी 'पव्यए' पर्वते 'सोमणवणे णामं' सोमनसवनं नाम 'वणे' वनं 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तम् ?, 'गोयमा !' गौतम! 'णंदणवणस्स' नन्दनवनस्य 'बहुसमरमणिज्जाओ' बहुसमरमणीयात् 'भूमिभागाओ'

तृतीय सौमनस्वनका वर्णन

'कहिणं भंते! मंदरे पव्चए सोमणसवणे णामं वणे पण्णत्ते' इत्यादि। टीकार्थ-गौतमस्वामी ने इस सूत्र द्वारा प्रभु से एसा पूछा है-(कहिणं भंते! मंदरे पव्चए सोमणसवणे णामं वणे पण्णत्ते) हे भदन्त! मन्दर पर्वत पर सौमनस नामका वन कहां पर कहा गया है ? उन्हर में प्रभुश्री कहते हैं-(गोयमा!णंदणव-

તૃતીય સૌમનસ વનનું વર્ણન

'कहिणं अंते ! मंद्रे पव्चए सोमणसवणे णामं वणे पण्णत्ते' इत्यादि

ટીકાર્ય-ગૌતમે આ સૂત્ર વડે પ્રભુને આ જાતના પ્રશ્ન કર્યો છે કે 'कहिण मंते ! मंदरे पद्य सोमणसवणे णामं वणे पण्णत्ते' હે ભદન્ત ! મંદર પર્વત ઉપર સોમનસ નામક વન કયા સ્થળે આવેલ છે? એના જવાબમાં પ્રભુ કહે છે. 'गोयमा! णंदणवणस्य बहुद्धमरमणिज्जाओ; भूमिभागात् 'अद्धतेविद्धं' अर्द्धित्विष्टि -सार्द्धिवाविद्धं 'जोयणसहस्साइं' यो जनसहस्राणि उद्धं उप्पद्धां' उर्ध्वमुत्यत्य उपिर गत्वा 'इत्थं' अत्र अत्रान्तरे 'णं' खल्ल 'मंदरे पव्वए' मन्दरे पर्वते 'सोमणसवणे णामं' सोमनसवनं नाम 'वणे' वनं 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तम्, तच्च 'पंचनोयण सहस्साइं' पश्चयोजनञ्जतानि 'चक्कवालविक्खंभेणं' चक्रवालविक्षम्भेण मण्डलाकारविस्तारेण 'वृद्धे' युत्तं वर्तुलं 'वलयाकारसंठाणसंठिए' वलयाकारसंस्थानसंस्थितं –वलयो हि मध्यच्छिद्रयुक्तो भूवित तद्धदाकारकसंस्थानेन संस्थितम्, एतदेव स्पण्टीकरोति –'जे' यत् –सोमनसवनं 'णं' खल्ल 'मंदरं पव्वयं' मन्दरं पर्वतं 'सव्याओ' सर्वतः –सर्वदिश्च 'समंता' सर्वविदिश्च 'संपरि-शिक्षता' सम्परिक्षिप्य –परिवेष्ट्य 'णं' खल्ल 'चिद्वइ' तिष्ठति, एतच्च कियद्विष्कम्भं कियत्य-प्रिक्षेणम् ? इति जिज्ञासायामाह –'चत्तारि' चत्त्रारि 'जोयणसहस्साइं' योजनसहस्नाणि 'द्विष्ण य' द्वे च 'वावत्तरे' द्वासप्तते द्वासप्तत्यिके 'जोयणसए' योजनशते 'अद्व य' अष्ट च 'इक्सरसभाए' एकादशभागान् 'जोयणस्स' योजनस्य 'वाहिं' वहिः 'गिरिविक्खंभेणं' गिरि-शिक्सम्भेण मेकपर्वतिवस्तारेण 'तेरस' त्रयोदश 'जोयणसहस्साइं' योजनसहस्नाणि 'वच्य'

मस्स बहुसमरमणिज्जाओं भूमिभागाओं अद्यतेविंद जोयणसहस्साइं उद्धं उप्प-इस्स एत्थणं मंदरे पव्वए सोमणसवणे णामं वणे पण्णत्ते' हे गौतम ! नन्दन सन के समुसमरमणीय भूमि भाग से ६२॥ हजार योजन ऊपर जाने पर मन्द्र पर्वत के ऊपर सौमनसवन नामका वन कहा गया है। (पंच जोधणसवाइं चक्कवालः किक्खंभेणं वहे वलयाकारसंठाणसंठिए' यह सौमनसवन पांचसों योजन के मण्डलाकारस्य विस्तार से युक्त है गोल है इसीलिथे इसका आकार गोल बलय के जैसा हो गया है 'जे णं मंदरं पव्वयं सव्वओं समंता संपरिक्खिसाणं चिद्वह' यह सौमनसवन मन्दर पर्वत को सब ओर से अच्छो तरह घेरे हुए हैं 'चसारि जोयणसहस्साइं दुण्णि य बावत्तरे जोयणसए अह य एक्कारसभाएं जोयणस्स बाहिं गिरिविक्खंभेणं' इसका वाह्य विस्तार ४२७२ योजन और १

भूमिभागाओ अद्धत्तेविद्वं जोयणसहस्साई उद्धं उपदत्ता एत्थणं मंदरे पव्वर सोमणसवणे णामं बणे पण्णत्ते' हे गीतम ! नंहन वनना अहु समरमध्यिय भूमि भागथी ६२॥ हुल्दर शिक्षन उपर गया आह मंहर पर्वतनी उपर सीमनसवन नामे वन आवेल छे. 'पंच- आवणस्याई चक्कवालविक्लंभेणं वहे वलयाकारसंठाणसंठिए' आ सीमनस वन पांचसी क्रिक्ष केटला मंडणाकार ३५ विस्तारथी शुक्रत छे. गेरण छे. अधी अने। आक्षार गेरण, वलस केवे। छे. 'जे णं मंदरं पव्वयं सव्वको समंता संपिक्षित्ताणं चिट्टइ' मंहर पर्वतनी भामेर आ सीमनसवन वींटणायेल्लं छे. 'चत्तारि जोयणसहस्साई दुण्णिय बावत्तरे जोयण स्वर अद्वय एक्कारसभाए जोयणस्म बाहिं गिरिविक्लंभेणं' अने। आहा विस्तार ४२७२ थेरलन अने ओक थेरलना १२ काग्रेमांथी ८ काग्र प्रभाष्ट्र छे. 'तरस जोयणसहस्साई छण्च प्रकारसभाए जोयणस्म बाहिं गिरिविक्लंभेणं' अने। आहा विस्तार ४२७२ थेरलन अने ओक थेरलना १२ काग्रेमांथी ८ काग्र प्रभाष्ट्र छे. 'तरस जोयणसहस्साई छण्च प्रकारसभाए जोयणस्म बाहिं गिरिविक्लंभेणं अने। आहा विस्तार ४२७२ थेरलन अने ओक थेरलना १२ काग्रेमांथी ८ काग्र प्रभाष्ट्र प्रभाष्ट्र १३५२ थेरलन

पश्च च 'एकारे' एकादशानि-एकादशाधिकानि 'जोयणसए' योजनशतानि 'छच्च' षड् च 'एकारसभाए' एकादशभागान् 'जोयणस्य' योजनस्य 'बाहिं' वहिः 'गिरिपरिएएं' गिरि-परिरयेण गिरिपरिधिना, 'तिण्णि' त्रीणि 'जोयणसहस्साइं' योजनसहस्राणि 'हुण्णि य' हे च 'बाक्चरे' द्वासप्तानि 'छिसप्तत्यधिकानि 'जोयणसए' योजनशतानि 'अह य' अह च 'स्कारसभाए' एकादशभागान् 'जोयणस्स' योजनस्य 'अंतो' अन्तः मध्ये नित्यक्ष्मद्वेते 'गिरिविव्खंभेणं' गिरिविव्कम्भेण 'द्स' दश्च 'जोयणसहस्साइं' योजनसहस्राणि 'तिण्णि म' त्रीणि च 'अउणावण्णे' एकोनपंचाशानि-एकोनपञ्चाश्चदधिकानि 'जोयणसए' योजनशतानि 'तिण्णि य' त्रींख 'इकारसभाए' एकादशभागान् 'जोयणस्स' योजनस्य 'अंतो' अन्तः-कथ्ये 'गिरिपरिएएं' गिरिपरिएयेण गिरिपरिधिना इति । अथ सोमनसवनं वर्णयितं स्त्रमाह-'से' तत् 'णं' खल्च सौमनसवनं 'एगाए' एकया 'पउमवरवेइयाए' पद्मक्रतेदिकया 'प्रशेण क्रे' एकेन च 'वणसंडेणं' वनवण्डेन 'सन्वओ' सर्वतः 'समंता' समन्तात् 'संपरिक्षिक्ते' सम्परिक्ति च 'परिवेष्टितमस्ति, अनयोः पववरवेदिका वनवण्डयोः 'वण्णओ' वर्णकः-वर्णकप्रस्र समूहोऽत्र बोध्यः, स च पञ्चमस्त्राद् ग्राहाः, स च क्रिम्पर्यन्तः ? इत्याह-'क्रिण्डे किण्डोभासे

कोजन के ११ भागों में से ८ भाग प्रमाण है 'तरस जोयणसहस्साई पंचाय एकारे जोयणसए छच्च एकारसभाए जोयणस्य बाहिं गिरिपरिरएणं' इसका वाह्य परिक्षेप प्रमाण १३५११ योजन और १ योजन के ११ भागों में से ६ भाग प्रमाण हैं। 'तिण्णि जोयणसहस्साई दुण्णि य बावरारे जोयणसए अहुय इकारसभाए जोयणस्स अंतो गिरिविवक्तंभेणं, दस जोयणसहस्साई तिण्णिय अखणापण्णे जोयणसए तिण्णिय एककारसभाए जोयणस्स अंतो गिरिपरिरए णंति' इसका भीतरी विस्तार ३२७२ योजन और एक योजन के ११ भागों में से ८ भाग प्रमाण है तथा इसका भीतरी परिक्षेत्र का प्रमाण १०३४९ योजन और एक योजन के ११ भागों में से ३ भाग प्रमाण है। 'सेणं एगाए पडमबर्वेइयाए एगेण य वणसंदेणं सन्वश्रो समंता संपरिक्खित वण्णओ-किण्णे किण्हों भासे जाब आसर्यति एवं कुडवज्ज सच्चेव णंदणवणवन्तव्यया भाणियव्या'

अने १ थे। जनना ११ कागामांथी ६ काग प्रमाण छे 'तिण्ण जोयणसहस्साई दुण्णिय अवत्तरे जोयणसए अट्टय एक्फारसभाए जोयणस्स अंतो गिरिविक्खंभेणं, इस जोयणसहस्साई तिण्णिय अवणावण्णे जोयणसए तिण्णिय एकः रसभाए जोयणस्स अंतो गिरिविरियेणंति' भेने। क्षीतरी विस्तार ३२७२ थे। जन अने थे। इ थे। जनना ११ कागामांथी ८ काग प्रभाष्य छे. तेमज आना अल्यंतरीय परिक्षेपन प्रमाण १०३४६ थे। जन अने थे। इस्तार प्रमाण ११ कागामांथी ३ काग प्रमाण छे. 'से णं एगाए पडवरवेइयाए एगेण य वणसंदेणं सन्यको समंता संपरिक्षित वण्णा किण्णे किण्होभासे जाव आसरंति एवं कृष्टवज्ज सन्वेष पंत्रण वणवत्तन्त्वया माणियन्त्वा' आ सीमस्यन थे। प्रभावर वेदिश अने थे। इत्तर्भा विश्वस्थि

जाव शासयंति' कृष्णः कृष्णावभासो यावदासते—कृष्णः कृष्णावभास इत्यारभ्य आसत इति पर्यन्तो वोध्यः, अयं सर्वः पाठः पश्चमपष्टस्त्रतो बोध्यः, अस्याथेडिपि तत एव ज्ञेयः। 'एवं' एत्रम्—उक्ताभिलापानुसारेण 'क्इवज्जा' कृटवर्जा—कृटवर्जिता 'सा चेव' सैव प्रागुक्तैव 'णंदणवणवत्तव्यया' नन्दनवनत्रक्तव्यता 'शाणियव्या' भाणितव्या—वक्तव्या, सा च नन्दन-वनवक्तव्यता किम्पर्यन्ता? इत्याह—'तं चेव' इत्यादि तदेव मेर्षपर्वतात् पश्चाश्योजनरूपं क्षेत्रम् 'ओगाहिज्जण' अवगाह्य—प्रविश्य 'जाव पासायवर्डेसगा सक्तीसाणंति' यावत् प्रासादा-वतंसकाः शकेशानयोरिति—शकेन्द्रस्येशानेन्द्रस्य च प्रासादावतंसकवर्णनपर्यन्तेत्यर्थः इयं वक्तव्यता नन्दनवनवर्णनप्रकरणेऽनन्तरस्त्रत्रे गता एतत्सीमनसवनवर्तिन्यो वाष्यः, ईशानादि-कोणक्रमेणेमाः—समनाः १ सौमनसा २ सौमनांसा 'सौमनस्या' ३ मनोरमा ४ इत्यैशान्याम्, उत्तरकुरुः १ देवकुरुः २ वारिषेणा ३ सरस्वती ४ इत्याग्नेय्याम्, विशाला १ मायभद्रा २ अभयसेना ३ रोहिणो ४ इति नैर्ऋत्याम्, भद्रोत्तरा १ भद्रा २ समद्रा ३ भद्रा 'द्र' वती ४ वायव्याम् ॥स् ० ३८॥

यह सीमनल बन एक पद्मवर वेदिका और एक वनषंड से चारों और से घिरा हुआ है यहां पर इन दोनों का वर्णक पद समूह 'किण्हो किण्होभासे जाव आसयंति' इस पाठ तक कहलेना चाहिये यह पद समूह पंचम एवं छठें सूत्रमें प्रकट किया गया है। इस कूटों की वक्तव्यता को छोडकर बाकी की और सब वक्तव्यता जैसी नन्दन वन के प्रकरण में कही गई है वैसी ही यहां पर कहलेनी चाहिये यह नन्दन वन वक्तव्यता 'मेरु से ५० योजन के आगे के क्षेत्र को छोडकर आगत इस स्थान में शक्तेन्द्र और ऐशानेन्द्र के प्रासादावतंसक है' यहां तक के पाठ तक ही यहां कहलेना चाहिये!

इस सौमनसवन में ये ईशानादि कोण कम से १ खमना, २ सौमनसा, ३ सौमनांसा, एवं ४ मनोरमा ये ईशान दिशा में चार वावडिया हैं, उत्तर कुरू १, देवकुरु २, वारिषेणा ३, और सरस्वती ४, ये चार वापिकाएं आग्नेय

व्यावृत छे. अहीं से अन्नेनी वर्ण्ड पह समूह 'किण्होकिण्हो मासे जब आसंगति' आ पह सुधी डही देवा कोईंसे. आ पह समूह पंचम अने वर्ष्ठ सूत्रमां स्पष्ट हरवामां आवेल छे. से इंटोनी वहत्तव्यताने आह हरीने शेष अधी वहतव्यता के प्रमाणे न हनवनना प्रहरणनां स्पष्ट हरवामां आवेली छे ते प्रमाणे क अहीं पण हही लेवी कोईंसे. आ 'नन्द्रनवनवक्तव्यता' मेरुबी पव येक्न केटला आजणना क्षेत्रने छेडीने आवेला स्थानमां शहेन्द्र अने अशानेन्द्रने। प्रासाहावतां सह छे. बहीं सुधीना पाठ सुधी हही लेवी कोईंसे. को सीमनस वनमां धंशानाहि हेाणुहमधी १ सुमना, २ सीमनसा, ३ सीमनांसा तेमक ४ मनेरमा को धंशानहिशामां ४ व पिहाको छे. उत्तरहरू-१, देवहरू-२, वारिषेणु इ. अने सरस्वती ४ को ४ वापिहाको आवेल हिशामां आवेली छे. विशाला १, माध

अथ मन्दरगिरिवर्ति पण्डकवनं नाम चतुर्थवनं वर्णयितुमुपकमते-कहि णं भंते ! इत्यादि ।

म्लम्-कहि णं भंते ! मंद्रपटवए पंडगवणे णामं वणे पण्णते ? गोयमा ! सोमणसवणस्स बहुसमरमणिजाओ भूमिभागाओ छत्तीसं जोयणसहस्साइं उद्धं उप्पइत्ता एत्थ णं मंद्रे पठवए सिहरतले पंडग-वणे णामं वणे पाणते, चत्तारि चउणउए जोयणसए चक्कवालविक्खं-भेणं क्ट्रे वलयाकारसंठाणसंठिए, जे णं मंदरचूलियं सब्बओ समंता संपरिक्सिताणं चिट्टइ तिणिण जोयणसहस्साइं एगं च बावटूं जोयण-सयं किंचिविसेसाहियं परिक्खेवेणं, से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसडेणं जाव किण्हे देवा आसयंति, पंडगवणस्स बहुमञ्झदेसभाष एरथ णं मंदरचूलिया णामं चूलिया पण्णत्ता चत्तालीसं जोयणाई उद्धं उच्चत्तेणं मुले बारस जोयणाइं विक्खंभेणं मज्झे अट्ट जोयणाइं विक्खं-भेणं उप्पि चत्तारि जोयणाइं विक्लंभेणं मूले साइरेगाइं सत्तत्तीसं जोय-णाइं परिवर्षेवेणं मज्झे साइरेगाई पणवीसं जोयणाइं परिवर्षेवेणं उपि साइरेगाइं बाःसजोयणाइं परिवर्षेवेणं मूळे विच्छिण्णा मज्झे संखित्ता उर्षि तणुया गोपुच्छसंठाणसंठिया सब्ववेरुलियामई अच्छा सा णं एगाए पउमवरवेइयाए जाव संपरिक्षित्रा इति उप्पि बहुसमरमणि-ज्जे भूमिभाए जाव सिद्धाययणं बहुमज्झदेसभाए कोसं आयामेणं अद्धकोसं विक्खंभेणं देसूणगं कोसं उद्धं उच्चतेणं अणेगखंभसय जाव धूवकडुच्छुगः, मंद्रचृिळवाए णं पुरित्थमेणं पंडगवणं पण्णासं जोयणाइं ओगाहिला एत्थ णं महं एगे भवणे पण्णते एवं जच्चेव सोमणसे

दिशा में हैं विशाला १, माघ भद्रा २, अभयसेना ३, और रोहिणी ४, ये चार वापिकाएं नैक्ट्रियकोण में हैं, तथा भद्रोत्तरा, १, भद्रा २, सुभद्रा ३, और भद्रावती ४, ये चार वापिकाएं वायव्य विदिशा में हैं ॥३८॥

લદ્રા ર, અલયસેના ૩ અને રાહિણી ૪ એ ચાર વાપિકાઓ નૈઋત્ય કાેેેેશુમાં આવેલી છે. તથા લદ્રોત્તરા ૧, લદ્રા-૨, સુલદ્રા, ૩ અને લદ્રાવતી ૪ એ ચાર વાપિકાએ વાયબ્ય દિશામાં આવેલી છે. 11 ૩૮ 11

पुठ्वविणओ गमो भवणाणं पुक्विरिणीणं पासायवहेंसगाण य सो चेव जाच सकीसाणवहेंसगा ते णं चेव परिमाणेणं ।सू० ३९॥

छाया-क खलु भदन्त ! मन्दरपर्वते पण्डकवनं नाम वनं प्रज्ञप्तम् ?, गौतम ! सीमनसव-नस्य बहुसमरमणीयाद् भूमिभागात् षट्त्रिंशतं योजनसहस्राणि अर्ध्वमुत्पत्य अत्र खलु मन्दरे-पर्वके शिखरत छे पण्डकवनं नाम वनं प्रज्ञप्तम्, चत्वारि चतुर्नवतानि योजनशतानि चक्रकाळ-बिष्कंभेणं इतं वलयाकारसंस्थानसंस्थितं, यत् खलु मन्दरचूलिकां सर्वतः समन्तात् सम्परि-क्षिप्य खलु तिष्ठति त्रीणि योजनसङ्खाणि एकं च द्वापष्टं योजनशतं कि श्चिद्विशेषाधिकं परिश्रेंपेण, तत् खल एकया पदावरवेदिकया एकेन च वनपण्डेन यावत् कृष्णः देवा आसते, **दण्डक्षतनस्य बहुमध्यदेशभागे अत्र खल्ज मन्दरच्**लिकानाम चुलिका प्रश्नप्ता चतुश्रत्वारिंशतं क्षेजमानि अर्ध्वप्रचरवेन मूळे द्वादश योजनानि विष्कम्भेण मध्ये अष्ट योजनानि विष्कम्भेण उपिर चत्वारि योजनानि विष्कमभेण मूळे सातिरेकाणि सप्तत्रिंशतं योजनानि परिक्षेपेण मध्ये सातिरेकाणि पश्चविंशति यो जनानि परिक्षेपेण उपरि सातिरेकाणि द्वादश योजनानि परिक्षेपेण मूळे विस्तीर्णा, मध्ये संक्षिप्ता, उपरि तनुका, गोपुच्छसंस्थानसंस्थिता सर्ववैद्वर्थ-मधी अच्छा सा खल्छ एकया पद्मवस्वेदिकया यावत् संपितिक्षण्ता इति उपरि बहुसमर-मणीयो भूमिभागो यावत् सिद्धायतनं बहुमध्यदेशभागे क्रोशमायामेन अर्द्धकोशं विष्कम्मेण देकोनेकं क्रोशमृर्ध्वप्रचरवेन अनेकस्तम्भशत यावद् धृपकडुच्छुका, मन्दरच्छिकायाः खछ मीरस्त्येन पण्डकवनं पश्चाशतं योजनानि अवगाह्य अत्र खल्ल महदेकं भवनं प्रव्रप्तम्, एवं य प्वत्सीमनसे पूर्ववर्णितो गमो भवनानां पुष्करिणीनां प्रासादावतंसकानां च स एव नेतव्यः यावत शक्रेशानयोः प्रासादावतंसकाः तेनैव परिमाणेन ॥ ॥ ० ३९॥

टीका-'कहि णं भंते !' इत्यादि-क्व खल भदन्त ! 'मंदर पव्वए' मन्दरपर्वते 'पंडगवणे मामं' पण्डकवर्त नाम 'वणे' वनं 'पण्णते ?' प्रज्ञष्तम्, 'गोयमा !' गौतम ! 'सोमणसवणस्स' सौमनवनस्य बहुसमरमणिज्ञाओ' बहुसमरमणीयाद् 'भूमिभागाओ' भूमिभागात् 'छत्तीसं'

पण्डकचनका वर्णन

'कहिणं भंते ! मंदरपव्वए पंडगवणे णामं वणे पण्णत्ते' इत्यादि । टीकार्थ-गौतमस्वामी ने प्रभुश्री से ऐसा इस सूत्रद्वारा पूछा है-'कहि णं भंते ! मंदरपव्वए पंडगवणे णामं वणे पण्णत्ते' हे भदन्त! मंदर पर्वत पर पण्डक बन नामका वन कहां पर कहा गया है १ उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा !

'कहिणें भंते ! मंदरपटवए पंडगवणे णामं वणे पण्णते' इत्यादि

टीकार्थ-मा सूत्र वह गौतमे प्रक्षुने प्रश्न क्यों छे है 'कहिण मंते! मंद्रपटकए पंडमक्णे बामं वणे पण्णक्ते' है कहता! मंदर पर्वात उपर पड्डियन नामक वन क्या स्थणे आवेस छे ?

५९३ वननुं वर्धुन

षट्तिंशतं 'जोयणसहस्ताइ' यो जनसङ्ग्राणि 'उद्धं' अर्थ्वम् 'उप्पद्चा' उत्पत्य-गत्या 'एत्थ' अत्र-अत्रान्तरे 'गं' खुळु 'मंदरे पव्यप' सन्दरे पर्वते 'सिहरत्छे' श्रिखरत्छे–शिरोभागे 'पंडगवणे णामं' पण्डकवनं नाम 'वणे' दनं प्रज्ञप्तम्, तच 'चत्तारि' चत्वारि 'चउणउए' चतुर्नवतानि चतुर्नवत्यधिकानि 'जोयणसए' योजनज्ञतानि 'चक्कवाळविवखंभेणं' चक्रवाल-विष्कमभेण मण्डलाकारविस्तारेण 'बट्टे' वृत्तं-वर्द्धलं 'वलयाकारसंठाणसंठिए' वलयाकार-संस्थानसंस्थितं रिकामध्यकङ्कणवत् मध्ये तस्छतागुरमादि रहिततया संस्थिम् एतदेव स्पष्टी-करोति–'जे' यत् पण्डकश्नं 'णं' खळु 'मंद्ररचूलिअं' मन्दरचूलिकां 'सब्बओ' सर्वतः सर्वदिश्च 'समंता' समन्तात्-सर्वतिदिश्च 'संपरिविखत्ता' सम्परिक्षिण्य परिवेष्टच 'र्ण' खळ 'चिड्डउँ' तिष्ठति 'तिष्णि' त्रीणि 'जोयणसहस्ताइ' योजनसङ्खाणि 'एगं च' एकं च 'बाबद्वं' द्वापष्टं-द्वापण्टचिकं 'जोयणसपं' योजनशतं 'सिचिविसेसाहियं' किश्चिद् विशेषाधिकं-किञ्चिद्धिकं 'परिक्खेवेणं' परिक्षेपेण परिधिना प्रज्ञप्तम्, तत्पुनः एद्मरवेदिका बनपण्डाभ्यां सोमणसवणस्य बहु समरमणिज्ञाओ भूमिभागाओ छत्तीमं जोयणसहस्साई उदं उप्पइत्ता एत्थ णं मंदरे पन्चए सिहरतले पंडरावणे णामं वणे पण्णते' हे गौतम ! सौमनसवन के बहुसमरमणीय खूबि भाग से छत्तीस हजार योजन ऊपर जाने पर आगत इसी स्थान पर मन्दर पर्वत के दिाखर तल पर यह पण्डक वन नामका वृत कहा गया है 'चत्तारि चउणउए जोयणसए चक्कवालविक्खं-भेणं वहे वर्ल्याकारसंठाणसंठिए' यह समचकवाल विष्क्रम्भ की अपेक्षा ४९४ योजन प्रमाण है यह गोल है तथा उसका आकार गोलाकार बलय के जैसा है जिस प्रकार वलय अपने मध्य में खाली रहता है उसी प्रकार यह वन भी अपने बीच में तरुलता गुल्म आदि से रहित है। 'जे णं मंदरचूलिअं सन्वओ समंता संपरिक्खिलाणं चिट्ठइ' यह पण्डक वन मंदर पर्वत की चूलिका को

भेना क्याणमां प्रसु ४डे छे-'गोयमा! सोमणसवणस्य बहुसमरमणिडनाओ भूमिभागाओ छत्तीसं जोयणसहस्साइं उद्धं उप्पइत्ता एत्यणं मंदरे पट्यए सिहरतले पंडगवणे णामं वणे पण्णते' हे गौतम! सोमनवनना अहु समरमाधीय भूमिशाणयी ३६ हुलार ये। एन ७५२ गया पछी के स्थान भावे छे ते स्थान पर भंडर पर्वतना शिणर प्रहेश ७५२ था पएउडवन नामड वन आवेद्धं छे. 'चत्तारि चडणउए जोयणसए चक्कवालिकसंमेणं बट्टे बलयाकारसंठ,णसंठिए' आ समयडवाद विष्डं अनी अपेक्षाओ ४६४ ये। क्रन प्रभाध्य छे. आ गोणाडारमां छे तथा तेना आधार गेणाडार बद्धय केवे। छे. केम बद्धय पेताना मध्यमां आदी रहे छे तेमक आ वन पास्तु पेताना मध्यसागमां तरु-द्यता गुहम वगेरेथी रहित छे. 'जे णं मंदरचूलिअं सव्वको समेता संपरिक्षित्वत्ता णं चिट्टइ' आ पएउड वन भंडर पर्वतनी यूदि-डाने योभिरथी आधृत हरीने अवस्थित छे. 'तिण्णि जोयणसहस्साइं एनं च बावट्टं जोयण-

चारों ओर से घेरे हुए हैं !(तिण्णिजोयणसहस्साइं एगंच वावहं जोयणसयं

परिवेप्टितस्वेन वर्णयितुमाह-'से णं एगाए' 'तत् खळ एकया 'पउमवरवेह्याए' पद्मवरपेदिकया 'एगेण य' एकेन च 'वणसंडेलं' वनपण्डेन' इत्यारभ्य 'जाव किण्हे देवा आसयंति'
यावत् 'कृष्णो देवा आसत' इति पर्यन्तो वर्णकोऽत्र बोध्यः, स च सार्थः पञ्चमपण्ठस्त्राभ्यामवगन्तन्यः, अथ पण्डकवनवेष्टितां मन्दरचूलिकां जातिज्ञ्ञाःसां वर्णयितुमृपक्रमते—'पंडगवणस्स' इत्यादि—पण्डकदनस्य 'बहुमडझदेसभाए' बहुमध्यदेशभागे अत्यन्तमध्यदेशभागे
'एत्य' अत्र-अत्रान्तरे 'णं' खळ 'मंदरचूलिया णामं चूलिया' मन्दरचूलिका मन्दरस्य—मेरुगिरेः चूलिका चृत्रा—शिखा सैं चूलिका, मन्दरचुलिका नाम चूलिका 'पण्णता' प्रज्ञप्ता,
सा च 'चतालीसं' चत्वारियतं 'जोयणाइं' योजनानि 'उदं उच्चतेणं' कर्ध्वमुद्यत्वेन 'मूले'
मूले-मूळदेशावच्छेदेन 'वारस्' द्वाद्या 'जोयणाइं' योजनानि 'विवखंभेणं' विष्क्रमभेणविस्तारेण प्रज्ञप्तेति शेषः, एवमग्रेऽिष, 'मज्ञ्ञे' मध्ये—ित्तस्यदेशावच्छेदेन 'अट्ठ' अष्ट 'जोयणाई' योजनानि 'विक्खंभेणं' विष्क्रमभेण 'उप्ति' उपरि—क्षित्रस्वच्छेदेन 'चत्तारि'

किंचिंवसेसाहियं परिक्खेवेण) इसका परिक्षेप-परीधि कुछ अधिक एक हजार एक तो ६२ यो जन का है। 'से णं एगाए पडनवर वेह्याए एगेण य वणसंहेणं जाव किण्हे किण्हो भासे देवा आसयंति' यह पण्डकवन एक पडावर वेदिका से और एक घनषंड से चारों ओर से यिरा हुआ है यावत् यह वनषंड कृष्ण है वान व्यन्तर देव यहां पर आराम विश्राम करते हैं। यह सब कृष्णादि रूप वर्णन पंचम एवं षष्ठ सूत्रों से जान छेना चाहिए।

'पंडगवणस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं भंदरच्लिआ णामं च्लिआ पण्णता चत्तालीसं जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं मूळे बारस जोयणाइं विक्संभेणं मज्झे अह जोयणाइं विक्खंभेणं उप्पं चत्तारी जोयणाइं विक्खंभेणं, मूळे साहरेगाइं सत्ततीः संजोयणाइं परिक्खेवेणं' इस पण्डक वन के बहुमध्य भाग में एक मंदरच्लिका नामकी च्लिका है यह च्लिका ४० योजन प्रमाण उंची है मूल देशमें इसका

संयं किं चि विसेसाहियं परिक्लवेवणं' आनी। परिक्षेप (पिधि) डांडेड अधिड १९६२ थे। अन केंटेडी। छे. 'से णं एगाए पडमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं जाव किण्हें किण्होभासे देवा आसंवित' आ पएउड वन ओड पदावर वेिडिशथी अने ओड वन अंडेडी थे। भेरधी आधृत छे. यावत् आ वन आंडेडु इच्छु छे. वान व्यंतर हेवे। अहीं आराभ – विश्वास डरे छे. आ अधुं डूड्डा हि ३५ वर्षुन पंथस अने घट्ड सूत्रीभांथी काष्ट्री हेवुं केंग्रेंओ. 'पंडगवणस बहुम इस्हेंसभाए एत्थणं मंदर चूलिआ णामं चूलिआ पण्णता चत्तालीसं जोयणाई उदं उच्च तेणं मूले बारस जोयणाई विक्खंभेणं मज्झे अद्र जोयणाई विक्खंभेणं उपि चत्तारि जोयणाई विक्खंभेणं, मूले बारस जोयणाई विक्खंभेणं मज्झे अद्र जोयणाई विक्खंभेणं उपि चत्तारि जोयणाई विक्खंभेणं, मूले साइरेगाई सत्ततीसं जोयणाई परिक्खें वेणं' आ पष्टिड वनना अहु मध्यकाशभां केंडेड मंदर यूलिडा नामड यूलिडा छे. आ यूलिडा ४० थे। अन प्रभाणु श्रं यी छे. भूल हेशभी आने। विक्तार नार थे। यो के प्रभाण विकार नार थे। यो विकार नार यो विकार नार थे। यो विकार नार यो विकार नार थे। यो विकार नार थे। यो विकार नार यो

चत्वारि 'जोयणाई' योजनानि 'विक्खंभेणं' विष्क्रम्भेण, पुनः 'मूळे' मूळावच्छेदेन 'साइरे-गाई' सातिरे हाणि किञ्चिद्धिकानि 'सत्तत्तीसं' सप्तत्रिंशतं 'जोयणाई' योजनानि 'परिक्खे-वेणं' परिक्षेपेण परिधिना तथा 'मज्झे' मध्ये 'साइरेगाई' सातिरेकाणि 'पणवीसं' पश्चविंग्रस्ति 'जोयणाई' योजनानि 'परिवखेवेणं' परिक्षेपेण वर्तुळत्वेन 'उप्पि' उपरि 'साइरेगाई' सातिरेन काणि 'बारस' द्वादश 'जोयणाई' यो ननानि 'परिक्खेवेणं' परिक्षेपेण 'मूळे' मूळे 'विज्छिणा।' विस्तीणी मध्योपरिभागापेक्षया विस्तारवती 'मज्झे' मध्ये 'संखित्ता' संक्षिप्ता मूलापेक्षयान ऽस्यविस्तारा 'उप्पि' उपरि 'तणुया' तनुका मूलप्रध्यापेक्षयाऽस्पतरविस्तारा अत **एव** 'गोपुच्छसंठाणसंठिया' गोपुच्छसंस्थानसंस्थिता–ऊर्ध्वीकृतगोपुच्छाकारेण स्थिता, स**या** 'सन्ववेरुलियामई' सर्ववैद्वर्यमयी सर्वोत्मना वैद्वर्यमणिमयी तथा 'अच्छा' अच्छा-आक्काग्न-स्फटिकविभिन्नेला अथैतां पद्मवरवेदिका वनपण्डाभ्यां परिवेध्टिततया वर्णयति—'सा वं' एगाए' सा मन्दरचूलिका खल एकया 'पडमवरवेइयाए' पद्मवरवेदिकया 'जाव' पावत विष्कम्भ-विस्तार-१२ योजन का है मध्यभाग में इसका विस्तार आठ योजन का है शिखरभाग में इसका विस्तार चार योजन का है मूल भाग में इसका परिक्षेप कुछ अधिक ३७ योजन का है तथा 'मज्झे साहरेगाइं पणवीसं जोयणाइं परिक्खेवेणं' मध्यभाग में इसका परिक्षेप कुछ अधिक २५ योजन का है 'उप्पिन साइरेगाइं बारस जोयणाइं परिक्खेवेषं' अपर में इसका परिक्षेप कुछ अधिक १२ योजन का है। 'मूळे विच्छिण्णा मज्झे संखित्ता उप्लितणुआ गोपुच्छसंठाण-संठिया सञ्बवेरुलियामई अच्छा' इस तरह यह मूलमें विस्तीण मध्य में संक्षिप्त और उपर में पतली हो गई है अतः इसका आकार गायकी उर्ध्वीकृत पूंछ के जैसा हो गया है। यह सर्वात्मना वज्रमय है और आकाश एवं स्फटिक-स्फिटिक मिल के जैसी निर्मल है। 'सा णं एगाए पडमवरवेइयाए जाब संपरिक्खिला इति' यह मन्दर च्िलका एक पद्मवर वेदिका और एक वनषण्ड से चारों ओर से चिरी हुई है यहां यावत्पद से 'एकेन वनपण्डेन च सर्वतः समन्तात्' यह पाठ ग्रहीत

केटती छे. शिणर काममां आने। विस्तार यार ये जन केटती छे. मूल काममां आने। परिक्षेप डंर्डड अधिड उ० ये।जन केटती छे. तथा 'मज्झे साइरेगाइं पणवीसं कोयणाई परिक्लेवेणं' मध्य काममां आने। परिक्षेप डंर्डड अधिड २५ ये।जन केटती छे. 'इत्ति साइरेगाइं बारस जोयणाई परिक्लेवेणं' ઉपरिक्षाणमां आने। परिक्षेप डंर्डड अधिड १२ ये।जन केटती छे. 'मूले विच्छिण्णा मज्झे संखित्ता डिप्पं तणुआ गोपुच्छसंठाणसंठिया सद्य वेद्व कि लियामई अच्छां' आ प्रमाखे आ भूलमां विस्तीर्ध, मध्यमां संक्षिप्त अने उपरि काममां पातणी थर्ड गर्छ छे. अथी आने। आडार जायना उध्विष्टित पूंछ केवे। थर्ड गये। छे. आ सर्वत्मना वल्डमय अने आडाश तेमक रहिटड केवी निर्मण छे. 'साणं एगाए परमवर-वेद्वयाए जाव संवरिश्वता इति' आ संदर यूलिडा ओड पदावर वेदिडा अने ओड वनणंडश्व

यावत्पदेन 'एकेन वनपण्डेन च सर्वतः समन्तात्' इति सङ्ग्राह्यम् एषां पदानां व्याख्या प्राग्वत् 'संपरिक्षिता' संपरिक्षिप्ता परिवेष्टितेति, अथास्यां चृलिकायां बहुसमरणीय-भूमिभागं तत्र सिद्धायतनं च वर्णयितुमुपक्रमते-'उप्पि बहुसमरमणिज्ञे' इत्यादि-उपरि मन्दरच्लिकाया उपरि शिखर इत्यर्थः बहुसमरमणीयो 'भूमिभागे' भूमिभागः 'जाव' यावत् यावत्पहेन-'प्रज्ञप्तः स यथानामकः आलिङ्गपुष्करमिति वा' इत्यारभ्य 'तस्य बहुप्रध्यदेशभागे' इति पर्यन्तः पाठः सङ्ग्रह्यः स च पष्ठमूत्रादवसेयः, तत्र 'सिद्धाययणं' सिद्धायतनं प्रज्ञप्तम् ववेति जिज्ञासायामाह-'बहुमज्ञ्चदेसभाए' बहुमध्यदेशभागे बहुसमरमणीयभूमिभाग-वर्तिनि सिद्धायतं प्रज्ञातिस्थन्त्रयः, तच्च 'कोसं आयामेगं' कोशम् आयामेन देष्ट्येण तथा 'अद्धकोसं विक्खंभेणं' अर्द्धकोशं कोशस्यार्दम्, विष्कम्भेण विस्तारेण तथा 'देसूणं कोसं' देशोनं-किश्चिदेशन्यूनं कोशम् 'उद्धं उच्चत्तेणं' उद्धीमुच्चत्वेन तथा 'अष्यग्रांभसय जाव

हुआ है । 'उप्पि बहुसमरमणि जो भूमिभागे जाव सिद्धाययणं बहु मज्झ देसभाए कोसं आयामेणं अहाकोसं विक्लंभेणं देखणं कोसं उद्धं उच्चतेणं अणेगलंभसय जाव धूवकडुच्छुगा' मन्दर चूलिका के ऊपर बहुसमरमणीय भूमिभाग कहा गया है यहां यावत्पद से 'प्रज्ञहाः, स यथानामकः आलिङ्ग पुष्करभितिवा इस पाठ से छेकर 'तस्य बहु मध्यदेशभागे' यहां तक को पाठ ग्रहीत हुआ है यह पाठ छठे सूत्र से जानलेना चाहिये उस भूमिभाग में एक सिद्धायतन कहा.गया है यह सिद्धायतन आयाम में एक कोश का है और विस्तार में आधे कोशका है तथा उचाई में यह कुछ कम एक कोशका है यह अनेक सै कड़ो खंभों के उपर दिकाहुआ है अर्थात् खड़ा हुआ है इस सिद्धायतन के वर्णन में 'अनेक स्तम्भशतसंनिविष्ट' इस पद से छेकर' धूपकडुच्छुकानामधोत्तरशतम्' यहां तक का पाठ छेना चाहिये–अर्थात् १०८ यहां पर धूपके कटा हें हैं' करच्छु' इस पाठको जानने के लिये पन्दहचां सूत्र देखना चाहिये इस सिद्धायतन के

धूवकडुच्छुभा' अने सस्तम्भशतसिश्विष्टिमित्यारभ्य धूवकडुच्छुकानामण्टोत्तरशतिमत्यन्तो वर्णकोऽत्र वोध्यः, तत्र 'अने कस्तम्भेत्यादि वर्णकः सिद्धायतनस्यास्ति स पश्चदशसूत्रे प्रागुक्त इति ततो त्राह्मः, तद्रथींऽिव तत एव वोध्यः तस्य खळ सिद्धायतनस्य बहुमध्यभागे महत्येका मणिपीठिका प्रज्ञप्ता तद्रणेक राजप्रश्नीयस्त्रस्य एको नाशीतितमस्त्रतो वोध्यः तत्र मणिपीठायां महानेको देशच्छन्दकः प्रज्ञप्तः, तत्र जिनप्रतिमाः सन्ति तासां पुरवोऽष्टोत्तरशतं वण्डानाम् अष्टोत्तरशतं चन्दनकलशानाम् अष्टोत्तरशतं चन्दनकलशानाम् अष्टोत्तरशतं चन्दनकलशानाम् अष्टोत्तरशतं चत्रकराणां स्त्रतिष्ठानां मनोग्रिककानां वातकराणां चित्रकराणां रत्नकर्ण्डकाणां हयकण्ठानां कोष्ठससुद्गानां स्त्रतिष्ठानां मनोग्रिककानां वातकराणां चित्रकराणां रत्नकर्ण्डकाणां हयकण्ठानां कोष्ठससुद्गानां हरितालसमुद्गानां हिङ्गुलकसमुद्गानां मनः शिलाससुद्गानाम् अञ्चनसगुद्गानां ध्वजानां तथा धूवकडुच्छुकानां प्रत्येकमण्ठोत्तरशतं संनिश्चित्रतिष्ठतिति पर्यन्तो वर्णको राजप्रशोयस्त्रस्याष्टसप्तिततमस्त्राद्यशीतितमपर्यन्तसूत्रेभ्यो कोष्यः तद्योऽिव तत एव कोष्यः,

अथास्मिन् पण्डकवने भवन पुष्करिषा प्रासःदावतंसकान् वर्णयितुम्रुपक्रमते-'मंदर चूळियाए णं' इत्यादि -मन्दरचूळिकायाः खळु 'पुरत्थिमेणं' पूर्वदिक्षि 'पंडगवणं' पण्डकवनं 'पंचासं' पश्चावतं 'जोयणाइं' योजनानि 'ओगाहित्ता' अवगाह्य-प्रविदय 'एत्य' अत्र-

बहु मध्यदेश भाग में एक विशाल मिणपीठिका है इसका वर्णक पाठ राज-महनीय सूत्र के ७९ वे नम्बर के सूत्र से समझछेना चाहिये उस मिणपीठिका के ऊपर एक देवच्छन्दक नामका स्थान है यहां पर जिन 'यक्ष' प्रतिमाएं हैं इनके आगे १०८ घंटाएं उगी हुई हैं, १०८ चन्दनकलश रखे हुएं है १०८ मुक़ारक रखे हुए हैं १०८ द्पेण रखे हुए हैं १०८ बड़े बड़े थाल रखे हुए हैं १०८ पात्री-छोटे २ पात्र-रखी हुई है इत्यादिरूप से यह सब कथन १०८ घूपकडुच्छुकरखे हुए हैं यहां तक जानना चाहिये इस वर्णन को जानने के लिये राजप्रहनीय सूत्रका ७८ सूत्र से छेकर ८० नं. तक का सूत्र देखना चाहिये 'मंदर चूलिआएणं पुरिक्षमेणं पंडगवणं पण्णासं जोयणाइं ओगाहित्सा एत्थ णं भवणे पण्णते एवं जच्चेवसो-

निधंने. आ सिद्धायतनना लाढुं मध्य हैश लागमां ओड विशाण मिल्पिंडिश आवेली छे. आ पीडिशनुं वर्जुन 'राजप्रश्लीयस्त्र' ना ७६ मां सूत्रमां डरवामां आवेलुं छे. ओ मिल्पिंडिशनी उपर ओड हैव क्छं ह नामड स्थान आवेलुं छे. अहीं जिन (यक्ष) प्रतिमाओ। आवेली छे. ओनी आगण १०८ घंटा लटही रह्या छे. १०८ बंहन डणशा मूडेला छे. १०८ खंगारडा मूडेला छे. १०८ खंगारडा मूडेला छे. १०८ पात्रीओ-(नाना पात्री) मूडेली छे. धर्याहि इपमां अहीं अधुं डथन १०८ धूप डटाडा मूडेला छे. अहीं सुधी आधी हेनुं लिए ओ वर्जुन विषे लाखुवा माटे राजप्रश्लीय स्त्रना ७८ मां सूत्रधी मांडीने ८०मा स्त्र सुधी लिए लेख लेखा महं एमे मवणे वण्णते एवं जच्चेव सोमणसे पुच्चविष्णओं

अत्रान्तरे 'णं' खल्छ 'महं एगे भवणे' महत् विश्वालम् एकं भवनं गृहं सिद्धायतं 'पृष्णत्ते' महत्तम् 'एवं' एवम् भवनवत् पुष्करिण्यः प्रासादावतंसका अपि वक्तव्याः ते भवनादयः कीहशाः इत्पपेक्षायां तद्वर्णनाय सौमनसत्रवार्ति भवनादि पाठं स्विधिष्ठमाह – 'जच्चेव सोमणसे पुष्वविष्णाओं गर्माे' इत्यादि य एव सौमनसे सौमनसाख्ये मन्द्रश्वर्तिन तृतीयवने वर्ण्यमाने सिति पूर्ववर्णितः — पूर्वम्, पण्डकवनवर्णनात् प्राक् वर्णितः — आयामविष्कभवणीदिना भिणतो गर्मः पाठः 'सो चेव' इत्यग्रेतनेन सम्बन्धः स एव पाठः 'भवणाणं' भवनानां 'पुरुखरिणीणं' पुष्करिणीनां 'पासायवर्डेसगाणं' प्रासादावर्तसकानां 'य' च 'णेयव्वो' नेतव्यः — बोध्यः, स च गमः 'पाठः' किन्वर्यन्तः ? इत्यपेक्षायामाह – 'जाव सक्तीसाणवर्डेसगा' यावत् शकेशान्योः प्रासादावर्तसकाः — शक्तेन्द्रस्य तथेशानेन्द्रस्य तत्त्रिक्वरिणी मध्यवर्ति प्रासादावतंसकाः कान्यवर्ते प्रसादावतंसकाः कान्यवर्ते प्रसादावर्तस्य तत्त्रिक्वर्यन्तः । स च गमः सौमनसवनप्रकरणतो बोध्यः, ते च शक्तेशान्यासादातंसकाः केन प्रमाणेन बोध्याः ? इति जिज्ञासायामाह – 'ते णं चेव प्रमाणेणं' तेनैव सौमनसवनगमोक्तेत्र प्रमाणेन आयमादिना बोध्यः, अयमाश्रयः — यथा सौमनसवनवर्णन-प्रसङ्गे क्रूट्यर्गितः सिद्धायतनादि व्यवस्थापकः पाठ उक्तः तथाऽत्रापि वाच्यः सहश्वर्णकः

मणसे पुन्वविणाओं गमो भवणाणं पुक्खिरणीणं पासायवि सगाणय सो चेव णेयन्वो जाव सक्कीसाणवि सगा तेणंचेव पमाणेणं' इस मंद्र चृितका की पूर्विद्शा में पण्डकवन है इस पण्डकवन में ५० योजन आगे जाकर एक विशाल भवन सिद्धायतन कहा गया है इसी प्रकार से पुष्किरिणियां और प्रासादावतंसक भी कहे गये हैं इन सबका वर्णन जैसा सौमनसवन के वर्णन प्रसङ्ग में कहा जा चुका है वैसा ही यहां पर भी कहलेना चाहिये यावत् यहां के तत्तत्पुष्किरि-णीमध्यवर्ती प्रासादावनंसक और ईशानावनंसकईशानेन्द्र संवधी हैं। यदि इस वर्णन को जानना हो तो सौमनसवन प्रकरण देखना चाहिये सौमनसवन वर्णन के प्रसङ्ग में कूरवर्जित सिद्धायतनादिव्यवस्थापक पाठ जैसा कहा गया है वैसा ही बह पाठ यहां पर भी कहलेना चाहिये यहां पर वाविकाओं के नाम यद्यपि प्रकट

गमो मवणाणं पुक्खरिणीणं पासायवडें सगाणय सो चेव णेयव्दो जाव सक्कीसाणवडें सगा तेणं चेद पमाणेणं' या भंदर यू बिकानी पूर्व दिशामां पंउडवन छे. या पष्डि वनमां प० प्रश्नास ये। यन आगण गया पछी ओड विशाण स्वन सिद्धायतन आवेद्धं छे. या प्रभाष्ट्रे क पुष्डिरिष्ट्री थे। अने प्रासादावतं सके। विषे पण्ड क्रिंद्रामां आवेद्धं छे. या अधां विषे सीमनस वनना वर्ष्णुनमां के प्रभाष्ट्रे क्रिंद्रियामां आवेद्धं छे तेद्वं क अते पष्ट्र समस्य देवुं क्रिंगे. यावत् अद्धींना तत् तत्पुष्ठिरिष्ट्री महावतीं प्रासादावतं सके। अने धंशावतं सक्डेन्द्र संभंधी छे. के या संभंधमां काष्ट्रद्वं है। ये ते। सीमनसवन प्रक्रपष्ट्रं केर्ड वेद्रं केर्ड येद्रं केर्ट येद्रं केर्ड येद्रं केर्ड येद्रं केर्ड येद्रं केर्ड येद्रं केर्ड येद्रं केर्ड

स्वात्, अत्र वापीनामानि छेखप्रमादात्सूत्रेऽदृष्टान्यपि ग्रन्थान्तरात्सङ्गृह्योपन्यस्थन्ते तथाहि—
पुण्ड्रा १ पुण्ड्रमा २ सरक्ता ३ रक्तावती ४ एता ऐशानप्रासादे, तथा-श्रीररसा १ इक्षुरसा
२ अमृतरसा ३ वारुणी ४ एता आग्नेयप्रासादे, तथा शङ्कोत्तरा १ शङ्का २ शङ्कावर्ता ३
वलाहका ४ एता नैऋत प्रासादे, पुष्पोत्तरा १ पुष्पवती २ सुपुष्पा ३ पुष्पमाछिनी ४ एता
वायवयप्रासादे, इमा पोडश वाच्या ईशानादि कोणक्रमेण बोध्याः ॥स० ३९॥

ः अथैतत्पण्डकवनवर्तिनीश्रतस्रोऽभिषेकशिला दर्णयितुम्रुपक्रमते—'पंडकवणे <mark>णं भंते</mark>' इत्यादि ।

मूल्य-पंडगवणेणं भंते! वणे कइ अभिसेयसिलाओ पण्णताओ?, गोयमा! चत्तारि अभिसेयसिलाओ पण्णताओ, तं जहा-पंडुसिला१ पंडुकंबलिसला२ रत्तिसिला३ रत्तकंबलिसलेति। कहि णं भंते! पंडग वणे पंडुसिला णामं सिला पण्णता?, गोयमा! मंद्रचृलियःए पुरिध-मेणं पंडगवणपुरिथपेंते, एरथ णं पंडगवणे पंडुसिला णामं सिला पण्णता उत्तरदाहिणायया पाईणपडीणवित्थिणा अद्धचंदसंठाणसंठिया पंचजोयणस्थाइं आयामेणं अद्धाइजाइं जोयणस्याइं विक्खंभेणं चत्तारि

नहीं किये गये हैं-फिर भी हम ग्रन्थान्तर से उन्हें देखकर यहां प्रकट करते हैं यहां की पुष्करिणियों के वािपकाओं के नाम इस प्रकार से हैं-पुण्ड्रा १ पुण्ड्रप्रभा २, सुरक्ता ३, रक्तवती ४, ये चार वािपकाएं ईशान विदिग्वतीं प्रासाद में हैं, क्षित्रारसा, इक्षुरसा, असृतरसा और वाहणी ये आग्नेप्रासाद में हैं, क्षङ्घोत्तरा, शङ्घावर्त्ता और वलाहका ये चार वािपकाएं नैकृत प्रासाद में है एवं पुष्पोत्तरा, पुष्पवती, खुपुष्पा, पुष्पमालिनी ये चार वािपकाएं वायव्य विदिग्वतीं प्रासाद में हैं। इस प्रकार के नामवाली ये १६ वािपकाएं ईशानािदकोणकम से कही गई है। ॥३९॥

નામાં પ્રકેટ કરવામાં આવેલાં નથી છતાં એ અમે શ્ર-થાન્તરથી તોઇ ને અહીં પ્રકેટ કરીએ છીએ. અહીંની પુષ્કરિણીએ તેમજ વાપિકાએના નામા આ પ્રમાણે છે—પુંડ્રા ૧, પુંડ્રપક્ષા ૨, સુરક્તા ૩, રક્તવતી ૪, એ ચાર વાપિકાએ ઇશાન વિદિગ્વતી પ્રાસાદમાં આવેલી છે. ક્ષીરરસા ૧, ઇલ્રુરસા–૨, અમૃતરસા ૩ અને વાર્ણી એ ચાર વાપિકાએ અંગનેય પ્રાસાદોમાં આવેલી છે. શંખાત્તરા, શંખા, શંખાવર્તા અને ખલાહકા એ ચાર વાપિકાએ નૈર્જાત્ય પ્રાસાદમાં આવેલી છે. તેમજ પુષ્પાત્તરા, પુષ્પવતી, સુપુષ્પા અને પુષ્પમાલિની એ ચાર વાપિકાએ વાયવ્ય વિદિગ્વતી પ્રાસાદમાં આવેલી છે. આ પ્રમાણે એ ૧૬ વાપિકાએ ઇશાનાદિ કેલ્લુ કમથી કહેવામાં આવેલી છે. ॥ ૩૯ ॥

जोयणाई बाह्रहरुणं सदवकणगामई अच्छा वेइया वणसंडेणं सदवओ समंता संपिक्तिता वण्णओ, तीसेणं पंडुसिलाए चउहिसिं चत्तारि तिसोत्राणपडिरूवगा पण्णत्ता जाव तोरणा वण्णओ, तीसेणं पंडुसिलाए उप्पि बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णते जाव देवा आसयंति, तस्स णै बहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए उत्तरदाहिणेणं एत्थ णं दुवे सीहासणा पण्णता पंच धणुसयाई आयामविव बंभेगं अद्धाइ-जाइं धणुसयाइं वाहल्छेणं सीहासणवण्णओ भाणियटशे विजयदूस-वज्जोत्ति । तत्थ णं जे से उत्तरिल्ले सीहासणे तत्थ णं बहूहिं भवणवड् वाणमंतरजोइसिय वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य कच्छाइया तित्थयरा अभिसिच्चंति, तत्थ णं जे से दाहिणिल्ले सीहासणे तत्थ णं बहुहिं भवण जाव वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य वच्छाइया तित्थयरा अभि-सिच्चंति। कहि णं भंते! पंडगवणे पंडुकंबलसिला पण्णता ?, गोयमा ! मंद्रचूलियाए दिक्खणेणं पंडगवणदाहिणपेरंते. प्रथ णं पंडगवणे पंडुकंबलसिला णामं सिला पण्णत्ता, पाईणपडीणायया उत्तरदाहिणविस्थिषणा एवं तं चेत्र पमाणं वत्तव्त्रयाय भाणियव्वा जाव तस्त णं बहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महं एगे सीहासणे पण्णते तं चेत्र सीहासणप्पमाणं तत्थ णं बहूहिं भवणवइ जाव भारहगा तित्थयरा अहिसिच्चंति । कहि णं भंते ! पंडगवणे रत्त-सि**ळा णामं सिळा पण्णता ? गोयमा ! मंद्**रचृिळयाए पच्चित्थमेणं पंड-गवणपञ्चरिथसपेरंते, एरथ णं पंडगवणे रत्तसिला णामं सिला पण्णता उत्तरदाहिणायया पाईणपडीणवित्थिण्णा जाव तं चेव पमाणं सब्बतव-णिजमई अच्छा उत्तरदाहिणेणं एत्थ णं दुवे सीहासणा पण्णत्ता, तस्स णं जे से दाहिणिब्ले सीहासणे तत्थ णं बहूहि भवण० पम्हाइया तित्थयरा अहिसिच्चति, तत्थ णं जे से उत्तरिब्ले सीहासणे तत्थ णं बहुहिं भवण० जाव वप्पाइया तित्थयरा अहिसिच्चंति, कहि णं भंते ! पंडेंगवणे रत्तकंवलसिला णामं सिला पण्णता ?, गोयमा ! मंद्रचूलियाए

उत्तरेणं पंडगवण उत्तर्वरिक्षंते, एरथ जं एंडगवणे रत्तवंवलिक्षला णामं सिला पण्णता, पाईणप्डीणाच्या उदीणद्राहिणविश्विणा सद्यतविष्किम् मई अच्छा जाव मज्हादेसमाए सीहासणं, तस्थ णं बहुहिं भवणवद्द जाव देवेहिं देवीहिय एरावयगा तिस्थवरा अभिसिद्यंति ॥सू० ४०॥

छाया-पण्डकवने खळ भदन्त ! वने कति अभिवेक्तिकाः प्रज्ञप्ताः ?, गीतम ! चतस्रो-ऽभिषेक्षिलाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-पाण्डुकिला १ पाण्डुकम्बल्शिला २ रक्तक्षिला ३ रक्तक्रम्ब-स्रक्षित्रा ४ इति । वय खळु भदन्त ! पण्डकदने पाण्डुविस्ता नाम शिला प्रद्य**प्ता ?, गौतम** ! मन्दरचूलिकायाः पौरुरस्येन पण्डकत्रनपौरुस्त्यपर्यन्ते, अत्र खुलु पण्डकाने पाण्डुशिला नाम शिला प्रहाश उत्तरदादिणायटा प्राचीनप्रतीन्तिस्तीणी अर्द्धचन्द्रसंस्थानसंस्थिता पंच-योजनशतानि आयामेन अद्धेमृतीयानि योजनशतानि विष्युम्मेण चलारि योजनानि वाद्रस्येन सर्वकनकमयी अच्छा वेदिका वनण्डेन सर्वतः समन्तात् एम्परिक्षिप्ता वर्णकः, तस्यां खळ पाण्डशिलायाश्रतुर्दिशि चलारि त्रिसोपानप्रतिरूपकाणि प्रज्ञप्तानि यावत् तोरणाः वर्णकः, तस्याः खलु पाण्डशिलायाः उपरि बहुसमर्मणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः यावद् देवा आसते, तस्य खळ बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुयध्यदेशभागे उत्तरदक्षिणेन अत्र खळ द्वे सिंहासने प्रज्ञप्ते पश्च धनुः शतानि आयामविष्यम्भेण अर्द्धतृतीयानि धनुः शतानि बाहरूयेन सिंहासनवर्णको भणितन्यो विजयद्ष्यवर्जन इति । तत्र खळ यत् तत् औत्तराहं सिंहासनं तत्र खलु बहुभिः "भवनपतिवानव्यन्तर्ज्योतिष्कवैमानिकैर्देवैर्देवीभिश्र कच्छादिजास्तीर्थकरा अभिषिच्यन्ते । तत्र खल्ज यत् तदाक्षिणात्यं सिंहासनं तत्र खल्ज बहुभिर्भवन् याबद्वैमानिकै-देवैदेवीभिश्च वत्सादिज्ञास्तीर्थकरा अभिषिच्यन्ते । वव खल्ज प्रदन्त ! पण्डकवने पाण्डकम्बल-शिला नाम शिला प्रज्ञप्ता ?, गौतम ! मन्दरच्लिकाया दक्षिणेन पण्डकदनदक्षिणपर्यन्ते, अत्र खळु पण्डकाने पाण्डकावळिला नाम किला प्रज्ञप्ता, प्राचीनप्रतीचीनायता उत्तरदक्षिण-विस्तीणी एवं तदेव प्रमाणं वक्तव्यता च भणितव्या, यावत् तस्य खळ बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशसारे अत्र खलु महदेकं सिंहासनं प्रश्नप्तम्, तदेव सिंहासनप्रमाणं तत्र खञ्ज वहुमिर्धवनपति यावत् धारतद्वारतीर्थकरा अभिषिच्यन्ते, का खञ्ज भदन्त ! पण्ड-कवने रक्तिका नाम शिक्षा प्रज्ञप्ता ?, मौतम ! मन्दरचूलिकायाः पश्चिमेन पण्डऋवनपश्चिम-पर्यन्ते, अत्र ख्ळु पण्डकवने रक्तशिला नाम विला प्रज्ञप्ता उत्तरदक्षिणायता प्राचीनप्रतीचीन विस्तीणी यावत् तदेव प्रमाणं सर्वतपनीयमधी अच्छा उत्तरदक्षिणेन अत्र खलु हे सिंहासने प्रज्ञप्ते, तत्र खळ यत् तद् दाक्षिणात्यं सिंहासनं तत्र खळ बहु विवेवन० पक्ष्मादिजास्तीर्थकरा अमिरिच्यन्ते, तत्र खल यत् तद् औत्तराई सिंहायनं तत्र खल बहु भिभीवन० यावद् बप्रादि-जास्तीर्थकरा अभिषिच्यन्ते, क्व खल्ल घद्रन्त ! पण्डकवने रक्तकम्बल्धिला नाम शिला प्रज्ञप्ता ?, गौतम ! मन्दरच्छिकाया उत्तरेण पण्डकवनोत्तरचरमान्ते अत्र खल्ड पण्डकदने रक्तप्रम्बछ-

शिला नाम शिला प्रज्ञप्ता, प्राचीनप्रतीचीनायता उत्तरदक्षिणविस्तीर्णी सर्वतपनीयमयी अच्छा यावत् मध्यदेशभागे सिंहासनं, तत्र खल बहुभिभवनपति यावदेवैदैवीभिश्र पेरावतकास्तीर्थ करा अभिषिच्यन्ते । सु० ४८॥

टीका-'पण्डकवणे णं भंते!' इत्यादि-पण्डकवने खलु भदन्त! 'वणे' वने 'कइ' कित-कियत्यः 'अभिसेयसिलाओ' अभिषेकिशिलाः तत्र अभिषेकः-जिनजन्मस्तपनं तस्मै पाः शिलाः-उपलाः, ताः कतीतिपूर्वेण सम्बन्धः 'पण्णत्ताओ' प्रइप्ताः, इति गौतमेन पृष्टो भगवांस्तम्प्रत्याह-'गोयमा!' गौतम! 'चत्तारि' चतसः 'अभिसेयसिलाओ' अभिषेकिशिलाः 'पण्णत्ता' प्रइप्ताः 'तं जहा' तद्यथा 'पंडुसिला' पाण्डुकिला १ 'पंडुकंबलिशिला' पाण्डुकम्ब-लिशिला २ 'रत्तसिला' रक्तशिला ३ 'रत्तकंबलिलिलेत' रक्तकम्बलिला ४ इति, क्वचित्तु पाण्डुकम्बला १ अतिपाण्डुकम्बला २ रक्तकम्बला ३ अतिरिक्तकम्बला ४ इति भिन्ननामन्य-

पण्डकवनवर्ती चार अभिषेकशिलाओं की वक्तव्यता-

'पंडकवणे णं भंते ! वणे कइ अभिसेयसिलाओ पण्णत्ताओ' इत्यादि ।

टीकार्थ-गौतम ने इस सूत्र द्वारा प्रभु से ऐसा पूछा है-'पंडकवणे णं भंते! द्वाणे कह अभिसेयसिलाओ पण्णत्ताओं' हे भदन्त! पण्डकवन में जिन जन्म के समय में जिनेन्द्रको जिस पर स्थापित करके अभिषेक किया जाता है ऐसी अभिषेक दिलाएं कितनी कही गई हैं। इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं 'गोयमा! क्तारि अभिसेअसिलाओ पण्णता' हे गौतम! वहां पर चार अभिषेक दिलाएं कही गई हैं। 'तं जहा' उनके नाम इस प्रकार से हैं—'पंडुसिला, पंडुकंबल सिला रत्तिला, रत्तकंबलिसला' १ पाण्डुशिला २ पांडुकंबलशिला ३ रक्तशिला और ४ रक्तकंबलिशला कहीं २ इन शिलाओं के नाम इस प्रकार से भी लिखेहुए मिलते हैं—पाण्डुकम्बला १, अतिपाण्डुकम्बला २ रक्तकम्बला ३

પણ્ડકવનવતી ચાર આભિષેક શિલાઓની વક્તવ્યતા

'पंडक्रवणे जं भेते! वणे कड् अभिसेयसिलाओ पण्णताओ' इत्यादि

टीडार्थ-गीतमे आ सूत्रवंडे प्रभुने आ कातना प्रश्न हथे छे है 'पंडकवणे णं मंते! वणे कह अभिसेयसिलाओ पण्णताओ' है भहंत! पंडह बनमां किन कन्म समयमां किनेन्द्रने स्थापित हरीने अभिषेड हरवामां आवे छे, लेवी अभिषेड शिक्षाओं हेटली हहेवामां आवेली क्रेना कवाणमां प्रभु हहे छे-'गोयमा! चत्तारि अभिसेअसिलाओं पण्णताओं है गौतम! त्यां आने अभिसेअसिलाओं पण्णताओं है गौतम! त्यां आने शिक्षाओं हहेवामां आवेली छे. 'तं जहां ते शिक्षाओंना नामा आ प्रमाणे छे- पंडुसिला, पंडुकंबलिला, रत्तसिला, रत्तकंबलिला' १ पंडुशिक्षा, २ पंडुहंभवशिक्षा, उ रहतिश्वा अने ४ रहतहंभक शिक्षा. हेटलाह स्थाने के शिक्षाओंना नामा आप्रमाणे पण्डु पण्डु हृद्धत हरवामां आवेला छे-पांडुहंभक्षा १, अतिपांडुहंभक्षा २, रहत हंभक्षा ३, अने अति रहतहंभक्षा. 'कहि णं मंते! पंडकवणे पंडुसिला णामं सिला पण्णत्ता' है भहंत! पण्डिन वनमां

श्रवस उकाः, तत्राद्या शिला कुत्रास्तीति पृच्छिति—'किह णं मंते!' इत्यादि—वव खळु मदन्त! 'पंडगवणे' पण्डकवने 'पंडसिला णामं सिला' पाण्डशिला नाम शिला 'पण्णत्ता!' प्रज्ञप्ता?, भगवानुत्तरयित—'गोयमा!' गौतम! 'मंदरच्लियाए' मन्दरच्लिकायाः 'पुरियमेणं' पौरस्त्येन पूर्वदिशि 'पंडगवणपुरिथमपेरंते' पण्डकवनपौरस्त्यपर्यन्ते-पण्डकवनस्य पूर्वसीमापर्यन्ते 'पत्थ' अत्र अत्रान्तरे 'णं' खलु 'पंडमवणे' पण्डकवने 'पंडसिला णामं सिला' पाण्डशिला नाम शिला 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्ता, सा च 'उत्तरदाहिणायया' उत्तरदक्षिणायता उत्तरदिशणयोदिशोरायता दीर्या तथा 'पाईणपडीणवित्थिण्णा' प्राचीनप्रतीचीनविस्तीणां पूर्व-पश्चिमदिशोविंस्तारयुक्ता 'अद्धचंदसंठाणसंठिया' अद्धचन्द्रसंस्थानसंस्थिता अद्धचन्द्राकारेण-संस्थिता 'पंचनोयणसयाइं' पश्चयोजनशतानि 'श्रायामेणं' आयामेन सुखिवभागेन 'अद्धाइ-ज्ञाइं' अर्द्धतृतीयानि 'जोयणसयाइं' योजनशतानि 'विवखंशेणं' विष्कम्भेण-विस्तारेण 'चत्तारि' चत्वारि 'जोयणाइं' योजनानि 'वाहल्लेणं' बाहल्येन पिण्डेन 'सल्वकणगामई'

और अतिरक्तकम्बला ४ 'कहिणं अंते ! पंडुसिलाणामं सिला पण्णक्ता' हे भदन्त ! पण्डकवन में पांडुशिला नामकी शिला कहां पर कही गई है ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-गोयमा ! मंदरच्लिआए पुरिधमेणं' पंडगवणपुरिधमपेरंते, एत्थ णं पंडगवणे पंडुसिला णाम सिला पण्णक्ता' हे गौतम ! मंदरच्लिका की पूर्व दिशा में तथा पंडकवन की पूर्व सीमा के अन्त में पंडकवन में पांडुशिला नामकी शिला कही गई है ! 'उत्तर दाहिणायया, पाईण पडीणविच्छिण्णा अद्ध-चंदसंठाणसंठिया पंचजोयणसयाई आयामेणं अद्धाइज्ञाई जोयणसयाई विक्लंभेणं चत्तारि जोयणाई बाहल्लेणं सन्वकणगामई अच्छा वेइयायणसंडेणं सन्वको समंता संपरिक्खिला वण्णओं' यह शिला उत्तर से दक्षिण तक लम्बी है और पूर्व से पश्चिम तक विस्तीणं है । इसका आकार अर्थचंद्र के आकार जैसा है पांचसी योजन का इसका आयाम है और अटाई सो योजन का इसका विष्कम्भ है एवं इसका वाहल्य-मोटाई-चार योजन का है । सर्वात्मना सुवर्णमय है और

पांडुशिक्षा नामनी शिक्षा क्या स्थणे आवेक्षी छे ? ओना जवाणमां प्रक्ष छे - 'गोयमा ! मंदर चूलिआए पुरिक्षमेणं पंडयवणपुरिवमपेरंते, एत्थणं पंडगवणे पंडुिसला णामं सिला पण्णत्ता' है जीतम ! मंदर यूकिशानी पूर्व दिशामां तथा पंडिक्षननी पूर्व सीमाना आंतमां पंडिक्षनमां पांडुिशिक्षा नामक शिक्षा आवेक्षी छे. 'उत्तरदाहिणायया, पाईणपढीणविच्छण्णा अद्धवंद्रसंठाणसंठिया पंच जोयणसयाई आयामेणं अद्धाइन्जाई जोयणसयाई विक्खंमेणं चत्तारि जोयणाई बाहल्छेणं सव्व कणगामई अच्छा वेइया वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्षिता वण्णओ' आ शिक्षा उत्तरथी दक्षिण सुधी कांजी छे अने पूर्वथी पश्चिम सुधी विक्तीर्ण छे. ओना आकार अर्थ अंद्रना आकार केवे। छे. प०० थे। कन केटक्षा ओना आयाम छे तथा २५० थे। कन केटक्षा आने। विष्ठं से छे. आक्षर्य (भाटाई) यार थे। कन केटक्षा छे. आ सर्वात्मना सुवर्ण

सर्वकनकमयी-सर्वोत्मना सुदर्णमयी 'अच्छा' अच्छा आकाश्वस्किटिकविश्वमीला 'वेइया ण-संडेणं' वेदिकावनपण्डेन पद्मवरवेदिकया ननपण्डेन च 'सन्त्रभो' सर्वदः-सर्विद्ध 'समंता' समन्तात् सर्वविद्धिक्ष 'संपरिविद्यत्ता' सम्परिक्षिता परिवेष्टिता 'नण्णभो' वर्णकः-पद्मवर-वेदिका वनपण्डयोवणनपरपद्सपृहोऽत्र वोध्यः स च चतुर्थ पश्चमद्धवतोऽत्रसेयः, तद्यौ'ऽपि तत एव वोध्यः, 'तीसे णं पंड्रिल्टाए' तस्याम् अकन्तरोक्तायां खळु पाण्ड्रिण्टायां 'चउ-दिस्त' वतुर्विश्वा दिव्यतुष्ट्याद्यच्छेदेन 'वत्तारि' चत्यारि 'तिसोवाणपिक्षक्रमा' विसोपान-प्रतिष्ठपक्षाणि-प्रतिष्ठपक्षाणि छन्दराणि तानि च त्रिसोपानानि चेति तथा, अत्र प्राकृतत्वा-दिशेषणवाचकपद्श्य परनिवातो बोध्यः, 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्तानि, तेषां त्रिसोपानानां वर्णकोऽत्र वाच्यः स किम्पर्यन्तः ? इति जिज्ञासायामाद-'जाव तोरणा वण्णभो' यावत् तोरणा वर्णकः-तोरणवर्णकपर्यन्तो वर्णको मण्यत्व्य इत्यर्थः, स च गङ्गा सिन्धुनदीस्वष्ठपवर्णतप्रकरणतः सङ्ग्राह्यः, तदर्थोऽपि तत एव बोध्यः, अथ पाण्ड्रिलाया उपरितनसृमिमागसीमाम्यं वर्णयि-तस्त्रमाह्यः, तदर्थोऽपि तत एव बोध्यः, अथ पाण्ड्रिलाया उपरितनसृमिमागसीमाम्यं वर्णयि-तस्त्रमाने 'वहसमरमणिङक्तं' बहुसमरमणीयः 'भूमिभाने' भूमिमानः भूभिकावः 'पण्णते'

आकाश तथा स्कटिक के जैसी निर्मल है चारों ओर से यह पद्मवरमेदि का और वनषण्ड से घिरी हुइ है यहां पर पद्मवरवेदिका और वनषंड का वर्णक पद समूह चतुर्थ पंचम सूझ से लेकर कहलेना चाहिये 'तीसेणं पंडुसिलाए चउिहिंस-चत्तारि तिसोबाणपण्डिक्वमा पण्णत्ता' उस पाण्डुशिला की चारों दिशाओं में चार त्रिसोपानप्रतिरूपक कहे गये हैं। और जिसोपानप्रतिरूपक में प्रतिरूपक यह त्रिसोपान पदशा विशेषण है और इसका अर्थ सुन्दर है यहां प्राकृत होने से इसका पर निपात हो गया है। 'जाव तोरणा वण्ण ओ' इन चार त्रिसोपानक प्रतिरूपकों का वर्णक पाठ तोरणतक का यहां पर प्रहण करलेना चाहिये यह तोरणतक का वर्णक पद समूह गड़ा सिन्धु नदी के स्वरूप वर्णन करनेवाले प्रकरण से समझलेना चाहिये (ती सेणं पंडुसिलाए उपिंव बहुसगरमणिज्जे भूमिनागे

भय छे अने आंधश तथा स्हिटिंड केवी निर्मण छे. ये. भेरघी का पदातरवेदिंडा अने वनणंडियी आवृत छे. अहीं पदात्र वेदिंधा अने वनणंडिने। वर्ण्ड पह समूह यहुर्थ-पंथम सूत्रमं वावेदी। छे. ते किदासुकी। ये त्यंथी वांथी दीवा केछेकी 'तीसेणं पंडुसिहाए चडिसिं पत्तारि तिसोवाणपिहाइगा पञ्चता' में पांडु शिक्षानी ये। येर आर त्रिसे। पान प्रति इपेडा छे. अहीं प्राप्त है। वांथी केने। परिपात थर्ड अथे। छे. अने आने। अर्थ सुंहर थाय छे. अहीं प्राप्त है। दियाची केने। परिपात थर्ड अथे। छे. 'जाव तोरणा वण्णकों' के यार त्रिसे। नेड प्रति इपेडाने। वर्ष्ड पाठ ते। रख सुधीने। अहीं अड्ड इसेवा केछि के. आ ते रख सुधीने। वर्ष्ड पह समूह पिये जंजा—िसंधु नहीन। स्व इपेडा है पह समूह पिये जंजा—िसंधु नहीन। स्व इपेडा है केडि के रनारा प्रहरखुमांधी काखी होतुं केडिकी. 'तीसेजं पंडुसिहाए डिण बहुसमरमिविको

प्रज्ञप्तः, अस्य वर्णनं स्विचितुमाह-'जाव देवा आसर्वति' इसि यावद् देवा आसते अत्र यावत्पदेन 'से जहाणासए आर्टिमपुक्खरेड वा' इत्यारभ्य 'तत्य णं बढवे वागमंतरा देवाय देवीओय आसयंति' इति पर्यन्तो दर्णको बोध्यः, स च पण्ठस्रहाद् ग्राह्यः तस्य छायादिरपि तत एव वोध्यः, तत्र 'आसयंति' इत्युषलक्षणं तेन 'चिहंति' इत्यादीनां ग्रहणम् एपामपि व्याख्या पष्ठादेव स्त्राद्वोध्या, अथात्राभिषेकसिंहासनं वर्णावेतुद्रुपक्रमते—'तस्स णं बहु-समरमांवज्जस्त' तस्य खल्ल बहुसमरमणीयस्य 'भूमिनागस्त' भूमिभागस्य 'बहुमज्झदेसथाए' बहुमध्यदेशमागे 'उत्तरदाहिणेणं' उत्तरदक्षिणेन उत्तरदक्षिणयोर्दिशोः 'एत्थ' अत्र-अत्रान्तरे 'णं' खछ प्रत्येकं दिशि एकैकमिति 'दुवे' हे 'सीदासगा' सिंहासने जिनामिषेकसिंहासने 'पण्णचा' प्रज्ञप्ता, ते च 'पंच घणुसयाई' पंच धनुः ज्ञतानि 'आयामविक्खंभेणं' आयामविष्क-म्भेण-दैर्घ्यविस्ताराभ्याम् 'अद्धाइज्जाइं' अर्द्धतृतीयानि 'धगुसवाइं' धनुः सतानि 'बाहरुछेणं' बाइट्येन-पिण्डेन, अत्र 'सीहासणवण्याओ' सिंहासनवर्ण हः-सिंहासनस्य जिनाभिनेकसिंहास-पण्णासे' उस पांडुशिला का अपर का भृतिभाग बहुसमरमणीय कहा गया है 'जाव देवा आसयंति' घावत् यहां पर व्यन्तर देव आते हैं और आराम विश्राम करते हैं। यहां यावत्यद से 'से जहाणानए आलिंगपुक्खरेड्वा' यहां से छेकर 'तत्थणं बहवे वाणमंतरा देवाच देवीओ च आसर्यति' यहां तक का पाठ गृहीत हुआ है। इसे समझना हो तो छठवे सूत्र को देखना चाहिये यहां 'आसयंति' यह फिनापर उपलक्षणरूप है अतः इससे 'चिहंति' हत्यादि कियापर्दो का ग्रहण हो जाता है 'तस्सणं बहुस अरमणि उजस्स भूमिभागस्त बहुम उझ देसभाए उत्तर दाहिणे णं एत्थ्रणं दुवे सीहासणा पण्णताः' उस बहुसमरमणीय भूमिभाग के ठीक बीच में उत्तर-दक्षिण दिकाओं की ओर अर्थीत उत्तरदिशा एवं दक्षिणदिशा में एक एक सिंहासन कहा गया है 'पंचयगुत्रयाई आयामविद्यंत्रभेगं अद्वाइज्जाई घणुसवाई वाहल्लेणं सीहाणवण्णओ आणिवन्वो विजयद्सवज्जोत्ति' यह

भूमिभागे पण्णत्ते' ते पांडु शिलानी उपरने। लाग गढुसमरमणीय ४६ लामां आवेशे छे. 'जाब देवा आसर्वति' यावत अहीं आगण व्यंतर हेंने। आने छे अने आराम विश्राम ६२ छे. अहीं यावत पहथी 'से जहाणामए आलिंगपुक्खरेह्वा' अहीं थी मांडीने 'तत्थणं बद्वे वाणमंत्तरा देवाय देवी जोय आसर्वति' अहीं सुधीने। पांड संगृहीत थयेशे। छे. आ विषे लाख्या माटे पण्ड सूत्रमांथी वांथी लेवुं क्रिष्ठंथे, अहीं 'आसर्वति' आ हिपापह उपलक्ष्य ३५ छे. अथी आ अधार्थी 'चिट्टंति' वगेरे हियापहें। अहु शर्म लाय छे 'तस्सगं बहु-समरमणिक्तस्स मूसिमानस्स बहुमक्बदेसभाए उत्तरदाहिणें एत्थणं दुवे सीहासणा पण्णता' ते अहु समरमण्डीय लूमि लागना ओहहम मध्यमां उत्तर-हिल्ल हिशाकी तरह ओटले हे उत्तर हिशा अने हिल्ल हिशाकी तरह ओटले हे उत्तर हिशा अने हिल्ल हिशामां ओह-ओह सिंहासन आवेलुं छे. 'पंच धमुसयाई आयाम विक्लंभेणं अद्धाइन्जाई धणुसयाई बाहल्लेणं सीहासण वण्णको माणियव्यो विजयदूस वज्रोति'

नस्य वर्णकः वर्णनप्रविद्यम्हः 'माणियव्यो' भणितव्यः स च 'विजयद्सवज्ञो त्ति' विजयद्ष्य-वर्जः उपरिभागे विजयनामकचन्द्रोद्यवर्णनरहितो वाच्यः शिलासिंहासनानामनाच्छाद्विदेशे स्थितत्वात्, अत्र च सिंहासनानां समायामविष्कम्भत्वेन समचतुरस्रता वोध्येति, नन्वत्रैकेनैव सिंहासनेन जिनजन्माभिषेके सिद्धे किमासनान्तरेणेत्यत्राह—'तत्थ ण जे से' इत्यादि—तत्र तयो द्वयोरासनयोर्भध्ये 'णं' खछ यत् तदिति वाक्यालङ्कारे 'उत्तरिक्ले' औत्तराह्यम् उत्तर-दिग्भवं 'सीहासणे' सिंहासनमस्ति 'तत्थ' तत्र 'णं' खछ 'वहृहिं' वहुभिः 'भवणवह' वाण-मंतरजोइसियवेमाणिएहिं' भवनपति वानव्यन्तरच्योतिष्कवैमानिकैः 'देवेहिं' देवैः 'देवीहि य'

सिंहासन आयाम और विष्कम्भ की अपेक्षा पांचसी धनुष का है तथा बाहत्य-मोटाई की अपेक्षा २५० धनुष का है यहां पर सिंहासन का वर्णक पदसमूह कहलेना चाहिये उसमें विजय दृष्य का वर्णन नहीं करना चाहिये क्योंकि शिला और सिंहासन ये दोनों अनाच्छादित देश में ही स्थित है अतः इनके ऊपर में विजय नामक चन्दरवा नहीं तना हुआ हैं सिंहासन सम आयाम और विष्क-म्भ वाले जब कहे गये हैं तो इस से उनमें सम चतुरस्त्रता ही है ऐसा जानना चाहिये यहां ऐसी आशंका होती है कि जिनजन्माभिषेक में एक ही सिंहासन पर्याप्त होता है किर आसनान्तरों की यहां क्या आवश्यकता है कि जिस से यहां उनका अस्तित्व प्रकट किया गया है तो इसके उत्तर में प्रभु गौतम से कहते हैं-'तत्थ णं जे से उत्तरित्ले सीहासणे तत्थणं बहुहिं भवणवहवाणमंतर जोइसियवेमाणिएहिं देवेहिं देवीहिय कच्छाइया तित्थयरा अभिसिच्चंति' हे गौतम ! उन दो सिंहासनों के बीच में जो उत्तर दिग्वर्ती सिंहासन है उस पर अनेक भवनपति वानव्यन्तर ज्योतिष्क और वैमानिक देवों एवं देवियों द्वारा

આ સિંહાસન આયામ અને વિષ્કંભની અપેક્ષાએ પ૦૦ ધનુષ જેટલું છે. તેમજ બાહ્રલ્ય માટાઈ-ની અપેક્ષાએ ૨૫૦ ધનુષ જેટલું છે. અહીં સિંહાસન વિશેના વર્લ્યું પદ-સમૃદ્ધ કહી લેવા નોઇએ. તેમાં વિજયદ્દષ્યનું વર્લ્યુન કરવું નોઈએ નહિ. કેમકે શિલા અને સિંહાસન એ બન્ને અનાચ્છાદિત દેશમાં જ સ્થિત છે. એથી એમની ઉપર વિજય નામક ચન્દ્રવા નજ તાણેલ હાય સિંહાસના જયારે સમ, આયામ અને વિષ્કંભવાળા કહેવામાં આવ્યાં છે ત્યારે તેઓમાં સમયતુરસત્તા છે એવું આપા ગાપ જાણીલેવું નોઈએ. અહીં એવી અશંકા થાય છે કે જિન જન્માભિષેકમાં એક જ સિંહાસન પર્યાપ્ત હાય છે પછી આસના-તરાની અહીં શી આવશ્યકતા છે કે જેથી અહીં તેમનું અસ્તિત્વ પ્રકટ કરવામાં આવેલું છે. તેમ એના જવાબમાં પ્રભુ ગૌતમને કહે છે—'તત્ય ળં તે સે તત્રિસ્ટ સીફાસળે તત્થળં बहૃદ્દિં મવળવદ્દવાળમન્તરનોદ્દસિયવેમાળિલદિં દેવેદિં દેવીદિય कच્છા દ્વા તિત્થયરા અમિસિદ વંતિ' હે ગૌતમ! તે એ સિંહાસનેના મધ્યમાં જે ઉત્તર દિગ્વ તો સિંહાસન છે, તેની ઉપર અનેક ભવનપતિ, વાનવ્યંતર, જયાતિષ્ક અને વૈમાનિક દેવા અને દેવીઓ વડે કચ્છાદિ વિજયા-

देवीभिश्व 'कच्छाईया' कच्छादिजाः—कच्छ प्रभृति विजयाण्टकोत्पन्नाः 'तित्थयरा' तीर्थ-कराः—जिनाः 'अभिसिच्चंति' अभिषिच्यन्ते जन्मोत्सवकरणार्थं स्नप्यन्ते, इति प्रथमस्यौक्त-राहस्य सिंहासनस्य प्रयोजनम्, द्वितीयस्य दाक्षिणात्यस्य तस्य प्रयोजनमाह—'तत्थ णं जे से दाहिणिच्छे सीहासणे' इत्यादि तत्र तयोरासनयोर्भध्ये खळ यत् दाक्षिणात्यं दक्षिणदिग्वतिं सिंहासनं तदिति प्राग्वत् 'तत्थ' तत्र—दाक्षिणात्ये सिंहासने 'णं' खळ 'भवण । जाव वेमाणि-पहिं' भवन व्यावहैमानिकः—भवनपत्यादि वैमानिकपर्यन्तैः—भवनपतिव्यन्तर्ज्योतिष्कवैमानिकिरित्यर्थः 'देवेहिं' देवैः 'देवीहिय' देवीभिश्च 'वच्छाईआ' वत्सादिजा वत्सादिविजयो-स्पन्नाः 'तित्थयरा' तीर्थकराः 'अभिसिच्चंति' अभिषिच्यन्ते, अस्यायमिश्रायः—असी पाण्ड-शिला पूर्वाभिष्ठखा वर्तते तद्दिशृष्ठसेव पूर्वमहाविदेहनामव हेत्रं तत्र यमलत्वया तीर्थकरावु-त्रधेत तत्र शीतामहानचु इरदिग्वर्ति कच्छादि विजयाष्टकजातस्य र्वःर्थकृत उत्तरवर्ति सिंहा सनेऽभिषेको भवति, तथा शीतामहानचा दक्षिणदिग्वर्ति दत्सादि विजयजातस्य र्वःर्थकृत उत्तरवर्ति सिंहा सनेऽभिषेको भवति, तथा शीतामहानचा दक्षिणदिग्वर्ति दत्सादि विजयजातस्य राधिकरावस्य दक्षिण

कच्छादि विजयाष्टकों में उत्पन्न हुए तीर्थंकर स्थापित करके जन्मोत्सव के अभिषेक से अभिषिक किये जाते हैं 'तत्थणं जे से दाहिणिल्छे सीहासणे तत्थणं महूहिं भवणवहवाणमंतरजोइसियवेमाणिएहिं देवेहिं देवीहिय वच्छाईया तित्थयरा अभिसिंच्चंति' तथा ये दक्षिण दिग्वर्ती सिंहासन है उस पर वत्सादि विजयों में अत्पन्न हुए तीर्थंकर अनेक भवनपित वानव्यन्तर ज्योतिष्क एवं वैमानिक देवों द्वारा जन्माभिषेक के अभिषेक से अभिषिक्त किये जाते हैं। तात्पर्य इस कथन का ऐसा है कि यह पाण्डुशिला पूर्वाभिमुखवाली है और उसी के सामने पूर्व महाविदेह नामका क्षेत्र है वहां पर एक साथ दो तीर्थंकर दृश्यन्न होते हैं इनमें शीता महानदी के उत्तर दिग्वर्ती कच्छादि विजयाष्टक में उत्पन्न हुए तीर्थंकर हैं उनका अभिषेक उत्तर दिग्वर्ती सिंहासन पर होता है और शीता महानदी के दक्षिण दिग्वर्ती बत्सादि विजय में उत्पन्न हुए तीर्थंकर

करेंडिंगां ઉत्पन्न थयेंदा तीथं करोने स्थापित करीने जन्मात्सवना अलिपेड्यी अलिपिडत करवामां आवे छे. 'तत्थ णं जे से दाहिणिल्छे सीहासणे तत्थणं बहुहिं भनणमहत्राणमंतर जोइसियवेमाणिएहिं देवेहिं देवीहिय वच्छाईया तित्थयरा अभिसिंच्चंति' तेमक के दक्षिणु दिञ्वती सिंक्षसने। छे तेनी उपर वत्सादि विजयेतमां उत्पन्न थयेदा तीर्थ करेने अने कल पति, वानव्य तर, जयेतिष्ठ तेमक वैमानिक देवा पडे जनमालिपेडना अलिपेडथी अलिप्तित करवामां आवे छे. आ कथननं तात्पर्य आ प्रमाणे छे है आ पांडुशिदा पूर्वालि- भुणवाणी छे अने तेनी क सामे पूर्व महाविदेख नामक क्षेत्र आवेद्धं छे. त्यां ओडीसाथे जे तीर्थ करेन अलिपेड थाय छे. ओमां शीता महा नदीना उत्तर दिञ्वती करवादि विजया- क्षेत्रमं उत्तर श्रीता सहानदीना दक्षिणु दिञ्बती वत्सादि विजयोगं उत्तर श्रीता महानदीना दक्षिणु दिञ्वती वत्सादि विजयोगं उत्तर विजयोगं उत्तर श्रीता महानदीना दक्षिणु दिञ्वती वत्सादि विजयोगं उत्तर विजयीगं वित्रम थयेदा तीर्थ हरेन छे. अमने। अलिपेड उत्तर दिञ्वती सिंक्षसन उपर

दिग्वितं सिंहासनेऽभिषेक इति द्वयोः सिंहासनयोः प्रयोजनम् । अय द्वितीयाभिषेकिशिलां वर्णियतुम्रपक्रमते—'किह णं भंते !' इत्यादि-प्रश्नम्भः व्याप्टम् उत्तरम्भः 'गोयमा' गौतम ! 'मंदरच्लियाए' मन्दरच्लिकायाः 'दिव्यणेणं' दिक्षणेन दिक्षणिदिशि 'पंड्यवणदाहिणपेरंतं' पण्डकवनदिश्चणपर्यन्ते—पण्डकवनस्य दिश्णसोमार्थन्तभागे 'एत्थ' अत्र अत्रान्तरे 'णं' ख्लु 'पंड्यवणे' पण्डकवने 'पंड्कंवलिका णामं सिला' पाण्डकम्बलिला नाम शिला 'पण्णता' प्रज्ञावणे' पण्डकवने 'पंड्कंवलिका णामं सिला' पाण्डकम्बलिला नाम शिला 'पण्णता' प्रज्ञावणे, सा च 'पाईणपडीणाययाः' प्राचीनप्रतीचीनाऽऽयता पूर्वपश्चिमदिशो दीर्घा 'उत्तर-दिण्णिवित्यण्णा' उत्तरदिश्चणिवस्तीर्णा—उत्तरदक्षिणिदिशो विस्तःरयुक्ता, एतद्विश्चेषणद्वयं विद्यापाएं पूर्वोक्तमितिदिशित 'एवं तं चेव' एवम्—पूर्वोक्ताभिज्ञापानुसारेण तदेव प्रागुक्तमेव 'पमाणं' प्रमाणं—एश्चको तनशतायासादिमानं भिणतव्यं तथा 'वत्तव्यया' वक्तव्यता 'य' च 'भाणियवा' भिणतव्या सा च वक्तत्यता किम्पर्यन्ता ? रत्यपेक्षायामाइ—'जाव तस्स णं'

का अभिषेक दक्षिण दिग्वती सिंहासन पर होता है इस तरह यह दो सिंहा-सनों के होनेका प्रयोजन है 'कहिणं अंते! पंडकवने पंडुकंबलिसला णामं सिला पण्णत्ता' हे भदन्त! पंडकवन में पाण्डुकम्बल शिला नामकी ब्रितीय शिला कहां पर कही गई है ? उत्तर में प्रसु कहते हैं—'गोयमा! मन्दर चुलिआए दिक्खणेणं पंडगबणदाहिण पेरंते, एत्थणं पंडगवणे पंडुकंबलिसला णामं सिला पण्णत्ता' हे गौतम! मन्दर चुलिका की दक्षिणिदिशा में और पाण्डुवन की दक्षिण सीमा के अन्त भाग में पण्डकवन में पाण्डुकंबल शिला नामकी शिला कही गई है' पाईण पडीणायया उत्तर दाहिण विच्छिण्णा एवं तं चेव पमाणवत्तव्वया य भाणियव्वा' यह शिला पूर्व से पश्चिम तक लम्बी है और उत्तर से दक्षिण तक विस्तृत है। इसका पंच योजन शत प्रमाण आयामादिका पूर्वोक्त अभिलाप के अनुसार कह-लेना चाहिये गावत् इसका जो बहुसमरमणीय भूमिभाग है उसके बहुमध्य देशमें एक सिंहासन है यही बात 'जाव तस्तणं बहुसमरमणिज्जस्स भूविभागस्स

हराना अलिवेड हिल्ला हिज्वती सिंहासन उपर थाय छे. आ प्रमाणे में में सिंहासनी शा मार्ट छे तेनुं प्रयेशकत स्पष्ट हरवामां आवेलुं छे. 'किल्णं मेंते! पंडमवणे पंडुकंबल सिला णामं सिला पण्णता' है लहंत! पंडड वनमां पांडुडं अल शिला नामें जीला शिला हथा स्थणे आवेली छे? जीना कवाणमां प्रसु हहे छे-'गोयमा! मन्दरचूलिओए दिखाणें पंडमवणें पंडुकंबलिला णामं सिला पण्णत्ता' हे जौतम! मन्दर चूलिहानी हिल्ला हिण्यंते' एत्थणं पंडमवणे पंडुकंबलिला णामं सिला पण्णत्ता' हे जौतम! मन्दर चूलिहानी हिल्ला हिण्यंते' एत्थणं पंडमवणे पंडुकंबलिला णामं सिला पण्णत्ता' हे जौतम! मन्दर चूलिहानी हिल्ला हिण्ला एवं तं पंडु हं जल शिला नामे शिला आवेली छे. 'पाईणपडीणाश्या उत्तरदाहिणविच्लिण्णा एवं तं चेव पमाणवत्तव्या य माणियव्या' आ शिला पूर्वथी पश्चिम सुधी लांजी छे. अने उत्तरथी हिल्ला सुधी विस्तृत छे. छेना पंथ थेलिन शत प्रमाण आयामाहि प्रमाण विशे पूर्वित अलिलाप सुक्ण सम्ला लेशे के जेश अना प्रमाण के लिलाप सुक्ण सम्ला लेशे के लिलाप सुक्ण सम्ला सिलाण सिलाण है,

यावत् तस्य खळ 'बहुसमरमणिज्जम्स' बहुसमरमणीयस्य 'भूमिभागस्स' भूमिभागस्य 'बहुः मज्झदेसभाष्' बहुमध्यदेशभागे 'एत्थ' अत्र-अत्रान्तरे 'णं' खळु 'सई एगे' महदेकं 'सीहासणे'ः सिंहासनं 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तम् तद्यद्वसमरमणीयभूमिभागतम्बन्धियद्वमध्यदेशभागवर्ति महदेक-सिंशसन्वर्णनपर्यन्ता वक्तव्यता भाणितव्येत्पर्थः 'तं चेव' तदेव पूर्वोक्ताश्रिलापोक्तमेव पश्च-**धनुः श**तादिकं 'सीहासणप्यमाणं' सिंहासनप्रमाणम् उचलादौ वोध्यम् 'तत्थ' तत्र सिंहासणे' 'र्ण' खर्छ 'बहु हिं⁷ बहुभिः 'भवणवइ जाव' भवनपति यावत् भवनपतिव्यन्तर्ज्योष्किवैमानि~ कैर्देवेर्देवीभिश्रेति यावत्पदस्यचितपदसङ्ग्रहोऽवगन्तव्यः 'भारहगा' भारतकाः-भरते भरत-नामके क्षेत्रे जाता भारतास्त एव भारतकाः-भरतक्षेत्रोतपन्नाः 'तिस्थयरा' तीर्थकराः-जिनाः 'अभिसिच्चंति' अभिषिच्यन्ते, नतु पूर्वोक्ष पाण्ड्यिकायां सिंहासमद्वयप्रक्तं पाण्ड्कम्यलाया-मस्यां शिलाया पेकसिं हासनोक्ती को हेतु: ? इति चेच्लूणु-एषा शिला दक्षिणदिगिभमुखा-बहुमङझदेसभाए एत्थ णं एगे महं सीहासणे पण्णत्ते' इस सूत्र पाठ द्वारा व्यक्त की गई है। 'तं चेव सीहासणप्पमाणं' यह सिंहासन आयाम और विष्कम्भ की अपेक्षा पांचसौ धनुष का है तथा २५० धनुष की इसकी मोटाई है इस प्रकार से जैसा सिंहासन का वर्णन पाण्डुशिला के प्रकरण में कहा गया है वैसा ही वह प्रमाण वर्णन यहां पर भी करछेना चाहिये 'तत्थणं बहुहिं अवणवइबाणमंतर जोइसियवेमाणिएहिं देवेहिं देवीहिय भारहमा तित्थपमा अहिसिवंति' इस सिंहासन के ऊपर भरतक्षेत्र सम्बन्धी तीर्थेकर को स्थापित करके अनेक भवन-पति व्यानव्यन्तर ज्योतिष्क और वैमानिक देव एवं देवियों द्वारा जन्माभिषेक

तेना अडु भध्यदेशमां केड सिंड्सन छे, आ वात 'जाव तस्सणं बहुसमरमणिक्जस्स मूमिभागस बहुमक्झदेसभाए एत्यणं एगे महं सीहासणे पण्णत्ते' आ सूत्रपाठ वडे व्यक्त डरवामां
आवेसी छे. 'तं चेव सीहासण्यमाणं' आ सिंड्सन आयाम अने विव्हंसनी अपेक्षाके
प०० धनुष केटलुं छे, तथा २५० धनुष केटली केनी मेटाई छे. आम सिंड्सननुं
केलुं वर्णन पांडुशिला प्रडरखुमां डरवामां आवेलुं छे, तेलुं क वर्णन अहीं पण्ण समल्
सेलुं लोईके. 'तत्थणं बहूहिं भवणवद्दवाणमंतरजोईसिय वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहिय
भारहगा तित्थयरा अहिसिंचंति' के सिंड्सननी ७५२ सरतक्षेत्र संभंधी तीर्थं डरने स्थापित
डरीने अनेड स्वनपति, वानव्यंतर, क्येतिष्ड अने वैमानिक हेत अने देवीका तेमना
कन्मासिके डरे छे. अहीं केली शंका इद्सवी शक्त के येमानिक हेत अने देवीका तेमना
कन्मासिके डरे छे. अहीं केली शंका इद्सवी शक्त के प्रथम पांडुिसाना वर्णनमां के
सिंडासनेन वर्णन हरवामां आवेलुं छे अने अहीं केठ क शिंडासननुं वर्णनक्ष्तमां के

किया जाता है। यहां एसी शंका हो सकती है कि पहिछे पाण्डुशिला के प्रकरण में दो सिंहासनों का होना प्रकट किया गया है और यहां पर एक ही सिंहासन का होना कहा गया है सो इसका कारण क्या है? तो इसका समाधान रूप डिस्त तद्भिमुखं भरतक्षेत्रमस्ति तदैकदैक एव तीर्थकरो जायत इति तस्यैकस्य जन्ममहो-त्सवार्थाभिषेक एकेनैव सिंहासने सम्पद्यत इति हेतोरेकमेवात्र सिंहासनमुक्तमिति।

अथ तृतीयां रक्तिशिक्षाभिधानां शिलां वर्णियतुमुपकमते—'कहि णं भंते! पंडमवणे रत्तसिला' इत्यादि—प्रश्नयुत्रं स्पष्टम्, उत्तरसूत्रे—'गोयमा' गौतम ! 'मंदरचूलियाए' मन्दरचूलिकायाः 'षचित्थमेणं' पश्चिमेन पश्चित्रित्ति 'पंडगवणपचित्यमपेरंते' पंडकवनपश्चिमपर्यन्ते पण्डकवन- रय पश्चिमसीमाप्यन्तभागे 'एत्थ' अत्र—अत्रान्तरे 'णं' खल्छ 'पंडगवणे' पण्डकवने 'रत्तिसला नाम सिला' रक्तिशला नाम शिला 'पण्णता' प्रज्ञप्ता, साच 'उत्तरदाहिणायया' उत्तरदक्षिणायां यता उत्तरदक्षिणदिशो दीर्घा 'पाईणपडीणवित्थिण्णा' प्राचीनप्रतीचीनविस्तीर्णा पूर्वपश्चिम- दिशोर्विस्तारयुक्ता' इत्यारभ्य 'जाव तं चेव पमाणं' अर्द्धवन्द्रसंस्थानसंस्थिता पश्चयोजन- शतानि आयामेन अर्द्धनृतीयानि योजनशतानि विष्क्रमभेण चलारि योजनानि बाहल्येन, इति पर्यन्तं तदेव प्रागुक्तमेत्र प्रमाणमस्या वाच्यम्, तथा एषा शिला 'सव्वत्विणक्वमई' सर्वतपनी- प्रमयी सर्वात्मना तपनीयमयी रक स्वर्णमयी तथा 'अच्छा' अच्छा आकाशस्फटिकविद्यमिला,

इत्तर ऐसा है कि यह शिला दक्षिणदिगाभि मुखवाली है इसी ओर भरत क्षेत्र है भरत क्षेत्र में एक कालमें एक ही तीर्थं कर उत्पन्न होते हैं एक साथ दो तीर्थं कर उत्पन्न नहीं होते हैं। अतः उस एक तीर्थं कर जन्माभिषेक के लिये एक ही सिंहासन पर्याप्त हैं। इसी कारण यहां एक ही सिंहासन के होने का कथन किया गया है 'कहिणं भंते! पंडगवणे रत्तसिला णामं सिला पण्णत्ता' हे भदन्त! पंडकवन में रक्तशिला नामकी तृतीय शिला कहां पर कही गई है? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—'गोयमा! 'मंइरच्लियाए पच्चित्थमेणं पंडगवणपच्चित्थम-पेरंते एस्थ णं पण्डगवणे रत्तसिला णामं सिला पण्णत्ता उत्तरदाहिणायया पाईण-पडीणविच्छण्णा जाव तंचेव पमाणं सञ्वतवणि उमई अच्छा' हे गौतम! रक्तशिला नामकी यह तृतीयशिला मन्दर चूलिका की पश्चिमदिशा में और पण्डकवन की पश्चिमदिशा की अन्तिम सीमा के अन्त में पण्डकवन में कही गई है यह

हिसि चु हिगासि मुणवाणी छे. आ तरई क सरतक्षेत्र छे. सरत क्षेत्रमां ओड डाणमां ओड क तीर्थ 'डर अत्यान थाय छे. ओडी साथ छे तीर्थ 'डरेग अत्यान थान नथी. ओथी ते ओड तीर्थ 'डरना कन्मासि चेड माटे ओडां क सिंहासन पर्याप्त छे. ओथी क अहीं ओड क सिंहासन आंचे हुं डियन प्रणट डरवामां आवे हुं छे. 'क हिणं मंते ! पंडगवणे रत्तासटा णामं सिला पण्णता' हे लहंत' पंडडवनमां रडतिशासा नामे तृतीय शिंसा ड्या स्थणे आवे हों छे शेना कवाममां प्रसु इहे छे- 'गोयमा! मंदरचूलियाए पच्चियमेणं पंडगवणपच्चित्यमपरंते द्याणं पण्डगवणे रत्तिसला णामं सिला पण्णत्ता उत्तरदाहिणायया पाईणपडीणविच्छिण्णा जाव तं चेव प्रमाणं सत्व तवणिक्जमई अच्छा' हे जीतम! रइत शिंसा नामे आ तृतीय शिंसा मंदर चूलिडानी पश्चिम दिशामां अने पंडड वननी पश्चिम दिशानी आंतम सीमाना आंतमां पंडड वनमा आवेशी छे.

अस्याः शिलायाः 'उत्तरदाहिणेणं उत्तरदक्षिणेन उत्तरतो दक्षिणतश्च 'एत्थ' अत्र—अत्रान्तरे 'णं' खल्ल 'दुवे' द्वे 'सीहासणा' सिंहासने –िजनजन्मोत्सवार्थाभिषेकसिंहासने 'पण्णत्ता' प्रञ्चप्ते, अत्र सिंहासनद्वित्वे कारणिनदम् इयं शिला पश्चिमाभिष्ठलाऽस्ति तद्भिष्ठसं च पश्चिम-महाविदेहक्षेत्रं तच शीतोदामहानद्या दक्षिणोत्तरभागाभ्यां विभक्तं, तस्य प्रत्येकस्मिन् भागे एकैकतीर्थकरजन्मसम्भवादेकदा तीर्थकरद्वयं जायते, इति द्वयोरेकदेव जन्मोत्सवाभिषेकार्थं सिंहासनद्वयमावश्यकमिति द्वे सिंहासने उक्तं 'तत्थ' तत्र तयो द्वयोः सिंहासनयो मध्ये 'णं' खल्ल 'जे' यत् 'से' तत् इति वाक्यालङ्कारे 'दाहिणिल्ले' दाक्षिणात्यं दक्षिणभागवर्ति 'सोहासणं' सिंहासनं 'तत्थ' तत्र तस्थिन् सिंहासने 'णं' खल्ल 'बहूहिं' बहुभिः 'मवण०' भवन-पतिन्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकैदेवैदेवीभिश्च 'पम्हाइया' पक्ष्मादिजाः दक्षिणभागवर्ति पक्षमादि विजयाष्टकोत्पन्नाः 'तित्ययरा' तीर्थकराः जिनाः 'अहिसिचंति' अभिष्टियन्ते, इति प्रथम-

शिला सर्वातमना सुवर्णमयी है और आकाश तथा स्फिटिकमणि के जैसी निर्में है यह उत्तर से दक्षिण तक लम्बी है और पूर्व पश्चिमदिशा में विस्तीर्ण है यावत् इसका प्रमाण भी "पांच सौ योजन की इसकी लम्बाई है और अहाई सौ योजन की इसकी चौडाई है तथा इसका आकार अर्द्ध चन्द्र के जैसा है इसकी मोटाई चार योजन की है' इस रूप से कहलेना चाहिये यह शिला सर्वातमना तपनीय सुवर्णमयी है एवं आकाश तथा स्किटक के जैसी यह निर्मेल है। 'उत्तर दाहिणेणं एत्थ णं दुवे सीहासणा पण्णत्ता' इस शिला की उत्तर दक्षिण दिशा में दो सिहासक कहे गये हैं 'तत्थ णं जे से दाहिणिल्लसीहासणे तत्थ णं बहूहिं भवण परहाइया तित्थयरा अहिसिचंति' इनमें जो दक्षिण दिग्वतीं सिहासन है उसके अपर तो अनेक भवनपति, वानव्यन्तर ज्योतिष्क एवं वैमानिक देव देवियों द्वारा प्रभुका जन्माभिषेक किया जाता है अर्थात् पश्चिम महाविदेह नामका जो क्षेत्र है कि जिसके शितोदा महानदी के द्वारा दक्षिण और उत्तर भाग रूप से दो भाग हो

शा शिक्षा सर्वातमना सुवर्णुभयी छे जने आडाश तेमक स्हिटिड मिण केवी निर्माण छे. आ ६ त्रिश्ची हिक्षण सुधी क्षांणी छे अने पूर्व-पश्चिम हिशामां विस्तीर्ज्य छे यावत् अतुं प्रमाण्ड पण आ प्रमाण्डे छे हैं प०० येकिन केटिक्षी अनी क्षांणां छे अने स्प० येकिन केटिक्षी अनी पहाणां छे तेमक जने। आडार अर्थ अन्द्रमा केवा छे. अनी माटां आर येकिन केटिक्षी छे. आ शिक्षा सर्वात्मना तपनीय सुवर्णुभयी छे अने आडाश तेमक स्हिटिड केवी निर्माण छे. 'उत्तरवाहिणेंण एत्य णं दुवे सीहासणा पण्णत्ता' आ शिक्षानी इत्तर हिक्षणु हिशामां छे सिंद्रासनी। आवेक्षा छे. 'तत्थणं जे से वाहिणिल्लसीहासणे तत्थणं बहुहिं मवण० पन्हा-इया तित्ययरा अहिसिचंति' अमां के हिक्षणु हिश्यतीं सिंद्रासन छे तेनी उपर ते। अनेड क्षयनपति, वानव्यंतर, क्योतिष्ठ अने वैमानिङ हेव-हेवीओ। प्रभुने। कन्मालिषेड करे छे. એटिक्षे हे पश्चिम मद्याविदे नामड के हेव छे हे केना शिताहा महानही वह

सिंहासनप्रयोजनम् अथ द्वितीयसिंहासनप्रयोजनमाह-'तत्थ णं जे से उत्तरिल्ले' इत्यादि-तत्र-तयोरासनयो मेन्ये खळ यत् तदिति प्राम्बत्, औत्तराहम्-उत्तरभागवर्ति 'सीहासणे' सिंहासनं 'तत्थ' तत्र-तस्मिन् सिंहासने 'गं' खळु 'बहू हिं' बहु भिः 'भवण० जाव' भवनपति-व्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकैर्देवैर्देवीसिश्च 'वप्पाइया' वप्रादिजाः उत्तरभागवर्तिवप्रादिविजयाष्ट-कोत्पन्नाः 'तित्थयरा' तीर्थकराः-जिनाः 'अहिसिच्चंति' अभिषिच्यन्ते, अथ चतर्थीं रक्तक-म्बलिशिक्षाधिधां शिलां वर्षियतुष्ठपक्रमते—'किहि णं भंते ! पंडगवणे स्कर्कवलसिला' इत्यादि प्रश्नस्त्रं सुगमम्, उत्तरस्त्रं पाण्डुकम्बलिकास्त्रमनुप्तत्य व्याख्येयं नवरम् 'सव्वतवणिज्जमई' गये हैं और जिसके प्रत्येक भागमें एक एक जिनेन्द्र की एक साथ उत्पत्ति होती है उसके दक्षिण भाग गत आठ पक्ष्मादि विजय है उत्तर भाग गत आठ वपादि विजय हैं इनमें दक्षिण भाग गत आठ पक्ष्मादि विजयों में उत्पन्न हुए तीर्थकर का जन्माभिषेक तो दक्षिणदिय भागवर्ती सिंहासन पर होता है और 'तत्थ णं जे से उत्तरिरुष्ठे सीहासणे तत्थ णं बहुहिं भवण जाव बप्पाइआ तित्थयरा अहि सिच्चंति' जो उत्तर दिग्वर्ती सिंहासन है उस पर ८ वमादि विजयगत तीर्थंकर का जन्माभिषेक होता है यह जन्माभिषेक भवनपति आदि चतुर्विध निकाय के देव और देवियों द्वारा किया जाता है। 'कहिण संते ! पंडकवणे रक्तकंवल सिला णामं सिला पण्णना।' हे अदन्त ! एंडकवन में रक्त कंवल शिला नामकी शिला कहां पर कही गई है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा ! मंदरचूलि-याए उत्तरेणं पंडगवणडसरचरिनंते एत्ध णं पंडगवणे रस्तकंबरुसिला नामं सिला पण्णत्ता' हे गौतम ! मन्दर चृष्टिका की उत्तरदिञा में तथा पंडकवन की उत्तर सीमा के अन्त में पंडकवन में रक्तकम्बलिशला नामकी शिला कही गई है

हिक्षिण अने उत्तर लाग इप के लागा थर गया के अने केना हरेड लागमां ओड-ओड़ जिनेन्द्रनी ओड़ी साथ उत्पत्ति थाय के. तेना हिक्षण लागमां आठ पदमाहि विकथा आवेल के. उत्तर लागनां आठ वप्राहि विकथा आवेला के. ओमां हिक्षण लाग गत आठ पदमाहि विकथा मंदिर विकथामां उत्पन्न थयेला तीर्घ डरना कनमालियेड ते। हिक्षण हिम्लागवती लिंहासन उपर हिथ के. अने 'तत्थ जं जे से उत्तरिक्डे सीहासणे तत्य जं बहुहिं भवण जाव वप्पाइआ वित्थयरा अहिसिक्वंति' के उत्तर हिम्बती लिंहासन के तेनी उपर आठ वप्राहि विकथ अत तीर्घ डरे कि कनमालियेड हीय के. ओ कनमालियेड लवनपति वगेरे यतुर्विध विश्वयान हेव अने हेवीओ विठ अरवामां आवे के. 'कहिणं भंते! पंडगवणे रक्तवंशकसिला णामं सिक्डा पण्णता' है लहेत! पंउडवनमां रहत कंसल शिक्षा नामे शिक्षा क्या स्थले आवेली के केना कवाणमां प्रकु कहे हे-'गोलमा! मंद्रव्हियाप उत्तरेण पंडगवणउत्तरक्रिमंते एस्थ णं पंडगवणे रक्तकंशक सिला णामं निका पण्णता' है जीतम! मंदर यूलिकानी एस्थ णं पंडगवणे रक्तकंशक सिला णामं निका पण्णता' है जीतम! मंदर यूलिकानी एस्थ णं पंडगवणे रक्तकंशक सिला णामं निका पण्णता' है जीतम! मंदर यूलिकानी इत्तर हिशामां तेमक पंउड वननी उत्तर सीमाना आंतमां पंउडवनमां रहत कंशल शिक्षा

सर्वतपनीयमयी-सर्वात्मना रक्तसुत्रर्णमयीति वर्णतो बोध्या, अत्रत्य सिंहासने 'एरावयगा' एरावतकाः-ऐरावतक्षेत्रीत्पनाः 'तिस्थयरा' तीर्थकरा अभिविच्यन्ते । अस्य सिंहासनस्यैकल-विवयकशङ्कासमाधाने भरतक्षेत्रोक्ततिमनुस्तरीय बोध्ये । स्र० ४०॥

अथ मन्दरे काण्डसंरूयां गौतमो भगवन्तं पृच्छति-'मंदरस्य णं भंते' इत्यादि ।

पुलय-मंद्रस्स णं भंते ! पव्ययस्स कइ कंडा प्रणाता ?, गोयमा ! तुओ कंडा पण्णता, तं जहा–हिट्टिल्ले कंडे १, मज्झिल्ले कंडे २, उव-रिल्ले कंडे ३, मंदरस्स णं भंते ! पव्वयस्स हिट्टिल्ले कंडे कइविहे पण्णते ?, गोयमा ! चउवित्रहे पण्णते, तं जहा—पुढर्वी १ उवछे २ वइरे ३ सकरा ४, मज्झिमिल्ले णं भंते ! कंडे कइविहे पण्णते ?, गोयमा ! चउिवहे पण्णते, तं जहा-अंके १ फलिहे २ जायरूवे ३ रयए ४, उव-रिल्ले कंडे कइविहे पण्णते ?, गोयमा ! एगागारे पण्णते सद्वजंबूण-यामए, मंदरस्स णं अंते ! ५०३यस्स हेट्रिल्ले कंडे केवइयं बाहल्लेणं 'पाईण रडीणायया उदीणदाहिणविच्छिण्णा सम्बत्वविण उजमई अच्छा जाव मज्झदेसभाए सीहासगं, तत्य णं बहुहिं भवणवई जाव देवेहिं देवीहि य एरा वयगा तित्थयरा अहिसिंचंति' यह शिला पूर्व से पश्चिम तक लम्बी है और उत्तर दक्षिण में विस्तीर्ण है यह शिला सर्वात्मना तप्त सुवर्णमयी है आकाश एवं स्फिटिकमिण के जैसी निर्भल हैं। इस शिला का ऊगरी भाग बहु समरम-णीय है इसके मध्य भाग में एक सिंहासन है इस पर ऐरावत क्षेत्र के भीतर उत्पन्न हुए तीर्थेकर का जन्माभिषेक किया जाता है यह जन्माभिषेक अनेक भवनपति आदि चतुर्विध देवनिकायों द्वारा संपन्न किया जाता है भरतक्षेत्र की तरह ऐरावत क्षेत्र में भी एक काल में एक ही तीर्थकर का जन्म होता है, अतः उनके अभिषेक के लिये यह शिला प्रयुक्त होती है ॥४०॥

पण्णते ?, गांयमा ! एगं जोयणसहस्सं बाहल्लेणं पण्णते, मिन्झिमिल्ले कंडे पुच्छा, गोयमा ! तेत्रिंहुं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णते, उवित्तिले पुच्छा, गोयमा ! छत्तीसं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णते, एवामेत्र सपुट्वावरेणं मंदरे पट्वए एगं जोयणसयसहस्सं सट्वग्गेणं पण्णते ॥सू० ४१॥

छाया-मन्दरस्य खल्ज भदन्त! पर्वतस्य कतिकाण्डानि प्रज्ञप्तानि?, गौतम! त्रीणि काण्डानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-अधस्तनं काण्डं १ मध्यमं काण्डं २ उपरितनं काण्डम् ३ मन्दरस्य खल्ज भदन्त! पर्वतस्य अधस्तनं काण्डं कतिविधं प्रज्ञप्तम्?, गौतम! चतुर्विधं प्रज्ञप्तं, तद्यथा-पृथित्री १ उपलाः २ बजाणि ३ श्रकेराः ४, मध्यमं खल्ज भदन्त! काण्डं कितिविधं प्रज्ञप्तम्?, गौतम! चतुर्विधं प्रज्ञप्तम्, तद्यथा-अङ्कः १ स्फटिकः २ जातस्वपं ३ रजतम् ४, उपरितनं काण्डं कितिविधं प्रज्ञप्तम् १, गौतम! एकाकारं प्रज्ञप्तं सर्वजाम्बन्दमयम्, मन्दरस्य खल्ज भदन्त! पर्वतस्य अधस्तनं काण्डं कियद् बाहल्येन प्रज्ञप्तम् १, गौतम! एकं योजनत्तस्य वाहल्येन प्रज्ञप्तम्, मध्यमे काण्डं कियद् बाहल्येन प्रज्ञप्तम् १, गौतम! एकं योजनत्तस्यं वाहल्येन प्रज्ञप्तम्, उपरितने पृच्छा, गौतम! पर्विश्वतं योजनसहस्राणि बाहल्येन प्रज्ञप्तम् एवमेव सप्विपरेण मन्दरः पर्वतः, एकं योजनशतसहस्रं सर्विग्रेण प्रज्ञप्तः।।स्र० ४१॥

टीका-'मंद्रस्स णं भंते' इत्यादि-मन्द्रस्य-मेरोः खलु भद्दत ! 'पञ्चयस्स' पर्वतस्य 'कइ' कित-कियन्ति 'कंडा' काण्डानि विकामाः 'पण्णत्ता ?' प्रकृष्तानि ?, इति प्रश्नस्य भगवानुत्तरमाह-'गोयमा !' गौतम ! 'त शो' त्रीणि 'कंडा' काण्डानि 'पण्णत्ता' प्रकृष्तानि 'तं जहा' तथ्या 'हिद्दिन्छे' अयस्तनम् -अथोभतं 'कंडे' काण्डं १, 'मज्झिन्छे' मध्यं मध्य-

मंद्रकाण्डसंख्यावक्तव्यता-

'नंदरस्स णं भंते! पव्चयस्स कइ कंडा पण्णाता' इत्यादि।

टी कार्थ-गौतम ने प्रसु से अब ऐसा पूछा है-'मंद्रस्स णं भंते ! पब्धयस्स कह कंडा पण्णत्ता' हे भदन्त ! मंद्र पर्वत के कितने काण्ड विभाग कहे गये हैं? इसके उत्तर में प्रसु कहते हैं-'गोयमा ! तओ कंडा पण्णत्ता' हे गौतम ! तीन काण्ड कहे गये हैं। 'तं जहा-' जो इस प्रकार से हैं-हिंदिल्छे कंडे, मज्झिल्छे कंडे'

'संदरस्स णं भंते! पट्ययस्स कइ कंडा पण्णत्ता' इत्यादि

टी हार्थ-गौतमे हवे प्रसुने आ जातना प्रश्न हथे है 'मंद्रस्स णं मंते! पन्वयस्स कड़ कंडा पण्णत्ता' हे लहंत! मंहर पर्वतना हेटला हांडा-विकाणा हहेवामां आवेला छे? क्येना जवाममां प्रसु हहे छे-'गोयमा! तओ कंडा पण्णत्ता' हे गौतम! त्रस्य हांडा हहेवामां आवेला छे. 'तं जहां' जेमहे 'हिट्ठिल्डे कंडे, मिसल्डे कंडे उवित्लें कंडे' १ अधरत-

મંદર કાંડ સંખ્યા વક્તવ્યતા

प्रदेशभवम् २ 'कंडे' काण्डम् २ 'उवरिल्छे' उपरितनं शिखरभवं 'कंडे' काण्डम् ३, तत्र प्रथमकाण्डभेदं पृच्छति-'मंदरस्स' मन्दरस्य-मेरोः 'ण' खलु 'मंते !' भदन्त ! 'प्व्ययस्स' पर्वतस्य 'हिट्ठिस्छे' अधस्तनं 'कंडे' काण्डं 'कइविहे' कतिविधं कियत्प्रकारकं 'पण्णाते ?' प्रज्ञप्तम् ?, इति प्रश्नस्य भगवानुत्तरमाह-'गोयमा !' गौतम ! अथस्तनं काण्डं 'चङिवहे' चतुर्विधं चतुष्मकारकं 'पण्णचे' प्रज्ञप्तम् 'तं जहा' तद्यथा-'पुढवी' पृथ्वी-मृत्तिका १, 'उवले' उपला:-प्रस्तराः २, 'वइरे' वजाणि-हीरकाः ३, 'सकरा' शर्करा:-कर्करिकाः ४, एवश्च मन्दरः पृथ्वीपाषाणहीरवशकरामयकन्दकः सिद्धः, अस्याधस्तनमेव काण्डं सहस्रयोजन-प्रमाणम्, नन्यधस्तनकाण्डस्य पृथिव्यादिभेदेन चतुर्विधतात्तदीय योजनसःसस्य भागचतुष्ट-यकरणे पृथिव्याद्येकैकस्य भेदस्य योजनसहस्रचतुर्थभागप्रमः णता स्यात् तथा च सति विशिष्ट **उवरि**रुष्ठे कंडे[,] १ अधस्तनकाण्ड २ मध्यकाण्ड और ३ उपरितकाण्ड अब गौतम युनः प्रभु से ऐसा पूछते हैं -'मंदरस्स णं भंते ! पव्यवस्त हिहिल्ले कंडे कहिंचेहे पण्णाते' हे भदन्त ! मन्दर पर्वन का जो अधस्तन काण्ड है वह कितने प्रकार का कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं -'गोयमा! चउव्विहे पण्णान्ते' हे गौतम! अधस्तनकाण्ड चार प्रकार का कहा गया है। 'तं जहां' जैसे 'पुढवी, **खबले, वहरे सक्करा' एक प्रथिनीरूप, दूसरा** उपलह्म, तीसरा बल्लह्म और चौथा शर्करा-कंकररूप इस तरह के इस कथन से मन्दर पर्वत पृथिवी, पाषाण हीरक और कंकर्ड मयकन्दक बाला सिद्ध होता है यह प्रथम काण्ड ही १ हजार घोजन प्रमाणवाला है यहां ऐसी दांका होती है कि जब प्रथमकाण्ड १ हजार योजन प्रमाणवाला है तो इसके जो चार विभाग प्रकट किये गये हैं उनमें एक एक विभाग एक हजार योजन का चतुर्थीं दा रूप होगा अतः एसा होने पर विशिष्ट

નકાંડ, ર મધ્યકાંડ અને ઉપરિતનકાંડ. હવે ગૌતમસ્વામી કરી પ્રભુને પ્રશ્ન કરે છે કે'मंद्रस्स णं मंते! पव्ययस्स हिट्ठिस्ले कंडे कइविहे पण्णत्ते' હે ભદંત! મંદર પાર્તાના જે અધસ્તન કાંડ છે, તે કેટલા પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે! એના જવામમાં પ્રભુ કહે છે-गोयमा! चडिव्यहे पण्णत्ते' હે ગૌતમ! અધસ્તન કાંડ ચાર પ્રકારના કહેવામાં આવેલ છે. 'तं जहा' જેમકે 'पुढ्वी, उबले, बहरे, सकरा' એક પૃથ્વી રૂપ, બીજો ઉપલ રૂપ. ત્રીજો વજ રૂપ અને ચાથા શર્કરા એટલે કે કાંકરા રૂપ. આમ આ જાતના કથનથી મંદર પર્વંત પૃથિવી પાષ્યણ, હીરક અને કાંકરા મથ કંદકવાળા સિદ્ધ થાય છે. આ પ્રથમ કાંડ જ એક હજાર ધાજન પ્રમાણવાળા છે. અહીં શંકા ઉદ્ભવે છે કે જ્યારે પ્રથમ કાંડ ૧ હજાર ધાજન પ્રમાણવાળા છે તો એના ચાર વિભાગા પ્રકટ કરવામાં આવેલા છે તેમનામાં એક-એક વિભાગ એક હજાર ચાજનો ચાજનો ચતુર્થાશ રૂપ થશે એથી એમ થાયતા વિશિષ્ટ પરિણામાનુગત વિચ્છેક રૂપ પૃથિવ્યાદિક કાંડની સંખ્યાના વર્દ્ધ કા થઈ જશે તો પછી આ

परिणामानुगत विच्छेदरूप पृथिव्यादिक काण्ड की संख्या के वर्द्धक हो जावेगें

परिणामानुगतिवि च्छेदरूपाः पृथिव्यादयः काण्डसंख्यां वर्द्धयेषुरिति चेत् सत्यम् अत्रोच्यते → अधस्तनकाण्डस्य पृथिव्यादि भेदकयनस्येदं तात्ययम् प्रथमकाण्डं क्वचित्पृथ्वीवहुलं क्वचित् दुपलवहुलं क्वचित् वृत्रवहुलं काचिच्छकराबहुलं न तु पृथिव्यादि चतुष्ट्यातिरिकाङ्करफटिन कादि घटितमितिहेतो नियमेन पृथिव्यादिरूपविभागा न काण्डस्य किन्तु काण्डस्य प्रथमभेदे स्वस्त्रपाचुर्यदर्शका एव इति काण्डसंख्यां वर्द्धयितुं पृथिव्यादयो न शक्तुवन्ति, अथ मध्यमकाण्डवि इस्तृनि वर्णयितुगुषक्रमते – 'मिष्डिमिन्लेणं भंते !' मध्यमं स्वर्ङ

भ इन्त ! 'कंडे' काण्डं 'कइविहं' कतिविधं-कियत्त्रकारकं 'पण्णत्ते ?' प्रज्ञप्तम् ?, 'गोयमा !' गौतम! मध्यमं काण्डं 'चउवित्रहे' चतुर्विषं 'पण्णत्ते' प्रज्ञतम्, 'तं जहा' तद्यया-'अंको' अङ्कः-'फिलिहे' स्कटिक:-स्कटिकमितः २, 'जायरूवे' जातरूपं सुवर्णम् ३, 'रयष्' रजतं रूप्यम् अङ्करत्रम् १, ४, एतम् तुष्टयम्यं मध्यमं काण्डभिति भावः, अत्रापि प्रथमकाण्डयत् क्वचिदञ्कन तो फिर यह चुः प्रकारता विरुद्ध पड जावेगी तो इस इंका का उत्तर ऐसा हैं-कि यह प्रथम काण्ड की चतुः प्रकारता विरुद्ध नही पडेगी-क्यों कि प्रथम काण्ड क्वचित् स्थल पर पृथिवी बहुल है, क्वचित् स्थल पर उपल बहुल है, क्वचित् स्थल पर बज बहुल है और क्वचित् स्थल पर शर्करा बहुल है इन चार प्रकार से अतिरिक्त अङ्करत्न या स्फटिकादि से वह बहुल नहीं है इस कारण ये पृथिव्यादिरूप विभाग काण्ड के प्रथम मेदमें अपनी अपनी प्रचुरता के प्रदर्शक कही हैं-इसिलिधे काण्ड की संख्या इनसे नहीं यह सकती है 'मिडिझिमिल्छे णं भंते ! कंडे कइविहे पण्णत्ते' हे भद्नत ! मध्यमकाण्ड कितने प्रकार का कहा गया है ? तो इसके उत्तर में प्रसु कहते हैं-'गोयमा ! चउब्विहे पण्णत्ते' हे गौतम ! मध्यमकाण्ड चार प्रकार का कहा गया है-'तं जहा' जैसे 'अंके, फलिहे जायरूवे, रयए' अङ्गरत्नरूप, स्फटिकरूप, जातरूप रूप, और सुवर्णरूप इन भेदों से पही समझना चाहिये-कि प्रथम काण्ड की तरह यह काण्ड भी कहीं २ अङ्करत्न

अतुः प्रकारता विरुद्ध क्षेण शे. आ शंकाना उत्तर आ प्रमाणे छे है आ प्रथमकांडनी अतुः प्रकारता विरुद्ध क्षेणाशे निक्षः हैम है प्रथम कांड इविशत स्थणे पृथिवी अदुक्ष छे, क्षित् स्थणे उपका अदुक्ष छे अने इविशत स्थणे शर्करा अदुक्ष छे. स्थणे उपका अद्वा छे, क्षित्वा स्थणे वर्ष अदुक्ष छे अने इविशत स्थणे शर्करा अदुक्ष छे. ये यार प्रकारे सिवाय आंक, रतन है स्कृटिकाहिनी हिण्टिओ ते अदुक्ष नथी. येथी आ पृथिव्याहि इप विलाण क्षंडना नथी पण्ड क्षंडना प्रथम लेक्ष्मां पेत-पेतानी प्रश्चरताना प्रदर्श के छे. येथी क्षंडनी संज्या येमनाथी वथती नथी. 'मिन्सिमिल्ले णं ते! कंडे कह विहे पण्णत्ते' छे अहंत ! मध्यकंड हेटला प्रकारनी क्षेड्रवामां आवेश छे? ते येना अवालमां प्रभु केडे छे—'गोयमा! चडिवहे पण्णत्ते' छे औतम! मध्यम कांड यार प्रकारना क्षेड्रवामां आवेश छे. 'तं जहा, नेश है 'अंके, फल्लिहे जायह्वे, रयए' आंक रतन ३५, स्कृटिक ३५, अति सुवर्ण् ३५. येथे लेडेशी येअ समअव्यं केडिये के प्रथम क्षंडनी येभ

बहुलं क्वचित् स्कटिकवहुलं क्वचिक्जातरूपवहुलं क्वचिद्रजतबहुलिकि सावनीयम् । अथ
तृतीयं काण्डं वर्णियि धुवक्रमते - 'उवरिचले' उपरित्तं 'कंडे' काण्डं 'कइविहे' कितिविधं 'पण्णत्ते?' प्रज्ञप्तम् ?, 'गोयमा !' गौतम ! 'एनागारे' एका गरं - प्रकारान्तररहितं 'पण्णते' प्रज्ञप्तम्
एतदेव स्पष्टी करोति 'सञ्चलं पृण्यामण्' सर्वजाम् प्रत्ममं - सर्वामना जाम्ब्नद्मयं रक्तसुवर्णमयम् । अथ सन्दरकाण्डवयपरिमाणद्वारा मन्दरपरिमाणं वर्णियतुमुपक्रमते - 'मंदरम्सणं मंते !'
इत्यादि - मन्दरस्य मेरोः खल्ड अदन्त ! सम्बन्त ! 'पञ्चयस्त' पर्वत्तस्य 'हेहिल्ले' अधस्तनं 'कंडे' काण्डं 'केवइयं कियत् किम्परिमाणं 'चाइल्लेणं' वाहल्येन उच्चत्वेन 'पण्णत्ते ?'
प्रज्ञप्तम् ?, एतत्विश्वनस्योत्तरमाह - 'गोयमा !' गौतम ! 'एगं एकं 'जोयणराहरूलं' योजनसहस्रं 'बाहल्लेणं' बाहल्येन 'पण्णत्ते प्रक्राम् स्वत्रम् पंत्रक्षां स्वत्रम् पंत्रम स्वत्रम पंत्रम स्वत्रम स्वत्रम पंत्रम स्वत्रम काल्डं क्रिय् केडे केवइयं बाहल्लेणं पण्णते ?' एतच्छाया सा हि - 'मंदरस्स णं मंते ! मज्ञित्त्रले केडे केवइयं बाहल्लेणं पण्णते ?' एतच्छाया सा हि - 'मंदरस्स णं मंते ! मज्ञित्त्रले केडे केवइयं बाहल्लेणं पण्णते ?' एतच्छाया सा क्षित्रम स्वत्रम सा काल्डं क्रियद् बाहल्लेणं प्रज्ञत्वसमाह स्वाहं स्वत्रम स्वत्रम स्वत्रमाह स्वाहं योजनसहस्राणि

बहुल है कहीं २ स्फटिक मणिबहुल है कहीं २ रजत बहुल है और कहीं २ जात-रूप बहुल है 'उबरिरले कंडे कहिवहे पण्णत्ते' उपरितनकाण्ड हे भदन्त !कितने प्रकार का कहा गया है? इसके उत्तर में प्रसु कहते हैं—'गोधमा! एगागारे पण्णत्ते' हे गौतुम! उपरितन काण्ड एक ही प्रकार का कहा गथा है 'सद्वजंबु-णयामए' और सर्वात्मना जंबूनद्मय—रक्तसुवर्णमय है 'संदरस्स णं भंते! पद्वयस्स हेहिल्ले कंण्डे केवहयं बाहल्लेणं पण्णत्ते' हे भदन्त! मंदर पर्वत का जो अधस्तन काण्ड है उसका बाहल्य जंबाई—कितना कहा गया है? उत्तर में प्रसु कहते हैं—'गोधमा! एगं जोधणसहस्सं बाहल्लेणं पण्णत्ते' हे गौतम! अध-स्तन काण्ड की जंबाई एक हजार योजन की कही गई है 'मजिझमिल्ले कंडे पुच्छा' हे भदन्त! मध्यमकांड की जंबाई कितनी कही गई है इसके उत्तर में

शा शंड पण ह्यांश अयांश आंश रतन अड्स छे. ध्यांश-अयांश रश्टिश सिण अड्स छे. अयांश रथत अड्स छे अने श्यांश कात इप अड्स छे. 'उवित्तिलें कंडे कह विहे पण्णत्ते' है लहन्त! उपितन शंड हेटला प्रश्नरने। अडेवामां आवेस छे ! क्योना क्याणमां प्रभु अडे छे—'गोशमा एगागारे पण्णत्ते' है जीतम! उपितन शंड क्येश के प्रश्नरने। अडेवामां आवेस छे. 'सन्व जंब्णयामए' अने आ सर्वात्मना कं अनहमय-रश्त सुवर्ण मय छे. 'मंद्रस्त णं मंते! पन्वयस्स हेट्टिलें कंडे केवइयं बाहल्लेणं पण्णत्ते' है अहंत! मंहर पर्वतिने। को अध्यतन अंड छे, तेनुं आड्डिश—तेनी अवाध हेटली अडेवामां आवेली छे ! क्येना क्याणमां प्रभु अडे छे—'गोयमा! एगं जीयणसहस्सं बाहल्लेणं पण्णत्ते' है जीतम! अध्यतन शंडनी अवाध केश डेवामां आवेली छे. 'मिन्झिमिल्ले कंडे पुन्छा' है अहनत! भध्य शंडनी अवाध हेटली अडेवामां आवेली छे. 'मिन्झिमिल्ले कंडे पुन्छा' है अहनत!

'बाहल्लेणं' वाहरपेन उच्चत्वेन 'पण्णत्तं' प्रज्ञसम्, एतेन भद्रशाल्यनं नन्दनवनं संमिनसवनमन्तरद्वयं चैतानि सर्वाणि मन्द्रपर्वतस्य मध्यमकाण्डेऽन्तर्भवन्ति, ननु द्वितीयकाण्डिविभागस्य
समवायाङ्गस्यम्याष्टित्रियचमलमवायेऽष्टित्रियत्सहस्योजनोच्छित्तःवेन विणितत्याञ्चिष्टियोजनसहस्रोच्चत्वं कथं सङ्गच्छते ? इति चेत्, अत्रोच्यते—समवायाङ्गोक्तोच्चत्वस्य मतान्तरावलम्यनमूलकत्वात्प्रकृतोच्चत्वे न वाधकतेति । एवम् 'उविरिल्ले पुच्छा' उपित्तले काण्डे पृच्छाः
प्रश्नपद्धतिष्ट्वनीया, तत्प्रश्नोचरमाह-'गोयमा !' गौतम ! 'छत्तीसं' पदित्र्यतं 'जोयणसहस्साई' योजनसहवाणि 'वाहल्लेणं' वाहल्येन 'पण्णत्ते' प्रज्ञसम् 'एवामेव' एवमेव-पूर्वोक्तरित्येय 'सपुत्रावरेणं' सपूर्वपरेण-पूर्वेसंख्यानिहितापरसंख्यानेन सङ्गलितेन स्या 'मंदरे'
मन्दरः 'पञ्चप' पर्वतः 'एगं' एकं 'जोयणसयसहस्सं' योजनशतसहस्तं 'सन्त्रकोगं' सर्वाग्रेण
प्रभु कहते हैं 'गोयमा ! तेविद्धं जोयणसयसहस्सं' योजनशतसहस्तं 'सन्त्रकोगं' सर्वाग्रेण
प्रभु कहते हैं 'गोयमा ! तेविद्धं जोयणसयसहस्साइं बाह्ल्लेणं पण्णत्ते' हे गीतम !
मध्यम काण्ड की उत्चाई ६३ हजार योजन की कही गई है इस कथन से 'मद्रशाल्यन नन्दनवन, सोमनस्यन और दो अन्तर ये स्य मन्दर पर्वत के मध्यम
काण्ड में अन्तर्भृत हैं' यह बात समझनी चाहिये।

दांका-समबायाङ सूत्र के ३८ वें समवाय में इस दितीय काण्ड रूप विभाग को ३८ हजार योजन की ऊंचाई वाला कहा गया है फिर आपका यह ६३ हजार की ऊंचाई वाला कथन कैसे संगत हो सकता है ? तो इसका उत्तर ऐसा है कि वहां जो ऐसा कहा गया है वह मतान्तर की अपेक्षा से कहा गया है अतः वह कथन इस कथन का बाधक नहीं हो सकता 'उबिरेल्ले पुच्छा' हे भदन्त उपितन काण्ड की ऊंचाई कितनी कही गई है ? इसके उत्तर में प्रस कहते हैं - गोयमा ! छन्ति जोयणसहस्साई बाहल्लेणं पण्णत्ते' हे गौतम ! उपितनकाण्ड की ऊंचाई ३६ हजार योजन की कही गई है 'एवं मेव सपुच्यावरेणं मंदरे पृथ्वर

तेविहं जोयणसहस्साइं वाहर्लेणं पण्णत्ते' હે ગૌતમ! મધ્યમ કાંડની ઊંચાઇ ૬૩ હજર યાજન જેટલી કહેવામાં આવેલી છે. આ કથનથી ભદ્રશાલવન, નંદનવન, સૌમનસવન, અને બે અન્તર એ બધા મન્દર પર્વતના મધ્યકાંડમાં અન્તર્મૃત ઘઈ જાય છે.

शंक्ष-समवायांग स्त्रना उटमा समवायमां के द्वितीय कांउ इप विकाशने उट हुलर थे। अने केटबी शिंचाईवाणा कहेवामां आवेक्षा छे, तो पछी कहीं ६३ हुलर केटबी शिंचाईवाणा कहेवासों आवेक्षा छे, तो पछी कहीं ६३ हुलर केटबी शिंचाईवा के के अमा प्रमाणे केहेवामां आवेक्ष छे, ते मतान्तरनी अपेक्षाके कहेवामां आवेक्ष छे. केथी ते कथन आ कपननुं आधक नधी 'उनरिस्के पुच्छा' हे लहंत! अपिरतन कडनी श्रयाधि हेटबी कहेवामां आवी छे १ क्षेता अवाधमां प्रभु कहे छे—'गोयमा! छत्तीसं जोयणसहस्साई बाहरूकेणं पण्णत्ते' है शीतम! अपिरतन कंडनी श्रयाधि अपेक्षा एणात्ते' के भोतम! अपिरतन कंडनी श्रयाधि अर हुलर थे। अने केटबी कहेवामां आवेक्षा छे, 'एवामेव सपुन्त्रावरेणं मंदरे पन्त्रप एगं जोयणसहस्सं सन्त्रगेणं पण्णत्ते' आ

सर्वसंख्यया 'पण्यत्ते' प्रज्ञप्तः, ननु मेरुशिखरवर्तिनी चत्वारिंशचो जनप्रमाणा चूलिका मेरु प्रमाणमध्ये छतो नोका?, इति चेत् सत्यम्, श्रूयतां—मेरुशुङ्गस्थच्लिकायान्मेरुशेष्ठच्लात्वेना-स्वीकारान्मेरुप्रमाणमध्ये न कथनम् । लोकेऽपि पुरुषस्यो च्चत्वे परिमीयमाने शिरोवर्ति चिकुरनिकुरस्वं विहायव साद्धहस्तत्रयादिमानव्यवहारो दृश्यते, अन्यथा 'लम्बमानकेशपाश्च-परिमाणोपादाने' तावन्मानं न घटैतेति । इयं त्रिस्त्रत्रीसमानपद्धतिकतयैकत्रैव स्त्राङ्के समाङ्कि । स् ० ४१ ॥

अथ समयप्रसिद्धानि मन्दरस्य घोडशनामानि निर्देष्टुमुपक्रमते-'मंदरस्स णं भंते !' इत्यादि ।

म्लम्-मंदरस्स णं भंते ! पव्ययस्स कइ णामधेजा पण्णता ?, गोयमा ! सोलस णामधेजा पण्णता, तं जहा-मंदर १ मेरु २ मणोरम ३ सुदंसण ४ सयंपमे य ५ गिरिराया ६ । रयगोच्य ७ सिलोच्य ८ मज्झे लोगस्स ९ णामीय १० ॥१॥ अच्छे य ११ सुरियादते १२ सुरि-

एगं जोयणस्यसहस्सं शब्दागोणं पण्णले' इस तरह का कुल यह प्रमाण मंद्रर ५वी का १ लाख योजन का हो जाता है।

रांका-सेरकी चृतिका का प्रमाण जो ४० योजन का कहा गया है वह इस १ लाख योजन के प्रमाण में क्यों नहीं-परिगणित किया गया है ? तो इस शंका का उत्तर ऐसा है कि मेरकी चृतिका को मेर क्षेत्र की चृतारूप होने से अस्वीकार किया गया है, इस कारण उसे मेर के प्रमाण के बीच में परिगणित नहीं किया गया है लोक में भी ऐसा ही देखा जाता है कि जब पुरुष की ऊंचाई नापी जाती है तो उसमें शिरोवित वालों की उंचाई नहीं ली जाती है यदि ऐसा होने लगे तो फिर सार्द्धहस्तत्रयादिक्ष उचाई का प्रमाण व्यवहार अच्छिम हो जावेगा यह त्रिस्त्री समान पद्धतिवाली है अतः एक ही सूत्र के अड्ड से अड्डित की गई है ॥ ११॥

શંકા—મેરુની ચૂલિકાનું પ્રમાણ જે ૪૦ યાજન જેટલું કહેવામાં આવેલું છે તે આ ૧ લાખ યાજનના પ્રમાણમાં શા માટે પરિગણિત કરવામાં આવ્યું નથી. ? તો આ શંકાના જવાબ આ પ્રમાણે છે કે મેરુની ચૂલિકાને મેરુ ક્ષેત્રની ચૂલા રૂપ હોવા બદલ અસ્વીકૃત કરવામાં આવે છે. એથી મેરુના પ્રમાણમાં તેની ગણના કરવામાં આવી નથી. લાેકમાં પણ આ રીતે જ જોવા મળે છે કે જયારે પુરુષની ઊંચાઈ માપવામાં આવે છે તે તેમાં શિરાવર્તિ વાળાની ઊંચાઈની ગણના કરવામાં આવતી નથી. જો આવું થવા માંડે તા સાર્લ હસ્ત ત્રયાદિ રૂપ ઊંચાઇના પ્રમાણ રૂપ વ્યવહાર કચ્છિનન જ થઈ જશે. એ ત્રિસ્ત્રી સમાન પહિત વાળી છે, એથી એક જ સ્ત્રના અંકથી અંકિત કરવામાં આવેલી છે. ા ૪૧ ા

પ્રમાણે આ મંદર પર્વતનું કુલ પ્રમાણ એક લાખ યાજન જેટલું થઈ જાય છે.

यावरणे १३ तिया । उत्तमे १४ अ दिसादीय १५ वर्डेसेति १६ य सीलसे ॥२॥ से केगट्टेणं भंते ! एवं वृच्चइ मंदरे पठत्रए २ ? गोयमा ! मंदरे पठवए मंदरे णामं देवे परिवसइ महिद्धीए जाव पलिओवमट्टिइए, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं वृच्चइ मंदरे पठत्रए २ अदुत्तरं तं चेवत्ति ॥सू० ४२॥

छाया-मन्दरस्य एउछ भदन्त ! पर्वतस्य कित नामधेयानि प्रज्ञप्तानि ?, गौतम ! षोडश्च नामधेयानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-मन्दरः १ मेरुः २ मनोरमः ३ सुदर्शनः ४ स्वयम्प्रभश्च ५ गिरिराजः ६ । रत्नोच्यः ७ शिछोच्चयः ८ मध्यलोकस्य ९ नाभिश्च १० ॥१॥ अच्छश्च ११ स्वर्थवर्तः १२ स्वर्थवरणः १३ इति च । उत्तमः १४ च दिनादिश्च १५ अवतंस इति १६ च पोडश्च ॥२॥ अध केनार्थेण भदन्त ! एवसुच्यते-मन्दरः पर्वतः २१, गौतम ! मन्दरे पर्वते मन्दरो नाम देशः परिवसित सहर्द्धिको यावत् पर्योपमिश्यितिकः, स तेनार्थेन गौतम ! एवसुच्यते-मन्दरः पर्वतः २ अदुत्तरं तदेवेति । स० ४२॥

टीका-'मंदरस्य णं संते !' इत्यादि सन्दरस्य खल भदन्त ! भगवन् ! पर्वतस्य 'कइ' कित-कियन्ति 'णामवेज्ञा' नामधेयाजि-नामानि 'पण्णत्ता ?' प्रज्ञप्तानि ?, इति प्रश्नस्योत्तर-माह-'रोजमा !' भो गीतम ! 'सोलस' पोडश 'णामवेज्ञा' नामवेयानि 'पण्णता' प्रज्ञप्तानि 'तं जहा' तद्यथा-मन्दरेत्यादि श्लोकद्वयम्, मन्दरस्य पोडशनामस्चकम्, तत्र 'मंदर' मन्दरः,

मन्दर ५र्वत के समय प्रसिद्ध १६ नामान्तर-

'मंदरस्स णं भंते ! पव्वयस्स कहःनामधेजा पण्णत्या' इत्यादि ।

टीकार्थ-'भंते' हे भदन्त! 'मन्दरस्स णं पट्वयस्स कह नामधेला पण्णत्ता' मन्दर पर्वत के कितने नाम कहे गये हैं ? 'गोयमा! सोल सणामधेला पण्णत्ता' हे गौतम! मन्दर पर्वत के १६ नाम कहे गये हैं 'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं-'मन्दर १ मेर २, मणोरम ३, छदंशण ४, सबंपभेय ५ गिरिराया ६ रयणोच्चय ७, सिलोच्चय ८, मज्झे लोगस्स ९ णाभी य १० ॥१॥ मूल में प्राकृत होने से मन्दर पद में

भन्हर पर्वतना सभय प्रसिद्ध १६ नाभान्तरे।

'मंदरस्स णं भंते! पव्वयस्स कइ नामधेज्जा पण्णत्ता' इत्यादि

टीडार्थ-'मंते!' छे लाढं त! 'मंद्रस्स जं पट्ययस्स कइ सामघेडजा पण्णत्ता' संहर पर्यतना केटला नामि छेडिवामां आनेला छे? 'गोलमा! सोलस णामघेडजा पण्णत्ता' छे जीतम! भंडर पर्यतना १६ नामि छंडिवामां आवेला छे. 'तं जहा, ते नामि आ प्रमाणे छे-मन्दर १, मेरु २, मणोरम ३, सुदंसण ४, सर्यपमेय ५, गिरिराया ६, रयणोच्चय ७' सिलोच्चय ८, मच्हो लोगस्स ९, णामीय १०, ॥ १ ॥ भूणमां प्राकृत छावाची मंहर पहमां विलक्षित है। यथेले छे. अथवा मन्दरथी मांडीने स्वयंप्रल सुधीना शण्डामां समाहारहं है समास थेले छे. अथवा मन्दरथी मांडीने स्वयंप्रल सुधीना शण्डामां समाहारहं है समास थेले छे. अथी ४ 'मन्दर मेरु मनोरम सुदर्शन स्वयम्प्रम' आ ओड वयनान्त पह

मुळे प्राकृतलाद्विभक्तिलोपः, यद्वा मन्दरादि स्वयंप्रभान्तानां समाहारद्वन्द्वः, अस्पिन् पक्षे मन्दरमे इमनोरम सुद्रीन स्वयम्प्रभमिति समस्तमे कवचनान्तं पदम्, तत्र मन्द्रेति नामधेय-कारणं स्वयमेव स्वत्रहतांग्रे 'मंदरे पन्त्रण मन्दरे णामं देवे परिवसइ' इति वक्ष्यते, इति शीव्रजिज्ञासायां मन्द्रनामकदेवाधिष्ठितत्वान्मन्द्रेति नाम बोध्यम् १ द्वितीयं नामाइ-'मेरु' मेरुः एतन्नामकारणमपि मेरुनामकदेव परिवास एव बोध्यम्, ननु एकस्यैव मन्दरस्य नामा-न्तरसत्त्वेन मन्दरस्यैव मेरु द्विंतीयो देवः स्यादिति चेत्-श्रूयतां मन्दरनामान्तरबहेवस्य नामन्तराङ्गीकार इति न देवान्तरम्, अत्र निर्णयो बहुश्रुतगम्य इति २, तृतीयं नामाह-'मणोरम' मनौरम:-रमयतीति रमः मनसां-देवानां चेतसां रमी मनोरम:-अतिरमणीयकेन देवमनोरञ्जकः ३, चतुर्थं नामाह-'सुदंसण' सुदर्शनः सु शोभनं जाम्बूनदमयत्वेन रतनबहुळ-विभक्ति का लोप हो गया है अथवा मन्दर से छेकर स्वयंप्रभा तक के शब्दों में समाहार वन्द्र समास हुआ है इसी कारण-''मन्दर मेरु मनोरम सुदर्शन स्वयम्ब्रभ" यह एक वचनात्त पद बन गया है। मन्द्र यह प्रथम नाम है, मेरु यह दूसरा नाम है, मनोरम यह तृतीय नाम है, सु होन यह चतुर्थ नाम है, स्वयं प्रभ यह पांचवां नाम है, गिरिराज यह छठा नाम है, रत्नोच्चय सातवां नाम है, क्षिलोच्चय यह ८ वां नाम है, मध्यलोक यह ९ वां नाम है, और नाभि यह १० वां नाम है। मन्दर नामक देव से यह अधिष्ठित है इस कारण इसका नाम मन्दर ऐसा हो गया है, मेरु नामक देव केपरिवास से मेरु ऐसाबितीय नाम इसका हो गया है, जैसा मन्दर यह एक नाम है और मेरु यह इसीका दूसरा नाम है इसी प्रकार से देवका भी एक नाम मंदर है और दूसरा नाम मेरु है अतः यहां इस नाम में नामान्तर की कल्पना से जितीय देवका सङ्गाव नहीं मानना चाहिये अथवा इस सम्बन्ध में निर्णय बहुश्रुतगम्य है। यह पर्वत बहुत ही रमणीय है-देवों के मन को हरण करने वाला है इस कारण इसका तृतीय नाम मनोरम ऐसा कहा गया है यह पर्वत जाम्बूनद मय कहा गया है तथा रत्नयहुल प्रकट किया गया है अतः

સિદ્ધ થયેલ છે. મન્દર એ પહેલું નામ છે. મેરુ આ બીજું નામ છે. મનારમ આ ત્રીજું નામ છે. સુકર્શન આ ચાલું નામ છે. સ્વયંપ્રભ એ પાંચમું નામ છે. ગિરિરાજ એ ઇટ્ડું નામ છે. રત્ના વ્યય એ સાતમું નામ છે. શિલાવ્યય આ આડમું નામ છે. મધ્યક્ષેષ્ઠ આ નવમું નામ છે અને નાભિ આ દશમું નામ છે મન્દર નામક દેવથી આ અધિષ્ઠિત છે. એથી જ આતું નામ મૃન્દર એરીતે પ્રસિદ્ધ થયું છે. જેમ મન્દર આ એક નામ છે એવું જ મેરુ આ એનું બીજાં નામ છે. આ પ્રમાણે દેવનું પણ એક નામ મન્દર છે. અને બીજાં નામ મેરું છે. એથી અહીં એ નામમાં નામાન્તરની કલ્પનાથી બીજા દેવના સદ્ભાવ માનવા જોઇએ નહિ. અથવા આ સંબંધમાં નિર્ણય બહુશુા ગમ્ય છે. આ પર્વત અતીવ રમણીય છે. દેવાના મનને આકૃષ્ટ કરનાર છે. એથી આતું ત્રીજું નામ મનારમ એવું

त्वेन च सनः प्रसादकं दर्शनं वीक्षणं यस्य स तथा ४, पश्चमं नामाह-'स्यंपभे' स्वयंप्रभःस्वयम् आत्मना सूर्यादिप्रकाशनिरपेक्षतया प्रभाति प्रकाशत इति स्वयम्प्रभः 'य' च, चशब्दः
सम्बच्चयार्थकः ५, पष्टं नामाह-'गिरिराया' गिरिराजः-गिरीणां पर्वतानां राजा इतिगिरिराजः,
तस्त्रं चोच्चत्वेन जिनजन्मोत्सवाभिषेकशिलाश्रयत्वेन च बोध्यम् ६, सप्तमं नामाह-'र्यणोच्चय' रत्नोच्चयः-रत्नानि अङ्कादीनि बहुविधानि उच्चीयन्ते-उत्कर्षणोपचीयन्तेऽत्रेति
रत्नोच्चयः ७, अष्टमं नामाह-'सिलोच्चय' शिलोच्चयः-शिलाः पाण्डुशिलादयः उच्चीयनते-शिखरे समह्रियन्तेऽत्रेति शिलोच्चयः, यद्वा शिलामिहच्चीयत इति शिलोच्चयः ८,
नदमं नामाह-'मङ्गे लोगस्स' मध्यो लोकस्य-लोकस्य-अवनस्य मध्यः सर्वलोकमध्यस्थलत्वात्, ननु अत्र लोकशब्देन चर्नुदेशरज्जलक्षणो लोको व्याख्यातुप्रचितः, धर्मादिलोकमध्यं-

मनः प्रसादक इसका दर्शन होने से इसका चतुर्व नाम सुद्र्शन ऐसा कहा गया है सूर्यादिक के प्रकाश की आवश्यकता यह अपने प्रकाशित करने में नहीं रखता है –िकन्तु यह स्वयं ही प्रकाशित होता रहता है इस कारण इसे 'स्वयंप्रकाश' इस नामान्तर वाच्य कहा गया है जिन जन्मोत्सव जिस पर होता है ऐसी शिला का आधार होने से तथा यह अपनी अवाई में सब पर्वतों का शिर्मोर है इस कारण से इसे पर्वतों का राजा मान लिया गया है अतः इसका नाम गिरिराज कहा गया है इस में अङ्क आदि अनेक प्रकार के रहन उत्यन्न होते रहते हैं या उनका हगला वहां पड़ा रहता है इस कारण रत्नोच्चय ऐसा इसका सातवां नामान्तर कहा गया है पांडुकशिला आदि के उपर भी इसका सद्भाव रहता है इसकारण इसका नाम शिलोच्चय कहा गया है समस्त लोक के मध्य का यह एक स्थलभूत है इस कारण इसे मध्यलोक नाम से अभिहित किया गया है

કહેવામાં આવેલું છે. આ પર્વત જમ્છુનદમય કહેવામાં અવેલા છે તથા રતન ખહુલ પ્રગટ કરવામાં આવેલા છે. એથી મના પ્રસાદક એનું દર્શન હાવા ખદલ એનું ચાલું નામ સુદર્શન એવું કહેવામાં આવેલું છે. પ્રકાશિત થવા માટે આને સ્વાદિકના પ્રકાશની આવશ્યકતા રહેતી નથી પરંતુ આ પેતી જ પ્રકાશિત હાય છે એ કારણથી આને 'સ્વયંપ્રકાશ' એ નામાન્તરથી સંખાધિત કરવામાં આવેલ છે. જિન જન્માત્સવ જેની ઉપર થાય છે એવી શિલાના એ આપર હાવાથી તથા એ પોતાની ઊ ચાઈમાં બધા પર્વતાના શિરામણ છે. એથી આને પર્યતાના શિરામણ છે. એથી આને પર્યતાના રહેલાથી તથા એ પોતાની ઊ ચાઈમાં બધા પર્વતાના શિરામણ છે. એથી આને પર્યતાના સંત્રના સત્રના આવેલ છે. એમાં અંક વળેરે અનેક પ્રકારના રતના ઉત્પન્ન થતાં રહે છે અથવા એ રતનાના હગલા ત્યાં પડી રહે છે. એ કારણથી રતના અચ્ચ આનું સાતમું નામાન્તર છે. પાંડુક શિલા વગેરેની ઉપર પણ આના સદ્ભાવ રહે છે એથી એનું નામ શિલાચ્ચય કહેવામાં આવેલું છે. સમસ્ત લોકના મધ્ય ભાગના એ સ્થલભૂત છે. એથી આને મધ્યલાક એવા નામથી અભિહિત કરવામાં આવેલ છે. એટલે કે સમસ્ત લોકના મધ્યમાં આ પર્વત આવેલા છે.

धर्मादीनां-धर्मा-प्रथमनरकभूमिः साऽऽदिर्धासां ता धर्माद्यः तासां लोकमध्यम् 'योजना-संख्यकोटिभिः-योजनानामसंख्याताभिः कोटिभिः अतिक्रान्ताभिः सद्धिर्भयति' इत्यर्थकात् 'धर्माइं लोगमञ्जं जोयण असंखकोडीहिं' इति वचनात्, परन्तु सोथीं मेरौ न घटते, यदि च लोकशब्देन अष्टादश्यक्षयोजनप्रमाणोच्चत्व स्तियेग्लोको गृह्येत तथापि तस्य चतुर्दशर-ज्ञावेतान्तर्भातात्पृथगायासो विफलः स्यात्, ततो मेरुः कथं लोकमध्यवर्तति चेत् श्रूयताम्— अत्र लोकशब्देन तिर्यग्लोके तिर्यग्भागस्य स्थालाकारैकरञ्जुप्रमाणायामविष्करम्भस्य स्वीकारो-ऽस्ति तस्यैव मध्यः-मध्यवर्ती मेरुरिति सर्वमबदातम् ९, दममं नामाह—'णानी य' नामिश्र— अर्थात् समस्त लोक के घष्य में यह पर्वत बतलाया गया है इससे इसे लोक मध्य ऐसा कह दिया गया है।

रांका-लोक शब्द से यहां १४ राज् प्रमाण लोक व्याख्यातव्य होना चाहिये क्योंकि "धम्माइ लोकमज्झं जोयण अरसंखकोडीहिं" एसा अन्यत्र कहा गया है सो इस लोक का मध्य तो इस सम्भूतल से रत्नप्रभा पृथिवी से असंख्यात धोजन कोटियां जब अतिकान्त हो जाती हैं तब आता है ऐसे उस मध्य में सुमेर का सद्भाव तो कहा नहीं गया है, अतः लोक मध्यस्य से इसका नामान्तर कथन बाधित होता है यदि कहा जावे कि यहां लोक शब्द से तिर्युग्लोक गृहीत हुआ है-सो यह तिर्युग्लोक १८ हजार योजन का जंबा कहा गया है-ऐसे इस निर्थुग्लोक का अन्तर्भाव तो इस १४ राज् प्रमाणलोक में ही हो जाता है फिर इसकी अपेक्षा लेकर लोक मध्य की कल्पना बरना विफल ही है अतः मेरु में नामान्तर करने के लिये "लोकमध्य" नामकी सफल्या कसे हो सकती है ? सो किसीकी ऐसी यह शहु है अतः उसके समाधान निमित्त कहा जाता है कि लोक शब्द से यहां स्थल के आकार भूत तथा खिथी आने 'क्षीक्रध्य' खेवा नामधी अलिकित हरवामां आवेश हो.

શંકા-લાક શખ્દથી અહીં ૧૪ રાજૂ પ્રમાણ લાક ત્યાપ્યાતત્મ હાવા જોઇએ. કેમકે 'વમ્માइ लोकमज्झे जोयण अस्तंस्वकोडी हिं' એવું જે અન્ય સ્થળે કહેવામાં આવેલું છે તો આ લાકના મધ્ય ભાગ તો આ સમ ભૂતળથી રત્નપ્રમા પૃથિવીથી આગળ અસંખ્યાત યાજન કાટીઓ જય રે અતિકાન્ત થઈ જાય છે ત્યારે આવે છે, એવા તે મધ્યભાગમાં સુમેરના સદ્ભાવ તા કહેવામાં આવેલા નથી, એથી લાક મધ્ય રૂપથી એતું નામાન્તર કથન બાધિત થાય છે. જો કહેવાનાં આવે કે અહીં લાક શખ્દથી તિર્ધ ખેતા ખુતીત થયા છે. તા આ તિર્ધ ખેતા જેટલા હૈયા કહેવામાં આવેલા છે. જો મહાના આવે કે અહીં લાક શખ્દથી તિર્ધ ખેતા છે એવા આ તિર્ધ ખેતા મા તિર્ધ ખેતા કરવા આ ૧૪ ચીદ ર જૂપ્રમાણ લાકમાં જ થઇ જાય છે. તા પછી એની અપેક્ષાએ લાક મધ્યની કલ્પના કરવી ત્યર્ધ જ છે. એથી મેરુમાં નામાન્તર કરવા માટે ''હોકમધ્ય" નામની સફલતા કેવી રીતે સંભવી શકે તેમ છે? આમ કાઇ શ'કા ઉઠાવી શકે. એથી આ શ'કાના

छोकस्य नामिरित्यर्थः लोकस्येत्यस्य देवलीदीयन्यायेन पूर्वापरपदार्थाभ्यामन्वयात्, च समुः च्चयार्थकः १०, एकादशं नामाइ—'अच्छे य' अच्छश्च निर्मलश्च जाम्बुनद्रत्तवहुलत्वात् ११, द्वादशं नामाह—'स्रियावत्ते' स्पावर्त्तः—स्प्येपदम् उपलक्षणाच्चन्द्रादिज्योतिषाम् प ग्रादकं तेन स्प्येश्वन्द्रादि भिश्चावृत्यते प्रदक्षिणीक्रियमाण इत्यर्थः १२, अयोदशं नामाह—'स्रियावर्णे' सूर्यावर्रणः सूर्येः—चन्द्रग्रहनक्षत्रादिभिश्चेत्यर्थः, सूर्यपदस्योपलक्षणत्वात्, आत्रियते वेष्ट्यत इति स्पावर्णः सूर्योदवेष्टचमानः, अत्र बाहुलकात् कर्मणि लयुद् प्रत्ययो बोध्यः १३, 'इतिय' इति च—इति शब्दः समाप्तौ स च प्रकृते नाम समाप्तौ बोध्यः, चः प्राग्वत्, चर्दशं नामाह—'उत्तमे' उत्तमः पर्वतेषु श्रेष्ठः सकल्चनाम समाप्तौ बोध्यः, चः प्राग्वत्, चर्दशं नामाह—'उत्तमे' उत्तमः पर्वतेषु श्रेष्ठः सकल्चनाम समाप्तौ बोध्यः, चः प्राग्वत्, चर्दशं नामाह—'उत्तमे' उत्तमः पर्वतेषु श्रेष्ठः सकल्चनाम समाप्तौ बोध्यः, चः प्राग्वत्, चर्दशं नामाह—'उत्तमे' उत्तमः पर्वतेषु श्रेष्ठः सकल्चनाम समाप्तौ बोध्यः, चः प्राग्वत्, चर्दशं नामाह—'उत्तमे' उत्तमः पर्वतेषु श्रेष्ठः सकल्चनाम समाप्तौ बोध्यः, चः प्राग्वत्, चर्दशं नामाह—'उत्तमे' उत्तमः पर्वतेषु श्रेष्ठः सकल्चनाम समाप्तौ बोध्यः, चः प्राग्वत्, चर्दशं नामाह—'उत्तमे' उत्तमः पर्वतेषु श्रेष्ठः सकल्चनाम समाप्तौ स्वर्पेष्ठः सकल्चनाम समाप्तौ स्वर्पेष्ठः सकल्चनाम समाप्तौ स्वर्पेष्ठः समाप्तौ स्वर्पेष्ठः सकल्चनाम समाप्तौ स्वर्पेष्ठेष्ठः सकल्चनाम समाप्तौ स्वर्पेष्ठः समाप्तौ सम्बर्पेष्ठः समाप्तौ स्वर्पेष्ठः समाप्तौ स्वर्पेष्ठः समाप्तौ स्वर्पेष्ठः समाप्तौ स्वर्पेष्ठः समाप्तौ स्वर्पेष्ठः समाप्तौ समाप्तौ समाप्तौ समाप्तौ समाप्तौ समाप्तौ स्वर्पेष्ठः समाप्तौ समाप्य

१ राज् प्रमाण आयाम विष्कम्भ वाला तिर्घग्लोक संबन्धी तिर्धग्माव विवक्षित हुआ है ऐसे लोक के मध्य में यह सुधेक पर्वत स्थित है इस कारण इसे लोकमध्यवर्ती कहा गया है दशवां नाम इसका लोकनाभि है लोक शब्द यह देहली दीपकन्याय से लोक और अलोक के साथ संबंधित हो जाता है इस तरह लोक और अलोक का यह मध्यवर्ती है अतः लोकनाभि" ऐसा इसका नाम दशवां कहा गया हैं 'अच्छेय ११ स्रियावक्त, १२ स्रिआवरणे १३ ति अ। उक्तमे १४ अ दिसादीअ १५ वडेंसेति १६ अ सोलसे ॥२॥ अच्छ निर्मल यह इसका ११ वां नाम है क्यों कि यह जाम्बूनद और रस्न बहुल है इस कारण इसका ऐसा नाम रखा गया है। स्र्यावक्त यह इसका १२ वां नाम है क्यों कि इसकी स्र्यं और उपलक्षण से ग्रहीत चन्द्रादिक प्रदक्षिणा किया करते हैं। स्र्यां वरण यह इसका १३ वां नाम है क्यों कि इसकी स्र्यं और उपलक्षण से ग्रहीत चन्द्रादिक प्रदक्षिणा किया करते हैं। स्र्यां वरण यह इसका १३ वां नाम है क्यों कि इसे स्र्यं और चन्द्र आदि परिवेदित किये रहते हैं यहां ''वाहुलकात्" स्रुत्र से कर्म में ल्युट प्रत्यय हुआ है ''उक्तम''

સમાધાનમાં કહી શકાય કે અહીં લેક શખ્દથી સ્થળના આકારમૂત તથા ૧ રાજૂ પ્રમાણુ આપામ-વિષ્કં લાળો તિર્યં એક સંખંધી તિર્યં અભાવ વિવિક્ષત થયેલા છે. એવા લાકના મધ્યમાં આ સુમેરુ પર્વત અવસ્થિત છે. એવી આ પર્વતને લાક મધ્યવતી કહેવામાં આવેલા છે. એવા પર્વતનું દશમું નામ લાકનાિલ છે. લાક શખ્ક અહીં, 'વે हलो-दीपक न्याय' થી લાક અને અલાક બન્નેથી સંબંધિત થઈ જાય છે. આ પ્રમાણે આ લાક અને અલાકના મધ્યવતી સ્થાને આવેલા છે. એથી જ 'लोकनािम' એવું આનું દશમું નામ કહેવામાં આવેલું છે. 'અચ્છેચ ૧૧, સૃરિયાવત્તે ૧૨, મૃરિયાવર્ષો ૧૩, તિ લા उत्तम ૧૪ લ દિસાદ લ ૧૫, વહેં સેતિ ૧૬ લ સોલ્સે ા ૨ ા ' અચ્છ-નિર્મળ, એ એનું અગિયાદમું નામ છે. કેમ છે આ જમ્લુનદ રત્ન બહુલ છે. એથી આનું એવું નામ પ્રસિદ્ધ થયું છે. સૂર્યાવર્તા એ એનું બારમું નામ છે, કેમ એનાં લ્યુન્ મામ છે, કેમ એનાં ભારમું નામ છે, કેમ એનાં ભારમું નામ છે, કેમ એનાં ભારમું નામ છે, કેમ એનાં સાર્ય અને ચન્દ્ર વગેરે પત્વિબ્લિ કરીને રહે છે. અહીં 'વાદુલકત્' સ્ત્રપી કર્મમાં લ્યુન્ પ્રત્યય થયેલા છે. 'ઉત્તમ, આ એનું ૧૪મું નામ છે. એનાં કારણ આ પ્રમાણે છે કે બીજા જેટલા પર્વતા છે તેમની

गिरितोऽष्यधिकतुङ्गतात् 'य' च-चशब्दः प्राग्वत् १४, पश्चदशं नामाह-'दिगादी य' दिगादिः च-दिशां-पूर्वादीनाम् आदिः प्रभवः उत्पत्तिस्थानम्, तथाहि-हचकपर्वताद् दिशां विदिशां चोत्पत्तिः, हचकस्याष्टप्रदेशात्मकस्य मेहपर्वतान्तर्गतत्वादुचकथन्मेरुपि प्राधान्येन दिगादिहच्यते १५, षोडशं नःमाह-'वडेंसे' अवतंसः पर्वतानां मुकुटायमानः प्रधानत्वात् १६, 'य सोछसे' च पोडश चशब्दः प्राग्वत् इति षोडशसंख्यकानि मन्दरनामानि कश्चितु षोडशः-षोडशानां पूरण इत्याह ।

अथ पूर्वीक्तस्य मन्दरेति प्रधाननाम्नोऽन्त्रर्थतां वर्णियतुमुपक्रमते 'से केणहेणं भंते !' इत्यादि—चतुर्थसूत्रोक्तपद्मवरवेदिकावद् बोध्यम् तत्र स्त्रीत्वेन निर्देशः अत्र पुंस्त्वेनेति विशेषः, तथा-पद्मवरवेदिकानाम तत्र, अत्र तु मन्दरेति नाम अन्यत्सर्व समानमिति ॥सूँ० ४२॥

यह इसका १४ वां नाम है इसका कारण यह है कि यह अन्य जितने भी पर्वत है उनकी अपेक्षा बहुत ऊंचा है अतः उनमें यह श्रेष्ठ गिना गया है दिगादि यह इसका १५ वां नाम है क्यों की पूर्वादि दिशाओं की उत्पक्ति का यही आदि कारण है रुचक से दिशाओं की और विदिशाओं की उत्पक्ति होती है यह रुचक अध्य प्रदेशात्मक होता है और मेरु के अन्तर्गत माना गया हैं अतः मेरु से दिशाओं की उत्पक्ति होती है ऐसा मानित्या जाता है और इसी से मेरु को दिशाओं की उत्पक्ति होती है ऐसा मानित्या जाता है और इसी से मेरु को दिशाओं की उत्पक्ति होती है ऐसा मानित्या जाता है और इसी से मेरु को दिशादि कह दिया गया है। अवतंस यह इसका १६ वां नाम है अवतंस नाम सकुट का है समस्त पर्वतों के बीच में यह मुकुट के जैसा गिना गया है इस प्रकार से ये मेरु के १६ नाम हैं।

'से केणहे णं भंते! बुच्चइ मंदरे पब्बए' हे भदन्त! इसका मन्दर पर्वत ऐसा नाम आपने किस कारण से कहा है इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं 'गोयमा? मंदरे पब्बए मंदरे णामं देवे परिवसइ महिद्धीए जाव पिछओवमिट्टइए, से तेण-

અપેક્ષાએ અતીવ ઊંચા છે, એથી તે સર્વમાં આ પર્વત શ્રેષ્ઠ ગહુવામાં આવે છે. 'દિગાદિ' આ પ્રમાણેનું આ પર્વતનું પંદરમું નામ છે. કેમકે પૂર્વાદ દિશાઓનો ઉત્પત્તિનું એજ આદિ કરેલું છે. રુચકથી દિશાઓની અને વિદિશાઓની ઉત્પત્તિ થાય છે. આ રુચક અલ્ડ પ્રદેશાત્મક હોય છે, અને મેરુની અંદર એની ગહુના થાય છે. એથી મેરૂથી દિશાઓની ઉત્પત્તિ થાય છે. એવું માની લેવામાં આવે છે અને એથી જ મેરુને દિગાદિ કહેવામાં આવેલ છે. 'અવતંસ' આ એનું સાળમું નામ છે. અવતંસ મુક્ડનું નામ છે. સમસ્ત પર્વતાના મધ્ય સ્થાનમાં આને મુક્ડ જેવા માનવામાં આવેલ છે, એથી જ આને અવતંસના રૂપમાં નામાન્તરથી સંબોધિત કરવામાં આવેલ છે. આ પ્રમાણે આ મેરુના ૧૬ નામા થયા.

'से केणहुंणं मंते! एवं बुच्चइ मंदरे पटबए' & लहंत! आ पर्वतनुं भन्हर खेतुं नाम आपश्रीओ शा कारख्थी कहुं छे? ओना कवालमां प्रक्ष के छे-'गोयमा! मंदरे पळाए णामं देवे परिवसइ महिद्धीए जाव पिछओवमद्रिए, से तेणहुंणं गोयमा! एवं बुच्चइ मंदरे पूर्व महाविदेहा वर्णिता इदानीं महाविदेहक्षेत्रतः परतः स्थितं नीलवन्नामकवर्षधरपर्वतं वर्णियतुम्रपक्रमते—'किह्न णं भंते !' इत्यादि ।

पण्णते १, गोयमा ! महाविदेहस्स वासस्स उत्तरेणं स्ममगवासस्स दिखणेणं पुरित्थिमिरळळवणसमुद्दस्स पद्धित्थिमेणं पद्धित्मिरळळवणसमुद्दस्स पद्धित्थिमेणं पद्धित्मिरळळवणसमुद्दस्स पद्धित्थिमेणं पद्धित्मिरळळवणसमुद्दस्स पद्धित्थिणं पद्धित्मेणं पत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे णीळवंते णामं वासहरपःवप् पण्णत्ते पाईणपडीणायप् उदीणदाहिणवित्थिण्णे णिसहवत्तव्वया णीळवंतस्स भाणियव्वा, णवरं जीवा दाहिणेणं धणु उत्तरेणं पत्थ णं केसरि-दहो, दाहिणेणं सीया महाणई पवृद्धा सभाणी उत्तरकुरुं एउजेमाणी श्वमाप्यव्वप् णीळवंत उत्तरकुरुवंदेरावयमाळवंतदहे य दुद्धा विभयमाणीर चउरासीप् सळिळासहस्सेहिं आपूरेमाणीर भद्दा प्रत्यात्विमुही आवत्ता समाणी अहे माळवंतवक्खारपव्वयं दाळइत्ता संदरस्स पव्वयस्स पुरिथमेणं पुव्वविदेहवासं दुद्धा विभयमाणी र एगमेण्यात्रे प्रत्येमेणं पुव्वविदेहवासं दुद्धा विभयमाणी र एगमेण्यात्रे चक्कविद्विजयाओ अट्ठावीसाप्र सळिळासहस्सेहिं आपूरेमाणी र पंचिहं सळिळासहस्सेहिं समग्गा

हेणं गोधमा! एवं युच्चइ मंदरे पट्यए २ अदुत्तरं तंचेवित्तं हे गीतम! मन्दर पर्वत पर मन्दर नामका देव रहता है यह महिद्धिक आदि विशेषणों वाला है तथा एक पल्योपम की इसकी स्थिति है अतः इसका नाम मन्दर पर्वत ऐसा कहा है अथवा इसका ऐसा यह नाम अवादि निधा है अतकाल में यह ऐसा ही था वर्तमान में भो यह ऐसा ही है और आगे भी यह ऐता ही रहेगा विशेष रूप से जानने के लिये चतुर्थ सुत्रोक्त पद्मवर वेदिहा के वर्णन को देश वहां जितने विशेषण कहे गये हैं उन्हें यहां पुलिङ में परिवर्तित कर लगा केना वाहिए॥४२॥

पव्यए २ अदुत्तरं तं चेवित्ति' है जौतम! मन्दर पर्वत उपर मन्दर नाम देव रहे छे. ते महिदिं व वेरे विशेषहो। वाणा छे. तथा ओह पर्यापम केट्सी जेनी स्थिति छे. ओथी आनुं नाम मन्दर पर्वत ओवुं हहिवामां आवेद्धं छे. अधवा आनुं आवुं नाम अनादि निष्पन्त छे. लूतहाणमां आ नाम अदुं अ हतुं, वर्तमानकां पह आ नाम बिवुं अ छे अने लिविष्यमां पह आ नाम अदुं अ रहेशे. विशेष ३५मां लाह्या माटे यतुर्ध सूत्रीहत पदावर वेदिहाना वर्धनिने वांची देवुं केछेंगे. त्यां केट्सा विशेषहो। हहिवामां आवेदा छे, तेमने अहीं पुक्षिणमां पिवर्तित हवीने सजादवा केछेंगे. ॥ ४२ ॥

अहे विजयस्स दारस्स जगइं दालियता पुरित्यमेणं लवणसमुद्दं समपेइ, अवसिन्धं तं चेवित । एवं णारिकंता वि उत्तराभिमुही णेयव्वा
णवरिमसं णाणतं गंधावइव्हवेयलप्रव्ययं जोयणेणं असंपत्ता पञ्चत्थाभिमुही आवत्ता समाणी अवसिन्धं तं चेव पयहे य मुहे य जहा हरिकंता
सिलिला इति । जीलवंते णं भंते । वासहर्व्वयय कइ कूडा पण्णता १,
गोयमा ! णय कूडा पण्णता, तं जहा—सिद्धाययणकूडे०, सिन्धेर णीले२
पुट्वविदेहे२ सीया यथ कित्तिप णारी यह । अदरविदेहे७ रम्मगकूडे८
उपदंसणे चेव ९ ॥१॥ सब्वे एए कूडा पंचसङ्या रायहाणीउ उत्तरेणं।
से केणहुणं भंते ! एवं वुच्चइ—णीलवंते वासहरप्य्वए १२ गोयमा ! णीले
णीलोभासे णीलवंते जाव णिच्चेति । सू० ४३॥

छाया-का खलु भदन्त ! जम्बुढीपे द्वीपे नीलवान नाम वर्षवर्पर्वतः प्रज्ञप्तः ?, गौतम् ! महाविदेहस्य वर्षस्य उत्तरेण रम्यकवर्षस्य दक्षिणेन पौरस्त्यलवणसमुद्रस्य पश्चिमेन पश्चिमः ळवणसमुद्रस्य पौरूस्त्येन अत्र खल्ल जम्बूद्वीपे द्वीपे नीलवान् नाम वर्षधरपर्वतः प्रज्ञप्तः प्राचीनप्रतीचीनायतः उदीचीनदक्षिणिः स्तिष्धवक्तव्यता नीलवतो भणितव्या, नवर जीवा दक्षिणेन धनुरुत्तरेण अत्र खलु केसरिहूदः, दक्षिणेन शीता महानदी प्रव्यृहा सती उत्तरकुरून् इर्यतीर यत्रकपर्वतौ नीलबदुत्तरकुरु चन्द्रैरावतमाल्यबद्धदान् द्विधा विभजमानार चहुरशीत्या सञ्जिलासहस्रेशपूर्यमाणा २ भद्रशालवनमिर्यती २ मन्दरं पर्वतं द्वाभ्यां योजना-भ्यामसन्त्राप्ता चौरस्त्याभिवस्ती आवृत्ता सती अधो माल्यवद्वसस्कारपर्वतं दार्थाखा मन्डरस्य पर्वतस्य पौरस्त्येन पूर्वविदेहवर्ष द्विधा विभजमाना २ एकैकस्माच्चक्रवर्तिविजयादष्टाविशत्या २ सलिलासहस्रेरापूर्यमाणा २ पश्चिमः सलिलासहस्रेद्वीत्रिंशता च सलिलासहस्रैः समग्रा अधी विजयस्य द्वारस्य जगतीं दारियत्या पौरस्त्येन लवणसमुद्रं समाप्नोति, अविशृष्टं तदेवेति । एवं नारीकान्ताऽपि उत्तराभिमुखी नेतव्या, नवरमिदं नानात्वं गन्धापातिवृत्तवैताढचपर्वतं योजनेनासम्याप्ता पश्चिमाभिमुखी अञ्चला सती अविश्वष्ट तदेव प्रवहे च मुखे च यथा हरिकान्ता सिंख इति । नीलविद खळ भदन्त ! पर्वते कतिक्टानि प्रविधानि ?, गौतम ! नव क्टानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-सिद्धायतनज्ञुटम् ०, सिद्धं १ नीलं २ पूर्वविदेहं ३ शीताव ४ कीर्ति ५ नारी च ६ । अपरविदेहं ७ रम्यकक्टम् ८ उपदर्शनं चैव ९ ॥१॥ सर्वाण्येतानि क्टानि पश्च-श्रातिकानि राजधान्य उत्तरेण । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-नीलवान वर्षधरपर्वतः २ ?, गौतम ! नीलो नीलावभासो नीलवांश्रात्र देवो महर्द्धिको यावत् परिवसति सर्ववैद्वर्थमयः नीलवान यावद नित्य इति ॥ स्र० ४३ ॥

टीका-'किह णं भंते !' इत्यादि-वव खल भदन्त ! 'जंबुद्दीवे' जम्बूद्धीपे-जम्बूद्धीपाभिन्ने 'दीवे' द्वीपे 'णीलवंते णामं' नीलवान नाम 'वासहरपव्वए' वर्षभरपर्वतः 'पणात्ते' प्रज्ञप्तः इति प्रश्नस्य भगवानुत्तरमाह-'गोयमा !' गौतम ! 'महाविदेहस्य' महाविदेहस्य 'वासस्स' वर्षस्य 'उत्तरेणं' उत्तरेण-उत्तरदिशि 'रम्मगवासस्स' रम्यकवर्षस्य महाविदेहस्यः परतः स्थितस्य युगलिकमनुष्याश्रितस्य 'दिवस्णेणं' दक्षिणेन-दक्षिणदिशि 'पुरिश्यमिल्ललवणसम्रदस्स' पौरस्त्यलवणसम्रद्वस्य-पूर्वदिग्मवलवणसम्रद्वस्य 'पुरिश्यमेणं' पौरस्त्येन-पूर्वदिशि 'प्तथ' अत्र-अत्रान्तरे 'णं' खल्ल 'जंबुद्दीवे दीवे' जम्बूद्धीपे द्वीपे 'णीलवंते णामं' नीलवान् नाम 'वासहरपव्वए' वर्षथरपर्वतः 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तः, स च कीद्दशः ? इति जिज्ञासायामाह- 'प्राईणप्रजीणायए' प्राचीनप्रतीचीनायतः पूर्वपश्चिमदिशोदीर्घ', तथा 'उद्दीणदाद्दिणवित्थण्णे'

महाविदेह क्षेत्र से आगे के नीलवान वर्षधर पर्वत की वक्तव्यता'कहिणं भंते! जंदुदीवे दीवे णीलवंत णामं वासहरपव्वए पण्णक्तं' इत्यादि!
टीकार्थ-इस सूत्र बारा गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-'कहिणं भंते! जंदुदीवे पीलवंते णामं वासहरपव्वए पण्णक्तं' हे भदन्त! इस जंदूबीप नाम
के बीप में नीलवान नामका वर्षधर पर्वत कहां पर कहा गया है? इसके उत्तर
में प्रभु कहते हैं 'गोयमा! महाविदेहस्स वासस्स उत्तरेणं रम्मवासस्स दिक्लणेणं पुरिथमिल्ललवणसभुद्दस्स पच्चित्थमेणं पच्चित्थमलवण समुद्दस्स पुरिथमेणं एत्थणं जंदुदीवे दीवे णीलवंते णामं वासहरपव्वए पण्णक्तं' हे गौतम! महाविदेह क्षेत्र की उत्तर दिशा में तथा रम्यक क्षेत्र की दक्षिणिदिशा में एवं पूर्वदिग्वर्ती लवणसमुद्र की पश्चिम दिशा में और पश्चिम दिग्वर्ती लवणसमुद्र की
पूर्वदिशा में जंदूबीप नाम के बीप में नीलवान नामका वर्षधर पर्वत कहा
गया है 'पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे' यह वर्षधर पर्वत पूर्व से

महाविदेह क्षेत्रनी आगणना नीक्षवान् २५ धर ५० तनी वक्ष्तव्यता 'कहि णं भंते! जंबुदीवे दीवे णीलवंते णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते' इत्यादि

टी धर्थ-आ सूत्र वडे गौतमस्वाभी अभुने आ कातना प्रश्न हर्यों छे है-'कहि ण मंते! जंबुद्दीवे दीवे ण छवंते णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते' हे अहंत! आ क' अद्भीप नामह द्वीपमां नीक्षवान् नामे वर्षधर पर्वत ह्या स्थणे आवेदी छे । छेना कवाममां प्रभु हहे छे है- 'गोयमा! महाविदेहस्स वासस्स उत्तरेणं रम्मगवासस्स दिव्खणेणं पुरिक्षिमिल्छलवणसमुद्दस्स प्रत्थिमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे २ णीलवंते णामं वास्स्य व्यव्यत्थिमेणं पच्चित्रमळवणसमुद्दस्स पुरिक्षिमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे २ णीलवंते णामं वास्स्य व्यव्यत्थिमेणं पण्णत्ते' हे गौतम! महाविदेह क्षेत्रनी उत्तर हिशामां तेमक २ भ्यष्ठ क्षेत्रनी हिशामां अने पृत्रि हिशामां क' अद्वीप नामह द्वीपमां नीक्षवान नामे वर्षधर पर्वत आवेदा छे. 'पाईणप्रश्वीणायए उद्दीणदाहिणविच्छिण्णे' आ वर्षधर पर्वत पूर्वथी पश्चिम

उदीचीनदक्षिणविस्तीर्णः — उत्तरदक्षिणदिशो विंस्तारयुक्तः, अयं निषधसदश इति तद्वक्तव्यतामय स्वयति—'णिसहवत्तव्यया णीलवंतस्स भाणियव्वा' इति निषधवक्तव्यता—निषधामिधस्य पर्वतस्य या वक्तव्यता वर्णनपद्धतिः साऽस्यापि नीलवतो वर्षधरपर्वतस्य भणितव्या—
वक्तव्या, निषधादांशिकविशेषं दर्शयितुमाह—'णवरं' नवरं—केवलं 'जीवा' जीवा—परम आयामः
'दाहिणेणं' दक्षिणेन दक्षिणदिशि 'घणु' धनुः—धनुष्पृष्ठम् 'उत्तरणं' उत्तरेण—उत्तरिश्चि 'एत्थ' अत्र अत्रान्तरे 'णं' खल्छ 'केसरिद्दे' केसरिहदः—केसरिह्द नामा हृदः, अस्माव् हृदात् 'दाहिणेणं' दक्षिणेन—दक्षिणदिशि 'सीया महाणई' शीतामहानदी 'पवृदा' प्रव्यूदा निःसरन्ती 'समाणी' सती 'उत्तरकुरुं' उत्तरकुरून् 'एज्जेमाणी २' इर्यती गच्छन्ती २ जम-गपव्यए' यमकपर्वतौ 'णीलवंतउत्तर कुरुचंदेरावयमालवंतदहे' नीलवदुत्तरकुरु चन्द्रैरावतमालय-वद्बृहान्—नीलवदुत्तरकुरु चन्द्रैरावतमालयवन्नामधेयान पश्चापि हृदान 'य' च 'दुहा' द्विभा 'विभयमाणो २' विभजमाना२ विभक्तान कुर्वाणा २ 'वउरासीए' चतुरशीत्या 'सलिलास्य-स्तेदिं' सलिलासहस्तैः—नदीसहस्तैः 'आपूरेमाणा २' आपूर्यमाणा २ वारिभिः संश्चियमाणा२ 'भदसालव्यणं' भद्रशालवनं—भद्रशालाभिधं मेरुनिर्वनम् 'एज्जेमाणी२' इर्यती२ गरुलन्ती२ 'भदसालव्यणं' भद्रशालवनं—भद्रशालाभिधं मेरुनिर्वनम् 'एज्जेमाणी२' इर्यती२ गरुलनिश्चाणाः

पिश्रम तक लम्बा है और उत्तर से दक्षिण तक विस्तीर्ण है 'णिसहवक्त-व्वया णीलवंतस्स भाणियव्वा' जैसी वक्तव्यता त्रिषध वर्षधर पर्वत के सम्बन्ध में कही जा चुकी है वैसी ही वक्तव्यता इस नीलवःन वर्षधर पर्वत के सम्बन्ध में कहलेनी चाहिये 'णवरं दिक्लणेणं जीवा उत्तरेणं घणुं अवसेसं तं चेव' इसकी जीवा दक्षिणदिशा में है और धनुःष्टुष्ठ उत्तरदिशा में है' यही विशेषता पूर्व में कही गई निषध की वक्तव्यता से इसकी वक्तव्यता में है बाकी का और सब कथन निषध वर्षधर पर्वत की वक्तव्यता के ही जैसा है 'एत्थ णं केसरिइहों, दाहिणेणं सीआ महाणई पवृद्धा समाणी उत्तरकुरं एउजेमाणी २ जमगपव्यक्ष णीलवंत उत्तरकुरुवंदेरावतमालवंतहहे य दुहा विभयमाणी २ चडरासीए सिललासहस्सेहिं आपूरेमाणी २ भइसालवणं एउजेमाणी २ मंदरपद्धयं' इस

सुधी क्षांणा छे अने ઉत्तरधी हिस्खु सुधी विस्तीर्ण छे. 'णिसह वत्तव्या णीलवंतस्स भाणियव्या' लेपी वक्ष्तव्यता निषध वर्षधर पर्यतना सम्अन्धमां क्रियामां आवेशी छे. 'णयर' दिव्याणेणं जीवा उत्तरेणं घणुं अवसेसं तं चेव' ओनी छवा हिस्खि हिशामां आवेशी छे अने धनुष्पृष्ठ उत्तर हिशामां आवेशों छे. पूर्वमां क्षित निषधनी वक्ष्तव्यतामां आवेशी क विशेष्यता छे. शेष अधुं कथन निषध वर्षधर पर्वतनी वक्ष्तम्यता लेवुं क छे. 'एत्थणं केसरि हहो, दाहिणेणं सीआ सहाणई पत्रूहा समाणी उत्तरकुरुं एउनेमाणी र जमगाव्वए णीलं वंत उत्तरकुरुंचंदेरावतमालवंतददेय दुहा विभयमाणी र चडरासीए सिल्डसहरसेहिं आपूरेमाणी र भदमालवणं एउनेमाणी र मंदरपटवयं' आ वर्षधर पर्वत हिशा है हारी

'मंदरं' पव्वयं' मन्दरं मेरं पर्वतं 'दोहिं जोयणेहिं' द्वाभ्यां योजनाभ्याम् 'श्संपत्ता' असम्प्राप्ता अस्पृत्रान्ती 'पुरत्थाभिष्ठहीं' पौरस्त्याभिष्ठखी पूर्वदिगिभिष्ठखी 'आवत्ता समाणी' आवृत्ता— परावृत्ता सती 'अहे माळवंतवक्खारपव्वयं' अधो माल्यवद्वक्षस्कारपर्वतं—माल्यविद्यामकवक्ष-स्कारपर्वतम् अधः—अधस्तन अदेशावच्छेदेन 'दालक्ता' दारियत्वा—विदीणे कृत्वा 'मंदरस्स पव्वयस्त' मन्दरस्य पर्वतस्य मेरुगिरेः 'पुरिव्यमंणं' पौरस्त्येन—पूर्वदिश्चि 'पुव्वविदेहवासं' पूर्वविदेहवर्ष-पूर्वविदेहनामकं वर्षे 'दुहा' द्विया 'विभयमाणो २' विभजमाना २ विभक्तं कुर्वाणा २ 'पगमेगाओ' एकैकस्मात्—प्रत्येकस्भात् 'चक्विहिविजयाओं' चक्वयर्तिविजयात् 'अहावीसाए २' अष्टाविश्वत्या २ 'सिलिलासहस्सेहिं' सिलिलासहस्तैः 'आपूरेमाणी २' आपूर्यमाणा २ संश्रियमाणा २ 'पंचिहिं' पञ्चिताः 'सिलिलासहस्तेहिं' सिलिलासहस्तेः 'सिनगां' समग्रा— विनिष्ठां य' द्वातिश्वता च 'सिलिलासहस्तेहिं' सिलिलासहस्तेहिं सिलिलासहस्तेः 'समगां' समग्रा—

वर्षधर पर्वत पर केशरी नामका द्रह है इसके दक्षिण तोरण द्वार से शीता महानदी निकली है और उत्तरकुरु में बहती २ यमक पर्वतों को तथा नीलवान उत्तरकुरु, चन्द्र, ऐरावत् और माल्यवान् इन पांच द्रहों को विभक्त करती २ घौरासी हजार निदयों से संयुक्त होकर भद्रशालवन की ओर जाती है और वहां से होकर वहती हुई वह महानदी मंदर पर्वत को 'दोहिं जोयणेहिं असंपत्ता पुरत्थाभिमुही आवत्ता समाणी अहे मालवंतत्रक्रखारपञ्चयं दालियत्ता मंदरस्स पञ्चयस्स पुरत्थिमेणं पुठवविदेहवासं हुहा विभयमाणी २' दो योजन दूर छोडकर पूर्वीभिमुख होकर लौटती है और नीचे की ओर से खालयबात वक्षस्कार पर्वत को छोडकर वह मंदर पर्वत की पूर्विद्शा से होकर पूर्विविदेहावास को दो रूप से विभक्त कर देती है 'एगमेगाओं चक्कविट विजयाओं अद्वावीसाए २ सिललासहस्सेहिं आपूरेमाणी २ पंचिहं सिललासहस्सेहिं समयत्तीलाए य सिललासहस्सेहिं समयना अहे विजयस्स दारस्स जगई दालहत्ता पुरत्थिमेणं

द्रह छे. येना दक्षिण तेरिष् द्रारथी शीता महानदी नीडणी छे. यने ६तर डुरुमां प्रवाहित थती थमड पर्वता तेमक नीववान् उत्तर डुरु, यन्द्र, येशवत क्यने भारयवान् ये पांच द्रहोने विकाल डरती—डरती ८४ हकर नदीयोशी संयुक्त धर्मने आगण प्रवाहित धती ते महानदी मन्दर पर्वतने 'दोहिं जोयणेहिं असंपत्ता पुर्थामिमुही आवत्ता समाणी अहे मालवंतवक्खारपव्यं दालियता मंद्रस्स पव्ययस्स पुराव्यमेणं पुव्यविदेहवासं दुहा विभयमाणी २' थे थेकिन हर भूशीते पूर्वाकिमुण धर्मने पांची हरे छे अने नीयेन्द्री तर्श्व भाव्यवान वक्षस्कार पर्वतने भूशीने ते वान्दर पर्वतनी पूर्व दिशा तर्श्व थर्धने, पूर्व विदेह वासने थे काणेमां विकाल डरी नाणे छे. 'एगमेगाओ चक्कविविजयाओ अहावीसाए र सिल्लासहस्तेहिं आपूरेमाणी २ पंचित्तं सिल्लासहस्तेहिं समवत्तीवाए य सिल्लासहस्तेहिं समयता अहे विजयस्स दारस्स जगई दालहत्ता पुरात्थिमेणं छवणसगुदं समप्पेद्र' पर्धी

सम्पूर्णा 'अहे विजयस्स दारस्स' अथो विजयस्य द्वारस्य विजयाख्यद्वारस्याथः प्रदेशे 'जगई' जगतीं पृथ्वीं 'दल्डइत्ता' दारियत्वा-विदीणां कृत्वा 'पुरित्थमेणं' पौरस्त्येन पूर्वेण पूर्वदिशि 'छवणसप्रइं-लवणसप्रदं 'समप्पेइ' समाप्नोति-सप्रुपैति 'अविसर्द्ध' अविष्ठष्टं प्रवहविस्तार गमी-रत्वादिकम् 'तं चेवत्ति । तदेव-निषधिगिरिनिः स्त्रशीतोदा महानदी प्रकरणोक्तमेव बोध्यम्, अथास्मादेव नीलवत् पर्वतादुत्तरदिशि प्रवहन्तीं नारीकान्तां नदीमतिदिशित-'एवं णारिकंता वि' एवम् अनन्तरोक्तप्रकारेण नारीकान्ताऽपि नारीकान्तानाम्नी नद्यपि 'उत्तराभिष्ठहीं' उत्तरामिष्ठखी 'णेयव्वा' नेतव्या-प्राह्या, अयमाशयः -यथा नीलवति वर्षधरभूधरेऽवस्थितात् केसरिद्दाच्छीता महानदी दक्षिणाभिष्ठखी निःस्ता तथा नारीकान्ताऽपि नदी उत्तराभिष्ठखी निर्मता, नत्न समानवर्णकत्वेतास्याः सप्चद्रप्रवेशोऽपि शीता महानदीवत् सम्भाव्येतेत्याशक्कां

लवणसमुदं समप्पेह' फिर वहां से वह एक र चक्रवर्ति विजय से २८-२८ हजार निद्यों द्वारा भरती हुइ कुल पांच लाख रेर हजार निद्यों से युक्त होकर वह विजय द्वार की जगती को नीचे से विदारित कर पूर्वदिशा की ओर वर्त-मान लवणसमुद्र पद में प्रवेश करती है ५ लाख ३२ हजार निद्यों की संख्या इसी सूझ में आगे कही जायगी वहां से देखना चाहिये। 'अवसिद्धं तं चेव' इसके अतिरिक्त और सब कथन-प्रवह विस्तार-गंभीरता-गहराई आदि का कथन, निषय पर्वत से निर्गत शीतोदानदी के प्रकरण में कहे—अनुसार ही समझना चाहिये 'एवं णारिकंता वि उत्तराभिमुही णेयव्वा' इसी नीलवान पर्वत से नारीयान्ता नामकी नदी भी उत्तराभिमुखी होकर निकली है ताल्प्यं ऐसा है कि बीलवान पर्वत के जगर अवस्थित केशरी हृद से जैसी शीता महानदी दक्षिणाभिमुखी होकर निकली है उसी प्रकार से यह नारीकान्ता नामकी महानदी की उत्तराभिमुखी होकर निकली है उसी प्रकार से यह नारीकान्ता नामकी महानदी की उत्तराभिमुखी होकर निकली है उसी प्रकार से यह नारीकान्ता नामकी महानदी की उत्तराभिमुखी होकर निकली है उसी प्रकार से यह नारीकान्ता नामकी महानदी का वर्णक जब लमान है तो इसका समुद्र प्रवेश भी शीता महानदी के ही जैसा होता होगा? तो इस आशंका को निरस्त करने के लिये सूझकार

द्रश्चेपति-'गंभावइवद्दवेयद्भपव्ययं' गन्धाया तिष्टु सर्वेताढचपर्वतं 'जोयणेणं' योजनेन 'असंपत्ता' असम्भाष्ता-अस्पृष्टवती 'पश्चत्थाभिक्षही' पश्चिमाभिमुखी 'आवत्ता' समाणी' सती इत्यादि 'अवसिद्रं' अवशिष्टं रम्यकवर्षस्य द्वैधीकरणादिकम् 'तं चेव' तदेव हरिकान्तानदी प्रकरणोक्त-मेंब बोध्यम् तद्यथा-'रम्मग्वासं दुहा विभयमाणी २ छप्पण्णाए सलिलासहस्सेहिं समग्गा अहे जगइं दालइत्ता पच्चित्थिमेणं लवणसप्तदं समप्पेः एतत्र्छाया-रम्यकवर्षं द्विधा विभज-भाना २ पदपश्चाशता सलिलासहस्रेः समग्रा अधो जगतीं वार्यित्वा पश्चिमेन लवणसमुद्रं समाप्तोति इति, अस्य व्याख्या छायागम्या, अत्रावशिष्टपदसङ्ग्रहे प्रवहसुखविस्तारादि न वित्रितं, समुद्रप्रवेशपर्यन्तस्यैत पाठस्य तत्प्रकर्णे दृष्टत्वात् , अतस्तत्पृथगेवाह-'पवहे य मुद्दे य जहा हरिकंता सिलला इति । प्रवहे निर्ममस्थाने च मुखे समुद्रप्रवेशे च यथा-येन प्रकारेण हरिकान्ता सलिला हरिकान्तानाम्नी नदी वर्णिता तथेयमपि वर्णनीयेति, तथाहि-कहते हैं-'णवरमिमं णाणतं गंधावहवद्देअद्भपव्ययं जोयणेणं असंपत्ता पच्च-स्थाभिमुही आवत्ता समाणी अवसिद्धं तंचेव पवहे य मुहे य जहा हरिकंता सिल्ला इति' हे गौतम ! इसका समुद्र प्रवेश नारीकान्ता महानदी के जैसा नहीं होता है किन्तु यह गंधापाति जो बृक्तवैताढ्य पर्वत है उसे १ घोजन दूर छोड देनी है और पश्चिमदिशा की और मुड जाती है यहां से आगे का और साब कथन जैसे-रम्थक वर्ष को विभक्त करना आदिरूप कथन-हरिकान्ता नदि के पकरण में कहे गये अनुसार ही है इस सम्बन्ध में आलापक इस प्रकार से है-'रम्मगवासं दुहा विभ्यमाणी २ छप्पण्णाए सलिलासहस्सेहिं समग्गा अहे जगई दालहत्ता पँच्चित्थिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेष्ट्' यहां अविशिष्ट पद संग्रह में प्रवहसुख व्यास आदि का जो विचार नहीं किया गया है उसका कारण आलाप का समुद्र प्रवेश तक ही मिलना है अतः इसी से सूत्रकारने "प्रवहे च मुखे च

द्रीकरीमाइ-'णवरमिमं' नवरमिदम् केवलम् इदम् बश्यमाणं 'णाणत्तं' नानात्वं भेदः, एउदेन

शंक-शीला अने नारीक्षान्ता महानदीना वर्ण्ड क्यारे सयान छे तो पछी आनी समुद्र प्रवेश पण्ड शीला महानदी केवा क थता हो ? तो आ शंकाना समाधान माटे सूत्रकार के छे के 'णवरमिमं णाणत्तं गंधावइवट्टवेअद्धपव्वयं जोयणें असंपत्ता पच्च त्यामिमुही आवत्ता समाणी अवसिट्टं तं चेव पवहेय मुहेय जहा हरिकंता सिलला इति' हे गौलम! आनो समुद्र प्रवेश नारीक्षान्ता महानदी केवा नथी. परंतु आ गंधापाति के खुतवैताहय पर्वत छे, तेने १ थे। कन इर मूडीहे छे अने पश्चिम हिशा तरह वणी काय छे. अहींथी आगणनुं अधुं कथन-केमहे रम्यक वर्षने छे कानेणिका विशाहित करवे। वगेरे इप कथन हरिकान्ता नदीना प्रकरण्यां कहां मुक्य क छे. आ संवाधमां आहापक आ प्रभाणे छे. 'रम्मगवासं दुहा विभयमाणी २ छःपण्णाप सिललासहस्सेहिं समगा अहे अगई दालहत्ता पच्छत्थिमेणं लवणसमुदं समप्तेइ' अहीं शेष पह संबह्मा प्रवह मुफ, न्यास वगेरेना संअधमां विवार करवामां अल्पो नथी, तेनुं कारण आहापनुं समुद्र प्रवेश सुधी क मणवुं छे. येथी क सूत्रकार 'प्रवहे च मुखे च हरिकान्ता सिललां येथुं प्रवेश सुधी क मणवुं छे. येथी क सूत्रकार 'प्रवहे च मुखे च हरिकान्ता सिललां येथुं प्रवेश सुधी क मणवुं छे. येथी क सूत्रकार 'प्रवहे च मुखे च हरिकान्ता सिललां येथुं प्रवेश सुधी क मणवुं छे. येथी क सूत्रकार 'प्रवहे च मुखे च हरिकान्ता सिललां येथुं

प्रवहे पश्चितियोजनानि विष्कम्भेण अर्द्धयोजनमुद्धेयेन मुखे-सार्द्धविती योजनानि विष्कम्भेण पश्चयोजनान्युद्धेयेनेति, अत्र प्रवहयुख्योहिरसिलिलः दृष्टान्ते वक्तव्ये हिरिक्तान्ता दृष्टान्तोक्तिः समानवर्णकत्वात्त्योहिरिसिलिलाप्रकरणेऽपि हिरिकान्तातिदेशसूचनार्था। अथा-िष्मिष्टीलविद्धरीक्टानि दर्णयितुमुपक्रमते-'णीलवंतेणं मंते!' इत्यादि-शिलवित खलु भदनतः! 'वासहरपव्वए' वर्षथरार्वते 'कइ' कित 'क्टानि 'पण्णत्ता' प्रज्ञातानि, अस्य प्रश्नस्योत्तरं

हरिकान्ता सिल्ला" ऐसा स्वतन्त्र रूप से सूत्र का प्रतिपादन किया गया है। इसके द्वारा यह समझाया गया है कि जिस प्रकार से हरिकान्ता नदी के प्रवह आदि के सम्बन्ध में पहिले वर्णन किया गया है वैसा ही वर्णन प्रवह आदि के सम्बन्ध में इस महानदी का भी करलेना चाहिये। तथा च यह नदी प्रवह में विष्करम की अपेक्षा २५ योजन की है एवं उद्वेध की अपेक्षा अर्द्ध योजन की है सुख में यह २५० योजन की विष्करम की अपेक्षा है और उद्वेध की अपेक्षा ५ योजन की है यहां यद्यपि प्रवह में हरि महानदी का दृष्टान्त वक्तव्य था पर जो हि कान्ता महानदी का दृष्टान्त दिया गया है वह इन दोनों के समान वर्णक होने की अपेक्षा से दिया गया है तथा हरिनदी के प्रकरण में भी हरिकान्ता को दृष्टातरूप कहलेना चाहिये इस बात की सूचना के निमित्त है।

इस नील्बान् पर्वत के ऊपर के कूटों की बक्तव्यता-

गौतमने इस नीलवान् वर्षधरपर्वत के कूटों को जानने के निमित्त प्रभु से ऐसा पूछा है-'णीलवंते णं भंते! वासहरपव्वए कह कूडा पण्णता' हे भदन्त! नील-वान् वर्षधर पर्वत के ऊपर कितने कूट कहे गये हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-

સ્ત્રતંત્ર રૂપમાં પ્રતિપાદન કર્યું છે. એના વડે એ સમજાવવામાં આવ્યું છે કે જેમ હરિકાન્તા નદીના પ્રવહ વગેરેના સંબંધમાં પહેલાં વર્ણન કરવામાં અવ્યું છે, તેવું જ વર્ણન પ્રવહ વગેરેના સંબંધમાં આ મહાનદી વિશે પણ કરી લેવું જોઇએ, તથા આ નદી પ્રવહમાં વિષ્કંભની અપેક્ષાએ ૨૫ યોજન જેટલી છે. તેમજ ઉદ્દેધની અપેક્ષાએ અર્ધ યોજન જેટલી છે. મુખમાં આ નદી ૨૫૦ યોજન વિષ્કંભની અપેક્ષાએ છે, અને ઉદ્દેધની અપેક્ષાએ ૫ યોજન જેટલી છે. અહીં જે કે પ્રવહમાં હરિ મહાનદીનું દૃષ્ટાન્ત આપવાનું હતું પણ જે હરિકાન્તા મહાનદીનું દૃષ્ટાન્ત આપવામાં આવ્યું છે તેની પાછળ આ કારણ છે કે એ બન્ને સમાન વર્ણક ધરાવે છે. તેમજ હરિ નદીના પ્રકરણમાં પણ હરિકાન્તાને દૃષ્ટાન્ત રૂપમાં ગણવી જોઇએ. એ વાત એનાથી સ્ત્રિત થાય છે.

આ નીલવાન્ પર્વાત ઉપરના ફૂટેતની વક્તવ્યતા

ગૌતમ સ્વામીએ આ નીલવાન્ વર્ષધર પર્વતના કૂટા વિશે જાણવા માટે પ્રભુને પ્રશ્ન કર્યો કે 'ળીਲવંતેળ મંતે! वासहरप्रव्यए कह कूडा पण्णत्तः' હે ભદંત! નીલવાન્ वर्षधर पर्वत ઉપર કેટલા કૂટા આવેલા છે? એના જવામમાં પ્રભુ કહે છે-'गोयमः। णव

भगवानाइ-'गोयमा !' गौरम ! 'णव' नव 'कूडा' कूटानि 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्तानि 'तं जहां' तद्यथा 'सिद्धाययणक्रुडे' सिद्धायतनक्रुटम् एतच्च पूर्वस्यांदिशि सहुद्र समीपवर्ति इत्यादीनि नवकूटानि सङ्ग्रहीतुं गाथाध्वनयस्यति 'सिद्धे १' इत्यादि सिद्धम् , अत्र नामैंकदेशग्रहणा-म मत्रहणमिति सिद्धपदेन सिद्धायतनकूटं त्राह्मम् , एवमग्रेऽपि, ततः परं 'णीछे २' नीछं नीस्रवस्कृटम् – नीस्रवतः नीस्रवन्नामकवन्नस्कारभूधरस्य नीस्रवन्नामकदेवस्य कूटमित्यर्थः २ 'पुन्वविदेहें ३' पूर्वविदेह-पूर्वविदेहवर्षापिधक्रुटम् ३ 'सीया ४' शीता-शीतादेवीकूटम् ४ 'य' च-चकारः सपुच्चयार्थकः 'कित्ति ५' कीतिः केसरिष्ट्दाधिष्ठात्री देवी तस्याः इटं निवासभूतम् ५ 'णारी ६' नारी-नारीकान्ता नदीदेवी क्टम् ६ 'य' च-चकारः प्राग्वत् 'अवरविदेहे ७' अपर बदेहम् अपरि देहवर्षापिधिक्टम् ७ 'रम्मगक् हे ८' रम्यक क्टं-रम्यक क्षेत्राधिपक्रटस्ट, 'उवदंसणे ९' उपदर्शनस् एतन्नामकं वृटं नैव चशब्दः प्राग्वत् एव निर्धारणे ९ ॥१॥ 'सब्वे एए कूडा' सर्वाणि निःशेषाणि एतानि नीलविद्विरिवर्तीनि नवापि कृटानि <mark>हिमव</mark>त्कूटानीव 'पंयसइया' पश्चशतिकानि-पश्चशतयोजनप्रमाणानि वाच्यानि एतदक्तव्यः 'गोयमा ! णव कूडा पण्णन्ता' हे गौतम ! नीलवान वर्षधर पर्वत के ऊपर नौ कुड कहे गये हैं। 'तं जहा' उनके नाम इस प्रकार से हैं-'सिद्धायपणक्रहे' १ सिद्धायतन-कूट यह कूट पूर्व दिशा में समुद्र के पास मे है, अवशिष्ट कूटों की यह संग्रह गाथा हैं-'सिद्धणिले, पुन्वविदेहे, सीआ य कित्ति णारी अ. अवरविदेहे रम्मगकूडे, उवदंसणेचेव' नीलवत्कूट २ यह कूट नीलवान् नामक वक्षस्कार पर्वत का जो नीलवान् देव है उसका है। पूर्वविदेह ३-यह कूट पूर्व विदेह क्षेत्र के अधिपति का है। सीताकूट ४-यह कूट सीतादेवी का है। कीर्तिकूट ५ यह कूट केदारि हुद की अधिष्ठ।त्री देवी का है, नारीक्षट६ यह क्षट नारी कान्तानदी देवी का है। अपरविदेह कूट ७ यह कूट अपरविदेह क्षेत्र के अधिपति का है। रम्यककूट८ यह कूट रम्यक क्षेत्र के अधिपति का है। और उपदर्शन क्रूट ९-'सब्बे एए क्रूडा पंच सहआ राय-हाणीड उत्तरेणं' ये सब कृट हिमवत्कूटों की तरह पांचसौ योजन के हैं अतः

कूडा पण्णता' है गौतम! नीसवान्! वर्षधर पर्वत उपर नव कृते आवेसा छे. 'तं जहां' ते कूतेना नामा आ प्रमाणे छे—'सिद्धारायणकूडें' १ सिद्धारायत कृतः आ कृत पूर्व दिशामां समुद्रनी पासे छे. शेष कृतिनी आ संश्रह गाथा छे—'सिद्धणिले, पुट्वविदेहें, सीआय कित्ति णारी अ० अवर्गविदेहें रम्हगकूडे उन्नदंसणे चेव' नीसवत्कूत र, आ कृत नीसवान् नामक वक्षस्थार पर्वतनो के नीसवान् देव छे, तेनो आ कृत छे. पूर्व विदेह उ—आ कृत पूर्व विदेह उ—आ कृत पूर्व विदेह क्षेत्रना अधिपतिनो छे. सीता कृत-४, आ कृत सीतादेवीनो छे. किर्तिकृत-प, आ कृत केशर ह्वदनी अधिष्ठात्री देवीनो छे. नारो कृत-१-आ कृत नारीक्षान्ता नहीं देवीनो छे. अपरिविदेह कृत-५ आ कृत अधिपतिनो छे सम्यक्ष्त्र, ८-आ कृत सम्यक्ष्त्र क्षेत्रना अधिपतिनो छे अपरिविद्ध क्षेत्रना अधिपतिनो छे सम्यक्ष्त्र, ८-आ कृत सम्यक्ष्त्र क्षेत्रना अधिपतिनो छे सम्यक्ष्त्र, ८-आ कृत सम्यक्ष्त्र क्षेत्रना अधिपतिनो छे सम्यक्ष्त्र पंचसङ्का

ताऽपि हिमद क्टानामिव बोध्या, एषां 'रायहाणीउ' राजधान्यः — उद्ध्यमाणनीलक्षामकदेवस्य निवनत्यः 'उतरेणं' उत्तरेणं मेहत उत्तरस्यां दिशि बोध्याः, अथास्य नीलविति नामकारणं पृच्छति — 'से केणहेणं मंते!' अथ केन अर्थेन — कारणेन भइन्त! 'एवं युच्चइ' एवष्ट्रच्चते
नीलविद्याकारकं नाम व्यविद्यते एतदेव स्पष्टयिति 'णीलवंते वासहरपञ्चए २' नीलवान् वर्षधर
पर्वतो नीलवान् वर्षथरपर्वतः इति प्रश्नस्योत्तरं भगवानाह — 'गोयमा!' मौतम! अयं नीलवान्
पर्वतः 'णीले' नीलः नीलवर्णः 'णोलोभःसे' नीलवानास अवभास नपत्रमासः, नीलोऽवमासः
प्रकाशो यस्य स नीलावभासः, यद्वा — नीलमवभासयतीति नीलावभासः नीलप्रकाशः, स्वा
सन्नमन्यद्वि वस्त नीलवर्णमयं करोति तेन नीलवर्णयोगाद् नीलवानित्युच्यते, अथास्याधिपमाह— 'णीलवंते य इत्य देवे' नीलवांश्वात्र देवः परिवसतीत्यिप्रमेण सम्बन्धः, स च कीटशः?
इत्याह— 'महिद्धाए जाव परिवसइ' महिद्धिको यावत् परिवसति अत्र यावत्यदेन— ''महाद्यतिकः,

इनके सम्बन्ध की वक्तन्यता भी हिमवत्क्र के जैसी ही जाननी चाहिय नील-वान नामक देवकी एवं क्रों के अधिपतियों की राजधानियां मेरु की उत्तरदिवाा में जाननी चाहिये! 'से केणडेणं भंते! एवं वृच्चइ णीठवंते वासहरपव्वए'? हे भदनत! ऐसा आपने इस पर्वत का नाम "नीलवान पर्वत" क्यों कहा है? उत्तर में प्रमु कहते हैं—गोयमा! णीले णीलोभासे णीलवंते अ इत्थ देवे महिद्वीए जाव परिवसइ सन्ववेद्दलियामए णीलवंते जाव णिच्चेति' हे गौतम! जो चतुर्थ नीलवान गिरि है वह नीलवर्ण वाला है और इसीसे इसका प्रकाश नीला होता है यह अपने पास में रही हुई अन्य वस्तुओं को भी नीलवर्णमय करदेना है अतः नीलवर्ण योग से इसे 'नीलवान' ऐसा कहा गया है। इस पर्वत का अधिपति नीलवान देव है, वह यहां पर रहता है यह महिद्धिक देव है यावत् एक पल्योपम की इसकी आयु है यहां यावत्यद से 'महाचुतिकः, महावलः, महा

रायहाणी उ उत्तरेणं' स्थे अधा कृटी हिमवत् कृटनी केम ५०० येकित केटला छे. स्थी स्थेमना विशेनी वक्षतव्यता पण हिमवत्कृट केवी क समकवी केडिसे. नीलवान् नामक हेवीनी सने कृटीना स्थिपतिस्थानी राकधानीस्था मेडुनी उत्तर हिशामां आवेली छे. 'से केणहेणं मंते! एवं बुच्चइ णीलवंते वासहरपच्चए २' हे कहंत! आपश्रीसे स्था पर्वतनुं नाम 'नीलवान् पर्वत' सेवुं शा कारण्यी कहुं छे? स्थेना कवासमां प्रक्ष कहें छे-'मोयमा! णीले णीलोमासे णीलवंते अ इत्य देवे महिद्धीए जाव परिवसइ सच्ववेहिल्यामए णीलवनते जाव णिच्चेति' हे गौतम! से के से शिक्षा नीलवान् पर्वत छे, ते नीलवर्णुवाणा छे. सने सेथी क सेना प्रकार नीलवर्णुना हाय छे. से पीतानी नलक परेशी सील वस्तुमाने पण नीलवर्णु मय करी नाणे छे. स्थिन नीलवर्णुना येजशी आने 'नीलवान्' नामधी संभाधवामां आवेला छे. आ पर्वतना स्थिपति नीलवान् हेव छे. ते सही रहे छे. आ महिद्धीं हेव छे. यावत् सेक परेशी मीलवान् हेव छे. ते सही रहे छे. आ महिद्धीं हेव छे. यावत् सेक परेशी मीलवान् हेव छे. ते सही रहे छे. आ

महाबलः, महायशाः, महासौरूयः, महातुभावः, पत्योपमस्थितिकः" इत्येषां सङग्रहो बोध्यः, एषां महर्द्धिकादिपदानां व्याख्याऽष्टमस्त्रतस्थ विजयद्वाराधिपविजयदेवप्रकरणा-द्बोध्या, एतादशो नोलबन्नाम देवः परिवसति, तेन तद्योगादिष गिरिरयं नोलबानित्युच्यते यद्धा-सन्ववेरुलियामए' सर्ववेद्धर्यमयः-सर्वात्मना वेद्ध्येरत्नमयः, तेन वेद्ध्येरत्नसमानार्थक नीलमणियोगान्नीलः, शेषं प्राग्वत्।

अथास्य शाश्वतत्वाशाश्वतत्वे पृच्छति-'णीलवंते जाद णिच्चेति' नीलवान् यावित्रत्य इति अत्रेदं स्त्रं वोध्यं तथाहि—''अदुत्तरं च णं गोयमा! णीलवंतेति सासए णामधिज्जे पण्णत्ते णीलवंते णं भंते! किं सासए असासए?, गोयमा! सिय सासए सिय असासए, से केणहेणं सिय सासए सिय असासए?, गोमाया! दवहुयाए सासए दण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं फास-पज्जवेहिं असासए, से तेणहेणं एवं बुच्चइं सिय सासए सिय असासए। णीलवंतेणं भंते! कालओं केविचरं होइ?, गोयमा! ण क्याइणासी ण क्याइण भवइण क्याइण भविस्सइ

यशाः, महासौख्यः, धहानुभावः" इन पदों का संग्रह हुआ है इन पदों की व्याख्या जानने के लिये अष्टम सूत्रस्थ विजय द्वाराधिय विजयदेव का प्रकरण देखना चाहिये' इस कारण हे गौतम! मैंने इस वर्षधर का नाम "नीलवान्" ऐसा कहा है अथवा यह पर्वत सर्वोत्मना वैडूर्यरत्नमय है-इसलियें वैडूर्यरत्न समानार्थक नीलमणि के योग से इसे नीलवान् कहा गया है। यह नीलवान् पर्वत यावत् नित्य है। इसके पहिले यहां "अदुत्तरं च णं गोयमा! णीलवंते ति सासए णामधिउजे पण्णत्ते। णीलवंते णं भंते! किं सासए असासए? गोयमा! सासए सिय असासए, से केणहेणं सिय सासए सिय असासए? गोयमा! द्व्वद्वयाए सासए, वण्णपज्जवेहिं गंधपउजवेहिं फासपउजवेहिं, असासए से तेण हेणं एवं वुव्वइ सिय सासए, सिय असासए णीलवंतेणं भंते! कालओ केव-िचरं होइ? गोयमा! ण कयाइ णासी ण कयाइ ण भवइ, ण कयाइ ण भविः

'महानुतिकः महावलः, महायशाः महासौरख्यः, महानुभावः' स्थे पहे। समृद्धीत थया छे. स्थे पहें। ती त्याप्या लाख्वा भाटे अप्टम सूत्रस्थ विकय द्वाराधिप विकयहेवनुं प्रकर्ख लेखुं कि श्रेश के श्रेश है श्रेश के श्रेश हैं। अप्यवा आपर्वत सर्वात्मना वैदूर्य रतन्त्रय छे स्थेश वेदूर्य रतन सभानार्थं के नीत मिखाना येशिश स्थाने नीतवान् के हेवामां आवेते। छे. त्या नीतवान् पर्वत यावत् नित्य छे. स्थेनी पूर्व अहीं 'अहुत्तरं च णं गोयमा । जीलवंतित सासए णामधिक्षेत्र पण्णते । जीलवंते णं भंते । कि सासए असासए । गोयमा । स्वय सासए सिय असासए से केणहेणं सिय सासए सिय असासए ! गोयमा । दन्त्रहुयाए सासए, ६ण्यवक्षत्रवेहिं गंधपक्षत्रवेहिं फासपक्षत्रवेहिं असासए से तेणहेणं एवं वुक्षद्व सिय सासए, सिय असासए । जीलवंतेणं भंते ! कालओ के विचर होई ! गोयमा । ण कयाई णासी ण कयाई ण भवइद ण कयाई ण भविष्सइ, भुविं च भवइय भविष्स

स्रुविच भवइय भविस्सइय धुवे णियए सासए अवखए अव्वए अविष्ठए णिच्चे'' इति अस्य व्याख्या चतुर्यस्त्रत्रदोकातो बोध्या, चतुर्थस्त्रत्रे पद्मवरवेदिका प्रसङ्गात्स्रीत्वेन व्याख्यातम् अत्र पुंस्त्वेन व्याख्येयमिति स्वयमूहनीयम्। अन्यत् सर्वे समानमेव बोध्यम् ॥स्र० ४३॥ अथ पश्चमं रम्यकाभिधं वर्षे वर्णियतुमुपक्रमते—''किह णं मंते!'' इत्यादि।

मूल्य्-किह णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे रम्मए णामं वासे पण्णते ?,
गोयमा ! णीलवंतस्स उत्तरेणं रुप्पिस्स दिख्लोणं पुरित्थमलवणसमुइस्स पच्चित्थमेणं पच्चित्थमलवणसमुद्दस्स पुरित्थमेणं एवं जह चेव हरिवासं तह चेव रम्मयं वासं भाणियव्वं, णवरं दिख्लणेणं जीवा उत्तरेणं
धणुं अवसेसं तं चेव । किह णं भंते ! रम्मए वासे गंधावई णामं वहवेयद्धपव्वए पण्णते ?, गोयमा ! णरकंताए पच्चित्थमेणं णारीकंताए
पुरित्थमेणं रम्मगवासस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं गंधावई णामं वहवेयद्धे पव्वए पण्णते, जं चेव वियडावइस्स तं चेव गंधावइस्स वि वत्तववं, अट्ठो बहवे उप्यलाइं जाव गंधावई णामं गंधावइण्पमःइं पउमे य
इत्थ देवे महिद्धीए जाव पिलओवमिट्टईए, रायहाणी उत्तरेणंति । से
केणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चइ रम्मए वासे २ ?, गोयमा ! रम्मगवासे णं
रम्मे रम्मए रमणिज्जे रम्मए य इत्थ देवे जाव परिवसइ, से तेणट्ठेणं०।
किह णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे रुप्पी णामं वासहरपव्वए पण्णते ?
गोयमा ! रम्मगवासस्स उत्तरेणं हेरण्णवयवासस्स दिख्लोणं पुरित्थ-

स्सइ, सुविं च भवइ य भविस्सइ य धुवे णियए सासए अक्खए अब्बए अबिहए णिच्चे'' इस सूत्र की व्याख्या चतुर्य सूत्र की टीका से जाननी चाहिये ये पद वहां पद्मवर वेदिका के विशेषणभूत होने से स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त हुए हैं और यहां पर पुलिङ्गह्य नीलवन्त के विशेषणभूत होने से पुल्लिङ्ग में प्रयुक्त किये गये हैं। अविशिष्ट और सब कथन समान ही है। 1881।

इय घुवे णियए सासए अक्खर अव्वए अविट्टिए णिच्चे' આ સૂત્રની વ્યાખ્યા ચતુર્થ સૂત્રની ટીકામાંથી વાંચી લેવી જોઇએ. એ પેદા ત્યાં પદ્મવર વેદિકાના વિશેષણાના રૂપમાં પ્રયુક્ત થયા છે તેથી ત્યાં એમના પ્રયાગ સ્ત્રી લિંગમાં કરવામાં આવેલ છે. અહીં એ પેદા નીલ- વન્તના વિશેષણ ભૂત દ્વાવાથી પુલિંગમાં પ્રયુક્ત થયેલા છે. શેષ અધું કથન સમાન જ છે. ॥ સૂત્ર-૪૩ ॥

मलवगसमुद्दस्स पञ्चित्थमेणं पच्चित्थमलवणसमुद्दस्स पुरित्थमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे रूपी णामं वासहरपव्वए पण्णते पाईणपडीणायए उदीणदाहिणवित्थिण्णे, एवं जा चेव महाहिमवंत वत्तव्वया सा चेव रुप्पिस्स वि, णवरं दाहिणेणं जीवा उत्तरेणं घणु अवसेसं तं चेव महा पुंडरीए दहे णरकंता णई दिक्खणेणं णेयव्या जहा रोहिया पुरित्थमेणं गच्छइ, रुष्पकूळा उत्तरेणं णेयव्या जहा हरिकंता पचरिथमेणं गच्छइ, अवसेसं तं चेवति। रुप्पिमि णं भंते। वासहरपव्यए कइकूडा पण्णता?, गोयमा ! अडकूडा पण्णत्ता, तं जहा-सिद्धे १ रूपी २ रम्मग ३ णर-कंता ४ बुद्धि ५ रूपकुला य ६ । हेरण्णवय ७ मणिकंचण ८ अट्र य रुपिनि कुडाई ॥१॥ सब्बे वि पंचसइया रायहाणीओ उत्तरेण । से केणहुणं भंते ! एवं बुच्चइ रूप्यी वासहरपञ्चए २ ?, गोयमा ! रूप्पी णं वासहरपटवए रूप्पी रूपपट्टे रूप्पोभासे सटबरूप्पामए रूप्पी य इत्थ देवे पिल्छोनमट्टिईए परिवसइ, से एएणट्टेणं गोयमा ! एवं वुच्चइति । कहि णं भंते ! जंबुदीने दीने हेरएणवए णामं नासे पण्णते ?, गोयमा ! रुप्पिस्स उत्तरेणं सिहरिस्त द्विखणेणं पुरित्थमलः णसमुद्दस्स पचरिथः मेणं पञ्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरित्थिमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे हिरण्ण-वए वासे पण्णासे, एवं जह चेव हेनवयं तह चेव हेरण्णवयंपि भाणि-यद्वं, णवरं जीवा दाहिणेगं उत्तरेणं घणुं अवसिट्टं तं चेवति । कहि णं भंते! हेरण्णवए वासे मालवंत परियाए णामं वट्टवेथद्ध पव्वए पण्णते?, गोयमा । सुवण्णकूलाए पचित्थिमेणं रूप्पकूलाए पुरित्थमेणं एत्थ णं हेरण्यवयस्स वासस्स बहुमज्झदेसभाए माळवंतपरियाए णामं वट्टवेयद्धे पण्णेसे जह चेत्र सदावई तह चेत्र मालवंतपरियाए वि, अहो उप्पलाई प्रमाइं मालवंतप्पभाइं मालवंतवण्णाइं मालवंतवण्णाभाइं पभासे य इत्थ देवे महिद्धीए जाव पिलओवमद्विईए परिवसइ, से एएणट्टेणं०, रायहाणी उत्तरेणंति। से केणट्रुणं भंते! एवं वुच्चइ-हेरणगवए वासे २१, गोयमा । हेरएणवए णं वासे रूप्पीसिहरीहिं वासहर व्हर्पहिं दुहओ समवगूढे जिच्चं हिरणणं दलई जिच्चं हिरणणं मुंचइ जिच्चं हिरणणं पगासइ हेरण्णवए य इत्थ देवे परिवसइ से एएणट्रेजंति ।

कहि णं भंते ! जंबुरीवे दीवे सिहरी णामं वःसहरपव्यए पण्णते ? गोयमा ? हेरण्णवयस्स उत्तरेणं एरावयस्स दाहिणेणं पुरस्थिमलवण-समुद्दस्स पचित्थियेणं पचित्थिमछवणसमुद्दस्स पुरिष्धमेणं, एवं जह चेव चुल्लिहिमवंतो तह चेत्र सिहरी ति, णत्ररं जीत्रा दाहिणेलं धणुं उत्तरेणं अवसिद्धं तं चे १ वुंडरीए दहे सुवण्यक्ळा महाणई दान्णिणं णेयव्वा जहा रोहियंसा पुरित्थमेणं गच्छइ, एवं जह चेव गंगासिंधूओं तह चेव रत्तारत्तवईओ णेयव्याओ पुरस्थिमेणं रत्ता पञ्चस्थिमेणं रत्तवई अवसिट्टं तं चेव (अवसेसं भाणियव्वंति) सिहरिमिन णं भंते । वासहरपव्वए कइ कूडा पण्णता ?, गोयमा ! इक्कारसकूडा पण्णता, तं जहा-सिद्धाययण-कूडे १ सिहरिकूडे २ हेरण्णवयकूडे ३ सुनण्णकूछाकूडे ४ सुगदेनीकुडे ५ रत्ताकूडे ६ लच्छीकूडे ७ रत्तवईकूडे ८ इल।देवीकूडे ९ एरवयकूडे १० तिगिच्छिकूडे ११ एवं सब्वे वि कूडा पंचसइया रायहाणीओ उत्तरेणं। से केण्डें भंते ! एउमुचइ-सिहरिवासहरपव्वए २ ?, बोय ॥ ! सिह-रिंमि वातहरपव्यए बहवे कूडा सिहरि संठाणसं ठेया सव्यरयणामया सिहरी य इत्थ देवे जाव पश्विसइ, से तेणट्रेणं०।

कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे एरावए णामं वास पण्यत्ते ?, गोयमा ! सिहरिस्स उत्तरेणं उत्तरलवणसमुद्दस्स दिवलणेणं पुरिधम-लवणसमुद्दस्स पद्यत्थिमेणं पद्यत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरिथमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे एरावए णामं वासे पण्यत्ते, खाणुबहुले कंटकबहुले एवं जा चेव भरहस्स वत्तव्वया सा चेव सव्या निरविसा णेयव्वा सओअ-वणाय सणिक्लमणा सपरिनिव्वाणा णवरं प्रावओ चक्कबही एरावओ देवो, से तेणट्टेणं प्रावए वासे २ ॥सू० ४४॥

छाया-क खळ भदन्त ! जम्बूद्वीपे द्वीपे रम्यकं नाम वर्षं प्रज्ञप्तम् ?, गौतम ! नीलवत ऊत्तरेण रुविमणो दक्षिणेन पौर्स्त्यळवणसम्रुद्रस्य पश्चिमेन पश्चिमलदणसम्रुद्रस्य पौर्स्त्येन एवं यथैव इरिवर्ष तथैव रम्यकं वर्ष भणितव्यं, नवरं दक्षिणेन जीवा उत्तरेण धनुः अवशेषं तदेव । अत्र खलु भदन्त ! रम्यके वर्षे गन्धापाती नाम घुलवैताढचपर्वतः प्रज्ञप्तः ?, गौतम ! नरकान्तायाः पश्चिमेन नारीकान्तायाः पौरस्त्येन रम्यकवर्षस्य बहुमध्यदेशभागे अत्र खलु गन्धापाती नाम वृत्तवैताढ्यः पर्वतः प्रज्ञसः, यदेव विकटापातिनस्तदेव गन्धापातिनोऽिष वक्कव्यम् , अर्थो बहूनि उत्पर्शनि यावद् गन्धापातिवर्णानि गन्धापातिव्रभाणि पद्मश्रात्र देवोः महर्द्धिको यात्रत् पल्योपमस्थितिकः परिवसति, राजधानी उत्तरेणेति अथ केनार्थेन भदन्त! एवप्रचयते-रम्य हं वर्षम् २ ?, गौतम ! रम्यकवर्षे खल्ल रम्यं रम्यकं रमणीयं रम्यकश्रात्र देवो यावत् परिदसति, तत् तेनार्थेन० । क्व खलु भदन्त ! जम्युद्वीपे द्वीपे रुक्मीनाम वर्ष-धरपर्वतः प्रज्ञप्तः ?, गौतम ! रम्यवर्षस्य उत्तरेण हैरण्यवतवर्षस्य दक्षिणेन पौरस्त्यलवणसञ्च-द्रस्य पश्चिमेन पश्चिमलवणसम्रदस्य पौरस्त्येन अत्र ख्ळु जम्बुद्वीपे द्वीपे रुक्मी नाम वर्षधर-पूर्वतः प्रज्ञप्तः प्राचीनप्रतीचीनायतः उदीचीनदक्षिणविस्तीर्णः, एवं यैव महाहिमबद्धक्तव्यतः सैव रुक्मिणोऽपि, नवरं दक्षिणेन जीवा उत्तरेण धणुः अवशेषं तदेव महापुण्डरीको हुदः नरकान्ता नदी दक्षिणेन नेतब्या यथा रोहिता पौरस्त्येन गच्छति, रूप्यकूला उत्तरेंग नेतब्या यथा दरिकान्ता पश्चिमेन गच्छति, अवशेषं तदवेति । रुचिमणि खलु भदन्त ! वर्षपरपर्वते कतिकुटानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! अष्ट कुटानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-सिद्धं १ रुक्मि २ रम्यकं ३ नरकान्ता ४ बुद्धि ५ रूपकूला ६ च । हैर्ण्यवर्त ७ मणिकाञ्चन ८ मष्ट च रुक्मिणि कुरानि ॥१॥ सर्वाण्यपि एतानि पश्चशतिकानि, राजधान्य उत्तरेण । अथ केनार्थेन भद्रतः! चन्नमच्यते - रुक्मी वर्षधरपर्वतः २ ?, गौतम ! रुक्मी खळु वर्षधरपर्वतः रुक्मी रूप्यपदः क्ष्यावभासः सर्वेरूप्यमयः हक्मीचात्र देवः यावत् परयोपमस्थितिकः परिवसित, स तेनार्थेन गौतम ! एवप्रच्यत इति । वर खलु भदन्त ! जम्बूद्धीपे द्वीपे हैरण्यवतं नाम वर्षे प्रज्ञप्तम् ?, गौतम ! हिन्मण उत्तरेण शिस्वारिणो दक्षिणेन धौरस्त्यलवणसप्रदस्य पश्चिमेन पश्चिमलदण-समुद्रस्य पौरस्त्येन अत्र खल्ल जम्बुद्धीपे द्वीपे हैरण्यवतं वर्षे प्रज्ञप्तम्, एवं यथैव हैमवतं तथैव हैरण्यवतम्पि भणितव्यम्, नवरं जीवा दक्षिणेन उत्तरेण धनुः अविशष्टं तदेवेति । क्व खळ भदन्त ! हैरण्यवते वर्षे मारुपवत्पर्यायो नाम वृत्तवैताढ्यपर्वतः अज्ञप्तः ?, गीतम ! सुवर्ण-क्छायाः पश्चिमेन रूप्यक्तायाः पौरस्त्येन अत्र खळ हेरण्यवतस्य वर्षस्य बहुमध्यदेशमाने माल्यवत पर्यायो नाम वृत्तवैताढचाः प्रज्ञप्तः यथैव शब्दापाती तथैव माल्यवत्पर्यायोऽपि, अर्थ उत्पळानि पद्मानि माल्यवत्प्रभाणि माल्यवद्दणीनि माल्यवद्दणीमानि प्रभासश्चात्र देवी मह-र्द्धिको यावत् पत्योपमस्थितिकः परिवसति, स एतेनार्थेन०, राजधानी उत्तरेणेति । अध-केनार्थेन भदन्त ! एत्रमुच्यते -हेरण्यवतं वर्षम् २ ?, गौतम ! हैरण्यवतं खळ वर्षे रुक्तिम शिख-रिभ्यां वर्षभरपर्वताभ्यां द्विभातः समुपगूढं मित्यं दिरण्यं ददाति नित्यं दिरण्यं मुश्चिति नित्यं

हिरण्यं प्रकासयति हैरण्यवतश्रात्र देव: परिवसति स एतेनार्थेनेति ।

वन छलु भदन्त! जम्बूद्वीपे द्वीपे शिखरीनाम वर्षधरपर्वतः प्रद्वसः ?, गौतम! हैरण्य-वतस्य उत्तरेण ऐरावतस्य दक्षिणेन पौरस्रयलवणसमुद्रस्य पश्चिमेन पश्चिमलवणसमुद्रस्य पौर-स्त्येन, एवं यथैन शुद्रहिमवान् तथैन शिखरीप नवरं जीना दक्षिणेन धनुष्करेण अन्निष्ठं तदेव पुण्डरीको हृदः मुन्नर्णकूला महानदी दक्षिणेन नेतव्या यथा रोहितांना पौरस्त्येन गच्छति, एवं यथैन मङ्गासिन्धू तथैन रकारकावत्यौ नेतव्ये, पौरस्त्येन रका पश्चिमेन रकावती अविक्षिण्टं तदेन, 'अवदोषं भणितव्यमिति'। शिखरिणि खल्ड भदन्त! वर्षधरपर्वते कित कूटानि प्रद्यक्षानिः, गौतम! एकादन्न कूटानि प्रद्यमानिः? तद्यथा-सिद्धायतन कूटं ? शिखरि-कूटं र हरण्यवतकूटं ३ मुन्नर्णकूलाकृटं ४ मुरादेनीकूटं ५ रकाकूटं ६ लक्ष्मीकूटं ७ रकावती-कूटम् ८ इलादेनीकूटम् ९ ऐरावतकूटं १० तिगिच्छिकूटम् ११, एवं सर्वाण्यपि कूटानि पश्च-ग्रतिकानि राज्ञवान्य उत्तरेण। अथ केनार्थेन मदन्त! एनग्रच्यते शिखरि दर्षधरपर्वतः २ १, गौतम! शिखरिणि वर्षधरपर्वते बहुनि कूटानि शिखरिसंस्थानसंस्थितानि सर्वरत्नमयानि शिखरी चात्र देवो यावत् परिवसति, स तेनार्थेन०।

वत्र खल भदन्त ! जम्ब्द्धीपे द्वीपे ऐरावतं नाम वर्षे प्रज्ञप्तम् ?, गौतम ! शिखरिण उत्तरेण उत्तरलवणसमुद्रस्य दक्षिणेन पौरस्त्यलवणसमुद्रस्य पश्चिमेन पाश्चात्यलवणसमुद्रस्य पौरस्त्येन, अत्र खल जम्बूद्धीपे द्वीपे ऐरावतं नाम वर्षे प्रज्ञप्तम्, स्थाणुबहुलं कण्टक्षबहुलम् एवं यैव भरतस्य वक्तव्यता सेव सर्वी निरवशेषा नेतव्या ससाधना सनिष्क्रमणा सपरिनिर्वाणा नवरमैरावतश्चक्रवर्ती ऐरावतो देवः, स तेनार्थेन ऐरावतं वर्षम् २ ॥ ॥ ३४॥

टीका—''किह णं भंते! जंबुदीवेर'' इत्यादि—क्व खल्ल भदन्त! जम्बूद्वीपे द्वीपे 'रम्मए-णामं' रम्यकं नाम 'वासे' वर्ष 'पण्णत्ते ?' प्रज्ञप्तम्, इति प्रश्नस्य मगवानुत्तरमाह—'गोयमा !' गौतम! 'णोल्वंदस्स' नीलवतः पर्वतस्य 'उत्तरेणं' उत्तरेण उत्तरदिशि 'रुप्पिस्स' रुक्मिणः

रम्यकक्षेत्रवक्तव्यता-

'कहिणं अंते! जंबुदीवे दीवे रम्मए णामं वासे पण्णत्ते' इत्यादि ।

टीकार्थ-गौतमने इस सूत्र द्वारा प्रभु से ऐसा पूछा है- 'कहि णं भंते ! जंबू-हीवे २ रम्मए णामं वासे पण्णत्ते' हे भदन्त ! इस जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में रम्यक नामका क्षेत्र कहां पर कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा! णीलवंतस्स उत्तरेणं रुप्पिस्स द्खिणेणं पुरित्थमलवणसमुदस्स

२२४५ क्षेत्र वक्ष्तव्यता

'कहि णं भंते! जंगुदीवे दीवे रम्मए णामं वासे पण्पत्ते ? इत्यादि'

टीकार्थ-गीतमे असुने आ सूत्र वडे प्रश्न क्यें छे के-'कहिणं मंते! जंबूदीवे २ रम्मए णामं वासे पण्णत्तें हे सहंत! आ कंजूदीय नामक दीपमां २म्थक नामे क्षेत्र क्या स्थणे आवेद्धं छे. योना कवालमां प्रसु कंड्रे छे-'गोयमा! जीलवंतस्स उत्तरेणं रुपिस्स दक्खिणेणं

अग्रे वक्ष्यमाणस्य तम्नामकस्य वर्षधरपर्वतस्य 'दिक्खणेणं' दक्षिणेन-दिक्षणदिशि 'पुरित्थमल-वणसमुद्रस्य' पौरस्त्यल्वणसमुद्रस्य पूर्वदिग्वर्ति लवणसमुद्रस्य 'प्चित्थिमेणं' पौरस्त्येन-पश्चिम-दिश्चि 'पिन्वित्थमलवणसमुद्रस्य' पश्चिमलवणसमुद्रस्य 'पुरित्थमेणं' पौरस्त्येन-पूर्वदिशि 'प्वं' एवम् एतादृशेनाभिलापकेन 'जदृवेव' यथैव येनैव प्रकारेण 'दिवासं' हरिवर्ष भणितं 'तदृवेव' तथैव तेनैव प्रकारेण 'रम्मयं वासं' रम्यकं वर्ष 'भाणियव्वं' भणितव्यं-वक्तव्यम् , अत्र हरिवर्षापेश्चया यो विशेषस्तं प्रदर्शयितुमाह-'णवरं' नवरं केवलं 'दिवखणेणं' दिक्षणेन दिक्षणिदिशि 'जीवा' जीवा-धनुः प्रत्यश्चाकारप्रदेशः 'उत्तरेणं' उत्तरेण उत्तरदिशि 'धणुं' धनुः-धनुष्पृष्ठम् 'अवसेसं' अवशेषम्-अवशिष्टं विष्कम्भायामादिकम् 'तं चेव' तदेव हरिवर्ष-प्रकरणोक्तमेव बोध्यम् । अथ पूर्व सत्रे नारीकान्ता नदी रम्यकवर्ष गच्छन्ती गन्धापातिवृत्तवैताद्यपर्वतं योजनेनासम्प्राप्ता पश्चिमाभिमुखी परावृत्ता सतीत्याद्युक्तं तत्र गन्धापाती नाम वृत्तवैतादयपर्वतः कुत्रास्तीति पृच्छति—'कहिणं भते !' इत्यादि—कव खलु भदन्त ! 'रम्मए वासे' रम्यके वर्षे 'गंधावर्षणामं' गन्धापाती नाम 'वहवेयद्धे पव्वष्ट' वृत्तवैतादयः पर्वतः

पच्चित्थमेणं पच्चित्थमलवणसमुद्दस पुरित्थमेणं एवं जह चेव हिरवासं तह चेव रम्मयं वासं भाणियव्वं हे गौतम! नीलवन्त पर्वत की उत्तर-दिशा में, एवं रुक्मि पर्वत की दिक्षणिदिशा में, पूर्वदिग्वर्ती लवणसमुद्र की पश्चिमिदशा में तथा पश्चिम दिग्वर्तालवण समुद्र की पूर्वदिशा में हरिवर्ष क्षेत्र के जैसा रम्यक क्षेत्र कहा गया है परन्तु हरिवर्ष क्षेत्र की अपेक्षा जो विशेषता है वह 'णवरं दिक्खणेणं जीवा उत्तरेणं धणुं अवसेसं त चेव' ऐसी है कि इसकी जीवा दिक्षणिदशा में है और धनुष्युष्ठ उत्तरिदशा में है इसके सिवाय और कोई विशेषता नहीं है सब कथन हरिवर्ष क्षेत्र के जैसा ही है 'कहिणं भंते! रम्मए वासे गंधावईणामं वहवेयद्धपःवए' गौतमने इस सूत्र हारा प्रभु से ऐसा पूछा है-हे भदन्त! जो आपने पहिले कहा है नारीकान्ता नदी रम्यक वर्षकी ओर जाती हुई गन्धापाती बृत्त वैताहय को एक योजन दूर छोड देती है सो यह गन्धा-

पुरिश्यमछवणसमुद्दस्स पच्चित्थिमेणं पच्चित्थिमछवणसमुद्दस्स पुरित्थिमेणं एवं जहचेव हिरवासं तहचेव रम्मयं वासं भाणियव्वं' हे शौताश! नीसवन्त भर्णतनी ७त्तर दिशामां तेमक रुिम भर्णतनी दक्षिण दिशामां, भूर्ण दिश्वितीं सवण समुद्रनी पश्चिम दिशामां तथा पश्चिम दिश्वितीं सवण् समुद्रनी भूर्व दिशामां हिरवर्ष क्षेत्र केयुं रम्यह् क्षेत्र आवेषुं छे. परंतु हिरवर्ष क्षेत्रनी अभेक्षाओं आ क्षेत्रमां के विशेषता छे ते 'णवरं दिश्विणेणं जीवा उत्तरेणं धणुं अवसेसं तं चेव' आ प्रमाणे छे हे ओनी छवा दक्षिण दिशामां छे अने धनुष्पृष्ठ उत्तर दिशामां छे ओना सिवाय जीछ है। विशेषता नथी. शेष अधुं उथन हिरवर्ष क्षेत्र केयुं क छे. 'कहिणं मंते! रम्मए वासे गंधावई णामं बट्टवेयद्वपटवए' गौतम स्वामीओ आ सत्र पडे प्रभुने आ कातना प्रक्ष हथीं छे है हे भदन । के आपक्षीओ पहेलां हतुं छे हे नारी- क्षान्ता नदी रम्थ वर्ष तरह वहेती गन्धा पाती वृत्तवैताद्वन के अह थे। कन दूर मुहे छे ते। आ

'पण्णत्त' प्रझप्तः ?, इति प्रश्नस्य भगवानुत्तरमाह—'गोयमा !' गौतम ! 'णरकंताए' नरकान्ताया महानद्याः 'पच्चित्थमेणं' पश्चिमेन—पश्चिमिदिशि 'णारीकंताए' नारीकान्ताया नद्याः 'पुरित्थमेणं' पौरस्त्येन—पूर्विदिशि 'रम्मगवासस्स' रम्यकवर्षस्य 'बहुमज्झदेसभाए' बहुमध्य-देशभागे—अत्यन्तमध्यदेशभागे 'पत्थ' अत्र—अत्रान्तरे 'णं' खळ 'गंधावई णामं' गन्धापाती नाम 'बहुवे'यद्ध पत्रवए' बृत्तवैताढचपर्वतः 'पण्णत्ते' प्रझप्तः, अस्य वर्णनं विकटापातिवृत्तवै-ताढचपर्वतः 'पण्णत्ते' प्रझप्तः, अस्य वर्णनं विकटापातिवृत्तवै-ताढचपर्वतवत् प्रदर्शियतुमाह—'जं चेव' वियडावइस्स' यदेव विकटापातिनो वर्णनं 'तं चेव' तदेव वर्णनं 'गंधावइस्सवि' गन्धापातिनोऽपि 'वत्तव्वं' वत्तव्यम्, अत्र समानक्षेत्रस्थितिकत्वादिकटापातिन प्रवातिदेशः, तेन सविस्तरनिरूपितस्यापिशव्दापातिनोऽतिदेशामावे न क्षतिः अत्र गन्धापात्यपेक्षया यो विशेषस्तमाइ—'अहो' अर्थः—वक्ष्यमाणो नामार्थः तथादि—'वहवे' वहुनि—प्रचुराणि 'उप्पलाइं' उत्पलानि कुवलयानि चन्द्रविकाशीनि कमलनि 'जाव' यावत्

पाती वृत्त वैताहय पर्वत रम्यम क्षेत्र में कहां पर हैं ? इसके उत्तर में प्रमु कहते है—'गोयमा! णरकंताए पच्चित्थमेणं णारीकंताए पुरित्थमेणं रम्मगवासस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं गंधावईणामं वहवे अद्धे प्रव्यए पण्णत्ते' हे गौतम! नरकाता नदी की पिश्रमिदिशा में एवं नारीकात्ता नदी की पूर्विदिशा में रम्यक क्षेत्र में उसके बहुमध्यभाग में यह गन्धापाती नामका वृत्तवैताहय पर्वत कहा गया है 'जं चेवं वियडावइस्स तंचे व गंधावइस्स वि वत्तव्वं' इसका वर्णन विकटापाति वृत्तवैताहय पर्वत के जैसा जानना चाहिये यह विकटापाति वृत्तवैताहय पर्वत हि सेत्र में स्थित कहा गया है उसकी उच्चता आदि के जैसी ही इसकी उच्चता आदि है यहां पर विस्तार रूप से निरूपित किये गये शब्दापाती वृत्तवैताहय पर्वत के अतिदेश को छोड कर जो विकटापाति पर्वत का अतिदेश किया गया है उसका त्रांव है। गन्धा-

शन्धावाती वृत्तवैतादय पर्वत रम्यक क्षेत्रमां क्यां स्थणे आवेद्दे। छे ? अना क्वालमां प्रसु क्षेत्र छे—'गोयमा ! णरकांताए पच्चित्यमेणं णारीकंताए पुरिश्वमेणं रम्मगवासस्स बहुमज्झ देसमाए एत्यणं गंधावई णामं बहुवेअद्धे पव्वए पण्णत्ते' हे शैतम ! नरकान्ता नहीनी पश्चिम हिशामां तेमक नारी अन्ता नहीनी पूर्व हिशामां रम्यक क्षेत्रमां तेना अहुमध्य साशमां आ शन्धापाती नामे वृत्त वैतादय पर्वत आवेद्दे। छे. 'जं चेव वियहावइस्स तं चेव गंधावइस्स चि दत्तव्वं' आतुं वर्णुन विषठापाति वृत्तवैतादय पर्वत करेतुं क काणुवुं कीर्ण ओ आ विषठापाति वृत्त वैतादय पर्वत हिशामां स्थित छे. ओनी उच्यता वगेरे केवीक उच्यता तेनी पश्च छे. अहीं विस्तार इपमां निरंपित करवामां आवेद्दा शण्डापाती वृत्तवैतादय पर्वतना अति देशने आह करीने के विषठापाति पर्वतना अति देश विशे केहेवामां आवेद्दां छे तेनुं कारश्च ओ अन्तेनी तुद्ध क्षेत्र स्थितिकता छे. शन्धा

यावत्यदेन-"पद्मानि कुमुदानि, निलनानि, सुभगानि, सौगन्धिकानि, पुण्डरीकाणि, महापुण्ड-रीकाणि, सहस्रपत्राणि शतसहस्रपत्राणि' इत्येषां पद्मानां सङ्ग्रहो बोध्यः, एषामधौँ विश्वतित्रम सत्त्रव्याख्यातोऽत्रसेयः, तानि कोद्यानि? इत्याद्द-"गंधावईवण्णाई' गन्धापातिवर्णानि गन्धापातिनाम द्वतीयवृत्तवैताढचपर्वतवर्णसद्दश्वर्णकानि 'गंधावइप्पभाई' गन्धापातित्रमाणि गन्धापातिवृत्तवेताढचपर्वतवर्णसद्दश्वर्णकानि 'गंधावइप्पभाई' गन्धापातित्रमाणि गन्धापातिवृत्तवेताढचपकाराणि सर्वत्र समत्वात्, तेन तद्वर्णत्वात् तदाकारत्वाच्च गन्धापातीत्येवमुच्यते, अस्याधिपमाद-"पउमे य इत्थ देवे' पद्मः-पद्मनामकः च अत्र अस्मिन् रम्यकवर्षे देवः अधिपः परिवसति स च कीदशः ? इत्याद-"महिद्धीए जाव पलिओवमिद्विईए' महिद्धिको यावत् पत्योपमस्थितिकः-"महिद्धिक' इत्यारभ्य 'पत्थ्योपमस्थितिक' इति पर्यन्तानां यावत्यद्स- इत्याद्माचानां पदानां सङ्ग्रहोऽर्थश्राष्टमस्त्राद्वोध्यौ, एतादृशो देवः परिवसति तेन तद्योगाचत् स्वामिकत्वाच्च गन्धापातीत्येवमुच्यते अस्य 'रायहाणी' राजधानी राजवसतिः 'उत्तरेणं' उत्तरेण-उत्तरदिश्च वोध्येति ।

अथ रम्यकवर्षनामकारणं वर्णयितुमाह—'से केणहेणं अंते!' अथ केन अथेन कारणेन पाती वृत्त्वैताहय की अपेक्षा जो विद्रोषता है उसे 'अहो बहवे उप्पलाई वण्णाई गंधावईप्पभाई पड़में अ इत्य देवे महिड्डिए जाव पिलओवमहिईए परिवसह' इस सूत्र बारा सूत्रकारने प्रकट किया है इसमें यह समझाया गया है कि यहां पर जो उत्पल आदि से लेकर शतसहस्त्र पत्र तकके कमल हैं वे सब गन्धापाति नामका जो तृतीयवृत्ता वैताहय पर्वत है उसके जैसे वर्णनवाले हैं और उसके जैसी प्रभावाले हैं तथा उसका जैसा आकार है उस आकार के हैं। अतः इसका नाम गन्धापाति वृत्तवैताहय पर्वत कहा गया है। दूसरी बात यह है कि यहां पर पद्म नामका महिद्दिक देव रहता है इसकी स्थिति एक पत्थोपम की है उत्पल से लेकर शत सहस्त्रपत्र तक के कमलों को जानने के लिये २० वें सूत्र की व्याख्या को तथा महिद्दिक पद से लेकर पत्योपम स्थिति के बीच के पदों को देखने के लिये अध्यम सूत्र को देखना चाहिये 'रायहाणी उत्तरेणंति' इस पद्म देव की राजधानी

पाती वृत्त वैतादयनी अपेक्षाओं के विशेषता छे, तेने 'अहो बहवे उपलाइं वण्णाइं गंधा-वर्दणभाइं पड़में अ इत्य देवे मिर्इटिए जात्र पिलओवमिट्टिइए परिवसइ' आ सूत्र पड़े सूत्रकारे प्रकट करी छे. लेभां आ वात स्पष्ट करवामां आवी छे हे अहीं के उत्यक्ष वजेरेथी शत न्सहस्त पत्र सुधीना क्रमणा छे ते अधां जन्धापाति नामें के तृतीय वैतादय पर्वत छे, तेना केवा वर्षावाणां है. अने तेना केवी प्रकावाणा छे तथा तेना केवा आक्षारवाणा छे. लेथी आनं नाम जन्धापाति वृत वैतादय पर्वत लेखें कहेंवामां आवेद्धं छे. जील वात आम छे है अहीं पद्मनामें ओक महर्द्धिक हेव रहे छे. लेनी स्थित लेक पद्योपम केटली छे. उत्पक्षथी मांडीने शत सहस्त्रपत्र सुधीना क्रमणा. विशे जाख्वा माटे २० मां सूत्रनी व्याप्याने तथा महर्द्धिक पद्यो मांडीने पद्योपम स्थिता वश्ये आवेद्धा पद्दीने लेवा माटे स्थानी विशे काख्वा महर्द्धिक पद्यो मांडीने पद्योपम स्थिति अप पद्दिवनी राकधानी उत्तर

भदन्त ! 'एवं बुचबइ' एवमुच्यते 'रम्मए वासे २' रम्यकं वर्षम् २ ?, इति भगवानाह-'गोयमा' गौतम ! 'रम्मगवासे' रम्यकवर्ष रम्यते-क्रीडचते बहुविधकल्पवृक्षैः काश्चनमणिमयै-स्तत्तत्प्रदेशैरतिरामणीयकेन रतिविषयीक्रियत इति रम्यं तदेव रम्यकं तच्च वर्षं चेति रम्यक वर्षम् 'णं' खलु 'रङमे रम्मए रमणिङले' रम्यं रम्यकं रमणीयम् एतानि त्रीण्यपि समानार्थ-कानि पदानि रामणीयकातिशयद्योतनार्थम्रपात्तानि 'रम्मए य इत्य देवे जाव परिवसइ' रम्य-कथात्र देवो यावत् परिवसति अत्र यावत्पदेन महर्द्धिकादि परयोपमस्थितिकान्तपदानां सङ्ग्र-होऽष्टम स्त्राद् वोध्यः, तदर्थोऽपि तत एवावगन्तच्यः, एताहको देवः परिवसति तेन तद्रम्यकं तद्योगाद् रम्यक मित्येवमुच्यते । अथ रुविमनामकं पश्चमं वर्षधरपर्वतं वर्णयितुमुपक्रमते-'कहि णं भंते !' इत्यादि-क्व खळु भदन्त ! 'जंबुद्दीवे दीवे' जम्बुद्धीपे द्वीपे 'रुप्पी णामं वासहरपन्त्रए' रुक्ती नाम वर्षधरपर्वतः 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तः, इति प्रश्नस्य भगतानुत्तरमाह-'गोयमा !' गौतम ! 'रम्प्रग्वासस्प्त' रम्यकवर्षस्य 'उत्तरेणं' उत्तरेण उत्तरदिशि 'हेरण्णवय-इसकी उत्तर दिशा में है। 'से केणडेणं अंते! एवं बुच्चइ रम्मए वासे २' हे भदन्त ! इस क्षेत्र का नाम 'रम्यक' ऐसा किस कारण से आपने कहा है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा! रम्मगवासेणं रम्मे रम्मए रमणिज्जे, रम्मए अ एत्थ देवे जाव परिवसइ से तेणहेणं ॰ हे गौतम ! यहां पर नाना प्रकार के कल्पवृक्ष है और स्वर्णमणि खचित अनेक प्रकार के प्रदेश है इससे यह क्षेत्र रमणीय हो रहा है अतः इसी कारण इस क्षेत्र का नाम रम्यक् ऐसा कहा गया है रम्य रम्यक रमणीयक ये एक ही अर्थ के बाचक शब्द है। दूसरी बात यह भी है कि इस रम्थक क्षेत्र में रम्यक नामका देव रहता है अतः इस महर्द्धिक देव आदि के संवन्ध से भी इसका नाम रम्यक ऐसा कहा गया है 'कहि णं भंते! जंबुदीवे दीवे रूपी णाां वासहरपव्वए पण्णत्ते' अब गौतमने प्रभु से ऐसा

हिशामां आवेली छे. 'से केणहुंणं मंते! एवं बुच्चइ रम्मए वासे २' छे लहंत! क्षेत्रनुं नाम 'रम्यह' खेलुं शा हारख्यी आपश्रीओ हहुं छे? खेना कवालमां प्रलु हुंछे छे—'गोयमा! रम्मगत्रासेणं रम्मे रम्मए रमणिन्ते रम्मए छा एत्य देवे जाव परिवसइ से तेणहुं लं े छे जीतम! अहीं अनेह प्रहारना हृद्धा छे अने स्वखुंभिष्णु अधित अनेह प्रहारना प्रदेशा छे. आधी आ क्षेत्र रमखीय यहं अर्थुं छे. खेटला माटे क आ क्षेत्रनुं नाम रम्यह खेलुं प्रसिद्ध यहं अर्थुं छे. रम्य, रम्यह, रमखीय को लघां समानार्थी शल्दो छे. लीळ वात आ छे हे आ रम्यह क्षेत्रमां रम्यह नाम देव हुं छे. खेथी आ महिद्ध हैव वगेरेना संलंध्यी पत्तु आ क्षेत्रनुं नाम रम्यह खेलुं हुं हुंवामां आव्युं छे. 'हहिणं मंते! जंबुदीवे दीवे रूपी णामं वासहरपञ्चए पण्णत्ते' हुवे गौतमे प्रभुने आ कातना प्रक्ष हुथें छे है हुवे सहंत! आ कम्युदीप नामह दीपमां रहूमी नामें वर्षधर पर्वत ह्या स्थणे आवेला छे?

पूछा है कि हे भदन्त इस जम्बूद्धीप नामके द्वीप में रुक्मी नामका वर्षधर पर्वत

वासस्स' हेरण्यवतवर्षस्य हैरण्यवतक्षेत्रस्य 'दिक्खत्तेणं' दक्षिणेत-इक्षिणदिश्व 'पुरिधमछवण-समुद्दस्त' पौरम्हयळवणसमुद्रस्य-पूर्वळवणसमुद्रस्य 'पचित्थिमेणं' पश्चिमेन-पश्चिमदिश्चि 'पच-त्थिमलवणसमुद्दस्त' पश्चिमलवणसमुद्रस्य 'पुरत्थिमेगं' पौरस्त्येन-पूर्वदिशि 'एत्य' अत्र-अत्रान्तरे 'णं' खल 'जंबुद्दीवे दीवे' जम्बूद्वीपे द्वीपे 'रुप्पी' रुप्मी 'णामं' नाम 'वासहरपट्यए' वर्षधरपर्वतः 'पण्णते' प्रज्ञप्तः स च 'पाईणपडीणायए' प्राचीनप्रतीचीनायतः-पूर्वपश्चिमधोर्दिशो र्दीर्घः 'उदीणदाहिणवित्थिण्णे' उदीचीनदक्षिणविस्तीर्णः उत्तरदक्षिणयोर्दिशो विस्तारयुक्तः 'ष्वं' एवम्-पूर्वोक्ता मिलापकानुसारेण 'जा चेव' यैव 'महाहिमबंतवत्तव्वया' महाहिमद्रक्तव्यता महाहिमवतो वर्षधरपर्वतस्य वक्तव्यता वर्णनपद्धतिः 'सा चेव' सैव वक्तव्यता 'रुप्पिस्स वि' रुक्षिमणोऽपि अस्य वर्षधरपर्वतस्य बोध्या, अथ हिमब्द्वर्षधरपर्वतापेक्षयाऽस्य यो विशेषस्तं प्रदर्शियतुमाह-'णवरं' नवरं केवलं 'दाहिणेणं' दक्षिणेन-दक्षिणदिशि 'जीवा' जीवा धनुः प्रत्यश्चाकार प्रदेशः 'उत्तरेणं' उत्तरेण-उत्तरदिशि 'घणु' धनुः-धनुष्पृष्ठम् 'अवसेसं' अव-कहां पर कहा गया हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं - 'गोयमा ! रम्मगवासस्स उत्तरेणं हेरण्णवयवासस्स दिक्लणे गं पुरित्थमलवणसमुद्दस्स पच्चित्थमेणं पच्चित्थमल-बणसमुद्दस्स पुरित्थमे णं एत्थणं जंबुद्दीवे दीवे रुप्तीणामं वासहरपव्वए पण्णत्तेत्ति' हे गौतम ! रम्यक क्षेत्र की उत्तरदिशा में एवं हैरण्यवत क्षेत्र की दक्षिणदिशा में. पूर्वदिग्वर्ती लवण समुद्र की पश्चिमदिक्षा में तथा पश्चिम दिग्वर्ती लवण समुद्र की पूर्वदिशा में जम्बूद्वीप नामके द्वीप में रुक्ती नामका वर्षधर पर्वत कहा गया है 'पाईणगडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे' यह पर्वत पूर्व से पश्चिम तक लम्बा है एवं उत्तर से दक्षिण तक चौड़ा है 'एवं ज!चेव महाहिमवंते वत्तव्वया सा चेव रुप्पिस्स वि णवरं दाहिणेणं जीवा उत्तरेणं घणु अवसेसं तंचेव' इस तरह से जैसी वक्तव्यता महाहिमवान पर्वत के विषय में पहिले कही जा चुकी है वैसी ही षह सब वक्तव्यता रुक्मीवर्षधर पर्वत के सम्बन्ध में भी कहलेनी चाहिये इसकी

क्येना जवाणमां अलु ४६ छे 'गोयमा! रम्मगनासस्स उत्तरेणं द्देरण्णवयवासस्स दिवलिणं पुरित्थमलवणसमुद्दस्स प्रतिथमेणं पच्चित्थमलवणसमुद्दस्स पुरित्थमेणं एत्थ णं जंबुदीवे दीवे हृत्यी णामं वासहरपञ्चए पण्णते' हे गौतम! २२४४ क्षेत्रनी उत्तर दिशामां तेमज हैरएथवत क्षेत्रनी दक्षिणु दिशामां पूर्व दिश्वति लव्लु समुद्रनी पश्चिम दिशामां तथा पश्चिम दिश्वति लव्लु समुद्रनी पृत्व दिशामां जंजूदीप नामक द्वीपमां रुक्षमी नामे वर्षधर पर्वत भावेति छे. 'पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे' आ पर्वत पूर्वो पश्चिम सुधी लांगे छे अने उत्तरथी दक्षिणु सुधी पहेलों छे. 'एवं जा चेव महादिमवंते वत्तरवया सा चेव हिष्याम वि णवरं दाहिणेणं जीवा उत्तरेणं घणु अवसेसं तं चेव' आ प्रभाले जेवी वक्ष्त-भ्यता महादिमवंत प्रति पुर्वा पर्वतना विशे पहेलां केदेवामां आवी छे. तेवी ज वक्ष्तव्यता दुक्षमी पर्वतना स्थानम् पर्वतना विशे पहेलां केदेवामां आवी छे. तेवी ज वक्ष्तव्यता दुक्षमी पर्वतना संभामां पण् अद्धी सम्लावी केदिनी जिन्नी छनी क्षान्यता संभामां पण् अद्धी सम्लावी केदिनी जिन्नी क्षान्यता संस्व वि प्रतिना संभामां पण् अद्धी सम्लावी केदिनी जिन्नी क्षान्यता संस्व पर्वतना विशे पहेलां केदिना आवी छेति जेवी क्षान्यता संस्व पर्वतना संस्व संस्व पर्वतना संस्व संस्य संस्व संस

शेषम् — अविश्वष्टं विष्क म्मायामादि सम् 'तं चेव' तदेव — महा हिमवह पेधर पर्वत प्रकरणोक्त मेव कियम महाहिमवतो मिंथस्तु ल्यत्वात्, अथ किमवर्तिनं हूदं ति असत नदी श्राह — 'महा पुंडरी ए दहे' इत्यादि महा पुण्डरीको हूदः महाप बहूद सह शोऽत्र ततः 'ण रक्तंता णई' नरकानता नाम नदी किमिगिरे निर्मता 'दिक्खणेणं' दक्षिणेन — दक्षिणतोर णेन निर्मत्य प्रवहन्ती 'णेयव्वा' नेतव्या बोधविषयं प्रापणीया बोध्येत्यर्थः । तत्र हष्टान्तत्वेन नदी मुपन्यस्यति — 'जहा रोहिया' यथा रोहिता नदी महाहिमतो महाप बहूदतो दक्षिणोन निर्मता सती 'पुरित्यमेणं' पौरस्त्येन पूर्वदिशि 'गच्छइ' गच्छिति पूर्व छवणसमुद्रं याति, तथा नरका न्ताऽपि किमणो महापुण्डरीक हूदाद दक्षिणतोरणेन निरम्ता सती पूर्व छवणसमुद्रं गच्छित रोहिता नरका न्त्यो दक्षिणतोरणेन स्वस्वहूदा किःसरणं पूर्व समुद्रगमनं च समानि वित हण्टान्तदाष्टा नितक्रभावः । इति नरका नताव प्रमम्

अथ रिक्मवर्ति महापुण्डरीक ह्दािक्मितां रूप्यक्छां नदीं वर्णियतुमुपक्रते—'रूप्यक्छा' रूप्यक्छा नदीं 'उत्तरेणं' उत्तरतोरणेन महापुण्डरीक ह्दािक्मिता पश्चिमछवणसमुद्रं प्रविश्वन्ती 'णेयव्या' नेतव्या बोध्या, अत्र दृष्टान्तत्वेन नदीमुपन्यस्यति—'जहा हरिकंता' यथा येन प्रकारेण दिक्कान्ता तन्नामनी दिव्यक्षेत्रवाहिनी महानदी 'प्रचित्थमेणं' पश्चिमेन—पश्चिम-

जीवा-प्रत्यश्चाकार प्रदेश दक्षिणिदिशा में है और घनुष्णुट उत्तरदिशा में है। इस कथन के अतिरिक्त और सब कथन-विष्करम एवं आयामादि का वर्णन-जैसा महाहिमवीन पर्वत का कहा गया है वैसा ही है (महापुंडरीए दहे, णरकंता नदी, दिक्षणेणं णेयव्वा इस पर्वतपर 'महापुंडरीक नामका हूद है इससे नरकान्ता नामकी महानदी दक्षिण तोरण द्वार से निकली है 'जहा रोहिआ पुरिथमेणं गच्छइ' और यह पूर्वदिग्वर्ती लवण समुद्र में जा कर मिली है इस नरकान्ता नदी को वक्तव्यता रोहिता नदी के समान है अर्थात् महापद्माइद से दक्षिणतोरण द्वार से रोहिता नदी निकलकर पूर्व दिग्वर्ती लवण समुद्र में मिली है उसी प्रकार से यह भी महापुण्डरीक हूद से दक्षिण तोरण द्वार से निकल कर पूर्वदिग्वर्ती

दिक्षण दिशामां छे व्यने धतुष्पृष्ठ उत्तर दिशामां छे. आ इथन सिवाय शेष अधुं इथन-विष्ठं अ तेमक आयामाहिनुं वर्णन-केवुं महाहिमवान् पर्वत विशे हरवामां आवेद्धं छे तेवुं क समकवुं 'महा पुंडरीए दहे जरकंता नहीं, दिक्खणेणं जेयव्या' आ पर्वत उपर महा पुंडरीह नामे हुह छे. स्मांथी नरहान्ता नामे महानहीं हिस्खा तेहि द्वाराधी नीहणीं छे. 'जहां रोहिआ पुरस्थिमेणं गच्छइ' अने आ पूर्व हिन्वतीं सवख् समुद्रमां कहने मले छे. स्मा नरहान्ता नहींनी वहत्वव्यता राहिता नहींनी केम छे. स्मेदसे हे महापद्महृहधी हिस्खा तेहि द्वाराधी राहिता नहीं नीहणींने पूर्व हिन्वतीं सवख् समुद्रमां मणे छे. ते प्रमाखे क आ पख् महा पुंडरीह हुहधी-हिस्खा तेहि द्वाराधी नीहणींने पूर्व हिन्वतीं सवख् समुद्रमां प्रविष्ट थाय छे, 'रूपकूला उत्तरेणं जेयव्या जहा हरिकंता प्रचित्थमेणं गच्छइ' दिशि स्थितं लवणसमुद्रं 'गच्छइ' गच्छित तथा रूप्यक्त्लाऽिष बोध्या, अथाविष्टं स्वस्व-क्षेत्रवर्ति नदीवद्वर्णियतुं प्रदर्शयति—'अवसेसं तं चेवित्ति' अवशेषम्—अविष्टं गिरिगमनमुखमूळ-विस्तारनदी प्रभृति तदेव स्वस्यक्षेत्रवर्ति नदी प्रकरणोक्तमेव बोध्यम् तत्र नरकान्तानद्या हरिकान्ता नदी प्रकरणोक्तं शेषं रूप्यक्त्र्ञानद्यास्तु रोहिता नदी प्रकरणोक्तं बोध्यम्, यत्तु नरकान्तानद्या रोहितानदीवद्वर्णनिर्देशनं रूप्यक्त्र्ञानद्यास्तु हरिकान्तानदीवत्, तदेकदिङ्निः सरणमेकदिग्गमन माश्रित्य नतु विष्कम्भादिकमिति बोध्यम् । अथात्रक्टानि वर्णयितुमुप-क्रमते—'रुप्पिमि णं भंते !' इत्यादि प्रश्नद्वतं स्पष्टम्, उत्तरद्वत्रे 'गोयमा' गौतम ! 'अहु' अष्ट

ठवण समुद्र में मिली है 'रुष्कू जा उत्तरेणं णेयव्वा, जहा हरिकंता पच्चित्थिनेणं गच्छह' इसी रुक्मीवर्ती महापुंडरीक हद से उत्तर तोरण द्वार से रुप्यकूला नामकी महानदी भी निकली है और यह हरिकान्ता नदी की तरह पश्चिम दिग्वर्ती छवण समुद्र में जाकर मिली है हरिकान्ता नामकी महानदी हरिवर्ष क्षेत्र में चहती है 'अवसेसं तं चेवत्ति' बाकी का और सब गिरिगमन मुखमूल विस्तार आदि का कथन अपने २ क्षेत्रवर्तिनदी के प्रकरण में जैसा कहा गया है'-वैसा ही है। नरकान्ता नदी का दोष कथन हरिकान्ता नदी के प्रकरण के जैसा है हथ्यकूला नदी का दोष रोहिता नदी के प्रकरण के जैसा है। नरकान्ता नदी का वर्णन जो रोहिता नदी के वर्णन जैसा कहा गया है, वह तथा रूप्य कूला नदी का हरिकान्ता नदी के जैसा कहा गया है वह एक दिशा से निकलने की अपेक्षा तथा एकही नामकी दिशा में जाने की अपेक्षा छेकर कहा गया है विष्कम्भादिक की अपेक्षा छेकर नहीं कहा गया है।

'रूपिंमि णं भंते वासहरपञ्चए कइ कूडा पण्णाता' हे भदन्त ! रुक्मी नाम के इस वर्षधर पर्वत पर कितने कूट कहे गये हैं ? 'गोयमा ! अहकूडा पण्णाता'

આ રક્ષ્મીવર્લી મહા યુંડરીક હૃદથી ઉત્તર તારાષ્ટ્ર દારથી—રુપ્યકૂલા નામે મહા નદી પણ નીકળો છે. અને આ હરિકાન્તા નદીની જેમ પશ્ચિમ દિગ્રત્તી લવણ સમુદ્રમાં જઇને મળે છે. હરિકાન્તા નામે મહાનદી હરિવર્ષ ક્ષેત્રમાં વહે છે. 'अवसेसं तं चेवेति' શેષ ખધું ગિરિ ગમન મુખ મૂલ વિસ્તાર વગેરેનું કથન પાત—પાતાના ક્ષેત્રવર્તી નદીના પ્રકરણમાં જે પ્રમાણે કહેવામાં આવ્યું છે તે પ્રમાણે જ છે. નરકાન્તા નદી વિશેનું શેષ કથન હરિકાન્તા નદીના પ્રકરણ જેવું જ છે. નરકાન્તા નદીના પ્રકરણ જેવું જ છે. નરકાન્તા નદીના વર્ણન જેવું કહેવામાં આવેલું છે, તેમજ રુપ્યકૂલા નદીનું વર્ણન હરિકાન્તા ની જેવું કહેવામાં આવ્યું છે તે એક દિશાથી નીક-ળવાની અપેક્ષાએ તેમજ એકજ નામની દિશાાં વહેવાની અપેક્ષાએ કહેવામાં આવેલ છે. વિષ્કં ભાદિકની અપેક્ષાએ કહેવામાં આવ્યું નથી.

'रुपिमि ण भते! वासहरपव्यए कई कूडा पण्णता' & अहंत! 38भी नामना आ वर्षधर पर्वत अपर हैटेका क्षेट्री आवेका छे? 'गोयमा! अह कूडा पण्णता' & औतम! 'क्रडा' क्रटानि 'पण्णचा' प्रज्ञप्तानि 'तं ज्ञहा' तचथा-क्रटाष्टक नामनिर्देशाय गाथासप्रन्यस्यति— 'सिद्धे १' इत्यादि—सिद्धं -सिद्धायतनक्र्टं तच समुद्रदिशि वर्तत इति प्रथमम् १ 'रूप्पा' रुक्मी—रुक्षिक्र्टम्, तच पश्चमवर्षधरपतिक्र्टमिति द्वीतियम् २, 'रम्मग' रम्यकं-रम्पकक्र्टं तच रम्यक्षेत्राधिपदेवक्र्टं मूळे प्राकृतत्वाद्विमक्तिलोपः इति तृतीयम् ३ 'णरकंता' नरकान्ता नरकान्तानदी देवीक्र्टम् इति चतुर्थम् ४, बुद्धि' बुद्धि—बुद्धिक्र्टं—महापुण्डरीकहूददेवी क्र्टमिति पश्चमम् ५, 'रुप्पक्ला य' रूप्यक्रला च रूप्यक्रलानदी देवीक्र्टं च शब्दः समुच्चये इति पष्टं क्र्टम् ६ । 'हेरण्णवय' हैरण्यवतं—हैरण्यवतं क्र्टं हैरण्यवतक्षेत्राधिपदेवक्र्टम्, अत्र विभ-क्रिलोपः प्राकृतत्वात् इति सप्तमम् ७, 'माणिकंचण' मणिकाश्चनं—मणिकाश्चनक्र्टम् अत्रापि विमक्तिलोपः प्राग्वद्वोध्यः 'अट्ट' अष्ट 'रुप्पिमि' रुक्मिणिगिरी 'क्रडाइं' क्र्टानि शिखराणि प्रज्ञप्तानि ८ ॥ इति एतेषां मानं निरूपयति 'संव्वे वि एए' सर्वाणि अष्टापि एतानि अनन्त-रोक्तानि पूर्वापरायतश्रेण्या व्यवस्थितानि 'पंचसइया' पश्चश्रतिक्रानि एश्चश्वतयोजनप्रमाणानि

हे गौतम ! आठ छट कहे गये हैं 'तं जहा' उनके नाम इस प्रकार से हैं 'सिद्धे, रूपी, रम्मग, णरकंता, बुद्धि, रूपक्ला य, हेरण्णव य, मणिकंचण अह य रुप्पि मि कुड़ाई' १ सिद्धायतनकूट यह लवण समुद्र की दिशा में है २ रक्मीकूट-यह पांचवे वर्षधर के अधिपति देवका कूट है २ रम्यककूट-यह रम्यक क्षेत्र के अधिपति देवका कूट है २ रम्यककूट-यह रम्यक क्षेत्र के अधिपति देवका कूट है पहाकृत होने से यहां मूलमें विभक्ति का छोप हो गया है ४ नरकान्ताकूट यह नरकान्ता नदी की देवी का कूट है ५ बुद्धिकूट यह महापुण्ड-रीक हूद वर्तिनी देवी का कूट है ६ रूप्पक्ला कूट-यह रूप्पक्ला नदी की देवी का कूट है । ८ वां कूट है ७ हैरण्यवत कूट-यह हैरण्यवत क्षेत्र के अधिपति देवका कूट है। ८ वां कूट मणिकांचनकूट-यह मणिकांचन नामके देवका कूट है इस प्रकार से ये आठ कूट है 'सब्वे वि एए पंच सहया रायहाणीओ उन्तरेणं' ये सब कूट पांचसी योजन के विस्तार वाले हैं तथा इन कूटों के जो अधिपति देव हैं उन सबकी

आह हूरे। आवेला छे. 'तं जहां' ते हूरे।ना नाभा आ प्रभाषे छे-'सिछे, हत्वी, रम्मग, णरकंता, बुद्धि हत्पकूला य, हेरण्णवय, मणिकंचण अट्ट य हित्यांम कूडाइं' १ सिद्धार्थतन हूर, आ हूर लव्या समुद्रनी दिशामां छे. २ उहमीहूर-आ हूर पांथमां वर्षधरना अधिपति हेवना छे. उत्थि हूर-आ हूर रम्थ हेर-आ हूर स्थान अधिपति हेवना छे. प्राहृत द्वावाधी अदीं मूलमां विलिहत-द्वाप धर्ध गया छे. ४ नरहानता हूर-आ नरहानता नहींनी हेवीना हूर छे. ५ उत्थह्ला हूर-आ हुर छे. ८ अधिपति हेवना हुर छे. ८ मिद्ध यन हूर-आ मिख्डांयन नामे हेवना हूर छे. आ प्रमाशे स्थान हुरे। छे. ५ स्वतं वि एए पंचसइया रायहाणीओ उत्तरेणं' ओ अधा हूरे। ५००, ५०० थालन करेला विस्तारवाणा छे. तथा ओ हूरे।ना के अधिपति हेवा छे ते अधानी राजधानीओ।

बोध्यानि अथैतत्क्रुटाधिपदेवानां राजधान्यः ऋस्यां दिशि ? इत्याह-'रायहाणीओ' राजधान्यः 'उत्तरेणं' उत्तरेण उत्तरदिशि अधुनाऽस्य रुक्मीति नामार्थे निरूपयितुमुपक्रमते - 'से केणहेणं मंते !' इत्यादि-अथ तदनन्तरं केन अर्थेन कारणेन भदन्त! 'एवं वुकचइ' एवग्रुच्यते 'रूप्वी' वासहरपञ्चए २ ?' रुक्मी वर्षधरपर्वतः २ ?, इति प्रश्नस्य भगवानुत्तरमाह-'गोयमा !' गौतम! 'रुप्पी' रुक्मी 'णं' खळ क्वचित् 'णाम' इतिपाठः, तत्पक्षे नाम इति तदर्थः 'वासहरपव्वए' वर्षधरपर्वतः 'रुप्पी' रुत्मी रुवमं रजतं तदस्य नित्यमस्तीति रुवमी नित्ययोगे इन प्रत्ययविधानात् यद्यपि कोषे रूपमञ्जदः सुवर्णे दृष्टस्तथापि शब्दानामनेकार्थत्वाद् रज-तार्थ आहतः, तथा 'रुष्पपट्टे' रूष्यपट्टः-रूष्यमयः शाश्चतिकः 'रुष्पोभासे' रूष्यावभासः-रूप्यवद्-रजवत् सर्वतोऽवभासः प्रकाशो भाग्रस्त्वेन यस्य स तथा एतदेव स्पष्टमाचढ्टे 'सव्वरुष्पामप' सर्वेरूप्यमयः सर्वोत्मना रूप्यमयः रजतमय इति, तथा 'रूप्पी य' क्वमी च 'इत्थ' अत्र-अस्मिन् रुविमणि पर्वते 'देवे' अधिपः परिवसतीत्युत्तरेणान्वयः, स च की दशः? इत्याह-महिद्धीए जान पलिओनमिडिईए' महिद्धिको यानत् परयोपमस्थितिकः, अत्र यानत्पदेन राजधानीयां अपने २ कूटों की उत्तरिद्या में हैं। 'से केणहेणं भेते । एवं बुच्चइ, रूपीवासहरपव्वए २' हे भद्नत! रक्मी वर्षधर पर्वत ऐसा नाम आपने किस कारण से कहा है ? इसके उत्तर में प्रमु कहते हैं-'गोथमा ! रूपीणाम वासहर-पन्वए रूप्पी रूप्पपट्टे रूप्पोभासे सन्वरूपामए, रूप्पी य इत्थदेवे पलिओवमहिईए परिवसह' हे गौतम! यह पर्वत रजतमय चांदीका है तथा रजतमय चांदी ही इसका भासुर होने से प्रकाश होता है एवं यह सर्वात्मना रजतमय है इस कारण इस वर्षधर पर्वत का नाम रूक्मी ऐसा कहा गया है। यद्यपि कोशमें रूक्म शब्दका अर्थ मिलता है परन्तु वह अर्थ जो यहां नहीं लिया गया है और चांदी ऐसा जो अर्थ लिया गया है वह 'शब्दों के अनेक अर्थ होते हैं' इस कथन के अनुसार लिया गया है यहां रूक्म दान्द से नित्य अर्थ में इन् प्रत्यय हुआ है तथा यहां

पातिपाताना इंटानी उत्तर हिशामां आवेली छे. 'से केणहेणं मंते! एवं बुच्चइ रूपी वासहर पट्यए र' हे लहंत! उहमी वर्षधर ओवुं नाम आपश्रीओ शा कारण्यी कहां छे? ओना कवालमां प्रकु कहें छे-'गोयमा! रूपीणाम वासहरपट्यए रूपी रूपपट्टे रूपोमासे सच्च-रूपामए, रूपीय इत्य देवे पिछओवमिट्टिईए परिवसह' हे जीतम! आ पर्वत रक्तमय-ओटेले के यांहीना छे तेमक रक्तमय यांही क आना लासुर हावाथी प्रकाश हाथ छे, तेमक आ सर्वात्मना रक्तमय छे. आधी आ वर्षधर पर्वतनुं नाम उहमी ओवुं कहेवामां आवेल छे. जो के के के के के कामां उहम शण्हना अर्थ सुर्वा आपेला छे परंतु ते अर्थ अहीं अहण्ड करवामां आवेश नथी, अने यांही ओवा के अर्थ अहण्ड करवामां आवेश छे ते 'शण्हना अनेक अर्था थाय छे' आ कथन सुक्ष अहण्ड करवामां आवेश छे. अहीं उहम शण्हमी जीवा के अर्थ अहण्ड करवामां आवेश छे. अहीं उहम शण्हमी जित्य अर्थमां 'इन्' प्रत्यय थेश छे. तेमक अहण करवामां आवेश है. नामे हेव रहे छे, आ हैव

सङ्ग्राह्यपदानां सङ्ग्रहः साथीं उच्टमस्त्रटीकातो बोध्यः, एताद्द्यो देवः परिवसति तद्धिपकत्वाच्च रुवमीति स व्यविद्ध्यते तदेवाह-'से एएणेडेणं' सः रुवमी वर्षथरपर्वतः एतेन
अनन्तरोक्तेन अर्थेन रजतमयत्वरुविमदेवाधिष्ठितत्वैतदुभयेन कारणेन 'गोयमा' गौतम !
'एवं वुच्चइत्ति' एवग्रुच्यत इति । अथ पष्ठं वर्षभरं वर्णियतुष्ठप्रक्रमके—'किहणं भते !' इत्यादि
वव खल्ज भदन्त ! 'जंबुद्दीवे दीवे' अम्बृद्धीपे द्वीपे 'हेरण्णवए णामं' हैरण्यवतं नाम 'वासे'
वर्षं 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तम् ? 'गोयमा' गौतम ! 'रुप्पिस्स' रुविमणो वर्षधरपर्वतस्य 'उत्तरेणं' उत्तरेण—
उत्तरदिश्चि 'सिहरिस्स' शिखरिणः—अनन्तरं वृध्यमाणस्य वर्षधरपर्वतस्य 'दिक्खणेणं' दक्षिणेन
दक्षिणदिशि 'पुरत्धिमलवणसमुद्दस्स' पौरस्त्यलवणसमुद्रस्य 'प्चित्यमेणं' पश्चिमेन पश्चिमदिशि
'पच्चित्थमलवणसमुद्दस्स' पश्चिमलवणसमुद्रस्य 'पुरत्थिमेणं' पौरस्त्येन पूर्वदिशि 'प्तथ' अन—
अत्रान्तरे 'णं' खल्ज 'जंबुद्दीवे दीवे' अम्बृद्धीपे द्वीपे 'हिरण्णवए वासे' हैरण्यवतं वर्षे 'पण्णत्ते'
प्रज्ञप्तम् 'एवं' एवम्—पूर्वीकाभिलापानुसारेण 'जहचेव' यथैव—यनैव प्रकारेण 'देमवयं' हैमवतं

पर रूक्मी नामका देव रहता है यह महिंद्धिक यावत पल्योपम की स्थिति वाला है यहां यावत्पद से संग्राह्य पदों को जानने के लिये अष्टम सूत्र देखना चिह्ये अतः इन सब के संयोग से इसका नाम रूक्मी ऐसा कहा गया है यही बात 'से एएडे णं गोयमा एवं बुक्चई' इस सूत्र द्वारा पुष्ट की गई है। 'कहिणं भंते! जबुदीवे २ हेरण्णवए णामं वासे पण्णत्ते' हे भदन्त! हैरण्यवत नामका क्षेत्र इस जम्बूदीप नामके द्वीप में कहां पर कहा गया है? उत्तर में प्रभु कहते हैं 'गोयमा! रूप्पिस्स उत्तरेणं सिहरिस्स दिव्खणेणं पुरित्थमलवणसमुद्दस्स पच्चित्थमेणं पच्चित्थमलवणसमुद्दस्स पच्चित्थमेणं पच्चित्थमलवणसमुद्दस्स पुरित्थमेणं एत्थ णं अंदुद्दीवे दीवे हिरण्णवए वासे पण्णत्ते' हे गौतम! रूक्झी नामक वर्धधर पर्वत की उत्तरदिशा में तथा शिखरी नामक वर्षधर पर्वत की दक्षिणदिशा में, पूर्वदिग्वर्ती स्वणसमुद्र की पश्चिमित्रशा में एवं पश्चिमदिग्वर्ती स्वण समुद्र की पृर्वदिशा में इस जम्बूदीप

महिदि यादत् पढ्यापम केटली स्थितिवाणा छे. अहीं यावत् पढ्यी संश्राह्म पहाने जाण्या माटे अन्ट्रमसूत्र वांचवुं क्रिडंगे. अथी आ सर्वना संयाग्यी आतुं नाम इक्ष्मी अवुं हहेवामां आवेद्धं छे. अक वात 'से एएहुणं गोयमा! एवं बुच्चइ' आ सूत्र वडे पुन्ट करवामां आवेद्धं छे. 'कहिणं मंते! जंबुद्दीने र हेरण्णवए णामं वासे पण्णत्ते' है लहंत! हैरण्यवत नामक क्षेत्र आ कंजूदीप नामक दीपमां क्या स्थणे आवेद्धं छे? ओना कवालमां अक्ष कहें छे 'गोयमा! हित्यस उत्तरेणं सिहरिस्स दिक्खणेणं पुरिश्यमलवणहमुद्दस्स पच्चित्यमेणं पच्चित्यमलवणसमुद्दस्स पुरिश्यमेणं एत्यणं जंबुद्दीने दीने हिरण्णवए वासे पण्णत्ते' है जौतम! इक्ष्मी नामक वर्षधर पर्वतनी उत्तर दिशामां तेमक शिलरी नामक वर्षधर पर्वतनी इक्षिण् हिशामां तेमक शिलरी नामक वर्षधर पर्वतनी इक्षिण् हिशामां तेमक पश्चिम हिशामां तेमक पश्चिम हिशामां तेमक पश्चिम

वर्षे 'तइचेव' तथैव तेनैव प्रकारेण 'हेरणावयंपि' हैरण्यवतमपि वर्षे 'भाणियव्वं' भणितव्यं वक्तव्यम्, अथात्र हैमवतवर्षापेक्षया यो विशेषस्तं प्रदर्शयितुमाइ—'णवरं' नवरं केवलं 'जीवा' जीवा धनुः प्रत्यश्चाकारप्रदेशः 'दाहिणेणं' दक्षिणेन—दक्षिणदिशि 'उत्तरेणं धणुं' उत्तरेण— उत्तरदिशि धनुः—धनुष्पृष्ठं बोध्यम् 'अवसिद्धं' अवसिष्ठं—शेषं विष्कम्भायामादि 'तं चेव' तदेव हैमवतवर्षप्रकरणोक्तमेव 'इति' इति एतद्बोध्यम् ।

, अथ माल्यवत्पर्यायं वृत्तवैतादयपर्वतं वर्णियतुप्रपन्नते - 'किहणं भंते !' इत्यादि क्व खुळ भदन्त ! 'हेरण्णवए वासे' हैरण्यवते वर्षे 'माल्वंतपिरयाए' माल्यवत्पर्यायः 'णामं' नाम 'बट्टवेयद्धपव्यपं वृत्तवैतादयपर्वतः 'पण्णत्ते ?' प्रज्ञप्तः ?, इति प्रश्नस्य भगवानुत्तरमाह - 'गोयमा !' गौतम ! 'स्वण्णक्लाए' सुवर्णक्लायाः - एतत्क्षेत्रवर्ति पूर्वदिग्गामि महानद्याः 'प्रचृत्थिमेणं' पश्चिमेन - पश्चिमदिशा 'रुप्पक्लाए' रूप्यक्लायाः - एतत्क्षेत्रवर्तिपश्चिमदिगामि महानद्याः 'पुर्वत्थमेणं' पौरस्त्येन पूर्वदिश्च 'एत्थ' अत्र - अत्रान्तरे 'णं' एळ 'हेरण्णव- यस्स' हैरण्यवतस्य 'वासस्स' वर्षस्य 'बहुमङझदेसभाए' बहुमध्यदेशभागे - अत्यन्तमध्य-

नामके द्वीप में हैरण्यवत नामका क्षेत्र कहा गया है। एवं 'जह चेव हेमवयं तहः चेव हेरण्यवयंपि' इस तरह जिस प्रकार की वक्तव्यता दक्षिण दिग्वर्ती हैमवत क्षेत्र की कही गई है उसी प्रकार की वक्तव्यता इस उत्तर दिग्वर्ती हैरण्यवत क्षेत्र की जाननी चाहिये 'णवरं जीवा दाहिणेणं उत्तरेणं घणु अवसिष्टं तं चेवत्ति' परन्तु विशेषता यही है कि इसकी जीवा-घनुः प्रत्यश्चाकार प्रदेश-दक्षिणदिशा में है और घनुःष्णुष्ठ इसका उत्तरदिशा में है बाकीका और सव विष्कम्भादि का कथन हैमवत् क्षेत्र के प्रकरण के अनुसार ही है 'कहि णं भंते! हेरण्यव्य वासे मालवंतपरिआए णामं वहवेघडूपव्वए पण्णत्ते' हे भदन्त! हैरण्य क्षेत्र में मालयवत्यर्थि नामका वृत्तवैतादय पर्वत कहां पर कहा गया है? उत्तर में प्रभ कहते हैं-'गोधमा' खवण्णकूलाए पच्चित्थमेणं रूप्यकूलाए पुरित्थमेणं एत्थ णं हेरण्यवस्य वासस्स बहुमज्झदेसभाए मालवंतपरियाए णामं वहवेघडू

भावेक्षुं छे. 'एवं जहचेव हेमवयं तहचेव हेरण्णवयंपि' आ प्रभाष्ट्रे के प्रकारनी वक्ष्तव्यता हिश्वा हिश्वती हैमवत क्षेत्रनी कहेवामां आवेक्षी छे ते प्रकारनी वक्ष्तव्यता आ उत्तर हिश्वती हैरण्यवत क्षेत्रनी काष्ट्रवी किछे भे. 'णवरं जीवा दाहिणेणं उत्तरेणं धणुं अवसिट्टं तं चेवत्ति' पर'त विशेषता आटबी के छे हैं भेनी छवा—धनुः प्रत्यं आक्षर प्रहेश—हिश्वा हिशामां छे अने धनुपृष्ठ केनुं उत्तर हिशामां छे. शेष अधुं विष्ठं काहि विषय क्षेत्र हैमवत क्षेत्रना प्रक्ष्य भुक्ष्म के छे. 'कहि णं मंते! हेरण्यवए—वासे मालवंतपरिआए णामं वट्टवेयद्द पटवए पण्णत्ते' हे करन्त! हैरण्य क्षेत्रमां मत्यवत् पर्याय नामे वृत्तवेदाहय पर्वत क्षा स्था आवेक्षा छे हैं केना क्षा अभा प्रकार क्षा सुवण्यकूलाए पच्चित्रमेणं रूपयूल्यए पुरस्थिमेणं एत्थणं हेरण्यवयस्य वासस्य बहुमज्झदेसभाए मालवंतपरियाए णामं वट्टवेयद्दे परिथमेणं एत्थणं हेरण्यवयस्य वासस्य बहुमज्झदेसभाए मालवंतपरियाए णामं वट्टवेयद्दे

देशभागे मालवंतपरियाए' माल्यवस्पर्यायः 'णामं' नाम 'वहवेयदे' वृत्तवैताहचः पर्वतः 'पण्णत्ते' प्रज्ञातः, अस्य वर्णनेऽनुसरणीयपर्वतमाह—'जहवेव सहावहं' यथैव येनैव प्रकारेण शब्दापाती वृत्तवैताहचपर्वतो वर्णितः 'तहचेव' तथैव तेनैव प्रकारेण 'मालवंत-परियाप वि' माल्यवस्पर्यायोऽपि वृत्तवैताहचपर्वतो वर्णनीयः, अथास्य शब्दापातिवृत्त-वैताहचपर्वतापेक्षया नामार्थे विशेषं प्रदर्शयितुमाह—'अहो' अर्थः माल्यवस्पर्यायेतिनामार्थः— तस्कारणं हि 'उप्पलाइं' उत्पलानि चन्द्रविकाशीनि कमलानि 'पउमाइं' पद्मानि—सूर्य विकाशीनि कमलानि इदम्रपलक्षणं तेन कुषुदनलिनमुभगसीगन्धिकपुण्डरीकमहापुण्डरीक शतपत्रसहस्रपत्रश्वताकाराणि 'मालवंतवण्णाइं' माल्यवहवर्णानि—माल्यवस्पर्यत्वत्वर्ण-कानि माल्यवस्पर्वताकाराणि 'मालवंतवण्णाइं' माल्यवहवर्णानि—माल्यवस्पर्वतवर्णप्रतिभासानि, तद्योगादयं माल्यवद्वपर्याय इत्येवमुच्यते तथा 'पभासे य इत्थ देवे' प्रभासश्चात्र देवः अत्र—अस्मिन् गिरी प्रभासनामा देवः परिवसतीति परेणान्वयः स च कीहशः दृहरयाह—'महिद्धीए जाव पल्जिनेवमाहिईए' महिद्धीण जाव पल्जिनेवमाहिईए' महिद्धीण जाव पल्जिनेवमाहिईए' महिद्धीण जाव पल्जिनेवमाहिईए' महिद्धीण यावत् पल्योपमस्थितिकः—अत्र यावस्पदसङ्ग्राह्यपदानां सार्थः सङ्ग्रहोऽ-ष्टमस्त्रव्यातो बोध्यः, एताहशो देवः 'परिवसइ' परिवसति 'से तेणहेणं' सः माल्यवः

पण्णत्ते' हे गौतम! सुवर्णकुला महानदी की पूर्वदिशा में, हैरण्यवत क्षेत्र के बहुमध्य देश में माल्यवन्त पर्याय नामका वृत्तवैतादय पर्वत कहा गया है। 'जह-चेव सहावर्ड तह चेव मालवंत परियाए वि' इसका वर्णन संबंधी प्रकार शब्दा-पाती नामक वृत्तवैतादय पर्वत के जैसा ही है। 'अडो उप्पलाइं पडमाइं मालवंत-प्रपाइं मालवंत वण्णाइं मालवन्तवण्णाभाइं पभासेअ इत्थ देवे महिद्धीए जाब प्रलिओवमहिईए परिवसई' इसका माल्यवन्त पर्याय ऐसा जो नाम कहा गया है उसका कारण यहां के उत्पलों एवं कमलों का माल्यवन्त की प्रभावाले, माल्यवन्त के जैसे वर्णवाले और माल्यवन्त के वर्ण की प्रभावाले होता है तथा यहां पर प्रभास नामका देव रहता है जो कि महिद्धिक यावत एक पल्योपम की स्थिति वाला है। 'से एएणहेण' इस कारण हे गौतम! इसका नाम माल्यवन्त पर्याय

पण्णत्ते' है जीतम! सुवर्ण इसा महानहीनी पश्चिम हिशामां तथा ३०४ इसा महानहीनी पूर्व हिशामां, हैरएयवत क्षेत्रना एह मध्य हेशमां माद्यवन्त पर्याय नामक एत्तविताहप पर्वत आवेदी। छे. 'जह चेव सहावर्द्द तह चेव माहवंतपरियाए वि' आतुं वर्णून शण्हा- आती नामक एत्त वैताहय पर्वत लेवुं ल छे. 'अहो उपलाइं मालवंतपणाइं मालवंतपणाइं मालवंतपणामाइं पमासे अ इत्य देवे महिद्धीए पलिओवमहिईए परिवर्ण्ड' ओनुं ले भाल्यवन्त पर्याय ओवुं ले नाम कहिवामां आवेद्ध छे, तेनुं कारण्य ओ छे के अहीं ना हत्यदेत अने क्षित्रों अने कि माह्यवंत लेवी वर्णुवाणी पण् छे. तेमल अहीं प्रसास नामक हेव रहे छे. ते हेव महिद्धीक यावत् ओक पर्यापमा लेटसी स्थितवाणा छे. 'से एएणहेंजें.' ओथी है जीतम! ओवुं नाम भाल्यवंत पर्याय ओवुं राभवामां आव्यु छे. 'रायहाणी इसन

त्पर्यायः तेन अनन्तरोक्तेन अर्थेन कारणेन एवम्रच्यते-माल्यवस्पर्याय इति, अस्य 'रायद्वाणी' राजधानी 'उत्तरेणंति' उत्तरदिशि इति बोध्यम्, अथ हैरण्यवतनामार्थे प्रकाशियतुमुपक्रमते-'से केणहेणं भंते ! इत्यादि-अथ हैरण्यवतस्वरूपनिरूपणानन्तरं केन अर्थेन-हेतुना भदन्त ! 'एवं' बुचइ' एवमुच्यते 'हेरण्णवए वासे २ ?' हैरण्यवतं वर्षम् २ ?, इति प्रश्नस्य भगवः नु-त्तरमाह-'गोयमा !' गौतम ! 'हेरण्णवए णं वासे' हैरण्यवतं खळ वर्ष क्षेत्रम् 'रुप्पी सिहरीहि' रुक्मि शिखरिभ्यां 'वासहरपव्यएहिं' वर्षथरपर्वताभ्यां 'दुहओ' द्विधातः उभयोर्द्क्षिणोत्तर-पार्श्वयोः 'समवगूढे' समाश्चिष्टं-कृतसीमाकमित्यर्थः, तुभयसमालिष्टत्वाद्स्य हैर्ण्यवतिमिति नाम व्यविद्यते, तथाहि हिरण्यप्देन स्वर्णरूप्योभये गृहोते तद्स्त्यनयोसित हिरण्यवन्तो रुक्ति शिखरिणी, तयोरिदं हैरण्यवतं रूप्यस्वर्णमयरुक्तिमशिखरिसम्बन्धि एवं तयो-यौँगातु हैरण्यवतिनिति नाम बोध्यम् यद्वा 'जिन्दं नित्यं' 'हिरण्णं' हिरण्यं 'ग्रंचइ' मुश्चिति स्य निति 'णिच्चं' नित्यं 'हिरण्णं' हिरण्यं पगासइ' प्रकाशयति-तत्रतत्र प्रदेशे ऐसा कहा गया है 'रायहाणी उत्तरेणंति' इस देवकी राजधानी इस पर्वत की उत्तरिदशा में है। 'से केणहे णं मंते! एवं युच्चह हेरण्णवएवासे २' अब गौतमने प्रभु से ऐसा पूछा है-हे भद्नत ! आपने किस कारण को छेकर हैरण्यवत क्षेत्र ऐसा नाम कहा है ? इसके उत्तर में प्रश्च कहते हैं-'गोयमा ! हेरण्णुवए णं वासे रूपीसिहरीहिं वासहरपव्वएहिं दुहओ समवगूढे णिच्चं हिरण्णं दल्रइ णिच्चं हिरण्णं मुंचइ, णिच्चं हिरण्णं पगासह, हेरण्णयए अ इत्थ देवे परिवसइ से एए णहेणं ति' हे गौतम! हैरण्यवत क्षेत्र, दक्षिण और उत्तर पार्श्वभागों में स्वभी और शिखरी इन दो वर्षधर पर्वतों से घिरा हुआ है-इसी कारण इसका नाम हैरण्यवत क्षेत्र हुआ है तात्पर्य ऐसा है-हिरण्य पद स्वर्ण और रूप्य इन दोनों का ग्राहक होता है अतः रूपमी और शिखरी इन दोनों वर्षघर पर्वतों का यहां इस पद से ग्रहण हो जाता है इसी कारण इसका नाम हैरण्यवत क्षेत्रऐसा

रेणंति' आ देवनी राजधानी आ पर्वतनी उत्तर दिशामां आवेदी छे. 'से केणहेणं मंते! एवं वुच्चइ हेरण्णवए वासे र' ६वे गौतमे प्रकुने आ कातने। प्रश्न डधें छे हे दे कहंत! आपश्रीओ शा डारण्यी हैमवंत क्षेत्र अवुं नाम डहां छे? अना कवालमां प्रकु डडे छे 'गोयमा! हेरण्णवए णं बासे रूपी सिहरीहिं वासहरपव्यपहिं दुहओ समवगूढे णिच्चं हिरण्णं दलइ णिच्चं हिरण्णं मुंचइ, णिच्चं हिरण्णं पगासइ, हेरण्णवए अ इत्थ देवे परिवसइ से एए-णहेणं ति' हे गौतम! हैरण्यवत क्षेत्र दक्षिण् अने उत्तर पार्धकांगामां रुद्धमी अने शिषरी ओ छे वर्षधर पर्वतीथी आवृत छे. ओ डारण्यी क अनुं नाम हैरण्यवत क्षेत्र अवुं प्रसिद्ध थयुं छे. तात्पर्य या प्रमाणे छे है हिरण्य पह रवर्ण् अने रुप्य के अने अधिना वायह छे. ओथी रुद्धमी अने शिषरी को अनने वर्षधर पर्वतीनुं अहीं आ पहथी अहण् धर्ध काय छे. आ डारण्यी क कोनं नाम हैरण्य के लन्ने आधिना वायह छे. ओथी रुद्धमी अने शिषरी को अनने वर्षधर पर्वतीनुं अहीं आ परथी अहण्

दर्शनमनोहारितया प्रकटी करोति जने न्य इति क्षेपः, अयं भावः नतत्र युग्मकमञ्जूष्याणामासनशयनादि लक्षणोपभोगार्था वहवो हिरण्यमयाः शिलापद्याः सन्ति तांश्र तत्रत्या
मानवा आसनादिरूपतयोपश्च इत्ते तत्थ्य हिरण्यं प्रशस्तं नित्यं प्रचरं वाऽस्यास्तीति हिरण्यवत
तदेव हैरण्यवतं स्वार्थिकाण् प्रत्ययान्तिमदम् इति । नामकारणान्तरमाह-'हेरण्णवण् य इत्थ
देवे' हैरण्यवतश्चात्र देवः 'परिवसइ' परिवसति स च देव महर्द्धिको यावत् पत्योपमस्थितिकः,
णतद्विवरणं प्राग्वद्वोध्यम् तेन हैरण्यवतदेव स्वामिकलादिदं हैरण्यवतिमत्युच्यते, अध्य पष्टं
वर्षथरपर्वतं वर्णयितुमुपक्रमते-'कहिणं भंते!' इत्यादि-वव खल्ल भदन्त! 'जंबुद्दीवे दीवे'
जम्बूद्वीवे द्वीपे 'सिहरीणामं' शिलारीनाम 'वासहरपव्वण्' वर्षथरपर्वतः पण्णत्ते' प्रज्ञप्तः १,
इति प्रश्नन्य भगवानुत्तरमाह-'गोयमा!' गौतम! 'हेरण्णवयस्स' हैरण्यवतस्य वर्षस्य 'उत्तरेणं'

कहा जाता है क्यों कि यह रूप्यमय और स्वर्णमय रूमी एवं शिखरी पर्वतों से सम्बन्धित है अतः इनके योग से इसका नाम हैमवत ऐसा हो गया है। अथवा-यह नित्य सुवर्ण को देता है नित्य स्वर्ण को छोडता है नित्य स्वर्ण को प्रकाशित करता है तात्पर्ध इसका ऐसा है कि वहां पर अनेक स्वर्णमय शिला पहक है अतः वहां के युग्मक मनुष्य आसन शयन आदिष्प उपभोग के निमित्त इनका उपयोग करते रहते हैं इससे ऐसा कहा जाता है कि यह क्षेत्र नित्य स्वर्ण प्रदानादि करता है हैरण्यत में स्वार्थिक अण् प्रत्यय हुआ है तथा यहां पर हैरण्यवत् नामका देव रहता है यह देव महद्धिक यावत् एक पत्योपम की स्थिति वाला है इस कारण से भी इसका नाम हैरण्यवत क्षेत्र ऐसा कहा गया है। 'कहि णं मंते! जंबुदीवे दीवे सिहरीणामं वासहर-पव्वए पण्णत्ते' हे भदन्त! इस जम्बूबीप नामके बीप में शिखरी नामका वर्षधर पर्वत कहां पर कहा गया है? उत्तर में प्रसु कहते हैं—'गोयमा! हेरण्णवयस्स उत्तन

का रुप्यमय कर्न स्वर्ण भय रुद्दमी कर्न शिष्मरी पर्वतिथी संभिष्ठि छे. क्येटला भाटे क्येमना येशियी क्येनं नाम कैमवत क्येवुं प्रसिद्ध थयुं छे. क्येयना क्या पर्वत नित्य सुवर्ण् आपे छे, नित्य सुवर्ण् अक्ष्मरे अहि छे, नित्य सुवर्ण्न प्रक्षाशित हरे छे तात्पर्य काम छे है का पर्वत एपर कर्नेष्ठ स्वर्णभय शिला पट्टिश छे, क्येथी त्यांना युग्मरु मनुष्यी क्यासन शयन क्याहि इप अप्तिशा भाटे क्येमने। एपयेशि प्रदे छे. क्येथी क्याम महेदाय छे है का क्षेत्र नित्य सुवर्ण् प्रहानाहि हरे छे. केर्एयवतमां स्वार्थिष्ठ क्या प्रत्यय थयेल छे. तेमक क्याहि हैरएयवत नाम हेदि रहे छे. क्ये हिप्यवत्त मा स्वार्थिष्ठ यावत् क्येष्ठ पट्योपम केटली स्वितिवाणा छे. क्येथी पा क्यानं नाम हैरएयवत क्षेत्र क्येवुं हिल्लामां क्यावेश्वं छे. कहि नं मंते! जंबुहीचे दीचे सिहरी णामं वासहरपञ्चम पण्णत्ते' है अहंत! क्या कंप्यूदीप नाम हीपमां शिष्मरी नाम वर्षधर पर्वत हथा स्थणे क्यावेश्वे। छे? क्येना क्यालमां प्रसु हहे छे—'गोयमा! हेरण्णवयस्स उत्तरेणं एरावयस्स वाहिणेणं पुरिश्यमलवणसमुहस्स पण्चित्थिमेणं

उत्तरेण-उत्तरदिशि 'एरावयस्त' ऐरावतस्य वक्ष्यमाणस्य सप्तमवर्षस्य 'दाहिणेणं' दक्षिणेन-दक्षिणदिशि 'पुरिश्यमलवणसमुद्दस्य' पौरस्त्यलवणसमुद्रस्य -पूर्विद्य्वर्तिल्यणसमुद्रस्य 'पच-त्थिमेणं' पश्चिमेन-पश्चिमदिशि 'पच्चित्थिमलवणसमुद्दस्स' पश्चिमलवणसमुद्रस्स 'पुरित्थमेणं' पौरस्त्येन-पूर्वदिशि 'एवं' एवम्-पूर्वीकाभिलापानुसारेण 'जहचेव' यथैव येनैव प्रकारेण 'जुल्लिमवंतो' श्वद्रहिमवान् प्रथमवर्षधरपर्वतो वर्णितः 'तहचेव' तथैव तेनैव प्रकारेण 'सिह-रीवि' शिखर्यपि पष्टो वर्षधरभुधरो वर्णनीयः।

अथात्र क्षुद्रहिमवद्रपेक्षया कंचिद्धिशेषं प्रदर्शयितुमाइ-'णवरं' नवरं-केवलं 'जीवा' जीवा धनुः प्रत्यश्चाकारप्रदेशः 'दाहिणेणं' दक्षिणेन-दक्षिणदिशि 'धणुं उत्तरेणं' धनुः-धनुष्पृष्ठम् उत्तरेण-उत्तरदिशि प्रज्ञप्तम् 'अवसिद्धं' अवशिष्टं शेषं विष्यम्भायामादिकं 'तं चेव' तदेव श्चद्र-हिमवत्प्रकरणोक्तमव बोध्यम्, तथा 'पुंडरीए दहे' पुण्डरीको हूदः, ततो निर्गता 'सुवण्ण-कूळा महाणई' सुवर्णकूळा नाम महानदी 'दाहिणेणं' दक्षिणेन दक्षिणतोरणेन प्रवहन्ती रेणं एरावयस्य दाहिणेणं पुरित्थमलवणसमुद्दस्य पच्चित्थमेणं, पच्चित्थमलवणः समुद्दस्स पुरित्थमेणं एवं जह चेव चुल्लिहमवंतो तहचेव सिहरीवि णवरं जीवा दाहिणेणं घणुं उत्तरेणं अवसिद्धं तं चेव' हे गौतम! हैरण्यवत क्षेत्र की उत्तर-दिशा में तथा ऐरावत क्षेत्र की दक्षिणदिशा में, पूर्व दिग्वर्ती लवणंससुद की पश्चिमदिशा में, और पश्चिमदिग्वर्ती लवणसमुद्र की पूर्वदिशा में श्चल्ल श्चद्र-हिमवान् प्रथम वर्षधर पर्वत के जैसा यह छठा शिखरी वर्षधर पर्वत कहा गया है शिखरी पर्वत का वर्णन जैसा प्रथम श्चद्रहिमवान् पर्वत का वर्णन पहिले किया गया है वैसा ही है 'णवरं' परन्तु 'जीवा दाहिणेणं घणु उत्तरेणं अवसिद्धं तं ेचेव' इस कथन के अनुसार इसकी जीवा दक्षिणदिशा में है और धनुखुष्ठ उत्तरदिशा में है, बाकी का और सब आयामविष्कम्भादि का कथन प्रथम वर्षधर पर्वत के जैसा ही है 'पुंडरीएदहे, सुवण्णकूला महाणई, दाहिणेणं णेयव्वा' इसके अपर पुंडरीक नामका हूद है इसके दक्षिण तोरण बार से सुवर्णकुला नामकी

पच्चित्रमलवणसमुद्दस्स पुरात्थिमेणं एवं जहचेत्र चुल्लिद्दिमवंतो तहचेत्र सिहरीत्र णवरं जीवा दाहिणेणं घणुं उत्तरेणं अवसिट्टं तं चेत्र' हे गौतम! हैरएयवत क्षेत्रनी उत्तर दिशामां तथा अरवत क्षेत्रनी दक्षिण दिशामां पूर्व दिशामां क्षुटल-क्षुद्र-हिमवान् प्रथम वर्ष घर पर्वत केवा आ हिन्दती सवणु समुद्रनी पूर्व दिशामां क्षुटल-क्षुद्र-हिमवान् प्रथम वर्ष घर पर्वत केवा आ छेत शिणरी वर्ष घर पर्वत केवा आ येति हो. के प्रमाणे प्रथम क्षुद्र हिमवान् पर्वतनुं वर्णन पर्छे करवामां आवेति हो, तेवुं क वर्णन शिणरी पर्वतनुं पणु समक्षुं. 'जातरं' परंतु. 'जीवा दाहिणेणं घणुं उत्तरेणं अवसिट्टं तं चेत्र' आ क्षुन मुक्रभ केनी छवा दक्षिणु दिशामां छे अने धनुष्पृष्ठ उत्तर दिशामां छे. शेष अधुं आयाम-विष्ठं स वगेरेथी संसद्ध कथन प्रथम वर्ष घर पर्वत केवुं क छे. 'पुंडरीए दहे, सुवण्णकूला महाणई, दाहिणेणं णेयव्ता' कोनी उपर पुंडरीक नामे हुट छे. कोना दक्षिणु

'णेयव्या' नेतव्या बोध्या । अथास्याश्रतुर्दशनदी सहस्रपरिवासदियुत नदी दृष्टान्तमाह—'जहाँ' यथा 'रोहियंसा' रोहितांकानदी पद्महृदस्यीत्तरेण तोरणेन निर्मत्य पश्चिमदिशि लक्षणसम्बद्धे गच्छति वथेयम् 'युग्रियमेणं' पौरम्स्येन-पूर्वदिशि 'गच्छइ' गच्छति पूर्वछवणसम्रद्धं समुपैति सुवर्णकूला दक्षिणतोरणेन पुण्डरीकहदान्निर्गत्य पूर्वलवणसमुद्रं पूर्वाभिम्रखवादिनी सती समु-पैति रोहितांशा सुवर्णकुलयोर्दछान्तदार्धान्तिकभावो हुदनिर्गमननदीपरिवारहैरण्यवर्षगमन-ळवणशबुद्धसमादि साम्यमभ्युपेत्य न तु दिवसाम्यम् 'एवं' एवं पूर्वीकाभिलापानुसारेण सुवर्णक्रुलाव्या रोहितांका नदी दृष्टान्तत्वरीत्या 'जह चेव' यथैव 'गंगा सिंधुओ' गङ्गासिन्धु महानदीं प्राग्वर्णिते 'तह चेव' तथैव 'रत्तारत्तवईओ' रक्तारक्तवत्यौ 'णेय्व्वाओ' नेतव्ये बोध्ये अनयो दिंग्भेदं प्रदर्शियतुमाह-'पुरित्थमेणं रत्ता' पौरस्त्येन पूर्वदिशि रक्ता रक्ताभिधा महानदी निकली है 'जहा रोहियंसा' जिस प्रकार रोहितांद्या नदी पदाहद के उत्तरदिग्वर्शी तोरणहार से निकल कर पश्चिमदिशा की ओर पश्चिम लवण-समुद्र में मिलती है उसी प्रकार से यह नदी पूर्वदिशा की और जाकर पूर्वलवण समुद्र में मिलती है खुवर्णकुला महानदी पुण्डरीक हूद से दक्षिण तोरण द्वार से निकल कर पूर्व दिशा की ओर बहती हुई पूर्व लवण समुद्र में मिलती है, यह रोहितांका एवं सुवर्णकूला इन दोनों में जो दृष्टान्त दाष्टीन्तिक भाव प्रदर्शित किया गया है वह हुद निर्गमन, नदीपरिवार, हैरण्यवत गमन एवं लवणसमुद्र-गमन आदि की छेकर ही प्रदर्शित किया गया है, दिक्साम्य को छेकर नहीं 'एवं जह चेन गंगा सिंधुओं तह चेव रत्तारत्तवईओं फेयव्वाओं' जिस प्रकार से गंगा और सिन्धु इन दो महानदियों का वर्णन किया गया है उसी प्रकार से रक्ता और रक्तवती नदियों का वर्णन जानना चाहिये इनमें पूर्वदिशा की ओर रक्ता नामकी महानदी वहनी है पूर्वदिशा की ओर वहनेवाली महानदी पूर्व-

तीरण द्वारथी सुवर्ण इद्या नामे मदानही नीडणी छे. 'बहा रोहियंसा' केम रेहितांशा नहीं एक्ष्ट्रहना उत्तर हिंग्वती' तीरण द्वारथी नीडणीने पश्चिम हिशा तरह पश्चिम सवण समुद्रमां प्रवेशे छे तेमक क्या नहीं पूर्व हिशा तरह प्रवाद्धित थर्धने पूर्व सवण समुद्रमां प्रवेशे छे. सुवर्ण इद्या मदानहीं युंडरीड हुंहथी, हिश्चण तीरण द्वारथी नीडणीने पूर्व हिशा तरह प्रवाद्धित थती पूर्व सवण्यसमुद्रमां प्रवेशे छे. क्या रेहितांशा तेमक सुवर्ण इद्या के मन्तेमां के देण्डानत क्यने हार्थिनितंड साव प्रहर्शित ठरवामां क्यांवेद्धा छे ते हुंद निर्णमन, नहीं परिवार, केरण्य गमन तेमक सवण्यसभुद्र गमन वगेरेने सर्ध ने क प्रहर्शित ठरवामां क्यांवेद्धा छे. हिश्साम्यने सर्ध ने निर्देश एवं बहु वेच गंगासिध्यो तहचेत्र रत्तारसवईओ णेयव्याओं के प्रभाणे गंगा क्यने सिंधु को की महानहीकोनं वर्णन ठरवामां क्यांवेद्धा छे. ते प्रभाणे रक्ष्ता क्यने रक्ष्तवती नहींकोनं वर्णन पश्चिम हिशा तरह रक्ष्ता नामड महानही वहें छे क्यने पश्चिम हिशा तरह रक्ष्तवती नामनी महानही वहें छे.

नदी 'पचित्थमेणं' पश्चिमेन-पश्चिमिदिशि 'रत्तवई' रक्तवती नाम नदी प्रवहित 'अविसिहं' अविशिष्टं विष्कम्भायामनदीपरिवारादि 'तं चेव' तदेव गङ्गासिन्धु महानदीप्रकरणोक्तमेव सर्वम् 'अवशेषं भणितव्यमिति' अथैतद्वर्तिक्रटानि वर्णियतुष्ठुपक्रमते-'सिहरिम्मिणं भंते !' इत्यादि शिखरिणि प्राग्वणितस्वरूपे 'वासहरपव्वए' वर्षधरपर्वते खळ भदन्त ! 'कइ' कित किम्प्रमाणानि 'क्रुडा' क्टानि 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्तानि?, इति प्रश्नस्य भगवानुत्तरमाह-'गोयमा!' गौतम! 'इक्षारस' एकादश 'क्डा' क्टानि 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्तानि 'तं जहा' तद्या-'सिद्धाय-पणक्षे' सिद्धायत्वक्ष्टम् इदं पूर्वस्यां दिशि वर्तते १, ततः क्रमेण 'सिहरिक्षे' शिखरिक्टं शिखरिक्टं शिखरिक्टं 'सिद्धायतवक्ष्टम् इदं पूर्वस्यां दिशि वर्तते १, ततः क्रमेण 'सिहरिक्षे' शिखरिक्टं शिखरिक्टं 'सिद्धायतवक्षेत्रदेवक्टम् २, 'हेरण्यवतक्षेत्रदेवक्टम् २, 'स्वण्णक्लाक्टे' सुवर्णक्लाक्टं सुवर्णक्लाक्टं सुवर्णक्लानदीदेवीक्टम् ४, 'सरादेवीक्टे' सुरादेवीक्टम् ५, 'रत्ताक्टे' रक्तक्टीक्टं प्रशादेवीक्टम् ६, 'लच्छीक्टे' लक्ष्मीक्टं पुण्डरीकहृददेवीक्टम् ७, 'रत्तवईक्टे' रक्तवतीक्टं -रक्तवतीनदीपरावर्तनक्टम् ८, 'लच्छीक्टे' लक्षमीक्टं -पुण्डरीकहृददेवीक्टम् ७, 'रत्तवईक्टे' रक्तवतीक्टं -रक्तवतीनदीपरावर्तनक्टम् ८,

लवणसमुद्र में और पश्चिमदिशा की ओर वहनेवाली महानदी पश्चिम लवण-समुद्र में मिलती है ऐसा जानना चाहिये 'अवसेसं' इनका विष्क्रम्भ और आयामादि का परिमाण कथन तथा नदी परिवार आदि का कथन 'तं चेव' गंगा सिन्धु महानदी के प्रकरण में जैसा कहा गया है वैसा ही है 'सिहरिम्म णं भंते! वासहरपव्वए कह कूडा पण्णचा' हे भदन्त! इस शिखरी नामके वर्षधर पर्वत पर कितने कूट कहे गये हैं ? उत्तर में अभु कहते हैं—'गोयमा! इक्कारस कूडा पण्णत्ता' हे गौतम! इस शिखरी नामके वर्षधर पर्वत पर ११ कूट कहे गये हैं। 'तं जहा' उनके नाम इस प्रकार से हैं 'सिद्धाययणकूडे सिहरिक्डे हेंरण्णवयकूडे, सुवण्णकूलाक्डे, सुरादेवीकूडे, रत्ताकूडे, लच्छीकुडे, रत्तवईकूडे, इलादेवीकूडे, एरवधकूडे, तिगिच्छिक्डे' सिद्धायतनकूट १, शिखरिक्ट २, हैरण्यवतकूट ३,

पूर्व हिशा तरह प्रवाद्धित थनारी महा नही पूर्व विष्य समुद्रमां अने पश्चिम हिशा तरह वहनारी महानही पश्चिमलवण्य मुद्रमां प्रवेशे छे. अभ लाजी लेवुं लिएं भे 'अवसेसं' अभना विष्ठं ल अने आया माहि परिमाण विशेतुं शेष ४थन तथा नही परिवार वजेरेथी संभद्ध ४थन 'तं चेव' गंगा—सिन्धु महानहीना प्रकरण्यां के प्रमाणे ४हेवामां आवेतुं छे, अ प्रमाणे क छे. 'सिहरिन्म ण मंते! वासहरप्रव्या कह कहा पण्णता' है भटना! आ शिभरी नामक वर्ष धर पर्व त ७ पर हेटता हुटे। इहेवामां आत्या छे? क्या अमां प्रस्त ६ छे है 'तोयमा! इकारस कृडा पण्णता' है औतम! आ शिभरी नामक वर्ष धर पर्व त ७ पर ११ हूटे। आवेता छे. 'तं जहा' ते इटीना नामे। आ प्रमाणे छे—'सिद्धाययणकूहे, सिहरिक्से, हेरणावयकूहे, सुवण्णकूलाकूहे, सुरा देवी कूहे, रत्ताकूहे, रुच्छी कूहे, रत्तवर्द्ध कुहे, इलादेवी कूहे, एत्वयकूहे, तिगिच्छकूहे' सिद्धायतन इट १, शिभिर इट २, हेरण्यवत इट ३, सुवण्ड इता

'इलादेवीकृष्ठे' इलादेवीकृष्टम्-इलादेवीदिवकुमारीकृष्टम् ९. 'एरवयक्ष्ठे' ऐरवतकृष्टम्-ऐरावतवर्षाधिपकृष्टम् १०, 'तिगिच्छिक्ष्ठे' तिगिच्छिष्ट्ददेवकृष्टम् ११ 'एवं' एवम्-अनन्तरी-कानि 'सब्वेवि' सर्वाण्यपि 'कृष्ठा' कृष्टानि 'पंचसइया' पश्चक्षतिकानि पश्चक्षतयोजनप्रमाणा-नि बोध्यानि एषां 'रायहाणीओ' राजधान्यः 'उत्तरेणं' उत्तरेण उत्तरदिशि बोध्याः, अथास्य नामार्थे प्रष्टुमाह-'से केणद्वेणं मंते ।' इत्यादि अथ शिखरिस्वरूपनिरूपणानन्तरं केन अर्थेन कारणेन भदन्त ! 'एवमुच्चइ' एवमुच्यते 'सिहरिवासहरपव्यप् २ ?' शिखरिवर्ष-धरपर्वतः २ ?, इति प्रश्नस्य भगवानुत्तरमाह—'गोयमा !' गौतम ! 'सिहरिम्नि' शिखरिणि 'वासहरपव्यप्' वर्षधरपर्वते सिद्धायतनाद्यतिरिक्तानि 'बह्वे' बहूनि 'कृष्ठा' कृष्टानि 'सिहरि-संठाणसंठिया' शिखरिसंस्थानसंस्थितानि- दक्षाकारसंस्थितानि 'सव्वरयणामया' सर्वरत्नम-

खुवर्णकुलाकूट ४, खुरादेवीकूट, ५, रक्ताकूट ६, लक्ष्मीकूट ७, रक्तवतीकूट ८, इलादेवीकूट ९, ऐरचतकूट १०, और तिगिच्छिकूट ११ इनमें सिद्धायतनकूट इस पर्वत की पूर्विद्धा में है। शिखरी वर्ष घरप्वत के नाम से प्रसिद्ध द्वितीयकूट है हैरण्यवत क्षेत्र के देवका तृतीय कूट है खुवर्णकूला नदी की देवी का चतुर्थ कूट है खुरादेवी नामकी दिक्कुमारी का पांचवां कूट है रक्तावर्तन कूटका नाम रक्ताकूट है यह छठा कूट है पुण्डरीक हूद की देवी का ७ वां कूट है रक्तवती नदी का जो परावर्तन कूट है वह ८ वां कूट है इला देवी नामकी दिक्कुमारी का ९ वां कूट है ऐरावत क्षेत्र के अधिपति देवका १० वां कूट है तथा तिगिच्छि हूद देवका ११ वां कूट है 'सब्बे वि एए पंचसहया, रायहाणीओ उत्तरेणं' ये सब कूट ५०० ५०० योजन प्रमाण वालेहें इनके देवों की राजधानियां अपने अपने कूटों की उत्तरदिशा में हैं 'से के णहे णं भंते! एवं बुच्चई सिहरिवासहरप्य्वए' हे भद्नत! इसका शिखरी वर्ष धर पर्वत ऐसा नाम क्यों पड़ा? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं

\$८ ४, सुगहेवी इ८ ५, रक्ताहेवी इ८ ६, बहमी ६८ ७, रक्तावती इ८ ८, छलाहेवी ६८-०, अरवत ६८-१० अने तिशिष्ध इ८ अमां के सिद्धायतन इ८ कहेवामां आवेब छे ते आ पर्वतनी पूर्व हिशामां आवेबों छे. शिणरी वर्षधर पर्वतना नामधी प्रसिद्ध दितीय इ८ छे. हैह ९ यवत क्षेत्रना हेवने। तृतीय इ८ छे. सुवध इदा नहीनी हेवीना चतुर्थ इ८ छे. सुरा हेवी नामक हि इ इमारीनो पंचम इ८ छे. रक्तावर्तन इ८ नाम रक्ता इ८ छे. आ षष्ठ इ८ छे. युंडरीक हिनी हेवीनी समम इ८ छे. रक्तावर्ती नहीनो के परावर्तन इ८ छे. ते अष्टम इ८ छे छवाहेवी नामनी हि इ इमारीना नवम इ८ छे. अरवत क्षेत्रना अधिपति हेवना हशम इ८ छे तथा तिजिष्छ हह हेवना अशियारमा इ८ छे. 'सन्ते वि एए वंच-सइया रायहाणीओ उत्तरेणं' से अधा इटी प००, प०० येथिन प्रमाख्वाणा छे. सेमना हेवानी राजधानीका पोत-पोताना इटीनी उत्तर हिशामां आवेबी छे. 'से केणट्रेणं मेते! एवं बुच्चइ सिहरिवासहरपञ्चए' हे लहंत! से शिभरी वर्षधर पर्वत सेवुं नाम शा कारख्यी पड्युं छे? सेना क्वाथमां प्रसा क्रियास ! सिहरिक्ति वासहरपञ्चए कुडा

यानि—सर्वात्मना—रत्नमयानि सन्तीति तथोगादयं शिखरीत्येवमुच्यते, एतेनान्यवर्षधरपर्वतोव्याद्वित्स्य कृता अन्यथाऽन्येषामि कृटवन्त्रेन शिखरिपदेन व्यवहारः स्यादिति, यद्वा
'सिहरी य इत्थदेवे' शिखरी—शिखरिनामा च अत्र—अस्मिन् शिखरिणि पर्वते देवः—अधिपः
'जाव परिवसइ' यावत् परिवसति अत्र—यावत्पदेन—महद्धिकादिपव्योपमस्थितिकपर्यन्तपदानामष्टस्त्रोक्तानां सङ्ग्रहो वोध्यः, एतादशो देवः परिवसति तेन तत्स्वामिकलाच्छिखरीस्येवं स उच्यते तदाह—'से तेणहेणं॰' एतेनार्थेन इत्यादि प्राग्वत् । अथ सप्तमवर्षं वर्णयिद्वमुपक्रमते—'कहि णं भंते !' इत्यादि—क खळ भदन्तः! 'जंबुद्दीवे दीवे' जम्बृद्धीपे द्वीपे
'स्रावए णामं' ऐरावतं नाम 'वासे' वर्षे 'पण्णते ?' प्रज्ञप्तम् ? इति प्रश्नस्य भगवानुत्तरमाह—
'गोयमा' गौतमः! 'सिहरिस्स' शिखरिणः—अनन्तरोक्तस्य वर्षधरपर्वतस्य 'उत्तरेणं' उत्तरेण—
उत्तरदिश्चि 'उत्तरस्रवणसमुद्दस्य' उत्तरस्रवणसमुद्रस्य 'दिक्खणेणं' दक्षिणेन—दक्षिणदिश्चि
'पुरत्थिमस्रवणसमुद्दस्य' पौरस्त्यस्रवणसमुद्रस्य 'पचित्थमेण' पश्चिमेन—पश्चिमदिश्चि 'पचित्थ-

'गोयमा! सिहरिम्मि वासहरपव्वए कुडा सिहरिसंठाणसंठिया सव्वरयणामया सिहरीय इत्थ देवे बहवे जाव परिवसइ' हे गौतम! इस शिखरी नामके वर्ष घर पर्वत पर सिद्धायतन आदि के अतिरिक्त और भी अनेक बुक्षों के आकार जैसे कुट है ये कूट सर्वात्मना रत्नमय हैं। इस कारण "शिखरी" ऐसा इनका माम पडा है इस कथन से अन्य वर्ष घर पर्वतों से इसकी भिन्नता प्रकट की गई है नहीं तो कूटवत्व होने से अन्य पर्वतों में भी शिखरी पद वाच्यता आ जाती यहा शिखरी नामका देव यहां रहता है यह देव महर्द्धिक आदि विशेषणों वाला है तथा इसकी आयु एक पत्योपम की है अष्टम सूत्र से यहां पर महर्द्धिक और पत्योपम के भीतर के विशेषणों का संग्रह हुआ जान छेना चाहिये इन्हीं कारणों को छेकर हे गौतम! इसका ऐसा नाम कहा गया है।

'कहिणं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे एरावए णामं वासे पण्णत्ते' हे भद्नत ! जंबूबीप नाम के बीप में ऐरावत नामका क्षेत्र कहां पर कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रभु

सिहरिसंठाणसंठिया सव्वरयणामया सिहरी अ इत्थ देवे बहवे जाव परिवसह' है जीतम! शाणिशी नामं वर्षधर पर्वत उपर सिद्धायतन वर्णेर सिवाय अन्य हैटलांड वृक्षाना शांधार केवा हूटा छे. सर्वातमना रतनमय छे. कोधी कोनुं नाम 'शिणरी' कोवुं परंथुं छे. आ ड्रथनवी अन्य वर्षधर पर्वताथी कोनी लिन्नता प्रडट डरवामां आवेली छे. निहृतिर हूटत्व होवाथी अन्य पर्वतामां पह शिणरी पह वान्यता आधी कती. अथवा शिणरी नामंड हेव अहीं रहे छे. आ हेव महिद्धिंड वर्णेर विशेषछे। वाणा छे तथा कोनुं आयुष्य कोड पर्थापम केटलुं छे. अध्यम सूत्रमांथी अहीं महिद्धिंड अने पर्यापमनी मध्यमां आवेला विशेषछोनी संबह्ध काछ्वो कोडकी. को अधां डारछोनी लीधे कोनुं नाम 'शिणरी' कोवुं डिहेवामां आवेलुं छे. 'कहि णं मंते! जंबुदीवे दीवे एरावए णामं वासे पण्णत्ते' हे लहेत! आहे कं लूबीप नामंड दीपमां करावत नामंड क्षेत्र डया स्थिण कावेलुं छे कीना कथा अमं

मछवणसमुद्दस्स' पश्चिमलवणसमुद्रस्य 'पुरित्थमेणं' पौरस्त्येन-पूर्वदिशि 'एत्थ' अत्र-अत्रामत्ते 'णं' खल 'जंबुदीवे दीवे' जम्बूदीपे द्वीपे 'एरावए णामं' ऐरावतं नाम 'वासे' वर्षे
'पण्णत्ते' प्रज्ञसम्, तच कीदृशम्—इत्याद्द-'खाणुबहुले' स्थाणुबहुलं कीलबहुलं 'कंटकबहुले'
कण्टकबहुलम् 'एवं' एवम् अनेन प्रकारेण 'जा चेव' येव 'मरहस्स वत्तृव्या' भरतस्य वक्तव्यता 'सेव' सेव वक्तव्यताऽस्यापि वर्षस्य 'स्व्या' सर्वा, नतु शाट्येकदेशे दग्धे सर्वाशाटी
दग्धेत्यादी सर्वश्वदस्यावयवेऽपि व्यवद्वारस्य दर्शनादेकांश्वतोऽपि भरतवक्तव्यता 'युश्चेतेत्यत
आह-'निरवसेसा' निरवशेषा-अवशेषांश्वरहिता वक्तव्यता 'णेयव्या' नेत्व्या-वोधविषयतां
प्रापणीया बोध्येत्यर्थः, सा च वक्तव्यता कथम्भूता १ इत्याद्द-'सओअवणा' ससाधना-षट्
खण्डेरावतक्षेत्रसाधनारहिता, तथा 'सणिक्खमणा' सिनष्कमणा-परित्रच्याग्रहणकल्याणकवर्णकसदिता, तस्यां सत्यामपि विशेषं प्रदर्शयितुमाद्द-'णवरं' नवरं-केवलम् 'एरावओ चक्ववद्वी'
ऐरावतः-ऐरावतनामकः चकवर्ती भरते भरतचक्रवर्तिवदत्र भणितव्यः तस्य भरतचक्रवर्तिन
द्व दिग्विजयप्रयाणादिकं वक्तव्यम् तेनैरावतस्त्रामिकज्ञादस्यरावतिम्तयेवं नामोच्यते, यद्वाकहते हैं-'गोयमा ! सिद्दरिस्स उत्तरेणं उत्तरस्वणसमुद्दस्स दिक्तवर्णणं परित्थमः

कहते हैं—'गोयमा! सिहरिस्स उत्तरेणं उत्तरलवणसमुद्दस्स दिक्लिणेणं पुरिधमं लवणसमुद्दस्स पच्चित्थमेणं पच्चित्थमलवणसमुद्दस्स पुरिधमेणं एत्थ णं जंबुद्दीबे दिवे एरावए णामं वासे पण्णत्ते' हे गौतम! शिखरी वर्षधर पर्वत की उत्तरिक्षा में, तथा उत्तरिक्षति लवणसमुद्र की दक्षिणदिशा में, पूर्व दिग्वर्ती लवणसमुद्र की पश्चिमदिशा में एवं पश्चिमदिग्वर्ती लवणसमुद्र की पूर्वदिशा में इस जम्बूद्रीए नामके द्वीप में एरावत नामका क्षेत्र कहा गया है, यह क्षेत्र 'खाणुबहुले एवं जब्चेय भरहस्स वत्तव्यया सब्वेब सब्वा निरसेसा जेयव्या' स्थाणुबहुले , कंटकबहुल है, इस तरह की जो वक्तव्यता पहिले भरत क्षेत्र के वर्णन प्रकरण में कही जो चुकी है वही सब वक्तव्यता पूर्ण रूप से यहां पर भी जाननी चाहिये क्यों कि भरत क्षेत्र का वर्णन एकसा है 'सओअवणा सणिक्खमणा सपरिनिक्वाणा णवरं एरावओ चक्कवटी एरावओ देवो, से तेणहेणं एरावएवासे २' भरत क्षेत्र

प्रभु १६ छे. 'गोयमा! सिहरिस्स उत्तरेणं उत्तरलवणसमुद्दस्स दक्किणेणं पुग्त्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चित्रिमेणं पच्चित्रिमलवणसमुद्दस्स पुरित्थिमेणं एत्यणं जंबुद्दीवे दीवे एरावए णामं बासे पण्णते' हे गौतम! शिभरी वर्षधर पव तनी उत्तर दिशामां तथा उत्तर दिश्वर्ती सवध अमुद्रनी दक्षिण दिशामां, पूर्व दिश्वर्ती सवध समुद्रनी पश्चिम दिशामां तेमक पश्चिम दिश्वती' सवध समुद्रनी पूर्व दिशामां आ कं भूदीप नामक दीपमां शैरवत नामक दीप्र आवेतुं छे. आ देश 'खाणुबहुले कंटकबहुले एवं जच्चेय मरहस्य यत्तव्यया सच्चेय सव्या निरवसेसा णेयव्या' स्थान्न अहुल छे. इंटिक अहुल छे. स्मे प्रमाणे के वक्षतव्यता पूर्व अस्त देशना वर्षान प्रकर्णमां केहेवामां आवेती छे, ते प्रमाणे क अधी वक्षतव्यता पूर्व अस्त देशना वर्षान प्रवर्णन सेवित देशना वर्षान प्रवर्णन होत्री केहेवामां आवेती छे, ते प्रमाणे क अधी वक्षतव्यता पूर्व अस्त होत्रना वर्षान प्रवर्णन सेवित देशना वर्षान अहित केहेवामां आवेती छे, ते प्रमाणे क अधी वक्षतव्यता पूर्व अस्त होत्रना वर्षान केहेवामां आवेती छे, ते प्रमाणे क अधी वक्षतव्यता पूर्व वित्र केहेवामां आवेती छे, ते प्रमाणे क अधी वक्षतव्यता पूर्व वर्षान केहेवामां आवेती छे, ते प्रमाणे क अधी वक्षतव्यता पूर्व वर्षान केहेवामां आवेती छेन स्वर्णन सेवित देशना वर्षान केहेवामां आवेती छेन स्वर्णन सेवत देशना वर्षान केहेवामां स्थान स्थान केहेवामां स्थान केहेवामां स्थान केहेवामां स्थान के

'एरावओ देवो' ऐरावतो देवो महर्द्धिकलादि विशिष्ट पर्योपमस्थितिकलसम्पन्नः परिवसित तेन तत्स्वामिकलादस्यैरावतमिति नाम व्यवह्रियते, तदाह—'से तेणहेणं एरावए वासे
र' स तेनार्थेन ऐरावतं वर्षम् २ इति निगमनवावयं पूर्ववदृहनीयम् ।।सू० ४४।।
इतिश्री विश्वविख्यात—नगद्वञ्चभ—प्रसिद्धवाचकपञ्चद्शभाषाकलित—ललितकलापालापकप्रविश्रद्धगद्यपद्यानैकग्रन्थनिर्मापक—वादिमानमर्दक—श्री—शाह् छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त—'जैनशास्त्राचार्य'—पद्विश्र्पित—कोल्हापुरराजग्रह—वालब्रह्मचारी
जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर—पूज्यश्री—धासीलाल—वतिविरचितायां
श्री जम्बुद्धीपप्रज्ञप्तिम्चनस्य प्रकाशिकाल्यायां व्याख्यायां
चत्रथीं वसस्कारः समाधः ४ ।।

जिस प्रकार छहलंडों से युक्त कहा गया है उसी प्रकार यह ऐरावत क्षेत्र भी छह लंडों से मंडित कहा गया है। वहां जिस प्रकार भरत चक्रवर्ती छह लंडों का शासन करता है उसी प्रकार यहां पर भी ऐरावत नामका चक्रवर्ती यहां के छह लंडों पर शासन करता है भरत चक्रवर्ती जिस प्रकार सक उ संपम को धारण कर मुक्तरमा का वरण करता है उसी प्रकार यहां का ऐरावत चक्रवृती भी सकलसंपम धारण कर मुक्तिरमा का वरण करता है तात्पर्य कहने का यही है कि यहां की जितनी भी वक्तव्यता है वह सब भरत लंड के जैसी ही है यदि कुछ अन्तर है तो वह चक्रवर्ती के नामको छेकर ही है बाकी का और कोई अन्तर नहीं है अतः हे गौतम! इस एरावत चक्रवर्ती इसका स्वामी होने से तथा ऐरावत नामक महर्द्धिक देवका इसमें निवास होने से इस क्षेत्र का नाम ऐरावत ऐसा कहा गया है।।४४।।

🔃 चौथा वक्षस्कार समाप्त 🕕

सरभुं क छे. 'सओअबणा सणिक्लमणा सपरिनिव्याणा णवरं एरावओ चक्कवट्टी एरा-बओ देवो, से तेणहुंणं एरावएवासे २' लरत क्षेत्र के प्रभाखे ६ भां उथी युक्त के देवामां आवे खुं छे, ते प्रभाखे क आ अरवत क्षेत्र पखु ६ भां उथी मां उत के देवामां आवे खुं छे. अहीं के प्रभाखे लरत यक्कवर्ती ६ भां उँ। ७ पर शासन करे छे ते प्रभाखे के अहीं पखु अरवत नामक शक्वति अहीं ना ६ भां उँ। ७ पर शासन करे छे. लरत यक्कवर्ती केम सक्ष्य संयम धारख़ करीने मुक्ति रमानुं वरण करे छे, तेमक अहीं नो अरवत यक्कवर्ती पखु सक्क्ष संयम धारख़ करीने मुक्ति रमानुं वरख करे छे. तात्पर्य आ प्रमाखे छे के अहीं नी केटली वक्ष्तव्यता छे ते वक्ष्तव्यता संपूर्ण इपमां लरत भां उक्षेत्री क छे. के कंधिक तक्षावत छे ते। ते क्ष्रत्य शक्वति ना नामने। क छे. शेष के हिंध पखु करतने। तक्षावत नथी. स्थि है शेतम! आ कीरवत यक्षवती तेना स्वामी है।वाधी तथा अरवत नथी. स्थि है हैव आ क्षेत्रमां निवास करे छे, से श्री आ क्षेत्रनुं नाम अरवत से बुं कहेवामां आवे खुं छे।। स्व-४४॥

पञ्चमवक्षस्कार प्रारभ्यते

सम्प्रति यहुक्तं पाण्डुकम्बलाशिलादी सिंहासनवर्णनाधिकारे 'अत्र जिना अभिषिच्यन्ते' तत् सिंहावलोकनन्यायेन अनुस्मरन् जिनः न्याभिषेकोत्सववर्णनार्थं प्रस्तावना स्वत्रमाह-''जयाणं'' इत्यादि ।

प्रम्-जया णं एककमेकके चक्कविश्विज्ञए भगवंतो तित्थयरा समु-प्यज्जंति, तेणं कालेणं तेणं समएणं अहे लोगवत्थव्वाओ अटु दिसा कुमारीओ महत्तरिआओ सएहिं सएहिं कूडेहिं सएहिं सएहिं भवणेहिं सएहिंर पासायवडें सएहिं, पत्तेयं पत्तेयं चउहिं सामाणिअसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरिआहिं सपरिवाराहिं सत्तिहं अणिएहिं सत्तपिं अणिआ-हिवईहिं सोलसएहिं आयरकलदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिय बहूहिं भवण-वइवाणमंतरेहिं देवेहिं देवीहि य सिद्धं संपरिवुडाओ महयाहयणहगी-यवाइय जाव भोगभोगाइं मुंजमाणीओ विहरंति, तं जहा—

भोगंकरा १ भोगवई २ सुभोगा ३ भोगमालिनी । तोब्रधारा ५ विचित्ता य ६ पुष्फमाला ७ अणिदिया ८॥१॥

तएणं तासि अहेलोगवत्थव्दाणं अट्टुण्हं दिसाकुमारीणं मयहरि-आणं पत्तेयं पत्तेयं आसणाई चलंति, तएणं ताओ अहेलोगवत्थव्दाओं अट्ट दिसाकुमारीओ महत्तरिआओ पत्तेयं पत्तेयं आसणाई चलिआई पासंति पासित्ता ओहिं पउंजंति पउंजित्ता भगवं तित्थयरं ओहिणा आभोएंति आभोएता अण्णमण्णं सहावेति सहावित्ता एवं वयासी—उप्पण्णे खलु भो! जम्बुहीवे दीवे भयवं! तित्थयरे तं जीयमेअं तीअ-पच्चुप्पणमणागयाणं अहेलोगवत्थव्दाणं अट्टुण्हं दिसाकुमारी महत्तरि-आणं भगवओ तित्थगरस जम्मणमहिमं करेत्ता, तं गच्छामो णं अम्हे वि भगवओ जम्मणमहिमं करेमो त्तिकट्टु एवं वयंति, वइत्ता पत्तेयं पत्तेयं आभिओगिए देवे सहावेति सहावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेवं भो देवाणुप्पिया! अणेगखम्भस्यसण्णिवट्टे लीलट्टिअ० एवं विमाणवण्यओ भाणियव्दो जाव जोयणविच्छण्णे दिव्दे जाणविमाणे

विउविवत्ता एयमाणतियं पश्चिष्यणह ति । तएणं ते आभिओगा देवा अणेग खम्भसय जाव पचप्पिणंति, तएणं ताओ अहेलोगवस्थव्याओ अटूदिसाकुमारी महत्तरिआओ हटूतुटू० पत्तेयं पत्तेयं चउहिं सामाणिअ-साहस्तीहिं चउहिं महत्तरिआहिं जान अण्णेहिं बहुहिं देवेहिं देवीहि अ सद्धि संपरिवृडाओं ते दिव्वे जाणविमाणे दुरूहंति दुरूहिता सन्व-डुढीए सब्वजुईए घणमुइंगपणवपवाइअरवेणं ताए उक्तिहाए जाव देव मईए जेवेव भगवओ तित्थगरस्स जम्मणणगरे जेवेव तित्थयरस्स जम्मणभवणे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणं तेहिं दिव्वेहिं जाणविमाणेहिं तिखुत्तो आयाहिणपया-हिणं करेंति करित्ता उत्तरपुरिथमे दिसीभाए ईसिं चउरंगुलमसंपत्त धरणियले ते दिञ्बे जाणितमाणे ठिवंति ठिवता पत्तेयं पत्तेयं पर्वाहं सामाणिअसहस्सेहिं जाव सद्धिं संपरिवुडाओ दिव्वेहिंतो जाणविमाणे-हिंतो पञ्चोरुहंति पञ्चोरुहिता सन्वद्धीए जाव णाइएणं जेणेव भगवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेगेव उवागच्छंति उवागच्छिता भगवं तित्थ्रयरं वित्थयरमायरं च तिखुत्तो आयाहिण पयाहिणं करेंति करित्ता-पत्तेयं पत्तेयं करयलपरिग्महियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी-णमोत्थु ते रयणकुच्छिधारिए जगप्पईवदाईए सदवजगमंग-लस्स चक्खुण्णो य मुत्तस्स सब्बजगजीववच्छलस्स हियकारगमगा-देसियवाणिद्धि विभुप्यभुस्स जिणस्स णाणिस्स नायगस्स बुहस्स बोह-गस्स सब्वलोगनाहस्स निम्ममस्स पवरकुलसमुब्भवस्स जाईए खत्ति-अस्स से लोगुत्तमस्स जुगणी भण्णासि तं पुण्णासि कयत्थासि अम्हेणं देवाणुष्पिष् ! अहे लोगवत्थव्वाओ अटू दिसाकुमारी महत्तरिआओ भगवओ तिस्थगरस्स जन्मणमहिमं करिस्सामो तण्णं तुब्भेहिं ण भाइ-व्वं इति कट्टु उत्तरपुरस्थिमं दिसीभागं अवक्रमंति अवक्रमित्ता वेउ-बिअसमुग्घाएणं समोहणंति सम्मोहणित्ता संखिजाइं जोयणाइं दंइं निसरंति, तं जहा रयणाणं जाव संबट्टगवाए विउठवंति विउवित्ता तेणं सिवेणं सउएणं मारुएणं अणुद्धुएणं भूमितलविमलकरणेणं मणहरेणं सहबोउअ सुरहिकुसुमगंधाणुवासिएणं पिंडिमणिह।रिमेणं गंधुद्धुएणं तिरिअं पवाइएणं भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणस्स सहबओ समंता जोयणपरिजंडलं से जहा णामए कम्मगरदारए सिआ जाव तहेव जं तत्थ तणं वा पत्तं वा कटुं वा कथवरं वा असुइमचोक्लं पूइअं दुव्भिगंधं तं सबं आहुणिअ एगंते ऐडंति एडित्ता जेणेव भगवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छंति उवागच्छता भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छंति उवागच्छता भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमाया य उद्रसामंते आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति ॥सू०१॥

छाया - यदा खल एकैकस्मिन् चक्रवर्त्तिविजये भगवन्तस्तीर्थकराः सष्ठत्यद्यन्ते तेन सम-येन अधोलोकवास्तव्याः अष्टौ दिवकुमार्थी महत्तरिकाः स्वकैः स्वकैः कृटैः स्वकैः स्वकैः भवनैः स्वकैःस्वकैः प्रासादावतंसकैः प्रत्येकं प्रत्येकं चतुर्भिः सामानिकसहस्नैः चतस्रभिः महात्तरिकाभिः सपरिवाराभिः सप्तभिः अनीकैः सप्तभिरनीकाधिपतिभिः षोडश्वभिरात्मरक्षकदेवसहस्नैः अन्वैश्व बहुभिः भवनपतिवानमन्तरैः देवैः देवीभिश्व सार्द्धं संपरिवृत्ताः महताहतनाटचगीतवादित यावत् भोग भौगानि भुञ्जानो विहरन्ति तच्या-

'भोगंकरा १ भोगवती २ सुभोगा ३ भोगमालिनी ४ । तोयधरा ५ विचित्राच ६ पुष्पमाळा ६ अनिन्दिता ८ ॥१॥

ततः खळ तासाम् अधोलोकवास्तव्यानाम् अष्टानां दिवकुमारीणां महत्तरिकाणां प्रत्येकं प्रत्येकम् आसनानि प्रचलन्ति । ततः खळ ता अधोलोकवास्तव्या अध्यौ दिवकुमार्यो महत्त्वार्यकाः प्रत्येकं प्रभागायनित आभोग्य अन्यमन्यं शब्दियत्वा एवमवादिषुः उत्पन्नः खळ भो ! जम्बूद्धीपे द्वीपे भगवांस्तीर्थकरः तज्जीतमेतत् अतीतप्रत्युत्पन्नानागतानाम् अधोलोकन्वास्तव्यानाम् अध्यान्तेकं वास्तव्यानाम् अध्यानेकं महत्तरिकाणां भगवतस्तीर्थकरस्य जन्ममहिमानं कर्तुम् । तद् गव्लामः खळ वयमपि भगवतो जन्ममहिमानं क्रम्भं इति क्रसा एवं वदन्ति उदिसा प्रत्येकं प्रत्येकमाभियोगिकान् देवान् शब्दयन्ति शब्दयन्ति शब्दयन्ति एवमवादिषुः-क्षिप्रमेव मो देवाणुक्रियाः ! अनेकस्तम्भशतसिविष्टानि लीलास्थिकालभित्रकाकानि, एवं विमानवर्णको भणितव्यो यावत् योजनविस्तीर्णानि दिव्यानि यानविमानानि विकुर्वत विकुर्व्य एतामाञ्चिकां प्रत्यपयत इति । ततः खळ ते आभियोगिका देवाः अनेकस्तम्भशत यावत् प्रत्यपयति । ततः खळ ता अधोलोकवास्तव्या अध्यौ दिवकुमारी महत्तरिकाः हृष्ट-तुष्ट अत्येकं प्रत्येकं सामानिकसहसः चत्रस्तिः महत्तरिकाभिः यावद् अन्येः बहुभिदेवेदिनी-

भिश्र सार्द्धे सपरिवृताः तानि दिव्यानि यानविमानानि दुरोहन्ति दुरुहा सर्वद्धर्ची सर्वेद्धत्या चनमृदङ्गपणवप्रवादितरवेण तया उत्कृष्टया यावत देवगत्या यत्रैव भगवतस्तीर्थकरस्य जन्मनगरं यत्रैव तीर्थकरस्य जन्मभवनं तत्रैव उपागच्छन्ति उपागत्य भगवतस्तीर्थकस्य जन्मभवनं तैः दिन्यैः यानविमानैः त्रिः कृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणं कुर्वन्ति कृता उत्तर-पौरस्त्ये दिग्भागे ईपच्चतुरङ्गुलमसम्प्राप्तानि धरणितले तानि दिन्यानि यानविमानानि-स्थापयन्ति स्थापयित्वा प्रत्येकं प्रत्येकं चतुर्भिः सामानिकसद्ग्यः यावत्सार्द्धे संपरिवृताः दिन्धेभ्यो यानविमानेभ्यः प्रत्यवरोहन्ति प्रत्यवरुत्व सर्वेद्धर्चा यावत् नादितेन यत्रैव भगवान तीर्थकरस्त्रीर्थरमाता च तत्रैव उपगच्छन्ति उपागत्य भगवन्तं तीर्थकरं तीर्थकरमातरं च त्रिः कृत्वः आदक्षिणप्रदक्षिणं क्विनित कृत्वा प्रत्येकं प्रत्येकं करतलपरिगृहीतं दशनखं शिरसावर्त्ते मस्तके अञ्चलि कुला एवमवादिषुः नमोऽस्तु ते रत्नकुक्षिधारके जगत्प्रदीपदीपिके सर्वजगन्मङ्गळस्य चञ्चषथ ग्रुकस्य सर्वजगज्जीवदत्सळस्य दितकारकमार्गदेशकचकऋद्धिविश्व-प्रभुस्य जिनस्य ज्ञानिनः नायकस्य बुद्धस्य बोधकस्य सर्वलोकनायस्य विममस्य प्रवरक्रवलः सम्बद्धनस्य जात्या क्षत्रियस्य लोकोत्तमस्य यदसि जननी तत् धन्याऽसि, पुण्याऽसि कृतार्थोऽसि वयं खल हे देवानुप्रिय ! अधोलोकवास्तव्या अष्टी दिवकुमारी महत्तरिकाः भगवतस्तीर्थ-करस्य जन्ममहिमानम् करिष्यामः तत् खछ युष्माभिने भेतव्यम् इति कृत्वा उत्तरपौरस्त्यं दिरभागमपकामन्ति अपक्रम्य वैकियसमुद्धातेन समबधनन्ति समबहत्य सङ्ख्यातानि योजनानि दण्डं निस्जनित तद्यथा रत्नानां यावत् संवर्त्तकवातान् विकुर्वन्ति विकुर्व्य तेन शिवेन मृदुकेन मारुतेन अन्द्यू तेन भूमितळविमलकरणेन मनोहरेण सर्वर्तकसुरभिकुषुमगन्धानुवासि-तेन पिण्डिमनिर्हारिमेण गन्धोद्धुरेण तिर्थक प्रवातेन भगवतस्तीर्थकरस्य जन्मभवनस्य सर्वतः समन्तात् योजनपरिमण्डलम्, संयथानामकः कर्मकारदारकः स्यात् यावत् तथैव यत् तत्र तणं वा पत्रं वा काष्ठं वा कचवरं वा अश्ववि अचोक्षम् प्तिकम् दुरिभगन्धं तत्सवेम् आधूय आधृय एका-न्ते एडयन्ति एडयित्वा यत्रैव भगवान तीर्थकर स्तीर्थकरमाता च तत्रैत उपागच्छन्ति उपागत्य भगवस्तीर्थकरस्य तीर्थकरमातुश्र अद्रसामन्ते आगायन्त्यः परिगायन्त्यस्तिष्ठन्ति ॥ ॥ १॥

टीका-''जया णं'' इत्यादि । 'जया णं एक्कमेक्के चक्कबहिविजये भगवंतो तित्थयरा समुप्पज्जंति' यदा खछ यस्मिन् काले किल एकैकस्मिन् चक्रवर्त्ति विजये क्षेत्रखण्डे भरतै-

पंचम वक्षस्कार का कथन प्रारंभ-

'जया ण एक्कमेक्के चक्कविह विजए-' इत्यादि इस सूत्र द्वारा सूत्रकार जिलेन्द्र देव के जन्माभिषेक का वर्णन करते हुए

પાંચમા વક્ષસ્કારના પ્રારંભ-

'जया ण एक्कमेक्के चक्कवृष्टि विजए' इत्यादि

ટીકાર્થ—આ સૂત્ર વઉ સ્ત્રકાર જિનેન્દ્ર દેવના જન્માભિષેકનું વર્ષ્યુન કરતાં કહે છે— 'ज़या णं एक्कमेक्के चक्कविद्धिज्ञए' જયારે એક−એક ચક્કવર્તી દ્વારા વિજેત∘ય ક્ષેત્ર ખંડ રૂપ रावतादी, भगवन्तस्तीर्थकराः समस्पद्यन्ते तदाऽयं जन्ममहोत्सवः प्रवर्तते इति भावः, एकैक-स्मिन्नित्यत्र च बीप्साकरणात् सर्वत्रापि कर्मभूमौ जिनजन्मसम्मवो यथाकालमभिहित इति, अन्यथा चक्रवर्तिविजये इत्येतावन्यात्रोक्ती अकर्ममूभिषु देवकुर्वादिषु सर्वत्र जिनजन्मसम्भवः स्यात् अतः एकैकस्मिकित्यत्र बीप्सोपादानं सङ्गच्छते। तत्र तीर्थकरजनममहोत्सवे अधोलोक-वासिनीनाष्ट्रानां दिवकुमारीणां स्वरूपमाह-'तेणं कालेणं' इत्यादि । 'तेणं कालेणं तेणं समएणं अहेलोगवत्थव्याओ अहदिसाकुमारीओ महत्तरियाओं तस्मिन काले सम्भविज्ञन-जन्मके भरतेरावतेषु तृतीयचतुर्थारकलक्षणे महाविदेहेषु चतुर्थारकप्रतिभागलक्षणे, तत्र सर्व-तदाद्यसमयसद्भक्षालस्य वर्तमानत्वात् तस्मिन् समये सर्वत्रापि अर्द्धरात्रलक्षणे तीर्थकराणां हि मध्यरात्र एव जन्मसम्भवात् अश्रोक्षोकवास्तव्याः चतुर्णां गजदन्तानामधः समभूतलाम् नवयोजनरूपां तिर्यग्लोकन्यवस्थां विधुच्य प्रतिगजदन्तं द्वि द्वि भावेन तत्र भवनेषु वसन्वीलाः अष्टौ दिक्कुमार्यौ-दिक्कुमार-भवनपति जातीयाः, महत्तरिकाः स्वर्ग्येषु प्रधानतरिकाः 'सएहिं सएहिं कुडेहिं' स्थकेषु स्वकेषु कूटेषु गजदन्तादि गिरिवर्तिषु, 'सएहिं सएहिं भवणेहिं' स्वकेषु स्वकेषु भवनेषु भवनपतिदेवावासेषु 'सएहिं सएहिं पासायवडेंसएहिं' स्वकेषु स्वकेषु प्रासादावतंसकेषु प्रासादश्रेष्टेषु स्वस्वक्टवर्त्ति क्रीडावासेषु कहते हैं 'जयाणं एक्कमेक्के चक्कबहि विजए' जब एक चक्कवर्ति द्वारा विजेतव्य क्षेत्र खण्डरूप भरत ऐरवत 'आदि क्षेत्रों में 'भगवंतो तित्थयरा समुप्पज्जंति' भगवन्त तीर्थकर उत्पन्न होते हैं।

'ते णं कालेणं तेणं समएणं अहे लोगवत्थव्वाओ अह दिसाकुमारीओ महत्तरिआओ' तब उस कालमें और उस समय में तृतीय चतुर्थ आरेमें एवं अर्थरात्रि के समय में तीर्थंकर भगवंतो के उत्पन्न होने पर अधोलोक मे रहने-वाली आठ दिक्कुमारी देवियां जो कि अपने वर्गकी देवियों में प्रधानतर होती हैं 'सएहिं २ कूडेहिं सएहिं २ भवणेहिं सएहिं २ पासायवडेंसएहि पत्तेयं २

लरत, कैरवत ध्याहि क्षेत्रेत्सां 'भगवंतो तित्थयरा समुष्यक्कंति' लगवन्त तीर्थ कर ઉत्पन्न थाय छे. 'तेणं काळेणं तेणं समएगं अहे लोगवत्थव्याओं अह दिसाकुमारीओ महत्तरिआओं' त्यारे ते काणमां अने ते समयमां तृतीय—यतुर्थ कारामां तेमक कर्ष रात्रिना समयमां तीर्थ' कर लगवन्ते। उत्पन्न थर्छ ज्यय त्यारे क्षेधेद्वेतिकां रहेनारी काठहिक्ष्वमारी हेवीका के केका पेताना वर्णनी हेवी लामां प्रधानतर हेत्य छे. 'सएहिं र क्रूडेहिं सएहिं र मवणेहिं सएहिं र पासत्य-

⁽१) यहां आदि चान्द्र से महाविदेह क्षेत्र लिया गया है इनमें बीस तीर्थंकर विद्यमान रहते हैं-महाविदेहों में सदा चौथा आरा रहता है।

⁽૧) અહીં આદિ શખ્દથી મહાવિદેહ ક્ષેત્ર અહણ કરવામાં આવેલું છે. આ ક્ષેત્રમાં ૨૦ લીથ કરા વિદ્યમાન રહે છે. મહાવિદેહામાં સર્વદા ચતુર્થ આરા રહે છે.

सूत्रे च सप्तम्यर्थे द्वीया प्राकृतत्वात् 'पत्तेयं पत्तेयं चउहिं सामाणिवसाहस्सीहिं' प्रत्येकं प्रत्येकं चतुर्भिः सामानिकानां दिक्कुमारी सद्याद्यति विभवादिकदेवानां सद्सैः चतुः सहस्र संख्यकसामानिकदेवैरित्यर्थः 'चउर्हि महत्तरियाहि सपरिवाराहिं' चतस्रभिः महत्तरिकाभिः दिक्कमारिकातुरुयविभवाभिः सपरिवाराभिः स्वस्वपरिवारसहिताभिः 'सत्तर्हि अणिएहिं' सप्तमिरनीकैः गजाश्वरथपदातिमहिषगन्धर्वनाटचरूपैः 'सत्तर्हि अणिआहिवईहिं' सप्तिम अनीकाधिपतिभिः सोलसएर्हि आयरक्खदेवसाइस्सीर्हि' पोडशभिरात्मरक्षकसदेवहस्नैः पोड-शसहस्रसंख्यकैः आत्मरक्षकदेवैरित्यर्थः 'अण्णेहिय बहु हिं भवणवहवाणसंतरेहिं देवेहिं देवीहिय सिद्धं संपरिवृडा शो' अन्येश्व बहु भिः भवनपतिबानमन्तरैः देवैः देवीभिश्व सार्द्धं सम्परिवृताः संवेष्टिताः ननु कांसाचिद् दिक्कुमारीणां व्यक्ता स्थानाङ्गे परयोपमस्थिते भेणनात् समान-जातीयत्वेन एतासामपि दिवकुमारीणां तथाभूतायुवः सम्भाव्यमानत्वाद् भवनपतिजातीयत्वं सिद्धं तेन भवनपतिजातीयानां वानव्यन्तरजातीयपरिकरः कथं सङ्गतो भवति चेत् उच्यते, प्तासां महर्द्धिकत्वेन ये आज्ञाकारिणो ब्यन्तरास्ते ग्रह्मा इति, अथवा वानमन्तरशब्देन अत्र बनानामन्तरेषु चरन्ति ये ते वानमन्तरा इति यौगिकार्थव्युत्पादनेन भवनपतयोऽपि वान-मन्तरशब्देन गृह्यन्ते उभयेषामपि प्रायो वनादिषु विहरशीलत्वात् 'महयाहयणदृगीयवाइय जाव भोगभोगाई संजमाणीओ विहरंति' महताऽहतनाटच शीतवादित यावत भौगभोगान भुञ्जानाः विहरन्ति, अत्र यावत्पदात् तन्त्रीतलताल तुर्य घनप्रदङ्ग पद्भवादितरवेणेति ग्राह्मम्, तथा च महताऽहतनाटचगीतवादिततन्त्रीतलतालतूर्वचनमृदङ्गपद्वप्रवादितर्वेण तत्र महता चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरिआहिं सपरिवाराहिं' वे प्रत्येक अपने २ कटों में अपने अपने भवनों में अपने २ प्रासादावतंसको में चार हजार सामानिक देवो, चार संपरिवार महत्तरिकाओं 'सत्तर्हि अणिएहिं' सात सेनाओं, 'सत्तर्हं अणीयाहिबईहिं' सात अभीकाधिपतियों, 'सोलसएहिं आयक्खदेवसाह-स्मीहिं' सोलह हजार आत्मरक्षक देवों, एवं 'अण्णेहिं य बहुहिं भवणवहवाण-मंतरेहिं देवेहिं देवीहिय सिद्धं संपेरिवुडाओ महयाहयणदगीयवाइय जाव भोग-भोगाई संजमाणीओ विहरंति' और भी दूसरे अनेक भवनपति एवं वानव्यन्तर देव एवं देवियों से संपरिवृत होती हुई नाटय गीत आदि की ध्वनियों एवं

बडें सएहिं पत्तेयं २ चडिं खामाणिय साइरसीहि चडिं महत्तरिआहिं सपरिवाराहिं' तेओ हरेडे धेर पेरा-पेराताना कूटेगां, पेरा-पेराताना कपनीमां, पेरात-पेराताना प्रासाहायतं सडिगां, यार क्षण्य सामानिक हेवा, यार सपरिवार मकत्तरिक्षाओं 'सत्तिहें अणीयाहिवईहिं' सात अनीक्षिपितिओं, 'सोलसएहिं आयक्खदेवसाहरसीहिं' सेरण कुलर आत्म रक्षक हेवा तेमल 'अणोहिं य बहूहिं मवणबद्दवाणमंतरेहिं देवहिं देविहं य सिद्धं संगरिवुडाओं मह्या हय णह्मीय बाइय जीव मोगमोगाई मुंजमाणीओं विहरंति' अने श्रीब्द पण्ड अनेक क्षयनपति तेमल वान्थांतर देवा अने हेवीओधी संपरिवृत्त धर्धने नाद्य, शीत वजेरे ध्विनों तेमल

प्रधानेन बृहता वा इत्यस्य रवेणेत्यग्रे सम्बन्धः अहतः अनुबद्धो रवस्य विशेषणम्, नाटयं मृतं तेन युक्तं गीतं तच वादितानि च शब्दवन्ति कृतानि तन्त्री च वीणा तली च हस्तौ तालाध कंशिकाः तूर्याणि च पटहादीनि इति वादिततन्त्रीतल्यतालतूर्याणि तानि च तथा घनो मेघः तदाकारो यो मृदङ्गो ध्वनिगाम्भीयं साधम्यात स चासौ पटुना दक्षेण प्रधादितश्च यः स धनमृदङ्गपटुप्रवादितः स चेति अहतनाटयगीतवादिततन्त्रीतलतालतूर्यघनमृदङ्गपटुप्रवादिता इति इतरेतरहन्द्वाद् बहुवचनम् तेषां यो रवः तेन करणभूतेन महता रवेण शब्दैन अत्र च मृदङ्गप्रहणं तूर्येषु प्रधानं बोध्यम् भोगभोगान् भुङ्गानाः अनुभवन्त्यः ताः दिवकुमारी-महत्तरिकाः विहरन्ति तिष्ठन्ति, आसां नामान्याह—'तं जहा—भोगंकरा १, भोगवइ २, सुभोगा ३, भोगमालिनी ४। तोयधरा ५, विचित्ता य ६, पुष्प्रमाला ७, अणिदिया ८॥ भोगंकरा १ भोगवती २ सुभोगा ३ भोगमालिनी ४। तोयधरा ५ विचित्राच ६ पुष्प-माला ७ अनिन्दिता ८॥१॥

विविध प्रकार के वाजों की गडगडाट की ध्वनियों से मनोविनोदपूर्वक भोगों को भोगने में लगी हुई थी उन आठ दिक्कुमारिकाओं के नाम इस प्रकार से हैं-भोगंकरा १ भोगवती २ सुभोगा ३ भोगमालिनी ४ ॥४॥

तोयधारा ५ विचित्राच ६ पुष्पमाला ७ अनिन्दिता ८ ॥१॥

जब भरत और ऐरवत आदि क्षेत्रों में भगवन्त तीर्थंकर का जन्म होता है, तभी यह जन्ममहोत्सव होता है तीर्थंकर प्रभु का जन्म कर्मभूमि में इम कालों में ही होता है इससे यह जानना चाहिये कि देवकुरू आदि अकर्मभूमियों में तीर्थंकर का जन्म नहीं होता है और इन कालों के अतिरिक्त अन्यकालों में महीं होता है। जब तीर्थंकर प्रभु गर्भ में आते हैं-तब ५६ दिवकुमारीयां प्रभु की माताकी सेवा करने के लिये उपस्थित हो जाती हैं इनमें जो आठ दिवकुमारियां है उनका क्या स्वरूप है यह यहां प्रकट किया गया है जब तृतीय आरा समास

વિવિધ પ્રકારના વાદ્યોની ગડગડાહટની ધ્વનિએાથી મનાવિનાદ પૂર્વક ભાગા ભાગવવામાં પ્રવૃત્ત હતી. તે આઠ દિક્કુમારિકાએશના નામા આ પ્રમાણે છે-ભાગંકરા-૧, ભાગવતી ૨, મુલાગા ૩, ભાગમાલિની ૪, તાયધરા ૫, વિચિયા ૬, પુષ્પમાલા ૭ અને અનિન્દિતા ૮. જયારે ભરત અને એરવત વગેરે ક્ષેત્રોમાં ભગવન્ત તીર્થં કર જન્મ ધારણ કરે છે, ત્યારે જ આ જન્માત્સવ થાય છે. તીર્થં કર પ્રભુના જન્મ કર્મભૂમિમાં એ કાળે માં જ થાય છે. એથી આ પણ જાણી શકાય કે દેવકુરુ વગેરે અકર્મભૂમિઓમાં તીર્થં કરાના જન્મ થતા નથી, અને આ કાલા સિવાય બીજા કાળેમાં થતા નથી. જયારે તીર્થં કર પ્રભુ ગર્ભમાં આવે છે ત્યારે ૫૬ દિક્કુમારીઓ પ્રભુની માતાની સેવા કરવા માટે ઉપસ્થિત થઈ જાય છે. એમાં એ આઠ દિક્કુમારીઓ છે તેમના સ્વરૂપા કેવાં છે એ વિશે અહીં સ્પષ્ટતા કરવામાં આવેલી છે. જયારે તૃતીય આરો સમાપ્ત થવાની અણી પર હાય અને પલ્યનું આઠમું પ્રમાસ

अथ एतासु एवं विहरन्तिसु किं जातमित्याह-'तए णं' इत्यादि 'तए णं तासि अहे छोगवत्थव्वाणं अद्वण्हं दिवकुमारीणं मयहरियाणं पत्तेयं पत्तियं आसणाणि चलंति' ततः खछ तदनन्तरं किल तासामधोलोकवास्तव्यानामण्डानां दिवकुमारीणां महतरिकाणाम् प्रत्येकं प्रत्येकमासनानि चलन्ति चलितानि भवन्ति 'तए शं ताओ अहेलोगवत्यव्याओ अहदिसा-कुमारीओ महत्तरियाओ पत्तेयं पत्तेयं आसणाई चिलियाई पासंति ततः-आसनचलनानन्दरं खल ताः अश्रोलोकवास्तव्याः अष्टी दिवकुमार्यो सहत्तरिकाः प्रत्येकं प्रत्येकम्, आसनानि स्वकीयासनानि चलितानि कम्पितानि पश्यन्ति 'पासित्ता' दृष्टा 'ओई पउंजंति' अवधि प्रयुक्जन्ति 'अवधिज्ञानेन जानन्ति 'पउंजित्ता' प्रयुज्य ताः दिवकुमार्याः 'अगवं ति व्ययरं होते २ परुष के आठवें प्रमाण बाकी रहता है-तभी से कुलकरों की उत्पत्ति होना प्रारम्भ हो जाती है तृतीय कालकी समाप्ति का समय जब ८४ लाख पूर्व और ३। वर्ष बाकी था तब आदिनाथ प्रभु का जन्म हुआ था और पाचों कल्या-णक होकर वे मोक्ष में चल्ले गये थे। इसी बात को सुचित करने के लिये तृतीय चतुर्य आरे को भगवन्त तीर्यंकरों की उत्पत्ति का काल कहा गया है तथा हर एक तीर्थंकर का जन्म मध्यरात्रि में ही होता है इस बात को प्रकट करने के लिये ''ते णं समएणं" ऐसा कहा गया है। 'तए णं तासि अहे लीगवत्थव्वाणं अहण्हं दिसाक्कमारीणं मयहरिआणं पत्तेयं २ आसणाई चलंति' जब तीथे कर प्रभु का जन्म हो चुका तब उन अधोलोक बास्तन्य आठ महत्त्ररिक दिक्कमा-रियों के प्रत्येक के आसन चलायमान होने लगे' 'तए णं ताओ अहे लोगवत्थव्वाओ अह दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ पत्तेयं २ आसणाई चलि-आइं पासंति' जब उन अघोलोक वास्तव्य आठ महलारिक दिवक्रमारिकाः ं ओंने अपने आसन कंपित होते हुए देखे तो 'पासित्ता ओहिं पउंजंति' देख

शेष रहे छे, त्यारथी क इंबर्डरोना कन्म थया मांडे छे. तृतीय काणनी समाप्तिना क्यारे समय ८४ क्षाफ पूर्व अने आ वर्ष शेष हते। त्यारे आहिनाथ प्रभुने। कन्म थें। अने पांच क्रव्याण्ड थर्छने ते छाश्री मेक्ष्याममां कता रह्या हता. केंक वातने स्चित करवा माटे तृतीय—चतुर्थ आराने क्षणवन्त तीर्थ हरेग्रनी हत्पत्तिना क्षण कहेवामां आवेक्षा छे. तथा हरेक तीर्थ करेना कन्म मध्य गत्रिमां क थाय छे. के वातने प्रगट करवा माटे तिणं समएणं केंबुं कहेवामां आवेक्षं छे 'तएणं तासिं अहोलोगवत्थव्याणं अहुण्हं दिसा कुमारीणं मयहरिआणं पत्तेचं र आसणाइं चलंति' क्यारे तीर्थ हर प्रभुने। कन्म थर्छ गये। त्यारे ते अधाक्षेत्रक्रमां वसनारी आठ महत्तरिक्षा हिंदुक्षारिक्षाक्रीमांथी हरेके—हरेकना आसने। यक्षायमान थवा क्षाच्या. 'तएणं ताओ अहेलोगवत्थव्याओ अहदिसाकुमारीओ महत्तरिया ओ पत्तेचं र आसणाइं चलिआइं ए.संति' क्यारे ते अधाक्षेत्रमां वसनारी आठ महत्तरिया ओ पत्तेचं र आसणाइं चलिआइं ए.संति' क्यारे ते अधाक्षेत्रमां वसनारी आठ महत्तरिया औ पत्तेचं र आसणाइं चलिआइं ए.संति' क्यारे ते अधाक्षेत्रमां वसनारी आठ महत्तरिक्षा हिंदुक्षारिक्षाक्षेत्र पेत-पेताना आसने। इंपित थता क्षेत्र त्यारे 'पासित्ता क्षोहिं पर्वं

ओहिणा आभोएंति' मगवन्तं तीर्थकरम् अवविना अविवज्ञानेन आभोगयन्ति जानन्तीत्यर्थः 'आभोपत्ता' आभोष्य ज्ञात्वा अण्णमण्णं सद्दार्विति' अन्योऽन्यं परस्परम् शब्दयन्ति एकद्वि-त्रि चतसः पश्च षट् सप्ताष्टौ दिवक्कमार्थः प्रति एवम् एता अपि ताः प्रति परस्पर माह्वयन्ति इत्यर्थः 'सदावित्ता' शब्द्यित्वा आहूय 'एवं वयासी' एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण ताः दिक्कमार्यः अव!दिषु: उक्तवत्यः 'उप्पण्णे खळु भो ! जंबुदीवे दावे भगवं तित्थयरे तं जीयमेअं तीअ-पच्चुप्पण्णमणागयाणं अहे छोगवत्थव्याणं अट्टण्हं दिसाकुमारी महत्त्वस्याणं भगवओ तित्थ-गरस्स जम्मणमहिमं करेचए' उत्पन्नः खलु मोः! जम्बुद्वीपे द्वीपे-जम्बुद्वीपनामके द्वीपखण्डे भगवांस्वीर्थकरः तज्जीतमेतत्-आचार एषः अतीतप्रत्युत्पन्नानागतानामधोल्डोकवास्तव्यना-मष्टानां दिवकुमारीमहत्तरिकाणां अगवतस्तीर्थकरस्य जन्ममहिमानं जन्ममहीत्सवं कर्त्तुम् 'तं गच्छामो णं अम्हे वि भगवओ जम्मणमहिमं करेमोत्तिकट्डु एवं वर्यति' तत् तस्मात्कारणात गच्छामः खलु वयमपि भगवतस्तीर्थकरस्य जन्ममहिमानं जन्ममहोत्सवं कर उन्होंने अपने अवधिज्ञान को न्यावृत किया 'पउंजित्ता भगवं तित्थयरं ओहिणा आभोएंति' अवधिज्ञान को व्यावृत करके उन्होंने उससे भगवान तीर्थं कर को देखा 'आभोएत्ता अण्णमण्णं सद्दाविति' देख कर फिर उन्होंने एक दूसरे को बुलाया और 'सदाविसा एवं वयासी' बुलाकर ऐसी वातचीत की 'उप्पण्णे खलु भो जंब्र्हीवे दीवे भयवं तित्थयरे तं जीअमेयं तीयपच्चुप्पण्ण-मणागयाणं अहे लोगवत्थव्याणं अट्टण्हं दिसाकुमारीमहत्तरियाणं भगवओ. तित्थगरस्स जम्मणबहिमं करित्तए' जम्बूद्वीप नामके द्वीप में भगवान् तीर्थं कर जत्यन द्वए हैं तो अतीत, वर्तमान एवं अनागत महत्तरिक आठ दिक्कुमारि-काओं का यह आचार है कि वे भगवान तीर्थंकर का जन्ममहोत्सव करें। तं ग-च्छामो णं अम्हे वि भगवओ जम्मणमहिमं करेभोत्तिक हु एवं वयंति' तो चलो हम भी भगवान तीर्थं कर के जन्म की महिमा करें -ऐसा बातचीत करके उन जंति' ने ही ते मध्ये पेताना अवधिज्ञानने ज्यावृत क्युं. 'पडंजित्ता मगवं तित्थयरं ओहिणा आभोएंति' અવધિજ્ઞ:नने વ્યાવૃત કરીને તેમણે તેનાથી ભગવાન તીર્થ કરને જોયા. 'अभो-एता अण्णमण्णं सदाविंति' केंधिने पछी तेमधे क्षेत्र-भीजने छे।क्षाव्या अने 'सदाविता एवं वयासी' शिक्षावीने आ अभाषे वातयीत हरी. 'उपणो खलु मो जंबृदीवे दीवे भयवं तित्यदरे तं जीअमेयं तीय पच्चुप्पण्णमणागयाणं अहे लोगबत्यव्वाणं अट्टण्हं दिसाकुमारीमहत्त्वरियाणं भगवओ तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करित्तए' क'ल्द्रीप नामक द्वीपमां लगवान् तीर्थ'कर ઉત્પન્ન થયા છે. તાે અતીત, વર્તમાન તીર્થ કર ઉત્પન્ન થયા છે. તાે અતીત, વર્તમાન તેમજ અનાગત મહત્તરિક આઠ દિક્કુમારિકા પ્રાના એ આચાર છે કે તેઓ ભગવાન્ तीध करने। क्रन्म संदेशस्य ४२. 'तं गच्छामो गं अम्हे वि भगवओ जन्मणमहिमं करेमोत्ति कद्दु एवं वरंत्ति' ते। आहे।, आपणे पण सर्वे इमारीक्षाओ। मणीने सगवान् तीर्थ क्रना

कुर्म इति कृत्या इति विचार्य मनसा एवम् अनन्तरोक्तं वदन्ति 'वइता' वदित्वा 'पत्तेयं पत्तेयं आभिभोगिए देवे सदावेति' प्रत्येकं प्रत्येकम् आभियोगिकान् आज्ञाकारिणो देवान् शब्दयन्ति आह्यन्ति 'सदावित्ता' शब्दयित्वा 'एवं वयासी' एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण ता अष्टौ दिककुमार्यः भवादिषुः—उक्तवत्यः 'खिण्णामेव भो देवाणुष्पिया! अणेगखंभसयसण्णिविहे छीछद्विअसालिभंजियाए एवं विमाणवण्य वो भाणियव्यो' क्षिप्रमेव शीघ्रमेव भो देवानु प्रियाः अनेकस्तम्भशतसिविष्टानि अनेकानि बहूनि स्तम्भशतानि अनेक शतसंख्यकस्तम्भाः, सिविष्टानि संख्यनानि येषु विमानेषु तानि तथाभूतानि, तथा छीछस्थितशालिभिञ्चिक्षकानि—छीछास्थितशालिभिञ्जकाः 'युतली' इति भाषा प्रसिद्धाः ताः सन्ति शोभार्थे येषु तानि तथाभूतानि इत्येवम् अनेन क्रमेण विमानवर्णको भणितव्यः, स चायम् 'ईहामिग उसभतुरगणरमगरविहगवालगकिष्तः क्रमेण विमानवर्णको भणितव्यः, स चायम् 'ईहामिग उसभतुरगणरमगरविहगवालगक्तिकरुक्तरुक्तरुक्तरुवणलयपउमलयभक्तिन

सभीने एक निर्णय किया 'वहत्ता पत्तयंर आभिओगिए देवे सदावेंति' ऐसा निर्णय करके फिर उन्होंने प्रत्येकने अपने २ आभियोगिक देवों को बुलाया 'सदावित्ता एवं वयासी' बुलाकर उनसे ऐसा कहा—'खिप्पामेव भो देवाणुष्पिया! अणेग-खंभसयसण्णिविहे लीलिंद्रय सालिभंजियाए एवं विमाणवण्णओ भाणियव्वो' हे देवानुप्रियो! तुम लोग शीघ ही सेकडो खंभोवाले, तथा जिन में लीला करती हुइ स्थिति में अनेक पुतलियां शोभा के निमित्त बनाई गई हों ऐसे 'पूर्व में किये गये विमानवर्णक की तरह वर्णन वाले 'जाव जोयणविच्छिण्णे दिव्वे जाणविमाणे' यावत् एक योजन के विस्तार वाले दिव्य यान विमानों की 'विउविवत्ता एयमाणियं पच्चिप्णिहत्ति' विक्वें वणा करके हमलोगों को इस आज्ञा की समाप्ति हो जानेकी खबर दो यहां विमान का यह वर्णन इसके पहिले २ का इस प्रकार से हैं—''इहामिगउसभतुरगणरमगरविहगवालगिकवरकसरभचमर-

जन्मने। मिंद्रना इरीके. का रीते तेका सर्वे कुमारिक्षकों मणीने निर्ण्य क्यें। 'वइता पत्तेयं र आमिओिंग देवे सहावें ति' केवे। निर्ण्य करीने पछी तेकामांधी हरेके पेत-पेताना कालिये।जिक हेवे।ने छोताव्या, 'सहावित्ता एवं वयासी' छोतावीने तेमछे का प्रमाणे कहुं 'खिलामेव मो देवाणुष्पिया! क्षेणा संमसयसाण्णिविद्वे हीहिंद्य साहिमंत्रियाए एवं विमाणवण्णाको माणियव्यो' हे हेवानुप्रिये।! तमे लेकि। शीध हेल्यो स्तंलावाणा तेमक केमनामां दीता करती स्थितिमां कनेक पुत्तिकारो। रोला माटे जनाववामां आवी के केवा 'पूर्वे विमान वर्णु कमां वर्षु व्या मुक्क वर्णु नवाणा 'जाव जोयणविच्छिणो दिव्वे जाणविमाणे' यावत् केव योजन केटला विस्तारवाणा हिव्य यान विमाननी 'विडिक्तिता एयमाणित्तं पच्चिणाहित्तं' विक्वविद्या करीने पछी कमारी आ आज्ञानुं पालन करवामां आवेत के, कोवी कमने सूथना आपे। अहीं विमान विशेतुं ते वर्णुन के पहेलां करवामां आवेत के,

चित्ते खंग्रग्यवहर्तेह् शा परिगयामिराये विज्ञाहरजनलज्ञयसङ्ग्रन्तज्ञते विव अच्चीसहस्समालिणीए रूवगहर्सकलिए भिसमाणे भिविभसमाणे चक्च्लुल्लोभणलेसे सुहफासे सिस्सरीयरूवे घंटाविल्यमहुरमणहरसरे सुभे कंते दिरसणि इने निउणोवियमिसिमिसेन्तमणिर
यण घंटियाजालगरिक्खि ति' ईहामृग सुवनतुरगनरम करविद्गवालककिन्नररुख्यस्चामरकुञ्जरवनलतापपलतामितिवाणि स्तम्भोद्रतवन्नवेदिकापरिगताभिरामाणि विद्याधर यमलयुगलयन्त्रयुकानि इवार्चिसहस्रमालिनीकानि रूपसहस्रकलितानि भास्यमानानि बाभास्यमानानि चञ्चलौं वललेक्यानि सुखस्पर्कानि सश्रीकरूपाणि वण्टावलिकमधुरमनोहरसद्यानि
थुमानि कान्तालि दर्शवीयानि 'सिसिमिसेनेन्त' मणिरत्नविष्टकाजालपरिक्षिप्तानि इति ।
कियत्पर्यन्तिसत्याह—'जाव जोयणविच्लिणो दिन्वे जाणविमाणे विज्ञव्यह' इति यावद्
योजनविस्तीणीनि दिन्यानि धानविमानानि, यानाय इष्टस्थाने गुमनाय विमानानि अथवा
यानरूपाणि वाहनरूपणि दिमानानि यानविमानानि विकुर्वत वैक्रियशक्त्या सम्पाद्यत
'विज्ञव्यिता' विकुर्विताः विक्रयक्षत्या सम्पाद्य 'एयमाणित्त्यं पचिप्पणह'ित्, एताम् उक्तप्रकारामाङ्गिकां प्रत्यर्पयत समर्पयत इति । 'तए णं ते आभिओगा देवा अणेगखंभस्य
जाव पच्चिप्पति' ततः खळ तदनन्तरं किल ते आभियोगिकाः आज्ञाकारिणो देवा अनेक

कुंजरवणल्या पडमलयभित्तियेतं लंभुग्गयवइरवेइया परिग्गयाभिरामे, विज्जाहरजमलुजुअलजंतज्जेत विव अच्चीसहस्समालिणीए, रूवगसहस्स-कलिए, भिसमाणे, भिव्भिसमाणे, चक्खुल्लोअणलेसे, सहफासे, सिस्स-रीयस्वे, धंटाविलयमहुरमणहरसरे, सुभे, कंते, दरिसणिज्जे, निज्जोविय मिसमिसंतमणिरयणघंटियाजालपरिक्खिलेतं' इन सब पदों की व्याख्या पहिले राजगइनीधादि ग्रन्थों में की जा जुकी है 'तएणं ते आभिओगा देवा अणेगलंभसय जाव पच्चिप्पणंति' इस प्रकार से दिक्कुमारियों के द्वारा आज्ञस हुए उन आभियोगिय देवोंने अनेक सेकडो खंभोवाले आदि विद्रोषणों से युक्त उन धान विष्यानों को अपनी विक्रिया शक्ति से निष्पन्न करके उनको उनकी

छे ते आ प्रभादों छे-'इहामिगउसमतुरगणरमगरविद्दगत्राखगिकन्तरहरसरभचमरकुं जरवण-ख्या पच्मल्यभत्तिवित्ते खंभुग्गयवइरवेइयापरिग्ग्याभिरामे, विवजाहरजमलजुअलजंतजुत्ते विव अच्चीसहरसमालिणीए, ह्रवगसहरसकिलए, भिसमाणे, भिव्मिसमाणे, चक्खुल्लोअणलेसे, सुद्दफासे, सिसरीयह्रवे, घंटावलिय महुरमणहरसरे, सुमे, कंते, दिसिणिज्जे निउणोवियमिस-मिसे तमिणरयणयंटियाजालप्रिक्खिते' के अधा पहानी व्याण्या राजप्रश्लीय सूत्रनी अभाके रथेश सुरोधि व्याण्यामां अने अन्य सूत्र अन्येमां करवामां आवेशी छे. 'त्वणं ते आम्बोगा देवा अणेगखंमसय जाव पच्चिणणंति' आ प्रमाखे दिश्वमारिकाको विक आज्ञास यथेशा ते आलिथे।जिक हेवे।के दुल्ली क्लेशिकाणा विकेशिकालों के प्रमाखे करवानी स्तम्भशतसिष्मविष्टानि यावदाइप्तिकां प्रत्यर्पयन्ति दिक्कुमारिका वा आञ्चानुसारेण विमानसम्पादनरूपं कार्य वैक्रियशक्त्या सम्पाद्य तामाञ्चित्तं दिक्कुमारीभ्यः समप्यन्तीत्यर्थः 'तए णं
ताओ अहेलोगवत्थन्वाओ अह दिसाकुमारीमहत्तरियाओ इट्टतुद्द०' ततः खल ता अधोलोकवास्तव्याः अष्टो दिक्कुमारी महत्तरिकाः इष्टतुष्टिति पदैकदेशदर्शनेन समपूर्ण आलापको ग्राह्यः
स चायं तथाहि-इष्टतुष्टिचित्तानिद्ताः, प्रीतमनसः, परमस्यमनिश्यताः, हर्षवश्विसर्पद्
हृदयाः, विकसितवरकमलनयनाः प्रचलितवरकटकहृटितकेयुरकुण्डलहारिवराजमानरिदवक्षस्काः प्रालम्बप्रलम्बमानघोलन्तभूषणधराः ससंभ्रमं त्वरितं चपलं सिंहासनाद् अभ्युत्तिष्टिन, अभ्युत्थाय पादपीठात् प्रत्यवरोहन्ति प्रत्यदस्ह्य 'पत्तेयं पत्तेयं चर्टाहे सामाणिअ
साहस्सीहिं चउद्दि महत्तरियाहिं जाव अण्णेहिं बहुहिं देवेहिं देवीहिं अ सद्धि संपरिवुडाओ
यथावतु आञ्चा संपादित हो जाने की खपर देदी 'तएणं ताओ अहेलोगवत्थव्याओ

यथावत् आज्ञा संगदित हो जाने की खपर देदी 'तएणं ताओ अहेलोगवत्थव्वाओं अह दिक्कुमारीमहत्तरियाओं हह तुहु॰ पत्तंय चर्जाहें सामाणियसाहस्सीहिं चर्जाहें महत्तरियाहिं जाव अण्णेहिं बहुहिं देवेहिं देवीहि य सिद्धं संपरि- बुडाओं ते दिन्वे जाणिवमाने दृरूहंति' खबर पाते ही वे प्रत्येक अधोलोक बास्तव्य आठ महत्तरिका रूप दिक्कुमारीयां हर्षित एवं तुष्ट आदि विशेषणों वाली होती चार हजार सामानिक देवों. चार महत्तरिकाओं, यावत अन्य और अनेक देव देवियों के साथ २ उन विकुर्वित एक २ योजन के विस्तारवाले यान विमानों पर आरूढ हो गये "हहतुहु॰' पद से गृहीत हुआ संपूण आलापक इस प्रकार से हैं 'हण्टतुष्ट चित्तानंदिताः, प्रीतिमनसः, परमसीप्रनस्यिताः, हर्षवज्ञाविसर्गदृहद्याः, विकसितवरकमलनयना, प्रचलितवरकटकचुटितकेयूरकुण्डलहार विराजमानरितद्वक्षस्काः, पालम्बप्रलम्बमानघोलन्तभूषणधराः ससंभ्रमं, त्वरितं चयलं सिहासनात् अभ्युत्तिष्ठिन्त, अभ्युत्थाय पादपीठात् प्रत्यवरोहः रितं चयलं सिहासनात् अभ्युत्तिष्ठिन्त, अभ्युत्थाय पादपीठात् प्रत्यवरोहः

भाजा डरी हती ते आजातुं संपूर्ण रीते पासन क्ष्रीने तेमणे आजा प्री थवानी सूथना आपी. 'त एणं ताओ अहे लोगवत्थव्याओ अट्ठ दिक्कुमारीमहत्त्तरियाओ हट्ठ तुट्ठ पत्तेयं पत्तेयं चडिं सामाणियसाहस्सीहिं चडिं महत्तरियाहिं जाव अण्णेहिं बहुहि देवेहिं देवीहि य सिंद्धं संवरिवुडाओ ते दिव्ये जानविमाणे दुक्ष्हंति' फाभर मणतां क ते अधाते। वास्तव्य आठ हिर्द्धमारीकाओ हृष्टिंत तेमक तुष्ट् आहि विशेषण्याणी धर्मी यार हृष्टि सामानिक हेवे।, यार महत्तरिकाओ। यावत् अन्य धण्डां हेव-हेवीओ।नी साथ विश्वित ते ओक-ओक योकन केटका विस्तारवाणा यान-विमाना ७पर आइट धर्म भया. 'हट्ठ तुट्ठ०' पद्यी गृदीत थयेस संपूर्ण आक्षापक आ प्रमाणे छे-'ह्रण्टतुष्ठिच्छानंदितशीतिमनसः, परमसीमनस्यताः, हर्षयशिविधिहरूसाः, विकसितवरकमलन्दना, प्रचलिताः वरकटक्ष्रुटितकेयूरकुण्डलहारविराजमानरितद्वक्षस्काः प्रालम्बप्रलम्बमान घोलन्त भूषण्यराः ससंभ्रमं, त्वरितं, चपलं सिंहासनात् अभ्युत्तिष्ठन्ति, अभ्युत्थाय पादपीठात् प्रस्कर्मण्याः ससंभ्रमं, त्वरितं, चपलं सिंहासनात् अभ्युत्तिष्ठन्ति, अभ्युत्थाय पादपीठात् प्रस्कर्मण्याः ससंभ्रमं, त्वरितं, चपलं सिंहासनात् अभ्युत्तिष्ठिन्ति, अभ्युत्थाय पादपीठात् प्रस्कर्मण्याः सर्वेश्वराह्मान घोलन्त

ते दिव्वे जाणितिमाणे दुरुहंति' प्रत्येकं प्रत्येकं चतुर्भिः सामानिकसहसैः चतस्थिर्महत्तरिकािमः यावदन्येश्व बहुमिर्देवैः देवीिभश्च सार्द्ध संपरिवृत्ताः—संवेष्टिताः सत्यः तािनि
दिव्यानि यानविमानािन दुरोहित्त आरोहित्त 'दुरुहित्ता' दुरुह्य आरुह्य 'सव्बिङ्कृषि सञ्बजुईष घणमुःगपणवपवाइयरवेणं' सर्वद्ध्यां सर्वसंपदा सर्वयुत्या सर्वकान्त्या घनमृदङ्गपणवप्रवादितरवेण तत्र—चनो मेघस्तदाकारो यो मृदङ्गः ध्वनिगाम्भीर्यसाहश्यात् पणवो मृत्यदहः
उपलक्षणमेतत् तेन अन्वेषामिष तूर्यादीनां संग्रहः एतेषां प्रवादितानां यो रवः शब्दस्तेन तथा
भूतेन, तथा 'ताष उक्षिद्धाए जाव देवगईए जेणेव मगवत्रो तित्थगरस्स जम्मणणगरे जेणेव
तित्थगरस्स जम्मणभवणे तेणेव उत्राग्च्छंति' तया उत्कृष्टया यावदेवगत्या यत्रैव भगवतस्तीर्थकरस्य जन्मनगरं यत्रैव च तीर्थकरस्य जन्मभवनं तत्रैव उपागच्छन्ति, अत्र यावत्पदात्
त्वर्या चपल्या चण्डया सिंहया दिव्यया इति ग्राह्यम् एषां व्याख्यानन्तु अस्मिन्नेव वक्षस्कारे
सप्तमस्त्रेत्र दृष्टव्यम् । 'उत्रागच्छित्ता' उपागत्य ताः अष्टी दिवकुमार्यः 'भगवशे तित्थयरस्स

नित, प्रत्यवरुद्धां । दुरुहिसा सिन्वड्डीए सन्वजुईए घगमुइंगपणवपवाइयरवेणं ताए उिन्डियाए जाव देवगईए जेणेव भगवओ तित्थगरस्स जम्मणणयरे जेणेव तित्थयरस्स जम्मणभवणे तेणेव उवागच्छंति' उन विमानों पर आरूढ होकर वे सबकी सब आठ महत्तरिक दिग्कुमारियां अपनी २ पूर्ण संपत्ति, पूर्ण द्युति पूर्णकान्ति से युक्त होती हुई मेघ के आकार जैसे मृदङ्ग और पटह आदि वादिन्नों की गडगडाहट के साथ अपनी उस उत्कृष्ट आदि विशेषणों वाली देवगित से चलती चलती जहां भगवान तीर्थं कर की जन्म नगरी थी और उसमें भी जहां उन तीर्थं कर प्रमु का जन्म का भवन था वहां पर आई "त्वरया, चपलया, चण्ड्या, सिंह्या, दिन्यया" ये देवगित के विशेषण है। इनकी व्याख्या यथा स्थान की जा चुकी है। यदि इसे देखना हो तो ७ वे वक्षस्कार के सप्तम स्त्रकों देखों। 'उवगिक्छत्ता भगवओं तित्थयरस्स जम्मणभवणं तेहिं दिन्वेहिं जाण

वरोहान्त, प्रत्यवरहा । दुरुहित्ता सन्बह्हीए सन्बजुईए घणमुइंगपणवपवाइयरवेणं ताए उक्किट्ट याए जाव देवगईए जेणेव भगवओ तित्थगरस्स जम्मणणयरे जेणेव तित्थयरस्स जम्मण भवणे तेणेव उवागच्छंति' ते विभाना अपर आइढ थर्ड ने ते सर्वे आढ महत्ति हिड्ड भारीओ पातानी पूर्णु संपत्ति, पूर्णु धृति, पूर्णु धृतिथी युद्धत थती, भेवना आडार जेवा भृहं ग अने पटंड वगेरे वाद्योना गठगठाड्ड साथ पातानी उत्हृष्ट वगेरे विश्वष्णावाणी देवगतिथी यादती न्यां लगवान् तीर्थं हरनी जन्म नगरी हती अने तेमां पण्ड क्यां ते तीर्थं हर प्रसुनुं जन्म सवन हतुं त्यां गर्छ. 'त्वर्या चवल्या, चण्ड्या, सिंह्या, दिव्यया' को अधा देवगतिना विश्वष्णा छे. को पढीनी व्याण्या यथः स्थाने हरवः मां आवी छे. जेने आ पहानी व्याण्या वायवी हाय तेओ सातमां वक्षस्कारना सातमा स्त्रने वांथे. 'खागिच्छता भगवओ तित्थयरस्स जन्मणमवं तेहिं दिव्वेहिं जाणविमाणेहिं तिसुत्तो

जम्मणभवणं तेहिं दिव्वेहिं जाणविमाणेहिं ति खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति' भगवतः तीर्थकरस्य जन्मभवनं ते दिव्ये यौनाविमाने छि: कुल:-वारत्रयम् आदक्षिणप्रदक्षिणं-कुर्वन्ति त्रीन् वारान् प्रदक्षिणयन्तीत्यर्थः 'करित्ता' कुला त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य ताः दिवकुमार्थः उत्तरपुरिथमे दिसीमाए ईसि चउरंगुलमसंपते घरणियले ते दिन्वे जाणविसाणे ठविति उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे ईशानकोणे ईपच्चतुरङ्गुलमसम्प्राक्षानि चतुरङ्गुलतोऽपि नयनस्थानं न त्यक्तानि धरणितस्रे तानि दिव्यानि यानि देमानानि स्थापयन्ति 'ठवित्रा' स्थापयित्वा 'पत्तेयं पत्तेयं च उदिं सामाणियसहस्सेहिं जाव सद्धिं संपिरवुडाओ दिव्वेहिंती जाणविमाणे-हिंतो पचोरुहंति' प्रत्येकं प्रत्येकं चतुर्भिः सामानिकसहस्त्रैः यावत् सार्द्धं सम्परिष्टताः वेष्टिताः सत्यः ता अष्टौ दिनकुमार्यः दिन्यैः यानविमानैः प्रत्यवरोहन्ति अवसरन्ति, अत्र यावस्पदात् चतसभिः महत्तरिकाभिः सपरिवाराभिः सप्तभिरनीकैः सप्तभिरनीकाधिपतिभिः पोडप्रसिरा-त्मरक्षय देवसहस्रैः अन्येश्र बहुभिः भवनपतिवानव्यन्तरैः देवैः देवी सिश्रति ग्राह्मम् 'पन्नोरुहित्ता' बिमाणेहिं तिखुत्तो आघाहिणपयाहिणं करेति' वहां आकर के उन्होंने उन विमानो द्वारा भगवान तीर्थकर के जन्म भवन की तीन प्रदक्षिणाएँ की 'करिसा उत्तरपुरित्थमे दिसीभाए ईसिं चडरंगुलमसंपत्ते घरणियक्षे ते दिव्वे जाणिव-माणे ठाविंति' तीन प्रदक्षिणा करके ईशान दिशामें फिर उन्होंने अपने २ उन यान विमानों को जमीन से चार अंगुल अधर आकादा में ही खडा किया 'ठविसा पत्तेंग २ चर्डाहें सामाणियनाहस्सीहिं जाव सद्धि संपरिवुडाओ दिव्वेहिंतो जाणविमाणेहिंतो पच्चोरुहंति' आकाश में खडा करके वे प्रत्येक अपने २ चार हजार सामानिक देव आदिकों के साथ २ उन दिव्य यान विमानों से नीचे उतरी यहां यावत्पद से चतस्रिमः महत्तरिकाभिः खपरिवा-राभिः, सप्तभिरनीकैः, सप्तभिरनीकाधिपतिथिः। षोडश्रभिरात्मरक्षकदेवसङ्ख्यैः अन्यैश्च बहुभिः भवनपतिवानव्यन्तरदेवैः देवोभित्र' इस पीछे के पाठका ग्रहण हुआ है। ' पच्चोरुहित्ता सब्बड्डीए जाव णाईए णं जेलेव भगवं तित्थयरे तित्थ-

खायाहिणं पयाहिणं करें ति' त्यां कर्छ ने तेमछे ते विभाना वडे लगवान तीथ हरना कन्मलवननी त्रध्य प्रदक्षिणां करें। 'करिता उत्तरपुरिक्षिमें दिसीमाए ईसिं चउरं गुलमसंपत्ते
घरणियलें तं दिन्ने जाणिनमाणे ठिन ति' त्रध्य प्रदक्षिणां करीने पछी तेमछे पेति—पेताना
यान—विभानाने धंशान दिशामां क अवस्थित धर्यां. 'ठिनता पत्तेयं २ चडिं सामाणिय
साहस्सीहिं जान सिद्धिं संपरिवृद्धाओं दिन्नेहिंतो जाणिनमाणे हिंतोपच्चोरुहंति' अकाशमां
क पेति पेताना यान—विभानाने अवस्थित करीने ते आमांथी दरेहे हरेह पेति—पेताना
यार दुलर सामानिक देन नगेरेनी साथे—साथे ते हिन्य यान—विभानामांथी नीथे उत्तरी,
यानत पदथी 'चतुस्तिः महत्तरिकािमः सपरिवारािमः सप्तिमरनीकैः, सप्तिमरनीकािधपितिमिः
स्रिमरात्मरक्षकदेनसहकैः अन्यैक्ष बहुिमः मननपतिन्नानव्यंतरदेनैः देनीिमक्ष' आ पूर्व पाठनुषो

प्रत्यवरुश अवतीर्य सिव्यद्धीए जाव णाइएगं जेगेव भगवं तित्ययरे तित्ययरमाया य तेगीव उवागच्छंति' सर्वेद्धर्या यावत् नादितेन यत्रैव भगवांस्तीर्थकर स्वीर्थकरमाता च तत्रैव उपाग-च्छन्ति, अत्र यात्रत्यदात् सर्वेद्यायाः घनमृदद्गपणवभवादितर्वेण तया उत्कृष्टया यावदेवगत्या इति ग्राइं कियत्पर्यन्तमित्याइ-नादितेनेति-शङ्खपणवभेरीझरुलरीखरपुखीहुङुक्षपुरजमृदङ्ग-दुन्दुभिनिवें विनादिनेति 'उवागच्छिसा' उपागत्य, ता अष्टी दिक्कुमार्यः 'भगवं तित्ययरं तित्थयरमायरं च तिखुत्तो आवाहिण पयाहिणं करेंति' भगवन्तं तीर्थकरमातरं च त्रिः कृत्वः-त्रीन वारान आदक्षिणप्रदक्षिणं क्वरेन्ति 'करिता' कृत्वा त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य 'पंतेयं पत्तेयं करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ड एवं वयासी' प्रत्येकं प्रत्येकं करतलपरिष्टहीतं द्यावसं शिरसावर्त्तं मस्तके अञ्जलि कृत्या एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादिषुः उक्तवत्यः, ता अष्टौ दिक्कवार्यः किमवादिषुरित्याह-'गमोस्यु ते रयणक्रच्छिपारिष्' इत्यादि । नमोऽस्तु ते रत्नकृतिधारिके ! रत्नं भगवन्छक्षणं कक्षी उदरे घरतीति रत्नकृतिधारिका तस्य सम्बोधने हे रत्नकुक्षिधारिके ! तीर्थकरमातः ! ते तुभ्यं नमोऽस्तु तथा 'जगप्पईवदाइए' यरमाया य तेणेव उवागच्छंति' उतर कर फिर वे अपनी सप्तस्तऋद्धि आदि सहित ही जहां भगवन् तीर्थंकर और तीर्थंकर की माता थी वहां पह गई। 'उवागच्छित्ता भयवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च तिखुत्तो आयाहिणपयाहिणं करे ति' वहां जाकर **उन्होंने तीर्थ कर और तीर्थ कर को माताकी तीन प्रदक्षिणा**एं की 'करिसा परेतंयर करयलपरिग्गहियं सिरसावतं मत्थए अंजलिं कड्ड एवं वयासी' तीन प्रदक्षिणाएं करके उन पत्येक ने अपने दोनों हाथों की अंजुलियनाकर यावत् उसे मस्तक पर घुमा कर**्इस प्रकार से ्कहा-'णमोत्युते रयणकु**च्छिघारिए जगप्यईवदाईए सन्वजगनंगलस्म चन्रखुणो अ मुत्तस्स सन्वजगरजीववच्छलस्म हे रत्नकुक्षि घारिके-तीर्थं कर माता ! आपको हम सबका नमस्कार हो, हे जगत् प्रदीपदीपिके ! जगत्वर्ती समस्तजन एवं समस्त पदार्थ के प्रकादाक होने के कारण दीवक के जैसे अक्षमु अराये। छे. 'पच्चोरहित्ता सन्त्रब्दीए जाव णाइएणं जेणेव भगत्रं तित्थयरे तित्थयरमया य तेणेव ख्वागच्छंति' નીચે ઉત્તરીને પછી તેએ। પાતાની સમસ્ત ઋદિ વગેરે સહિત જયાં ભગવાન્ તીર્થ કર અને તીર્થ કરના માતાશ્રી &તા ત્યાં ગઈ. 'હવાगच्छित्ता मगवं तित्थवरं तित्ययरमायरं च तिलुते आयाहिणपयाहिणं करेंति' त्यां कर्ध ने तेमणे तीर्थं कर अने तीर्थं हरना भाताश्रीनी त्रषु प्रहिष्णाक्षा हरी. 'करित्ता पत्तेयं २ करवलपरिमाहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजिं कद्दु एवं वयासी' त्रणु प्रदक्षिणुः अरीने ५छी ते भाभाधी ६२४ दिशाकुमारिका-એાએ પાતાના હાથાની અંજલિ બનાવીને યાવત્ તે અંજલિને મસ્તક ઉપર ફેરવીને આ भ्रमाध्ये ४ ह्यं-'णमोत्थ ते रयणकुच्छिषारिए जग'पईवदाईए सञ्यजगभंगळस्स चक्खुणो य मुत्तस्स सब्बजगन्जीववच्छलस्य' 🗟 २तन्दुक्षिधारिष्ठे ! तीर्थ' ४२ भागा ! आपश्रीने अभारा नभरधार

🕏, હે જગત્ પ્રદીપદીપિકે, જગવર્તા સમસ્તજન તેમજ સમસ્ત પદાર્થીના પ્રકાશક

जगत् प्रदीपदीपिके जगतो जगद्वर्त्ति जनानां सर्वभावानां प्रकाशकत्वेन प्रदीप इव प्रदीपो भगवान् तस्य दीपिका तत्सम्बोधने हे जगत्प्रदीपदीपिके! लोकोत्तमस्य तीर्थक्करस्य यस्वं असि तत्त्वं धन्याऽसि इत्यम्ने सम्बन्धः, कीदमस्य तीर्थकरस्य इत्याह—'सम्बज्जा मंगलस्स चक्खुणो अ' सर्वभगन्मक्करस्य सर्व जगन्मक्कभ्तस्य चक्षुरिव चक्षुः सकलजगद्भावदर्शकत्वात् तस्य च, चः सम्बच्ये, चक्षुश्च द्रव्यभावभेदाभ्यां द्विधा तत्राद्यं भावचक्षुरसहकृतं न सर्व प्रकाशकं भवति तेन भावचक्षुया भगवान् अनुमीयते तस्य भगवनः तीर्थक्करस्य तथा 'म्रत्तस्य सन्वजगजीववच्छक्तः

प्रभुको चनकानेवाली हे माता आपको हम सबका नमस्कार हो क्योंकि लोकोत्त मभूत तीर्थ कर की आप माता हो ऐसा आगे के पद के साथ सम्बन्ध है यहां अब तीर्थ कर के विद्योषणों की व्याख्या की जाती है वे तीर्थ कर सकल जगत के पद्थों के भावों पर्यायों के दर्शक होने से इस संसार में मंगलभूत चक्षु के जैसे हैं इव्यच्छु और भावच्छु के भेद से चक्षु दो प्रकार के होते हैं—इव्यच्छु भावच्छु से असहकृत् हुआ कुछ भी प्रकाश नहीं कर सकता है भावच्छु ज्ञानहप होता है इव्यच्छु पौद्धलिक होता है भगवान को भावच्छु ह्व इसल्ये कहा गया है कि वे अपने केवलज्ञान हव चछु से त्रिकालवर्ती पदार्थों को उनकी अनन्त पर्यायों सहित ज्ञान होते हैं यचपि इस समय वे ऐसे नहीं है आगे ऐसे हो जावेगें अतः भविष्यत्कालिन पर्याय का वर्तमान में उपचार करके यह कथन किया गया है यहां च शब्द समुच्चय अर्थ में प्रयुक्त हुआ है शारीर के साथ आत्मा का जब तक सम्बन्ध है तब तक वह किसी अपेक्षा से मूर्तिक माना गया है जैसा कि ''बंधंपडिएयसं लक्खणदो हवेइ तक्स णावतं' यह कथन है इसीलिये यहां

હાવા બદલ દીપક જેતા પ્રભુને પ્રકાશિત કરનારી હે માતા! આપશ્રીને અમારા નમસ્કાર હો. કેમકે લોકોત્તમ ભૂત તીર્થ કરની આપશ્રી માતા છો, એવો આગળના પદની સાથે એનો સમ્બંધ છે. અહીં હવે તીર્થ કરના વિશેષણોની વ્યાખ્યા કરવામાં આવે છે. તે તીર્થ કર સમસ્ત જગતના પદાર્થીના ભાવો પર્યાયોના દર્શક હોવા બદલ આ સંસારમાં મંગલભૂત ચક્કુ જેવા છે. દ્રવ્ય ચક્કુ અને ભાવચક્કુના ભેદયી ચક્કુ બે પ્રકારનાં હોય છે. દ્રવ્ય ચક્કુ ભાવચક્કુયી અસહકૃત થયેલ કાઇને પણ પ્રકાશિત કરી શકતું નથી. ભાવચક્કુ શાન રૂપ હોય છે. દ્રવ્ય ચક્કુ ભાવચક્કુયી અસહકૃત થયેલ કાઇને પણ પ્રકાશિત કરી શકતું નથી. ભાવચક્કુ શાન રૂપ હોય છે. દ્રવ્યચક્ક પોદ્ગલિક હોય છે. ભગવાનને ભાવચક્કુ રૂપ એટલા માટે કહેવામાં આવેલા છે કે તેઓશ્રી પોતાના કેવલજ્ઞાન રૂપ ચક્કુથી ત્રિકાલવર્તી પદાર્થીને, તેમની અનન્ત પર્યાયો સહિત બાણી લે છે. એ કે આ સમયે તેએશ્રી એવા નથી, ભવિષ્યમાં એવા થઇ જશે. એથી ભવિષ્યત્કાલીન પર્યાયના વર્તમાનમાં ઉપચાર કરીને આ કથન સ્પષ્ટ કરવામાં આવેલું છે. અડ્ડીં 'વ' શબ્દ સમુચ્ચય અર્થમાં પ્રયુક્ત થયેલ છે. શરીરની સાથે આત્માના જ્યાં સુધી સંબંધ છે ત્યાં સુધી તે કાઇ અપેલાથી મૂર્તિક માનવામાં આવે છે. જેમકે— 'વંવં વહિણ્યત્તં જ્રમ્લળવો દ્વર તરસ ળાળતાં' આ કથન છે. એથી અહીં પ્રસુ માટે

स्त' मुत्तेस्य चशुप्रीह्यस्येत्यर्थः, तथा सर्वजगज्जीववत्सलस्य-सर्वजगज्जीवानःग्रुपकारकाय, प्रोक्तार्थे विशेषणद्वारा हेतुमाइ-'हियकारगमग्गदेसिय वागिद्धिविश्वपश्चरस' हितकारकमार्ग-देशक वाग् ऋदि विश्वप्रश्वकस्य तत्र हितकारको मार्गः मुक्तिमार्गः सम्यग्ज्ञानदर्शनचारित्र रूपः तस्य देशिका उपदेशदर्शिका तथा विभवी सर्वव्यापिनी सकलश्रोत्हद्यसंलग्नतात्प-र्यार्था एवंविधा वाग् ऋद्धिः-वाक् सःपत् तस्याः प्रश्वः स्वामी सातिशयवचनलन्धिक प्रभु का विशेषण ''मुत्तस्स'' रखा गया है जनता के चक्षुओं के वे विषय है इसलिये वे मूर्त हैं-चक्षुत्राह्य है अथवा "मुत्तस्त्र" की छाया "मुक्त" ऐसी भी होती है वे प्रभु मुक्ति कान्या के पति भविष्यत्काल में हो गें-समस्त कर्मी का समूल विनाश कर निर्वाण प्राप्त करें में इसलिये युवराज को राजा कहने के अनुसार द्रव्यनिक्षेप को लेकर यहां प्रसु को सुक्त ऐसा भी कहा जा सकता है वे प्रसु इसी कारण यहां समस्त जगत् के जीवों के वत्सल परोपकारक इस विद्येषण द्वारा अभिहित किये गये हैं 'हियकारगमग्गदेिसयवागिद्धि विसुव-सस्स' संसार में जितने भी संयोगी पदार्थ हैं चाहे वे स्त्रीपुत्र भित्रादिरूप हों चाहें माता पिता आदि रूप हों-वे इस जीव के हितकारी-निराइल परिणति-कारी नहीं हो सकते हैं-यदि निराकुछ परिणतिकारी कोइ है तो वह मुक्ति का ही मार्ग है-उस मुक्ति के मार्ग को देशना प्रभुते अपनी वाणी बारा दो है-वह प्रभुकी वाणी ऐसी होती है कि जो भी जीव उसे सुनता है वह उसकी भाषा में परिणत हो जाती है ऐसी वाणी द्वारा उपदिष्ट सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र रूप जो मुक्ति का मार्ग है वही आत्मा का सच्चा हितकारक है इस बात को प्रभुने

'मुक्तस्स' विशेषण् भूहवामां आवेलुं हे. जनताना अलुभानः तेओश्री विषय छे, ओशो तेओश्री भूत छे. यक्षु आहा छे. अधवा-'मुक्तस्स' नी छाया 'मुक्त' ओवी पण् थाय छे. ते प्रभु भुष्ति-धनताना पति अविष्यत्धलमां थवाना छे. समस्त धर्मीना समूल विनाश इसीने तेओश्री निर्वाण् प्राप्त धरशे, ओथी युवराजने राज्य हिल्लोओ ते मुजा द्रव्य निह्नेपने लधने अहीं प्रभुने 'मुक्तं ओवा पण् छही शशीओ ते प्रभु आ धरण्यी ज अही समस्त जाताना छवीना वत्सल-परापधारक-आ विशेषण् वहें अभिहित धरवामां आवेला छे. 'हियकारगमग्गदेसिय वागिहि विमुक्तस्स' संसारमां केटला संथाणी पहाथों छे, अले ते सी-पुत्र मित्राहिना इपे है।य है अले माता-पिता वगेरेना इपे है।य, तेओ आ छवना माटे हितकारी निराह्न परिणुत धर्म होये होये ते सिक्तने। ज मार्ण छे. ते मुद्धिना मार्ण निराह्न परिणुत धर्म तेते होये ते दे के के हार्म छव तेने सांभणे छे. ते ते मुद्धिना मार्ण हो हे के हार्म छव तेने सांभणे छे. ते तेनी आधामां परिणुत थर्म जय छे. ओवी वाण्डी वहे छपहिन्ट सम्यव्हर्शन, ज्ञान, आदित्र इप के मुद्धिनो मार्ण छे तेज भार्ण आत्माना भरा हितहारी छे, ओ वातने आदित्र इप के मुद्धिनो मार्ण छे तेज भार्ण आत्माना भरा हितहारी छे, ओ वातने

इत्यर्थः, तस्य अत्र विशेषणस्य विश्वपदस्य मूळे परित्पातः त्राकृतस्वात्, तथा 'जिणस्स णाणिस्स नायगस्स बुहस्स वोहगस्स' जिनस्य रागद्वेषजेतुः तथा झानिनः—सात्त्रियज्ञानयुक्तस्य, तथा नायकस्य धर्मश्रेष्ठचक्रविनः, तथा बुद्धस्य विदित्तत्त्वस्य तथा बोधकस्य
परेषामावेदिततस्वस्य तथा 'सञ्बलोगनाहस्स निम्हमस्स' सकललोकनाथस्य समस्त
प्राणिवर्गस्य ज्ञानवीजाधानसंरक्षणाभ्यां योगक्षेमकारित्वात्, तथा निर्ममस्य मयस्वरहितस्य
तथा 'पवरकुलसम्बन्धस्य जाईण् सित्यस्स' प्रवरकुलसमुद्भवस्य जात्या क्षत्रियस्य क्षत्रियः
सुवंशोत्पन्नस्येत्यर्थः 'जंसि लोग्नसम्स जणणी धण्णासि तं पुण्णासि कयत्थासि' एवंविधः
विख्यातगुणस्य लोकोत्तमस्य तार्थेकरस्य सत्त्वमसि जननी माता तत्त्वं धन्यार्शस्य धन्याहाँऽसि,

समस्त जीवों को समझाया है अतः प्रसु साित शयवचन लिधवाले इस विशेषण द्वारा प्रणट किये गये हैं। 'जिणस्स णाणिस्स नायगस्स बुह्स्स बोहगस्स सम्बलोगनाहस्स निम्ममस्स पवरकुलसंभवस्स जाईए खिलाअस्स जीहा लोखतः मस्स जणणी' उन्हों ने राग देष रूपी अन्तरंग शात्रुओं पर विजय पाई है इसिलये उन्हें जिन कहा गया है वे साितशय ज्ञान युक्त हुए हैं इसिलये ज्ञानी उन्हें प्रकट किया गया है नायक उन्हें इसिलये कहा गया है कि वे धर्म के श्रेष्ठ नायक हुए हैं मोक्ष मार्ग के नेता हुए हैं तत्त्वों के ज्ञाता होने से बुद्ध, दूसरों को तत्त्वों का ज्ञान कराने से बोधक, समस्त प्राणि वर्ग में ज्ञान रूप बीज के आधान से और उसके संरक्षण से योग क्षेत्रकारी होने के कारण सकल लोकनाथ, मजता विहीन होने से निर्णमत्व श्रेष्ठ कुलमें उद्मृत होने के कारण प्रवरक्षणसहद्भूत एवं क्षत्रिय वंश में जन्म छेने से जात्या क्षत्रिय प्रकट किये गये हैं। इस प्रकार के विख्यात गुणवाले लोकोत्तम तीर्थं कर की तुष जनमदाशी—जननी हो इसिलये

પ્રભુએ અધા જીવાને સમજાવી છે. સ્પેથી પ્રભુને સાતિશય વચન હૃષ્યિ રૂપ આ શિષણુ વહે પ્રકટ કરવામાં આવ્યા છે. 'जिणस्स णाणिस्स नायगस्स बुहस्स बोहगस्स सम्बलोगनाहस्स निस्तमस्य पबरकुलसंभवस्स जाईण खितकस्स जंसि लेगुत्तमस्स जणणी' तेमेखे
राग-देप ३पी अन्तरंग शत्रुओ ઉપર વિજય મેળવ્યા છે. એથી જ તેએ શ્રીને જિન કહેવામાં આવે છે. તેઓશ્રી સાતિશય જ્ઞાન યુક્ત થયા છે એથી તેમને ગ્રાની પ્રકટ કરવામાં આવ્યા છે. તેઓ ધર્મના નાયક છે તેથી તેમને નાયક પ્રકટ કરવામાં આવ્યા છે. તેઓ મોક્ષ માર્ગના નેતા છે. તેઓ તત્વાના ગ્રાતા હોવાથી ખુદ્ધ, બીજાએને તત્ત્વાનું ગ્રાન
કરાવે છે તેથી બાધક, સમસ્ત પ્રાણિ વર્ગમાં ગ્રાન રૂપી ગીજનું આધાન તેમ તેના
સંરક્ષણથી યોળ ક્ષેમકારી હોવાથી સકલહે ક નાય મસતા વિહીન હોવાયી નિર્મમત્ય, બ્રેલ્ડ
કળમાં ઉદ્ભુત હોવા બદલ પ્રવર કુલ સમુદ્દભૂત તેમજ ક્ષત્રિય વંશમાં જન્મ લેવાથી જાત્યા
ક્ષત્રિય પ્રકટ કરવામાં આવેલા છે. આ પ્રકારના વિખ્યાત ગુણ સંપન્ન લેકોન્તમ તીર્થ'કરની આપશ્રી જન્મકારી જનની છો એથી 'ધण્णાસિ' તમે ધન્ય છે. 'પુળ્ળાસિ' પુષ્ય

पुण्याऽसि पुण्यवत्यसि कृतार्थोऽसि सम्पादितप्रयोजनाऽसि 'अम्हे णं देवाणुष्पिए! अहे लोगवस्थव्याओ अहदिसाक्रमारीमहत्तरियाओ भगवओ तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करि-स्सामो तण्णं तुरुभे ण भाइअव्वं इति कट्टु उत्तरपुरित्थमं दिसीभागं अवक्रमंति' हे देवानु-प्रिये ! तीर्थक्करमातः ! वयं खलु अशोलोकवास्तव्याः अष्टौ दिवकुमारीमहत्तरिकाः भगवत-स्तीर्थेकरस्य जन्ममहिमानं जन्ममहोत्सवं करिष्यामः तेन युष्माभि नं भेतव्यम् असम्भाव्यमाने अस्मिन्नेकान्तस्थाने विसदशनातीयाः इमाः किमर्थं सपुपस्थिताः इत्याशङ्काकुलं चेतो न कार्यम् इति कृत्वा इत्युक्तवा उत्तरपौरात्यं दिग् भागम् ईशानकोणम् अपकामन्ति गच्छन्ति 'अवकमित्ता' अपक्रम्य 'वेउव्विअसमुरधाएणं समोहणंति वैक्रिय समुद्धातेन वैक्रियकरणार्थक प्रयत्नविशेषेण समवध्निनत आत्मप्रदेशान् दूरतो विक्षिपन्ति 'समोहणिसा' समवहत्य आत्म-प्रदेशान् दूरतो विक्षिप्य 'संखिज्जाई जोयणाई दंडं निसरंति' सङ्ख्यातानि योजनानि दण्डम् दण्ड इव दण्ड: अध्योधः आयतः शरीर बाहल्यो जीव प्रदेश त्वं निस्मन्ति शरीराद्बहि-'घण्णासि' तुम धन्य हो 'पुण्णासि' पुण्यवती हो 'कयत्थासि' और कृतार्थ हो 'अम्हेणं देवाणुप्पिए अहेलोगवत्थव्वाओ अद्वदिसाक्कमारी महत्तरियाओ भग-वक्षो तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करीस्सामो तण्णं तुब्भेहिं ण भाइअब्बं इति कहु वत्तर पुरस्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति' हे देवानुप्रिये! हम अधोलोक निवासिनी आठ महत्तरिंक दिक्कुमारिकाएं हैं, भगवान् तीर्थंकर के जन्ममहोत्सव को कस्ने के लिये आई हुई हैं। अतः आप भयभीत न हों अर्थात् असम्भाव्यमान है यर जनका आपात जिसमें ऐसे इस एकान्त स्थान में विसदृश जातीय ये किसलिये यहां उपस्थित हुइ हैं इस प्रकारकी आदांका से आकुलित चित्र आप न हो ऐसा कहकर वे ईशानकोण में चली गई। 'अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्धाएणं समी-हणंति' वहां जाकर उन्होंने वैकिय समुद्धात द्वारा अपने आत्म प्रदेशों को शहीर से याहर निकाला 'समोहणित्ता संखिज्जाइं जोयणाइं दंडं निसरंति' याहर

वती छो, 'कयत्थासि' अने कृतार्था छो. 'अम्हेणं देवाणुप्पिए अहेलोग वत्यव्वाओ अहुदिसा कुमारीमहत्तरियाओ भगवओ तित्थगरस्य जम्मणमहिमं करीस्तामो तण्णं तुब्मेहिं ण भाइयव्त्रं इति कर्ट्टु उत्तरप्रतियमं दिसीमागं अवनकमंति' छे हैवानु प्रिये! अभे अधिक्षेक्ष निवासिनी आह महत्तरिक हिक्कुमारीका थे। छीं थे. स्वाप्तान तीथ 'करना कन्म महित्सने उत्तर विवासिनी आह महत्तरिक हिक्कुमारीका थे। छीं थे. स्वाप्तान तीथ 'करना कन्म महित्सने उत्तर व्यापात केमां खेवा आ छोक्षानत स्थानमां विसदश स्तिय छों थे। शा भारे अत्रे उपसिक्षत थ्या छे, आ जातनी आशंकारी आहे सित यित्त आपश्री थां थे। मारे अत्रे उपस्थित थ्या छे, आ जातनी आशंकारी आहे सित वित्तर आपश्री थां थे। निर्हा आम हित्सेने तेथे। धंशान है। त्र त्र करी रही. 'अवक्किमत्ता वेजिक्य समुग्वाएणं संमोहणंति' त्यां कर्धने तेमछे वैक्षिय समुद्धात वर्ड पे।ताना आत्म प्रदेशने शरीरमांथी अहं र काद्या. 'सम्मोहणित्ता संस्विज्ञाई जोयणाई दंडं निसरंति' भक्षर कर्दीने शरीरमांथी अहं र काद्या. 'सम्मोहणित्ता संस्विज्ञाई जोयणाई दंडं निसरंति' भक्षर कर्दीने

निष्काशयन्ति निरुष्य ताः कि कुर्वन्तीत्याह-'तं जहा रयणाणं जाव संवह्यवाए विडव्वंति' तद्यथा रत्नानां यावत् संवर्त्तकशतान् विकुर्वन्ति अत्र यावत्यदात् 'वहराणं वेरिल्आणं, लोहि- अक्खाणं, मसारगल्लाणं, हंसन्वभाणं, पुलयाणं, सोगंबियाणं, जोईरसाणं, अंजणाणं, अंजण पुल्याणं, जायरूवाणं, अंकाणं, फलिहाणं रिष्टाणं, अहावायरे पुग्गले परिसार्डित परिसार्डिता अहा सहुमे पुग्गले परिभादिअंति, दुव्वंधि वेउन्विअसपुग्वाएणं समोहणंति समोहणित्ता' इतिपदसङ्ग्रहः, हीरकाणाम् १ वज्ञाणाम् २ वैद्वर्गणाम् ३ लोहिताधःणाम् ४ मसारगल्लानाम् ५ इंसगमाणाम् ६ पुलकानाम् ७ सौग न्धकानाम् ८ उयोतिरसानाम् ९ अञ्चानाम् १० अञ्चननाम् १० अञ्चनमाम् १० अञ्चनमाम् १० अञ्चनमाम् १० अञ्चनमाम् १० अञ्चनमाम् १० स्कृत्याणाम् १२ अञ्चनमाम् १० स्कृत्याणाम् १२ स्वर्णकत्याणाम् १२ एत्यानाम् १४ स्कृत्याणाम् १५ स्वर्णकत्याणाम् १५ स्वर्णकत्याणाम् १५ एतेषां तत् त्यामकपोडश्चरत्विशेषाणां सम्बन्धिनो यथा बादरान् असारान् पुद्गलान् परिसाटयन्ति परिस्थजन्ति, परिसाटच असारान् पुद्गलान् परिस्थज्य यथा सक्ष्यान् सारान् पुद्गलान् पर्णददते एत्वन्ति इष्टकार्व सम्यादनाय द्वितीयमपि वारम् वैक्रियसस्य स्वातेन वैक्रियकरणार्थकप्रयत्नविशेषण समवव्नति आन्मप्रदेशान् दृरतो विक्षिन

निकाल कर उन आत्मदेशों को उन्होंने संख्यान योजनों तक दण्डाकार में दण्ड के आकार के रूप में-परिणमाया 'तं जहा रयणाणं जाव संदर्भवाए विउन्वंति, विउन्वित्ता ते णं सिवेणं मड्एणं आहरणं अणुद्धुएणं भूमितलविमल करणेणं मणहरेणं' और किर उन्होंने यावत्पद गृहीत-"वहराणं वेकलिआणं, लोहियवखाणं मसारगल्लाणं, हंसग्रक्भाणं, पुल्याणं, सोगंधियाणं, जोहरसाणं अंजगाणं, अंजगपुल्याणं, जायस्वाणं, अंकाणं, फलिहाणं' हीरों के, वज्रों के, वेडूयाँ के, लोहिताक्षों के, मसारगल्लां के, हंसगर्भों के, पुलकों के, सौगन्धिकों के, ज्योतिरसों के, अञ्चन पुलकों के, जातस्वां के सुवर्ण रूपों के, ज्योतिरसों के, अञ्चन पुलकों के, जातस्वां के स्वाणि रूपों के, अञ्चन पुलकों के समार पुत्रलों को छोडकर यथा स्वश्न पुत्रलों को सार पुत्रलों को ग्रहण किया किर उन्होंने इन्ह कार्य के संपादन के विभिन्न बितीय वार भी विकाय रास्तुता किया और उससे

ते आतम प्रदेशांने तेमणे संण्यात ये। जना सुधी हं डाइ। सां हं उना आडारना ३५मां परिध्रुत इथी. 'तं जहा रयणाणं जाव संवट्टगवाए विक्रवंति, विक्रिवेशता तेणं सिवेणं मक्षणं
मारुएणं अणुद्धुरणं भूमितलिवमलकरणेणं मणहरेणं' अने पर्छी तेम हे यावत् पह गृद्धीत
'वइराणं वेरुलिआणं, लोहियक्लाणं मसारगल्लाणं, हं सगन्माणं पुल्याणं सोगंधियाणं, जोइरसाणं,
अंजणाणं, अंजणपुल्याणं, जायक्त्वाणं, अंकाणं, फलिहाणं' द्वीराक्षीना, वळीना वेरूथीना,
वे द्वित क्षाना, भक्षारगद्धीना, द्वंसगर्भीना, पुलक्षाना, सीगंधिकैना, क्षेतिरसेना, अंकनेतना, अंकन पुलक्षीना, कात इपाना. सुवर्ण्य इपाना, अंडाना स्इिक्षाना अने रिज्याना
तथा रत्नीना असार पुर्श्वीने छोडीने यथा सुद्ध पुर्श्वीने सार पुर्श्वीने अदेणु धर्या.
पूछी तेमणे छेल कार्यना संपाहन माटे शिल्यार पूछ् वैडिय समुद्धात क्षेति अने तथी

पन्ति समवदत्य विक्षिप्य पुनर्वे क्रियसप्रद्घातपूर्वकं संवर्षकवातान् विक्ववन्ति इति 'विउच्चित्ता' विहुर्व्य 'तेणं सिनेणं म उएणं मारुएणं' तेन तत्कालविद्यवितेन भिनेन उपद्रनरहितकस्याण-मयेन, मृदुकेन भूमिसर्विंगा मारुलेन वायुना 'अणुदूर्ण भूमितलविमलकरणेणं 'मणहरेणं' अनुद्धतेन अनुर्ध्वतामिना भूमितलविमलकरणेन-पृथित्रीतलस्तच्छकारिणा मनोहरेण मानस-रञ्जनकारकेण 'सब्बोड बसुरहि कुसुनगंथाणुवासिएगं पिंडिमणिहारिमेणं गंधुदूरणं तिरिअं पवाइएणं' सर्व ऋतुकसुरभिक्रसुनगन्धानुवासितेन पिल्डिमनिहाँविमेण गन्बोद्धरेण तिर्यक् प्रवातेन तत्र सर्वऋतुकानां षड् ऋतु समुत्यकानां सुरिभक्कसमानां सुगन्धितपुरपाणां गन्धेन अनुवासितेन पिण्डिम:-पिण्डितः सन् निर्हारिमो-दृरं निर्मननशीलो यस्तेन तथाभूतेन गन्त्रेन उद्भूरेण बलिष्टेन, तिर्थक् वातुमारब्धेन प्रवातेन वायुना भगवत्रो तित्थयरस्स जम्म-णभवणस्य सन्त्रओ समंता जोयजपडिमंडलं' भगवतस्तीर्थंकरस्य जन्मभवनस्य सईतः दिश्व समन्ताद् विदिश्व योजनपरिपण्डलम् ताः अष्टौ दिवकुमार्यः 'से जहाणामए कम्मार-संवर्तकवायुकाय की विकुर्वणा की वह वायुकाय शिव-कल्याणस्य था सदुक था भूमि के ही उतर बहता था इसिलिये अनुद्धत था अन्ध्वेगान्नी था-उतर की ओर नहीं वहता था इससे भूभितल को साफ करनेवाला होने से वह मनोरञ्जक था 'सव्शेष्टय सुरभिकुसुभगंधाणुवासिएणं' समस्त ऋतुओं के पुष्पों की गन्ध से वह वासित था 'पिण्डिमणिहारिमेजं' उसकी गंध पिण्डित होकर दूर दूर: तक जाती थी अतः वह (उद्धरेणं) विष्ठ था और (तिरिअं पवाइएणं) तिरछा चल रहा था ऐसे (मारुएणं) उस वायुकाय के द्वारा (भगवओ तित्थयरस्स जम्मण भवणस्त्र सञ्बन्धो समंता जोवणपरिमंडलं से जहा णामए कम्मदारए सिआ जाव तहेव) भगवान् तीर्थंकर के जन्म भवन की सब तरफ से अच्छी तरह से उन आठ महत्तरिक दिक्कुन।रिघों ने कर्मदारक की तरह संमार्जना की-सफाई की यहां आगत यावत्पाद से कर्भदारक के विद्योषणों का बोधक पाठ इस प्रकार से है-यह प्रकट किया गया है-''से जहाणाभए कम्मवरदारए सिया तरुणे बलवं, સંવર્ત ક વાયુકાયની વિકુર્વણા કરી, તે વાયુકાય શિવ કલ્યાણ રૂપ હતું. મૃદુક હતું, ભૂમિ ઉપર જ પ્રવાહિત થતું હતું એથી અનુદ્ધત હતું. અન્ધ્રિંગામી હતું, એટલે કે ઉપરની તરફ वहेनारुं न हतुं. शे भूभितव साइ धरनार हतुं तथी भने।रं अष्ठ हतुं. 'सन्त्रोडयसुरमि कुसुम-गन्धाणुवासिएणं' सर्व अतुःभाना पुष्पानी अंधधी ते आवासित इतुः. 'विडिमणिहासिमे णं' तेनील ध પિંડરૂપ થઇને દૂર-દૂર સુધી જતાે હતા. એથી તે 'उद्घरेण' બલશાલી હતું અને 'તિરિअंपवाइए णं' वर्डगतिथी यासतुं हतुं स्थेवा 'मारुएणं' ते वायुडाय वडे 'मगवओ तिःथयरस्स जनमणभवणस्स सव्वओं समंता जोयणपरिमंडलं से जहां नामए कम्मदारए सिआ जाव तद्देव' है अगवान् तीथ 🖰 કરના જન્મ ભવનના ચામેરથી સારી રીતે તે આઠ મહત્ત્વરિક દિર્ફુમાયિકાઓએ કમદાર-કની જેમ સંમાર્જના કરી-સફાઇ કરી. અહીં આવેલા યાવત્ પદના પાઠથી કર્મદારકના

दारए सिआ जाव' इत्येतत्स्त्र ते कदेशस्य चितदृष्टान्तस्त्रान्तर्गतेन सम्मार्जयती तिपदेन तहे वेति दार्ध्यन्तिकस्त्र वलादाया तेन एकवचनस्य बहुवचनपरकस्त्र मादाय विभक्ति विपरिणामात् सम्मार्जयन्ती ति पदेन सह अन्वय योजना कार्या, यावत् पदा संगृहीतं तच्चेदं दृष्टान्तस्त्र म् 'से जहाणामए कम्मयरदारए सिया तरुणे वळवं जुगवं जुवाणे अप्पायंके थिरमाहत्यदृद्ध-पाणिपाए पिहंतरोरुपिएणए घणनिचि भवह्विल्ञ्ञ खंधे, चम्मेदृगदुहण मुद्धि समाह्य निचि-स्राते उरस्त वळसम्ण्यागए तल्जम्ब जुञ्जलपरिघवाद्द लघणपवण जवणपमदृणसमत्थे छेए दृष्टि कुसले मेहावी निज्ञणसिप्पोवगए एगं महंतं सलागहत्थमं वा दंखसंपुच्छणि वा वेणुसलागिमं वा गहाय रायंगणं वा रायंते उरं वा देवकुलं वा समं वा पवं वा आरामं वा उज्जाणं वा अतुरिअमचवल्यमसंभंतं निरंतरं सनिज्ञणं सन्वओ समन्ता संपमज्जह' स यथान्तामको यत्प्रकारनामकः कर्मकरदारकः स्यात् भवेत्, आसन्न एत्युर्दि दारको न विशिष्ट सामर्थ्यवान भवति, इत्यत आह—तरुणः प्रवर्द्धमानवयाः, स च वल्रहीनोऽपि स्यात् इत्यत

जुगवं, जुवाणे, अप्पातंके, थिरगगहत्थदहपाणिपाए, पिइंतरोरुपरिणए, घणिणि चिअ वहबिलयखंधे, चम्मेइगदुहणमुद्विय समाहधिनिचियगत्ते, उरस्सबल समाण्णागए, तलजमलजुअलपरिघबाहु, लंघणपवणजहणपमदणसमत्थे, छेए, दक्खे, पद्दे, कुसले, मेहावी, णिउणसिप्पोवगए, एगं, महंतं, सिलागहत्थगं वा दण्ड-संबुच्छणिं वा वेणुसिलागिगं वा गहाय रायंगणं वा, रायंतेउरं वा देवकुलं वा समं वा पवं वा आरामं वा उष्जाणं वा अतुरिय मचवलमसंभंतं निरंतरं सिन-कणं सब्बओ समंता संपमज्जह" इस पाठ का अर्थ इस प्रकार से है जैसे कोई कर्मदारक वयः प्राप्त नौकरी करनेवाला लडका हो और वह आसन्न मृत्यु से पहित क्यों की आसन्न मृत्युवाला दारक विशिष्ट सामध्योंपेत नहीं होता है तथा वह तरुण हो-प्रवर्धमान वयवाला हो बलिष्ठ हो, सुषम दुष्मादि काल में जिसका जन्म हुआ हो, युवावस्था संपन्न हो, किसीभी प्रकार की विमारी

विशेषिं ने। भेषि पाठ का प्रमाणे प्रकट करवामां कावेदी। छे 'से जहाणामए कम्मयरदारए सिया तरुणे बलवं, जुगवं, जुवाणे अप्पातंके, थिरमाहत्यद्ववाणिवाए, पिट्टंतरोरुपरिणए, चणिनिक्षह्बलियंवंचे, चम्मेट्टगदुहण,मुट्टियसमाहय निचियगत्ते, अरस्सवलसमण्णागए, तलजमलजुः अलपरिषवाहू, लंघणपवण जइण पमदणसमत्थे, छेए, दक्खे पट्टे, कुसले मेहाबी, णिउणसिप्तोबगय एगं महंतं, सिलागहत्थगं वा दण्डसंपुच्लियां वेणुसिलागिगं वा गहाय राशंगणं वा, रायं देखं वा, देवकुलं वा, समं वा, पवं वा, आरामं वा, जङ्जाणं वा, अतुरिय मचवल, मसं मंतं निरंतरं सनिजणं सन्त्रओ समंता संपमण्डदं आ पाठेने। अर्थ आ प्रमाणे छे. केम है। इं इमें हारु व्यः प्राप्त ने। हरिश हरनार है। छे। हरिश कोने ते आसन्त मृत्युधी रिहत है। इमें हारु असल मृत्युवाला छे। इसे विशिष्ट सामध्येपित होते। नथी, तथा ते तुष्ट्रा

आह- बलवान् कालोपद्रवोऽपि विशिष्टसामध्यविध्नकारकः संभवतीरयत आह-युगवान् युगं सुषमदुष्वमादि कालः सोऽदुष्टो निरुपद्रवो विशिष्टसामध्येहेतुर्यस्यास्तीति असौ युगवान एतादश्य की मवति ? युवा यौवनवयस्थः, ईदशोऽपि म्नानः सन् सामर्थ्यहीनो भवतीत्यत आह-अल्पातङ्कः अल्पशब्दो अत्र अभावपरकः, तेन निरातङ्कः (रोगवर्नितः) इत्यर्भः तथा स्थिराग्रहस्तः स्थिरः प्रस्तुतकार्यकरणे कम्पमानरहितः अग्रहस्तो हस्ताग्रं यस्या सौ तथाभूतः, तथा-दृढपाणिपादः दृढं निविडतरमापन्नं पाणिपादं यस्य स तथाभूतः तथा पृष्ठान्तरोरुपरिणतः पृष्ठम् प्रसिद्धम् अन्तरे पार्श्वरूपे ऊरू सविधनी एतानि परिणतानि परिनिष्ठितानि यस्य स तथाभूतः अहोनाङ्ग इत्यर्थः, कान्तस्य परिनेपातः पाक्षिको बोध्यः, तथा घननिचितवृत्तवलितस्कन्धः घननिचित्ती निविद्धत्रस्यमापन्नी विद्धताविव वलिती हृद्यःभिमुखौ जातावित्यर्थः वृत्तौ स्कन्यौ यस्य स तथाभूतः अत्र मूळे वृत्तशब्दस्य वितन शब्दात् परत्रयोगः इष्ट पूर्वप्रयोगः प्राकृतत्वाद् बोध्यः, तथा चर्मेष्टे द्रुपणसुष्टिकसमाहत-निचित्रात्रः चर्भेष्टकेन चर्मपरिणद्ध कुट्टनोपगरणविशेषेण द्व्याणेण घनेन प्रष्टिकया च ग्रुष्ट्या समाहताः र सन्तरताडितास्ताडिताः सन्तो ये निचिताः निविडीकृताः प्रवहण प्रेष्यमाण वस्द्रग्रन्थकाद्यस्तद्वद् गात्रं यस्य स तथाभूतः तथा उरस्यवस्रसमन्वागतः उरसिभवसुर-स्वम् एवं भूतेन बळेन समन्वागतः आन्तरोत्साहवीर्ययुक्तः, तथा तल्यम् ब्रयुगलपरिववाहुः से विहीन हो, अपने कार्य के करने में जिसका इस्त कम्पन से रहित हो, जिसके हाथ और पैर बहुन अधिक मजबूत हो, कोई भी अङ्ग जिसका हीन न हो-परिपूर्ण अंगोवाला हो, स्कन्ध जिसके बहुत मांसल पुष्ट हो हृदय की तरफ झुके हुए हों और गोल आकार के हों, जिसके द्यारीरिक अवयव चमडे के बन्धमों से युक्त उपकरण विशेष से या मुद्गर से या मुध्टि का से बार २ क्रूट २ कर बहुत अधिक घन निचित अवधववाली की गई बस्त्रादिक की गांठ की तरह मजबून हों छातीका चल जिसका बहुत अधिक हो-अर्थात् भीतरी उत्साह और वीर्घ से जो युक्त हो जिसके बाहु ताछ दृक्ष के जैसे एवं

હોય પ્રવર્ધમાન વયવાળા હોય, અલિલ્ઠ હોય, સુષમ, દુષમાદિ કાળમાં જેના જન્મ થયો હોય, યુવાવસ્થા રુંપન્ન હોય, તેને કાઇ પણ જાતની ખીમારી હોય નહિ, પોતાનું કામ કરતી વખતે જેના હાથ અને પગ કંપિત થતા નથી એવો હોય, જેના હાથ અને પગ ખૂબજ સુદ્દ હોય, જેનું કાંઈ પણ અંગ હીન હોય નહિ—એટલે કે તે પરિપૂર્ણ અંગાવાળા હાય, સ્કુદ્ધ જેના અતીવ માંસલ એટલે કે પુષ્ટ હોય, હૃદ્ધ તરફ નમેલા હાય તેમજ ગાળાકાર વાળા હોય, જેના શારીરિક અવયવા ચામડાના ખંધનાથી યુક્ત ઉપકરણ વિશેષ્યો અથવા મુદ્દગરથી અધવા મુષ્ટિકાથી વારંવાર કૂડી—કૂડીને અહુજ અધિક ઘન નિચિત અવયવનાળા વસાદિકાની ગાંઠની જેમ મજળૂત હાય, જેની છાતી અળવાન હાય એટલે કે બીતરી ઉત્સાહ અને વીર્યથી જે યુક્ત હાય જેના ખાહુ તાલવૃક્ષ જેવા અને લાંબા

-तलौ तालकृशी तयो र्यमलम् समश्रेणीकं यद्युगलं द्वयं परिवश्च अर्गला तिक्षमे तत्सदशे दीर्घप्तरलपोनत्वादिना बाहू यस्य स तथा भूतः, तथा-लङ्घनण्लवनजननप्रमर्दनसमर्थः तत्र **छ**ङ्घने नर्तादे रतिक्रमणो प्छवने कृईने जनने अतिशीघ्रगमने प्रमर्दने क्रितस्यापि वस्तूनश्रूर्णने समर्थः-सक्तः, तथा छेकः कछापण्डितः दक्षः कार्याणामविङम्बितकारी (श्रीघ्र-कारी) प्रष्ठः-वाम्मी कुश्रलः सम्यक्षिया परिज्ञायकः, पेथावी सकृत् अतदण्डकर्मज्ञः, निषुण-शिल्पोपभतः -निपुणं यथास्यात्त्रया शिल्पक्रियासु कुष्ठलतासुपगतः प्राप्तः, एवंवियः पुरुषः पकं महान्तं शलाकहस्तकं वा सहित्यणीदिशलाकासमुदायं सहित्यणीदि शलाकामयीं सम्मा-र्जनिकासित्यर्थः वा शब्दाः विकल्पार्थाः दण्डसंपुच्छनीं वा दण्डयुक्तां सामार्जनिकाम् वा, वेणुश्रलाकिकीं वा वंश्वशलाकानिर्वृत्तां संमार्जिनिकां मुहीत्वा आदाय राजाङ्गणं वा-राजप्राङ्गणं, राजान्तःपुरं वा, देवकुलं वा, समां वा, पुरप्रधानानां सुरुतिवेशनदेतुमण्डपिकामित्पर्थः, प्रयां वा यानीयशालाम् आरामं वा द्रश्यत्यो नेगरासश्चरतिस्थानम्, उद्यानं वा क्रीडार्थागत-लम्बे अर्गला के जैसे जो गर्त आदि के लांघने में, कूदने में और अति शीव चलने में या अति कठिन भी बस्तु को पूर्ण करने में विद्याष्ट दाक्तिद्याली हो, छेर-कलाभिज्ञ हो, दक्ष हो कार्थ करने में विलम्बक्तीन हो, एष्ठ वाग्मी हो, क्रशल हो-कार्य करने की विधिका ज्ञाता हो, मेधाबी हो एकवार ख़नकर या देखकर उस २ काम का करनेवाला हो, निपुणिशाल्पोगत हो-अच्छी तरह से शिल्प कियाओं में कुशलता प्रति हो ऐसा वह दारक खर्जूर के पत्तोंकी बनी हुई बुहारी को या बासकी सीकों से वनी हुई बुहारी को कि जिसके भीतर दण्ड लगाया गया हो लेकर राजाङ्गण को या राजा के अन्तः पुरको देवकुलको, या पुरप्रधानजनों को सुख से बैठने योग्य किसी मंडवस्थान को, या पानीयशाला को, आराध को-दम्पतीजनों को, जहां रति कीडा करने में निश्चिन्तता **मिल्ले** ऐसे नगरायभवर्ती स्थान को या उद्यान की-कीडार्थ आगराजनों के यान बाहन

અર્ગલા જેવા હાય, જે ગર્લ વગેરેને ઓળંગવામાં, કૂદ દા મારવામાં અને અતિ શીક્ષ ચાલવામાં અથવા અતિ કહિન વસ્તુને વિચૃષ્ઠિત કરવામાં વિશિષ્ટ શક્તિશાલી હાય, છેક કલાભિન્ન હાય, દલ હાય, કાર્ય કરવામાં વિલાળ કરનાર હાય નહીં, પ્રષ્ઠ-ત્રાગ્મી હાય, કુશળ હાય-કાર્ય કરવાની વિધિને જાણનાર હાય, મેધાવી હાય, એક વખત સાંભળીને કે જોઇને કાઈ પણ કામને શીખીને કરનાર હાય, નિપૃષ્ણ-શિલ્પોપગત હાય, સારી રીતે શિલ્પ ક્રિયાઓમાં કુશલતા પ્રાપ્ત હાય' એવા તે દારક પ્રજૂરના પાંદડાની અનેલી સાવરણીને અથવા વાંસની સીકાની અનેલી સાવરણીને કે જેની અંદર દંડ બેસાડવામાં આવેલા હાય લઇને રાજાંગણને કે રાજાના અન્તઃપુરને કે દેવ-કુલને કે પુર પ્રધાન જને ને સુખ પૂર્વક કેસવા ચેલ્ય કે કેઇ મંડપ સ્થાનને કે પાનીયશાલાને, આરામને-દંપતી જનાને જ્યાં રતિ-ફીડા કરવામાં નિશ્ચિતતા મળે, એવા નગરાસન્નવર્તી સ્થાનને કે ઉદ્યાનને-ફીડાર્ય આગત

जनानां प्रयोजनाभावेनोध्वीयस्मिवतयान्ववहनःद्याश्रयभूतं तहस्वण्डम् अत्यस्तिम वपस्रमसं-आन्तम् त्वरायां चापरुषे साध्यये वा सायक् कचवराद्यनि अरुणासन्भवात्, तत्र त्वरा मान-सौरप्रक्यं चापस्यं कार्योत्मुक्यं सम्भ्रमश्च गतिस्खलनभित्रि निरम्तरं नतु भपान्तरालमोचनेन सुनिपुणं ध्वरूपस्यापि अक्षोक्षस्य अपसारणेन सर्वतः समन्तात् सम्प्रमार्जयेदिति, अय उक्त-दृष्टान्तस्य दार्ग्टान्तिकयोजनाय प्राइ-'तहेव' तथैव उक्तप्रकारेणैय एता अपि अप्टी दिवक्क-मारी महत्तरिकाः योजनपरिमण्डलं योजनप्रधाणं वृत्तक्षेत्रं राम्मःजीवन्तीति बहुवचनान्तया विभक्ति विपरिणामः 'जं तत्य तणं वा पत्तं वा कहं वा कथनरं वा असुर्वकोवासं पूर्अं दुन्भिगंधं तं सन्वं आहुणिअ आहुणिअ एगं ने एडंति एडिका जेलेव भगवं तिन्धयरे तिस्थयर-माया य तेणेव उवागच्छंति' यसत्र योजनपरिमण्डले ठुणं वा पत्रं वा कर्छं वा कचवरं वा अशुनि अपवित्रम् अयोक्षं मिलिनम् प्रिकं दुरिभगामं तास्वीमाध्रम आध्रम सञ्चारम सश्चारम एकान्ते योजनवरिमण्डलाद्य्यच एडय नेंड अपनयन्ति एडिएला अपनीयार्थात् संवर्धकवातीयममं विधाय यत्रैय भगवांस्तीर्थकरातीर्थकरमाता च तत्रैय उदायच्छन्ति 'उवाग-च्छित्ता' उपागत्य 'मगवओ तित्थयरस्त तित्थयरमायाए य अर्गसामे ते आनायमाशीओ परि-आदि के ठहरने के स्थान को जो कि वृक्षादि को से समाकुल हो, अत्व रितरूप, अचपलरूप से, असंभ्रान्तररूप से युक्त होकर अच्छी तरह कूडा करकट निका-लकर सार्फ कर देता हैं-स्वच्छ बना देता है-उसी तरह से इन आठ दिक्क-मारिकाओं ने भी योजन परिमित दृत्त क्षेत्र को विलकुल साफ सुथरा बना दिया 'जंतत्थ तणं वा पत्तं वा कहं वा कयवरं वा असुइमचीवसं, पूइअं दुब्भि-गंघं, तं सच्वं आहुणिय २ एगंते एडेंति' जो भी वहां तृण अथवा एसे, या लकडी, या कुडा करकट, या अशुचि पदार्थ या दुरिश्गन्धवाला पदार्थ था-वह सब उठा २ कर उडवा २ कर उस एक योजन परिधित वृत्तस्थान से दूसरी जगह डाल दिया 'एडिसा जेणेव भगवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छंति' संवर्तकवायुको ज्ञान्त कर फिर वे रावकी सव दिक्कुमारिकाएं जहां तीर्थंकर और तीर्थंकर की माता थी वहां पर आई-'उवागन्छिना भगवओ

किना यान-वाह्यन विशेषित हाणवाना स्थानने के के वृक्षािहित्यों समाहृत हाय, करवित इपयी, अस्यपेक्ष इपयी, असंखानत इपथी. युक्त यहांने सारी रीते हसरा आह करी नाणे छे-स्थानने स्वय्थ अनावी हे छे, तेमक ते आह हिह्हुमारिहाओं पणु थे।कन केटला वृत्त क्षेत्रने ओक्डम स्वय्थ अनावी हीधुं. 'जं तत्थ तणं वा पत्तं वा कंद्रं वा करवरं वा असुद्दमचोक्लं, पुद्धं दुव्भिगंधं तं सत्वं आहुणिय र एगंत्ते एडेंति' त्यां तृष्णु, पांहका लाक्डल, क्यरें।, अशुध्य पहार्थ, मिलन पहार्थ, हरिल अन्धवाणा पहार्थ के कंडि हतुं तेने किंदवी-इठावीन, ते ओक ये।कन परिमित वृत्त स्थानथी भीका स्थणे नाणी हीधुं. 'प्रिता जेणेव मगवं तित्थदरे तित्थयरमाया य तेणेव जवागच्छंति' संवर्ध वाधुने शांत करी

गायमाणीओ चिहंति' मगनतस्तीर्थङ्करस्य ीर्थङ्करमातुश्च अदुरसामन्ते नातिदुरासन्ते आगाय-न्तयः—आ-ईपत्स्वरेण गायन्त्यः प्रारम्भकाले मन्दस्वरेण गायमानतःत् परिगायन्त्यः गीत प्रश्नतिकालानन्तरं तारस्वरेण गायन्त्य स्तिष्ठन्ति ताः अष्टौ दिक्कुमारी महत्तरिकाः ॥स् ० १॥ अथ ऊर्ध्वलोकव।सिनीनाम्बसरमाह-'तेणं कालेणं' इत्यादि ।

म्लम्-तेणं कालेणं तेणं समएणं उद्धलोगवत्थव्वाओ अट्टदिसा-क्रमारी महत्तरियाओ सएहिं सएहिं कूडेहिं, सएहिं सएहिं भवणेहिं सएहिं सएहिं पासायवडेंसएहिं पत्तेयं पत्तेयं च उहिं सामः णियसाइ-स्तीहिं एवं तं चेत्र पुठवविणयं जाव विहरंति, सं जहा-मेहंकराश, मेहबई२, सुमेहा३, मेहमालिनो४। सुदच्छा५ वच्छिमत्ता यद वारिसेणा७ बलाहगाट ॥१॥ तएणं तासि उद्धलोगवत्थव्याणं अद्वण्हं दिसाकुमारी महत्तरियाणं एतेयं पतेयं आसणाइं चरंति, एवं तं चेव पुठवविणयं भाणियव्यं जाव अम्हेणं देवाणुष्पिए ! उद्धलोगवत्थव्वाओ अट्र दिसा-कुमारी महत्तरियाओ जे णं भगवओ तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करि-स्तामो तेणं तुब्भेहिं ण भाइअव्वं तिकदृदु उत्तरपुरस्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता जाव अब्भवद्दलए विउठ्वंति विउद्यिता जाव तं निहयरयं णटूरयं भटूरयं पसंतरयं उवसंतरयं करेंति करित्ता खिप्पा-मेव पच्चवसमंति, एवं पुष्फबद्दलंसि पुष्फबासं वासंति वासिता जाव कालागुरु पवर जाव सुरवराभिगमणजोग्गं करेंति करित्ता जेणेव भगवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छंति उवागच्छिता जाव आगायसाणीओ परिगायमाणीओ चिट्टंति ॥ सू० २॥

तित्थवरस्स तित्थवरमायाए अदूरसामंते आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति' वहां आकर वे अपने उचित स्थान पर बैठ गई और पहिले धीमे धीमे स्वर से और बाद में जोर २ स्वर से गानेलगी ॥१॥

પછી તે બધી દિક્કુમારિકાએ જ્યાં તંધ કર અને તીર્થ કરના માતુથી હતાં ત્યાં આવી. 'હવાगच्छित्ता भगदओ तित्थयरस्स तित्थयरमायाएअद्र सामंते आगायमणीओ परिगाय-माणीओ चिट्ठंति' त्यां જઇને તેઓ પેત-પોતાના ઉચિત સ્થાન ઉપર બેસી ગઇ અને પહેલાં ધીમા-ધીમા સ્વરે અને ત્યાર પછી જેર-પ્રેરથી ગાવા લાગી. ॥ ૧ ॥ छाया-तेन कालेन तेन समयेन ऊर्ध्वलोक वास्तव्याः अष्टौ दिवकुमारीमहत्तरिकाः स्वकैः स्वकैः स्वकैः स्वकैः स्वकैः स्वकैः प्रासादावतंसकैः प्रत्येकं प्रत्येकं चतुर्भिः सामानिकसङ्ग्लैः एवं तदेव पूर्ववणितं यावद् विहरन्ति तद्यथा—'मेघंकरा १ मेघवती २ सुमेघा ३ मेघमाः लेनी ४। सुवत्सा ५ वत्सिम् इ च वारिषेणा ७ वलाहका ८॥१॥ ततः स्वल्ल तासाम् अर्ध्वलोकवास्तव्यानाम् अष्टानां दिवकुमारीमहत्तरिकाणाम् प्रत्येकं प्रत्येकम् आसनानि चलन्ति, एवं तदेव पूर्ववणितं भणितव्यं यावत् वयं स्वल्ल देवानुप्रिये! ऊर्ध्वलोकवास्तव्याः अष्टौ दिवकुमारीमहत्तरिका येन भगवतस्तीर्थकरस्य जनममहिमानं करिष्यामः तेन युष्मामि न भेतव्यम् इति कृत्वा उत्तरपौरस्त्यं दिग् भागम् अपक्रामन्ति अपक्रम्य यावत् अभवादिलकानि विकुर्वन्ति विकुर्वयं यावत् तत् निहत्रुकः, नष्टरजः भ्रष्टरजः प्रशान्तरजः उक्शान्तरजः कुर्वन्ति कृत्वा क्षिप्रमेव प्रत्युपशाम्यन्ति एवं पुष्पवादिलके पुष्पवर्षे वर्षन्ति वर्षित्वा यावत् कालागुरुप्रवर्ष यावत् सुरवराभिगमनयोग्यं कुर्वन्ति कृत्वा यत्रैव भगवान तीर्थङ्करस्तीर्थङ्करमाता च तत्रैव उपागच्लन्ति उपागत्य यावत् आगायन्त्यः परिगायन्त्त्यः तिष्ठिनित ।।स् ० २॥

टीका-'तेणं कालेणं' इत्यादि 'तेणं कालेणं तेणं समएणं उद्धलोगवत्थव्वाओ अद्व दिसाकुमारी महत्तरियाओ सएहिं सएहिं कूडेहिं' मूले सप्तम्यथें तृतीया तेन तिस्मन् काले सम्भविजननमके भरतेरावतेषु तृतीयचतुर्थारकलक्षणे महाविदेहेषु चतुर्थारकभिताग-लक्षणे तत्र 'सर्वदाऽपि तत्राचसमयसदशकालस्य वर्तमानत्वात् तिस्मन् समये अर्द्धरात्र-लक्षणे तीर्थकराणां हि मध्यरात्र एव जन्मसंभवात् ऊर्ध्वलोकवास्तव्याः अष्टौ दिक्कुमारी-महत्तरिकाः दिक्कुमार्यो दिक्कुमार् भवनपतिजातीयाः महत्तरिकाः स्ववर्ण्येषु प्रधानतरिकाः स्वकैः स्वकै कूटैः सप्तम्यर्थे तृतीया तेन स्वकेषु स्वकेषु कूटेषु 'सएहिं सएहिं भवणेहिं' स्वकैः स्वकैः भवनैः स्वकेषु स्वकेषु भवनेषु भवनपतिदेवावासेषु 'सएहिं सएहिं पासाय-

ं तेलं कालेणं तेणं समएणं उद्धलोगवत्थव्याओ' सूर्वाशा

टीकार्थ-'तेणं कालेणं तेणं समएणं' उस कालमें और उस समय में 'उद्ध-लोगवत्थव्वाओ अह दिसाकुमारिमहत्तरियाओ सएहिं २ कूडेहिं, सएहिं २ भवणेहिं, सएहिं २ पासायवडें सएहिं पत्तेयं २ चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं एवं तं चेव पुब्ववण्णियं जाव विहरंति' उद्ध्वेलोकवासिनी आठ महत्तरिक प्रत्येक दिक्कुमारिकाएं अपने २ कूटों में अपने अपने भवनों में अपने अपने प्रासादाव-

'तेणं कालेणं तेणं समएणं उद्धलोगवत्थव्याओ' इत्यादि

टीडाध-'तेणं काळेणं तेणं समएणं' ते काण अने ते समयमां 'उद्धलोगवत्यव्याओ अह विसाद्यमारिमहत्तरियाओ सपिहं २, क्हेहिं, सपिहं २, भवणेहिं, सपिहं २, पासायवडेंस- एहिं पनेयं २ च उहिं सामाणियसाहस्सीहिं एवं तं चेत्र पुटत्वणिणयं जाव विहरंति' ७६वी- बेरिड वासिनी आठ महत्तरिक हरेक हिंधुआरिकाओ। पेरत-पेरताना कृटीमां, पेरत-पेरताना

वेडेंसएहिं' स्वकैः स्वकैः प्रासादावतंसकैः-स्वकेषु स्वकेषु प्रासादावतंसकेषु स्वस्वकूटवर्त्ति-कीडावासेषु 'पत्तेयं पत्तेयं चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं' प्रत्येकं प्रत्येकं चतुर्भिः सामानिक-सदसेः सामानिकानां दिवकुमारीसदृशद्यतिविभवादियुतां देवानां सदसैः चतुः सहस्र-संख्यकसामानिकदेवैरिस्यर्थः एवं तं चेव पूच्वविणियं जाव विहरंति' एवं तदेव पूर्ववदेव पूर्ववर्णितं यावद् विहरन्ति तिष्ठन्ति, अत्र यावत् पदात् 'चउहिं महत्तरियाहिं सपरिवाराहिं' इस्यारभ्य 'देवेहिं देवीही य सर्ख्नि संपरिवुडाओं' इत्यन्तं ग्राह्मम्, एतत्सर्वे व्याख्यानं च अन्यवहितपूर्वसूत्रे द्रष्टन्यम्, अयं विशेषः प्रोक्ताष्टद्विकः मारीमहत्तरिकाणाम् ऊर्ध्वछोक-वासित्वं च समभूतलात् पश्चाश्वतयोजनोच्चनन्दनवनगतपश्चशतिकाष्टकटवासित्वेन ज्ञेयम् तंसकों में जैसा कि पहिले प्रथम सूत्र में कहा जा चुका है उसके अनुसार अपने २ चार हजार समानिक देव आदिकों के साथ परिवृत्त होकर भोगों को भोग रही थी उनके नाम इस प्रकार से हैं-'मेहंकरा १, मेहवई २, सुमेहा ३, मेह-मालिनी ४, सुवच्छा वच्छमित्ताय ६, वारिसेणा ७, बलाहगा ८, " मेर्चकरा, मेचवती, सुमेघा, मेघमालिनी सुवत्सा, वत्सिमत्रा, वारिसेणा, और बलाहका। "एवं चेव तं पुव्वविण्ययं जाव विहरंति" में जो यावत्पद आया है-उससे "चउहिं महत्तारियाहिं सपरिवाराहिं" यहां से छेकर ''देवेहिं देवीहि य सिद्धं संपरिवुडाओं" तकका पाठ गृहीत हुआ है अर्थात् जैसा यह पाठ प्रथम सूत्र में िल्ला जा चुका है-वैसा ही वह सब पाठ यहां पर ग्रहण करछेना चाहिये गही यावत्पद का प्रयोजन है। इनमें और आठ अधोलोक वासिनी दिक्कुमारिकाओं में यह अन्तर है कि इन आठ महत्तरिक दिक्कुमारिकाओं में जो उर्ध्वलोक-बासिता है वह इस समतलभूतलसे पांचसी घोजन ऊंचाई वाले नन्दनवन में रहे हुए पश्रदातिक आठ कुटों में रहने से है यहां ऐसी आदांका नही करनी

सवनीमां, पेत-पेताना प्रासाहावतं सड़ीमां के प्रमाधे प्रथम सूत्रमां हहेवामां आव्युं छे ते प्रमाधे पेत-पेताना यार हुलर सामानिह हेवा वर्गरेनी साथ परिवृत धर्छ ने लेगि। सेवावी रही हती, तेमना नामे। आ प्रमाधे छे 'मेहंकरा १, मेहवई ३, सुमेहा ३, मेह-मालिनी ४, सुवच्छा ५, वच्छिमित्ताय ६, वारिसेणा ७, वलाहगा ८ ॥ मेधं हरा, मेधवती, सुमेहा, मेधमालिनी, सुवत्सा, वत्सिमत्रा, वारिसेखा अने अलाह्मा ८ ॥ मेधं हरा, मेधवती, सुमेहा, मेधमालिनी, सुवत्सा, वत्सिमत्रा, वारिसेखा अने अलाह्मा ८ ॥ मेधं हरा, मेधवती, सुमेहा, मेधमालिनी, सुवत्सा, वत्सिमत्रा, वारिसेखा अने अलाह्मा १ एवं चेव तं पुत्व विणायं जाव विहरंति' मां के यावत पह आवेश छे तेथी 'चउहिं महत्तरियाहिं सापवाराहिं' अहींथी भांडीने 'देवेहिं देवीहि य सिंहं संपरिवृद्धाओं' सुधीना पाठ गृहीत थये। छे. ओटले हे के प्रमाखे आप पाठ प्रथम सूत्रमां हिंद्धामां आवेला छे, तेवाल पाठ अहीं गृहीत थये। छे. यावत् पहनुं ओल प्रयोजन छे. ओ पाठमां अने आठ अधिलेक वासिनी हिक्कमारिक्रओमां आटलेक्षा तक्षावत छे हे आ आठ महत्तरिक्ष हिक्कमारिक्राओमां के उर्धवं है। हिक्कमारिक्षाओमां आटलेक्षा तक्षावत सूत्रस्थी प०० येक्षन छ। याच वाला न-हनवनमां आवेला हो। हिक्कमारिक्षाओमां अप समत्रत सूत्रस्थी प०० येक्षन छ। याच वाला न-हनवनमां आवेला हो।

नमु अधोलोकवासिनीनां गजदन्तगिरिगतकटाष्टके यथा क्रीडानिमित्तको वासस्तथैव तासा-मपि अत्र भविष्यतीति चेत्, मैवं यथाऽघोलोकवासिनीनां गजदन्तगिरिनामधो भवनेषु वासः श्रयते तथैतासाम् अश्रयमाणत्वेन तत्र निरन्तरेण वाससद्भावात् ततश्रोर्ध्वछोकवासि-त्वोपपत्तः। एतासां नामानि पदवन्त्रेनाह 'तं जहा-मेहंकरा १ मेहवई २ सुमेहा ३ मेह-मालिनी ४ । सुवच्छा ५ वच्छिमित्ताय ६ वारिसेणा ७ बलाइगा ८ ॥१॥ तद्यथा-मेघङ्करा १ मेघवती २ सुमेघा ३ मेघमाल्रिनी ४ । सुवत्सा ५ वत्समित्रा च ६ वारिषेणा ७ बलाइका ८ ॥१॥ 'तए णं तासिं उद्धलोगवत्थव्वाणं अहण्हं दिसाकुमारीमहत्तरियाणं पत्तेयं पत्तेयं आसणाई चलंति' ततः खलु तदनन्तरं किल, तासाम् ऊर्ध्वलोकवास्तव्यानाम् अष्टानां दिक्कुमारीमहत्तरिकाणां प्रत्येकं प्रत्येकम् आसनानि चल्नित चलितानि भवन्ति 'एवं तं चेव प्रविविणयं भाणियव्वं जाव अम्हेणं देवाणुष्पिये ! उड्डलोगवत्थव्वाओ अहदिसाकुमारी चाहिये कि जिस प्रकार अधोलोकवासिनी आठ दिक्कमारिकाओं का बास गज-दन्तगिरिगत अष्टकूटों में कीडा के निमित्त होता है और इसी से उन्हें "अघो-लोक वासिनी" इस विद्रोषण से अभिहित किया गया है तो ऐसाही इनका निवास पश्चरातिक आठ कुटों में रहने से होता होगा ? क्योंकि अधोलोकवासिनी आठ दिनक्कमारिकाओं का तो वास इसी प्रकार से गजदन्तगिरियों के नीचे के भवनों में सुना गया है वैसा इन उर्ध्वलोकवासिनी आठ दिक्कुमादिकाओं के वहां निवास के सम्बन्ध में नहीं सुना गया है।ये तो वहां निरन्तरही रहती है 'तए-णं तासि उद्धलोगवत्थव्वाणं अद्वण्हं दिसाकुमारीमहत्तरियाणं पत्तेयं २ आस-णाइं चरुंति' जब तीर्थंकर प्रभु का जन्म हो चुका-तब इन उर्ध्वलोकवासिनी आठ दिक्कुमारिकाओं ने अपने अपने आसनों को कम्पित होते हुए देखा 'तं चेव पुन्वविणयं भाणियन्वं' तो देखकर के उन्होंने क्या किया-इस सम्बन्ध में जानने के लिये सूत्र प्रथम में जैसा कहा गया है वैसाही यहांपर भी समझना चाहिये-

પંચરાતિક આઠ કૂટામાં રહેવાથી છે. અહીં એવી આશંકા કરવી એઇએ નહિ કે જેમ અધાલાકવાસની આઠ દિક્કુમારિકાઓના વાસ ગજદન્ત ગિરિગત અન્ટ કૂટામાં કીડા નિમિત્તે દાય છે, અને એથી જ તેમને 'अથો છો कवासिनी' એ વિશેષણથી અભિહિત કરવામાં આવી છે તો આ પ્રકારના જ એમના નિવાસ પંચશતિક આઠ કૂટામાં રહેવાથી થતા હશે ? કેમકે અધાલાકવાસની આઠ દિક્કુમારિકાએના વાસ તો આ પ્રમાણે ગજદન્ત ગિરિઓની નીચના ભવનામાં સાંભળવામાં આવેલ છે, એજ પ્રમાણે એ ઉર્ધ્વલાસની આઠ દિક્કુમારિકાઓ ત્યાં નિવાસ કરે છે, એવું સાંભળવામાં આવ્યું નથી, એ તો નિરંતર ત્યાં રહે છે. તવ ળં તાર્સિ હદ્દ છોગવત્યવ્વાં અદુર્ણ દિસ્કુમારિકાઓ ત્યાં તાર્સિ હદ્દ છોગવત્યવ્વાં અદુર્ણ દિસ્કુમારિકાઓ પાત્ર તાર્થ કર પ્રભુના જન્મ થઈ ગયા, ત્યારે એ ઉર્ધ્વલાસની આઠ દિક્કુમારિકાઓએ પાત્રપાતાના આસના કંપિત થતાં એયાં. 'તં ચેવ પુટવવળિયં માળિયદવં' તે એઇને તેમણે શું કર્યું ? આ સંબંધમાં જાણવા માટે સૂત્ર પ્રથમમાં જે પ્રમાણે કઢેન

महत्तरियाओं जे णं तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करिस्सामों एवं तदेव पूर्ववर्णितम् अव्यवहित-प्रेष्ठ त्रवर्णितं भणितव्यं वक्तव्यम्, कियत्पर्यन्तमित्याह-'जाव अम्हेणं देवाणुष्पिये!' इत्यादि । हे देवानुप्रिये ! हे तीर्थक्करमातः यावद् वयं खळु ऊर्ध्वळोकवास्तव्याः अष्टौ दिक्कुमारीमहत्तरिकाः येन भगवतः तीर्थङ्करस्य जन्ममहिमानम् जन्ममहोत्सनं करिष्यामः विधास्यामः, अत्र यावच्छब्दोऽवधिवाचको न तु सङ्ग्राहकः, 'तेणं तुब्भेहिं न भाइयव्वं तिकट्ट उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्रमंति' तेन युष्माभि न भेतन्यम् असंभाव्यमाने अस्मिन्नेकान्तस्थाने विसदशजातीयाः इमाः कथं सम्रुपस्थिता इत्याशङ्काकुर्ल चेतो न कार्यम् इतिकृत्वा उत्तरपौरस्त्यं दिग्भागम् ईशानकोणम् अपक्रामन्ति निर्भच्छन्ति 'अवकमित्ता' अपक्रम्य निर्गत्य ताः अष्टौ दिवकुमारी महत्तरिकाः 'जाव अब्भवदलए विउव्वंति' यावत् अभ्रवार्दछकान् अभ्रे आकाशे वाः पानीयं तस्य दलकान् मेघान् विकुर्वन्ति विकुर्वणा शक्त्या निर्मान्ति अत्र यावत्पदात् 'वेउन्वियसप्रुग्घाएणं समोद्दणंति समोद्दणित्ता संखिज्ञाई जोयणाई दंडं निसरंति, दोच्चं वेउव्वियसमुग्धाएणं समोहणंति, समोहणित्ता' इति ग्राह्मम् वैक्रिय-'जाब अम्हेणं देवाणुप्पिए उड्डलोगवत्थव्वाओ अह दिसाकुवारीमहत्तरियाओ जे णं भगवओ तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करिस्सामो ते णं तुन्भेहिं णु भाइअव्वं' यावत हे देवानुप्रिये ! हमलोक उर्ध्वलोकवासिनी आठ दिवकुमारिका महत्तरि-काएं हैं हम भगवान् तीर्थंकर के जन्ममहोत्सव को करेगी इसिछिये आप "असं-भाव्यमान है परजन का आपात जिसमें ऐसे इस एकान्त स्थान में विसदश जातीय ये किसलिये उपस्थित हुई हैं" इस प्रकार की आदांका से आकुलित चित्त न हो 'त्ति कटु उत्तरपुरित्थमें दिसीभागं अवक्कमंति' इस प्रकार कह कर वे ईशाम कोण में चली गई। 'अवनकमित्ता जाव अन्भवद्दलए विउब्वंति' वहां

वामां आदेशुं छे, ते प्रमाणे क सक्षणुं कथन समक्षवुं लेर्ड की. 'जाव अम्हेणं देवाणुष्पिए उद्घर्डलोगवत्थटवाओ अट्ट दिसाकुमारीमहत्तरियाओ जे णं मगवओ तित्थगरस्स जम्मणमिहमं मिरस्सामो तेणं तुन्मेहिं ण माइअन्वं' यावत् हे हेवानुं प्रिये अभे क्षेत्रे। उर्ध्व किवाहिनी आहे हिर्देशारिका महत्तरिकाओ छीओ. अभे क्षेत्रवान् प्रिये अभे क्षेत्रके। कन्म महितस्य उक्षवीशुं. शिथी आपश्री 'असंक्ष्यमान छे, परकनने। आपात केमां ओवा ओक्षान्त स्थानमां विसद्ध कातीय आ अधी शा माटे आवी छे शा कातनी आशंक्रायी आहितियित्त यशा निह. 'ति कहुँ उत्तरपुरिथमं दिसीमागं अधनकमंति' आ प्रमाणे कहीने तेओ। धंशान केश्य तर्द कती रही. 'अवनकमित्ता जाव अन्मवद्दल्य विचन्नं ति' त्यां कधने तेमणे यावत् आक्षाश्यमां पीतानी विक्षिया शक्ति वहे मेथेनी विश्व शाहति वहे विक्षयसमुन्धाएणं समोहणित समोहणिता, संखिन्जाई जोयणाई दण्डं निसिरंति, दोच्वं वेषव्वयसमुन

जाकर के उन्हों ने यावत् आकाश में अपनी विकिया शक्ति के द्वारा मेघों की विकुर्वणा की-यहां यावत्पद से "वेउन्वियसमुग्घाएणं संमोहणंति, समोह- समुद्धातेन वैक्रियकरणार्थकप्रयत्नविशेषेण समबद्दनित आत्मप्रदेशाच् बहिर्विक्षिपन्ति समवहत्य आत्मप्रदेशान् बहिर्विक्षिण्य संख्यातानि योजनानि दण्डम् दण्ड इव दण्डः ऊर्ध्वाध आयतः शरीरबाइल्यो जीव प्रदेशस्तं निस्त्रजन्ति शरीराद् बहि निष्काशयन्ति चिकीर्षितकार्यसम्पादनार्थं द्वितीयमपि वारं वैकियसमुद्वातेन समवध्नन्ति आत्मप्रदेशान् बहिर्विक्षिपन्ति समवहत्य आत्मप्रदेशाच् बहिर्विक्षिष्य अश्रगार्वेळकान् मेघान् विकुर्वन्तीति 'विउच्चित्ता जाव' विकुर्व्य वैक्रियशक्त्या मेघान् कृ वा यावत् अत्र यावस्पदात् 'से जहाणामण् कम्मारदारए सिया तरुणे बलवं जुगवं जुवाणे अप्पायंके थिरग्गहत्थे दहपाणिपाए पिद्रंतरो-घणनिचियवहब्लियखंधे चम्मेद्रगदहणमुद्रियसमाहयनिचियग्चे समण्णागए तल जमलजुयलपरिघवाहू लंघणपवणजवणपमदणसमृत्थे छेए दबखे पट्टे कुस छे मेहावी निउणसिष्पोवगए एगं महंतं दगवारगं वा, दगकुंभयं वा, दगथालगं वा, दगकलसं वा, दगिभगारं वा, गहाय रायंगणं वा जाव समंता आवरिसिज्जा, एवमेव ताओ णित्ता, संखिज्जाइं जोयणाइं दण्डं निसिरंति, दोच्चं वेजव्वियससुग्याएणं संमो-हणित्रा" इस पाठका ग्रहण हुआ है, इन पदों की व्याख्या इसी वक्षस्कार के कथन में १ सूत्र में की जा चुकी है 'विउव्यित्ता जाव तं निहयरयं णहरयं पसंतरयं उवसंतरयं करेंति' आकाश में वाईलिकों की-पानी वरसानेवाले मेघो की विक्र-र्घणा करके यावतू उन्हों ने उस भगवान तीर्थंकर के जन्म भवन के चारीं ओर की एक योजन तक की भूमि को निहत रजवाली, नष्ट रजवाली भ्रष्ट रजवाली, प्रशान्त रजवाली और उपशान्त रजवाली बना दिया यहां यावत शब्द से-''से जह।णामए कम्मारदारए सिया तरुणे, बलवं, जुगवं, जुवाणे, अप्पायंके, थिर-गाहत्थे, दढपाणिपाए, पिइंतरोस्परिणए, घणणिचियवदृवलियखंधे, चम्मेइ-गदुहणमुद्धियसमाहयनिचियगत्ते, उरस्स्वलसमण्णागण् तलजम्लज्जयलपरि-घबाह्र, लंघणपवणजवणपमदणसमत्ये, छेए, दक्खे, पद्दे, कुसले, मेहाबी, निडणसिष्योवगए एगं महंतं दगवारगं वा दगकुंभयं वा, दगथालयं वा, दक-

म्बाएणं संमोहणिता' आ पार संगृहीत थये। छे. आ पार्तनी व्याण्या आ क वक्षस्ताना क्षणां स्त्र प्रथममां करवामां आवी छे. 'विडिव्वता जाव निह्यर्यं णहुर्यं महुर्यं पसंस्थ उवसंतर्यं करें ति' आक्षाशमां वाहणाओानी-पाछी वरसावनार मेधानी-विद्ववर्ष करें यावत तेमछे वेडियशितथी मेधा एत्पन्न क्यां अने ते मेधाओ ते लगवान् तीर्थं करना कन्म सवननी योमेरनी ओक येकन केटली भूमिने निह्नत रक्षणाणी, नष्ट रक्षणाणी स्वष्ट रक्षणाणी, प्रशांत रक्षणाणी अने अपशांत रक्षणाणी मनावी होंधी. अही याःत् शण्ह्यी-पेसे जहाणामए कम्मारदारए सिया तरुणे, बल्यं जुनवं, जुवाणे, अष्पायंके, थिरमाह्यो, द्वपाणियाए, पिटुंतराहपरिणए, घणणिवियवहवियसंघे, चम्मेटुगदुहणमुद्वियसमाहयनिवियनते, उरस्सबलसमण्णागए तल्यस्त्र उपशास्त्र हेण दक्षे, पर्यं, कुसले' मेहावी, निज्ञासित्वेगण एगं महंतं दगवारंगं वा, दगक्षंभयं वा, दगशालयं वृ

वि उट्टलोगवत्थव्वाओ अद्व दिसाकुमारी महत्तरियाओ अब्भवदलए विउव्वित्ता खिप्पामेव पतणतणायंति, पतणतणाइत्ता खिप्पामेव पविज्ञआयंति विज्ञआइत्ता भगवओ तित्थ-गरस्स जम्मणभवणस्स सन्त्रओ समंता जोयणपरिमंडलं णिच्चोयगं नाइमट्टियं पविरलप्रपुर-सियं रयरेणुविणासणं दिव्वं सुरिभगंघोदयवासं वासंति' इतिग्राह्मम्, स यथानामकः कर्म-करदारकः स्यात् तरुगो, बलवान, युगवान्, युवा, अरुपातङ्कः, स्थिराग्रहस्तः, दृढपाणिपादः, पृष्ठान्तरोरुपरिणतः, धननिचितवृत्तवलितस्कन्यः चर्भेष्टकद्व्यणमुष्टिकसमाहतनिचितगात्रः, उरस्यवलसमन्वागतः, तलयमलयुगलपरिघवाहुः, लङ्घनप्लवनज्ञमप्रमर्देनसमर्थः, छेकः, दक्षः, प्रष्ठः, क्रश्रत्रः, मेधावी निपुणशिल्पोपगतः, एतेषां व्याख्यानम् अव्यहितपूर्वस्त्रे द्रष्टव्यम्, एकं महान्तं दकवारकं वा मृत्तिकामयजलभाजनविशेषम्, दककुम्भकं वा जलवटम् दकस्थालकं वा कांस्यादिमयं जलपात्रम्, दककलशं वा, जलभंगारं वा 'झारी' इति भाषा प्रसिद्धम्, गृरीत्वा राजाङ्गणं वा राजपाङ्गणम्, यावदुद्यानं वा समन्तात् सर्वतो भावेन आवर्षेत् कलसं वा, दक्तिंगारं वा गहाय रायंगणंवा जाव समंता आवरिसिजा एवमेव ताओ वि उड्डलोगवत्थव्वाओ अह दिसाकुमारी महत्तरियाओ अन्भवद्दलए विडिंवत्ता खिष्पामेव पतणतणायंति, पतणतणाइत्ता खिष्पामेव पविज्ञयायंति, विज्ञआइसा भगवभो तित्थगस्स जम्मणभवणस्स सञ्वओ समंता जोयणपरि-मंडठं णिच्चोयगं नाइमिंहयं पविरलप्कुक्षियं रयरेणुविणासणं दिव्वं सुरहिगंधीः द्यवासं वासंति' इस पाठका ग्रहण हुआ है इन पदों में से 'से जहाणामए कम्मार दारए' इस पद से छेकर 'णिउणसिप्पोचगए' इस पद तक के पदों की व्याख्या प्रथम सूत्र में की जा चुकी है अब इसके आगे के पदों की व्याख्या इस प्रकार से है-इन पूर्वोक्त विशेषणों वाला वह कर्मकर दारक एक बहुत बडे भारी पानी से भरे हुए मिटी के कलका को, अथवा पानी के कुम्भ को, या पानी से भरे हुए थाल को, अगर पानी से भरे हुए घट को, या पानी से भरे हुए भूंगार

द्ककलसं वो, दकमिंगारं वा,गहाय; रायंगणं वा जाव समंता आविरिसिज्जा एवमेव ताओ वि च्ड्डलोगयत्थव्वाओ अट्टिव्साकुमारीमहत्तरियाओ, अव्भाइलए विज्ञिवता खिप्पामेव पत्तण तणायंति पत्तणतणाइला खिप्पामेव पविज्ञयायंति, विज्ञआइत्ता भगवओ तित्थगरस्स क्षम्मणभवणस्स सट्वओ समंता जोयणपरिमंडलं णिच्चोयगं नाइमिट्टियं पविरलप्कृसियं रयरेणुविणासणं दिन्वं सुरिहिगंधोदयवासं वासंति' आ पाठ संगुद्धीत थये। छे. आ पाठमांथी 'से जहाणामए कम्मारदारए' आ पदथी भांदीने 'णिजणसिप्पोवगए, आ पह सुधीना पद्धानी व्याप्या प्रथम सूत्रमां करवामां आवेद्धी छे. द्वेचे शेष पद्धानी व्याप्या आ प्रमाखे छे—के पूर्विकृत विशेषित वाणा ते क्रमिरहारक केष्ठ अद्व माटा पाछ्यीथी लरेका भाटीना क्ष्यया पाछ्यीना दुंलने अथवा पाछ्यीथी लरेका थाणने अथवा पाछ्यीथी सिश्चेत्, एतमेव अम्रुना प्रकारेणैव एता अपि ऊर्ध्वलोकवास्तव्या अष्टौ दिवक्रमारी महत्त्वरिकाः अभ्रवादेलकान् मेघान् विकुर्ध् पतणत्यायन्ति अत्यन्तं गर्ड्जन्तीत्यर्थः, गर्जित्वा क्षिप्रमेव 'पविज्ञायंति' प्रकर्षेण विद्युतं कुर्वन्ति, कृत्वा भगवतस्तीर्थङ्करस्य जन्मभवनस्य सर्वतः समन्तात् योजनपरिमण्डलम् अत्र नैरन्तर्ये द्वितीया, निरन्तरं योजनपरिमण्डलक्षेत्रे इत्यर्थः, 'णिच्चोअगं नाइमट्टियं' नात्युदकं नातिमृत्तिकं यथा स्यात् तथा-प्रकर्षेण यावता रेणवः स्थिगता भवन्ति तावनमात्रेग उत्कर्षेणेतिभावः, तथा प्रविरलप्रसपृष्टम् प्रविरलानि सान्तराणि घनमावे कर्दमसंभवात् प्रस्पृष्टानि प्रकर्षयुक्तःनि स्पर्शनानि मन्द्रस्पर्शनसम्भवे रेणुस्थगना-संभवात यस्मिन् वर्षे तत्तथाभूतम्, अतएव रजोरेणु विनाशनम्-रजसा श्रक्ष्णरेणुपुद्रलानां रेणुनाश्च स्थूलतम तत् पुद्रलानां विनाशनं विनाशकम्, दिव्यम्-अतिमनोहरं सुरभिगन्धोदक-वर्षे वर्षन्ति वर्षित्श च 'तं निहयरयं णहरयं भहरयं पसंतरयं उवसंतरयं करेंति' तत् योजन-परिमण्डलं क्षेत्रं निद्दतरजः कुर्वन्तीति योगः, निद्दं भूय उत्थानाभावेन मन्दीकृतं रजो यत्र वर्षे तत्तवाभूतम्, तथा अष्टरजः अष्टं वातोद्धृततया योजनमात्रात् दूरतः क्षिप्तं रजो यत्र तत्त्रथाभूतम् अत्रष्व प्रशान्तरत्रः-प्रशान्तं सर्वथाऽविद्यमानमिव रजो यत्र तत्त्रथाभृतम्, अस्यैत आत्यन्तिकतारूयापनार्थमाइ-उपशान्तरजः उपशान्तं रजो यत्र तत्त्रथाभूतम् 'करित्ता' कृत्वा 'खिप्यामेत्र पञ्ज्वसमंति' क्षित्रमेत्र शीव्यातिशीव्यामेत्र प्रत्युपशाम्यन्ति गन्धोदक-वर्षगान्निवर्त्तन्ते इत्यर्थः।

को छेतर राजाङ्गण को, यावत उद्यान को सब ओर से अच्छी तरह से सींचता है उसी तरह से इन्हों ने-उर्ध्वलोकवास्तव्य आठ दिक्कुमारिकाओं ने-भी अभ्र में वाईलिकों की विक्वर्वणा करके पहिछे तो जोर जोर से गर्जना की और फिर विजलियों को चमकाया बाद में भगवान तीर्थकर के जन्म भवन की चारों ओर की १-१-योजन परिमित भूमि में इस तरह से वर्षों की कि जिस से यहां की घृलि जम जावे-पुनः उसका उत्थान होने न पावे या वह यहां से उड़कर दूसरी जगह चली जावे, यहां वह रहने न पावे जिससे देखनेवालों को ऐसा प्रतीत हो कि मानों यह घृलि है ही नहीं इस प्रकार से छोटी बूदों के रूप में वे वहां बरसी-'करित्ता खिप्पामेव पच्छुवसमंति' बरस कर फिर वे शीध ही

ચામેરથી સારી રીતે અભિમિંચિત કરે છે, તે પ્રમાણે જ તેમણે—3 ધ્વેલોક વાસ્તત્વ આઠ દિક્કુમારિકાઓએ—પણ આકાશમાં વાઈલિકાઓની વિકુર્વણા કરીને પહેલાં તો તેર—તેરથી ગર્જના કરી અને પછી વિદ્યુત્ અમકાવડાવી. ત્યાર બાદ ભગવાન્ તીર્થ કરના જન્મ ભવનની ચામેર એક—એક ચાજન પરિમિત ભ્મિમાં આ પ્રમાણે વર્ષાકરી કે જેથી ત્યાંની માટી જામી જાય કરીથી તે માટીનું ઉત્યાન થાય નહિ. અથવા તે માટી ત્યાંથી હડીને બીજ સ્યાને જતી રહે નહિ. અથવા તે માટી ત્યાં હાય જ નહિ, જેથી તેનારાઓને આ પ્રમાણે પ્રતીતિ થાય કે જાણે માટી છે જ નિક્, આ પ્રમાણે નાના ખૂંદાના રૂપમાં અથવા જેનાથી

अथ आसां तृतीयकर्तव्यक्तणावसरः 'एवं पुष्कवहरूं सि पुष्कवासं वासंति' एवं गन्धो दक्रवर्षणानुमारेण पुष्पवार्द्वके पुष्पवर्ष वर्षन्ति, अत्र च तृतीयार्थे सप्तमी तथा च पुष्पवार्द्वके केन पुष्पवर्षकेन पुष्पवृद्धिः कुईन्तीत्यर्थः, अत्र एवमित्यादि वाक्यसचितमिदं सत्रं क्षेयम् तथाहि—'तच्चं पि वेउव्वियससुर्घाएणं समोहणंति समोहणित्ता पुष्फवहरूण विउव्वंतिसे जहाणामए मालागारदारए सिया जाव सिष्पोवगए एगं महं पुष्फळिनयं वा पुष्फप्षकां वा पुष्फप्षकां वा पुष्फिण्यकां वा प्रदेश करेह, एवमेव ताओ वि उद्धलोग-वत्थावाओ पुष्फवहरूण विउव्वित्ता खिष्पामेव पत्तणतणायंति जाव जोयणपरिमंदलं जलय यळ्य मासुर्प्यभूयस्स विंटहाइस्स दसद्धवण्णस्स कुसुमस्स जाणुस्सेहप्माणमित्तं वासं वासंति' त्रि, अध व्याख्या—तृतीयमपि वारम् वैक्रियसमुद्धातेन समवद्यन्ति संवर्षकवाविक्वणार्थिह

शान्त हो गई। 'एवं पुष्कवद्दलंसि पुष्कवासं वासंति' इसी तरह से उन्हों ने पुष्कित्यसानेवाले वादलों के रूप में अपनी विक्कवणा की और १ योजन परिमित भूमि में पुष्पों की वरसा की-यहां आगत एवं शब्द से यह सूत्र स्चित हुआ है-'तच्चंपि वेउव्वियसमुग्याएणं संमोहणंति, संमोहणित्ता पुष्कवद्दलए विउच्ति, से जहानामए मालागारदारए सिया जाव सिष्पोवगए एगं महं पुष्कि छिजयं वा पुष्कवह्दलगं वा पुष्कचंगेरीयं वा गहाय रायंगणंवा जाव समंता कयगहगिहयकरयलपभट्टविष्पमुत्रकेणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुष्कपुंजो वयारकियं करेइ, एवमेव ताओ वि उद्धलोगव्वत्थवाओ पुष्कवद्दलए विउच्चित्ता खिष्यामेव पतणतणायंति जाव जोयणपरिमंडलजलयथलयभासुरष्यभूयस्स विट्ठाइस्स दसद्धवण्णस्स कुसुमस्स जाणुस्सेहपमाणिक्तं वासं वासंति' त्ति, इस पाठ का अर्थ इस प्रकार से है पहिले तो अधोलोक वासिनी आठ

यत् वेलाइयमपि वैक्रियसम्रद्धावेन समबहनन् तत् किलैकम् एवम् अभवारलकविकुर्व-णार्थ द्वितीयम् इदं तु पुष्पवादेलकदिक्कवणार्थे तृतीयं वैक्रियसमुद्धातेन समवध्ननित इत्यर्थः, समबहत्य पुष्पबार्दलकान् विकुवैन्ति दृष्टान्तमाह-स यथानामको मालाकारदारको मालिक-पुत्रः स्यात् यात्रियुणशिल्योपगतः एकां महतीं पुष्पच्छिद्यकां वा-छाद्यते-उपरि स्थग्यते इति छ। या छ। देव छ। यिका पुष्पैर्भता छ। धिका पुष्पच्छ। धिका ताम्, पुष्पपटलकं वा पुष्पा-धारसाजनिश्लोषम्, पुष्यचङ्गरीकां वा प्रसिद्धाम् गृदीत्वा राजाङ्गणं वा राजप्राङ्गणं यावत् राजी-द्यानं वा समन्तःत् रतकलहे या पराङ्ग्रुखी सुग्नुखी तस्याः संग्रुखीकरणाय कचग्रहगृहीत-करतलप्रभ्रष्टविप्रमुक्तेन-क्षचेषु केरोषु ग्रहणं कचग्रहस्तत्प्रकारेण गृहीतं तथा करत्वाद् विश्वमुक्तं-त्यक्तं सत् प्रभ्रष्टं करतलग्रभ्रष्टविष्रमुक्तम् अत्र पदन्यत्ययः प्राकृतत्वात् विशेषण-समासः तेन कचग्रहीतकरहलप्रश्रष्टविष्ठहुक्तेन द्शार्द्वर्णेन पश्चवर्णेन कुसुमेन जात्य-पेक्षया एकवननं कुसुमजातेन पुष्पपुञ्जोपचारकलितं पुष्पपुञ्जोपचारेरण कुसुमसमूहोपचारेण दिक्कमारियाओं ने दो बार संवर्तक वायुकी विकर्वणा करने के लिये वैकियसमु-द्घात किया वह एक बारका समुद्धात किया गया जानना चाहिये। इसके बाद इन उर्ध्वलोकवासिनी दिक्कुमारियों ने अभ्रवादलिको की विकुर्धणा करने के लिये जो समुद्घात किया, वह द्सरी वारका किया गया समुद्घात जानना चाहिये और अब यह पुष्पवार्दिलकों की विक्ववंगा करने के लिये जो सन्तद्घात किया गया है वह तृतीय वार का समुद्घात किया गया जानना चाहिये। इस तरह के इस तृतीय वार के समुद्धात से उन्हों ने पुष्पवार्दिलकाओं की विकुर्वणा की जैसे कोई मालाकार का दारक हो और वह यावत शिल्पोपगत हो, सो वह जैसे एक महती पुष्पों से भरी हुई छाचिका को या पुष्पाधार भाजन विद्योव को-या पुष्पचंगे-रिका को छेकर राजाङ्गण को यावत सब ओर से कचग्रह के अनुसार ग्रहीत एवं करतल से छूट कर गिरे हुए ऐसे पांचवर्ण के कुसुमों से पुष्पपुञ्जोपचार युक्त

સંવર્ષક વાયુની વિકુર્વાણ કરવા માટે વૈક્રિય સમુદ્ધાત કર્યો. આ એક વખત સમુદ્ધાત કર્યો આમ જાણવું જોઈએ. ત્યાર ખાદ તે ઉર્ધ્વાલિક વાસિની દિક્કમારિકાઓએ અભ્રવાદ લિકાઓની વિકુર્વાણ કરવા માટે જે સમુદ્ધાત કર્યો. તે ખીજી વખત કરવામાં આવેલા સમુદ્ધાત હતા આમ માનવું જોઈએ. અને હવે આ જે પુષ્પ વાદળિયાની વિકુર્વાણા કરવા માટે સમુદ્ધાત કર્યાં, આ ત્રીજી વખતના કરવામાં આવેલા સમુદ્ધાત હતા આમ સમજવું જોઈએ. આ પ્રમાણે આ ત્રીજી વખતના સમુદ્ધાતથી તેમણે પુષ્પવાદ લિકાઓની વિકુર્વાણા કરી, જેમ કાઈ માલાકારના દારક હાય અને તે યાવત શિલ્પાપાત હાય, તા તે જેમ એક મહતી પુષ્પ-ભરિત છા લિકાને કે પુષ્પાધાર ભાજન વિશેષને કે પુષ્પ શાંગિકાને લઇને રાજાંગણને યાવત્ સર્વ તરફથી કચાલ મુજબ ગૃહીત તેમજ કરતલથી મુક્ત થયેલાં એવાં પાંચ વર્ણના કુસુમાથી પુષ્પપું જોપચાર કરે છે, તે

किलं शोभितं करोति, एवमेव अमुना प्रकारेणैव ता अपि अर्ध्वलोक्ष्वास्तव्या अन्दी दिवकुमारी महत्तरिकाः पुष्पवादिलकान् विकुर्व्य विकुर्वणाश्वन्त्या तान् निर्माय क्षिप्रमेव पतणतणायन्ति—अत्यन्तं गर्जन्ति, ततश्च इत्यं वाक्ययोजना योजनपरिमण्डलं यावत्—योजनपरिमण्डलपर्यन्तं दशार्द्धवर्णस्य पश्चपर्णस्य कुमुनस्य पुष्पस्य जान्त्तसेधप्रमाणमात्रम् जान्त्तसेधः
जान्वविधिकउत्सेधस्य प्रमाणं द्वात्रिंशदंगुललक्षणं तेन सद्दशीमात्रा यस्य स तथा भृतस्तम्
वर्षे वर्षन्ति कीदशस्य कुमुमस्य ? जललस्यलज भास्वर प्रभूतस्य तत्र जलजं पद्मादि स्थलजं
विचिकिलादि भास्वरं दीष्यमानम् प्रभूतं च अतिप्रचुरं ततः कर्मधारयः भास्वरं च तत् प्रभूतं
च भास्वरप्रभूतं जलस्यलजं च तत् भास्तरप्रभूतं च तत्त्यधाभृतम् तस्य, तथा वृन्तस्थायिनः
वृन्तेनं अधोभागवर्तिना तिष्ठतीत्येवं शीलस्य 'वासित्ता' वर्षित्वा कियत्पर्यन्तोऽयम् 'एवं'
हत्यादि वाक्यस्चितस्त्रसङ्ग्रह इत्याह—'जाव कालागुरुपवर' ति, अत्र यावच्लब्दोऽविध वाचकः नतु सङ्ग्राहकः 'जाव सुरवराभिगमणजोग्गं' ति अत्र याव पृत्ति कृत्दुरुकृतुरुकृद्धइत्तिपृवमधमयंतगंधुद्धुभाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधविद्यभूयं दिन्वं' इति पर्यन्तं सृतं

करता है इसी तरह इन उर्ध्वलोक वास्तव्य आठ विक्कुमारिकाओं यावत् पुष्प-बाईलिकों की विकुर्वणा करने जैसा पहिले आगेका पाठ कहा गया है वैसा ही इन लोगों ने किया अर्थात् एक योजन परिमत क्षेत्र तक दशाई वर्णवाले पुष्पों की वर्षों की इन पुष्पों की वर्षों में जलज-पद्म आदि रूप स्थलज-बेला-मोघरा आदि रूप दीप्यमान पुष्प प्रचुर मात्रा में थे जब इन पुष्पों की वर्षों हुई तो इसके धुन्त अधोभाग में ही रहे आगे ऐसा नहीं हुआ कि पुष्पों की पंखुडियां नीचे हो गई हों और बुन्त-इनके उत्तल-ऊपर की ओर हो गये हों तथा ये पुष्प इतनी अधिक मात्रा में वरसाये गये कि वे २४ अंगुल तक उंचे हो गये अर्थात् इतनी विशाल राशि इनकी होगई इस प्रकार से 'वासिन्ता जाव कालागुरु पदर जाव सुरवराभिगमणजोग्गंकरेंति' पुष्पों की वर्षों करके उन्होंने उस एक योजन

प्रमाणे क आ है र बीड वास्तव्य आह हिंडु मारिडा को को या त् पुष्पवाह बिडा को नी विडु-विधा हरीने के म पहें बां आजाती। पांड हहें वामां आवे की छे, ते प्रमाणे क आ दे! हैं को हर्युं, कोट के हैं को है ये कि परिमित क्षेत्र सुधी हशार्ध वर्षु वाणा पुष्पानी वर्षा हरी. को पुष्पानी वर्षामां कक्षक—पद्म आहि इप स्थलक—वेक्षा, में जरा इप ही प्यमान पुष्पा. प्रश्वरमात्रामां हतां. कथारे आ जातना पुष्पानी वर्षा हरवामां आवी ते। को वी रीते वर्षा हरवामां आवी है ते पुष्पाना वृन्ते। अधी भागमां क रह्या. को वुं थयुं निहिं है पुष्पानी पांपाडीको। नी वि वहीं गई हिथ अने वृन्त हपरनी तरह धई जयां हिथ तेमक आ पुष्पा आ मात्रामां वरसाववामां आव्या है २४ आं अब केट हो। भूमि पर धर जामी शक्षा. अर्थात् पुष्पा पुष्ठण प्रमाणुमां वरसाववामां आव्या. ते आ प्रमाणे वासित्ता जाव काल गुरु पवर जाव सुरवरामिगमणजोगां करें ति' पुष्पानी वर्षा हरीने तेमणे ते को की विश्वन परिमित क्षेत्रने यावत् 'इंद्रक्क, तुरक्क इक्षंत्र व्यवमध्यवन्त गंधद्यु यामिगामं इतिव्यम्, तथा च तत्कालागुरुप्रवरकुन्द्रुक्तृ रूष्क्रद्दृद्धूप्यूप्यृपितं 'महमहेति' गन्धोद्धूताभिरामं सुगन्धवरगन्धितं गन्धवर्तिभूतं दिव्यम् अत्यव सुरवराभिगमनयोग्यम् सुरवरस्य—
इन्द्रस्य अभिगमनाय अवतरणाय योग्यम् 'दर्रेति' कुर्वन्ति 'किरित्ता' कृत्वा 'जेणेव भगवंतित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छंति' यत्रैव भगवान् तीर्थकरः तीर्थङ्करमाता
च तत्रैव उपागच्छन्ति, 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'जाव आगायमाणीओ परिगायमाणीओ
चिट्टंति' यावद्गगायन्त्यः परिगायन्त्यः तिष्ठन्तीति आ—ईष्रस्वरेण गायः ्यः प्रारम्भकाछे
मन्द्रवरेण गायमानत्वात् परिगायन्त्यः—गीतप्रवृत्तिकालानन्तरं तारस्वरेण गायन्त्यस्ताः
अष्टी अर्ध्वलोकवास्तव्याः दिक्कुमारीमहत्तरिकास्तिष्ठन्तीति अत्र यावत् पदात् अद्रसामन्ते
इति प्राह्मम् ॥ स्र० २॥

मृष्य्-तेणं कालेणं तेणं समएणं पुरित्थमरुयगवत्थव्वाओ अट्टु दिसाकुमारी महत्तरियाओ सएहिं सएहिं कूडेहिं तहेव जाव विहरंति, तं जहा-णंदुत्तराय१, णंदा२, आणंदा३ णंदिविद्धणा४। विजया य५ वेज यंती६ जयंती७, अपराजियाट ॥१॥ सेसं तं चेव तुब्भाहिं ण भाइयद्वं

परिमित क्षेत्र को यावत्-'कुंद्रक्कतुरक रूडज्झंतधूवमधमधन्तगंधुद्धुधाभिरामं सुगंधवरगंधियं गन्धविद्धभ्यं दिव्वं' काला गुरु की प्रवर कुन्द्रककी, एवं तुरुक-लोमान की धूप जला कर सुगंधित करिद्या और उसे ऐसा बना दिया कि मानों यह एक गंध की गोली ही हो इस प्रकार से उस समस्त एक योजन परिमित भू भाग को उन्हों ने सुरवर इन्द्र के अवतरण के योग्य कर दिया 'करित्ता जेणेव भयवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छंति—उवागच्छित्ता जाव आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति' करके किर वे जहां भगवान् तीर्थकर और तिर्थकर जननी थी वहां आई—वहां आकर वे अपने उचित स्थान पर खडी हो गई और पहिले घीरे से और बाद में जोर से मांगलिक जनमोरस्सव के गीत गानें लगी। हरा।

सुगंधवरगंधियं गन्धविह्म्यं दिव्वं अक्षा शुर्नी, प्रवर कुंडरक्रनी तेमक तुरुष्ठ क्षेत्रान्नित धूप सण्यावीने सुगंधित करी हीधुं अने क्षेतुं भनावी हीधुं के काले आ क्षेत्र शंधनी भेली न होय व्या प्रमाले ते समस्त क्षेत्र थे। क्षेत्र परिमित भूभागने तेमले सुरवर धन्द्रनां माटे व्यवतरल थे। व्या भनावी हीधा. 'किरता जेणेव भगवं तित्ययरे तित्ययर समाया य तेणेव ज्वागच्छंति, उवागच्छित्ताः जाव आगायमाणीओ परिगायमणीओ चिट्ठंति' भनावीने पछी तेका सर्वे क्यां भगवान् तीर्थं कर अने तीर्थं कर कननी हतां त्यां गर्धः त्यां कर्धने तेका पाताना इत्यान क्षेत्र यहेता प्रांताना इत्यान क्षेत्र भने तीर्थं कर कननी हतां त्यां गर्धः त्यां कर्धने तेका पाताना इत्यान क्षेत्र भने तीर्थं कर कननी हतां त्यां गर्धः त्यां कर्धने तेका पाताना इत्यान क्षेत्र व्यान क्षेत्र भने तीर्थं भने पाताना इत्यान क्षेत्र मांगिन क्षेत्र भने तीर्थं मांगिन क्षेत्र व्यान व्यान क्षेत्र व्यान व्यान क्षेत्र व्यान व्य

तिकट्टु भगवओ तिरथयरस्स तिरथयरमायाए य पुरिश्यमेणं आयंसह-त्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्टंति। तेणं काळेणं तेणं समएणं दाहिणरुयवत्थव्वाओ अटु दिसाकुमारी महत्तरियाओ तहेव जाव विहरंति, तं जहा-समाहारा१, सुप्पइण्णा२, सुप्पबुद्धा३, जसो-हरा४। लच्छिमई५, सेहबई६, चित्तग्रता७, वसुंघरा८॥१॥ तहेव जाव तुब्भाहिं न भाइयःवं तिकद्दु भगवओ तित्थयरम्स तित्थयरमाऊए य दाहिणेगं भिंगार हत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्टंति। तेणं कालेणं तेणं समएणं पचस्थिमस्यगवस्थव्याओ अर् दिसाकुमारी महत्तरियाओं सपहिं २ जाव विहरंति, तं जहा-इछादेशी१, सुरादेवी२, पुहबी ३, पउमावइ ४। एगणासा ५, णविमया ६, भदा ७, सीया च ८ अटूमा ॥१॥ तहेच जाव तुब्भाहिं ण भाइयद्यं तिकट्टु जाव भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए य पचित्थमेनां तालियंटहत्थगयाओ आगा-यमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्टंति । तेणं कालेणं तेलं सनएणं उत्त-रिल्लरुयगवत्थव्याओ जाव विहरंति, तं जहा-अलंबुसार, मिस्सकेसीर, पुंडरीयाय३, बाङ्णी४। हासा५, सव्बप्पभा६, चेब, सिरि७, हिरिट चेव उत्तरओ ॥१॥ तहेव जाव वंदिता भगवओ तित्थयरमाऊए च उत्तरेणं चामरहत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्टीत । तेणं कालेणं तेणं सार्णं विदिसरुषगवत्थव्याओं चतारि दिसाकुमारी सह-त्तरियाओ जाव विहरंति, तं जहा-चिताय१, चित्तकणगा२, सतेराय३, सोदामिणी थ। तहेव जाद ण भाइयटवं तिकट्टु भगदओ तिस्थयर-माऊए य चउसु विदिसासु दीविया हत्थगवाओ आगत्यसाणीओ परिगायमाणीओ चिट्टंति ति । तेवां कालेणं तेणं समएणं मिन्झमस्य-गवत्थवाओ चत्तारि दिसाकुमारी सहत्तरियाओ सएहिं सएहिं कूडेहिं तहेव जाव विद्यंति, तं जहा-रुवार, रुयासियान, सुरुवाद, रुयगा-यई। तहेव जाव तुब्भाहिं ण भाइयद्यं तिकट्टु भगवओ तित्थयरस्स चउरंगुलवज्जं णाभिणालं कप्पंति कप्पेता विवरगं खणंति

वियरगे णाभि णिहणंति णिहणित्ता रयणाण य वइराण य पुरेति पुरित्ता हरियालियाए पेढं बध्नंति बध्नित्ता तिदिसिं तओ कयलीहरए विउ-व्वंति, तएणं तेसिं कदळीहरगाणं बहुमञ्झदेसभाए तओ चाउस्सालए विउठबंति, तष् णं तेसि चाउस्सालगाणं बहुमज्झदेसभाष् सीहासणं विउच्चंति, तेसि णं सीहासणाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णते सबो वण्णगो साधियदशे। तष् णं ताओ स्यगमञ्झवत्थव्याओ चत्तारि दिसाकुमारीओ गहत्तरीओ जेणेव भगवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उक्षागच्छंति उवागच्छित्ता भगवं तिरथयरं करयल संयुडेणं गिण्हंति तित्थयरमायरं च बाहाहिं गिण्हंति, गिण्हिसा जेणेव दाहिणिह्छे कय-लीहरए जेणेव चाउसालाए जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छं त उवा-गच्छित्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरम।यरं च सीहासणे णिसीयावेति, णिसीयावेत्ता सयवागसहस्त्रपागेहिं तिल्छेहिं अब्भंगेति, अब्भंगित्ता सुरभिणा गंधवदृष्णं उव्वद्देति, उव्वद्दिता भगवं तित्थवरं करयलपुडेण तित्थयरमायरं च बाहासु गिण्हंति गिण्हित्ता जेणेव पुरित्थिमिल्ले कयली-हरए जेणेव चउसालए जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता भगवं तिरथपरं तिरथयरमायरं च सोहासणे णिसीयावेति णिसीयावेता तिहिं उदएहिं भन्नविति, तं जहा-गंधोदएणं१, पुष्कोदएणं२, सुद्धोद-एणं ३, मजाविसा सब्बालंकारविभृत्तियं केंग्ति करित्ता भगवं तित्थयरं करवलपुडेनं तित्थयमायरं च वाहाहिं गिन्हंति भिन्हिता जेलेव उत्त-रिस्ले क्यलीहरू जेणेव चउसालए जेणेव सीहासणे तेणेव उवाग-च्छंति, उवागव्छित्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरवायरं च सीहासणे णिसी-याविति णिसीयाविता आभियोगे देवे सहाविति सहाविता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । चुल्छहिमवंताओ वासहरपञ्चयाओ गोसी-सर्चंदणकडाई साहरह। तएणं ते आभियोगा देवा ताहि स्वगमज्झ वत्थव्वाहि चउहि दिसाकुमारी महत्तरियाहि एवं बुत्ता समाणा हटू-

तुट्ठा जाव विणएणं वयणं पिडच्छंति पिडिच्छित। खिप्पामेव चुल्छिहम-वंताओ वासहरपव्वयाओ सरसाइं गोसीसचंदणकट्ठाइं साहरंति, तएणं ताओ मिज्झमरुयगवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारी महत्तरियाओ सरगं करेंति करित्ता अरिंग घडेंति अरिंग घडित्ता सरएणं अरिंग मिहिति मिहित्ता अगिंग पाडेंति पाडित्ता अगिंग संधुक्खंति, संधुक्खिता गोसीस-चंदणकट्टे पिक्खिवंति पिक्खिवत्ता अगिंगहोमं करेंति, करित्ता भृतिकम्मं करेंति करित्ता रक्खापोट्टिलयं बंधंति बंधित्ता णाणामिणरयणभित्तिचेते दुविहे पाहाणक्ट्टेगे गहाय भगवओ तित्थयरस्स कण्णमूलंमि टिट्टिया-विंति, भवउ भगवं पव्ययाउए २। तएणं ताओ रुग्गमज्झवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारी महत्तरियाओ भगवं तित्थयरं करयलपुडेणं तित्थ-यरमायरं च बाहाहिं गिणहंति, गिण्हित्ता जेणेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तित्थयरमायरं सयिण-कांसि णिसीयाविति, णिसीयावित्ता भगवं तित्थयरं माउए पासे ठवेंति ठवित्ता आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिटुंतीति ॥सू० ३॥

छाया-तिस्मन्काले तिस्मन् समये पौरस्त्य क्वकतास्तव्या अध्ये दिवकुमारीमहत्तरिकाः स्वकैः स्वकैः कूटैः तथैव यावद् विहर्गत, तद्यथा नन्दोत्तरा च १, नन्दा २, आनन्दा ३, नित्वर्थना ४ । विजया च ५ वेजयन्ती ६ जयन्ती ७ अपराजिता ८ ॥१॥ शेपं तदेव यावद् युष्माभि ने भेतव्यम् इति कृत्वा भगवतस्तीर्थकरस्य तीर्थक्करमातुश्च आदर्शहस्तगताः आगा-यन्त्यः परिगायन्त्यस्तिष्ठन्ति । तस्मिन्काले तस्मिन् समये दाक्षिणात्यक्वकवास्तव्या अष्टौ दिवकुमारीमहत्तरिकाः तथैव यावद् विहरन्ति तद्यथा—समाहारा १, सुप्रदक्षा २, सुप्रवुद्धा ३, यशोधरा ४ । लक्ष्मीवती ५, शेषवती ६, चित्रगुप्ता ७ वसुन्धरा ८ ॥१॥ तथैव युष्माभि ने भेतव्यम् इति कृत्वा भगवतस्तीर्थकरस्य दक्षिणेन भृङ्गारहस्तगताः आगायन्त्यः परिगायन्त्यः तिष्ठन्ति । तस्मिन्काले तस्मिन् समये पाश्चात्यक्वक वास्तव्या अष्टौ दिवकुमारीमहत्तरिकाः स्वकैः यावद् विहर्गत, तद्यथा—इलादेवी १, सुरादेवी २, पृथिवी ३, पद्मावती ४ । एकनासा ५ नविमका ६, भद्रा ७, सीता च अष्टमी ८ ॥१॥ तथैव यावद् युष्मभि ने भेतव्यमिति कृत्वा यावद् अगवतस्तीर्थकरस्य तीर्थक्करमातुश्च पाश्चात्येन तालवन्तरस्तगताः आगायन्त्यः परिगायन्त्यः तिष्ठन्ति । तस्मन्काले तस्मिन् समये उदीची रुवकवास्तव्याः आगायन्त्यः परिगायन्त्यः तिष्ठन्ति । तस्मन्काले तस्मिन् समये उदीची रुवकवास्तव्याः सावद् विहरन्ति, तद्यथा—अलंबुसा १, मिश्रकेशी २, पुण्डरीका च ३, वास्णी ४ । हासा ५,

सर्वप्रभा ६, चैत्र, श्रीः हुरेश्रेत उत्तरतः ॥१॥ तथैत यावद् वन्दित्या भगवतस्तीर्थङ्करस्य तीर्थङ्करमातुश्र उत्तरेण चामरहस्तगताः आगायन्त्यः परिगायन्त्यः तिष्ठन्ति । तस्मिन्काले तस्मिन् समये विदिग्रहचकवास्तव्याः चतस्रो दिक्क्वमारीमहत्तरिकाः यावद् विहरन्ति, तचथा-चित्रा च १, चित्रकनका २, शतेरा ३, सौदामिनी ४। तथैव यावद न भेतव्यमिति कृत्वा भगवतस्तीर्यङ्करस्य तीर्थङ्करमातुश्च चतस्रषु विदिक्षु दीपिकाहस्त्रगता आगायन्त्यः परिगायन्त्यः तिष्ठन्ति इति । तस्मिन्काले तस्मिन् समये मध्यस्चकवास्तव्याः चतस्रो दिवकुमारीमदत्तरिकाः स्वकैः स्वकैः कूटैः तथैव यावद् विद्वरन्ति, तद्यथा रूपा १, रूपा-सिका २, सुरूपा ३, रूपकावती ४। तथैव यावद् युष्माभि न भेतव्यमिति कृत्वा भगवत-स्वीर्थङ्करस्य चतुरङ्गुलवर्जं नाभिनालं कलपयन्ति, कलपयित्वा विदरकं खनन्ति, खनित्वा विदरके नामिम् निद्यति । निधाय रत्नेश्च बंजैश्च पूरयन्ति पूरियत्वा ह रतालकामिः पीठं बध्नन्ति, पीठं बध्या त्रिदिशि त्रीणि कदलीगृहाणि विक्ववित, ततः खलु तेषां कदलीगृहाणां बहुमध्यदेश-भागे त्रीणि चतु शालकानि विकुर्वन्ति, ततः खल तेषां चतुःशालकानां बहुमध्यदेशभागे त्रीणि सिंहासनानि विकुर्वन्ति, तेषां खलु सिंहासनानाम् अयमेतदूषो वर्णव्यासः प्रज्ञप्तः सर्वी वर्णको भणितच्यः । ततः खछ ताः रुचकमध्यवास्तव्याः चतस्रो दिवकुमार्यो महत्तराः यत्रैव भगवान् तीर्थङ्करः तीर्थङ्कारमाता च तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य भगवन्तं तीर्थङ्करं करतलमंप्रदेन गृह्णन्ति तीर्थङ्करमातरं च बाहाभिर्गृह्णन्ति, गृहीला यत्रैव दाक्षिणात्यं कदलीगृहं यत्रैव चतः सालकं यत्रैव सिंहासनं तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य भगवन्तं तीर्थकरं तीर्थक्रर-मातरं च सिहासने निधादयन्ति, निषाद्य शतपाकसहस्रपाकैः तैलैः अभ्यद्गयन्ति, अभ्यद्ग-यिता सुरभिणा गन्यवर्त्तकेन उद्वर्त्तपन्ति, उद्वर्त्य भगवन्तं तीर्थङ्करं करतलपुटेन तीर्थङ्करमातरं च बाह्बोर्जुह्नन्ति गृहीत्वा यंत्रैव पौरस्त्यं कदलीगृहं यत्रैव चतुः शालं यत्रैव सिंहासनं तत्रैव उपागच्छिन्ति, उपागत्य भगवन्तं तीर्थङ्करं तीर्थङ्करमातरं च सिंहासने निषादयन्ति, निषाध त्रिभिरुदकैमी ज्ञयन्ति, तद्यथा-गन्धोदकेन १, पुष्पोदकेन २, शुद्धोदकेन ३, मज्जयित्वा सर्वोलङ्कारविभूषितौ कुर्वन्ति, कृत्वा भगवन्तं तीर्थङ्करं करतलपुटेन तीर्थङ्करमातरं च बाहाभिः मुह्मन्ति, महीत्वा यत्रैवौत्तराहं कदलीमृहं यत्रैव चतुःशास्त्रकं यत्रैव सिहासनं तत्रैव उपा-गच्छन्ति उपागत्य भगवन्तं तीर्थङ्करं तीर्थङ्करमातरं च सिंहासने निषादयन्ति, निषाद्य आभियोगान् देवान् शब्दयन्ति, शब्दयित्वा एवमवादीत् क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः ! श्लुद्रहिम-वतो वर्षधरपर्वतात् गोशीर्षवन्दनकाष्ठानि संहरत ततः खळ ते आभियोगाः देवाः तःभिः रुचकमध्यवास्तव्याभिः चतस्भिः दिवञ्जमारीमहत्तरिकाभिः प्वमुक्तासन्तः हृष्टतुष्टाः यावद् विनयेन वचनं प्रतीच्छन्ति, प्रतीष्य क्षिप्रमेव श्चद्रहिमवतो वर्षपरपर्वतात् सरप्तानि मोशीर्षचन्दनकाष्ठानि संहरन्ति ततः खछ ताः मध्यरुवकवास्तव्याः चतस्रो दिक्कुमारी-महत्तरिकाः शरकं कुर्वन्ति, कृत्या अर्राणे घटयन्ति अर्राणे घटयित्वा शरकेण अर्राणे मध्यन्ति, मथित्वा अर्गिन पातयन्ति पातयित्वा अग्नि सन्धुक्षन्ति सन्धुक्ष्य गोशीर्वचन्दनकाष्ठानि प्रक्षिपन्ति, प्रक्षिप्य अग्निमुज्ज्यालयन्ति उज्ज्यालय समिधकाष्ठानि प्रक्षिपन्ति प्रक्षिप्य अग्नि-होमं कुईन्ति कृत्वा भ्तिकर्म कुर्वन्ति, कृत्वा रक्षापोद्दलिकां बध्नन्ति बद्ध्या नानामणिरत्न-भक्तिचित्रो द्विविधौ पाषाणवृत्तको मृह्यन्ति गृहीत्वा भगवतः तीर्थक्ररस्य कर्णम्ले टिट्टयार्वेति भवतु भगवान् पर्वतायुः। ततः खलु ताः क्चकमध्ययास्त्रच्याः चतस्रो दिक्कुमारी महत्तिरिकाः भगवन्तं तीर्थक्करं करतलपुटेन तीर्थक्करमाटरं च बाह्यभिगृह्यन्ति गृहीत्वा यत्रैव भगवतः तीर्थकरस्य जन्मभवनं तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य तीर्थकरमातरं श्रुष्यायां निपादयन्ति, निपाद्य भगवन्तं तीर्थकरं मातः पार्थे स्थापयन्ति, स्थापियत्वा आगायन्त्यः परिगायन्त्यः तिष्ठन्तीति ॥३॥

टीका-'तेण कालेणं' इत्यादि 'तेणं कालेणं, तेणं समष्णं पुरित्थमस्यगरत्थःवाओ अह दिसाकुमारीमहत्तरियाओ सष्हिं सष्हिं क्लेहिं जाव विहरंति' तस्मिन् काले तस्मिन् समये अस्यार्थः अन्यहितपूर्वस्त्रे द्रष्टन्यः पौरस्त्यस्वकवास्त्वयाः-पूर्विग्मागवर्त्ति स्वकक्ट-निवासिन्यः अन्दौ दिवकुमारीमहत्तरिकाः 'सष्हिं सप्हिं क्लेहिं तहेष जाव विहरंति' स्वकैः स्वकैः क्टैः अत्र सप्तम्यर्थे तृतीया स्वकेषु स्वकेषु इत्यथः तथैव पूर्वस्त्रवदेव यावद् विहरन्ति अत्र यावत् पदात् 'सष्हिं सष्हिं भवणेहिं' इत्यारभ्य 'देवेहिं देविहिष सिद्धं संपरिवुडाओ' इत्यन्तं सर्वं संग्राह्मम् एतेषां व्याख्यानं च अस्मिन्नेव वक्षस्कारे प्रथमपूर्वस्त्रे दर्बटव्यम् आसां दिवकुमारीणां नामान्याह-'तं जहा' इत्यादि-'तं जहा-

> णंदुत्तराय १, णंदा २, आणंदा ३, णंदिवद्धणा ४ । विजया य ५, वेजयंती ६, जयंती ७, अपराजिया ८ ॥१॥

'तेणं कालेणं तेणं समएणं पुरित्थम रुयगवस्थव्वाओ' इत्यादि ।

टीकार्थ-उस काल में और उस समय में 'पुरित्थमक्यगवत्थव्वाओं अह दिसा-कुमारीमहत्त्तरियाओं' पूर्व दिग्मागवित रुचक क्रूट वासिनी आठ दिक्कुमारी महत्त्तरिकाएं 'सएहिं र क्रूडेहिं तहेव जाव विहरंति' अपने र क्रूटों में उसी तरह यावत भोगों को भोग रही थी यहां यावत्पद से 'सएहिं सएहिं भवणेहिं' यहां से लेकर 'देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडाओं' यहां तक का पाठ गृहीत हुआ है इस पाठ का अर्थ प्रथम सूत्र की व्याख्या में लिख दिया गया है 'तं जहां' इन

^{&#}x27;तेणं कालेणं तेणं समएणं पुरिश्यमरुपगवश्यव्याओ' इत्यादि
ते क्षणे अने ते समये 'पुरिश्यमरुपगात्थव्याओ अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ' पूर्व हिंग्आगवर्ति रुथक कूट वाक्षिनी आठ विक्रमारी महत्तरिक्षणे 'सएहिर कूडेसिं तहेव जाव विह्र ति' पात पाताना कूटेमां ते प्रमाणे क यावत् सेगिलेगवी रही हती, अही यावत् पहथी 'सएहिं सएहिं भवणेहिं' अहींथी मांडीने देवेहिं देवीहि य सिंह संपरिवृहाओ' सुधीना पाठ संगृहीत थया छे. आ पाठना अर्थ प्रथम सूत्रनी व्यण्यामां स्पष्ट करवामां आव्या छे. 'तं जहां' ते विवृहाओकाना नामा प्रमाणे छे-'णंदुत्तराय-१,

तद्यथा-मन्दोत्तरा १, च समुच्चये, नन्दा २, आनन्दा ३, नन्दिवर्द्धना ४। विजया च ५, वैजयन्ती ६, जयन्ती ७, अपराजिता ८॥

इत्येताः नामतः कथिताः 'सेसं तंचेव जाव तुन्माहिं ण भाइयव्वं तिकट्ड 'भगवओ तिस्थ-यरस्स तित्थयरमायाए य' शेषम् आसनप्रक्रम्पावधिप्रयोगभगवद्द्यनेपरस्पराष्ट्रान स्वस्वाभि-योगिककृतयानिविमानिविक्कर्रणादिकं तथैव यावद् युष्माभि न भेतव्यम् इति कृत्वा इत्युक्त्वा भगवतस्तीर्थङ्करस्य तीर्थङ्करमातुश्च 'पुरिथमेणं आयंसदृत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगाय-माणीओ चिद्धंति' पौरस्त्येन-पूर्वस्चकसमागतत्वात् पूर्वतः, आदर्शदस्तगताः-हस्तगतः

दिक्कुमारिकाओं के नाम इस प्रकार से हैं 'णं दुत्तराय १, णंदा २, आणंदा ३, णादिवद्धणा ४, विजया य ५, वैजयंती ६, जयंती ७, अपराजिया ८' नन्दोत्तरा, नन्दा, आनन्दा, निद्वर्धना, विजया, वैजयन्ती, और अपराजिता 'सेसं तं चेष तुम्भाहिं ण भाइयव्यं ति कहु भगवओं तित्थयरस्स तित्थयरमायाए य पुरिष्धिमेणं आयंसहत्थगयाओं आगायमाणीओं परिगायमाणीओं चिहंति' यहां पर बाकी का कथन-जैसे आसन का कम्पाधमान होना, उसे देखकर अबधिज्ञान से इसका कारण जानना अर्थात् भगवान् का जन्म हो गया है ऐसा अवधिज्ञान हारा जानना, किर आपस में बुलाकर मंत्रणा करना, अपने अपने आभियोगिक देवों को बुलाना, उन्हें यान विमान तैयार करने की आज्ञा देना, इत्यादि सब कथन जैसा प्रथम सूत्र में किया गया है वैसा ही वह सब यहां पर समझलेना चाहिये और वह सब कथन यावत् आपको भयभीत नहीं होना चाहिये यहां तक का यहां प्रहण करलेना चाहिये इस प्रकार कहकर वे सबकी सब पूर्व दिग्भागवर्ती रूचक कूट वासिनी ८ दिक्कुमारियां भगवान् तीर्थंकर और तीर्थंकर माता के पास-समुचिन स्थान पर-हाथ में दर्पण लिये हुए खडी हो गई

णंदा २, आणंदा ३, णंदिवद्धणा ४, विजया य ५: वेजयंति, ६, जयंती ७, अपराजिया ८' नन्हीत्तरा, नन्हा, व्यानन्हा, निन्हवर्धना, विजया, वैजयन्ती, जयन्ती अने अपराजिता. 'सेसं तं चेव तुन्माहिं ण माइयव्वं तिकट्ट मगवओ तित्ययरस्स तित्थयरमायाए य पुरित्यमणं आयंसहत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्टंति' व्यक्षीं शेष ४४न केम अध्यान ४ पित थवुं, ते कोई ने अवधिज्ञानशी तेनुं अरुष्णु लाष्ट्रवं. कोट्से हे अगवान्ति। कन्म थई गये। छे, वेवुं अवधिज्ञान वडे लाष्ट्रवुं, पछी कोड-भीजने भादावा, ते हेवेनि क्यान-विभान तैयार ४२वानी आज्ञा आपयी वगेरे अधुं ४४न केम प्रथम सूत्रमां २५६८ ४२वामां आवेद्धं छे, तेवुं क अधुं ४थन यावत् आपश्री अथकीत थाक्या निद्धं, अद्धीं अद्ध्य ४२वी सेदीं के अधिके. आ प्रमाणे कहीने तेकी सर्वे पूर्विक्शावती रुवेड धूट वासिनी आठ दिक्षमारिक्षो। अगवान् तीर्थं ६२ अने तीर्थं ४२ना मातुश्री पासे कई न

आदर्शी-दर्पणो जिनजनन्योः शृङ्कारादि विलोकनाद्युपयोगी यासां ताः इस्तगतादर्शा इत्यर्थः मूले विशेषणस्य इस्तगतपदस्य पूर्वे प्रयोक्तव्ये परिनपातः प्राकृतत्वात् बोध्यः, आगायन्त्यः — आ ईष्ट्रस्वरेण गायन्त्यः प्रारम्भकाले मन्दरस्वरेण गायमानत्वात्, परिगायन्त्यः — गीतप्रवृत्ति कालानन्तरम् परितः उच्चस्वरेण गायन्त्यस्तिष्ठन्ति इति । अत्र च रुचकादि स्वरूपप्ररूपणा इयम् पृकादेशेन प्रवादशे द्वितीयादेशेन त्रयोदशे तृतीयादेशेन एकविशे रुचकद्वीपे बहुमध्ये वलयाकारो इचक्केलः चतुरशीितयोजनसङ्खाणि उच्चः मूले १००२२ मध्ये ७०२३ विश्वरे ४०२४ योजनानि विस्तीर्णः, तस्य च शिरसि चतुर्थे सहस्रे प्वदिशि मध्ये सिद्धा-यतनक्रुद्रम् उभयोः पार्श्वयोः चत्वारि २ दिक्कुमारीणां क्टानि तत्र नन्दोत्तराद्याश्वतस्र एक-पार्श्वे क्टचतुष्टये द्वितीये च पार्श्वे कूटचतुष्टये विजयाद्याश्वतस्रः दिक्कुमारी महत्तरिकाः परिवसन्तीतिभावः ।

सम्प्रति दक्षिणहचकस्थानां वक्तन्यमाह—'तेणं कालेणं' इत्यादि, 'तेणं कालेणं तेणं समएणं दाहिणह्यसवत्यव्वाओं अट्टिक्सिस सारीमहत्तियाओं तहेव जाव विहरंति' तिस्मित और पहिले धीमें स्वरं से और बाद में जोर जोर से जन्मोत्सव के मांगलिक गीत गाने लगी इन्हों के हाथ में द्र्पण इसलिये था कि जिन और उनकी माता श्रक्तारादि को देखने के लिये इसे अपने काम में लावें यहां रूचकादि के स्वरूप की प्रसूपणा इस प्रकार से है एक देश से ११ वें द्वितीया देश से १३ वें, तृतीया देश से २१ वें रूचक द्वीप में ठीक बीच में वलय के आकार का रूचक शैल है यह चौरासी हजार योजन का उंचा है मूलमें इसका विस्तार १००२२ योजन का है प्रस्के जपर शिखर में ४०२४ योजन का है अरेर ऊपर शिखर में ४०२४ योजन का है उसके ऊपर शिखर पर चतुर्थ हजार योजन पर पूर्व दिशा की ओर बीच में सिद्धा-यतन कूट है दांइ बांई ओर चार कूट दिक्कु मारिकाओं के हैं इनमें नन्दोत्तरा आदि दिक्कु मारिकाएं रहती हैं।

दक्षिण रचकस्थ दिक्कुमारिकाओं की वक्तव्यता 'तेणं कालेणं तेणं सम
समुचित स्थान ઉપर ढाथमां ६५ छ લઇને ઊભી રહી. અને પહેલાં ધીમા સ્વરમાં અને

ત્યાર બાદ નેર-નેરથી જન્માત્સવના માંગલિક ગીતા ગાવા લાગી. તેમના હ થમાં દર્પ છુ

એટલા માટે હતું કે જિન અને તેમના માતુશ્રી શૃંગારાદિ નેવા માટે એને પાતાના કામમાં

લાવે. અહીં રુચકાદિના સ્વરૂપની પ્રરૂપણા આ પ્રમાણે છે—એક દેશથી ૧૧નાં, દ્વિતીયા
દેશથી ૧૩માં, તૃતીયા દેશથી ૨૧માં રુચક દીપમાં, ઠીક મધ્યભાગમાં વલયના આકાર

એવા રુચક શૈલ છે, આ ૮૪ હજાર યાજન એટલા ઊંચા છે. મૂળમાં એના
વિસ્તાર૧૦૦૨૨ યાજન એટલા છે. મધ્યમાં ૭૦૨૩ યાજન એટલા છે અને ઉપર શિખરમા
૪૦૨૪ યાજન એટલા છે. તેની ઉપર—શિખર ઉપર ચાર ઢજાર યાજન ઉપર પૂર્વ દિશા
તરફ મધ્યમાં સિદ્ધાયતન ફૂટ આવેલા છે. એની ડાબી અને જમણી તરફના ચાર ફૂટા
દિધુકુમારિકાએના છે. એ ફૂટામાં નન્દોત્તરા આદ દિધુકુમારિકાએ વસે છે.

काछे तिस्मन् समये दक्षिणरुचकवास्तव्याः-पूर्ववत् रुचकिश्वरिस दक्षिणदिशि मध्ये सिद्धाय-तनक्टम् उमयोः पार्श्वयोः चत्वारि २ क्टानि तत्र तत्र चतस्रश्रतस्रो वासिन्य इत्यर्थः, मिलित्वा अष्टी दिक्कुमारी महत्तरिकाः तथैव-पूर्वीक्तवदेव यावद् विहरन्ति तिष्टतीत्यर्थः, अत्र यावत् 'सएहिं २ क्टेहिं' ३ इत्यारभ्य 'देवेहिं देवीहि य सिद्धं संपरिवृडाओ' इत्यन्तं सर्वे सङ्ग्राह्मम्, एतेषां सर्वेषां पदानां व्याख्यानं च अस्मिन्नेव वक्षस्कारे प्रथमपूर्वस्त्रे द्रष्टव्यम् ।

तं जहा-समाहारा १ सुप्पइण्णा २, सुप्पबुद्धा ३, जसोहरा ४। लच्छिमई ५ सेसदइ ६ वित्तगुत्ता ७ वसुंघरा ८॥१॥

तद्यथा-समाहारा १ सुप्रदत्ता २ सुप्रबुद्धा ३ यशोधश ४ छक्ष्मीवर्ता ५ शेयवर्ती ६, चित्रगुप्ता ७, वसुन्धरा ८ ॥१॥

'तहेव जाव तुन्भाहिं न भाइयन्वं तिकट्टु जाव भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमाजए य दाहिणेणं भिगार इत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिहंति' तथैव पूर्ववदेव यावद् युष्माभि ने भेतव्यमिति कृत्वा तीर्थकरमातरं सावधानीकृत्य, भगवतस्तीर्थकरस्य

एणं' उस काल में और उस समय में 'दाहिण रुअगवत्थः बाओ अद्व दिसाकु-मारी महत्तरियाओं तहेव जाव विहरंति' दक्षिण दिग्मागवर्ति रुचर क्रूट बासिनी आठ दिक्कुमारी महत्तरिकाएं अपने अपने क्रूटों में जैसा कि प्रथम सूत्र में कहा जा चुका है यावत् भोगों को भोग रही थीं। यहां पर इसके बाद का सब कथन जैसा पहिले कहा गया है वैसा ही है उन आठ दक्षिणरुचकस्थ दिक्कुमारि-काओं के नाम इस प्रकार से हैं—'समाहारा १ सुप्पइण्णा २, सुप्पबुद्धा ३, जसोहरा ४। लच्छिमई ५, सेसवई ६ चित्तगुत्ता, ७ वसुंधरा ८॥

समाहारा १, सुप्रदत्ता २, सुप्रबुद्धा ३, यशोधरा ४, रूक्ष्मीवर्ती ५. शेषवती ६, चित्रगुप्ता ७ और वसुन्धरा ८ यहां पर और बाकी का कथन-जैसे आसन का कंपायमान होना उसे देखकर अवधि के प्रयोग से इसका कारण जानना

દક્ષિણુ રુચકસ્થ દિક્કુમારિકાઓની વક્તવ્યતા

'तेणं कालेणं तेणं समर्गं' ते काणमां अने ते समयमां 'दाहिणरअगवत्थव्याओं अह दिसाकुमारीमहत्तरियाओं तहेय जाव विहरंति' हिला हिण्यागवर्ति दुधक हूट वासिनी आढ हिड्डुमारि महत्तरिशाणा पात-पातानाइटामां-के प्रमाशे प्रथम सूत्रमां स्पेट हेरवामां आव्युं छे-यावत् लेगोना उपलेग करती हती. अहीं ते पछीनुं अधुं कथन के प्रमाशे पहेलां स्पेट करवामां आव्युं छे, तेनुं क छे. ते आढ हिला उधकस्थ हिड्डुमारिकाणाना नामा आ प्रमाशे छे-'समाहारा १, सुष्पइण्णा २, सुष्पदुद्धा ३, जसोहरा ४ । लच्छिमई ५, सेसवई ६, चित्तगुत्ता ७, वसुंधरा-८ ॥

સમાહારા-૧, સુપ્રદત્તા ૨, સુપ્રભુદ્ધા ૩, યશાધરા ૪, લક્ષ્મીવતી ૫, શેષવતી ६, ચિત્રગુપ્તા ૭ અને વસુંધરા-૮. અહીં શેષ બધું કપન-જેમકે આસન કંપિત થવું, તેને એઈ તે અવધિના પ્રયોગથી એનું કારણ જાણવું, વગેરે બધું કથન જે પ્રમાણે પ્રથમ સૂત્રમાં तीर्थक्करमातुश्र दाक्षिणात्येन जिनजनन्योदिक्षिणदिग्गतत्त्वाद् दक्षिणदिग्भागे इत्यर्थः, भृक्कार-इस्तगताः—जिनजननीरनपनोपयोगि इस्तगतजलपूर्णभृक्षाराः सत्यः इत्यर्थः आगायन्त्यः परिगायन्त्यः पूर्वम् अल्पस्वरेण पश्चाद्दीर्घस्वरेण गायन्त्य इत्यर्थः तिष्ठन्ति ता अष्टी दिवकु-मारी महत्तरिकाः इति ।

सम्प्रति पश्चिमस्चकस्थानां वक्तव्यतामाह-'तेणं कालेणं' इत्यादि । 'तेणं कालेणं तेणं समए णं पचित्यमस्यग्वत्थव्याओं अद्विसाकुमारीमहत्तरियाओं सएहिं जाव विहरंति' आदि सब वक्तव्यता जैसा प्रथम सूत्र में प्रकट कर दिया गया है वैसा ही है तहेव जाव तुब्भाहिं न भाइअव्वं इति कहुं, यावत् आप भय न करें इस प्रकार कहकर वे सबकी सब दिक्कुमारीयां 'जाव भगवओं तित्थयरस्स' जहां पर तीर्थ-कर और 'तित्थयरमाउएअ' तीर्थंकर की माता थी वहां पर आकर 'दाहिणेणं भिगारहत्थगआओं' उनकी दक्षिणदिशा तरफ भृंगार हाथ में लेकर समु-चित स्थान पर 'चिहंति' खडी हो गई खडी २ वहां वे 'आगायमाणीओं परि-गायमाणीओं' पहिले तो धीमें स्वर से और बाद में जोर २ से जन्मोत्सव के मांगलिक गीत गाने लगी। दक्षिणदिशा की ओर रूचक पर्वत की शिखर पर बीच में सिद्धायतन कूट है उसकी दोनों तरफ चार २ कूट हैं वहां पर ये ४-४ की संख्या में रहती है जिनेन्द्र और जिनेन्द्र की माता के स्नान के निमित्त उप-योगी जान कर ये भृङ्गार साथ में लाई थीं।

पश्चिमरुचकस्थ दिक्कुमारीकाओं की वक्तव्यता-

'तेणं कालेणं ते णं समएणं पच्चित्थमक्यगवत्थव्वाओ अह दिसाकुमारी महत्तरियाओ सएहिं २ जाव विहरंति' उस काल में और उस समय में पश्चिम

प्रकट करवामां आव्युं छे, ते प्रमाण् क छे 'तहेव जाव तुत्माहिं न माइअन्वं इति कहुँ' यावत् आपश्री लयभौत थां निह, आ प्रमाण्डे किहीने तें ओ अधी हिंद्र कुमारि ओ जाव भगवं को तित्थयरस्सं न्यां तीर्थ कि अने 'तित्थयरमाउएअ' तीर्थ करना भाताश्री हतां त्यां आवीने 'दाहिणें मिंगारहत्थगआओं' तेमनी हिंद्र ए हिशा तरक समुधित स्थान ७ पर 'चिट्ठंति' असी रही तेमना हाथामां अशीया हती असी-असी त्यां तें ओ 'आगायमाणीओं परिगायमाणीओं' पहें होता ही धीमा स्वरथी अने पछी ने से-जेरथी क ने मेत्सवना मांगाविक्ष भीता आवा हाथी. हिंद्र ए हिशा तरक रुथक पर्वतना शिभर ७ पर मध्यमां सिद्धायतन कृट आवेदी छे. ते कुटनी अन्ते तरक यार-यार कुटे आवेदा छे. त्यां ओ अधी ४ -४ नी संभ्यामां रहे छे. कि ने न्द्र अने कि ने न्द्र नी माताना स्नान-माटे ७ पये। यह पडशे ओवुं सम्रां से कुणारे। साथ हावी हती.

પશ્ચિમ રુચકસ્થ દિક્કુમારિકાએની વક્તવ્યતા

'तेणं कारेणं तेणं समर्णं पच्चित्थमरुयगत्रत्यत्वाओ अट्ठ दिसःकुमारीमहत्तरियाओ सएहिं २ जाव विहरंति' ते काणमां अने ते समयमां पश्चिम दिग्लागुवती' रूथक कुट तिस्मन् काले तिस्मन् समये पश्चिमरुचकवास्तव्याः पश्चिमदिग्भागवर्ति रुचकवासिन्यः अष्टौ दिक्कुमारीमहत्तरिकाः स्वकैः स्वकैः याविद्वहरित तिष्ठिन्ति यावत् पदात् 'सएिं सएिं क्रूडेिंहं' इत्यारभ्य 'देवेहिं देवीहि य सिद्धं संपरिवृडाओ' इत्यन्तं सर्व प्राह्मम् एतेनां व्यानस्यानम् अस्मिन्नेव वक्षस्कारे प्रथमपूर्वसूत्रे द्रष्टव्यम् । एतासां नमान्याह -'तं जहा' इत्यादि 'तं जहा' तद्यथा—

इलादेवी १ सुरादेवी २, पुहवी ३ पउमावइ ४ । एगणासा ५, णविमया ६ भदा ७, सीया य अहमा ॥ इलादेवी १ सुरादेवी २ पृथिवी ३ पद्मावती । एकनासा ५, नविमका ६ भद्रा ७ सीता च अष्टमी ॥

'तहेव जाव तुन्भाहिं ण भाइयन्वं तिक्रदेषु जाव भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए य प्रचित्थमेणं ताल्वियंटइत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिद्वंति' क्र्टन्यवस्था तथैव पूर्ववदेत्र यावद् युष्माभि र्न भेतन्यम् असम्भान्यमानेऽस्मिन्नेकान्तस्थाने विसद्यजातीयाः

दिग्भागवर्ति रुवक क्ट वासिनी आठ दिक क्रमारी महत्तरिकाएं अपने अपने क्ट आदिकों में यावत् भोगों को भोग रही थी यहां यावत् पद से 'सएहिं सएहिं क्टेहिं' इस पाठ से छेकर 'देवेहिं देवीहि य सिद्धं संपरिवुडाओ' यहां तक का पाठ गृहीत, हुआ है। इनके नाम इस प्रकार से हैं।

इलादेवी १ सुरादेवी २ पुहवी ३ पउमावई ४ ।

'एगणासा ५, णवमिआ ६ भदा ७ सीआ य ८ अइमा'

इस्रादेवी, सुरादेवी, पृथिवी, प्रभावती, एकनासा, नविमका, भद्रा और आठवीं सीता 'तहेव जाव तुन्भाहिं ण भाषिअन्बंति कहु जाव भगवओ तित्थ-यरस्स तित्थयरमाऊए य पच्चित्थमेणं तालिअंटहत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिद्वंति' क्टन्यवस्था पूर्व की तरह से ही जाननी चाहिये यावत् आपको 'जहां पर जनका आना संभवित नहीं हो सकता है ऐसे इस स्थान में

वासिनी आह हिर्हुभारी महत्तरिक्षाओं येत-येताना इट आहिक्षेमां यावत् लेलिने छप-लेल करी रही हती, अहीं यावत् पहथी 'सएहिं सहिं कूडेहिं' आ पाहथी मंडीने 'देवेहिं देवीहिय सिद्धों सपरिवृहाओं' अही सुधीना पाह संगृह्धीतथये। छे स्थेमना नामे। आ प्रमाशे छे-

इलादेवी १, सुरादेवी २, पुहवी ३, पउमावई ४।

एगणासा ५, णविमाञा ६, भहा ७, सीआय ८, अट्टमा १ ॥

हिताहेवी १, सुराहेवी, पृथिवी, पद्मावती, क्रेडनासा, नविभिष्ठा, लद्रा अने सीता. 'तहेव जाव तुन्माहिं ण मायिअन्वंति कर्ट्ट जाव मत्रओ तित्थयरमा तित्थयरमाउत्य पर्चित्थमेणं तालिअंटहत्थगयाओ आगायणाणीओ परिगायमाणीओ चिट्टंति' हूट व्यवस्था अहीं पूर्वंदत् क काब्दी केहिके. यावत् तमारे 'क्यां कनागमन असंस्वित है, क्रेवा

इमाः क्यं समुपस्थिता इत्याशङ्काकुलं चेतो न कार्यमित्यर्थः इतिकृत्वा तीर्थकरमातरम् इत्युक्त्वा यावद्भगवतस्तीर्थङ्करस्य तीर्थकरमातुश्च पात्रात्ये पश्चिमस्वकागतत्वाज्ञिनजनन्योः पश्चिमदिग्भागे ताल्रष्टुन्तस्तगताः—ताल्रष्टुन्तम् ताल्रन्यजनं तद्धस्तगताः उभयोः सेवार्थः मित्यर्थः आगायन्त्यः—आ ईपत्स्वरेण गायन्त्यः प्रारम्भकाले अल्पस्वरस्येव गायमान्त्वात् परिगायन्त्यः गीतप्रवृत्तिकालानन्तरं दीर्घस्वरेण गायन्त्यस्ता अष्टौ दिक्कुमारी-महत्तिरिकास्तिष्ठिन्त, अत्र प्रथमयावत्यदात् तयोः त्रिः कृत्वः आदक्षिणप्रदक्षिणं कर्त्तल्यिस्तिष्ठिनितं दशनः विरसावन्तं मस्तके अञ्चिलं कृत्वा हे तीर्थकरमातः इति सङ्ग्राष्णम् 'तेणं कालेणं तेणं समप्णं उत्तरिस्ल स्यगवत्यवाभो जाव विहर्रति' तस्मिन् काले तस्मिन् समये औत्तराहरूचकवास्तव्याः—उत्तरदिग् भागवर्त्तिरुचकवासिन्यो यावद् विहरन्ति तिष्ठिन्ति, यावत्यदात् अष्टौ दिक्कुमारीमहत्तरिकाः इतिप्राह्मम्, एतासां नामान्याह—'तं जहा' तद्यथा—अल्बुसा १, मिस्सकेसी २, पुंडरीया ३, य वारुणी ४।

हत्सा ५, सन्त्रपमा ६, चेव सिरि ७, हिरि ८ चेव उत्तरओ ॥१॥

विसदश जातीयजन ये किसिलिये उपस्थित हुई हैं, इस प्रकार की आशंका से आकुलित नहीं होना चाहिये इस प्रकार कहकर वे जहां तीर्थंकर और तीर्थंकर माता
थी वहां पर गई वहां जाकर वे उनके पश्चिम दिग्भाग से आने के कारण पश्चिम
दिग्भाग में खडी हो गई उनके प्रत्येक के हाथों में पंखा था वहां पर समुचित
स्थान में खडी हुई वे प्रथम धीमें स्वर से और बाद में जोर जोर से जन्मोत्सब
के मांगलिक गीत गाने लगी यहां प्रथम यावत् शब्द से 'तयोः त्रिकृत्वः आदक्षिणप्रदक्षिणं कृत्वा करतलपरिगृहीतं दशनखं शिरसावतं मस्तके अंजिलकृत्वा-हे तीर्थंकरमातः 'ऐसा पाठ गृहीत हुआ है।

'ते णं कालंगं ते णं समए णं उत्तरिस्लक्ष्अगवस्थव्वाओ जाव विहरंति-तं जहा-अलंबुसा १, भिस्सकेसी २, एण्डरीआ य ३ वारुणी ४, हासा ५, सन्ब

भा स्थान ७पर विसदश जतीयक्षत भा दे। है। शा भाठे ७पिस्था थ्या छे। अवी आ शां हाथी आहु दित थवुं जें छंगे निर्दे. भा भ्रमाणे हर्दीने ते थे। ज्यां तीर्थं हर भने तीर्थं हरना भाता हतां त्यां गर्छ. त्यां कर्छने तेमणे पश्चिम हिल्लागथी भाववाना हारणे पश्चिम हिल्लाग तरह अली थर्छ गर्छ. तेमनामांथी हरे हे हरे हना हाथमां पंभाको हता. त्यां समुचित स्थान ७पर अली थ्येली ते थे। प्रथम धीमा स्वरे भने त्यार जाह जोर-जेरथी कर्मात्सवना मांगिलिह गीता जावा दाणी. भहीं प्रथम यावत् शण्हथी 'तयोः त्रिकृताः आदक्षिणपदक्षिणं कृत्वा करतलपरिगृहीतं दशनखं शिरसावतं मस्तके अंबिर्धं कृत्वा हे तीर्थं करमातः ' भेवे। पाठ संगृहीत थ्ये। छे.

'तेण कालेण तेण समएणं उत्तरिव्लरूअगवत्थव्याओ जाव विहरंति ते जहा-अलंबुसा १, भिस्त्रकेदी २, पुण्डरीआ य ३, बारुणी ४, हासा ५, सव्वप्पमा-६ चेव, सिरि ७, हिरि अलंबुसा १, मिश्रकेसीर २, पुण्डरीका ३, च दारुणी ४। हासा ५, सर्वेत्रभा ६, चैव श्रीः ७, होश्रेव ८ उत्तरतः ॥१॥

'तहेव जाव वंदिता भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमाउए य उत्तरेणं चामरहत्थगयाओ आगाय-माणीको परिमायमाणीओ चिहंति' कुटब्यवस्था तथैव पूर्ववदेव यावद् वन्दिस्वा भगवतः तीर्थकरस्य तर्थक्करमातुश्र उत्तरे-उत्तरहचकागृतश्वाज्ञिनजनन्योहत्तरदिरभागे चामरहस्त-गताः-मृहीतहस्तचानराः सत्यः आगायन्त्यः ईषतस्वरेण गायन्त्यः, परिगायन्त्यः दीर्घ-स्वरेण सायन्त्यः तिष्ठन्ति, अत्र यावत् पदात् त्रिः कृत्वः आदक्षिणप्रदक्षिणं कृत्वा कर्तछ-परिगृहीतं दशनखं शिरसावर्तं मस्तके अञ्जलि कृत्या वन्दते नमायति वन्दित्वा नमस्यित्वा प्पभा ६ चेव सिरी ७ हिरि ८ चेव उत्तरओ ॥१॥' उस काल्प्रें और उस समय में उत्तर दिखर्ती रुचक क्रुटनिवासिनी यावत् आठ दिक्क्समारीकाएं अपने अपने कटादिकों में भोग भोगने में तल्लीन थी यहां पर सब प्रकरण इस सम्बन्ध में जैसा पहि<mark>ले कहा है−वैसा वह सव यहां पर कहलेना चा</mark>हिये उन उतार दिग्वर्ती रुचक कूटवासिनी दिक्कुमारिकाओं के नाम इस प्रकार से है-अलंबुसा, मिश्रकेशी, पुण्डरीका, बारुणी, हासा, सर्वप्रभा, श्री और ही 'तहेव जाव वंदित्ता भग-बओ तित्थवरस्त तित्थवरमाऊए अ उत्तरेणं चामरहत्थगयाओ आगावमा-णीओ परिगायमाणीओ चिहंति' कूट व्यवस्था पूर्व के जैसी ही समझना चाहिये यावत् वे बन्दना करके भगवान् तीर्थकर और तीर्थं कर माता के पास उचित स्थान में उत्तरदिशा में खड़ी हो गई उनके प्रत्येक के हाथमें उस समय चामर थे वहां खड़े होकर उन्होंने पहिले तो धीमे स्वर में और बाद में जोर जोर से जन्मोत्सव के मांगलीक गीत गाये यहां पर भी यावत्पद से 'त्रिः कृत्वः आद-क्षिणप्रदक्षिणं कृत्वा करतलपरिगृहीतं दशनखं शिरसावर्सः गस्तके अंजलिं

८ चेत्र उत्तरओं ॥ १ ॥ ते काणे अने ते समये उत्तर किन्ता रुधक कुट निवासिनी यावत् आठ हिइक्कारिकाओ। पात-पाताना कुटाहिकामां लेगो। लेगाववामां तक्कीन छती. अर्छा शेष अर्धु अक्ष्यु के प्रमाणे पहेंदां कंडेवामां आव्युं के तेवुं क अर्धु समक्ष देवुं लेधिओ. ते उत्तरहिण्वती रुधक कृटवासिनी हिक्क्षमारिकाओना नामा आ प्रमाणे के—अर्थु असा, मिश्रकेशी, युंडरीका, वारुणी, द्वासा सर्वप्रका, श्री अने छी 'तहेव जाव वंदिता भगवओ। तित्थयरसा तित्थयरमाऊए अ उत्तरेणं चामरहत्थगयाओ आगायमाणीओ पिरगायमाणीओ चिट्ठं ति' कुट व्यवस्था पूर्ववत् क समक्ष्यी लेधिओ. यावत् तेओ वंदन क्रीने लगवान् तीर्थं कर अने तीर्थं करना माता पासे इचित स्थानमां उत्तर हिशा तरक् अशी थर्ध अर्ध, तेमांनी हरेके हरेकना द्वाधमां ते समये यामरा द्वात त्यां अशी थर्ध ने प्रथम ते। तेमणे धीमा स्वरे अने त्यार आह लेश-लेश्थी कन्मात्सवना मांगित्वक गीते। जावा द्वाशी, अदी पण यावत् पर्दर्श भी त्यार आह लेश-लेश्थी कन्मात्सवना मांगित्वक गीते। जावा द्वाशी, अदी पण यावत् परवर्श भी त्यार आह लेश-लेश्थी कन्मात्सवना मांगित्वक गीते। जावा द्वाशी, अदी पण यावत् परवर्श भी त्यार आह लेश-लेश्थी कन्मात्सवना मांगित्वक गीते। जावा द्वाशी, अदी पण यावत् परवर्श भी त्यार आह लेश-लेश्यी कन्मात्सवना मांगित्वक गीते। जावा द्वाशी, अदी पण यावत् परवर्श परवर्श करतल्परिगृहीतं

इतिग्राह्मम् । अथ विदिग्रुचकवासिनीनाम् आगमनावसरः 'तेणं कालेणं' इत्यादि । 'तेणं कालेणं तेणं समएणं विदिसि रुयगवत्थव्याओ चत्तारि दिसःकुमारीमहत्तरियाओ जाव विहरंति' तस्मिन् काले तस्मिन् समये विदिग् रुचकवास्तव्याः—तस्यैव रुचकपर्वतस्य शिरसि चतुर्थे योजन सहस्रे चतुर्स्य विदिश्व एकैकं कूटं तत्र वासिन्य इत्यर्थः चतन्नो विदिवकुमारीमहत्तरिकाः यावद् विहर्गत तिष्ठन्ति इमाश्र विद्युक्तमारीमहत्तरिकाः स्थानाङ्गे उक्ताः, अत्र यावत्यदात् 'सएहिं कूटेहिं' इत्यारभ्य 'देवेहिं देवीहिय सद्धिं संपरिवुडाओ' इत्यन्तं सर्वे ग्राह्मम् । एतेषां व्याख्यानम् अस्मिन्नेव वक्षस्कारे प्रथमपूर्वस्रते द्रष्टव्यम् । एतासां नामान्याह—'तं जहा चित्ता य' इत्यादि । 'तं जहा—

चित्राय १, चित्रकणगा २, सतेरा ३, य सोदामिणी ४।
तद्यथा- चित्रा च १, चित्रकनका २, शतेरा ३, सौदामिनी ४।
तहेव जाव ण भाइयव्वं तिकट्ड भगवओ तित्थयरस्स तिरथयरमाउए य चउसु विदिसासु
कृत्वा चन्दते, नमस्यति चन्दित्वा नमस्यित्वा इस पाठका ग्रहण हुआ है।

'तेणं कालेणं तेणं समएणं विदिसि रुअगवत्थव्याओ चलारि दिसाकुमारी महत्तरिआओ जाव विहरंति-तं जहा-चित्ताय १ चित्तकणगा २, सतेरा ३ य सोदामिणी ४ तहेव जाव ण भाइअव्वं ति कट्टु भगवओ तित्थयरस्स तित्थ यरमाऊए अ चउसु विदिसासु दीविआहत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्टंति' उस कालमें और उस समय में रुचक कूटकी चार विदिशाओं में रहनेवाली चार दिशाकुमारी महत्तरिकाएं यावत भोगों को भोग रही थीं रुचक पर्वत के ऊपर में चार हजार योजन पर चार विदिशाओं में एक २ कूट हैं ये चार दिशाकुमारी महत्तरिकाएं वहीं पर एक कूट में रहती है इनके नाम इस प्रकार से हैं-चित्रा चित्रक्रका, शतेरा, और सौदामिनी यावत आपको' असंभाव्यमान इस एकान्तस्थान में विसहश जाती ये किसलिये आई है इस

दसनखं शिरसावर्तं मरतके अंजिं कृत्या वन्दते, नगरयित, वन्दित्या नमस्यित्वा' आ पाठना संअद्ध थया छे.

'तेणं कालेणं तेणं समएणं विदिसि रुअगवत्थव्याओ चतारि दिसाकुमारी महत्तरिआओ जाव विहरंति-तं जहा-चित्ताय १, चित्तकणमा २; सतेरा ३ य, सोदामिणी ५, तहेव जाव जाव णमाइ अव्यति कर्ट्ट भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमाऊएअ चउसु विदिसासु दीविआहत्थमा-याओ आगायमाणीओ परिमायमाणीओ चिट्टंति' ते ठाणे अने ते समये रुथड हूटनी शार विदिशाणामां रहेनारी शार दिश हुमारी महत्तरिहाओ। यावत् सोगोलोशववामां तब्बीन हती, ते रुथड पर्वतनी ७५२ शार हुलर थे। ४न ७५२ शार विदिशाणामां सेड-लेड हूट आवेदि। हे. को शार दिशाहुमारी महत्तरिहाले। त्यां ४ लेड हूटमां रहे हे. लेमना नामा आप्रमाणे हे-यित्रा, शित्रहन्हा, शतेरा अने सौद्दामिनी, यावत् तमारे आ असंभाष्यमान आ

दीनिया हत्यगयाओ आगायमाणो श्रो परिगायमाणीओ चिहंति ति' तथैव यावत् न भेतव्यम् युष्माभिः असंभाव्यमानेऽस्मिन्नेकान्तस्थाने विसहशजातीया इमाः किमय समुपस्थिताः इति शङ्काकुलं चेतो न कार्यम् इति कृत्वा तीर्थङ्करमातरं प्रति इत्युक्ता विदिगागतत्वाद् भग-वतः तीर्थङ्करस्य तीर्थङ्करमातुश्च चतस्रषु विदिश्च दीविकाहस्तगताः स्थापितहस्तदीपिकाः सत्यः आगायन्त्यः—आ ईपतस्वरेण गायन्त्यः प्रतिस्भक्ताले अल्पस्वरेणैव गायमानत्वात् परिगायन्त्यः तारस्वरेण गायन्त्यः तिष्ठिन्ति ताः चतस्रो विदिवकुमारी महत्तरिका इति । तथैव यावत्—अत्र यावत्पदात् त्रिः कृत्वः भादक्षिणप्रदक्षिणं कृत्वा करतलपरिग्रहीतं दशनसं शिरसावर्तं मस्तकेऽङ्किलं कृत्वा भगवन्तं तीर्थकरं तीर्थङ्करमातरं च वन्दते, नमस्यति वन्दित्वा नमस्यता च इति प्राह्मम् ।

अथ मध्यक्चकवासिनीनां समागमः 'तेणं कालेणं' इत्यादि । 'तेणं कालेणं तेणं सम-एणं मन्त्रिमक्यग्रत्थन्ताओं चतारि दिसाकुमारीमहत्तरियाओं सएहिं सएहिं कुढेहिं तहेव प्रकार की आदांका से आकुलित चित्तपुक्त नहीं होना चाहिये इस प्रकार कहकर वे चारों विदिशाओं से आने के कारण भगवान् तीर्थकर और तीर्थकर माता की चारों विदिशाओं में खडी हो गई इनके सबके हाथों में दीपक थे वहां खडी होकर वे सब की सब पहिले तो धीमे स्वर से और बाद में जोर जोर से जन्मो-त्सव के माङ्गलिक गीत गाने लगीं यहां घावत्पद से 'त्रि: कृत्वः आदक्षिणप्रद-क्षिणं कृत्वा करतलपरिग्रहीतं दशनखं शिरसावर्तं मस्तके अंजलिं कृत्वा भगवन्तं तीर्थकरं तीर्थक्वर मातरं च चन्दन्ते नमस्यन्ति बन्दित्वा नमस्यित्वा च' इस पाठका ग्रहण हुआ है ।

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' उस कालमें और उस समय में 'मिडिझमरुयग-वत्थव्वाओं चत्तारि दिसाकुझारीमहत्तरियाओं सपहिं २ कूडेहिं तहेब जाब विहरंति' मध्यम रुचक कूटकी निवासिनी चार दिशाकुमारी महत्तरिकाएं अपने

भेडान्त स्थानमां विसदश कातिनी आ अडीं शा माटे आवी छे १ 'आ प्रहारनी आ शंहाथी आहु दित वित्तयुक्त यवुं न के छि. आ प्रमाण्डे हडीने ते की यारे विदिशाकी शी आवी देती तेथी कावान तीर्थं हर अने तीर्थं हर मातानी यारे विदिशाकी मां शिकी थर्ड अंधं. ते सर्वना ढाथेमां दीपह ढता. त्यां शिकी थर्ड ने ते की पहेदां धीमा स्वरे अने त्यार आह के र-के रथी क-मात्सवना मांगितिह गीते। गावा दाशी. अढीं यावत् पदथी 'त्रिः कृत्वः आदिशाणप्रदक्षिणं कृत्वा करतलपरिग्महीतं दशनसं शिरसावर्तं मस्तके अंजिलं कृत्वा भगवन्तं तीर्थकरं तीर्थकरमातरं च वन्यन्ते नमस्यन्ति वान्दित्या नमास्यित्या च' आ पाठ अढिण हराये। छे.

'तेणं चालेणं हेणं समएणं' ते अणे अने ते समये 'मिड्झमहयगवत्थव्वाओ चतारि दिसाकुमारी महत्तरियाओ सएहिं २ कूडेहिं तहेव जाव विहरंति' मध्यम 3्यक कूटनी निवा-सिनी यार दिशाकुमारी महत्तरिक्षाओं पात-पाताना कूटामां के प्रभाषे प्रथम सूत्रमां जाद विहरंति' तिसम् काले तिसम् समये मध्यस्चकवास्तय्याः मध्यसागवर्ति रुचकपर्वत-दासिन्यः—चतुर्विश्वत्यधिक चतुःसहस्रप्रमाणे रुचकशिरोविस्तारे द्वितीयसहस्रे चतुर्दिग्-दित्यु चतुर्षु कृटेषु पूर्वादिक्रमेण वासिन्य इत्यर्थः चतस्रस्ताः दिवकुमारी महत्तरिकाः स्वकैः स्वकैः कृटैः तथैव-पूर्ववदेव यावद् विहरन्ति तिष्ठन्ति, अत्र यावत्पदात् 'सप्हिं सप्हिं मवणेहिं' इत्यारभ्य 'देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपन्ति हाओ' इत्यन्तं सद्माह्यम् । एतासां नाम स्याह 'तं जहा रूया' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा—

> 'रूपा १, रूपासिया २, सुरूपा ३, रूपगावई ४। रूपा १, रूपासिका २, सुरूपा ३, रूपकावती ४।

'तहेव जाव तुब्भाहिं ण भाइयव्वं तिकट्ड धगवजो तिस्थयरस्स चउरंगुलव्वजं णाभिणालं कर्षित' तथैव पूर्ववदेव यावद् युष्माभि ने भेतव्यम्—असम्भाव्यमाने अस्मिन्नेकान्तस्थाने विसहश्चातीया इमाः किमर्थ सम्प्रियता इति शङ्काकुलं चेतो न कार्यम् इति कृत्वा—तीर्थङ्का-मातरम्प्रति इत्युक्त्वा भगवतः तीर्थङ्करस्य चतुरङ्गुलवर्ज नाभिनालं कल्पयन्ति, अत्र यावत्यत्ति त्रिः कृत्वः आदिक्षणप्रदक्षिणं कुर्वन्ति कृत्वा करतलप्रिगृहीतं दश्चलं शिरसावर्षे अपने कृतों में जैसा पहिले सूत्र में कहा गया है उसी प्रकार से मोग भोगने में लीन थी इसके आगे का सब पाठ जैसा पहिले कह आये हैं वैसा ही है पीले का वह सब पाठ 'देवेहिं देवीहिय सिद्धं संपरियुडाओ' यहां तक का ग्रहण कर कहलेना चाहिये इन दिक्कुमारिकाओं के नाम इस प्रकार से हैं—

'रूपा, रूपासिया, सुरूपा रूपगावई' रूपा रूपासिका, सुरूपा, और रूपकावती 'तहेय जाव तुब्भाहिं ण भाइयव्वंति कट्टु भगवओ तिस्थयरस्स चउरंगुलवर्जं णाभिणालं कप्पंति' पहिले की तरह ही यावत् आपको दांका से आकुलित चित नहीं होना चाहिये इस प्रकार कहकर उन्हों ने तीर्थंकर प्रभु के नाभिनाल को चार अंगुल छोड कर काट दिया।

मातरं च, वन्दन्ते, नमस्यंति, वन्दित्वा, नमस्यित्वा' आ पाठ गृद्धीत थये। छे. 'करपेत्ता, वि

मस्तकेऽझिं कृत्वा तीर्थकरं तीर्थकरमातरं च वन्दते नमस्पित विनिद्त्वा नमस्पित्वा इति प्राह्मम् 'कप्पेता' करपिता कर्तियत्वा 'वियरमं खंजंति' विवरकं गर्ने खनन्ति 'खिणता' गर्ने खनित्वा 'वियरमे णामि णिहणंति' विवरके गर्ने कल्पिते तां नामि निद्धति गर्ने स्थापपन्ति 'णिहणिता' निधाय गर्नेस्थापपित्वा 'रयणाण य वहराणय प्रेंति' रतनानां च वज्ञाणां च रत्नेश्व बज्जेश्व हीरकेः प्रयन्ति 'प्रेत्ता' प्रियत्वा 'हरियालियाए वेढं बंधंति' हरितालिकामिः द्वीभिः पीठं वधनन्ति पीठं बध्वा हरितालिकां वपन्तीत्यर्थः विवरकत्वननादिकं च सर्व अगवदवयवस्यात्रातनानिइत्त्यर्थं वोध्यम् 'वंधित्ता' पीठं बध्वा 'तिविसिन्तओ कथलीहरए विउद्वंति' त्रिदिशि—पश्चिमावर्जिदक् त्रये त्रीणि कदलीगृहाणि विकुर्वन्ति विक्वविणाश्चन्त्या निर्मान्तीत्यर्थः 'तएणं तेसिं कयलीहरगाणं बहुमण्झदेसभाए तओ चाउ-स्मालए विउद्वंति' ततः खल्ल तदनन्तरं किल तेषां कदलीगृहाणां बहुमध्यदेशभागे त्रीण चतुः शालकानि भवनिवेशेषान् विकुर्वन्ति विकुर्वणाश्चन्त्या निष्पादयन्ति 'तएणं तेसिं चाउस्सालगाणं बहुमण्झदेसभाए तओ सीहासणे विउद्वंति' ततः खल्ल तेषां चतुः शालकानां

तीर्थकरमातरंच चन्दन्ते, नमस्पंति चन्दित्वा नमस्पित्वा' यह पाठ गृहीत हुआ है।
'कप्पेत्ता विभरगं खणन्ति, खणित्ता विभरगे णाभि 'लं' णिहणंति, णि
हणिता रयणाण य वर्राण य पूर्ंति पूरिता हरिअलिआए वेढं बंधित' नालको
काटकर किर उन्हों ने जमीन में खड्ढा किया और उस खड्ढे में उस नाभिनाल
को रखदिया—गाढदिया—गाढकर किर उन्हों ने हरी हरी हुवाँ से उसकी पीठ बांधी
भर दिया—पूर दिया पूर करके किर उन्हों ने हरी हरी हुवाँ से उसकी पीठ बांधी
'वंधित्ता तिदिसि तओ कथलीहरए विउच्चंति तएणं तेसि कथलीहरगाणं बहु
मण्झदेसभाए तओ चाउस्सालए विउच्चंति' दूवाँ से पीठ बांध कर किर उन्हों ने
उस खड्ढे की तीन दिशाओं में पश्चिमदिशा को छोड कर पूर्व उत्तर और दक्षिणदिशा में तीन कदली गृहों को विकुर्वणा की किर उन तीन कदली गृहों के ठीक
बीच में उन्हों ने तीन चतुः शालाओं की विकुर्वणा की 'तए णं तेसि चाउस्सा-

धरमं खणन्ति, खणित्ता विअरगे णाभिं (छं) णिहणंति, णिहणित्ता रयणाणय वहराण य पूरें ति पूरित्ता हरिअछिआए वेढं बंधंति' नाक्षने कापीने पछी तेमिणे भूभिमां भाडा भिाधो अने ते भाडामां ते नालिनाणने भूशी हीथे। हाटी हीथे। हाटीने पछी ते भाडाने तेमिणे रते। अने वळीथी पूरित करी हीथे। पूरित करीने पछी तेमिणे लीशी हर्वाणी तेनी पीऽ भांधी. 'बंबित्ता, तिदिसां तओ कयछीहरए विड्वंति तए णं तेसिं कपछीहरगाणं बहुम अने देसमाए तओ चाउस्साछए विड्वंति' हर्वाथी पीठ भांधीने पछी तेमिणे ते भाडानी अने हिशामां पश्चिम हिशाने छाडीने पूर्व, उत्तर अने हिशा हिशामां त्रण कहली गृहानी विद्वंण करी पछी ते त्रण कहली गृहानी विद्वंण करी पछी ते त्रण कहली गृहानी विद्वंण करी स्थाने ते त्रण केली विद्वंण करी त्रण केली हिशामां त्रण कहली गृहानी विद्वंण करी त्रण ते तेसिं चाउस्साछणाणं बहुम सहेसमाए तभी सोहालो विद्वं ति,

बहुमध्यदेशभागे त्रीणि सिंहासनानि विक्ववैन्ति 'तेसिणं सीहासणाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पणाते' तेषां खळ सिंहासनानाम् अयमेतावदूषो वर्णव्यासः वर्णविस्तरः प्रज्ञप्तः 'सःवो वण्णगो माणियच्त्री' सर्वो वर्णकः पूर्ववद् भणितच्यः । 'तर्एणं ताओ स्यगमज्झवत्थच्याओ चत्तारि दिसाक्कमारीओ महत्तराओ जेणेव भगवं तित्थयरे दित्थयरमाया य तेणेव उत्रागच्छंति' ततः खळ ताः रुचकमध्यवास्तव्याः चतस्रो दिवकुमारीमहत्तरिकाः यत्रैव भगवांस्तीर्थंकरः तीर्थेकरमाता च तत्रैव उपागच्छन्ति 'उवागच्छता' उपागत्य 'मगवं तित्थयरं करयलसंपुडेणं गिण्हंति, तित्थयरमायरं च बाहाहिं गिण्हंति' भगवन्तं तीर्थकरं करतलसंपुटेन गृह्णन्ति तीर्थंकरमातरं च बाहुभिः गृह्णन्ति 'गिण्हित्ता' गृहीत्वा 'जेणेव दाहिणिल्ले कयलीहरए जेणेव चाउसालए जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छंति' यत्रैत दाक्षिणात्यं दक्षिणभागवर्त्ति कदली पृहं यत्रैव चतुःशालकं यत्रैव च सिंहासनं तत्रैव उपागळान्ति 'उवागळ्जिता' उपागत्य लगाणं बहुमज्झदेसभाए तओ सीहासणे विज्ववंति, तेसिणं सीहासणाणं अय-मेयारूवे वण्णावासे पण्णते सब्वो वण्णगो भाणियव्वो' इसके बाद फिर उन्हों ने उन चतुः शालाओं के ठीक मध्यभाग में तीन सिंहासनो की विकुर्वणा की उन सिंहासनों का इस प्रकार से वर्णविस्तर-वर्णन किया गया है इस सम्बन्ध में जैसा वर्णन सिंहासनों का पहिले किया जा चुका है वैसा ही वह यहां पर भी करलेना चाहिये 'तएणं ताओ रुयगमज्झ वत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीओ महत्तराओ जेमेव भववं तित्थवरे तित्यवरमाया व तेमेव उवागच्छंति' इसके बाद वे रुचक मध्यवासिनी चारो महत्तरिक दिक्कमारिकाएं जहां भगवान् तीर्थ-कर और तीर्थकर की माता थी वहां पर गई 'उवागच्छिता भगवं तित्थयरं कर-यलसंपुडेणं गिण्हंति[,] वहां जाकर उन्हों ने दोनों हाथों से भगवान् तीर्थंकर को उठाया-'तित्थयरमायरं च बाहाहिं गिण्हति' और तीर्थंकर की माता को हाथों से पकडा 'गिणिहत्ता जेणेव दाहिणिल्छे कयलीहरए जेणेव चाउसालए जेणेव सीहा-

तेसणं सीहसणाणं अयमेयास्त्वे वण्णावासे पण्णते सन्त्रो वण्णामे भाणियन्तो' त्यार थाई तेमणे ते अतुःशाक्षाओना ठीं अध्यक्षाणमां त्रण्य सिंद्धासनीनी विधुर्वणा हरी. ते सिंद्धासनीनी आ प्रभाणे वर्ण विस्तार वर्ण्यवामां आवेद्धा छे. आ सं अध्यमां के प्रभाणे पहेंद्रां सिंद्धासनीनुं वर्ण्यन हरवामां आवेद्धां छे ते प्रमाणे क वर्ण्यन अहीं पण समक देवुं निर्धां तेपण ताओं हयगमज्ज्ञवत्थन्त्राओं चत्तारि दिसाकुमारीओ महत्तराओं जेणेव मयवं तिस्थयर तित्थयरमाया य तेणेव जवागच्छंति' त्यार आह ते रुश्व मध्यवासिनी यारे हिस्धारिकाओं। क्यां सगवान् तीथिं हर अने तीर्थं हरना माता हतां त्यां गर्ध. 'जवागच्छता मगवं तित्थयरं करवळसंपुटेणं गिण्हंति' त्यां कर्धने तेमणे अन्ते हाथा वर्ड सगवान् तीर्थं हरना माता हतां त्यां गर्ध. 'उन्नाचिछत्ता भगवं तित्थयरं करवळसंपुटेणं गिण्हंति' त्यां कर्धने तेमणे अन्ते हाथा वर्ड सगवान् तीर्थं हरना माता श्रीने हाथामां पर्ध्या. 'गिण्हित्ता जेणेव वाहिण्यिक कवळीहरण जेणेव चाहन्साहण जेणेव स्वाहास्त्रण तेणेव ज्वागच्छंति' अने पर्धाने क्यां दक्षिण्य हिश्वतीं हदसी गृह

भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च सीहासणे णिसीयाविति' भगवन्तं तीथकरं तीर्थक्करमातरं च सिंहासने निषादयन्ति उपवेशयन्ति 'णिसियावित्ता' निषाद्य उपवेश्य 'सयपागसहस्सपागे हिं तिल्ले हिं अवसंगेति' शतपाकसहस्रपाकैः शतकृत्वोऽपरापरौषिधरकेन कार्षापणानां शतेन वा यानि पकानि तानि शतपाकानि एवं सहस्रपाकान्यपि तैः (तथाविधसुरभितेलसंग्रहार्थ) तेलै-रम्यक्कयन्ति मर्दयन्तीत्यर्थः 'अवभंगेत्ता' अभ्यक्कयित्वा मर्दयित्वा' सुरभिणा गंधवष्टएणं उव्वहेंति' सुरभिणा गन्धवत्तिकन नाम्बद्धन्याणाम् उत्वलकुष्ठादीनामुद्धत्केन चूर्णपिण्डेन गन्धसुत्कगोधूम-चूर्णपिण्डेन वा उद्धर्त्तयन्ति स्रक्षिततेलापनयनं कुर्वन्ति 'उव्विद्धा' उद्धर्तनं कृत्वा 'भगवं तित्थयरं करयलसुडेण तित्थयरमायरं च वाहासु गिण्हंति' भगवन्तं तीर्थक्करं करतपुटेन तीर्थकरमातरं च वाह्नो गृह्णन्ति 'गिण्हित्ता' गृहीत्वा 'जेणेव पुरित्थिमिल्ले कयलीहरण जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छंति' यत्रैव पौरस्त्यं पूर्वभागवित्तं कदली-

सणे तेणेव उवागच्छंति' और पकडकर जहां दक्षिण दिग्वतीं कदली गृह था और उसमें भी जहां चतुः शाला थी और उसमें भी जहां पर सिंहासन था वहां पर वे आई 'उवागच्छिता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च सीहासणे णिसीयावेति' वहां आकर के उन्हों ने भगवान तीर्थकर और तीर्थकर माता को सिंहासन पर वैठा दिया 'णिसीयावित्ता सयपागसहस्सपागेहिं तिल्छेहिं अवमंगेति' वैठा कर फिर उन्हों ने शतपाक और सहस्रपाक तेल से उनके शरीर की मालिस की 'अवमंगेत्ता सुरिभणा गन्धवहुएणं उवहेंति' मालिश करके फिर उन्हों ने सुगंधित उपटन से-गंध-चूर्ण से मिले हुए गेहुके गीले आदे के पिण्ड से उनके उस शरीर पर मले गये तेल को दूर किया 'उव्वहित्ताभयवं तित्थयरं करयलपुडेण तित्थयरमायरंच वाहासु गिण्हंति' तेलको दूर करके उपटन करके फिर उन्हों ने तीर्थकर को दोनों हाथों से उठाया और तीर्थकर माता को हाथों से पकडा 'गिण्हित्ता जेणेव पुरिथमिल्ले कयलीहरए जेणेव चउसालए जेणेव

ढतुं अने तेमां पण क्यां यतुःशाक्षा ढती, अने तेमां पण क्यां सिंढासन ढतुं त्यां ते आवी. 'उवागच्छित्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरंच सीहासणे णिसीयावेंति' त्यां आवीने तेमणे कावान तीर्थं इर अने तीर्थं 'इरना भाताने सिंढासन उपर जेस उयां 'णिसीयावित्ता सयपागसहस्सहपागेहिं तिल्छेहिं अवभंगेति' जेसाडीने पछी तेमणे शतपाक अने सदुस्त पाठ तेसथी तेमना शरीर उपर भाविस करी. 'अवभंगेत्ता सुरमिणा गन्धवद्वपणं उबद्रेंति' भाविस करीने पछी तेमणे सुर्गाधित उपरणाधी—गंध यूर्ण्थी मिश्रित धडेंना लीना आटाना पिंडथी तेमना शरीर उपर भाविस वणते यापडेला तेसने हर कर्धें. 'उव्विहित्ता भयवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च वाहास गिण्हंति' तेलने हर करीने, उपटन करीने पछी तेमणे तीर्थं-करने अन्ने दाथारी उद्यान अने तीर्थं करना भाताश्रीने दाथाथी पक्ठया. 'गिण्हित्ता जेणेव पुरत्थिमिल्डे कथ्छीहरए जेणेव चडसाळए जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छंति' पक्डीने पछी

पृद्दं यत्रैव चतुः शालं यत्रैव सिंहासनं तत्रैव उपागच्छन्ति 'उवागच्छित्रा' उपागत्य 'भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च सीहासणे णिसीयावेति' भगवन्तं तीर्थवरं तीर्थवरमातरं च सिंहासने निषाद्यन्ति उपवेशयन्ति 'णिसियाविचा' निषाद्य उपवेश्य 'तिहिं उद्एहिं मज्जावेति' त्रिभिरुद्कैः मज्जयन्ति स्नपयन्ति, तान्येव त्रीणि दर्शयति 'तं जदा' इत्यादिना 'तं जदा-गंधोदएणं १ प्रष्फोदकेन २ सुद्धोदएणं ३' गन्धोदकेन कुंकुमादिभिश्रितेन, पुष्पोदकेन-जात्यादिमिश्रितेन, शुद्धोदकेन केवलोदकेन 'मज्जावित्ता' मज्जियित्वा स्वपयित्वा 'सव्बल्ङ्कार-विभूसियं करेंति' सर्वालंकारविभूपिती कुर्वन्ति, मातुपुत्री इति भावः, 'करित्ता' कृत्वा 'भगवं तित्थयरं करयलपुडेणं तित्ययसमायरं च बाहाहिं गिग्हंति' भगवन्तं तीर्थं करं करतल-सीहासणे तेणेव उवागच्छंति' पकडकर फिर वे जहां पूर्वदिग्वतां कदली गृह था और उसमें भी जहां पर चतुः शाला थी और उस चतुः शाला में भी जहां पर सिंहासन था वहां पर आई 'उवागिकछत्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च सीह।सणे णिसीयावेंति' वहां आकर के उन्हों ने भगवान् तीर्थंकर को और तीर्थंकर को माता को सिंहासन पर बैठा दिया 'णिसियावित्ता तिहिं उदएहिं मज्जावेति−तं जहा-गंघोदणं पुष्कोदएणं सुद्धोदएणं मज्जावित्ता सब्दा-लंकारविभूसियं करें ति' वैठाकर फिर उन्हों ने तीर्थंकर एवं तीर्थंकर माता को तीन प्रकार के जल से नहवाया-स्नान कराया वह तीन प्रकार का जल ऐसा है एक गंधोदक-कुंकुम आदि से मिश्रित जल दूसरा पूष्योदक-जात्यादि पुष्यों से मिश्रित जल और तीसरा-द्युद्धोदक-केवल पानी इन तीन प्रकार के जल से स्नान कराने के बाद फिर उन्हों ने उन्हें सर्वप्रकार के अलङ्कारों से विभूषित किया 'करित्ता भगवं तित्थयरं करयल पुढेणं तित्थयर मायरंच बाहाहिं गिण्हंति' सब प्रकार के अलङ्कारों से विभूषित करके फिर उन्हों ने भगवान तीर्थं कर

ते नया पूर्व हिन्वती कहबीगृक हतुं अने तेमां पण नयां यतुःशाक्षा हती अने ते यतुःशाक्षामां पण नयां सिंहासन हतुं त्यां आवी. 'उवागिक्छित्ता मगवं तित्थयरं तित्थ-यर मायारं च सीहासणे णिसीयःवेंति' त्यां आवीने तेमछे लगवान् तीर्थं करेने अने तीर्थं करना भाताने सिंहासन एपर भेसाउया. 'णिसीयावित्ता तिहिं उद्दृष्टिं मज्जावेंति-तं जहां गंधोद्दृणं पुष्कोद्दृणं प्रज्जावित्ता स्ववालंकारविभूसियं करे ति' भेसाउी पणी तेमछे तीर्थं करने तेमक तीर्थं करना भाताश्रीने त्रण प्रकारना पाणीश्री रनान कराव्युं ते त्रण प्रकारनं पाणी आ प्रभाणे छे—प्रथम गंधोहक—कुं कुम आहिथी मिश्रित पाणी, दितीय पुष्पोहक—कात्याहि पुष्पोश्री मिश्रित पाणी अने तृतीय शुद्धोहक इक्त पाणी. आ त्रण प्रकारना पाणीश्री रनान करावीने पछी तेमछे तेओ अन्तेने सर्व प्रकारना अलंकारेश्यी विभूषित कर्यां, 'करित्ता भगवं वित्थयरं कर्यलपुडेणं तित्थयरमायरं च वाहाहिं गिण्हंति' सर्व प्रकारना अलंकारेश्यी विभूषित करीने पछी तेमछे लगवान् तीर्थं करने भीना तीर्थं करना

पुटेन तिथंकरमातरं च बाहू भ्यां गृह्णान्त 'शिण्हिता' गृहीत्वा 'जेणेव उत्तरिस्छे कयस्रीहरए जेणेन चउसास्य जेणेन सीहासणे तेणेव उवागच्छं ति' यत्रै वोत्तराहं कदस्रीगृहं यत्रैन चतुः शास्त्रं यत्रैन सिंहासनं तत्रैन उपागच्छन्ति 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'भगनं तित्थयरं तित्थयरमायरं च सीहासणे णिसीयाविति' भगननं तीथकरं शीर्थङ्करमातरं च सिंहासने निषाद-यन्ति उपवेशयन्ति 'णिसीयावित्ता' निषाद्य उपवेश्य 'आभिकाने देने सहाविति' आभि-योगान् आज्ञाकारिणो देवान् शब्दयन्ति आह्रयन्ति 'सहावित्ता' शब्दयित्वा आह्र्य 'एवं-ययासी' एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादिषु उक्तवत्यः 'खिर्पामेन भी देनसुष्प्या! चुछ्डिम-वंताओ वासहरपञ्चयाओ गोसीसचंदणवहाइं साहरह' खुद्रहिमहत्तो दर्षधरपर्वतात् गोशीर्य-चन्दनकाष्ठानि संहरत समानयत 'तएणं ते आभिओगा देवा ताहि स्यगमण्यकारथञ्चाहिं चडिंहिं दिस!कुमारी महत्तरिणहि एवं बुत्ता समाणा हृद्वहा जाव दिण्एणं व्दणं पहिच्छंति'

को और तीर्थ कर की माता को क्रमक्षः करतलपुट से उठाया एवं हाथों से पकड़ा 'गिणिक्ता जेणेव उत्तरिरुछे कयलीहरण चउसालण जेणेव सीहासणे तेणेव उवाग्यन्छंति' पकड़ कर के वे उत्तर दिग्वर्ती कयली गृहमें जहां चतुः शाला थी और उसमें भी जहां सिंहासन था वहां पर गई। 'उवागिक्छित्ता भगवं तिस्थयरं तिस्थयरमायरं च सीहासणे णिसीघावेति' वहां जाकर के उन्हों ने भगवान तीर्थं कर और तीर्थं कर माता को सिंहासन पर बैठा दिया (णिसीघावित्ता आभिओंगे देवे सद्दावित) सिंहासन पर बैठाकर फिर उन्हों ने अपने २ आभियोगिक देवों को बुलाया 'सद्दावित्ता एवं वयासी' बुलाकर उनसे ऐसा कहा—'खिष्पामेव भी देवाणुष्पिया! चुल्लहिमवंताओं वासहरपव्वयाओं गोसीसचंदणकट्टाई साहरह' हे देवानुष्रियों! तुमलोग शीध ही क्षुद्र हिमवत्पर्वत से गोशीर्ष चन्दन की लक्कियां छेकर आओं 'तएणं ते आभिओगा देवा ताहिं स्यगमज्झवत्थव्याहिं चउहिं दिसाकुमारीमहत्तरियाहिं एवं युत्ता समाणा हट तुट्टा जाच विणएणं

भाताने क्रमशः क्षरतिष्ठशं हिपाउया अने द्वाधाधी प्रकृत्या 'गिण्हित्ता जेणेव उत्तरिस्ले क्यलीहरए जेणेव चडलालए जेणेव सीहासणे तेणेव उवागनलंति' प्रश्रीने उत्तर स्थि। तरक्ष्मा क्ष्मां अद्धां अयां आता द्वा शाणा द्वा अने तेमां पण् क्यां सिंद्धासन द्वां त्यां तेओ। अर्ध 'उवागन्छित्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च सीहासणे णिसीयावे ति' त्यां कर्धने तेओ। अर्ध स्वागन्छित्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च सीहासणे णिसीयावे ति' त्यां कर्धने तेओ। अर्ध स्वागन्यान्त तीर्थ 'क्ष्मियावित्ता 'आभिओंगे देवे सहाविति' सिंद्धासन ७५२ असाडीने पण्डी तेमणे पेत्तपाताना आसिथाजिक्ष देवाने भावाव्याः 'सहावित्ता एवं वयासी' भावावीने तेमने आ प्रमाणे कर्धु 'खिलामेव भो देवाणुल्या ! चुल्लहिमवंताओ वासहरपन्ययाओं गोसीसचंडणकट्टाइं साहरह' दे देवानुं-प्रियेः! तमे देविते शिक्ष श्रुद्धिभवत्पर्वतथी जेश्शीर्थ यन्हनना दाक्ष्याओं। देव साहरहं रहे देवानुं-प्रियेः! तमे देविते शिक्ष श्रुद्धिभवत्पर्वतथी जेश्शीर्थ यन्हनना दाक्ष्याओं। देव ताहिं स्यगमञ्झवत्थव्याहि चडिं दिसाकुमारी महत्तरियाहिं एवं

ततः तासामाज्ञप्त्यनन्तरं खल ते आभियोगाः-अज्ञाकारिणो देवाः तामिः रचकमध्यवारतव्याभिः चतस्रभिः दिवन्न मारीमहत्तरिकाभिरेवम् एतः प्रवादेण एतः आङ्माः स्वादः हृहृष्टाः
यावद् विनयेन वचनं प्रतीच्छन्ति स्वीकुर्वन्ति अद्यावत् पदात् हृष्ट्रष्टृष्ट्याः स्वादः परमसौमनस्यिताः हर्षवश्विकर्ष् हृद्या इति प्राह्मम् 'पिडिच्छित्ता' प्रतीष्यः
स्वीकृत्य, 'खिप्पामेव जुल्लिक्ष्यं वासहरपावयाओ सरसाई गोसीसचंदणवहाइं
साहरंति' क्षिप्रमेव शीन्नातिशीन्नमेव शुद्धहिमवतो वर्षथरपर्वतात् सरसारि-रससिहतानि
गोशीर्षचन्दनवाप्टानि संहरन्ति समानयन्ति 'तप्णं ताओ मिडिझमस्यगद्दयव्वाओ चत्तारि
दिसान्तुमारीमहत्त्रियाओ सरगं वर्रेति' एतः एल तदन्तरं विल्लाः मध्यस्ववप्रवितवास्तव्याः चतस्रो दिववुमारीमहत्त्रियाः इत्यं क्रस्रतिकृति तीक्षण्यस्य मन्युरपादकं काष्ट्र
विशेषं वुर्वन्ति, 'किस्ता' कृत्वा 'अरणि घडेति' अरणि घटयान्त—तेनैव शरवेण सह अरणि

वयणं पिडिन्छंति' इस प्रकार उन रचक मध्य वासिनी चार महत्तरिक दिवकुः मारियों द्वारा आज्ञस हुए वे आभियोगिक देव हृष्ट तुष्ट यावत हुए और वही विनय से उन्हों ने उनके वचनों को स्वीकार कर लिया यहां यावत्पद से 'हृष्ट तुष्ट चित्तानिद्ताः, सुमनसः परम सौमनिस्यताः हर्षवश्विसर्पद् हृद्याः' इस पाठका ग्रहण हुआ है 'पिडिन्छित्ता विष्णामेव चुल्लिहमवंताओ वासहरपव्वयाओ सरसाइं गोसीसचंदणकृष्टाइं साहरंति' आज्ञा के वचनों को स्वीकार करके वे आभियोगिक देव क्षुष्ट्रहिमवस्पर्वत पर गये और वहां से गौशीर्ष सरस चन्दन की लक्षियां से आये 'तएणं ताओ मिन्हमक्यग वत्थ-व्वभी चत्तारि दिसाकुमारी महत्तरियाओ सरगें करेति' इसके बाद उन चार मध्यरूचक वासिनी महत्तरियाओ सरगें करेति' इसके बाद उन चार मध्यरूचक वासिनी महत्तरिक दिवकुमारियों ने अग्नि को उत्ति' इसे तैयार करके उसके साथ अरणिकाष्ट को संयोजित किया 'अरणि घडेति' इसे तैयार करके उसके साथ अरणिकाष्ट को संयोजित किया 'अरणि घडेति' इसे तैयार

वृत्ता समाणा हट्ट तुट्टा जाव विणएणं वयणं पिंडच्छंति' आ प्रभाणे ते २४६ सध्यवादिती यार भक्षत्तिर िक्षुम्तिश्राच्या वहे आहाप्त थयेला ते आलिये। तिष्ठ हेवे। हुं ८ – कुंटे श्रेष्ठी यावत् ए ए विनय साथे तेमे हो तेमनी आहा ने। स्वीक्षार करी लीधे। आही यावत् पहथी 'हप्ट तुष्टचित्तानित्ताः सुमनसः परमसौमनस्यताः हर्षवदाविसपंद हृद्याः' आ पाठने। संश्रह थये। छे. 'पिंडच्छित्ता खिप्पामेव चुल्छिह्मवंताओ वासहरपद्ययाओ सरसाई गोसीसचंदणक्ट्टाइ साहरंति' आहानः वयने। ने। स्वीक्षार करीने पछी ते आलिथे। विक्रे हेवे। श्रुद्र हिमवत् पर्वनी उपर अया अने त्यांथी गेश्शीर्थ सरस यंहननः लाक्ष्यां करें ति' त्यारआह ते यार मध्य रुयक वासिनी महत्तरिक्ष चत्तारि दिसाकुमारी महत्तरियाओ सरगं करें ति' त्यारआह ते यार मध्य रुयक वासिनी महत्तरिक्ष वर्षोते हिम्हुमारी आग्रे अधिनने हत्यन्त करनार शरक नामक काष्ठ विशेष तैयार क्यें. 'क्रित्ता अरणि घडेति' तेने तथार करीने तेनी साथे

लोकप्रसिद्धं काष्ठिविशेषं घटयन्ति संयोजयन्ति 'अर्राणं घडित्ता' अर्राणं घटयित्वा संयोजय 'सर्एणं अर्राणं महिति' शरकेण अर्राणं मध्नित्त 'महित्ता' मधित्वा 'अग्नि पात्तयन्ति 'पाडित्ता' पात्तयित्वा 'अग्नि संधुक्वंति' अग्नि संधुक्षन्ति सदीपयन्ति 'संधुन्वित्ता' पात्तयन्ति 'पाडित्ता' पात्तयन्ति 'पाडित्ता' पात्तयन्ति 'पाडित्ता' पात्त्रयन्ति 'अग्नि संधुक्वंति' अग्नि संधुक्षन्ति सदीपयन्ति 'संधुन्वित्ता' संधुक्ष्य 'गोक्षीसचंदणकहे पित्रवाद्यानि प्रोक्तकाष्ठानि प्रक्षिपन्ति 'पित्रखित्ता' पादश्यानि प्रोक्तकाष्ठानि प्रक्षिपन्ति 'पित्रखित्ता' प्रक्षिप्य 'अग्नि उज्ज्ञालंति' अग्नि मुन्त्र नित्र अग्नि मुन्ति प्रमिष्ठ क्रियां प्रक्षिप्य 'अग्नि उज्ज्ञालंति' अग्नि प्रमिष्ठ क्रियां काष्ठानि अग्नी प्रक्षिपनित्तं पूर्वे हि गोशोर्षवन्दनकाष्ठप्रक्षेपोऽग्न पुद्दीपनाय अयं च प्रक्षेपः रक्षाकरणायेति विशेषः, 'पित्रखित्तिन्तः' प्रक्षिप्य 'अग्निहोमं करेति' अग्निहोमं कुर्वन्ति अग्नि विशेषतः प्रज्ञालयतीत्यर्थः 'किरित्ता' कृत्वा 'प्रतिकम्मं करेति' भूतिकम् कुर्वन्ति भूतेः भरमनः कर्मं किया तां कर्वन्ति 'करित्ता' कृत्वा 'रक्खापोहिल्यं वंधिति' रक्षापोहिल्काम्—जिनजनन्योः

अरिंग मिहिति' संयोजित करके फिर दोनों को उन्होंने रगडा 'महिसा अगिंग पार्डेति' रगड करके अग्नि को उनमें से निकाला 'पाडिसा अगिंग संधुक्खति' निकाल कर उस अग्नि को उन्होंने धोंका 'संधुक्खिता गोसीसचंदणक दे पिक्खिवित' धोंक कर अग्नि में उन गोशीर्ष चन्द्रन की लकडियों को डाला 'पिक्खिविता' धोंक कर अग्नि में उन गोशीर्ष चन्द्रन की लकडियों को डाला 'पिक्खिविता अगिंग उज्जालयंति' डाल करके फिर उन्होंने अग्नि को प्रज्जित करके फिर उन्होंने समित्काष्ठों को डाला पिहिले तो गोशीर्ष चन्द्रन की लकडियों से उन्होंने समित्काष्ठों को डाला पिहिले तो गोशीर्ष चन्द्रन की लकडियों से उन्होंने अग्नि को चेताया जलाया बादमें जब अग्नि चेत च्की तब फिर उसमें उन्होंने इन्धन डाला 'पिक्खिवित्ता अग्निहोमं करेंति' इन्धन डालकर फिर उन्होंने अग्नि होम किया 'करित्ता भूतिकम्मं करेंति' अग्नि होम करकें फिर उन्होंने भूतिकम् किया 'करित्ता रक्खापोहिलियं बंबित' भूतिकम् करके उन्हों ने उन्होंने भूतिकम् किया 'करित्ता रक्खापोहिलियं बंबित' भूतिकम् करके उन्हों ने

अरिष्डिंगिंदि संयेशित इर्थुं. 'अरिण घडिता सरएणं अरिण मिनिते' संयेशित इरीने पछी अनीने तेमिष्डे घर्या 'मिहता अमि पोडेति' घरीने अिनने तेमांथी अदिये। 'पिता अमि संयुक्खंति' अदिने ते अनिने तेमिष्डे सणाविते, 'संयुक्खिता गोधीसचंदणकट्टे पिक्खिति' सणाविते ते गेशिष यन्द्रन्ता क्षाइडाकोने तेमां नाज्या. 'पिक्खितिता अणि उच्चास्यंति' नाजीने तेमिष्डे अनिने प्रकारित इर्था. 'उज्जास्तिता समिद्यात द्वाइं पिक्खिति ति' अनिने प्रकारित इरीने पछी तेमां तेमिष्डे समित् इन्हें। नाज्यां, पहेंद्रां तेमिष्डे गेशिष यन्द्रन्ता क्षाइडाकोश्यी अनिन प्रकारित इर्थी स्थार काद क्यारे अनिन प्रकारित यह गयी त्यारे तेमिष्डे तेमां हिंदन नाज्या. 'पिक्खितिता अभिहोमं करेंति' हिंदन नाजीने पछी तेमिष्डे अनिन हिंद हिंदी पहीं तेमिष्डे तिन सूतिकम्मं करेंति' अनिन हिंद इरीने पछी तेमिष्डे भूति इर्थे विने पृतिकम्मं करेंति' अनिन हिंद इरीने पछी तेमिष्डे श्रीन पहिंदिश अनावी

शाकिन्यादि दुष्टदेवताभ्यो हम्दोषादिभ्यश्च रक्षाकरीं पोइलिकां बह्नित 'बंधेता' बद्ध्वा 'णाणामणिरयणभत्तिचित्ते दुविहे पाहाणबद्दमे गिण्हंति' नाना मणिरत्नभक्तिचित्रौ-नाना-मणिरत्नानां विविधचन्द्रकान्तहीरकादीनां भक्तीरचना तया विचित्रौ द्विविधौ पाषाणवृत्तकौ पाषाणगोलकौ गृह्वन्ति 'गहाय' गृहीत्वा 'भगवशो तित्थयास्स कण्णमूलंमि टिट्टियाविति' भगवतस्तीर्थङ्करस्य कर्णमूले तौ पाषाणगोलकौ संयोज्य 'टिट्टियाविति' परस्परं ताद्धनेन टिट्टीतिशब्दोत्पादनपूर्वकं वादयन्तीत्यर्थः 'टिट्टियाविति' अनुकरणशब्दोऽयम् अनेन हि बाललीलावशादन्यत्र व्यासक्तं भगवन्तं वश्च्यमाणाशीर्वतनश्रवणे पदं कुर्वन्तीतिभावः, 'भवउ भगवं पब्बयाउए र' भवतु भगवान् पर्वतायुः भवतु भगवान् पर्वतायुः इत्याशीर्वचनं ददाति इति। 'तए णं ताओ रुयगमज्झवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारी महत्तरियाओ भगवं तित्थयरं राखकी पोद्दलियां चनाई जिन और जिन जननी की ज्ञाकिनी आदि दुष्ट देवियों

राखकी पोष्टलियां बनाई जिन और जिन जननी की शाकिनी आदि दुष्ट देवियों से एवं दृष्टिदोष से रक्षा करनेवालो ऐसी पोष्टलिका तैयार की और उसे उनके गलेमें बांध दिया 'बंधेत्ता णाणामणिरयणभत्तिचित्ते दुविहे पाहाणबहुगे- गिण्हंति' बांधने के बाद फिर उन्हों ने अनेक मणि और रतनों से जिनमें रचना हो रही है और इसी से जो विचित्र प्रकार के हैं ऐसे दो गोलपाषाण को-बट- ईयों को शालिग्राम की जैसी छोटी-छोटी दो बटइयों को उठाया-'गहाय भग-बओ तित्थयरस्स कण्णमूलंमि टिहियावेंति' और उठाकर उन्हें भगवान तीर्थ-कर के कर्णमूल पर ले जाकर बजाया-कि जिस से उनके बचन से टी टी ऐसा शब्द निकला 'टिहियावेंति' यह अनुकरण शब्द है। इससे यह प्रकट किया गया है कि बाललीला के बदा से यदि भगवान का चित्त अन्यन्न आसक्त हो तो वह एक जगह आजावे ताकि बक्ष्यमाण इस आश्वीवांद के बचनों को वे सावयान से सुन सके 'भवउ भगवं पव्चयाउए' आप भगवान पर्वत के बराबर आगुवाले हों सुन सके 'भवउ भगवं पव्चयाउए' आप भगवान पर्वत के बराबर आगुवाले हों

जिन अने जिन जननी नी शाहिनी वजेरे हुण्ट हेवीकाथी तेमल हृष्टि होषथी रक्षा हरनारी कीवी तेमछे पाहिला तैयार हरी अने पछी ते पाहिलाहा ते तेमना जणामां आंधी हीधी. 'बंधेला णाणामणिरयणमितिचित्ते हुनिहें पाहाणवहां गिणहंति' आंध्या आह तेमछे अनेह मिछुकी। अने रत्नानी लेमां रयना थर्ध रही छे अने कीनाथी क ले विधित्र प्रहारना छे, कीवा छे जोण पाषाछे।—शिल्याम लेवा आहारना छे पाषाछे।—डिडाल्या. 'महाय मग्वो तित्थयरस्म कण्णमूलंमि हिट्टियावें ति' अने डिडावीने तेमछे लजवान तीर्थ हरना हर्धुम् इपर लई कर्ध ने वजादया. हे लेथी तेमना वलनथी क 'टी-टी' कोवा शण्ह नीहल्ये। 'हिट्टियावें ति' आ अनुहरह्मात्मह शण्द छे. कीनाथी आ वात प्रहट हरवामां आवी छे हे आणाबीखाना हारछुथी को लजवान्तुं जिल्ला अन्य स्थणे आसहत हिएय ते। ते कोह स्थाने आवी लया लेथी वह्यमास्त्र आ आशीर्वाहना वयनोने तेकोछी सावधान थर्ध ने सांसली शहे. 'मवड मगवं पव्ययाहए' आप लजवान् पूर्वत असण्द आधुक्यवाणा थाको. 'तराएणं

कर्यलपुढेणं तित्थयरमायरं च वाहाहि गिण्हंति' ततः उक्तसकलकार्यकरणानन्तरं खल ताः क्वकमध्यवास्तव्याः चतस्रो दिवकुमारी महत्तरिकाः भगवन्तं तीर्थकरं करतलपुटेन तीर्थकरमातरं च बाहुभ्यां यृह्णन्ति 'गिण्हिता' यृहीत्वा 'जेणेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणे तेणेव उवागच्छंति' यत्रैय भगवतस्तीर्थकरस्य जम्मभवनं तत्रैव उपागच्छन्ति 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'तित्थयरमायरं सयणिज्जंसि णिसीयाविति' तीर्थकरमातरं शय्यायां निषादयन्ति उपवेशयन्ति 'णिसीयावित्ता' निषाद्य उपवेश्य 'भगवं तित्थयरं माऊण् पासे ठवंति' भगवन्तं तीर्थक्करं मातः पार्थे स्थापयन्ति 'ठवित्ता' स्थापयित्वा नातिदृशस्त्रमाः सत्यः 'आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिहंति' आगायन्त्यः—आ—ईषत् गायन्त्यः प्रारम्भकाछे अल्यस्वरेणेव गायमानत्वात् ततः परिगायन्त्यः—दीर्थस्वरेण गायन्त्यस्ताः चतस्रो दिक्कुमारी-महत्तरिकास्तिष्ठन्तीति ।।द्ध० ३।।

'तएणं ताओ रुयगमज्झवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारी महत्तरियाओ भगवं तित्थयरं करयलपुढेणं तित्थयरमायरं च बाहाहिं गिण्हंति' इस प्रकार से आशीर्वाद देने के बाद उन रुचर मध्यवासिनी चार महत्तरिक दिक्कुमारियों ने भगवान तीर्थंकर को दोनों हाथों से उठालिया और तीर्थंकर माता को दोनों सुजाओं में पकड लिया। 'गिण्हित्ता जेणेय भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणे तेणेव उवागच्छंति' पकड कर फिर वे जहां भगवान तीर्थंकर का जन्म भवन था वहां आगई। 'उवागच्छित्ता तित्थयरमायरं सर्याणज्जंसि णिसीयावेति' वहां आकर के उन्हों ने तीर्थंकर की माता को शय्या पर वैठा दिया 'णिसीयावित्ता भगवं तित्थयरं माउए पासे ठविति' वैठा कर फिर उन्हों ने भगवान तीर्थंकर को उनके पास रख दिया 'ठवित्ता आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिहंत्ति' रखकर फिर वे अपने समुचित स्थान पर खडी हो गई और पहिले धीमे स्वर से और बादमें जोर जोर से जन्मोत्सव के माङ्गलिक गीत गाने लगी ॥३॥

ताओं रुयगमब्ह्यवत्थव्याओं चत्तारि दिसाकुमारीमहत्तरियाओं भगवं तित्थयरं करयलपुढेणं तित्थयरमायरं च बाहाहिं गिण्हंति' व्या प्रभाष्ट्रे व्याश्वाधि व्याश्या आह ते दुयह भध्य- पासिनी आर महत्तरिष्ठ रिष्ठुभारीओओ लगवान् तीर्थ'हरने अन्ते हाथेमां हराज्या. अने तीर्थ'हरना भाताना अन्ते आहुओ। पहडेया. 'गिण्हित्ता जेणेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणे तेणेव उवागच्छंति' पहडीने पछी लयां लगवान् तीर्थ'हरनुं अन्म लवन हतुं त्यां तेओ। आवी. 'उवागिरिछत्ता तित्थयरमायरं सयणिङ्जंसि णिसीयावेंति' त्यां—आवीने तेमेष्टे तीर्थे हरना भादाने शय्या हपर शिसाडया. 'णिसीयावित्ता भगवं तित्थयरं माउए पासे ठिवेंति' शिसाडीने पछी तेमेष्टे लगवान् तीर्थ'हरने तेमनी भातानी पासे भूडी हीधा. 'ठिवित्ता आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति' भूडीने पछी तेओ। पेताना समुखित स्थाने शिसी धर्धे असे पहेंदां धीमा—धीमा स्वरथी अने त्यार आह लोर-लेरथी अन्मेरसवना भागिकि गीते। गावा कागी, ॥ ३ ॥

अथेन्द्रकृत्यावसरमाह-

मुख्म- तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के णामं देविंदे देवराया वज्ज-पाणी पुरंदरे सयक्क सहस्सक्खे मध्वं पागसासणे दाहिणद्वलोकाहि-वर्इ बत्तीसविमाणावाससयसहस्साहिवई एरावणवाहणे सुरिंदे अरयं बरवरथधरे आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचंचलकुंडलविलिहिज्ज-माणगंडे भासुरबोंदी पलंबवणमाले महिड्डिए महज्जुईए महाबले महा जसे महाणुभागे महासोक्खे सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्कंसि सीहासणंसि से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणा-वाससयसाहस्सीणं चउरासीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए ताय-त्तीसगाणं चउण्हं छोगपालाणं अटुण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सतग्हं अणिआणं सत्तग्हं अणियाहिवईणं चउग्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहुणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणि-याणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं सामित्तं भट्टितं महत्तरगतं आणाई-सरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहयणदृगीयवाइयतंतीतल-तालतुडियघणमुइंगवडुवडहवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं मुंजमाणे विहरइ। तए णं तस्स सकस्स देविंदस्स देवरण्णो आसणं चलई। तए णं से सक्के जाव आसणं चिळियं पासइ पासिसा ओहिं पउंजइ पउंजित्ता भगवं तित्थयरं ओहिणा आभोएइ आभोइत्ता हटुतुट्टचित्ते आनंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए धारा-हयकयंबकुसुमचंचुमालइयऊसवियरोमकूवे विधसियवरकमलनयणवयणे पंचिलियवरकडगतु डियके ऊरम उडे कुंडल हारविरायंतवच्छे पालंबपलंब-माणघोलंतभूसणधरे ससंभमं तुरियं चवलं सुरिंदे सीहासणाओ अब्सुट्रेइ अब्मुद्धिता पायपीठाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता वेरुलियवरिद्वरिट्ठ अंजण-निडणोवियमिसिमिसित मिणरयणमंडियाओ पाउयाओ ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ करिता अंजलिमउलियग्गहत्थे तिरथयराभिमुहे सत्तद्भृषया**इं** अणुगच्छइ अणुगच्छिता वामं जाणुं अंचे**इ**

अचित्ता दाहिणं जाणुं धरणीयलंसि साहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं यलंसि निवेसेइ निवेसित्ता ईसिं पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमिता तुडियथंभियाओ भुयाओ साहरइ, साहरित्ता करवलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी-णमोत्थुणं अरहंताणं भग-वंताणं, आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिस-सीहाणं-पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं लोगणा-हाणं लोगहिया कं लोगपईवाणं लोगपजोयगराणं अभयद्याणं चक्खु-द्याणं मग्गद्याणं सरणद्याणं जीवद्याणं बोहिद्याणं धम्मद्याणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्रवहीणं, दीवोताणं सरणं गई पइट्रा अप्पडिहय बरनाणदंसणधराणं वियट्ट छउ-माणं जिणाणं जावयाणं तिण्णाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सब्बन्नूणं सब्बद्रिसीणं सिवमयलम्हयमणंतह्यस्यमञ्जा-बाहमपुणरंबित्तिसिद्धिगइणामधेयं ठाणं संपत्ताणं णमो जिणाणं जिय भयाणं णमोत्थुणं भगवओ तित्थयरस्स आइगरस्स जाव संपविउकाम-स्स वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासउ मे भगवं! तत्थगए इह्रगयं ति कट्टु वंद्र, णमंसइ वंद्ता णमंसित्ता सीहासणवरंसि पुर-त्थाभिमुहे सण्णिसण्णे, तएणं तस्स सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अयमेयारूवे जाव संरूपे समुप्पजित्था उप्पण्णे खळु भो जंबुद्दीवे दीवे भगवं तित्थयरे तंजीयमेयं तीय पच्चुवण्णमणागयाणं सब्बाः देविंदाणं देवराईणं तित्थयराणं जम्मणमहिमं करेत्तए तं गच्छामि णं अहंपि भगवओ तित्थयरस्स जम्प्रणमहिमं करेमि ति कट्टु एवं संपेहिता हरिणेगमेसि पायत्ताणीयाहिवइं देवं सदावेति सदावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुष्पिया! सभाए सुहम्माए मेघोघरसियं गंभीर-महुरयरसदं जोयणपरिमंडलं सुघोसं सूसरं घंटं तिक्खुतो उल्लालेमाणे २ महया महया सदेणं उग्घोसेमाणे २ एवं वयासी-आणवेइयं भो सक्के

देतिंदे देवराया गच्छइ णं भो सक्के देविंदे देवराया जंबुद्दीवे दीवे भग-वओ तित्थयरस्त जम्मणमहिमं करित्तए, तं तुब्भेवि णं देवाणुष्पिया! सविवद्धीए सव्वजुईए सव्वब्छेणं सव्वसमुद्येणं सव्वायरेणं सव्वविभूईए सब्विवभूसाए सब्बसंभमेणं सब्सणाडएहिं सब्बोबरोहेहिं सब्बपुष्फगंध-मल्लालंकारविभूसाए सव्बद्धिवतुडियसइसिणणणाएणं महया इस्रीए जाव रवेणं णिययपरियालसंपरिवुडा सयाइं सयाइं जाणविमाणवाहणाइं दुरूढा समाणा अकालपरिहीणं चेत्र सक्करस जाव अंतियं पाउच्भवह । तएणं से हिरणेगमेसी देवे पायत्ताणीयाहिवई सक्केणं ३ जाव एवं वुते समाणे हटू तुटू जा र एवं देशोति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता सक्कस्स ३ अंतियाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए मेघोघरसियगंभीरमहुरयरसहा जोयणप्ररिमंडला सुघोसा घंटा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता तं मेघोघरसियगंभीरम-द्वरयरसदं जोयणपरिमंडलं सुघोसं घंटं तिक्खुत्तो उल्लालेइ तएणं तीसे मेघोघरसियगंभीरमहुरयरसदाए जोयणपरिमंडलाए सुघोसाए घंटाए तिक्खु तो उल्लालियाए समाणीए सोहम्मे कप्पे अण्गेहिं एमूणेहिं बत्तीस-विमाणावाससयसहस्सेहिं अण्णाइं एगूणाइं वत्तीसं घंटासयसहस्साइं जमगसमगं कणकणारावं काउं पयत्ताइं हुत्था इति, तएणं सोहम्मे कप्पे पासायविमाणनिक्खुडावडियसइसमुद्रिय घंटापडेंसुया सय सह-स्ससंकुले जाए यावि होतथा इति, तएणं तेसिं सोहम्मकप्पवासीणं बहुणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय एगंत रइपसत्तणिच्चपमत्त विसय सुहमुच्छियाणं सूसरघंटारसियविउलबोलपूरियचवलपडिबोहणे कए समाणे घोसणकोऊहलदिण्णकण्णएगग्गचित्तं उवउत्तमाणसाणं पायताणीयाहिवई देवे तंसि घंटारवंसि निसंतपांडसंतिन समाणंसि तत्थ तत्थ तहिं तहिं देसे महया महया सहें जं उग्घोसेमाणे उग्घोसे-माणे एवं वयासीति हंत! सुणं तु भवंतो बहवे सोहम्मकप्पवासी वेमा-

णिय देवा देवीओय सोहम्मकप्पवइणो इणमोवयणं हिय सुहत्थं आणा-वइणं भो सक्के तंचेव जाव अंतियं पाउब्भवहत्ति, तए णं ते देवा देवीओ य एयमट्टं सोच्चा हट्टतुटू जाव हियया अप्पेगइया वंदणवत्तियं एवं पुअण वत्तियं सक्कारवत्तियं संमाणवत्तियं दंसणवृत्तियं जिणभत्तिरागेषां अष्पे-गइया तं जीयमेयं एवमादि त्तिकट्टु जाव पाउब्भवंति ति' तए तं से सक्के देविंदे देवराया ते विमाणीए देवे देवीओ य अकालपिहीणं चेत्र अंतियं पाउब्भवमाणे पासइ पासित्ता, हर्द्वे पालयं णामं आभिओगियं देवं सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अणेग्खंभसयसण्णिविट्रं ठीलिट्टियसालभंजियाकलियं ईहामियउसभ तुरगणरमगरविह्नगवालगिकण्णररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभित-चित्तं खंभुगायवइरवेइयापरिगयाभिरामं विज्जाहरजमलजुयलजंत-जुत्तं पिव अच्चीसहस्समालिणीयं रूवगसहस्सकलियं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुलोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीयरूवं घंटावलिय महुरमणहरसरं सुहं कंत दरिमणिज्ञं णिउणोविय मिसिमिसित मणिरयणघंटियाजालपरिक्खितं जोयणसहस्सविच्छिण्यां पंचजोयणसय मुव्तिद्धं सिग्घं तुरियं जइणं णिव्याहि दिव्यं जाणविमाणं विउद्याहि विउब्बाहिता एथमाणत्तियं पञ्चिपणाहि ॥ सू० ४॥

छाया-तिस्मन् काले तिस्मन् समये शको नाम देवेन्द्रो देवराजो वज्रपाणिः पुरन्दरः शतकतुः सहस्राक्षः मयवा पाकशासनः दक्षिणार्द्धलोकाधिपतिः द्वातिंशत् विमानावासशत-सहस्राधिपतिः एरावतवाहनः सुरेन्द्रः अरुनीं बर्वस्वधरः आलगितमालसुकुटः नवहेमचार विक्तः चञ्चलकुण्डलविलिह्यमानगण्डः 'वा विलिख्यमानगण्डः' भासुरवोन्दिः प्रलम्बननमालः महर्तिकः महावलः महावश्वस्कः महानुभागः महासौख्यः सौधमेनल्पसौधमीवतं सकविमाने सभायां सुधमीयां शके सिंहासने स खळ तत्र द्वातिंशतो विमानावासशतसहस्राणां चतुरक्षीतेः सामानिकसहस्राणां त्रयः त्रिश्चतः त्रायिक्षकानःम् चतुर्णा लोकपालानाम् अष्टानाम् अप्रमहिषीणां सपिरवाराणां तिष्टणां परिषदाम् सप्तानामनीकानि समानामनीकाधि-पत्रीनां चतुश्वतुरशीतेरात्मरक्षकदेवसहस्राणाम् अन्येषां च बहुनां सौधमिकल्पत्रासिनां वैमानिकानां देवानां च देवीनां च आधिपत्यं पौरपत्यं स्वामित्वं भर्तत्वं महत्तरकत्वम् अङ्गेश्वरसेना-

पत्यं कार्यन् पालयन् महताहतगीतवादिततन्त्रीतलतालत्रुटितघनमृदङ्गपटुपटहवादित्ररवेण दीव्यान् भोगभोगान् भुझानो विहरति । ततः खळ तस्य शकस्य देवेन्द्रस्य देवराज्ञः आसनं चळति, ततः खलु स शको यावत् आसनं चलितं पश्यति, दृष्ट्वा अविवि प्रयुक्ति प्रयुक वन्तं तीर्थङ्करम् अर्थाना आभोगयति आयोग्य हृष्टतुष्टचित्त आनन्दितः प्रीतिमनाः परम-सौमनस्यितः हर्षवश्वविसर्पद् हृद्यः धाराहतकदम्वकुसुम रोमाञ्चितोच्छ्तरोमकूपः विकसित-वरकमलनयन्व (नः प्रचलितवरकटकञ्जटिककेयूरग्रुकुटकुण्डलः हारविराजमानवक्षस्कः प्रालम्ब-प्रलम्बमानघोकद् भूषणघरः ससंभ्रम त्वरितं चपलं सुरेन्द्रः सिंशसनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्यु-रशाय पादपीठात् प्रत्यवरोइति प्रत्यवरुह्य वैड्येवरिष्ठरिष्टाञ्जनिपुणोचितमिसिमिसिन्त मणिरत्नमण्डिते पादुके अवमुश्चति अवमुच्य एकशाटिकम् उत्तरासङ्गं करोति कृत्वा अञ्जिष्ठ मुकुलिताग्रहस्तः तीर्थङ्कराभिमुखः सप्ताष्ट्रयदानि अनुगच्छति अनुगत्य वामं जानुम् आकुश्चयति आकुच्य दक्षिणं जानुं धरणीतले निहत्य त्रिःकृत्वः मूर्द्धानं धरणीतले निवेशयति, निवेश्य ईपद् प्रत्युम्नमति, प्रत्युन्नमित्वा कटकत्रुटि हस्तम्भितौ सुजौ संहरति संहृत्य करतल परिगृहीतं दश्चनखं शिरसावर्तं मस्तके अञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-नमोऽस्तु खलु अरिइन्तृणां भगवताम् अःदिकराणां तीर्थकराणां स्वयं संबुद्धानां पुरुषोत्तमानां पुरुषसिंहानां पुरुषवरपुण्डरीकाणां पुरुषवरगन्धहस्तिनां लोकोत्तमानां लोकनाथानां लोकहितानाम् लोकप्रदीपानां लोकप्रद्योत-कराणाम् अभयदायकानाम् चक्षुर्दायकानां मार्गदकायानां शरणदायकानां जीवदायकानां बोधिदायकानां धर्मदायकानां धर्मदेशकानां धर्मनायकानां धर्मसारथिनां धर्मवरचातुरन्तचक्र-वर्तिनां दी । त्राणं भरगं गतिश्र प्रिशृष्टा अपतिहतज्ञानदर्शनधराणां विवृत्तख्यानां जिना-नाम् जाःकाना तीर्णीनां तारकानां बुद्धानां बोधकानां मुक्तानां मोचकानां सर्वज्ञानां सर्वदर्शिनां शिवभचलम्बजमननतमक्षयमवयावाधमपुनराष्ट्रति सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं संपाप्तानां नमो जिनानां जितमयानाम् नमोऽस्तु खळु भगवतस्तीर्थकरस्य आदिकरस्य यावत् संपाप्तुकामस्य वन्दे खञ्ज भगवन्तं तत्र गतम् इइगतः पश्यतु मां भगवान् तत्रगतः। इहगतम् इतिकृत्वा वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा सिंहासनवरे पौरस्त्याभिशुखः संनिषणाः ततः, खळ तस्य शकस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य अयमेतावद्रूपो यावत् संग्रह्यः समु-दपद्यत उत्पन्नः खख-भो जम्ब्दीपे द्वीपे भगशांस्तीर्थकरः तस्माज्जी मितन्-अतीतपत्यु-त्पन्नानागतानां शकाणां देवेन्द्राणाम् देवराजानां तीर्थकराणां जन्ममहिमानं कर्त्तुं तद्गच्छ मि खळ अहमपि भगवतस्तीर्थकस्य जन्ममहिमानं करोमीतिकृत्वा एवं संवेक्षते संवेक्ष्य हरिणैगमे-षीतिनामानं पदात्यनीकाधिपति देवं शब्दयति शब्दायित्वा एवमवादीत क्षित्रमेव भो देवानां-त्रिय ! सभायां सुधर्मायां मेघीघरसितां गांभीरमधुरतरशब्दाम् योत्रनपरिमण्डलां सुघोषां सस्तरां घण्टां त्रिः कृत्वः उल्लालयन् उल्लालयन् महता महता शब्देन उद्घोषयन् उद्घोषयन् एवं वदत आज्ञापयति भोः शको देवेन्द्रो देवराजः गच्छति खलु भो शको देवेन्द्रो देवराजः जम्बुद्धीपे द्वीपे भगवतस्तीर्थकरस्य जन्ममहिमानं कर्त्तुं तत् यूयमपि खळु देवानुप्रियाः

सर्वद्धा सर्वविश्वन सर्वसमुदायेन सर्वदिश सर्वविभूत्या सर्वविभूष्या सर्वसिश्रमेण सर्वनाटकेः सर्वोपरोषः सर्वपुष्यान्यमाल्यालङ्कारविभूष्या सर्वादिव्यनुदितशब्दसिन्नादेन महत्या ऋद्ध्या यावत् रवेण निजकपरिवारसंपरिवृताः स्वकानि स्वकानि यानविमानवाह-नानि दुरूढाः सन्तः अकालपिहीणं शकस्य यावत् अन्तिके प्रादुर्भवत । ततः खलु स हरिणेगपेषी देवः पादात्यनी शिविपतिः शकेण३ यावत् एवम् उक्तः सन् हृष्टतुष्ट यावत् एवं देवा । इति आज्ञायाः विनयेन वचनं प्रतिश्वणोति, प्रतिश्वत्य शकस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य अन्तिकात् प्रतिनिष्कामिति प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सभायां सुधर्मायां मेवोघरसितगम्भीरमधु रत्तरशब्दां योजनपरिमण्डलां सुघोषां चण्टां तत्रैव उपायच्छति, उपायत्य तां मेथोवरसित गम्भोरमधु रत्तरशब्दां योजनपरिमण्डलां सुघोषां चण्टां तत्रैव उपायच्छति, उपायत्य तां मेथोवरसित गम्भोरमधुरतरशब्दां योजनपरिमण्डलां सुघोषां घंटां त्रिः कृत्वः उल्लालयित

ततः खलु तस्यां धेवीवरसितगम्भीर० भधुरतरशब्दायां योजनपरिमण्डलायां सुघोषायां घण्टायां त्रिः कृत्वः उल्लालितायां सत्यां सीयमें करपे अन्येषु एको नेषु द्वात्रिंगद्विमानावास-शतसद्देषु अन्यानि एकोनानि द्वात्रिशत् घण्टाशतसदस्राणि यमकसमकं कणकणारावं कर्तु प्रवृत्तानि अभवत् इति । ततः खळ सौधर्मः कल्पः प्रासादविशाननिष्कुटापतितशब्दसम्रुत्थित-घण्टाप्रतिश्चनशनसदस्तरांकुलो जातथाप्यभूत इति । ततः खल तेषां संधर्मकल्पवासिनां बहूनां वैमानिकानां देवानाञ्च देवीनां च एकान्तरतित्रसक्तनित्यप्रमत्तविषयसुखमूर्छितानाम् सुस्वरघण्टारसितविषुलबोलप्रितचपलपरिबोधने कृते सति घोपगकुत्रलद्तकर्णेकाग्रचित्रो-पयुक्तमानसानां सपदात्य ी शाधिपति देवः तस्मिन् घण्टारवे निशान्त प्रतिशान्ते सति तत्र तत्र तस्तिन् तस्मिन् देशे महता महता शब्देन उद्धोषयन् उद्घोष न् एवम् अवादीदिति । इन्त ! श्रुण्यन्तु भवन्तो बहवः सौधर्मकल्पवासिनो वैमानिकदेवाः देव्यश्च सौधर्मकल्पपतेरिदं वचनं हितसुखायम्-आज्ञापयति खल भो शकः तदेव यावत् अन्तिकं प्रादुर्भेवत इति, ततश्च ते देवा देवयश्च एतमर्थे श्रुत्वा हष्टतुष्ट यावत् हृदया! अष्येककाः वन्दनप्रत्ययम् एवं पूजन प्रत्यम् सत्कारप्रत्ययम् सन्मानप्रत्ययम् जिनभक्तिरागेग अप्येककाः तत् जीतमेतत् एवमादि इत्यादिकं कृत्वा यावत् प्रादुर्भधन्ति इति । ततः खल सः शकः देवेन्द्रो देवराजः तान् वैमानिकान् देवान् देवींश्च अकालरिहीनं चेव अन्तिकं प्रदुर्भेयतः प्रादुर्भवन्तीश्च पत्रयति दृष्ट्वा हृष्टः पालकं नाम आभियोगिकं देवं शब्दयति शब्द्यित्वा एवमवादीत् क्षिप्रमेव मो ! देवानुष्रियाः अनेकस्तम्भशतसिन्निविष्टं छीछ।स्थितशालभिक्तिकाकितम् ईंहामृगऋषभतुर-गनरमकरविद्ग्वाळककिन्नररुरुशस्मवामरकुञ्जरवनछतापबछताभक्तिवित्रम् स्तम्भोद्गतवज्र-वेदिकापरिगताभिरामम् विद्याधर्यमञ्ज्याञ यन्त्रयुक्तमित्र अर्जिसहस्रमाञ्जिनीकम् रूपकसह-स्रकछितंम् भारपमानं वाभास्यमानं चक्षुळीचनछेदयं सुखस्पर्शं सश्रीकरूपं घण्टावछिकमधुर-मनोहर सदशप् शुभं कान्तं दर्भनीयम् मिनिमिसेन्तमणिरत्नविष्टिकाजालपरिक्षिप्तम् योजन सहस्रविस्त्रीर्णे पश्चशतोच्चं शीघं त्वरितं जवनं निर्वाहि दिन्यम् यानविमानं विकुर्वस्व विकुर्व्य प्ताम् आइप्तिकां प्रत्यर्पय ॥ स्० ४ ॥

टीका-सम्प्रति तीर्थकरस्य जन्ममहोत्सवे शक्रस्य कृत्याचारं दर्शयति 'ते णं कालेणं ते णं समएणं' इत्यादि

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' तस्मिन काले तस्मिन् समये अप्यार्थः अस्मिन्नेववक्षस्कारे प्रथमसूत्रे द्रष्टव्यः 'सके णामं' शको नाम सौधमीधिपतिः 'देविदे' देवेन्द्रः देवस्वामी 'देवराया' देवराजः देवाधिपतिः 'वज्जपाणी' वज्जपाणिः वज्ञः पाणौ इस्ते यस्य स तथाभूतः 'पुरंदरे' पुरन्दरः पुरं दारयति विदारयति, अर्जुनद्वारा इति पुरन्दरः 'सयकेउ' शतकतः शतकवतः श्र.वकपश्चमीप्रतिमा यस्य स तथा कार्तिकनाम श्रेष्ठि भवे तेन श्रावकपश्चमीप्रतिमां शत-वारमाराधितवान ततः शतकतुरिति इन्द्रः कथ्यते 'सइस्सवेष सहस्राक्षः सहस्रनयनः इन्द्रस्य पश्चशतामित्रणि प्रत्येकं हे हे अक्षिणी तेन सहस्राक्षः कथ्यते 'सप्वं' गयवान् मधाः मेधाः

'ते णं कालेगं ते णं समएणं सक्के णामं' इत्यादि

टीकार्थ-'ते णं कालेणं तेणं समएणं' उस कालमें और उस समय में 'सक्केणामं देविंदे देवराया वज्जाणी पुरंदरे समकेज सहस्सक्खे पागसासणे दाहिण द्वलोकाहिवई वनीस विमाणावाससयसहस्साहिवई एरावणवाहणे सुरिंदे अरयंवरवत्थघरे' देवों का इन्द्र देवराज दाक दिव्य भोगों को भोग रहा था ऐसा
यहां सम्बन्ध है इसी सम्बन्ध को स्पष्ट करने के लिये जिनने भी यहां इन्द्र के
विशेषणरूप से पद प्रयुक्त किये गये हैं उनका अर्थ इस प्रकार से है-इन्द्र के
हाथमें वज्र रहता है इसलिये इसे वज्रपाणि कहा गया है पुरन्दर इसे इसलिये
कहा गया है कि यह इन्द्र के भव को समाप्त करके मनुष्य पर्याय में आकर के
रागदेषादिष्य नगर का विष्वंस कर मुक्ति प्राप्त करेंगे शतकतु इसे इस कारण
कहा गया है कि कार्तिक नामक श्रेष्ठि के भवमें इसने श्रावक की पाचवीं
प्रतिमा की आराधना १०० वार की थी, सहस्त्राक्ष जो इसे कहा गया है उसका

'तेणं कःलेणं तेणं समएणं सक्के णामं' इतादि

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' ते काणे अने ते समये 'सक्के णामं दिन्दे देवराया वज्ज-पाणी पुरंदरे सयकेक सहस्सक्ते पागसासणे दाहिणद्धलोकाहि वई वत्तीसविमाणावास-सयसहस्साहिषई एरावणवाहणे सुरि दे अरयंवारवत्यधरे' हेवाना ६-६ हेवराक शक्क हि०थ की।णाना ७ पक्षाण करी रहारे हतो, अवेर अत्र संहर्भ हो. अक संहर्भ ने १ पण्ट करवा माटे केटला व्यक्षी छ-इना विशेषण्च माटे पहेर प्रयुक्त करवामां आवेला हो, ते पहेना अर्थ आ प्रमाणे छे—ईन्द्रना हाथमां वक रहे हो, अथी आ वक पाण्चि कहेवाय हो. पुरंहर आने खेटला माटे कहेवामां आवेल हे हे की ईन्द्रना कवने समाप्त करीने मनुष्य पर्यायमां आवीने राणदेषाहि इप नणरना विध्वंस करीने मुक्ति प्राप्त करशे. शतकतु आने खेटला माटे कहेवामां आवेल हे है की ईन्द्रना कवमां आहे श्रावकनी पंत्रभी प्रतिमानी आराधना १०० वार करी हती. आने सहस्राक्ष के कहेवामां आदेले हे ते

सन्ति अस्येहि मध्यान् 'पागसासणे' पाकशासनः पाको नामासुरः तस्य शासक इत्यर्थः 'द हिणद्धकोगाहियई' दक्षिणार्द्धकोकथिपतिः, 'बत्तीसविमाणाव।ससयसहस्साहिवई' द्वार्त्रि-शत विभानावासशतसङ्खाधिषतिः द्वात्रिंशस्त्रक्षः संख्यकविमानावासाधिपतिरित्यर्थः स्वामी-विभावः 'एरावणवाहणे' पेववतवाहनः तमामको हस्तिविशेषः वाहनं यस्य स तथाभृतः 'सुरिंदे' सुरेन्द्रः, सुराणां देवानां स्वामी तथा 'अरयंबरवत्थधरे' अरजोऽम्बरवस्त्रधरः प्रांशुरहितिनर्भलक्ष्यरः तथा 'आलइयमालमउले' आलगितमालमुकुटः-यथास्थान स्थापित माल्यहुकुटः 'नवहेमचःरुचित्रचश्चलकुण्डलिखमानगण्डः नवहेमनिर्मितनश्चनमुवर्णनिर्मित् यत् चारु सुन्दर चितवत् चश्चछं दोछायमानं कुण्डलद्वयं तेन विलिशमानः स्पृत्यमानो गण्डः कपोछो यस्य स तथाभूतः 'विलिहिज्जमाण' विलिख्यमानो गण्डो यस्य स कारण यह है कि इसके ५०० मित्र है अतः उनकी दो दो आखों की अपेक्षा छेकर यह सहस्त्राक्ष कह दिया गया है। यह मध-मेघों का यह स्वामी है इसलिये इसे मघवान कहा गया है। पाकशासन-इसने पाक नामके असुर को शिक्षा दी है इसलिये इसका नाम पाकदा।सन हो गया है। यह दक्षिणार्घलोक का अधि-पति होता है ३२ लाख विमान इसके अधिकार में रहते हैं ऐरायत हाथी इसकी सवारी के काममें आता है खुरेन्द्र खुरों का यह स्वामी होता है यह पांझ रहित निर्मल बख्य पहिनता है-इसलिये अरजो अबर बख्नधर इसे कहा गया है। 'आलइय मालमजडें' यथास्थान जिस पर मालाएं रखी हुई रहती हैं ऐसे मुकट को यह मस्तक पर धारण किये रहता है 'नवहेमचारचित्रंचचलकुण्डल विलिहिज्जमाणगंडे' ये जिन दो ऋण्डलों को कान में पहिनता है वे नबीन हेम सुवर्ण से निर्मित हुए होते हैं इसलिये बड़े सुन्दर होते हैं और चित्त के समान वे चवल होते रहते हैं इसी कारण दोनों गाल इसके उनसे रगडते रहते हैं

આ કારણથી કે આને ૫૦૦ મિત્રા છે. એથી તેમની બે-બે આંખાની અપેક્ષાએ આને સહસાક્ષ કહેવામાં આવેલા છે. આ મધ-મેંઘાના સ્વામી છે એથી એને મઘવાન્ કહેવામાં આવે છે. પાકશાસન-આ ઈન્દ્રે પાક નામક અસુરને શિક્ષા આપી હતી એથી એનું નામ પાકશાસન થઈ ગયું. આ દક્ષિણાર્ધ દ્વાદના અધિપતિ હાય છે. ૩૨ લાખ વિમાના એના અધિકારમાં રહે છે. સુરેન્દ્ર આને એટલા માટે કહેવામાં આવે છે કે આ સુરાતા સ્વામી છે. આ પાંશુ રહિત નિર્મળ વસ્ત્ર પહેરે છે. એથી આને અર્જોમ્બર વસ્ત્રધર કહેવામાં આવે છે. 'अलिइय मालमडहे' યથા સ્ત્રાન જેની ઉપર માળાએ મૃકાય છે એવા સુકુટને આ મસ્તક ઉપર ધારણ કરીને રહે છે. 'નવદ્દમ चાર્સ વસ્ત્ર વસ્ત્ર હોય હોય મસ્તા છે એ કુંડેલાને કાનામાં પહેરે છે. તે કુંડળા નવીન હેમ સુવર્ણથી નિર્મિત હાય છે, એથી તે કુંડળા અતીવ સુંદર લાગે છે. તે કુંડળા ચિત્તની જેમ ચંચળ થતા રહે છે. એથી જ એના બન્ને ગાલા તે કુંડળાથી ઘસાતા રહે છે. 'માસુરનોંદ્દી' એનુ

तथाभूतः पुनः कीदशः 'मासुरवींदी' भास्वरवीन्दिः भास्वरशरीरः दीप्यमानदेहयुक्तः इत्यर्थः दीप्दिमान् 'प्लंबवणमार्छ' प्रजम्बवनमारुः **लंबायमानमा**छायुक्तः । 'महिद्धीए' महिद्धिकः महत्ती ऋद्धः विमानादि सम्पत् यस्य स तथाभूतः तथा 'महज्जु-ईए' महाद्युतिकः महती द्युतिः आभरणं प्रभा यस्य स तथाभूतः तथा 'महाबले' महाबलः अतिशयबळशाली तथा 'महाजसे' महायशाः विशालकीर्तिः तथा 'महाणुभागे' महानु-भागः महानुभावः तथा 'महासोवखे' महासीख्यः 'सोहम्मे काप्षे' सौधर्मे कल्पे 'सोह म्मवर्डिसए विमाणे' सौधर्मावर्तसके विमाने 'सभाए सहम्माए' सभायां सुधर्मायां 'सक्तंसि-सीहासणंसि' शके सिंहासने वर्तमानः 'से णं तत्थ' स खुळ सौधर्माधिपतिः तत्र 'बत्ती-साए विमाणावाससयसाइस्सी णं' द्वात्रिशतः विमानावासशतसहस्राणां द्वात्रिशन्त्रक्षसंख्यक विमानावासानाम् आधिपत्यादिकं कारयन् पालयन् विहरति इत्यग्रेण संबन्धः पुनः कीद्दशः 'चउरासीए सामाणिञ साहस्तीणं' चतुरशीतेःसामानिकसहस्राणां चतुरशीविसहस्रसंख्यक सामानिकानाम्, आधिपत्यादिकम् तथा 'तायचीसाए तायचीसगाणं' त्रपस्तिशतस्रायस्त्रिश-कानाम् देशविशेषाणाम् आधिषःयादिकम् तथा 'चउण्हं छोगपालाणं' चतुर्णो छोकपादानाम् 'मासुरवो'दी' इसका शरीर सदा दीप्तवना हुआ रहता है 'प्लंबवणमास्ते' इसकी वनमाला वडी लम्बी रहती है 'महिद्धिए' इसकी विमानादि सम्पत् बहुत वडी चढी होती हैं 'महज्जुइए महाबछे, महाजसे, महाणुभागे, महासोक्खें' इसके आभरणादिकों की गुति बहुत ऊंची होती है यह अतिशय बलशाली होता है प्रभाव भी इसका विशिष्ट होता है विशिष्ट सुखों का यह भोक्ता होता है ऐसे इन विशेषणों वाला वह शक 'सोहम्मे कप्पे' सौधर्म कल्पमें 'सोहम्मवर्डिसए विमाणे' सौधर्मावतंसक विमान में 'सभाए सुहम्माए' सुधर्मानाम की सभामें 'सक्कंसि सीहासणंसि' शक नामके सिंहासन पर विराजमान था 'से णंतत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसाहरसीणं,चडरासीए सामाणिय साहरसी णं तायत्ती-साए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अहण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं

शरीर सहा हीस रहे छे. 'पळंबवणमाले' अनी वनमासा अहु सांजी रहे छे. 'महिद्विए' अनी विभानाहि सम्पत् ध्रष्टी वधारे है। छे. 'महज्जुइए महाबले, महाजसे, महाजुमाने, महा सोक्से' अना आकरणाहिकानी द्वित अहु अ अ थी हिए छे. ओ अतिशय असशासी हिए छे. ओनी क्षीति विशाण हाय छे, ओना प्रभाव विशिष्ट हिए छे. ओ विशिष्ट सुणेना से। छता हाय छे. ओवा ओ विशेषणावाणा ते शक्ष 'सोहम्मे कर्त्य' सौधर्म कर्र्या 'सोहम्मविडंस विमाण' सौ धर्म भीवतं सक्ष विभानमां 'सभाए सहम्माए' सुधर्मा नामक सक्षामां 'सक्कंसि सीहासणंसि' शक्ष नामक सिंहासन ६ पर समासीन हो। 'से णं तत्य वत्तीसाए विमाणावासस्य साहरसीणं, चड्डासीए सामाणिय साहरसीणं तायत्तीसाए तायत्तीसाण स्ताणं अट्टां अगानहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणी-

आधिपत्यादिकम् 'अहण्डं अगामिशसीणं सपिरवाराणं' अष्टानाम् अग्रमहीषीणाम् सपिरवाराणाम् आधिपत्यस्वामित्वादिकम् तथा 'तिण्हं परिसाणं' तिस्णां परिषदाम् आधिपतादिकम् तथा 'सत्तण्हं अणियाहिवर्शणं' सप्तानाम् अनी-काधिपतीनाम् सेनापतीनामित्यर्थः 'चउण्हं चउरासीणं आयरपखदेवसाहस्सीणं' चतुरश्चतुर-शीतेरात्मरक्षकदेवसहस्राणाम् चतुश्चतुरशीतिसहस्रसंख्यकात्मरक्षकदेवानामित्यर्थः, आधिपत्या-दिकम् तथा 'अन्नेसिंच बहूणं सोहम्मकप्पवासीणं' अन्येपां च बहूनां सौधर्मकल्पवासिनाम् 'वेमाणियाणं देवाण य देवीण य' वैमानिकानाम् देवानां देवीनां च 'आहेवच्चं पौरेवच्चं सामित्तं मिह्टतं महत्तरमत्तं अणाईसरसेणावच्चं' आधिपत्यं पौरपत्यं स्वामित्वं भर्तृत्वं महत्तरक्त्वम् अज्ञेश्वरसेनापित्वं च 'कारेमाणे पालेमाणे' कारथन् पालयन् 'महयाहयणहगीय-वाइय तंतीतलतालतुखियचणसुइंगपद्वपटहवाइयरवेणं, महताहत नाटचयगीतवादिततःत्रीत्वलतालत्तृत्विचर्यणसुइंगपद्वपटहवाइयरवेणं, महताहत नाटचयगीतवादिततःत्रीत्वलतालत्तृत्विचर्यणस्त्रम् नाटचम् नृत्यं तेन युक्तं गीतं तच वादितानि च शब्दवन्ति

परिसाणं सत्तण्हं अणीयाणं सत्तण्हं अणोयाहिवईणं चउण्हं चउरासीणं आयर-क्खरेवसाहस्सीणं अण्णेसिंच बहुणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य' वह इन्द्र अपने सौधर्म देवलोक में रहता हुआ ३२ लाख विमानों का ८४ हजार सामानिक देवों का ३३ त्रायिक्षंश देवों का सपरिवार आठ अग्रम-हिषियों का, तीन परिषदाओं का सात सैन्यों का सात अनिकाधिपतियों का चार चौरासी हजार अर्थात् ३ लाख ३६००० हजार आत्मरक्षक देवों का, तथा और भी अनेक सौधर्मकल्पवासी वैमानिक देवों और देवियों का 'आहेवच्चं पोरे-वच्चं सामितं महित्तं महत्तरगत्तं आणाईसर सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे' अधिपत्य, पौरपत्य, स्वामित्व भर्तृत्व, महत्तरकत्व और आज्ञेश्वर सेनापितत्व करता हुआ पलवाता हुआ (महयाहयणदृगीयवाह्य तंतीतलताल तुहिय घणमु-अंगपडुप्यदहवाह्यरवेणं दिव्वादं भोग भोगाइं भुंजमाणे विहरह) नाटचगीत आदि

याणं सत्तण्हं अणीय हिन्न में चडण्हं चडरासीणं आयरक छदेवसाहरसीणं अण्णेसिंच बहूणं सोहम्मक प्यवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य' ते धन्द्र पे:ताना सौधर्भ हेव देविक मां रहीने उर लाभ विमाना, ८४ हुलर सामानिक हेवे।, उउ अपिक श-हेवे।, यार देविक पाले।, सपरिवार आठ अध्यमहिष्यों अण्य परिषदा को। सात सैन्ये।, सात अनीक धीधरितिको, यार वेपिकी हुलर केटले के उउ६००० आत्मरक्षक हेवे।, तथा अनेक सौधर्म कल्पासी वैमानिक हेवे। अने हेवीको 'आहे बच्चं, पोरेवच्चं, सामित्तं, महत्तरात्तं आणाई सरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे' अर आधियत्य, पीरपत्य, स्वामित्व, सर्तित्व, सर्तित्व, महत्तरात्तं अर्था केत्रकत्व अने आजे श्वर सेनापित्व करते।, तेमने पाताना शासनमां राभते। 'मह्या ह्यणहृशीय वाइयत्तीतल ताल हिंद्याण मुंगपहुष्य डहवाइ परवेणं दिव्याइं भोगभोगाइं मुंजमाणे

कृतानि तन्त्री च वी गातली हस्ती तालाश्च कंशिकाः त्यांणि च पटहादीनि इति अहर तनाटय गोतवादितहन्त्रीतलतालत्यांणि तानि च तथा घनो मेघः तदाकारो यो मृदङ्गो मेघवत् ध्वनिमान् ध्वनिगामभीर्यसादश्यात् स चासौ पडुना दक्षेण वादितश्च यः पटहः सघनमृदङ्गर पडुकादितपटहः मूले पटहः तेषां रवः शब्दः तेन करणभूतेन अत्र मृदङ्गप्रहणं त्यादिवाद्येषु प्रधानं वोध्यम् 'दिव्याङं भोगभोगाइं संजमाणे विहरह' दिव्यान् भोगभोगान् भुद्धानो विहरति तिष्ठति स सौधर्माधिपतिः

'तएणं तस्स सकस्स देविंदस्स देवयण्गो आसणं चळइ' ततः खलु तद्नन्तरं किळ तस्य शकस्य सौधर्याधिपतेः देवेन्द्रस्य देवराजस्य आसनं सिंहासनं चलति नलायमानं भवति 'तएणं से सक्के जाव आसणं चिटियं पासइ. ततः खु स शको यावत् आसनं चिटितं प्रवितं अत्र याबत्पदात् देवेन्द्रो देवराज इति ग्राह्मम् 'पासित्ता' हृष्ट्रा 'ओहि पउंनइ' अवधि प्रयुक्ते अवधिज्ञानेन पश्यति 'पउंजित्ता' प्रयुज्य 'भगवं तित्थयरं ओहिणा आभोएइ. स शकः भगवन्तं तीर्थकरम् अवधिना अवधिज्ञानेन आमोगयति जानातीन्यर्थः 'आमोइत्ता' आमोग्य ज्ञात्वा 'हट्ट-तुद्धचित्ते आनंदिए पीइमणे परमसोमणस्पिए हरिसवसविसप्यमाणहियए' हष्टतुष्ट्रचित्तानन्दितः मीतिमनाः परमसौननस्यितः हर्पवशविसर्पद् हृदयः तथा 'धाराहय कयं बक्कसमचं चुमाळ इय को में बजाये गये इन तंत्रीतल आदि अनेक बाजों की ध्वनि पूर्वक दिव्य भोग भोगों को भोग रहा था (तएणं तस्स सकस्स देविंदस्स देवरण्णो आसणं चलइ, तए णं से सक्के जाव आसणं चिलेशं पासह, पासित्ता ओहिं पउंजइ) इतने में उस देवेन्द्र देवराज शक का आसन कंपायमान हुआ आसन को कंपाय-मान देख कर उस दाक ने अपने अवधिज्ञान को व्याप्रत किया (पउंज्ञिसा भगवं तित्थयरं ओहिणा आभोएइ) अवधिज्ञान को व्यावृत करके उसने तीर्धकर को देखा (आमोइसा इडतुइचित्ते आणंदिए, पीइमणे, परमसोमणस्सिए, हरि-सवसविसप्पमाणहियए धाराहयक्तयंवकुसुम चंचुइय उसवियरोमकूवे वियसिय

विहरइ' नाट्यशीत वशेरेमां वशाउवामां आवेक्षां तंत्री-ताल वशेरे अनेक विद्याना भपुर स्वराति सांकणते। दिव्य क्षेशिना ६पक्षिण करते। रहेते। रहेते। हते। 'तव्णं तस्स सक्करस देविंद्स्स देवरण्णो आसणं चल्लइ, तव्णं से सक्के जाव आसणं चल्लिं पासइ पासित्ता ओहिं पउंजइ' आटकामां ते हेवेन्द्र हेत्रराजनुं आसन कंपायमान थयुं, पाताना आसनने कंपायमान थतुं किंधने ते शक्षे पाताना अविद्यानने व्यावृत कर्षीं 'पउंजित्ता भगवं तित्थयरं ओहिणा आमोएइ' अविध्यानने व्यावृत करीने तेले तीथ 'क्षरने किया. 'आमोइत्ता हट्ट तुट्ट वित्ते आणंदिए, पीइमणे, परमसोमणस्तिए, हरिसवराविसण्यमणहियए धाराहयक्यंबकुसुम चंनुइय उसविय रोमकूवे वियसिय वरकमलन्यणवयणे' किंधने ते

⁽१) यथा स्थान इन वादित्रों की व्याख्या पहिले की जा चुकी है। १ यथास्थान से वालंत्रोनी व्याभ्या क्ष्यामां सावी छे.

उसिवयरोमक्त्वे' धाराहतकदम्बकुमुमरोमाश्चिकोच्छितरोमकूपः तत्र धाराऽऽहतं जलधारयाः ऽभिघातितं यत् कदम्बकुसुमं कदम्बनामक पुष्पविक्षेपः तहत् रोमाश्चितः रोमाश्चः संजातो पस्य स तथा भूतः, यथा धारापाते कदम्बमितिश्चयेन विकाश्चितं भवति, तहत् अयमपि रोमाश्चिन युक्तः अत एव उच्छितः अध्वौत्थितः रोमकूपो यस्य स तथा भूतः यथा अविकसितं कदम्बकुसुम जलधाराभिगहतं सत् उध्वौत्थितः रोमकूपो यस्य स तथा भूतः यथा अविकसितं कदम्बकुसुम जलधाराभिगहतं सत् उध्वौत्थितं सर्वथा विकसितं भवति तथेव हर्षजन्य रोमाश्चिन उध्वौत्थितरोमकूपवान इश्यर्थः, तथा 'विश्वसियवरकम्बन्यणवय्षे' विकसितवरक्षमल्लन्यने श्रेष्टकमलनेत्रे वदनं च यस्य स तथाभूतः, तथा 'पचलियवरक्षकुत्विद्धिके उरमुद्धिके वरक्षमलनयने श्रेष्टकमलनेत्रे वदनं च यस्य स तथाभूतः, तथा 'पचलियवरक्षकुत्विद्धिके उरमुद्धिके उरमुद्धिके द्रमुद्धिके वाहुरक्षको केयूरे बाहवो वेवभूदणविक्षेपी सुकुटं कुण्डलं च यस्य स तथा भूतः तथा 'कुंडलहारविराचंतरइयवच्छे' कुण्डलहारितराचनरतिदवक्षस्कः तत्र हारेण उक्षद्धितिश्चात् प्रचिलतक्षक्ताहारेण विराजमानम् अतएव रतिदं च प्रमोदजनकं वक्षः वक्षस्थलं यस्य स तथाभूतः तथा 'पालंबपलं माण्याचेतंत्रभूतणवर्दे' श्रलम्बपलम्बमानघोष्ट्य भूष्णधरः ठत्र प्रलम्बमानः अतिदीर्धः प्रालम्बो घोलंतभूतणधरे' श्रलम्बपलम्बमानघोष्ट्य भूष्णधरः ठत्र प्रलम्बमानः अतिदीर्धः प्रालम्बोः

वरकमलनयणवयणे) देखकरके वह हुई तुष्ट और चित्त में आनन्द युक्त हुआ प्रीति युक्त मनवाला हुआ परम सौमनस्यित हुआ हुई के वहा से जिसका हृदय उछलने लगा ऐसा हुआ मेघ घारा से आहत कदंब पुष्प की तरह रोम कूप उसके उर्ध्वमुख होकर विकसित हो गये नेत्र और मुख उसके विकसितकमल के पुरुष बन गये (पचलियवरकडगतुडियकेयूरमउडे) उसके अष्ठ कटक छुटित केयूर और मुकुट चश्चल हो गये क्यों कि हुई के मारे उसका सारा हारीर फड़क ने लग गया था (कुंडलहार विराजियवच्छे) कानों के कुण्डलों से और कंठगत हार से उसका वश्चः स्थल हो भित होने लगा (पालंब पलंबमाणघोलंतभूसण धरे) इसके कानों के झुमके लम्बे थे इमलिये इसने जो कंठ में भूषण घारणकर रखेथे वे उनसे रगडने लग गये तात्पर्य यही है कि हुई तिरेक से इसका हारीर

हुन्ट-तुन्ट अने जित्तमां आनंद युव्रत थया, ते प्रीतियुव्रत मनवाणा थया. ते परम सौमनस्पित थया, हर्षाविशयी केनं हृद्य उछणवा लाग्युं छे, ओवा ते थया, मेघधाराथी आहत करंण पुरुपनी केम तेना रे:मक्षे। अर्थ्य मुण धर्मने विक्वसित थर्छ गया. नेत्र अने भुण तेना विक्वसित कमणवत् थर्ण गयां. 'पवलियवरकडग तुडिय केयूर मचडे' तेना श्रेष्ठ कटक, त्रुटित, केयूर अने भुद्ध यंत्रण थर्ण गयां केमके हर्षाविशमां तेनं आणुं शरीर इरक्ष्या लाग्युं हुनुं. 'कुंदल हार वरा जियवच्छे' कानाना कुंदणीयी तेमक कंदणत हारथी तेनुं वक्षस्थण शास्तित थवा लाग्यु. 'पालंब पलंबमाणवोलंतमूसणघरे' तेना कानाना जूमभाओ। लांका हता, अथी तेले कंदमां के भूषो। धारण करी राज्या हतां तेमनाथी ते विष्तं थवा लाग्या. तात्पर्य आ प्रमाले छे के ह्यांतिरेक्ष्यी तेनुं शरीर यांचण थर्ण

ज्झंबनकं यस्य स तथाभूतः तथा उक्तहपीतिशयादेव घोछद् दोछायमानं भूषणं घरति यः स तथाभूतः ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः भूछे प्रलम्बमानपदस्य पूर्वे प्रयोक्तव्ये परप्रयोगः अपित्वात् 'ससंभमं तुरिञं चवछं सुरिदे सीहासणओ अव्भुद्धेह्' तत्र ससंभ्रमं सादरम् रवितं मानसीत्सुवयं यथास्यात् तथा चपछं कार्योत्सुवयं यथास्यात् तथा सुरेन्द्रः सिंहासनात् अभ्युक्तिष्ठति 'अब्भुद्धेत्ता' अभ्युत्थाय 'पायपीढाओ पच्चोरुहहः' पादपीठात् पदासनात् प्रत्यवरोहित अवतरित, 'पच्चोरुहित्ता' प्रत्यवरुह्य अवतीर्य 'वेडव्वियवरिहरिह अंद्रणनित्रः णोविअमिसिमिसितमणिरयणमंद्धियाओ पाउआओ ओस्रु पहं वेड्र्य वरिष्टरिष्टाञ्चनितृणोचित-मिसिमिसिनतमणिरत्नमण्डिते पादुके अवसुश्चित तत्र वेड्र्यगरिष्टरिष्टाञ्चनितृणोचिते निष्णैः विलिपिभः वेड्र्यानि तत्तननामकरत्नविशेषेभ्यो निर्मिते तथा मिसिमिसित देदीप्यमानमणि-

चश्रल हो उठा इसिलिये कानों के झुम्बनकों में और कंठ के आभूषणों में संबद्दन होने लगा अथवा झुम्बनक नाम चोगे का भी है तथा च-इसने लंबा चोगा पहिन रक्खा था सो जिनेन्द्र का जन्म हुआ है ऐसा जब इसने जाना तब हर्षातिरेक के कारण दारीर में कंपन हुआ सो उसकी वजह से इसके भूषण चश्रल हो उठे वे पहिरे हुए चोगे से भी नहीं दबे यहां आर्ष होने से प्रलम्बमान जो कि प्रालम्ब का विद्योषण है उसका पर प्रयोग हुआ है ऐसा वह 'सुरिंदे' दाक (ससंभमं तुरियं चवलं सीहासणाओं अब्सुद्देह) बढे आद्र के साथ उत्कंठित बनकर अपने सिंहासन से उठा (अब्सुद्देन्ता पायपीढाओं पच्चोरुह्ह) और उठ कर पादपीठ से होकर नीचे उतरा (पच्चोरुह्निता वेरुलिअवरिद्द रिद्द अंजण निज्ञणोविश्वमिसिमिसितमिणरयणमंडियाओं पाउपाओं ओसुअइ) नीचे उतर कर निपुणदिस्तिपयों द्वारा वैद्दूर्य वरिष्ठ रिष्ट, तथा अंजन नामक रत्न विद्दोषों की बनाई हुई एवं देदीप्यमान मिणरत्नों से मिण्डत हुई ऐसी दोनों

गशुं, क्येथी क्रानाना जुमणाक्यामां अने कंठना आल्ष्यक्षामां संघट्टन थवा मांउशुं अथवा विश्वानुं नाम पक्षु जुम्अन के तो तेक्षे लांभा बांभा पहेरी राण्या हता. ज्यारे तेक्षे क्रिनेन्द्रने। कान्म थया के क्येषुं काष्युं त्यारे हर्षातिरेक्षने लीधे तेना शरीरमां कंपन थयुं. तेनाधी क्येना आ ल्रुषक्षे। यांदण थयां. ते आ ल्रूषक्षे। पहेरेला बांगाधी पक्ष हणाया नहि. अहीं आर्थ हेरावाधी प्रश्नंजमान के के प्रस्तंजनुं विशेषक्ष के, तेना अहीं परप्रयोग थया है. क्येषा ते 'सुतिरे शक्ष 'ससंममं तुरियं चवलं सीहासणाओं अन्मद्रेइ' ज्यान आहर साथ किंकि हित थहीं ने पाताना सिंहासन हपरथी किसा थया. 'अन्मद्रेइ' ज्यान आहर साथ किंकि हरे हित थहीं ने पाताना सिंहासन हपरथी किसा थया. 'अन्मद्रेइता पायपीठाओं पच्चोरहइ' अने किंसा थहीं पाद पीठ क्येर थहीं ने नीचे हत्यां. 'पच्चोरुहत्ता वेदलिय वरिदृद्धि अंजणित्रक्षोविक्यमिसिमिसिंतमिणिरवणमंहियाओ पाउवा ओ ओमुअइ' नीचे हत्यीने निपुष् शिहिपक्षे। वेते वैदूर्य वरिष्ठ रिष्ट तथा आंजन नामक रतन विशेषायी निर्मित अने हेडीप्यमान मिख्रिरनीयी मंदित थयेली केवी अने

रत्नैश्र मण्डिते शोभिते एवंभूते पादुके पादवाणे अवधुश्राति त्यज्ञति भक्तचितिशयात् पादुके निःसारयतीतिभावः 'ओग्रुइत्ता' अवग्रुच्य परित्यज्य 'एगसाडियं उत्तरासंगं करेड' एक-शाटिकम् उत्तरासङ्गं करोति मुखे बघ्यातीत्यर्थः 'किरित्ता' कृत्वा 'अंजलिमुउलियम्गहत्ये' अञ्जलिमुकुलिताग्रहस्तः अञ्जलिना मुकुलितौ कुड्मलाकारीकृतौ संकोचितौ अग्रहस्तौ इस्ता-त्रभागौ येन स तथाभूतः 'तित्थयराभिष्ठहे' तिर्थेकराभिष्ठखः 'सत्तहपयाई अणुगच्छइ' सप्ता ष्टपदानि सप्त वा अष्टौ वा पदानि अनुगच्छति, यत्र तीर्थकरस्तस्यांदिशि यातीत्यर्थः 'अणु-गिन्छिता' अनुगत्य 'वामं जाणुं अंचेइ' वामं जानूम् आङ्कंचयति' ऊर्ध्व करोति स शकः 'अंचेता' आकुच्य ऊर्ध्व कृत्वा 'दाहिणं जाणुं धरणितलंसि णिहट्टु' दक्षिणं जानुं धारणितले निहत्य निवेश्य 'तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि निवेसेंह' त्रिःकृत्वः त्रिः वारं मुर्थानं धरणितले निवेशयति स्थापयति 'निवेश्सित्ता' निवेश्य स्थापयित्वा 'ईसिं पच्चु-ण्णमइं ईषत् प्रत्युम्नमति 'ईसि पच्चुण्णमित्ता' ईषत् प्रत्युन्नमय्य 'कडगतुडियथंभियभ्रुआओ खडाऊं को उसने पैरों में से उतारदिया (ओमुइत्ता एगसाडिअं उत्तरासंगं करेइ) जन्हे उतार कर फिर उसने अस्यूत शाटक को दुपट्टे का उत्तरासंग किया-अर्थात् दुपट्टे को अपने मुख पर बांघा (करित्ता अंजलिमडलियग्गहत्थे तित्थ यराभिमुहे सत्तद्वपयाइं अणुगच्छइ) बांधकर फिर उसने अपने दोनों हाथों को जोडकर-अर्थात् हथेलियों को जोडकर उनकी अंजुलि बनाई और वह जिस दिशा में तीर्थंकर प्रभु थे उनकी ओर सात आठ डग आगे गया (अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचेत्ता दाहिणं जाणुं घरणीतलंसि निहर्दु तिक्खुत्तो मुद्धाण धरणियलंसि निवेसेइ) आगे जाकर उसने वधें घुटने को ऊपर उठाया और उठाकर दाहिने घुटने को जमीन पर जमाया जमा कर फिर उसने तीन बार अपने मस्तक को जबीन पर झुकाया (णिवेसित्ता ईसिंपच्चुण्णमइ) और स्वयं भी थोडा सा नीचे झुका (इंसि पच्चुण्णमित्ता कडगतुडिय थमियाओ सुयाओ

पावडीक्थाने तेले पेताना पंचामांथी इतारी नाणी. (ओमुइता एगसाइअं उतरा संगं करेइ' पावडीक्याने इतारीने पंछी तेले अस्यूत शाटकना इपट्टाना उत्तरासंग करें। क्षेपटें के क्षेपटें के के इपट्टाने पाताना मुण उपर आंधी। 'करिता अंजलिम उलियगहत्थे तित्थयरा मिमुहे सत्तहृपयाइं अणुगच्छइ' आंधीने पंछी तेले पाताना अन्ते खांथाने केंद्रीने केंद्रिं मांवाण कर्या वाहिणं जाणुं धरणीतलंस निहदूद तिक्खुत्तो मुद्राणं धरणियलंस निवेसेइ' आगण कर्या ने तेले पाताना वाम बूंटखुने उपर इंद्राविश्व अने इंद्रीने कमाणु बूंटखुने अप अपताना मस्तने कमीन तरक्ष नित अर्थुं. 'जिलेसित्ता ईसिं पच्चुण्णमइ' अने पाते पखे थेडिक निमित थेथे। 'इसी

साहरह' कटकवृदिकस्तिमाते भुजे संहरति तत्र कटके प्रधानवस्ये बृदिके च बाहरसकभूषणिविशेषी तैः स्तिमाते भुजे बाह् संहरति 'साहरित्ता' संहत्य 'हरयसपरिगाहियं दसणहं
सिरसावतं मत्थए अंजिंक कट्ट एवं वयासी' करतकपरिगृहीतं दश्वसंव शिरसावतं मस्तके
अञ्जिलि कृत्वा एवं वश्यमाणप्रकारेण अञ्चादीत् उद्भान स शकः किमशदीत् इत्याह - 'णमोस्थुणं' इत्यादि 'नमोत्थुणं अरहंताणं भगवंताणं आइग्रराणं तित्थयर णं सयं संबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसदरपुंदरिताणं पुरिसवरगंघहत्थीणं स्रोत्यमाणं स्रोत्वाणं स्रोत्वाणं स्रोत्याणं स्रोत्याणं

साहरइ, साहरित्ता करयलगरिग्गहियं निरसावत्तं मत्थए अंतर्लि कट्डु एवं वयासी) नीचे थोडा सा झुकता उसने कटकों की-प्रधानवलयों को एवं बाहुके आभूषणों को लंभालते हुए दोनों हाथों को लोडा जोडकर और उन्हें अंजुलि के रूप में बनाकर एवं मस्तक के उपर से उसे प्रमाते हुए किर उसने इस प्रकार से कहा-(णमोत्थूणं अरहंताणं जागवंताणं, आइगराणं तित्थयराणं सयं संबुद्धाणं, पुरिस्चरणां पुरिस्चरणं पुरिस्चरणं पुरिस्चरणं पुरिस्चरणं पुरिस्चरणं पुरिस्चरणं पुरिस्चरणं पुरिस्चरणं पुरिस्चरणं लोगपज्जोअगराणं) में ऐसे अर्हतभगवन्तों को नमस्कारकरता हूं जो अपने शासन के अपेक्षा धर्म के आदिकर हैं तीर्थकर हैं स्वयं संबुद्ध हैं, पुरुषोत्तम हैं, पुरुषसिंह हैं, पुरुषवर पुंडरिक हैं, पुरुषवर गंधहस्ती हैं, लोकोस्भ हैं, लोकनाथ हैं, लोकहित हैं लोक प्रदिश्च हैं, लोकमचीनकर हैं 'अभयद्याणं, चक्खुद्दशाणं, प्रगाद्याणं, हरणहर

पच्चुण्णमित्ता कडगतुं हियशं भिया भी मुखा नी साहर इं साहरित्ता शरणदारि गाहि गिरसा वत्तं मत्थ्य अंजि कर्टु एवं वयाभी' नीच थे छे निमत थर्डने ते हैं। ४८ है नि-प्रधान विश्व थे जिल्ला कर्डने ले हैं। अध्यान क्षेत्र कर्डी में भारती काल्या कर्डि कर्डी में भारती काल्या कर्डि कर्डी में भारती कर्डी करिया कर्डी करिया कर्डी करिया कर्डी कर्डी

सियमयञ्चरम्णंतमक्खः सन्त्रावाहयपुणरावित्तिसिद्धिगङ्णामधेयं ठाणं संदत्ताणं णमो जिलालं जियमयालं' एपामर्थ आव्रयकग्रवादी द्रष्टव्यः । 'पासउ मे भगवं तत्थगए इहगयं' पश्यत तत्रगतो भगत्रान इदयतभ् माम् धकष् 'तिक्तद्ड्' इति कृत्वा इत्युक्त्वा एतस्यार्थ आव-व्यकस्यादौ द्रप्रव्यः 'वंदइ नमंसइ वंदित्ता नवंसिता सीहासनवरंसि पुरत्याभिमुहे सण्णि-सण्णे' स कको वन्द्रते समस्पति वन्द्रिया तमस्यत्या विद्यासनारे श्रेष्ठ सिंहासने पौर-स्त्याभिष्ठस्यः सिन्नपणा उपविष्टशन् 'तए णं तस्त अकस्त देविदस्स देवरण्णो अयमेयारूवे याणं, जीवद्याणं धोहिद्याणं, घम्तद्याणं, घम्मदेख्याणं, घम्यनायगाणं, घम्म-सारहीणं, धम्मवरचाउरंतचककचडीणं' अध्यदायक हैं चधुर्दायक हैं, मार्गदायक हैं-शरणरायक हैं जीवदायक संयमस्य जीवित को देनेवाले हैं बोघदायक है. धर्मदायक हैं धर्मदेशक हैं, धर्मायक हैं धर्मसारिय हैं, धर्मवर चातुरन्त चक्रवर्ती हैं इत्यादि पदों से छेकर 'णक्रीत्ध्रां भगवओ तित्थगरस्स आइगरस्स जाव संपाविजकामस्ता यहां तक्षके पहों की व्याख्या आवर्यक सूत्र आदि में की जा चुकी है अतः वहीं से यह देखलेनी चाहिये 'वंदाक्षिणं भगवन्तं तत्थगयं इहगए' यहां रहा हुआ में वहां पर विराजपात भगवान को वन्द्रना एवं नमस्कार करता हूं 'पासउ में भगवं तत्थनए इह गयंति' वहां पर विराजमान वे भगवान यहां पर रहे हुए हुझे देखें ऐसा कहकर 'बंइइ एमंशइ' उसने बन्दनाकी और नम-स्कार किया 'वंदिसा णमंसिसा सीहासणवरंसि प्रतथाभिस्रहे सिणसण्णे' वन्दना नमस्कार करके फिर वह आकर अपने सिंहासन पर पूर्वदिशा की और मुंह करके बैठ गया।

जावयाणं तिणाणं तारयाणं बुद्धाणं बोइयाणं मुचाणं मोअमाणं सव्वन्तूणं सव्वदिसीणं

तए णं तस्स सक्कश्स देविंद्रस देवरण्यो अवसेचारूषे आव संकर्ण समुशरणुहायक छे, छत्रहायक है, संयम इपी छत्नने आपनाम छे, छाध हायक छे, धर्महायक छे, धर्म देशक छे, धर्म नायक छे, धर्म सारित छे, धर्म वर आतुरन्त अक्रवर्ती छे.
विशेर पहाधी मांडीने 'णमात्थूणं भगवणो तिथागरास आइगरास जाव हंपाविककामस्स'
अडीं सुधीना पहेंतनी व्याण्या आवश्यक सूत्र विशेरमां करवामां आवी छे. स्थिती ते
त्यांधी क कीर्ध सेवी कीर्ध से 'दंदामिणं भगवन्तं तत्थामं इहगए' अडीं रहेंसा हु' त्यां
विशेषभान स्थायन्ते वन्द्रना सने नभरकार केर्डु छं 'पासक्षमे भगवं! तत्थाप इह गयंति'
त्यां विशेषभान आप स्थायान् अडीं रहेंदा मने मुखी, आम क्रहीने 'वंद्र णमंसइ'
तेष्ठे वन्द्रना करी अने नभरकार क्रियां पंतिसा णमंसिता सीहासण्डरंसि पुरस्थामिमुहे सिण्ण
सण्णे' वन्द्रना सने नभरकार क्रियां प्रधी आतीने ते प्रेताना जिद्धासन उपर पूर्व दिशा

⁽१) यहां संकरूप के जो 'अज्झतिथए चिंतिए, कप्पिए आदि विशेषण है वे गृहीत हुए हैं इनकी व्याख्या यथा स्थान कह जगह की जा चुकी है।

जाव संकर्पे समुपिज्जित्था' ततः सिंहासनोपवेशनानन्तरं खल तस्य शक्रस्य सौधमीधिपतेः देवेन्द्रस्य देवराजस्य अयमेवावद्वपो यावरसंकल्पः समुद्रपचत समुत्पन्नः अत्र यावत्पदात् अञ्झित्थण् १, चिंतिण् २, किंपण् २, पत्थिण् ४, मणोगण् ५, इति ब्राह्मम् तत्र अयमेवा वद्वपः तीर्थकर जन्ममहोत्सवं कर्जु तद्वनगमनिवष्यकः विचारः 'अञ्झित्थण्' आध्यात्मकः अध्यात्मविषयकः आत्मगतः अङ्करइव १ तद्जु 'चिंतिण्' चिन्ततः पुनः पुनः तत्र गमनविषयक स्मरणक्र्यो विचारः द्विपत्रित्वइव २ । तद्जु 'किंपण्' किंगतः स एव व्यवस्थायुक्तः, इत्यं रूपेण तत्र तीर्थकर जन्ममहोत्सवं किंग्यामीति कार्याकारोण परिणतोविचारः पल्लवितइव ३ । तद्जु 'पत्थिण्' प्रार्थितः स एव विचारः इष्टक्षणेण स्वीकृतः पुष्पितइव ४ । 'मणोगण् संकर्णे' मनोगतः संकल्पः मनसि दृद्धरूपेण श्रिथाः, इत्थमेव मया कर्तव्यक्तिति विचरः फलित इव ५ । समुत्पन्न इत्यक्षे कोऽसौ इत्याद्द-'उप्पण्णे खल्ले इत्यादि 'उप्पण्णे खल्ले मो । जंश्वदीचे दोवे भगवं तित्थवरे तं जीयमेयं तीय पच्चुप्पण्णमण।गयाणं सङ्काणं देवेद्राणं देवराईणं तित्थयराणं जम्मणमिहमं करित्तण् उत्पन्नः खल्ले भोः जम्बूद्वीपे द्वीपे मध्यजम्बूद्वीपक्षेत्रे भगवांस्तीर्थकर तस्माज्जीतमेतत् आचार एपः, अतीतप्रत्युत्यन्नानागतानां भूत्वर्तमानम्विव्यत्कालिकानां शक्राणां देवन्द्राणां देवराजानां जन्ममहिमानं तीर्थकरजन्ममहो स्सवं कर्मुम् (तं गच्छामि खल्ल अहमण् शक्रो मगवतास्तीर्थकरस्य जन्ममहिमानं तीर्थकरजन्ममहो स्सवं कर्मुम् त्वलामि खल्ले अहमण् शक्रो मगवतस्तीर्थकरस्य जन्ममहिमानं जन्ममहोत्सवं करोमीति कृत्वा मनसि विचार्थ एवम् हेतुभूतम।विवश्चरमाणं संग्रेक्षते निश्चयं करोति 'संपे-

प्पिजत्था' इसके बाद उस देवेन्द्र देवराजशक को यह इस प्रकार का यावत् संकल्प उत्पन्न हुआ—'उप्पण्णे खलु भो जंबु दीवे–दीवे भगवं तित्थयरे जं जीय-मेगं तीय पच्चुप्पणमंणागयाणं सक्काणं देविंदाणं देवराईणं तित्थयराणं जम्मणमहिमं करेत्तए' जम्बूदीप नाम के द्वीप में भगवान तीर्थकर का जन्म हो चुका है प्रत्युत्पन्न अतीत एवं अनागत देवेन्द्र देवराज शकों का परम्परा से चला आया हुआ यह आचार है कि वे तिर्थकरों का जन्मोत्सव मनावें अतः 'गच्छा-मिणं अहंपि भगवओ तित्थगरस्स जम्मणमहिमं' करेमित्ति कहु एवं संपेहेइ'

तरह भुण हरीने छेसी गये। (१) तएणं तस्स सक्कस्स देवि दस्स देवरणणो अयमेयाक्तवे जाव संकल्पे समुत्पिकत्था' त्यार आह ते देवेन्द्र हेवराज शहने आ कातना यातत् संहल्प उद्दूषण्या, 'उपण्णे खलु भो जंबुदीवे दीवे भगवं तित्थयरे जं जीयमेयं तीयपच्चुपणमणागयाणं सक्काणं देविदाणं देवराईणं तित्थयराणं जम्मणमिहमं करेत्ता ए' कम्भूदीप नामह द्वीपमां कागवान् तीथ हरने। कन्म धर्ध युष्ठये। छे. प्रत्युत्पनन, अतीत तेमक अनागत देवेन्द्र, देवराक शहीने। परंपरागत आ आयार छे हे तेओ। तीर्थ हरीने। कन्मात्सव उक्वे. स्थिधी 'गच्छामिणं अहं पि भगवओ तित्थगरस्स जम्मण महिमं करेमि त्तिक एवं संपहेइ'

⁽૧) અહીં સંકલ્પના જે 'अज्झत्थिए चिंतिए, किष्पए' વગેરે વિશેષણા છે, તે ગૃહીત થયા છે. એ બધાં વિશેષણ પદાની વ્યાખ્યા યથાસ્થાન ઘણા સ્થાના પર કરવામાં આવી છે.

हिचा' संप्रेक्ष्य निश्चित्य 'हिरिणेगमेसिं पायत्ताणीयाहिवई देवं सहावेइ' हिरिणिगमेषिणम् हरेः इन्द्रस्य निगमम् इच्छतीति हरिनिगमेषी तम् अथवा हरिणैगमेषिणम् हरेः इन्द्रस्य निगमे षीनामा देवस्तम् पदात्यनीकाधिति देवं शब्दयति 'सदावित्ता' शब्दइत्वा आहूय 'एवं वयासी' पवं वक्ष्यसाणप्रकारेण अवादीत् उक्तत्रःन्' किमनादिदित्याह-'खिप्पामेव' इत्यादि 'खिप्पा-मेव भो ! देवाणुष्पिया' क्षित्रमेव अतिशीघ्रमेव भो देवानुप्रिय ! 'सभाष सुहम्माए' सभायां सुधर्मायां 'मेघोधरसियगंभीरमहुरयरसदं' मेघीधरसित गम्भीरमधुरतरशब्दाम् मेघानामोधः संवातो मेघीवः तस्य रसितं गर्जितं तद्वत् गम्भीरो गाम्भीर्ययुक्तो मधुरतारश्च शब्दो यस्याः सा तथा भूताम् ताम् । पुनः को दशाम् 'जोयणपरिमंडलं' योजनपरिमण्डलाम् योजनप्रमाणं परिमण्डलम् वृत्तत्वं यहयाः सा तथाभूता ताम् । पुनः कीहशाम् 'सुघोसं सुसरं घंटं' सुघोषां नाम सुरुशां घण्टाम् 'दिक्खुत्तो उछालेमाणे उछालेमाणे' दिः कृत्वः त्रीन दारान् उरलाल-यन् इल्लालयन्=तालयन् तालयन् 'महया महया सदेणं उग्घोसेमाणे उग्घोसेमाणे एवं वयाहि' महता महता बृहता बृहता शब्देन उद्घोषयन् उद्घोषयन् एवं वश्यमाणप्रकारेण वर्-ब्छिह 'आणवेड णं भो ! सक्के देविंदे देवराया' आज्ञापयति, आदिशति खळु भो देवाः ! शको जाऊं और मैं भी भगवान तीर्थंकर के जन्म की महिमाकर । ऐसा विचार करके उसने 'हरिणेगसेसि पायसाणीयाहिवइं देवं सदावेइ' हरिनैगमेषी-नामके देव को जो कि पदात्यनीक का अधिपति होता है बुलाया 'सदावित्ता एवं वयासी' और बुलाकर उससे ऐसा कहा-'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सभाए सुह-म्माए मेघोषरशिक्ष गंभीरमहुरयरसदं जोयण परिमडलं सुघोसं सुसरं घंदं तिकखुत्तो उल्लाखेमाणे २ महया महया सदेणं उग्घोसेमाणे उग्घोसेमाणे एवं वयाहि' हे देवानुभिय ! तुम शीध ही खुधनी सभामें मेघ के समृह की जैसी आवाज करनेवाली, गंभीर मधुरतर शब्द वाली एवं अच्छे स्वरवाली ऐसी सुघोषा घंटाको कि जिसकी गोलाई एक योजन की है तीन वार बजा बजा कर ऐसी बार बार जोर जोर से घोषणा करते हुए कही-'आणवेणं भो सक्के

हुं त्यां का अभी लगवान तीर्थं इरना जन्मने। महिमा इतुं. आ प्रमाणे विश्वार हरीने तेणे 'हरिणेगमेसिं पायत्ताणीयाहिवइं देवं सहावेद्दं हरिनेगमेथी-नाम हेवने हे जे पहात्यनीहिते। अधिपति हिाय छे. भादावित्ता एवं वयासीं अने भादाविने तेने आ प्रमाणे हहुं-'खिप्पासेव मो देवाणुप्पिया! समाए सहम्माए मेघोघरसिअगंभीरमहुर-यरसदं जोयणपरिमंडलं सुघोसं सुसरं घंटं तिक्छुत्तो उल्लालेमाणे २ मह्या २ सदेणं उच्चोसे-माणे उच्चोसेमाणे एवं वयाहि' हे देवानुप्रिय! तमे शीह सुधर्मा सलामां मेध-समूहना जेवी ध्वनि हरनारी, गंभीर मधुरतर शण्डवाणी तेमक सारा स्वरवाणी अवी सुधाया धंटाने हे केनी भाणाई अह थेकन केटली छे, त्रणु वार वगाडी वगाडीने सेवी वारंवार केर केर केरी घेषणा हरतां हिंद हेवराया गच्छइ ण मो सक्के देविंदे देवराया गच्छइ ण मो सक्के

देवेन्द्रो देवराजः किमित्याह-'गच्छइ णं' इत्यादि 'गच्छइ णं भो ! सके देविदे देवराया जंबुदीवे दीवे भगवओ तित्थयरस्स जम्मजमहिमं करित्तए' गच्छति खल भो देवाः' शको देवेन्द्रो देवराजः जम्बुद्वीपे द्वीपे भगवतस्तीर्थकरस्य जनममहिमानं जन्ममहोत्सवं कर्तुम् 'तं तुब्भे वि णं देवाणुष्पिया' तद् यूयमपि देवानुष्रियाः ! भवन्तो देश ! 'सव्दिद्धीए सव्व-जुइए' सर्देखची सर्वसंपदा सर्वेष्ट्रत्या सर्वकान्त्या 'सन्वक्षेणं सन्वसम्रदएणं' सर्वविने सर्वसमुद्रयेन 'सब्बायरेणं सब्बविभूईए' सर्वा रेण शर्वविभूत्वा 'सब्बविभूसाए' सर्वविभूषया 'सन्वसंभमेणं सन्वणाड एहिं' सर्वसंश्रमेण सर्वनाट कैः 'सन्वीवरोदेहिं' सर्वे परोधेः उपरोधः बाधा सर्ववाधायुक्तेरपीत्यर्थः 'सञ्बद्धप्फगंधमल्लालंकारविभूसाए' सर्वेपुष्पगन्यमाल्यालङ्कार-विभूषया 'सञ्वदिन्यतु डियसदस्रिणणा एणं' सर्वदिन्यत्र टितशब्दस्र धिनादेन 'सहया इद्धीए देविंदे देवराया, गच्छहणं मो सक्के देविंदे देवराया जंयुदीचे दीचे भगवओ तित्थयरस्स जम्मणमहिमं करेत्तए' हे देवो ! देवन्द्र देवराज शक आप छोगों को आज्ञा देता है कि मैं देवेन्द्र देवराज शक जम्बूदीय सामके खीय में भगवान तीर्थंकर के जन्म की लहिसा करने के लिये जारहा हूं 'तं तुब्से वि णं देवाः पिया ! सविबद्वीए सञ्बज्जुईए सञ्बबलेणं सञ्बस्यसुद्धणं सञ्बायरेणं सञ्बबिभूईए सद्वसंभमेण सद्वणाडएहिं सद्योवरोहेहिं' तो इस्लिये हे देवानुष्रियो ! आप अपनी समस्त द्युति से अपनी अवनी सनस्त सेना से अवने समस्त समुद्य से, सगरत प्रकार के आदर भाग से समस्त प्रकार की विभृति से समस्त प्रकार के विभूषा से एवं समस्त प्रकार के नाइकों से युक्त होकर इन्ह के पास आ जावे चाहे किसी भी प्रकार की अपलोगों को बाधा भी हो तो भी उसका ध्यान न करें और जीव आवें 'सब्बपुष्फ अंघ मतलार्जकार विभूसाए सब्बद्धिवतुडिय-सदस्रिणणाएणं मह्या इद्धीए जाव रवेणं' साथ में जो देव जिल प्रकार सुगं-

देविंदे देधराया जंबुदीवे दीवे भगवंशो तित्थयरस्स जम्सणमित्मं करेत्तए' हे देवे। देवेन्द्र देवराज शक्ष तभने आहा करे छे के हुं देवेन्द्र देवराज शक्ष जम्मूदीय नामक द्वीपमां लगवान तीर्थ करना जन्मने। मिल्रिमा करवा भारे जर्न रहारे छुं, 'तं तुन्मं वि णं देवा गुण्लिया! सिन्बद्धीए सन्वज्जुईए, सन्वब्रेलेंगं, सन्वाकरेणं, सन्वविमूईए, सन्विभूमाए, सन्व संभमेणं, सन्ववाहएहिं सन्तिकरोहेहिं' ते। बोटेका भारे हे देवानुविधी तमे भवां पेति पेतिनी समस्त अद्विधी, पेतिपेतानी समस्त धृतिधी, पेतिपेतानी समस्त मिल्रिमे विभूतिवी, पेतिपेतानी समस्त भारत प्रकारनी विभूतिवी, समस्त प्रकारनी विभूतिवी, समस्त प्रकारनी विभूतिवी तेमक समस्त प्रकारना नाटकेशी सुक्त धर्मने छन्द्रनी पासे अवी पहेंथि केशि पण्ण ज्वतनी आधा पण्ण हिया ते। ते तरह सहय राभवं निहें अने तुरंत छन्द्र पासे पहेंथी ज्वं 'सन्त्र पुरक्तंधनस्त्रालंकारिक्मूसाए सन्त्रदिन्व सुद्धिय सहस्तिणणणाएणं मह्या इद्धीए जाव रवेणं' अने के देव के प्रकारना सुवित पुष्पे नी

जाव रवेणं' महत्या ऋद्ध^{च्}। यावत् रवेण अत्र यातत् पदेन 'महया हयण्ट्टगीयवाइय तंतीतलः तालतुष्डि अघण धुइंगपडुपड्याइय' इत्येषां पदानां ग्रहणं भवति व्याख्यानं तु अस्मिन्नेत् सत्ते पूर्वे द्रष्टव्यम् 'णिअय परिआलसंपरिवुडा' निजकपरिवारसम्परिवृताः 'सयाई जाणविमाणं-वाहणाई दुक्टा समाणा' स्वकानि स्वकानि वाहनानि य शिविकादीनि आक्टाः सन्तः 'अकाल-परिहीणं चेव' अकालगरिहीणम् – निर्विलम्वं यथास्यात्तथा चैव 'सक्षस्स जाव अंतियं पाउब्भ-वह' शकस्य यावदन्तिकं समीयं प्रादुभवत अत्र यावत्यदात् देवेन्द्रस्य देवराजस्य इति ग्राह्मम्

'तए णं से हरिणेगमें तो देवे पायचाणीयाहिबई सकें वे जाव एवं वुचे सभाणे हद्व तुष्ट जाव एवं देवोचि आणाए विणएणं वयणं पिडसुणें हे रे ततः शक्रादेशानन्तरं खल्ल स हिर्मित पुष्पों की माला पिहनता हो, जो जिस प्रकार के अलंकार पिहनता हो यह उस प्रकार की आला से एवं अलंकार से सजधज कर आवें हाथों में कडे सुजाओं में लुटित—सुजवंध आदिकों से रहित न आवे आते समय वह दिव्य बाजों की तुसुल ध्वनि के साथ आवे यहां यावत दाव्द से 'महयाहयणहगीयबाहयतंतीतलगाललुडियधणसुदंगपडुपड्ट बाइअ' इस पाठका संग्रह हुआ है इन पदों की पिहले कई बार व्याख्या की जा चुकी है भो वहीं से इसे देखलेना चाहिये 'णिथयपरियाल संपरियुडा सयाई २ जाणविमाणवाहणाई दुरूढा समाणा अकालपरिहीणं चेव सक्कश्स जाव अंतियं पाउटमें हे' आते समय में अपनी अपनी इन्द्र भंडली सिहत एवं परिवार सिहत आवें और आनेमें विलम्ब न करें अविलम्ब आवें आनेके लिये सब अपने यान विमानों का उपयोग करें — अर्थात् यान विसान पर चढ चढ कर आवें और आ करके दाक के पास उपस्थित हो जावें 'तएणं से हरिणेगमेसी देवे पायत्ताणीयाहिबई सक्केणं ३ जाव एवं सुत्ते समाणे इडलुड जाव एवं देवोच्ति आणाए दिणएणं व्यणं पडिसुणेइ, पडिनुचे समाणे इडलुड जाव एवं देवोच्ति आणाए दिणएणं व्यणं पडिसुणेइ, पडिनुचे समाणे इडलुड जाव एवं देवोच्ति आणाए दिणएणं व्यणं पडिसुणेइ, पडिनुचे समाणे इडलुड जाव एवं देवोच्ति आणाए दिणएणं व्यणं पडिसुणेइ, पडिनुचे समाणे ह्या समाणे ह्या हुने समाणे हुने हुने समाणे हुने समाणे हुने समाणे हुने समाणे हुने समाणे हुने समाणे हुने समाणे हुने हुने समाणे हुने हुने समाणे हुने हुने हुने हुने हुने हुने हुने समाणे हुने हुने हुने हुने हुने हुने हुने

माणा पहिरे छे, के देव के प्रकारनां अलंडारा पहिरे छे, ते देव ते प्रकारनी माणाओं तेमक अलंडाराधी अही। कित धर्म ने आवे हाथामां इट्टी, लुल कामां इटित-लुक मधा पहिरीने आवे. अवता समये तेथा दिव्य वाद्योना तुमुल ध्विन साथे आवे. अहीं यावत् शण्दथी 'महणहयणहृगीयवाइयतंतीतलतालतुिं च्यणमुइंगवलुपल्हवाइअ' आ पहिनी संबह श्वी छे. ये पहेनी व्याप्या पहेलां ध्वीवार करवामां आवी छे. ते। किशासुक्षा लांधी वांथवा प्रयत्न करे. 'णियय-परियालसंपरिवृक्षा स्वाइं र जाणविमाण वाहणाइं हुक्ला समाणा अकालपरिहीणं चेव सक्कास जाव अंतियं पाउटमवह' तेथा पात-पातानी ध्रुष्ट मंडली कहित तेभक पाताना परिवार सिलत अहीं आवे अने त्वित अतिथी आवे अने त्वित अतिथी आवे अने त्वित अतिथी आवे अने त्वित अतिथी आवे अविश्व क्षित तेथा पात्रियी आवे अविश्व क्षित तेथा अधा पात्रियी आवे अविश्व क्षित तेथा अधा पात्रियी त्रियी कावे अवविश्व क्षित तेथा अधा पात्रियी आवे अविश्व क्षित विश्व श्वी कावे अने त्वित क्षित कावे आविश्व क्षित विश्व श्वी कावे अने अविश्व क्षित कावे काविया हित्र श्वी कावे अने काविया हित्र सक्केणं ३ जाव एवं वृत्ते समाणे हृद्र तुर्ह विष्ट ण से हित्र पायत्ताणीशहित्र सक्केणं ३ जाव एवं वृत्ते समाणे हृद्र तुर्ह

नगमेषीदेवः पदात्यनीकाधिपतिः शक्रेण यावत एवम्र=उक्तप्रकारेण उक्तः सन् हृष्टतुष्ट यावत् एवं देव ! इति आज्ञाया विनरेन वचनं प्रतिश्रृणोति स्वीकरोति । अत्र प्रथमयावत्पदात दैवेन्द्रेण देवराजेन इति संग्राह्यम् द्वितीययावत्पदात चित्तानद्वितः ग्रीतिमनाः परमसौमन-स्यितः इपेवशविसपेद हृदयः इति ग्राह्मम् । 'पह्निमुणेत्ता' प्रतिहृत्य स्वीकृत्य (सकस्स देवि-दम्स देवरण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमह' शक्रम्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य अन्तिकात समीपात प्रतिनिष्कामति निर्गच्छति 'पडिणिक्खिमचा' प्रतिनिष्कस्य निर्गत्य 'जेणेव सभाए सहस्माए मैघोघरसिअगंभीरमहरयरसहा जोयणपरिमंडला सघोसा घंटा तेणेव उदागच्लह' यत्रैव सुधर्मायां सभायां मेघीधरसितगम्भीरमध्रतरशब्दा मेघानाम्रेषः संघातः मेघीधस्तस्य रसितम गर्जितं तहत् गम्भीरो मधुरतम्श्र शब्दो यस्याः सा तथाभृता एवं योजनपरिमण्डला योजनपरिमण्डलं भावप्रधाननिर्देशात पारिमाण्डल्यं वृत्तत्वं यस्याः सा तथाभूता सुघोषा तकाम्नी घण्टा तत्रेव उपागच्छति 'उवागच्छिता' उपागत्य 'तं मेघोघरमि अगंभीरमदृरय-रसदं जोयणपरिमंडलं सुघोसं घंटं तिवलुतो उन्लालेड्' तां मेघौघरसितगम्भीरमधुरतर-सुणिसा सक्कस्स ३ अंतियाओ पिडणिक्लमह' इस प्रकार वह हरिणेगमेषी पदात्यनीकाधिपित देव जब अपने स्वामीभून देवेन्द्र देवराज शक के द्वारा आज्ञापित हुआ तो वह हृष्ट पुष्ट यावत होकर कहने लगा 'हे देव! आपकी आज्ञा हमे प्रमाण है-जैसा आपने आदेश दिया है हम वैसा ही करेंगे' इस प्रकार से बड़े विनय के साथ उसने अपने प्रभुकी आज्ञा के वचनों को स्वीकार कर लिया और स्वीकार कर वह इन्द्र के पाम से चला आया 'पडिणिक्खमिना जेणेव सभाए सहस्माए मेघोघरसिय गस्भीर महरयरसदा जोयणपरिमंडला सुघोसा घंटा-तेणेव उवागच्छइ' आ करके वह जहां सुधर्मासूक्षा में मेघ के समृह के शब्द जैसीगंभीर मधुरतर शब्दवाली एवं एक योजन के परिमंडलवाली सुघोषा नामको घंटा थी वहां पर आया 'उवागच्छिता तं मेघोघरिसअ गम्भीरमह रघर-

जाव एवं देवोत्ति आणाए विणएणं वयणं पित्रमुणेइ, पित्रमणित्ता सक्कस्स ३ अंतियाओ पित्रणिक्खमइ' आ प्रभाष्ट्रे ते क्षित्रिंगमेषी पदात्यनीक्षिपति देव लयारे पेत्ताना स्वाभी-भूत देवेन्द्र देवराल शक्ष वडे आज्ञापित थये। ते। ते हुन्द्र-तुन्द्र यावत् थर्धने क्षेत्रेवा खान्ये।-'हे देव! तमारी आज्ञा अभारा भाटे प्रमाण छे. ले प्रभाष्ट्रे आपश्रीके आदेश आप्ये। छे, अभे ते प्रभाष्ट्रे ल करीशं.' आ प्रभाष्ट्रे अक्षण विनय प्रविक तेष्ट्रे तेष्ट्रे पेताना प्रभानी आज्ञाना वयने। स्वीक्षारी लीधं अने स्वीक्षारीन ते धन्द्रनी पासेथी रवाना थये।. 'पिडिणिक्खमित्ता जेणेव सभाए सहम्माए मेघोघरसियगंम्भीरमहुरयरमहा जोयणपरिमंडला सुघोसा घंटा-तेणेव खवागच्छइ' रवाना थर्धने ते ल्यां सुधभीसक्षाभां मेघाना समुद्ध लेवी अंकीर, भधुरतर शण्डवाणी तेभल क्षेष्ठ थे।लन. परिभंडणवाणी सुधाषा नामनी धंटा हृषोसं आन्थे।. 'खबागच्छिता त' मेघोघरसिक्ष गम्भीरमहर्यस्य जोरणपरिमण्डलं हृषोसं

शब्दां योजनपरिमण्डलां सुघोषां तन्नामनीं घण्टां तिः कृत्वः वारत्रयम् उल्लालयति वाश्यति ताड्यतीत्वर्थः। 'तएणं तीसे मेघोषरसिअगंभीरमहुर्यरसद्दाए जोयणपरिमंडलाए सुघोसाए घंटाए तिक्लुक्तो उल्लालिआए समाणीए सोहम्ये कप्पे अण्णेहिं एम्णेहिं वक्तीसिवमाणा-वाससयसहस्सेहिं' ततः घण्टाताडनातन्तरं खलु तस्यां मेघोषरसितग्रममीरमधुरतरशब्दायां योजनपरिमण्डलायां सुघोषायां तिः इत्वः उल्लालितायां ताडितायां सत्यां सौघमें कर्षे अन्येभ्यः एकोनेभ्यो हात्रिशद् विमानावामशतसहस्रभ्यः, अत्र सप्तम्यथें तृतीया तेन अन्येषु एकोनेषु हार्तिशद् विमानावासशतसहस्रेषु हार्तिशद् विमानरूपाः ये आवासाः देववासयोग्यानि विमानानि तेषां अतसहस्रेषु हार्तिशक्लक्ष्यसंख्यकिमानेषु इत्यर्थः, 'अण्णाइं एगूणाइं वक्तीमं घण्टासयमहस्माइं जमगनममं कणकणारावं काउं पयत्ताइं हृत्था इति' अन्यानि एकोनानि हार्त्रिशचण्डाशतसङ्खाण एकोनान्हार्त्रिशचल्क्ष संख्यायुक्ता घण्टा इत्यर्थः। यमकस्मकं युगपत् कणकणारावं कणकणारावं कर्णु प्रवृत्तानि आसन् इति। घण्टानादतो यत्प्रवृत्तं तदाह-'तए णं सोहम्मे कप्पे पासायविमाणनिक्खुडायडिशमदसमुद्विअ घंटापडेसुआ सयस्समं कुले जाए आवि होत्था' ततः वण्टानां कणकणशब्दप्रवृत्तरनन्तरं खलु सौधमेः कल्पः

रसई जीयणं परिमण्डलं सुघोसं घंटं तिक्खुसो उल्लालेइ, तए णं तीसे मेघोघर-सिअ गम्भीरमहुरयरसदाए जोयणपरिमण्डलाए सुघोसाए घण्टाए तिक्खुसो उल्लालिआए स्थाणीए' वहां आकर के उलने छेघोघ के रसित के जैसी गंभीर मधुरतर शब्दवाली एवं एक योजन परिमण्डलवाली सुघोषा घंटा को तीन वार ताडित किया इस प्रकार उस मेघोघ के रिक्षत के जैसी गंभीर मधुर तर शब्दवाली एवं एक योजन परिमण्डलवाली सुघोषा नामकी घंटा के तीन वार ताडित होने पर 'सोहम्मे कप्पे अण्णेहिं एग्णेहिं यतीसविमाणाबासस्यसहस्सेहिं अण्णाइं एग्णाइं वतीसं घण्टास्य सहस्साइं जमगलमगं कणकणारावं काउं पयत्ताइं हुत्था इति' सौघर्म कत्प यें और भी १ कम ३२ लाख विमानों में १ कम ३२ लाख और भी दूसरी घंटाएं एक साथ कणकण शब्द करनेलगी 'तएणं से सोहम्मे

घंटं तिक्खुत्तो उल्लालेइ, तए णं तीसे मेथोघरित गम्भीरमहुयरसदाए जोयणपरिमण्डलाए सुघोसाए घण्टाए तिक्सुत्तो उल्लालिआए सधाणीय' त्यां आवीने तेषे मेधाधना रिसत लेवी गंभीर, मधुरतर शण्डवाणी तेमल એક येलन परिमांउणवाली सुधाषा धंटाने त्रज्ञ वार ताउत करी आ प्रसासे ते मेधाधना रिसत लेवी गंभीर, मधुरतर शण्डवाणी तेमल के येलन परिमण्डवाणी सुधाषा नामक धंटा त्रज्ञ वार ताउत करवामां आवी त्यारे 'सोहम्मे कृष्ये अण्णेहिं एगूणेहिं बतीस विमाणावाससयसहस्सेहिं अण्णाइं एगूणाइं बत्तीसं घण्टासयसहस्सोइं जमगसमगं कणकणारावं काउं पचताइं हुत्था इति' सीधमि हल्पमां ओक कम उर काण विभानामां, १ कम उर काण भीळ धंटाओ। ओकी साथ गनन वन्न राजुकी एकी. 'त्या णं से सोहस्मे कृष्ये पासायविमाणनिक्सनुडाविक सहसन

प्रासादिवमाननिष्क्रदापितक्षव्यसम्भित्ववण्टाप्रतिश्चतक्षतस्त्रसंकुलो जातश्रापि आसीदिति तत्र प्रासादानां विमानानां वा ये निष्क्रटाः गम्भीरप्रदेशाः तेषु ये आपितताः संप्राप्ताः शब्दाः शब्दवर्गणाः पुद्गलाः तेभ्यः सम्रत्थितानि यानि घण्टा प्रतिश्चुतानां घण्टा सम्बन्धि प्रति-शब्दानां शतसदस्राणि लक्षपरिमितानि तैः संकुलो व्याप्तो जतश्राप्यभूदित्यर्थः घण्टायां महता प्रयस्नेन ताडितायां ये विनिर्गताः शब्दपुद्गलास्तान् प्रतिघातवश्वतः सर्वीसु विक्षु विदिश्च च दिव्यानुभावतः समुचलितैः प्रतिशब्दैः सकलोऽपि सौधर्मः कल्पो विधरो जात इति भावः

प्वं शब्दमये सौधमें करपे सञ्जाते सित किं जातं तदाह 'तए णं' इत्यादि 'तएणं तेसिं सोहम्मकप्पवासीणं बहुणं वेमाणियाणं देवाण य देवीणय एगंतरइएसचिणचपमचिसय- सुद्दमुच्छियाणं' ततः शब्दव्याप्त्यनत्तरं खल्ल तेषां सौधमेकरुपवासिनां बहुनां वैमानिकानां देवानां देवीनां य एकान्तरतिष्रसक्तिन्त्यप्रमचिषयगुल्यमूर्चिछतानाम् एकान्तेन रतौं संभोगे प्रसक्ताः आसक्ताः एत एव नित्यप्रमचतः विषयगुलेषु मूर्चिछताः अध्यपप्ताः अत्र कर्मशास्यः तेषाम् 'स्त्रसर् घंटाइसिश्र विजल्वोलप्रिश्रद्दवलपि बोहणे कए समाणे घोसण-कोक्तरलदिण्यकण्णएगग्गचित्त उवल्यसमाणसाणं' सुस्वर घण्टारसितविषुल्वोलप्रितचपलप्रति-

कणे पासायविमाणितक्खुडाविडअसदसमुहिअ घंटापडेंसुआ स्यसहस्स-संकुछे जाए यावि होत्था इति' इस तरह वह सौधर्म कला प्रासादों के एवं विमानों के निष्कुटों में गंभीर प्रदेशों में अप्रति शब्दवर्मणारूप पुद्गलों से उत्पन्न हुइ लाखों घंटा प्रतिष्विनयों से व्याप्त हो गया विधर जैसा बन गया 'तएणं' इस प्रकार शब्दमय सौधर्मकल्प के हो जाने के बाद 'तेसिं सोहम्मकणवासीणं वहुणं वेमाणियाणं देवाग य देवीण ण एगंतरइपसत्तिणच्चपमत्तविसयसह-मुच्छियाणं' उन बहुत से सौधर्मकल्पवासी देव और देवियों को जो कि एकात रित किया में प्रसक्त थीं और इसी कारण जो विषय सुखमें इकदम मूर्च्छित हो रही थीं उन्हें 'सूसर घंटारिसथविउल्योल पूरिय चवल वोहणं कए समाणे' सुस्वर घंटा-सुघोषा घंटा के उस सकल सौधर्म देवलोक कुक्षिंभरी कोलाहल से

मुद्रिअ घंटापडें सुआ सयसहस्वसंकुले जाए यावि होत्या इति' का प्रभाषे सौधर्भ इत्य प्रासाहोना तेमक विभानेना निष्कुरेतमां, गंभीर प्रहेशेतमां व्या प्रति शण्ध वर्णणा इप पुह्रियोशी उत्पन्न थयेला लागे। धंटाओना ध्वनियोना अणु अणुर्द्यो ते सक्ष भूलाग अधिर केवा अनी गये। 'तक्षं' ते आ प्रभाषे क्यारे सौधर्म इत्य शण्डमय अनी गये। त्यारे 'तेसिं सोहम्मकप्पासीणं बह्णं वेमाणियाणं देवाण य देवीण ण एगं-तरइपसत्तिणच्चपमत्तविसयसहमुच्छियाणं' ते धणु सौधर्म इत्यवासी देव अने देवी-योने है केथे। योक्षान्त रितिष्ठियायोगां तत्वीन द्वता अने येथी क केथे। विषय सुअभां योक्षान आहं दुर्शी रहा। द्वतां 'सूसरघंटारिसय विद्य बोल पृत्ति चवल बोहण कर समाणे' ते सर्वने क्यारे सुस्वर घंटा-सुधाध घंटाना—ते सक्ष सौधर्म देवला द्विश्वार द्विश्वरी

बोधने कृते सित घोषणकुतृहल दत्तकणैंकाप्रचित्तोपयुक्तमानसानाम्, तत्र सुस्वरा, या घण्टा तस्याः रसितं वादितं वादनं तस्थात् वियुलः सकलसीधमेदे लोके संजातो यो बोलः—कोला- हलः तेन पूरिते परिपूर्णे चपले ससम्भ्रमे प्रतिबोधने कृते सित आगामिकासम्भान्यमाने घोषणे कुतृहलेन किमिदानीमुद्घोषणं भिव्यतीत्यात्मकेन दत्ताः कर्णाः यैस्ते तथाभूताः तथा एकाप्र घोषणश्रवणैकविषयं चितं येषां ते तथाभूताः, तथा उपयुक्तानि मानसानि एषां ते तथाभूताः श्रवणविषयीभूतवस्तुग्रहणप्रवृत्त मानस इत्यश्चः ततो विशेषणसमासः तेषाम् 'पायत्ताणीशहिवई देवे तंसि घंटार्र्वसि निसंतपिरसंतंति समाणंसि तत्थ तत्थ तिर्हे तिर्हे देसे महया महया सदेणं उग्घोसेमाणे उग्घोसेमाणे एवं वयासीति' स शकाज्ञाकारी पदात्यनीकाथिपते देवः तिस्मत् घण्टारवे निशान्तप्रशान्ते नितरां शान्तः निशान्तः अत्यन्तमन्दभूतः ततः प्रकर्षेण सर्वत्मत् शान्तः पश्चनः पश्चः ततो विशेषणसमासम्तिमत् सित तत्र तत्र महति देशे तिस्मत् तिस्मत् देशैकदेशे महता महता शान्तः ततो विशेषणसमासम्तिमत् सित तत्र तत्र महति देशे तिस्मत् तिस्मत् देशैकदेशे महता महता शान्तः त्रात्तारस्वरेण उद्घोषयन् उद्घोषयन् एवम् वस्यमाण प्रकारेण अवादीत् उक्तवन्तः (इन्त ! मुणंतु भवंतो वहवे सोहम्मकप्पवासो वेमाणीय- देवा देवीओय सोहम्मकप्पवाइणो इणमो वयणं हिययसहत्यं आणवई णं भो सके तं चेव जाव अंतिअं पाउन्भवहत्ति' इन्त ! इति हर्षे शृण्यन्तु भवन्तो बहवः सौधर्मकल्पवासिनो वैमानिका परिपूर्णं ससंभ्रम प्रतिबोधन किये जाने पर 'घोस्तणकोऊहलदिण्णकण्णग्यगाचित्त उच्चन्तमाणसाणं से पायत्ताणीयाहित्व देवे तंसि घंटारवंसि णिसंत-परिसंतिस समाणंसि तिर्हं २ देसे महया २ सदेणं उग्घोसेमाणे २ एवं वया-

चित्त उचउत्तमाणसाणं से पायत्ताणीयाहिवइ देवे तीस घंटारवीस णिसंत-परिसंतिस संमाणिस तिहें २ देसे महया २ सहेणं उग्घोसेमाणे २ एवं वया सीति' तथा घोषणाजन्य कीतृहल से जिन्हों ने उस घोषणा के सुनने में अपने कानों को लगाया है और इसीसे जिनका चित्त एकाग्र होकर उस घोषणाजन्य कौतुहल में उपयुक्त हो रहा है, तथा शुञ्जूषित चस्तु के ग्रहण करने में जिनका मन उतावलीवाला बन रहा है ऐसे उन देवों के हो जाने पर उस पदात्यनी-काधिपति देवने उस घंटारव के अत्यन्त शान्त प्रशान्त होते ही उन उन स्थानों पर जोर जोर से घोषणा करते हुए ऐसा कहा 'हंत ! सुणंतु भवंतो बहवे सोह-म्मकप्यवासीवेमाणिया देवा देवीओ य सोहम्मकप्यवहणो इणमो वयणं हिययसु-

है। बाहु बधी परिपूर्ण ससंक्षम स्थितिमां प्रतिभाधित हर्या 'घोसणको उह्ह हिण्णकणण-एगगाचित्त उव उत्तमाणसाणं से पायत्ताणीयाहिवइ देवे तंसि घंटा रवंसि णिसंतपि संतिसि समाणंसि तिहं र देसे महया र सहेणं उग्वोसेमाणे र एवं वयासीति' तेमक धेष्णुः कन्य हीतू हु बधी केमे छे ते धेष्णुं सांस्माणा पोताना हाने। बणाव्या छे अने अधीक केमना थित्तो अंकाय यहने धेषणा कन्य हीतू दुवमां उपयुक्त यह रह्या छे. तथा शुक्रु-षित वस्तुना अहुण् हरवामा केमनुं सन छ हिंदित यह रह्यं छे, अवा ते हेवे। यह जयां त्यारे ते पहात्यनी हिंदित हेवे ते धं टारव पूर्णु इपमां शान्त—प्रशान्त यह गये। त्यारे ते स्थाने। उपर कोर-कोरथी धेषणा हरतां हिंदुं 'हंतं। सुणंतु सवंतो बह्दे सोहुम्मक प्यासी

देवाः देव्यश्र सौधर्मकल्पपतेः शकस्येदं वचनं हितसुखार्थम् हितं जनमःन्तरकल्याणवहं सुखं तद्भवसंबन्धि–इहलोक पर्लोकसुखजनकं तद्र्थमाज्ञापयति खलु भो देवा! क्षकः तदेव होयम् यावत् अन्तिकम्-यत् प्राक्सत्रे शकेण हरिनैगमेषिणः पुरतः उद्घोषयितच्य-मादिष्टं यावत् तत्सर्वे प्रादुर्भवत इति । 'तएणं ते देवा देवीओ य एयमहं सोचा इह तह जाव हिअया अप्पेगइया वंदणवत्तियं एवं पूथणवत्तियं सकारवत्तिअं सःमाणवत्तिअं दंसणवत्तिअं जिणभत्तिरागेणं अप्पेगइया तं जीयमेअं एथमादित्ति कट्ट जाव प उच्मवंतित्ति' ततः पदात्यनी-काधिपतिर्देवमुखात् शकादेशश्रवणानन्तरं खल्ज ते देवाः देव्यश्च एवम् अनन्तरपूर्वकथितम् अत्थं' हे सौधर्मकल्पवासी देव और देवियों आप सब बडे हर्ष के साथ सौधर्म-कलपपति के हितसुखार्थ इन बचनों को सिनये यहां 'हन्त' शब्द प्रकर्ष हर्ष का चोतक है यह वचन जन्मान्तर में कल्याण का कारण है इसलिये हित स्वरूप है और इस भवमें सुखका दायक है अतः सुखार्थरूप है 'अणावईणं भी सक्के तं चेव जाव अंतिअं पाउदभवहत्तिं वह हितसुखार्थक वचन सौधर्मकलपपतिके इस प्रकार से हैं-कि आप सब शीध ही यावत् शक के पास उपस्थित हों इस प्रकार जैसी घोषणा करने का आदेश पदात्यनीकाधिपति हरिनिगमेषी देवको शकने दिया था वह राव राक का आदेश 'आप सब राक के पास आकर उपस्थित हो जावे['] यहांतक का उसने घोषणा करके सुनादिया 'तएणं ते देवा देवीओ य एयमहं सोच्चा हट तुट जाव हियया अप्पेगइया बन्दणवित्तयं एवं पूअणवत्तियं सक्कारवत्तियं दंसणवत्तियं जिणभत्तिरागेणं अप्पेगइया तं जीय-मेयं एव मादित्ति कर्डु जाव पाउब्भवंतित्ति' इसके बाद वे देव और देवियां इस षातको सुनकर हृष्ट तुष्ट यावत हर्ष से जिनका हृदय उछल रहा है ऐसी हो

वैमाणिया देवा देवीओ य सोहम्मकण्य इणो इणमो वयणं हिययमुअसं' & सीधर्म डक्ष्यासी देव अने देवीओ। आप सर्वे अतीव आनंह पूर्वं ह सीधर्म डक्ष्यतिमां दितसुआर्थ मारा आ वयने। सांक्णा—अहीं 'हन्त!' शण्द प्रध्यं हर्ष द्यांत छे. आ वयन जन्मान्तरमां पण्ड डक्ष्याणु डारी छे स्थि दित स्वरूप छे अने आ क्षयमां सुणहायह छे, सेथी सुणार्थ रूप छे 'आणवईणं मो सक्के तं चेव जाव अंतिअं पण्डमवहत्ति' दित सुणार्थं वयन सीधर्म डक्ष्यपतिन् आ प्रमाणे छे—हे आप सर्व शीध्र यावत् शहनी पासे उपस्थित थासे। अमाणे छेन्हे आप सर्व शीध्र यावत् शहनी पासे उपस्थित थासे। आप्रां हर्यानी आहा हरी हती, ते शहनी 'आप सर्वे शहनी पासे शीध्र उपस्थित थासे। अश्वी सुधीनी आहाने देवाना रूपमां संक्ष्याची हीधी. 'तए णं तं देवा देवीओय एयमहं सोच्या हट्टतु जाव हियया अप्येगइया वन्दणवित्तंय एवं पूअणवित्तयं सक्कारवित्तं दंसण वित्तयं जिणभित्तरागेणं अप्येगइया तं जीश्मेवं एवमादित्तं कट्ट जाव पाडव्भवित्तं त्यार आह ते हेव अने हेवीओ। स्व वातने सांक्णीने हुष्ट—तुष्ट यावत् दर्धंथी

अर्थे आह्वान शब्दं श्रुत्वा हृष्टतुष्ट् यावत् हृद्याः यावत्पदात् हृष्टचित्तानन्दिताः प्रीतिमनसः परमसौमनस्यिताः हर्षयश्चिसपेद हृद्याः अप्येककाः केचन देवा देव्यश्च वन्द्रनप्रत्ययं वन्द्रनं अभिवादनं प्रशस्तकायवाङ्मनः प्रवृत्तिरूपं तत्प्रत्ययं तदस्यासिस्धियवनभर्तृकस्य कर्तव्यिमिः त्येवं निमित्तं जन्मसमये वन्दनार्थसमनरूपं एवं पूजनपत्ययम् पूजनम् अन्तःकरणेन नमस्करणम् तत्प्रत्ययम् तत्कारणकम् एवं सत्कारप्रत्ययम् सत्कारः स्तत्यादिभिः मुणोष्ट्रतिकरणं तत्त्रत्ययम् तिविभित्तं सन्मानप्रत्ययम् सन्मानः अञ्चलिपुटसंयोजनमभ्यु-त्थानादिलक्षणम् तस्त्रस्ययम् दर्शनदस्ययम् दर्शनम् ऋषभतीर्थकरस्य विलोकनम् तस्त्रस्यपम् तिमित्तम् जिनभक्तिरागेण जिनमेमानुरागेण वा, अप्येकका केचित् देवादेव्यश्च अस्माकं देवानां देवीनां य तज्जीतमेतत्-आचारः, एषः यत् देवैर्निनमहोत्सवे गन्तव्यम् एव मादी-त्यादिकम् आगमननिमित्तमिति क्रत्या चित्तेऽवधार्य यावत् प्रादुर्भवन्ति प्रकटी भवन्ति ते देवा इति । अत्र यावत्पदात् 'अकालपरिहीणं सक्तस्स देविदस्स देवरण्यो अंतियं' इति प्राह्मस् । गई। इनमेंसे कितनीक देव देवियां इस अभिप्राय से राक इन्द्र के पास आई कि यहां चलकर हमलोग जिसुवन भट्टारक को प्रशस्तकाय बाङ्ः मनकी प्रवृति-रूप अभिवादन करेंगी कितनी देव देवियां इस अभिवाय से इन्द्र के पास आई कि वहां चलकर इपलोग गन्ध मास्यादिक का अर्पण करते हुए प्रभुको अन्तः-करण से नहस्कार करेगी कितनीक देव देवियां इस अभिपाय से शक के पास आई कि वहां चल कर इमलोंग प्रभु की स्तुति आदि के बारा गुणोन्नति करें गी कितनीक देव देवीयां इस अभिप्राय से शक के पास आई कि वहां चलकर हमलोंग प्रसु के समक्ष खड़े होकर हाथ जोडेंगी, कितनीक देवदेवियां इस अभियाय से दाक के पास आई कि वहां चलकर हमलोग चरम तीर्थकर का दर्शन कर छेगी तथा कितनीक देवदेवियां जिनेन्द्र की भक्ति के उत्सव में जाना यह हमारा आचार है इत्यादि भिन्न-भिन्न अभिवायों से प्रेरित हुई शक्त के पास

જેમના હૃદયા ઉછળી રહ્યા છે એવાં થઇ ગયાં. એ સર્વમાંથી કેટલાક દેવ-દેવીઓ આ અભિપાયથી શક-ઇન્દ્રની પાસે આવ્યાં કે અહીં અમે ત્રિભુવન ભદારક ને, પ્રશસ્ત કાય, વાહ્ મનની પ્રવૃત્તિ રૂપ અભિવાદન દરીયું. કેટલાંક દેવ-દેવીએા આ અભિપાયથી ઇન્દ્રની પાસે આવ્યાં કે ત્યાં જઇને મમે ગન્ધ, માલ્યાહિકનું અપંજી કરીને પ્રભુને અન્ત:કરેલું પૂર્વક નમસ્પાર કરેશું. કેટલાંક દેવ-દેવીઓ એ અભિપાયથી શક પાસે આવ્યા કે ત્યાં જઈ ને પ્રભુની સ્તૃતિ વગેરે દ્વારા અમે પ્રભુની ગુણાન્તિ કરીશું. કેટલાંક દેવ-દેવીઓ એ અભિપાયથી શક પાસે આવ્યા કે ત્યાં જઈ ને પ્રભુની સામે ઊસા થઇને હાથ તોડી શું. કેટલાંક દેવ-દેવીએ આ અભિપાયથી શક પાસે આવ્યા કે ત્યાં જઈ ને અમે પ્રભુની સામે ઊસા થઇને હાથ તોડી શું. કેટલાંક દેવ-દેવીએ આ અભિપાયથી શક પાસે આવ્યા કે ત્યાં જઈને અમે ચરમ તીર્થ કરના દર્શન કરીશું. કેટલાંક દેવ-દેવીએ જિનેન્દ્રની ભક્તિના અનુરાગથી અને કેપલાંક દેવ-દેવીએ જિને જન્મના ઉત્સવમાં જવું આ અમારા આચાર છે. વગેરે-

सम्प्रति शक्तेन्द्रस्य कर्तव्यमाह—'तए णं' इत्यादि 'तए णं से सक्ते देविंदे देवराया ते विमाणिए देवे देवीओ य अकालपरिहीणं चेव अंतियं पाउडमवमाणे पासइ' ततः देवानां देवीनां च शकाग्रे उपस्थितान-तरं खल स शको देवेन्द्रो देवराजस्तान् बहुन् वैमानिकान देवान् देवींश्व अकालपरिहीणम् निर्विल्यम्बम् एव अन्तिकं समीपं पादुभेवन्तः उपतिष्ठमानान् पश्यित 'पासित्ता' दृष्ट्वा 'हृष्टे पालयं णामं आभिओगियं देवं सहावेह' दृष्ट्वा हृष्टः सन् पालकं पालकतामिवमानविकुर्वणाकारणमाभियोगिकम् आज्ञाकारिणं देवं शब्दयति आह्यति स शकः, अत्र हृष्ट इति एकदेशेन सर्वोऽपि हर्षाकापको ग्राह्यः तथा च हृष्ट तुष्टिचत्तानन्दितः प्रीतिमानाः परमसौमनित्यतः हर्षवश्विसपर्हहदयः इति हृष्टपदेन ग्राह्यम् 'सहावित्ता' शब्द्यित्वा आहृष्य 'एवं वयासी' एवं वश्यमाणप्रकारेण अवादीत् उक्तवान् किम्रुक्तवान् हृत्याह 'खिप्पामेव' इत्यादि 'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिए' क्षित्रमेव अतिशीधमेव भो ! देवानु- प्रिये 'अणेगखंभसयस्पिविद्धं' अनेकस्तम्भशतस्त्रिविष्टम् 'लीलिट्टियसालभंजिआकलिअं' कोलास्थितशालभिज्ञाकलित्तम् 'इहामिगउसभतुरगणरमकर्रविह्मवालक्तिकार रुक्शभरचामर- कृंजर वणळयपउमलयभित्विचत्तम्' ईहामुगऋषभतुरगणरमकरविह्मवालक्तिकार रुक्शभरचामर-

आई। 'तए णं से सक्के देविंदे देवराया ते विमाणिए देवे देवीओ अ अकालपरिहीणं चेव अंतिअं पाउब्भवमाणे पासह' देवेन्द्र देवराज शक्कने विना विलम्ब
किये अपने पास आगत उन देव देवियों को देखा तो उसने 'पासित्ता' देखकर
'हंद्रे पालयं णामं आभियोगियं देवं सदावेह' हर्षित होकर पालक नामक आभिपोगिक देवको बुलाया 'सदावित्ता एवं वयासी' और बुलाकर उसने ऐसा कहा
'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अणेगखम्भस्यसित्रिवंहं लीलिहियसालमंजियाकिलिअं ईहामिअ उसभतुरगणर मगरविहगवालगिकण्णरहरूसरभ चमर कुंजरबणलयपउमलयभित्तिचत्तं' हे देवानुप्रिय! तुम शीघ्र ही एक दिव्य यान की
विकुर्वणाकरों जो यान विमान सैंकडो खंभोवाला हो, तथा लीला करती हुइ
अनेक पुत्तिलकाओं से यह युक्त हो, ईहा ६ग, वृषभ, तुरग, नर, मकर,

विशे किन्न किन्न सक्ति येथिये प्रेरित थर्ड ने शक्ती पासे आव्यां. 'त एवं से सक्ते देनि दे देवाया ते विमाणिए देवे देवीओ अ अकालपरिहीणं चेव अंतिओं पाउटभवमाणे पासइ' देवेन्द्र देवराक शक्के विना विक्षंभे तेमनी पासे आवेक्षां ते देव-देवीओने लेशां. ते सवंने 'पासित्ता' लेडंने 'हट्ठे पालवं णामं आभियोगियं देवं सदावेद्दे' द्विति थर्डने पालक नामक आिक्षेशिक देवने आकाव्योः 'सदावित्ता एवं वचासी' अने शिक्षावीने ते शक्ते आ प्रमाखे क्लुं 'विष्पामेव मो देवाणुष्पया! अणेगखम्मसवस्तिविद्दं लीलद्वियसालमंत्रिया कल्लिअं ईहामिअउसमतुरगणरमगरविह्मवालगिकण्णरहरूसरभचमरकुं जरवणल्यपडमक्ष्यमितित्तें देव देवानुप्रिय! तमे शिक्ष ओक दिव्य याननी विक्रविद्धा करे। आ यान-विभान देवानुप्रिय! तमे शिक्ष ओक दिव्य याननी विक्रविद्धा करे। आ यान-विभान देवाने स्तं क्षावालु हेथ्य, तथा क्षीक्षा करती अनेक पुत्तिकाओथी दे सुशाकित हैथ्य, ध्वामुण, वृषक, तुर्ण, नर, भक्षर, विद्धा, व्यक्ष, किन्नर, इड्नभुण

कुझरवनलता पद्मलताभिक्तिचित्रम् 'खंग्रुगाय वइरवे इयापरिगयाभिरामं' स्तम्भोद्ग तवज्रवे-दिका परिगताभिरामम् 'विज्ञाहरजमलजुअलजंतजुक्तपिव अचीरुहस्समालणीअ' विद्याधर यमलयुगलयन्त्रयुक्तमिव अचिंसहस्रमालिनीयम् 'रूवगसहस्सकलियं व' रूपकसहस्रकलितम् 'भिसमाणं भिव्भिसमाणं' भास्यमानं वाभास्यमानम् 'चक्खुल्लोअणलेस्सं सुहफासं सिस्स-रीअरूवं' चक्षुल्लीचनलेक्यम् सुखस्पर्शम् । सश्रीकरूपम् 'घंटावलिय महुरमणहरसरं' घण्टा-वलिकमधुरमनोहरस्वरम् 'सुहं कंतं दरिसणिज्जं' शुभ कान्तं दर्शनीयम् 'णिउणोविश्र मिसि-मिसितमणिरयणचंटिआजालपरिक्षित्रक्तं' निपुणोपेत 'मिसिमिसित' देदीप्यमानमणिरस्त-घण्टिकाजाल परिक्षित्रम् 'जोयणसहस्मविच्छिण्णं' योजनसहस्र विस्तीणं 'पंचजोयणसयमुव्यिद्धं सिग्धं तुरिअं जहणं' पञ्चयोजनशतोचत्वम् शीघम् त्वरितं जवनं अतिशयवेगवत 'णिव्याहि' निर्वाहि प्रस्तुतकार्यनिर्वहणशीलम् 'दिव्यं जाणविमाणं विद्यव्याहि' दिव्यं यानविमानं विद्यु-वस्य विद्यवणशक्तया निष्पादय, एतेषामर्थः अस्मिक्षेत्र पञ्चमवक्षकारे प्रथमस्त्रेत्र दृष्टिच्यः, नवस्म् योजनसहस्रविस्तीणमित्यत्र प्रमाणाङ्गुलनिष्पनं योजनलक्ष विद्रेयम् 'विद्यवित्ता' विद्युर्व्य विद्यवीणशक्तया निष्पाद्य 'एयमाणित्रअं पचित्पणाहि' एताम् उक्तप्रकारामाज्ञमिकाम् प्रत्यप्रय समर्पय एवं पालकाय आज्ञातिवान् इति ॥ स्व ४॥

विहग, ध्याल, किन्नर, रह-मृग, सरभअष्टापद, कुंजर-हाथी, वनलता एवं पद्म-लता, इन सबके चित्रों की रचना से आश्चर्यपद हो, इसके प्रत्येक खंभे में वज्रकी वेदिका हो और उससे यह-अभिराम हो, इत्यादि रूप से इसका वर्णन 'जहणणिव्वाहि' पद तक का जैसा इसी वक्षस्कार के ५ वें सूत्र में यान विमान का वर्णन पीछे किया जा चुका है वैसा ही वह यहां जानना चाहिये इन समस्त पदों की व्याख्या भी वहीं पर की जा चुकी है अतः वहीं से देखलेनी चाहिये इसे जो १ हजार योजन का विस्तीण कहा गया है सो वह योजन प्रमाणाङ्गुल से निष्पन्न हुआ योजन ही गृहीत हुआ है ऐसा जानना चाहिये उत्सेधाङ्गुल से निष्पन हुआ योजन नहीं जानना चाहिये 'विज्ञिवसा एयमाणिसियं पच्चिप्पणाहि' ऐसे यान विमान की विक्षर्वणा करके हमें शीघ पीछे खवर दो।।।।।

સરલ, અન્ડાપદ, કુંજર-હાથી, વનલતા તેમજ પદ્મલતા એ અધાનાં ચિત્રોની રચનાથી એ આશ્ચર્ય પ્રદ હાય, એના દરેક સ્તંભમાં વજની વેદિકા હાય અને એનાથી એ અલિ-રામ લાગતું હાય ઇત્યાદિ રૂપમાં આ યાન-વિમાનનું વર્ણુન 'ન્નફળળિટ્નાફિ' પદ મુધી જેવું આ જ વશસ્કારના પાચમાં સ્ત્રમાં પહેલાં યાન-વિમાનના પ્રસંગ વખતે કરવામાં આવેલું છે તેવું જ વર્ણુન અહીં પણ સમજવું. એ અધા પદાની વ્યાખ્યા પહેલાં કરવામાં આવી છે. જિન્નાસુએા ત્યાંથી વાંચવા પ્રયત્ન કરે. આને જે ૧ હજાર ચાજન જેટલું વિસ્તીર્થું કહેવામાં આવેલું છે, તે યાજન પ્રમાણાંગુલથી નિષ્યન્ન થયેલા યોજન જ ગૃહીત થયેલા છે. જિત્સેધાંગુલથી નિષ્યન્ન થયેલા યાજન જણવા નહિ. 'વિલિદ્યત્તા દ્યમાળત્તિય પશ્ચિળાફિ' એવા યાન-વિમાનની વિકુર્વણા કરીને અમને તરત ખબર આપા. ॥ ૪ ॥

अथ शकज्ञिस्थीकारानन्तरं यदनुतिष्ठतिस्म पालको देवस्तदाह-'तएणं से इत्यादि मुल्य-तए णं से पालयदेवे सबकेणं देविदेणं देवरण्णा एवंवुत्ते समाणे हटुतुह जाव वेउविवयसमुग्धाएणं समोहणिसा तहेव करेइ इति। सस्स णं दिव्यस्स जाणविद्याणस्स तिदिसि तओ तिसोवाणपडिरूवगा बण्णओ तेसिं णं पडिरूवगाणं पुरओ पत्तेयं २ तोरणा वण्णओ जाव पड़िरूवार। तस्स णं जाणविमाणस्स अंतो बहुसमरमणिङ्जे भूमिभागे से जहाणामए आलिंगपुबखरेइ वा जाव दीवियचम्मेइ वा एवं अणेग संकुकीलकसहस्सवितते आवड पच्चावड सेहिपसेहि सुरिथअ सोवरिथय वस्रमाणपूरामाणवसच्छंडगमगरंडगजारमारफुल्लावलीपउम-पत्त सागरतरंग वसंतलय व व अलयभिक वित्ते हिं सच्छ। एहिं सप्यभेहिं समरीइएहिं सउजोएहिं णाणाविह पंचवण्णेहिं मणीहिं भिष्र तेसिं णं मणीणं वण्णे गंधे, फाले अ आणियव्वे जहा रायप्पसेण-इन्जे। तस्स णं सूमिभागस्स बहुमन्झदेसशाए पेच्छाघरमंडवे अणेग-खंभसयसिवविद्वे वण्णओ जाव पंडिस्तवे तस्स उल्होए पडमलयभिनः चित्ते जाव सब्व तवणिज्जमए जाव एडिस्बे, तस्स णं संडवस्स बहु-समरमिणजस्य भृमिभागस्य बहुमज्झदेसभागंसि महं एगा मणि-पेढिया अर् जोयणाई आयामिवक्लंभेणं चत्तारि जोयणाई बाहल्लेणं सब्बमणिमह वण्णओ तीए उवरिं महं एगे सीहासणे वण्णओ तस्सु-वरि महं एगे विजयदूसे सब्बरयणाम् वण्णओं तस्स मज्झदेसभाए एगे वइरामए अंकुसे एत्थ णं महं एगे कुम्भिक्के मुसादामे से णं अवणेहिं तदद्धुचत्रप्यमाणिमत्तेहिं चउहिं अद्भक्तिमक्केहिं मुत्तादामेहि सब्वओ समंता संपरिविखत्ते तेणं दत्मा तर्वाणङजलंबूसमा सुवण्णपय रगमंडिया णाणामणिरयणविविहहारद्वहारउवसोभिया समुद्या ईसि अण्णमण्णमसंपत्ता पुटवाइएहिं वाएहिं मंदं २ एइजमाणा जाव णिट्यु-इकरेणं सद्देणं ते पएसे आधूरेमाणा २ जाव अईव उवसोमेमाणा ३ चिट्टंति सि तस्स णं सीहासणस्स अवरुत्तरेणं उत्तरेणं उत्तर-

पुरिश्मिणं एत्थ णं सक्कस्त चउरासीए सामाणियसाहस्सीणं चउरा-सीइ भदासणसाहस्सीओ, पुरिश्मिणं अटुण्हं अग्गमिहसीणं एवं दाहिण पुरिश्मिणं अिंभतरपरिसाए दुवालसण्हं देवसाहस्सीणं दाहिणेणं दाहि-णेयं-मिज्झमाए चउदसण्हं देवसाहस्सीणं, दाहिणपचित्थिमेणं बाहिरपरि-साए सोलसण्हं देवसाहस्सीणं पचित्थिमेणं सत्तण्हं अणिआहिवईणं ति आयरक्षदेवसाहस्सीणं एवमाई विभासिअव्वं सुरिआभगमेणं जाव पच्चिणंति नि । सू. ५।

छाया-ततः खलु पालको देवः शक्रेग देवेन्द्रेण देवराजेन एवमुक्तः सन् हृष्ट तुष्ट यावत् वैक्रियसमुद्धातेन समग्रहस्य तथैव करोति, इति तस्य खलु दिन्यस्य यानविमानस्य त्रिदिशि त्रिसोपानप्रतिरूपकाः वर्णकः 'तेषां खछ प्रतिरूपकाणां पुरतः प्रत्येकं प्रत्येकं तोरणा यावत् प्रतिरूपा १⁷ तस्य खळ यानविमानस्य अन्तः वहुसमरमणीयो भूमिभागः स यथा नाम आलिङ्गपुष्कर इति या यायत् दीपितचर्महति वा, अनेकशंक्कतीलकसहस्रवितते, आवर्तप्रत्यावर्तकेषि प्रश्रेणि सुस्थितसौवस्थिकवर्षमान पृष्यमानक मस्यण्डकमुकरण्डकजारमार पुष्पावली पञ्चपत्र सागरतरङ्ग वासन्तीलतापबलताभिक्तिचित्रैः सच्छायैः सप्रभैः समरीचिकैः सीद्योतैः नानाविधपश्चवर्णैः मणिभिः उपशोभितः २' तेषां खळु माणीनां वर्णौ गन्धः मध्यदेशभागे प्रेक्षागृहमण्डपः अनेकस्तम्भशतसिन्निविष्टे वर्णको यावत्त्रतिरूपः । तस्योङ्घोकः पद्मलक्ष भक्तिचित्रो यावस्तर्वतपनीयमयः यावत्प्रतिरूपः। तस्य खल्ल मण्डपस्य बहुसमरमणी-यस्य बहुमध्यदेशभागे महत्री एका मणिपीठिका अष्ट योजनानि आयामविष्कमभेण चत्वारि योजनानि बाइल्येन सईमणिमयीवर्णकः, तस्या उपरि महदेकं सिंहासनम् वर्णकः तस्योपरि महदेकं विजयद्ष्यं सर्वरत्नमयम् वर्णकः, तस्य मध्यदेशभागे एको वज्रमयः अंकुशः, अत्र खुळु महान् एकः कुन्मिको मुकादामः, स खलु अन्यैः तद्धं चतुः प्रमाणमितैश्रतुर्भिरर्द्धकुन्भिकैः, म्रकादामभिः सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्तः, ते खछ दामानः तपनीयलंबूपकाः सुवर्णपत्रक-मण्डिताः नानामणिरत्न विविधहारार्द्धहारोपशोभिताः सम्रद्याः अन्योन्यमसंप्राप्ताः पूर्वादिकैः वातैः मन्दमेजमाना एजमाना यावत् निर्शृत्तिकरेण शब्देन तान् प्रदेशान् आपूर्यमाणा आपूर्य-माणाः यावदतीयोपशोभमानाः उपशोभमान।स्तिष्ठःतीतिः तस्य खळ सिंहासनस्य अवरोत्तरेण उत्तरेण उत्तरपौरस्त्येन अत्र खळु शकस्य चतुरशीतेः सामानिकसहस्राणां चतुरशीतिः भद्रासन-सहस्राणि पौरस्त्येन अष्टानामग्रमहीषीणाम्, एवं दक्षिणपौरस्त्येन आभ्यन्तरपरिषदो द्वादशानां देवसहस्राणां दाक्षिणात्येन मध्यमायाः चतुर्दशानां देवसहस्राणां दक्षिणपाश्चात्येन बाह्यपरिषदः षोडशानां देवसहस्राणां पाश्चात्येन सप्तानाम् अनीकाधिवतीनाम् इति, ततः खल तस्य सिंहा-सनस्य चतुर्दिको चतसूणां चतुरशीतीनामात्मरक्षकदेवसहस्राणाम् एवमादि विभाषितव्यम् स्र्यीभगमेन यावत्प्रत्यर्पयन्ति इति ॥ स्र. ५ ॥

टीका-'तए णं से पालए देवे सक्केणं देविंदेणं देवरण्या एवं वृत्ते समाणे इह तुह जाव वेडिवियसप्रुग्धाएणं समोहणित्ता तहेव करेइ' ततः शकादेशस्वीकारान्तरं खल्छ स पालको देवः शकेण देवेद्रेण देवराजेन एवम् उक्तप्रकारेण उक्तः कथितः सन् इष्ट तुष्ट यावत् वैकिय-सम्रद्धातेन विकुर्वणा शक्त्या समवहत्य कृत्वा तथैव करोति शकाज्ञप्त्यनुसारेणैव पालक-विमानं निर्मातीत्यर्थः, अत्र यावत् पदात् चित्तानिदतः प्रीतिमनाः परमसौमनस्यितः हर्पवश-विसर्पद् हृदयः इति ग्राह्मम्

अथ विमानस्वरूपवर्णनायाह-'तरस णं' इत्यादि 'तरस णं दिव्यस्य जाणविमाणस्स तिदिसि तओ तिसोवाणपिड रूवगा वण्णओ' तस्य एन्छ दिव्यस्य यानविमानस्य त्रिदिशि भागत्रये त्रयः त्रिसोपानप्रतिरूपकाः अतिरम्य सोपानत्रयमित्यर्थः दर्णकः अस्य वर्णनं बोध्यम् 'तेसि णं पिड रूवगाणं पुरओ पत्तेयं पत्तेयं तोरणा वण्णओ जाव पिड रूवा' तेषां खळ त्रिसो-पानप्रतिरूपकाणां पुरतः अग्रे प्रत्येकं प्रत्येकं तोरणानि बिड द्विशिण 'मेरुराव' इति भाषा

'तएणं से पालए देवे सक्के णं देविंदेणं देवरण्या'

'तए णं से पालए देवे सक्केणं देविदेणं देवरण्णा एवंधु से समाणे' देवेन्द्र देवराज राक्त द्वारा इस प्रकार से कहे उस पालक देवने 'इड तुड जाव वेउिवय समुग्याएणं समोहणित्ता तहेव करेड' हृष्ट-तुष्ट यावत होते हुए वैकिय समुद्धात करके उसी तरह से यान विमान का निर्माण किया 'तस्स णं दिव्वस्स जाणविमाणस्स तिदिसं तओ तिमोवाणपडिस्वगा वण्णओ' उसने उस दिव्य यान विमान की तीन दिशाओं में तीन सोपान प्रतिस्पकों की विकुर्वणा की उसका वर्णन यहां पहिले कहे गये वर्णन के अनुसार कहलेगा चाहिये 'तेसि णं पडिस्वगाणं पुरओ पत्तेयं २ तोरणा वण्णओ जाव पडिस्वा' इन तीन त्रिसोपानप्रतिस्पकों के अतिरम्य सोपानप्रय के आगे अर्थात् प्रत्येक सोपान त्रय के बहिद्दीरों-महरावों-की विकुर्वणा की इनका वर्णन 'प्रतिस्प' पद तक

^{&#}x27;तएणं से पाछए देवे सक्केण देविंदेणं देवरण्णा' इत्यादि

^{&#}x27;तएणं से पाछए देवे सक्केणं देविदेणं देवरण्णा एवं बुने समाणे' हेनेन्द्र हेवराश्र श्रिष्ठ वडे आ प्रमाशे आज्ञास थ्येका ते पालक हेवे 'हट्ट तुट्ट जाव वेडिव्यथसमुखाएणं समोहणिता तहेव करेइ' छु॰ट तु॰ट शावत थ्येका ते पालक हेवे विक्रिय रामुद्धात करीने आज्ञा भुज्ञ व यान-विभाननी विदुर्वणा करी. 'तस्स णं दिव्यस्स जाणविमाणस्स ति-दिसिं तओ तिसोबाणपिहरूवमा वण्णओ' तेथे ते हि॰य यान-विभाननी त्रण्ण हिशाओमां त्रम् सोपान प्रतिइपक्षनी विदुर्वणा करी. अहीं पहेकां भुज्ञा व वर्णने सम् हेवुं किही थे. 'तेसिंणं पिहरूवमाण पुरओ पत्तेयं २ तोरणा वण्णको ज्ञाव पिहरूवा' आ त्रण्य त्रिसोपान प्रतिइपक्षान अति रुग्य सोपान त्रथनी सामे थेन्द्रो है भ्रह्येक्ष सोपान त्रथना

प्रसिद्धानि वर्णको यावत्, प्रतिरूपाणि-अतिरम्याणीत्यर्थः 'तस्स णं जाणविमाणस्स अंतो-बहुसमरमणिक्ते भूविभागे' तस्य खलु यानविमानस्य अन्तः मध्ये बहुसमरमणीये भूमिभागे 'से जहानागए अलिंगपुनखरेइ वा जाव दीविअवस्प्रेड वा, स यथानामकः, अलिङ्गपुष्कर इति दा अति। स्य कमलिमिति वा, यावत् दो दित दर्भ इति वा 'अणेगसंकुकीलकसहस्स वितते' अने क कङ्क कीलकसहस्रविततः अनेकसहस्रकंक्रकीलक्रिक्तः 'आवडपचावड-सेढिवसेढि गुत्थित्र सोवरिधक वद्धमाण पूसमाणश्चकंडगमगरंडग जारसारफुळावळीपअम-पत्तसागरतरंगवसंतळयपउमलयमत्तिचित्तेहिं' आपत् प्रत्यापत् श्रेणिप्रश्रेणि स्रस्थितस्व-स्तिक वर्दमानपुष्यमाणमतस्यण्डकमवः रण्डक जारमार पुष्पावळीपचपत्रसागरतरंगवासन्ती-लता पद्मलता भक्तिचित्रैः, तत्र आपत् प्रतापत् श्रेणीप्रश्रेणीषु विमानस्य आरोहणप्रत्यारो-हणसोपानश्रसोपानैकदेवोषु श्थितानि यानि स्वस्तिकादि पद्मलतानां मक्तिचित्राणि विभाग-चित्राणि तैः, तथा 'सच्छाएहिं' सच्छ।यैः छायासहितैः 'सप्पभेहिं' सप्रभैः प्रमायुक्तैः 'सप्री-इएहि' समरी चिकै: किरणयुक्तैः 'सउज्जोएहिं' सोद्योतैः उद्योतसहितैः 'णाणात्रिहपंचवण्णेहिं मणीहि उवसोभिए' लानाविषपश्चवर्णैः मणिभिः पश्चवणीत्मकैः अनेकरत्नैरुपशोभितः स जैसा पीछे किया गया है-बैसाही वह यहां पर करलेवा चाहिये 'तस्स णं जाण-विमाणस्त अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिमागे' उस यान विमान के भीतर का भूमिभाग बहुसभरपणीय था 'से जहां नामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाब दीविय-चम्बेह वार वह भीतर का भूमिभाग ऐसा बहुसभरमणीय था जैसा कि मृद्द का गुष्य एवं यावत् चीता का चवडा होता है 'अणेग संक्रकीलक सहस्स वितते' उस यान विभान को हजारों कीलों और शंकुओं से मजबूत किया गया था 'आवड-पच्चात्रड सेहिपसेहि सुत्यित्रसोचित्यवद्वमाणपूसनाणव सच्छंडगमगरंडग जार मारफुरलावलीप उमयत्ता सागरत रंगवसंतलय प उमलय भत्तिचि तेहिं सच्छाए हिं सप्पभेहिं समरोहएहिं सरज्जोएहिं जाजाबिह पंचवणोहिं मणीहिं उवसोभिएं इस सूत्रपाठ से छेकर 'तेक्षिणं मणीणं वण्णे गंधे, फासे, य भाणियव्वे' इस અહિ ક્રોરાની વિકુર્વણ કરી. એ દારાનું વર્ણન 'प्रतिरूप' पद સુધી જે પ્રમાણે પહેલાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવેલું છે, તેવું જ અહીં પણ સમજ લેવું એઇએ. 'तस्स णं जाव विमाणस्स अंतो बहुसभरमणिडजे भूमिभागे ते थान विभाननी अंदरने। भूभिक्षाण अह समरमणीय &ते।. 'से जहानामए आलिंगपुरुखरेइ वा जाव दीवियचम्मेइ वा' ते शांहरने। भूमि लाग मृहंग मुण यात्रत् यित्ताना यर्भ केवे। अडु समरमण्यि &ते। 'अणेग संकु कीलकसहस्सवितते' ते यान विभानने ढलरी हीती। अने शत्रु भेरना आहमेशा सामे ટકી શકે તે રીતે મજબૃત કરવામાં આવેલું હતું. 'आवडपच्चावडसोडिपसेंडि सोत्रस्थियत्रद्धभाण पूसमाणव मच्छंडगमगरंडग जारमारफुल्छ।वछीपःमपत्त-सागरतरंगवसंतळयपउमळयभत्तिचिसेहिं सच्छापहिं सप्पेमेहिं समरीइएहिं सउज्जोपहिं

यानविमानः 'तेसि णं मणीणं वण्णो गंघे फासे य भाणियव्वे जहा रायप्यसेणइंडले' तेपां खलु मणीनां वणीं गन्धः स्पर्शश्च भणितव्यो यथा राजप्रश्नीये द्वितीयोपाङ्गे, त्रिसोपानादि वर्णको जीवाभिगमादौ विजयद्वारवर्णने द्रष्ट्वयम् अत्र प्रेक्षा गृहमण्डपवर्णनाय प्राह 'तस्स णं' इत्यादि 'तस्स णं भूमिभागस्स बहुमज्झदेसशाए पिच्छाघरमंडवे अणेगखं बस्यसंण्यिविहे वण्णओ जाव पिडक्तवे' तस्य खलु भूमिभागस्स बहुमध्यदेशभागे प्रेक्षागृहमण्डपः अनेकस्यम्भत्तसिन्निन्त्रः वर्णको जाव पिडक्तवे' तस्य खलु भूमिभागस्स बहुमध्यदेशभागे प्रेक्षागृहमण्डपः अनेकस्यम्भतिविष्टः वर्णको पावत् प्रतिक्यः अतिशयमनोहर इत्यर्थः उपिभागवर्णनाय प्राह—'तस्स उल्लोए' इत्यादि 'तस्स उल्लोए अतिशयमनोहर इत्यर्थः उपिभागवर्णनाय प्राह—'तस्स उल्लोए' इत्यादि 'तस्स उल्लोए पउमल्यभतिचित्ते जाव सन्वतविण्जिमए जाव पिडक्तवे' तस्योल्लोकः उपिभागः पद्मलता भक्तिचित्रः यावत् सर्वात्मना तपनीयमयः सुवर्णमयः यावत्प्रतिकृषः अतिरम्यः, अत्र प्रथम यावत् शब्देन अशोकलता भक्तिचित्रः इत्यादीनां संप्रहः—द्वितीय यावच्छव्देन 'अच्छे सण्हे' अच्छः स्वच्छः स्वस्णः, इत्यादीनां संप्रहः

अथात्र मणिपीठिकावर्णनाय प्राह- 'तस्स णं' इत्यादि 'तस्स णं मंडवस्स बहुसमरमणि-

सूत्रपाठ तक का सब वर्णन पहिले 'जहा रायप्पसेणइज्जे' राजप्रद्रनीय सूत्र में किया जा जुका है सो वहीं से देखलेना चाहिये यही बात 'जहा रायप्पसेण इज्जे' इस सूत्रपाठ द्वारा सूचित की गई है। 'तस्स णं भूमिभागस्स बहुमज्झ देसभाए पेच्छाघरगंडचे अणेग खंभसयसिन्निटें चण्णओ जाव पिड्लें इस भूमिभाग के ठीक बीचचीच में उसने प्रेक्षागृह मंडप जो कि स्कडों स्तम्मों से युक्त था चिक्कवित किया इसका वर्णन यावत् प्रतिल्प पद तक जैसा पहिले किया गया है वैसा ही वह यहां पर भी करलेना चाहिये 'तस्त उल्लोए पडमलय भित्तचित्र जाव सन्व तविणज्जमए जाव पिड्लें इस प्रेक्षागृह मंडप का उप-रिभाग पद्मलता आदि के रचना से विचित्र था और सर्वीत्मना तपनीयमय 'सुवर्णमय, था यावत् प्रतिल्प-अतिरम्य था 'तस्स णं मंडवस्स बहुसमरमणि

णाणाविहपंच अण्णेहिं मणीहिं उवसी भिष्यं आ सूत्रपाठिश भांडीने 'तेसिणं मणीणं वण्णे गंधे, फासे, य माणिवव्यें आ सूत्रपाठ सुधीनुं अधुं वर्णुन पढे़ितां राज्य प्रश्लीय सूत्रमां अरदामां आवेद्धं छे. ते। जित्रासु वायके। त्यांथी ज जांख्या प्रयत्न करे. शिक्ष वात 'जहा रायण्य सेणाइकों आ सूत्रपाठ वडे सूथित करवामां आवी छे. 'तस्स णं भूमिमागस्स बहुमकादेसभाए वेच्छाधामंद्धवे अणेगखं मसयसन्ति विहे वण्णाओ जांब पिंडिस्त्वें' ते भूमिलागना ठींक मध्य लागमां तेथे द्वात्री स्तं ले।थी युक्त प्रेक्षागृद्धक (भंडप) विद्विति कर्यु. आनुं वर्धुन यावत् प्रतिइप पद सुधी के प्रमाखे पहेता करवामां आव्युं छे, तेवुं ज अदीं पख समज्युं. 'तस्स उल्लोए पडमल्यमित्तिचेते जांच सव्य त्याविकामए जांच पिंडिस्त्वें' आ प्रेक्षागृद्ध भंडपने। एपरने। भाग पन्नदता वगेरेनी रचनाथी विधित्र देते। अने सर्वात्मना तपनीयभय-सुवर्धुनय देते। यावत् प्रतिइप अतीव रभ्याधी

जनस बहुमज्झदेस महांसि महं एगा मणिपेढिया अहजोयणाइं आयामविवसंभेणं चत्तारि जोयणाइं वाहरेलेणं स-वसणिमयी वण्णओं तस्य खल मण्डपस्य बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुद्धस्यदेशभागे महती एका सणिपीठिका अष्टी योजनानि आयामविष्कस्भेण चत्वारि योजनानि बाहरेलेन स्थूलतया चन्द्रकान्दादि सर्वमणिमयी, वर्णकः 'तीए उवरि महं एगे तीहासणे वण्णओं तस्या उपरि एकं महत् सिहासनम् वर्णकः अस्य वर्णनं विजयद्वारस्थ प्रकण्ठकप्रासादगातिसहासनस्त्रवद् अवसेयम् 'तस्स्विर्हा महं एगे विजयद्देसे सन्दर्यणामए वण्णओं तस्य सिहासनस्य उपरि महत् एकं विजयद्व्यं निवजयवस्त्रं सर्वरत्नमयम् वर्णकः, 'तस्स मज्झदेसभाए एगे वहरामए अंकुसे' तस्य मध्यदेशमागे एको वज्रमयः अंकुसः, 'एत्थणं महं एगे कुंभिक्के

जनस भूमिनागस्य बहुमज्झदेसभागंमि महं एगा मिणपेदिया अहुजोयणाहं आयामित्रक्तं भेणं चसारिजोयणाहं बाहरुलेणं सन्त्रमिणमयी वण्णओ' इस प्रेक्षायह संख्य का बहुसमरमणीय जो भूमिमाग था उसके ठीक बीचमें उसने एक विद्याल मिणपीठिकाकी जो कि आठ योजन की लम्बी—चोदी थी और चार योजन की मोटो थी एवं सर्वात्मना मिणमथ थी विकुर्वणा की इसका भी वर्णन पीछे किये गये वर्णन अनुसार हो हैं 'तीस उन्तरिं महं एगे सीहासणे' वण्णओ' उस मिणपीठिका के उपर उसने एक विद्याल सिंहासन की विकुर्वणा की इसका भी यहां पर वर्णन करछेना चाहिये 'तस्ख्यिर महं एगे विजय दूसे सव्वरयणामए वण्णओ' उस सिंहासन के उपर उसने एक स्वरेत्नमथ विजय दूसे सव्वरयणामए वण्णओ' उस सिंहासन के उपर उसने एक स्वरेत्नमथ विजय दूसे सव्वर्यणामए वण्णओ' उस सिंहासन के उपर उसने एक स्वरेत्नमथ विजय दूसे सव्वर्य सी—विजयवल्ल की—विकुर्यणा की इसका भी वर्णन करलेना चाहिये 'तस्स मज्झदे-सभाए एगे बहरान अक्रते' उत्तक ठीक मध्य भाग में उसने एक बज्जमय

⁽१) इसका वर्षन विजयहारस्य प्रकण्ठक प्रातादगत सिंहासन के सूत्रातुः सार जानलेना चाहिये।

⁽१) आनु वर्षान विकय द्वारस्य प्रष्ठठंड प्रासादगत स्त्रानुसार सम्र देवुं निध्ये.

मुत्तादामें अत्र खल महान एकः कुम्भिकः कुम्भिपरिमाणो मुक्तादामा मुक्तामाला, 'से णं अन्ने हिं तदद्धच्यसपमाणिम ोहिं चउहिं अद्भक्तंभित्रकेहिं सुत्तादामेहिं सद्भभो समंता संपरि-विखत्ते' स खल मुक्तादामा अन्यैस्तद्धं चतुःप्रनाणवितैः, चतुर्भिर्द्धकुम्भिकेर्म्भकादामभिः सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्तः समयक्युक्तः इत्यर्थः, 'ते णं दामा तदणि ज्वछं बुसना' ते ख्छ दा-मानः, तपनी र लम्बूपकाः तत्र लम्बूपः कन्दुकाकारआभरणविशेषः तथा च सुवर्णनिर्मिदकन्दुका-कारा भरेणैः, इत्यर्थः 'सुवण्णपयरगमंडिया' सुवर्णपत्रकमण्डिताः सुवर्णपत्रकः शोभिताः 'जाजा-मणिरयणावेविहहारद्धहारउवसोभिषः' नानामणिरत्नविविवहारार्द्धहारोपशोभिताः मण्डिता इत्यर्थः 'समुद्या' समुद्रायाः 'इसि अण्णमण्णमसंपत्ता' इषद् अन्योन्यमसंप्राप्ताः 'पुन्दाइएहिं नाएहिं मंदं एइजामाणा मंदं एइजामाणा' पूर्वादिकः वातः वायुक्षिः मन्द्रमेजमाना मन्द्रमेज-माना स्वर्थं यथास्यात्तथा कम्पमाना इत्यर्थः जाव निञ्जुइकरेणं सदेवं ते पएसे आपूरेमाणा आपूरेमाणा' यावत् निर्वृतिकरेण शब्देन तान् प्रदेशान् अपूर्यन्त आपूर्यन्तः अत्र यावत्पदात् अंकुश की विक्वविणा की 'एत्थमं अहं एमे कुम्बिक्के सुत्तादामें' यहां किर उसने कुम्भ प्रमाण एक विशाल मुक्ता मालाको विक्वविणा को 'से णं अण्लेहिं तद्द्धुच्यत्तप्रमाणिमेलेहिं चउहिं अद्भुमिक्केहिं भुतादामेहिं सव्वओ समंता संपरिक्लिने यह मुक्तामाला अन्य मुक्तामालाओं से जो अपने प्रमाण से ऊंचाई में आघो थां और चार अर्वक्रम्य परिमाणवाली धी चारों ओर से अच्छी तरह से घिरी हुई थी 'तेण दामा तविणिज्ञ लंबूसगा स्रवण्णायरममंडिया णाणान्। गरयण विविद्धारस्हारस्यसोनिया ससुद्या ईसि अण्णमण्णभसंदशा पुरुवाइएहि चाएहि संदं र एइज्जनाणा जाव जिन्द्युइः करेणं सद्देणं ते पएसे आध्रेमाणा २ जाव अईव उवसो मेनाणा २ चिहंति सि' ये मालाएं तवनीय सुवर्णनिमित कन्द्रक के जैसे आमरण विशेषों से सहित थी सवर्ण के पतरकों से मण्डित थीं नाना मणियों से, अनेक प्रकार के हारों से

'वेइज्जमाणा वेइज्जमाणा पलंबमाणा २ पश्चंत्रमाणा २ ओरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं' इति संग्रहः व्येज्यमाना २ प्रलम्बमानाः २ पश्चंत्रमाणाः २ शब्दं कुर्वन्तः २ उदारेण मनोज्ञेन मनोहरेण 'जाव अईव २ उवमोभेमाणा २ चिहंतित्ति' यावत् अतीव २ उवशोभमानाः २ तिष्ठ-न्तीति, यावत्यदात् 'ससिरीए' सश्रीकाः इतिग्राह्मण् ।

सम्प्रति अत्रास्थाननिवेशनप्रक्रियामाइ-'तस्य णं' इत्यादि 'तस्स णं सीहासण-स्स अवरुत्तरेणं' तस्य खलु सिंहासनस्य अपरोत्तराया अत्र इत आरभ्य सर्वत्र सप्तम्यथे तृतीया, तदाय-अपरोत्तराणां वायव्धामित्यर्थः 'उत्तरेणं'-उत्तरस्मात् 'उत्तरपुरत्थि-मेणं' उत्तरपूर्वीयाम् ऐशान्याम् 'एत्थ णं सकस्य चउरासीए सामाणिभसाहस्सीणं चउरा-सीए भदासणसाहस्सीओं अत्र खळु शकस्य चतुरशीतेः सामानिकसहस्राणां चतुर शीतिसहस्रतंख्यकतामानिकानाम् उक्जदिक्त्रये चतुरशीतिभद्रायनसहस्राणि चतुरशीति-सहस्रसंख्यक भद्रासनानि 'पुरिथमेणं अहण्हं अग्वमहिसीणं' १ र्वस्यां दिशि अष्टानाम-प्रमहिषीणाम् अष्ट भद्रातनानि ^रएवं दाहिणपुरत्थिमेणं अव्भितस्परिसाए दुवालसण्हं देवसाह-अर्द्धहारों से उपकोभित थी अच्छे उद्यवाली थीं-सुन्दर ढंग से बनी हुई थी और आपस में एक दूसरी माला से थोडी थोडी दूर थी पुरवाई हवासे वे मन्द मन्द रूपमें हिल रहीं थी इनके टकराने से जो शब्द निकलता था-वह कर्ण-इन्द्रिय को बड़ा आनन्द प्रद लगता था ये अपने आसपास के प्रदेश को सुगं-घित कर रही थीं इस तरह से ये मालाएं वहां पर थी यहां पाठ में आगत यावत पाठ से 'वेइजमाणा पलंबमाणा, पद्मंद्यमाणा, ओरालेणं मणुण्णेणं मण-हरेणं 'यह ९द गृहीत हुआ तथा द्वितीय गावत्पाठ से 'सस्सिरीए' इस पदका ग्रहण हुआ है 'तस्स णं सीहासणस्स अवस्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरिथमेणं एत्थणं सक्कस्य चडरासीए सामाणियसाहस्सीणं चडरासीह भदासणसाह-स्मीओ, पुरिवमेणं अहण्हं अग्गमिहसीणं एवं दाहिण पुरिवमेणं अविंभतरपरि-साए दुबाउसण्हं देव साहस्सीणं' उस सिंहासन्,के वायव्यकोने में, उत्तरदिशा

लित हती. सारा उदयवाणी हती, सुंहर रीते तैयार करवामां आवी हती अने परस्पर क्षेष्ठ भील माणाधी परावार्ध होवाथी संघटित थर्ड में मंद्र—मंद्र इपमां हांसी रही हती. क्षेमनी परस्पर अंघटनाथी के शल्ड नीक्षणता हतो ते अतीव क्ष्युं भधुर सामता हती. क्षेमनी परस्पर अंघटनाथी के शल्ड नीक्षणता हती हती. क्षेप्रभाष्ट्र क्षेप्रमाण पर्वेश माणाकी पीताना आस—पासना प्रदेशिने सुमंधित करती हती. क्षेप्रभाष्ट्र क्षेप्रमाणा, पर्वे माणाकी त्यां हती. क्षा पाठमां के यावत् शल्द आवेशे। क्षे, तेनाथी 'वेद्द्यमाणा, पर्वे माणा, पर्वेशमाणा, जोरालेणं मणुण्णेणं, मणहरेणं आ पाठ गृहीत थरेही के तेमक भिन्न यावत् पाद्धी 'सिस्सिरीए' क्षा पद्धां अह्य थर्थं के 'तस्स णं सीहासणस्स अवरुष्टिन स्वत्रेणं उत्तरेणं उत्तरपुरिथमेणं एत्थणं सक्करस चउरासीइ मदासणसाहरसीओ पुरिथमेणं अद्देणहं अगमहिसीणं एवं दाहिणपुरिथमेणं अदिभत्तरपरिमाए दुवाळसण्हं देवसाहरसीणं

स्तीणं' एवम् दक्षिणपूर्वायाम् अग्निकोणे अभ्यन्तर्ववृदः, सम्बन्धिनां द्वाद्यानां देवसदसाणां द्वाद्या भग्नासनसहस्राणि 'दाहिणे णं मिल्झमाण् चउदसण्हं देवसाहस्तीणं' दक्षिणस्यां मध्य मायाः पर्यदः सम्बन्धिनां चतुर्दशानां देवसदस्राणां चतुर्दशमद्रासनसहस्राणि 'दाहिणपचित्रमेणं बाहिरपरिसाप् सोळसण्हं देवसाहस्सीणं' दक्षिणपश्चिमागां नैऋतकोणे बाह्यपर्वः सम्बन्धिनां पोडशानां देशसहस्राणां पोडशमद्रासनसहस्राणि 'पच्चित्थमेणं सक्तण्हं अणिआहिवइणंति' पश्चिमायां सप्तानां अनीकाधिपतीनां सप्तमद्रासनानीति 'तण् णं तस्स सीहासणस्स चउद्विसिं चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं' ततः प्रथमवलयस्थापनानन्तरं द्वितीये वलये तस्य सिंहासनस्य चतुर्दिशि चतद्यणां चतुरशीतीनां चतुर्गुणीकृत चतुरशीतिसंख्याकानाम् आत्मरस्त्रकृदेवानामित्यर्थः, पृष्ट्ञिश्चन्द्रस्याधिकलक्षत्रयमितानि भद्रासनानि विक्ववितानि इत्यर्थः, 'प्वमाई विभासिअव्वं स्तरि-आमगमेणं जाव पच्चिपणेइ' प्रमादि विभाषितव्यम्—इत्यादिवक्तव्यम् स्वर्थभगमेन यावत्य-

में, इशान दिशामें, शक के ८४ हजार सामानिक देवों के ८४ हजार भद्रासन पूर्विदेशा में आठ अग्रमहिषियों के आठ भद्रासन, अग्निकोण में आभ्यन्तर परिषदा के १२ हजार देवों के १२ हजार भद्रासन 'दाहिणेणं मिष्डामाए चउदसण्हं देवसाहस्सीणं, दाहिण पच्चित्थमेणं बाहिरपरिसाए सोलसण्हं देवसाहस्सीणं पच्चित्थमेणं सत्तग्हं अणिआहिवईणंति' दक्षिणिदशा में मध्यपरिषदा के १४ हजार देवों के १४ हजार भद्रासन और नैर्ऋतकोण में बाह्यपरिषदा के १६ हजार देवों के १६ हजार भद्रासन तथा पश्चिमिदशा में सात अनीकाधिपितयों के सात भद्रासन स्थापित किये 'तएणं तस्स सीहासणहस चउदिसि चउण्हं चउरासीणं आयरक्षदेवसाहस्सीणं एवमाई विभासिअव्वं सुरियाअगमेणं जाव पच्चिपणंतित्ति' इसके बाद उसने उस सिहासन की चारों दिशाओं में ८४-८४ हजार आत्मरक्षक देवों के ८४-८४ हजार भद्रासन अपनी विकुर्वणा शिक्त

ते सिंद्धासनता वायण्य के श्वामां, उत्तर दिशामां, धिशात दिशामां शक्ता ८४ दुलर सामानिक देवाना ८४ दुलर लद्रासनी पूर्व दिशामां, आह अधमदिषी की ना आह अद्रासनी अपिन के शिषामां आहमार कर के लद्रासनी प्रविद्धाना १२ दुलर देवाना १२ दुलर लद्रासनी 'दाहिणेणं मिक्समार कर स्वाह के देवसाह मिणं, दाहिण पच्च विधमेणं बाहिर परिसार सोल सण्हं देवसाह स्तीणं पच्च विधमेणं सत्तण्हं अणि आहि वर्डणंति' दक्षिणु दिशामां, मध्य परिवद्धाना १४ दुलर देवाना १४ दुलर लद्रासनी अने नैर्फात के शिष्मां आहा परिवद्धाना १४ दुलर देवाना १४ दुलर लद्रासनी वधा पश्चिम दिशामां सात अ कि शिष्मितिकी ना सात लद्रासनी स्थापित कर्याः 'तएणं तस्स सीहासणस्य चहिति च उण्हं च उरासीणं आयर क्या देवा स्थापित कर्याः 'तएणं तस्स सीहासणस्य चहिति च उण्हं च उरासीणं आयर क्या देवा सात स्थापित कर्याः 'तएणं तस्स सीहासणस्य च विधामां सात अपित स्थापित कर्याः 'तएणं तस्स सीहासणस्य च विधामां ८४ – ८४ दुलर आह्म स्थापित सिं त्यार आह

त्यप्पेवित, समर्पयित स पालको देवः यावत्यदसंग्रहश्चायम् 'तरसणं दिन्वस्स जाणिवमाणस्स इमे एयाक् वे वण्णावासे पण्णते से जहा णामए अइरुग्गयस्स हेमंतिअवालस्स्रिअस्स खाइलिंगालाणवा रितं पज्जलिआणं जासुमणवणस्स वा केसुभवणस्स वा पिलजायवणस्स वा सन्ध्यो समंता संकुष्ठिमिश्रस्त भवेषयाक् वेसिया १' णो इणहे समहे, तस्स णं दिन्वस्स जाणिवमाणस्स इत्तो इहतराए चेव ४ वण्णे पण्णाते गंथो फासोअ जहा मणीणं, तए णं से पालण देवे तं दिन्वं नाणिविमाणं विद्यानित्रा जेणेव सक्के ३ तेणेव दवागच्छइ, जवागच्छिता सक्कं ३ कर्यलपिगिहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजिल कट्टु जएणं विज्ञण्णं वद्धावेइ बद्धावित्ता तमाणित्रअं, इति अत्र ज्याख्या-तस्य खलु दिन्यस्य यानविमानस्य अथमेतद्भूपो वर्णव्यासः प्रज्ञप्तः स यथानामकोऽचिरोद्रतस्य तत्कालोदितस्य हैमन्तिकस्य हेमन्तकालसम्बन्धिनो बालस्र्यस्य खादिराङ्गाराणां वा खदिरसम्बन्धिनामग्रिनाम् 'रितं' सप्तम्यर्थे द्वितीया रात्री प्रज्वितान

से स्थापित किये इत्यादि रूपसे यह सब कथन सूर्यांभ देव के यान विमान के प्रकरण में कहे गये पाठ के अनुसार 'प्रत्यपंपिति' इस कियापद तक जानना चाहिये वहां का पाठ इस प्रकार से है जो यहां यावत्पद से गृहीत हुआ है 'तस्स णं दिन्वस्स जाणिविमाणस्स इमें एयास्त्वे वण्णावासे पण्णत्ते—से जहाणामए अइरुग्गयस्स हेमंतिय बाल सूरियस्स खाइलिंगालाण वा रित्तं पज्जिलिआणं जासुमुणवणस्स वा केसूअवणस्स वा पिलजायवणस्स वा सन्वओ समंता संकुसुमिअस्स, भवेएयास्त्वे सिया ? णो इणहे समहे, तस्स णं दिन्वस्स जाणिवमाणस्स इत्तो इहतराए चेव ४ वण्णे पण्णत्ते, गंधो फासो अ जहा मणीणं, तए णं से पालए देवे तं दिन्वं जाणिवमाणं विजिवक्ता जेणेव सकके ३ तेणेव जवागच्छह २ जवागच्छित्ता समकं ३ करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजिलं कहु जए णं विजएणं वद्वावेइ बद्धावित्ता तमाणित्तअं' इस पाठ की व्याख्या इस प्रकार से है—उस दिव्य यान विमान का वह इस प्रकार का वर्ण वर्णक है—जैसा तत्काल

 नाम् जपावनस्य वा किंशुक्रवनस्य वा पारिजातवनस्य वा कल्पद्रुमशनस्य वा सर्वतः समन्तात् सम्यक् कुशुनितस्य, अत्र शिष्यः पृच्छति भवेदेतद्र्यः स्यात् कदाचित् स्वरिराह—नायम्यः समर्थः तस्य खल्छ दिव्यस्य यानविमानस्य इत इष्टतरक एव कान्ततरक एवेत्यादि प्राम् वत् वर्णः प्रज्ञप्तः गन्धः स्पर्शश्च यथा प्राङ् मगीनामुक्तस्त्रथा यानविमानस्यापि वक्तव्यः, अत्र पालकविमानवर्णके प्राक् मणीनां वर्णाद्यः उक्ताः पुनर्विमानवर्णकादिकथनेन पुनर्वकिनं शक्कनीया, पूर्वंहि अवयवभूतानां मणीनां वर्णाद्यः ग्रोक्ताः सम्प्रति अवयविनो विमानस्येति प्रोक्तशङ्काया अनवसरत्वात्, ततः खल्ल स पालको देवः तं दिव्यं यानविमानं विकृव्यं यत्रैव शक्तो देवेन्द्रो देवराजस्त्रत्रेव उपागच्छति उपागत्य क्षकं देवेन्द्रं देवराजं करतलपरिगृशीतं द्शनखं शिरसावर्तं मस्तके अंगलिं कृत्वा जयेन विजयेन च वर्द्धयित वर्द्धयित्वा तामाज्ञप्ति-कामिति यावत् पद्माह्यस्त्रार्थः ॥ स्वर् ५ ॥

उदितहुए शिशिरकाल सम्बन्धी बाल सूर्यका, या, राश्चि में प्रज्वलित खदिर के अंगारों का या सब तरफ से कुछमित हुए जपायन का या किंशुक (पलाश) के वन का, या कल्पहुमों के वनका वर्ण होता है वैसा ही इसका वर्ण था तो क्या हे भदन्त ! यह बात इसमें इसी प्रकार से सर्वथा रूपमें घटित होती है ? उत्तर में प्रसु ने कहा-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थित नहीं है—क्योंकि उस दिव्य यान दिमान का वर्ण इनकी अपेक्षा भी इष्टतरक-कान्ततरक कहा गया है इसका गंध और स्पर्श पागुक्त मणियों के गन्ध एवं स्पर्श के जैसा कहा गया है अवशिष्ठ पाठ की व्याख्या सुगम है इस प्रकार के विशेषणों से विशिष्ट उस दिव्य यान विमान की विकुर्वणा करके वह पालकदेव जहां देवेन्द्र देवराज शक था वहां गया और वहां जाकरके उसने दोनों हाथों को जोडकर बड़ी विनय के साथ शक्त को जय विजय शब्दों से बधाते हुए यान विमान के पूर्ण रूप से निष्पन्न हो जानेकी खबर दी ॥५॥

ખદિરના અંગારાના કે ચામેરથી કુસુમિત શયેલા જપાવાનના કે કિંશુક (પલાશ) વનના કે કલ્પ દુમાના વનના વર્લ હાય છે તેવા જ આના વર્લ હતા. તા શું હે લદંત! આ વાત આમાં આ પ્રમાણે જ સર્લથા રૂપમાં ઘટિત હાય છે? એના જવાબમાં પ્રભુ કહે છે—કે હે ગૌતમ! આ અર્થ સમર્થિત નથી. કેમકે તે દિવ્ય યાન-વિમાનના વર્લ એ સર્લ કરતાં પણ દવ્ય તરક, કાન્તરક કહેવામાં આવેલ છે. આના ગંધ તેમજ સ્પર્શ પ્રાગુખત મહ્યુઓના ગન્ધ તેમજ સ્પર્શ જેવા કંહેવામાં આવેલ છે. શેષ પાઠતી વ્યાખ્યા સુગમ છે. આ પ્રકારના વિશેષણાથી વિશિષ્ટ તે દિવ્ય યાન-વિમાનની વિકુર્લણા કરીને તે પાલક દેવ જયાં દેવેન્દ્ર દેવરાજ શક હતા ત્યાં ગયા અને ત્યાં જઈ ને તેણે બન્ને હાથાને એડીને વિનયપૂર્લક શકને જય-વિજય શબ્દથી વધામણી આપતાં યાનવિમાન પૂર્લ રૂપમાં નિષ્યન થયું છે, એવી ખબર આપી. 11 પ 11

अथ शककृत्यमाइ-'तए णं सक्के' इत्यादि

म्बम्-त एणं सक्के जाव इट्टहियए दिव्य जिलेदाभिगमणजुगां सञ्चालंकारिक्युसियं उत्तरवेटव्विञं रूवं विउव्वइ, विउव्विका अट्टिहं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं णट्टाजीएहिं गंघटवाजीएण य सिद्धि तं विमाणं अणुष्पयाहिणीकरेवाणे करेमाणे पुव्चिक्लेणं तिस्रोवाणेणं दुरूहइ दुरुहित्ता जाव सीहासणंसि पुरस्थाभिमुहे सणिणसण्णेत्ति, एवं चेव सामाणियावि उत्तरेणं तिसोवाणेणं दुरूहिता पत्तेयं पत्तेयं पुटवण्णत्थेसु भद्दासणेसु णिसिअंति अवसेसाय देवा देवीओ अ दाहिणिल्लेणं तिसो-वाणेणं दुरुहिता तहेव जाव णिसीअंति, तएणं तस्स सकस्स तंसि दुरूढरस इमे अट्टदू मंगलगा पुरओ अहाणुपुटवीए संपट्टिआ, तयणंतरं च णं पुण्ण कक्षलसभिंगारं दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा य दंसण-रइअ आलोअदरिसणिन्जा वाउद्धुअ विजयवेजयंतीअ समृसिआ गगणतलमणुलिहंती पुरक्षो अहाणुपुच्चीए संपट्टिआ, तयणंतरं छत्त-भिंगारं, तथणंतरं च णं वइरामथबट्टलट्टलंडिअ सुसिलिट्ट परिघट्टपट्टसुप-इट्टिए विसिट्टें अणेगवरपंचनण्णकुडभी सहरतपरिसंडियाभिरामे वाउ-द्धुअ विजयवेजयंती पडागाछत्ताइच्छत्तकिए तुंगे गगणतलमणुलिहंत सिहरे जोअणसहस्सम्सिए महइमहालए महिंदउझए पुरओ अहा-णुपुट्यीए संपित्थिएति, तद्यणंतरं च णं सुरुवनेवत्थदरिअच्छिअ सुसजा सञ्वालंकारविभूसिआ पंच अणिआ पंच अणिआहिवइणो जाव संप-द्विआ, तयणंतरं च णं बहवे आभिओगिआ देवा देवीओ य सएहिं सएहिं रूबेहिं जाव णिओगेहिं सक्कं देविंदं देवरायं पुरओज मगाओअ तयणंतरं च णं बहवे सोहम्मकप्पवासी देवा य देवीओ य सिंदेविद्विए जाव दुरूढा समाणा मग्गओअ जाव संपट्टिआ, तए णं से सक्के तेणं पंचाणिअ परिविलत्तेणं जाव महिंदज्झएणं पुरओ पकड्डिजमाणेणं चउरासीए सामाणिअ जाव परिवुडे सविवद्धीए जाव रवेण सोहम्मस्स

कप्पस्स मज्झं मज्झेणं तं दिव्यं देविद्धं जाव उवदंसेमाणे २ जेणेव सोहम्मस्स कप्पस्स उत्तरिल्ले णिज्जाणमग्गे तेणेव उत्रागच्छइ, उवा-गिच्छित्ता जोयणसयसाहस्सीएहिं विग्गहेहिं ओवयमाणे ओवयमाणे ताए उक्किट्राए जाव देवगईए वीईवयमाणे वीईवयमाणे तिरियमसंखि-जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झं मज्झेणं जेणेव णंदीसरवरे दीवे जेणेव दाहि-णपुरित्थमिल्ले रहकरगपव्यए तेणेव उत्रागच्छइ उवागच्छिता एवं जा चेव सूरियाभस्स वत्तव्वया णवरं एकाहिगारो वत्तव्वो इति जाव तं दिव्वं देविद्धि जाव दिव्वं जाणविमाणं पडिसाहरमाणे २ जाव जेणेव भग-वओ तित्थयरस्स जम्मण नगरे जेणेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मण-भवां तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता तिस्थयरस्त भगवओ जम्मण-भवणं तेणं दिव्वेणं जाणविमाणेणं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता भगवओ तिस्थयरस्स उत्तरपुरस्थिमे दिसीभागे चउरंगुलमसंपत्तं धरिणयले तं दिव्यं जागविमाणं ठवेइ ठविसा अट्टहिं अग्गमहिसीहिं दोहिं अणिएहिं गंधव्याणीएण य णद्दाणीएण य सर्दि ताओ दिव्याओ जाणविमाणाओ पुरित्थमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पचोरुहइ।

तए णं सक्कस्स देविंद्स्स देवरण्णो चउरासीई सामाणिअ साह-स्सीओ दिव्वाओ जाणिवमाणाओ उत्तरिक्छेणं तिसोपाणपिडक्वएणं पच्चोरुहंति अवसेसा देवा य देवीओ अ ताओ दिव्वाओ जाणिवमा-णाओ दाहिणिक्छेणं तिसोवाणपिडक्वएणं पच्चोरुहंतिति। तए णं से सक्के देविंदे देवराया चउरासीए सामाणियसाहस्सिएहिं जाव सिंहं संपरिवुडे सिव्वद्धीए जाव दुंदुभिणिश्वोसणाइयरवेणं जेणेव भगवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता आछोए चेव पणामं करेइ करिता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च तिक्खुतो आयाहिणपयाहिणं करेइ करिता करयछ जाव एवं वयासी नमोत्थु ते रयणकुच्छिधारए एवं जहा दिसाकुमारीओ जाव धण्णासि पुण्णासि तं कवत्थासि अहण्णं देवाणुष्पिए सक्के णामं देविंदे देवराया भग्ना वओ तिरथयरस्स जम्मणमहिमं करिस्सामि, तं णं तुब्भाहिं ण भाइ- यव्वं तिकद्दु ओसोवणिं दलयइ दलइता तिरथयरपिड्रिक्वगं विउव्वेइ तित्थयरमाउआए पासे ठवेइ, ठिवत्ता पंच सक्के विउव्वेइ विउविता एगे सक्के भग्नं तित्थयरं करयलपुढेणं गिण्हइ एगे सक्के पिटुओ आयवत्तं घरेइ दुवे सक्का उभओ पासि चामरुक्षेवं करेति, एगे सक्के पुरओ वज्जपाणी पकडुइति । तएणं से सक्के देविंदे देवराया अण्णेहि बहुहिं भवणवइवाणमंतरजोइसिअवेमाणिएहिं देवेहिं देवी हिअ सिद्धं संपरिवुढे सिव्वद्धीए जाव णाइएणं ताए उिक्कट्राए जाव वीई वयमाणे २ जेणेव मंदरे पव्वए जेणेव पंडगवणे जेणेव अभिसेअसिला जेणेव अभिसेअसीहासणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता सीहासण- वरगए पुरत्थाभिमुहे सिण्णिसण्णेति ।।सू० ६॥

छाया-ततः खलु स शको यावत् इष्टह्ययो दिन्यं जिनेन्द्राभिगम स्योग्यं सर्वालंकार-विभूषितम् उत्तरवैक्रियं रूपं विकुर्वति, विकुर्व्य अष्टाभिरग्रमहिषीभिः सपिवाराभिः नाटचा-नीकेन गन्धर्यानीकेन सार्द्धम् तं विमानम् अनुप्रदक्षिणी कुर्वन् अनुप्रदक्षिणीकुर्वन् पौरस्त्येन त्रिसोपानेन दुरोहति, दुरूहच यावत सिंहासने पौरस्त्याभिमुखे सिश्विषणाः, इति एवमेव सामानिकाअपि, उत्तरेण त्रिसोपानेन दूरोहति दुरोहय प्रत्येकम् २ पूर्वन्यस्तेषु भद्रासनेषु निपीदन्ति, अवशेषाश्च देवाश्च देव्यश्च दक्षिणेन त्रिसोपानेन दुरोहन्ति दुरूहच तथैव यावत् निषीदन्ति, ततः खलु तस्य शकस्य तस्मिन दुरूढस्य इमानि अष्टी अष्टी मङ्गलकानि पुरतः यथानुपूर्वर्ग संप्रस्थितानि, तदनन्तरं च खळ पूर्णकळश-भृहारं दिच्या च छत्रपताका सचा-मरा च दर्शनरतिदा आलोकदर्शनीया वायुद्धृतविजयवैजवित च सम्रु च्छिता गगनतलम् नु-बिहन्ती पुरतो यथानुप्र्या संप्रस्थिताः तदनन्तरं च खछ वज्रमय युत्तकष्ट संस्थितसुश्चिष्ट परिचृष्ट मृष्ट सुपतिष्ठितः विशिष्टः, अनेक वरपश्चवर्णकुडिमसहस्वपरिमण्डिताभिरामः वाती-द्धृत विजयवैजयन्ति पताका छत्रातिच्छत्रकलितः तुङ्गः गगनतलमनुस्तिखच्छिखरः योजन-सहस्रमुत्स्तः महातिमहालयः, महेन्द्रध्वजः पुरतो यथानुपूर्वा संप्रस्थितः इति, तदनन्तरं च खलु भवरूपनेपथ्यपरिकच्छितानि सुसज्जानि सर्वालङ्कारविभूषितानि पञ्चानीकानि पञ्चानीकाधिपत्रयश्च यावत् संप्रस्थितानि तदनन्तरं च खल्छ बहवः, आभियोगिका देवाश्व देटयश्च स्थकैः स्थकैः रूपैः यावत् नियोगैः शक्रं देवेन्द्रं देवराजं पुरतश्च पृष्टतः पार्श्वतश्च यथानुपूर्वा संप्रस्थिताः । तदनन्तरं च खल्छ वहवः सौधर्मकरुपवासिनो देवाश्च देवबस

्रसर्वेद्धर्यो यात्रत् दूरुढाः सन्तः मार्गतश्र यावत् संप्रस्थिताः । ततः खल्लु स ककः तेन पञ्चा-नीकपरिक्षिप्तेन यावत् महेन्द्रध्वजेन पूरतः प्रकृष्यमाणेन चतुरशीत्वा सामानिकसङ्कैः यातत् परिवृतः सर्वद्धर्या यावत् रवेण सौधर्मस्य करुपस्य मध्यं सध्येन तां दिव्यां देवर्द्धिम् यावत् उपदर्शयन् उपदर्शयन् यत्रैव सौधर्मस्य कल्पस्य औत्तरा निर्याणमार्गः तत्रैव - उपागच्छति उपागत्य योजनशतसाहस्त्रिकैः विग्रहैः, अवपतन् अवपतन् तया उत्क्रुष्टया ्रमावत् देवगत्या व्यतित्रजन् व्यतित्रजन् तिर्यमसंख्येयानां द्वीपसमुद्राणां मध्यं मध्येन अत्रैव नन्दीश्वरद्वीपः यत्रैव दक्षिणपूर्वः रतिकस्पर्वतः तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य एवं चैवं सूर्याभस्य वक्तव्यता नवरं शकाधिकारो वक्तव्य इति यावत् तां दिव्यां देवर्द्धिम् यावत् दिव्यं यानविमानं प्रतिसंहरन् प्रतिसंहरन् यावत् यत्रैव भगवतः तीर्थङ्करस्य र्जन्मनगरं यत्रैव भगदत स्तीर्थङ्करस्य जन्मभवनं तत्रैव उपागच्छति अगवतस्तीर्थेकरस्य जन्मभवनं तेन दिच्येन यानिविधातेन जिः कृत्यः आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति कृत्वा भगवतः, तीर्थकरस्य जन्मभवनस्य उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे चतुरङ्गुलप-संप्राप्तं धरणितले तं दिव्यं चानविमानं स्थापयति स्थापयित्वा अप्टमिः अग्रमहिपीमिः द्वाभ्यामनीकाभ्यां गन्धर्वानीकेन च नाटचानीकेन च सार्द्धं तस्यात् दिष्यात् यानविमानात् पौरस्त्येन त्रिसोपानप्रतिरूपकेण प्रत्यवरोहति, ततः खळ शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य चतुर्वीतिः सामानिकसहस्राणि दिव्याद् यानिसानात् उत्तरेण त्रिस्रोपानप्रतिरूपकेण ंप्रत्यवरोहन्ति अवशेषा देवाश्र देव्यश्च तस्मात् दिव्यात् यानिदमानात् दक्षिणेन त्रिसोपान-प्रतिरूपकेण प्रत्यवरोहन्ति इति ततः खछ स शको देवेन्द्रो देवसाजः, चतुरशीत्या सामानिकः साहस्त्रिकैः, यावत्सार्के संपग्वितः सर्वेद्धयो यावत् दुन्दुभिनियौपनादितरवेण यज्ञैव भग-्वान् तीर्थङ्करः, तीर्थक्रसाता च तंथैय उपागच्छति उपागत्य, आलोके एव प्रणामं करोति प्रणामं कृत्वा भगवन्तं तीर्थेकरं तीर्थकरम!तरं च त्रिः कृत्वः आदिक्षणप्रदक्षिणं करोति, कृत्या करवल यावदेवमवादीत् नमोऽस्तु ते रहगङ्क्षिधरिके ! एवं यथा दिवज्जमार्यः चावत् धन्याऽसि पुण्यासि त्वं कुतार्थाऽसि, अहं एक देवानुप्रिये ! शको नाम देवेन्द्रो देव-राजी मगतस्तीर्थकरस्य जन्ममहिमानं करिष्यामि तत् खुळ युष्पानिर्न भेतव्यमितिकुला अवस्वापिनी ददाति दत्वा तीर्थकरप्रतिरूपकं करोति तीर्थकरमातुः पार्थे स्थापयति स्थाप िथित्वा पश्चमकान् विञ्चविति, दिक्कवि, एकः शको समयन्तं टीर्थकरं करतलपुटेन गृहाति, इस्कः शकः पृष्टतः आतपनं घरति हो सको उमयोः पार्श्वयोश्चामरोत्सेयं कुरुतः एकः शकः ुपरतो बज्जपाणिः सन् प्रकर्षयित । ततः खल स कको देवेन्द्रो देवरानः अन्यैः बहुभिः -भवनपतिवानमन्तरच्योतिष्कवैमानिकैः देवै देवीभिश्य सःदुं संपरिष्टतः सर्वेद्धर्या यावत् न्नादितेन तथा उत्कृष्टया यातत् व्यतिवजन् व्यतिवजन् यत्रैत मन्दरः पर्वतः यत्रैत पश्चकः ्वनम् यत्रैव अभिषे रक्षित्रा यत्रैव अभिषे हसिंहासनम् तत्रैव उपागच्छति उपागत्य सिंहा-्सनवरगतः पूर्वभिष्ठुखः सन्त्रियण्णः । इति ॥ स्त. ६ ॥

टीका-'तएणं से सके जाव इह हिअए' ततः पालकदेवस्य पालकविमाननिर्मातः शकाज्ञायाः शकसमीपे समर्पणानन्तरं खल स शको यावत् इष्ट हृदयः प्रमुदितिन्तः सन् अत्र
यावत्पदान् देवेन्द्रो देवराजः, इति ग्राह्मम् 'दिव्वं जिणेदािमगमणजुग्गं' दिव्यं प्रधानम्
जिनेन्द्रािमगमनयोग्यम् जिनेन्द्रस्य ऋषभभगवतः अभिगमनाय अभिमुखगमनाय योग्यम्
-अचित्तम् यादशेन वपुषा देवसमुदायसर्वािशायिनी श्रीभवति तादशेनेत्पर्यः 'सव्वालंकारविभूसियं' सर्वालङ्कारविभृषितम्-राकलशिरःश्रवणाचलङ्कारैः सुशोभितम् 'उत्तरवेदिव्यं
कवं विउव्वदः' उत्तरवेकियम् कपम् उत्तरं भवधारणीयशरीरापेश्वया कार्योत्पत्तिकालापेश्वया
च उत्तरकालभाविवेकियक्वं विकुर्वति 'विद्यव्यत्ता' विकुर्व्य अहिं अगमिहसीहं सपरिवाराहिं णहाणीए णं गंधन्वाणीएणय सिद्धं तं विमाणं अणुष्ययादिणी करेमाणे अणुष्ययादिणी करेमाणे पुव्ववल्लेणं दिसोवाणेणं दुक्दइ' अष्टाभिरग्रमिहधीभिः सपरिवाराभिः प्रत्येकम्
२ पोद्यदेवीसहस्रपरिवृत्ताभिः नाटचानीकेन गन्धवीनीकेन च सार्दम् तं विमानमनुप्रदक्षिणीं कुर्वन् अनुप्रदक्षिणीं कुर्वन पूर्वकेण पूर्वदिक्रस्थेन त्रिसोपानेन दुरोहन्ति, आरोहन्ति

'तए णं से सक्के जाब हट्ट हिपए दिव्वं-'इत्यादि ।

टीकार्थ-पालकदेव द्वारा दिन्ययानिवमान की कथनानुसार निष्वित्त हो जानेकी खबर खुनने के बाद 'से सक्के' उस शक्त ने 'हृद्दृहियए' हिष्त हृद्य होकर 'दिन्यं जिणेंदाभिगमणजुगं सन्वालंकारिवभूसिकं उत्तरवेजिवयं स्वं विज्ञव्वहं' दिन्य, जिनेन्द्र के सन्मुख जाने के योग्य ऐसा समस्त अलंकारों से विभूषित उत्तर वैक्तियरूप की निकुर्वणा कीं 'विज्ञवित्ता अहिंहं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं णहाणीएणं गंधन्याणीएण य सिंद्धं तं विभाणं अणुष्पयाहिणी करेग्याणे २ पुन्त्रिक्लेणं तिस्तोवालेणं दुरूहई' विकुर्वणा करके फिर वह आठ अग्रमहिषयों के साथ, उनकी परिवार भूत १६-१६-हजार देवियों के साथ, नाह्यानीक एवं गन्धर्वानीक के साथ उस दिन्य यान विमान की तीन प्रदक्षिणा करके पूर्वदिग्वर्ती जिस्तोपान से होकर उस पर चढा 'दुरूहित्ता जाव सीहास-

^{&#}x27;तएणं से सक्के जाव हट्ट हियए दिन्धं-इत्यादि'

डीडार्थ-पालक हैव दारा हिन्य यान-विभाननी आज्ञा मुळल निष्पत्त थर्ड ळवानी जलर संक्षणीने 'से सक्के' ते शक्के 'हट्ट हियए' इषित इक्ष्य थर्छ ने 'दिन्व किणें दाभिन्यमणजुग्गं सन्वारंकारविभूसिकं उत्तरवेउन्वियं क्ष्यं विश्वव्यइ' हिन्य जिनेन्द्रनी साभे जवा ये। ये येवां सर्व-अलंकारविभूसिकं उत्तरवेउन्वियं क्ष्यं विश्वव्यइ' हिन्य जिनेन्द्रनी साभे जवा ये। ये येवां सर्व-अलंकारविभूसिकं पिक्षित उत्तर वैडिय उपनी विद्वविद्या करी. 'विउन्वित्ता अट्टाईं अगामहिसीहं सपरिवाराहिं णदृष्णीएणं गंधन्वाणीएण य सिद्धं तं विभाणं अणुष्प याहिणी करेमाणे र पुन्विक्लेणं तिसोगाणेगं दुक्त्रईं' निष्ठर्भक्षा करीने पछी ते आक अश्वभिद्यां के। साथे तेभक्ष ते अश्वभिद्यां के। परिवार भूत ११-११ इक्षर देवी। के। साथे नाद्यानी तेभक्ष अध्वभिद्यां साथे ते हिन्य यान-विभाननी त्रभु प्रदक्षिणाको।

'हुरूहिता' दुरू आक्षा 'जाव सीहासणंसि पुरत्थाभिष्ठहे सण्णिसण्णेत्ति' यावत् सिंहासने पूर्वाभिष्ठात्वाः सण्णिषणाः असौ शकः उपविष्टवान् इति, अत्र यावत् पदात् यत्रैव सिंहासनं सत्रैव उपागच्छति उपागत्य इति ग्रःह्यम् 'एवं चेव सामाणिआवि उत्तरेणं तिसोवाणेणं दुरू-हंति दुरूहित्ता पत्तेअं २ पुष्टवण्णत्थेस भहासणेस णिसीअंति' एवमेव अग्रुना प्रोक्तप्रकारेणेव सामानिका अपि उत्तरेण उत्तरदिवस्थेन त्रिसोपानेन दुरोहित्ति, आरुद्ध प्रत्येकं प्रत्येकं प्रत्येकं पूर्वन्यस्तेषु पूर्वभागस्थापितेषु भद्रासनेषु निषीदित्त उपविश्वत्ति 'अवसेसा य देवा देवीओअ दिश्विक्लेणं तिसोवाणेणं दुरूहंति दुरूहित्ता तहेव जाव णिसीअंति' अवशेषाश्र आभ्यन्तर पार्वद्याद्याः देवाः वेव्यश्र दक्षिणेन त्रिसोपानेन दुरोहित्ति, आरोहित् आरुद्ध तथैव पूर्वोक्त-प्रकारेणेव यावत् निषीदित्त उपविश्वत्ति, । अथ उपदिश्वतः शक्स्य पुरः प्रस्थायिनां क्रम-माह—'तए णं तस्स' इत्यादि 'तएणं तस्स तंसि दुरूहस्स इमे अहुद्धभंगलगा पुरओ अहाणु-

णंसि पुरस्थाभिमुहे सिकासक्कोत्ति' और चढकर यावत वह पूर्वदिशा की ओर मुंह करके सिंहासन पर बैठ गया यहां यावत्पद से 'यत्रैव सिंहासनं तत्रैव उपागच्छित, उपागत्य' इतने पाठका संग्रह हुआ है 'एवं चेव सामािका वि उत्तरेणं तिसोवाकेणं दुरुहित्ता पत्तंय २ पुर्विकात्थेष्ठ भदासकेष्ठ किसीअंति' इसी तरह सामािक देव भी उत्तरदिग्वतीं त्रिसोपान से होकर प्रत्येक अपने२ पूर्व से रखे गये भदासनों पर बैठ गये 'अवसेसा य देवा देवी भो य दाहि किल्लेणं तिसोचाकेणं दुरुहित्ता तहेव जाव किसीअंति' बाकी के और सब देव और देवियां दक्षिणदिग्वतीं त्रिसोपान से होकर उसी तरह से अपने अपने पूर्विग्यस्त सिंहा सनों पर बैठ गये 'तएणं तस्स सक्करस तंसि दुरूढस्स इमे अड्डानंगलगा पुरओ अहाणुप्वीए संपिट्टिया' इस प्रकार से उस शक उस दिव्य यानविमान में बैठ जाने पर सबसे पहिले उसके आगे ये प्रत्येक प्रत्येक आठ आठ की संख्या में

हरीने पूर्व हिन्नती त्रि—से। पान ७५२ थर्ड ने तेनी ७५२ आइ८ थ्या. 'दुल्हिला जाव सीहासणंसि पुरत्थाभिमुहे सिणासणोत्ति' अने आइ८ थर्ड ने यावत ते पूर्व हिशा तरह मुफ हरीने सिंहासन ७५२ भेसी गया. अही यावत पहथी 'यत्रैव सिंहासनं तत्रैव उपा गच्छिति उपागत्य' आ पाठ संगृहीत थ्या छे. 'एवं चेव समाणिआ वि उत्तरेणं तिसोबाणेणं दुरुहित्ता पतेयं २ पुट्वणत्थेसु भहासणेसु णिसीअंति' आ प्रभाष्ट्रे सामानि हेवे। पण् ७त्तर हिन्नती त्रिसे। पान ७५२ थर्ड ने यान-विभानमां पातपाताना सद्रासने। ७५२ भेसी गया. 'अवसेसा य देवा देवीओ य दाहिणिल्छेणं तिसोबाणेणं दुरुहित्ता तहेव जाव णिसीअंति' शेष अधा हेव—हेवीओ हिस्छ् हिन्नती त्रिसे। पान ७५२ थर्ड ने पातपाताना पूर्वन्यस्त मिंहासने। ७५२ भेसी गया. 'तएणं तस्स सक्कस्स तंसि दुरूढस्स इमे अट्टह मंगळणा पुरओ अहाणुपुट्वीए संपट्टिया' आ प्रभाष्ट्रे ते शिक्ष थान-विभानमां आइ८ थर्ड अथे। त्यारे सर्व प्रथम तेनी सामे प्रत्येय-प्रत्येष्ठ आठ आठनी संभ्यामां मंगस द्रवी

पुच्चीए संपद्विया' ततः खलु तद्वन्तरं किल तस्य शक्रस्य तिसम् विमाने आरूढस्य सतः इमानि स्वस्तिक १ श्रीवत्सर २ निन्दिकावर्त ३ वर्द्धमानक ४ भद्रासन ५, मत्स्य ६ कल्का ७ दर्पण ८ नामकानि अष्टाष्ट मङ्गलकानि, अष्टाष्टिति वीष्मावचनात् प्रत्येकस्, अष्टो इत्यर्थः पुरतः, अप्रतः यथानुष्ट्यां संप्रस्थितानि, चिलतानि 'तयणंतरं च णं पुण्णकलसमिंगारं दिव्वाय छत्तपढामा सचामरा य दंसणरइय, आलोअदिसिणिक्वा वाउद्धू अविजयवेजयंतीअ सम्रुसिया गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुठ्वीए संगत्थिया' तदनंतरं च खलु पूर्णकछश्भक्षारम् —पूर्ण जलभूतं कलश्मक्षारम्, तत्र कलशः प्रसिद्धः भृक्षारः (झारी) ति भाषा प्रसिद्धा अयं च कलश्चव्दः, जलपूर्णत्वेन आलेख्यरूपाष्टमङ्गलान्तर्गत कलशाद् भिन्न इति न पुनकिक्तिः दोषसम्भवः, दिव्या च लत्रपताका दिव्या प्रधाना लत्नविधिष्टा पताका इत्यर्थः सचामरा चामग्युक्ता 'दंसणरइय' दर्शनरचिता—दर्शने प्रस्थातु ईष्टिप्रथे रचिता मङ्गल्यात् अत एव वाशेकदर्शनीया आलोके विदः प्रस्थानसामयिकशञ्चनानुद्धल्यालोकने दर्शनीया दर्शनयोग्या बातोद्धृतविजयवैजयन्ती च वातेन वायुना उद्धृता कंपिता विजयस्थिका

मंगल द्रव्य कमशः प्रस्थित हुए उनके नाम इस प्रकार से है-स्वस्तिक श्रीवत्स, निन्दितावर्त, वर्द्धमानक, भद्रासन, मत्स्य, कलश, और दर्पण 'तयणंतरं च णं पुण्णकलस्मिगारं दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा य दंसणरहय आलोयदरी-सणिसज्ञा वारद्ध्य विजय वेजयन्ती य समूसिआ, गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुप्रवीए संपित्थया' इनके बाद पूर्ण कलश, भृङ्गारक झारी, दिव्य छन्न चामर सहित पताकाएं जो कि प्रस्थाता के दृष्टि पथमें मङ्गलकारी होने से रची जाती हैं और प्रस्थान के समय में जिनका देखना शकुन शास्त्र के अनुकूल माना गया है। आगे आगे चली-इनके बाद वायु से कंपित होती हुई विजय-वैजयन्तियां चली जो कि बहुत ऊंची थी और जिनका अग्रभाग आकाश तल को स्पर्श कर रहा था 'तयणंतरं छत्त्विमारं' इनके बाद छन्न, मुहार, 'तयणंतरं च

क्षमशः प्रस्थित हरवामां आत्यां. ते द्रव्याना नामा आ प्रमाणे छे-स्वस्तिह, श्रीवत्स, निन्दिश्वर्ता, वर्द्धभान्द्र, सद्रासन, भत्स्य हवश अने दर्भणः. 'तयणंतरं च णं पुण्ण-कलसमिंगारं दिव्या य छत्तपडागा सचामराय दंसणरइय आलोयदरिणिज्जा वाउद्ध्य-विजयवेजयन्ती य समूसिआ, गगणतलप्रणुलिहंती पुरओ अहाणुपुर्व्योप संपत्थिया' त्यार आद पूर्ण हणश, स्रृंभारह, अती, दिव्य छत्र, यामर सद्धित पताश्यो—हे के छे। प्रस्थातानी दिव्ये भंगणहारी द्वावाधी भृश्य छे, अने प्रस्थान समये केमनुं दश्न शहनशास्त्र मुक्षण अनुहून भानवामां आवे छे. आगण-आगण यासी. त्यार आद वायुधी विक्रिय धती विक्रय वैक्रयंती हो। यासी. विक्रय वैक्रयंती हो। अतीव श्री दिवी अने तेमने। अध्यान आहाश तणने स्परी रह्यो द्वी. 'तथणंतरं छत्तमिंगारं' त्यार आह छत्र, स्वां अभाग आहाश तणने स्परी रह्यो द्वी. 'तथणंतरं छत्तमिंगारं' त्यार आह

वैजयन्ती च पार्श्वतो छघुपताद्वययुक्तः पताका विशेषः 'समृसिभा' सहिच्छ्ता समुभता गगनतळमनुलिखन्ती अनुस्प्रज्ञित एते कलशादयः पदार्थाः पुरतो यथानुप्वर्ण संप्रस्थिताः 'तयणंतरं छत्तिमारं' तदनन्तरं छत्रभुङ्गारम् छत्रं च भुङ्गारश्च छत्रभुङ्गारम् समाहारादेकव- द्वावः नपुंसकत्व च तत्र छत्रम् 'वेष्ठिअभिसंतिविमलदं प्रंतं कोरंडमरुद्धामोवसोहिअं चंदमंडलिमं समृसिअं विमलं' इति वर्णकपुक्तम् भरतस्य विनीता राजधानी प्रवेशाधिकारतो होयम् इदं च तत्रेव हतीयवक्षस्कारं द्रष्टव्यम् भुङ्गारश्च विशिष्टवर्णकचित्रोपेतः पूर्व च भुङ्गारस्य जलपूर्णत्वेन कथनात् अयं च जलरिकत्वेन इति न पौनरुत्त्यम् पुरतो यथानुपूर्व्या संप्रस्थितम्, महेन्द्रविशेषणान्याह—'तयणंतरं च णं वहरामयत्रष्टलद्वसंदिअ सुसिलिद्धपरिषद्व- मद्वसुपइद्विष् तदनन्तरं च खल्ड वज्रसयवृत्तक्षर्वः सुश्चिरद्वपरिष्यद्व- मद्वसुपइद्विष् तदनन्तरं च खल्ड वज्रसयवृत्तकष्टसंस्थितं सुश्चिरद्वपरिष्यद्व- मद्वसुपइद्विष् तदनन्तरं च खल्ड वज्रसयवृत्तकष्टसंस्थितं सुश्चिरद्वपरिष्यद्व- मद्वसुपइद्विष् तदनन्तरं च खल्ड वज्रसयवृत्तकष्टरं मनोज्ञं संस्थितं संस्थानम् आकारो यस्य स तथाभूतः तथा सुश्चिरदः सुश्चिपकावयवः सुसंगत इत्यर्थः परिश्चिर्दः इपिष्ठितः स्मुलित्वाभूतः तथा सुश्चिरदः सुश्चिपकावयवः सुसंगत इत्यर्थः परिश्चर्यः सुप्रतिष्ठितः नतु तिर्यक्तपिततया वक्रः ततः पत्रेषां कर्मधारयः, अत एव पत्रसिद्धः शेषध्वजेभ्यो विशिष्टः परिमण्डिताभिरामः, अनेकानि वराणि पञ्चवर्णानि कुष्टशीनां लघुपताकानां सहराणि तैः तथा 'था 'अणेगवर पंचवण्णकुडभीसहस्य परिमंहियागिरामे' अनेकवरपञ्चवर्णकुडभी सहस्र-

णं बहरामय वहलह संठिय सुसिलिह परिघट्टमह सुपहिटए विसिह अणेगवरपंच-वण्णकुड भीसहस्सपरिमंडियाभिरामे, बाउद्ध्य विजय बैजयंती पडागा छसा इच्छस्तकलिए, तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे, जोयणसहस्सम्सिए, महइ महा-लए, मिहंद इसए पुरओ अहाणुप्रवीए संपत्थिएसि' इनके चलने के बाद महेन्द्र ध्वज पस्थित हुआ यह महेन्द्र ध्वज रत्नमय था इसका आकार दृस्त-गोल एवं लष्ट मनोज्ञ था सुश्लिष्ट मसूण चिकना था खरसाण से घिसी गई पाषाण प्रतिमा की तरह यह परिमृष्ट था सुकुमार ज्ञाणसे घिसी गई पाषाण प्रतिमा की तरह यह मुख्ट था सुप्रतिष्ठत था इसी कारण यह जोष ध्वजाओं की अपेक्षा विशिष्ट था तथा अनेक पांचो रंगोवाली कुडिंभयों के लघुपताकाओं के समृहो

अणेगवरपंचवण्णकुडभीसहस्सपरिमंडियाभिरामे, वाउद्धुय विजयवैजयंतीपडागा छत्ताइच्छत्तकछिए, तुंगे गगणतछमणुळिइंतसिहरे, जोयणसहस्समृसिए, महइ महाछए, महिद्द्रश्रए, पुरओ, अहा णुपुट्यीए संपिक्षण्ति' से सर्वना प्रस्थान पछी भहेन्द्रश्वक प्रस्थित थये। स्था भहेन्द्रश्वक रतनभय हते। स्थान आधार दृत्त गेण तेमक बण्ट- भनेज हते। से सुश्विष्ट-मस्ख् सुिक्ष्र हते। असाख्यी घसवामां आवेली प्रस्तर प्रतिमानी केम से परिमृष्ट हते। सुश्वमार शाख् उपर घसवामां आवेली पाषाख् प्रतिमानी केम सा मृष्ट हते। सुप्रतिष्ठित हते। स्था क्या श्रेष ध्वलेनी अपेक्षास विशिष्ट हते। तेमक सनेक पांच रंगा वालीकुरिक्सोना-लघु पताक्षास्थाना सम्हिष्टी से अलंकुत हते। दुवाधी श्रेष्ति विकथवैक्यंतीथी तेमक पताक्षातिप्रताक्षास्थानी तथा छत्रातिछत्रोथी से कित हते। दुवाधी श्रेष्ति विकथवैक्यंतीथी तेमक पताक्षातिप्रताक्षास्थानी तथा छत्रातिछत्रोथी से कित हते।

परिमण्डितः अलङ्कृतः सचासौ अभिरामश्रेति तथाभूतः पुनश्र कीद्यः शकः 'वाउद्युअविजयनेज्यंतीपडागा ल्याइच्लित्त किल्यं' वातो द्धृतिजय-वेजयन्तीपताका ल्या
विच्लित्र किल्यः—तत्र वातोद्धृताः, वायुमा कंपिता या विजयद्विका वेजयन्ती पताकाः
ताभिः ल्यातिच्लित्रेश्व कल्तिः युक्तः 'तुंगे' तुङ्गः, अत्युक्ततः अत एव 'गगणतनमणुलिहं
तिस्तिःरे' गगनतल्यानुलिखत् शिखरः, तत्र गगनतल्यम्, आकाश्यतल्यानुलिखत् संस्पृशत्
शिखरम्, अग्रभागो यस्य स तथा भूतः, तथा 'जोअगमहस्ममृसिए' योजनसहस्रमुत्सतः,
अत पवाह—'महह महाल्ल्' महितमहाल्यः अतिश्चयेन महान् 'महिद्दच्छ्र्य' महेन्द्रध्यनः 'पुरश्रो
अहाणुपुच्योष् संवित्थिएति' पुरतो यथानुपूर्व्या संप्रिथतः, इति 'तयणंतरं च णं सक्वनेवत्थ
परिश्रच्लित्र सुसल्ला सच्वालंकारविभुसिआ पंत्रशिणआ पंत्रशिणआहिन्द्रश्रो जाव संपित्रआ'
तद्दनन्तरं च खल्ल स्वरूपनेपथ्य—परिकच्लितस्ति।ति, तत्र स्वरूपं स्वर्कानुसारि नेपथ्यं
वेपः परिकच्लितः परिपृहितो यैः, तानि तथा सुसल्लानि पृण सामग्रीकत्या अतिश्यसिक्तान्तानि सर्वालङ्कारविभूपितानि एवं भूतानि पश्चकानीकानि पश्चानीकाधिपतयश्च पुरतो यथानुपूर्वा संप्रस्थितानि एवं भूतानि पश्चकानीकानि पश्चानीकाधिपतयश्च पुरतो यथानुपूर्वा संप्रस्थितानि 'तयणंतरं च णं बहवे अभियोग्या देवा य देवीश्रोअ सएहिं सएहिं
क्वेहिं जात्र णिओगेहिं सन्तः देविदं देवरायं पुरशोअ मग्यशोअ अहाणुपुव्यीआ संपर्दिया'

से यह अलङ्कृत था हवा से कंपित विजय वैजयन्ती से एवं पताक्रातिपताकाओं से-तथा छन्नातिच्छनों से यह कलित था तुंग-उंचा था इसका अग्रभाग आकाश से वाते कर रहा था क्योंकि यह १ हजार योजन का उंचा था इसी कारण यह बहुत ही अधिक महान् विद्याल-था 'तयणंतरं च णं सहव नेवत्थ परिअच्छिये सुसड्जा सन्वालंकार विभूसिया पंच आणिआ पंच आणियाहिवहणो जाव संग्रिया' इसके बाद जिन्हों ने अपने कर्म के अनुरूप वेष पहिर रखा है ऐसी पांच सेनाएं पूर्ण सामग्री युक्त सज्जित किये है समस्त अलंकारों को जिन्हों ने ऐसे पांच अनीकाधिपति यथाकम से संग्रियत हुए 'तयणंतरं च णं बहवे आभि-ओगिआ देवाय देवीओ य सएहिं सएहिं रूबेहिं जाव णिओगेहिं सक्कं देविदं

ये तुंश अये। हते। येने। यथलाश याकाश तलने स्पर्शी रह्यो हते। केम के ये के हलार ये। यन अविश्व हते। येथी व ये अति यिक महान विशाण हते। 'तयणंतर' च णं सह्त्व नेवत्थपरिअच्छिये सुसन्त्रा सन्वालंकारविभूतिया पंच अणिआ पंच अणियाहिवइणो जाव संपिट्टिया' त्यार थाइ केम हो पोत ना क्ष्मी यात्व पेव पहेरी राज्ये। हे, येवी पांच सेना थे। तेम ये पूर्ण सामश्री युक्त सुसिल्यत थर्ध ने केम हो समस्त अक्ष कारी। धारह्य क्ष्मी हो येवा पांच अनीक धिपितिया यथा क्ष्मी संप्रस्थित थया। 'त्यणंतर' च णं बह्वे आमिअगिआ देवा य देवीओ य सहिं सहिं हिं जोव णिओगेहिं सम्कं देविदं देवरायं पुरक्षीय मगाओ य अहाणुपुट विए' त्यार थाइ अनेक आलिये। शिक्ष हेवे। अने हेवीये। संप्रस्थित थ्या के अधा हेवे। यो हेवीये। पात—पाताना विश्व स्था के अधा हेवे। यो हेवीये। संप्रस्थित थ्या के अधा हेवे। यो हेवीये। पात—पाताना विश्व स्था के अधा हेवे। यो हेवीये। पात—पाताना विश्व स्था के अधा हेवे। यो हेवीये। संप्रस्थित थ्या केष स्था केष्य हेवे। यो हेवीये। संप्रस्था थ्या केष्य हेवे। यो हेवीये। संप्रस्था थ्या केष्य हेवे। यो हेवीये। संप्रस्था स्था केष्य हेवे। यो हेवीये। संप्रस्था संप्रस्था केष्य हेवे। यो हेवीये। संप्रस्था केष्य स्था केष्य हेवे। यो हेवीये। संप्रस्था संप्रस्था केष्य स्था केष्य संप्रस्था होवे। संप्रस्था केष्य संप्रस्था संप्रस्था होवे। संप्रस्था संप्रस्था संप्रस्था होवे। संप्रस्था संप्रस्या संप्रस्था संप्रस्था संप्रस्था संप्रस्था संप्रस्था संप्रस्था सं

तदनंतरं च खल्ज वहवः आभियोगिकाः—आज्ञाकारिणो देवाश्र देव्यश्र स्वकैः स्वकैः स्वैः स्वैः स्था स्वकमें पिस्थितैः उत्तरवैक्रियस्वरूपैः यावच्छव्दात् स्वकैः स्वकैः विभवैः यथा कमें पिस्थितैः संपत्तिभिः स्वकैः नियोगैः उपकर्णैः शकं देवेन्द्रं देवराजं पुरतश्र मार्गतश्र पृष्ठतः पार्श्वतश्र उभयोः, यथानुष्ट्यी यथा वृद्धक्रमेण संप्रस्थिताः 'तयणंतरं च णं वहवे सोहम्म-कृष्पवासी देवाय देवीओय सव्विद्धीए जाव दुरूढा समाणा मग्गओश्र जाव संपद्धिशा' तद-नंतरं च खल्ज बहवः सौर्यकृष्टवासिनो देवाश्र देव्यश्र सर्वद्धर्यी यावत् दृरूढा आरूढाः सन्तः मार्गतश्र यावत्संप्रस्थिताः, अत्र प्रथम यावत्पदात् शक्तस्य हिरिनगपेषिणं प्रति स्वा-श्रितिषयकः प्राग्रक्तः, संपूर्ण आळापको प्राग्तः, तेन स्वानि स्वानि यानिश्मानवाहनानि आरूढाः सन्तः इत्यर्थः द्वितीय यावत्पदात् पुरतः पश्चितश्र शक्तस्य इति प्रश्वम् अथ यथा सौधर्मकल्पानिर्थाति तथा चाह—'तएणं' इत्यादि 'तए णं से सवके' ततः खल्ज स शकः 'तेणं पंचाणिअपरिक्षिते एणं जाव महेदज्ञ्चएणं' तेन प्राग्रक्तस्वरूपेण पञ्चानीकपरिक्षिप्तेन पञ्चाभिः संप्रामिकैरनीकैः परिक्षिप्तेन—सर्वतः परिवृतेन यावन्महेन्द्र यावत्पदान् पूर्वोकः

देवरायं पुरओ य मग्गभो य अहाणुपुन्वी' इसके बाद अनेक आभियोगिक देव और देवियां अपने अपने रूपों से अपने अपने कर्त्तन्य के अनुरूप उपस्थित वैक्तिय स्वरूपों से यावत् अपने र वैभव से और अपने अपने नियोगों से युक्त हुई देवेन्द्र देवराज शक के आगे पीछे और दाई बाई ओर यथाकम से प्रस्थित हुई 'तयणंतरं च णं बहवे सोहम्मकप्पवासी देवाय देवीभोय सन्विड्डीए जाब दुरुढा समाणा मग्गओ य जाव संपिट्टिया' इनके बाद अनेक सौधर्मकल्पवासी देव एवं देवियां अपनी अपनी समस्त ऋद्धि से यान विमानादिरूप संपत्ति से युक्त हुई अपने अपने विमानों पर चढकर देवेन्द्र देवराज शक के आगे पीछे और दाई वाई ओर चली 'तएणं से सक्के तेगं पंचाणिय परिक्षित्तेगं जाव महिंद्ज्झएणं पुरओ पिकड्डिज्जमाणेगं च शासीए सामाणिय जाव परिबुढे स्विवड्डीए जाव रवेणं सोहम्मस्स कप्पस्स मज्झे मज्झे गं तं दिन्वं देवद्धि जाव

वैश्विय स्वर्पेश्वी यावत् पात-पाताना वैक्षवथी, पात-पाताना नियाग्वी युष्ठत थयेकां हैवेन्द्र हैवराक शक्ष्मी आगण-पाछण अने उप्पी अने कमणी तरह यथा क्रमे प्रस्थित थयां. 'तर्यणंतरं च णं बहवे सोहम्मकप्पवासी देवाय देवीओय सिव्यङ्ढीए जाव दुरूढा समाणा ममाओ य जाव संपिट्ट्या' त्यार आह अनेक सीधम क्ष्यपासी हेव अने हेवं ओ पातपातानी समस्त ऋदिथी सम्पन्न थर्ध ने—यान-विमानाहि ३५ संपत्तिथी युष्ठत थर्धने पातपाताना विमाना अपर यदीने हेवेन्द्र हेवराक शक्ष्मी आगण-पाछण अने उाणी अने कमणी तरह याखवा क्षाय्यां. 'तएणं से सक्के तेणं पंछाणियपरिक्सित्तेणं जाव महिंद्यसमएणं पुरओ पिक्ड्ढिज्जमाणेणं चडरासीए सामाणिय जाव परीयुडे सिव्यङ्कीए जाव रवेणं सोहम्मस्स कप्पस्स मज्झं मञ्झेणं तं दिव्य देविद्धं जाव व्यदंसमाणे २ जेणेव सोहम्मस्स कप्पस्स सत्वर्षः सामाणिय जाव परीयुडे सिव्यङ्कीए जाव रवेणं सोहम्मस्स कप्पस्स मज्झं मञ्झेणं तं दिव्य देविद्धं जाव व्यदंसमाणे २ जेणेव सोहम्मस्स कप्पस्स उत्तरित्केणिजजाण ममो हेणेव जवागच्छइ' आ प्रभाखे ते शक्ष ते पांच प्रकारनी सेनाधी परिवेष्टित थ्येक्षा यावत्

सम्पूर्णी महेन्द्रध्वजवर्णको ग्राह्यः 'पुरओ पकड्डिज्जमाणेणं' पुरतः अग्रतः प्रकृष्यमाणेन निर्मम्यमानेन 'चउरासीए सामाणिअ जाव पिडवुडे' चतुरशीत्या सामानिकसहस्नैः परिवृतः युक्तः, अत्र यावत् 'चउहिं चउरासीहिं आयरकखदेवसाहस्सीहिं' इत्यादि ग्राह्यम् 'सिव्वद्धीए जाव रवेणं' सर्वद्वयो यावद्रवेण अत्र यावत्यदात् 'सव्वज्जुईए' इत्यारभ्य 'महया इद्धीए' इत्यन्तम् तथा 'महया हयणहगीयवाइय' इत्यारभ्य 'पद्यपड्डह्वाइय' इत्यन्तं सर्वं ग्राह्यम्, एतेषां प्रत्येकपदानां व्याख्यानम् अस्मिन्नेव वक्षस्कारे द्रष्टव्यम् 'सोहम्मस्स कप्पस्स मज्झं मज्झेणं तं दिव्वं देवद्धं जाव उवदंसेमाणे उवदंसे माणे' सौधर्मस्य कल्पस्य मध्यं मध्येन

उनदंसेमाणे २ जेणेन सोहम्मस्स कप्पस्स उतिरुष्ठे णिज्जाणमग्गे तेणेन उनाग्चछह' इस प्रकार से वह जाक उस पश्च प्रकार की सेना से परिक्षिप्त हुआ यानत् जिसके आगे २ महेन्द्र ध्यज चला जा रहा है और जो ८४ हजार सामानिक देनों से परिशृत है यानत् ८४-८४ हजार आत्मरक्षक देनों से जो घिरा हुआ है अपनी पूर्ण समस्त ऋद्धि के साथ, यानत् सर्न युति के साथ २ गाजे नाजे पूर्वक सौधर्मकल्प के ठीक बीचोबीच से होता हुआ अपनी उस दिव्य देनित्व को दिखाता दिखाता जहां सौधर्मकल्प का उत्तरदिग्नर्ती निर्याण मार्ग-निकछने का प्रास्ता था बहां पर आया यहां प्रथम यानत्यद से महेन्द्र ध्यज का नर्णनात्मक पूर्ण पाठ गृहीत हुआ है हितीय यानत्यद से 'चउहिं चउरासीहिं आयरक्लदेनसाहस्सीहिं' इत्यादि पाठ का अहण हुआ है तृतीय यानत्यद से 'सब्वज्जुईए' इस पद से छेकर 'पहुपडहनाइय' यहां तक का सच पाठ गृहीत हुआ है इस पाठ के प्रत्येक पद्दों की व्याख्या इसी नक्षस्कार के कथन में की गई है अतः वहीं से इसे देखछेना चाहिये चतुर्थ गानत्यद से' तां दिव्यां देवगुतिं तं दिव्यं देवानुभावं' इन पदों का अहण हुआ है 'उनागच्छिता जोयणसय साह-

જેની આગળ-આગળ મહેન્દ્રધ્વજ ચાલી રહ્યો છે અને જે ૮૪ હજાર સામાનિક દેવાંથી પરિવૃત છે યાત્રત ૮૪-૮૪ હજાર આત્મરક્ષક દેવેલી પરિવૃત છે, પોતાની પૂર્ણ, સમસ્ત ઋદ્ધિની સાથે, યાવત સર્વ દુતિની સાથે-સાથે-ઉત્તમ માંગલિક, વાદ્યો સાથે સૌધર્મ કર્લ્યના ઠીક મધ્યમાં થઈ ને પોતાની તે દિવ્ય દેવદિને અતાવતો અતાવતો જયાં સૌધર્મ કર્લ્યના ઉત્તર દિગ્વતી નિર્યાણ માર્ગ-નીકળવાના માર્ગ હતો ત્યાં આવ્યા અહીં પ્રથમ યાવત પદથી મહેન્દ્ર ધ્વજના વર્ણનાત્મક પૂર્ણ પાઠ સંગૃહીત થયા છે. દ્વિતીય યાવત પદથી 'चडहिં चडराલी हો आवरक्खदेवसाहरसी हો' વગેરે પાઠ સંગૃહીત થયા છે. તૃતીય યાવત પદથી 'સદ્યક્ર કુંદ્ર' આ પદથી 'વહુ કહ્ફ વાદ્ય' અહીં સુધીના પાઠ સંગૃહીત થયા છે. હીતી થયા હતે હીત થયા છે. અને પાઠમાં આવેલા દરેક દરેક પદની વ્યાખ્યા આ વક્ષરકારના કથનમાં

तां दिव्यां देविद्धिम् उपदर्शयन् उपदर्शयन् अत्र यावत्यदात् तां दिव्यां देवधुतिं तं दिव्यं देवानुभाविमिति ग्राह्मम्, सौधर्मकल्यवासिनां देवानामुपदर्शयन् उपदर्शयिक्षत्यर्थः 'जेणेव सोहम्मस्स कप्णस्स उत्तरिल्छे णिज्जाणमग्गे तेणेव उवागच्छइ' यत्रैव सौधर्मस्य कल्पस्यौत्तराहः उत्तरभागसञ्चनधी निर्योणमार्गः निर्ममनपन्थाः तत्रैवोपागच्छिति स शकः, यथा वरियता नागराणां विवाहोत्सवदर्शनार्थं राजपथे याति नतु नष्टरध्यादौ तथाऽयमिति भावः 'उवागच्छिता' उपागत्य 'जोयणसथसाहस्सीएहिं विग्गहेहिं ओवयमाणे र' योजनशतसाहिन्निकैः योजनछक्षप्रमाणैः विग्रहेः कमैरिव गन्तच्यः क्षेत्रातिक्रमरूपैः अवपतन् अवपतन् अवतरन् अवतरन् 'ताए उक्तिहाए जाव देवगईए वीईवयमाणे वीईवयमाणे' तया उत्कृष्टया यावदेवगत्या व्यतिव्रजन् व्यतिव्रजन् अत्र यावत्यदात् त्वरया वपस्रया सद्रया विह्मस्या व्यतिव्रजन् व्यतिव्रजन् अत्र यावत्यदात् त्वरया वपस्रया सद्रया विह्मस्याणं निव्यत्या क्रिया अस्मिन्नेववक्षस्कारे प्रथमस्रते दृष्टव्यम् 'तिरियमसंखिजाणं दीवसमुद्दाणं मज्द्रं मज्द्रेणं जेणेव णंदीसरवरदीचे जेणेव दाहिणपुरत्थिनिल्छे रङ्करगपवत्रए तेणेव उवागच्छइ' तिर्यगसंक्ष्येयानां द्वीपसमुद्राणां मध्यं मध्येन यत्रैव नन्दीश्वरत्रोद्वीपः यत्रैव तस्यैव पृथुत्वमध्यभागे दक्षिणवीरसन्त्यः, आग्नेयक्षीणस्य रितकरपर्वतः, सत्रैव उपागच्छित, ननु सौधर्मादवत्रदाः शक्तस्य नन्दीश्वरद्वीपे एव अवतरणं युक्तिमन् नतु

स्सीहिं विग्महेहिं ओवयमाणे २ ताए उक्किहाए जाव देवगईए वीईवयमाणे २ तिरियमसंखिजजाणं दीवसमुद्दाणं मज्ज्ञं मज्झेणं जेणेव जंदीसरवरे दीवे जेणेव दाहिणपुरिधमित्छे रहकरपव्वए तेणेव उवागच्छह' वहां आकरके वह १ लाख योजन प्रमाण हमों को गन्तव्यक्षेत्रातिक्षलणरूप पादन्यासों को भरता भरता उस प्रसिद्ध उत्कृष्ट यावल् देवगित से तिर्थगलोक संबन्धी असंख्यात द्वीप समुद्रों के ठीक बीचोबीच से होता हुआ जहां पर नन्दीन्धर दीप था और उसमें भी जहां आग्नेयकोण मे रितकर पर्वत था वहां पर आया। यहां इांका ऐसी हो सकती है कि सोधर्भ स्वर्ग से उतरते हुए शक को नन्दीन्धर दीपमें ही सीधा

ल स्पन्ध करवामां आवी छे. अधी क लिहासुकी त्यांथी वांचना प्रयास करे. यतुर्थ यात्रत् पहथी 'तां दिव्यां देवसुति' तं दिव्यं देवानुभावं' से पढ़े। संजुद्धीत थया छे. 'खागच्छिता जोवणसाहस्सीहिं विग्महेहिं ओवयमाणे २ ताए उक्किट्ठाए जान देवगईय घोईवयमाणे २ तिरियमसंखिडनाणं दीवसमुद्दाणं मच्हां मज्झेणं जेलेन णंशिसरवरे दीने जेणेन दाहिणपुरिधिमिल्छे रहकरपव्यए तेणेन उपागच्छइ' तां आवीने ते स्थिक द्याभ थे।लन प्रमाण्य पणदास्था गन्तन्य क्षेत्रातिक्रमण्य ३५ पाहन्यासे लगतो सरतो ते प्रसिद्ध ६८०८ यावत् देवगितथी तिर्थण देशक संजंधी स्थान्य क्षेत्र प्रमाण्यात दीप समुद्रोना ठीठ मध्य खालमां थतो लयां आवनेय क्षेत्रमां रितिकर पर्वत द्वतो, त्यां आव्योग सदीं स्थानी शक्यों शिक्षा अदीं शिक्षा अदी

पुनरसंख्येय द्वीपसम्द्रातिकमेण तत्रागमनिमितिचेत् उच्यते-निर्याणमार्गस्य असंख्यातस्य द्वीपस्य वा समुद्रस्य वा उपरिस्थितत्वेन संभाव्यमानलात् तत्रावतरणम्-ततश्र नन्दीश्वरा-मिगमनेऽसंख्यातद्वीपसमुद्रातिकमणं युक्तिमदेवेति 'उवागच्छित्ता' उपागत्य अत्र दृष्टान्ताय सूत्रम् 'एवं जा चेव स्वरियाभस्य वक्तव्यवात्ति' एवम् उक्तरीत्या येव स्वर्याभस्य वक्तव्यता यथा स्वर्याभः सौधर्मकल्यादवतीर्णस्तथाऽयमपीत्यर्थः 'णवरं सक्वाधिकारो वक्तव्वोत्ति जाव तं दिव्वं जाणविमाणपिष्टसाहरमाणे पिष्टसाहरमाणे' नवरम् अत्रायं विशेषः शक्ताधिकारो वक्तव्यः, सौधर्मेन्द्रनाम्ना सर्व वाच्यम् इति यावत् तां दिव्यां देविद्धं यावत् दिव्यं यानविमानं प्रतिसंहरन् प्रतिसंहरन् नवरमत्र प्रथमयावच्छव्दो दृष्टान्तविषयीकृते स्वर्याभाधिकारस्य अवधिस्चनार्थः, सचावधिर्विमानप्रतिसंहरणपर्यन्तो वक्तव्यः द्वितीय यावन

जाना युक्तिमत् था फिर वहां जाने के लिये इसे इन तिर्यग्लोकवर्ती असंख्यात हीए समुद्रों को पार करने की क्या आवर्यकता थी? तो इसका समाधान यही है कि सौधर्म स्वर्ग से उतर कर नन्दीश्वर हीए में जानेका मार्ग इन्हीं असंख्यात हीए समुद्रों के उपर से ही गया हुवा प्रतीत होता है इसलिये इसे वहां से जाना पड़ा है अतः ऐसा यह कथन युक्ति युक्त ही है। 'उवागच्छित्ता' वहां आक रके 'एवं जम चेव स्ररियाभस्स वक्तव्वया एवरं सक्काहिगारोवक्तव्वो इति जाब तं दिव्वं देविद्धं जाव दिव्वं जाणविद्याणं पिहसाहरमाणे २ जाव जेणेव भगवओ तित्थयरस्स अवणे तेणेव अगवओ तित्थयरस्स अवणे तेणेव उवागच्छइ' इसने फिर क्या किया इत्यादि सब विषय जानने के लिये स्रयीभ देवकी बक्तव्यता को देखना चाहिये यह वक्तव्यता पीछे कही जा चुकी है तात्पर्य यही है कि स्रयीभदेव जिस प्रकार सौधर्मकरण से अवतीण हुआ उसी तरह से यह

शुक्तिमत हतुं पशी ते त्यां कवा मांटे तेने तिर्याग्वीडवती असंभ्यात द्वीपसमुद्रोने पार हरवानी शी आवश्यहता हती है तो आ शंहानुं समाधान आ छे हे सीधम स्वर्णमांथी हतरीने नन्ही वर द्वीपमां कवाना मार्ग क्रेक असंभ्यात द्वीप समुद्रो हपर थर्धने क छे. क्षेधी क ते शहने त्यां थर्धने क कवुं परशुं हुनुं क्षेटवा माटे आ हथन शुक्ति शुक्त क छे. 'डवागिक हता' त्यां थर्धने क कवुं परशुं हुनुं क्षेटवा माटे आ हथन शुक्ति शुक्त क छे. 'डवागिक हता' त्यां कर्धने 'एवं जा चेव सूरियामस्स वत्तव्यया णवरं सक्काहिगारी वत्तव्यो इति जाव तं दिव्वं देविद्धं जाव दिव्वं जाणिवमाणं पित्रसाहरमाणे २ जाव जेणेव भगवलो हित्थयरस्स जम्मणनगरे जेणेव भगवलो तित्थयरस्स जम्मणमवणे तेणेव उवागच्छदं' ते ही शुं हर्शुं वणेरे का ह्या माटे सूर्या करेवनी वक्ष्तव्यताने क्षेश्वं देवी किर्ध के. आ वक्षत्व्यता पहेवा हेवामां आधी छे. तात्पर्य आ प्रमाहे छे हे सूर्या करेव के प्रमाहे सीधर्म हम्पमांथी अवतीर्ह्य विद्या तेक प्रमाहे क्षेप आ श्रमाहे छे हे सूर्या करेवनी अवतीर्ह्य क्षेप अमाहे क्षेप अमाहे का श्रमाहे का स्वावीर्ह्य क्षेप अमाहे का श्रमाहे का स्वावीर्ह्य क्षेप अमाहे का श्रमाहे का स्वावीर्ह्य क्षेप अमाहे का स्वावीर्ह्य क्षेप अमाहे का स्वावीर्ह्य स्वावीर्ह्य का स्वावीर्ह्य स्वावीर्ह्य स्वावीर्ह्य का स्वावीर्ह्य स्वावीर्य स्वावीर्ह्य स्वावीर्ह्य स्वावीर्ह्य स्वावीर्ह्य स्वावीर्ह्य स्वावीर्ह्य स्वावीर्ह्य स्वावीर्ह्य स्वावीर्ह्य स्वावीर्य स्वावीर्ह्य स्वावीर्य स्

रखन्दात् 'दिव्यं देशजुई दिव्यं देशणुभावं' इति पदद्वयं ग्राह्यम् तथा चायमित्यर्थः दिव्यां देविद्धं परिवारसंपदं स्विवमानवर्कतं सौधर्म कल्पवासि देविवमानानां मेरौ भेषणात्, तथा दिव्यां देवचुर्ति शरीराभरणादि हूं सेन तथा दिव्यं देवानुभावं देवगति हूस्वताऽऽपादानेन, तथा दिव्यं यानविमानं पालकनामकं जम्बूद्धीपपरिमाणन्यूनविस्तारायामकरणेन प्रतिसंहरन् प्रतिसंहरन् संक्षिपन् संक्षिपन् 'जाग जेणेव भगवाओ तित्थयरस्स जम्मणणगरे जेणेव भगवाओ तित्थयरस्स जम्मणणगरे जेणेव भगवाओ तित्थयरस्स जम्मणणगरे जेणेव भगवाओ तित्थयरस्स जम्मणभवणे तेणेव उवागच्छइ' यावत् यत्रैव भगवतस्तीर्थकरस्य जन्मनगरं भगवतस्तीर्थकरस्य जन्मभवनं तत्रैव उपागच्छति, स शकः अत्र यावत् 'जेणेव जंबु- दीवे दीवे जेणेव भरहे वासे' इति प्राह्यम् ।

भी वहां से अवनीर्ण हुआ फर्क केवल इस अधिकार में उस अधिकार की अपेक्षा इतनासाही है कि वहां सूर्याभ देवका अधिकार है और यहां शक का अधिकार है अतः इस अधिकार का वर्णन करते समय सूर्याभ देव के स्थान में शक का प्रयोग करके इस अधिकार का कथन करलेना चाहिये यावत् इसने उस दिव्य देविंद्व का-दिव्य यान विमान का प्रतिसंहरण-संकोचन किया, यहां प्रथम यावत् शब्द से सूत्रकार ने सूर्याभदेव के अधिकार की अवधि सूचीत की है और वह यहां विमान के विस्तार को संकोचन करने तक यहीत हुइ है तथा ब्रितीय यावत् शब्द से 'दिव्वं देवजुई दिव्वं देवाणुभावं' इन दो पदों का प्रहण हुआ है इसका अर्थ ऐसा है दिव्य परिवार कर संयत्ति को संकुचित करने के लिये उसने-शक ने-अपने विमान को छोउकर वाकों के सौधर्मकल्पवासी देवों के विमानों को-मेर पर भेज दिया तथा शरीर के आभरणादिकों को संकुचित करने के लिये उसने उन्हें कम कर दिया, दिव्य देवानुभाव को भी संकुचित करने के लिये उसने उसे कम कर दिया तथा दिव्य यान विमान का जो पालक नामका विमान था उसे संकुचित करने के लिये उसने इसके विस्तार की जो

અને આ શકના અધિકાર છે. એથી આ અવિકારનું વર્જુન કરતાં સૂર્યાલદેવના સ્થાનમાં શક શખ્દના પ્રયોગ કરીને આ અધિકારનું કથન કરી લેવું જોઇએ. યાવત તેણે તે દિવ્ય દેવહિંનું-દિત્ય યાન-વિમાનનું પ્રતિસંહરણુ-સંકાચન કર્યું. અહીં પ્રથમ યાવત શખ્દથી સૂત્રકારે સૂર્યાલદેવના અધિકારની અવધિ સૂચિત કરી છે. અને તે અવિધ વિમાનના વિસ્તારનું સંકાચન કરવું અહીં સુધી ગૃહીત થઈ છે. તેમજ દિતીય યાવત શખ્દથી 'વિચ્વં દેવजુદં વિચ્વં દેવાળુમાવં' એ છે પડા સંગૃહીત થયા છે. એ પદાનો અર્થ આ પ્રમાણે છે. દિવ્ય પરિવાર રૂપ સંપત્તિને સંકુચિત કરવા માટે તે શકે પાતાના વિમાનને બાદ કરીને શેષ સૌધર્મ કલ્પવાસી દેવાના વિમાનોને મેરૂ ઉપર માકલી દીધાં. તેમજ શરીરના આભરણાદિકાને સંકુચિત કરવા માટે તે શકે પાતાના વિમાનને પણ સાંકુચિત કરવા માટે તેણે તેમને કમ કરી નાખ્યાં. દિવ્યદેવાનુ માવને પણ સાંકુચિત કરવા માટે તેણે કમ કરી નાખ્યાં દિવ્યદેવાનુ માવને પણ સાંકુચિત કરવા માટે તેણે કમ કરી નાખ્યાં દિવ્ય યાન-વિમાન રૂપ જે પાલક નામક

'उनागि छत्ता' उपागत्य 'भगनओ तित्थयरस्स जम्मणभनणं तेणं दिन्वेणं तिन्खुत्तो आयाहिणप्याहि णं करेइ' भगनतस्तीर्थकरस्य जन्मभननं तेन दिन्येन यानिनमानेन त्रिः करनः—नारत्रयम् आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति सः श्रकः 'करित्ता' कृत्वा भगनओ तित्थयरस्स जम्मणभनणस्स उत्तरपुरित्थमे दिसीभागे चउरंगुलमसंपत्तं धरणियले तं दिन्नं जाणिनमाणं ठवेइ' भगनतस्तीर्थकरस्य जन्मभननस्य उत्तरपौरस्त्ये दिग्मागे ईशानकोणे चतुरङ्गुलमसं-प्राप्तम् धरणितले तं दिन्यं यानिमानं स्थापयति 'ठिन्ता' स्थापयित्ना 'अट्टाईं अग्ममहि-सीहं दोहं अणिएहं गंधन्ताणिएण य णद्दाणीएण य सर्द्धिं ताओ दिन्नाओ जाणिनमाणाओ

कि जंम्बूद्रीप के बराबर था कम कर दिया इस तरह सबका संकोच करता र यावत् वह जहां पर जम्बूद्रीप नामका द्वीर था और उसमें भी जहां पर भरत-क्षेत्र था और उसमें भी जहां पर भगवान् के जन्म का नगर था और उसमें भी जहां पर भगवान् तीर्थंकर का जन्म भवन था वहां पर आया। यहां पर इस यावत् शब्द से 'जेणेव जंबुदीवे दीवे जेणेव भरहे वासे' इन पदों का ग्रहण हुआ है 'उवागच्छिता' आकर के 'भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणं ते णं दिब्वेणं जाणविवाणेणं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेह' उस शक ने भगवान् तीर्थंकर के जन्म भवन की तीनवार उस दिव्य विमान से प्रदक्षिणा की 'किरित्ता' तीन बार प्रदक्षिणा करके 'भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणस्स उत्तरपुरिथमे दिसीभागे चउरंगुळमसंपत्तं घरणियस्त्रे तं दिव्वं विमाणं ठवेह' किर उस शक ने भगवान् तीर्थंकर के जन्म भवन के ईशान कोनेमें चार अंगुल अधर जमीन पर उस दिव्य यान विमान को स्थापित करदिया 'ठवित्ता अहिं अग्गमहिसीहिं दोहिं अणीएहिं गंधववाणीए ण य णहाणीएण य सिद्धं ताओ

विभान हतुं, तेने संध्यित करवा भाटे ते हो तेना विस्तारने के के कम्णू द्वीप केटती हती, क्ष्म करी नाक्ष्ये। आ प्रमाणे सर्व रीते संकेश्य-करो। करते यावत् ते ज्यां कम्भुद्वीप नामक द्वीप हती। अने तेमां पण् ज्यां भरत होत्र हतुं, अने तेमां पण् ज्यां भरत होत्र हतुं, अने तेमां पण् ज्यां भरत होत्र हतुं, अने तेमां पण् ज्यां भरति होत्र केन्म भवन हतुं त्यां अधी यावत् शक्ट्यी 'जेणेव जंबुदीवे दीवे जेणेव मरहेवासे' आ पहे। अहण् थयां छे. 'उबागच्छिता' त्यां अधी भमत्रओ तित्ययरस्स जम्मणमवण तेणं दिव्वेणं जाणिवमाणेणं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ' ते शक्के भगवान तीर्थ करना कन्मभवननी त्रण् वार ते हिल्य विभानकी प्रहिश्ला करी. 'क्रिता' त्रण् वार प्रहिश्ला करीने 'मवगओ तित्ययरस्स जम्मणभवण स्स उत्तरपुर्तिथमे दिसीमागे चवरंगुलमसंपत्तं धरणियले तं दिव्वं विमाणं ठवेइ' पक्षी ते शक्के भगवान तीर्थ करना करना भवनना धंशान केश्यूमां यार अंशुल अहर कभीन ७पर ते हिल्य यान-विभानने स्थापित कर्युं. 'ठिवत्ता अट्ठहिं अम्ममहिसीहिं दोहिं अणीएहिं गंध व्याणीए ण य णट्टाणीएण य सद्धिं ताओ दिव्वाओ जाणविमाणा पुरत्थिमिल्लेणं तिसोबाण-

पुरत्थिमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहइ' अष्टभिरग्रमहिषीभिः द्वाभ्यामनीकाभ्यां गन्धर्वानीकेन च नाटचानीकेन च सार्द्धं तस्मात् दिन्यात् यानविमानात् पौरस्त्येन पूर्व स्थितेन त्रिसोपाप्रतिरूपकेण प्रत्यवरोहति अवतरति सः शकः ननु पूर्वत्रिसोपानप्रतिरूपकेण शकस्य अवतरणमुक्तम् अपराभ्याम् उत्तरदक्षिणाभ्यां केषामवतरणम् इत्याह-'तए णं सकस्स देविंदस्स देवरण्णो' इत्यादि 'तए णं' ततः खळु 'सकस्स देविंदस्स देवरण्णो' शकस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य 'चउरासीइ सामाणिश्र सहस्सीओ' चतुरशीतिः सामानिकसाहस्तिकाः चतुरशीति सहस्रसंख्याक सामानिकाः 'दिच्याओ जाणविमाणओ' दिच्यात यानदिमानात 'उत्तरिस्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहंति' औत्तराहेण, उत्तरदिग्भागवर्तिना त्रिसोपानप्रतिरूपकेण प्रत्यवरोहन्ति, अवतरन्ति 'अवसेसा देवाय, देवीओअ, ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ' दिव्वाओ जाणविमाणाओ पुरिधमिल्छेगं तिसोवाणपडिस्वएणं पच्चोरुहइ' स्थापित करने बाद फिर वह दाक अपनी आठ अग्रमहिषियों के एवं दो अनीकों-गन्धर्वानीक और नाट्यानीक के साथ उस दिव्य यान विमान से पूर्व के त्रिसो-पान प्रतिरूपक से होकर नीचे उतरा। ठीक है विमान की पूर्वदिशा में रहे हुए त्रिसोपान प्रतिरूपक से इन्द्र नीचे उत्तरता है ऐसा आप कहते हैं तो उत्तर के और दक्षिण के त्रिसोपान प्रतिरूप से कौन उतरता है तो इस आशंका के समाधान निमित्त सूत्रकार कहते हैं-

'तएणं सक्कस देविंद्सम देवरण्णो चडरासीई सामाणिश्र साहस्सीओ जाण विमाणाओ उत्तरिल्लेणं तिसोबाणपिड्स्वएणं पच्चोरुहंति' उस देवेन्द्र देव-राज शक्त के उतरजाने के बाद उसके जो चौरासी हजार सामानिक देव थे वे उस दिव्य यान विमान से उसकी उत्तरिद्धा के त्रिसोपान प्रतिरूपक से होकर नीचे उतरे 'अवसेसा देवाय देवीओ य ताओ दिव्याओ जाणविमाणाओ दाहि-णिल्लेणं तिसोबाणपिड्स्वएणं पच्चोरुहंति ति' बाकी के देव और देवियां उस

पिडिह्बएणं पच्चोरुहइ' स्थापित अर्था आह ते शह पातानी आह अश्रमिखियो तेमक में अनिकार कि अनिकार कि अनिकार कि अने नाद्रयानीह-नी साथ ते हिन्य यान-विभानना पूर्व तरहना त्रिसोपान प्रतिइपहे। उपर शहने नीचे उत्थीं आ वात अश्रम छे है. ते शह विभाननी पूर्व हिशामां आनेका त्रिसोपान प्रतिइपहे। उपर शहने नीचे उत्थीं अवुंतमे हें छे। ते। पछी उत्तर अने हिस्खाना त्रिसोपान प्रतिइपहे। उपर शहने हें छुनीचे उत्रे छे हैं तो आ शहान। सभाधानार्थ सूत्रहार हहें छे-

'तए णं सक्करस देविंद्रस देवरण्णो चडरासीई सामाणिअ साहस्सीओ जाणविमाणाओ उत्तरिल्छेणं तिभोवाणपिक्वित्वएणं पच्चोरुहंति' ते देवेन्द्र देवरा ४ शक्त कथारे ઉतरी गया तथारे तेना ८४ ढ्राक्य सामानिक देवा ते दिव्य यान-विभानमांथी तेनी उत्तर दिशाना त्रिसापानप्रतिइपके उपर थर्ध ने नीथे उतर्था. 'अवसेसा देवाय देवीओय ताओ दिव्वाओ

अवशेषाः देवाश्च देव्यश्च तस्मात् दिव्यात् यानिवमानात् 'दाहिणिरुलेणं तिसोवाणपिड रूवएणं पच्चोरुहंतित्ति' दाक्षिणात्येन दक्षिणभागवित्ना त्रिसोपानप्रतिरूपकेण प्रत्यवरोहिन्त-अव-तरन्ति इति, 'तए णं से सबके देविंदे देवराया चउरासीए सामाणिश्व साइस्सीएहिं जाव सिद्धं संपिरवुडे सिव्यद्धीए जाव दुंदुभिणिग्घोसणाइयरवेणं जेणेव भगवं तित्थयरे तित्थयर मायाप तेणेव उवागच्छह' ततः खल्ज तदनन्तरं किल स शको देवेन्द्रो देवराजः चतुरशीत्मा सामानिकसादिसक्षः चतुरशितिसदस्रसंख्यकसामानिकः यावत्सार्द्धं संपरिवृत्तः युक्तः सर्वद्धर्या यावत् दुन्दुभिनिघोषनादितरवेण यत्रैवभागवांस्तिर्थकरस्तीर्थकर माता च तत्रैवोषागच्छति, अत्र प्रथमयावत्पदात् अष्टभिरप्रमहिषीभिरित्यादि, द्वितीयदावत्पदात् पूर्वं सत्राचुसारेण बोध्यम् 'सञ्बज्जुइष्' इत्यादि प्राह्मम् 'उवागिच्छत्ता' उपागत्य 'आल्लोए चेव पणामं करेइ' आल्लोके दर्शने जाते एव प्रणामं करोति 'पणामं करित्ता' प्रमाणं कृत्वा 'भगवं तित्थयरं तित्थ-यरमायरं च तित्वत्वत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ' भगवन्तं तीर्थकरं तीर्थकरमातरं च न्निः

दिन्य यान विमान से उसकी दक्षिणिद्शा के त्रिसोपान प्रतिरूपक से होकर नीचे उतरे 'तएणं से सकते देविंदे देवराया चउरासीए जाव दुंदु भिणिग्घोसना-इयरवेणं जेणेव भगवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छइ' इसके बाद वह देवेन्द्र देवराज शक ८४ हजार सामानिक देवों के साथ एवं आठ अग्रमहिष्यों के एवं अनेक देव देवियों के साथ साथ अपनी ऋदि एवं श्रुति आदि से युक्त हुआ वजती हुई दुन्दु भि की निर्धोष ध्वनिपूर्वक जहां भगवान तीर्थकर और उनकी माता विराजमान थी वहां पर गया 'उवागच्छित्ता आलोए वेब पणामं करेइ, करेत्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ करेत्ता करयल जाव एवं वयासी' वहां जाकर के उसने देखते ही प्रसु को एवं उनकी माताको प्रणाम किया प्रणाम करके फिर उसने तीर्थकर और

जाणिविमाणाओं दाहिणिहलेणं तिसोवाणपिहत्वएणं पच्चोरुईति ति' शेष हैव अने हेवी शे। ते हिव्य यान-विभानभांथी तेनी हिक्षणु हिशा तरहना त्रिसे। पान प्रतिइपहे। उपर शर्धने नीथे उत्थी. 'तए णं से सक्के देविंदे देवराया चउरासीए सामाणियसाहस्सीपिहें जाव सिंहं संपरिवुंडे सिव्वइंडीए जाव दुंदुमिणिग्धोसनाइयरवेणं जेणेव मगवं तित्थयरे तित्थयरमायाय तेणेय खवाणच्छइ' त्यार पछी ते हेवेन्द्र हेवराक शंड ८४ ढ्र कर सामानिक हेवे। साथे तेभक आठ अश्व मिद्धिशोनी तथा अनेक हेव-हेवी थे। नी साथे साथे, पातानी अदि धुति वजेरेथी शुक्त धर्धने हुंदुिना निर्धाष साथे क्यां क्यावान तीथे कर अने तेमना भाताश्री जिराकता द्वता त्यां गया. 'खवाणच्छित्ता आलोए चेव पणामं करेइ, करेता मगवं वित्ययरं तित्थयरमायरं च तिक्खतो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करेता करयल जाव एवं वयासी' त्यां कर्धने तेथे प्रकृते केतां कर प्रकृते केतां कर प्रकृति प्रकृति प्रकृति तेथे प्रकृति केतां कर प्रकृति अने तेमना भाताश्रीने प्रकृति प्रकृति हेवे। अहिश्राम क्रे तेमना भाताश्रीने प्रकृत तेथे। अहिश्राम क्रे तेमना भाताश्रीने प्रकृत हेवे। अहिश्राम क्रे तेमना भाताश्रीने प्रकृति हेवे। अहिश्राम क्रे तेमना भाताश्रीनी प्रकृत हेवे। अहिश्राम क्रे तेमना भाताश्रीने प्रकृति तेथे। अहिश्राम क्रे तेमना भाताश्रीने प्रकृत हेवे। अहिश्राम क्रे तेमना भाताश्रीनी प्रकृत हेवे। अहिश्राम क्रे तेमना भाताश्रीनी प्रकृत होवे। अहिश्राम क्रे तेसना भाताश्रीनी प्रकृत होवे। अहिश्राम क्रे तेथे। अत्रकृत होवे स्राम होवे

कृत्वः वारत्रयम् आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति 'करित्ता' कृत्वा 'करयळ जाव एवं वयासी' कइ तल यावत् एवं वस्यमाण प्रशारेण अवादीत् उक्तवाच् स शकः, अत्र यावत्पदात् परिष्ट्रहीतं दशनखं शिरसावर्तं मस्तके अञ्जलि कृत्वा इति ग्राह्यम् 'किमवादीदित्याव-'णमोत्थुते' इत्यादि 'णमोत्थुते रयणकुच्छिथारए' हे रत्नकुक्षिधारिके रत्नस्वरूप दीर्थकरमातः 'ते तुभ्यं नमोऽस्तु 'एवं जहा दिसाकुमारीओ जाव' एवम् प्रोक्त प्रकारकं सूत्रं यथा दिक्कुमार्य आहु-स्तथाऽवादी दित्यर्थः, अत्र यावत्पदात् 'जगप्पद्वदाईए चक्खुणो अम्रुत्तस्य सञ्बजगनीव-बच्छलस्स हिअकारगमग्गदेसिअ वागिद्धि विश्वष्यश्वस्य जिणस्स णाणिस्स नायगस्स बुद्ध-≠स बोहगस्स सन्बलोगणाहस्स सन्बजगमंग्लस्स णिम्ममस्स प्वरकुलसमु^{त्}प्यवस्स जाईप् खत्तियस्स जंसि छोगुत्तमस्स जणणीत्ति' कियत्पर्यन्त मित्याह-'धण्णासि' इत्यादि 'धण्णासि पुणासि तं कयत्थासि' धन्यासि पुण्यासि त्वं कृतार्थासि 'बहण्णं देवाणुष्पिए सक्के णामं देविंदे देवराया भगवओ तित्थयरम्स जम्मणमहिमं करिस्सामि' अहं खछ देवान् प्रिये ! उनकी माताको तीनवार प्रदक्षिणा की, प्रदक्षिणा करके फिर अपने दोनों हाथों को अंजिल के रूपमें करके एवं उसे मस्तक के ऊपर तीनवार घुमा करके इस प्रकार से उच्चारण किया-'णमोत्थुणं ते रयणकुच्छिधारए' हे-रत्नकुक्षिधारिके ! रत्नरूप तीर्धकर को अपने उदर में धारण करनेवाली है मातः! तुम्हे मेरा नमस्कार हो 'एवं जहा दिसाकुमारीओ जाव घण्णासि पुण्णासि तं कयत्थासि' इस तरह जैसा दिक्कमारीओं ने स्तृति के रूपमें पहिले कहा है वैसा ही यहां इन्द्र ने स्तुति के रूपमें कहा वह पाठ इस प्रकार से है 'जगण्ईवदाईए चक्खुणो अमुत्तस्स सन्वजगजीववच्छलस्स हिअकारगमगगदे-सिअ वागिद्धि विभुष्पभुस्स, जिणस्स, णाणिस्स, सन्वजगमंगलस्स, णिम्म-मस्स, पवरकुलसमुप्पभवस्स जाईए खत्तियस्स जंसि लोगुत्तमस्स जणणी' यह पाठ 'घण्णासि पुण्णासि तं कयत्थासि अहण्णं देवाणुप्पिए सक्के णाम देविंदे

करीने पछी तेण अन्ने हाथाने आंअिता इपमां क्ररीने तेमक ते आंअितने मस्तक उपर भूकीने, तेने त्रण वार हेरवीने आ प्रमाणे कहां. 'णमोत्थुणं ते रचणकुन्छिधारएं हे रतन क्रिक्षधारिक ! हे रतन इप तीर्थ क्ररने पाताना उद्दरमां धारण क्ररनारी हे माता ! तमने भारा नमरकार है। 'एवं जहां दिखाकुमारीओ जाव घण्णासि पुण्णासि तं कयत्यासि' आम के प्रमाणे हिइडमारिकाओं रतिना इपमां पहेलां कहां है, तेषुं क अहीं धिद्रे रतिना इपमां पहेलां कहां है, तेषुं क अहीं धिद्रे रतिना इपमां पहेलां कहां है, तेषुं क अहीं धिद्रे रतिना इपमां कहां, ते पाठ आ प्रमाणे हैं। 'जगप्पईवदाईए चक्खुणो अमुत्तस सब्ब जगजीववच्छळस्म हिअकारम मग्गदेसिअ वाधिद्धि विभुप्पभुस्स जिगस्स णाणिस्स नायन्यस्स, बुद्धस्स, बोहगस्स, सब्बळोगणाहस्स, सब्ब जगमंगळस्स, णिममस्स, पवरकुळ-समुप्यमवस्स जाईए खित्रयस्स जंसि छोगुत्तमस्स जणणी' आ पाठ 'घण्णासि, पुण्णासि तं क्रयत्थासि अहण्णं देवाणुत्विए सक्के णामं देविं दे देवराया भगवओ तित्थयरस्स जम्मण क्रिंस क्रिस्सामि, तं णं तुत्थाहिं ण भाइव्वंति' तमे धन्य छो, तमे पुष्थात्मा छो, तमे

तीर्थकरमातः ! शक्रो नाम देवेन्द्रो देवराजः भगवतस्तीर्थकरस्य जन्ममहिमानं करिष्यमि 'तं णं तब्भाहिं ण भाइयव्वं त्ति कट्डु ओसोवणिं द्ख्यइ' तत् तस्मात् खछ युष्माभिः न भेतव्यमिति कृत्वा अवस्वापिनीं बदाति स्रते मेरुं नीते स्रुतविरहाती मा दुःखभागभृदिति दिव्यनिन्द्रया निद्राणां करोतीस्यर्थः, 'दलइत्ता' दला 'तित्थयस्पिङक्वम बिउन्बई' तीर्थकर प्रतिरूपकं विकुर्वति तीर्थंकरस्य मेरुं नेतव्यस्य भगवतः प्रतिरूपकं जिनसद्दशं रूपं विकुर्वती-त्यर्थः 'अस्मासु मेरंगतेषु जन्ममहन्यापृति न्यप्रेषु आसम्बद्धदेवतया कुतूहलादिनाऽपहत निद्रासती मा इयं तथा भवतु इति भगवद्रपानिर्विशेषणं रूपं विक्ववैन्तीति भावः 'विउन्वित्ता' देवराया भगवशो तित्थयरस्स जम्मणमहिमं करिस्सामि, तं णंतुन्भाहिं ण भाइ-यव्वंति' तुम धन्य हो, तुम पुण्यात्मा हो, तुम कृतार्थ हो यहां तक ग्रहण करना चाहिए हे देवानुप्रिये ! मैं देवेन्द्र देवराज दाक हूं-और भगवान तीर्थंकर की जन्म महिमा करने को आया हुं अतः में उनकी जन्म महीमा करूंगा आपलोंग इससे भयभीत न हों ऐसा कहकर उसने माता को 'ओसोवर्णि' निदामें 'दलयह' सुलादिया अर्थात् जब में इनके पुछको सुमेर पर्वत पर ले जाऊंगा तो ये सत के विरह में दुःखित हो जावेगी-इसिंछचे इन्हें सुनका विरह पीडित न करपावे इस अभिपाय से माता को उसने मायामयी निद्रा से निद्रित करदिया 'दलइत्ता' निद्रा से निद्रित करके 'तिस्थयर पडिरूवमं विउन्बइ' फिर उसने जिन सददा रूपकी विकुर्वणा की-अपनी विकियाशक्ति से जिन सहशरूपवाला बालक बनाया और वह इस अभिप्राय से कि जन्मीत्सव के करने में व्यप्न बने हुए मुझे मेर पर चले जाने पर यदि कोई आसमपर्नी दुष्ट देवी कुत्रहलादि के बशवर्नी बनकर माताकी निद्रा दूर कर देती है तो यह पुत्र के विरह से कातर न होने पावे इस हेतु से उस शक ने जिनके जैसे रूपवाछे एक वालक की विकुर्वणा की 'विज-

કૃતાર્થ છે, અહીં. સુધી શહ્યુ કરવા નેઈ છો. દે દેવાનુપ્રિયે! હું દેવેન્દ્ર દેવરાજ શક્ક છું અને લગવાન લીર્થ કરના મહિમા કરવા માટે આવ્યા છું એથી હું એમના જન્મ મહિમા કરીશ. આપ સર્વે એનાથી લગ્લોત થશા નહિ. આમ કહીને તેણે માતાને 'એત્સો કળિ' નિદ્રામાં 'इडयइ' મગ્ન કરી દીધી. એટલે કે જ્યારે હું એમના પુત્રને સુમેરું પર્વત ઉપર લઈ દઇશ ત્યારે એએમ પાતાના પુત્રના વિરહ્મમાં દુઃખિત થઈ જશે. એથી એમને સુતના વિરહ્ દુઃખિત કરે નહિ આ અલિપ્રાયપી માતાને તેણે માયામથી નિદ્રામાં નિદ્રિત કરી દીધાં. 'इलइत्ता' નિદ્રા માન કરીને 'તિલ્ય ચરપકિલ્યાં વિલ્લા રૂપલા તેણે જિન સદશ રૂપલા કરી—પાતાની વિકિયા શક્તિયી તેણે જિન સદશ રૂપલા છું આળક અન વ્યાં જેમારે કર્યા કર્યા સ્થારે હું જેન્માત્સવ કરવા માટે મેરૂ પર્વત પર જતા રહીશ અને ત્યાં જેમાત્લમાં વ્યસ્ત થઇ જઇશ અને પાછળથી કાઇ આસન્વતી દુષ્ટ કેવી કૃતૂહલવશ થઈ ને માતાની નિદ્રાના ભંગ કરશે તો તે પુત્રના

विकुट्यं 'एगे सक्के भगवं तित्थयरं करयळपुढेणं गिण्हइ' तेषां पञ्चानां मध्ये एक: शको भगवन्तं तीर्थकरं करतलपुटेन करतलयोः अध्वीधो व्यवस्थितयोः पुटं संपुटं शक्तिका-संपुटिमवेत्यर्थः' तेन अति अतिपिनित्रेण सरसगोशीर्षचन्दरचितेन धूपवासितेनेतिगम्यं गृह्णाति, 'एमे सक्के पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ' एकः शकः पृष्ठतः आतपत्रं छत्रं धरति मृद्धाति 'दुवे सका उभशो पासि चामरुक्खेवं करें ति' हो शकी उभयोः पार्श्वयोः चामरो-रक्षेपं कुरुतः 'एगे सके पुरओ वज्जपाणी पकडू' इति' एकः शकः पुरतो वज्रपाणिः सन् प्रकर्षति निर्ममयति, आत्मानमिति, अग्रतः प्ररतिते इत्यर्थः। अत्र च सत्यपि सामानिकदेवपरि-बारे यत् इन्द्रस्य स्वयमेव पञ्चरूपविकुर्वणं तत् त्रिजगद्गुरोः परिपूर्णसेवाछिप्छुत्वेन बोध्यम् । विबत्ता' विकुर्वणाकर के 'तिस्थयरमाउआए पासे ठवेइ' फिर उसने उस शिशुको तीर्थकर माता के पास रख दिया 'ठवेसा पंच सकके विउन्दइ, विउ-विवत्ता एगे सक्के भगवं तित्थयरं करयलपुडेण गिण्णइ एगे सक्के पिटुओ आयवर्त्त धरेइ, दुवे सक्का उभओ पासि चामरूक्लेवं करे ति' इसके बाद उसने फिर पांच शकों की विकुर्वणा की अर्थात् वह स्वयं पांच रूपोंवाला वन गया इस प्रकार पांचरूपों में एक शक के रूप ने भगवान तीर्थंकर को अपने करतल प्रट से पकड़ा यह उसका करतल पुर परम पवित्र था, सरस गौशीर्थ चन्दन से लिस था और धूप से वासित था एक दूसरे शक ने भगवान के उत्तर छत्र ताना और दो काकों ने भगवान की दोनों ओर खड़े होकर उन पर चामर होरे तथा 'एमे सक्के पुरओ वज्जपाणी पकडू इति' एक दाक हाथ में बज्र छेकर भगवान् के आगे २ चला यद्यवि सामानिकादि देवों का परिवार उस समय साथ में चल रहा था परन्तु इस प्रकार से अपने आपको पांच रूपों में विक्रवित करके

विरद्धधी हुः िणत थाय निहु अटला भाटे कते शक्ते किनना केवा इपवाणा ओड आणडनी विड्व धा डरी. 'विडिव्यत्ता' विडु व धा डरीने 'तित्ययमाउआए पासे ठवेइ' पछी ते शिशुने तीर्थ 'हर मातानी पासे भूडी हीथा. 'हवेत्ता पंच सकके निक्वइ, विडिव्यत्ता एमें सकके भगवं तित्थयरं करयळपुडेण गिण्हइ एमें सकके निक्व आयवत्तं घरेइ, हुवे सकका उभओ पासिं चामहक्तेवं करें ति' त्यार आड ते छे इरी पांच शक्तेनी विडु व धा डरी ओटले है ते पाते पांच इपवाणी अनी अथा. आ प्रमाधे पांच इपे मांथी ओड शहना इपे लगवान तीर्थ 'हरने पाताना हरतल पुटमां उपाउया तेना आ हरतल पुट परम पवित्र हतो. सरस ओशीर्ष चन्दनथी लिस हते तेमक धूपथी वासित हतो. ओड शहे लगवाननी ७पर छत्र आव्छाहित हर्शें —अने भे शहे शे लगवाननी अन्ते तरह खाना रहीने तेमनी ७पर ध्रम क्षेत्र कावाननी आवेश स्वार्थ कावाननी अन्ते तरह खाना रहीने तेमनी ७पर ध्रम हित हित अर्थ 'ने लगवाननी आजण आगण व्यववा लाग्ये। जो हे सामानिहाहि हैवोनी परिन्थार ते समये साथे—साथे आवी रह्यो हते। परन्तु आ प्रमाधे पेतानी जातने पांच

अथ यथा शको विविधितस्थानं प्राप्नोति तथा आह-'तए णं से सबके' इत्यादि 'तएणं से सके देविंदे देवराया' ततः खलु तदनन्तरं किल स शको देवेन्द्रो देवराजः 'अण्णेहिं बहुहिं भवणवह बाणमंतर जोइसवेमाणिएहिं देवेहिं देवीहिल सिद्धं संपरिवृद्धे' अन्येबेहुभिभवनपतिवानव्यन्तरण्योतिष्कत्रवैमानिकेदवेदंवीभिश्र साद्धं संपरिवृतः 'सिब्ब्द्धोए जाव णाइएणं' सर्वद्धया यावत् नादितेन अत्र यावत्यदात् 'सव्वज्जुहए' इत्यादि प्राह्मम् 'ताए उिक्कहाए जाव वीईवयमाणे २' तथा उत्कृष्ट्या यावद् व्यतिव्रजन व्यतिव्रजन अत्र यावत्यदात् त्वर्या चपलया रह्या देवगत्या इति ग्राह्मम्, एषां व्याख्यानम् अस्मिननेव वक्षस्कारे प्रथमस्त्रे द्रष्ट्वयम् 'जेणेव मंदरे पव्वए जेणेव पंडगवणे जेणेव अभिसेअसिला जेणेव अभिसेअसीहासणे तेणेव उवागच्छइ' यत्रेव मन्दरपर्वतः यत्रेव पण्डकवनं यत्रेव अभिषेकित्रिला यत्रेव चाभिषेकिसिहासनं तत्रेवोपागच्छति स शकः 'उवागच्छित्रा' उपागत्य 'सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सिण्णसण्णेत्ति' सिंहासनवरगतः पूर्वाभिमुखः सिम्पणणः उपविष्टवान स शकः ॥ स्र० ६॥

जो इन्द्र ने इस प्रकार की व्यवस्था की वह सब त्रिजगद्गुरु की परिपूर्ण सेवा प्राप्त करने की इच्छा से ही की 'तएणं से सक्के देविंदे देवराया अण्लेहिं बहुहिं भवणवहवाण मंतरजोइस वेमाणिएहिं देवेहि देवीहिय सिद्धं संपरिबुढ़े सिव्व-द्धीए जाव णाइएणं ताए उक्किट्डाए जाव वीईवयमाणे जेलेव मंदरे पव्वए जेणेव पंडगवणे जेलेव अभिसेयिसिला' इसके बाद वह देवेन्द्र देवराज राक्त अन्य अनेक भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क एवं वैमानिक देवों से तथादेवियों से युक्त हुआ अपनी समस्त ऋद्धि के अनुसार खूब गाजे बाजे नृत्यादिकों के साथ २ उस अपनी उत्कृष्ट गति से चलता २ जहां पर मन्दर पर्वत था और उसमें जहां पण्डकवन था और उसमें भी जहां अभिषेक शिला थी 'जेणेव अभिसेअसीहासणे तेलेव उवागच्छइ' एवं जहां पर अभिषेक सिहासन था

३पेशमां विद्विति करीने के धन्द्रे आ प्रक्षारनी व्यवस्था करी द्वती. ते त्रिक्वाइगुरुनी पिरपूर्ण सेवा प्राप्त करवानी धन्छाथी क करी द्वती. 'तएणं से सक्के देविंदे देवराया अण्णेहिं बहुहिं भवणक्ष्वाणमंतरजोइसवेमाणिएहिं देवेहिं देविहिंय सिद्धं संपरिवृद्धे सिव्विक् द्वीए जाव णाइएणं ताए किहुए जाव वीईवयमाणे जेणेव मंदरे पव्वए जेणेव पंडरावणे जेणेव अभिसेयिसला' त्यार आह ते हेवेन्द्र हैवराक शक्ष अन्य अनेक सवनपति, वानव्यन्तर, क्योतिष्क अने वैभानिक हेवेथी तेभक हेवीकेथी युक्त थयेदे। ते पातानी समस्त अदि युक्त प्रथेस प्रक्र भागितिक वाच-नृत्याहिक साथ-साथ ते पातानी क्षिक्त असिवे यासती क्यां मन्दर पर्वत द्वती अने तेमां पश्च क्यां पंउक्ष्यन दुर्णं अने तेमां पश्च क्यां अभिषेक्ष शिक्षा द्वती. 'जेणेव अभिसेक्सीहासणे देशेव उवागच्छइ' तेमक

अथेशानेन्द्रावसरमाह-'तंणं कालेणं' इत्यादि

प्रम-तेणं कालेणं तेणं समएणं इसाणे देविंदे देवराया सूलपाणी बसभवाहणे सुरिंदे उत्तरद्वलोगहिवई अट्टावीस विमाणवाससयसहस्सा-हिवई अयरंबरवरथधरे एवं जहा सबके इसं णाणतं महाघोसा घंटा लहुश्रकमो पायत्ताणियाहिवई पुष्कओ विमाणकारी दविखणे निजाण मग्गे उत्तरपुरिथमिल्लो रइकरपव्यओ मंदरे समोसरिओ जाव पञ्जु-वासइत्ति, एवं अवसिद्धावि इंदा भाणियव्या जाव अच्चुओत्ति, इसं णाणतं चउरासीइ असीइ बावत्तरि सत्तरीअ सद्दीअ पण्णावतालीसा तीसावीसा ॥१॥ एए सामाणिआ णं वत्तीसत्तावीता बारसदु चउरोसय-सहस्सा। पण्णा चत्ताळीसा छच्च सहस्तारे ॥१॥ आणयवाणयकप्पे चतारि चत्तारि सयाऽऽरणच्चुए तिषिण । एए विमाणाणं इमे जाण-विमाणकारीदेवा, तं जहा-पालयश पुष्फे यर सोगणसे३-सिरिच्छेअ४ णंदिआवत्ते ५ कामगमे६ पीइममे७ मगोरमेट विमल ९ सब्बओ महे १०॥१॥ सोहम्मगाणं सणंकुमारगाणं चंबलोअगाणं महासुक्रशणं पाणयगाणं इंदाणं सुघोसः घंटा हरिणेगमेसी पायताणीआहिबई उत्तरिल्ला णिजाण भूमी दाहिणपुरिथमिल्ले रइकरगयव्यप्, ईसाणगाणं माहिंदलंतकसह-स्तार अच्चयगाण य इंदाण महाबोसा घंटा लहु एकमो पायसाणिआः हिवई दिक्खणिल्ले णिजाणमग्गे उत्तरपुरिथिमिल्ले रइकरगवब्बद परि-साणं जहा जीवाभिगमे आयरक्ला सामाणिअ चउग्गुणा सब्वेसि जाग-विमाणा सब्वेसि जोयणसयसहस्सविच्छिण्णा उच्चत्ते गं स विवाणप्य-माणा महिंद्उझया सब्वेसि जोयणसाहस्तिया सक्षत्रजा संद्रे समो अरंति जाव पञ्जुवासंतित्ति ।:सू०७॥

बहां पर गया 'उवागिकता सीहासणवरगए पुरत्थािमछहे सिणिसकोइ' वहां जाकर वह पूर्व की दिशा की ओर मुंह करके सिंहासन पर बैठ गया ॥६॥

अिषेष सिंदासन दुतुं त्यां गये। 'उत्रागन्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्यामिमुहे सण्णिसण्णेइ' त्यां कर्यने ते पूर्व दिशा तरक भुभ करीने सिंदासन उपर भिसी गये। ॥ सूत्र-६ ॥

छाया-तस्मिन् काले तस्मिन् समये ईशानी देवेन्द्री देवराजः शुलपाणिः धृषमबाहनः सुरेन्द्रः उत्तरार्द्धलोकाधिपतिः अष्टार्विशतिविमानावासश्चतसहस्राधिपतिः अरजोऽम्बरवस्रधरः एवं यथाशकः इदं नानात्त्रम् महाघोषा घण्टा लघुपराक्रमः पदात्यनोकाधिपतिः पुष्पको विमा-नकारी दक्षिणो निर्याणमार्गः उत्तरवौरम्त्यो रतिकरपर्वतो मन्दरे समवस्रतो यावत पर्धु-पास्ते इति एवम्, अवशिष्टा अपि इन्द्रा भणितव्याः यावत् अच्युतः, इति इदं नानास्वम्-चतुरशीतिः, द्विसप्ततिः सप्ततिश्र पष्टिश्र, पश्चाशत् चत्वारिंशत् त्रिंशतिः विंशतिः दश्वसद्दशाणि ॥१॥ एते सामानिकानां द्वात्रिंशत् अष्टार्विशतिः द्वादशाष्ट चरवारि शतसहस्राणि पञ्चाशत् चत्वारिंशत् षट् च सहस्रारे ॥१॥ आनतप्राणतकरुपे चत्वारिशतानि आरणाच्युतयोस्त्रीणि, एते विमानानाम् इमे यानविमानकारिणो देवाः तद्यथा पालकः १, पुष्पकः २, सीम-नसः ३ श्रीवत्सः ४ नन्दिकावर्तः ५ कामगमः ६ श्रीतिगमः ७ मनोरमः ८ विमलः ९ सर्षे-तोभद्रः १० ॥१॥ सौधर्मकाणां सनत्क्रमारकाणां ब्रह्मलोकानां महाशुक्राणं प्राणतकानाम् इन्द्राणाम् सुघोषाघण्टा हरिनैगमेषी पदात्यनीकाधिपतिः औत्तराहा निर्याणभूमिः दक्षिण पौरस्त्यो रतिकरपर्वतः, ईशानकानां माहेन्द्रलान्तकसहस्राराच्युतकानां चेन्द्राणां महाघोषा घण्टा छघुपराक्रमः पदात्यनीकाथिपतिः, दक्षिणो निर्याणमार्गः उत्तरपौरस्त्यो रतिकर-पर्वतः परिषदः खळु यथा जीताभिगमे आत्मरक्षकःः सामानिकचतुर्गुणाः सर्वेषाम् यानविमा-नानि सर्वेषां योजनशतसहस्रविस्तीर्णानि उत्तत्वेन स्वविमानप्रमाणानि मदेन्द्रश्वजाः सर्वेषां योजनसाहस्तिकाः शक्रवर्ज्जाः मन्दरे समवसरन्ति थावत्पर्यपासते ॥ स॰ ७॥

टीका-'तेंगं कालेगं तेगं समय णं' तिसम् काले सम्भविज्ञनजन्मके तीर्थंकरजन्मावसरे तिसम् समये-दिनकुमारी कृत्यानन्तरीये न तु क्षक्षःगमनानन्तरीये सर्वेषामिन्द्राणं'
जिनकस्याणाय युगपदेव समाग्मारम्भस्य जायमानत्वात् यन्तु स्त्रे क्षक्रागमनानन्तरीयमीक्षानेन्द्रागमन्मुक्तं तत्क्षमेशैव स्त्रवन्यस्य संभवात् 'ईसाणे' ईक्षानः देवलोकेन्द्रः 'देविदे'
देवेन्द्रः देवानामिन्द्रः स्वामी देवराजः देवाधिपतिः 'स्त्रपाणिः' श्रूष्ठपाणिः, श्रूष्ठः पाणौ
इस्ते यस्य सः 'वस्रवाहणे' वृषभवाहनः वृषभो वाहनं यस्य स तथा भूतः 'स्रिंदे' स्रोन्द्रः

ईशानेन्द्रावसर

'तेणं काछेणं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे देवराया'-

टोकार्थ-'तेणं कालेणं तेणं समएणं' उस कालमें और उस समय में 'ईसाणे देविंदे देवराया' देवेन्द्र देवराज ईशान 'खलगणी' कि जिसके हाथमें त्रिशूल है 'वसभवाहणे' वाहन जिसका बृषभ है 'सुरिंदे उत्तरदलोग।हिवई' सूरों का इन्द्र

ઇશાનેન્દ્રાવસર

^{&#}x27;तेणं कालेंगं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे देवराया' इत्यादि,

टीडार्थ-'तेणं कालेणं तेणं समएणं' ते धणे ते समये 'ईसाणे देविंदे देवराया' हैवेन्द्र हैवराक धंशान 'स्लपाणी' है केना दायमां त्रिशुक्ष छे. 'वसमवाहणे' वादन केन्नं वृषक

तथा 'उत्तरद्धलोकाहिवई' उत्तरार्द्ध लोकाधिपतिः, मेरोहत्तरतोऽस्यैवाऽऽधित्यात् ईशाननामा द्वितीय इन्द्रः पुनः की ह्याः. तत्राह-'अद्वावीस विमाणवाससयसहस्साहिवई' अष्टाविंशति विमानावासशतसहस्राधिपतिः, अष्टाविंशतिलक्षविमानस्वामीत्यर्थः । तथा 'अरयंवरवत्यधरे' अरजीं sबरवस्त्रधर:, अरजांसि पांश्वरहितत्वात निर्मकानि अम्बत्वस्त्राणि स्वच्छतया आकाश कल्पानि वसनानि घरति यः स तथाभूतः, आकाशवत् निर्मलबस्त्रधारीत्यर्थः 'एवं जहा सक्के' एवम् उक्त प्रकारेण यथा शक्रस्तथाऽयमपि बोध्यः 'इमं णाणत्तं' इदमत्र नानात्वं विशेष:. अस्य 'महाघोसा घंटा लघुपरक्षमो पायत्ताणियाहिवई' महाघोसा घण्टा लघुपराक्रमः छघुपराक्रमनामा पदास्यनीकाधिपतिः 'पुष्फओ विमाणकारी' पुष्पकः-पुष्पकनामा विमान-कारी 'दिक्खणे निज्जाणमग्गे' दक्षिणो निर्याणमार्गः दक्षिणा निर्याणभूमिरित्यर्थः 'उत्तरपुर-रिधमिल्लो रइकरपव्यओ' उत्तरपौरस्त्यो रितकरपर्वतः 'मंदरे समोसरिओ जाव पज्जुवास-इति' मन्दरे समबस्तः समागतो यावत् पर्युपास्ते इति अत्र यावत्पदात् 'अगवंतं तित्थयरं है, उत्तराईलोक का जो अधिपति है 'अहावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई' अद्वाईस लाख विमान जिसके अधिपतित्व में हैं 'अरगंबरवत्थघरें निर्मल अम्बरचस्त्रों को-स्वच्छ होने के कारण आकाश के जैसे वस्त्रों को-धारण किये हुए 'मंदरे समोसरिओ' सुमेर पर्वन पर आया ऐसा सम्बन्ध यहां पर लगालेना चाहिये 'एवं जहा सक्के' शक-सौधर्मेन्द्र जिस प्रकार के ठाटबाट से आया वैसे ही ठाटबाट से यह भी आया 'इमं णाणसं' शक के प्रकरण की अपेक्षा इसके इस प्रकरण में अन्तर केवल यही है कि इस ईशान की 'महाघोसा घंटा, लहु-परक्कमो, पायसाणियाहिवई, पुष्फओ विमाणकारी, दिवखणे निज्जाणमग्गे, उत्तरपुरस्थिमिल्लो रइकरपव्यओं महाघोषा नामकी घंटा है लघुरराकम नामका पदात्यनीकाधिपति है पुष्पक नामका विमान है दक्षिणदिशा इसके निर्गमन की भूमि है उत्तर पूर्वदिशावर्ती रतिकर पर्वत है 'समोसरिओ जाव'

छे. 'सुरिंदे उत्तरद्वलोगाहिवई' सुराना के धन्द्र छे, उत्तरादिवाइना के अध्यति छे, 'अद्वावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई' अश्वावीस साण विभान केना अध्यतित्वमां छे. 'अर्थवरवत्यधरे' निर्मण अंधर वस्त्रोने—स्वय्ध होवाने लीधे आहाश केवा वस्त्रोने—धारण इरीने ते 'मंदरे समोसरिओ' सुमे३ पर्वत पर आव्या. ओवा संअंध अही' सगाडवा लिंध की. 'एवं जहा सक्के' के प्रमाण शह—सीधमें नद्र ठाठ—माठ साथ आव्या हो। तेवाक ठाठ माठ साथ ते पण आव्या. 'इमं णाणत्तं' शहना प्रकरणनी अपेक्षाओं आ प्रकरणमां आदेश क तक्षावत छे हे को धशाननी 'महाघोसा चंदा, लहुपरक्कमों, पायत्ताणियाहिवई, पुष्पओं विमाणकारी, दक्खिणे, निज्जाणममो उत्तरपुरिथमिल्लो रहकरपव्यभों महाघोषा नामक घंटा छे. सधु पराहम नामक पहात्यनीक्षाधिपति छे. पुष्पक नामक विभान छे. इक्षिण दिशावती रितकर पर्वत

तिश्लुको आयाहिणपयाहिण करेइ करिका' वंदइ नमंसइ वदिका नमंसिका णचासको णाइटरे सुरुद्धसमाणे णमंसमाणे अभिसुद्दे विणएणं पंजलिउडे' एतेषां संग्रहः अथातिदेशेन अविश ष्टःनां सनत्क्रवारादीन्द्राणां वक्तव्यतामाइ-'एवं अवस्टिहावि' इत्यादि 'एवं अवसिद्वावि' एवम् अवशिष्टा अपि 'इंदा माणियव्या' जाव अच्चुओत्ति' इन्द्रा वैमानिकानां मणितच्या यावत् अच्युतेन्द्रः, एकादशद्वादशकल्याधि ातिरिति, अत्र यो विशेपस्तमाह-'इमं णाणत्तं' इदं नानालम्, भेदः 'चउरासीइ, असीइवावचरि सचरीत्र सहीत्र पण्णाचचालीसा तीसावीसा दससहस्सा ॥१॥ अत्र च अन्तिम सहस्रपदस्य पत्येकं संबन्धः तथा च चतुरशीतिः सहस्राणि शक्रस्य अशीतिः सहस्राणि ईशानेन्द्रस्य, दिसप्ततिः सहस्राणि सनत्कुमारेन्द्रस्य एवं सप्ततिः में जो याबत्पद आया है उससे 'मगबन्तं तित्थयरं तिबखुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करेला बंदइ, णमंसइ, बंदिला नमंसिला णन्यासण्णे नाईदूरे सुस्तूस-माणे, णमंसमाणे अभिगुहे विणएणं पंजलिउडे' इस पाठ का ग्रहण हुआ है इन पदों का अर्थ स्पष्ट है वहां आकर के उसने प्रस्की पर्युपासना की 'एवं अवसिद्धा वि इंदा भाणियव्वा' इसी तरह अर्थात् सौधर्मेन्द्र के सम्बन्ध में कथित रीती के अनुसार वैमानिक देवों के अविशष्ट इन्द्र भी आये ऐसा कहलेना चाहिये! और ये इन्द्र यहां अच्युतेन्द्र तक के आए। यह अच्युतेन्द्र ११-१२ वें कल्प का अधिपति है। 'इमं णाणतं-च उरासीइ, असीइ बावत्तरि सत्तरी अणसद्वीअ पण्णा चत्तालीसा तीसा वीसा दससहस्सा बत्तीसहावीसा बारसह चउरो सय-सहस्सा, पण्णा चत्तालीसा छच्च सहस्सारे' इन गाथाओं द्वारा किन २ इन्द्रों के कितने सामानिक देव एवं कितने विमान हैं यह प्रकट किया गया है-सौधमेंन्द्र के ८४ हजार सामानिक देव हैं ईशान के ८० हजार सामानिक देव हैं ७२ हजार सामानिक देव सनत्कुमारेन्द्र के हैं ७० हजार सामानिक देव माहेन्द्र

आवेल छे. 'समोसरिओ जाव' मां के यावत् पह केह्युं छे तेनाधी 'मगवंतं तित्थयर' तिक्रस्तुतो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करेता वंदइ, णमंसई, वंदिता नमंसित्ता णच्चासणो नाइदूरे सुरस्समाणे, णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजिल्डिडें आ पाठ अहुण कराये। छे. के पहाने अर्थ रुपाट कर छे. त्यां आवीने तेले प्रसुनी पर्श्वपासना करी. 'एवं अवसिद्वा वि इंदा माणियव्वा' आ प्रमाले अर्थात् सीधर्में दूना संगंधमां कथित शैति भुक्ष्म वैमानिक हेवे। ना अवशिष्ट धन्द्रो पण आव्या, खेतुं कहीं लेवुं केछंथे. अने के धन्द्रो पण कहीं अव्युतेन्द्र ११–१२मां क्रद्यनी अधिपति छे. 'इमं णाणत्तं—चडरासीइ, असीइ बावत्तरी अण्णसहीअ पण्णा चत्तालीसा तिसा वीसा दससहस्सा वत्तीसहावीसा बारसह चडरो सयसहस्सा, पण्णा चत्तालीसा छच्च सहस्सारे' आ अथाओ। वहे कथा–कथा धन्द्रोने केटलां सामानिक हेवे। तेमक केटलां विमाने। छे? के प्रकार क्षाना आव्याओ। वहे कथा–कथा धन्द्रोने केटलां सामानिक हेवे। तेमक केटलां विमाने। छे?

सहसाणि मोहेन्द्रस्य च समुच्चये पष्टिः सहसाणि ब्रह्मेन्द्रस्य च समुच्चये, पञ्चाशत् कान्तकेन्द्रस्य, चलारिशत् सहसाणि श्रकेन्द्रस्य, विशत् सहसाणि सहसाणि अन्युतकरूप-न्द्रस्य विशतिः सहसाणि आनत्राणतकरूपि क्रेन्द्रस्य दशसहस्राणि अच्युतकरूप-दिकेन्द्रस्य ॥१॥ 'एए सामाणियाणं' एते संख्याप्रकाराः सामानिकानां देशनां क्रमेण दशकरपेन्द्र संवन्धिनामिति तेन 'चउरासीए सामाणियअसाहस्सीणं' इत्येतिहिशेपणस्थाने प्रतीन्द्रालापकम् 'चउरासीए असीट्रए वावचरिए सामाणियसाहस्सीणं' इत्याद्यमिलापो प्राह्मः, तथा 'वचीसहाबीसा वारस चउरोसयसहस्या पण्णाचनालीसा छच्चसहस्सारे ॥१॥ तथा सौधमेन्द्रकरूपे द्वात्रिश्रहक्षाणि, ईशाने अव्दर्विशतिर्द्रक्षाणि एवं सनत्कुमारे द्वात्रिश्रत्य शतसहस्ताणि द्वादशलक्षणि, माहेन्द्रे अच्छी लक्षाणि, ब्रह्मलोके चन्वारि लक्षाणि तथा लान्तके पञ्चाशत् सहसाणि, एवं श्रेके चलारिशत्सासाणि च समुच्चे सहसारे एद सहसाणि, 'आण्याणय कप्पे चन्तारिसयारणच्चुर तिकि। 'एए विमाणाणं इमे जाण विमाणकारीदेवा' आनत्त प्राणतकरूपयोः द्वयोः समुदितयोः चत्वारि शतानि आरणाच्युत्रयोः स्वीणिश्रतानि। एते के हे ब्रह्मेन्द्र के सामानिक देव ६० हजार हैं। ५० हजार सामानिक वेस लाकेन्द्र के हैं। २० हजार सामानिक वेस लाकेन्द्र के हैं। २० हजार सामानिक

के हैं ब्रह्मन्द्र के सामानिक देव ६० हजार हैं। ५० हजार सामानिक देव लान्तकेन्द्र के हैं। ३० हजार सामानिक देव सहस्रारेन्द्र के हैं। २० हजार देव आनत प्राणत करपिबकेन्द्र के हैं। और आरण अच्युत करपिबकेन्द्र के १० हजार सामानिक देव हैं। और आरण अच्युत करपिबकेन्द्र के १० हजार सामानिक देव हैं। सौधर्मेन्द्र शक के ३२ लाख विमान हैं २८ लाख विमान ईशानेन्द्र के हैं सनत्कुमारेन्द्र के १२ लाख विमान हैं माहेन्द्र के आठ लाख विमान हैं ब्रह्मलेन्द्र के ४० हजार विमान हैं ब्रह्मलेन्द्र के ४० हजार विमान हैं सहस्रारेन्द्र के ६ हजार विमान हैं आनत प्राणत इन दो करपों के हन्द्र के चारसी विमान हैं और आरण अच्युत इन करपों के इन्द्र के ३ सी विमान हैं। यान विमान के विक्ववणा करनेवाले देवों के नाम कमशा इस प्रकार

ढुलर सामानिक हैवा छे. सन्दुमारेन्द्रने ७२ ढुलर सामानिक हैवा छे. माहेन्द्रने ७० ढुलर सामानिक हैवा छे. छाड़ेन्द्रने ४० ढुलर सामानिक हैवा छे. खाइन्द्रने ४० ढुलर सामानिक हैवा छे. खाइन्द्रने ४० ढुलर सामानिक हैवा छे. खाइन्द्रने ३० ढुलर सामानिक हैवा छे. खामानिक हैवा छे. खामानिक हैवा छे. खामानिक हैवा छे. सामानिक हैवा छे. सीधर्मेन्द्र शक्ते उर काण विमाना छे. धीधर्मेन्द्र शक्ते उर काण विमाना छे. सन्दुमारेन्द्रना १२ काण विमाना छे. सन्दुमारेन्द्रना १२ काण विमाना छे. अहाके इन्द्रने ४ काण विमाना छे. आहाके इन्द्रने ४ काण विमाना छे. आहाके इन्द्रने ४ काण विमाना छे. कान्द्रने ४० ढुलर विमाना छे. सढ़- खारेन्द्रने ६ ढुलर विमाना छे. आनत-प्राणुत को छे अहपीना छेन्द्रने ४०० विमाना छे. खारेन्द्रने १०० विमाना छे. आहाका अन्द्र्यत को अहपीना छन्द्रने ३०० विमाना छे. थान-विमानती विदुर्व छ

संख्या प्रकाराः विमानानाम् इमे सक्ष्यमाणाः यानितमानकारिणः यानितमान विद्वर्षकाः, देवाः शकादिक्रमेण बीध्याः 'तं लहा-पालय १ पुष्फेय २ सोमणसे ३ सिरिवच्छे ४ णं दियावत्ते ५ कामगमे ६ पीइनमे ७ मणोरमे ८ दिमछ ९ सब्बजोमदे १०॥१॥ तद्यथा पालकः १ पुष्पकः २, सीमनसः ३ श्रीवत्सः ४ च समुख्यमे, नन्दावर्तः ५ कामगगः ६ प्रीतिगपः ७ मनोरमः ८ विमलः ९ सर्वतोभदः १०॥१॥ इति ।

अथ दशसु करपेन्द्रेषु केनचित् वकारेण पञ्चानाम् २ साम्यमाह-'सोहम्मगाणं' इत्यादि 'सोहम्मगाणं सणंकुमाराणं वंभजोजनाणं महानुक्त्याणं पाणगगाणं इंदाणं सुघोसा घंटा हरिणे गमेसी पायचाणी बाहिबई उत्तरिष्ठा णिज्ञाणभूगी दाहिणपुरित्यमिन्छे रहकरगपन्वप' सौधमे कानां सौधमेदेवलोकोत्पन्नानाम् सथा सन्तकुपारकाणाम् बद्धालोकानां महाशुक्रकानां प्राणत कानामिन्द्राणां सुवोषा घंटा हरिणेगमेषी पदात्यनीकाविपदिः इति औत्तराहा निर्याणभूमिः

से है-(१) पालक (२) पुष्पक, (३) खोंधनस, (४) जीवत्स, नन्दावर्त (५) कामगम (६) प्रीतिगन (७) मनोरम (८) विजल और (९) सर्वतो भद्र, यही विषय'आणयपाणयक्त्ये, चलारि स्वयाऽऽरणच्युप लिण्गि एए विमाणाणं, इमे जाणविमाणकारी देवा पालय पुष्के य सोमगते सिरिवच्छे णंदियायत्ते, कामगमे
पीइगमे मणोरमे विजल सन्त्रओं भरें अब १० कल्पेन्द्रों में से किसी भी प्रकार
से जिने पांच इन्द्रों में समानता है वह दिखाया जाता है-'सोहम्मगाणं, सणंकुमारगाणं, वंजलोअगाणं, महासुक्त्रयाणं, पाणयगाणं, इंदाणं सुघोसा घंटा,
हरिणेगमेसी पायलाणीआहिन्द्रों, उलारिस्ला णिजाणश्रमि दाहिणपुरिधभिल्ले रहकरगपव्यम्' सौधमेन्द्रों को, प्रवत्क्रवारेन्द्रों की, प्रवा लोकेन्द्रों की,
महाशुकेन्द्रों की, और जाणनेन्द्रों की सुखेवा पंटा, इरिनेगनेषो पदात्यनीकाधिपति औरतराहा निर्याणस्कृति, दक्षिण पौरस्य रितकर पर्वत इन चार वातों को

करनारा हेवाना नामा अनुक्ष्मे आ प्रथाणे छे-(१) पाडक, (२) पुण्यक, (३) सीमनस (४) श्रीरत्स, नन्हावर्ण, (४) कामग्रम, (६) प्रीतिग्रण, (७) मनीरम (८) विभक्ष अने सर्वतालद्र, आ अ निषय 'आण-पाण्यक्ष्ये, चतारि स्वयःऽऽरणच्चुण तिण्णि, एए विमाणाणं, इमे जाल विमाणकारी देवा पाळ्यपुण्तेय सीमणसे सिरिवच्छे णंतियावत्ते, काम गमे पीइगमे मणोरमे विमळ सव्वओमधे' क्षेत्रे १० व्रव्येन्द्रीमांथी है। एष् रीते ले पांच धन्द्रीमां समानता छे, ते २५८८ वर्णमां आवे छे. 'सोहम्मगाणं, सणंकुमारगाणं, बंमळोअनगणं महासुक्कवणं, पाणवगणं, इंग्लं सुचोसायंटा, हरिणेगमेसी, पावत्तणीआहिवई, उत्तरिस्टा णिज्जाणमूचि दण्हिणपुरिवसिल्ले, रङ्करगणव्वणं सीधर्मिन्द्रीनी, सन्तकुमारेन्द्रीनी अद्धा-विक्रन्द्रीनी अव्योगि प्राधुनेन्द्रीनी सुचेषा धंटा, क्रिनेगमेषी पद्यत्यनीकधिपति औत्तरक्षा, निर्याण सूचि दक्षिण पीरस्त्य रिविश्य परित्र पर्वत से बार वाताने वधने परस्पर समानता छे. अहीं ले 'सोहम्मगाणं' वशेरे पद्येमां अह वसनो प्रयोग करवामां

दक्षिणपौरस्त्यो रविकरपर्वतः, तथा 'ईसाणवाणं माद्विदलंतग सहस्सार अच्छुअगाणय इंदाण महाघोसा घंटा लहुपरक्कमो पायचाणीआहिवई दक्षिखणिल्ले णिज्जाणमग्गे उत्तरपुरिविभल्ले रइकरमपव्वए' तथा ईशानकानां माहेन्द्रलान्तकसहस्राराच्युतकानां च इन्द्राणां महाघोषा घण्टा रुघुवराक्रमः पदात्यनीकाधिपतिः दक्षिणो निर्याणमार्गः उत्तरपौरस्त्यो रतिकर-पर्वतः, 'परिसाणं जहा जीवाभिगमे' परिषदः खळु यथा जीवाभिगमे तत्र परिपदः. अभ्य-न्तर मध्यवाह्यरूपाः यस्य यावदेवदेवी प्रमाणा यथा जीवाभिगमे प्रतिपादितास्तथा, जातव्याः, तत्र देवातां प्रमाणमाह-शक्रस्याभ्यन्तिरिकायां पर्यदि १२ द्वाद्शसहस्राणि देवानां, मध्यमायां लेकर आपस में सामानता है यहां जो 'सोहम्मगाणं' आदि पदों में बहुवचन का प्रयोग किया गया है वह सर्वकालवर्ती इन्द्रों की अपेक्षा से किया गया है 'ईसाणगाणं महिंदलंतगसहस्सार अच्च अगाणं इंदाणं बहाघोसा घण्टा लह-परक्कमो पायत्ताणीआहिवई, दक्क्षिणिल्छे जिज्जाणमग्गे उत्तरप्रस्थिमिल्छे रइकरगपव्वए' ईशानेन्द्रों की, माहेन्द्रों की लांतकेन्द्रों की सहस्रारेन्द्रों की और अच्यतकेन्द्रों की महाघोषा घंटा लघुपराक्रम पदात्यनीकाधिपति, दक्षिण निर्याण-मार्ग, उत्तरपौरस्त्यरतिकर पर्वत, इन चार बातों को छेकर आपर्स में समानता है 'परिसाणं जहा जीवाभिगमे आयरक्खा सामाणिय चडग्गुणा सब्वेसि जाण-विमाणा सन्वेसि जोयणसयसहस्सविच्छिण्या उच्चतेण सविभाणप्पमाणा महिंदज्ञया सन्वेसि जोयणसाहस्सिआ, सक्तयजा, मंदरे संमोअरंति जाव पञ्जवासंति' इनकी परिषदा के सम्बन्ध में जैसा जीवाभिगम खूत्र में कहा गया है वैसा ही यह कथन यहां पर भी कहछेना चाहिये-वहां का वह कथन इस प्रकार से है-परिषदाएं ३ होती हैं एक आभ्यन्तर वरिषदा दसरी मध्यपरिषदा और तीसरी बाह्य परिषदा शक की आभ्यन्तरपरिषदा में १२ देव होते हैं, मध्य-

भावेते। छे ते सर्वकारा धन्द्रोनी अपेक्षाओं करवामां आवेते। छे. 'ईताणगाणं महिंद्छंतगन्सहस्सारअच्युअगाणं इंदाणं महाघोसो घण्टा छतुपरकामो पायत्ताणीआहिवई, दक्षिणण्डे णिक्जाणमगो, उत्तर पुरिक्षिमिल्ठे रइकरपव्यप्' धंशानेन्द्रोनी, शाक्षेन्द्रोनी, क्षांतेन्द्रोनी, सक्कारेन्द्रोनी अने अव्युतकेन्द्रोनी माक्षाधेषा धांटा, अधु पशक्षम पशत्यनीक्षाधिपति, हक्षिणु निर्याणु मार्था, अत्तरपौरस्त्य रतिकर पर्वत, ओ बार वातेलां परस्पर समानता छे. 'परिसाणं जहा जीवाभिगमे आयरक्या सामाणिय चउग्गुणा सब्वेसि जाव विमाण सब्वेसि जोयण सम्महस्सविच्छिण्णा उच्चतेणं सविमोणप्पप्राणा महिंद्दश्या सब्वेसि जोयणसहस्सित्रा, सक्कवज्जा, मन्दरे समोअरंति जाव पञ्जुपासंति' ओमनी परिषदाना संभिधमां के प्रभाणे अवातिशम सूत्रमां कहेवामां आवेतुं छे, तेतुं आ कथन अतुः पण्डु कतु क्षेत्र अभाणे अथा ते कथन आत्रा प्रभाणे छे—परिषदाने। उ होय छे ओक अल्यांतर परिषदा, भील भध्य परिषदा अने त्रील आहा परिषदा शक्षी आल्यांतर परिषदामां १२ देवा हाय छे.

१४ चतुर्दशसहस्राणि, बाह्यायां १६ षोडशसहस्राणि ईशानेन्द्रस्याभ्यन्तरिकायां १० दशसह-स्नाणि बाह्यायां १२ द्वादशसहस्राणि' एवं माहेन्द्रस्य क्रमेण ६-८-१० पट्-अष्टौ-दशसह-स्नाणि' ब्रह्मेन्द्रस्य क्रमेण ४-६-८-चत्यारि-षट्ट-अष्टी सहस्राणि लान्तकेन्द्रस्य क्रमेण २-४-६ सहस्राणि' शकेन्द्रय १-२-४-सहस्राणि, सहस्रारेन्द्रस्य ५०० पञ्चाशत शतानि १ • दशशतानि २० विंशतिशतानि देवानां ऋमशो बोध्यानि, आनत प्राणतेन्द्रस्य २ हेशते साँद्धे ५ पञ्चशतानि १० दश्वशतानि क्रमशः बोध्यानि, आरणाच्युतेन्द्रस्य १ एकं शतं २ द्वे परिषदा में १४ हजार देव होते हैं एवं बहा परिषदा में १० हजार देव होते हैं। ईशानेन्द्र की आभ्यन्तरपरिषदा में १० हजार देव होते हैं मध्य परिषदा में १२ बारह हजार देव होते हैं, और वाह्यपरिषदा में १४ हजार देव होते हैं सनत्कुमा-रेन्द्र की आभ्यन्तरपरिषदा में ८ हजार देव होते हैं, मध्यपरिषदा में १० हजार देव होते हैं, एवं बाह्यपरिषदा में १२ हजार देव होते हैं। माहेन्द्र की आभ्यन्तर-परिषदा में ६ हजार देव होते हैं, मध्यपरिषदा में १० हजार देव होते हैं, ब्रह्मेन्द्र की आभ्यन्तरपरिषदा में ४ हजार मध्यपरिषदा में ६ हजार और बाह्यपरिषदा में ८ हजार देव होते हैं लान्तकेन्द्र की आभ्यन्तर सभा में २ हजार देव होते हैं मध्यपरिषदा में ४ हजार देव होते हैं और बाह्यपरिषदा में ६ हजार देव होते हैं शुक्रेन्द्र की आभ्यन्तरपरिषदा में १ हजार देव होते हैं, मध्यपरिषदा में २ हजार देव होते हैं और बाह्यपरिषदा में ४ हजार देव होते हैं सहस्रारेन्द्र की आभ्यन्तरपरिषदा में ५०० देव होते हैं, मध्यपरिषदा में १ हजार देव होते हैं एवं बाह्यपरिषदा में २००० देव होते हैं आनतप्राणतेन्द्र की आभ्यन्तरपरिषदा

મધ્ય પરિષદામાં ૧૪ હજાર દેવા હાય છે. તેમજ બાહ્ય પરિષદામાં ૧૬ હજાર દેવા હાય છે. ધશાનેન્દ્રની અલ્યંતર પરિષદામાં ૧૦ હજાર દેવા હાય છે મધ્ય પરિષદામાં ૧૦ હજાર દેવા હાય છે. સનત્યુમારેન્દ્રની અલ્યંતર પરિષદામાં ૧૪ હજાર દેવા હાય છે. સનત્યુમારેન્દ્રની આલ્યંતર પરિષદામાં આદ હજાર દેવા હાય છે. મધ્ય પરિષદામાં ૧૦ હજાર દેવા હાય છે. તેમજ બાહ્ય પરિષદામાં ૧૨ હજાર દેવા હાય છે. માહેન્દ્રની આલ્યંતર પરિષદામાં ૧ હજાર દેવા હાય છે. માહેન્દ્રની આલ્યંતર પરિષદામાં ૧ હજાર દેવા હાય છે. અને બાહ્ય પરિષદામાં ૧૦ હજાર દેવા હાય છે. બાલ્ય પરિષદામાં ૧ હજાર દેવા હાય છે. બાલ્ય પરિષદામાં ૧ હજાર દેવા હાય છે. મધ્યપરિષદામાં ૧ હજાર દેવા હાય છે. લાન્તકેન્દ્રની આલ્યંતર સભામાં ૧ હજાર દેવા હાય છે. મધ્યપરિષદામાં ૧ હજાર દેવા હાય છે. અને બાહ્ય પરિષદામાં ૧ હજાર દેવા હાય છે. શકેન્દ્રની આલ્યંતર પરિષદામાં ૧ હજાર દેવા હાય છે. શકેન્દ્રની આલ્યંતર પરિષદામાં ૧ હજાર દેવા હાય છે. સહસારેન્દ્રની આલ્યંતર પરિષદામાં ૧ હજાર દેવા હાય છે. સહસારેન્દ્રની આલ્યંતર પરિષદામાં ૧ હજાર દેવા હાય છે. તેમજ બાહ્ય પરિષદામાં ૧ હજાર દેવા હાય હાય પરિષદામાં ૧ હજાર દેવા હાય

शते सार्दे ५०० पश्चाशत् शतानि क्रमशो बोध्यानि, इमाश्च तत्तिदिन्द्र वर्णके 'तिण्हं परिसाणं' इत्याद्याः लापके यथासंख्यं भावनीया शकेशानयोर्देवीयर्पत्यं जीवाधिगमादिषु उक्तं तत्रैव विशेनकनीयम् । 'आयरक्खा सामाणिश्र चउग्गण्णा सव्वेसिं' आत्मारक्षाः अङ्गरक्षकाः देवाः सर्वेषामिन्द्राणां ख्वस्वसामानिकेभ्यश्चतुर्मणाः एते चेत्यमवर्णकेऽनिलाप्याः, 'चउण्हं चउरासी णं आयरक्खदेव-क्खित्वसाहस्तीणं चउण्हं आसीर्गं आयरक्खदेव-साहस्तीणं चउण्हं वावत्रीणं आयरक्खदेव-साहस्तीणं आहेवच्चं' इत्यादि तथा 'जाणिश्माणा सव्वेसिं जोयणस्यमहस्तविच्छिण्णा उच्चतेणं सिवमाणप्यमाणाः' यात्रविमानानि सर्वेषां योजनशतसहस्रविस्तीणीनि उच्चत्वेन स्वः विमानप्रमाणानि—इन्द्रस्य स्वस्विनानं सौधर्मात्तंसकादि तस्येव प्रवाणं—एश्चशतयोजनादिकं येषां तानि तथा भूतानिः अस्यार्थः, आद्यशक्ष ईशानकल्पदिकविमानानाम् उच्चत्वं पश्च-

में अहाईसी देव होते हैं, मध्यपरिषदा में ५ सी देव होते हैं एवं वाह्यपरिषदा में १००० देव होते हैं आरण अच्युतेन्द्र की आभ्यन्तरपरिषदा में १ सी देव होते हैं अर वाह्यपरिषदा में १ सी देव होते हैं और वाह्यपरिषदा में १ सी देव होते हैं थह सब कथन वहां 'निण्हे परिसाणं' इत्यादि आलापक में यथासंख्य कहा गया है। शक और ईशान की देवियों की तीन परिषदाओं का वर्णन वही जीवा भिगमादिकों में कहा गया है अतः वहीं से यह शकरण जानलेना चाहिये आत्माक्षक देव समस्त इन्हों के जितने-जितने उनके सामाविक देव हैं उनसे चतुर्य जित हैं ये वर्णक में इस मकार के अभिलाप्य हैं-

'चडण्हं चडरानीणं आयरक्लदेवहाहस्तीणं चडण्हं असीईणं आयरक्खदेव साहस्सीणं चडण्डं बावत्तरीणं आयरक्ख देव साहस्तीणं आहेवक्वं' इत्यादि-इन सब इन्द्रों के यान विभान १ लाख योजन विस्तार वाले होते हैं तथा इनकी ऊंचाई अपने अपने विभान प्रमाण होती है प्रथम दितीय कल्प में विभानों की

छे, मध्य परिषद्दामां प०० हेवा हाय छे तेमक आह्य परिषद्दामां १ हुलर हो। हाय छे. आरणु अय्युतेन्द्रनी आएडंतर परिषद्दामां १०० हेवा हाय छे, मध्य परिषद्दामां २५० हेवा हाय छे अने आह्य परिषद्दामां २५० हेवा हाय छे. आ अधुं ४४न त्यां 'तिण्हे परिसाणं' वगेरे आदाप्रभमां यथा संभ्य हहिवामां आवेद्धं छे. शह अने धंशानेन्द्रनी हिवाओनी अणु परिषदाओनं वर्णुन तेक ल्वासिंगमादिक्षमां हेडेवामां आवेद्धं छे. येथी त्यांथी क आ प्रकरणु विशे लाणी होवुं कोई थे. आत्मरक्ष हेवा, समस्त धन्द्रोना तेमना केटता सामानिक हेवा छे तेमना करतां यहुर्जुष्टित छे. ये अधां वर्णुक्षमां आ प्रमाणे अनिदाय्य छे-'चडण्डं चडरासीणं आयक्षदेवसाहस्तीणं चडण्डं अकीणंड आयक्षदेव साहस्तीणं आहेदच्चं' वगेरे से अधा धन्द्रोना वान-विमाना १ दाभ थे।कन केटता विस्तारवाणां हाय छे. तथा सेमनी शंकाध पात-विमाना प्रमाणु सुक्रभ हाय विस्तारवाणां हाय छे. तथा सेमनी शंकाध पात-पाताना विमानना प्रमाणु सुक्रभ हाय छे. प्रथम दितीन क्ष्यमां विमानानी शंकाध पात-पाताना विमानना प्रमाणु सुक्रभ हाय छे. प्रथम दितीन क्ष्यमां विमानानी शंकाध पात-पाताना विमानना प्रमाणु सुक्रभ हाय छे. प्रथम दितीन क्षयमां विमानानी शंकाध पात-पाताना विमानना प्रमाणु सुक्रभ हाय छे. प्रथम दितीन क्षयमां विमानानी शंकाध पात थे।कन केटता विमानना प्रमाणु सुक्रभ हाय

योजनशतानि, द्वितीये दिके षट्योजनशतानि तथा हतीये दिके सप्तयोजनशतानि, तथा चतुर्थे दिके अष्टी योजनशतानि ततोऽग्रेतने करपचतुष्के विमानामाम् उच्चत्वं नवयोजनश्चतानि तथा 'महिंद्रज्यया सन्वेसिं जोयणसाहिस्सया सक्वत्जा मंदरे समोअरंति, जाव पज्जनासंतिति' सर्वेषां महेन्द्रध्वना योजनशाहिस्तिः। सहस्रयोजनिवस्तीर्णाः शक्वन्ताः मन्दरे समवसरन्ति यावत् पर्श्वपासते, अत्र यावत् पदसंग्रद्ध, अन्यविहितपूर्वस्नवत् बोध्यम् व्याख्यानं च तत्रेव द्रष्टन्यम् ॥ स्० ७ ॥

अथ भवनवासिनः

मूल्य-तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिंदे असुरराया चमर-चंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि चउसट्टीए सामाणियसाहस्सीहिं तायत्तीसाए तायत्तीसेहिं चउहिं लोगपालेहिं पंचिहं अग्गमहिसीहिं सपिरवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तिहं अणिएहिं सत्तिहं अणियाहिवईहिं चउहिं चउसट्टिहिं आयरक्खसाहस्सीहिं अण्णेहिअ जहा सक्के णवरं इमं णाणत्तं दुमो पायत्ताणीआहिवई ओघस्तरा घंटा विमाणं पण्णासं जोयणसहस्साइं महिंदज्झओ पंचजोयणसयाइं विमाणकारी आभिओगिओ देवो अवसिट्टं तं चेव जाव मंदरे समोसरइ पज्जुवास-

उंचाई पांचसो योजन की होती है तृतीय और चतुर्थकरण में विमानों की उंचाई के छसी योजन को होती है, पांचवें और छठे करण में विमानों की उंचाई सातसी योजन की होती है। सातवें और आठवें करण में विमानों की उंचाई आठसी योजन की होती है इसके बाद ९ वें १० वें और ११ वें १२ वें करणमें ९-९ सी योजन की उंचाई है। समस्त विमानों की महेन्द्र ध्वजाएं एक हजार योजन की विस्तीण हैं। शक को छोडकर ये सब माहेन्द्र पर्वत पर आये यावत यहां पर वे पर्युपासना करने लगे। यहां यावत्यद से संग्रहीत पाठ अव्यवहितपूर्व सूत्र की तरह जानना चाहिये और उसका व्याख्यान भी वहीं पर देखछेना चाहिये।।।।।

અતુર્ધ કલ્યમાં વિમાનાની ઊંચાઇ ६०० યાજન જેટલી હાય છે. પંચમ અને ષષ્ઠ કલ્પમાં વિમાનાની ઊંચાઇ ૭૦૦ યાજન જેટલી હાય છે. સપ્તમ એને અષ્ટમાં કલ્યમાં વિમાનાની ઊંચાઇ ૮૦૦ યાજન જેટલી છે. ત્યાર બાદ ૯, ૧૦, ૧૧ અને ૧૨ માં કલ્યોમાં ૯–૯ સા યોજન જેટલી ઊંચાઇ હાય છે. સર્વ વિમાનાની માહેન્દ્ર ધ્વજાઓ એક હજાર યાજન જેટલી વિસ્તીર્ધ હાય છે. શક્રોને બાદ કરીને એ બધા માહેન્દ્ર પર્વત ઉપર આવ્યાં યાવત તેઓ ત્યાં પર્ધ પાસના કરવા લાગ્યા અહિં યાવત પદથી સંગૃહીત પાઠ અવ્યવહિત પૂર્વ સ્ત્રની જેમજ જાણવા એઈ એ. અને તેનું વ્યાખ્યાન પણ ત્યાં જ જેઇ લેવું એઈ એ. ॥ આ

इति । तेणं कालेणं तेणं समएणं बली असुरिंदे असुरराया एवमेव णवरं सट्टी सामाणीयसाहस्सीओ चउगुणा आयरवखा महादुमी पाय-त्राणीआहिवई महाओहस्सरा घंटा सेसं तं चेव परिसाओ जहा जीवा-भिगमे इति। तेणं कालेणं तेणं समएणं धरणे तहेव णाणत्तं छ सामा-णिअ साहस्सीओ छ अग्गमहिसीओ चउग्रणा आयरवला मेहस्सरा घंटा भइसेणे पायत्ताणीयाहिवई विमाणं पणवीसं जोयणसहस्साइं महिंद्ज्झओ अद्घाइजाइं जोयणसयाइं एवमसुरिंद्वजिआणं भवणवासि इंदाणं णवरं असुराणं ओघस्सरा घंटा णागाणं मेघस्सरा सुवण्णाणं हंसस्सरा विज्जूणं कोंचस्तरा अग्गिणं मंजुस्तरा दिसाणं मंजुघोसा उदहीणं सुस्सरा दीवाणं महुरस्सरा वाऊणं णंदिस्तरा थणिआणं णंदिघोसा। चउसट्टी सट्टी खळु छज्ञसहस्साउ असुरवजाणं। सामाणि-आउ एए चउग्गुणा आयरक्वाउ ॥१॥ द।हिणिल्लाणं पायत्ताजीआहि-वई भइसेणो उत्तरिल्लाणं दक्खोत्ति । वाणमंतर ओइसिआ णेअव्या एवं चेत्र णवरं चतारि सामाणिअ साहस्सीओ चतारि अग्गमहिसीओ सोलस आयरक्खसहस्सा विमाणसहस्सं महिंद्ज्झया पण्वीसं जोयण-सयं घंटा दाहिणाणं मंजुरसरा उत्तराणं संजुघोसा पायताणीआहिवई विमाणकारीअ आभिओगा देवा जोइसिआणां सुस्सरा सुस्सरणिग्घो-साओ घंटाओ मंदरे समोसरणं जाव पञ्झवासंतिति । सू० ८॥

छाया-तस्पिन् काले तस्मिन् समये चमरोऽसुरेन्द्रोऽसुरराजा, चमरचश्चायां राजधान्यां सभायां सुधर्मायां चपरे सिंहासने चतुः षष्ठया सामानिकसहस्नः त्रयिक्तंता जायिस्त्रः, चतुर्भिः लोकपालैः पश्चभिहग्रमहिषीभिः, सपरिदाराभिः, तिस्वभिः परिषद्भिः, सप्तभिरिनकैः सप्तभिरनीकाधिपतिभः, चतुर्भिः, चतुः पष्टिभिः आत्मरक्षकसहस्नः, अन्येश्व यथा शकः, नवरम् इदं नानात्वम् हुमः पदात्यनीकाधिपतिः, ओघस्वरा घण्टा विमानं पश्चाशत् योजनः सहस्राणि महेन्द्रध्वजः पश्चयोजनशतानि विनानकारी आभियोगिको देवः, अवशिष्टं तदेव यावद् मन्दरे समवसरति पर्श्वपास्ते इति । तस्तिन काले तस्मिन् समये बलिरसुरेन्द्रोऽसुर-राजः, एवमेव, नवरं षष्टिः सामानिकसहस्राणि, चतुर्शुणा आत्मरक्षवाः महाद्वुमः पदात्य-

नीकाधिपतिः महौधस्वराः वण्टा शेषं तदेव परिषदो यया जीवाभिगमे इति । तस्मिन् काले तस्मिन् समये धरणस्त्येव, नानात्वं पट्ट सामानिकसहस्नाः पडप्रमहिष्या, चतुर्गुणा आत्म-रसकाः मेयस्वरा घण्टा भद्रसेनः पदात्वनीकाधिपतिः, विमानं पश्चविंशति योजनसहस्राणि महेन्द्रध्वजोऽर्द्धत्तीयानि योजनशतानि एवमसुरेन्द्रवर्जितानां भवनवासीन्द्राणां नवरम् असुरा-णामोवस्वरा घण्टा नागानां मेयस्वरा सुपर्णानां हंतस्वरा विद्युताम् क्रीश्वस्वरा अभीनां मञ्जुस्वरा विद्यां मञ्जुयोषा, चतुष्पष्टः पष्टिः खळ पद्रचसहस्राणि असुरवर्जानां सामानिकारत एते चतुर्गुणा आत्मरक्षकाः ॥१॥ दाक्षिणात्यानां पदात्यनीकाधिपतिर्भद्रसेनः, औत्तराहाणां दक्ष इति । वानव्यन्तर्ज्योतिष्काः नेतच्या एवमेन नवरं चत्वारि सामानिकानां सहस्राणि, चतस्त्रोऽप्रमहिष्यः पोढश्च आत्मरक्षकसहस्राणि निमानानि सहस्रम् महेन्द्रध्वजः पश्चविंशं योजनशतं घण्टा दक्षिणात्यानां मञ्जुस्वरा, औत्तराहाणां मञ्जुषापाः, पदात्यनीकाधिपतयो विमानकारिणश्च आभियोगिका देवाः, उयोतिष्काणां सुस्वराः सुस्वरनिघौषाश्च घण्टाः मन्दरे समवसरन्ति यावत् पर्युपासते इति ॥ स. ८ ॥

टीका-'तेणं कालेणं तेणं समएणं' तिसम् काले सम्भविजनजनमके तिसम् समये पर्पश्चाक्षत् दिक्कुमारिकाभिः, आद्केषद् शलादिकतत्कार्यकरणानन्तरसमये 'चमरे असु- रिंदे असुरराया' चमरःत्कामकः असुरेन्द्रः, असुराणामिन्द्रोऽसुरेन्द्रः असुरराजः दक्षिणदिग्धिपतिभ्यनपति देवानामधिपतिः 'चमरचंचाए रायदाणीए सभाए सहम्माए' चमरचश्चायां तन्नामन्यां राजधान्यां सभायां सुधमीयां 'चमरंसि सीहासणंसि' चमरे सिंहासने 'चउसद्दीए सामाणिश्र साहस्सीहिं' चतुष्पष्टचा सामानिकसहसः 'तायत्तीसाए तायत्तीसेहिं' त्रयस्तिशता त्रायसिंकैः 'चउहिं लोगपालेहिं' चतुष्पष्टचा सामानिकसहसः 'पंचहिं अमामहिसीहिं सपरिवाराहि'

'ते णं कालेणं ते णं समएणं चमरे' इत्यादि ।

टीकार्थ-'ते णं काहेणं तेणं समएणं' उस कालमें और उस समय में 'चमरे असुरिंदे असुरराया' असुरेन्द्र असुरराज चरश 'चमरचंचाए रायहाणीए' अपनी चमारचंचा नामकी राजधानी में 'सुहम्माए सभाए' सुधर्मा सभामें 'चमरंसि-सीहासणंसि' चमर नामके सिंहासन पर 'चउसट्टीए सामाणियसाहस्सीहिं तायसीसाए तायसीसेहिं' चौसठ हजार सामानिक देवों से, तेतीस त्रायस्त्रिश देवों से 'चडहिं लोगपालेहिं' चार लोकपालों से 'पंचहिं अग्गमहिसीहिं सपरि-

'तेण' काछेण' तेणं समएणं चमरे' इत्यादि

टीडार्थ-'तेणं कालेणं तेणं समएणं' ते डाणे अने ते सभये 'चमरे असुरिंदे असुरराया' असुरेन्द्र असुरराथ यमरे 'चमरचंचाए रायहाणीए' पातानी यमर यंथा नामड राथधानीमां 'सुहम्माए समाए' सुधर्मा सलामां 'चमरंसि सीहासणंसि' यमर नामड सिंहान सन ७५२ वामड सिंहान सन ७५२ 'चसहीए सामाणियसाहस्सीहिं तायत्तीसाए तायत्तीसहिं १४ ढलर सामानिड हैंवेश्यी, 33 श्रायक्षिंश हैवेश्यी 'चहहिं लोगपालेहिं' यार क्षेष्ठ पाक्षेश्या देवेश्यी 'चहिं लगालेहिं' यार क्षेष्ठ पाक्षेश्या हैवेश्यी 'चहिं लगालेहिंं यार क्षेष्ठ पाक्षेश्या हैवेश्यी 'चहिं लगालेहिंं स्वार्थ क्षेष्ठ पाक्षेश्या हैवेश्यी 'चहिं लगालेहिंं स्वार्थ क्षेष्ठ पाक्षेश्या हैवेश्यी 'चहिं लगालेहिंं यार क्षेष्ठ पाक्षेश्या हैवेश्यी 'चहिं लगालेहिंं स्वार्थ क्षेष्ठ पाक्षेश्या हैवेश्यी 'चहिं लगालेहिंं स्वार्थ क्षेष्ठ पाक्षेश्या हैवेश्यी 'चहिं लगालेहिंं स्वार्थ क्षेष्ठ क्षेष्ठ क्षेष्ठ पाक्षेश्या हैवेश्यी 'चहिं लगालेहिंं स्वार्थ क्षेष्ठ पाक्षेश्या हैवेश्यी 'चहिंदा क्षेष्ठ क्षेष्ठ क्षेष्ठ क्षेष्ठ पाक्षेश्य क्षेष्ठ क्षेष्ठ

पश्चिमरग्रमिहेषीिमः सपिरवाराभिः 'तिहिं परिसाहिं' त्रिभिः परिपद्भिः 'सत्ति अणिएहिं सत्ति अणिएहिं सत्ति अणिआहेवईहिं' सप्तिमरनीकैः सप्तिमरनीकाधिपतिभिः 'चउहिं चउसिहिं आयर-क्खसाहस्सीहिं' चतस्तिः, चतुष्पिटः, आत्मरक्षकसहैः 'अण्णेहिश' अन्यैश्र इत्यालाप-कांशेन सम्पूणः आलापकस्त्वयं बोध्यः 'चमरचंचारायहाणीवत्थव्वे दि बहुिं असुरकुमारेहिं देवेहिय देवीहिअत्ति जहा सके' यथा शकस्तथायमपि ज्ञात्व्यः 'णवरं' नवरम् अयं विशेषः 'इमं णाणत्तं' इदम् नानात्वम् भेदः 'हुमो पायत्ताणोभाहिवई' हुमः तन्नामकः पदात्यनीका-धिपतिः 'ओघस्तरा घंटः' ओघस्वरा तन्नामनी घण्टा 'विमाणं पण्णासं जोयणसहस्साई' विमानं यानविमानं पश्चाशत् योजनसहस्राणि विस्तारायामम्'महिंद् अशो पंच जोयणसद्याई' महेन्द्र ध्वजः पश्चयोजनशतानि उच्चः 'विमाणकारी आभिओगीओ देवो' विमानकारी विमाननिर्माता आभियोगिको देवो न पुनर्वेमानिकेन्द्राणां पालकादिरिव नियतनामकः 'अवसिद्धं तंचेत्र जाय मंदरे समोसरइ पज्जुवासईत्वे' अवशिष्टं तदेव शकाधिकारोक्तमेववाच्यम् नवरं दक्षिणपिश्रमो

बाराहिं अपने अपने परिवारसहित पांच अग्रमहिषियों से 'तिहिं परिसाहिं' तीन परिषदाओं से 'सत्तिहं अणिएहिं' सात अनीकों सैन्यों से 'सत्तिहं अणी आहिबहिं च उहिं च उसहीहें आपरक्खसाहस्सीहिं' सात अनीकाधिपतियों से चार चौसठ हजार आत्मरक्षा में '२५००० आत्मरक्षक देवों से' तथा 'चमरचंचा रायहाणीवत्थव्वेहिं बहुिं असुरक्कमारेहिं देवेहिअ देवीहि य' चमरचंचा राजधानी में रहे हुए अनेक असुरक्कमार देवों एवं देवियों से युक्त हुआ बैठा था वह भी 'जहा सकके' सौधमेंन्द्र की तरह 'जाव मंदरे समोसरह' यावत् मन्दर पर्वत पर आया ऐसा यहां अन्वय लगालेना चाहिये 'हाक के ठाटबाट में और इसके ठाटबाट में 'इमं णाणक्तं' यही भिन्नता है कि 'दुमो पायत्ताणीआहिवई ओघस्सरा घंटा, विमाण पण्णासं जोयणसयसस्साइं महिंदज्झओं पंचजोयणसयाई, विमाणकारी आभि-ओगिओ देवो अवसिद्धं तं चेव जाव मंदरे समोसरह' इसकी पैदल चलनेवाली

महिसीहिं सपरिवाराहिं पेत-पेताना परिवार साथै पांच अवमिद्धियी थायी 'तिहिं' परिसाहिं' त्रण परिषदाक्षेत्रीयी 'सत्तिहं अणिपहिं' सात अनी क्ष सैन्येत्थी 'सत्तिहं अणीआहिष इहिं चउसट्टीहिं आयरक्खसाहस्सीहिं' सात अनी क्षिपितिक्षेत्रियी, यार ६४ ६०८२ आत्म-२क्ष केथी (२५६००० आत्मरक्ष हैवेत्रियी) तथा 'चमर चंचारायहाणी वत्य केहिं बहू हिं असुरकुमारेहिं देवेहि अ देवीहिय' यामरचंचा राजधानीमां श्रेनारा अनेक असुरकुमार हेवे। अने हेवीक्षेत्रिय धर्म केथी होते ते पण्ण 'जहा सक्के' सौधर्म नद्रनी केम 'जाव मंदरे समोसरइ' यावत मन्दर पर्वत ७५२ आव्ये। क्षेत्री अवे। अवे अन्वय द्याउदी क्रेपियी. श्रेका ठाठ-भाठमां अने आना ठाठ-भाठमां 'इमं णाणत्तं' आदेशे। क तक्षावत छे हे—'दुमो पायत्ताणीआहिवई ओघरसरा घण्टा, विमाणं परणासं जोयगसयसहस्साइं महिंद इक्षओं पंचजोयणस्याइं, विमाणकारी आभियोगिओं देवो अविदेहं तं चेव जाव मंदरे समोसरइं,

रतिकरपर्वतः कियद्द्रमित्याह-यावन्मन्द्रे समवसरित पर्युपास्ते इति। अथ बलीन्द्रः ' तेणं कालेणं' इत्यादि 'तेणं कालेणं तेणं समएणं बली अग्रुरिदे अग्रुर्राया एवमेन' दिसम् काले तिसम् समये बलीरस्र रेन्द्रोऽस्रराजः एवमेव चमर इव 'णवरं सहीसावाणित्र साहस्सीओ' नवरम् अयं विशेषः। पष्टिः सामानिकसहस्राणि पष्टिसहस्रसंख्याक सामानिका इत्यर्थः 'चउगुणा आयरक्षा' नतुर्गुणा आत्मरक्षकाः, समानिकसंख्यातश्रुर्गुणसंख्याका आत्मरक्षका इत्यर्थः। पद पश्चाश्चत् सहस्राधिक द्विलक्षमिति यावत् 'महादुमो पायत्ताणीआहिवई' महा दुमः तन्नामकः पदात्यनीकाधिपतिः 'महाओहस्सरा घंटा' महौधस्वरा वण्डा व्याख्यातोऽ- धिकं प्रतियाद्यते इति चमरचश्चास्थाने चलिचश्चा दाक्षिणाःयो निर्याणमार्गः, उत्तरपश्चिमे रतिकरपर्वतः इति। 'सेसं तं चेव' शेषं यानविमानविस्तारादिकं तदेव एतस्मिन्नेवस्त्रते पर्यदे

सेनाका अधिपति-पदात्पनीकाधियित देव द्वुन नामवाला था घंटा इसकी ओध-स्वरा नामकी थी यान विमान इस का ५० हजार योजन का विस्तारवाला था इसकी महेन्द्र ध्वजा ५०० योजन ऊंची थी विमानकारी यह आभियोगिक देव था बकी का और सब कथन जैसा काक के अधिकार में कहा गया है बैसा ही है इसका रितकर पर्वत दक्षिण पश्चिम दिग्वती होता है कि जहां पर आकर वह वहां से चलता है वहां मन्दर पर आकर इसने प्रस्ति पर्युपासना की 'तेणं कालेणं तेणं समएणं' उस कालों जब कि प्रस्ति जन्म हुआ और उस समय में जब कि ४५ दिक्कुमारिकाएं आइदी प्रदर्शनादिक्य कार्य कर चुकी 'बली असुरिंदे असुरराया एवमेव णदां सही कामणीश साहस्तीओ चज्जणा आयरक्या महादुशो पायसाणीआहिवई महाओहस्सरा घण्टा सेसं तंचेव' असुरेद असुरराज बली भी चमर की तरह मन्दर पर्वत पर आया और उसने भी प्रसु की पर्युपासना को 'णवरं' पद से यह अन्तर प्रकट किया गया है कि इसके

शानी पायहण शांतनारी सेनाना अधिपति-पहात्पनीक्षिपति-हुम नाम वाणा हता शेनी धंटानुं नाम शेविस्वरा हतुं. शेनुं यान-विभान प० हजार येक्नि केटला विस्तारवाणुं हतुं आनी महेन्द्रध्वज प०० येक्नि केटली இंशी हती. आ विभानकारी आलिये। शिक्ष हेव हतो. शेष अधुं कथन के प्रमाशे शक्ता अधिकारमां केहेवामां आव्युं छे, तेवुं क छे. आना रितिकर पर्वत हिल्यु हिल्यती होय छे के कथां आवीने ते त्यांथी शक्ते छे. लां मन्दर ७पर आवीने तेशे प्रसुनी पर्युपासना करी. 'तेणं कालेणं तेणं समएणं' ते काणे अने ते समये, कथारे प्रसुनी कन्म थये। अने कपारे पर दिक्षमारिकाओं आदर्य प्रदर्शनाहि इप कार्य संपादन करी यूकी त्यारे 'वली असुरिंदे असुर्राया एवमेव णवरं सही सामाणीअ साहस्सीओ चउगुणा आयर∓ला महादुमो पायचा. जीआहिवई महाओन हस्सरा घंटा सेसं तंचा' असुरेन्द्र असुरकुमाराक अली पशु यमरनी केम क मन्दर पर्वत उपर आव्या अने तेशे पशु प्रसुनी प्रयुत्त असुरिंद असुराया एवेमे का तक्त्रवि

यथा जीवाभिगमे इदं च सूत्रं देहकी दीवन्यायेन सम्बन्धनीयं यथा देहलीस्थो दीवोऽन्तस्थः देहलीस्थ वाह्यस्थवस्तु प्रकाशनोपयोगी भवति तथेदमिष, उक्ते चमराधिकारे उच्यमाने बली-न्द्राधिकारे वक्ष्माणेषु अन्द्रसु भवनपतिषु उपयोगि भवति । त्रिष्यपि अधिकारेषु पर्षदो वाच्या इत्यर्थः । तथाहि चमरस्थाभ्यन्तिरकायां पर्वदि २४ सहस्राणि देवानाम् मध्यमायां २८ सहस्राणि बाह्यायां ३२ सहस्राणि तथा बलीन्द्रस्याभ्यन्तिरकायां पर्वदि २० सहस्राणि मध्यमायां २४ सहस्राणि बाह्यायां २८ सहस्राणि तथा धरणेन्द्रस्याभ्यन्तिरिकायां पर्वदि

६० हजार सामानिक देव थे और सामानिक देवों से चौगुने आत्मरक्षक देव थे सेनापित महाद्रुम नामका देव था महौघरवरा नामकी इसकी घंटा थी बांकी का और सब यान विमानादि के विस्तार का कथन चमर के प्रकरण जैसा ही है 'पिरसाओ जहा जीवाभिगमे' इसकी तीन परिषदाओं का वर्णन जैसा जीवाभिगम सूत्र में कहा है वैसा ही यहां पर जानना इसकी राजधानी का नाम बिलच्छा है इसके निकलने का मार्ग दक्षिणिदिशा से होता है अर्थात यह दक्षिणिदिशा से होकर निकलता है इसका रितकर पर्वत उत्तर पश्चिमिदग्वर्ती होता है 'जहा जीवाभिगमें' यह सूत्र देहली दोपक न्याय से सम्बन्धनीय समझना चाहिये क्योंकि कहे गये चमराधिकार में एवं कहे जानेवाले पलीन्द्रादि अधिकार में आठ भवनपतियों के कथन में उपयोगी हुआ है चमरकी आभ्यन्तर परिषदा में २४ हजार, मध्यपिषदामें २८ हजार और बाह्यपरिषदा में २४ हजार देव हैं बलीन्द्र की आभ्यन्तरपरिषदा में २० हजार, मध्यपरिषदा में २४ हजार और बाह्यपरिषदा में २४ हजार और बाह्यपरिषदा में २४ हजार और बाह्यपरिषदा में २८ हजार देव हैं घरणेन्द्र की आभ्यन्तरपरिषदा में २० हजार की आभ्यन्तरपरिषदा में

६० सहस्राणि मध्यमायां ७० सहस्राणि बाह्यायां ८० सहस्राणि भूतानन्दस्याभ्यन्तिरिकायां पर्षदि ५० सहस्राणि मध्यमायां ६० सहस्राणि बाह्यायां ७० सहस्राणि अवशिष्टनां भवन वासि पोडशेन्द्राणां मध्ये ये वेणुदेवादयो दक्षिणश्रेणिपतयस्तेषां पर्षञ्चयं धरणेन्द्रस्येव उत्तर श्रेण्यिपानां वेणुदालिप्रमुखाणां भूतानन्दस्येव ज्ञातव्यम्, अथ धरणः 'तेणं कालेणं तेणं समए णं घरणे तहेव' तस्मिन् काले तस्मिन् समये घरणस्तथेव चमरवत्, अयं विशेषः 'णाणत्तं' नानात्वं भेदः 'छ सामाणिअ साहस्सी भो' पर् सामानिकसहस्राणि 'छ अमा-महिसीओ चउगुणा आयरक्ला' पडमिहिष्यः चतुर्गुणा आतम्रक्षमाः, षट् संख्यातश्रतुर्गुणा २४ आत्मरक्षमा इत्यर्थः 'मेयस्सराघंटा' मेयस्वरा घण्टा 'भहसेणो पायत्ताणीयाहिवई' भद्रसेनः तन्नामकः पदात्यनीकाधिपतिः 'विमाणं पणवीसं जोयणसहस्साइं' विमानं पञ्चविश्वति योजनसहस्राणि पञ्चविश्वतिसहस्रयोजनपरिमितं विस्तारायामिनत्वर्थः 'महिद्यम्झओ अद्धा-

६० हजार, मध्यपरिषदा में ७० हजार और बाह्यपरिषदा में ८० हजार देव हैं। भूतानन्दकी आभ्यन्तरपरिषदा में ५० हजार मध्यपरिषदा में ६० हजार और बाह्यपरिषदा में ७० हजार देव हैं। अविधाष्ट भवनवासियों के १६ इन्द्रों में से जो वेणुदेवादिक दक्षिण श्रेणिपति हैं उनकी परिषत्रय धरणेन्द्र की परिषत्रय के जैसी है तथा उत्तरश्रेणि के अधिपति वेणुदालि आदिकों की परिषत्रय भूतानन्द की तीन परिषदाओं के जैसी है ऐसा जानना चाहिये 'तेणं कालेणं तेणं समरणं धरणे तहेव' उस कालमें और उस समय में घरण भी चमर की तरह ही बहे—भारी ठाटबाट से मन्दर पर्वत पर आया परन्तु वह 'छ सामाणिय साहरसीओं, ६ अग्गमहिसीओ, चउग्गुणा आयरक्खा, मेघस्सरा घण्टा, भइसेणो पायलाणीयाहिष्दई विमाणं पणवीसं जोयणसहस्साई महिंदज्झओं अद्धाइ- उजाई जोयणसयाई' ६ हजार सामानिक देवों से ६ अग्रमहिषियों से एवं सामानिक देवों की अपेक्षा चौगुने आत्मरक्षकों से युक्त होकर आया इसकी

मध्य परिषद्दामां ७० ७ ८०, अने आहा परिषद्दामां ८० ७ ८० हैंवे छे. भूतान-हनी आल्यंन्तर परिषद्दामां प० ७० र मध्य परिषद्दामां ६० ८० से आहा परिषद्दामां ७० ८० र परिषद्दामां प० ८० र मध्य परिषद्दामां ६० ८० र अने आहा परिषद्दामां ७० ८० र हेंवे। छे. शेष अवनवासिक्षाना १६ ६ द्रीमांथी के वेखुदेवादिक दक्षिणु श्रिष्ट्रिपतिक्षा छे. तेमनी परिषद् त्रय घरणेन्द्रनी परिषद् त्रय केवी छे तथा ७ तर श्रेष्ट्रीना अधिपति वेखुद्दादि आदिक्षानी परिषद्त्रय अतान-हनी त्रष्ट्र परिषद्दाक्षा केवी छे. केवुं अधिपति वेखुद्दादि आदिक्षानी परिषद्त्रय अतान-हनी त्रष्ट्र परिषद्दाक्षा केवी छे. केवुं अध्या भूभ ठं ठे-माठ साथे यमरनी केम मंदर पर्वत आव्यो. पण् ते छ सामाणिय साहस्सीओ ६ अगमहिसीओ, चचगुणा आयरक्खा, मेघस्सरा घंटा, मदसेणो पायत्ताणी-याद्दिक्ष विमाणं पणवीसं जोयणसहस्साइं महिंदः सक्षे अद्धाइष्ठाइं जोयणसयाइं ६ ६०० सामानिक हैवेश्यी ६ अश्रमिद्धिको श्रेष्ट्री श्रेष्ट्री सामानिक हैवेश्यी ६ अश्रमिद्धिको श्रेष्ट्री श्रेष्ट्री केव्या सामानिक हैवेश्यी ६ अश्रमिद्धिको श्रेष्ट्री तेमक सामानिक हैवेशी अधिक्षा स्थार श्रुष्ट्रा

इज्जाइं जोयणसयाइं' महेन्द्रध्वजोऽर्द्धतृतीयानि योजनशतानि साद्धिश्वश्वयोजनानि उच इत्यर्थः, अथ अवशिष्ट भवनवासीन्द्र वक्तव्यताम् अस्यातिदेशेनाह—'एवं' इत्यादि 'एवं असु-रिंद्द विज्ञिमाणं भवणवासिइंदाणं' एवमसुरेन्द्रविज्ञानां भवनवासीन्द्राणाम् एवं धरणेन्द्र-न्यायेन असुरेन्द्राभ्यां चमरवासीन्द्राभ्यां विज्ञितानां भवनवासीन्द्राणाम् भृतानन्दादीनां वक्त-व्यता ज्ञातव्या 'णवरं' नवरम् अयं विशेषः 'असुराणं ओधस्सरा यंटा' असुराणाम् असुर-कुमाराणाम् ओघस्वरा घण्टा 'णागाणं मेघस्सरा' नागानां नागकुमाराणां मेघस्वरा 'स्वण्णाणं इंसस्सरा' स्वर्णानां गरुडकुमाराणां घण्टा इंसस्वरा घण्टा 'विज्जू णं कोंचस्सरा' विद्यतां विद्युन्कुमाराणां क्रोंचस्वरा घण्टा 'अम्मीणं मंजुस्सरा' अग्नीनाम् अन्निकुमाराणाम् मेघस्वर नामकी घंटा थी पदात्यनीकाधियति का नाम भद्रसेन था २५ हजार योजन प्रमाण विस्तार वाला इसका यान विमान था इसकी महेन्द्र ध्वजा २५० योजन की ऊंची थी 'एवमसुरिंद्विजिज्ञ्याणं भवणवासिइंदाणं, णवरं असुराणं ओघस्सरा घण्टा णागाणं मेघस्सरा स्वष्णाणं इंसस्सरा, विज्जूणं कोंचस्सरा, अग्नीणं मंजुरसरा दिसाणं मंजुघोसा, उदहीणं सुरसरा, दीवाणं महुरस्सरा,

बाऊणं णंदिस्सरा, थिणयाणं णंदिघोसा, चउसही खलु छच्च सहस्सा उ असुर-बजाणं ! सामाणिआ उ एए चउग्गुणा आयरक्लाउ । १।। इसी तरह से घरणेन्द्र की वक्तव्यता के अनुसार असुरेन्द्रों -चमर और बलीन्द्र को छोडकर भवन-वासीन्द्रों के-भूतानन्दादिकों के सन्यन्ध की भी वक्तव्यता जाननी चाहिये। अन्तर केवल इतना ही है कि असुरक्तनारों की घंटा ओघस्वरा नामकी नागकुमारों की घंटा सेघस्वरा नाम की है सुपर्ण कुमारों की घंटा इंसस्वरा नामकी है विगुत्कुनारों की घंटा कौत्रस्वरा नामकी है अग्निकुमारों की घंटा

मंजुस्वरा नामकी है दिक्कुमारों की घंटा मंजुयोषा नामकी है उद्धिआत्मरक्षक देवेथी युद्धत थर्धने आत्यो. स्नेनी भेवस्वर नामनी घंटा हती. पहात्यनीक्षधिपतिनुं
नाम क्षद्रसेन हतुं. २५ हक्तर थेकिन प्रमाध्य विस्तारवाणुं सेनुं यान-विभान हतुं. स्नानी
भेडेन्द्र ध्वक्र २५० थेकिन केटली अंथी हती. 'एव मसुरिंद्विज्ञियाणं भवणवासिइंदाणं
णवरं असुरोणं ओधरसरा घण्टा णागाणं मेघरसरा सुवण्णाणं हंसरसरा, विज्जूणं कोंचरसरा,
अगीणं मंजुरस्सरा दिसाणं मंजुयोसा, उद्गीणं सुस्सरा, दीवाणं महुरस्सरा, वाजणं णंदिससरा,
थिणयाणं णंदिवोसा, चउसट्टी खलु छच्च सरस्सा उ असुरवज्जाणं सामाणिआ उ एए
चउगुणा आयरक्खाउ॥ १॥ था अभाष्ट्रे क धर्मेन्द्रनी वक्ष्तव्यता मुक्क असुरेन्द्रोन
स्वभर स्नेने अदीन्द्रोने आह करीने अवनवासीन्द्रोना-कृतानन्हाहिक्षेना विश्वेनी वक्ष्तव्यता
काश्ची क्रिकें तक्ष्मत क्षत्र स्ति स्वभ्वरा नामक क्षेत्र सुपक्षिक्षारोनी घंटा केष्ट्यरा नामक
क्रिकें नागकुमारानी घंटा मेघस्वरा नामक क्षेत्र सुपक्षिक्षारोनी घंटा केल्स्वरा नामक क्षेत्र

मञ्जुस्वरा घण्टा 'दिसाणं मंजुघोसा' दिशाम् दिशुमाराणाम् मञ्जुघोषा घण्टा 'उद्हीणं सुस्सरा' उद्योनाम् उद्यिकुमाराणाम् सुस्वरा घण्टा 'दीवाणं महुरस्सरा' द्वीपानां द्वीपकुमाराणां मधुरस्वरा घण्टा 'वाऊणं णंदिस्सरा' वायुनां वायुकुमाराणां नन्दिस्वरा घण्टा 'थणिआ णं णंदिघोसा' स्विनितानां स्विनितकुमाराणं नंदिघोषा घण्टा एषामेवोन्का। जुक्तसामानिक संग्रहार्थम् गाथामाह - 'चउसद्वी सद्वी खळ छच्च सहस्साउ अधुरवज्ञाणं' सामाणिआउ एए चउम्गुणा आयरवखाउ ॥१॥ चतुष्वष्टिः पष्टिः खळु षट् च सहसाणि असुरवर्जानां सामानिकाश्च एते चतुर्गुणाः आत्मरक्षकाः ॥१॥ तत्र चतुष्पष्टिश्चमरेन्द्रस्य, पष्टि-बलीन्द्रस्य खळु निश्चये पट् सहसाणि, अमुरवर्जानां घरणेन्द्रादीनामप्टाद्य भवनवासीन्द्राणाम्—सामानिकाः, च पुनरर्थे भिन्नकमे तेन एते सामानिकाः, चतुर्गुणाः, पुनरात्मरक्षकाः भवन्ति ॥१॥ 'दाहिणीक्लाणं पायचाणीआहिवई भइसेणो उत्तरिक्लाणं दक्खोचि' दाक्षिणास्थानां चमरेन्द्रवर्जितानां भवनपतीन्द्राणां भद्रसेनः पदात्यनीकाधिपतिः, औत्तराहाणां बल्चिर्जितानां दक्षो नाम पदात्यनीकाधिपतिः। अथ व्यन्तरेन्द्रज्योतिष्केन्द्राः 'वाणमंतर' कुमारों की घंटा सुस्वरा नामकी है द्वीपकुमारों की घंटा मधुरस्वरा नामकी है वायुकुमारों की घंटा चन्दिघोषा नामकी है इन्हीं के सामानिक देवों को संग्रह करके प्रकट करनेवाली यह गाथा सुस्त्रकार ने कही है—चमर के सामानिक देवों

वायुकुमारों की घंटा निद्धोषा नामकी है इन्हों के सामानिक देवों को संग्रह करके प्रकट करनेवाली यह गाथा सूत्रकार ने कही है—चमर के सामानिक देवों की संख्या ६० हजार है बलीन्द्र के सामानिक देवों की संख्या ६० हजार है घरणेन्द्र के सामानिक देवों की संख्या ६ हजार है इसी तरह ६ हजार असुर-वर्ज घरणेन्द्रादि १८ भवनवासीन्द्रों के सामानिक देव हैं तथा इनके आश्मरक्षक देव सामानिक देवों से चौगुने हैं। 'दाहिणिल्लाणं पायत्ताणियाहिवई भइसेणो उत्तरिक्ला णं दक्कोित्त' दक्षिणदिग्वता चमरेन्द्रवर्जित भवनपतीन्द्रों का पदात्यनीकाधिपति भद्रसेन है तथा उत्तर दिग्वतीं बल्विजित भवन पतीन्द्रों का पदात्यनीकाधिपति अद्रसेन है तथा उत्तर दिग्वतीं का कथन पहिले अपने अपने प्रकरण में आए हुए सूत्रों द्वारा कहा जा खुका है फिर भी

हिंड्डुमारानी घंटा मंज्रुधाया छे. ઉદ્દिष्टुमारानी घंटा सुरवरा नामक छे. द्वीपहुमारानी घंटा मधुरवरा नामक छे. वायुडुमारानीघंटा नंहिचे या नामक छे. व्येमना क सामानिक हेवानी संश्रह करीने अकट करनारी आ गाया स्वकार कही छे—यमरना सामानिक हेवानी संश्रा ६४ हजार छे. धरोहेन्द्रना सामानिक हेवानी संश्रा ६० हजार छे. धरोहेन्द्रना सामानिक हेवानी संश्रा ६० हजार छे. धरोहेन्द्रना सामानिक हेवानी संश्रा ६ हजार असुरवर्ण धरोहेन्द्राहि १८ लवन वासीन्द्रोना सामानिक हेवा छे तेमक्योमना आत्मरझक हेवा सामानिक हेवा करता यार गड़ा छे. 'वाहिणिल्लाणं पायत्ताणीआहिवई महसेणो उत्तरिल्लाणं दक्खोत्ति' दक्षिण हिज्दती समरेन्द्र वर्णित लवनपतीन्द्रोना पद्यत्यनीकाधिपति अदसेन छे. तथा उत्तर दिज्वती असरेन्द्र वर्णित अवनपतीन्द्रोना पद्यत्यनीकाधिपति अदसेन छे. तथा उत्तर धिवती असरेन्द्र वर्णित अवनपतीन्द्रोना पद्यत्यनीकाधिपति इक्ष छे. जो हे घंटादिकेन क्षम

इत्यादि 'बाणमंतरजोइसिया णेयव्वा' वानव्यन्तर्ज्योतिष्काः व्यन्तरेन्द्राः ज्योतिष्केन्द्राश्च नैतव्याः; शिष्यबुद्धं प्रापणीयाः 'एवमेव' एवमेव यथा भवनवासिनस्तथैवेत्पर्यः 'णवरं चत्तारि सामाणिश्र साहस्सीओ चत्तारि अग्गमिहसीओ सोलसभायरक्खसहस्सा' नवरम् अयं विशेषः चत्वारि सामनिकानां सहसाणि चतस्रोऽग्रमिदिवः पोडश आत्मरक्षकसहस्राणि 'विमाणा सहस्सं महिंद्ब्झया पणवीसं जोयणसयं' विमानानि योजनसहस्रम् आधामविष्कम्याभ्याम्, महेन्द्रध्वजः, पञ्चविश्वत्यधिकयोजनशतम् 'वंटा दाहिणाणं मंजुस्सरा' वण्टा दाक्षिणात्या-नाम् मञ्जुस्वराः 'उत्तराणं मंजुवोसा' औत्तराहाणां मञ्जुवोदाः वण्टाः 'पायत्ताणीआहि वई विमाणकारी अञाभिओगा देवा' पदात्यनीकाधिषतयो विमानकारिण्यश्च आवियोगिकाः

जो यहां प्रकट किया गया है वह ससुदाय वाक्य में सर्व संग्रह के निमित्त ही प्रकट किया गया है 'वाणमंतरजोइसिया णेयव्वा एवं चेय' जिस प्रकार से यह पूर्व में अवनवासियों के सम्बन्ध में कथन किया गया है उसी प्रकार से वानव्यन्तरों एवं उयोतिष्क देवों के सम्बन्ध में भी कथन कर होना चाहिये पूर्वोक्त कथन से इनके कथन में 'णवरं' जो अन्तर है वह इस प्रकार से हैं- 'चत्तारि सामाणिय साहस्सीओ, चत्तारी अगगमहिसीओ, सोल्ह आयर खन्सहस्सा विमाणा सहस्स, महिंद्ज्झया पणवीसं जोयणस्यं घंटा दाहिणाणं मंजुक्तरा उत्तराणं मंजुघोसा' इनके सामानिक देवों की संख्या चार हजार होती हैं इनकी पटदेवियां चार होती हैं आत्मरक्षक देव इनके १६ हजार होते हैं। इनके यान विमान एक हजार योजन के लम्बे चौडे होते हैं महेन्द्रध्यज की उंचाई १२५ योजन की होती है। दक्षिणदिश्वर्ती व्यानव्यन्तरों की घंटाएं सुंजुघोषा नामकी होती है एवं उत्तर दिश्वर्ती वानव्यन्तरों की घंटाएं सुंजुघोषा नामकी होती है 'पायत्ताणीआहिवई विमाणकारी अ आभिओगा देवा' इनके

सर्व संबद्धना निमित्तथी क प्रष्ठट प्रश्वामां आवेक्षुं छे 'वाणमंतरजोइसिया लेदव्या एवं चेव' क्रेक प्रमाणे आ पूर्वमां भवनवासियोना संअंधमां प्रथम प्रगट प्रश्वामां आवेक्षुं छे ते प्रमाणे क वानव्यंतरा तेमक कथे।तिष्ठ हैवाना संगंधमां पण प्रथम सम्ल क्षेषुं क्रिडं क्रे. पूर्विष्ठत प्रथम प्रश्वा आ प्रथममां 'लवर' के तद्दावत छे ते आ प्रमाणे छे- 'चत्तारि सामाणिक्साहरसीओ, चत्तारि अमामहिसीओ, सोलस आव्यक्खसहरसा विमाणा सहस्सं, मिहं दुव्ह्या पणवीसं जोयणस्य चंटा दाहिणाणं संजुस्तरा उत्तराणं मं नुघोसा' क्षेमना सामानिष्ठ हेवानी संण्या यार दुलरकेटली छे. क्षेमनी पट्ट हेवीका यार देव छे. क्षेमना यान-विमाना क्षेष्ठ देवा १६ दुलर देव छे. क्षेमना यान-विमाना क्षेष्ठ दुलर थे।कन केटला लांजा-वाद्य छे. मिहन्द ध्वक्रनी श्रीवाधि १२५ थे।कन केटली छे. हिल्लि हिल्लिं वानव्यंतरीनी मंजुवाधा नामक द्वाय छे. 'पायत्ताणीआहिवई विमाणकारीअ आमिओगा देवा' क्षेमना एडात्यनी-

देवा स्वाम्यादिष्टाहि आभिओगिदेवाः घण्टा वादनादिकर्मणि विमानविक्कवेणे च प्रवर्त्तन्ते न पुनईरितिगमैपिवत् पालकवच्च निर्दिष्टनामका इत्यर्थः, व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिरिति बळात् स्त्रेऽनुक्तवि इदं बोध्यम्-तथाहि-सर्वेषामाभ्यन्तरिकायां पर्षाद देवानाम् ८ अष्ट सहस्राणि मध्यमायां १० दशमहस्राणि बाह्यायां १२ द्वादशसहस्राणि इति । एषामुल्छेखस्त्व-यम् 'तेजं कालेजं तेणं समएणं काले णामं पिसाइंदे विसायराया चउहिं सामाणिअ साहस्सीहिं चउिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाशहिं तिहिं परिसाहिं सचिहें अणीएहिं सचिहिं अणीआहिवईहिं सोलसिं आयरक्खदेवसाइस्सीहिं तं चेव एवं सब्वेबीति' व्यन्तरा इव ज्योतिष्का अपि ज्ञात्व्याः, तेन सामानिकादि संख्यास न विशेषो ज्योतिष्काणाम् किन्त पदात्यनीकाथिपति और विमानकारी आध्ियोगिक देव होते हैं। तात्पर्य यह है कि स्वामियों द्वारा आदिष्ट हुए आभियोगिक देव ही घण्टावादन आदि कार्य में एवं विमान की विकुर्वणा करने में प्रवृत्त होते हैं हरिनिगमैषी की तरह या पालक को तरह ये निर्दिष्ट नामवाले नहीं होते हैं। व्याख्या विद्येष प्रतिपा-दिनोय होती है इस कथन के अनुसार सूत्र में नहीं कहा गया है वह इस प्रकार से वहां समझछेना चाहिये वानन्यन्तरों की भी तीन परिषदाएं होती हैं इनमें आभ्यन्तर परिषदा में ८ हजार देव होते हैं, मध्यपरिषदा में १० हजार देव होते हैं और बाह्यपरिषदा में १२ हजार देव होते हैं इनका उल्लेख इस प्रकार से हैं-'तेणं कार्छेगं तेणं समएणं कार्छे णामं पिसाइंदे पिसायराया चउहिं सामा-णियसाहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिस्सीहिं सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तिहिं अणीएहिं सत्तहिं अणीआहिवइहिं सोलमहिं आयरक्ख देव साहस्सीहिं' इस पाठका अर्थ स्पष्ट है 'तं चेव एवं सब्वे वि' व्यन्तरों के इस पूर्वीक्त कथन के जैसा ही ज्योतिष्क देवों का भी कथन जानना चाहिये परन्तु 'जोइसिआणंति

अधिपति अने विमानकारी आलियोजिक हैवे। द्वाय छे. तात्पर्य आ प्रमाणे छे है स्वामीओ विदे आहास थयेता आलियोजिक हैव ज घंटा वाहन वजेरे क्वार्यमां तेमज विमाननी विद्वर्यणा करवामां प्रवृत्त द्वाय छे. द्विरिनगमेंबीनी जेम अथवा पालक हैवनी जेम ओओ निहिंध्ट नामवाणा द्वाता नथी व्याण्या विशेष प्रतिपाहिनी द्वाय छे. आ कथन मुजल जे सूत्रमां केदेवामां आवेद्धं नथी ते आ मुजल गढ़ीं समल देवुं लेहें के वानव्यं तरानी पण त्रण्य परिषदाओं द्वाय छे. ओमां जे आल्यंतर परिषदा छे तेमां ८ दुलार हैवे। द्वाय छे. मध्य परिषदामां १२ दुलार हैवे। द्वाय छे. ओ सं अधा हिल्लेण आ प्रमाणे छे. तेणं काहेणं तेणं सनएणं काले णामं पिसाइंदे पिसायराया चडहिं सामाणियसाहस्सीहिं चडिं अयामहिसीहिं सारिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तिहं अणीएहिं सत्तिहं अणीआहिबइहिं सोलसहिं आयम्बदेवसाहस्सीहिं' आ पाठेने। अर्थ २ पथ्य काण्युवं लेख छे. परंतु 'जोइसिंग्या पुर्वीका ४थन मुजन प्रभाव क्योतिष्ठ हैवे। हेवन प्रथ काण्युवं लेख छे. परंतु 'जोइसिंग्या पुर्वीका ४थन मुजन प्रभाव क्योतिष्ठ हैवे। हे ४१न प्रथ काण्युवं लेख छे. परंतु 'जोइसिंग्या पुर्वीका ४थन मुजन प्रभाव क्योतिष्ठ हैवे। हे ४१न प्रथ काण्युवं लेख छे. परंतु 'जोइसिंग

घण्टासु विशेषः तमेवाह-'जोइसिश्राणं' इत्यादि 'जोइसिश्राणं सुस्सरा सुस्सरिणण्योसाओं घंटाओं मंदरे समोसरणं जाव पञ्जवासंतित्ति' ज्योतिष्काणां चन्द्राणां सुस्वरा घण्टा सर्वेषां स्व मन्दरे मेरुपर्वते समवसरणं वाच्यम् यावत्पर्धु-पासते यावत्पद्यत् हां तु प्राग्दर्शितं ततो होयम् एषासुरुलेखस्तु अयम् 'तेणं कालेणं तेणं समए णं चंदा जोइसिंदा' जोइसरायाणो पत्तेश्रं पत्तेश्रं चउहिं सामाणिश्र साहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं तिहिं परिसाहिं सत्तिहं अणीएहिं सत्तिहें अणीश्राहिवइहिं सोल्पिहं आयरक्खदेवसहस्तीहिं एवं जहा बाणमंतरा एवं स्रावि इति ॥ स्व ८ ॥

सुस्तरा सुस्तरिण्घोसाओ घंटाओं समोसरणं जाव पज्जुवासंति ति' ज्योतिकों के कथन में जिन बातों से अन्तर हैं वे बातों इस प्रकार से हैं समस्त चन्द्रों की घंटाएं सुस्वर नामकी है और समस्त सूर्योक्षी घंटाएं सुस्वर निर्घोष नामकी है ये सब के सब मन्दर पर्वत पर आये वहां आकर के सब ने प्रसु की पर्युपासना की यहां यावत्पद से जो पाठ गृहीत होता है वह वहीं से जानस्त्रेना चाहिये। इसका उल्लेख इस प्रकार से हैं—'तेणं कालेणं तेणं समएणं चंदा जोइसिंदा जोइसरायाणो पत्तेयं पत्तेयं चउहिं सामाणिअ साहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं तिहिं पिसाहिं सत्तिहं आणिएहिं सत्तिहं अणिआहिवइहिं सोलसिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं एवं जहा बाणमंतरा एवं सुरा वि' इस पाठ की व्याख्या स्पष्ट हैं। यहां गंका ऐसी हो सकती है कि यहां चन्द्र और सूर्य बहु-वचनवाले किस कारण से प्रयुक्त हुए हैं क्योंकि प्रस्तुतकर्म में एक ही सूर्य और एक ही चन्द्रमा का अधिकार चल रहा है अन्यथा इन्द्रों की जो ६४ की संख्या कही गई है उसमें व्याघात होनेकी आपत्ति आवेगी? तो इस शङ्का का समा-

आणित मुस्सरा मुस्सरणिग्घोसाओ घंटओ समोसरण जाब पज्जवासंतीति' ल्ये।तिष्केला कथनमां के आजतमां तहावत छे, ते आ प्रमाणे छे— समस्त चन्द्रोनी घंटाओ सुस्वर नामक छे. समस्त सूर्योनी घंटाओ सुस्वर निर्धाष नामक छे. से अधा मंदर पर्वत ७पर आव्यां. त्यां आवीने अधा हेवाओ प्रसुनी पर्धू पासना करी. राहीं यावत् पहथी के पाठ गृहीत थये। छे ते पहें सा प्रमाणे छे—'तेणं कालेणं तेणं समएणं चंदा जोइसिंदा जोइसर रायाणो पत्तेयं पत्तेयं चवहिं सामाणिअसाहस्तीहिं चवहिं अगमहिसीहिं तिहिं परिसाहिं सत्तिहं अणिएहिं सत्ति अणिपहिं सत्ति आप्राहिवहिं सोलसिहं अण्यरक्खदेवसाहस्तीहिं एवं जहा वाणमंतरा एवं सूरा वि' आ पाठनी व्याप्या स्पष्ट क छे. र हीं सेवी शंका हिंदिन वा स्पष्ट क छे. र हीं सेवी शंका हिंदिन वा स्पष्ट क छे. र हीं सेवी शंका हिंदिन वा स्था छे? डेमके प्रस्तुत कर्ममां ते। सेक क सूर्य अहं वयनना इयमां शा कारण्यी प्रशुक्त थया छे? डेमके प्रस्तुत कर्ममां ते। सेक क सूर्य अने सेक क संन्द्रना अधिकार याती रहा छे. अन्यथा धन्द्रोनी के ६४ देशसहनी संभ्या कहेवामां आवेती छे तेमां व्याघात स्वानी आपित आवशे? ते। आ शंकानुं समाधान प्रमाणे छे डे छनडेल्या स्वानी

अथ अमीवां पस्तुतकर्मणीति वक्तव्यमाह-'तं एणं से एच्चुए देविंदे देवराया'

मूल्म-तए णं से अच्चुए देविदे देवराया महं देवाहिवे आभि-ओगे देवे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी खिप्यामेव भो देवाणुष्पिया महत्थं महग्वं महारिहं विउलं तित्थयराभिसेअं उवट्टवेह-तएणं ते आभिओगा देवा हटूतुट जाव पडिसुणित्ता उत्तरपुरित्थमं दिसीभागं अवक्रमंति अवक्रमित्ता वेउव्विअ समुग्घाएणं जाव समोहणित्ता अट्ट सहस्तं सोर्राणिश्र कलसाणं एवं रूप्यमयाणं मणिमयाणं सुवण्णरूप-मयाणं सुवण्णमणिमयाां रूप्पमणिमयाणं सुवण्णरूप्पमणिमयाणं अट्ट सहस्तं भोमिज्जाणं अट्टसहस्तं चंदणकलसाणं एवं भिंगाराणं आयं-साणं थालाणं पाइणं सुपईट्टगाणं चित्ताणं रयणकरंडगाणं वायकरगाणं पुष्फचंगेरीणं, एवं जहा सूरिआभस्स सठवचंगेरीओ सठवपडलगाई विसेसिअतराई भाणिअव्वाई सीहासण छत्तचामरतेल्ळसमुग्ग जाव सरिसवसमुग्गा तालिअंता जाव अट्टंसहस्सं कडुच्छ्रगाणं विउच्वंति, विउवित्रता साहाविए विउवित्रए अ कलसे जाव कडुच्छुएअ गिणिहत्ता जेणेव खीरोदए समुद्दें तेणेव आगम्म खीरोदगं गिण्हंति गिण्हित्ता जाई तत्थ उप्पलाइं पउमाइं जाव सहस्तपत्ताइं ताइं णिण्हंति एवं पुक्खरो

धान ऐसा है-जिन कल्याणक आदिकों में दश कल्पेन्द्र, २० भवनवासीन्द्र, ३२ व्यन्तरेन्द्र एवं चन्द्र और सूर्य इस तरह से ६४ इन्द्रों की संख्या हो जाती है परन्तु चन्द्र और सूर्य व्यक्तिरूप से यहां एक एक ही संख्या में परिगणित नहीं हुए हैं किन्तु जाति की अपेक्षा से ही गृहीत हुए हैं इसलिये यहां चन्द्र और सूर्य को बहुवचनान्त पद से त्यक्त किया गया है। अतः इस कथन से चन्द्र और सूर्य असंख्यात भी आते हैं ॥८॥

આદિમાં ૧૦ કલ્પેન્દ્રો, ૨૦ ભવનવાસીન્દ્રો, ૩૨ વ્યન્તરેન્દ્રો તેમજ ચન્દ્ર અને સૂર્ય આમ ६૪ ઇન્દ્રોની સંખ્યા થઇ જાય છે. પરંતુ અહીં ચન્દ્ર અને સૂર્ય વૈયક્તિક રૂપમાં એક-એકની સંખ્યામાં પરિગણિત થયા નથી. અહીં એ બન્ને જાતિનો અપેક્ષાએ જ ગૃહીત થયા છે. એથી અહીં ચન્દ્ર અને સૂર્ય બન્નેને ખહુ વચનાન્ત પદથી વ્યક્ત કરવામાં આવેલા છે. એથી આ કથન મુજળ ચન્દ્ર અને સૂર્ય અસંખ્યાત પણ હાય છે. ॥ ૮ ॥

दाओ जाव भरहेरवयाणं मागहाइ तित्थाणं उदगं महिअं च गिण्हंति गिण्हिता पउमहहाओ दहोअगं उप्पठादीणिंअ एवं सव्वक्कठपव्वएसु वहवेअछेसु सव्वमहहहेसु सब्ववासेसु सव्यचक्कदिृति जएसु वक्खार-पव्वएसु अंतरणइसु विभासिजा जाव उत्तरकुरुसु जाव सुदंसणभहसाल-वणे सव्वतुअरे जाव सिद्धत्थएअ गिण्हंति एवं णंदणवणाओ सव्व-तुअरे जाव सिद्धत्थएअ सरसं च गोसीसचंदणं दिव्वं च सुमणोदामं गिण्हंति एवं सोसणसदंड्गवणाओअ सव्वतुअरे जाव सुमणसदामं दहरमलयसुगंधे य गिण्हंति गिण्हित्ता एगओ मिलंति मिलिता जेणेव सामी तेणेव उवागच्छंति उवागच्छिता महत्थं जाव तित्थअरामि-सेअं उवहवंतित्ति ॥ सू० ९॥

छाया-ततः खळ सोऽच्युनो देवेन्द्रो देवराजो महान् देवाधिपः आभियोगिकान् देवाच् शब्दवति शब्दिवत्वा, एवमत्रादीत् क्षिप्तमेव भी देवानुत्रियाः महार्थे महार्थे महार्धे विपुर्लं तीर्थंकराभिषेकमुपस्थापयत, ततः खलु ते आभियोगिकाः देवाः हृष्ट तुष्ट यावत् प्रतिश्रुत्य उत्तरपौरम्स्यं दिग्भागमपक्रामति अपक्रम्य वैक्रियसपुत्वातेन यावत्समवहत्य अष्टसहस्रं सीवर्णिकक्तळद्वानाम् एवं रूप्यमयानां मणिमयानां सुवर्णरूप्यमयानां सुवर्ण-मणिमयानां रूप्यमणिमयानां सुवर्णरूप्यमणिमयानाम् अष्टसहस्रं भौमेयानाम् अष्टसहस्रं चन्दनकञ्जानाम् एवं भुद्राराणाम् आदर्शीनां स्थालीनां पात्रीणां सुप्रतिष्ठकानां चित्राणां रतन-करण्डकानां वातकरकाणां पुष्पचङ्गिरीणाम् प्वं यथा सूर्याभस्य सर्वचङ्गेर्थः सर्वेपटलकानि विशेषिततराणि भणितव्यानि सिंहासन्श्वत्रचामर् तिलसम्रह्नः यावत्सर्पपसम्रह्नः तालवृत्तानि यावत् अष्टसहस्रं कद्रुच्छकानां विकुर्वन्ति विकुर्व्य स्वाभाविकान् वैक्रियांश्र कलशान् यावत् कडुच्छुकांश्र गृहीत्वा यत्रैव क्षीरोदः समुद्रम्तत्रैवागत्य क्षीरोदकं गृह्णन्ति ग्रहीत्वा यानि तत्र उत्पद्याने पद्मानि यावत्सहस्रपत्राणि तानि युद्धन्ति एवं पुष्करोदात् यावत् भरतेरवतयोः मागधादि तीथीनाम् उदकं मृत्तिकां च मृह्णन्ति मृहीत्वा एवं गङ्गादीनां महानदीनां यावत् श्चद्रहिमवतः सर्वतु ररात् सर्वे पुष्पाणि सर्वे गन्धान् सर्वे माल्यानि यावत् सर्वे महौषधीः सिद्धार्थकांश्र गृह्णन्ति गृहीत्वा पद्महृदात् द्रहोदकम् उत्पलादीनिच (गृह्णन्ति) एवं सर्वे कुछ-पर्वतेषु वृत्तवैतादचेषु सर्वमहाद्रदेषु सर्ववर्षेषु सर्ववकार्वतिव येषु वक्षरकारपर्वतेषु अन्तरन-दीषु विभाषेत, यावत् उत्तरकुरुषु यावत् सुदर्शनभद्रशालवने सर्वतुवरान् यावत् सिद्धार्थकांश्र मृह्णन्ति एवं नन्दनवनात् सर्वेतुवरान् यावन् सिद्धार्थकांश्र सरसंच गोशीर्वचन्दनं दिव्यंच सुमनो दाम ग्रह्मन्ति एवं सीमनसपण्डकवनात् सर्वतुवरान् यत्।व सुववो दाम द्देर मछप

सुगन्धिकान् मृद्धान्ति मृहीत्वा एकत्र मिल्रन्ति मिल्रित्वा यत्रैव स्वामी तत्रैव उपागच्छन्ति उपागत्य महार्थे यावत् तीर्थकराभिषेकम् उपस्थाययन्ति इति ॥ स्०९॥

टीका-'तएणं से अच्छुए' ततः खल तदनन्तरं किल सोऽच्युतो यः द्वादशदेवलोकाधिपतिरच्युतनामा यः प्रागिभिहितः 'देविंदे देशराया' देवेन्द्रः देवानामिन्द्रः देवेन्द्रः,
देवराजः देवस्य राजा 'महं देवाहिवे' महान् देवाधिपः चतुः पष्टाविष इन्द्रेषु लब्धवितिरुतोऽतएव अस्य प्रथमोऽभिषेकः इति 'आभियोगे देवे सदावेह' आभियोगिकान् आज्ञाकारिणः देशन् शब्दयति, आहयति 'सदावित्ता' शब्दयित्वा 'एवं वयासी' एवं वश्वयमाणप्रकारं
वचनमवादीत् उक्तवान् किश्वक्तवान् तत्राह-'खिप्पामेव भो देवाणुष्पिया' क्षिप्रमेव अतिशीधमेव भो देवाजुप्रियाः! 'महत्यं गहा्यं महारिहं विउलं तित्थयराभिसेशं उवहत्रेह' महार्थम्
महान् अर्थः मिणकत्रकरत्नादिक उपश्च ज्यमानो यत्र अभिषेके स तथाभृतः तम् तथा महार्थम् महान् अर्थः वहुमूल्यस्तवनादियंत्र स तथाभृतम् तथा महार्हम्-महम् उत्सवम् अर्हतीति
यः स महार्हस्तम् विश्वालोत्सवसंपन्नम् विषुलम् प्रचुरं यथास्यात् तथा तीर्थहराभिषेकम्
उपस्थापयत् कुरुत् आज्ञप्तास्ते आभियोगिकाः देवाः यत्कतवःतस्तदाह-'तए णं' इत्यादि

'तएणं से अच्चुए देविंदे देवराया' इत्यादि

टीकार्थ-'तएणं' इसके बाद 'से अच्चुए देविंदे देवराया' उस पूर्ववर्णित देवेन्द्र देवराज अच्युन ने द्वाद्रश देवलोक के अधिपति-ने 'महं देवाहिवे आमि- ओगे देवे सहावेह' वे जो कि चौसठ इन्द्रों में महान लब्ध प्रतिष्ठित है आभियोगिक देवों को गुलाया। 'सहावित्ता एवं वयासी' और गुलाकर उनमें ऐसा कहा— 'खिप्पामेव भो देवाणुष्टिया! महत्यं मह्ग्यं महारिहं विउलं तित्थयराभिसे अं उवहवेह' देवानुप्रियो! गुमलोग बहुत ही शीध तीर्थकर के अभिषेक की सामग्री को उपस्थित करों वह सामग्री महार्थवाली हो-जिसमें मणिकनक रान आदि पदार्थ सम्मिलित हो, महार्घ हो कीमत में जो अन्य कीमतवाली न हो किन्तु विशिष्ट गुल्यवाली हो, महाई हो उत्सव के लायक हो, विगुल हों-मात्रा

^{&#}x27;त एणं से अच्चूर देवि दे देवराया' इत्यादि

टीडार्थ-'तन्नं' त्यार आद 'से अचनुण देवि दे देनाया' ते पूर्व विश्वित होन्द्र हेवराक अध्युत-द्वाद्य हेवदीडना अधिपतिओ-'महं देवाहिये देवे आनिआगे सदावेद्द?' है के ६४ इन्ह्रीमां महान् सण्ध प्रतिष्ठित छे,-आलिये।िगड हैवाने आसाण्या. 'सदावित्ता एवं बयासी' अने भीसावीने तेमने डहां-'सिष्यत्मेव मो देवाणुष्पिया! महत्यं महाचित्तं विवर्तं तित्थयराभिसेअं उवहुवेह' है हैवानुप्रिया! तमे देवाणुष्पिया! महत्यं महाचित्तं विवर्तं तित्थयराभिसेअं उवहुवेह' है हैवानुप्रिया! तमे देवाणुष्पिया! महत्यं महाचित्तं विवर्तं तित्थयराभिसेअं उवहुवेह' है हैवानुप्रिया! तमे देवाणुष्पिया! महत्यं महाचित्तं विवर्तं तित्थयराभिसेअं उवहुवेह' है हैवानुप्रिया! तमे देवाणुष्पिया! महत्यं महाचित्रं विवर्तं तित्थयराभिसेअं उवहुवेह' है हैवानुप्रिया! तमे देवाणुष्पिया! स्वाधि तथा शिव किन्द्रं स्वाधिका हैवानुष्रं हैवानुष्रं हैवानुष्रं विवर्ण के स्वधिका किन्द्रं स्वाधिका हैवानुष्रं हैव

'तए णं ते आभियोगिया देवा इह तुह जाव पिडसिणिता उत्तर पुरित्थमं दिसीभागं अवक-मंति' ततः खल ते आभियोगिका देवा इष्ट तुष्ट यावत् प्रतिश्रुत्य उत्तरपीरस्त्यं दिग्भागम् ईश्णानकोणम् अवकामित निस्परन्ति अत्र यावत् पदात् चित्तानन्दिताः प्रीतिमनसः परमकौ-मनस्यिता हर्षवश्चविसपद् इदयाः करतलपरिग्रहीतं दश्चनखम् शिरसावते मस्तके अञ्जलि कृत्वा हे स्वामिन तथाऽस्तु इति यथा आदिष्टं देवानुप्रियेण तथेव करिष्यामः, इति आज्ञायाः विनयेन वचनं प्रतिश्रुष्यन्ति इति ग्राह्णम् 'अवक्रमित्ता' अवक्रम्य गत्वा 'वेउव्वियसप्रुग्धाएणं जाव समोहणित्ता' वैक्रियसप्रद्धातेन यावत्समवहत्य अत्र यावत् पदात् समबध्नन्ति इति ग्राह्मम् 'अह सहस्तं सोवण्यिअकलसाणं' अष्टसहस्तम् अष्टोत्तरं सहस्तं सौवणिककलशानाम् -स्वर्णनिर्मित्वद्यानाम् विक्वविन्त इत्यग्रेण सम्बन्धः एवम् उत्तप्रकारेण अष्टसहस्तम् 'रूप्पम-में अल्प न हो किन्तु चहुत ही अधिक हो 'तएणं ते आभिओगा देवा हहतुह

में अल्प न हो किन्तु बहुत ही अधिक हो 'तएण ते आमिश्रीगा देवा हहतुह जाव पिडिसुणित्ता उत्तरपुरिथमं दिसीभागं अवक्रमंति' इस प्रकार अपने स्वामी की आज्ञा सुनकर वे आभियोगिक देव हर्ष से फूछे हुए नहीं समाए, बहुत अधिक हर्ष एवं संतोष युक्त होकर वे ईशानकोण की ओर वहां से चलदिये यहां यावत्पद से 'चितानिन्दतः, प्रीतिमनसः, परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पत् हृद्या करतलपरिगृहीतं दशनसं शिरसावर्त्तं मस्तके अंजलि कृत्वां' हे स्वामिन् 'तथाऽस्तु इति यथादिष्टं देवानुप्रियेण तथैव करिष्णामः इति आज्ञाया विनयेन च वचनं प्रतिश्रृण्वन्ति' यह पाठ गृहीत हुआ है इसकी व्याख्या सुगम है 'अवक्रमित्ता वेउव्वियसमुग्याएणं जाव समोहणिता अहसहस्सं सोवण्णिय कलसाणं एवं रूप्पमयाणं' ईशानकोण को ओर जाकर वहां उन्हों ने वैकियसमुद्धात किया वैकियसमुद्धात करके किर उन्हों ने १००८ सुवर्णकलशों की, १००८ रूप्पमय कलशों की, 'मिणमयाणं' १००८ मिणमयकलशोंकी 'सुवण्णक्ष्यमयाणं' १००८

अहप हाय निह पण भूभ वधारे हाथ. 'त एणं ते आमिओगा देवा हट्ट तुद्र जाव पिंड सुणिता उत्तरपुरिक्षमं दिसीमागं' आ प्रमाणे पाताना स्वामीनी आहा सांकणीने ते आलियाजिक देवा हुर्धावेशमां आवी जया. भूभक अधिक हर्ष तेमक संतेषधी युक्त शक्रीने तेओ। त्यांथी धशान है। यू तरह स्वाना थया. अहीं यावत् पद्धी 'चित्तानिदः प्रीतिमनसः, परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पतहृद्या करतलगृहीत दशनसं शिरसावर्त्त मस्तके अंजिलें कृत्वा हे स्वामिन्! तथाऽस्तु इति यथादिव्हं देवानुष्रियेण तथेव करिश्यामः इति आज्ञाया विनयेन च वचनं प्रतिशृवन्ति' आ पाठ गृहीत थथे। छे. आ पहीनी व्याप्या सुगम छे. 'अवक्किमित्ता वेविवयसमुग्याएणं जाव समोहणिता अद्र सहस्स सोजिष्णय कलसाणं एवं रूपमयाणं' धशान है। या तरह कधने त्यां तेमछे वैष्ठिय समुद्धात हथे। वेशिय समुद्धात हरीने पछी तेमछे १००८ सुवर्ष इणशानी, १००८ इण्यमय इणशानी 'मिष्मियाणं' १००८ मिष्मिय इणशानी, 'सुवण्णरूपमयाणं' १००८ सुवर्षु इण्यमय

याणं' रूप्यमयानाम् कलशानां अष्टसहस्रम् 'मणिमयाणं' मणियानां कलशानाम् विकुर्वन्ति तथा 'सुवण्णरूपमयाणं' सुवर्णरूप्यमयानां 'सुवण्णरूपमणिमयाणं' अष्टसहस्रं सुवर्णरूप्य-मणिमयावनां सुवर्ण मणिमयानां रूप्यप्रणिमयानां सुवर्णमूप्यमणिमयानाम् घटानां (विकुर्वन्ति) अत्र सुवर्णमिकामानां घटानामष्टसःसं तथा सुवर्णरूप्यमयानां कलशानामष्टसहस्रं तथा रूप्यमणिमयानां कलशानामब्टसहस्रम् तथा सुवर्णरूप्यमणिमयानां कलशानामब्टसहस्रं विकु-र्वन्तीर्थः । 'अट्टसहरूसं मोमेज्जाणं' अष्टसदस्राणि भौमेयकानां मृत्तिकानिर्मित्घटानां 'अद्वसद्दर्स चंदणकल्लाणं' अष्ट सदसाणि चन्दनकल्लानां चन्दनकाष्टनिर्मितानां माङ्गस्य स्चकचन्दनिमश्रघटानामित्यर्थः 'एवं भिंगाराणं' एवं भृङ्गाराणाम् एवं सर्वत्राष्ट-सहस्राणि ज्ञातव्यानि (ज्ञारीति भाषाप्रसिद्धानाम् 'आयंसाणं' आदर्शीनाम् दर्पणानाम् 'थालाणं-पाईणं सुपइहगाणं' स्थालीनां पात्रीणां सुप्रतिष्ठकानाम् पात्रविशेषाणाम् 'चित्राणं रयण-करंडगार्णं वायकरगाणं पुष्फचंगेरीणं' वित्राणाम् रत्नकरण्डानां रत्नाधारभूतमञ्जूषानाम् 'वातकरकाणां बहिः स्थितानां मध्ये जलशून्यानाम् करकाणां जलपात्राणामित्यर्थः पुष्पचक्के रीणाम् अष्टसदस्राणि प्रत्येकम् विकुर्वन्ति 'एवं जहा स्र्रियाभस्स सन्वचंगेरीओ सन्व पडलगाई विसेसिअतराई भाणियव्वाई' एवम् उक्तरीत्या यथा सुरियाभस्य राजप्रश्नीये सुवर्णरूपमयकलकों की, १००८ 'सुवर्णमणिमयाणं' सुवर्णमणिमयकलकों की. १००८ 'रुप्पमणिमयाणं' रुप्पमणिमयकलक्षों की १००८ 'सुवण्णरूपमणिमयाणं सुवर्णरुप्पर्पमणिमयकलकों की 'अहसहस्सं भोमिज्जाणं' १००८ मिही के कलकों की, 'अइसहस्सं चंदण कलसाणं' १००८ चन्दन के कलशों की 'एवं भिंगाराणं आयंसाणं' १००८ झारियों की, १००८ दर्पणों की, 'थालाणं' १००८ घालो की 'पाईणं' १००८ पात्रियों की, 'सुपईद्वगाणं' सुप्रतिष्ठकों 'आधारविद्रोषों की 'चित्ताणं' १००८ चित्रों की, 'रयणकरंडगाणं' १००८ रत्नकरण्डकों की 'वाय-करगाणं' १००८ वातकरकों की 'युष्फचंगेरीणं' १००८ पुष्पचंगेरिकाओं की, विकुर्वमा की 'जहा सूरियाभस्स सन्बचंगेरीओ सन्वपटलगाइं विसेसिअनराई भाणिअब्बाई सीहासणञ्ज-चामरतेश्लमपुग्ग जाब सरिसव समुग्गा तालिअंटा

डणशानी १००८ 'सुवण्णमणिमयाणं' सुवर्ष मिश्रमथ डणशानी, १००८ 'रूपमणिम-याणं' ३५४ मिश्रमथ डणशानी, १००८ 'सुवण्णरूपमणिमयाणं' सुवर्ष्ण् ३५४ मिश्रमथ डणशानी 'अट्ट सहरसं मोमेज्जाणं' १००८ माटीना डणशानी 'अट्ट सहरसं चंदणकल्लसाणं' १००८ यंहनना डणशानी 'एवं मिंगाराणं आयंसाणं' १००८ अरीओनी, १००८ हर्प होनी. 'थालाणं' १००८ थाणानी पाईणं' १००८ पात्रीओनी, 'सुपईट्टुगाणं' १००८ सुप्रतिष्ठिडोनी आधार विशेषानी, 'चित्ताणं' १००८ थित्रोनी, "रयणकरं हगाणं' १००८ रत्न डरंडडेानी 'वाहकरगाणं' १००८ वात डरडेानी 'पुष्कचंगेरीणं' १००८ पुष्प थंगेरिडाओनी विद्वविद्या डरी. 'जहा सूरियामस्स सम्ब चंगेरीओ सम्ब पदकगाइं विसेसिअतराइं भाणिअध्वाई इन्द्रामिषेकसमये स्पेचक्नेयेः तथाऽत्रापि वत्तव्याः दृष्टम् इदं जीवाभिगमे वृतीयप्रतिपनी 'अट्ठसहस्तं आभरणवंगेरीणं लोमहत्थवंगेरीणं इति तथा सर्वपटलकानि वत्तव्यानि, तथाहि अष्टसहस्ताणि पुष्पपटलकानाम् इमानि वस्तृनि स्वर्थभाभिषेकोषयोगवस्तुभः संख्ययैव दृत्यानि न तु गुणेन इत्याद-विशेषिततराणि अतिशय विशिष्टानि शणितव्यानि प्रथमकरपी- यदेवविकुर्वणातोऽच्युत कल्पदेवविकुर्वणाया अधिकतरत्वात् विशिष्टत्वात् तथा 'सीदासण- छत्तवामर तेल्लसग्रुग्ग जाव सिरसवसग्रुग्गा' सिंहासन छत्रवामर तिल्सग्रुद्धक थावत् सर्वप- जाव अट्टसहस्सं कडुच्छुगाणं विज्ववंति' जिल्ल तरह राजप्रद्वनीय सूत्र में इन्द्रा- मिषेक के समय में सूर्याभदेव के प्रकरण में समस्त चंगेरिकाओं की, समस्त पुष्प पटलों की विकुर्वणा हुई कही गई है उसी प्रकार यहां पर भी इन सब अभिषेक योग्य सामग्री वस्तुओं की अतिविद्धाष्टरूप से विकुर्वणा की गई ऐसा कहना चाहिये क्यों कि प्रथम कल्पके देवों की विकुर्वणा की अपेक्षा अच्युत- कल्पगत देवों की विकुर्वणा अधिकतर होती है अतः इन विकुर्वितन्धुई समस्त- वस्तुओं की संख्या १००८ रूप से ही समान थी गुण से नहीं ऐसा नहीं है कि

है, यह बात ऊपर कही जा चुकी है। इसी तरह उन देवों ने १००८ सिंहासनों की, १००८ छन्नों की १००८

सूर्याभदेव के प्रकरण में विक्ववित की गई अभिषेक योग्य वस्तुएं संख्याकी अपेक्षा समान थी किन्तु ये सब गुणकी अपेक्षा विशिष्टतर थीं यही बांत 'विशेषित तराइं' इस पद बारा कही गई है क्यों कि प्रथम कल्पगत देवों की विक्रिया शक्ति में और अञ्युतकल्पगत देवों की विक्रिया शक्ति में अधिकतरता होती

सीहासण छत्त चामर तेल्ल समुगा जाब सरिसबसमुगा तालिअंटा जाब अट्ट सहस्सं कड्ड्ल्लुगाणं विडव्बंति' के प्रमाधे राकप्रश्लीय सूत्रमां ईन्द्राकिषेड वणते सूर्याल हेवना प्रडरखुमां समस्त यंगरीडाओनी समस्त पुष्प पटहोनी विड्वं क्षा डरवामां आवी ढ्रती, ते प्रमाधे क अढीं पख को अधी अलिधेड येग्य सामग्रीनी अति विशिष्ट ३५मां विड्वं खा डरवामां आवी ढ्रती, केवुं समक्तवुं लिधे के डेमेडे प्रथम इल्पना हेवानी विट्वं व्यानी अपेक्षाओ अय्युत इल्पणत हेवानी विट्वं खा अधिकतर हाय छे. आम को विट्वं वित थयेडी समस्त वस्तुओनी संण्या १००८ ३५नी अपेक्षाओं क समान ढ्रती. गुध्नी अपेक्षाओं निर्दे आम न समक्तवुं लिधिकों. डे सूर्याक्षहेवना प्रडरखुमां विट्वेवित हरवामां आवेडी अलिधेड येग्य वस्तुओं संण्यानी ६ष्टिओं यक्ष समान ढ्रती. परंतु क्रेका अधी गुक्नी अपेक्षाओं वस्तुओं संण्यानी ६ष्टिओं पक्ष समान ढ्रती. परंतु क्रेका अधी गुक्नी अपेक्षाओं विशिष्टतर ढ्रती. केव वात 'विशिष्ततराइं' आ पह वडे इद्धेवामां आवेडी छे. डेमडे प्रथम इल्पणत हेवानी विडिया शिक्तमां अने अय्युत इल्पणत हेवानी विडिया शिक्तमां अधिक तरता ढेवानी विडिया शिक्तमां अने अय्युत इल्पणत हेवानी विडिया शिक्तमां अधिक तरता ढेवानी विडिया शिक्तमां अधिक तरता ढेवानी विडिया शिक्तमां आवेडी छे आप्रमाधे ते हेवाओ १००८

सम्रहकाः तत्र सिंहासनच्छत्रचामराः प्रसिद्धाः तिल्लसमुद्रक यावत् सर्वपसमुद्रकाश्र तिलभाजन यावत् सर्ववभाजनानि च अत्र यावत् पदात् कोष्टसमुद्रकादयो वक्तव्याः तथाहि 'कोइसमुग्गे पत्ते चोएअतरगमेलाय हरिभालेहिंगुलये मणोसिला इति ताछिअंटा जाव अटुसहस्सं कडुच्छगाणं विउव्वंति' तालवृन्तानि तास्रव्यजनानि अत्र यावत् पदात व्यजनानीति परिग्रहः तत्र व्यजनानीति सामान्यतो वातोपकरणानि ताळवृन्तानि तु तद्भि-घोषणरूपाणि एषामष्टसहस्राणि अष्टसहस्राणि इति अष्टसहस्राणि ध्रुपकहुच्छुकानामिति विकुर्वन्ति विकुर्वणाशक्तया निष्पादयन्ति 'विउच्चित्ता' विकुर्व्य विकुर्वणा शक्तया निष्पाद्य 'साहाविए विउव्विएअ करुसे जाव कडुच्छुएअगिण्हिता' स्वाभाविकान् देवस्रोके देवस्रोकवत् स्वयं सिद्धान इव वैक्रियांश्र अनन्तर पूर्वोक्तान् सीवणौदिकान् कलकान् यावत् कहुच्छुकांश्र पृहीस्वा आदाय अत्र यावत् पदात् भृद्गारादयो व्यजनान्ताः सर्वे प्राधाः 'जेणेव स्वीरोदण समुद्दे तेणेव आगम्म खीरोदगं गिण्हंति' यत्रैव क्षीरोदः समुद्रः तत्रैव आगस्य क्षीरोदकं क्षीर-रूपमुदकं युद्धन्ति 'पत्ताइं ताइं गिण्डंति' यानि तत्र उत्पक्तानि पद्मानि यावत् सइस्रपत्राणि तानि गृह्णन्ति ते देवाः अत्र यावत्पदात् कुसुमादीनां परिव्रद्यः 'एवं पुरुखरोदाओं' एवम् की, १००८ तेल समुद्रको की यावत् इंतनेही कोष्ठसमुद्रकादिको की, सर्पप समुद्रकों की, ताल बृन्तों की यावत् १००८ धूपकडु ब्छुकों की धूप कटा हो की विकुर्वणा करके फिर वे देवलोक में देवलोक की तरह स्वयं सिद्ध शाश्वत कलशों को एवं विकिया से निष्पादित कलकों को यावत भृहार से छेकर व्यजनान्ततक की वस्तुओं को और घूप कडूच्छुकों को छेकर 'जेगेव खीरोदए समुद्दे तेगेव आगम्म खीरोदगं गिण्हंति' जहां क्षीरोद-क्षीसागर नामका समुद्र था-वहां आकर उन्हों ने उसमें से श्रीरोदक कलशों में भरा 'गिण्हिला जाइं तत्थडप-लाई पडमाई जाब सहस्सपत्ताई ताई गिण्हंति' क्षीरोदक को भरकर फिर उन्हों ने वहां पर जितने उत्पल थे, पद्म थे यावत् सहस्रपत्रवासे कमल ये उन सबको

सिंद्धासनीनी, १००८ छत्रानी, १००८ यामरानी, १००८ तेस समुद्द्रगामी यावत् किटबा कर है। १६ समुद्द्रगामी, सर्वव समुद्द्रगामी, तास वृन्तानी यावत् १००८ धूप मुद्द्रगामी धूप में १८। छी। ते इविष्य साहाविए विचिव्य य कलसे जाव कदुच्छुए य गिण्हित्ता' विभ्ववृद्धा हरीने पछी ते हेविसमां, हेविसामी केम स्वयं सिद्ध शास्त्रत मामित तेमक विश्वियाधी निष्पादित मामित यावत् भृंगारधी मांडीने व्यंकनानतनी वस्तुक्षोने करने धूपम्बद्धमाने सिर्ध निष्पादित मामित खीरोद्दं खीरोद्द समुद्दे, तेणेव भागमा खीरोद्दं गिण्हिति' क्यां क्षीराह-क्षीर सागर नामम स्वीरोद्दं तिमां क्षीराहम मामित तेमण् तेमांथी क्षीराहम मामित सागर नामम स्वीरोद्दं ताई गिण्हिति' क्यां क्षीराहम करीने पछी तेमांधी क्षीराहम मामित करीने पछी तेमांधी हिता करीने क्षीराहम करीने पछी तेमांधी त्यां केटला छत्यां क्षीराहम करीने पछी तेमांधी स्वीराहम करीने पछी तेमां क्षीराहम करीने पछी तेमांधी स्वीराहम करीने पछी तेमांधी स्वीराहम करीने पछी तेमांधी स्वीराहम करीने पछी तेमांधी स्वार्थ करीने अध्या करेला करीने स्वार्थ करीन स्वार्थ करीने स्वार्थ क

अनया रीत्या पुष्करोदात् त्तीयसश्दात् क्षीरोदसप्रदात् उदकादिकं गृहन्ति अत्र देवैः क्षीरोदकसप्रदे क्षीरोदकादि प्रहणानन्तरं यस्मात् वारुणीवरमन्तराग्रुवत्वा पुष्करोदे जलं गृहीतम् । तस्मात् वारुणीवर वारिणोऽप्राह्यत्वादिति सम्भाव्यते, 'जाव भरहेरवयाणं मागहा इतित्याणं उदगं मिट्टअंच गिण्हंति अत्र यावत्पदात् 'समयखित्ते' इति ग्राह्यम् तथाच समयक्षेत्रे मनुष्यक्षेत्रे भरतेरवतयोः पुष्करवरद्वीपार्द्धसत्कयोः मागधादीनां तीर्थानाष्ठ्रदक्षं गृतिकां च गृहन्ति 'गिण्हित्ता' गृहित्वा 'एवं गंगाईणं महाणईणं जाव' एविमिति समयक्षेत्रस्य पुष्करवरद्वीपार्द्धसत्कानां गङ्गादीनां महानदीनाम् आदिशब्दात् सर्वनदीनां परिग्रहः यावत्पदात् उदक्षप्तभयन्तरवर्तिनीं गृत्तिकां च गृहन्ति इति ग्राह्मम् 'चुल्लहिमवंताओ सव्यवस्थरे सव्यप्पे सव्वगंधे सव्यवस्थरे जाव सव्योग्रहीओ सिद्धस्थएय गिण्हंति' खुद्रहिमवतः सर्वान तुवसन् कथायद्रव्याणि, सर्वान् गन्धान् वासादीन् सर्वाणि माल्यानि ग्रथितादि भेदिमन्नानि सर्वा महौष्यीः सिद्धा-

ित्या यहां यावत्पद से क्रमुद आदि कों का ग्रहण हुआ है 'एवं पुक्लरोदाओं जाब भरहेरवयाणं मागहाइतित्थाणं उद्गं मिं छंच गिण्हंति' इसी तरह से पुष्करोदक नामके तृतीय समुद्र से उन्हों ने उदकादिक लिया, फिर मनुष्य क्षेत्रस्थित पुष्कर वरद्वीपार्ध के भरत ऐरवत के मागधादिक तीथों में आकर उन्हों ने वहां का जल और मृत्तिकाली 'गिण्हित्ता एवं गंगाईणं महाणईणं जाव चुल्लिहमवंताओं सब्बतुओर सब्वपुष्फे सब्ब गंधे सब्ब मल्ले जाव सब्बोसहीओं सिद्धत्थए य गिण्हंति २ त्ता पुष्मदहाओं दहों अगं उप्पला दीणिअ एवं सब्ब कुल-पुष्म वहवे अदेश सब्बमहद्देश्व' वहां का जल और मृत्तिका लेकर फिर उन्हों ने वहां की गंगा आदि महानदियों का जल और मृत्तिका लेकर फिर मृत्तिकाली तथा क्षुद्रहिमवान पूर्वत से समस्त आमलक आदि कषाय द्रव्यों को, मिन्न २ जाति के पुष्पों को समस्त गन्ध द्रव्यों को प्रथतादि भेदवाली मालाओं को, राजहंसी आदि महौष्धियों को और सर्षपों को लिया प्रवाह से दहोदक

'एवं पुक्खरोदाओ जाव भरहेरवयाणं मागहाइतित्थाणं उदगं मदिट मिण्हंति' आ प्रभाशे पुष्ठिराहि नामक तृतीय समुद्रमांथी तेमि उद्याहिक वीधां. पणी मनुष्य क्षेत्र रिथत पुष्ठिरवर द्वीपार्धना अरत कैरवतना मागधाहिक तीथींमां आवीने तेमि वाथी पाणी अने मृत्तिका वीधां. 'गिण्हित्ता एवं गंगाईणं महाणईणं जाव चुल्लिहमवंताओ सव्वतुओं सव्वपुष्पे सव्वगंधे सव्वमल्ले जाव सव्वोसहीओ सिद्धत्यए य गिण्हंति गिण्हित्ता प्रज्ञमहहाओ दहोअगं उपलादीणि अ एवं सव्य कुल्पव्यएसु वद्ववेअहेसु सञ्च मह्हिसुं त्यांथी पाणी अने मृत्तिका वर्धने पणी तेमि तथा वाथ वाथ विश्व किमवान् पवर्तथी पाणी यावत् उद्दे तेमि उभय तथी मृत्तिका क्षेत्र किमवान् पवर्तथी समस्त आमक्षक आहि क्षेत्रय द्वेने, किन्न-किन्न कार्तिना पुष्पोने, समस्त अन्ध द्वेने अथिताहि केदवाणी भाणाकोने, शालकंसी वगेरे महीविधिकोने अने सर्पपोने

र्थकांश्र सर्वपान् युद्धन्ति ते आभियोगिकाः देवाः 'गिण्हिता' युद्धीत्वा 'पुअमहहाओ दहोद्गं उप्परुदिणि अ' पञ्चद्रहात् द्रहोदकमुत्पलादीनि च मृह्यन्ति । 'एवं सन्त्रकुलपन्त्रपसु बहुवेश्रद्धेसु सञ्जमहद्देस सञ्ज्ञवासेस सञ्ज्जकवि विजएस वक्खारपञ्जएस अंतरणईस विभासिज्जा' एवं श्चद्रहिमवन्न्यायेन सर्वक्षेत्रव्यवस्थाकारित्वेन सर्वकुळपर्वतेषु सर्वकुळकल्पापर्वताः सर्वकुळपर्वताः, हिमाचलादयस्तेषु, तथा वृत्तवैताहचेषु, तथा सर्वमहाद्रहेषु पद्मद्रहादिषु तथा सर्ववर्षेषु, भरतादिषु, सर्वचक्रवर्ति विजयेषु कच्छादिषु वशस्कारपर्वतेषु गजदन्ताकृतिषु माल्यवदादिषु सरलाकृतिषु च चित्रक्टादिषु तथा अन्तरनदीषु ग्राहवत्यादिषु विभाषेत वदेद पर्वतेषु तु तुवरादीनां द्रहेषु उत्पलादीनाम् कर्मक्षेत्रेषु मागधादि तीथींदकमृदां नदीषु उदकोभयतटमृदा ग्रहणं वक्तव्यमित्यर्थः, 'जाव उत्तरकुरुमु जाव' यावत् उत्तरकुरुषु यावत् अत्र प्रथमं यावत् पदात् देवकुरुपरिग्रहः तथाच उत्तरकुरुषु देवकुरुषु च चित्रविचित्रगिरि यमकगिरि काञ्चनगिरि हृददे शकेषु यथासम्भवं वस्तुजातं ग्रह्णन्ति, द्वितीय यावत्पदात् पुष्करवरद्वीपार्द्धयोः भरतादिस्था-नेषु वस्तुग्रहो वाच्यः। ततो जम्बूद्धीपोऽपि तद्ग्रहस्तैव वाच्यः कियत्पर्यन्तमित्याह-'सुदंसणे-भदसालवणे' इत्यादि 'सुदंसणभदसालवणे सन्वतु अरे जाव सिद्धत्थएभ गिण्हंति' सुदर्शने पूर्वीर्द्धमेरी भद्रशालवने नन्दनवने सीमनसवने पण्डकवने च सव्यतुवरान गृह्णन्ति तथा तस्यैव को और उत्पर्व आदि को लिया इसी कुलपर्वतों में से, वृत्त वैतादवों में से एवं सर्व महाद्रहों में से 'सब्बवासेसु, संब्द चक्रवद्दिविजएसु, वक्स्वारपःवएसु, अंतरणईसु, विभासिङजा' समस्त भरतादि क्षेत्रों में से,समस्त चऋवर्ती विजयों में से, वक्षस्कार पर्वतों में से अन्तर निद्यों में से जलादिकों को लिया 'जाव उत्तरकुरुस जाव सुदंसणभद्दसालवणे सव्व तुअरे जाव सिद्धत्थए य गिण्हंति' यावत् उत्तरकुरु आदि क्षेत्रों में से थावत् पदग्राह्य देवकुरु में से, चित्र विचित्र गिरिमें से यमक गिरिमें से काश्चनगिरि में से एवं हृद दशकों में से यथा संभव

बीधां. पद्मद्रबंधी द्रबेहिंड अने ઉत्पत्नहि बीधां. अं कुत पर्वतमांथी, वृत्त वैतादियाः मांथी तेमक सर्व सक्ता समुद्रोमांथी 'सह्य वासेमु, सन्यवक्कविद्यविज्ञणमु वक्तार-पद्मवसु अंतरणईमु विभासिङज्ञा' समस्त अस्ताहि क्षेत्रेः मांथी, समस्त अक्षवती विकथे। मांथी वक्षस्तार पर्वतीमांथी अन्तर नहीं ओ। मांथी, कदाहिका दीधाः 'जाव उत्तरकुरमु जाव मुदं सणमहसालवणे सन्वतुअरे जाव सिद्धत्थण य गिण्हंति' यावत् उत्तर कुरू आहि क्षेत्रीमांथी यावत् पह आहा हेवकुरुमांथी, चित्र विचित्र जिरिमांथी, यमक जिरिमांथी, तेमक हि हशकामांथी यथा संसव वस्तुओ। दीधी. तथा दितीय यावत् पहथी पुष्करवर द्रीपा-धीना पूर्वापराद्धी कांगामां स्थित अस्ताहि स्थानामांथी यथा संसव वस्तुओ। दीधी. आ

वस्तुओं को लिया तथा द्वितीय यावत्पद से पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वापरार्द्ध भागों में स्थित भरतादि स्थानों में से यथा संभव वस्तुओं को लिया इसी तरह जम्बुद्वीपस्थ पूर्वार्द्ध मेरुमें स्थित भद्रशालवन में से नन्दनवन में से, सौमनसवन अपरार्दे अनेनैव क्रमेण वस्तुनातं गृह्णन्ति, ततो धातकीखण्ड जम्बृद्धीपगतस्य मेरोः भद्र-शालवने सर्व तुवरान् यावित्सदार्थकांश्र एक्रन्ति, 'एवं गंदणवणाओ सन्वतुअरे जाव सिद्धत्थए अ सरसंच गोसीसचंदणं दिव्वं च छमणोदामं गिण्हंति' एवम् उक्तरीत्या अस्यैव मेरोः नन्दनवनात् सर्वतुवरान् यावत् सिद्धार्थकांश्च सरसं च गोशीर्पचन्दनं दिव्यं च म्रुमनो दाम-प्रथितपुष्पाणि युक्तिन्ति 'एवं सोमणसपंडगवणाओं सञ्वतु अरे जाव सुमणसदामं दहरमञ्जय-छगंधेय गिण्हंति' एवं सीमनसवनात् पण्डकवनाच सर्वेतुरवरान् यावत् छमनोदाम दर्दरमळय-सुगन्धिकान् गन्धांश्व तत्र दर्दः मलयौ-चन्दनोत्यत्तिखानिभूतौ वर्वतौ तेन तात्स्थात् तद्व्य-पदेश इतिन्यायेत् तदुद्भववन्दनमपि दर्दरमलयशब्दाभ्यामभिधीयते तथाच दर्दरमलयनामक चन्द्रने तयोः सुगन्धः परमगन्धो यत्र तान् दर्दरमलयसुगन्धिकान् गन्धान् वासान् गृह्णन्ति में से और पण्डक वनमें से समस्त तुवरादि पदार्थों को लिया 'जाव सिद्धत्थए अ सरसंच गोसीसचंदणं दिव्वेच सुमणदामं गेण्हंति' याचत् सिद्धार्थकों सरस गीशीर्षचन्दन को और दिव्य पुष्पमालाओं को लिया 'एवं सोमणस पंडगव-णाओं अ सञ्बतुअरे जाव समणसदामं दहरमलय सुगंधे य गिण्हंति, २ त्ता-एगओं मिलंति २ त्ता जेणेव सामी तेणेव उवागच्छंति २ त्ता महत्यं जाव तित्थः यराभिसेअं उवहवेंति' इसी तरह धातकी खण्डस्थ मेरुके भद्रशालवन में से सर्व तुवर पदार्थी को यादत सिद्धार्थ को को लिया इसी तरह इसके नन्दनवन में से समस्त तुपर पदार्थोंको यावत सिद्धार्थकों को लिया सरसगोशीर्षचन्दन को लिया दिव्य सुमनो दामों को लिया इसी तरह सौमनसवन से पण्डकवन से सर्व तुवरों औषधिओं को पावत् सुमनी दामों को दर्दर एवं मलय सुग-निधत चन्दनों को लिया तालार्य यही है कि अडाई छीप एवं इसके बाहर के समुद्रों में से वहां के जल को पर्वतों में से तुवरादि सर्वपकार के औपधीय

प्रमाणे कम्लु हीयस्थ पूर्वार्द्ध मेरुमां स्थित लद्रशां वनमांथी नन्द्रन वनमांथी, सीमनस वनमांथी अने पंडि वनमांथी समस्त तुवराहि पहर्थी लीधां. 'जाव सिद्धत्थएं सरसंच गोसीसचंद्रणं दिन्दे च सुमजद्रामं गेण्हंति' यावत् सिद्धार्थं, सरस गेशीर्थं अन्हन अने हिन्य पुष्पमाणांको लीधां 'एवं सोमणसपंडगवणांको ल सन्वतुलरे जाव सुमणसद्ममं दहरं मलयसुगंधं य गिण्हंति, गिण्हित्ता एगओ निरुति मिल्तिता जेणेव सामी तेणेव खवागच्छंति उवागच्छिता महत्थं जाव तित्थयरामिसेलं उवहुवेंति' आ प्रमाणे क धातकी णंडस्थमेरुना लद्रश स वनमांथी. सर्वतुत्वर पहाथीने यावत् सिद्धार्थीने क्षीधां आ प्रमाणे क केना नन्हन वनमांथी समस्त तुत्वर पहाथीने यावत् सिद्धार्थीने क्षीधां सरस गेशीर्थं यन्हन लीधुं. हिन्य सुमनेहिमा लीधां, ला प्रमाणे सीमनस वनमांधी, पंडक्षनमांथी, सर्वं तुवरा औषधिकोने यावत् सुमनेहिमा हीधां. ला प्रमाणे सीमनस वनमांधी, पंडक्षनमांथी, सर्वं तुवरा औषधिकोने यावत् सुमनेहिमाने, हर्द्वर तेमक मक्षयक सुगं-धित यन्हन कीधां. तात्पर्थं आ प्रमाणे छे हे अद्युष्ट दीप तेमक कीनी अहारना ससु-

'गिण्हित्ता' गृहीत्वा 'एगओ मिलंति' इतस्ततो विप्रकीणी आसियोगिका देवा एकत्र मिलन्त 'मिलित्ता' मिलित्वा 'जेणेव सामी तेणेव उवागच्छंति' यत्रैव स्वामी अच्युतः, तत्रैव उपागच्छन्ति 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'महत्यं जाव तित्थयराभिसेअं उवहुवेतित्ति' महार्थ यावत् तीर्थकराभिषेकम् तीर्थकराभिषेकयोग्यं क्षीरोदकाद्यपस्करणम् उपस्थापयन्ति उपनयन्ति, अच्युतेन्द्रस्य समीपस्थितं कुर्वन्तीत्यर्थः अत्र याःत् पदात् महार्धे महार्धे विपुष्ठ-मिति पदत्रयी ग्राह्या एशमर्थस्तु पूर्वे द्रष्टव्यः इति ॥ स० ९॥

अथ अच्चुतेन्द्रो यत्कृतवान् तदाइ-'तएणं से अच्चुए' इत्यादि

प्रम-'तएणं से अच्चुए देविंदे दसिंहं सामाणिअसहस्तीहं तायत्तीसएहिं चउहिं लोगपालेहिं तिहिं परिसाहि सत्तिं अणिएहिं सत्तिं अणिएहिं सत्तिं अणिणहिं सत्तिं अणिआहिवईहिं चतालसाए आयरक्खदेवसाहस्सीहिं सिंहं सपिरवुढे तेहिं सामाणिएहिं विउव्विएहिं अ वरकमलपइट्ठाणेहिं सुरिभवरवारिपरिपुण्णेहिं चंदणकयच्चाएहिं आविद्धकठेगुणेहिं पउमु-पलपिहाणेहिं करयल सुकुमार परिगाहिएहिं अटुसहस्सेणं सोविण्णयाणं कलसाणं जाव अद्दसइस्सेणं भोमेजाणं जाव सव्वोदएहिं सव्वमिट्ट आहिं सव्वतुवरेहिं जाव सव्वोसहिसिद्धस्थएहिं सव्विद्धीए जाव रवेणं महया महया तित्थथराभिसेएणं अभिसिचइ तएणं सामिस्स महयामहथाअभिसेयिस बद्दमाणंसि इंदाईआ देवा छत्तचामरधूव कडुच्लुअ पुष्फगंध जाव हत्थगया हटतुटु जाव वज्रस्लपणी पुरओ चिट्टंति पंजलिउटा इति

पदार्थों को दहों में से उत्पलादिकों को कर्मक्षेत्रों में से मागधादि तीर्थों के जलको एवं मृत्तिका को एवं नदियों में से उनके उभयतटों की मिटीको लिया इस प्रकार से अभिषेक योग्य सब प्रकार की साधन सामग्री लेकर वे इधर उधर कैले हुए देव एक स्थान पर आकरके इकटे हो गये और मिलकर किर वे सबके सब जहां अपना स्वामी था वहां पर गये वहां जाकर उन्हों ने बह तीर्थकर के अभिष्कित योग्य लाई हुई समग्र सामग्री अपने स्वामी अच्युतेन्द्र की समक्ष रखदी।।१॥

દ્રોમાંથી ત્યાંનું પાણી, પર્વતામાંથી, તુવરાદિક સર્વ પ્રકારના ઔષધીય પદાર્થી, દ્રહા-માંથી ઉત્પલાદિકા, કર્મક્ષેત્રોમાંથી માગધાદિ તીર્થોનું પાણી તેમજ મૃત્તિકા તથા નદીઓ-માંથી તેમના ઉમય તટાની મૃત્તિકા આ પ્રમાણે બધાં પદાર્થી લીધાં. આ પ્રમાણે અભિષેક યાગ્ય સર્વ પકારની સાધન—સામગ્રી લઇને તેઓ આમ—તેમ વિખરાયેલા દેવા એક સ્થાન ઉપર આવીને એકત્ર થયા અને એકત્ર થઇને તેમણે તે તીર્થ કરના અભિષેક યાગ્ય એકત્ર કરેલી બધી સાયગ્રી પાતાના સ્વામી અચ્યુતેન્દ્રની સામે મૂકી દીધીના હયા

पवं विजयाणुसारेण जाव अप्पेगइयादेवा आसिअ संमजिओविलित-सित्तसुइसम्मट्ररत्थंतरावणश्रीहिअं करेंति जाव गंधवट्टिमूअंति अप्पे-गइया हिरण्णवासं वासंति एवं सुवण्णरयणवहर आभरणपत्तपुष्फफल-षीअमल्लगंधवण्य जाव चुण्णवासं वासंति, अप्पेगइया हिरण्णविहिं भाइंति एवं जाव चुण्णविहिं भाइंति अप्पेवाइया चडिवहं वडजं वाएंति तं जहा-ततं १ विततं २ घणं ३ झुसिरं ४ अप्पेगइया चउिवहं गेयं गायंति तं जहा-उविखत्तं १ पायत्तं २ मंद्।गईथं ३ रोईआवसाणं ४ अप्पेगइया चउठिवहं णद्यं णच्यंति तं जहा-अंचिअं १ दुअं २ आरभडं ३ भसोलं ४ अप्पेगइया चउविवहं अभिणयं अभिणिति तं जहा-दिट्टं-तिअं १ पडिसुएइयं २ सामण्गोवणिवाइयं ३ लोगमज्झावसाणियं, अणेगबत्तीसइविहं दिव्यं णद्दविहिं उवदंसेति अप्पेगइया उप्पयं निवयं निवयउप्पयं संकुचिअपसारिअं जात्र भंतसंभंतणामं दिव्वं फट्टविहिं उव-दंसंतीति, अप्पेगइया तंडवेंति अप्पेगइया लातित, अप्पेगइया पीणेंति, एवं वुकारेंति, अप्फोडेंति, वग्गंति सीहणायं णदंति अप्पेगइया सटवाई करेंति अप्पेगइणा हयहेतिअं एवं हत्थि एलुगुलाइअं रहघणघणाइअं अप्पेगइया तिणिणवि, अप्पेगइया उच्छोलंति अप्पेगइया पच्छोलंति, अप्पेगइया तिवइं छिंदंति पायद्दरयं करेंति, भूमिचवेडे द्लयंति, अप्पे-गइया महया सदेगं रावेति एवं संजोगा विभासियव्या अप्येगइया हकारेंति एवं पुकारेंति वकारेंति ओवयंति परिवयंति जलंति तवंति पय-वंति गज्जंति विज्ञआयंति वासिंति अप्पेगइया देवुक्रलिअं करेंति एवं देवकहकहगं करेंति, अप्पेगइया दुहु दुहुगं करेंति अप्पेगइया विकिय भृयाइं रूवाइं विउव्यिता पणरचंति एवमाइ विभासेजा जहा विजयस्स जाव सब्दओ समंता आधावेंति परिधावेंति ॥ सू० १० ॥

छाया-ततः खछ सोऽच्छतो देवेन्द्रः दशभिः सामानिकसहस्तैः त्रयस्त्रिशता त्रायस्त्रिशकैः चतुर्भिछोकपालैः तिस्रभिः पर्षद्भिः सप्तभिरनीकैः सप्तभिरनीकाधिपतिभिः चरवारिशता आत्मरक्षकदेवसहस्तैः सार्द्धं संपरिश्वतः ते स्वामाधिकैः वैक्रियेश्व वर

कमञ्जातिष्ठानैः सुरभिवरवारिप्रतिपूर्णैः चन्द्रनकृतचर्चितैः आविद्धकण्ठगुणैः पद्मोत्पल्लपिधानैः **कर**तलसुकुमार परिगृहीतैः, अष्ट सहस्रेण सौवर्णिकानां कळशानां यावत् अष्टसह स्रेण भौमेयानां यावत् सर्वोदकैः सर्वमृतिकाभिः सर्वतुवरैर्यावत् सर्वोपिधिसिद्धार्थकैः सर्वद्धर्चा यावत् रवेण महता महता तीर्थकराभिषेकेण अभिपिश्चति, ततः खल्ल महता महता आभिषेके वर्तमाने इन्द्रदिकाः देवाः छत्रचामर धृपकडुच्छुकपुष्पगन्ध यावत् हस्तगताः हृष्टतुष्ट, यावत् वज्रश्रूलपाणयः पुरतस्तिष्ठन्ति प्राञ्जलिकृता इत्यर्थः । एवं विजयानुसारेण यावत् अप्येकक-देवाः आसिक्त संमार्जितोपलिप्तसिक शुचीसम्बष्ट रथ्याऽन्तराऽऽपणवीथिकं कुईन्ति यावद् गन्धवर्त्तिभूतमिति, अप्येककाः हिरण्यवर्षे वर्षन्ति, एवं सुवर्णरत्नवज्राऽऽभरणपत्रपुष्पबीज-माल्यगन्धवर्षा यावत चूर्णवर्षे वर्षन्ति, अप्येककाः, हिरण्यविधि भाजयन्ति एवं यावत् चूर्ण-वीधिं भाजयन्ति, अप्येककाः चतुर्विधं वाद्यं वादयन्ति, तद्यथा ततम् १ विततम् २ घनम् ३ सुषिरम् ४ अप्येके, चतुर्विधं गेयं गायन्ति तद्यथा उत्क्षिप्तम् १ पादात्तम् २ मन्दायम् ३ रोचितावसानम् ४ अध्येककाः चतुर्विधं नाटयं नृत्यन्ति तद्यथा-अश्चितम् १ द्रुतम् २ आरभटम् ३ भसोलम् ४ इति अप्येककाः चतुर्विधम् अभिनयम् अभिनयन्ति तद्यथा दाष्टी-न्तिकम् १ प्रतिश्रुतिकम् २ सामान्यतो विनिपातिकम् ३ लोकमध्यावसानिकम् ४ अप्येके द्वः त्रिंशद्विधं दिवृयं नाटचविधिम्रपदर्शयन्ति, अप्येककाः उत्पातनिपातम् निपातौत्पातम् संकुचित प्रसारितम् यावत् भ्रान्तसंभ्रान्तनाम ६ दिव्यं नाटयविधिम्रपदर्शयन्तीति । अप्येककाः विनयन्ति एवं वृत्कारयन्ति आस्फोटयन्ति वलन्ति सिंहानादं नदन्ति अप्येककाः सर्वाणि कुर्वन्ति अप्येक काः इयहेषितं एवं गुलगुलायितं रथधनचन्नायितम् अप्येककाः त्रीण्यपि अप्ये-ककाः 'उच्छोलंति' अग्रतो मुखे चपेटां दद्ति, पच्छोलंति' पृष्टतो मुखे चपेटां ददंति अप्ये-ककाः त्रिपदीं छिन्दन्ति पाददर्दरकं कुर्वन्ति भूमिचपेटां ददति अप्येककाः महता महता शब्देन रावयन्ति एवं संयोगाः विभाषितच्याः अप्येकका 'हकारयन्ति' एवं पूत्कुर्वन्ति वकारयन्ति अवपतन्ति उत्पतन्ति परिपतन्ति ज्वलन्ति तपन्ति प्रतपन्ति गर्जन्ति विद्युतं कुर्वन्ति वर्पन्ति अप्येककाः देवोत्कलिकां कुर्वन्ति एवं देवकह कहकं कुर्वन्ति, अप्येककाः दुहु दुहुकं कुर्वन्ति, भप्येककाः विकृतभूतादि रूपाणि विकुर्वित्वा प्रतृत्यन्ति एवमादि विभाषेत यथा विजयस्य यावत् सर्वतः समन्तात् ईपद्धावन्ति परिधावन्ति इति ॥ स्ट० १०॥

टीका-'तएणं से अच्चुए देविंदे' ततः आभियोगिकदेवैः आनीताभिषेकसामस्याः, उपस्थित्यनन्तरम् खलु सोऽच्युतो देवेन्द्रः तीर्थकरमभिषिश्चतीत्यग्रे सम्बन्धः कैः सार्द्ध

'तए ण से अच्चुए देविंदे दसहिं सामाणिय'-इत्यादि टीकार्थ-इसके बाद-जब अभिषेक योग्य सब सामग्री उपस्थित हो चुकी-

'तहणं से अच्चुए देविंदे दसहिं सामाणिय' इत्यादि ટીકાર્થ−ત્યાર છાદ જ્યારે અભિષેક ચે,ચ્યુ મધી સામગ્રી ઉપસ્થિત થઇ ગઇ ત્યા**ર** संपरिवृतः सन् अभिषिश्वति तत्राह-'दसहिं सामाणि म साहस्तीहिं' दशिमः सामानिक-सहस्नैः दशसहस्रसंख्यक सामानिकैः देवैः अपिच 'तायत्तीसाए तायत्तीसएहिं' त्रयिक्षिता नायस्त्रिः देविक्षेपैः अपिच 'चउि लोगालेहिं' चतुर्भिलेकिषालेः देविक्षेपैः 'तिहिं परिसाहिं' तिस्माः पर्यद्भिः समाभिः 'सत्तिहें अणिषहिं' सप्पिस्नीकैः 'सत्तिहं अणिशहिः चर्डहिं' सप्तिमरनीकिधिपपितिभिः 'चत्तालीसाए आयरक्षदेवसाहस्सीहिं' चरवारिशता आत्म-रक्षकदेवसहस्नैः चरवारिशत् सहस्रसंख्याकैरात्मरक्षकदेवैरित्वर्थः सार्द्ध संपरिवृतः वेष्टितः कैः अभिषिश्चति तत्राह-'तेहिं सामाविष्टिं विज्ञविवषहिअ वरकमलप्रहाणेहिं' तैः तद्मतदेव-जनिक्षेषेः स्वामाविकैः स्वभावसिद्धः वैक्षियेश्व विकुवेणाक्षत्त्रया निष्पादितेश्व वरकमलप्रति-ष्ठानैः वरकमले श्रेष्ठकमले प्रतिष्ठानं स्थितिर्थेषां ते तथाभूतास्तैः, एताक्षपरानि कल्याविश्वषणानि तथा 'सुरिवरवारिपरिपुण्णेहिं' सुरिभयरवारि प्रतिपूर्णैः सुनिध्यक्षक्रत्रपरिष्टिं चन्दम्कृतचित्ते कृतं चित्तं विलेपनं पेषां ते तथा भूतास्तैः तथा 'चरणक्रयचच्चापहिं' चन्दम्कृतचित्तेः कृतं चित्तं विलेपनं पेषां ते तथा भूतास्तैः तथा 'आविद्धकंटे गुणेहिं' आविद्धकण्टेगुणैः आविद्धः आवद्धः दण्टेगुणैः रज्जुभिः येषां ते तथाभूतास्तैः तथा 'पउमुप्पलपिहाणेहिं' पद्योत्पलपिधानैः पद्योस्त्रपरिगिदिए हिं' करतलसुकुमार-पिधानम् अच्छादनम् पेषां ते तथाभूतास्तैः तथा 'कर्यलसुकुमार-परिगिदिष्टिं' करतलसुकुमार-

तब-'से अच्चुए देविदें देवराया' उस देवेन्द्र देवराज अच्युतने 'दसिंह सामाणि अ साहस्सींहिं' अपने १० हजार सामानिक देवों के साथ 'ताअत्तीसाए-ताय-सीसएहिं' ३३ त्रायिखंद्रा देवों के साथ 'चडिंह लोगणलेहिं' चारलोक पालों के साथ 'तिहिं परिसाहिं' तीनपरिषदाओं के साथ 'सत्तिहें अणिएहिं' सात अनीकों के साथ 'सत्तिहंं अणीयाहिवईहिं' सात अनीकाधिपतियों के साथ 'चत्तालीसाए आयरक्लदेवसाहस्सीहिं' ४० आत्मरक्षकदेवों के 'सिंहिं' साथ 'संपरियुद्धे' घिरे हुए होकर 'तेहिं साभाविएहिं विडिन्वएहिं अ वरकमलपइद्धा-णेहिं' उन स्वाभाविक और विकुर्वित तथा लाकरके सुन्दर कमलों के उपर रखे गये हुए 'सुरभिवारिपडियुण्णेहिं' सुगंधित सुन्दर निर्मल जलसे भरे हुए, 'चंदणकयचच्चाएहिं' चन्दन से चर्चित हुए, 'आविद्धकंठेगुणेहिं' माली से कंठमें

'से अच्चुए देविंदे देवराया' ते हेवेन्द्र हेवराळ अव्धुते 'द्सिहं सामाणिक साहस्सीहं' पेताना १० ढलर सामानिक हेवेानी साथे 'तायत्तीसाप तायत्तीसएहिं' ३३ त्रायिक्षंश हेवेनी साथे 'चहिं लोगलेलेहिं' यार क्षेष्ठभाक्षेत्रनी साथे, 'तिहिं परिसाहिं' त्रणुपरिषहा क्षेमी साथे तथा 'सत्तिहं अणिएहिं सात अनीक्षेत्र साथे 'सत्तिहं अणीयाहिवईहिं' सात अनीक्षिपितिक्षेत्रनी साथे 'चत्तालीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीहिं' ४० आत्मरक्षक हेवेनी 'सिद्धं' साथे 'संपरिवुढे' आहत धर्मने 'तेहिं सामाविएहिं विडव्विएहिं अ वरकमलपइहुाणेहिं' ते स्वाकाविक्ष अने विक्षित तेमळ क्षावीने सुन्हर क्षेमणेती इपर मुखामां आवेक्षा 'सुरमित्रारिपिडपुण्णेहिं' सुगं- धित,सुंदर निर्मण कण्यी पूरित, 'चंदणक्रयचच्चाएहिं' सन्हनथी सर्थित थरेक्षा, 'आविद्ध

परिगृहीतैः, करतलेतु सुकुमारैः परिगृहीताः स्थापिताः ये तथाभूतास्तैः, प्वंभूतैरनेकसहस्र-संख्यकैः कलशैरितिगम्यम् । तानेव कलशान् विभागतो दर्शयति 'अट्टसहस्सेणं सोवण्णि आणं कलसाणं जाव अहसहस्यं भोमेजाणं जाव' अष्टसहस्रेण अष्टोत्तरसहस्रेण सौवर्णिकानां सुवर्ण-मयानां कल्यानां घटानां यावत् अत्र प्रथमयावत्पदात् अन्टसइस्रेण अष्टोत्तरसइस्रेण रीप्या-नाम् अष्टसहस्रेण मणिमयानाय् अष्टसहस्रेण सुत्रर्णः प्यमयानाम् अष्टसहस्रेण रूप्यमणिमया-नाम् अष्टसङ्ग्रेय सुवर्णरूष्यमणिमयानामिति अष्टसङ्ग्रेण भौमेयानां तथाच सर्वसंख्यायाः सम्मेलनेन चतुःषटचाधिकैः अष्टभिः सहस्रैः तत् तत् विशेषणविशिष्टकलशानामित्यर्थः द्वितीययावत्पदात् भृङ्गारादिपरिग्रहः 'सन्त्रोदएहि सन्त्रबहिशाहि सन्वत्वरहि जाव सन्त्रो-सिंह सिद्धत्य एहिं सर्वेदिकैः सर्वपृत्तिकाभिः सर्वेतुवरैः यावत् सर्वोपिसिद्धार्थकैः अत्र-यावस्पदात् पुष्पादिपरिग्रहः 'सन्दिङ्रीए जाव रवेणं' सर्वेद्धर्चा सर्वेया विभवादिसंपदा यावद्रवेण शब्देन यत्र यावच्छब्देन 'सब्बजुईएँ' सर्वेष्टुःया इत्यारभ्य 'संखपणवभेरि श्रह्णरिखरमुहि हुडुक बंधे हुए 'यउमुप्पलपिहाणेईि' पद्म और उत्पलरूप ढक्कन से ढके हुए 'करयल-सुकुमार परिगाहिएहिं' ऐसे सुन्दर सुकुमार करतलों में घारण किये गये 'अहसहरसेणं सोवण्णिआणं करुसाणं जाव अहसहरसेणं भोमेउजाणं' १००८ सुवर्ण के कलकों से यावत १००८ मिटि के कलकों से यावत्वद गृहीत १००८ चांदी के कलकों से, १००८ मिण के कलकों से १००८ सुवर्णरूप निर्मित कलशों से १००८ खुवर्णमणि निर्मित कलशों से १००८ रूप्यमणि निर्मित कलशों से, १००८ सुवर्णरूप्य निर्मित कलकों से कुल मिलकर हुए ८०६४ कलकों से 'जाव सब्बोदएहिं सब्बमिटिशाहिं सब्बतुअरेहिं जाव सब्बोसहिसिद्धत्थएहिं सन्विद्वीए जाद रवेणं महया २ तित्थयराभिसेएणं अभिसिनंति' यादत् भृहारकादिकों से एवं समस्त तीर्थीं से लाये गये जल से समस्त तुवरपदार्थीं से, यावत् समस्त पुष्पों से सर्वेषिधियों से एवं समस्त सर्षपों से अपनी समस्त ऋदि

कंठे गुणेहिं' भाणानी ठंडमां ज्यालद्ध थयेला, 'पडमुप्पलिपहाणेहिं' पद्म अने ઉत्पत्त इप ढांडल्थी आव्छादित थयेला, 'करयल सुकुपार परिगाहिएहिं' तेमक सुन्दर सुकुमार हरतेलामां धारल्य हरवामां आवेला, 'अह सहस्तेणं सोविण्णिश्राणं कलसाणं जाव अह सहरसेलं मोमेज्जाणं' १००८ सुवर्णुना ठणशार्थी यापत् १००८ माटीना ठणशार्थी यापत् पढ गृहीत १००८ यांहीना ठणशार्थी, १००८ मिल्रिना ठणशार्थी, १००८ सुवर्णु, दुण्यनिर्मित ठणशार्थी, १००८ सुवर्णु, मिल्रिनिर्मित ठणशार्थी १००८ ३ण्यमिलिर्मित ठणशार्थी आम अधा यधने ८०६४ ठणशार्थी 'जाव सन्वोदएहिं सन्व महिआहिं सन्व तुओहिं जाव सन्वोसिहिसिहत्थएहिं सन्बिह्हीए जाव रवेणं महया २ तित्थयरामिसेएणं अमिलिंन्ति' यापत् भुंगारडाहिडीधी तेमक समस्त तीर्थिभार्थी लाववामां आवेला कणथी, समस्त तुवर पहार्थिश, यावत् समस्त पुर्णाथी, सर्वीषधिकाथी तेमक समस्त सर्पेथी, समस्त तुवर पहार्थिश, यावत् समस्त पुर्णाथी, सर्वीषधिकाथी तेमक समस्त सर्पेथी,

मुरजमुइंग दुंदृहि निग्घोसनाइएणं' शंखपणवभेरिझल्लरिखरमुखि हुइक मुरनमुदङ्गनिघोषनादितेन इत्यन्तं सर्वं ग्राह्मम्' 'महया महया तित्थयराभिसेएणं अभिसिचंति' महता महता
तीर्थकराभिषेकेण येन अभिषेकेण तीर्थकरा आभिष्च्यन्ते तेन अभिषेकेण इत्यर्थः
अभिषेकेण इत्यस्य च अभिषेकोपयोगिना क्षीरोदादिजलेन इत्यर्थः अभिषिश्चति
अभिषेकं करोति सोऽच्युतः । सम्प्रति अभिषेककारिण इन्द्रात् अपरे इन्द्रादयो यत्
कृतवन्तस्तदाह—'तए णं' इत्यादि 'तए णं सामिस्स महया महया अभिसेअंसि वद्दमाणंसि इंदाइया देवा' ततः खलु स्वामिनः अच्युतेन्द्रस्य महता महता अतिशयेन महित अभिषेके वर्तमाने अपरे इन्द्रादिका देवा 'छत्तचामरकलस धृव कडुच्छुअ पुष्फगंघ जाव इत्थगया'
छत्रचामरकलशघूपकडुच्छुक पुष्पगन्ध यावत् इस्तगनाः अर्थस्तु सुगमएव अत्र यावत्पदात्
माल्यच्णांदिपरिग्रहः 'हहतुद्र जाव वज्जस्लपाणी पुरओ चिहंति पंत्रलिखाः इति हृष्टतुष्ट
यावत् वज्रश्रूलपाणयः। उपलक्षणमेतत् तेन अन्य शक्षपाणयोऽपि ग्राह्माः पुरतः प्राञ्जलिकृताः सन्तस्तिष्ठिन्ति। अयं भावः 'केचन छत्रयारिणः केचन चामरोत्कोपकाः केचन कलश्चारिणः

एवं घुत्यादि वैभव से युक्त होकर सुन्दरध्वनिवाले गाजेशाजे की ध्वनिपूर्वक तिर्थिकर प्रसु का अभिषेक किया 'तएणं सामिस्स महयार अभिसेयंसि वहमाणंसि इंदाइआ देवा छक्तचामरधूवक डुच्छुअ पुष्फगन्ध जाव हत्थग्या' जिस समय अरे अच्युतेन्द्र बढे भारी ठाटबाट से प्रसु का अभिषेककर रहा था उस समय और जो इन्द्रादिक देव थे वे अपने अपने हाथों में कोई छन्न लिये हुए था कोई चाम लिये हुए था, कोई धूपक डुच्छुक -धूपका कडाह -लिये हुए था, कोई पुष्प लिं हुए था, कोई गंध द्रव्य लिये हुए था यावत कोई माला लिये हुए था एवं को चूणे लिये हुए था 'हट्टतुट्ट जाव वन्जस्लपाणी पुरओ चिटंति पंजलिउडा इति' समके सब इन्द्रादिकदेव हर्ष और संतोष से विभोर बनकर हाथ जोडे हुए प्रके समक्ष खडे हुए थे इनमें कितनेक द्राल लिये हुए थे, कितनेक बज्ज लिये हु थे और कितनेक और भी दूसरे हथियार लिये हुए थे यहां जो यह द्रार

पेतानी समस्तऋदि तेमक घृति वगेरे वैक्षवधी युक्त थर्डने मंगण वादोना ध्विन साथै तीर्थ कर प्रक्षने। व्यक्षिषेक क्यें। 'तएणं सामिस्स मह्या र अभिसेयंसि बहुमाणंसि इंदाइआ देवा छत्तवामरध्यकडुच्छुअ पुष्फगन्य जाव हत्थगया' के वणते अध्युतेन कारे कार्ठ साथे प्रक्षने। अक्षिके करी रह्यो हतो, ते वणते भीकारे धन्द्राहिक देवे हता, तेओ। ओ पेतिपेताना हाथै।मां डै।ईओ छत्र वर्ध राण्युं हतुं, डे।ईओ यामर का राण्ये। हता, डे।ईओ धूप कटाह वर्ध राण्ये। हती, डे।ईओ पुष्पा वर्ध राण्यां हतां. डे।ई रं श्रि देवे हता, डे।ईओ धूप कटाह वर्ध राण्ये। हती, डे।ईओ माणाओ वर्ध राण्यां हतां. डे।ईरं यूर्ध वर्ध राण्युं हतुं. 'हरू-तुरु जाव वर्ड्यस्त्रणाणी पुरओ विट्ठंति पंजलिउडाइति' रं णधा धन्द्राहिक हेवे। हर्ष अने संत्रांष्यी विकार थहने हाथ कोडीने प्रक्षनी सामे अव हता. अमां बी डेटकाक वर्ष वर्ध ने अका हतां स्वां करी हिंदा धन्ते हिंदा होते हिंदा हिंदा हतां हिंदा होते। हिंदा होते हिंदा होते हिंदा है हिंदा हिंदा

इत्यादि सेवा-धर्नसत्यापनार्थं न ह वैरिनिग्रहार्थं, तत्र वैरिणामभावात् केचन वज्रपाणयः केचनश्रूष्ठपाणयः प्राञ्जिलकृताः सन्तः सन्तिष्ठनते इति, अत्र यावत्पदात् चित्तानन्दिताः प्रीतिमनसः परमसौमनस्यिताः हर्पत्रश्रविसर्पद् हृदयाः, इति ग्राह्यम् 'एवं विजयानुसारेण जाव' एवम् उक्तप्रकारेण अभिषेकस्त्रत्रं विजयदेव्य देवाभिषेकस्त्रत्रानुसारेण ज्ञादव्यम् जीवाभिगमत् अत्र यावत्पदात् 'अष्पेगइया पंडगवणं णच्चोअगं णाइमद्वियं पविरलपत्कुसियं रथरेणु-विणासणं दिव्वं सुरहिगंघोदकवारं वासंति अष्पेगइया निहयर्यं णदृरयं मदृरयं पसंतरयं उत्रसंतरयं करेंति' इति ग्राह्यम् अष्येककाः केचन देवाः पण्डकवनम्—अत्र नैरन्तर्यं द्वितीया निरन्तरं पण्डकवने इत्यर्थः नात्युदकं नातिमृत्तिकं यथास्यात् तथा प्रविरल प्रस्पृष्टम् प्रकर्षेण

घारण करने की बात कही गई है वह केवल सेवा धर्मको प्रकट करने के लिये ही कही गई है वैरिजन के निग्रह के निमित्त नहीं क्यों कि वहां उनका कोई वैरी ही नहीं था यहां यावत्पद से 'चित्तानंदिताः प्रीतिमनसः परमसौमनस्यिताः हर्ष-वश्विसपद्हद्याः' इन पदों का ग्रहण हुआ है 'एवं विजयानुसारेण जाव अप्येग्ह्या देवा आसिअ संमित्तिओं विलिससित्तस्तुत्सम्मट्ट रत्थंतरावणवीहिअं करेंति जाव गंधविद्यभुअंति' जीवाभिगम सूत्र में जिस प्रकार विजयदेव के अभिषेक प्रकरण में अभिषेक सूत्र कहा गया है, उसी तरह से यहां पर भी अभिषेक सूत्र जानना चाहिये यहां यावत्पद से 'अप्पेगइया, पंडगवणं णच्चो अगं, णाइमहिअं, पविरलपण्डसियं रयरेणुविणासणं, दिव्वं सुरिहगंधोदकवासं वासंति, अप्पेगइया निहयरथं णहरयं, भट्टरधं, पसंतरयं, उवसंतरयं करेंति' इस पाठका संग्रह हुआ है इसकी व्याख्या पहिले जैसी ही है वाक्य योजना इस प्रकार से है अपिशव यहां स्वीकारोक्ति के अर्थ में है 'एगइया' शब्द का अर्थ

 यावता रेणवः स्थिगिता भरन्ति तावन्मात्रेण उत्कर्षेणेतिभावः उक्तप्रकारेण विरलानि सान्तराणि घनभावे कर्रमसम्भवात् भव्यानि प्रकर्षथन्ति स्वर्शनानि मन्द्रपर्शनसम्भवे रेणुस्थ-गनासम्भवात् यस्मिन् वर्षे तत् प्रविरलप्रसृष्टम् अत एव र नोरेणुविनःश्वनम् रजसां श्वास्थान् रेणुपुद्गजानां रेणुनां च स्थूलतम् तत् पुद्गलानां विनाशनम् दिव्यम् अतिमनोहरम् सुग्मि-गन्धोदकवर्षे वर्षन्ति, अप्येककाः केचन देवाः पण्डकवनम् निहतरजः निहतम् भूष्उत्थाना-भावेन मन्दीकृतं रजो यत्र तत्त्थाभूतम्,

ननु तत्र निहतत्वं रजसः, क्षणमात्रम् उत्थानाऽभावेनापि संमग्नति अत्थाह नष्टरजः नष्टं सर्वथा अदृश्यीभूतं रजो यत्र तत्तवाभूतम् अस्यैव आत्यन्तिकता रूय।पनार्थभाह भ्रष्ट-रजः प्रशान्तरजः, उपशान्तरजः क्र्वन्तीति, अथ प्रस्तुतस्त्रमनुश्रियते 'अप्पेग्इया देवा आसिअ संमज्जिओवलित्तसुइसम्मट्टरत्यंतरावणवीहिअं करेंति' अप्येककाः केचन देवाः आसि-क्तसंपार्जितोपलिप्तष् तथा सिकानि ज्लेन अतएव शुचीनि सम्बृष्टानि कचवरापनयनेन रथ्यान्तराणि आपणवीथय इव आपणवीथयो रथ्याविशेषाः, यस्मिन् तराधा कुर्वन्ति, अय-'कितनेक देव' ऐसा है कितनेक देवों ने उस पाण्डकवन में सुर्भि गंधीदक की वर्षा की इस तरह की वर्षा से-वहां अतिकादव की चड नहीं हो पाया किन्त उडती हुई घूल जम गई सुरिभगंघोदककी बर्षा भी जो हुई-वह ऐसी हुई की जिसमें पानीकी बूंदे बहुत धीमे धीमे एवं छोटी २ दूर २ पर छंटेकाबके रूपमें पड़ती थी अतिवृष्टि और अनावृष्टि के वीच की रजरेणु को जांत करनेवाली और जिससे कीचड न होने पावे प्रत्युन उडती हुइ मिटी जम जावे ऐसी दिव्य वर्षा वहां कितनेक देवों ने की कितनेक देवों ने वहां ऐसा काम किया कि जिल से बह पाण्डुकवन निहितरजवाला हो गया, मध्रजवाला हो गया, अख्रजवाला हो गया तथा-कितनेक देवों ने उस पाण्डकवग को जलके छीटे देकर आसिक्त किया, कितनेक देवों ने उसे बुहारी से माफ किया-किसीने उसे गोनयादिसे लीपकर चिकना किया इससे वहांकी गलियां सिक्त होने से एवं कुडा करकट के दूर होजाने के कारण बिलक्कल साफ सुधरी होगई स्थान स्थान से आनीत

નહિ પણ ઉડની માટી જામી ગઇ. સુરિલ-ગંધાદકની જે વર્ષા થઇ તે આ પમ શે લઇ કે જેમાં પાણીની ખુંદા અહુજ ધીમે-પીમે તેમજ નાની-નાની દ્વર-દ્વર પડતી હતી. અતિવૃષ્ટિ અને અનાવૃષ્ટિના વચ્ચેની. રજ-રેશુને શાંત કરનારો અને જેનાથી કાદવ થાય નહિ, પરંતુ ઉડતી માટી જામી જાય એવી દિવ્ય વર્ષા ત્યાં કેટલાક દેવાએ કરી. કેટલાક દેવાએ ત્યાં એવું કામ કર્યું કે જેથી તે પાંડુક વન નિહત રજવાળું થઇ ગયું તેમજ કેટલાક દેવાએ તે પાંડુક વનને પાણીના છાંટા નાખીને આસિક્ત કર્યું. કેટલાક દેવાએ તે વનને સાવર-શ્રીથી સાફ કર્યું, કાઇ દેવે તે વનને ગામચાદિયી લિસ કરીને સુચિક્કશ લનાની દીધું. એથી ત્યાંની શેરીએમ સિક્ત થઈ જવાથી, કચરા સાફ થઇ જવાથી એકદમ સ્વચ્છ થઇ ગઇ. સ્થાન-સ્થાનેથી લાવેલ ચન્દનાદિ વસ્તુઓના ત્યાં હગલા ખકડી દીધા. એથી તે હુદ્

मर्थः तत्र स्थानस्थानानीत चन्दनानि वस्तुनि मार्गान्तरेषु तथा एकत्रीकृतानि सन्ति यथा इदृश्रेणिप्रतिरूपं द्वति 'जाव गन्धविद्वभूश्रंति' यावत् गन्धविर्वभूतिमिति, अत्र यावत्पदात् 'पंडगवर्ण मंचाइपंचकलिअं करेंति 'अप्पेगइया णाणाविहगरागउसियउग्रयपडागमंडिअं करेंति अप्पेगइया गोसीसचंदण दद्दिण पंचंगुलितलं करेंति, अप्पेगइया उवचिअचंदण-कलसं अप्पेगइया चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागं करेंति, अप्पेगइया आसत्तोसत्त-विउलवहवरधारिअ मल्लदामकलावं करेंति अप्पेगइया पंचवण्णसरससुरहिमुक्कपुंजीवयारकलिअं करेंति, अप्पेगइया कालागुरुपवर कुंदुरुकतुरुकडण्झंतध्वमधमधंत गंधुद्धआमिरामं सुगंध-वरगंधियं' इति ग्राह्मम् अप्येककाः देवाः पण्डकवनं मञ्जातिमञ्जकलितं कुर्वन्ति अप्येककाः पण्डकवनं नानाविद्दरागोच्छितध्यज्ञपताकमण्डितं कुर्वन्ति अप्येककाः देवाः गोशीर्षचन्दन-दर्दरदत्त पञ्चाङ्गुलितलं कुर्वन्ति अप्येककाः देवाः उपचित 'स्थापित' चन्दनकल्यां कुर्वन्ति अप्येककाः देवाः चन्दनघटसुकृत 'सुरचित' तोरणप्रतिद्वारदेशभासम् कुर्वन्ति अप्येककाः आसकोत्सिक विपुलवृत्तव्याघारित 'प्रकम्बित' माल्यदामकलापं कुर्वन्दि, अध्येककाः, पश्च-वर्णसरससुरभिष्ठक पुञ्जोपचारकलितं कुर्वन्ति अप्येककाः देवाः कालसुरुप्रवरकुन्दुरुष्कतुरुष्क दश्चमानधूरमधमधंन्तगन्धोद्धृताभिरामं सुगन्धवरगन्धितं कुर्वन्ति । पुनः प्रकारान्तरेण देव-कृत्यमाह 'अप्पेगइया हिरण्णवासं वासंति' अप्पेककाः हिरण्यवर्षं वर्षन्ति हिरण्यस्य रूप्यस्य चन्दनादि वस्तुओं की वहां राशि लगादी गई इससे वे हृदश्रेणि के जैसे हो गई यहां यावत्यद से 'पंडगवणं मंचाइ मंचकलिअं करॅति, अप्पेगइया णाणाविहराग क्रसिअज्झयपडान संडिअं करेंति, अप्पेगइया गोसीस चंदणदहरदिष्णपंचं गुलितलं करेंति, अप्पेगइषाउवचिअ चंदणकलसं, अप्पेगइषा चंदणघडसुकय तोरणपडिदुवारदेसभागं करेंति, अप्पेगइया आसतोसत्त बिपुल बहवण्घारिअ मल्लदामकलापं करेंति, अप्पेगइया पंचवण्ण सरससुरहि मुक्क पुंजीवयार-क्रिअं करेंति, अप्पेगऱ्या कालागुरुपवर कुंद्रक्क तुरुक्क डङ्गंत धृव मध-मधंत गंधुद्धयाभिरामं सुगंधवरगंधिअं' इस पाठका ग्रहण हुआ है इस पाठका अर्थ स्पष्ट है 'गंधविट भूअंति' इस तरह वह पाण्डुकवन एक सुगंधित गुटिका के

श्रेषि केवी थर्ध गर्ध. अहीं यावत् पद्धी 'पंडगवणं मंचाइमंचकलिअंकरें ति, अप्पेगइया णाणा-विहरागऊसिअः झयपडागमंडिअं करेंति, अप्पेगइया गोसीस वंदणद्दरदिण्ण पंचंगुलितलं करेंति, अप्पेगइया उत्रचिअचंदणकलम्, अप्पेग्इया चंदणघडमुक्रयसोरणपडिदुवारदेसभागं करें ति, अप्पेगइया आसत्तोसित्तविपुलवहुवग्धारिअमल्लदामकलापं करेंति, अप्पेगइया पंच वण्ण सरससुरहि मुक्कपुंजीवयार क्रिअं कोरेंति, अप्पेगइया कालागुरुपवर छंदुरु क तुरुक उन्झंत धूव मधमघंत गधुद्धुयाभिरामं सुर्गंधवरगंधिअं' આ પાઠ સંગૃહીત થયા છે. આ પાઠના અર્થ સ્પેષ્ટ જ છે. 'गंधवट्टिमूअंति' આ પ્રસાથે તે પાંડુકવન એક સુગંધિત ગુઢિકા જેવું થઇ ગયું. 'अप्पेगइया वर्षे वृष्टिं वर्षन्ति कुर्वेन्तीत्पर्यः सुवण्णरयणग्रहर आभरणयत्तपुष्फफलवीजमल्लगंभवण्ण जाव चुण्णवासं वासति' एवम् उक्तप्रकारेण सर्वत्र योजना कार्या तथात्र अप्येककाः केचन देवाः सुवर्णरत्नवज्ञाभरणपत्रपुष्पफलबीजमाल्यगन्धवर्ण यावत् चूर्णवर्षे वर्षन्ति तत्र सुवर्णम् प्रसिद्धम् रत्नानि कर्केतनादीनि वज्राणि हीरकाः, आभरणानि हारादीनि पत्राणि दमनकादीनि प्रव्पाणि फक्रानि च प्रसिद्धानि बीजानि सिद्धार्थादीनि माल्यानि ग्रथितपुष्पाणि गन्धाः वासाः वर्णः रक्तवर्णात्मक हिङ्गुछादिः यावत्पदात् वस्त्रं ग्राह्मम् चृर्गानि सुग्न्धद्रव्यक्षोदाः एतेषां वर्षे दृष्टिं वर्षन्ति कुर्वन्तीत्यर्थः 'अप्पेगइया हिरण्णविहिं भाइति । तथा अप्येककाः देवा हिरण्यविधि हिरण्यरूपं मङ्गळप्रकारं भाजयन्ति शेषदेवेभ्यो ददतीत्यर्थः 'एवं जाव चुण्णविहिं भाइंति' एवम् उक्तप्रकारेण एककाः केचिदेवाः यावच्चूर्णविधि भानयन्ति यावत्पदात् सुवर्णविधि रत्नविधिम् इत्यादि पदानि ब्राह्मानि अथ संगीतविधिरूपमुत्सवमाइ-'अप्पेगइया चउन्विहं वज्जं' इत्यादि 'भप्पेगइया चउन्विहं वर्जं वाएंति' अप्येककाः देवाश्रद्वर्विधं वाद्यं वादयन्ति 'तं जहां तद्या 'ततं १ विततं २ घगं ३ इसिरं ४' ततम् १ विततम् २ घतम् ३ श्रुविरम् ४ जैमा हो गया 'अप्पेगइया हिरण्णवासं वासंति' कितनेक देवों ने वहां पर हिरण्य-रूप्यकी वर्षाकी 'एवं सुवण्णरयणवहर आभरणपत्त पुष्क फल बीअ मल्ल गंधवण्ण जाव चुण्णवासं वासंति' कितनेक देवों ने वहां पर सुवर्ण की, रत्नों की, वज़की आभरणों की, पत्रों की पुच्चें की, फलों की, बीजों की-सिद्धा-थौदिकों की, माल्यों की गंबवासों की, एवं हिंगुलक आदि वर्णों की वर्णा की यहां यावत् राब्द से 'वस्त्र' का ग्रहण हुआ है चूर्णवास से यहां सुगंधित द्रव्यों का चूर्ण लिया गया है 'अप्पेगइया हिरण्णविहि, भाइंति' कितनेक देवों ने वहां पर अन्य देवों के लिये हिरण्यविधिरूप मंगलप्रकार दिया 'एवं जाब खुण्णविधिं भाइंति' इसी तरह यावत् कितनेक देवों ने चूर्णविधिरूप मंगलप्रकार दूसरे देवों को दिया यहां यावत्पद से 'सुवर्णविधि, रत्त्रविधि, आभरणविधि' आदि-पदों का ग्रहण हुआ है। 'अप्येगइया चडिवहं वडजं वाएंति तं जहा ततं १

हरिण्णवासं वासंति' डेटलाड हेवे। शे त्यां हिरण्य-युण्यनी वर्षा डरी. 'एवं सुण्णरयणवहरआभरणपत्तपुण्डकलं अमल्लगंधवण्ण जाव चुण्णवासं वासंति' हैटलाड हेवे। शे त्यां
सर्वाण्यनी, रत्नानी, वल्लोनी, आलर्श्युनी, पत्रोनी, पुण्पानी, हेणानी, श्रीनी, भिल्लार्थाहिडानी, माद्यानी, गांधवासानी, तेमल हिं शुलड वजेरे वर्णानी वर्षा डरी अहीं यावत्
शण्टथी 'वस्तु' अहण् थयुं छे. यूर्ण्वासयी अहीं सुगंधित द्रव्याना यूर्ण्नुं अहण् थयुं छे 'अत्येगइण हिरण्णविहिं माइंति' डेटलाड हेवे। शे त्यां अन्य हेवे। मारे हिरण्य विधि उप मंगण प्रशरा आत्या 'एवं जाव चुण्णविधिं माइंति' आ प्रमाणे यावत् हेटलाड हेवे। शे यूर्ण् विधि ३५ मंगण प्रकारा शील हेवे।ने आव्या अहीं यावत् पट्यी 'सुवर्णविधिं रत्नविधिं, आभरणविधिं' वगेरे पहे शृहीत थ्या छे. 'अत्येगद्या चविद्दं वज्जं वाएंति, 'तं अहा' ततं १, विततं २, घणं ३, हुसिरं ४' हैटलाड हेवे। शे तत्र ततम् दीणादिकम् १ विततम् पटहादिकम् २ घनम् तालक्षभृतिकम् ३ शुविरं वंशादिकम् ४ 'अप्पेगइया चडिव्वहं गेअं गायंति' अप्येककाः देवाश्वतुर्विधं गेयं गायन्ति 'तं जहा' तद्यथा 'उनिखत्तं १ पायतं २ मंदाइयं ३ रोइआवसाणं' ४ उत्क्षिप्तम् १ पादात्तम् २ मन्दायम् ३ रोचितावसानम्' ४ तत्र उत्क्षिप्तम् प्रथमतः समारम्यमाणम् १ पादात्तम् पादबद्धं वृत्तादि चतुर्भागरूपपादवद्धमिति आवः २ मन्दायम् मध्यमागे मूर्च्छनादि गुणोपेततया मन्दं मन्दं घोलनात्मकम् ३, रीचितावसानम् रोचितम् , यथोचितलक्षणोपेततया भावित सत्यापितमिति यावत् आवसानं यस्य तत् तथा भूतम् ४ 'अप्पेगइया चउव्विहं षष्टं णच्चंति' अप्येककाः

खिततं २, घणं ३, झुसिरं ४' कितनेक देवों ने वहां पर चार प्रकार के-तत-बितत घन और शुषिर इन चार प्रकार के वाजों को वजाया-वीणा-दिक वाद्य तत हैं, पटह आदिकवाच वितत हैं तालवगैरह का देना घनवाच है और वांसुरी आदि का बजाना द्युषिरवाद्य है 'अप्पेगइया चडिवहं गेअं गायंति' कितनेक हिंदेवों ने वहां पर चार प्रकार का गाना गाया 'तं जहा' गेय के चार प्रकार ये हें-'डिक्स्वत्तं १ पायतं २ मंदाइयं ३ रोइयावसाणं ४' उत्क्षिस-जो प्रथमतः प्रारम्भ किया जाता है वह 'पायत्तं'-बृत्तादि के चतुर्थभागरूप पाद से जो बद्ध होता है वह मन्दाय-मध्यभाग में जो मूर्च्छनादिशुणों से युक्त होने के कारण मन्द घोलनारूप होता है वह, एवं रोचितावसान-जिसका अवसान यथोचित लक्षणों से युक्त होता है वह-इस प्रकार से यह चार प्रकार का गेय है 'अध्येगइया चडिवहं णहं णच्चंति' कितनेक देवों ने चार प्रकार का नाटय-नर्त्तन किया 'तं जहा' नाट्य के चार प्रकार ये है-'अंचितं दुअं आरभडं,

ત્યાં ચાર પ્રકારના-તત વિતત, ઘન, અને શુષિર આ ચાર પ્રકારના વાઘો વળાડયાં. વીણા વગેરે વાદો તત છે. પટક વગેરે વાદો વિતત છે. તાલ વગેરે આપવું તે ઘનવાદ કહેવાય છે અને અંસરી વગેરે વગઃડવું શુવિર વાધ કંડુવાય છે. 'अलोगइया चडविव**हं गे**अं गायंति' કેટલાક દેવા ત્યાં ચાર પ્રકારના ગીતા ગાવા લાગ્યાં 'तं जहा' તે ચાર પ્રકારના ગીતા આ પ્રમાણે छे-'डिक्सिनं, पायतं, मन्याईयं, रोईआवसाणं' ઉत्थित १, पादान्त २, भंदाय ३, अने રાચિતાવસાન ૪, ઉત્ક્ષિપ્ત–જે પ્રથમતઃ પ્રારંભ કરવામાં આવે છે તે, પાયાત્તં-વૃત્તાદિકના ચતુર્થ ભાગ રૂપ પાદથી જે અદ્ધ હાય છે તે, મન્દાય-મધ્ય ભાગમાં જે મૂચ્છનાદિ ગુણાથી સુકત હાવા ખદલ મનદ દ્યાલના રૂપ હાય છે તે, તેમજ રાચિતાવસાન-જેનું અવસાન યથાચિત લક્ષણાથી યુક્ત હાવ છે તે. આ પ્રમાણે આ ચાર પ્રકારા ગેયના છે. 'લખે-गइया चडिवहं णट्टं णच्चंति' डैटलांड देवे। ये यार प्रकारनुं नाट्य-नर्तन क्युं. 'तं जहां' નાટકે.ના તે ચાર પ્રકારા આ પ્રમાણે છે-'अंचितं, दुअं, आरमडं, भसोलं' અંચિત ૧,

देवाः, चतुर्विधं नाटचं नृत्यन्ति 'तं जहा' तद्यथा 'अंचियं १ दुअं २, आरमडं ३ भसोलं ४' अश्चितम् १ द्रुतम् २ आरभटम् ३ भसोलम् ४ तत्र अश्चितम् एकप्रकारकनृत्यविशेष-स्तम् १ द्रुतम् त्वरा इस्तवाददि चेष्टाकरणम् २, भारभटम् चृत्यप्रभेदम् ३, भसोलम् एक-प्रकारक नाटचिविधम् ४ तृत्यन्ति उक्त प्रकारकं नर्तनं कुर्वन्ति इत्यर्थः 'अप्पेगइया चउ-व्विहं अभिणयं अभिणेति' अप्येककादेवाश्चतुर्विधमभिनयम् अभिनयन्ति 'तं जहा' तद्यथा 'दिहंतिअं १ पाडिस्सुइयं २ सामण्योवणिवाइयं ३ लोगमज्झावसाणियं ४' दार्षान्तिकम् १ प्रतिश्वतिकम् २ सामान्यतो विनिपातिकम् ३ लोकमध्यावसानिकम् ४ एते नाटचविधयोऽ-भिनयविषयथ भरतादि सङ्गीतशास्त्रक्षेत्रयोऽवसेयाः 'अष्पेगह्या बत्तीसविहं दिव्यं नदृविहिं उपदंसेंति' अप्येककाः देवाः द्वात्रिंशद्विधम् अष्टमाङ्गलिकचादिकं दिव्यं नाटधविधिम् उप-दर्शयन्ति, स च नाटचविधिः येन क्रमेण भगवतो वर्द्धमानस्त्रामिनः समीपे पुरतः सूर्याम-भसोलं' अंचित १ हुत २ आरभट ३ और भसोल ४ अज्ञित यह एक प्रकार का नत्य विद्योष है, इस्तपदादिकों की चेष्टा त्वरा शीधता-से करना यह द्रुत है आरभट यह एक प्रकार का नृत्य विद्योष है भसोल भी एक प्रकार की नाटय-विधि है 'अप्पेगइया चडव्चिहं अभिणयं अभिगेंति' कितनेक देवों ने चार प्रकार का अभिनय किया-'तं जहा' वह चार प्रकार का अभिनय इस प्रकार से है-'दिइंतियं पाडिस्सुइअं सामण्णोवणिवाइअं लोगमज्झावसाणिअं' दाष्टौन्तिक, प्रातिश्रुतिक, सामान्यतो विनिधातिक एवं लोकमध्यावसानिक ये नाटचविधियां एवं अभिनयविधियां भरतादिसंगीत शास्त्रज्ञों से जानलेनी चाहिये 'अप्पेगइया बसीसइविहं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसे ति' कितनेक देवों ने बत्तीस प्रकार की दिवय नाटयविधि को दिखलाया जिस कम से भगवान वर्द्ध-मान स्वामी के समक्ष सूर्याभदेव ने नाटयविधि प्रदर्शित की है जो कि राज

दूत २, आरलट ३, अने लिया ४. अंथित आ औह प्रहारनं नृत्य विशेष छे. हिरत पाहाहिंद्दें नी बेंग्टा त्वरा-शिव्रताथी हरवी आ दूत छे. आरलट आ ओह प्रहारनं नृत्य विशेष छे. लसोस पण् औह प्रहारनी नाट्यविधि छे. 'अप्पेगइया चडिवहं अभिगयं अभिगंति' हैटलाह हैवे अ बारे प्रहारने। अलिनय हथें। 'तं जहा' ते बार प्रहारने। अलिनय आ प्रमाणे छे. 'दिहंतियं पाहिस्सुइअं सामण्णोवणिवाइअं होगमञ्झावसाणिअं' हार्ग्टीन्तह, प्राति-श्रुतिह, सामान्यते। विनिपातिह तेमक लेडि मध्यावसानिह, आ नाट्य विधियो। अने अलिनय विधियो। विशे लरताहि संगीत शास्त्रतोना अंथामांथी लाण्डोतेष्ठं कोर्ध अं 'अप्पेगइया बत्तीसइविहं दिव्यं णहुविहिं उवदंसेंति' हेटलाह हेवे। अ ३२ प्रहारनी हिन्य नाट्य विधियो। प्रहर्शन हर्शं के हमथी लगवान वर्षमान स्वामी समक्ष सूर्याल हेवे नाट्य विधि प्रहर्शित हरी छे, है

देवेन भावितो राजप्रश्नोपाङ्गे दर्शितस्तेन क्रमेण उपदर्श्यते तैः देवैरिति बोध्यम्, तत्र प्रारिपिसतमहानाटचरूपमाङ्गरूपवरत् निर्विध्नसिद्ध्यथमादौ मङ्गरूपनाटचम् तथाहि—स्वस्तिक १
श्रीवत्स २ नन्द्या ३ वर्तः र्द्धमानक ४ भद्रासन ५ कल्छ ६ मत्स्य ७ दर्गण ८ रूपाष्ट्रमाङ्गलिकचानां भिक्तः विच्छित्तिः तथा चित्रद्ध् भालेखनम् तत्तदाकाराविभावना यत्र तत्त्रथाभूतम्
उपद्शियन्तीत्यर्थः, अयमर्थः यथाहि चित्रकर्मणि सर्वे जगद्धतिनो भावा चित्रयित्वा दश्यन्ते
तथा ते भावाः अभिनयविषयीकृत्य नाटचेऽपि बोध्याः तत्र अभिनयः, चतुर्भिराङ्गिकवाचनिकसालिकाहार्यभेदैः समुदितिरसमुदितैः, वा अभिनेतव्यवस्तुभावप्रकटनम् प्रस्तुते च
आङ्गिकेन नाटचकर्तृणां तत्तन्मङ्गलाकारतयाध्यस्थानम् । इस्तादिना तत्तदाकारदर्शनं वा
प्रद्नीय उपाङ्ग में प्रकट की गई है उसी कम से हम उसे यहां प्रकट करते हैं—

इस नाटधिविधि में सब से प्रथम प्रारंभ करनेके लिये इष्ट महानाटधरूप मंगल वस्तु की निर्विद्यतारूप से सिद्धि के निमित्त माइल्यनाट्य होता है यह मांगल्यनाट्य स्वस्तिक श्री वत्स, नन्द्यावर्त, वर्द्यमानक, भद्रासन, कलश, मत्स्य, और द्र्पण, इन अप्ट मांगलिक वस्तुओं की रचनारूप आविभावना से युक्त होता है अर्थात् जैसा आकार इन पदार्थों का होता है इसी प्रकार का आकार इस नाटय-विधि में प्रदर्शित किया जाता है जिस प्रकार चित्रमें अनेक भावों को चित्रित कर प्रकट किया जाता है इसी प्रकार से इन पूर्वेक्त पदार्थों के आकारों को नाट्यविधि में अपने दारीर को उस रूपमें बनाने रूप अभिनय द्वारा प्रकट किया जाता है। आङ्गिक, वाचनिक, सान्त्रिक और आहार्य ये चार भेद चाहे सम्रदित हो चाहे असम्रदित हो उनके द्वारा अभिनेतव्य वस्तुका जो भाव प्रकटित किया जाता है जैसे आङ्गिक भेद द्वारा नाट्यकर्ताओं का उस उस

જેના વિશે રાજપ્રશ્નીય ઉપાંગમાં સ્પષ્ટતા કરવામાં આવી છે, તેજ ક્રમ પ્રમાણે અમે અહીં પ્રકટ કરીશું. આ નાટ્ય વિધિમાં સર્જ પ્રયપ્ત પ્રારંભ કરવા માટે ઇન્ટ મહાનાટ્ય રૂપ મંગળ વસ્તુની નિર્વિધ્નતા રૂપથી સિદ્ધિ નિમિત્તે મંગલ્ય નાટ્ય હોય છે, આ મંગલ્ય નાટ્ય સ્વસ્તિક, શ્રી વત્સ, નન્દ્યાવર્ત, વર્દ્ધ ખાનક, ભદ્રાસન, કળશ, મતસ્ય અને દર્પણ એ અન્દ માંગલિક વસ્તુ ખાની રચન રૂપ આવિર્ભાવનાથી યુક્ત હેત્ય છે. એટલે કે જેવા આકાર એ પદાર્થીના હાય છે, તેવા જ આકાર આ નાટ્ય વિધિમાં પ્રદર્શિત કરવામાં આવે છે. જે પ્રમાણે ચિત્રમાં અનેક ભાવેત્ને ચિત્રિત કરીને પ્રગટ કરવામાં આવે છે તે પ્રમાણે જ એ પૂર્વોક્ત પદાર્થીના આકારોને નાટ્ય વિધિમાં પોતાના શરીરને તે રૂપમાં અતાવવા રૂપ અભિનય પ્રગટ કરવામાં આવે છે. આંગિક, વાચનિક, સાત્વિક અને આહાર્ય એ ચારે ભેદો સમુદિત હોય કે અસુમુદિત હોય એમના વડે અભિનેતવ્ય વસ્તુના જે ભાવ પ્રગટ કરવામાં આવે છે જેમકે આંગિક ભેદ વડે નાટચકર્તાઓને તત્ તત્ મંગલા- કાર રૂપથી અવસ્થિત થવું, હસ્તાિક હારા તત્ તત્ તત્ સાલ આકારો બતાવવા, વાચિક ભેદો વડે

वाचिनिकेन प्रवन्धादौ तत्तन् मङ्गछोचारणम् समासदां जनानां मनसि आसक्तिपूर्वकं तत्त-स्मङ्गछस्वरूपाविभीवनं मङ्गछनाटचमिति प्रथमम् १।

अथ द्वितीयं नाटचम् आवर्त्तप्रत्यावर्त्तश्रेणि प्रश्रेणि स्वस्तिक पुष्यम णवर्द्धमानकमत्स्याण्डक मकराण्डक जारमार पुष्पाविल पद्मपत्रसागरतरङ्गवासन्तीलता पद्मलता भक्तिचित्रम् तत्र आवर्तः अमद् अमरिकादानैर्नर्तनम् प्रत्यावर्तः तद्विपरीतक्रमेण अमरिकादानैर्नर्ननम् श्रेणिप्रश्रेणिस्व-स्तिकाः, श्रेण्या पंक्त्या स्वस्तिकाः श्रेणिस्वस्तिकाः ते चैव पङ्क्तिगता अरि स्युरित्यत आइ-प्रश्रेणि स्वस्तिका इति अनुवृत्ताः श्रेणिस्वस्तिकाः, प्रश्रेणिस्वस्तिकाः, अत्र प्रशब्दो ऽनुवृत्तार्थे यथा प्रशिष्यः प्रपुत्र इत्यादौ अयमर्थः, मुख्यस्यैकस्य स्वस्तिकस्य प्रतिशाखं गता अन्वे स्वस्तिका इति, एतेन प्रथमनाटचगतस्वस्तिक नाटचात् भेदो दर्शितः, तद्थिनयेन नर्तनम् तथा पुष्य-माणाः पुष्टीभवनम् तद्भिनयेन तृत्यम् यथाहि पुष्टो गच्छन् जल्पन् श्वसिति बहु बहु प्रस्विद्यति दारुद्दस्तप्रायौ स्वहस्तौ अतिमेदस्विनौ चालयन् २ समासदां जनानाग्रुपदासपात्रं भवति, तथेव अभिनयो यत्र नाटचे तत्पुष्यमाणनाटचम्, अनेन अर्थेन प्रथमनाटचगतवर्द्ध-माननाटचाद् भेदो दर्शितः, तथा मत्स्याण्डकम् मत्स्यानामण्डकं मत्स्याण्डकम्' मत्स्याहि अण्डाज्जायनते तदाकारकरणेन यन्नर्तनं तन्मतस्याण्डकनाटचम् एवं मकराण्डकमपि नहि यथाकामविकुर्विणां देवानां किञ्चिदसाध्यं नाटचे नचानिमनेतव्यं येन तदिमनयो न सम्भवे-दिति मत्स्यकाण्डपाठेतु मत्स्यकाण्डं मत्स्यवृन्दंम् तद्धि सह जातीयैः सह मिलितमेव जलाशये प्रचलति एकत्र सञ्चरणशीलबात् तथा यत्र नटोऽन्यनटैः सह सङ्गतो रङ्गभूमौ प्रविशति ततो वा निर्भच्छति तन्मत्स्यकाण्डनाटम्-एवं मकरकाण्डपाठे मकरपृन्दं वाच्यम् तद्धि यथावि-क्रवरूपवत्वेन अतीव द्रष्ट्रगां जनानां भयानकं भवति तथैव तश्राटचम् तदाकारदर्शनेन भया-नकं स्यात् तद्भयानकरसप्रधानं मकरकाण्डं नाम नाटकम् तथा जार नाटकम् जारः उपपतिः स च यथा स्वेन सार्द्ध रममाणाभिः पराभि अपि स्त्रोभिः अतिरहस्येव रक्ष्यते तद्वद् यत्र थूलवस्तु निरोधनात्तत्तदिन्द्रजाङाविभीवनेन सभासदां मनसि अन्यदेव अवतार्यते तज्जार-नीमकं नाटचम् तथा मारनाटकम्- मारः, कामस्तदुद्दीपकं नाटकं मारनाटकम् श्रृहाररस-प्रधानमित्यर्थः, तथा पुष्पाविल नाटचं यत्र कुसुमापूर्णवंश्वसलाकादि दर्शनेन अभिनयस्तत्पुर मङ्गलाकाररूप से अवस्थित होना हस्तादि द्वारा तत्तत् आकारों का दिखाना, वाचिक भेद द्वारा प्रवन्धादि में उन २ माङ्गलिक शब्दों का उच्चारण करना एवं सभासदों के मनमें आसक्तिपूर्वक उस उस मंगल स्वरूप का आविभीव करना यह मंगल नाट्य है आवर्त, प्रत्यावर्त श्रेणि स्वतिक प्रश्नेणि, स्वस्तिक, पुष्यमाण, वर्द्धमानक, मत्स्याण्डक, मकराण्डक जार मार पुष्पावलि, पद्मपत्र, પ્રખંધાદિમાં તત્ તત્ માંગલિક શખ્દેનું ઉચ્ચારણ કરવું તેમજ સભાસદાના મનમાં આસફિત પૂર્વક તે માંગલ સ્વરૂપને પ્રકટિત કરવું, આ માંગળ નાટ્ય છે. આવર્ત્ત, પ્રત્યાવતી, શ્રેશિ, સ્વસ્તિક, પ્રશ્નેશિ, સ્વાંસ્તક, પુષ્યમાણ, વહિમાનક, મત્સ્યાંડક, મકરાંડક, જાર માર

ष्पायिल नाटकम् तथा पद्मपत्रं इमयति नापि त्रोटयित न वक्रीकरोति तत्पद्मपत्रोपलक्षितं नाटचम् पद्मपत्रं इमयति नापि त्रोटयित न वक्रीकरोति तत्पद्मपत्रोपलक्षितं नाटचम् पद्मपत्रं इमयति नापि त्रोटयित न वक्रीकरोति तत्पद्मपत्रोपलक्षितं नाटचम् पद्मपत्राटकम् तथा सागरतरद्वाभिनयं नाम नाटकम् चत्र वर्णनीयवस्तुनौ वचनः चातुर्यनाटचैः सागरतरद्वाः अभिनीयन्ते, अथवा यत्र 'तक तक्ष झें झें किटना किटता कु कु' इत्याद्यस्तालोद्यहनार्थकवर्णाः, बद्द्योऽस्खलद् गत्या त्रोचगन्ते तत्सागरतरङ्गनाम नाटकम्, एवं वसन्तादिक्रतुवर्णने वासन्तीलता पद्मलता वर्णनाभिनयं नाटकम् नन्वेवंसित अभिनेत्व्यवस्त्नामानन्त्येन नाटचानामि भानन्त्यत्रसङ्गस्तेन द्वात्रिक्षत्रसंख्या स्विरोध उच्यते एगं च स्त्रोक्ता संख्या उपलक्षणाच अन्येऽपि तत्तदभिनयकरणपूर्वकं नाटचभेदाः ज्ञातव्याः एवं सर्व नाटचेष्वि ज्ञेषम् इति द्वितीयम् ।

अथ तृतीयं नाटचप्-ईहृष्गऋषभतुरगनरमकरविद्गव्यालिक्षरहरू धरभचमरकुञ्जर्वन ळता पद्यळतामकिचित्रध् तत्र-ईहायुगाः बुकाः ऋपभाः तुरगाः नराः मकराश्र प्रसिद्धा एवं विद्याः पक्षिणः व्यालाः सर्पाः किन्नराः प्रसिद्धाः रुखः मृगविशेषः सर्भाः अष्टापदाः जन्तुविशेषाः चमराः मृगविशेषा कुझरः हिन्तनः वनळताः वती वृक्षविशेषस्तस्य छता पद्म-छता तामां या मिकः विचित्रितः, तया चित्रम् आछेखनम् तत्तराकाराविभीवना यत्र तत्त्वा भूतं नाटचिमिति तृतीयम् ३ । अथ चतुर्थम्-एकतथक द्विधातश्रक्तेकदश्रक्रवाल द्विधातश्र क्रशाल चक्राई चक्रवाला भिन्यात्मकम् । तत्र एकतश्रकं नाम नटालास् एकस्यां दिशि धनुराकारश्रेण्या नर्त्तनम् अनेन श्रेणिनाटचाद्भेदो दर्शितः, एवं द्विधातश्क्रम् द्वयोः परस्परा मिम्रखदिशोः धनुराकारश्रेण्या नर्नेतम् तथा एकत्रश्रकवालम् एकस्यां दिशि नटानां मण्डला-कारेण नर्तन्म् एवम् द्विधातश्रक्षकाशलम् द्वयोः परम्परान्धिःबदिकोर्नटानां मण्डलाकारेण सागरतरङ्ग, वासन्तीलता, और पशकता इनके जैसी रचना के अनुसार अभि-नय करने से द्वितीयनाटय १५ भेदवाला है तृ-ीयनाटक ईहाउम, ऋषभ तुरम, नर, मकर, बिह्म, व्याल, किन्नर, रूप, सरभ, चमर, कुझर, बनलता, पद्मलता, इनके जेसी रचना के अनुसार अभिनय करने से अनेक प्रकार का है। चतुर्थ-नाट्य एकतोचक विधातोचक, एकतश्रकवाल, विधातश्रकवाल, और अर्धत-अक्षवाल के भेद से ५ प्रकार का है एकतोचक्रवाटक में नर्तक जन एक दिशामें धनुष्य के आकार की श्रेणिमें रहकर नर्तन करते हैं दिधातो चक्रनाटक में आमने

યુષ્પાવિલ. પદ્મપત્ર, સાગર તરંગ, વાસંતીલતા અને પદ્મલતા. એમના જેવી રચના મુજબ અભિનય કરવાથી દિતીય નાટ્ય ૧૫ ભેદવાળું છે. તૃતીય નાટક ઇહામૃત્ર, ઋષભ, તુરગ નર, મકર, વિહ્ય, વ્યાલ, કિન્નર, કરુ, સરભ, ચમર, કુંજર, વનલતા, પદ્મલતા, એમની જેવી રચના મુજબ અભિનય કરવાથી અનેક પ્રકારનું છે. ચતુર્થ નાટ્ય એકતા–ચક્ર, દિધાતાચક્ર, એકતશ્રકવાલ દિધાશ્રકવાલ અને અર્ધતશ્રકવાલના ભેદથી પ પ્રકારનું છે. એકતો ચક્ર નાટકમાં નર્તકા એક દિશામાં ધનુષના આકારની શ્રેણીમાં રહીને નર્તન

नर्तनम् तथा चक्राई बक्रवालम् चक्रस्य रथाङ्गस्याद्धं तद्दृपं यचक्रवालं मण्डलं तदाकारेण नर्तः नम् अर्द्रमण्डलाकारेणेत्यर्थः तदिभिवयं नाम नाटकम्

नटानां नर्तने संस्थाविशेष प्रधानम् नाम नाटकम् ४ चतुर्थम् ।

अथ पश्चमम्-चंन्द्राविष्ठप्रविभक्तिस्यांविष्ठ प्रविभक्ति वल्यताराहंसैकमुक्ताकनकरत्ना-विष्ठप्रविभवत्यभिनयात्मकम् आविष्ठिविभक्तिनामकम् तत्र चन्द्राणामाविष्ठः श्रेणिस्तस्याः प्रविभक्तिः विच्छित्तिः रचनाविशेषः, तदभिनयात्मकम् तथा सूर्याविष्ठप्रविभवत्यभिनयत्मकम् तथा वल्रयाविष्ठ प्रविभवत्याभिनयात्मकम् एवं नारादिरत्नानतेषु पदेषु आवल्यादि शब्दो योजनीयः अथमर्थः पङ्क्तिस्थितानां रजतस्थालहस्तानां भ्रमरीपरायणानां नटानां नाटचम् एवं वल्रयहस्तानां नटानां वल्रयनाटचम् अनयैव रीत्या तत्स द्रश्वस्तुदर्शनेन तत्तद्भिनयकरणं तत्तन्नामकं नाटयं विश्वेयम् एतच आवलिकावद्भित्याविष्ठका प्रविभक्ति नामकं नाटचम् ॥५॥

अथ पष्टम्-चन्द्रस्योद्गमनप्रविभक्ति कृतम् उद्गमनप्रविभक्तिनामकं नाटचम् तत्र सूर्ययाः रुद्गमनम् उदयः तत्प्रविभक्तिः रचनाविशेषः तद्भिनयगर्भम् यथा उदये सूर्यचन्द्रयोरुणं मण्डलं प्राच्यां चारुणः, प्रकाशस्तथा यशामिनीयते तदुद्गमनप्रविभक्ति—नाटचम् । ६॥

अथ सप्तमम्-चन्द्रसूर्यागमनप्रविभक्ति नाटकम् तत्र चन्द्रस्य स्वविमानस्य आगमनम् आकाः

सामने धनुष की आकार की श्रिणिमें रहकर नर्तन करते हैं एकतश्चकवाल में एक दिशा नटजन मण्डलाकार में होकर नर्तन करते हैं द्विधातश्वकवाल में पर-स्पर में आमने सामने दिशामें मंडलाकार में होकर नटजन नर्तन करते हैं। चकार्धचक्रवाल नाटय में चक्र के पहिंचे के आकार में विभक्त होकर नर्तकजन नर्तन करते हैं।

पांचवां नाटक-चन्द्राविल प्रविभक्ति, सूर्यावित्रिप्रविभक्ति, वलयावित्रिपिनिभक्ति, तारावित्रिविभक्ति, हंसाविल्यविभक्ति, एकावित्रिविभक्ति, मुक्तावली-प्रविभक्ति, ताराविलप्रविभक्ति, हंसाविलप्रविभक्ति, एकावित्रिविभक्ति, मेद से अनेक प्रकार का प्रविभक्ति, कनकाविलप्रविभक्ति, रत्नाविलप्रविभक्ति के भेद से अनेक प्रकार का है छड़ा नाटक चन्द्र सूर्योद्गनप्रविभक्ति नामका है ए वां मनप्रविभक्ति नामका है ए वां

કરે છે, દ્વિધાતા ચર્ક નાટકમાં સામસામા ધનુષાકાર શ્રેણીમાં રહીને નર્તન કરે છે. એકત-શ્રિક્ષાલમાં એક દિશા તરફ નટજન મંડળાકારમાં થઈને નર્તન કરે છે દ્વિધાતશ્રકવાલમાં પરસ્પરમાં સામ-સામેની દિશામાં મંડલાકારમાં થઇને નરજના નર્તન કરે છે. ચકાર્ધ ચક્રવાલ નાટ્યમાં ચક્રના પૈડા મુજબ આકારમાં વિભક્ત થઈ કે નર્તાકજના નાચે છે. પંચમ નાટક ચન્દ્રાવિલ પ્રવિભક્તિ. સૂર્યાવિલ પ્રવિભક્તિ, વર્લયાવિલ પ્રવિભક્તિ, તારા-વિલ પ્રવિભક્તિ, હંસાવિલપ્રવિભક્તિ, એકાવિલ પ્રવિભક્તિ, સુક્તાવિલ પ્રવિભક્તિ કનકા-વિલ પ્રવિભક્તિ રત્નાવિલ પ્રવિભક્તિના ભેડથી અનેક પ્રકારતું છે. ષચ્ઠ નાટક ચન્દ્ર સૂર્યોદ્રામન-પ્રવિગક્તિ નામક છે સમય નાટક ચન્દ્ર-સૂર્યાયમન પ્રવિભક્તિ નામક છે. અષ્દ્રમ નાટક ચન્દ્ર-સૂર્યાવરણ પ્રવિભક્તિ નામક છે. નવમ ચન્દ્ર સૂર્યાસ્તમયન પ્રવિભક્તિ शादवतरणम् तस्य प्रविभिक्तः रचना यत्र नाटचेऽभिनयेन दर्शनम् तत् चन्द्रागमनप्रविभक्ति नाम नाटकम् एवं द्वर्ट्यागमनप्रविभक्ति नामकं नाटकं विज्ञेयम् ॥७॥

अथ अष्टमम्--चन्द्रस्यांवरणप्रविभक्ति युक्तम् आवरणप्रविभक्ति नाम नाटकम् यथाहि चन्द्रो घनवछादिना आद्रियते तथाऽभिनयद्र्शनम् चन्द्रावरणप्रविभक्ति नाटकम् एवं स्यांवरण-प्रविभक्त्यपि नाटकं विज्ञेयम् अथ नवमम्-चन्द्रस्यांस्तमयनप्रविभक्तियुक्तम् अस्तमयनप्रविभक्तिम् नाटकम् यत्र सर्वतः प्रभातकालिक सन्ध्यारागप्रसरणतमः प्रसरणकुमुद्संको चादिना चन्द्रास्तमयनमभिनीयते तचन्द्रास्तमयन एवं स्यांस्तमयनप्रविभक्तयपि अत्र, अयं विशेषः सायंकालिकसन्ध्यारागप्रसरणतमः प्रसरणकमलसंको चादिना स्यांस्तमयनमभिनीयते तत्स्-रांस्तमयन प्रविभक्ति नाम नाटकम् ॥९॥

अथ दशमम् -चन्द्रसूर्यनागयक्षभूतराक्षसगन्धर्व महोरगमण्डलप्रविभक्तियुक्तम् मण्डल-प्रविभक्तिनाम नाटकम् तथा बहुनां चन्द्राणां मण्डलाकारेण चन्द्रवालरूपेण निद्शनं चन्द्र-मण्डलप्रविभक्ति एवं बहुनां सूर्यनागयक्ष भूतराक्षसगन्धर्वमहोरगाणां मण्डलाकारेण अभिनयनं वाच्यम् अनेन चन्द्रमण्डल सूर्यमण्डलयोश्रन्द्रावलि सूर्यावलि नाटचतो भेदो दर्शितस्तयोरा-वलिका प्रतिष्टत्वात् ॥१०॥

अधैका दशम्-ऋषभसिंदलिलतहयगजिवलिसितमत्तहयगजिवलिसिताभिनयरूपं द्रुत-विलम्बितं-नाम नाटयम् तत्र ऋषभसिंदौ मसिद्धौ तयोलेलितं सलिलगितः, तथा हयगजियौ-विलसितं मन्यरगितः, एतेन विलम्बितगितरुक्ता-उत्तरत्र मत्तपदविशेषणेन द्रुतगतेविश्वय-माणत्वात् तथा मत्तदयगजयोर्विलसितं द्रुतगितः, तदभिनयरूपं गितः प्रधानं द्रुतविलम्बितं नाम् नाटकम् ॥११॥

अथ द्वादशम्-शकटोद्धि सागर प्रविभक्ति नामकं नाटकं तत्र शकटोद्धि प्रसिद्धा तस्याः प्रविभक्तिः तदाकरतया इस्तयोविधानम् एतत्तु नाटचे प्रलम्बित शुजयोयीजने प्रणामाद्यभिनये नाटक चन्द्रस्यास्तमयनप्रविभक्ति नामका है १० वां नाटक चन्द्र स्यमाग,यक्ष भूत राक्षस गन्धव महोरग मण्डल प्रविभक्ति नामका है ११ वां नाटक ऋषभललित सिंहललित हय गज विलसित, मस्त हय गज विलसित इनके अभिनय करने रूप है इस नाटय का नाम द्रुतविलम्बित नाट्य है १२ वां नाट्य शकटोद्धि सागर नागर प्रविभक्तिरूप होता है शकटोद्धि गाडी का जो युग होता है उसका नाम

નામક છે- દરામ નાટક અન્દ્ર—સર્ય, નાગ, યક્ષ ભૂત, રાક્ષસ. ગન્ધર્વ, મહારગ, મંડળ પ્રવિભક્તિ નામક છે. ૧૧મું નટક ઝાષભ, લલિત, સિંહલિલત, હય–ગજ વિલસિત, મત્ત હ્ય ગજ વિલસિત, એમના અભિનય કરવા રૂપ છે. આ નાટ્યનું નામ દુત વિલંખિત નાટ્ય છે. ૧૨મું નાટ્ય શકટોદ્ધિ સાગર નાગર પ્રવિભક્તિ રૂપ હાય છે, શકટોદ્ધિ—ગાડીના જે યુગ હાય છે તેનું નામ છે. ગાડીના આકારમાં અન્ને હાયાને પ્રસત કરવા તે શકટોદ્ધિ

भवतीति, तथा सागरस्य समुद्रस्य सर्वतः कञ्जोलप्रसरणवडवानलज्वालाद्रशैनितिमिङ्गिलादि मरस्यविवर्तनगम्भीर गर्जिताद्यभिनयनं सागरप्रविभक्ति तथा नागराणां नगरवासिलोकानां सविवेकनेपथ्यकरणं क्रीडासश्चरणं वचनचातुरीद्रशैनिमत्याद्यभिनयो नागरनागरप्रविभक्ति-तकामकं नाटकम् ॥ १२॥

अथ त्रयोदशम् नन्दाचम्पा प्रविभक्ति नामकं नाटचम् तत्र नन्दाः नन्दाभिधानाः शश्वत्यः पुष्करिण्यस्तासु देवानां जलकीडा जलजकुसुप्रापचयनम् आप्लवनिमत्याचाभिनयनं नन्दा-प्रविभक्ति तथा चम्या नाम महाराजधानी उपलक्षणभेतत् तेन कोशलाविशालादि राजधानी परिग्रहः, तासां च परिखा सौधप्रासाद चतुष्पदाद्यभिनयन चम्पाप्रविभक्तिः ॥ १३॥

है। इस गाडी के आकार दोनों हाथों 'का फैलागा जिसमें होता है वह शक-टोद्धि प्रविभक्ति है सागर प्रविभक्ति में समुद्र की कल्लोलों का फैलाव जिस प्रकार का होता है वडवानल ज्वाला का जैसा दिखाव होता है, तिमिद्गिलादि मस्पों का विवर्तन जैसा होता है समुद्र का गंभीर गर्जन जिसा होता है यह सब अभिनय द्वारा प्रकट किया जाता है इसीका नाम सागर प्रविभक्ति है तथा नगर निवासी लोकों का जैसा स्विवेक नेपथ्य किया जाता है की हापूर्वक जैसा उनके द्वारा संचरण किया जाता है दोलने की चतुराई जैसी उनमें होती है इसी तरह का सब कुछ दिखाव अभिनय द्वारा जिस्स नाट्य में दिखाया जाता है वह नागरप्रविभक्ति नामका नाट्य है १३ वां नाट्य नव्दा चंपा प्रविभक्ति नामका है इस नाट्य में शाश्वत नन्दा नामकी जो पुष्करिकियां है उनमें देवों द्वारा की गई जलकीडा कमलों का किया गया चयन, तथा दीचमें किया गया पानी में संस्तरण यह सब अभिनयों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है इसका नाम नन्दा प्रविभक्ति है चन्दा कोशला, विशाला आदि राजधानियों की परिस्वाका

પ્રવિભક્તિ છે. સાગર પ્રવિભક્તિમાં સમુદ્રના તરંગેનું પ્રસરણ જે પ્રમાણે હાય છે. લડવાનલ જવાળાનું દશ્ય જેવું હાય છે, તિમિંગિલાદિ મત્સ્યાનું વિવર્તન જેવું દ્વાય છે, સમુદ્રનું ગંભીર ગર્જન જેવું હાય છે, એ બધું અભિનય વડે પ્રગટ કરવામાં આવે છે. એનું નામ જ સાગર પ્રવિભક્તિ છે. તથા નગર નિવાસી લાકાનું જે પ્રમાણે સવિવેક મુખ્ય કરવામાં આવે છે, કીડા પૂર્વ ક જે પ્રમાણે તેમના વડે સંચર કરવામાં આવે છે, આ પ્રમાણે જ ખપા દેખાવ અભિનય વડે જે નાટ્યમાં કરવામાં આવે છે, તો નાગર પ્રવિભક્તિ નામક નાટ્ય છે. ૧૩મું નાટય નંદા ચંપા પ્રવિભક્તિ નામ નું છે. એ ન ઝામાં શાધ્યત નંદા નામક જે પુષ્કરિણીઓ છે, તેમાં દેવા વડે કરવામાં આવેલી જળ કીડા કમળાનું ચયન, તેમ / જળમાં કરવામાં આવેલું સંતરણ, એ બધું અભિનયા વડે પ્રદર્શિત કરવામાં આવે છે. એનું નામ નન્દા પ્રવિ-ભક્તિ છે. અંતું અભિનયા વડે પ્રદર્શિત કરવામાં આવે છે. એનું નામ નન્દા પ્રવિ-ભક્તિ છે. અંતું અભિનયા વડે પ્રદર્શિત કરવામાં આવે છે. એનું નામ નન્દા પ્રવિ-

अथ चतुर्दशम् मत्स्याण्डकमकराण्डकजारमारप्रविभक्ति नाम नाटयम्-एतच पूर्वे व्या-ख्यातमेव, अत्रेषां चतुर्णामभिनयनं प्रथगुक्तम् तत्र तु व्यामिश्रितमितिभेदः॥ १४॥

अथ पश्चदशम् क ख ग घ ङ इति कर्नाप्रविभक्तिकं नाटकम् तच ककाराकारेण अभिनयदर्शनं ककारप्रविभक्तिः, अयमर्थः तथा नाम ते नटाः नृत्यन्ति यथा ककाराकारो-ऽभिन्यस्यते, एवं खकारगकारयकारङकारप्रविभक्त्यो वक्तव्याः एतच्च कर्ना प्रविभक्तिः नाट्यम् एवं चकारप्रविभक्ति जातीयमित्यादि बोध्यम् ककारशब्दौद्घट्टनेन चचपुट चाचपुटादी कं कां किं कीं इत्यादि वाचिकाऽभिनयस्य प्रवृत्या नाट्यम् एवं कादि ज्ञान्तानां शब्दाना मादान्त्वेन ककारखकारगकारधकारङकारप्रविभक्तिकं नाट्यम्, एवं चर्ना प्रविभक्तवादिष्विप एवमेव वक्तव्यम् ॥१४॥ अथ पोडपम् च छ ज झ अ प्रविभक्तिः कम् ॥१६॥ अथ पोडपम् च छ ज झ अ प्रविभक्तिः कम् ॥१६॥ अथ सप्तदशम् ट ठ ड ढ ण प्रविभक्तिकम् ॥१७॥ अथाष्टादशम् नत्यतधन प्रविभक्तिकम् ॥१८॥ अथिकोनविंशतितमम् प फ ब भ म प्रविभक्तिकम् ॥१९॥ अथिविशेषा-

सौधों का एवं प्रासाद आदि के चतुष्पद आदिकों का जिसमें प्रदर्शन किया जाता है वह चम्पा प्रविभक्ति है १४ वां नाट्य मत्स्याण्डक, मकराण्डक, जार-मार प्रविभक्ति नामका है १५ वां नाट्य क ख ग घ ड इस कवरों प्रविभक्ति नामका है इसमें ककार के आकार का जो अभिनय प्रदर्शन किया जाता है वह कंकार प्रविभक्तिवाला नाट्य है तात्पर्य यह है कि नट इस नाट्य में इस ढंग से नाचते हैं कि जिसमें ककार के आकार को अभिव्यक्त करते हैं इसी प्रकार के खकार गकार घकार और ङकार प्रविभक्तियों के सम्बन्ध में भी जानना चाहिये १६ वां नाट्य च छ ज झ य इस चवर्ग प्रविभक्ति नामका है १७ वां नाट्य ट ठ ड ढ ण इस टवर्ग प्रविभक्ति नामका १८ वां त थ द घ न, इस तवर्गप्रविभक्ति नामका है १९ वां प फ ब म और म इस पवर्ग प्रविभक्ति नामका है २० वां अधोक आम्र जम्बु पल्लव प्रविभक्ति नामका नाट्य है इसमें

वगेरेना यतुष्पद वगेरेनुं केमां प्रदर्शन हरवामां आवे छे, ते यम्पा प्रविशक्ति छे. १४मुं नाट्य मत्स्यांट्ड, महरांट्ड, जर मार प्रविशक्ति नामह छे. १५मुं नाट्य 'क, ख, मा घ, ड' आकार्य प्रविशक्ति नामह छे. योमां हहारना आहारना के अिलन्य प्रदर्शित हरवामां आवे छे. ते इहार प्रविभक्तिवाणुं नाट्य छे तात्पर्य आ प्रमाणे छे है नट आ रीते नाये छे है केमां तेये। हहारता आहारने अिलव्यह्त हरे छे. आ प्रमाणे 'वकार' भागार, घहार' अने इकार प्रविशक्तिया विशे पण् जाणी हेवुं जोई यो. १६मुं नाट्य च, छ, ज, झ य आ च वर्य प्रविशक्ति नामह छे. १७मुं नाट्य ट, ठ, इ, छ, ण आ टवर्य प्रविशक्ति नामह छे. १८ मुं प, फ, ब म, म आ प दर्य प्रविशक्ति नामह छे. २० नाट्य अशाह, आम्र, करुपु, पह्लव प्रविशक्ति नामह नाट्य छे. योमां के प्रमाणे

स्तेषां पल्लवाः नविक्षसलयानि ततस्ते यथा मन्द्रमास्तैः प्रेरिताः सन्तो नृत्यन्ति तद्भिन-यात्मकं पल्लवप्रविभक्तिकं नाम नाटचम् ॥२०॥ अथैकविंशतितमम् –पद्मनागाशोकचम्पकः च्तवनवासन्ती कुन्दातिम्रक्तिकशामलताप्रविभक्तिकं छता प्रविभक्तिकं नाम नाटयम् इह येषां वनस्पतिकायिकानां स्कन्धदेशविविक्षतोध्वंगतैकशाखाव्यतिरेकेणान्यत् शाखान्तरं परिस्थूलं न निर्गच्छति ते छता विश्लेयाः, ते च पद्माद्य इति पद्मादि श्यामान्ताः या छतास्तत्प्रवि-भक्तिकं छताप्रविभक्तिकम्, एता यथा माहतेरिता नृत्यन्ति तद्भिनयात्मकं छता प्रविभक्तिनाम् नाटचम् ॥२१॥ अथ द्वाविंशतितमम् द्वत नामनाटकम् –तत्र द्वतिमिति शीद्यं गीतवाद्यश्वव्योग्यमकसमकप्रपातेन पादत्तछशब्दस्यापि समकालमेव निपातो यत्र तत् द्वतं नाटचम् ॥२२॥ अथ त्रयो विंशतितमं विलिम्बनं नाम नाटचम् यत्र विलिम्बते गीतशब्दे स्वरघोलना

अथ त्रया विशतितम विलोम्बन नाम नाटचम् यत्र विलोम्बन गीतशब्द् स्वरघालना प्रकारेण यतिभेदेन विश्रान्ते तथैव वाचशब्देऽपि यतितालक्षपेण वाद्यमाने तद्बुयायिना पादसञ्चारेण नत्तनं तद्विलम्बितं नाम नाटचम् ॥२३॥

अथ चतुर्विश्वतितम् द्रुतविल्णिवतं नाम नाटचम् यथोक्तप्रकारद्वयेन नर्तनम् ॥२१॥ अथ पश्चितितमम्-अश्चितं नाम नाटचम् अश्चितः पुष्पाद्यल्लारैः पूजितस्तदीयं तदिभिन्नयपूर्वकं नाटचम्प अश्चितम् ।। अनेन कौिक्षकी वृत्तिप्रधादाद्वार्याभिनयपूर्वकं नाटचम् स्वितम् ॥२५॥ अथ षट् विश्वतितमं-रिभितं नाम नाटचम् तच मृदुपदसं वाररूपिति वृद्धाः ॥२६॥ अथ सप्तविंशतितमम्-अश्चितरिभितं नाम नाटचम् यत्र अनन्तरोक्तमभिनय द्वयमवतरित तत् अश्चितरिभितम् ॥२७॥ अथ अष्ठाविंशतिममारभटं नाम नाटचम् आरभटानाम् सोत्सादसुभटानामिदमारभटम्, अयमर्थः महाभटानां स्कन्धास्कालनहृद्योल्वणनादिका या उद्वृत्तवृत्तिस्तद्भिनयमिति, अनेन आरभटीवृत्तिप्रधानमाञ्चिकाभिनयपूर्वकं नाटयम् सक्तम् ॥२८॥ अथैकोनविंशतितमम् भसोलं नाम नाट्यम् भत् भत्सन दीष्त्योरित्यस्माद्धातोन

जिस प्रकार से इन वृक्ष विशेषों के पन्न-नविकसलय- मन्द्रमास्त से कंपित होकर हिलते हैं इसी तरह से इस नाट्य में नाट्यकरने बाले अभिनय करते हैं। २१ वां नाट्य लताप्रविभक्ति नामका है इसमें पद्मनाग, अशोक, चम्पक आदि लताओं के जैसे अभिनय किया जाता है २२ वां नाट्य दुत नामका है २३ वां नाट्य विलम्बित नामका है २४ वां द्वतिविलम्बित नामका है २५ वां नाट्य अंचित नामका है २६ वां नाट्य रिभित नामका है २७ वां नाट्य अंचितरिभित नामका है १० वां नाट्य अंचितरिभित नामका है । २८ वां नाट्य आरभट नामका है २९ वां नाट्य भसोल नामका है ३० वां

એ વૃક્ષ વિશેષાના પત્રા, નવ કિસલપા-મન્દ પવતથી કપિત થઈને હાલે છે, તે પ્રમાણે જ આ નાટ્યમાં નાટય કરતાર અભિનય કરે છે. ૨૧મું નાટ્ય લતા પ્રવિભક્તિ નામક છે. એમાં પદ્મનામ, અશોક, ચંપક, વગેરે લતાઓ જેવા અભિનય કરવામાં આવે છે. ૨૨મું નાટય દુત વિલંભિત નામક છે. ૨૫મું નાટય અચિત નામક છે. ૨૨મું નાટય વિલિત નામક છે. ૨૯મું નાટય આચાર કામક છે.

र्वमस्ति, दीष्यते इति भसः शृङ्गारः शृङ्गाररसः तम् अवति इति भसोस्तम् रतिभावाभिनयेन लाति रहाति इति भसोलो नटः, ततो धर्मधर्मिणोरभेदोपचारात् भसोलं नाम नाटचम्, एतेन गुज्जाररससात्विकभानः सचितः, इदं सर्वं व्याख्यानम् उपलक्षणपरं विज्ञेयम् तेन अत्र सर्वे सार्त्विकाभावाः, अभिनयविषयीकार्या, एतेन सार्त्वि हीवृत्ति प्रधानं सार्त्विकाभिनय-गर्भितं भसोलं नाम नाय्यम् ॥२९॥ अथ त्रिंशचममारभटमसोलं नाम नाटचम् इदं च अन-न्तरोक्ताभिनयद्वयप्रधानं विद्ययम् ॥३०॥ अधैकत्रिश्चमम् उत्पातनिपातप्रवृतं संक्रचित-प्रसारितम् रेचकरेचितं भ्रान्तसं भ्रान्तं नाम नाटचम् उत्पातनिपातप्रवर्षं सं हचितप्रसारितम् रेचकरेचितं आन्तसंभ्रान्तं नाम नाटचम् तत्र उत्वातो इस्तवादादीनामभिनवगत्या ऊर्ध्वक्षेपणं तेषामेवाधः क्षेपणम् निपाततस्ताभ्यां यत्प्रवृत्तम् तत् उत्पातनिपातप्रवृत्तम्, एवम् संकुचित-प्रसारितम् इस्त्रभादयोः संकोचनेन संकुचितम् तयोः प्रसारणेन च प्रसारितम् अभि नयगत्या यत् तत्तयाभूतम् एवं रेच हरेचितम् -रेचिकैः अमिरकाभिः रेचितं निष्यन्नं यत्तत्तथा-भूतम्, एवं भ्रान्तसं भ्रान्तम् भ्रान्तः भ्रमप्राप्तः स इव यत्र नाटचे अद्भूतचरितदर्शनेन पर्वज्जनः संभान्तः साश्रयौ भवति तत्त्रथाभृतम् तदुपचारात् नाटचमपि भ्रान्तसंभ्रान्तम् ॥३१॥ अथ द्वार्त्रिशत्तमं चरमचरमनाम निवद्धनामकं नाटचम तच सूर्याभदेवेन भगवतो वर्द्ध-मानस्वामिनः पुरतो भगवतश्ररमपूर्व मनुष्यभवचरमदेवलोकभव चरमच्यवनचरमगर्भसंहरण चरमभरतक्षेत्रात्रसर्पिणीतीर्थकरज्ञळाभिषेकचरमबाळभावचरमयौवनचरमकामभोग ष्क्रमणचरमतपश्चरणचरमज्ञानोत्पाद् चरमतीर्श्वप्रवर्तन चरमपरिनिर्वाणाभिनयात्मकं मावितम्-इहतु यस्य तीर्थेकरस्य जन्ममहोत्सवं कुर्वन्ति तच्चरिताभिनयात्मकमुपदर्शयन्ति, यद्यपि अत्रा श्चितरिभितारभटभसो छेषु चर्रुषु मूलभेदेषु यही तेषु साभिनयभात्रसंग्रहः स्यात् तथापि क्रवित् एकैंदेनाभित्रयेन क्विद्भिनयसमुद्येन क्विच्च अभिनयविशेषेण अन्तरकरणात् सर्वेपसिद्ध द्वात्रियान टक र्राष्ट्रयाच्यवहारसंरक्षणार्थं द्वात्रियद्भेदाः दर्शिताः, अथाभिनयशुन्य-मपि नाटकं भवतीति तत् दर्शियतुमाइ-'अप्पेगइया उप्दय' इत्यादि 'अप्पेगइया उप्पयनिवयं' नाटच आरभट भसोल नासका है ३१ वां नाट्य उत्पातनिपात प्रवृत्त, संकुचित

नाट्य आरभट भक्षाल नासका ह ३१ वा नाट्य उत्पातानपात प्रवृत्ता, सकुाचत प्रसारित, रेचकरेचित भ्रान्त संभ्रान्त नामका है और ३२ वां नाट्य चरम चरम निबद्ध नामका है इन नाटकों के सम्बन्धका विवेचन राजप्रद्रनीय उपाङ्ग सूत्र में किया गया है-अतःवहीं से इनके स्थरूगदिक का कथन जानलेना चाहिये।

'अप्पेगइया उप्पयनिवयं निवयउप्पयं संकुचिअ पसारिअं जाव मंत संसंतणामं

રક મું નાડ્ય લસાલ નામક છે. ૩૦ મું નાડ્ય આર લટ લસાલ નામનુ છે. ૩૧મું નાડ્ય ઉત્પાત નિયાત-પ્રવૃત્ત, સંકુચિત પ્રસારિત, જ્ઞાન્ત-સંભાન્ત નામક છે, અને ૩૨ મું નાડ્ય ચરમ -ચર મનિયાદ નામક છે. એ નાટકાથી સમ્બદ્ધ વિવેચન રાજ પ્રશ્નીય ઉપાંગ સૂત્રમાં કરવામાં આવેલું છે, એથી જિજ્ઞાસુ મહાનુમાવા ત્યાંથી જ એ સર્વના રૂપાદિકનું કથન જાણુવા પ્રયત્ન કરે. अप्येककाः उत्पातिनिपातम् तत्र उत्पातः, आकाशो उत्पतनम् निपातः, आकाशात् अवपतनम् उत्पातपूर्वी निपातो यस्मिन् तत् तथाभूतम् एवम् 'निवयउप्पयं' निपातोत्यातम् निपात पूर्वेउत्पातो यस्मिन् तत् तथाभूतम् 'संकुभपसारिअं' संकुचित्रप्रसारितहस्तपादयोः संको चनेन संकुचितं तयोः प्रसारणेन प्रसारितम् अभिनयरहितं यत्तथाभूतम् 'जाव भंतसंभंत णामं' यावत् आन्तसम्भ्रान्तकम् अत्र व्याख्यानम् अनन्तरोक्तैकत्रिशत्तमनाटके यथा व्याख्यातं तथैव बोध्यम् अत्र-यावत्पदात् 'रिआरिअं' इति ग्राह्मम् तत्र 'रिअं' गमनं रङ्गभूपेर्निष्क्रमणम् 'आरिअं' पुनस्तत्रागमनमिति 'दिन्वं नदृविहिं उपदंसंतीति' दिन्यं नाटचिविधमुपदर्शयन्तीति इदं च पूर्वोक्तच । विधदात्रिशद्विधन। ट्येभ्यो विज्ञलणं सर्वाभिनयशुन्यं गात्रविक्षेपमात्रं विवाहाभ्युद्यादौ उपयोगिनर्त्तरम् भरतादिसङ्गोतेषु तृत्तमित्युक्तम्, यथोक्तमेव नाटचम् प्रकार-द्वयेन संग्रहीतुमाह-'अप्येगइया तंडवेति, अप्येगइया लासेंतित्ति' अप्येककाः लाण्डवन्ति दिव्वं नष्टविहिं उवदंसन्तीति' अब सूत्रकारने यहां ऐसा प्रकट किया है कि अभि नय ऋत्य भी नाटक होते हैं-ये नाटक भी कितनेक देवों ने किये-इन नाटकों में उत्पात निपात-आकाश में उडना और फिर वहां से नीचे उतरना होता है इस तरह उत्पात निपात रूप खेलकूद के काम कितनेक देवों ने किये, कितनेक देवों ने पहिले नीचे गिरना और बादमें ऊपर की ओर उछलना ये काम किये कितने देवों ने अपने २ हाथपैरों को मनमाना पसारने का काम किया और फिर उनका संकोच करने का काम किया कितनेक देवों ने इधर उधर घूमना आदि रूप कार्य किया यहां यावत्पद से 'रिआरिअं' रङ्गभूमि से बाहर आना और फिर उसमें प्रवेदाकरना इस रूप जो रिअ और अरिअ है उसका ग्रहण हुआ है। इस तरह से वहां उन सब देवों ने 'दिव्वं नहिवहिं उवदंसन्तीति' दिव्यं नाट्य विधिका प्रदर्शन किया 'अप्पेगइआ तंडवेंति, अप्पेगइआ छासेंति' कितनेक

'अष्मेत्रचा उपयित्वयं निवयउपयं संकृ चिअपसारिअं जाव मंतसमंतणामं दिव्वं महिविहिं उवदंसन्तीति' હવે સૂત્રકારે અહીં આ પ્રમાણે રાષ્ટ્રતા કરી છે કે અભિ નય શૂન્ય ગણ નાટક હાય છે. એ પ્રકારના નાટકા પણ દેવાએ ભજવ્યાં હતા. એ નાટ કામાં ઉત્પાત નિપાત, આકાશમાં ઉડવું અને પછી ત્યાંથી નીચે ઉતરવું હાય છે. આ પ્રણાણે ઉત્પાત, નિપાત રૂપ ખેલ કુદ નાટકા કેટલાંક દેવાએ કર્યા કેટલાંક દેવાએ પહેલાં નીચે પડવું અને ત્યાર આદ ઉપરની તરફ ઉછળવું, એવા અભિયનયા કર્યા. કેટલાંક દેવાએ પાતપાતાના હાય-પગાને યથે છ રૂપમાં પ્રસત્ત કર્યા. અને પછી તેમને સંકૃચિત કરવા રૂપ અભિનયા કર્યા. કેટલાંક દેવાએ આમ-તેમ ફરવું વગેરે રૂપ કાર્ય કર્યાં અહાં યાવત્ પદથી 'રિગ્રારિઅં' રંગ ભૂમિમાંથી અહાર આવવું અને પછી તેમાં પ્રવેશ કરવું એ રૂપમાં જે રિઅ અને અરિઅ કે તેનું ગ્રહણ થયું છે. આ પ્રમાણે ત્યાં બધા દેવાએ 'દિચ્વં નટ્વિદં હવદંસતીતિ' દિવ્ય નાર્ય વિધિનું પ્રદર્શન કર્યું.

ताण्डवं नाम नाटकं कुर्वन्ति तचोद्धतैः करणेरङ्गहारैरभिनयेश्च निर्वत्यम् अतएव आरमटीप्रधाननाटकम् अप्येककाः लासयन्ति रासलीलां कुर्वन्तित्यर्थः अथ यथा देवाः कुत्हलमुपदर्शयन्ति तथाऽह-'अप्पेगइया पीणंति' अप्येककाः देवा पीनयन्ति स्वं स्थूली कुर्वन्ति
'अप्पोर्डेति' आस्फोटयन्ति उपविशन्तः पुताभ्यां भूम्यादिकमाप्नंति 'वम्यंति' अप्येककाः
वलान्ति मल्लवत् बाहुभ्यां परस्परं संप्रलगन्ति 'सीहणायं णदंति' सिंहनादं नदन्ति कुर्वन्ति
'अप्पेगइया सन्त्राई करेंति' अप्येककाः देवाः सर्वाणि पीनत्वादीनि क्रमेण कुर्वन्ति 'अप्पेगइया
हयहेसियं' अप्येककाः देवाः हयहेषितम् अथ हेपारवं कुर्वन्ति 'एवं हत्विगुलगुलाइयं' एव
मित्येकका देवा हस्तिगुलगुलायितम् गजवत् गर्जनं कुर्वन्ति 'रहघणघणाइयं' रथघनघनायितम् केचित् अप्येककाः देवाः स्थवत् घनघनेतिश्वदं कुर्वन्ति—गुल गुल घन घन—इत्यनुकरणश्वद्धी 'अप्पेगइया तिण्णिवि' अप्येककाः देवाः, त्रीण्यपि—हयहेषितहस्तिगुलगुलायित रथ-

देवों ने वहां पर ताण्डव नामका नाटक किया कितनेक देवों ने वहां पर रास् लीला की 'अप्पेगइआ पीणेंति, एवं वुकारेंति, अप्फोडेंति, वग्गंति, सीहणायं ण दंति' कितनेक देवों ने अपने आपको बहुत स्थूल रूपमें प्रदर्शित किया, कितनेक देवों ने अपने अपने मुंह से फूत्कार करना प्रारम्भ किया कितनेक देवों ने जमीन पर हाथों को पटक पटक कर उसे फोडने की आवाज को कितनेक देवों ने इंघर से उधर दौड लगानी शुरू की अथवा मल्लों के जैसे वे आपस में बाहुओं द्वारा एक दूसरे के साथ जूझने लगे कितनेक देवों ने सिंह के जैसी गर्जना की 'अप्पेगइया सब्वाइं करेंति' कितनेक देवों ने कमदाः पीनत्वादि सब कार्य किये 'अप्पेगइया हयहेसिअं' कितनेक देवों ने घोडों की तरह हिनहिनाना शुरू किया 'एवं हत्थिगुलगुलाइयं' इसी तरह कितनेक देवों ने हाथी के जैसा चिंचा-डना प्रारम्भ किया 'रहघणघणाइयं' कितनेक देवों ने रथों के जैसा परस्पर में

'अष्णेगइश्रा तंडवेंति, अष्णेगइश्रा लासे नि' કેટલાક દેવાએ ત્યાં તાંડવ નામક નાટક કર્યું. કેટલાક દેવાએ રાસ લીલા કરી. 'अष्णेगइश्रा पीणेति एवं वुक्कारे ति अष्फोडेति वर्गाति, सीहणायं णदंति' કેટલાક દેવાએ પાતાની જાતને અતીવ રચૂળ રૂપમાં પ્રદર્શિત કરવા રૂપ અભિનય કર્યો, કેટલાક દેવાએ પાત-પાતાના મુખમાંથી કૂતકાર કરવાની શરૂ આત કરી. કેટલાક દેવાએ જમીન ઉપર હાથાને પછાડી-પછાડીને તેનાથી ફાડવાના અવાજ કર્યા. કેટલાક દેવાએ અમન-તેમ દાડવાની શરૂ આત કરી અથવા મલ્લોની જેમ તેઓ પરસ્પરમાં આહુએ! વડે એક-બીજાને સાથે ઝૂઝવા લાગ્યા. કેટલાક દેવાએ સિંહના જેવી ગર્જના કરી. 'अष्णेगइया सच्चाइं करेंति' કેટલાક દેવાએ કનશા પીનત્વાદિ ખધા કર્યો કર્યા 'अष्णेगइया सच्चाइं करेंति' કેટલાક દેવાએ કનશા પીનત્વાદિ ખધા કર્યો કર્યા 'अष्णेगइया हयहेसिअं' કેટલાક દેવાએ દાડાઓની જેમ હાલુ હાલુવાના અવાજ કર્યો. 'एवं हत्थिगुलगुलाइयं' આ પ્રમાણે કેટલાક દેવાએ હાથીની જેમ શિધાડ- વાની-ચીસા પાડવાની શરૂ આત કરી. 'रहघणघणाइયં' કેટલાક દેવાએ સ્થાની જેમ

घनधनायितानि त्रीष्यपि कुर्वनित 'अष्पेगइया उच्छोलंति' अष्येकका देवा उच्छोलन्त अग्रतो मुखे चपेटां ददति 'अप्पेगइया पच्छोलंति' अप्येककाः पच्छोलन्ति पृष्टतो मुखे चपेटां ददति 'अप्पेगइया तिवइं छिदंति' अप्येककाः त्रिपदिं मल्छइव रङ्गभूमी त्रिपदिं कुर्वन्ति 'पायदद्दरयं करेंति' पाद दर्दरकम् पादेन दर्दरकं भूम्यास्फोटनरूपं कुर्वन्ति 'भूमि चरेडे दलयंति' भूमिचपेटां ददति कराभ्यां भूषिमाध्वन्ति 'अप्पेगइया महया महया सहेणं रावेंति' अध्येकका देवाः महता महता शब्देन रावयन्ति शब्दं कुर्वन्ति 'एवं संजोगा विभा-सिअन्वा' एवम्-उक्तप्रकारेण संयोगाअपि द्वित्रिमेलका अपि विभाषितन्याः भणितन्याः, अयमर्थः उच्छोलनादि द्विकमपि कुर्वन्ति, तथा केचित् त्रिकं चतुष्कं पश्चकं पट्कं च कुर्वन्ति संघटन करना अर्थात् चीत्कार करना शुरु किया 'अप्पेगइया देवा तिष्णि वि' कितनेक देवों ने एक ही साथ घोडों के जैसा हिनहिनाना, हाथी के जैसा चिंघाडना और रथों के जैसा परस्पर में टकराना यह तीनों कार्य किये 'अप्पे गइया उच्छोलित' कितनेक देवों ने आगे से ही मुखके ऊपर धप्पड मारनी द्वार की 'अप्पेगइया पच्छोलंति' कितने देवों ने पीछे से मुख पर थप्पक मारनी शुरु की 'अप्पेगइया तियइं छिदंति' कितनेक देवों ने रङ्गभूमि में मुल्लकी तरह पैंतरा भरना प्रारम्भ किया 'पाददहरयं करेंति' कितनेक देवों ने पैर पटच पटक कर भूमिको ताडित किया 'भूमिचवेडे दलयंति' कितनेक देवों ने पृथिवी पर हाथों को पटका 'अप्पेगइया महया सद्देण रावेंति' कितनेक देवों ने बडे जोर जोर से बाब्द किया 'एवं संहोगा विभासिअव्वा' इसी प्रकार से संयोग भी-ब्रिजि पदों की मेलक भी कहलेना चाहिये अर्थात् कितनेक देवों ने उच्छोल-नादि ब्रिक भी किये कितनेक देवों ने उच्छोलनादि त्रिक चतुष्क एवं कितनेक देवों ने उच्छोलनादि पंचकषट्क भी किये 'अप्पेगइया इक्कारंति बुक्कारंति

પરસ્પરમાં સંગઠન કર્યું એટલે ચીસા પડવાની શરુઆત કરી. 'अप्येगइया देवा तिणि वि' કેટલાક દેવાએ એકી સાથે ઘાડાએકની જેમ હાલુકાલાટ કરવું, હાથીઓની જેમ ચીસા પાડવી અને સ્થાની જેમ પરસ્પરમાં સંઘઠિત થવું આમ ત્રણે કર્યો કર્યાં. 'अप्येगइया उच्छोलित' કેટલા દેવાએ આગળથી જ પોતાના મુખ ઉપર થપાડ મારવાની શરુઆત કરી. 'अप्येगइया पच्छोलित' કેટલાક દેવાએ પછળથી મુખ ઉપર થપાડ મારવાની શરુઆત કરી 'अप्येगइया तिवहं छिइंति' કેટલાક દેવાએ રંગભૂમિમાં મલ્કોની જેમ પૈતરા ભરવાની શરુઆત કરી. 'मूमिचवेडे दल्लंत' કેટલાક દેવાએ પૃથિવી ઉપર હાથા પછાડ્યા. 'अप्येगइया मह्या सहेगं रोचंति' કેટલાક દેવાએ ખૂશ્વી ઉપર હાથા પછાડ્યા. 'अप्येगइया मह्या सहेगं रोचंति' કેટલાક દેવાએ અહુ જ જેર–શારથી અવાજ કરી 'एवं संजोगा विश्वसि अवा' આ પ્રમાણે જ સંચાય પણ-દ્વિત્ર પદાની મેલક વિશેષણ કહી લેવું જેકએ. એટલે કે કેટલાક દેવાએ ઉચ્છાલનાદિ વિકા પણ કર્યા કેટલાક દેવાએ ઉચ્છાલનાદિ વિકા મામ કર્યા કેટલાક દેવાએ ઉચ્છાલનાદિ વિકા મામ કર્યા કર્યા કર્યા મામણે જ સંચાય પણ-દ્વિત્ર પદાની મેલક વિશેષણ કહી લેવું જેકએ. એટલે કે કેટલાક દેવાએ ઉચ્છાલનાદિ વિકા પણ કર્યા કેટલાક દેવાએ ઉચ્છાલનાદિ વિકા મામ કર્યા કર્યા કર્યા કરી લેવાએ ઉચ્છાલનાદિ વિકા મામ કર્યા કર્યા કર્યા કરી લેવાએ ઉચ્છાલનાદિ વિકા મામ કર્યા કર્યા કરી શેલ ઉચ્છાલનાદિ વિકા મામ કર્યા કરી સ્થા કરી કરી છે કરી લેવાનાદિ વિકા મામ કર્યા કરી કરી એક ઉચ્છાલનાદિ વિકા મામલા કર્યા કરી ત્રુખ કરી લિકા મામલા કરી કર્યા કરી લેવાએ ઉચ્છાલનાદિ વિકા મામલા કર્યા કરી હાલ કરી લિકા મામલા કરી કરી એક ઉચ્છાલનાદિ વિકા મામલા કર્યા કરી કરી એક ઉચ્છાલનાદિ વિકા મામલા કર્યા કરી કરી એક કરી લિકા મામલા કર્યા કરી કરી એક કરી લિકા મામલા કર્યા કર્યા કરી કરી એક કરી લિકા મામલા કરી કરી એક કરી કરી એક કરી લિકા મામલા કર્યા કર્યા કરી કર્યા કરી કરી એક કરી કરી એક કરી કરી એક કરી હતા કરી હતા કરી કરી એક કરી કરી એક કરી હતા કરી કર્યા કરી કર્યા કરી કરી એક કરી કરી એક કરી હતા કરી કરી હતા કરી કરી એક કરી કરી હતા કરી કર્યા કરી કરી એક કરી કરી હતા કરી કરી હતા કરી હતા કરી હતા કરી કરી હતા કરી કર્યા કરી કરી હતા કરી હતા

'अप्पेगइया हकारेंति' अप्येककाः देवाः हकारयन्ति हकां ददति 'एवं पुकारेंति' एवं पृत्कुर्वन्ति 'बकारेंति' वकारयन्ति वक वक मित्येवं शब्दं कुर्वन्ति 'ओव्यंति' अवपतन्ति नीचैः पतन्ति उप्पर्यति' उत्पतन्ति उर्ध्वी भवन्ति 'परिवयंति' परिपतन्ति तिर्यग्निपतन्ति 'जलंति उवल्लन्ति ज्वालारूपा भवन्ति भास्त्रराप्रितां प्रतिपाद्यते इत्यर्थः 'तवंति' तपन्ति मन्दाङ्गारतां प्रतिपाद्यन्ते 'पयवंति' प्रपतन्ति दीप्ताङ्गारतां प्रतिपद्यन्ते 'गंडजंति' गर्ज्जन्ति गर्जनं कुर्वन्ति मेघवत् 'विज्ज-आवंति' विद्युतं कुर्वन्ति विद्युतवत् प्रकाशमानाः भवन्ति 'वासिति' वर्षन्ति च 'अप्पेगइया देवुकिछयं करेंति' अप्येककाः देवाः देवोत्किछिकां देवानां वातस्येव उत्किष्ठिकाः भ्रमविशे-षस्तां कुर्वन्ति 'एवं देवकहकहगं करेंति' एवं देवानां कहकहकं प्रमोदभरजनितकोळाहळं कुर्वन्ति 'अप्पेगइया दुह दुहगं करेंति' अप्येककाः देवा दुहदुहगं कुर्वन्ति, अनुकरणमेतत् 'अप्पेगइया विकियभूयाई रूवाई विकुव्वित्ता पणचंति' अप्पेककाः देवाः विकृतभूतानि विकृ-तानि अधरलम्बन मुखळ्यादानने त्रस्फाटनादिना भयानकानि भूतानि भूतादिरूपाणि विकु-ओवयंति, उप्पयंति, परिवयंति, जलंति, तवंति, पवयंति, गज्जंति, विज्जुयावंति, वासितिं कितनेक देवों ने हक्का दिया प्रकार किया, वक्क वक्क इस प्रकार से शब्दो का उच्चारण किया नीचे आना ऊंचे जाना, तिरहे जाना अग्नि की ज्वाला जैसे तपना, मन्द अग्नि के अङ्गारों के जैसे तपना दीप्त अंगारावस्था को धारण करना, गर्जना करना विजली की तरह वरसा करना ये सब कार्य किये 'अप्पेगइया देवुक्कलियं करेंति' एवं 'देवकहकहं करें ति' कितनेक देवों ने वायुकी तरह घूनना-भ्रमण करना-यह काम किया कितनेक देवों ने प्रमोद के भार से युक्त होकर कोलाहल करना प्रारम्भ किया 'अप्पेगइया दुहुदुहगं करेंति, अप्पे-गइया विकियभूयाइं रुवाइं विउव्यिक्ता पणच्चंति' कितनेक देवों ने दुहदह दाब्द किया, कितनेक देवों ने विकृत भूत रूपादिकों की, अर्थात् ओष्ठों को लम्बा करना मुखका फाडना नेत्रों को फोडना आदि २ रूप विक्वर्यणा करके अच्छी

तेमल हैंटबाह हेवे के ६० विकास हिए ये १ ५६ ५५ ५६ ५६ १ अप्येगह्या हक्कारंति वक्कारंति, ओवयंति, उप्ययंति, परिवयंति, जलंति, तवंति, पवयंति गञ्जंति, जिङ्ज्यावंति. वासिति' हैटबांह हेवे के हाहण हरी, प्रहार हर्युं, वहह वहह आ प्रभाष्ट्रे १०० हे। उच्चिरत हर्या. नीचे लवुं, उपर आववुं अच्चे लवुं, वहातिको लवुं, अन्तिना लवाणानी लेम संतप्त धवुं मन्ह अन्तिना आंगारानी लेम संतप्त धवुं आंगारावस्था. धारण्य हरवी. गर्लना हरवी, विकृत्नी लेम अमहवुं, वर्षा हरवी, से अधां हाथें हर्यां. 'अप्येगह्या देवुक्कलियं करें तिं तेमल 'देवकहकहं करें ति' हेटबाह हेवे से वास्ति अधि वास्ति केम धूमवुं—अमण्य हरवुं—आ हाम हर्युं. हेटबाह हेवे से प्रमाहना कारथी सुक्त धर्मने धांधाट हरवानी शरुआत हरी. 'अप्येगह्या वृहु दुह्मं करें ति, अन्येगह्या विकियम्याइं स्वाइं विउव्हित्ता पण्यच्वेति' हेटबाह हेवे से इक्टन्हुं आ जाती। शरुह हर्यों. हेटबाह हेवे से विकृतभूत इपाहिहानी केटबाह हेवे से इक्टन्हुं आ जाती। शरुह हर्यों. हेटबाह हेवे से विकृतभूत इपाहिहानी केटबाह हेवे से इक्टन्हुं आ जाती। शरुह हर्यों हेवे से से शरुह विविकृतभूत इपाहिहानी

वित्या प्रस्ति प्रकर्षेण नर्त्तनं कुर्वन्ति 'ष्यमाइविभासेज्ञा जहा विजयरस' एवमादि विभाषेत यथा विजयस्य विजयदेवस्य कियरपर्यन्तम् इत्याह-'जाव सन्वभी' इत्यादि 'जाव
सब्बओ समेता आधावेति परिधावेति यावत् सर्वतः समन्तात् 'आधावेति' १षद्धावन्ति परिधाबन्ति प्रकर्षेण धावन्ति तत्सर्वे जीवाभिगमे तृतीयप्रतिपत्तौ विशेषतो द्रष्ट्वयम् यावत्करणात्
'अप्पेगइया चेळ्वस्त्वेवं करें ति अप्पेगइया वंदणकलसहत्थगया अप्पेगइआ भिगारगहत्थगया
एवं एएणं अभिलावेणं आयंसथाल पाई वायकरगरयणकरंडम पुष्कचंगेरी जाव लोमहत्थचंगेरी पुष्कपडलग जाव लोमहत्थ चटुलग सीहासण स्त्रचामरतिलसमुग्गय जाव अंजणसम्गगयहत्थगया, अप्पेगइया देवा धूवकड्च्छगहत्थगया हृद्व तुह जाव हियया इति ग्राह्मम्

अथ व्याख्या—अप्येकका देवा चेलोत्क्षेपं ध्व नोच्छायम् बुर्वन्ति अप्येकका चन्दनकलश् हस्तगताः माङ्गल्यघटपाणयः अप्येककाः भृङ्गार् कहस्तगताः एवम् अन्न तरोक्तस्वरूपेण एतेन अनन्तरवर्तित्वात् प्रत्यक्षेण अभिलापेन—अप्येककाः आदर्शहस्तगताः, एवम् पात्री वातकरक रत्नकरण्डक पुष्पचङ्गरी यावत् लोमहस्तचङ्गरी पुष्पटलक यावल्लोमहस्तपटलकर्सिहासन-खत्रचामर तिलसभुद्रक यावत् अञ्चनसभुद्रकहस्तगताः अप्येककाः धूपकडुच्छुकहस्तगताः हृष्ट-तुष्ट यावत् हृद्याः, इति एतेषाम् आधावन्ति परिधावन्त्यत्रान्वयः इति एतेषां विशेषतोऽथीः जीवाभिगमे तृतीयप्रतिप्रतौ स्वयमेव दृष्ट्च्याः ॥ स्० १०॥

तरह से तृत्य किया 'एवमाइं विभारिजा जहा विजयस्स जाव संव्वओ समन्ता आहावेंति' इस प्रकार विजय के प्रकरण में कहे अनुसार देव सब ओर से अच्छी तरह थोडे थोडे रूप में और प्रकर्णरूप में दोडे यह सब कथन जीवाभिगम सूत्र में तृतीय प्रतिपत्ति में किया गया है अतः वहीं से इसे देखलेना चाहिये यहां यावत शब्द से 'अप्पेगइया चेलुक्खेवं करेंति अप्पेगइया चंदणकलसहत्थगया अप्पेगइया भिगारहत्थगया एवं एएणं अभिलावेणं आयंस्थाल पाईवायकरग रयणकरंडग पुष्फ चंगेरी जाव लोमहत्थचंगेरी पुष्फ पडलग जाव लोमहत्थ पडलग सीहासण छत्त चामर तिल्ल समुग्गयहत्थगया देवा धूपकडुच्छ्य हत्थगया हट तुट जाव हियया' इस पाठका ग्रहण हुआ है-यह पाठ अर्थ में विलक्ष स्पष्ट है ॥१०॥

विश्व धा धरीने पछी सारी रीते नृत्य धर्यं एवमाइं विमासे ज्ञा जहा विजयस्स जाव सन्वओ समंता आहावे ति' का प्रभाषे विजयना प्रधरेषुमां ध्रां मुळल हेवे। वे। मेरथी सारी रीते करण-करण प्रभाषुमां कने प्रधर्ष इपमां है। उपा. का लघुं ध्रम छवि लिन्नासुकी त्यांधी क मा स्त्रमां तृतीय प्रतिपत्तिमां स्पष्ट करवामां काल्युं छे. केथी किन्नासुकी त्यांधी क मा विशे काष्य्व। प्रयत्न करे. कहीं यावत् पद्यीं अप्येगइया चेलुक्खेंबं करेंति, अप्येगइया वंदणकलसहस्थाया, अप्येगइया मिंगारहत्थाया एवं एएणं अमिलावेणं आयंसथाल पाईवायकरग रयणकरंडग पुष्कचंगेरी जाव लोमहत्थ चंगेरी पुष्कगडलग जाव लोमहत्थ पडलग सीहासण छत्तचामरतिल्लसमुग्गय हत्थगया देवा धूपक इच्छ्य हत्थगया हट्ट तुट्ट जाव हिययां का पाठ संगुहीत थये। छे. क्या पाठ क्यांनी दिविश्ले सुगम क छे. ॥सूत्र-१०॥

अथ अभिषेक निगमन पूर्वकमाशीर्वाद सूत्रमाह--

प्लप्-तए णं से अच्चुइंदे सपरिवारे सामि तेगं महया महया अभिसेएणं अभिसिंचई, अभिसिंचित्ता करयलपरिग्गहियं जाव मत्थए अंज्ञलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेड वद्धावित्ता ताहिं इट्टाहिं जाव जयजयस६ं पउंजइ पउंजित्ता जाव पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गंध-कासाइए गायाई खुहेइ छुहिता एवं जाव कप्परुक्खमं पित्र अलंकिय-विभृतियं करेइ करिसा जाव णद्दविहिं उवदंसेइ उवदंसिसा अच्छेहिं सण्हेहिं रययामण्हिं अच्छरसा तंडु छेहिं भगवओ सामिस्स पुरओ अट्टट्र-मंगलगे आलिहइ तं जहा-सोत्थिय १ सिरिवच्छ २ नंदियावत्त ३ वद्ध-माण ४ भदासण ५ वरकलस ६ मच्छ ७ दप्पण ८ लिहिआ अट्टूट मंग-लगा ॥१॥ लिहिङण करेइ उपवारं किंते ? पाडल मल्लिअ चंपगसोग पुन्नाग चूअभंजरि णवमालिअवउलतिलय कणवीरकुंदकुज्जग कोरंटपत्त दमणग करसुरिभगंधगंधियस्स कचग्गहगिहय करयलपब्भट्टविप्पमुक्कस्स तत्थिचित्तं जाणुस्सेहपमाणिमत्तं ओहिनिकरं करेता चंदप्पेभरयणवइर-वेरुलियविमलदंडं कंचगमणिरयगभितिधित्तं कालागुरुपवरकुंद्रकतुरु-क्षध्वगंधुत्तनाणुकिहं च धूमवर्हि विणिम्मुयंतं वेरुलियमयं कडुच्छुअं पग्गहितु पचएणं भूवं दाउण जिणवरिंदस्स सत्तद्रुपयाइं ओसरित्ता दसं गुलियं अंजलि करिअ मरथयंमि पथओ अट्रसय विसुद्धगंधजुत्तेहिं महा-वित्तेहिं अपुञरुतेदिं अत्थजुत्तेहिं संधुणइ संधुणिता वामं जाणुं अंचेइ अंजिता जाव करय उपरिगाहियं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी णमो-त्थुते सिद्धबुद्ध णीरय समयसामाहिअं समत्त समजोगि सल्लगत्तणः णिटभय भीरागदोसणिङःमणिस्संगणीस**ल्टमाणमूरणगुणरयणसी**लसाः गरमणंत मप्पमेयभविअ धरमवरनाउरंत चक्क ग्रही णमोत्थुते अरहओ त्तिक्ट्ड एवं वंदइ णधंसइ वंदिता णमंसिता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसभाणे जाव पञ्जुवासइ एवं जहा अच्चुयस्स तहा जाव ईसाण-

स्स भाणियव्वं एवं भवणवइबाणमंतर जोइसिआ य सूरपज्जवसाणसएणं परिवारेणं पत्तेअं पत्तेअं अभिसिंचंति, तएणं से इसाणे देविंदे देवराया पंच ईसाणे विडव्वइ, विउव्वित्ता एगे इसाणे भगवं तित्थयरं करपुट-संपुडेणं गिण्हइ गिण्हित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे, एगे ईसाणे पिट्रओ आयवत्तं धरेइ दुवे ईसाणा उभओ पासि चामरु-क्खेव करेंति एगे ईसाणे पुरओ सूलपाणी चिट्टइ । तए णं से सक्के देविंदे देवराया आभिओगे देवे सहावेइ सहावित्ता एसो वि तहचेव अभिसेय आणत्तिदेइ तेऽिव तहचेत्र उदणेति, तदणं से सक्के देविंदे देवराया भगवओ तित्थयरस्स चडिहसिं चत्तारि धवलवसभे विउद्वेड संखद्लिवमलिनम्मलद्धिघणगोलीरफेणरयणिगरप्यासे पासाईए दर-सणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, तएणं तेसिं चउण्हं धवलवसमाणं अदृहिं सिंगेहिंतो अट्रतोअधाराओ णिगच्छंति, तए णं ताओ अट्रतोअधा-राओ उद्धं वेहासं उप्पयंति उप्पइत्ता एगओ मिलायंति मिलाइत्ता भग-वओ तित्थयरस्स मुद्धाणंसि निवयंति । तए णं से सक्के देविंदे देव-राया चउरासीए सामाणिअ साहस्सीहिं एयस्स वि तहेव अभिसेओ भाणियव्यो जाव नमोऽत्थुणं ते अरहओ तिकट्टु वंदइ णमंसइ जाव पञ्जुवासइ ॥सू० ११॥

छाया-ततः खलु सोऽच्युतेन्द्रः, सपरिवारः स्वामिनं तेन महता महता अभिषेकेण अभिषिश्चित, अभिषिच्य करतलपरिगृहीतं यावत् मस्तके अञ्चलिं कृत्वा जयेन विजयेन च वर्द्धयित वर्द्धयित्वा ताभिरिष्टाभि यावत् जयजय शब्दं प्रयुक्तः प्रयुक्तः प्रयुक्तः वावत् पक्ष्मलसुकुमारया सुरभ्या गन्धकाषायिकचा गात्राणि रक्षयित रुप्तयित्वा एवं यावत् कल्पवृक्षमित्र अलङ्कृतविभूषितं करोति कृत्वा यावत् नाटचविधिमुपद्र्शयित उपद्रश्च अच्छैः श्लक्ष्णैः रजतमयैः अच्छरस-तण्डुलैः भगवतः स्वामिनः पुरतः अष्टाष्टमङ्गलकानि आलिखति तद्यया-दर्पण १ भद्रासन २ वर्द्धमान ३ वरकमळ ४ मत्स्य ५ श्रोवत्स ६ स्वृद्धितक ७ नन्दावते ८ लिखितानि अष्टाष्ट-मङ्गलकानि । १ । लिखित्वा करोति उपवारम् कोऽसौ १ पाटलप्रिल्डकचम्पकाशोक पुन्नागच्यूतमञ्जरी नवमालिक वकुलतिलकरशिर कुन्दकुःजककोरण्डकपत्र दमनक वरसुरभिगन्यगन्धिकस्य क्यग्रह्यहीतकरत्तलप्रभ्रष्टिविभ्रमुत्तस्य दशार्द्धर्गस्य दशह्यमिकस्य रुप्त विभ्रम् जानू-

रसेधप्रमाणमितम् अवधिनिकरं कृत्वा चन्द्रप्रभरत्नवज्जवैङूर्यविमलदण्डम् काञ्चनमणिरतनः भक्तिचित्रम् कृष्णागुरुप्रवरकुन्दुरुष्कतुरुष्क घूप गन्धोद्धृतामनुविद्धां च घूपवत्ति विनिष्ठश्चन्तं वैङ्क्षेमयं कंडुच्छुकं प्रमुख प्रयतेन भूपं दत्वा जिनवरेन्द्रस्य सप्ताष्टपदानि अपसृत्य दशाङ्ग-लिकम् अञ्जलि कृत्वा मस्तके प्रयतः, अष्टशतविशुद्धग्रन्ययुक्तैः, महाष्ट्रतैः, अपुनक्क्तैः संस्तीति संस्तुत्य वामं जानुम् अश्वति अश्वित्वा यावत् कातलपरिगृहीतं मस्तके अञ्चलि एवमवादीत्-नमोऽस्तुते सिद्धबुद्धनीरजश्रमगसमाहिकसमस्तसमजोगिशस्यकत्तेन निर्भयनीरागद्वेषनिर्म्यम् निरुशङ्क निरुशस्यमानम् रण**ुणरत्नशीलसागर मनमन्ताप्रमेयभविक**ः धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्तिने नमोऽस्तुते अईते इति कृत्वा एवं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा नात्वासन्ते नाति दूरे अश्रूपमाणो यावत् पर्श्वपास्ते-एवं यथाऽच्युतस्य तथा यावदीशानस्य भणितव्यम् एवं भवनपति वानमन्तरच्योति काश्र सूर्यपर्यवसानाः स्वेन परि-वारेण प्रत्येकम् प्रत्येकम् अभिसिश्वति । ततः खल्ल स ईशानो देवेग्द्रो देवराजः पश्च ईशा-नान् विकुर्वति विकुर्विता एक ईशानो भगवन्तं तीर्थकरं करतल्लसंपुटेन गृह्णाति गृहीत्वा सिंहासनवरगतः धौरस्त्याभिमुखंः सन्त्रिष्णः, एक ईशानः पृष्टतः, आतपत्रं धरति द्वौ ईशानौ उभयोः पार्श्वे चामरोत्क्षेपं कुरुतः, एकः ईज्ञानः पुरतः, ख्रव्याणिस्तिष्ठति । ततुः खंछ स शको देवेन्द्रो देवराजः आभियोगिकान् देवान् शब्दयति शब्दयित्वा एषोऽपि त्रथैव अभिषेकाइसि ददाति तेऽपि त्रथैव उपनयन्ति ! ततः खल्ल स शको देवेन्द्रो देवराजः, भगवस्तीर्थेकरस्य चतुर्दिशि चतुरो घवलदृषनान् विक्रुवित, श्वेतान् शंखदलविमलनिर्मलद्धि-घनगोक्षीरफेनरजतनिकरप्रकाशान् प्रासादीयान दर्शनीयान अभिरूपान् प्रतिरूपान्, ततः खळ तेषां चतुर्णी ववलवृषभाणाम् अष्टभवः शृङ्गोभवोऽष्टो तोयधारा निर्गेच्छन्ति, ततः खळु ता अन्दी तोयधारा उन्ने दिहायसि उत्पतन्ति उत्पत्य एकतो मिलन्ति मिलिन्ता भगवतस्तं र्धेकरूहम सृध्ति निपतन्ति । ततः खळ स भक्रो देवेन्द्रो देवराजः चतुर्श्वीत्या सामा-निकसहस्रैः एतस्यापि तथैव अभिषेको भाणतव्यो यावस्रानोऽस्तातेऽईते इतिकत्वा बन्दते नमस्यति यावत पर्यपास्ते ॥ स्र० ११॥

टोका-'तएणं से अच्छुइंदे सपरिवारे सामि तेणं महयामह्या अभिसेएणं अभिसिचइ' ततः खछ तदनन्तरं किल सः प्रापुक्तोऽच्युतेन्द्रः स परिवारः, अनन्तरोक्तपरिवारसिहतः, स्वामिनम् -ऋषभतीर्थेकरम् तेन-अनन्तरोक्तस्वरूपेण महतामहता, अतिशयेन, अभिषेकेण,

'तएणं से अच्खुइंदे सपरिवारे सामि' इत्यादि

टीकार्थ-'तएणं' इसके बाद 'से अच्छुइंदे सपरिवारे' सपरिवार अच्युतेन्द्र ने 'सामिं तेणं महयार अभिसेएणं अभिसिंचइ' तीर्थेकर का उस विशास अभि

'तएणं अच्चुईंदे सपरिवारे सामि' इसःदि

टी डार्थ - 'तए गं' त्यार आह 'से अच्चुइंदे सपरिवारे' सपरिवार अच्युतेन्द्र 'सामिं तेणं मह्या र अभिसेपणं अभिक्षिचइ' तीर्थ 'डरने। ते विशाण अभिषेठनी सामग्रीधी अलियेड

अभिषिश्चति आनीतपवित्रोदकैरभिषेचनं करोति 'अभिसिंचित्ता' अभिषिच्य 'क्रयलपरिगा-हियं जाव मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेड्' करतलगरिगृहीतं यावन्यस्तकेऽञ्जलि क्रत्वा जयेन विजयेन च-जयविजयशन्दाभ्यां वर्द्धयति स्तीति अत्र यात्रत्यदात् दश्चनखं शिरसावत्तीमिति ग्राह्मम् 'बद्धावित्ता' वद्धियत्वा 'ताहि इहाहि जाव जयजयसदं पडंगइ' ताभिः विशिष्टगुणोपेताभिः, इष्टाभिः श्रोतुणां वल्लमाभिः यावज्जयज्ञवदः प्रयुक्कि, अत्र जयशब्दस्य द्विर्वचं शीघ्रतायां संभ्रमे जयविजयशब्दाभ्यां वर्द्धित्वा पुनर्जयजयशब्द-प्रयोगो मङ्गलवचनेन पुनरुक्ति देंशिय इत्यभिहितः, अत्र यावत्पदात् 'कताहि पियाहि मणु-णाहिं मणायाहिं वग्ग्रहिं कान्ताभिः त्रिवाभिः मनोज्ञाभिः मनोऽमागिः वाश्मिरितिग्राह्यम् अथ अभिषेकोत्तरकालिकं कर्त्तव्यमाह 'पउंजित्ता' इत्यादि 'पउंजित्ता' प्रयुष्य 'जाव पम्हल-सुकूमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाई ल्रहेइ' यावत् वस्मलसुकुमारया पक्ष्मयुक्तसुन्दर-ल्रोमवत्या सुकोमलया सुरभ्या सुगन्धि युक्तया गन्यकाषाथिक्या गन्धकसुर्गेधित द्रव्ययुक्तया इति गम्यं गात्राणि तहय अङ्गानि मुखहस्तादि अवयवान रूक्षयति प्रोठछति-अत्र यावत्पदात षेक की सामग्री से अभिषेक किया आनीत पवित्र उदक से प्रसुको स्नान कराया 'अभिसिचित्ता करलय रिग्गहिअं जाव मत्थए अंजलि कह जएणं विजएणं बद्धाबेइ' स्नान कराकर फिर उसने प्रभुकी दोनों हाथों की अंजिल करके नमस्कार किया और जय विजय बाब्द से उन्हें बधाया यहां यावत पद से 'ददानखं शिरसावर्रम्' ऐसा पाठ संगृहीत हुआ है 'बद्धावित्ता ताहि इदाहि जाव जय जय सहे पडंजित पडंजिसा जाव पम्हलसुक्रमालाए सुरसीए गंधकासाईए गायाई लूहेइ' बधाने के बाद अर्थात् जय विजय शब्दों द्वारा स्तुति कर चुकने बाद फिर उसने उन उन इष्ट यावत्-कान्त, प्रिय, मनोज्ञ, मनोज्म वचनों से जय जय राव्द का पुनः प्रयोग किया यहां पुन रुक्ति का दोष भक्ति को अतिश ियता के कारण नहीं माना गया है जब वह इच्छानुकूल भक्ति कर खुका तब उसने प्रभुके शारीर का पक्ष्मल, सुकुमार, सुगंधित तोलियों से शेंव्छन किया

डियों. आनीत पवित्र ६६४थी प्रसुने स्नान डराव्युं. 'अमिसिनित्ता करयलपरिमाहिं जाव मत्थए अंजलिं कद्दु जएणं विजएणं बद्धावेइ' स्नान डरावीने पछी तेशे प्रसुने अन्ने छाथानी आंकि कद्दु जएणं विजएणं बद्धावेइ' स्नान डरावीने पछी तेशे प्रसुने अन्ने छाथानी आंकि वालि अर्था अनावीने नमस्डार डर्था अने कथ-विक्य शाणी दं तेशाधीने अिल नंदित डर्था. अहीं यावत् पदथी 'द्शनखं शिरसवर्त्तम्' आ पाठ शंणुद्धीत थया छे. 'बद्धां वित्ता ताहिं इद्वाहिं जाव जय-जय सदे पउंजिति, पउंजित्ता जाय पम्बल सुकुमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं छ्हेइ' अलिनंदित डरीने अर्थात् कय-विक्य शण्डांथी तेशाधीनी स्तुति डरीने पछी तेथे तत्ति तत्ति छिट यावत् डान्त, प्रिय, मनेःस, मनेंद्रा वयनेःथी कथ-कथ शण्डांने पुनः प्रयोग डर्था. अहीं अहीं अहितनी अतिशयताने लीधे पुनकृष्ठित देख मानवामां आव्या नथी. कथारे ते यथेच्छ अडित डरी यूडथे। त्यारे तेथे प्रसुन। शरीरनुं

'तण्डमयाए' तत् प्रथमतया-इति प्राह्मम् 'ल्हिसा' रूक्षियता शरीराणि पोठछच 'एवं जाव कप्यस्वसम्वित् अलंकिरिअविभूसियं करेद' एयम्-उत्तप्रशरेण यावत्यसम्ब्रक्षिम् अलंकृतं वस्ताछङ्कारेण विभूषितम्-भामगणालङ्कारेण करोति, अन वावत्यदात् 'छिहसा सर-सेणं गोतिसस्वद्रणेणं शायहं अणुलिपह अणुलिपिता-नाभामीसासवायबोज्झं चक्खुहरं वण्णकरिसजुक्तं हयजालापेलवाइरेणं घवलं कणपास्विचयंत्रकम्मं देवद्मजूष्ठं निअंसावेइ निअंसावित्ता' हति प्रश्चम् एणमर्थः, रुक्षियत्वा दस्य शरीराणि श्रोञ्चसरसेन रससिहतेन गीशीर्यचन्द्रनेन गात्राणि प्रगिर्धाण, अतुलिम्पित, अनुलिप्य नाद्यानिःश्वास्तावाह्मम् तथा चक्षुहरं द्वीतीयम् तथा वर्णसार्वपुत्रम् तथा 'हयलालपित्र अनुलिप्य नाद्यानिःश्वास्तावाह्मम् तथा चक्षुहरं द्वीतीयम् तथा वर्णसार्वपुत्रम् तथा 'हयलालपित्र प्रश्चाप्य तथा क्रक्सम् कोमलम् अतिरेक्षप्रकेष च-अध्यन्तस्वच्य च तथा क्रक्सख्वि तान्तक्ष्रमेकनकैः काञ्चनैः खिचल्य् अन्तक्ष्र अन्तक्षीणो यस्य तप्यास्त्रम् एवं भूतं देवद्ष्य-युगलम् देवदस्त्रयुगलम्-परिधानोत्तरीयस्त्यं निवासविति, परिधापयिति निवासय परिधाप्य-इति बोध्यः। 'करित्ता' कृत्या 'जाव नहविद्धं उवदंसेइ' यावत् नाटचविधिमुपदर्शयित अत्र

'ल्हेसा एवं जाव कप्पक्षकां पित्र अलंकिय विमृसि अं करेह' शरीर को प्रोव्छन करके किर उसने प्रसुके मुख हस्त आदि अवपवों को पोंछा यहां यावत् शब्द से 'तप्पहनयाए' पह का प्रहण हुआ है पोंछकर उसने किर प्रमुक्तो वस्त्र और अलंकारों से विभूषित किया अतः प्रमु उस समय साक्षात् करुष्वृक्ष के जैसे प्रतीत होने लगे यहां यावत् शब्द से—'ल्हिसा सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिम्पह, अणुलिपिसा नामानीसासवायबोच्झं चश्खुहरवण्णकरिस्तुसं, हयटाला-पेलवाइरेगधवलं कण्ण प्रचियंतरूपनं देवदृश्खुभलं निअंसावेइ नियंसाविसा'७ इस पाठका संप्रह हुआ है—इसकी व्याख्या स्पष्ट है 'करिसा जाव णहिवहिं उवदंसेह, उवदिसिमा अच्छेहिं सण्हेहिं रचणामएहिं अच्छरसातण्डुलेहिं भगवओ समणस्म पुरओ अहह मंगलगे आलह्ह' वह्नालंकारों से प्रमुक्त अलंकृत करके

पहसल, सुष्टमार, सुगंधित वलाशी प्रेक्छन हर्युं. 'छ्ह्देता एवं जाव कप्पक्सांपिहव अलंकिय विभूतिलं करेह' शरीरतुं प्रेक्छन हरीने पछी ेखे प्रसुना सुम, हरत, वगेरे अव्यवेतां प्रेक्छन हर्युं. अहीं यावत शम्हवीं 'त्राह्मयाएं' पह अहु हर्युं हे प्रेक्छन हरीने पछी तेखे प्रसुने वस्त अने अलंहरीथी विभूवित हर्या केशी प्रसु ते वभते साक्षात हर्य पृक्ष केवा लागवा मांड्या. कहीं यावत शम्हवीं 'छ्हित्ता सरसेणं गोसीसचंदगेगं गायाई अगुलिम्पइ, अगुलिक्ता नासानीसासवापबेजझ चक्खहरवण्णकरिसा सुतं, ह्यलालावेळगाइरेगधवलं कणगलिकांत कर्मं देवदृपज्ञ पलं निंसावेइ निमंसावेइता' आ पार संगृहीत थये। छे. ओनी व्याप्या स्पष्ट क हे, करित्ता जाव णहविहिं उवदंसेइ, उवदंसित्ता अच्छेहिं सगहेहिं रयणामणिहं अच्छरसात्व्हुलेहिं सगहओं समगस्स पुरओ अहु मंगलों आल्डिइ' वल्लाकारेशी प्रसुने अलंहत हर्या पछी लेखे यावत नाट्यविधिनं

यावत्यदात् 'सुमगदामं पिणद्धावेई' सुमनोदामानम्—पुष्पमाल्यं विनाहयति परिवापयति पिनाह्य परिधाप्य इति ग्राह्मम् 'उवदंसित्ता' नाटचिनिधिसुपद्दर्य अच्छेहिं अच्छेः स्वच्छैः 'सण्हेहिं' श्रक्षणेः चिकणेः 'रययामएहिं' रजतमयैः 'अच्छरसातंद्धछेहिं' अच्छरसतण्ड्छैः 'मगवभो सामिस्स पुरको अट्टहमंगलगे आलिहइं मगवतः स्वामिनस्तीर्थकरस्य पुरतः, अष्टान्टमङ्गकानि, अत्र वीप्सावयनात् प्रत्येकम्—अष्टौ—अष्टौ इत्यर्थः आलिखिति 'तं जहां' तद्यथा 'दप्पण १ महासणं २ बद्धमाण ३ वरकलस ४ मच्छ ५ सिरिवच्छ ६ सोत्थिय ७ णंदावत्ता ८ लिहिआङ्हहमंगलगा ॥९॥ दप्ण १ महासन २ वर्द्धमान ३ वरकलश-४ मत्स्य ५ श्रीवस्स ६ स्वस्तिक ७ वन्द्यावत्तां ८ लिखितानि अष्टाष्टमङ्गलकानि, । 'लिहि स्वप्य' अनन्तरोक्तानि अष्टाश्वरमङ्गलकानि, । 'लिहि स्वप्य' अनन्तरोक्तानि अष्टमङ्गलानि लिखित्वा 'करेइ उवयारं' करोत्युपचारम् कोऽसानुपचार-स्तत्राह् 'पाडलमल्खिअ—इस्यादि 'पाटलमल्लिअ, चंपगसोगपुन्नागचूय मंजरिणवमालिअबउलितल्यकणवीर खंदकुळगकोरंट पत्तदमणगवरसुरिभगंवगंधि अस्स' पाटलमल्लिकचम्पकादोक-पुन्नागान्त्रमञ्जरी नवमालिक बकुलतिलक करवीरकुन्दकुङमककोरण्ट पत्र दमनक वरसुरिभ-

किर उसने यावत् नाट्यविधि का प्रदर्शन किया यहां यावत् शब्द से-'सुमणो-दामं पिणस्वावेई, पिणस्वावित्ता' इन पदों का प्रहण हुआ है-नाट्यविधि का प्रद-दान कर के किर उसने स्वच्छ चिकने रजत मय अच्छरस तण्डुलों द्वारा भग-वान् के समक्ष आठ २ मंगलद्रव्य लिखे-अधीत् एक एक मंगलद्रव्य आठ २ वार लिखा 'तं जहा' वे आठ मंगलद्रव्य इस प्रकार से है-स्वस्तिक १ श्रीवत्स २ नन्दावर्त्त ३ वर्धभान ४ मद्रासन ५ दरकल्या ६ नत्स्य ७ द्र्पण ८ आठ मंगल-द्रव्यों को लिखकर किर उसने उनका उपचार किया अधीत् 'किते पाडल मल्लिय चंपगसोग पुत्राग चूल पंजरिणयमालि अ वउलतिलय कणवीर छंद कुरजग कोरंट पत्तदमणगवरसुरिमर्गधगंधिअस्स, क्यग्गइगहिअकरयलपन्मह-विष्यमुक्कस्स द्सद्धवण्णस्स कुसुमणिअरस्स' पाटल गुलाव, मल्स्का चंपक,

प्रदर्शन अर्धु. अर्धी यावत् पद्यी 'सुमणोदामं शिणद्वावेद्दे, निणदावित्ता' आ पदे संगुद्वीत थया छे. नाट्य विधितुं प्रदर्शन अरीने पणी तेथे स्वच्छ, सुविद्धण रकतमय
अव्ध्वस तंदुवे। वह अगवाननी समक्ष आह-आह मंगण द्रव्ये। लण्यां, अर्थात् येष्ठयेष्ठ मंगण द्रव्यतुं लेणन आहे आहे वणत अर्थुं, 'तं जहां' ते आहे मंगण द्रव्यो आ
प्रमाथे छे-'स्वस्तिष्ठ १, श्रीवत्स २, नन्हावर्त्त ३, वर्द्धमान ४. अद्र सन प, वर
हत्या ६. मत्थ्य ७, हर्पण् ८. ते आह-आह मंगल द्रव्योने लणीने पछी तेथे तेमने।
अपयार अर्थे येटले हे 'किं ते पाइल मह्लिय चंपनसोगपुत्राम चूम मंजिर णवमालिअ
अडल तिलय कणवीर कुंद कुन्जम कोरंट पत्तरमणगगरसुरिनिनंपमन्वियससः, कन्महगहिन करयल
पद्मह विष्यसुक्तस्स द्सद्वणस्स कुसुगणिअरस्सं पाउस, श्रुक्ति, श्रुक्ति, यंपह, अरी। इ,

गन्धगन्धितस्य तत्र पाटलं-पाटलपुष्पम् 'गुलाब' इति भाषप्रसिद्धम् मल्लिका विचिकत-पुष्पम् 'वेछि' इति भाषाप्रसिद्धम् चम्पकाशोकपुन्नागाः, प्रसिद्धा एवं चूतमञ्जरी, आम्र-मञ्जरी नवमालिका-नूतनमालिका वक्तलः केसरः यः, स्त्रीमुखसीघुसिक्तो विकसति तत्पुष्पम् । तिलको यः स्त्रीकटाक्षनिरीक्षितो विकसति त पुष्पम्-करवीरकुन्दे प्रसिद्धे कुवनसम् कुव इति नाम्ना वृक्षविशेषस्तत्पुष्यम् कोरण्टकं तन्नामकपीतवर्णपुष्पम् पत्राणि-मरुवक पत्रादीनि दमनकः एतैः वरसुरभिः अत्यन्तसुरभिः, तथा सुगन्धाः, शोभनचुणीस्तैषां गन्धो यत्र स तथा भूतस्तस्य अत्र तद्धित प्रत्ययः पश्चात् विशेषणद्वयस्य कर्मधारयो बोध्यः, इदं च क्रसु-मनिकरस्यांग्र वक्ष्यमाणस्येति विशेषणम् पुनः कीदृशस्य तत्राहः 'कयग्गहगहिअकरयखप्रध्मट्ट-विष्पमुक्तस्य' कचगृहगृहीतकरतलमभ्रष्टिविप्रमुक्तस्य, तत्र कचग्रहः केशानां ग्रहणम् गृहीत-स्तथा तदनःतरं कन्तला द्विप्रमुक्तः सन् प्रभ्रष्टस्तस्य पुनः कीदशस्य 'दसद्धवण्णस्स' दशाद्धे-वर्णस्य पश्चवर्णस्य एवं विशेषणविशिष्टस्य 'कुसुमनिकरस्स' कुसुमनिकरस्य पुष्पसमृहस्य 'तत्थ चित्तं' तत्र दीर्थंकरजन्ममहोत्सचे चित्रम् अश्चर्यजनकम् 'जण्णुस्सेहप्पमाणमित्तं' जान्त्सेध प्रमाणमात्रम् तत्र जान्त्सेधप्रमाणेन प्रमाणोपेतपुरुषस्य जानुं यावद् चत्वप्रमाणं चतुरङ्गुल चरणचतुर्विशत्यङ्गुलजङ्घयोरुचत्वमीलनेन, अष्टाविशत्यङ्गुलरूपं तेन समाना मात्रा यस्य स तथा भूतस्तम् 'ओहिनिकरं करिचा' अवधिनिकरम् अवधिना मर्यादया निकरं विम्तारं कृत्वा 'चंदप्पभरयणवहरवेरुलिअ विमलदंडं' चन्द्रप्रभरत्नवज्रवैहूर्यविमलदण्डम्-तत्र चन्द्रप्रभाः,

अजोक, पुन्नाग, चूनमञ्जरी-आमकी मञ्जरी, नवमल्लिका पञ्जल, तिलक, कनेर, ज्ञन्द, ज्ञञ्जक कोरण्ड पत्र मरुवा एवं दमनक इनके श्रेच्छ सुरक्षिगंधयुक्त ऐसे कुसुमों से जो हाथों से छूते ही जमीन पर गिर पड़े थे एवं पांच वर्णों से युक्त थे उनकी पूजाकी उस पूजा में जानृत्सेध प्रमाण पुष्पों का ऊंचा ढेर लग गया अर्थात् २८ अंगुल प्रमाण पुष्पराद्दा रूप में वहां इकड़े हो गये 'जाणुस्सेह प्रमाणिमत्तं ओहिनिकरं करेइ' इस प्रकार जानृत्सेध प्रमाण पुष्पों की ऊंची राशिको 'करित्ता चंदप्पभरयणवहरवेरिलयविमलदण्डं कंचणमणि रयणभित्त चित्तं काला- गुरुपवरकुंदरवकतुरुकक धूव गंधुक्तमाणुविद्धं च धूमविद्धं वेरिलयमयं कडुच्छुयं

पुन्नाम, यून मंजरी, आस मंजरी, नव मिल्लिंश, णहुझ, तिलिंश, डिजिंश, ड्रेन्ड, डेंग्जरं, डेंग्डें, डेंग्जरं, डेंग्डें, सरवा. तेमज डमनंड को अधाना श्रेष्ठ सुरिक्षणंघ युड्त केवा डेंसुमें थी है जेकों द्वाधना स्पर्श मात्रधी ज जमीन ઉपर भरी पड्या देतां अने पांच वर्षोधी युड्त देतां—तेमनी पृज्य इरी. ते प्र्लामां द्वान्तसंघ प्रमाण पुष्पोनी देशकों डवें। केटेंदी है २८ आंगल प्रमाण पुष्पारी त्यां केडेंत्र डरवामां आवी. 'जाणुस्तेहवमाणित्तं ओहिनिकरं करेइ' आ प्रमाणे जन्तसेघ प्रमाण पुष्पोनी शिंथी राशी हरी 'करित्ता चंदापमरयणवहरवेहिक्यविमलद्वं कंचणमणिरवणमत्तिचां कालागुरुपयरकुंद्रककतुरुककध्व गंधुत्तमाणुविद्धं च धूमविट्ट वेहिल्यमयं कहुच्छुयं प्रमाह्दं पुष्पेनी देशकी देशी धर्मी

चन्द्रकान्ताः रत्नानि चन्द्रकान्तादीनि वज्राणि हीरकाः वैद्याणि तम्रामरत्निक्षेषाः, तन्मयो विमलो दण्डो यस्य स तथा भूतरतम् इदं चाग्रे बह्यमाणं करुच्छुकम् इत्यस्य विशेषणम् पुनः कीहरम् 'कंयणमणिरयणमत्तिन्ति' काञ्चनमणिरत्नमितिवित्रम् तत्र काञ्चनमणिरतानां या, भक्तयः-रचनास्ताभिश्वित्रम् चित्रितम् पुनः कीहराम् 'कालागुरुपवाकुंदुरुकतुरुकपूर्वापुन्तमाणुदिद्धं च' कालागुरुपदरकुन्दुरुक्ततुरुकः पूनान्धोत्तमानुविद्धां च। तत्र कालागुरु प्रसिद्धः कृष्ण भूपः, इति कुन्दुरुकः, चीडा तुरुकः लोहवानितिप्रसिद्धः, सिव्हकस्तेषां गन्धोत्तमः सौरम्योत्कृ टो यो भूपः तेनानुविद्धा-मिश्रा वा इत्यर्थः, तां च, अत्र च शब्दो विशेषणसम्भवये स च व्यवहितसम्बन्धः तेन 'भूमपष्टि च' भूमवित च भूमश्रेणिम् 'विणिम्युअंतं' विनि मुञ्चन्तम् त्यजन्तम् 'वेरुलिश्रमयं' वेर्ड्यमयम् केवरुवैह्यरत्न घटितम् एवं सर्वविशेषण-विशिष्टम् 'कड्ड्युअं वडुच्छुकं 'पग्नहित्तु' वग्र्यः 'पय्पणं भूवं दाउण जिणवरिद्ससं' प्रयतेन यया बालश्रेष्ठस्य तीर्थकरस्य भूषभूमाङ्गले—श्रक्षणी नभवतस्तथा प्रयत्नेन भूपं दत्या जिनवरेन्द्रश्य सन्ने ष्टिशिष्टम् तीर्थकरस्य भूषभूमाङ्गले—श्रक्षणी नभवतस्तथा प्रयत्नेन भूपं दत्या जिनवरेन्द्रश्य सन्ने ष्टिशिष्टकत्ता स्था यत्दर्शनमाशौ निरुद्धः, अत्रोहं परेषां दर्शनाष्ट्रप्रस्थि दशास्त्री नस्या-प्रविद्धान स्था सन्दर्शनमाशौ निरुद्धः, अत्रोहं परेषां दर्शनाष्ट्रपरन्धिद्दकारी नस्या-पिति सप्ताप्टवद्यावि अवस्त्र (दशेषु लिपं अवस्त्रिक्ष भत्त्वचिम् दशास्त्री वर्षान्दिक्ष स्वति सप्ताप्टवद्यावि अवस्त्रव (दशेषु लिपं अवस्त्रीक्ष अवस्त्रविक्ष स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्वत्रविक्ष स्थानिक स्थानिक

पगाइइ' राशिकरके फिर उसने चन्द्रकान्त, क्षकेतनादिरतन वन्न एवं वैड्र्य इनसे जिसका विमलदण्ड बनाया गया है, तथा जिन्दके उपर कंचन ग्राणिस्त आदि के हारा नाना प्रकार के विज्ञों की रचना हो रही है, काला गुरु-कृष्ण, घूप, कुन्दुरुष्क-चीड़ा तुन्दक-लोबान-इनकी गन्धोक्तम घूप से जो युक्त है तथा जिसमें से धूमकी शेणी निकल रही है ऐसे धूक्तडुच्छुक घूपजलाने के कटाहे को जो कि वैड्र्यस्त का बना हुआ था-लेकर के 'पपएणं घुवं दाउण जिणविद्मस समाह्यधाई ओसिस्ता दसंगुलिअं अंअिंट करिश मत्यधिमा पथओं अहसय विसुद्धगंधजुत्तेहिं महावित्तेहिं अत्थजुत्तेहिं संधुण३' वही सावधानी के साथ घूग जलाई धूप जला करके फिर उसने जिनचरेन्द्र की सावधानी के साथ घूग जलाई धूप जला करके फिर उसने जिनचरेन्द्र की सावधानी के साथ घूग जलाई धूप जला करके फिर उसने जिनचरेन्द्र की सावधानी के साथ घूग जलाई धूप जला करके फिर उसने जिनचरेन्द्र की साल आठ पद

ते हो अन्द्रशन्त कर्रेतनाहि रान, वळ अने वैर्ग स्मानाशिकी। विश्व हां अनादवामां आवि। के तेमळ केनी उत्तर कंचन मिस्तिन विगेन द्वारा अनेक विध यित्रेती रचना करवामां आवी है. काला गुरु, कृष्णु-धूप, कृत्दुरुष्ठ-चीडातुरुष्ठ-दीआध, स्मिमना अन्धीत्तम धूपधी ते सुक्त हे, तेमळ केमांधी धूप-श्रेतींकी। शीक्ष्णी रही हे, स्मेवा धूप कड्वछ-धूप सण्याववाना कटाइ के के वैद्र्य रत्नधी निर्धित हती लक्षी भ्याविम प्रश्ने वाकणं जिणविद्दस्य सत्तद्वपयाइं ओसिरता दसंगुलिअं अंजिलं करिअ मत्यविम प्रश्ने अट्टसय-विमुद्धगंधगुत्ते हिं महावित्ते हिं अत्यनुत्ते हिं संशुग्ह ' भूभ क सावधानी पूर्वक तेमां धूप सण्याविन प्रश्ने तेशे किन वरेन्द्रनी सात-आठ उगला आगण वधीने

अञ्जर्कि कृत्वा 'पयओ' प्रयतः-यथा स्थानमुदात्तादि स्वरोच्चारणेषु प्रयत्नदान् सन् 'अट्टस-य विसुद्धगंथजुत्तेहिं अष्टशतविशुद्धग्रन्थयुक्तैः, अष्टोत्तरशतप्रमाणै विंशुद्धेन ग्रन्थेन युक्तैः 'महावित्तर्हि' महावृत्तेर्हि' महावृत्तेः महाकाव्यैः यहा महाचरित्रैः 'अपुणस्त्तर्हि' अपुनस्त्तैः 'अत्थ जुत्तेहिं' अर्थयुक्तैः, चमस्कारिव्यङ्गयुक्तैः, 'संथुणइ' संस्तीति तस्य संस्तवनं करोति 'संशुणित्ता' संस्तृत्य 'वामं जाणुं अचेइ' वामं जानुम् अश्वति, उत्थापयति 'अंचित्ता जाव' अश्चित्वा, उत्थाप्य यावत्करणात् 'दाहिणं जाणुं धरणिअलंसि निवाडेइ' दक्षिणं जानुं धरणी-तस्रे निपातयति, स्थापयति इति ग्राह्मत् 'करतलपरिहियं मत्थए अंजर्लि कदटु एवं व्यासी' करतलपरिग्रहीतं मस्तके अश्वलि कृत्वा एवम् वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत यदवादी-त्तदाह 'णमोऽत्युते सिद्ध बुद्धं इत्यादि 'णमोत्युते सिद्धबुद्धनीरयसमणसामाहियए मत्तसम-जोगि सल्लगत्तणाण्यभयणीरागदोसणिरममणिरसंगणीसल्लमाणमूरण गुणरयण सीलसागर मणंतमप्पमेय भवित्र थम्मवरचाउरंतचकवही णमोऽन्युते अरहओचि कट्डु एवं वंदइ णमंसइ' हे सिद्ध 'हेबुद्ध' ज्ञानतत्व 'ते तुभ्यं न मोऽस्तु अत्र सर्वाणिपदानि सम्बोधने बोध्यानि बनाकर और उसे मस्तक के ऊपर करके १०८ विशुद्ध पाठों से युक्त ऐसे महा-काव्यों से जो कि अर्थ युक्त थे-चमत्कारिक व्यङ्गकों से युक्त थे-एवं अपुनरुक्त थे स्तुति की 'संथुणित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचित्ता जाव करयल परिगाहियं मत्थए अंजलि कष्ट एवं वयासी' स्तुति करके फिर उसने अपनी वायी जानुको ऊंचा किया और उंचा करके यावत् दोनों हाथ जोडकर मस्तक पर उन्हें अंज-लिरूप में करके इस प्रकार से उसने प्रसुकी स्तुति की-यहां यावत्पद से 'दाहिणं जाणु घरणियतंसि निवाडेइ' इस पाठका संग्रह हुआ है 'णमीत्थु ते सिद्ध बुद्धणीरयसमण सामाहिश समन समजोगि सल्लगन्तण णिब्मय णीराग-दोसणिम्ममणिस्संगणीसल्लमाणसूरणगुणरचणसीलसागरमणंतमप्पमेच भविय धम्मवरत्वाउरंत चक्कवटी णमीत्यु ते अरहओ त्ति कट्टु एवं वंदइ णमंसइ' हे

हशे आंगणीकी केमां परस्पर संशुक्त थयेंदी छे, क्रेवी आंक ि अनावीने अने ते आंक ि अने कि भरते उप मुद्दीने १०८ विशुद्ध पाठेंग्रियों युक्त क्रेवा मद्धा क्षां विशेषी है के क्रेम अर्थ युक्त द्धता, यमत्क्षारी व्यं व्येग्रियों युक्त द्धता. तेमक अपुनरुक्त द्धता—तेष्ठे स्तुति हरी. 'संशुणित्ता वाम जाणुं अंचेइ, अंचित्ता जाव करयलपरिमाहियं मत्थए अंजिल कद्दु एवं वयासी' रति हरीने पछी तेष्ठे पेताना वाम जानुने शिया हेरी. हिंचा हरीने यावत् अने देशे हरीने यावत् अने देशे हरीने यावत् अने देशे हरीने भरते हथे के दीने, भरते हथे पर पेताना दायोगी आंक ि इपमां अनावीने आ अमाध्ये स्तुति हरी आहीं यावत् पहथी 'दाहिणं जाणुं घरणियलगंसि निवाहेइ' आ पाठ संशुक्ति थया छे. 'णसोत्श्रुते सिद्ध बुद्धणीरय समणसमाहिआ समत्त समजोगि सल्लगत्तण गिव्मय णीराग दोसणिमममणिरसंग णीसल्लमाणमूरण गुणर्थणसीलसागरमणंत मध्यम्य पीराग दोसणिमममणिरसंग णीसल्लमाणमूरण गुणर्थणसीलसागरमणंत मध्यमेय भविय धम्मवरचाउरंतचक्कवृति णमोत्श्रुते अरहुओ ति क्टूटु एवं वंद्व णमंसद्दं

तथाहि हे नीरजाः 'कर्मरजो रहित' हे श्रमण तपस्विन् ! हे समाहित ! अनाकूलचित ! हे समाप्त कृत कृतत्वात् यद्वा सम्यक् प्रकारेण आप्त 'अविसंवादि वजनवात् हे समयोगिन् 'ख्रालमनोवाकाययोगित्वात् हे सल्यक्तिन ! हे निभय हे नीरागद्वेष रागद्वेषवित 'निम्मेम! ममतारहित हे निःसङ्गसंगवर्जित ! निर्लेष हे निःशल्य शल्यरित हे मानम्रण ! मान मईन ! हे गुणरत्न शिक्सागर 'गुणेषु रत्नम् उत्कृष्टं यच्छीलं बद्धाचर्यक्रपं तस्य सागर' हे अनन्त, अनन्त झानात्मकत्वात् मकारोऽलाक्षणिकः, एवमग्रेऽिष हे अप्रपेय 'प्राकृतज्ञानापरिच्छेचा सामान्य पुरुषेरज्ञातस्वरूप अशीर जीवस्वरूपस्य छद्मस्यः परिछेत्रप्रक्रयन्तात् अथवा हे अप्रमेय' मगवद् गुणानामनन्तत्वेन संख्यातुमशक्यत्वात् हे भव्य 'मुक्तिगमन योग्य' अत्यासन्त भवसिद्धित्वात् 'हे धर्मदर चातुरन्तचक्रवर्तिन्' धर्मण धर्मकृषेण वरेण प्रधानेन भावचकत्वात् चातुरन्तेन चतुर्णा गतीनामन्तो यस्य स चातुरन्तच्तेन चतुर्गत्वन्तकारिणा चक्रेण वर्तते इत्यवंशीलस्तस्य संबोधने हे धर्मदर चातुरन्तचक्रवर्तिन् ! नमोऽस्तुते तुभ्यम् अहते जगत्यू-ज्याय इति कृत्वा इति संस्तृत्य बन्दते नगर्यति 'वंदित्ता' नमंतित्ता' वंदित्वा, नयस्यत्वा 'णच्चासण्णे णाइद्रहे ' नात्यासन्ने नातिद्रे यथोचितस्थाने 'स्रस्त्रसभाणे जाव पञ्जु 'णच्चासण्णे णाइद्रहे ' नात्यासन्ने नातिद्रे यथोचितस्थाने 'स्रस्त्रसभाणे जाव पञ्जु

सिद्ध हे बुद्ध ! हे नीरज ! कर्मरज रहित ! हे श्रमण ! हे समाहित-अनाकुलचित कृतकृत्य होने से या अविसंचादि वचनवाछे होने से हे सगाप्त हे सम्पद्ध
प्रकारों से आप्त ! कुद्राल वाक्कायमनोयोगी होने से लमयोगिन ! हे दालयकर्त्तन ! हे निर्भय ! हे नीराग देख ! हे निर्भय ! हे निरसंग ! हे निर्श्वा ! हे मान सूरण ! मानमर्दत ! हे जुणरतन चीलसागर ! हे अनन्त ! हे अवसेय ! हे
भव्य-मुक्ति गमनयोग्य ! हे धर्मवीर ! चातुरन्तचक्रवर्तिन् ! श्रिरहंत आप जगत्पूज्य के लिये मेरा नमस्कार हो । इस प्रकार से स्तुति करके उसने प्रभुक्ती वन्दना
की उन्हें नमस्कार किया 'वंदित्ता नमंसित्ता णच्चास्त्रणे णाइदूरे सुस्सुसमाणे जाव पज्जुवासह' वन्दना नमस्कार करके फिर वह अपने यथोचित स्थान पर
धर्म सुनने की अभिलावाबाला होकर यावन्त्र पर्युपासना करने लगा । यहां वाव-

हे सिद्ध! हे भुद्ध! हे नीरळ! इमरेन्ळ रहिन! हे श्रमणु! हे समाहिन! अनापुस ित्त, द्वृत कृत्य होवाथी अथवा अविसंवादित वयनेवाला होवाथी, हे समाप्त! हे सम्यक् प्रकारथी आप्त! इशल वाक्ष्यय भनेवित्ती होवाथी समये। जिन्! हे शब्यक्र्यन! हे निर्भाय! हे निर्भाय! हे निर्भाय! हे मान भर्णु! हे निर्भाय! हे मान भ्रणु! हे मान भर्षु! हे मान भर्षु! हे सान भर्षे हे सान भर्षे हे सान भर्षे हे सान भर्षे है सान योग्य, है धर्मवर! यातुरन्त यक्षविति है अविदे ते! क्यार्य भ्रमे भारा नभरकार है आ प्रभाणे स्तुति करीने तेणे प्रभुनी वंदना करी, प्रभुने नभरकार कर्या. 'वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासणे लाइद्रे सुसस्माणे जाव पञ्जवासइ' वन्दना तेमक नभरकार करीने पछी ते पाताना यथोयित स्थान हपर धर्म सांसणवानी असिक्षायालों। धर्धने यावद

वासइ' शुश्रूपमाणो यावत्पर्युपास्ते सोऽच्युतेन्द्रः, अत्र यावत् पदात् 'नसंसमाणे तिविहाए पज्जुवासणाए' नमस्यन् विविधया पर्युवासनयेति अथाविष्टानाभिन्द्राणां वक्तव्यं स्राघवादाह 'एवं जहा' इत्यादि 'एवं जहा अच्छुयस्त तहा जाव ईसाणस्य धाणियव्वं' एवम् उक्तविधिना यधाऽच्युतेन्द्रश्याभिवेककृत्यं तथा यावत् ईशानेन्द्रस्यापिः अधिषेककृत्यं भणितव्यम्

अत्र यावत्पदात् प्राणतेन्द्र शनःकुमादारभ्य ईपानेन्द्र पर्यन्तस्य ग्रहणम् शक्राभिषेकस्य सर्वत श्ररमत्वात् 'एवं भवणवद्दवाणमंतरजोइसिआ य स्रूरपञ्जपसाणा सएणं परिवारेणं पत्तेअं पत्तेअं अधिसंचद् 'एवम् उक्तप्रकारेण भवनपतिवानव्यन्तरज्योतिष्काश्चन्द्राश्च सूर्यपर्य-वसानाः स्वकेन परिवारेण सह प्रत्येकमितिष्श्वनितः, अभिषेकं कुर्वन्ति, अथावशिष्टशकेन्द्र-

त्यद से नमंसमाणे तिविहाए पज्जवासणाए' इस पाठका ग्रहण हुआ है। यहां जितने ये विहोषण बालक अवस्थापम कषभक्कनार में प्रदर्शित किये हैं वे भव्य पथको छोडकर 'आविनिभृतवत्' इस कथन के अनुसार पचपि उनमें आगे ऐसी अवस्था होनेवाली है वर्तमान में यह अवस्था नहीं हैं किर भी उसकी अभिव्यक्ति हो चुकी है ऐसा सानकर उपकार-कर उनकी सार्थकता समझलेनी चाहिये अतः इस प्रकार के कथन में कोई विरोध नहीं है भावी पर्याय को भृत पर्याय मानकर लोकों भी अथनव्यवदार देखा जाता है इस सूत्र में जो नमोऽस्तुपत हो बार प्रकट किया गया है वह पुनरुक्ति दोषावह नहीं हैं प्रत्युत लावव प्रकट करता है क्योंकि हरि-इन्द्र ने घड़ां जितने विहोषण प्रयुक्त किये हैं उनके-सबके साथ हम पदका प्रयोग उसे करना इप्ट है, क्योंकि उसके हृद्य में भिक्ति का प्रवाह उपछ रहा है सो ऐसा न करके जो दो बार ही नमोऽस्तु पदका प्रयोग उसने किया है वह लावब के निमित सिद्ध हो जाता है यहां जो सात

पर्युपासना करवा लागी। अहीं यावत पहथी 'नमंसमाणे तिविहाए पञ्जुबासणाए' आ पाठ संगृहीत थये। छे. अहीं केंटनां विशेषण्ये। अप्तत्र अपत्यापन अपलक्षमार माटे प्रदर्शित करवामां आवेला छे ते लज्य पहने आह करीने क. 'माविनिमूतवन' आ क्थन मुक्क के छे आगण ते छोछी छोवी अवस्था प्राप्त करशे पण् वर्त मानमां आ अवस्था नथी छतां छो, तेनी अलिक्यिहित थर्ड यूडी छे. े वुं मनीने—उपयार करीने—छेमनी सार्व कता समल होवी कोई छो छोटला माटे आ प्रकारना क्थनमां कें पण् कताना विशेष नथी. सावी पर्यायने सूत्र पर्याय मानीने लेकिमां पण्डु कथन अवहार केवामां आवे छे. आ सूत्रमां के 'नमोइस्तु' पह के वार आव्युं छे तथी अत्रे पुनरुक्ति होष थये। छे, आम मानवुं निह्ने, परंतु अहीं ते लावन प्रकट करे छे. केमके हिन्छने अहीं केटलां विशेषण्ये। प्रयुक्त वर्या छे ते ध्वानी साथे के पहना प्रयोग छिट छे; हैमके तेना इहयमां सिद्धि प्रवाह उछली रहारे छे. ते। आवुं न करीने तेण्ये के वर 'नमोइस्तु' पहना प्रयोग कर्य के ते लावन मिन्ने क कर्यो छे खेवुं सिद्ध थर्ड क्या छे. अहीं के सात—आह उपला

स्यावसरः, 'त एणं' इत्यादि 'तएणं से ईसाणे देविदे देवराया पंत्रईसाणे विउन्वइ' तत् स्त्रिष्टीन्द्राभिषेकानन्तरम् खल्ल, ईशानो देवेन्द्रो देवराजः पञ्चिशानान् विकुर्वति विकुर्वणा-शक्त्या निर्माति एक ईशानः पञ्चधा भवतीत्यर्थः, तदेव विभजते 'विउवित्ता एगे' इत्यादि विउन्वित्ता' विकुर्वित्वा, एकः पञ्चधाभूत्वा 'एगे ईसाणे भगवं तित्थयरं करयलसंपुढेणं गिण्हइ'

आठ पद आगे जाना इन्द्रका कहा गया है वह 'में अङ्ग पूजा के निमित्त बैठकर यदि अन्य के प्रभुक्ते दर्शन करने के मार्ग को रोकलेना हुं तो आगत लोकों के दर्शन करने रूप कार्य में मैं विघ्नकारी बन जाउंगा' इसके इस अभिप्राय को लेकर कहा गया है।

अब सूत्रकार अन्य इन्द्रों के सम्बन्ध की वक्तव्यता को लाघव से प्रकट करते हुए कहते हैं 'एवंजहा अच्चुअस्स तहा जाव ईसाणस्स भाणियव्वं, एवं भवणवहवाणमन्तर जोइसिआ य सूरपज्जवसाणा सएणं परिवारेणं पत्तेयं र अभिसंचंति' जिस प्रकार इस पूर्वोक्त पद्धित के अनुसार अच्युतेन्द्र का अभिषेक कृत्य कहा गया है उसी प्रकार से प्राणतेन्द्र का यावत ईशानेन्द्र का भी अभिषेक कृत्य कहलेना चाहिये शक्त के द्वारा किया गया अभिषेक कृत्य सब से अन्त में होता है इसी प्रकार से भवनपित वानव्यन्तर तथा ज्योतिष्क के इन्द्र चन्द्र सूर्य इन सब इन्द्रों ने भो अपने अपने परिवार के लाथ प्रसुका अभिषेक किया 'तएणं से ईसाणे देविदें देवराया पंच ईसाणे विज्यवह' इसके बाद इशानेन्द्र ने पांच ईशानेन्द्र की विक्वविणा की—अर्थात् ईशानेन्द्र स्वयं पांच ईशानेन्द्र धन गया—'विज्यवित्ता एगे ईसाणे भगवं तित्थयरं करयलसंपुढे णं गिण्हह' इनमें

આગળ જવું-એવું જે ઇન્દ્ર માટે કહેવામાં આવેલું છે તે-'હું અંગ પૂજા નિમિત્તે બેન્નીને જેન્નીને પ્રભુ-દર્શન કરવા માટે આવેલા અન્ય જનાના માર્ગના અવરાધક અનીશ તો આગત લોકોના દર્શન કરવા રૂપ કાર્યમાં હું વિધ્નકારી થઇશ. એના એ અભિપ્રાયને લઇને જ કહેવામાં આવેલું છે.

हुवे सूत्रधार अन्य धन्द्रोना सम्भंधमां क्षायतथी वक्ष्तव्यता प्रष्ठट करतां कहे छे'एवं जहा अच्चुअस्स तहा जाव ईसाणस्स माणियव्यं, एवं भवणपद्वाणमन्तरजोइसिआ य
सूरवज्जवसाणा सएकं परिवारेणं पत्तेयं र अमिसिंचंति' के प्रमाणे आ पूर्वोक्ष्त पद्धित भुक्षभ
अव्युतेन्द्रना अक्षिषेक कृत्य स्पष्ट क्ष्यमां आव्यु छे ते प्रमाणे क प्राण्तेन्द्र यावत्
धशानेन्द्रनुं पण् अभिषेक-कृत्य कही क्षेत्रं लेधिओ शक्षवर्ड करवामां आवेद्धं अभिषेक कृत्य
भधाना आंतमां कहेतुं लेखिओ. आ प्रमाणे अपनपति वानव्यंतर तेमक ल्योतिष्ठना
धन्द्र, अन्द्र, सूर्यं को अधा धन्द्रोओ पण् पोत—पोताना परिवार साथै प्रभुने। अक्षिषेक
क्षेर्शानेन्द्रोनी विद्वर्णा करी. क्षेट्र के ध्रानेन्द्र पेते पांच ध्रानेन्द्रोना इपमां परिण्यत

तंत्रेक ईशानः भगवन्तं तीर्थकरं करतलसंपुटेन करतलयोः, उर्ध्वाधी व्यवस्थितयोः संपुटं श्रुक्तिका संपुटमिवेत्यर्थः, तेन एक्वाति 'गिक्किता' एहीत्वा 'शीहासणवागए पुग्त्थाभिष्ठहे सिण्णासण्णे' सिंहासनवरगतः पौरस्त्याभिष्ठखः पूर्वाभिष्ठखः सिक्षपण्णः, उपविष्यान् 'एगे ईसाणे पिहुओ आपवत्तं धरेह' एक ईशानः पृष्टतः, आतप्तं—छत्रं धरित 'दृवे ईसाणा उभओ पिस त्रामक्त्रखं करेति' हाशीशानी उभयोः पार्श्वयोः, चामरोत्क्षेपं कुक्तः 'एगे ईसाणे पुरओ सल्पाणी चिहुइ' एक ईशान पुरतः श्लपाणः श्लः पाणी हस्ते यस्य स तथा भूतः सन् तिष्ठति 'तएणं से सक्षे देविदे देवराया आभियोगे देवे सहावेद' ततः, ईशानेन्द्रेण भगवतः, तिर्थकरस्य करसंपुटे प्रहणानन्तरं खलु स शको देवेन्द्रो देवराजः, आभियोग्यान, आज्ञाकारिणो देवान् शब्दयति आह्यपति 'सदावित्ता' शब्दयित्वा, आहूय 'एसो वि तहचेव आणात्ति देइ ते वि तहचेव उवणाति' एषोऽपि ककः, तथैव अच्युतेन्द्रवद्भिषेकविषयकामाञ्चिकां ददाति तेऽपि—आभियोगिकाः, देवाः, तथैव अच्युतेन्द्राभियोग्यदेवाइव, अभिषेकवस्तुनि,

एक ईशानेन्द्र ने भगवान तीर्थंकर को अपने करतल संपुर द्वारा एकडा गिण्हिसा सीहासणवरणए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे' और एकडकर पूर्विद्धा की ओर मुंह करके सिंहासन पर बैठ गया 'एगे ईसाणे पिट्टओ आयवसं धरेइ, दुवे ईसाणा उभओ पासि चामरुखंबं करेंति' दूसरे ईशानेन्द्र ने पीछे से खडे होकर प्रमुक्ते कपर छत्रताना दो इशानेन्द्रों ने दोनों ओर खडे होकर प्रमुक्ते कपर चामर होरे 'एगे ईसाणे पुरओ सूलपाणी चिट्टह' एक ईशानेन्द्र हाथमें शूल लेकर प्रमुक्ते साम्हने खडा हो गथा 'तएणं से सक्के देविदे देवराया आभियोगे देवे सदावेह' इसके बाद देवेन्द्र देवराज शक ने अपने आभियोगिक देवों को बुलाया—' सदा दिसा एसो वि तल्चेव अभिसेआणिस देइ ते वि तं चेव उवणेति' और बुलाकर इसने भी अच्युतेन्द्र की तरह उन्हें अभिषेक योग्य सामग्री लानेकी आज्ञा दी

थर्ध गये। 'विडिन्सिता एगे ईसाणे भगवं तित्थयरं करयळसंपुडेणं गिण्हइ' अभांथी ओक ध्रानिन्द्रे अभांथी लेक ध्रानिन्द्रे अभांथी लेक ध्रानिन्द्रे अभांथी लेक प्रतिस्था करति अप्रतिस्था कर्मित्रे अप्रति सिद्धासन पर लेसार्था प्रतिमानि सिण्यासणें। अने प्रति प्रति प्रति प्रति हिसाणा उभजे पासि चामरुक्तेवं करें ति' भीका ओक ध्रानिन्द्रे पाछण शिक्षा रद्धीने प्रसु अपर छत्र ताष्युं. ले ध्रानिन्द्रों के अन्ते तरक शिक्षा रद्धीने प्रसु अपर छत्र ताष्युं. ले ध्रानिन्द्रों के अन्ते तरक शिक्षा रद्धीने प्रसु अपर यमर हे अप्रति असु अपर छत्र ताष्युं. ले ध्रानिन्द्रों के अन्ते तरक शिक्षा निन्द्र द्वायमा श्री कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा क्षा सुद्धा साम अप्रति साम श्री शिक्षा निन्द्र देवराज्य अभियोगे देवे सहाचेड्' त्यार आह देवेन्द्र देवराज्य शक्ते पोताना आसियोगिक देवेन्द्र वेवराज्या—'वहावित्ता एसो वि तह चेत्र अभियेआणित देइ ते वि तं चेत्र उवणे ति' अने भिक्षाचीने तेथे पण् अन्युतेन्द्रना आक्षित्रे अभावे अधाने अक्षिके थे। यस साम श्री ओक्षत्र करवानी आज्ञा करी. अन्युतेन्द्रना आक्षित्रे अभावे अक्षिके थे। अस्य साम श्री अक्षत्र करवानी आज्ञा करी. अन्युतेन्द्रना आक्षित्रे क्षा ते अक्षति अक्षति अक्षति साम साम श्री क्षेत्र करवानी आज्ञा करी. अन्युतेन्द्रना आक्षित्र क्षा ते अक्षति अक्षति अक्षति अक्षति अक्षति साम श्री क्षेत्र करवानी आज्ञा करी. अन्युतेन्द्रना आक्षित्र क्षेत्र करवानी आज्ञा करी.

उपनयन्ति शक्रसमीपे आनयन्ति, अथ शकः किं कृतवान तत्राह 'तएणं इत्यादि' 'तएणं से सक्के देविंदे देवराया भगवशो तित्थयरस्स चउदिसिं चत्तारि धवलवसभे विउब्वेड' ततः, अभिषेक सामम्युपनयनानन्तरं खछ स शको देवेन्द्रा देवराजः भववतस्त्रीर्थेकरस्य चतुर्दिशि-चतुर्भागे चतुरो धवल्रवृषभान् विकुर्वति 'सेए' श्वेतान् श्वेतत्वमेव द्रहयति-'संखद्रक-विमङ्गिम्मलद्धिषणगोखीरफेणर्यणणिगर्ष्यगासे' इांखद्दलविमलनिर्मलद्धिवनगोक्षीरफेन-रजतिकर प्रकाशो न तत्र शङ्खस्यदर्छं चुर्शम् विमलिनिमलः-अत्यन्तस्यच्छो यो द्धियनो द्धिपिण्डो वर्द्धं द्धीत्पर्थः गोक्षीरफेनः गोद्दुग्यफेनः, रजतिनकरः रजतसमूहः, एतेषामिव-प्रकाशो येपांते तथा भूतास्तान् 'पासाईए' प्रासादीयान् मनः प्रसम्नताजनेकस्वात् 'दरस-णिज्जे' दर्शनीयान् दर्शनयोग्यत्वात् 'अभिरूवे पडिरूवे' अभिरूपान् प्रतिरूपांश्च मनौहार-कलात् एवं भूतान् श्वेतान् वृपभानं विकुर्वणाशक्तया निर्मातीत्वर्थः तदननारं किमित्याह 'तए णं' इत्यादि 'तए णं है सि चउण्हं धवलवसभागं अट्टर्डि सिंगेहिंहो अट्टतोअधाराओं णिग्गच्छंति' ततः तद्दनन्तरं खल्ल तेषां चतुर्णी धवलपृषभानाम् अष्टभ्यः गृङ्गेभ्योऽष्टौ तोय-धाराः, जलघारा निर्गच्छन्ति निःसरन्ति 'तएधं ताथो अहतोथ धाराओ उद्धं वेहासं उप्पयंति, अच्युतेन्द्र के आभियोगिक देवों की तरह वे दाक के आभियोगिक देव सबस्त अभिषेक योग्य सामग्री को छेकर आगये 'तर णं से सक्के देविदें देवराया भगवओ तित्थयरसम चडिंसि चलारि धवलवसभे विउन्वह' इसके बाद देवेन्द्र देवराज शक ने भगवान् तीर्यकर की चारों दिशाओं में चार श्वेत यैलों की विक्रवेणा की 'सेए संखद्लविमलद्धिषणगोखीरफेजरपणणिगरपकासे पासाईए दरसिज्जे अभिरूवे पडिरूवे' ये चारों ही पैल बाह्व के चूर्ग जैसे अति-निर्मल दिधके फेन जैसे, गोक्षीर जैसे, एवं रजत समूह जैसे श्वेत वर्ण के थे प्रासादीय-मनको प्रसन्न करनेवाले थे दर्शनीय-दर्शन योग्य थे अभिरूप और प्रतिरूप थे 'तएणं तेसि चडण्हं घवलवसभाणं अदृष्टिं सिगेहितो अदृतोय-धाराओं णिग्गच्छंति' इन चारों ही घवल वृषभों के आठ सीगों से आठ जल

याजिक हेवानी कोम ते शहना आलिये। जिह हेवा समस्त अलियेह याज्य सामश्री लहने छपिया थया. 'तएणं से सक्के देवि दे देवराया भगनओ तित्ययरस्य चन्नदिसिं चत्तारि धन्नखन्नसमे विन्नजन्नदे त्यार आह हैवेन्द्र हैवराक शहे लगवान तीर्थ हरनी यारे हिशा-क्रोमां यार सहत हुपसीनी विदुर्व हु हरी. 'सेए संख्रालविमलद्धियणगोखीरफेग, रयण णिगरपकासे पादाईए द्रसणिज्जे अभिक्रवे, पहिस्ते' से यार वृष्ति शामना यूर्ण केवा अतिनर्भण हिया ही हु केवा, भान्या हिशा-क्षार क्षार हिया ही हु केवा श्वेतवर्ण क्षार हिया ही हु केवा श्वेतवर्ण क्षार हिया ही हु केवा श्वेतवर्ण क्षार हिया हिया ही हु केवा श्वेतवर्ण क्षार हिया हिया ही हिया है हिया है हिया है हिया है हिया है हिया हिया है हिया

ततः खळु ताः, अष्टौ-तोयधाराः, उर्ध्वं विहायसि उत्पनन्ति उर्ध्वं चळन्ति 'उष्पइसा' उत्पत्य 'एगओ मिलायंति' एकतो मिलन्ति 'मिलाइत्ता' मिलित्वा 'भगत्रओ तित्थयरस्स भुद्धाणंसि निवयंति' भगवतस्तीर्थंकस्य मुर्धिन निपतन्ति, अय शकः कि कृतवान् तत्राह 'तएणं इत्यादि 'तएणं से सके देविंदे देवराया' तुः खळु सशको देवेन्द्रो देवराजः 'चत्ररासीइए सामाणि-यसाहस्तीहिं चतुरशीत्या सामानिक सहस्रैः, त्रयस्त्रिशता त्रायस्त्रिशकै यावत् संपरिष्टृत्तस्तैः, स्वाभाविकवैकविककार्वैककार्वेमेहता तीर्थकराभिषेकेण अभिषिञ्चति-इत्यादि सूत्रोक्तोऽभिषेकविधिः शकस्य अन्यूतेन्द्रबदस्तीति छाघशमाइ-'एयश्लवि' इत्यादि 'एयस्य वि तहेव अभिसेश्रो भा-णियव्त्री' एतस्यापि ईशान-शकस्यापि तथैय, अच्युतैन्द्रवदेव अभिषेको भणितव्यः वक्तव्यः धाराएं निकल रही थीं 'तएणं ताओ अहतीयधाराओं उद्धं वेहासं उप्पयंति' ये आठ जलघाराएं ऊपर आकाश की ओर जा रही थीं-उछल रहीं थी उप्पिश्ता एगओ मिलायंति, मिलायित्ता भगवओ तित्थयरस्स सुद्धाणंसि निवयंति' और उछलकर एकन्न हो जाती थीं फिर वे मिलकर भगवान् तीर्थकर के मस्तक ऊपर गिरती थीं। 'तएणं से सक्के देविंदे देवराया चडरासीए सामाणि य साहस्सीहिं एयस्स वि तहेव अभिसेओं भाणियव्वो जाव णमोत्युते अरहओत्ति कटण . मंसइं जाव पञ्जुबासइ' इसके चाद देवेन्द्र देवराज दाक ने अपने ८४ हजार सामानिक देवों एवं तेतीस जायस्त्रिक देवों आदि से घिरे हुए होकर जन स्यायादिक एवं विकुर्वित कलशों सारा बडे ठाटबाट से तीर्थेकर प्रभुका अभि-पक किया तथा उस आनीत तीर्थकराभिषेक सामश्री से भी तीर्थकर प्रभुका अभिषेक किया, यहां पर जिस पहाति से अच्युतेन्द्र ने तीर्थं कर प्रसुका अभि-षेक किया है वैसे ही पहलि से जाक ने भी तीर्थकर प्रस्का अभिषेक किया यही बात 'एयस्स वि तहेव अभिसेओ भाणियन्वो' सूत्रकार ने इस सूत्र पाठ

खती. 'तएणं ताओ अह तोयधाराओ उदं वेहासं उप्पर्यति' से आहे करण धाराओ। उपर आहाश तरह कई रही खरी—इछणी रही हुनी. 'उपइत्ता एमओ मिलाइंति मिलाइता मग-वओ तित्ययरस्स मुद्धाणंसि निवरंति' सने उछणीने सेहत्र यहं कर्ती हुनी. पछी ते लगनान तीथ 'हरना मस्तह उपर एउती हुनी. 'तएणं से सकते देविंदे देवराया चउरासीए सामाणिय-साहस्सीहिं एयरस वि तहेव अभिसेओ भाणियच्वो जाव णमोत्थृते अरह्ओत्ति कर्टूणमंसइ जाव पडजुवासइ' त्यार आह हैवेन्द्र हैवराक शहे पोताना ८४ हुन्तर सामानिह हैवे। तेमक उउ नायासिंश हैवे। आहिशी आहम्त थहीने ते स्वाल विह तेमक विद्विंत हुन्तर हैवराक शहे में ते स्वाल विह तेमक विद्विंत हुन्तर अलिषेह होती. तथा ते आनीत तीर्थ हरानि किषेह सामश्रीथी एल प्रकृती लिषेह होती आहिशी आहिशों के पद्धियी अन्युतेन्द्र तीर्थ हरानि अलिषेह होती अलिषेह होती अलिषेह होती. सेहरानि अलिषेह होती अलिषेह होती अलिषेह होती अलिषेह होती. सेहरानि अलिषेह होती अलिषेह होती अलिषेह होती अलिषेह होती अलिषेह होती. सेहरानि अलिषेह होती अलिषेह होती. सेहरानि विद्वा अलिषेह होती अलिषेह होती. सेहरानि विद्वा अलिषेह होती. सेहरानि विद्वा अलिषेह होती अलिषेह होती. सेहरानि विद्वा अलिषेह होती अलिषेह होती. सेहराने स

कियत्पर्यन्तमाह 'जाव णमोऽन्धु ने अश्हओत्ति कट्टु वंदइ णमंसइ जाव पञ्जुबासइ' इति याव-न्नमोऽन्तु तेऽहते, इति कुत्वा बन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यत्वा यावत्पर्युपास्ते इति स्त्र संख्या -११॥

अथ कृतकृत्यः, कृको भगवतो जन्मपुरप्रयाणाय, उपक्रमते-तएणं इत्यादि म्लम्-तएणं से सक्के देविंदे देवराया पंच सक्के विउद्यह, विउ विवत्ता एगे सक्के भयवं तित्थयरं करयलपुडेणं गिण्हइ एगे सक्के पिटुओ आयवत्तं धरेइ दुवे सका उभओ पासि चामरुक्खेवं करेंति एगे सक्के वज्जपाणी पुरओ पगडुइ, तए णं से सक्के चउरासीईए सामा-णिअ साहस्तीहिं जाव अण्णेहिअ भवणवइ वाणमंतरजोइसवेमाणि-एहिं देवेहिं देवीहिअ सिंदं संपिडवुडे सिव्बद्धीए जाव णाइयरवेणं ताए उक्किट्राए जेणेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मणणयरे जेणेव जम्मण-भवणे जेणेव तित्थयरमाया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता भगवं तित्थयरं माऊए पासे ठवेइ ठिवता तित्थयरपिंड्स्वगं पिंडसाहरइ पडिसाहरिता ओहोर्जा पडिसाहरइ पडिसाहरिता एगं महं खोमजुअछं कुंडलजुअलं च भगवओ तित्थयरस्स उस्सीसगमूले ठवेइ ठिक्सा एगं महं सिरिदामगंडे तविजल्लेंबूसगं सुवण्णपयरगमंडियं णाणामणि-रयणविविहहारद्वहारउवसोहिय समुदयं भगवओ तित्थयरस्स उल्लोअं सि निक्खित्रइ तण्णं भगवं तित्थयरे अणिमिसाए दिट्टीए देहमाणे देहमाणे सुहं सुहेगं अभिरममाणे चिट्ठइ तएणं से सक्के देविंदे देवराया द्वारा समझाई है। अभिषेक करने के बाद 'जाव णमोत्यु ते अरहओ सि कट्ट

द्वारा समझाई है। अभिषेक करने के बाद 'जाव णमीत्यु ते अरहओ सि कट्ट वंदइ णमंसह जाव पज्जवान्नइ' शक ने भी अच्युतेन्द्र की तरह प्रसुकी पूर्वोक्त सिद्धबुद्ध आदि पदों द्वारा स्तुति करते हुए उनकी वन्दना की और नमस्कार किया बाद में वह उनकी सेवा करने की भावना से अपने यथोचित स्थान पर खड़ा हो गया ॥११॥

અભિષેક બાદ 'जात्र णमोत्थुते अरहओ ति कर्टु वंदइ णमंसइ जाव पञ्जुवासइ' શકે પણ અચ્યુતેન્દ્રની જેમ પ્રભુની પૂર્વોકત સિદ્ધ-બુદ્ધ અદિ પદા વહે સ્તુતિ કરતાં તેમની વંદના કરી. અને નમસ્કાર કર્યા. ત્યાર બાદ તે તેએ શ્રીની સેવા કરવાની ભાવતાથી પોતાના યથાચિત સ્થાને આવીને ઊતા રહ્યો ॥ ૧૧ ॥

वेसमणं देवं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! षत्तीसं हिरण्णकोडिओ बत्तीसं सुवण्णकोडिओ बत्तीसं णंदाइं बत्तीसं भद्दाई सुभगे सुभगरूवजुवणलावण्णेअ भगवओ तिरथयरस्स जम्मणः भवणंसि साहराहि साहरिसा एयमाणतियं पश्चिपणाहि तएणं से वेसमणे देवे सक्केणं जाव विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणिसा जंभए देवे सहावेइ सहावित्ता एवं वयासी-खिष्पामेव भो देवाणुष्पिया! बत्तीसं हिरण्णकोडीओ जाव भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणंसि साहरह साहरिता एअमाणतिअं पच्चिष्णिह तए णं ते जंभगा देवा वेसमणेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा हटूतुटू जाव खिप्पामेव बत्तीसं हिरण्णकोडीओ जाव च भगवओ तित्थयर्स्स जम्मणभवणंसि साह-रंति साहरिता जेणेव वेसमणे देवे तेणेव जाव पच्चिपणंति तए णं से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविंदे देवराया जाव पचप्पिणइ, तएणं से सक्क्रे देविंदे देवराया आभिओगे देवे सहावेइ सहावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! भगवओ तित्थयरस्य जम्मण-णयरंसि सिंघाडग जान महापहपहेसु महया महया सद्देणं उग्घोसे-माणा उग्घोसेमाणा एवं बदह हंदि सुणंतु भवंतो बहवे भवणवइ वाण-मंतरजोइसवेमाणिया देवा य देवीओ अ जेणं देवाणुष्पिया! तित्थ-यरस्स तित्थयरमाउए वा असुभं मणं पधारेइ तस्स णं अजगमंजरि-आइव सयधा मुद्धाणं फुट्टउ त्तिकट्टु घोसणं घोसेह घोसित्ता एयमाण-त्तिअं पचिष्णहत्ति तएणं ते आभिओगा देवा जाव एवं देवो ति अणाए पडिसुगंति पडिसुगित्ता सक्करस देविंद्रस देवरण्णो अंतिआओ पडिगिवखमंति पडिणिवखिनता खिप्पामेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मण णगरंसि सिंघ। डग जाव एवं वयासी हंदि सुणंतु भवंतो बहवे भवणवइ जाव जे णं देवाणुष्पिया! तित्थयरस्स जाव फुष्टिही त्तिकट्टु घोसणगं घोसंति घोसिता एअमाणतिअं पश्चिष्पणंति, तए णं ते बहवे भवणवइ

वाणमंतरजोइसवेमाणिया देवा भगवओ तित्थयरस्स जम्मणमहिमं करेंति करित्ता जेणेव णांदीसरदीचे तेणेव उवागच्छेति उवागच्छिता अट्ठाहियाओ महामहिमाओ करेंति करित्ता आमेव दिसि पाउचमूआ तामेव दिसि पडिगया ॥सू० १२॥

छ।या-ततः खल स शकोदेवेन्द्रो देवराजः पश्चशकान विकुर्वति विकुर्विता एकः शकः भगवन्तं तीर्थक्करं करतलपुटेन गृह्णति एकः शकः, आतपत्रं घरति ह्यौ शकौ उभयोः पार्थयोः चामरोत्क्षेपं कुरुतः, एकः शको वज्रवाणिः पुरतः प्रकर्पति ततः खलु स शकः चतुरश्चीत्या सामानिक सहस्रयीवदन्यैश्र भवनपति वानव्यन्तर्ज्योतिष्कदैमानिकैः देवैर्देवीभिश्र सार्छ-संपरिवृत्तः, सर्वद्धर्या यावनादितरवेण तया उत्कृष्टया यत्रैव भववतस्तीर्थङ्करस्य जन्मनगरं यत्रैव च जन्मभवनं यत्रैव तीर्थकःमाता तत्रैत्रोपागच्छति उपागत्य भगवन्तं तीर्थङ्करं मातुः पार्श्व स्थापयति स्थापयित्वा तीर्यञ्करप्रतिरूपकं प्रतिसंहरति प्रतिसंहत्य एकं महत् क्षीमयुगलं कुण्डलयुगलं च भगवतस्तीर्थङ्करस्य उच्छीर्यकम्ले स्थापयति स्थापयिता एकं महान्तं श्रीदा-मगण्डं श्रीदामकाण्डं वा तपनीयलम्बूवकं सुवर्णप्रतरकपण्डितं नानामणिरत्निविघहारार्द्धहारो-पशोभितसम्रदयं भगवतस्तीर्थद्धरस्य उल्लोचे निश्चिपति तं खल भगवान् तीर्थङ्करः, अनिमि-षया दृष्टया पत्रयन् सुखं सुखेन अभिरममाणस्तिष्टतिः ततः खलु स शक्नो देवेन्द्रो देवराजो वैश्रमणं देवं शब्दयति शब्दयिला एवमवादीत् क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिय! द्वात्रिंशतं हिरण्यकोटी द्वात्रिश्चतं सुवर्णकोटीः द्वात्रिश्चतं नन्दानि द्वात्रिश्चतं सद्राणि सुभगानि सुभगरूप यौवन स्ववः ण्यानि च भगवतस्त्रीर्थङ्कारस्य जनमभाने संदर् संदृत्य एतामाज्ञक्षिकां प्रत्यर्पय। ततः खलु वैश्रमणो देवः, शकेण यावत्-विनयेन वचनं प्रतिश्रुणोति प्रतिश्रुत्य प्रममणान् देवान् शब्दयति शब्दियत्वा एव मवादीत् जित्रमेव मो देवानु त्रियाः ! द्वार्त्रिशतं हिर्ण्यकोटीः, याव दभगवतस्तीर्यञ्करस्य जन्मभवने संहरत संहत्य एतामाइसिकां प्रत्यपयत । ततः खछ ते जुम्भकादेवा वैश्रमणेन देवेन एवष्ठकाः सन्तो हृष्ट तुष्ट यावत्क्षिप्रमेव हार्त्रिवतं हिरण्यकोटीः यावत् - च भगवतस्तीर्थङ्करस्य जन्मभवने संद्रन्ति संहत्य यत्रैव वैश्रमणो देवः, तत्रैव यावत् प्रत्यर्पयति । ततः खल स वैश्रमणो देवो यत्रैत शक्रो देवेन्द्रो देवराको यात्रत् प्रत्यर्पयति, ततः खळ स शको देवेन्द्रो देवराजः, आभियोगिकान् देवान् शब्दयति शब्दयित्वा एयमपा-दीत् क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः ! अगवतस्तीर्थक्ररस्य जन्मनगरे श्रृङ्गाटक यावन्महापथपयेषु महता शब्देन उद्घोषयन्त एवं वदत हत्त ? श्रुण्वन्तु भवन्तो बहवो भवनपति वातव्यन्तर-ज्योतिष्कवैमानिका देवा देव्यश्च यः खल देवानुप्रिया ! तीर्यङ्करस्य तीर्थङ्करमातुर्वा अशुभं मनः, प्रधारयति तस्य खंछ आर्थक मञ्जरिकेव शतथा मूर्जानं स्फुटत इति कृत्वा घोषण घोषयत घोषयित्वा एतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयत इति। ततः खळ ते आभियोगिका देश यावत् एवं देव इति आज्ञायाः प्रतिश्रुण्यन्ति प्रतिश्रुत्य क्षक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य अन्तिकात् प्रति-

निष्क्रमन्ति निष्क्रम्य क्षिप्रमेन भग्रवस्तीर्थङ्करस्य जन्मनगरं शृङ्गाटक यावत् एवमवादिषुः इन्त शृधान्तु भवन्तो बहवो भवनपति यावत् यो खळ देवानुष्ठियाः तीर्थङ्करस्य यावत् स्फुटतु इति कृत्वा घोषणं घोषयन्ति घोषयित्वा एतामाञ्चप्तिकां प्रत्यपंपन्ति, ततः खळ ते बहवो भवनपतिवानव्यन्तरुच्योतिष्कवैमानिका देवाः भगवतस्तीर्थङ्करस्य जन्ममहिमानं कुर्वन्ति कृत्या यत्रैव वन्दीश्वर द्वीप स्तत्रैवोगच्छन्ति उपागत्य अष्टाहिका महामहिमाः कुर्वन्ति यस्या मेव दिशि प्राद्विभा प्रदेशि प्रादुर्भूतास्तस्या मेव दिशि प्रतिगताः ॥स्०१२॥

टीका-'तएगं से सक्षे देशि देवराया पंत्रके निउन्नइ' ततः-तीर्थक्करवन्दनाद्यनन्तरं खुल स शको देवेन्द्रो देवराजः, पञ्चशकान् विद्वर्शति—स एव शको विक्वर्वणाशक्त्या पञ्चधा-मवतीत्यर्थः, 'विउन्तिन्ता' विद्वर्शित्वा एकः पञ्चशा भूत्वा तेषु पञ्चसु मध्ये 'एगे सक्के भयवं-तित्थयरं करवलपुरेणं निण्हइ' एकः शको भगवन्तं तीर्थक्करं करतलपुरेन-करतलयोः— उध्वीधोन्यवस्थितयोः पुटम् शुक्तिकासंपुटिमिवेत्यर्थः, तेन करतलपुरेन गृह्णाति, 'एगे सके पिहुओ आयवत्तं धरइ' एकः शकः, तस्य शकस्य पृष्टत आतपत्रं छत्रं धरति 'दुवे सक्षा उभयो पासि चामस्वर्षेवं करति' द्वो शकौ तस्य तीर्थक्करस्य उभयोः पार्श्वभागे चामरोत्क्षेपं चामरोत्क्षेपं कुरुतः 'एगे सक्के बज्जपाणी पुरशो पगङ्कृत् एकः शकः पुरतः वज्रपाणिः सन् वज्ञश्राणौ इस्ते यस्य स तथाभूतः प्रकर्षति अग्रे प्रवत्ते । इत्यर्थः 'तए णं से सक्के

'तएणं से सक्के देविंदे देवराया पंच सक्के विजन्सह' इत्यादि'

टीकार्थ-इसके बाद उस 'से सकते देविंदे देवराया' देवेन्द्र देवराज दाक ने 'पंच सकते' पांच दाकों की 'बिडन्बउ' बिकुर्वणा की-अर्थात अपने रूपको पांच दाकों के रूपमें परिणमा लिया इसमें से 'एगे सके भगवं तित्थयरं करयलपुढेणं गिएक्इ' एक दाक रूपने भगवान तीर्थकर को अपने करतलपुट से पकडा 'एगे सकते पिहुओ आयवनं घरेइ' एक दूसरे दाक रूपने उनके उपर पीछे खडे होकर छन्न ताना 'द्वे सकता उमओ पासि चश्मरुखें करेंति' दो दाक रूपों ने दोनों और खडे होकर उन पर चमर होरे 'एगे सकके वज्जपाणी पुरओ पगडूह' एक दाक रूपने हाथमें चन्न छे लिया और वह उनके समक्ष खडा हो गया 'तए णं से

^{&#}x27;त एणं से सक्के देविंदे देवराया पंच सक्के' इत्यादि

टीडार्थ-त्यार आह ते 'से सक्के देविंदे देवराया' हेवेन्द्र हेवराक शडे 'पंच सक्के' पांच शडीनी 'विवह्यह' विद्वर्षणा हरी. ओटसे हे पोताना इपनुं पांच शडीना इपमां परिख्यन इश्वें. ओमांथी 'एगे सक्के मगवं तित्थयरं करवलपुढेंगं गिण्हइ' ओड शडना इपे क्षणवान तीर्थं हरने पे:ताना हरतक पुट्यां उपाउया 'एगे सक्के पिटुओ आयवत्तं धरेइ' ओड जीका शड इपे पाछण शक्तो रहीने तेमनी उपर छत्र ताष्ट्रुं. 'दुवे सक्का उमओ पासिं चामक्के वें करेंति' जे शडीना इपोओ क्षणवानना जनने पार्श्वलागमां शक्ता रहीने तेमनी उपर यमर हाल्या. 'एगे सक्के व्यक्तवाणी पुरक्षो पगड्वइ' ओड शडना इपे

चउरासीईए सामाणियसाहस्सीहिं जाव अण्णेहिअ भवणवहवाणमन्तर जोइसवेमाणिएहिं देवेहिं देविहिअ सिंद् संपिछवुडें ततः पश्चरूप विक्ववंणानन्तरं खल्ल स शकः चतुरशीस्या सामानिकसहस्त यात् अन्येश्व भवनपति वानव्यन्तरज्योतिष्कवेमानिकैर्दवैदेवीभिश्व सार्द्धं संपरिवृत्तः युक्तः 'सिव्बद्धीए जाव णाइयरवेणं ताए उक्तिहाए जेणेव भगवशे
तिस्थयरमाया तेणेव उवागच्छइं सर्वद्धां यावत् नादितरवेण तया उत्कृष्टया दिव्यया देव
गस्या व्यतिव्रजन व्यतिव्रजन यत्रैव भगवतस्तीर्थङ्करस्य जन्मनगरं यत्रैव च जनमभवनम्
यत्रैव तीर्थङ्करमाता तत्रैवोपागच्छति स शकः, अत्र यावत्पदात् सर्वद्धत्या सर्ववछेक सर्वसम्रद्धेन सर्वादरेण सर्वविभूत्या सर्वविभूषया सर्वसंश्रमेण सर्वपृष्पगन्धमाल्याछङ्कारविभूवया सर्वदिव्यत्रुटितश्चदसिन्नादेन महत्या ऋद्ध्या दुन्दुमिर्निवोष इति ग्राह्मम् एपामर्थः,
मूलञ्च अस्मिन्नेव वक्षस्कारे चतुर्थस्त्रे द्रष्टव्यम् 'उवागच्छित्ता' उवागत्य 'भगवं तित्थयरं
माऊए पासे ठवेइं भगवन्तं तीर्थङ्करमातुः, पार्श्वे स्थापयति, 'ठवित्ता' स्थापित्वा 'तित्थयपरिक्वगं पिडसाहरइं तीर्थङ्करप्रतिक्पकं तीर्थङ्करप्रतिविम्बं प्रतिसंहरति 'पिडसाहरित्ता'

सक्ते चउरासीईए सामाणिअसाहस्सीहिं जाव अण्णेहिं अ भवणवहवाणमंतरजोइसवेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि अ सिंद्धं संपरिवुढे सिव्बड्ढीए जाव णाइअरबेणं
ताए उिक्कड्ढाए जेणेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मण णयरे जेणेव जम्मणभवणे
जेणेव तित्थयरमाया तेणेव उवागच्छह' इसके बाद वह शक ८४ हजार सामानिक देवों से एवं यावत् अन्य भवनपित वानव्यन्तर एवं ज्योतिष्क देवों से
और देवियों से घिरा हुआ होकर अपनी पूर्ण ऋद्धि के साथ साथ यावत् बाजों
की तुमुल ध्विन पुरस्सर उस उत्कृष्टादि विशेषणों वाली गति से चलता हुआ
जहां भगवान तीर्थंकर का जन्म नगर था और उसमें भी जहां तीर्थंकर की
माता थी वहां आया उवागच्छित्ता भगवं तित्थयरं माऊए पासे ठवेह ठवित्ता
तित्थयरपिडिस्वगं पिडिसाहरह' वहां आकर के उसने भगवान तीर्थंकर को माता
के पास रख दिया और जो तीर्थंकर के अनुरूप दूसरा रूप बनाकर उनके पास

हाथमां वश्र धारण करीने ते तेमनी साभे ७ले। रह्यो. 'तएणं से सकके चउरासीए समाणिअ साहस्सीहिं जाव अण्णेहिं अ भवणवहवाणमंतर जोइस वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहिअ
सिद्धं संपरिवृडे सिव्वङ्डीए जाव णाइअरवेणं ताए इक्किट्टाए जेणेव भगवओ तित्थयरस्स
जम्मणणयरे जेणेव जम्मणभवणे जेणेव तित्थयरमाया तेणेव उवागच्छइ' त्यार आह ते
शङ्क ८४ हुन्नर सामानिक हेवेथी तेमल यावत् अन्य अवन्यति वानव्यंतर तथा ल्यातिषक
हेवेथी अने हेवीओथी आहत थहीने पातानी पूर्णु अदिनी साथ-माथ यावत् वाधीनी
तुमुख व्वनि पुरस्सर ते ७त्दृष्टाहि विशेषण्यावाणी अतिथी याक्षते।—यादने। ल्यां अभवान्
तीथं करनुं जन्म नजर हतुं अने तेमां पण्य ल्यां तीथं करना माताश्री हतां त्यां आव्याः.
'प्रवागिच्छत्ता भगवं तित्थयरं माऊए पासे ठवेइ ठिवत्ता तित्थयरपिडह्वगं पिडसाइरइ'त्यां

प्रतिसंहत्य 'ओसोवणि पिडिसाहरह' अवस्वापिनीं प्रतिसंहरति दिव्यनिद्रां प्रतिसंहतीत्यर्थः, 'पिडिसाहरित्ता' प्रतिसंहत्य 'एगं महं खोमजुअलं कुंडलजु कलं च भगवओ तित्ययरस्स उस्सी-सगम्ले ठवेइ' एकं महत् क्षोमयुगलं-क्षोमयोः दुक्लयोर्थुगलं कुण्डलयुगलं च भगवस्तीर्थं रस्पोच्छीर्पकम्ले स्थापयित स्कन्धद्रयमागे क्षोमयुगलं तत् उपिर देशे कर्णद्रयम्ले कुण्डलः युगलं च स्थायतीत्यर्थः 'ठिवत्ता' स्थापयित्वा 'एगं महं सिरिदामगंडं तविण्जालंब्सगं सुवण्णपयरगमंडियं णाणामणिरयणविविहहारद्धहार उनसोहिअसम्रुद्यं भगवओ तित्थयरस्स उन्लोबंसि निविखवइ' एकं महान्तं श्रीदामगण्डम्-श्री दामनां श्रोभावशाद्धिकिष्ट चित्ररन्तमालानां गण्डं-गोलं वृत्ताकारत्वात् इति श्री दामगण्डम्-यदाश्री दामगण्डम्-श्रीदामसमृहं भगवतस्तीर्थङ्करस्य उल्लोचे निक्षिपति-वल्यव्यति, इत्यग्रेऽन्त्रयः, तथा तपनीयलम्बूपकम् तत्र तपनीयलम्बूपकम् कन्दुकसद्दशगोलाकारस्रवर्णाव्हारविशेष्यतम् तथा सुदर्णप्रतरकमण्डतं नानामणिरत्नहारार्द्धहारोपशोभितसम्रुदयम् नानामणिरत्नानां हाराः, अर्द्धहाराश्र तैरुपशोभितः समुद्यः, परिकरो यस्य स तथा भूतरतं भगवतस्तीर्थंकरस्योल्लोचे निःक्षिपित इति-अयमर्थः, श्रीमत्योरत्नमालास्तथात्रथात्रथात्रवारोणकारोण कृता यथा चन्द्रगोपके मध्य-

रख दिया था उसे प्रति संहरित कर दिया मिटादिया-संकुचित करिलया 'साह-साहरित्ता ओसोवाणि पिडसाहरइ, पिडसाहरित्ता एगं महं खोमजुअलं कुंडलजुअलं च भगवओ तित्थयरस्स उस्सीसगमूले ठवेइ ठिवसा एगं महं सिरिदामगंडं तविणि जलंबूसगं खुवण्णपयरगमंडिअं णाणा मिणरयणविविह-हारद्धहार उवसोभिअसमुद्यं भगवओ तित्थयरस्स उल्लोयंसि णिक्खमइ' जिन प्रतिकृति को प्रतिसंहरित करके माता के निद्रा को भी प्रतिसंहरित कर दिया निद्रा को प्रतिसंहरित करके फिर उसने भगवान तीर्थकर के शिर-हाने-पर एक बडा क्षोमयुगल और कुण्डलयुगल रख दिया इन्हें रखकर फिर उसने एक श्री दामगण्ड या श्री दामकाण्ड जो कि तपनीयसुवर्ण के झुमनक से

आवींने तेखे कावान तीथं हरने भातानी पासे भूभी हीधा अने के तीथं हरना अनुश्य शिलुं ३५ अनावींने तेमनी पासे भूभ्य इतुं तेनुं प्रतिसं इर्ध इरी क्षीधुं—भाराडी दीधुं—तेनुं सं इयन हरी क्षीधुं 'पिडिसाहरित्ता ओसोबणिं पिडिसाहरइ पिडिसाहरित्ता एगं महं खोमजुअलं कुंडलजुअलंच भगवओं तित्थयरस्य उस्सीसगमूले ठवेइ ठिवत्ता एगं महं सिरिदामगंडं तबिण ज्वलंत्र्यस्य सुबण्णपयरगमंडिअं णाणा मिणि रयणविविहहार इहार उनसो निक्स मुद्दं भगवओं तित्थयरस्य उल्लोबंसि णिक्स मुद्दं भगवओं तित्थयरस्य उल्लोबंसि णिक्स मुद्दं श्रिम प्रतिकृतिने प्रतिसं हरित हरी हीधी. निद्राने पिड्य प्रतिसं हरित हरी हीधी. निद्राने पितिसं हरित हरी हीधी. निद्राने पितिसं हरित हरीने पिछी तेखे क्षणवान तीणे हरना कोशिका तरह कोह क्षाम युगल अने इंडण युगल भूकी हीधां, त्यार आह तेखे कोह श्री हामणंड अथवा श्री हाम युगल अने इंडण युगल भूकी हीधां, त्यार आह तेखे के श्री हामणंड अथवा श्री हाम का हे के तपनीय सुवर्षना अमनक्षी कोटले है अनुनुनाथी युक्त हतुं सुवर्षना विश्वी

श्चम्बनतां प्रापिताः हारार्द्धशासाथ परिकर शुरुवनकतां प्रापिता इति 'तणां मगवं तित्थयरे अणिमिसाए दिही ए देहमाणे देहमाणे सुहं सुहेणं अभिरममाणे र चिहुइ' तं पूर्वीकं खल भगवान तीर्थक्करः, अनिमिषया निर्निधिषया दृष्टचा अत्याद्रपूर्वकदृष्टचा पश्यन् पश्यन् प्रेक्षमाणः प्रेक्षमाणः, सुखं सुखेन अभिरमनाणःः-रिं कुर्वस्तिष्ठति 'तएणं से सक्के देविंदे देवराया वेसमणं देवं सदावेद' ततः तदनन्तरं खळु स शक्रो देवेन्द्रो देवरात्रो वैश्रवणम्-उत्तर दिक्पाछं देवं शब्दयति आह्वयति 'सदावित्ता' शब्दयित्वा, आहूय एवं वयासी' एवस् उक्तप्रकारेण -अवादीत् ऊक्तवःन् किन्नुक्तवान्-तत्राह् 'खिप्यामेव' इन्यादि 'खिप्यामेव मो देवाणुप्पिया ! क्षिप्रमेव शीद्यातिशीद्रमेव भी देवानुविष ! 'वत्तीसं हिरणकोडीओ वत्तीसं सुवण कोडीओ-वत्तीसं गंदाई वत्तीसं भदाई सुधगे सुभगरूवजुव्वणलावण्णेअ भगवओ तित्थयर्स्स जन्मण-भवणंसि साइराहि' द्वाविंशतं हिरण्यकोटीः, रजतकोटीः, द्वाविंशतं सुवर्भकोटीः द्वाविंशतं नन्दानि वृत्त छोहासनानि द्वार्दिशतम् महाणि भद्रासनानि सुभगानि शोभनानि सुभगरूपः अर्थात् हु-हुने से युक्त था खुवर्ण के वरकों से मण्डित था एवं अनेक मणियों तथा रत्नों से निर्मित विविध हारों से अर्थ हारों से उपद्योगित रामुदायवाला था उसे भगवान तीर्धकर के ऊपर तने हुए चंदीबा में लटका दिया 'तण्णं भगवं तित्थवरे अविभिसाए दिडीए देहमांगे २ सुहं सुहेणं अभिरममाणे २ चिट्टहं भगवान् तीर्धेक्षर इस झुम्बनक युक्त श्री दायगण्ड को अिनिय दिष्ट से देखते देखते खुखदूर्वक आमन्द के साथ खेलते रहते 'तएणं से सकके देविंदे देवराया वेसमणं देवं सदावेह' इसके वाद देवेन्द्र देवराज राज ने वैश्रमण कुवेरको

साहराहि' हे देवानुष्टिय! तुन क्रीब हो ३२ हिश्ण्यकोटियों को, ३२ खुवर्णकोमाइत इतुं केवुं अनेह मिल्किका तेमक रतने श्री निर्मित विविध हारे श्री, अध हारे श्री,

हारी लित समुद्राय युक्त इतुं तेने लगवान तीर्थ इरनी एपर तालुवामां आवेला यंदरवामा लटहावी ही हुं 'तण्णं मगवं तित्थयरे अिक्सिमाए दिन्नीए देशमणे २ सुहं हुहेणं
अभिरममाणे २ चिट्टइ' लगवान तीर्थ इर ते जुं अनह युक्त श्री दाम आंदने अनिमित्र दिन्धि लेता-क्रेतां सुण पूर्वक आनंद साथ रसता रहेता. 'त्यणं से सक्के देवि देवराया
वेसम बं देवे सहावेइ' त्यार आह हेतेन्द्र हेवराक शक्के देशमण्ड कृणेरने शिक्षाच्या. 'सदावित्ता
एवं वयासी' अने किलावीने तेने आ प्रमाले क्रिंड सुमगे सुमगर बजुव्वणलावण्णे अभगवजी तित्ययरस जम्मणभवणंसि साहराहि' हे देवानुप्रिय! तमे शिव ३२ हिरहपा है।
क्रेनि, ३२ सुवर्ष के हिर्हिनोने, ३२ नन्होने-वृत देखा स्तीने तेमक ३२ लदासनीने के

बुलाया सदावित्ता एवं वयासी' और वुलाकर के उससे ऐक्षा कहा-'खिप्पा-मेव भो देवाणुष्पिआ! वत्तीसं हिरण्णकोडीओ बत्तीसं सुवण्णकोडीओ बत्तीसं भदाई सुखगे सुभगस्वजुन्वणलावण्णे अभग अभो तित्थयरस्स जम्बणभवणंसि यौवनलावण्यानि च सुभगयौवनलावण्यानि रूपाणि यत्र तानि तथाभूतानि पद्व्यस्यय आर्षत्वात् च, सग्रुच्चये भगवतः तीर्थङ्करस्य जन्मभवने संहर आनयेत्यर्थः 'साहरित्ता' संहत्य आनीय 'एयमाणत्तिअं पच्चिष्पणाहि' एतामाङ्गप्तिकां मदीयायां प्रत्यपेय । समपेय 'तएणं से वेसमणे देवे सक्के णं जाव विणएणं वयणं पिडसुणेइ' ततः खळु स वैश्रवणो देवः शक्रेण यावद्विनयेन वचनं प्रतिश्रृणोति स्वीकरोति अत्र यावत्पदात् 'देविंदेणं देवरण्णा एवं वुत्ते समाणे इहतुह चित्तमाणंदिए एवं देवो तहत्ति आणाए' देवेन्द्रेण देवराजेन एवमुक्तः सन् हृष्ट तुष्ट चित्तानन्दितः, एवं देव तथाऽस्त आज्ञाया इति ग्राह्यम् । 'पहिसुणित्ता' प्रतिश्रुत्य, स्वीकृत्य 'जंमएदेवे सदावेइ' लुम्भकान देशन् तिर्यम्छोके वैताहच द्वितीय श्रेणिवासित्वेन तियग्लोकगत नियानादिवेदिनः, शब्दयति, आह्रयति 'सहावित्ता' शब्द्यित्वा, आह्रय 'एवं वयासी' एवम् उक्तप्रकारेण, अवादीत् उक्तवान् स वैश्रमणः किम्रक्तवान् तत्राह 'खिप्पा-मेव' इत्यादि 'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !' क्षिप्रमेव शीव्रादिशीव्रमेव भो देवानुप्रियाः ! वत्तीसं हिरणाकोडीओ जाव भगवओ तित्थयरस्त जम्मणभवणंसि साहरह' द्वार्त्रिशतं टियों को, ३२ नन्दों को वृत्त लोहासनों को, एवं ३२ भद्रासनों को, कि जिनका रूप बड़ा सुन्दर चमकीला हो भगवान् तीर्थेकर के जन्म भवन में लाओ-स्थापित करो एवं इन सबकी स्थापना करके फिर मेरी आज्ञाकी पूर्ति हो जानेकी खबर मुझे दो 'तएणं से वेसक्षणे देवे सक्षेणं जाव विणएणं वचणं पडिसुणेइ पिंखिणिता जंभए देवे सहावेह सहावित्ता एवं वयासि खिप्पामेव भो देवाणुप्तिया। बत्तीसं हिरणण कोडीओ जाव भगवओ तित्थयरस्स जम्मण-भवणंसि बाहरइ'जब शक ने वैश्रमण से ऐसा कहा-तथ वह वैश्रमण बहुत अधिक आनंदित चित्तवान हुआ और विनय के साथ उसने अपने स्वामी के वचनों को स्वीकार कर लिया इसके बाद उसने जुम्भक देवों को बुलाया और उसने ऐसा कहा कि हे देवालुधियो ! तुम ३२ हिरण्य कोटियों को यावत भगवान् तीर्थंकर के जन्यभवन में पहुचाओं यहां घावत्पर से 'देविदेणं देवरणणा

केशी अतीव सुंहर याने समक्रता हि।य, सगवान तीर्शं करना कन्मसवनमां क्षावे। स्था-िषत करें। अने ओ सर्वनी स्थापन! करीने पछी आज्ञा पूरी करवामां आवी छे ओनी मने अभर आपे। 'तए से वेसमणे देवे सक्केणं जाव विणएणं वयणं पित सुंगे पित हिएणकोडीओ जाव वेचे सदावेद सहावेता एवं वयासि खिप्पामेव मो देवाणुष्पिया! बसीसं हिएणकोडीओ जाव मगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणं साहरहं क्यारे शक्ते वेशमध्यने आ प्रमाधे कहुं त्यारे ते देशमध्य गूलक अधिक आनंदित थित्तवाणा श्रये। अने विनय पूर्वक तेखे पेताना स्वामीनी आज्ञाने-स्वीकार करी लीधी। त्यार आह तेखे कां अक हेवेनि केशमाव्या अने ते हेवेनि तेखे आ प्रमाधे कहुं -के है हेवानुं प्रिये। तमे उर हिरख्य केरिकोने यावत सगवान तीर्थं करना करना सवन मंत्री है। अहीं यावत पहारी 'देवि देणं देवरण्या एवं

हिरण्यकोटीर्यावद् भगवतस्तीर्थङ्करस्य जन्मभवने संहरत आनयत अत्र यावत्यदात् द्वार्तिशतं सुवर्णकोटीः द्वातिशतं नन्दानि द्वातिशतं भद्राणि सुभगानि सुभगरूपयीवनस्रावण्यानि इति प्राह्मम्, एषामर्थः, अनन्तरोक्तरीत्या बोध्यः 'साहरित्ता' 'संहत्य, आनीय 'एयमाणत्तियं पच्चित्पणह' एतामाञ्चितिकां प्रत्यपयत समर्पयत । 'तएणं ते जंभगा देवा वेसमणेणं देवेणं एवं बत्ता समाणा हहतुद्व जाव खित्पामेव वत्तीसं हिरण्णकोडीओ जाव भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणंसि साहरंति' ततः वैश्रमणस्याज्ञानन्तरं खलु ते जुम्भका देवा वैश्रवणेन देवेन एवम् उक्तप्रकारेण उक्ताः, आदिष्टाः सन्तो हृष्ट तुष्ट यावत् क्षिप्रमेव द्वातिशतं हिरण्यकोटी यावद् च भगवतस्तीर्थङ्करस्य जन्मभवने संहरन्ति, आनयन्ति, अत्र प्रयमयावत्पदात् वितानिद्वाः, प्रीतिमनसः, एरमसौमनस्यिता, हर्षवज्ञविसर्पद् हृदया इति प्राह्मम् द्वितीय यावत्य-दात् च द्वातिशतं सुवर्णकोटीः द्वातिशतं नन्दानि द्वातिशतं मद्राणि सुभगानि सुभगयौवनस्यव्यक्तात् च द्वातिशतं सुवर्णकोटीः द्वातिशतं नन्दानि द्वातिशतं भद्राणि सुभगानि सुभगयौवनस्यवित्यक्तात् प्रकृति यत्रव्यक्तात् पर्वतिश्वाद्यम् 'साहरित्ता' संहत्य, आनीय 'जेणेव वेसमणे देवे तेणेव जाव पच्चित्यात् तत्रव, उपागच्छन्ति, उपागत्य वैश्रमणाय उक्तप्रकारामाज्ञाप्तकामिति ग्राह्मम् 'तएणं से एवं बत्ते समाणे हृदतद्व चित्त माणंदिए एवं देवो तहन्ति आणाम् ' इस पाठका

एवं बुत्ते समाणे हहतुह चित्त माणंदिए एवं देवो तहित आणाएं इस पाठका संग्रह हुआ है 'साहरित्ता एयमाणित्तयं पच्चिपणहं' पहुंचाकर फिर हमें खबर दो 'तएणं ते जंभया देवा वेसमणेणं देवेणं एवंबुत्ता समाणा हहतुह जाव खिप्पामेव हिरण्ण कोडीओ जाव भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणंसि साहरंति' इसके बाद वैश्रमण हारा कहे गये वे जृंभक देव बहुत ही अधिक हिष्त एवं संतुष्ट चित्त हुए और यावत् उन्हों ने बहुत शीध्र ३२ हिरण्य कोटियों आदिकों को भगवान तीर्थंकर के जन्मभवन में पहुंचा दिया 'साहरित्ता जेणेव वे समणे देवे तेणेव जाव पच्चिपणंति' पहुंचा देने के बाद फिर वे जहां वैश्रमण देव थे वहां गये और वहां जाकर उन्हों ने इसकी खबर उन्हों दी 'तएणं से वेस माणे देवे जेणेव सक्के देविंदे देवराया जाव पच्चिपणहं' तदनन्तर वह वैश्रमण

वुत्तं समाणे हट्टतुद्र चित्तमाणंदिए एवं देवो तहित्त आणाए' आ पाठ संगृहीत थये। छे. 'साहरिता एयमाणित्तयं पच्चाप्पाह' पहें। याउया पछी अभने ते संभंधी भणर आधा 'त एणं ते जंभया देवा वेसमणेणं देवेणं एवं बुत्ता समाणा हट्ट तुट्ट जाव खिल्पामेव हिरण्णकोडी ओ जाव भगवओ तित्थयरस्त जम्मणभवणंसि साहरंति' त्यार आह वैश्रमण् वहे डहेवामां आविता ते कृंशा हेवे। अहुक अधि हिष्ति तेमक संतुष्ट थित्तवाणा थया अने यावत् तेमक्षे अहुक शीव ३२ हिरष्य है। टिके। वजेरेने समवान् तीर्थं हरना कन्म सवनमां स्थापित हर्या. 'साहरित्ता जेणेव वेसमणे देवे तेणेव जाव पच्चित्पणंति' पहोंथाडीने पछी ते लयां वैश्रमण् हेवे। हतां त्या गया अने त्यां क्षीने तेमले ते अंगेनी तेमने भणर आधी. 'त्रहणं से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविंदे देवराया जाव पच्चित्पणइ' तत्पश्चात् ते वेश्रमण्

वेसमणे देवे जेणेव सक्ते देविंदे देवराया जाव पच्चिष्णइ' ततः खल तद्वन्तरं किल स वैश्रमणो देवो पत्रैव शको देवेन्द्रो देवराजो यावत्प्रत्यर्पयित समर्पयित, अत्रापि यावत्पदात् तत्रैवोपागच्छित, उपागत्य शकाय उक्तप्रकारिकामाञ्चिकामिति ग्राह्मम् । अथ अस्माम्र स्व-स्थानं प्राप्तेषु निःसीन्दर्श्या सीन्दर्याधिके भगवति तीर्थङ्करे मा दुष्टा दुष्टदृष्टि निःक्षिपन्तु, इति, तदुषायार्थ माह 'तष्णं' इत्यादि 'तष्णं से सक्ते देविंदे देवराया अभियोगे देवे सदावेद' ततः वेश्रमणेनाज्ञा प्रत्यर्पणानन्तरं खल स क्ष्त्रो देवेन्द्रो देवराजः, आभियोगिकान् आज्ञा-कारिणो देवान शब्दयित, भाह्मयित 'सदावित्ता' शब्दियत्वा, आहूम, 'एवं वयासी' एवम् वस्यमाणप्रकारेण, अवादीत् उक्तवान् किष्ठक्तवान तत्राह 'खिष्पामेव' इत्यादि 'खिष्पामेव भो देवानुष्याः भगवओ तित्ययरस्स जम्मण णयरंसि सिंघाडग जाव महायद्द्रपदेसु महया–महया सद्देणं उग्वोसेमाणा उग्वोसेमाणा एवं यद्द्र' भगवतस्तीर्थङ्करस्य जन्मनगरे शृङ्गाटकयावन्महापथपथेषु महता महता, विपुलेन विपुलेन शब्दि' भगवतस्तीर्थङ्करस्य जन्मनगरे शृङ्गाटकयावन्महापथपथेषु महता महता, विपुलेन विपुलेन शब्देन, उद्वोपयन्तः उद्घोपयन्तः, एवं वश्यमाणप्रकारेण-व्रत अत्र यावत्यदात् विक चतुष्कचन्तरेति ग्राह्मम् । किं ब्रूत तत्राह्म-'हंदि सुणंतु भवंतो वहवे भवणवश्वाणमंतर जोइस वेमाणिया देवा य देवीओअ जेणं देवाणुष्पिया! तित्थयरस्स तित्थयरमाज्यवा असुमं मणं पथारेइ' इन्त ! श्रुप्तन्तु भवन्तो वहवो वानव्यन्तरस्योतिष्ठक्षेमा निकादेवाश्च देव्यश्च

देव जहां पर देवेन्द्र देवराज राक विराजमान था वहां पर जाकर उसे खबर करदी 'तएणं से देविंद देवराया सक्के आभिओगे देवे सदावेद' इसके अनन्तर उस देवेन्द्र देवराज राक ने आभियोगिक देवों को बुलाया-'सदावित्ता एवं वयासी' और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-खिप्पामेवभो देवाणुप्पिया! भगवओ तित्थयरस्स जम्मणणथरंसि सिंघाडग जाव महावहपहेसु महया र सदेणं उग्घोसेमाणा र एवं वर्ह हे देवानुप्रियो! तुम शीघ्र ही भगवान् तीर्थकर के जन्मनगर में जो श्रृङ्गाटक आदि महापथ पथ हैं उनमें जाकर जोर र से घोषणा करते करते ऐसा कहो-यहां यावत्यद से 'त्रिक, चतुष्क और चत्वर' इन मार्गोका प्रहण हुआ है 'हंदि सुणंतु भवंतो वहवे भवगवद्वाग्रमंतरजोइसवेप्राणिया देवा य देवीओ

देव लयां देवेन्द्र देवरा प्रशिष्ट भाग हो। त्यां आवीन तेमने कार्य पूर्ण क्यांगी फजर आपी.
'त एणं से देवि दे देवराया सक्ते अभिओगे देवे सह वेह' त्यार आह ते देवेन्द्र देवराज शक्के आिसियांगिक देवोने जिसाव्या. 'सहावित्ता एवं वयासी' अने जिसावीन तेमने आ प्रभाखें कर्ं 'खिलामेव भो देवाणुणिया! भगवओ तित्थयरस्स जम्मणणयरंसि सिघाडम जाव महापह पहेस महया र सदेशं उग्धोसेमाणा र एवं वदह' हे देवानु पिये।! तमे शीव सगवान् तीर्थ करना जन्मनगरमां के श्रुं गाटका वजेरे महापथा छे त्यां कर्धने जेर-शास्थी होष्या करीने आ प्रभाखें केही -अही यावत् पहेशी 'त्रिक, चतुष्क अने चत्वर' से मार्गा गृहीत थया छे. 'हंदि सुणंतु भवंतो बहवे भवणवह वाणमंतर जोइसवेमाणिय देवाय देवीओ

देवातुप्रियाः ! इति सम्बोधनम् तथा च हे देवातुप्रियाः ! भवतां मध्ये यः खळु अनिर्दिष्ट नामा तीर्थङ्करस्य तीर्थङ्करमातु वीपिरि अशुभं मनः, प्रधारयति दुष्टं संकल्पयति 'तस्सर्णं अज्जगमंजिरिआ इव संयथा मुद्धाणं फुट्टउत्तिकट्टु घोसणं घोसेह' तस्य खुळु अशुमं मनः प्रधारयतः आर्यक्रमञ्जरिकेत्र आर्यको नाम वनस्पति विशेषः यः 'आजश्रो' इति भाषात्रसिद्धः, तस्य मञ्जरिकेव मूर्द्धा शतधा स्फुटतु इति कृत्वा इत्युक्त्वा घोषणां घेषयत उद्घोषणां कुरुत 'घोसिता' घोषयित्वा 'एयमाणत्तिअं पच्चिष्णह' ति एता माझप्तिकां प्रत्यर्पयत इति 'तएणं ते अभियोगा देवा जाव एवं देवोत्ति आणाए पिडसुणंति' ततः खलु ते आभियोगिकाः देवाः, जाव एवं देव तथाऽस्तु इति कथयित्वा आज्ञायाः, वचनं प्रति-श्रुष्वन्ति स्वीकुर्वन्ति अत्र यावस्पदात् हृष्टतुष्ट चित्तानन्दिताः ग्रीतिमनसः परमसौमस्यिताः इर्षवशनिसर्पद्हदयाः, इति ग्राह्मम् 'पडिसुणित्ता' प्रतिश्रुत्य स्वीकृत्य 'सकस्स देविंदस्स य जेणं देवाणुष्पिया तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए वा असुमं मणं पधारेइ तस्स णं अज्जगमंजरियाइव मुद्धाणं फुटउत्ति कट्ट घोसणं घोसेह' आप सब भवन-पति वानव्यन्तरज्योतिष्क और वैमानिक देव और देवियों सुनों कि जो देवानु-प्रिय! तीर्थंकर या तीर्थंकर माता के सन्बन्ध में अञ्चाभ संकल्प करेगा उसका मस्तक-आर्थक वनस्पति विद्योष-की मंजरिका की तरह सौ सौ टुकडे रूपमें हो जावेगा ऐसी 'घोसित्ता एयमाणित्तयं पचचिष्णहित्त' घोषणा करके फिर मुझे खबर दो 'तए णं से आमिओगा देवा जाव एवं देवोस्ति आणाए पडिसुणति' इस प्रकार से दाक के द्वारा कहे गये उन आभियोगिक देवों ने उसकी आजाको हें स्वामिन ! ऐसा ही घोषणा हम करें में इस प्रकार कहकर उसकी आज्ञाको स्वीकार करिलया यहां यावत्यद से 'हृष्ट तुष्ट चिस्तानंदिताः प्रीतिमनसः परम सौमनस्यिता हर्षवदाविसर्पद्हदयाः' इस पाठका संग्रह हुआ है 'पडिसुणित्ता सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियाओ पडिणिक्कमंति अपने स्वामी देवेन्द्र

य जेणं देवाणुणिया तित्थयरस्य तित्थयरमाऊए वा असुमं मणं प्रधादेइ तस्सणं अंज्जामंजिरिया इव मुद्धाणं फुट्ट्रस्ति कट्ट्रु घोसणं घोसेह' तमे अधां अवनपति वानव्यंतर, अये तिष्ठ अने वैमानिष्ठ हेव अने हेवीकि सांसणा है के हेवानुप्रिय तीर्घ'हर है तीर्घ'हरना माताना संआधमां अशुक्ष संहर्ष हरशे तेनुं मस्तह आर्थंड वनस्पति विशेषनी मंजिरिष्ठानी केम सा—सा हैडिया इपमां थि करो. जेवी 'घोसेत्ता एयमाणित्त्यं पच्चिपणहत्ति' धाषणा हरीने पछी मने अअर आपा. 'तएणं से आमिओगा देवा जाव एवं देवोत्ति आणाए पिंद्रसुणंति' आ प्रमाणे शह वडे आहास थयेका ते आसियोजिह हेवाके तेनी आहाने हे स्थामिन्! केवी क देवाणा अमे हरीशुं. आ प्रमाणे हडीने तेनी आहा मानी कीधी. अहीं यावत् पदथी 'हुष्ट तुष्टा चित्तानंदिताः शितिमनसः परमसौमनस्यता हर्षवशिक्सपंद हृद्याः' आ पाठ संगुद्धीत थये। छे. 'पिंद्रसुणित्ता सक्कस्स देविंदस्स देवरणो अतियाओ पिंतिमनसः था। भारति संगुद्धीत थये। छे. 'पिंद्रसुणित्ता सक्कस्स देविंदस्स देवरणो अतियाओ पिंतिमनसः वेशित हरीने पछी

देवरण्गो अंतिआओ पिडिणिक्खमंति' शकस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य अन्तिकात् समीपात् प्रति-निष्कामति गच्छन्ति 'पडिणिक्खमित्ता' प्रतिनिष्क्रम्य 'खिप्पामेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मण णगरंसि सिघाडग जाव एवं वयासी' सिप्रमेव भगवतस्तीर्थङ्करस्य जन्मनगरे शृङ्गाटक यावत् एवम् उक्तपकारेण अवादिषुः, उक्तवन्तः, अत्र यावत्यदात् त्रिकचतुष्क चल्रमहाषथपथेषु इति ग्राह्मम् किम्रुक्तवन्तस्तत्राह्-'हंदि सुणंतु' इत्यादि 'हंदि सुणंतु भवंतो बहवे भवणवइ जाव जेणं देवाणुष्पिया!' इन्त ! श्रृण्यन्तु भवन्तो बहवो भवनपति यावत् यः खछ हे देवानु वियाः ! भवतां मध्ये 'तित्थयरस्य जाव फुट्टउत्तिकट्टु घोसणगं घोसंति, तीर्थङ्करस्य यावत् स्फुटतु-इति कृत्वा, इत्युक्त्या घोषणं घोषन्ति अत्र यवत्पदात् तीर्थङ्करमातु वींपरि अशुमं मनः प्रधारयति दुष्टं संकल्पयति तस्य आर्यकमञ्जरिकेवमूदी शतधा इति ग्राह्मम् 'घोसित्ता' घोषित्वा 'एअमाणत्तिअं यचविष्यगंति' एताम् शकेणे निर्दिष्टाम् आज्ञप्तिकां शकाय प्रत्यप्पैयन्ति समर्पयन्ति ते-अभियोगिका देवाः 'तप्जं' ततः, अःभियोगिक देवै-देवराज दाक की आज्ञा को स्वीकार करके फिर वे उसके पास से वापिस चले आये 'पर्डिणिक्खमित्ता खिप्पामेव भगवओ तित्थपरस्स जम्मणणयरंसि सिंघा-डग जाव एवं वयासी-हंदि सुणंतु भवंतो बहवे भवणवह जाव जेणं देवाणुप्पिया ! तित्थयरस्स जाव फुटहीति कह घोसणगं घोसंति' आकर वे फिर बहुत ही जल्दी भगवान् तीर्थंकर के जन्मनगरस्य शृङ्गाटक, त्रिक चतुष्क आदि मार्गो पर आगये और वहां पर इस प्रकार की घोषणा करनेलगे-आप सब भवनपति, वानव्यन्तर, ज्योतिषक और वैमानिक देव एवं देवियां सुनिये जो कोई तीर्थकर या तीर्थंकर की माता के सम्बन्ध में दुष्ट संकल्प करेगा उसका मस्तक आजओ नामक वनस्पति विशेष की मंखरिका के जैसा सौ २ इकडेवाला हो जायगा 'घोसिसा एयमाणिसयं पच्चिष्यणंति' इस प्रकार की घोषणा करके फिर उन्हों ने इसकी गई घोषणा की खबर अपने स्वामी देवेन्द्र देवशज दाक के पास

तेथा त्यांथी आवतः रहा. 'पिडिणिक्खमित्ता खिप्पामेव भगवओ तित्थययरस जम्मणण्यरंसि सिंघाडग जाव एवं वयासी हंदि सुगंतु भवंतो वहवे भवणवह जाव जेणं देवाणुष्पिया! तित्थयरस जाव पुरृहीति कह् इ घोसणगं घोसंति' आवीने पछी अतीव शीध क्षणवान् तीथ'- करना कन्म नगर स्थान श्रणाटक, त्रिक, श्रतुष्क वगेरे मार्भी उपर तेथा पहांची गया अने त्यां आ करानी घाषणा करवा लाग्या—आप सर्व क्षवनपति, वानव्यंतर, क्योतिष्क अने वैमानिक देव तेमक हेवीओ। सांकोग. के किए तीथिंकर के तीथंकरना माताना संभंधमां हुष्ट संक्ष्य करशे. तेनुं माथुं आक्रों नामक वनस्पति विशेषनी मंकरिक्षनी केम सेन्से। केक्षणां अर्थ कर्शे. 'घोसित्ता एयमाणित्तयं पच्चिपणंति' आ करानी घाषणा करीने पछी तेमणे आ बेषणा धर्म गर्थ के तेमणे सेम् सेन्द्र हेवराक शक्नी पासे मेक्षी. 'त एणं ते बहवे भवणप्रह्वाणमंतर जोइस वेमाणिया देवा भगवको तित्थयर परित पेक्षिती. 'त एणं ते बहवे भवणप्रह्वाणमंतर जोइस वेमाणिया देवा भगवको तित्थयर

रुक्तविषयप्रत्यर्पणानन्तरं खल्ळ 'ते वहवे भवणवइ वाणमंतर जोइसवेमाणिया देवा भगवओ तित्थयरस्स जम्मणमहिमं करेंति' ते बहवो भवनपति वानव्यन्तर ज्योतिष्क वैमानिकादेवाः, भगवतस्तीर्थङ्करस्य जन्ममहिमानं कुर्वन्ति 'करित्ता' जेणेव णंदीसर दीवे तेणेव 'उवागव्छंति' यत्र्वं नन्दोश्वरवद्द्वीपस्तत्रैवोपागच्छन्ति 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'अद्वाहियाभो महामहिमाओ करेंति' अष्टान्हिका महामहिमाः अष्टदिन निर्वत्तीयोत्सव विशेषान् कुर्वन्ति वहु वचनंचात्र सौधर्मेन्द्रादिभिः प्रत्येकं क्रियमाणत्वात् 'करित्ता' कृत्वा जायेव दिसि पाउच्यूआ तायेव दिसि पिड्याया' यस्यामेवदिशि प्रादुर्भूताः, तस्या मेव प्रतिगताः, ते देवाः ॥स्० १२॥

इतिश्री विश्वविख्यात-नगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलित-ललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यानैकग्रन्थिनर्भाषक-वादिमानमर्दक-श्री-शाह् छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-'जैनशास्त्राचार्य'-पदिवभूषित-कोल्हापुरराजगुरु-वालबहाचारी
जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-धासीलाल-ब्रितिवरिचितायां
श्री जम्बूद्धीपद्धत्रस्य प्रकाशिकाल्यायां व्याख्यायां
पञ्चमबक्षस्कारः समाप्तम् ॥५॥

मेज दी 'तएणं ते बहवे भवणवहवाणमंतरजोइसवेमाणिया देवा भगवओ तित्थ-यरस्स जम्मणमहिमं करे ति, किरत्ता जेणेव णंदीसरे दीवे तेणेव उचागच्छंति' इसके बाद उन सब भवनपति वानव्यन्तर, ज्योतिष्क एवं वैमानिक देवों ने भगवान तीर्थंकर के जन्मकी महिमा की जन्मकी महिमा करके फिर वे जहां पर नन्दीश्वर द्वीप था वहां पर आये 'उवागच्छित्ता अहाहियाओ महामहि-माओ करे ति किरत्ता जामेव दिसि पाउच्मूआ तामेव दिसि पिडगया, वहां आकरके उन्हों ने अष्टान्हिका महोत्सव किया यहां बहुवचन के प्रयोग से सौधमेंन्द्रादिकों ने सबने यह महामाहोत्सव किया यह सूचित होता है फिर वे जहां से आये थे वही पर वापिस चले गये।।१२॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचित जम्बूद्वीपसूत्र की प्रकाशिका व्याख्या में पंचमवक्षस्कार समाप्त । ५॥

सस जम्मणमहिमं करें ति, करित्ता जेणेव णंदीसरे दीवे तेणेव उवागच्छंति' त्यार आह ते अधा अवन्यति वानव्यंतर क्योतिष्ठ तेमक वैभानिक देवाओ अग्वान् तीर्थं करना करमने। मिंडिमा क्यों. करमने। मिंडिमा क्योंने पछी तेओ। क्यां नंदीश्वर द्वीप होने, त्यां आव्याः 'उवागच्छित्ता अद्वाहियाओ महामहिमाओ करें ति, करित्ता जामेव दिसं पाउच्भुआ तामेव दिसं पडिमया' त्यां आवीने तेमछे अष्टाहिष्ठा महोत्सव संपन्न क्यों। कहीं अहुन्वयनना प्रयोगयी सौधर्मेन्द्राहिक सर्वे ओ भणीने आ महोत्सव क्यों, आम स्थित थाय छे. पछी तेओ। क्यांथी आव्या हता, त्यां क पाछा कता रहाः। १२ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલ વ્રતિવિરચિત જમ્બૂદ્ધીય સ્ત્રની પ્રકાશિકા ત્યાખ્યાના પાંચમા વક્ષસ્કાર સમાપ્તા પા

षष्टोबक्षस्कारः प्रारभ्यते

इतः पूर्वं जम्बूद्वीपान्तर्वेत्तिवस्तु स्ररूपं पृष्टं सम्प्रति जम्बूद्वीपस्पैव चरमप्रदेशस्यरूपं प्रश्नयन्न ह-'जंबुद्दीवस्स णं भंते ! दीवस्स पएसा' इत्यादि,

मूलम्- जंबुदीवस्स णं भंते! दीवस्स पएसा लवणसमुदं पुट्टा ? हंत पुट्टा! ते णं भंते! किं जंबुदीवे दीवे लवणसमुद्दे? गोयमा! जंबुदीवे णं दीवे णो खलु लवणसमुद्दे, एवं लवणसमुद्दस्स वि पएसा जंबुदीवे पुट्टा भाणियव्या इति। जंबुदीवे णं भंते! दीवे जीवा उद्दाइत्ता उदाइत्ता लवणसमुद्दे पचायंति, अत्थेगइया पचायंति अत्थेगइया नो पचायंति, एवं लवणसम वि जंबुदीवे दीवे णेयव्वं इति।।सू० १॥

छाया-जम्बूद्वीषस्य खल्छ भदन्त ! द्वीपस्य प्रदेशा लवणसमुद्धं स्पृष्टा ? हन्त स्पृष्टाः ? ते खल्छ भदन्त ! किं जम्बूद्वीपे द्वीपे लवलसमुद्धं ? गौतम ! जम्बूद्वीपे खल्छ द्वीपे नो खल्छ लवणसमुद्धे, एवं लवणसमुद्धस्यापि प्रदेशाः जाबूद्वीपे स्पृष्टा भणितव्याः । जम्बूद्वीपे खल्छ भदन्त ! द्वीपे जीवा उद्ह्रायोद्धाय व्यवसममुद्धं प्रत्यायान्ति-अस्त्येककाः प्रत्यायान्ति, अस्त्येकका नो प्रत्यायान्ति एवं लवणस्यापि जम्बूद्वीपे द्वीपे नेतव्यम् ॥ स्व० १ ॥

टीका-'ज़ंबुद्दीवस्त णं भंते ! दीवस्त' जम्बूद्वीयस्य खल्छ भदन्त ! द्वीयस्य सर्वद्वीय-मध्यवर्त्तिनो द्वीयस्येत्यर्थः 'पएसा' प्रदेशाः जम्बूद्वीयसंबन्धितश्चरमप्रदेशाः, अत्र प्रदेशा इति कथनेन छवणसम्रद्र संबन्धसहचारात् चरमा ए । प्रदेशा ज्ञातच्याः अन्यथा-जम्बूद्वीय-

वक्षस्कार छहा

यहां से पहिले जम्बूडीपान्तर्वर्ती वस्तुका स्टब्स पूछा अव जम्बूडीप के ही चरमप्रदेशका स्वरूप पूछने के निमित्त गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा प्रश्न करते हैं। 'जंबुद्दीवस्स णं अंते! दीवस्स' इत्यादि।

टोकार्थ-'जंबुद्दीयस्स णं अते ! दीयस्स, हे भदन्त ! जंबूद्वीप नामके द्वीप के 'पएसा' चरमप्रदेश क्या 'लयणसमुदं पुडा' लवण समुद्रको छूते हैं ? यहां प्रदेश-पद से जो चरमप्रदेश प्रहीत हुए हैं वे लवण समुद्र के सहचार से ग्रहीत हुए

वक्षस्कार ६ आरंभ

આ પૂર્વે જરખૂઢીયાન્તર્વર્તા વસ્તુ-સ્વરૂપ વિશે પૃચ્છા કરવામાં આવી હતે જમ્ખૂ દ્વીપનાજ ચરમપ્રદેશના સ્વરૂપ વિશે જાલુવા માટે ગૌતમસ્વામી પ્રભુને એવા પ્રશ્ન કરે छे-'जंबुदीयस्म णं मंते ! दीवस्म' इत्यादि'

टीडार्थ-'जंबुदीवरस ण मंते ! दीवरस' है लडन्त ! कम्पूदीप नामड द्वीपना 'पएसा' प्रदेशी शुं 'छवणसमुदं पुट्टा' सबस् समुद्रने स्परी छे ? अही प्रदेश पदथी के सरमप्रदेशा

मध्यवर्त्ति प्रदेशानां लवणसम्बद्धादतिद्रस्थिततया लवणसमुद्रसंस्पर्शसंभवनाया असंभवात् प्रक्नोऽज्ञुपपन्न एव स्यादिति । 'छवणसमुदं पुटा' छवणसमुदं स्पृष्टवन्तः जम्बूद्वीपसंबन्धि चरमप्रदेशानां छवणसमुद्रेण सह संस्पर्शी विद्यते नवेति काववा प्रश्नः भगवानाह-'हंता' इत्यादि, 'हंता गोयमा ! इन्त, गौतम ! 'पुट्टा' स्पृष्टाः, अर्थात् जम्बृद्वीवस्य ते चरमप्रदेशा छवण-समुद्राभिमुखास्ते लवणसमुद्रे स्पृष्टवन्त इत्यर्थः अथ संप्रदायादिना द्वीपानन्तरीयाः समुद्राः समुद्रानन्तरीयाश्र द्वीपाः तेन ये यद्नन्तरीयास्ते तत्संस्पर्श्विनः इति सुज्ञातेऽपि प्रष्टव्येऽर्थे यत् प्रश्वित्रानम्, तदुत्तरस्त्रे प्रश्न बीजाधानायेति "तेणं भंते! कि जंबुद्दीवे दीवे छवणसमुद्दे' ते खल भदन्त ! कि जम्बूद्वीपो द्वीपः लवणसमुद्रः, हे भदन्त ! लवणसमुद्र-स्पृष्टाः जम्बुद्वीपस्य चरमप्रदेशाः किं जम्बुद्वीपस्येत्येतं व्यपदेश्याः किम्बा लवणसद्रसंबद्ध-हैं यदि ऐसा न मानाजाने तो फिर जम्बूझीप के मध्यवर्ती जो प्रदेश हैं वे तो लवणसमुद्र से अति दूर स्थित हैं इस कारण उनके द्वारा लवण समुद्रका छूना ही असंभव है अतः फिर यह प्रश्न ही नहीं उठ सकेगा इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु कहते हैं—'इंता !, गोयमा !' हां गौतम ! जम्बूदीप के जो चरम प्रदेश लवण समुद्र के अभिमुख है वे लवणसमुद्र को छूते हैं जब की ऐसी मान्यता है कि-द्वीप को घेरे हुए समुद्र हैं और समुद्र को घेरे हुए द्वीप हैं-तो फिर इस मान्यता से ही यह बात सिद्ध होती है कि जो जिसे धेरे हुए हैं वे उसे छूभी रहे है फिर भी यहां पर जो ऐसा प्रश्न किया गया है वह उत्तर सूत्र में प्रश्न बीज के आधान के निमित्त किया गया है 'तेणं भंते ! किं जंबुदीवे दीवे लवणसमुदे' अब गौतम ने प्रभु से ऐसा पूछा है-कि हे भदन्त! तबण समुद्र को छूने वाले जो जम्बूद्वीप के चरमप्रदेश है वे क्या जम्बूद्वीप के ही कहलावेंगे या लवण समुद्र से संबद्ध हो जाने के कारण लवणसमुद्र के कहलावेंगे।

ગૃહીત થયા છે તે લવે સમુદ્રના સહે અરથી ગૃહીત થયા છે. જે આ પ્રમાણે માનવામાં ન આવે તો પછી જં ખૂઢીપના મધ્યવર્તી ભાગમાં જે પ્રદેશા છે તે તો લવે સમુદ્રથી અતિ દ્વર સ્થિત છે. આથી તેમના વહે લવે હામમુદ્રને સ્પર્શવું જ અસં લવે છે. એથી આ જાતના પ્રશ્ન જ ઉપસ્થિત થતા નથી. એ પ્રશ્નના જવાયમાં પ્રભુ કહે છે—દંતા, ગોવમા! હાં ગૌતમ! જં ખૂઢીપના જે ચરમ પ્રદેશા લવે હામમુદ્રા સિમુ છે. તે લવે હામમુદ્રને સ્પર્શ છે. એવી માન્યતા છે કે દ્વીપાવે હિટત સમુદ્રો છે અને સમુદ્રા વે હિટત દ્વીપા છે. તા પછી આ માન્યતાથી જ આ વાત સિદ્ધ લઈ જાય છે કે જે એમ જેમના વહે આવે હિટત છે તેઓ તેમને સ્પર્શી પહ્યુ રહ્યા છે. છતાં એ અહીં જે આ જાતના પ્રશ્ન કરવાવામાં આવ્યા છે તે ઉત્તર સ્ત્રમાં પ્રશ્ન બીજના આધાન માટે કરવામાં આવેલ છે. 'તેળં મંતે! જિં જં હુદ્દી જે હેવા જે ત્યા મારે કે હે ભદંત! લવે હામમુદ્રને સ્પર્શનારા જે જમ્મુદ્દીપના ચરમ મહેશા છે તે શું જં ખૂઢીપના જ કહેવારો?

लाक्लबणसमुद्रस्य नतु जम्बूद्धीपस्य प्रदेशाः कथं लबणसमुद्रस्येति कथमत्र प्रक्षनः संगच्छते, उच्यते – यद् येन स्पृष्टं तत् किश्चित् तद्व्यपदेशं लभते यथा – वृक्षस्थिताऽिय वस्ली पुष्पः मासावनत वृक्षशाखा द्वारा भूमिसंबद्धा भूमिकृत वस्ली च भूमेरियं वस्लीतिव्यपदेश दर्श- नात् किश्चिद्धस्तु न पुनर्नतद्व्यपदेशं लभते यथा – तर्जन्या संपृष्टा अंगुष्ठाङ्गालिक्यं देव नतु तर्जनी संबद्धापि तर्जनी तद्धत् प्रकृते जम्बूद्धीपस्य चरमप्रदेशाः लवणसमुद्धं स्पृष्टाः कि लवणः समुद्दस्य उत जम्बूद्धीपस्योति संश्चात् समुत्पद्यते एव प्रक्षन इति, भगवानाह — 'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'जंबुद्दीवेणं दीवेणो खलु लवणसमुद्धे' जम्बुद्धीपः खलु द्वीपो न

रांका-जम्बूझीप के जो चरमप्रदेश लवणसमुद्र को छू रहे है वे प्रदेश तो जम्बूझीप के ही कहलावेंगे फिर वे चरम प्रदेश जम्बूझीप के व्यपदेश्य हो या लवण समुद्र के व्यपदेश्य होगें ? ऐसा जो प्रश्न यहां पर किया गया है वह तो असंगत जैसा ही प्रतीत होता है ? सो ऐसी अशंका यहां पर नहीं करनी चाहिये-क्यों कि जो जिससे स्पृष्ट होता है वह कोई २ उसके व्यपदेशकों भी पालेता है-जैसे वृक्ष स्थित वल्ली पुष्प के भार से इकी हुइ वृक्ष शाखा के द्वारा जब भूमि को छूने लग जाती है-उससे संबद्ध हो जाती है-तो ऐसा कहा जाता है कि यह वल्ली भूमि की है तथा तर्जनी के द्वारा संस्पृष्ट हुई अंगुष्ठाङ्ग्युलि ज्येष्ठा ही कहलाती है तर्जनी से संबद्ध होने पर भी वह तर्जनी नहीं कहलाती है इसी तरह प्रकृत में जम्बूझीप के चरमप्रदेश लवणसमुद्र को छुए हुए हैं तो क्या वे लवणसमुद्र के कहे जावेंगे या जम्बूझीपके कहे जावेंगे ऐसा संदेह उत्पन्न हो जाता है-अतः उस संशय से ऐसा प्रश्न होता है कि जम्बूझीप के चरम प्रदेश जम्बूझीप के ही कहे जावेंगे या लवणसमुद्र के ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—'गोयमा! जंबु-कहे जावेंगे या लवणसमुद्र के ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—'गोयमा! जंबु-

શાંકા-જંબૂઢીપના જે ચરમપ્રદેશા લવાલુસમુદ્રને સ્પર્શી રહ્યા છે તે પ્રદેશા તો જંબૂઢીપના જ કહેવાશે પછી તે ચરમપ્રદેશા જંબૂઢીપના વ્યપદેશ્ય થશે કે લવાલુસમુદ્રના વ્યપદેશ્ય થશે ? એવા જે પ્રશ્ન અત્રે કરવામાં આવેલ છે તે તો અસંગત જેવા જ લાગે છે, તો આ નતની આશંકા અહીં કરવી ન ને છેએ, કેમકે જે જેનાથી સ્પૃષ્ટ હાય છે, તેમાંથી કાઈ તેના ત્યપદેશને પણ પ્રાપ્ત કરી લે છે. જેમ કે વૃક્ષસ્થિત લતા પુષ્પના ભારથી નમી પહેલી વૃક્ષ શાખા વહે નયારે બૂમિને સ્પર્શવા માંઢે છે—તેનાથી સંબદ્ધ થઈ જાય છે—તેનાથી સંબદ્ધ થઈ જાય છે—તેના આ પ્રમાણે કહેવામાં આવે છે કે આ લતા બૂમિની છે તેમજ તર્જની વહે સંસ્પૃષ્ટ થયેલી અંગુષ્ઠાગું લિને જયેષ્ઠાં ગુલી જ કહેવામાં આવે છે. તર્જનીથી સંબદ્ધ હોવા છતાંએ તેને તર્જની કહેવામાં આવતી નથી. આ પ્રમાણે જ પ્રકૃતમાં જંબૂઢીયના ચરમ-પ્રદેશ લવાલુસમુદ્રને સ્પર્શલા છે તો શું તેઓ લવાલુસમુદ્રના કહેવાશે અથવા જંબૂઢીયના કહેવાશે. આ નતની આશંકા ઉત્પન્ન થાય છે. આ પ્રમાણે આ સંશયથી એવા પ્રશ્ન હદ્દેલાયે. આ નતની આશંકા ઉત્પન્ન થાય છે. આ પ્રમાણે આ સંશયથી એવા પ્રશ્ન

खल लवणसम्रद्रः ते प्रदेशाः जम्बूद्वीपस्य लवणसम्रद्रस्पृष्टा अपि जम्बूद्वीप एव जम्बूद्वीप-सीमावर्सित्वात् न खळ ते लगणसमुद्रः जम्बूद्वीपसीमानमतिक्रम्य लवगसमुद्रसीमानम-प्राप्तत्वात् किन्तु जम्बूद्धीपसीमायता एव ते प्रदेशाः छत्रणसमुद्रं स्पृष्टास्तेन तटस्थतया संस्परीमवनात् तर्जन्या संस्पृष्टा ज्येष्टाङ्गुलिरिव स्वव्यपदेशं लभते इति । 'एवं लवणसम्रु-इस्त वि पएसा जंबुदीवे पुढा भाणियन्त्रा इति ॥ 'एवं लवणसमुद्रस्यापि प्रदेशा जम्बूद्वीपे स्पृष्टा भणितव्या इति, आलायत्रकारम्तु एयम्-हे भदन्त ! लवणसष्टद्रस्य चरमप्रदेशाः जम्बूद्वीपं स्पृष्टा नवेति प्रक्नः, भगवा शह-हन्त, गौतम ! ये छवणसमुद्रस्य चरमप्रदेशास्ते जम्बुद्धीपं स्पृष्ट्वन्त एव, हे भदन्त ! छवणसम्रद्रस्य चरमप्रदेशाः जम्बुद्धीपं स्पृष्टास्ते किं लवणसञ्जद्भवदेशभाजः उत जम्बूद्धीपस्पृष्टत्याद् जम्बूद्धीपव्यपदेशभाज इति पुनः प्रदनः, भगवानाह-हे गौतम ! खनणसमुद्रस्य ते चरमप्रदेशा लन्णसमुद्रव्यपदेशमाज एव दीवेणं दीवे णो खळु लवणसमुद्दे' हे गौतम! वे जम्बूद्वीप के चरसप्रदेश जो कि लवणससुद्र को छुए हुए हैं वे जम्बूडीप के ही कहलावें गे लवणसमुद्र के नहीं जिस प्रकार तर्जनी संस्ट्रध्ट उपेष्ठाङ्गुली ज्येष्ठाङ्गुली ही कहलावेगी-तर्जनी नहीं कहलावेगी। वे चरमपदेश ऐसे तो हैं नहीं जो जम्बूढीप की सीमा को उल्लंघन करके लवणसमुद्र की सीमा में प्रविष्ट हुए हो किन्तु जम्बूबीय की सीमा में रहते हुए ही वे वहां स्पष्ट हुए हैं। अतः वे उसी के ही व्यवदेवय हैं। अन्य के नहीं । 'एवं लवणसखुदस्स वि पएसा जंबुदीवे पुड़ा भाणियव्वा' इसी तरह से लवगसमुद के चरमधदेश जो कि जम्बूदीय को छूते हैं कहलेगा चाहिये यहां आलाग प्रकार इस प्रकार से है-हे भदन्त । लवण समुद्र के चरम-प्रदेश जम्बूडीप को छूते हैं या नहीं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-हां गौतम ! छूते हैं तो फिर वे लवणसमुद्र के कहलावेंगे ? या जम्बूदीप के कहलावें गे ? जम्बूदीप के नहीं क्यों कि वे उसकी सीमा में ही रहे हुए हैं और वहां से वे उसे

केंडे छे-'गोयमा! जंबुद्दीवेणं दीवे णो खलु लगणसमुद्दे' है गौतम! ते जंण्दी पना यरसप्रदेशा के जेंगा सवण्यसमुद्रने स्पर्शा रहा। हे, तेंगा सवण्यसमुद्रना नहि परंतु जंण्द्रीपना ज कहेंदाशे. जे प्रभाष्ट्रो तर्जनी संस्पृष्ट जरेष्ठां गुदी जये हांगुसी ज कहेंदाशे, तर्जनी नहि. ते यरमप्रदेशा केना ते। छे ज नहि है जेंगा जंण्द्रीपनी सीमाने गाणंगीने सवण्यमुद्रनी सीमामां प्रविष्ट थयेसा हाय परंतु ते प्रदेशा जंण्द्रीपनी सीमामां रहीने त्यां स्पृष्ट थयेसा छे. यथेसा हाय परंतु ते प्रदेशा जंण्द्रीपनी सीमामां रहीने त्यां स्पृष्ट थयेसा छे. यथेसा छे. यथेसा छे. यथेसा छे. यथेसा छे. यथेसा छे. यथेसा छे तेंगा तेना ज व्यपदेश्य छे. शीलाना नहि. 'एवं लवणसमुद्रस्य विपएसा जंबुद्दीवे पुट्टा माणियव्या' यथा प्रभाष्ट्रे सव्यक्षसमुद्रमा यरमप्रदेशा के जेंगा जंण्द्रीपने स्पर्शे छे ते पण्च यथ प्रभाष्ट्रे ज रामक सेपा जिल्ला व्यक्षसमुद्रना यरमप्रदेशा जंण्द्रीपने स्पर्शे छे के नहि ! जवाणमां प्रभ छेडे छेन्हां! 'ते। जयारे तेंगा स्पर्श करे ते। पछी तेंगा सवण्यसमुद्रना कहिवाशे ! स्पर्श करे ते। पछी तेंगा सवण्यसमुद्रना कहिवाशे ! स्पर्श करे ते। पछी तेंगा सवण्यसमुद्रना कहिवाशे ! स्पर्श करें ते।

लवणसमुद्रमीमावित्वात् न खल ते लवणसमुद्रसीमानमितिक्रम्य जम्बूद्वीपसीमानं स्पृक्षन्ति किन्तु व्यवणसमुद्रसीमागता एव जम्बूद्वीपसपृष्टा स्तेन तटस्थत्या संस्पर्शनभवनात् तर्जन्या संस्पृष्टा ज्येष्ठाङ्गुलिरिव स्व व्यपदेशं लभते इति ॥ अनन्तरपूर्वसूत्रे जम्बूद्वीपलवणसमुद्रयोः परस्परं व्यवहाराभावः कथितः सम्प्रति—जम्बूद्वीपलवणसमुद्रयोरेव जीवानां परस्परमुत्पत्य आधारतां प्रष्टुमाह—'जंबुद्दीवेणं भंते! जीवा' इत्यादि, जंबुद्दीवेणं भंते! जीवा' जम्बूद्वीपे खल भदन्त! जीवाः उदाइत्ता उदाइत्ता' उद्द्राय उद्द्राय मृत्वा एत्वा कृत्वा शल्यासमुद्रे प्रत्यायान्ति'—समागच्छन्ति हे भदन्त! जम्बूद्वीपे वर्त्तमाना जीवाः स्वकर्मवकात् अत्रव मृत्वा रुवणसमुद्रे समुत्पद्यन्ते किमिति प्रक्रनः, भगवानाह—हे गौतम! 'अत्थेगइया पद्यायंति' अस्त्येक्षके जीवाः ये जम्बूद्वीपे मृत्वा लवणसमुद्रे प्रत्यायान्ति, समागच्छन्ति समुत्पद्यते इति यावत् 'प्रत्येगइया न पद्यायंति' अस्त्येक्षके न प्रत्यायान्ति, सन्ति तादशा अपि जीवा ये जम्बूद्वीपे मृत्वा उत्पत्यर्थे लवणसमुद्रे नागच्छति, कथमेवं भवति स्पृष्ट करते हैं ऐसा नहीं हैं कि वे उसकी सीमा को छोडकर उसे स्पृष्ट करते हों इस तरह यहां तक सूत्रकारने जम्बूद्वीप और लवणसमुद्र के चरमप्रदेशों में परस्पर में एक दूसरे के प्रदेश व्यपदेश होने का अभाव प्रकट किया है।

अब गौतमस्वामी प्रभु से ऐसा पूछते हैं-'जंबुद्दीवे णं भंते जीवा उद्दाहला र' हे भदन्त ! जंबूदीप में रहे हुए जीव अपनी र आयु के अन्त में मर करके 'लबणसमुद्दे पच्चापंति' लवणसमुद्र में उत्पन्न होते हैं क्या ? उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं-'गोयमा, अत्थेगह्या पच्चापंति अत्थेगह्या नो पच्चापंति' हे गौतम ! किननेक जीव ऐसे हैं जो जम्बूदीप में मरकर लवण समुद्र में जन्मछेते हैं और कितनेक जीव ऐसे भी हैं जो जम्बूद्वीप में मरकर लवण समुद्र में जन्म नहीं छेते हैं- हे भदन्त ! ऐसा किस कारण से होता है कि कितनेक जीव

જંગૃદીયના કહેવાશે ? હ ગૌતમ ! તે પ્રદેશા લવાલુસમુદ્રના જ કહેવાશે, જંગૃદ્ધીયના નહિ. કેમકે તેઓ તેમની સીમામાંથી આવેલા છે. અને તેઓ ત્યાં જ તેને સ્પર્શે છે. એવું નથી કે તેઓ તેની સીમાને ત્યજીને તેને સ્પર્શતા હાય. આ પ્રમાણે અહીં સુધી સ્ત્રકારે જંગૃદ્ધીય અને લવાલુસમુદ્રના ચરમપ્રદેશામાં પરસ્પરમાં એકબીજાના પ્રદેશાના વ્યપદેશ હાવાના અભાવને પ્રકટ કરેલ છે.

હવે ગૌતમસ્વામી પ્રભુને આ જાતના પ્રશ્ન કરે છે—'जंबुद्दीवे णं मंते! जीवा उदाइता र' है लहन्त! જ'ળૂઢીપમાં આવેલા જીવા પાત્રપાતાના આયુષ્યના અંતમાં મરણ પામીને 'छगणसपुद्दे पच्चायंति' शुं खवणुसभुद्रमां ઉત્પन्न थाय छे? એના જવાબમાં પ્રભુ કહે છે—'गोयमा! अत्थेगइया पच्चायंति अत्थेगइया नो पच्चायंति' है गौतम! हेटलाह જીવા એવા છે है જેના જ'ળૂડીપમાં મરીને લવખુસમુદ્રમાં જન્મ લે છે. અને કેટલાક જીવા એવા પણ છે કે જેઓ જ'ળૂડીપમાં મૃત્યુ પામીને લવખુસમુદ્રમાં જન્મ શહ્યુ કરતા નથી. હે

यदेते जीवा जम्बूद्वीपे मृत्वा पुनरुत्पत्यर्थं लवणसमुद्रं गच्छिन्ति, केचन जम्बूद्वीपे मृत्वा उत्प्र्यं लवणसमुद्रं न गच्छिन्ति इति चेत् अशोच्यते—कर्मबलादिति, अयं भाव:-मनोवाकायैः समुत्पादित कर्माणो जीवाः शुमाशुभक्रमेपरतन्त्राः केचन गच्छिन्ति, केचन न गच्छिन्ति जीवानां तथा स्वकर्मश्रत्या गत्यागतौ वैलक्षण्यसंभवात् इति । 'एवं लवणसमुद्रस्स जंबुद्दीवे दीवे णेयव्वं' इति, एवं लवणसमुद्रस्थापि जम्बूद्वीपे द्वीपे नेतव्यमिति जम्बूद्वीपस्यवदेव लवणसमुद्रस्त्रे जीवानां मरणमागमनं च ज्ञातव्यमिति, अयं भावः-अञ्चापि जम्बूद्वीपस्यवदेव खवणसमुद्रस्त्रे जीवानां मरणमागमनं च ज्ञातव्यमिति, अयं भावः-अञ्चापि जम्बूद्वीपस्यवदेव पश्चायंति ? अत्थे गइया पश्चायंति, अत्थेगश्या नो पञ्चायंति' लवणसमुद्रे खलु भदन्त ! जीवा उद्दाय उद्दाय जम्बूद्वीपे प्रत्यायान्ति ? सन्त्येकके प्रत्यायान्ति, सन्त्येकके नो प्रत्यायान्ति, हे भदन्त ! लवणसमुद्रे वर्त्तमाना जीवा आयुष्ककर्मक्षयात् मरणं प्राप्य तदन्तरं पुनरुत्यचर्यं जम्बूद्वीपे गच्छिन्ति नवेति गौतमस्य प्रश्नः, भगवानाह—हे गौतम ! सन्ति केचन तथाविधा जीवा ये लवणसमुद्रे मृत्वा उत्पन्यर्थं जम्बूद्वीपे समाग्च्छिन्ति, केचन जीवा लवणसमुद्रे मृत्वा पुनरुत्पत्यर्थं जम्बूद्वीपे ना गच्छिन्ति, कथमेवं भवतीति चेत् जीवानां स्वकर्मपराधीनतया तथा तथागति वैचित्र्यसंभवादिति ।। स्व १ ।।

जम्बूबीप में मरकर लवण समुद्र में जन्म छेते हैं और कितने के जीव वहां जन्म नहीं छेते हैं ? तो इसके उत्तर उनके द्वारा अर्जित उनका कर्म है तात्पर्ध है कि प्रत्येक जीव अपने अपने मन वचन और काय के शुभ और अशुभ कर्मी का यन्ध किया करता है अतः उसी के अनुसार परतन्त्र हुए उन जीवों का भिन्नर पर्यायों में उत्पाद होता रहता है। इस कारण कितनेक जीवों का वहां उत्पाद होता है। 'एवं लवणसमुः होता है और कितनेक जीवों का वहां उत्पाद नहीं होता है। 'एवं लवणसमुः इस्स वि जबुदीवे दीवे णेयव्वं' इसी तरह से लवणसमुद्र में मरे हुए कितनेक जीवों का उत्पाद जम्बूदीप में होता है और कितनेक जीवों का वहां उत्पाद नहीं होता है यहां पर आलापक जम्बूदीप सूत्र के जैसा ही जानना चाहिये

ભદંત! એવું શા કારણથી થાય છે ! કે કેટલાક જીવા જંખૂઢીયમાં જન્મ ગહુણ કરે છે. અને કેટલાક જીવા ત્યાં જન્મ ગહુણ કરતા નથી ! તો આના જવાબ એ જ છે કે તેમના વડે અર્જિત કર્મ જ તેમને તત્ત્ત પ્રદેશામાં જન્મગહુણ કરાવે છે. તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે દરેક જીવ પાત-પાતાના મન, વચન અને કાયના શુભ અને અશુભ કર્મીના બંધ કરે છે. એથી તે મુજબ જ પરતંત્ર થયેલા તે જીવાની ભિન્ન-ભિન્ન સ્થાનામાં ભિન્ન-ભિન્ન ગતિઓમાં તેમજ ભિન્ન-ભિન્ન પર્યાયોમાં ઉત્પત્તિ થતી રહે છે. એથી કેટલાક જીવા ત્યાં ઉત્પન્ન થતા નથી. 'एवं लवणसमुद्दस्स वि जंबु हीचे दीचे णेयटवं' આ પ્રમાણે લવણસમુદ્રમાં મૃત્યુ પામેલા ફેટલાક જીવાની ઉત્પત્તિ જંખૂઢીયમાં હોય છે અને કેટલાક જીવાની ઉત્પત્તિ હાતી નથી. અહીં 'આલાપક જંખૂ

सम्प्रति-पूर्वीकानां जम्बूद्वीयमध्यवर्षि पदार्थानां सङ्ग्रहगायामाह-खंड१ जोयण२' इ० मूलम्—खंडा१, जोयण२ वासा३ पट्यय ४ कूडा य५ तित्थ६ सेढीओ७।

विजय८ दह९ सिछिलाओ१० पिंडए होइ संगहणी ॥१॥ जंबुद्दीवे णं अंते ! दीवे भरहप्यमाणमेत्तेहिं खंडेहिं केवइयं खंडग-णिएणं वण्णते ? गोयमा ! णउयं खंडं सर्थं खंडगणिएणं पण्णते । जंबु-हीवे णं भंते । दीवे के बहुयं जोयण मिष्णं पण्णते ? गोयमा ! सत्ते-वय कोडिसया णउया छप्पण्णसयसहस्साई, चउणवई च सहस्सा संयं दिबद्धं च गणियवयं ॥१॥ जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे कइ वासा पण्णता ? गोयमा! सत्तवासा पन्नता, तं जहा-भरहे एरवए हेमवए हिरण्णवए हरिवासे रम्मगवासे महाविदेहे । जंबुदीवे णं भंते ! दीवे केवइया वासहरा पण्णत्ता, केवइया संद्रा पठवदा पन्नत्ता केवइया चित्तकूडा केव-इया विचित्तकूडा केवइया जमगपटवया केवइया कंचण पव्वया केवइया वक्खारा केवइया दीहवेयद्धा केवइया वहवेयद्धा पन्नता? गोयमा! जंब-दीवे छ वासहरपटवया एगे संदरे पटवए एगे वित्तकूडे एगे विचित्तकूडे दो जमगपटनया दो कंचणपटनयस्या वीसं वक्वारपटनया चोत्तीसं दीहने-यद्धा चतारि वहवेयद्धा एकामेव सपुरवावरेण जंबुहीवे दीवे दुण्णिअ-उणत्ररा पव्ययसया भवंतीति यक्षायंति। जंबुद्दीवेणं भंते! जैसे 'लवणसमुद्दे णं भंते ! जीवा उदाइसा २ जंबुदीवे पच्चायंति ? अत्थेगइया

जैसे 'लवणसमुद्दे णं भंते ! जीवा उदाहरा २ जंबुद्दीवे पच्चायंति ? अत्थेगद्द्या पच्चायंति अत्थेगद्द्या णो पच्चायंति' इस आलापकका अर्थ स्पष्ट है ॥१॥ अस्य पर्योक्त जंकनीय सम्मान्ति हुनाओं और संग्रह सम्भानो सनी गर्व है जन

अब प्रवेक्ति जंबूडीण मध्यवर्ती पदार्थी की संग्रह गाथा जो कही गई है वह इस प्रकार से हैं। खंडा १ जोश्रण २ दासा ३ पन्वय ४ क्डाय ५ तित्थ सेढीओ ७। विजय ८ दह ९ सलिलाओ १० पिंडए होइ संगहणी ॥१॥

द्वीप सूत्र જેવા જ સમજવા એઇએ. જેમ કે-'लवण तमुद्देण मंते! जीवा उदाइता २ जंबुदीवे पच्चायंति ! अत्थे गइया पच्चायंति अत्थे गइया णो पच्चायंति' આ આલાપકના અર્થ સ્પષ્ટ જ સૂગા ૧ ॥

[&]amp;वे पूर्वीक्रत कम्णूद्वीप मध्यवती पहार्थीनी संश्रह्णश्राधा विशे क्षेत्रवामां आव्युं छे ते आ प्रमाशे छे-खंडा १, जोवण २, वासा ३, पञ्चय ४, कूडाय ५, तित्थ सेढीओ ६-७, विजय ८, दह ९, सिल्लाओ १० पड ६ होई संगहणी ११॥

दीवे केवइया वासहरकूडा केवइया वक्खारकूडा केवइया वेयद्धकूडा केव-इया मंदरकूडा पन्नत्ता ? गोयमा ! छप्पण्णं वासहरकूडा छण्णउई वक्खा-रकूडा तिष्णि छ्छुत्तरा वेयद्धकूडसया णव संदरकूडा ५न्नता। एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे चत्तारि सत्तसद्भा कूडसया भवंतीति मक्लायं। जंबुद्दीवे दीवे भरहेवासे कइ तित्था पन्नत्ता ? गोयमा ! तओ तित्था पन्नत्ता तं जहा-मागहे वरदामे पभासे । जंबुद्दीवे दीवे एरवए वासे कइतितथा पन्नत्ता ? गोयमा ! तओ तित्था पन्नत्ता तं जहा-नागहे-वरदामे पभासे एवामेव सपुब्वावरेणं जंबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे एगमेंगे चक्कविं विजए कइ तित्था पन्नता ? गोयमा! तओ तित्था पन्नता, तं जहा-मागहे वरदामे पभासे, एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुदीवे दीवे एगे वि उत्तरे तित्थसए भवंतीति मक्खायंति । जंबुक्षेवेणं भंते ! दीवे केवइया विज्जाहरसेढीओ केवइया आभियोग सेढीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे अद्भुसद्दी विज्ञाहरसेढीयो अद्भुसद्दी आभिओग-सेढीयो पण्णत्ताओ एवामेव सपुब्वावरेणं जंबुद्दीवे द्वेवे छत्तीसे सेढिसए भवंतीति सक्खायं । जंबुरीवे दीवे केवइया चक्कवट्टि विजया केवइयाओ रायहाणीओ केवइयाओ तिमिसगुहाओ केवइयाओ खंडप्पवायग्रहाओ केवइया कयमालया देवा केवइया णष्टमालया देवा केवइया उसभकूडा पन्नता ? गोयमा ! जंबुदीवे दोवे चोत्तीलं तिमिसग्रहाओ चोत्तीसं चक-वट्टि विजया चोत्तीसं रायहाणीओ चोत्तीसं तिमिसग्रहाओ चोत्तीसं खंड-प्पवायग्रहाओ चोत्तीसं कयमालया देवा चोत्तीसं णट्टमालया देवा चोत्तीसं उसभकूडा पव्यया पन्नता । जंबुदीवे दीवे केवइया महद्दहा पञ्चता ? गोयमा ! सोलसमहद्ददा पञ्चता । जंबुदीवेणं भंते ! दीवे केव-इयाओ महानदीओ वासहरपटबहाओ केवइयाओ महाणईओ कुंड़प्प-वहाओ पन्नता ? गोयमा ! जंबुदीवे दीवे चोदस महाणईओ वःसहरः पव्वहाओ छावत्तरिं महाणईओ कुंडप्पवहाओ, एव।मेव सपुव्वावरेणं

जंबद्दीवे दीवे णर्रातं महाणई हो भवंतीति मक्खायं । जंबद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु कड़ महाजई क्रो पण्णताओ गोयमा! चतारि महा-णईओ पन्नसाओं तं जहा-गंगासिंधू रत्तारत्तवई तत्थ णं एगमेगा महागई चउइसहिं सिळळासहरतेहिं समग्गा पुरस्थिमपश्चरिथमेणं लवणसमुद्दं समप्पेइ, एवामेव सपुष्वावरेणं जंबुदीवे दीवे भरहेर वएसु वासेसु छप्यण्णं सिळळातहस्सा भवंतीति सक्खायंति। जंबु-दीवेणं भंते ! दीवे हेमवयहेरण्यवएसु वासेसु कइ महाणईओ पण्या-ताओ ? गोयमा ! चतारि महागईओ पन्नताओ तं जहा-रोहिया रोहि-यंसा सुवण्णकूळा रूप्यकूळा, तत्थ णं एगमेगा सहाणई अट्टावीसाए अट्टाबीसाए सिळळासहस्सेहिं समग्या पुरस्थियपञ्चित्थमेणं लवणसमुहं समप्पेइ एशमेत्र सपुरवादरेणं संबुद्धि दीवे हेनवयहेरण्यवएसु वारसु-त्तरे सिळलासयसहरते भवंतीति मक्खायं इति । जंडुदोवेणं भते ! दीवे हरिवासरम्भगवासेसु कई महाणईओ पन्नताओ गोयमा! चतारि महाणईओ पन्नताओ, तं जहा-हरीहरिकंता णरकंता जारिकंता, तत्थ णं एगमेगा महाणई छप्यण्याए२ सिळ्ला सहस्तेहिं समग्या प्रिरिथम-पचित्थमेणं लवणसमुदं समप्पेइ, एवामेव सपुरवादरेणं जंबदीवे दीवे हरिवासरमगगसेसु दोवउवीसा सलिलासयसहस्सा भवंतीति मक्खायं। जंबुदीयेणं भंते। दीवे महाविदेहेशसे कइ महाणईओ पन्नत्ता-ओ गोयमा | दो महाणई ओ पन्नताओं तं जहा-सीया य सीओया य तत्थ णं एगमेगा महागई पंचहिं पंचहिं सलिला सयसहस्सेहिं वतीला एव स लिलासहरसेहिं समग्गपुरियमपबस्थिमणं लवणसमुदं समप्पेइ एवामेव सपुर्वावरेणं जंबुद्दीवेणं दीवे महाविदेहे वासे दस सिळळासयसहस्सा चउसिंद्रं च सिळ्ळा सहस्या भवंतीति सक्वायं। जंबुद्दीनेणं भंते! दीवे मंदरस्स पटनयस्स दिन्लिणेणं केन्ड्या खिलला स्यसहस्सा पुरस्थिम-पद्यस्थिमाभिमुहा लक्षणहसुदं समप्वेति सि ? गोयमा ! एगे छ जाउए सिळिलासयसहरसे पुरिथमपचित्यमाभिमुहे लवणसमुदं समप्पेति सि, जंबुद्दीवेणं भंते ! दीवे मंद्रस्स पव्ययस्स उत्तरेणं केव्ह्या सिळ्ळा सय-सहस्ता पुरित्थमपचित्थमाभिमुद्दा लवणसमुद्दं समप्पेति ? गोयमा ! एगे छण्णउए सिळ्डा सयसहस्से पुरित्थमपचित्थमाभिमुहे जाव सम-प्पेइ जंबुद्दीवेणं भंते ! दीवे केव्ह्या सिळ्डासयसहस्सा पुरत्थाभि-मुद्दा लवणसमुद्दं समप्पेति ? गोयमा ! सत्त सिळ्डा सयसहस्सा अद्वा-वीसं च सहस्सा लवणसमुद्दं समप्पेति, जंबुद्दीवेणं भंते ! दीवे केव्ह्या सिळ्डासयसहस्सा पचित्थमाभिमुद्दा लवणसमुद्दं समप्पेति ? गोयमा ! सत्त सिळ्डा सयसहस्सा अट्ठावीतं च सहस्सा लवणसमुद्दं समप्पेति, एवामेव सपुव्वावरेण जंबुद्दीवे दीवे चोद्दस सिळ्डा सयसहस्सा छप्पणं च सहस्सा भवंतीति सवलायं ति । सू० २॥

छाया-खण्डं योजनं वर्षं पर्वतः क्टाश्च तीर्थः, श्रेणयः हुदः सिछलानि पिण्डके भवति संप्रहणी । जम्बुद्वीपे खळ भदन्त ! द्वीपे भरतप्रभाणमात्रैः खण्डैः कियत् खण्डगणितेन प्रज्ञप्तम् ? गौतम ! नवतं खण्डशतं खण्डगणितेन प्रज्ञप्तम्, जम्बूद्वीपे खळ भदन्त ! द्वीपे कियद् योजनं गणितेन प्रज्ञप्तम् ? गौतम ? सप्तैश च कोटिशतानि नवतानि पट्पश्चाशच्छत-सहस्राणि चतुर्नेवतिश्र च सहस्राणि शतंद्रचर्दं च गणितपद्म १। जम्बूद्वीपे खलु भदन्त ! द्वीपे कति वर्षाण प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! सप्तवर्षाण प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-भरत एरवतं हैमवतं हिरण्यवतं हरिवर्षे रम्यक्रवर्षे महाविदेहः। जम्बद्धीपे खल्ल भदन्त ! द्वीपे कियन्ती वर्षधराः प्रज्ञप्ताः, कियन्तो मन्दराः पर्वताः प्रज्ञप्ताः, कियन्त श्रित्रकृटाः प्रज्ञप्ताः कियन्तो विचित्रकृटाः कियन्तो दमक्षपर्वताः, कियन्तः काञ्चन पर्वतः कियन्तो वक्षरकाराः कियन्तो दीर्घवैताढचाः कियन्तो वृद्यवैतादचाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जम्यूद्धीपे द्वीपे षड्वर्षथरपर्वताः एको मन्दरः पर्वतः, एकः चित्रकूटः, एको विचित्रकूटः द्वौ यमकपर्वतौ द्वे काश्वनकपर्वतशते विंशति र्वश्नरकारः, पर्वताः चतु क्षिश्वदीर्घशैताद्याः चस्वारो वृत्तवैताद्याः एवमेव सपूर्वापरेण जम्बू-द्वीपे द्वे एकोनसप्तत्यधिके पर्वतशते अवन्तीत्याख्यायन्ते । जम्बूद्वीपे खल भदन्त ! द्वीपे कियन्ति वर्षधरक्रटानि कियन्ति वक्षस्कारक्रटानि कियन्ति वैदादयक्रटानि कियन्ति मन्द्र-कूटानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! षट्पश्चाबद्धर्पपरकूटानि, पण्यवति वैक्षस्कारकूटानि त्रीणि षडुत्तराणि वैताढचक्टशतानि नव मन्दरक्टानि प्रज्ञप्तानि, एवधेव सर्वापरेण जम्बुद्दीपे चत्वारि सप्तपष्टानि कूटशतानि भवन्तीत्यारुपातम् ? जम्युद्वीपे खल्ल भदन्त ! द्वीपे भरते वर्षे कति तीर्थानि प्रज्ञक्षानि ? गौतम ! त्रीणि तोर्थानि प्रज्ञक्षानि तद्यथा-माग्धं दरदःम प्रभासम्, जम्बूद्वीपे खलु भदन्त ! द्वीपे ऐरवते वर्षे कतितीर्थानि प्रश्नप्तानि ? गीतम !

त्रीण तीर्थानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा—मागधं वरदाम प्रभासम्, एवमेव जम्बूद्वीपे खलु भदन्त! द्वीपे महाविदेहे वर्षे एकेकिस्मन् चक्रवर्तिविजये कित तीर्थानि प्रज्ञप्तानि? गौतम! त्रीण तीर्थानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा—मागधं वरदाम प्रभासम्? एवमेव सपूर्वापरेण जम्बूद्वीपे द्वीपे एकं द्वशुत्तरं तीर्थक्षतं भवतीत्याख्यातं ? जम्बूद्वीपे खलु भदन्त! द्वीपे कष्ठपष्टि विद्याधरश्रेणयाः कियत्य अभियोगिकश्रेणयः प्रज्ञप्ताः! गौतम! जम्बूद्वीपे द्वीपे अष्ठपष्टि विद्याधरश्रेणयो- अष्टपष्टि राभियोगिकश्रेणयः प्रज्ञप्ताः। एवमेव सपूर्वापरेण जम्बूद्वीपे द्वीपे पर्विकृत् श्रेणयो भवन्तीत्याख्यातम् । जम्बूद्वीपे खलु भदन्तः! द्वीपे कियन्तश्रक्रविविजयाः कियत्यो राजधान्यः कियत्यस्तिमस्रागृहाः कियत्यः खण्डप्रपातगृहाः कियन्तः कृतमालका देवाः कियन्तो नक्तमालका देवाः कियन्तः ऋषभक्तर्यक्ताः प्रज्ञप्ताः? गौतम! जम्बूद्वीपे द्वीपे चतुस्त्रिशत् चक्रवर्ति विजयाश्चरृक्षिश्च द्राजधान्यः चतुस्त्रिशत्तिमस्रागृहाः चतुस्त्रिशत्कृतम्यल्खप्रपातगृहाः—चतुस्त्रिशत्कृतमालका देवाः चतुस्त्रिशत्कृतमालका देवाः चतुस्त्रिश्चर्ताः प्रज्ञप्ताः। जम्बूद्वीपे खलु भदन्त ! द्वीपे कियन्तो महाहूदाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! थोडश महाहूदाः प्रज्ञप्ताः

जम्बुढीपे खल भदन्त ! द्वीपे कियत्यो महानद्यो वर्षधरप्रवहाः कियत्यो महानद्यः कुण्डप्रवहाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जम्बूद्वीपे द्वीपे चतुर्दश महानद्यो वर्षधरप्रवहाः, षर्सप्तति-र्महानद्यः कुण्डप्रवहाः एवमेव सपूर्वापरेण जम्बूद्रीपे द्वीपे नवतिर्महानद्यो भवन्तीत्याख्यातम्। जम्बृद्धीपे-द्वीपे भरतैरवतयोः कति महानद्यः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! चतस्रो महानद्यः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-गङ्गा सिन्धुः रक्ता रक्तवती, तत्र खळ एकैका महानदी चतुर्दश चतुर्दश सिळ्ळा सहस्रैः समग्रा पूर्वपश्चिमेन लवणसमुद्रं समर्पयति, एवमेव सपूर्वापरेण जम्बुद्वीचे द्वीचे भरतैर-वतयो वैर्षयोः पट्पश्चाशत् सलिला सहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । जस्बूद्वीपे खलु भदन्त ! द्वीपे हैमवत हैरण्यवतयोर्वषयोः कतियहानद्यः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! चतस्रो महानद्यः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-रोहिता रोहितांशा सुदर्शक्टा रूप्यक्टा च, तत्र खळ एकैका महानदी अध्टा-विंशत्याऽष्टाविंशत्या सिळ्लासहस्नैः समग्रा पूर्वपिश्रमेन लवणसमुद्रं समपेति एवमेव सपूर्वी-जम्बूद्वीपे द्वीपे हेमवतहैरण्यवतवर्षयो द्वादयोत्तरसिळळासहस्रं भवतीत्याख्यातम् इति । जम्बूद्वीपे खळ भदन्त ! द्वीपे हरिवर्षरम्यकवर्षयोः कति महानचः प्रज्ञसाः ? गीतम ! चतस्रो महानद्यः प्रज्ञप्ता, हरि, हरिकान्दा, नरकान्दा, नारीकान्ता च, तत्र खळु एकैका महानदी पट्पञ्चाशता सलिलासहस्नैः समग्रा पूर्वपश्चिमेन लदणसमुद्रं समर्पेति, एवमेव सपूर्वीपरेण जम्बूद्वीपे द्वीपे हरिवर्षरम्यकवर्षयोः द्वे चतुर्विक्ति सल्लि सहस्र भवत इत्या-ख्यातम् । जम्बूद्वीपे खलु भदन्त ! द्वीपे महाविदेह वर्षे कति नहानद्यः प्रज्ञसः ? गौतम ! द्वे महानचौ प्रज्ञ^तते, तद्यथा-शीता च शीतोदा च तत्र खळु एकैका महानदी पश्चिभिः पश्चिमः सिल्ला सहस्रैः द्वारिशता च सिल्टा सहस्रैः समग्रा पूर्वपश्चिमेन लद्दणसमुद्रं समर्पयति प्रमेव सपूर्वापरेण जम्बूद्रीपे द्वीपे महाविदेहदर्पे दशकलिलाशतसहस्राण चतुः हि सलिला सहस्राणि भवन्दीत्याख्यातम् । जम्बूद्वीपे खल भदन्त ! द्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणेन कियन्ति सल्लिशशतसहस्राणि प्रवेपश्चिमाभिष्ठखानि लवणसमुद्रं समपेति ? गौतम ! एकं पण्ण-वित सल्लिशशतसहस्रं पूर्वपश्चिमाभिष्ठखं लवणसमुद्रं समपेयित, जम्बूद्वीपे खल भदन्त ! द्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्योत्तरेण कियन्ति सल्लिशशतसहस्राणि पूर्वपश्चिमाभिष्ठखानि लवणसमुद्रं समपेयन्ति ? गौतम ! एकं पण्णवित सल्लिशशतसहस्राणि पूर्वपश्चिमाभिष्ठखं लवणसमुद्रं समपेयिति । जम्बूद्वीपे खल भदन्त ! द्वीपे कियन्ति ? सल्लिशशतसहस्राणि पूर्वाभिष्ठखानि लवणसमुद्रं समपेयन्ति ? गौतम ! सप्त सल्लिशशतसहस्राणि अध्यानि लवणसमुद्रं समपेयन्ति, जम्बूद्वीपे खल भदन्त ! द्वीपे कियन्ति सल्लिशशतमहस्राणि पश्चिमाभिष्ठखानि लवणसमुद्रं समपेयन्ति, जम्बूद्वीपे खल भदन्त ! द्वीपे कियन्ति सल्लिशशतमहस्राणि पश्चिमाभिष्ठखानि लवणसमुद्रं समपेयन्ति, एवमेश सपूर्वापरेण जम्बूद्वीपे द्वीपे चतुर्दश सल्लिशशतन्ति सहस्राणि अव्यानिका सहस्राणि अवन्तीत्याल्यातम् ॥ स् ० २ ॥

टीका-'खंडा' खण्डम्-शकलम् 'जोयण' योजनम् 'वासा' वर्षाणि भरतादीनि 'पन्वय' पर्वतः-मन्दरादिः क्डाय' क्टानि-गिरिशिखराणि 'तित्थ' तीथं मागधादिकम् 'सेढीयो' श्रेणयो विद्याधरादीताम् 'विजय' विजयश्रकवर्त्तिनाम् 'दह' हूदः 'मलिलाओ' सलिलाः नद्यः १० 'पिंडच् होइ संगदणी' पिण्डके-समुदाये भवति संग्रहणी एते खण्डाद्रयः पदार्थाः, अत्र पष्ठे-एक्षस्कारे प्रतिपादिता दश्यदार्थां दश द्वारक्षपेण भवेयुस्तेषामयं संग्रह इति । 'खंडा

'जंबुदीवेणं भंते ! दीवे भरहप्पमाणमेलेहिं' इत्यादि ।

टीकार्थ-इस छडे बक्षस्कार में जो बिषय प्रतिपादित किया जाने वाला है इसकी यह संग्रह कारिणो गाथा है-इसके छारा यह प्रकट किया गया है-कि, खण्ड द्वार से, योजय द्वार से अरतादिरूप वर्ष द्वार से मन्द्रादिरूप पर्वत द्वार से तीरिशाखरू कूट द्वार से मगधादिरूप तीर्यद्वार से विद्याधरों के श्रेणी द्वार से, चक्रवर्तियों के विजय द्वार से, हृदद्वार से एवं नदी रूप सलिला द्वार से' इस छड़े वक्षस्कार में ये द्वा पदार्थ प्रतिपादित किये जावेंगे। पदार्थ संग्रह काक्य सुक्ष्म रूप होता है अतः उससे स्पष्ट बोध नहीं होता है अतः सुनकार

^{&#}x27;जंबुदीवेणं भंते! दीवे भरहप्पमाणमे तेहिं' इत्यादि

ટીકાર્થ-આ છઠ્ઠા વક્ષસ્કારમાં જે વિષયનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવેલું છે, તેની આ સંગ્રહ્કારિણી ગાથા છે. એના વડે આ વાત પ્રકટ કરવામાં આવી છે કે ખંડદારથી, ચાનદારથી, ભરતાદિ રૂપ વર્ષદારથી, મન્દરાદિ રૂપ પર્વતદારથી, તીરશિખર રૂપ કૂટ-દ્વારથી, મગધાદિ રૂપ તીર્ધદારથી, વિદ્યાધરાની શ્રેણીદારથી ચક્રવતિ એાના વિજયદારથી, હુદદ્વારથી તેમજ નદી રૂપ સલિલદારથી—'આ છઠ્ઠા વક્ષસ્કારમાં એ દશ પદાર્થીનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે. પદાર્થ સંગ્રહ્વાક્ય સૂક્ષ્મ રૂપમાં હોય છે. એથી એનાથી સ્પષ્ટ જ્ઞાન થતું નથી. માટે સૂપ્રદાર સ્વયં પ્રશ્નોત્તર પદ્ધતિ વડે હવે વિષયનું પ્રતિપાદન કરે

जोयण' इत्यादि पदार्थ संग्रहवात्रयस्य स्क्ष्मतया लोकानां वोधासंभवेन स्वयमेव स्त्रकारः पश्रोत्तरपद्धत्या विवृण्िति तत्रेदं सूत्रम्-'जंबुद्दीवेणं' इत्यादि, 'जंबुद्धीपः खलु भदन्त ! द्वीपः सर्वे द्वीपमध्यवर्ती जम्यूद्वीप इत्यर्थः 'भरहप्पमाणमेत्तेहिं' भरतप्रमाणमात्रैः भरतस्य भरतक्षेत्रस्य यत् प्रमाणम् पट्कळाचिकपइविंशतियोजनाधिक पञ्चशतयोजनानि मात्रापरिमाणं येषां तानि तथा एवं प्रकारकैः 'खंडेडिं' खण्डैः शक्तैः एवं प्रकारेण 'खंडग-णिएणं' खण्डाणितेन-खण्ड संरूपया भरतक्षेत्रस्य यावन्ति खण्डानि तत्त्रमाणेन यदि जम्ब-द्वीपस्य विभागाः क्रियन्ते तदा कियन्ति खण्डानि जम्बुद्वीपस्य भवन्तीति । 'केवइयं' कियान् 'एम्नेच' प्रज्ञप्तः-कथित इतिप्रदनः भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'णउपं खंडसपं खंड गणिएणं पश्चते' नवतं खण्डमतं खण्डगणितेन प्रज्ञप्तः तत्र नवतं नवत्वधिकं खण्डावां भतं खण्डगणितेन प्रम्बद्धीयः कथित इति । अयं भावः-भरत-क्षेत्रप्रमाणैः खण्डैः नवत्यधिव शतुसं व्यक्तैर्मिलितै जेम्बुद्वीपः सपूर्णलक्षप्रमाणो भवति. तत्र दक्षिणोत्तरतः खण्डभीलमा पूर्वं भगताधिकारे एव कृतेति न पुनरत्रोच्यते तत एव द्रष्टव्यः स्वयं ही प्रश्नोत्तर पद्धति द्वारा अब विषय का प्रतिपादन करते हैं-'जंबुहीवे णं भंते ! दीवे भरहप्यवाणमेलेहिं खंडेहिं केवइयं खंडगणिएणं पन्नले' इसमें गौतमस्वामी ने प्रमु से ऐसा पूछा है कि है भदन्त ! १ लाख योजन के विस्तार-वाले इस अंबूढ़ीय के भरतक्षेत्र विस्तार का बराबर यदि दुकड़े किये जाये तो वे कितने होनेंं? भरतक्षेत्र का विस्तार ५२६ ई. योजन का कहा गया हैं यदि एक ास धीजन के विस्तार बाले जम्बूडीय के इतने खण्ड किये जाते है तो वे खण्ड संख्या में कितने होंगे ? इसके उत्तर में प्रमु कहते हैं-'गोयमा ! णउयं खंडसयं खंडगणिएणं पन्नले' हे गौतन ! १ लाख योजन विस्तार वाले जम्बूद्वीप के खंड गणित के अनुसार भरनक्षेत्र प्रमाण हुकडे करने पर १९० डुकडे होगें ५२६ 🚉 को १९० यार भिलाने पर जम्बूबीप का १ लाख घोजन का विस्तार हो जाता है दक्षिण और उत्तर के खंडों की मिलना-मिलान-पहिले भरत के अधिकार में

छे-'जंनुद्दीयेणं मंत! दीये सरहत्वमाणमेत्तेहिं खंडेहिं केबद्ये खंडगिगएणं पत्नते' आभां शीतभावाभी अलुने आ प्रभाषे प्रश्न क्ष्मी छे है है लहंत! स्थेह लाण येकिन क्षेट्रता विस्तारताणा आ कंजुद्धीयना लरतक्षेत्र विस्तार अराजर की हहताओं हरवामां आवे तो तेना हहता यहा ? सरतक्षेत्रनी विस्तार परद्र है थेकिन प्रभाष्ट्र हहेवामां आवेल छे. की स्थेह लाण येकिन क्षेट्रला विस्तारवाणा कंजूद्धीपना स्थेट्रला क अंडा हरवामां आवे तो तो अंडा संभ्यामां हैटला यहा ? स्थेना क्ष्मालमां प्रश्न हहे छे-'गोयमां णड्यं खंडसयं खंडगणिएणं पन्नते' है औतम ! स्थेह लाभ येकिन विस्तारवाणा कम्भूद्धीपना अंडा खंडगणिएणं पन्नते' है औतम ! स्थेह लाभ येकिन विस्तारवाणा कम्भूद्धीपना अंडा शिक्षा स्थेह स्थे विस्तारवाणा कम्भूद्धीपना अंडा शिक्षा स्थान विस्तारवाणा कम्भूद्धीपना अंडा शिक्षा स्थान विस्तारवाणा कम्भूद्धीपना अंडा शिक्षा स्थान विस्तारवाणा कम्भूद्धीपना अंडा हिस्स विभाव स्थान विस्तारवाणा कम्भूद्धीपना अंडा शिक्षा स्थान विस्तारवाणा कम्भूद्धीपना अंडा हिस्स विभाव स्थान विस्तारवाणा कम्भूद्धीपना स्थान विस्तारवाणा कम्भूद्धीपना स्थान विस्तान स्थान विस्तारवाणा कम्भूदीपना संख्या क्षान स्थान विस्तारवाणा कम्भूद्धी हित्र ते विभाव स्थान स

पूर्व पश्चिमस्तु यद्यपि खण्डगणित विचाराणा सूत्रे न कृता तात्रत् सुखादिभिरेव छक्षसंख्या-पूर्तैः कथनात् तथापि खण्डगणितविचारे कृते यावन्त्येव भरतप्रमाणानि, तावत्संख्यकान्येव खण्डानि भवन्तीति प्रथमं खण्डद्वारम् ॥

अथ योजनेति द्वारस्त्रमाद-'जंबुद्दीवेणं भंते! दीवे' इत्यादि 'जंबुद्दीवे णं भंते! दीवे' जम्बूद्वीपः खलु भदन्त! द्वीपः सर्वद्वीपम्थवर्त्ती जम्बूद्वीप इत्यर्थः 'केवइयं जोयणगणिएणं पश्चते' कियात् योजनगणितेन समवतुरस्रयोजनप्रभाणखण्डसर्वसंख्या प्रक्षाः-कथित इति प्रश्नाः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'सत्तेव कोडिसया' सप्तेव कोटिशतानि सप्तेवेत्यत्र एव शब्दोऽत्रधारणार्थकः, उत्तरत्र संख्यासमु- ब्रायेकः 'णउया' नवतानि—नवित कोटशिकानि इत्यर्थः, अत्यया—कीटिशततो द्वितियस्थाने विद्यमानेषु छक्षादि स्थानेषु नवदशास्त्रणा नवति नेयुज्यते गणित संप्रदायविरोधात्, तथा—'छप्पण्ण सयसहस्ताइं' पद्भञ्चाशच्छत्रगहस्रणि पद्भञ्चाशच्छता—इत्यर्थः 'चडणवइं च कही जा चुकी है अतः अब उसे यहां नहीं दिखाया जाता है बहीं से इसे देख छेना चाहिये पूर्व से पश्चिम तक के खंडों की विचारणा यहां पर खंड गणित के अनुसार सूत्र में नहीं दिखाई गई है—परन्तु छक्ष संख्या की पूर्ति करनेवाछे मुखादिकों द्वारा हो यह बात कह दी जानी है किर भी खंड गणित के अनुसार विचार करने पर जितना भरतक्षेत्र के खंडों का प्रप्राण है उतने ही खण्ड यहां पर होते हैं। खण्डदार समास ॥

योजनद्वार वक्तव्यता-

'जंबुदीवेणं भंते ! दीवे' गौतमस्यामीने इस द्वार में प्रभु से ऐसा पूछा है— हे भदन्त ! जम्बूदीप नामका द्वीप योजन गणित से समयतुरस्र योजन प्रमाण खंडों को सर्व संख्या से कितना कहा गया है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं— 'गोयमा! सत्तेव य कोडिसया णउआ छप्यण स्थसहस्साई चडणवइंच सहस्सा

વિશે અહીં સ્પષ્ટતા કરવામાં આવશે નહિ. જિજ્ઞાસુઓ ત્યાંથી જ જાણવા પ્રયત્ન કરે. પૂર્વેથી પશ્ચિમ સુધીના ખંડાની વિચારણા અહીં ખંડગણિત મુજબ સૂત્રમાં સ્પષ્ટ કરત્રામાં આવી છે. પરંતુ લક્ષ સંખ્યાની પૂર્તિ કરનારા મુખાદિશ વડે જ આ વાત કહેવામાં આવી છે. છતાં એ ખંડગણિત મુજબ વિચાર કરીએ તાે જેટલું ભરતશ્ચના ખંડાનું પ્રમાણ છે, તેટલા જ ખંડા અહીં પણ હાય છે. ખણડદ્રાર સમાપ્ત.

યાજનદ્ધ ર વક્તવ્યતા

'जंबुद्दीवेणं मंते ! दीवे' गौतमस्वाभी के आ द्वारमां प्रभुने का प्रमाणे प्रश्न डिशे हे हे सहंत ! कंणूदीय नामह द्वीप थे।कन अधितथी समयतुरस थे।कन प्रमाणे भंजानी सर्व संभ्याथी हेटते। हेंदेवामां आवेति है श्रेना कवाणमां प्रभु हे हे-'गोयमा! संतेव य कोडिसयाइं णडआ छप्पण सयसहस्साइं चडणव च सहस्सा सयं दिवछं च गणिअपयं

सहरसा' चतुर्नेनितश्च सहस्राणि चतुरिधकानि नवतिसहस्राणि इत्यर्थः 'सयं दिवद्धं च गणि-यपयं' शतंच द्रचर्दं पश्चाशद्धिकं योजनाना मित्येतावत्प्रमाणकं जम्बूद्धीपस्य गणितपदं क्षेत्र फलमित्यर्थः स्त्रेऽत्र योजनसंख्यायाः प्रक्रान्तत्वाद् योजनावधिरेव संख्या प्रदर्शिता, योजनातिरिक्त संख्याया विद्यमानत्वेऽपि उपेक्षण परित्यागात् भगवतीस्त्रादौ तु साधिकत्वं दर्शितम्, तद्यथा-

'गाउयमेगं पण्णरस धणुस्सया तह धणूणि पण्णरस । सिंहं च अंगुलाई जंबुदीबस्स गणियपयं''॥ १॥ छाया-गञ्यूतमेकं पश्चदशधनुः शतानि तथा पश्चदश धनुंपि । षष्टिं चाङ्गुलानि जम्बूदीयस्य गणितपदम् ॥१॥ इतिच्छाया॥

सयं दिवदं च गणिअपयं ॥१॥ हे गौतम ! ७ अरब २० करोड ५६ लाख २४ हजार १५० योजन का जम्बूढीप का क्षेत्र फल है 'सक्तेव' में जो एव पद प्रयुक्त हुआ है वह अवधारण अर्थ तथा आगे की संख्या के समुच्चय के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। 'णड्या' पद से ९० करोड अधिक ऐसा अर्थ लिया गया है ९ सौ ऐसा अर्थ नहीं लिया गया है क्योंकि ऐसा अर्थ लेने पर आगे के लक्षादि स्थानों में गणित प्रक्रिया के अनुसार विरोध पडता है गणित पद से क्षेत्र फल गृहीत हुआ है इस सूत्र में योजन संख्या का प्रकरण है इससे योजन तक की ही संख्या यहां दिखाई गई है पचपि योजन से अतिरिक्त भी संख्या विद्यमान है परन्तु वह यहां गृहीत वहीं हुई है भगवतीसूत्र आदि में इस प्रमाण में साधिकता इस प्रकार से दिखलाई गई है—'गाउपमेगं पण्णरस धणुस्सया तह धणुणि पण्णरस । सिंह च अंगुलाई जंत्रूदी वस्स गणियप थं ॥१॥ कि जम्बूढीप का क्षेत्र फल १ गन्यूत १५१५ धनुष ६० अंगुल का है यहां ससकोटि दातादि रूप प्रमाण

ाशा है जीतम! ७ अरम ६० हरेर, पर दाण, ६४ हजर, १५० (७६० पर ६४१५०) रेशम केटलं कं जूहीपनं के नहीं के 'सत्तेव' मां के 'एव' पह प्रयुक्त थयेल छे, ते अवधारण अर्थ तेमक आगणनी संज्याना समुन्ययना अर्थमां प्रयुक्त थयेल छे. 'णड्या' पहथी ६० हरेर हरतां अधिह, आ जतना अर्थ शहण हरवामां आवेला छे. नवसा अवी अर्थ शहण हरवामां आवेला आवेला निया अर्थ शहण हरवामां आवेला आगणना लक्षाहि स्थानीमां अण्वित प्रश्चिया मुक्स विशेष आवे छे. अर्थित पहथी क्षेत्रहण गृहीत थयेलं छे. आ सूत्रमां थेर म संज्या मुक्स विशेष आवे छे. अर्थी थेर म सुधीनी क संज्या अत्र निर्दिष्ट हरवामां आवेली छे. जो है येर मातिरिक्त पण्य संज्या विद्यमान छे, परंतु तेनं अत्र अर्थेण थयुं नथी. लगवतीसूत्र वजेरेमां आ प्रमाण्यमां साधिहता आ प्रमाण्य निर्दिष्ट हरवामां आवेली छे—'गाड्यमेगं पण्णरस धणुस्सया तह धणूणि पण्णरस सिट्टिंब अंगुलाई जंबुई वस्स गणियवयं ॥१॥

अयमर्थः-एकं गन्यूतं पश्चदश्वधनुः शतानि तदुपरि पश्चर्श धनुंषि षष्टिसंख्यकानि अङ्गुलानि, सप्तकोटि शतादिकानितु पूर्ववदेव, एताबस्प्रमाणकं जम्बुद्वीपस्य मणितपदं-क्षेत्रफलमिति । एतावता उपर्युक्तं जम्बूदीपस्य प्रमाणं तर्ति धतुः शतादीना मना कथनं योजन द्वारत्वाद् योजनाविधरेव संख्या प्रद्शितेति । एतावस्त्रमाणस्य करणं चात्र 'विक्खंयपाय-स्णियोय परिस्यो तस्समणियपयं विष्क्रमभपादमुणितश्र ९रिस्यस्तस्य मणितपद्भिति वचनात् अम्बूद्वीपस्य परिधिः त्रिलक्ष पोडशसदस्र द्विञ्चतसप्तर्दिञ्चति योजनादिको जञ्जू-द्वीप विष्कम्भस्य लक्षरूपस्य पादेन-चतुर्था शेन पञ्जितिसद्सरूपेन छनिती जम्बुद्वीपस्य गणिवपदमिति, तथाहि-जम्बूद्वीप परिधिक्षीण लक्षाणि पोडश सहस्राणि द्वेशते सप्तर्वि-शत्यधिकं योजनानाम्, तथा गव्यृतत्रयम् अष्टार्विशत्यधिकं शतं धनुवां त्रयोदशाङ्खलानि एकं चार्डाङगुमिति, तत्र योजनराशी पंचविंशतिसहस्त्र र्मुणने कृते सनि सप्तकोटिशवानि नवति-कोटचः पट्पश्चाश्रत्वक्षाणि पश्चसप्ततिः सङ्ग्राणि भवन्ति, नथा क्रोशत्रयस्य पश्चविश्वति-पूर्ववत् ही लिया है अर्थात् जम्बूदीप का जो क्षेत्र फल उपर में प्र र किया गया है वह तो है ही परन्तु उस से अतिरिक्त इतना और अधिक उसका क्षेत्र फल है इस प्रमाण को लाने के लिये यह करण सूत्र है-'वित्रखम्सपायगुणियो य परिरयो तस्स गणिय पयं' इसका भाव ऐसा है-जम्बूजीर की परिधि का प्रमाण ३ लाख सोलह हजार २ दो सौ २७ योजन का है तथा जम्बूढीप का विस्तार एक लाख का है इसका पाद-एक लाख योजन का चतुर्थी वा २५ हजार योजन होता है २५ हजार योजन का गुणा परिधि के प्रमाण के साथ करने पर क्षेत्र फल का प्रमाण आजाता है जम्बूडीप की परिधि तीन लाख सोलह हजार दो सौ २७ योजन ३ गच्यृत १२८ घनुष १३। अंगुल है योजन राज्ञि में २५ हजार के गुणा करने पर (३१६२२७×२५००० करने पर) ७९०५५००० इतनी योजन

જંબૂદ્ધીપનું ક્ષેત્રફળ ૧ ગવ્યૂત ૧૫૧૫ ધનુષ ૧૦ અંગુલ જેટલું છે. અહીં સપ્તકારિ શતાહિ રૂપ પ્રમાણ પૂર્વવત જે શહ્યુ કરવામાં આવેલું છે. એટલે કે જંબૂદ્ધીપનું જે ક્ષેત્રફળ ઉપર સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યું છે, તે તો છે જ પરંતુ તેના સિવાય અડલું વધારાનું તેનું ક્ષેત્રફળ છે. આ પ્રમાણને લાવવા માટે આ કરણ સૂત્ર છે. 'વિવસ્ત્રમ્મવાય- ગુળિયો ય પરિયો તસ્ત્ર ગળિયવયં' એના ભાવ આ પ્રમાણે છે કે જંબૂદ્ધીપની પરિધિનું પ્રમાણ 3 લાખ ૧૧ હજાર ૨ સૌ ૨૭ (૩૧૧૨૨૭) યાજન જેટલું છે. તેમજ જંબૂદ્ધીપના વિસ્તાર એક લાખ યાજનના અંતુર્યાંશ ૨૫ હજાર યાજન જેટલા છે. આના પાદ એક લાખ યાજનના ચતુર્યાંશ ૨૫ હજાર યાજન થાય છે. ૨૫ હજાર યાજનના ગુણાકાર પરિધિના પ્રમાણની સાથે કરવાથી ક્ષેત્રફળનું પ્રમાણ આવી જાય છે. જંબૂદ્ધીપની પરિધિ ત્રણ લાખ સેળ હજાર ખસા સત્યાવીસ યાજન 3 ગન્યૂત ૧૨૮ ધનુષ અને ૧૩ા અંગુલ છે. યાજન રાશિમાં ૨૫ હજારના ગુણાકાર કરવાથી (૩૧૬૨૨૭×૨૫૦૦૦ કરવાથી) ૭૯૦૫૫૦૦૦ આટલી યાજન

सहस्र गुंगने कृते सित गन्यूतानां एश्वसप्तिति इसाणि भवन्ति, एतातां संख्यानां योजनान्त्रमार्थं चतुभिर्भागे हते सित लन्धानि अष्टाद्यसहस्राणि सप्तवानि पञ्चायद्धिकानि योजनात्ताम्, अस्मिश्र सहस्राधिकं पूर्वराशो प्रक्षिप्ते सित जातानि विवन्ति ९३ सहस्राणि सप्त ७ शतानि रश्चायत् ५० अधिकानि कोटचादिका संख्यातु सर्वत्र समानेन, तथा धतु-पाम्हाविंग्रतिश्वत पश्चविंग्रतिभवस्य गुंग्यने जातानि द्वाविंग्रतिश्व एक्वाय सम्तिन्ति, तथा धतु-पाम्हाविंग्रतिश्व पश्चविंग्रतिभवस्य गुंग्यने जातानि द्वाविंग्रतिश्व योजनसहस्य थेजिनस्य गुंग्यने अवित, ततो योजनान्यनार्थपष्टभिः सहस्रमाणि सित लन्धानि चत्वारि योजनश्वतानि अस्मिश्र पूर्वराशो प्रक्षिप्ते जातानि चतुर्नदित सहस्राणि-सतं पश्चायदिश्वम् तथो दश्च पश्चविंग्रति सहस्रेर्यद्व सुण्यन्ते तदा जातानि त्रीणिल्याणि पश्चविंग्रति सहस्राधिकाणि, अर्द्धाक्यमपि यदा पश्चविंग्रति सहस्रेर्यस्ते 'सुण्यते' तदा जातानि अर्द्धाक्यानां पश्चविंग्रति सहस्राणि तेषामर्द्धल्यानि अङ्गुलानां द्वादशसह-

संख्या आजाती है अब ३ को श झे २५ हजार का गुणा करने पर ७५ हजार गन्यूनों का प्रमाण आजाता है ७५ हजार गन्यूनों के योजन बनाने के लिये उनमें ४ का भाग देने पर १८७५० जोजन होते हैं इसे पूर्व राशि में प्रक्षिप्त करने पर ९३ हजार ७ सी ५० अधिक होते हैं कोट्यादिकों की संख्या तो सर्वज उसी तरह से हैं १२८ धनुषों को २५ हजार से गुणित करने पर ३२००००० छाख धनुष होते हैं आठ हजार धनुषों का १ योजन होता है तब इनके योजन बनाने के लिये ८ हजार का इन में भाग देने पर ४०० योजन बनते हैं।

इसे पूर्वराचि। में प्रक्षिस करने पर ९४१५० हो। जाते हैं। १३ अंगुलों में २५ हजार का गुजा करने पर ३२५००० अंगुल होते हैं अर्धअंगुल का प्रमाण भी २५ हजार हो गुणित होने पर १२॥ इजार अंगुल होता है। पूर्वीक्त अंगुल-राधि। में इनका प्रक्षेत करने पर ३३७५०० अंगुलराधि। होता है। इनके धनुष

સંખ્યા આવી જાય છે. હવે 3 કેમ્પમાં ૨૫ હજારના ગુણાકાર કરવાથી ૭૫ હજાર ગળ્યુનાના યોજન ખનાવવા માટે તેમાં ૪ ના ભાગાકાર કરવાથી ૧૮૭૫૦ યોજનપાય છે આને પૂર્વરાશિમાં પ્રક્ષિપ્ત કરવાથી ૯3 હજાર ૭ સો ૫૦ અધિક થાય છે. કેટિયાદિકાની સંખ્યા તા સર્વત્ર તે પ્રમાણે જ છે. ૧૨૮ ધનુષાને ૨૫ હતારથી ગુણિત કરવાથી ૩૨૦૦૦૦ લાખ ધનુષ થાય છે. આક હજાર ધનુષોને ૨૫ હતારથી ગુણિત કરવાથી ૩૨૦૦૦૦ લાખ ધનુષ થાય છે. આક હજાર ધનુષોનું એક યોજન થાય છે. આમ એમના યોજન બનાવવા માટે ૮ હજારના એમાં ભાગાકાર કરીએ તા ૪૮૦ યાજન થાય છે.

આ સંખ્યાને પૂર્વ રાશિમાં પ્રક્ષિપ્ત કરવાથી ૯૪૧૫૦ થાય છે. ૧૩ અંગુલામાં ૨૫ હજારના ગુણાકાર કરવાથી ૩૨૫૦૦૦ અંગુલ થાય છે. અર્ધ અંગુલનું પ્રમાણ પણ ૨૫ હજારથી ગુિલત હાવાથી ૧૨૫ હજાર અંગુલ થાય છે. પૃવેષ્ક્રિત અંગુલ રાશિમાં આ રાશિને પ્રક્ષિપ્ત કરીએ તા ૩૩૭૫૦ અંગુલ રાશિ થાય છે. એના ધનુષ અનાવવા માટે ૯૬ ના

स्नाणि पश्चशताधिकानि, तेषु पूर्वीकाङ्गुलराशौ प्रक्षिप्तेषु जातोऽङ्गुलराशिः-जीणिलक्षाणि त्रिंशस्सहस्नाणि पश्चशताधिकानि एतेषां धनुरानयनाय पण्णवित संख्यया भागे हते सित लब्धानि धनुषां पश्चित्रिकाच्छताऽनि पश्चाशद्धिकानि शेष पष्टिरङ्गुलानि अस्य धनुषोराशे गिंच्युतानयनाय सहस्रद्रयेन भागे हते सित लब्धमेकं गव्युतं शेषं धनुषां पश्चद्रशतानि पश्चदशद्धिकानि सर्वसङ्गलनया योजनानां सप्तकोटिशतानि नवित कोटचिषकानि पट्प-श्चाशवलक्षाणि चतुर्ववित सहस्राणि शतमेकं पश्चाशद्धिकम्,....गव्युतमेकं धनुषां पश्चदश-शतानि पश्चाशद्धिकानि अङ्गुलानां पष्टिरिति योजनद्वारम् ॥

सम्प्रति वर्षद्वारं दर्शयितुमार-'जंबुदीवेणं' इत्यादि । 'जंबुद्दीवेणं भंते ! दीवे' जम्बू-द्वीपे खल भदन्त ! द्वीपे सर्वद्वीपमध्य जम्यूद्वीपे इत्थर्थः 'कइ वासा पन्नता' कित-कियत्सं- एवकानि वर्षाण भरतादीनि क्षेत्राणि प्रज्ञप्तानि-कथितानीति प्रक्षः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि,'गोयमा' हे गौतम! 'सत्त वासा पन्नता' सप्तप्तं एयकानि वर्षाणि भरतादीनि प्रक्षप्तानि-कथितानि, तानि कानि सप्पवर्षाणि इत्याग्रङ्कायां तानि दर्शीयतुमाह-'तं जहा' इत्यादि । 'तं जहा' तद्यथा-'भरहे एरवए हेमवए हिरण्णवए हरिवासे रम्नगवासे महाविदेहे' भरतं- यनाने के लिये ९६ का भाग देने पर ३५१५ धनुष आते हैं द्रोप नीचे ६० वचते हैं इस धनुषराद्या के गव्यून होता है तब तक एक गव्यून आता है द्रोप स्थान में १५१५ बचते हैं इन सब की संकलना से ७ सौ करोड (७ अरब) ९० करोड ५६ लाख ९४ हजार १५० योजन १ गव्यून १५-१५ धनुष ६० अंगुल यह 'गाल्यमेंगं' इत्यादि गाथोक्त प्रमाण निकल आता है। योजनद्वार समाप्त ॥

वर्षद्वार वक्तव्यता

'जंबुद्दीवेणं थंते ! दीवे कित वासा पण्यत्ता' हे भदन्त ! इस जम्बूद्दीप नामके द्वीप में कितने वर्ष-क्षेत्र कहे गये हैं ? उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोथमा! सत्त-वासा' हे गौतम ! इस जम्बूद्दीप नाम के द्वीप में सात क्षेत्र कहे गये हैं। 'तं

ભાગાકાર દરવાથી ૩૫૧૫ ધતુષ થાય છે. નીચે શેષમાં ६૦ વધે છે. આ ધતુષરાશિને ગબ્યૂત અનાવવા માટે એ હત્તરના ભાગાકાર કરવા પડે છે. કૈમકે એ હત્તર ધતુષના એક ગબ્યૂત થાય જ્યારે એક ગબ્યૂતે આવે છે ત્યારેશેષ સ્થાનામાં ૧૫૧૫ વધે છે. એ બધાની સંદલનાથી હસા કરાડ હ અબજ) ૯૦ કરાડ ૫૬ લાખ ૯૪ હતાર ૧૫૦ ચાજન (૭૯૦૫૬૯૪૧૫૦) ૧ ગબ્યૂત ૧૫–૧૫ ધતુય ૬૦ અંગુલ આ 'गाउयमेग' ઇત્યાદિ ગાયાક્ત પ્રમાણ નીકળી આવે છે.

येक्निक्षर समाप्त वर्षद्वार वस्त्रवण्यता

'जंबुदीवेणं भते ! दीवे कित वासा पण्णता' है सहंत ! आ क'लूदीप नाभड दीपमां डेटसा वर्ष-क्षेत्रा डहेवामां आवेसा है ? क्यालमां ५स डहे छे-'गोलमा ! सत्तवासा' है गौतम ! आ क'लूदीप नामड दीपमां सात क्षेत्रा मां आवेसा छे. 'तं जहां' तेमना भरतवर्षम्, ऐरवतवर्षम्, हैमवतवर्षम्, हिरण्यवर्षम्, हरिवर्षम्, रम्यकवर्षम्, महाविदेहश्च, तानि एतानि भरतादीनि जम्बूद्वीपे सप्तसंख्यकानि ७ वर्षाणि भवन्तीति वर्षद्वारम् ॥

सम्प्रति-पर्वतद्वारमाह-'जंबुद्दीवेणं' इत्यादि, 'जंबुद्दीवेणं भंते ! दीवे' जम्बृद्वीपे खलु भदन्त ! द्वीवे सर्व द्वीपमध्य जम्बृद्वीपे इत्यर्थः'केयइया वासहरा पन्नता' कियन्तः-कियत्संख्यका वर्षधराः-वर्षधरपर्वताः प्रज्ञप्ताः-कथिताः, तथा-'केयइया मंदरा पञ्चया पन्नता' कियन्तः-कियत्संख्यकाः मंदरपर्वताः प्रज्ञप्ताः-कथिताः, तथा-'केयइया चित्तकृष्ठा' कियन्तः-कियत्संख्यकाः चित्रकृटपर्वताः, तत्र चित्रं-विलक्षणं कृटमग्रभागो येषां ते चित्रकृटा स्तादशाः पर्वता जमबृद्वीपे कियन्तः प्रज्ञप्ताः, तथा-'केयइया विचित्रकृष्ठा' कियन्तः,-कियत्संख्यकाः पर्वताः प्रज्ञप्ताः, तथा-'केयइया जमगप्द्वया' कियन्तः-कियत्संख्यका यमकपर्वताः प्रज्ञप्ताः-कथिताः, तथा-'केयइया जमगप्द्वया' कियन्तः-कियत्संख्यका यमकपर्वताः युग्मनातवद्वभासमानाः पर्वताः प्रज्ञप्ताः, तथा-'केयइया कंचण-जहा' उनके नाम इस प्रकार से है-'भरहे, एरचए, हेमचए, हिरण्णवए, हरिच्यसं, रम्मगवासे महाचिदेहे' भरतक्षेत्र, ऐरचतक्षेत्र, हैमचत क्षेत्र, हिरण्यवर्ष, हरिचर्ष, रम्यकवर्ष और महाचिदेह-

पर्वतद्वारकथन

'जबुदीवेणं भंते ! दीवे केवहआ वासहरा पण्णाला' हे भदन्त ! इस जंबुद्वीप नामके द्वीप में कितने वर्षधर पर्वत-कहे गये हैं तथा-'केवहआ मंद्रा पर्वया पण्णाला' कितने मन्द्र पर्वत कहे गये हैं ? 'केवहया चित्तकूडा, केवहया विचित्त कूडा, केवहया जमगपन्वया, केवहया कंचण पन्वया, केवहया-वक्खारा, केवहया दीहवेअद्धा, केवहआ वहवेअद्धा पण्णाला' कितने चित्रकूट पर्वत, कितने विचित्रक्ट पर्वत, कितने वृत्तवैताहय पर्वत, कहे गये हैं ? इन में जो कितने दीधैवैताहयपर्वत, एवं कितने वृत्तवैताहय पर्वत, कहे गये हैं ? इन में जो चित्र क्ट नामके पर्वत हैं उनका कूट अग्रभाग विलक्षण प्रकारका है युग्मजात

नाभा भा प्रमाणे छे-'भरहे एरवए, हेमवए, हिरण्णवए, हरिवासे रम्मगवासे, महाविदेहे,' अरतक्षेत्र, अरवतक्षेत्र, डेभवतक्षेत्र, द्विरण्यवर्ष, द्विरवर्ष रम्यक्ष्वर्ष अने भद्धविदेद्ध.

पर्वतद्वार क्थन

'जंबुद्दीवेणं भंते! दीवे केवइआ वासहरा पण्णता' है अहंत! अंधूद्वीय नामक द्वीयमां हैटला वर्षधर पर्वता क्रिंवामां आवेला छे. तेमक 'केवइआ मंदरा पटवया पण्णता' हैटला भंदरपर्वता क्रिंवामां आवेला छे! 'केवइया चित्तकूडा, केवइया विचित्तकूडा, केवइया जमगपटवया, केवइया कंचणपटवया, वेवइया वक्खारा, केवइया दीहवेअद्धा, केवइया वट्टवेअद्धा पण्णत्ता' हैटला थित्रहूटपर्वता हैटला विखित्र क्रूटपर्वता, हैटला थमकपर्वता, केटला क्रिंवास्थपर्वता, केटला वक्ष्यपर्वता, केटला वक्ष्यपर्वता, केटला वक्ष्यपर्वता, केटला वक्ष्यपर्वता, केटला वक्ष्यपर्वता, केटला विखित्रकृट नामक पर्वत छे, तेमना क्रूट अञ्चलाण विलक्षण प्रक्षरना छे. युग्म कातनी लेम मालूम पदनारा के पर्वता छे ते यमकपर्वता

पन्वया' कियन्तः - कियत्संख्यकाः काश्रमपर्वताः सुवर्णमयाः सुवर्णवद्वभासमानाः पर्वताः प्रक्षप्ताः - कथिताः, तथा-केवह्या वक्खारा' कियन्तः - कियत्संख्यकाः वक्षस्कारः - वक्षस्कारः नामकाः पर्वताः प्रक्षप्ताः - कथिताः, तथा- 'केवह्या दीहवेयद्धा' कियन्तः - कियत्संख्यका दीवविताद्या स्त्रकामकपर्वतिविशेषाः प्रक्षप्ताः - कथिताः, तथा- 'केवह्या वहवेयद्धा प्रक्षपा' कियन्तः - कियन्तः - कियन्तः - विवाद्या प्रक्षपामकाः पर्वताः प्रक्षपाः कथिताः, इतिप्रश्नः, भगवात्याह- 'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'जंबुदीवे छदा सहस्यव्यया' नम्बू- द्वीपनामके द्वीपे पर्संत्यकाः वर्षयस्पर्यताः प्रक्षप्ताः - कथिताः, तत्र वर्ष-भरतादिकं धरन्ति ये ते वर्षथराः शुल्लिक्ष्यद्वादयः ते संद्यया पडेव भवन्तीति । तथा- 'एगे मंदरे पञ्चए' एकः - एक एव चित्रकृष्टे मन्दरो मेरुनामकः पर्वतो विद्यते इति । तथा- 'एगे चित्तकृष्टे' एकः - एक एव वित्रकृष्टे पर्वतः क्षाक्षप्रकृष्टे वित्रकृष्टे वित्रकृष्य वित्रकृष्टे वित

की तरह मालूम पड़ने वाले जो पर्यत हैं वे यमकपर्यत हैं। काञ्चन पर्वत सुवर्ण-मय हैं अतः ये सुवर्ण के जैसे अतिभास्तित होते हैं। इसके उत्तरमें प्रभु कहते हैं-'गोयमा! जंबुरीये छ वास्त्र प्रव्या।' हे कौतम! जम्बूदीप में छ वर्षघर पर्वत कहे गये हैं-थे क्षुरुल्लिश्वत् आदि नाम वाले हैं इन्हें वर्षघर इसलिये कहा गया है कि इनके छारा क्षेत्रों का विभाग किया गया है। एक भन्दर पर्वत कहा गया है और यह शरीर में नामि की तरह ठीक जम्बूदीप के बीच में है। एक विश्वत्य पर्वत कहा गया है 'एगे विचिक्तकृत्ते' एक ही विचित्र कृत्र पर्वत हा गया है 'दो जमग पर्वा, दो कंचणगप्रव्ययस्था' दो यमकपर्वत कहे गये हैं ये यसक पर्वत उत्तरकुरक्षेत्र में हैं। दो सो काञ्चन पर्वत कहे गये हैं।

क्यों कि देवकुर और उत्तरकुर में जो १० हद है उनके दोनों तटों पर

छे. डं अन्पर्वत सुवधुं भय छे. स्था हो पर्वता सुवधुं केवा प्रतिसक्षित थाय छे. स्था क्ष्मां प्रक्ष डंडे छे-'तीयमा! जंबुद्दीवे छ वासहरपव्यया' डे जीतम! कंप्रदीपमां ६ वर्षधर पर्वता स्थावेस छे. से क्षुद्ध द्विभवंत वर्णेरे नामवाणा छे. सेमने वर्षधर स्थेटसा भाटे डंडेवामां स्थावेस छे डे स्थेमना वडे क्षेत्रीनुं विकालन डरवामां स्थाव्युं छे. सेड भंदरपर्वत डंडेवामां स्थावेस छे सने स्थे पर्वत शरीरमां नाकिनी केम डीड कंप्र्यूदीपना मध्यकालमां स्थाविस छे. सेड विश्वहूट डंडेवामां स्थावेस छे. 'एते विचित्त क्र्डे' स्थेड क विश्वहूट पर्वत डंडेवामां स्थावेस छे. 'दी जमगपव्यया, दो कंपणगपव्यवसया' ध्याविस इंडेवामां स्थावेस छे. 'दी जमगपव्यया, दो कंपणगपव्यवसया' ध्याविस इंडेवामां स्थावेस छे. 'दी जमगपव्यया, दो कंपणगपव्यवसया' ध्याविस इंडेवामां स्थावेस छे. से यमडपर्वती उत्तरहुटुक्षेत्रमां छे ससी डांयनपर्वती इंडेवामां स्थावेसा छे. हेमडे देगहुटु स्थाविस के १० हिते छे. तेमना सन्ते

पर्वत सङ्गावात् 'वीसं वक्खारपञ्चया पन्नता' विंशति विंशतिसंख्यका वक्षस्कारपर्वताः प्रज्ञाताः, अस्मिन् जम्यूद्वीपे कथिताः तत्र गजदन्त सद्या गन्धमाद्नाद्यश्चत्वारः पर्वताः, तथा चतुः प्रकारमहाविदेहे प्रत्येकं चतुष्क चतुष्क सद्भावात् षोडश चित्रकृटादयः सरलाः द्वयेऽपि मिलिता विंशति संख्यका भवन्ति तथा—'चोत्तीसं दोहवेयद्धा' चतुर्स्तिशद्दीघवैतादय पर्वताः प्रज्ञाः तत्र द्वात्रिशद्दिजयेषु भरतेरवत्योश्च प्रत्येकमेकैक सद्भावादिति । तथा—'चत्तारि बट्टवेयद्धा' चत्वारो वृत्तवेतादया गोलाकाराः पर्वताः प्रज्ञाः हैमवतादिषु चतुर्षु वर्षक्षेत्रेषु एकैक-भावादिति । 'एवामेव सपुव्वावरेण जंबुद्दीवे दीवे दुण्णि अउणुत्तरा पव्वयसया भवंतीति मक्खायंति' एवमेव सपुर्वोपरेण पूर्वापरसंकलनेन जम्बूद्धीये द्वीपे सर्वद्वीपमध्यजम्बूद्धीये द्वे पक्षोनसप्तत्यविके पर्वतशते भवत इत्याख्यायन्ते अदं महावीरस्वामी अन्ये च तीर्थकराः प्रतिपादयन्तीति । तत्र-पद्धपेत्ररपर्वताः, एको मन्दरः, एकश्चित्रकृटः, एको विचित्रकृटः द्वौ यमकपर्वतौ, द्वेश ने काञ्चनपर्वताः विंशति विञ्चस्कारपर्वताः, चतुस्त्रिशद् दीर्धवैतादयाः, चत्रारो-वृत्तवैतादयाः, सर्व संकलनया उक्तसंख्यकाः पर्वता भवन्तीति ।

प्रत्येक तट पर १०-१० काञ्चन पर्वत हैं। 'वीसं वक्खारपच्चया पश्चा' २० वक्षस्कारपर्वत हैं इनमें गजदन्त के आकारवाले गन्धमादन आदि चार तथा चार प्रकारक महाविदेह में प्रत्येक में चार के सद्भाव से १६ चित्रक्र्टादिक ये कुल मिलकर ३० वक्षस्कार पर्वत है। 'चोत्तीसं दीहवेयहू।' ३४ दीर्घ वैतादयपर्वत हैं इन ३२ विजयों में और भरत ऐरवत इन दो क्षेत्रों में प्रत्येक में एक २ दीर्घ वैतादय है इस प्रकार से ये ३४ है 'चत्तारि वह वेयहू।' चार गोल आकारवाले वृत्तवैतादय पर्वत है। हैमवत् आदि क्षेत्रों में एक २ वृत्तवैतादय पर्वत है इसलिये ये चार हैं। 'एवामेच स पुन्चावारेण जंबुदीवे दीवे दुिणअष्ठणुत्तरा पन्त्र य स्था भवंतीति मक्खायंति' इस तरह इन सब पर्वतों की जम्बूद्वीप में कुल मिलाकर संख्या २६९ होती है ऐसा मुझे महावीर ने और अन्य तीर्थकरों ने कहा है इन में ६ वर्षधर पर्वत, एक मन्दर, एक चित्रक्ट, एक विचित्रक्ट, दो

िंताराक्षे अपर हरेड ते पर १०-१० डांचनपर्य ते। छे. 'वीसं वक्खारपञ्चया पन्नता' २० पक्षस्डार पर्य ते। छे. स्त्रेमां शक्रहन्तना आडारवाणा गन्धमाहन वगेरे शार तथा शार प्रधारना महाविहें हुमां हरेडमां शारना सहलावथी १६ शिन्न्डूटाहिड को अधा मणीने २० वक्षस्डार पर्य ते। छे. 'चोत्तीसं दीहवेयड्ड' अर हीव' वैताद्वयपर्य ते। छे. से विक्योमां अने लस्त करवत से छे क्षेत्रीमां हरेडमां सेड-सेड हीध' वैताद्वय छे. आ प्रमाखे से अधा अर पर्य ते। छे. 'चत्तारि बहुवेयड्डा' शार शेण आडारवाणा वृत्तवैताद्वय पर्य ते। छे. हैमवत् वगेरे क्षेत्रीमां सेड-सेड वृत्तवैताद्वय पर्य ते छे. श्रेशी को अधा शार पर्व ते। छे. 'एवामेव सपुञ्चा वरेण जंगुद्दीचे दीवे दुण्ण अष्ठणुत्तरा पव्वयसया मवंतीति मक्खायंति' आ प्रमाखे क' धूदीपमां से अधा पर्य ते। देश सं एथा २६६ शाय छे सेवु' में महाबीरे तेमक जीका तीर्थ हरों से

सम्प्रति-जम्बूद्धीपे कियन्ति क्टानि सन्ति इति पश्चमद्वारं तदर्शियतुमाह-'जंबुद्दीवे णं मंते' इत्यादि, 'जंबुद्दीवेणं मंते ! दीवे' जम्बूद्वीपे खलु भदन्त ! द्वीपे सर्व द्वीपमध्यजम्बू-द्वीपे इत्यर्थः 'केवह्या वासहरक्तुडा' कियन्ति-कियरसंख्यकानि वर्षभरक्टानि जम्बूद्वीपे प्रज्ञप्तानि, तथा-केवह्या वेयदक्टा' कियन्ति वैतादचक्टानि प्रज्ञप्तानि, तथा-'केवह्या मंदरक्तुडा पन्नत्ता' कियन्ति-कियरसंख्यकानि मन्दर 'मेरु' क्टानि प्रज्ञप्तानि-कथितानीतिप्रश्नः, मगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'छप्पणं वासहरक्तुडा पन्नत्ता' जम्बूद्वीपे द्वीपे पट्पश्चाशत् षट्पश्चाशत् संख्यकानि वर्षधरक्र्टानि प्रज्ञप्तानि-कथितानि तथाहि-सुद्रहिम्विच्छलरिणोः प्रत्येकमेकादश्चेक(दशक्टानिति मिलित्वा द्वार्विशतिः तथा-महाहिमवत्य-वंत्रयोः प्रत्येकमण्डिते इति मिलित्वा पोडश, निवधनीलवतोः प्रत्येकं नवनवेति मिलिता अष्टादश, तदेवं सर्वसंकलनया जम्बूद्धीपे पर्पश्चाशद् वर्षभरक्र्टानि भवन्तिति । तथा-'छण्णउइं वक्खारक्र्डा पन्नता' जम्बूद्धीपे पण्णवति विश्वस्कारक्टानि प्रज्ञप्तानि, तथाहि-सरक्रयमकपर्वत, दो सौ काश्चन पर्वत, बीस वक्षस्कार पर्वत, ३४ दीर्घवैतादच पर्वत, और चार वृत्ववैतादच पर्वत, वीसा वक्षस्कार पर्वत, ३४ दीर्घवैतादच पर्वत, और चार वृत्ववैतादच पर्वत है ।

पंचमद्वारकथन

'जंबुदीवेणं भंते ! दीवे केवहया वासहरक्ष्डा' हे भदन्त ! जंबुद्वीप नामके द्वीप में कितने वर्षधर क्रूट हैं ? तथा-केवहया वेयद्धक्ष्डा' कितने वैताद्यक्ट हैं ? 'केवहया मंदरक्ष्डा पन्नना' कितने मंदरक्ष्ट हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—'गोयमा! छप्पण्णं वासहरक्ष्डा पन्नत्ता' हे गौता ! जम्बुद्वीप नामके द्वीप में ५६ वर्षधर क्रूट हैं ये इस प्रकार से हैं—क्षुद्र हिमवान पर्वत और शिखरी इन दो पर्वतों में से प्रत्येक पर्वत में ११-११ क्रूट हैं महाहिमवान और रुक्मी इन दो पर्वतों में से प्रत्येक पर्वत में ९-९ क्रूट हैं इस प्रकार मिलकर सब ५६ वर्षधर क्रूट हैं 'छण्णउई वक्खार क्रूडा पश्चा' ९६ वक्षस्कार क्रूट इस जम्बूद्वीप में हैं वे

કહ્યું છે. ६ વર્ષધર પર્વતો એકમંદર, એકચિત્રકૂટ, એકવિચિત્રકૂટ, છે યમકપર્વતો, બસો કાંચનપર્વતો, ૨૦ વહાકારપર્વતો, ૩૪ દીઈવૈતાઢચપર્વતો અને ૪ વૃત્તવૈતાઢચપર્વતો છે.

પંચમદાર કથન

'जंबुहीवेणं मंते! दीवे केवह्या वासहरक्डा' हे लहन्त! क'लूद्रीप नामक द्वीपमां हैटला वर्षधर कृटे। आवेला छे ? तेमक 'केवह्या वेयद्धक्डा' हेटला वैताहव कृटे। आवेला छे ? केवह्या मंदर कृडा पन्नत्ता' हेटला भंदर कृटी आवेला छे ? केना कवालमां प्रलु के छे-'गोयमा! छप्पण्णं वासहरक्डा पन्नत्ता' हे जीतम! क'लूद्रीप नामक द्वीपमां पर वर्षधर कृटे। आवेला छे. ते आ प्रमाणे छे-कुद्र हिमवान् पर्वत अने शिलरी के छे पर्वतामांथी हरेक पर्वतमां ११-११ कृटे। आवेला छे. महाहिमवन अने ३६मी के छे पर्वतामांथी हरेक पर्वतमां ६-६ कृटे। आवेला छे. आ प्रमाणे मजीने लधा पर वर्षधर

वक्षस्कारेषु महाविदेहस्थित पोडशचित्रकृटाद्यः सरलाश्रतःष्टिः, तथा गजदन्ताकार-वक्षरकारेषु गन्धमादनसौमनसयोः सप्त सप्त इति मिलित्वा चतुर्देश, माल्यवद् निद्युत्पभयो-नैवनवेति मिलित्वा अष्टादश, तदेवं सर्वसंकलनया षणावति वेक्षस्कारक्ट।नि जम्बूद्वीपे भवन्तीति । 'तिण्णि छछत्तरा वेयद्रकूडसया' त्रीणि पडुत्तराणि वैतादचकूटशतानि, तत्र भरतेरवतयो विजयानां च वैताढचेषु चतुः त्रिंशत्संख्यकेषु प्रत्येकंनव संभवाद् यथोक्तसंख्या-नयनं भवति, वृत्तवैताढचेषु च क्र्यस्य सर्वथाऽभाव एव, अत एव वैताढचास्त्रे दीर्घेति विशेष-णस्योपादानं न कृतम् यतो व्यावर्त्तकमेव विशेषणं भवति, अत्र च व्यावर्त्याभावेन तदुपादानं निरर्थकमेव स्यादिति । 'णव मंदरकुडा एम्नता' नव मन्दरकुटानि प्रज्ञप्तानि मेरुपर्वते नव क्टानि तानि च नन्दनवनगतानि प्राह्याणि न भद्रशालवनगतानि दिग्रहस्तिक्टानि, तेषां भूमि-प्रतिष्ठितत्वेन स्वतन्त्र क्टत्वादिति । 'एवमेव सपुच्चावरेण-पूर्वापरसंकलनेन चत्वारि सप्त-इस प्रकार से हैं-१६ सरल वक्षस्कारों में से प्रत्येक में ४-४ हैं तथा गजदन्ता कृति गले बक्षस्कारों में से गन्धमादन और सौमनस इन दो बक्षस्कारों में से पृत्येक में सात सात हैं मारुयवत् में नौ और विद्युत्प्रभ में ९ इस प्रकार सब मिलकर ९६ वक्षस्कार कूट हो जाते हैं। 'तिषिण छुलुत्तरा वेयद्धकूडसया' ३०६ तीन सौ छह वैताढयकूट है वे इस प्रकार से हैं भरत और ऐरवत के एवं विजयों के २४ वैताढ़यों में पत्येक में ९-९ क्ट है सब मिलकर २०६ हो जाते हैं। ब्रुस वैताढर्थों में कूट का सर्वथा अभाव है इसीलिये वैताढय सूत्र में दीर्घ ऐसा विद्येषण नहीं दिया गया है। विद्येषण जो होता है वह अन्य का व्यावर्तक होता है। यहां व्यावर्त्यका अभाव है इसिलचे उसका उपादान व्यर्थ हो। जाता है अतः विशेषण नहीं दिया है। 'णव मंदरकूडा पण्णसा' मेरुपर्वत पर नौ कूट कहे गये हैं। ये नौ कूट नन्दनवन गत यहां प्राह्म हुए है। भद्रशालवनगत दिगह-

हूटे। छे. 'छण्णउई वक्खारकूडा पन्तत्ता' ६६ वक्षरकार हूटे। आ जंणूदीपमां छे. ते आ प्रमाणे छे-१६ सरल वक्षरकारे। मांथी हरेडमां ४-४ छे. तेमज अज हन्ताहृतिवाणा वक्षरकारे। मांथी अन्धमाहन अने सीमनस ओ जे वक्षरकारे। मांथी हरेडमां सात—सात छे. माल्यवत्मां ६ अने विद्युत्रक्षमां ६ आ प्रमाणे हुत ६६ वक्षरकार हूटे। थाय छे. 'तिण्णि छलुत्तरा वेयद्व क्रूडसया' उ०६ वैतादय हूटे। छे. ते आ प्रमाणे छे—अरत अने औरवतना तेमज विजन्धाना उ४ वैतादयोमांथी हरेडमां ६-६ हूटे। आवेला छे. आम सर्व मणीने उ०६ थर्ध ज्या छे. वृत्त वैतादयोमां हूटने। सर्वधा अलाव छे. ओधी वैतादय सूत्रमां हीर्घ ओवा विशेषणे आपवामां आव्या नथी. जे विशेषणे हीय छे ते अन्य त्यावर्त होय छे. अहीं व्यावर्तना क्षेत्र छे। येवा विशेषणे आपवामां आव्या नथी. जे विशेषणे हीय छे जय छे. ओधी ज विशेषणे आपवामां आवेल नथी. 'जब मंदरकूडा पण्णत्ता' मेरुपर्वत पर नव हूटे। आवेल छे. ओ नव हूटे। नन्हनवन्त्रत अहीं आहा थया छे. सदशासवन्त्रत हिण्हुहितहूट आहा थयेला

पष्टानि—सप्तपष्टचिषकानि चत्वारिश्वतानि भवन्तीति आरूयातं मया अन्येश्व तीर्थकरैरिति । तथाहि—पट्पश्चाशद् ५६ वर्षधरक्र्टानि, षण्यवति ९६ विक्षमकारक्र्टानि, पडिधकानि त्रीणि-श्वतानि ३०६ वृत्तवैताढचक्टानि नव ९ मन्दरक्र्टानि सर्व संकलनया ४६७ संख्या भवन्ति ।

सम्प्रति-तीर्थद्वारमाह-'जंबुद्दीवेणं भंते' इत्यादि, 'जंबुद्दीवे णं भंते! दीवे' जम्बू-द्वीपे खल भदन्त! द्वीपे सर्व द्वीपमध्य जम्बूद्वीपे इत्यर्थः 'भरहे वासे' भरतनामके वर्षे-क्षेत्रे 'क्षइ तित्था पन्नता' कित-कियत्संख्यकानि तीर्थानि मागधादीनि प्रज्ञप्तानि-कथितानीति प्रक्षः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'तओ तित्था पन्नता' त्रीणि त्रि-संख्यकानि तीर्थानि प्रज्ञप्तानि-कथितानि, तान्येव नामग्राहं दर्शयित-'तं जद्दा' इत्यादि, 'तं जद्दा' तद्यादि, 'तं जद्दा' तद्यथा-'मागहे, वरदामेपभासे, मागधं वरदाम प्रभःसम्, तत्र मागधं तीर्थे पूर्वस्यां दिशि समुद्रस्य गद्गासङ्गमे, वरदामतीर्थे दक्षिणस्यां दिशि, प्रभासंतीर्थे पश्चिम दिशि समुद्रस्य सिन्धु-सङ्गमे। 'जंबुद्दीवेणं भंते! दीवे' जम्बूद्वीपे खल भदन्त! द्वीपे सर्व द्वीपमध्यद्वीपे इत्यर्थः

स्तिकूट ग्राह्म नहीं हुए हैं। क्यों कि ये भूमि प्रतिष्ठित होने के कारण स्वतान्त्र-कूट हैं। 'एवामेव सपुच्वावरेण' इस प्रकार ये सब क्ट मिलकर ४६७ होते हैं जैसे-५६ वर्ष घर कूट, ९६ वक्षस्कारकूट ३०६ वृतवैताढ्यकूट, और ९ मन्दर कूट इनका जोड ४६७ होता है।

तीर्थद्वारवक्तव्यता

'जंबुद्दीवेणं भंते! भरहे वासे कह तित्था पण्णत्ता' हे भदन्त! इस जम्बूद्दीप नामके बीप में मागध आदि तीर्थ कितने कहे गये हैं? उत्तर में प्रसु कहते हैं गोयमा! 'तओ तित्था पण्णता' हे गौतम! तीन तीर्थ कहे गये हैं। 'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं—'मागहे वरदामें, प्रभासे' मागध वरदाम और प्रभास इन में मागध तीर्थ समुद्र का पूर्वदिशा में है जहां की गंगा का संगम हुआ है वरदामतीर्थ दक्षिण दिशामें है और प्रभासतीर्थ पश्चिमदिशा में है जहां की सिन्धु नदी का संगम हुआ है 'जंबुद्दीवे णं भंते! एरवए वासे कह तित्था

નથી, કેમકે એએ ભૂમિપ્રતિષ્ઠિત હાવાથી સ્વતંત્ર કૂટા છે. 'एवामेव सपुत्वावरेण' આ પ્રમાણે આ ખધા કૂટા મળીને ૪૬૭ થાય છે. જેમકે પદ વર્ષધર કૂટા, ૯૬ વક્ષસ્કાર ફૂટા, ૩૦૬ હત્તવૈતાહય કૂટા અને ૯ મંદર કૂટા આમ એ સર્વની નેડ ૪૬૭ થાય છે.

तीर्थकार वक्ष्तव्यता

'जंबुद्दीवेणं मंते! दीवे मरहेवासे कइ तित्था पण्णत्ता' है लहंत! आ अभ्णूडीय नामक दीयमां मागध वगेरे तीथीं केटला कहेवामां आवेला छे? अवालमां प्रभु कहे छे. 'गोयमा! तओ तित्था पण्णत्ता' है गौतम! त्रश्च तीथीं कहेवामां आवेला छे. 'तं जहा' केमके 'मागहे वरदामे, पमासें मागध, वरहाम अने प्रभास स्मेमा मागध तीर्य समुद्रनी पूर्विहिशामां स्थावेल छे अने स्थावेल छे. क्यां गंगाना संगम थ्येला छे. वरहाम तीथीं हिल्लाहिशामां स्थावेल छे अने

'एरवए वासे' ऐरवते वर्ष एतन्नामके क्षेत्रे 'कइ तित्था पन्नता' कति-कियःसंख्यकानि तीर्थानि प्रज्ञप्तानि-कथितानि, तत्र तीर्थानि चक्रवर्त्तिनां स्वस्वक्षेत्रसीमास्ररसाधनार्थं महाजळाबतरण स्थानानीति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'तओ तित्था पन्नता' त्रीणि-त्रिसंख्यकानि तीर्थानि भहाजलावतरण स्थानानि प्रव्ञप्तानि-कथितानि, तान्येवनाम-ग्राहं दर्शयति-'तं जहा' इत्यादि, 'तं जहा' तद्यथा-'मागृहे वरदामे पभासे' मागुधं वरदाम प्रभासम्, तत्र-मागधं तीर्थं पूर्वस्यां समुद्रस्य रक्तानदी सङ्गमे, बरदामतीर्थं तत्रत्यदिगपेक्षया दक्षिणे, प्रभासं पश्चिमायां रक्तवतीनद्याः समुद्रसङ्गमे इति । 'एवामेव !सपुटव:वरेण' एवमेव सपूर्वीपरेण-सर्व संकलनेन 'जंबुदोवे णं भंते ! दीवे जम्बूद्वीपे खळु भदन्त ! द्वीपे 'महाविदेहे वासे' महाविदेहे वर्षे 'चक्कविट विजए' चक्रवित्ति विजये 'कइतित्या पन्नता' कति-कियासंख्य-कानि तीर्थानि प्रज्ञप्तानि-कथितानीति प्रश्नः, भगवानाइ-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे पण्णाता' हे भदनत ! जंबूढ़ीप नामके द्वीप में वर्तमान ऐरवत क्षेत्र में कितने तीर्थ कहे गये हैं ? चक्रवर्तियों के अपने अपने क्षेत्र की सीमाओं के देवों को वश में करने के लिये जो महान जलावतरण स्थान होते हैं वे तीर्थ है ऐसे तीर्थ ऐरवत क्षेत्र में कितने हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं 'गोयमा ! तओ तित्था पण्णता' हे गौतम ! ऐरवत क्षेत्र में तीन तीर्व है 'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं 'मागहे वरदामे पभासे' मागध, वरदाम और प्रभास इनमें मागध नामका जो तीर्थ है वह समुद्र की पूर्व दिशा में है जहां रक्तानदी का संगम हुआ है वरदामतीर्थ दक्षिणदिशा में है, प्रभास तीर्थ पश्चिमदिशा में है जहां पर रक्त-वती नदी का संगम हुआ है। 'एवामेव स पुच्वावरेण जंबुदीवे णं भंते! दीवे महाविदेहे वासे चक्कविं विजए कह तित्था पण्णासा' इस तरह सब तीथीं की संख्या जम्बुद्वीप नामके इस द्वीप में १०२ होती है हे भदन्त! इस जंबूद्वीप

प्रकासतीर्थ पश्चिमिहिशामां आवेस है. ल्यां सिन्धु नहींने। संगम थयेसे। छे 'जंबुदीवेणं मंते! एरवए वासे कहतित्था पण्णसा' छे लहंता! क ंणूद्धीप नाम है दी मां वर्त मान अरवत क्षेत्रमां हैटला तीर्थों हे छेवामां आवेला छे। अहवतिं भीना पेति—पेतानः क्षेत्रनी सीमाओना हैवाने वामां हरवा माटे के महान ल्यावत्रण स्थाने। होत्र छे ते तीर्थों छे. ओवा तीर्थों अरवत क्षेत्रमां हैटला छे। अना कवाणमां प्रमु हे छे छे—'गोयमा! तओ तिथा पण्णता' छे गौतम! अरवत क्षेत्रमां त्रण तीर्थों छे. 'तं जहां' ते आ प्रमाणे छे—'मागहे वरदामें पमासे' मागध, वरहाम अने प्रकास स्थां के मागध नामह तीर्थ छे ते समुद्रनी पूर्विशामां आवेल छे. हे क्यां रक्ता नहींना संगम थयेले। छे वरहामतीर्थ हिस्लिहिशामां आवेल छे. प्रकासतीर्थ पश्चिमहिशामां छे. ल्यां रक्तावती नहींना संगम थयेले। छे. 'एवामेव सपुट्यावरेण जंबुदीवेणं मंते! दीवे महाविदेहे वासे चिक्किटि विजये कहतित्था पण्णसा' आ प्रमाणे जंबुदीवेणं मंते! दीवे महाविदेहे वासे चिक्किटि विजये कहतित्था पण्णसा' आ प्रमाणे जंबुदीवेणं संते! दीवे महाविदेहे वासे चिक्किटि विजये कहतित्था पण्णसा' आ प्रमाणे जंबुदीवेणं संते! दीवे महाविदेहे वासे चिक्किटि विजये कहतित्था पण्णसा' आ

गौतम !' तत्रो तित्था पन्नता'त्रीण तीर्थान प्रज्ञप्तानि 'तं जहा' तद्यथा-मागहे वरदामे पभासे' मागधं वरदाम प्रभासम्, तत्र पूर्वस्यां श्वीतायाः गङ्गासङ्गमे, मध्यगतं वरदामतीर्थे, पश्चिमायां श्वीतोदकायाः संगमे प्रभासं तीर्थमिति । 'एवामेव सपुन्वावरेण जंबुद्दीवे दीवे एगे वि उत्तरे तित्थसप भवंतिति मक्खायं' एवमेव-यथोक्तप्रकारेण सपूर्वापरेण पूर्वापर संकल्लनेन एकं द्युत्तरं द्रथिकमेकं तीर्थशतं भवतीति मया अन्येश्व तीर्थङ्करे राख्यातं कथितमिति । तथाहि-चतुस्त्रिशद् विनयेषु प्रत्येकं त्रीणि त्रीणितीर्थानि भवन्ति सर्वं संकल्पनया द्रथिकशतमेकं-तीर्थानामिति ।

सम्प्रति श्रेणिद्वारं दर्शयितुं प्रश्नयन्नाइ—'जंबुदीवेणं' इत्यादि, 'जंबुदीवेणं भंते! दीवे' जम्बुद्वीपे खल्छ भदन्त! द्वीपे सर्व द्वीपमध्य जम्बुद्वीपे इत्यर्थः 'केंबइया विज्ञाहरसेढीयो पन्नताओं' कियत्यः—कियत्संख्यकाः विद्याघर श्रेणयः, तत्र श्रेणयो विद्याघराणामावासभूता वैत्र ढ्यानां पूर्वापरोद्दध्यादिपरिच्छिन्ना आयतमेखलाः ताः संख्यया कियत्यो भवन्ति, तथा में जो महाबिदेह क्षेत्र है और चक्रवर्ती विजय है उसमें कितने तीर्थ है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—'गोयमा! तओ तित्था पण्णत्ता' हे गौतम! चक्रवर्ती विजय में तीन तीर्थ हैं 'तं जहा' जैसे—'मागहे वरद्रामे, प्रभासे' मागध्न, वरद्राम और प्रभास पूर्वदिशा में शीता के गङ्गा संगम में मागध्नीथं है वरद्रामतीर्थ दक्षिणदिशा में हैं और प्रभासतीर्थ शोतोद्दा का जहां संगम हुआ है वहां पश्चिम दिशा में हैं। इस तरह जंम्बूद्वीप में कुल सब मिलाकर १०२ तीर्थ हो जाते हैं। ऐसा मैने और अन्य तीर्थकरों ने कहा है तात्पर्य यही है कि ३४ विजयों में से प्रत्येक विजय में तीन २ तीर्थ होते हैं इस तरह ये १०२ तीर्थ हो जाते हैं।

'जंबुद्दोवे णं भंते ! दीवे केवइया विज्ञाहरसेढीओ केवइया आभिओग-सेढीओ पण्णताओ' हे भद्नत ! जम्बूढीप नाम के इस द्वीप में कितनी विद्या

આ જ'ખૂરીપમાં જે મહાવિદેહ क्षेत्र છે અને ચક્રવર્તા વિજય છે તેમાં કેટલા તીર્થો છે? એના જવાબમાં પ્રભુ કહે છે—'गोयमा! तआ तित्या पण्णत्ता' है औतम! ચક્રવર્તી વિજયમાં ત્રણ તીર્થો છે. 'તં जहा' જેમકે 'मागहे, बरदामे, पमसे' भागध, वरहाम અને પ્રભાસ પૂર્વ દિશામાં શીતાના ગળા સંગમમાં માગધર્તીર્થ છે. વરદામતીર્થ દક્ષિણ દિશામાં છે અને પ્રભાસતીર્થ શીતા દાને જયાં સંગમ થયેલા છે ત્યાં પશ્ચિમ દિશામાં આવેલ છે. આ પ્રમાણે જંખૂરીપમાં કુલ મળીને ૧૦૨ તીર્થો થઈ જય છે. એવું મેં અને બીજા તંથે કરોએ કહ્યું છે. તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે ૩૪ વિજયોમાંથી દરેક વિજયમાં ત્રણ—ત્રણ તીર્થી આવેલા છે. આ પ્રમાણે આ ખધા ૧૦૨ તીર્થી થઈ જાય છે.

'जंबुद्दीवेणं मंते ! दीवे केबइया विष्जाहरसेढीओ केबइया, आमिओगसेढीओ पण्ण-साओ' है लद्दना ! क'जूदीप नामठ आ दीपमां हैटली विद्याधर श्रेजीओ अने हेटली कियत्य आभियोग्यश्रेणयश्च प्रज्ञप्ताः-कथिता इति प्रश्नाः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि 'गोयमा' हे गीतम ! 'जंबुदीने दीने अट्ठसद्वी विज्ञाहरसेढीओ' जम्बूद्वीपे द्वीपे-जम्बूद्वीप नामकद्वीपे अष्टपष्टिः विद्याधरश्रेणयः, प्रज्ञप्ताः तथा-'अट्ठसद्वी आभिओगसेढीओ पण्णत्ताओं' अष्टपष्टिराभियोग श्रेणयः प्रज्ञप्ताः तत्र विद्याधरश्रेणयोऽष्टपष्टिः विद्याधरावासभूता वैता-ढ्यानां पूर्वापरसमुद्रपरिक्षिप्ता आयतमेखला भवन्ति, चतुर्विज्ञत्य पि वेताढ्येषु दक्षिणत-उत्तरतश्चेकैकश्रेणी सद्भावात्, तथेव अष्टपष्टिः श्रेणय आभियोग्यानां भवन्ति, 'एवामेव-सपुच्यावरेणं जंबुदीने दीने छत्तीसं सेढिसए भवतीति मक्खाय' एवमेव सपूर्वापरेण-पूर्वापर संकलनेन जम्बूदीपे द्वीपे पद्तिंशत् श्रेणीशतम्-षद्तिंशद्धिकश्रेणीनां शतं भवतीति आख्यातम्, मया-वर्द्धमानस्वामिना तथाऽन्यैरिय आदिनाथ प्रशृति तीर्थकरैरिति।

सम्प्रति—अष्टमं विजयद्वारमाइ—'जंबुद्दीवेणं मंते!' इत्यादि। 'जंबुद्दीवेणं मंते दीवे' जम्बूद्वीपे खल भदन्त! द्वीपे सर्व द्वीपमध्यवित्तं जम्बूद्वीपे इत्यर्थः 'केवइया चक्कविद्व घर श्रेणियां और कितनी आभियोग्य श्रेणियां कही गई है ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—'गोयमा! जंबुद्दीवे दीवे अद्वसद्वी विज्ञाहरसेढीओ अद्वसद्वी आभिओगसेढीओ पण्णत्ताओं' हे गौतम! जम्बूद्वीप नामके द्वीप में अडस्पट विद्याघर श्रेणियां कही गई है—ये बिद्याघर श्रेणियां विद्याघरों के आवास स्थान इप हैं एवं वैतादयों के पूर्व अपर उद्घि आदि से ये परिच्छिन्न है घिरी हुई हैं तथा जैसी मेखला आयत होती हैं वैसी आयत ये हैं। ३४ वैतादयों में दक्षिण में और उत्तर में एक एक श्रेणि है इसी तरह से आभियोग्य श्रेणियां भी ६८ हैं। 'एवामेव सपुट्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे छत्तीसं सेढिसए भवंतीति मक्खायं' इस तरह जम्बूद्वीप में सब श्रेणियां मिलकर १३६ हो जाती हैं ऐसा तीर्थकर प्रभुओं का कथन है।

विजयद्वारकथन-'जंबुद्दीवे दीवे केवइया चक्कबिट विजया केवइयाओ

आलिये। व्य श्रेणी थे। इंदेवामां आवेशी छे? येना जवायमां प्रसु इंदे छे-'गोयमा! जंबु हीने दीने अट्टसट्टी निक्जाहरसेढीओ अट्ट-सट्टी आमिओग सेढीओ पण्णत्ताओं हे गौतम! जंयूशीय नामक श्रीयमां ६८ निश्चाधर श्रेणीयो। इंदेवामां आवेशी छे. ये निश्चाधर श्रेणीयो। विश्वाधराना आवासस्यान ३५ छे तेमज नैताहयोना पूर्व अपर इद्देश नगेरेथी येथे। परिव्धित छे-आवेहिटत छे, तेमज जे प्रमासे मेणला आयत है। य छे, ते प्रमासे ज येथे परिव्धित छे. उठ नैताहयोमां दक्षिणुमां अने इत्तरमां येके-येक श्रेणी छे. आ प्रमासे आलियोग्य श्रेणीयो। पण्ड ६८ छे. 'एवामेन सपुट्यानरेणं जंबुद्दीने दीने छत्तीसं सेढिसए भनंतीति मक्खायं' आ प्रमासे जम्मू श्रीयमां अधी श्रेणीयो। मणीने १३६ थाय छे. येथु तीथि इर प्रसुत्तं इथन छे.

विजयकार अथन- ' जंबुदीने दीने केनद्रया चनकत्रद्वि विजया केनद्रयाओ रायद्वाणीओ

विजया' कियन्तः-कियत्संख्यकाः चक्रवर्तिनां विजयाः प्रज्ञप्ताः-किथतः, तथा 'केयइयाओ रायहाणीओ' कियस्यः-कियत्संख्यकाः ति स्निः। गुहाः-अन्धकारयुता गुहाः प्रज्ञप्ताः-किथताः, 'केवइया खंडप्यवायगुहा' कियत्यः-कियत्संख्यकाः खण्डप्रपातगुहाः प्रज्ञपाः-कथिताः, तथा-'केवइया कथमालया देवा' कियत्यः-कियत्संख्यकाः कृतमालकाः तत्र कृता संपादिता माला शरीरे विशेषक्षेप यस्ते कृतमालकाः ताहश्व देवा जम्बूद्धीपे कियन्तः प्रज्ञप्ताः, तथा-'केवइया णष्टमालया देवा' कियन्तः-कियत्संख्यकाः नक्तमालकाः, तत्र नकः-गत्रौ संपादित्तमाला विभूषणा देवाः कियन्तः प्रज्ञप्ताः, तथा-'केवइया उसमज्ञ्डा पन्नता' कियन्तः कियन्तः प्रज्ञप्ताः, तथा-'केवइया उसमज्ञ्डा पन्नता' कियन्तः कियन्तः प्रज्ञप्ताः प्रज्ञपाः विचित्ताः, तत्र द्वाविष्ठायः प्रज्ञपाः प्रज्ञपाः प्रज्ञपाः प्रज्ञपाः विचिताः, तत्र द्वाविष्ठाः प्रज्ञपाः प्रज्ञपाः प्रज्ञपाः विचिताः, तत्र द्वाविष्वविष्ठाः पर्वाविष्ठाः प्रज्ञपाः चक्रवर्तिविज्ञते व्यक्षेत्रयोः विज्ञयाः, द्वीविष्ठ्याः प्रज्ञपाः चक्रवर्तिविज्ञयाः प्रज्ञपाः विचित्तयः स्वविष्ठाः विज्ञपाः प्रज्ञपाः-कथिताः, तथा- 'चोत्तीसं रायहाणीयो' चतुस्त्रिश्चराः तिमस्रा गुहाः प्रज्ञपाः-कथिताः, प्रवाविष्वाः, प्रति-कियाः विचित्तस्य स्वविष्ठाः प्रज्ञपाः-कथिताः, प्रवाविष्ठाः प्रज्ञपाः-कथिताः, प्रवाविष्ठाः प्रज्ञपाः-कथिताः, प्रवाविष्वाः प्रज्ञपाः-कथिताः, प्रवाविष्ठाः प्रज्ञपाः-कथिताः प्रज्ञपाः-कथिताः प्रवाविष्ठाः प्रज्ञपाः-कथिताः, प्रवाविष्ठाः प्रज्ञपाः-कथिताः, प्रवाविष्वाः प्रज्ञपाः-कथिताः, प्रवाविष्ठाः प्रज्ञपाः-कथिताः प्रज्ञपाः प्रज्ञपाः-कथिताः प्रज्ञपाः-कथिताः प्रज्ञपाः प

रायहाणीओं केवहयाओं तिमिसगुहाओं केवहयाओं खंडप्पवायगुहाओं, केवहया कपमालया देवा, केवहया णटमालया देवा, केवहया उसभकूडा पण्णत्ता ९' हे भर्नत! इस जम्बूडीप नाम के डीप में कितने चकवर्ति विजय हैं ? किननी राजधानियां हैं ? किननी तिमिश्चा गुहाएं हैं -अन्धकारयुक्त गुहाएं हैं कितनी खण्डपपत गुहाएं हैं ? किननी कत मालक देव हैं कितने नक्त मालक देव हैं कितने नक्त मालक देव हैं -और कितने कपभक्ष्य हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं - 'गोयमा! जंबुदीवे दीये चोत्तीसं चकविट विजया, चोत्तीसं रायहाणीओं, चोत्तीसं तिमिसगुहाओं चोत्तीसं खंडप्पवायगुहाओं, चोत्तीसं कथमालयादेवा, चोत्तीसं णटमालया देवा, चोत्तीसं उसभकूडा प्वया पण्णत्ता' हे गौतम ! जम्बुद्वीप नामके डीप में ३४ वकवित विजय हैं ३४ राजधानियां हैं, ३४ तिमहा

केवड्याओं तिमिसगुहाओं, केवड्याओं खंडण्यायगुहाओं, केवड्या कयमाल्या देवा केवड्या णहुमाल्या देवा, केवड्या उसमकूडा पण्णत्ता' है लहन्त! आ अंभूदी मामड द्वीपमां हैटला अडवर्ती विकथें। आवेला छे ? डेटली राजधानीकों। छे ? डेटली तिमला गुढाकों। छे ?—अंधारशुक्रत गुडाकों। डेटली छे ? डेटली आंउ प्रपात गुडाकों। छे ? डेटला कृतमालंड हेंगे। छे ? डेटला कृतमालंड हेंगे। छे ? अने डेटला अथल इंटा छे ? ओना अवालमां प्रख् इंडे छे -'गोयमा! जंबुहीवे दीवे चोत्तीसं चक्कविह विजया, चोत्तीसं राय-हाणीओं, चोत्तीसं तिमिसगुहाओं, चोत्तीसं खंडण्यायगुहाओं, चोत्तीसं कथगालया देवा, चोत्तीसं णह मालया देवा, चोत्तीसं उसम कृडा पट्या, पण्णत्ता,' हे औतम! अधूदीप-नामड दीपमां ३४ अडवर्ती विजये। आवेला छे. ३४ राजधानीकों छे. ३४ तिमला

वैतादयमेकैकगुद्दासन्तात् तथा-'वोत्तीसं खंडण्यवायगुद्धाओ पक्षताओ' चतुर्स्सिश्तसंख्यकाः खण्डभ्यातगृद्धाः प्रज्ञप्ताः—कथिताः, एवम्-'वोत्तीसं कयमालया देवा' चतुर्स्सिश्तसंख्यकाः कृतमालका देवाः प्रज्ञप्ताः—कथिताः, एवम्-'चोत्तीसं णद्दमालया देवा पन्नता' चतुर्सिश्तसंख्यका ख्यकाः नक्तमालक देवाः प्रज्ञप्ताः, एवम् 'चोत्तीसं उसभक्त पञ्चया पन्नता' चतुर्सिश्तसंख्यका ऋषभक्त देवाः प्रज्ञप्ताः, एवम् 'चोत्तीसं उसभक्त पञ्चया पन्नता' चतुर्सिश्चरसंख्यका ऋषभक्त दर्वताः प्रज्ञपाः—कथिताः प्रतिक्षेत्रं चक्रवर्त्ति दिग्विजय स्वक्तिकसद्भावात्—यद्यवि विजयद्वारे प्रक्रान्ते राजधान्यादि प्रश्लोत्तरस्त्रे उपन्यस्तम्, इति न क्षतिकरमिति विजयद्वारम् ॥

गुफाएं हैं ३४ खण्ड प्रपात गुफाएं हैं ३४ कृत मालक देव हैं ३४ नद्दमालकदेव हैं और ३४ ही ऋषभकूट नामके पर्वत हैं। इनमें महाविदेह में ३२ चक्रवर्ती विजय है और भरत एवं ऐरवत क्षेत्र में दो विजय हैं। भरतक्षेत्र एवं ऐरवत क्षेत्र ये दोनों क्षेत्र चक्रवर्तियों के द्वारा विजेतन्य क्षेत्र खण्डरूप होने से चक्रवर्ति विजय शब्द हो जाते हैं। हर एक वनादय में एक एक गृहा का सदभाव है इसलिये ३४ तिम्हा गुहाएं कही गई है। हर एक क्षेत्र में चक्रवर्ती के दिग्वजय के सूचक एक २ ऋषभकूट पर्वत है। इसलिये ३४ ऋषभकूट नामके पर्वत कहे गये हैं। यद्यपि यहां विजय द्वारका प्रकरण चल रहा है इस में राज्धानी आदि विषय प्रश्न सूत्र में और उत्तर सूत्र में जो उपन्यस्त किया गया है वह उनकी राजधानियां आदि सब विजय साध्य है इस कारण विजय प्रकरण में राजधानियां आदि विषय प्रश्न सूत्र में और उत्तर सूत्र में और उत्तर सूत्र में उपन्यस्त हुआ है। विजय द्वार समास

हृद्द्वारवक्तव्यता

'जंबुदीवेणं भते ! दीवे केवइया महदहा पण्णासा' हे भदन्त ! इस जंबुद्वीप

ગુકાઓ છે ૩૪ ખંડવપાત ગુકાઓ છે. ૩૪ કૃતમાલક દેવા છે. ૩૪ નુક માલક દેવા છે અને ૩૪ ઋત્મલૂટ નામક પર્વતા છે. એમાં મહાવિદેહમાં ૩૨ ચક્રવર્તી વિજયા છે અને ભરત તેમજ એરવત ક્ષેત્રમાં એ વિજયા આવેલા છે. ભરતક્ષેત્ર તેમજ એરવતક્ષેત્ર એ બન્ને ક્ષેત્રે ચક્રવર્તિઓ વડે વિજેતવ્ય ક્ષેત્રમાં ડે ફાવાથી ચક્રવર્તિ વિજય શબ્દ થાય છે. દરેકવતાહ્યમાં એક—એક ગુફાના મદ્ભાવ છે. એટલા માટે ૩૪ તમિસા ગુફાઓ કહેવામાં આવેલી છે. દરેક ક્ષેત્રમાં ચક્રવર્તી દિગ્વિજયના સ્વાક એક—એક ઋષભકૂટ પર્વત છે. એથી ૩૪ ઋત્મલફૂટ નામક પર્વતા આવેલા છે. એક અત્રે વિજયદારનું પ્રકરણ ચાલી રહ્યું છે. એમાં રાજધાની વગેરે વિષયા પ્રશ્ન સ્ત્રમાં અને ઉત્તર—સ્ત્રમાં જે ઉપન્યસ્ત કરવામાં આવેલ છે, તે તેમની રાજધાનીઓ વગેરે અધું વિજય સાધ્ય છે. આ કારણથી વિજય પ્રકરણમાં રાજધાની વિગેરે વિષયા પ્રશ્નસ્ત્રમાં અને ઉત્તર સ્ત્રમાં ઉપન્યસ્ત થયેલ છે. વિજય પ્રકરણમાં રાજધાની વિગેરે વિષયા પ્રક્ષસ્ત્રમાં અને ઉત્તર સ્ત્રમાં ઉપન્યસ્ત થયેલ છે. વિજય સાધ્ય સાધ્ય છે. આ કારણથી વિજય પ્રકરણમાં રાજધાની વિગેરે વિષયા પ્રક્ષસ્ત્રમાં અને ઉત્તર સ્ત્રમાં ઉપન્યસ્ત થયેલ છે.

हृददार वक्ष्तव्यता

'जंबुदीवेणं भंते ! दीवे केषद्वा महद्दा पण्णसा' है सहंत । आ क'लुदीय नामक

सम्प्रति—नवमं हृदद्वारमाह—'जंबुद्दीवेणं अंते' इत्यादि, 'जंबुद्दीवेणं अंते ! दीवे' जम्बु-द्वीपे खळ भदन्त ! द्वीपे सर्व द्वीपमध्यजम्बूद्वीपे इत्यर्थः 'केन्इया महद्दद्वा पश्चता' कियन्तः— कियत्संख्यका महाहृदाः प्रज्ञप्ताः—कथिता इति प्रश्नः, 'भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'सोळसमइद्द्वा पश्चता' पोड्या महत्वृद्दाः—पोड्यसंख्यकाः महाहृदाः प्रज्ञपाः कथिताः तत्र वर्षधराणां मध्ये पड्महाहृदास्तथा ज्ञीता श्रीतोद्धेः प्रत्येकं प्रत्येकं पश्च पश्च सर्व संकळनया पोड्य महाहृदा भवन्तीति हृदद्वारम् ।

सम्प्रति-दश्यमं नदीद्वारमाह जंबुदीवेणं भंते ! दीवे' जम्बूद्वीपे खलु भद्रतः ! द्वीपे सर्वद्वीपमध्य जम्बूद्वीपे इत्यर्थः केनइया महाणईओ वासहरप्यवाहाओ पन्नताओ' कियत्यः - कियत्संख्यका महानद्यो वर्षथरप्रवाहाः, तत्र वर्षथरहृदेभ्यः प्रनहन्ति-निर्गळन्तियास्ता वर्षथरप्रवाहाः, अन्यथा कुण्डप्रवाहामपि महानदीनां वर्षथरनित्यन्दश्य कुण्डेभ्यो जायथानतया नामके द्वीप में महाहूद किनने कहे गये हैं ? इसके उत्तर में प्रभु ने कहा है - 'गोयमा ! सोलस महददा पण्णत्ता' हे गौतम ! यहां १६ महाहूद कहे गये हैं । इनमें ६ महाहूद ६ वर्षथर पर्वतों के और ज्ञीता एवं ज्ञीतोदा महानदियों के प्रत्येक के ५-५ कुल मिलकर ये महाहूद १६ हो जाते हैं।

महानदी नामकद्शवें बार की वक्तव्यता

'अंबुद्दीवे णं भंते! दीवे केवइया णईओं दासहरणवाहाओं पण्णताओं हे भदन्त! जम्बूदीप नामके बीप ये कितनी महानदियां जो वर्षधर के हूदों से निकली हैं कही गई है? यहां जो 'वर्षधर प्रवाहा' ऐसा विशेषण महानदियों का कहा गया है वह कुण्डों से जिनका प्रवाह वहता है ऐसी कुण्ड प्रवाहवाली महानदियों के व्यवच्छेद के लिये दिया गया है ये कुण्ड वर्षधर के नितम्बस्थ होते है उनसे भी ऐसी महानदियां निकलो हैं अतः उनके सम्बन्ध में गौतम

દ્વીપમાં મહાહું કેટલા કહેવામાં આવ્યા છે ? એના જવાખમાં પ્રભુ કહે છે-'गोयम!! सोलसम हदहा पण्णत्ता' હે ગૌતમ! અહીં ૧૬ મહાહું કહેવામાં આવેલા છે. એમાં ૬ મહાહું દો ६ વર્ષ ધર પર્વ તોના અને શીતા તેમજ શીતાેદા મહાનદીઓના દરેકના પ-પ આમ બધા મળીને એ મહાહું દો ૧૬ થઈ જાય છે.

महानहीनामक दशमादारनी वक्तव्यता

'जंबुहीवेणं मंते! दीवे केवइया णईओ वासहर पवाहाओ पण्णताओं' है ल:न्त! अं णू-द्वीप नामंत्र द्वीपमां डेटली महानहीं थे। डे के की वर्ष घरना हुदेशी नीडणी छे डहेवामां ज्यावेली छे? अहीं के 'वर्ष घर प्रवाहा' केवुं विशेषणु महानहीं की हुं डेवामां आव्युं छे. ते डुंडामांथी केमना प्रवाह वह छे केथी डुंड प्रवाहवाणी महानहीं की ना व्यव्येष्ट माटे आपवामां आवेल छे. के डुंडा वर्ष घरना नितंशस्य हाय छे. केमनाथी पणु केवी महानहीं थे। नीडणी छे. केथी केमना संश्वेषमां जीतमस्वामी भे प्रश्न डेथीं नथी परंतु पद्म ता अपि वर्षधरप्रवादाः स्युः, एतादश्यो महानद्यः कियत्यः प्रज्ञसाः, तथा-'केवइयाओ कुंड-प्यवहाओं महाणईओ पन्नता को कियत्यः - कियत्संयकाः कुण्डमवाहाः, तत्र कुण्डेभ्यो वर्ष-धर नितम्बस्य कुण्डेभ्यः प्रवहत्ति-निर्मच्छन्ति यास्ता महानचः कियत्यः प्रज्ञप्ताः-कथिता इति प्रश्नः, मगवानाइ--'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'जंबुदीवे दीवे चोदस महाणईओ वासहरप्यत्रहा नो' जम्बुद्धीपे द्वीपे सर्वद्वीपमध्य जम्बुद्धीपे इत्यर्थः चतुर्दशमहानद्यः चतुर्देश संख्यका महानद्यो वर्षधरहृद्ववादाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः, तथा-'छावत्तरिं महाणईओ कुंड प्यववाओं पट्सप्तति:-पट्सप्तति संख्यका महानद्यः कुण्डप्रवादाः कुंडेभ्यः प्रवहनशीछाः प्रज्ञप्ताः-कथिताः, तत्र चतुर्दशं महानचो वर्षधरह्याप्रभवाः भरतगङ्गादिकाः प्रतिक्षेत्रं द्वि द्वि भावात, तथा-कुण्डप्रभश पट्सप्तति मेहानद्यः, तत्र-शीताया उत्तरेष्वष्टसु विजयेषु शीतो-दाया याम्येषु अष्टसु विजयेषु चैकैकमावेन पोडशगङ्गाः पोडशसिन्धवश्च तथा शीताया स्वामी ने पदन नहीं किया है किन्तु पद्म, महापद्म आदि जो हूद हैं उनसे जिनका उद्गम हुआ है ऐसी निदयों की संख्या कितनी है यह जानने के लिये यह प्रदन किया गया है तथा-'केवहवाओ द्वांडपवाहाओ महाणईओ पश्चाओ' जो वर्षधर के नितम्बस्थ कुण्डों से से निकली हैं ऐसी महानदियां कितनी हैं? इसके उत्तर में प्रभुशी कहते हैं-'गोयमा! जंबुदीवे दीवे चोदस महाणईओ वासहरप्यवाहाओं हे गौतम ! इस जंबुद्धीप में जो वर्षधर पर्वतस्थ हुदों से महा-नदियां निकली हैं ऐसी वे महानदियां १४ हैं तथा-'छावत्तरिं महाणईओ कुण्ड-प्यवाहाओं जो महानदियां कुण्डों से निकली हैं वे ७६ हैं। १४ महानदीयों के नाम गंगा सिन्धु आदि हैं। हरएक क्षेत्र में ये दो दो बहती है भरतक्षेत्र में गंगा सिन्धु ये दो महानदियां बहती हैं तथा कुण्ड प्रभवा जो ७६ महानदियां हैं उनमें शीता महानदी के उत्तर में आठ विजयों में और शीतोदा के याम्य आठ विजयों में एक, एक कुण्डयभवा महानदी वहती है इससे १६ गंगा

महापद्म, वगेरे के हुई। छे तेमनामांथी केमनुं उद्गम थयुं छे, सेवी नहींसानी संफ्या हैंट्र छे, से बाबा माटे अहीं आ अरन हरमामां आवेल छे. तेमक केन्द्र्याओं कुंड-प्यबाहाओं महाणईओं पन्नताओं के वर्षधरना नि एम्भर्ध हुंडे। पांथी नीहणे छे, सेवी महाणईओं नहींकी हैटली छे? सेना क्याणमां प्रसु हुंडे छे—'गोयमा! जंबुदीवे दीवे चोद्दस नहाणईओं वासहरप्यवाहाओं' छे भता क्याणमां प्रसु हुंडे छे—'गोयमा! जंबुदीवे दीवे चोद्दस नहाणईओं वासहरप्यवाहाओं' छे भता क्याणमां प्रसु हुंडे छी महानहींकी। नीहणी छे, केवी ते महानहींकी। १४ छे. तेमक 'छावत्तरिं महाणईओं कुण्डप्यवाहाओं' के महानहींकी। हुंडे अंथि नीहणी छे ते ७६ छे. १४ महानहींकी। नामी गंगा सिंधु वगेरे छे. हरेड क्षेत्रमां से महानहींकी। लाकी महानहींकी। लाकी महानहींकी। लाकी के हेंडे प्रस्ता के महानहींकी। वहीं छे, तेमक हुंडेप्रस्ता के ७६ महानहींकी। छे तेमनामां शीता महानहींना हित्यों आठ विकथीमां अने शीती।हाना याग्य आठ विकथीमां क्षेड-सेड हुंडेप्रस्ता

याम्येष्वष्टसु विजयेषु श्रीतोदाया उत्तरेषु अष्टसु विजयेषु चंकैकमावेन पोडश रक्ताः पोडश रक्तवत्यश्च, एवं चतुःषष्टिः, द्वादश च पूर्वोक्ता अन्तर्नद्यः सर्व सङ्कलेने पट्सप्ततिरिति, कुण्ड-प्रभवानां तु श्रीता श्रीतोदापरिवारभूतत्वेनासंभवदिप महानदीत्वं स्वस्विजयगतचतुर्दश सहस्रपरिवारसंपद्युक्तत्वेन महानदीत्वमिति, 'एवामेव सपुष्वावरेणं जंबुहीवे' दीवे णउतिं महाणईओ भवंतीति मक्खायं' एवपेव-पूर्वकथितप्रकारेण सपूर्वापरेण सर्वसंकलनया जम्बू द्वीपे सर्वद्वीपमध्यद्वीपे इत्यर्थः नवति महानद्यो भवन्तीत्याख्यातं सया तथा अन्येश्व तीर्थ-ङ्करिति । 'जंबुहीवेणं भंते ! दीवे' जम्बूद्वीपे खलु भदन्त ! द्वीपे 'भरहएस्वरसु कहमहाणईओ पन्नताओ' भरतेरवतवर्षेषु कति-कियत्संख्यका महानद्यः प्रज्ञप्ताः—कथिता—इति प्रश्नः भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'चत्तारि महाणईओ पन्नताओ'

और १६ सिन्धु निद्यां वहती हैं। तथा शीतोदों के याम्य आठ विजयों में एवं शीतादों के उत्तर के आठ विजयों में एक एक नदी वहने से-१६ रक्ता और १६ रक्तवती निद्यां बहती हैं 'इस तरह ये ६४ तथा १२ पूर्वोक्त अन्तर्निद्यां ये सब मिलकर ७६ कुण्डप्रभवा महानिद्यां हैं। यद्यपि कुण्डप्रभवा निद्यों में शीता शीतोदों के परिवारभूत होने से महानदीत्व संभवित नहीं होता है परन्तु किर अपने अपने विजयगत चतुर्दश सहस्र निद्यों के परिवारभूत होने से उनमें महानदीत्व बन जाता है। 'एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे णउति महाण-ईओ भवंतीति मवखायं'-इस तरह इस जम्बूझीप नामके द्वीपमें कुल मिलकर ९० महानदियां हैं। ऐसा तीर्थकरों का आदेश हैं।

'जंबुद्दोवेणं भंते! दीवे भरहएरवएस-वासेस कई महार्णईओ पन्नताओ' हे भदन्त! इस जम्बूद्धीप नामके बीपमें जो भरत क्षेत्र एवं ऐरवत क्षेत्र हैं उनमें कितनी महानदियां हैं? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं-'गोयमा! चत्तारि महा-

महानही वह छे. स्नेनाथी १६ गंगा सने १६ सिन्धु नहीं से वह छे. तथा शीताहाना याभ्य आठ विजयोमां तेमक शीताहाना उत्तरना आठ विजयोमां सेक नहीं वह छे तथा १६ रहतावती नहीं से वह छे. आ प्रमाणे ६४ तेमक १२ पूर्वीहत आंतर्नहीं से साम अभी भणीने ७६ हंउप्रभवा महानहीं हो. ले हे हंउप्रभवा नहीं से भावना शह्य नथी पण् छतां से शिता-शीताहाना परिवारलूत होवाथी महानहीं त्वनी संभावना शह्य नथी पण् छतां से पात-पाताना विजयगत सतुर्हश सहस्त्र नहीं सोना परिवारलूत होवाथी तेमनामां महानहीं त्व आवी लाथ छे. 'एवामेव सपुत्रवावरेणं जंबुद्दीवे दीवे णवित्तं महाणईओ भवंतीति मक्खायं आ प्रमाणे आ क' जूदीप नामह द्वीपमां अधी मजीने ६० महानहीं से आवेदी छे सेवी तीर्थ हरोनी आहा छे.

'जंयुदीवेणं मंते! दीवे भरह एरवएसु-वासेसु कई महाणईओ पन्यत्ताओ' है लहंत! आ क'णूदीप नामक द्वीपमां के लरतक्षेत्र तेमक अरवत क्षेत्र छे तेमां केटली महानदीका

चतसः - चतुः संख्यकाः महानद्यः प्रज्ञप्ताः - कथिताः 'तं जहा' तद्यथा - 'गंगा सिंधूरता रतवई' गङ्गा सिन्धुः रक्ता रक्तवती च 'तत्य णं एगमेगा महाणई' तत्र – तासु नदीषु मध्ये एकैका महानदी 'चउदसहिं सिल्लासहस्सेहिं' चर्रुद्शिभः सिल्लासहस्नैः चतुर्दशावान्तर्नदी सहस्नैः 'समग्गा' समग्रा परिवृता युक्ता 'पुरत्थिमपचित्थिमेणं' पूर्वपिश्यमेन 'लवणसमुदं समुप्पेहं' लवणसमुदं समुप्पेहं लव्यासमुदं समुप्पेहं समुप्पेहं समुप्पेहं प्रविश्वसम्भिदं च प्रविश्वति ।

अत्र भरतैरवतयो र्युगपद्ग्रहणं तत्समानक्षेत्रत्वात् ज्ञेषम्, तत्र भरदक्षेत्रे गङ्गामहानदी पूर्वेच्चणसमुद्रं प्रविज्ञति, सिन्धुश्च महानदी पश्चिमलवणसमुद्रं प्रविज्ञति, तथा ऐरवतक्षेत्रे रक्ता महानदी पूर्वसमुद्रं प्रविज्ञति, रक्तवती महानदी पश्चिम समुद्रं प्रविज्ञतीति ॥

'एवामेव सपुब्बावरेणं' एवमेव-कथितप्रकारेण सपूर्वापरेण-सर्वसंकल्लेन 'जंबुदीवे दीवे' जम्बुद्धीपे दीपे सर्व द्वीपमध्यजम्बुद्धीपे 'भरहेरवएस दासेस' भरतेरवत्वर्षयोः णईओ पण्णालाओ' हे गौतम! चार महानदियां हैं 'तं जहा' जो इस प्रकार से हैं 'गंगा सिन्धु, रक्ता रत्तवर्द्ध 'गङ्गा, सिन्धु, रक्ता और रक्तवती 'तत्थणं एगमेगा महागई चउदसहिं सिलिलासहरसेहिं समग्गा पुरित्यमण्डचित्थमेणं लवणसमुदं समप्पेह' इनमें एक एक महानदी १४-१४ हजार अवान्तर निद्यों के परि-पारवाली हैं 'तथा पूर्व ससुद्ध और पश्चिम लवणससुद्ध में जाकर मिली हुई हैं। यहां पर जो भरतक्षेत्र और ऐरवत क्षेत्र का जो युगपत् ग्रहण किया गया है वह इन दोनों की समान रचना है इस बातको प्रकट करने के लिये किया गया है भरतक्षेत्र में गंगामहानदी पूर्वलवण ससुद्ध में मिली है और सिन्धु महानदी पश्चिम लवणससुद्ध में मिली है। 'एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुदीवे भरहेरवएस वासेस छप्पणं सलिलासहस्सा भवंतिति मक्तवायं' इस तरह जम्बुदीप नामके इस द्वीपमें भरतक्षेत्र और ऐरवतकी क्षण नदियां निलाकर छप्पन हजार अवान्तर

छे! अना जवाक्तमां ५ छ छे छे-'नीयमा! चतारि महाणई भी पण्णताओं हे गीतम! यार महानहीं भे छे. 'तं जहां' ते आ प्रक्षा छे. 'गंगा सिन्यु, रत्ता रत्तवई' गंगा, सिन्धु, रहता अने रहतवती. 'त्रधां एगमेगः महाणई चाइसिंहं सिळलासहरतेहिं समगा पुरिविश्तपच्चित्रिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेइ' अभां ओह-ओह महःनही १४, १४ हजर अवान्तर नहीं योना परिवारवाणी छे तेमल पूर्व समुद्र अने पश्चिम सवख्समुद्रमां कर्छने भणे छे. अहीं के सरतक्षेत्र अने करवा क्षेत्रमुं न भ के युगपत् अहुख् हरवामां आव्ये हे ते आ अनेनी समान रयना छे. ओ वातने प्रहट हरवा माटे हरवामां आवेस छे. सरतक्षेत्रमां गंगा महानही पृत्रि सवख्समुद्रमां मणी छे अने सिन्धु महानही पश्चिम सवख्समुद्रमां भणी छे अने सिन्धु महानही पश्चिम सवख्समुद्रमां भणी छे. 'एवामेर सपुट्यावरेणं जंबुद्दीवे मन्हेमरवएसु वासेसु छप्पणं सिळलासहस्सा मवंतीति महलायं' आ प्रमाध्ये क'ण्युसीप नामह दीपमां सराव्युत्र अने अरवतक्षेत्रनी अधी नहीं आ

'छप्पण्णं सिक्कासहस्सा भवंतीति मक्खायं' पट्पश्चाशत् सिक्का सहस्राणि आवान्तरनचः तासां सहस्राणि भवन्तीत्याख्यातं मया तथाऽन्यश्च तीर्थंकरेरिति। 'जंबुदीचे णं भंते ! दीवे' जम्यूदीपे खलु भदन्त ! द्वीपे 'हेमयबहेरण्यवस्रु वासेसु' हैमवत हेरण्यवत्यो वेषयो मध्ये 'कइ महाणईओ पन्नताओ' किल-कियत्संख्यका महानद्यः प्रज्ञप्ताः—कथिता इति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम्!! 'चतारि महाणईओ पन्नताओ' चतसो महानद्यः प्रज्ञप्ताः—कथिताः, 'तं जहा'—तद्यथा—'रोहिता रोहितंसा सुवण्णक्ला रूप्पक्ला' रोहितानामनी महानदी प्रथमा १, रोहितांशा महानदी द्वितीया २, सुवर्णक्ला महानदी त्तीया ३, रूप्यक्ला महानदी चतुर्थी ४, 'तत्थणं एगमेगा महाणई' तत्र खलु एकैका महानदी 'अद्वावीसाए अद्वावीसाए सिल्लासहस्सेहिं' अष्टाविंशत्या अष्टाविंशत्या सिल्ला सहस्तेः अवान्तरनदीसदस्ते रित्वर्थः 'समग्रा परिप्रिता सुका इति यावत इत्यंभूता सती 'पुरित्यम पचित्यमेणं लवणसमुदं समप्पेइ' पूर्वपश्चिमेन लवणसमुदं सिमुपर्यति प्रविश्वती-त्यथैः तत्र हैमजतक्षेत्रे रोहिता महानदी सपरिवारा पूर्वलवणसमुदं प्रविश्वति तत्रवेव क्षेत्रे रोहितां-त्यथैः तत्र हैमजतक्षेत्रे रोहिता महानदी सपरिवारा पूर्वलवणसमुदं प्रविश्वति तत्रवेव क्षेत्रे रोहितां-

निद्यां है 'जंबुद्दोवेणं भंते! दीवे हेमवय हेरण्णवएस वासेस कई महाणईओ पन्नसाओं हे भदन्त! इस जंबूबीप नामके बीपमें जो हैनवत और हैरण्यवत क्षेत्र हैं—उनमें किननी महानिद्यां हैं १ इसके उत्तर में प्रमु कहते हैं—'गोयमा! चत्तारि महाणईओ पन्नसाओं हे गौतम! इनमें चार महानिद्यां है 'तं जहां' उनके नाम इस प्रकार से हैं—रोहिता, रोहितंसा खुवण्णकुलां रूपकूजा तत्थ्यं एगमेगा महाणई अद्वावीसाए र सिल्लासहरहोहिं' इनमें एक एक महानदीकी परिवारभूत अवान्तर निद्यां २८ हजार २८ हजार हैं। 'पुरित्थमपच्चित्यमें लवणसमुदं समप्पेहं' इनमें जो हैमवतक्षेत्र में रोहिता नामकी महानदी है वह अपनी परिवारभूत २८ हजार अवान्तर निद्यों के साथ पूर्व लवणसमुद्र में जाकर सिली है और रोहितांशा महानदी अपनी परिवारभूत २८ हजार निद्यों

भणीने पह ढलर अवान्तर नहीं थे. 'जंबुद्दीवेणं मंते! दीवे हेमवय हेरणावएस वासेस कईमहाणई ओ पनात्ताओं' है लहन्त! आ जंजूद्रीप नामक द्वीपमां ले छैपवत छै थ्यवत के हैं या कार्या के तेमां के हैं हैं निश्चा शिक्षा आवेली छे ! योना जवाजमां प्रभा कहें छे-'गोयमा! चत्तारि महाणई ओ पन्तताओं' है जीतम! योमां यार महाणई ओ आवेली छे. 'तं जहा' ते नहीं योना नामा आमाणे छे-'रोहितो, रोहितंसा, सुवणाकू छा' रेडिता, रोडितांसा सुवणाकू छा' रेडिता, रोडितांसा सुवणाकू छा' रेडिता, रोडितांसा सुवणाकू छा रेडितां, रोडितांसा सुवणाकू छा रेडितां सुवणाक्त छो प्रतियम् पडचियमेणं छवणसमुदं समण्येह' योमां के छेमवतक्षेत्रमां रेडिता नामक महानदी छे ते पातानी परिवारकूता रेट ढलर सही थेतां सुव थुई खद्दासमुद्रमां कहीं मेले छे अने रेडितांशा महानदी पातानी परिवारकूता रेट ढलर नहीं थेती साथे पृत्री धरी माले

भा महानदी सपरिवारा पश्चिमळवणसमुद्रं प्रविश्वति, हिरण्यवते क्षेत्रे सुवर्णक्ला महानदी सपरिवारा पूर्व लवणसमुद्रं प्रविश्वति, रूपक्ला महानदी सपरिवारा पश्चिमळवणसमुद्रं प्रविश्वतीति। 'एवमेव सपुन्वावरेणं' एवमेव-कथितप्रकारेण सपूर्वापरेण-सर्वसंकलनेन 'जम्बु-हीवे दीवे' जम्बुद्धीपे द्वीपे 'हेमवयहेरण्णवयेस्र वासेस्रु' हैमवतहैरण्यवतयो विषयोर्मध्ये 'वार-सुत्तरे सिळलासयसहस्सं भवतीति मक्खायं' द्वौ दशोतरं द्वादशसहस्राधिकं सिळलाशत-सहस्रभवान्तर नदीलकं भवतीति एकस्या महानद्याः यदा अष्टाविशतिः सहस्राणि अवान्तर नदीपरिवाररूपाणि तदा चतस्रणां महानदीनां संकलने द्वादशसहस्राधिकं नदीलकं भवती-त्याख्यातं मया अन्यश्च तीर्थकरेरिति। 'जंबुहीवे णं मंते! दीवे' जम्बुद्धीपे खलु भदन्त! द्वीपे सर्वद्वीपमध्य जम्बूद्वीपे इत्यर्थः 'हरिवासरम्मगवासेस्रु' हरिवर्षरम्यकवर्षयो मध्ये 'कइ महाणईओ पन्नताओ' कति-कियत्संख्यका महानद्यः प्रज्ञप्ताः—कथिता इति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'चत्तारि महाणईओ पन्नताओ' चतस्र-

के साथ पश्चिम लवणसमुद्र में जाकर मिलो है। इसी तरह हैरण्यवत क्षेत्रमें जो सुवर्णक्ला महानदी हैं वह अपनी परिवारभूत २८ हजार अवान्तर निद्यों के साथ पूर्व लवणसमुद्र में जाकर मिलो हैं और रूप्यक्ला महानदी अपनी परिवारभूत २८ हजार अवान्तर निद्यों के साथ पश्चिम लवणसमुद्र में मिली हैं। 'एवामेव सपुष्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे हेमवय हेरण्याव-एस वासेस वारस्त्तरे सिललासयसहस्से भवंतीति मक्खायं' इस प्रकार से जंबुद्दीप में हैमवत और हैरण्यवत इन दो क्षेत्रों की अपनी अपनी परिवारभूत निद्यों की अपेक्षा से १ लाख १२ हजार निद्यां हैं। ऐसा मैंने और अन्य तीर्थकरों ने कहा है। 'जंबुद्दीवेणं भंते! दीवे हरिवासरम्मगवासेस कह महाण-ईओ पन्नत्ताओ' हे भदन्त! इस जंबुद्दीप नामके द्वीपमें हरिवर्ष और रम्यकवर्ष में कितनी महानिद्यां कही गई हैं ? उत्तर में प्रमु कहते हैं—'गोयमा! चन्नारि

सवध्यसमुद्रभां कि ने भणी छे. आ प्रभाषे हैर ए पवत क्षेत्रमां के सुवर्ष हुसा महानहीं छे ते पातानी परिवार भूता २८ हुकार अवान्तर नहीं ओनी साथ पूर्व सवख्यमां कि ने भणी छे अने ३५ पहुंसा महानहीं पातानी परिवार भूता २८ हुकार नहीं ओनी साथ पश्चिम सवख्य सुद्रमां भणी छे. 'एवा मेव सपुष्वावरेणं जंबु ही वे दी वे हेमवय हेर एण वएस वासे सुवार सिल्छा सयसहरसे मंति सक्खायं' आ प्रभाषे के जुद्दी पथां है भवत अने हैर एथवत के भे क्षेत्रीनी पात-पातानी परिवार भूत नहीं ओनी अपेक्षाओं के हु साथ १२ हु स्वासरम्मगवासे छु के वुं में अने भीका तीर्थ हु हु छे. 'जंबु हु वेणं मंते! ही व हिरवासरम्मगवासे छु कह महाण हुं ओ पन्तत्ताओं' हु लहनत! आ कं भूदी पाम हिरवासरम्मगवासे छु कह महाण हुं ओ पन्तत्ताओं' हु लहनत! आ कं भूदी पाम हिरवासरमावासे हु कह महाण हुं ओ पन्तत्ताओं' हु लहनत! आ कं भूदी पाम हिरवास अले हुं की पन्तत्ताओं' हु लहनत! आ कं भूदी पाम हिरवास अले हुं की पन्तत्ताओं' हु लहनत! आ कं भूदी अही के कि का अले हुं की पन्तत्ताओं हुं शौतम! अले हुं की का सहाण हुं ओ पन्तत्ताओं' हुं शौतम! अले हुं की कि का सहाण हुं आ पन्तत्ताओं हुं शौतम! अले की हुं का सहाण हुं वामां आवे हुं शौतम! सहाण हुं की पन्तत्ताओं' हुं शौतम! सहाल हुं की हुं का सहाण हुं की पन्तत्ताओं' हुं शौतम! सहाल हुं की हुं वामां आवे हुं शौतम! सहाल हुं की पन्तत्ताओं' हुं शौतम! सहाल हुं की पन्तत्ताओं हुं शौतम! सहाल हुं की सहाल हुं की पन्तत्ताओं हुं शौतम! सहाल हुं की सहाल हुं हुं हुं हुं की सहाल हुं की स

श्रतः संख्यका महामधः प्रज्ञप्ताः, 'तं जहां तद्यया-'हरी हरिकंता नरकंता णारीकंता' हरि-सिल्ला महानदी प्रथमा, हरिकान्या महानदी द्वितीया, नरकान्तानाम महानदी तृतीया, नारीकान्तानःमनी चतुर्थीं, 'तत्थ णं एगमेगा महाणई' तत्र-तासु नदीषु मध्ये खलु एकैका महानदी हरिसलिला प्रभृतिका, 'छप्पणाए छप्पणाए सलिलासहस्सेहिं' षट्पश्चाशता षद् पश्चशता सहस्रैः 'समग्गा' समग्रा सहिता युक्ता 'पुरित्थमपचित्यमेणं छवणसमुदं समप्पेइ' पूर्वपश्चिमेन लक्षणसमुद्रं सद्यपप्रपति-गच्छति 'एवामेव सपुच्यावरेणं' एवमेव यथा वर्णितप्रका-रेण सपूर्वापरेण-पूर्वापरसङ्कळनेन 'जंबुद्दीवे' दीवे' जम्बूद्वीपे द्वीपे 'हरिवासरममगवासेसु' हरिवर्षरम्यकवर्षयो र्मध्ये 'दो च उवीससयसछिछासयसहस्सा भवंतीति मक्खायं' है चतुर्विवति चतर्विश्वत्यधिके दे सिललाशतसदस्त्रे भवत इत्याख्यातं मया अन्यैश्व तीर्यकरैरिति । 'जंबु-दीवे णं संते !' जम्बुद्धीपे खल भदनत ! द्वीपे सर्व द्वीपमध्य जम्बुद्धीपे इत्पर्थः 'महाविदेहे वासे 'महाविदेहनामके वर्षे 'कइ महाणई शो पन्नता भो 'कति-कियत्सं ख्यका महानद्यः प्रज्ञप्ताः-कथिता इति प्रश्नः, भगवानाह-'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'दो महाणईओ महाणईओ पन्नत्ताओं हे गौतम! चार महानदियां कही गई हैं 'तं जहां' उनके नाम इस प्रकार से हैं-'हरि, हरिकंना, नरकंता णारीकंता' हरी, हरीकान्ता और नरकांता नारीकान्ता' 'तत्थणं एगमेगा महाणई छप्पणगाए २ सलिलासहस्सेहिं सप्तरमा पुरस्थिमपच्चस्थिमेणं लवगससुदं समप्पेइ' इनमे एक एक महानदी की परिवारभूता अवान्तर नदियां ५६-५६ हजार हैं और ये पूर्व और पश्चित लव-णसमुद्र में जाकर मिलो हुई हैं। 'एवामेव सपुन्वावरेण जंबुदीवे दीवे हरिवास रम्मग्वासेसु दो चउवीसा सलिलासयसहस्सा भवंतीति मक्खायं इस तरह इन चारों महानदियों को परिवारभूत नदियां मिलाकर जबुद्रीप में २ लाख २४ नदियां हैं। 'जंबुद्दिवेणं भंते! दीवे महाविदेहे वासे कई महाणईओ पन्नत्ताओ' हे भदन्त! इस जम्बूडीय नामके द्वीपमें महाविदेह क्षेत्रमें कितनी महानदियां कही गई है? इसके उत्तर में प्रभु कहते है-'गोयमा! दो महाणईओ पन्नत्ताओं' हे गौतम!

छे. 'तं जहा' तेमना नाभा आ प्रभाषे छे—'हरि, हरिकंता, नरकंता, णारीकंता' હरी, हरी हाता, नरहांता अने नारीहांता. 'तत्थणं एगमेगा महाणई छप्पण्णाए र सिललसहरसेहिं समगा पुराध्यिमपञ्चित्यमेणं लगणसमुदं समप्पेइ' स्थेभां स्थेह महादिनी परिवारभू । स्थानतर नहीं भा पर, पर हजर छे अने स्थे पूर्व अने पश्चिम सवश्यमुद्रमां कहीं भणी छे. 'एवामेव सपुत्रवावरेण जंबुदीवे दीवे हरिवासरम्मगवासेसु दो चडवीसा सिललास-यसहरसा मवंतीति मक्लायं' आ प्रभाषे से सार नहीं भीनी परिवारभूता नहीं भा भणीने कं जूदीपमां र साम २४ हजर नहीं भी। छे. 'जंबुद्दीवेणं मंते! दीवे महाविदेहे वासे कई महाणईओ पण्णताओं' है सहंत ! आ कं जूदीप नामह दीपमां महाविदेह क्षेत्रमां हैटबी महाविदेश क्षेत्रमां हैटबी महाविदेश क्षेत्रमां हैटबी महाविदेश क्षेत्रमां हैटबी महाविदेश क्षेत्रमां हैटबी सहाविदेश क्षेत्रमां हैटबी स्थानहीं भी। आवेसी छे श्रीमा क्षानहीं से अने क्षेत्रमां महाविदेश क्षेत्रमां हैटबी

पश्चनाओं हे-द्विसंख्यके महानद्यौ प्रज्ञप्ते-कथिते इति, ते एव दे नदी दर्शयितुमाह-'तं जहां इत्यादि, 'तं जहां तद्या—'सीयाय सीओयाय' शीता च शीतोदा च, एतनामके दे महानदी जम्बूद्वीपे महाविदेहवर्षे प्रवहत इत्यर्थः, 'तत्थ एगमेगा महाणई' तत्र तयोः शीता शीतोदयोमध्ये एकैका महानदी 'पंचिह पंचिहं सिळ्छासयसहस् है हिं' पश्चिमः पश्चिमः सिळ्छा सहसः पश्चिमिनदीछक्षे रित्यर्थः तथा—'वत्तीसाए य सिळ्छा सहस् देहिं' द्वातिंशताच सिळ्छा सहसः द्वातिंशत्वदी सहसः 'समग्गा' सम्प्रा युक्ता 'पुरत्थिमपचित्थमेणं छवणसपुदं सम्पेदि—गच्छतीति,

सम्पति-सर्शीसां नदीनां महाविदेहक्षेत्रगतानां संकलनां दर्शयति-'एवामेव' इत्यादि, 'एवामेव सपुन्यावरेणं जंबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे' एवमेव-यथावर्णितप्रकारेण सपुन्यारेण-पूर्वापरसंकल्लनेन जम्बूद्वीपनामके द्वीपे महाविदेहनामके वर्षे 'दस सिल्ला सयसहस्सा चउ-सिंहें च सिल्ला सहस्सा भवंतीति मन्दायं' दशसिल्लाश्वतसहस्राणि नदीनां दशलक्षाणि चढुः पष्टिः सिल्लासहस्राणि भवन्तीति मया अन्येश्व तीर्थकरेराख्यातमिति । सम्प्रति-मन्दर्पर्वतस्य दिशि कियत्यो नद्यो भवन्तीति दशैयितुमाह-'जंबुदीवे ण भंते ! दीवे' इत्यादि, 'जंबुदीवे ण भंते ! दीवे' जम्बूद्वीपे खल भदन्त! द्वीपे सर्व द्वीपमध्य जम्बूद्वीपे इत्यर्थः दो महानदियां कही गई हैं। 'तं जहा' उनके नाम ये हैं 'सीआसीओआय' एक सीता और दूसरी सीतोदा 'तत्थणं एगमेगा महाणई पंचिहें २ सिल्लासयसह-स्सेहिं बत्तीसाएअ सिल्लासहस्सेहिं समग्गा पुरित्थपपच्चित्थमेणं लवणसमुद्दं समप्पेह' इनमें एक एक महानदी की परिवारभूत अवान्तर नदियां ५६ लाख ५६ हजार हैं और ये सब पूर्व और पृष्टिम लवणसमुद्द में जाकर मिली हैं।

अब महाबिदेह क्षेत्रगत समस्तनिद्यों की संकलना प्रकट करने के निमित्त 'एबामेव सपुटवाबरेणं जंबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे दससलिला सयसहस्सा चउमहिं च सलिलासहस्सा भवंतीति मक्लायं' इस तरह जम्बूदीप नामके द्वीप में महाविदेह क्षेत्र में १० लाख ६४ हजार अवान्तर निद्यां हैं ऐसा तीर्थकरों

है भौतम ! शे भहानहीं थे। इड़ेनामां आवेशी छे. 'तं जहां' तेमना नामा आ प्रमाधे छे. 'सीआ सीओआय' એક सीता अने भील सीते।हा. 'तत्थणं एगमेगा महाणई पंचिहं र सिल्हा सयसहस्सेहिं वर्तासाए अ सिल्हासहस्सेहिं समगा पुरिश्वमपच्चित्थमेणं छत्रणसमुदं समणेइ' એमां એક—એક महानहीनी परिवारभूता अवान्तर नहीं थे। प शाम उर हुलार छे अने अधी पूर्व अने पश्चिम सवश्वसुसुद्रमां क्षानी मेणे छे.

ह्वे महाविहेह क्षेत्रभत समस्त नहीं भोनी संक्षता प्रगट करवा माटे 'एवामेंब सपुट्यां वरेणं जंबुहीवे दीवे महाविदेहे बासे दस सिल्ला सयसहस्सा चडसिट्टां च सिल्ला सहस्सा भवंतीति मक्लायं' आ प्रमाणे क'लूदीप नामक द्वीपमां महाविहेह क्षेत्रमां १० बाण ६४ हकार अवान्तर नहीं भे। छे. आ प्रमाणे तीर्थ करें के के के जंबुदीवेणं मंते! दीवे 'मंदरस्य पञ्चयस्य दिवखणेणं' मन्द्रस्य-मेरोः पर्वतस्य दक्षिणेन दक्षिणस्यां दिशीत्यर्थः 'केवइया सिल्लासयसहस्सा' कियन्ति-कियत्संख्यकानि सिल्लाश्वातसहस्राणि कियल्लक्षाणित्यर्थः 'पुरित्थम पचित्थमाभिमुहा लवणसमुदं समप्पेति' पूर्वपिश्रमाभिमुखानि लवणसमुदं समप्पेति, कियत्यो नद्यः पूर्वीभिमुखप्रवाहाः कियत्यश्च पश्चिमाभिमुखप्रवाहाः सत्यः स्त्रात्मानं क्ष्वणसमुद्रे समप्पेयन्ति लवणसमुद्रं प्रति गच्छन्तीति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'एगे छण्णउप सिल्ला सयसहस्से' एकं पण्णवित सिल्लाश्वतसहस्म् 'पुरत्थिमपचित्थमाभिमुहं लवणसमुदं समप्पेतित्ति' पूर्वपश्चिमाभिमुखं कवणसमुद्रं समप्पेयन्ति गच्छन्ति पण्णवितः सहस्राणि लक्षमेकं पूर्वपश्चिमप्रवाहा नद्यः स्वात्मानं लवणसमुद्रे समप्पेयन्ति गच्छन्ति पण्णवितः सहस्राणि लक्षमेकं पूर्वपश्चिमप्रवाहा नद्यः स्वात्मानं लवणसमुद्रे समर्पयन्ति त्यर्थः, तथाहि—भरतक्षेत्रे गङ्गानद्याः सिन्धुनन्त्राश्च चतुर्दश्च चतुर्दश्चसहस्राणि, हैमवते रोहितांशायाश्चाष्टावित्रति रष्टावित्रतिः सहस्राणि, हिरवर्गक्षेत्रे हरिसल्लिलाया हरिकान्तायाश्च

ने कहा है 'जंबुद्दोवेणं अंते दीवे मंदरस्स पव्ययस्स दिश्वणेणं केवद्या सिल्लासयसहस्सा प्रित्थमप्च्चित्थमाभिमुद्दा लवणसमुद्दं समप्पेति' हे भदन्त! इस जंबुद्दीप नामके बीप में मन्दर पर्वत की दक्षिण दिशामें कितनी लाख निद्यां पूर्वपश्चिमदिशाकी ओर वहती हुई-पूर्व लवण समुद्र में और पश्चिम लवण समुद्र में मिली हैं ? इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं 'गोयमा! एगे छण्ण- उए सिल्लासयसहस्से पुरित्थनप्च्चित्थिमाभिमुहे लवणसमुद्दं समप्पेतित्ति' हे गौतम! ? लाख ९६ हजार पूर्व पश्चिमदिशाकी ओर वहती हुई निद्यां लवणसमुद्र में मिली हैं। ये निद्यां सुझेर पर्वत की दक्षिणदिशा की ओर है इसका तात्पर्य ऐसा है—भरतक्षेत्र में गङ्गानदी की सिन्धुनदी की १४-१४ हजार निद्यां हैमवत् क्षेत्र में रोहिता और रोहितांशाकी २८-२८ हजार निद्यां हिप्चर्षक्षेत्र में हिर और हिर कान्ता की ५६-५६ हजार निद्यां कुल मिलकर १ लाख ९६ हो जाती हैं ये सब निद्यां सुमेरुपर्वत की दक्षिण दिशा में वहती

पट्पश्चाशत् पट्पश्चाशत्सहस्राणि तदेवं सर्वसंकलने पण्णवतिः सहस्राणि लक्षमेकं च मन्दरपर्वतस्य दक्षिणभागे नद्यः प्रवहन्तीति ।

सम्प्रति मन्द्रपर्वतादुत्तरप्रदेशे प्रवहनशीलानां नदीनां संख्यां ज्ञातुं प्रश्नयक्षाह्न-'जंबुहीवे णं भंते ! दीवे' जम्बूद्वीपे खल भदन्त ! द्वीपे सर्व मध्य जम्बूद्वीपे इत्यर्थः 'मंद्रस्स
पव्वयस्स उत्तरेणं' मन्द्रस्य पर्वतस्य उत्तरेण-उत्तरदिग्विभागे 'केवइया सलिलासयसहस्सा'
कियन्ति-कियत्संख्यकानि सलिलाश्वतसहस्राणि 'पुरित्थमपचित्थमाभिग्रुहा लवणसग्रुहं
समप्पेति' पूर्वपश्चिमाभिग्रुला लगणसग्रुदं समप्पिन्ति लवणसग्रुदं प्रतिगच्छन्तीत्यर्थ, इति
प्रशः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम ! 'प्गे छण्णउप सलिला सहसहस्से' एकं प्रणावत्यधिकं सलिलाश्वतसहस्रं पूर्वपश्चिमाभिग्रुखं लवणसग्रुदं समप्यति प्रणावति
सहस्राधिक लक्षमेकं नदीनां सग्रुदं प्रतिगच्छति ।

सम्प्रति कियत्यो नद्यः पूर्वाभिष्ठवाः सत्यो लवणसब्दं प्रविशन्ति तद्द्र्शयितुमाह-'जंबुहीवे णं मंते' इत्यादि, 'जंबुदीवे णं मंते! दीवे' जम्बू रीपे खल भदन्त! द्वीपे 'केयदया
सिललासयसहस्सा पुरत्याभिष्ठहां' कियन्ति—िकयत्संख्यकानि सिललाशतसहस्राणि पूर्वाहैं। अब सुमेरु पर्वत की उत्तर दिशा में बहने वाली नदियों की संख्या जानने
के लिये गौतमस्वाभी प्रभुश्री से पूछते हैं—'जंबुदीवेणं भंते! दीवे मंदर पञ्चयस्स
उत्तरेणं केवह्या सिललासयसहस्सा पुरत्थिम पच्चित्थमाभिमुहा लवणसमुहं
समप्पेति' हे भदन्त! इस जंबुद्धीप नाम के बीप में मन्दर पर्वत की उत्तर
दिशा में पूर्व और पश्चिम की ओर बहती हुई कितनी नदियां लवणसमुद्र में
मिली हैं? इसके उत्तर में प्रभुश्री कहते हैं—'गोयमा! एगे छण्णडए सिललासयसहस्से' पुरत्थिमपच्चित्थमाभिन्नहे जाव समप्पेह' हे गौतम! १ लाख ९६
हजार अवान्तर नदि यां पूर्व पश्चिमकी ओर बहती हुई लवणसमुद्र में मिली हैं।
ये सब नदियां सुमेरुपर्वत की उत्तरदिशा में हैं। अब गौतम! प्रभुश्री से ऐसा
पूछते हैं। 'जंबुदीवेंगं भंते! दीवे केवहआ सिललासयसहस्सा पुरत्थाभिमुहा

उत्तरिशामां विकासी नहीं भानी संभ्या काणुवा माटे गीतमस्वामी प्रक्षने प्रश्न करे छे— 'जंबुदीवेणं मंते! मंदर पव्वयस्स उत्तरेणं केवइया सिळळासयसहस्सा पुरिक्षिमपच्चित्यि-मामिमुहा लगणसमुदं समप्पेति' हे लहंत! आ क'लूढीय नामक द्रीयमां मंहर पर्वतनी उत्तरिशामां पूर्व अने पश्चिम तरह वहिनारी हैटली नहीं आ लवणुसमुद्रमां मणे छे? स्थाना क्वालमां पक्ष कहे छे. 'गोयमा! एगे छण्णडए सिळळासयसहस्से पुरिक्षिमपच्च-व्यिमामिमुहे जाव समप्पेइ' हे गौतम! स्थेक लाभ ६६ हे कर अवान्तर नहीं से। पूर्व पश्चिम तरह वहिती लवणुसमुद्रमां मणे छे. स्थे अधी नहीं या सुमेरु पर्वतनी उत्तरिशामां अविली छे. हे वे गौतम! प्रकृते आ कातना प्रश्न करे छे हे 'जंबुदीवेणं मंते! दीवे केव- भिमुखानि-पूर्वाभिमुखप्रगहाः कियत्यो नध इत्यर्थः ''ळ्वणसमुदं समप्पंति' ळ्वणसमुदं समप्पंति-कियत्यो नद्यः पूर्वाभिमुखा ळ्वणसमुद्रे प्रविश्वन्तीति प्रश्वः, 'भगवानाह-'भोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'सत्त सिळ्ळासयसहस्ता' सप्तसिळ्ळाग्रदसहसाणि, 'अहावी-संच सहस्ता' भष्टाविंशतिश्व सहस्राणि 'जाव समप्पंति' यावत् ळ्वणसमुदं समर्पयन्ति—अष्टा-विंशति सहस्राधिक सप्तळक्षप्रमाणा नद्यः पूर्वाभिमुखाः ळवणसमुदं गळ्ळन्तीत्यर्थः, तद्यथा पूर्वस्त्रे मेरुतो दक्षिणवर्तिनीनां नदीनामेकं लक्षं पण्णयितः सहस्राधिकं कथितम्, तद्रद्रम् ९८००० पूर्व समुद्रगाधिनीत्यागतानि अष्टानवितः सहस्राणि, एवं मेरुत उत्तरभागे नदीना मण्टानवित सहस्राणि शीतापरिकरनद्यश्च पश्च ५ लक्षाणि द्वाविंशत्सहस्राणि सर्वसङ्कलने-अष्टाविंशति सहस्राधिक सप्तलक्षाणि नदीनां भवन्तीति ।

लवणसमुद्दं समणेंति' हे भदन्त ! इस जम्बूद्धीय नामके द्वीप में कितनी नदियां पूर्व दिशा की ओर बहती हुई लवण समुद्र में प्रवेश करती हैं ? इसके उत्तर में प्रमुश्री कहते हैं हैं—'गोयमा! सत्त्रसलिलासयसहस्सा अहावीसं च सहस्सा जाव समणेंति' हे गौतम! सात लाख २८ हजार नदियां पूर्वदिशा की और बहती हुइ लवणसमुद्र में प्रवेश करती हैं। यह बात प्रकट कर दी गई है कि मेर्स्पर्वत की दक्षिण दिशा में रहकर बहने बाली नदियों की संख्या १ लाख ९६ हजार है सो इनमें से आधी नदियां ९८००० पूर्व समुद्र गामिनी है तथा इसी तरह मेरू की उत्तर दिशा में रह कर बहने बाली नदियों की संख्या ९८००० है तथा-शीता की परिवार भूत नदियां ५ लाख २२ हजार है सब मिलकर ये नदियां ७ लाख २८ हजार होतो हैं। यद्यिप यहां पर इनका जोड ७१६००० ही होता है अतः इस तरह से ७ लाख २८ हजार को लंख्या नहीं आती है परन्तु इस कथित प्रमाण को लाने के लिये जो पहिले १२ अन्तर नदियां कही गई हैं उन्हें यहां जोड देनी चाहिये इस तरह

नामक द्वीपमां डेटली नहीं थे। पूर्व हिशा तरइ वहेती ववणुसमुद्रमां प्रवेशे छे। येना जवायमां प्रक्ष ठे छे। 'गोयमा! सत्तसलिला सयसहस्सा अद्वावीसं च सहस्सा जाव समपोति' हे शितम! सात वाप २८ ह जर नहीं ये। पूर्व हिशा तम् इ वहेती ववणुसमुद्रमां मणे छे। या वात २५०८ इरवामां यावी छे डे मेरु पर्व तनी हिस्क हिशामां रहीं ने प्रवाहित थती नहीं ये। वी संभित्र श्रामी संभ्या १ वाप ६६ ह जर छे ते। ये मांथी अर्था काणनी नहीं थे। ६८००० पूर्व समुद्र गामिनी छे तेमक या प्रमाणे मेरुनी इत्तरहिशामां रहीं ने वहेनारी नहीं ये। नहीं ये। ते अर्था ६८००० छे तथा शीतानी परिवारकृता नहीं थे। प वाप २२ ह जर छे। याम ये वधी नहीं ये। मणीने ७ वाप २८ ह जर थाय छे। जे डे अहीं अधी नहीं ये। सरवाणा ७१६००० क थाय, येथी ७ वाप २८ ह जर केटबी संभ्या थती नथीं पण्य या हथित प्रमाण्डने वाववा माटे के पहें वा १२ अवान्तर नहीं थे। विशे डहेवामां भाव्युं छे। तेमने

सम्प्रति-पश्चिमसमुद्रगामिनीनां नदीनां संख्यां ज्ञःतं प्रश्नयक्षाह-जंबुद्दीचे णं भंते ! दीवे' जम्बूद्दीपे खल भदन्त ! द्वीपे सर्व द्वीपमध्य जम्बूद्दीपे खल भदन्त ! द्वीपे सर्व द्वीपमध्य जम्बूद्दीपे इत्यथः 'केवर्या सिल्लासयसहस्सा' कियन्ति सिल्लाशतसहस्ताणि 'पचित्यमाभिमुद्धाः पश्चिमभिमुखाः पश्चिमे प्रवाहो विचाते यासां तथाभूता नद्यः 'लक्षणसमुद्दं सम्प्रेति' लक्षणसमुद्दं सम्प्रयन्ति, अर्थात् कियन्यो नद्यः पश्चिममुख्यवद्यादा लक्षणसमुद्दे प्रविश्वन्तीति प्रश्नः, भगवानाह—'गोयमा' इत्यादि, 'गोयमा' हे गौतम! 'सत्तसिललासयसहस्ता अद्वावीसं च सहस्ता पचित्यमाभिमुद्दा लक्षणसमुद्दं समप्रेति' सप्तयलिलाशतसहस्ताणि सप्तवक्षाणीत्यर्थः अष्टार्विश्वति सहस्ताणि पश्चिमाभिमुखानि लक्षणसमुद्दं समप्रेति ।

सम्प्रति-सर्वनदी संकलनां दर्शिवतुमाह-'एवामेव' इत्यादि, एवामेव सपुब्वावरेण जंबु-र्दावे दीवे चोदस सिल्लासयसहस्सा छप्पणां च सहस्सा भोतीति मक्खायं' एवमेव सपू-वेपरेण जम्बूद्धीपे द्वीपे चतुर्दशसिल्लाशतसहस्राणि पट्पश्चाशच सहस्राणि भवन्तीत्या-ख्यातम्, तत्र एवमेव यथावर्णितप्रकारेण सपूर्वापरेण-सर्वसङ्कलनेन चतुर्दश सिल्लाशत सह-

पूर्व सबुद्रगामी ७ लाख २८ हजार निद्यों का जोड आजाता है अब पश्चिम समुद्रगामिनी निद्यों की संख्या जानने के लिये 'जंबुदीवेण अंते ! दीवे केवह्या सिलिलास्यसहस्सा पच्चित्थमाभिसुहा' गौतमस्वामी ने ऐसा पूछा है कि-हे भदन्त! इस जम्बूदीप नामके दीप में कितनी निद्यां पश्चिम की और प्रवाह वाली होका लवणससुद्र में मिलती है ? इसके उत्तर में प्रसुक्षी कहते हैं—'गोयमा! सत्तमलिलासयसहस्सा अद्वानीयं च सहस्सा एच्चित्यमाभिसुहा लवणसमुदं समप्पेति' हे गौतम ! ७ लाख २८ हजार निद्यां पश्चिम की ओर प्रवाहें वाली होती हुई लवणसमुद्र में प्रवेश करती हैं। 'एवामेव सपुच्चावरेण जंबुदीवे दीवे चोदससिलिलासयसहस्सा छप्पं च सहस्सा अवंति कि मक्खायं' इस तरह जम्बूदीप में १४ लाख ५६ हजार निदयां हैं ऐसा कथन तीर्थंकरों का है।

अहीं लोडी हेरी लोडी ले. क्या प्रमाणे पूर्व सप्ट्रिशासी ७ लाण २८ डलर नहीं आनी संज्या आरी लाय छे. हवे पश्चिम समुद्र शामिनी नहीं आनी संज्या लाख्वा माटे 'जंबुदीवे णं मंते! दीवे केवइया सिंख्या सहस्ता पच्चित्रिमासिमुहा' श्रीतस्वामी आलाने। प्रश्न क्यों के छे लहंत! आ लंजूदीप नःभक्त होपमां केटली नहीं आ पश्चिम तरह प्रवाहित थर्ज ने अवस्त्र मुद्रशां मणे छे? छोना जवाणमां प्रलु कर्डे छे-'गोयमा! सत्तसिंख्यासस्सा अद्वावीससहस्सा पच्चित्रिमामिमुहा ख्वणसमुद्दं समत्ये ति' छे श्रीतम! ७ लाण २८ हलर नहीं श्री पश्चिम तरह प्रवाहित थती अवख्यमुद्रमां प्रविष्ट थाय छे. 'एवामेव सपुत्रवावरेण जंबुदीदे दीवे चोद्दम सिंख्यासस्सा छप्पण्णं च सहस्सा मवंतिति मक्खायं आ प्रमाणे लंजूदीपमां १४ आप पद छ र नहीं श्री छे. श्रीवृं क्थन तीथं '-

साणि-चतुर्दशलक्षाणि, षट्पश्चाशच सहस्राणि भवन्तीत्याख्यातं मया-वर्द्धमानस्वामिना अन्यैश्वापि तीर्थञ्करेरिति । अर्थात् जम्बृद्धीपे पूर्वसमुद्रगामिनीनां पश्चिमसमुद्रगामिनीनां च नदीनां सर्वासां संकलने चतुर्दशलक्षाणि षट्पश्चाशत् सहस्राणि च भवन्तीति ।

सम्प्रति-जम्बूद्वीप व्यासस्य लक्षप्रमाणता प्रतीत्यर्थं दक्षिणोत्तराभ्यां क्षेत्रयोजन सर्वाप्र संकलनं शिष्याणाम्रुपकाराय प्रदर्शते-तद्यथा-

१-भरतक्षेत्रमगणम्-५२६ योजनानि-कलाः ६।

२-धुन्छिसाचलपर्वतप्रमाणम्-१०५२ योजनानि कलाः-१२।

३-हैमक्तक्षेत्रप्रमाणम्-२१०५ योजनानि कलाः-५ ।

४-बृद्धहिमाचलपर्वतप्रमाणम्-४२१० योजनानि कलाः-१०।

५-इरिवर्षक्षेत्र प्रमाणम्-८४२१ योजनानि कलाः-१।

६-निषधपर्वत प्रमाणम्-१६८४२ योजनानि कले दे रा

तात्पर्य यही है कि पूर्व समुद्रगामिनी एवं पश्चिम समुद्रगामिनी निद्यों की संख्या जम्बूद्धीप में १४ लाख ५२ हजार है। अब सूत्रकार जम्बूद्धीप का ब्यास जो १ लाख प्रमाण कहा गया है उसकी प्रतीति के लिये दक्षिण और उत्तर में क्षेत्र योजन का जो संकलन है उसे शिष्यों के उपकार निमित्त प्रदर्शन करते हैं जैसे-

- (१) भारत क्षेत्र का विस्तार ५२६ योजन का है।
- (२) क्षुल्लक हिमाचल पर्वत का−हिमवत्पर्वत का−विस्तार १०५२° है।
- (३) हैमवत क्षेत्र का विस्तार २१०५ पे योजन का है।
- (४) बृद्धहिमाचल पर्वत का प्रामाण-नहाहिमवत् पर्वत का विस्तार ४२१०३२ योजन का है।
 - (५) हरिवर्षक्षेत्र का प्रमाण ८४२१ ई योजन का है।
 - (६) निषधपर्वत का प्रमाग १६८४२ दे योजन का है।

કરાનું છે. તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે પૂર્વ સમુદ્રગામિની તેમજ પશ્ચિમ સમુદ્રગામિની નહીં એકની સંખ્યા જં ખૂદ્રીપમાં ૧૪ લાખ પદ હજાર છે. હવે સ્ત્રકાર જં ખૂદ્રીપના વ્યાસ કે જે એક લાખ પદ હજાર જેટલા છે. તેની પ્રતીતિ માટે દક્ષિણ અને ઉત્તરમાં ક્ષેત્ર-ચાજનનું જે સંકલન છે તેને શિષ્યોના ઉપકારાર્થ પ્રદર્શિત કરે છે જેમકે-

- (૧) ભરતક્ષેત્રના વિસ્તાર પર ૧ 🐾 ચેજન જેટલા છે.
- (२) क्षुस्तक किमायस पर्भतने। किमवत् पर्वतने। विस्तार १०५२ के.
- (3) હૈમવત ક્ષેત્રના વિસ્તાર ૨૧૦૫ મું યોજન જેટલા છે.
- (૪) વૃદ્ધ હિમાચલ પર્વતનું પ્રમાણ મહાહિમયત પર્વતના વિસ્તાર ૪૨૧૦ ફેટ્ટ ચાજન જેટલા છે.
 - (પ) હરિવર્ષ ક્ષેત્રનું પ્રમાણ ૮૪૨૧ મુંદ યાજન જેટલું છે.

- ७-महाविदेइक्षेत्रप्रमाणम् ३३६८४ योजनानि कलाः ४।
- ८-नीखवत्पर्वतप्रमाणम् १६८४२ यो ननानि, कले २।
- ९-रम्यकक्षेत्रप्रमाणम्-८४२१ योजननानि, कला १ ।
- १० रुविमपर्वेतप्रमाणम्-४२१० योजनानि कलाः १०।
- ११-हैरण्यवतक्षेत्रप्रमाणम्-२१०५ योजनानि कलाः ५ !
- १२-शिखरिपर्वतप्रमाणम्-१०५२ योजनानि कलाः १२।
- १३-ऐरवतक्षेत्रप्रमाणम्-५२६ योजनानि कलाः ६।

९९९६ योजनानि कलाः ७६ दक्षिणोत्तरतः सर्व संकलने १००००० योजन सर्वा-ग्रम्, अत्र दक्षिण जगतीमूल विष्कम्भो भरतक्षेत्रप्रमाणे, उत्तर जगती सत्कश्च ऐरवतक्षेत्र प्रमाणे अन्तर्भावनीय इति ।

- (७) महाविदेह क्षेत्र का प्रमाण ३३६८४ र योजन का है।
- (८) नीलवत पर्वत का प्रमाण १६८४२ से योजन का है।
- (९) रम्यकक्षेत्र का प्रमाण ८४२१, योजन का है।
- (१०) रुक्मि पर्वत का प्रमाण ४२१० दे योजन का है।
- (११) हैरण्यवतक्षेत्र का प्रमाण २१०५ वे योजन का है।
- (१२)-शिखरिपर्वत का प्रमाण १०५२ दे योजन का है।
- (१३) ऐरवतक्षेत्र का प्रमाण ५२६ के घोजन का है।

इस तरह यहां पर योजन का ओड ९९९६ निन्नानवेहजार नौ सौ छन्तु आता है और कलाओं का ओड ७६ आता है इनमें १९ का भाग देने पर ४ घोजन बनते हैं अतः उपर्युक्त योजन प्रमाण में ४ को ओडने पर जम्बूब्रीप का पूरा विस्तार १ लाख योजन का आ जाता है यहां दक्षिण जगती का मूल विष्कम्भ

- (૧) નિષધ પર્વતનું પ્રમાણ ૧૧૮૪૨_{૧૯} ચાજન જેટલું છે.
- (७) सदाविहेद क्षेत्रतुं अभाष् उउ६८४ हे यालन केटलुं छे.
- (૮) નીલ પર્વતનું પ્રમાણ ૧૬૮૪૨_{૧૬} ચાજન જેટલું છે.
- (૯) રમ્યક ક્ષેત્રનું પ્રમાણ ૮૪૨૧ વૃદ્ધ ચાજન જેટલું છે.
- (१०) दुक्षिम पर्वतन अभाष्य ४२१०१६ येन्यन केटल छे.
- (૧૧) હૈરણ્યવત ક્ષેત્રનું પ્રમાણ ૨૧૦૫ મું યોજન જેટલું છે.
- (૧૨) શિખરિ પર્વતનું પ્રમાણ ૧૦૫૨ કેટ ચાજન જેટલું છે.
- (૧૩) અરવત ક્ષેત્રનું પ્રમાણ પરક્ષું યેાજન જેટલું છે.

આ પ્રમાણે અહીં યાજનના સરવાળા ૯૯૯૯ નવાલું હુજાર નવસા છન્તું છે, અને ક્લાએના સરવાળા પછ શાય છે. એમાં ૧૯ના ભાગાક ર કરીએ તા ૪ યાજન થાય છે. એથી ઉપર્યુક્ત યાજન પ્રમાણમાં ૪ તે જેડવાથી જ'બૂઢીપના સ'પૂર્ણ વિસ્તાર ૧ લાખ

पूर्वपश्चिमतश्चेवं सर्वाग्रनीलनम्-औत्तराहं शीतावनपुखं २९२२ यो जनानि विजयपोखशक्तम्-३५४०६ यो जनानि, अन्तर नदीपदकं ७५० यो जनानि, वक्षस्काराष्टकं ४००००
यो जनानि । मेरुमद्रशालक्ष्मम् ५४००० यो जनानि, औत्तराहं शीतोदामुखवनम्-२९२२
यो जनानि अत्र सर्वाग्रम् १००००० लक्षयो जनग्रमाणं मवति, अत्रापि जगती संवन्धिमूल
विष्क्रम्मः स्वस्व दिग्गतमुखवने अन्तर्भावनीय इति ।

इतिश्री विश्वविष्यात् - नगद्बछम् - प्रसिद्धवाचकपश्चदशभाषाकित् - ललितकलापालापकप्रविशुद्धगद्यपद्यानैकग्रन्थिनिष्क - वादिमानमर्दक - श्री - शाह् छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त - 'जैनशास्त्राचार्य' - पद्विभूषित - कोल्हापुरराजग्रह्म - वालब्रह्मचारी
जैनाचार्य जैनथर्मदिवाकर - पूज्यश्री - घासीलाल - त्रतिविरचितायां
श्री जम्बृद्धीपप्रज्ञप्तिस्वत्रस्य प्रकाशिकाख्यायां ज्याख्यायां
पण्ठी बक्षस्कारः समाप्तः ॥६॥

भरतक्षेत्र के प्रमाण में और उत्तर जगती का प्रमाण एरवत क्षेत्र के प्रमाण में अन्तर्भावनीय है। पूर्व पश्चिम में सर्वायका मीलन इस प्रकार से हैं औत्तराह— उत्तरिक्षा में—शीता नदीके दन का खुलप्रमाण विस्तार २९२२ योजन का है १६ विजयों का प्रमाण विस्तार ३५४६० योजन का है अन्तरनदीषद्क का विस्तार ७५० योजन का है आठवक्षस्कारों का विस्तार ४००० योजन का है मेरु भद्रशालवन का विस्तार ५४००० योजन का है तथा उत्तरदिग्वर्ती शीतोदा नदी के वन सुखका विस्तार ५४००० योजन का है इन सब का जोड एक लाख योजन प्रमाण हो जाना है। यहां पर भी जगती का मूलविष्करम अपने दिग्गत सुख दनने अन्तर्भावित करलेना चाहिये।

श्री जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालवतिविरचित जम्बूढीप-श्रज्ञितसूत्र की प्रकाशिका व्याल्या में छट्टावक्षस्कार समाप्त ॥६॥

ચાજન આવી જાય છે. અહીં દક્ષિણ જગતીના મૂલ વિષ્કંભ ભરતક્ષેત્રના પ્રમાણમાં અને ઉત્તર જગતીનું પ્રમાણ એરવત ક્ષેત્રના પ્રમાણમાં અન્તર્ભાવનીય છે. પૂર્વ પશ્ચિમમાં સર્વાત્રનું મિલન અ પ્રમાણ છે— તત્તરહિ-ઉત્તરદિશામાં-શીતા નદીના વનના મુખ પ્રમાણ વિસ્તાર ૨૯૨૨ યોજન જેટલા છે. ૧૬ વિજયોના પ્રમાણ વિસ્તાર ૩૫૪૦૬ યોજન છે. અન્તર નદી ષટ્કના વિસ્તાર ૭૫૦ યોજન જેટલા છે. આડ વક્ષસ્કારાના વિસ્તાર ૪૦૦૦ યોજન જેટલા છે. મેરુ ભદ્રશાલ વનના વિસ્તાર ૫૪૦૦૦ યોજન જેટલા છે તેમજ ઉત્તર દિગ્વતી શીતાદા નદીના વનના મુખતા વિસ્તાર ૨૯૨૨ યોજન જેટલા છે. એ સર્વના સરવાળા એક લાખ યોજન પ્રમાણ થાય છે. અહીં પણ જગતીના મૂલ વિષ્કંસ પાતપાતાની દિશાઓમાં આવેલા મુખવનમાં આન્તર્ભાવા કરી લેવા જેઈ એ.

श्री कैनायार्थ कैनदर्भिंडवाठर पूक्ष्य श्री धासीवाल मितिविरियत कम्णूदी प्रश्नित सूत्रनी प्रश्नशिक्षा व्याण्याने। छट्टी वश्चरक्षार समाप्ता। ६॥